CUET UG

NTA द्वारा जारी पाठ्यक्रम के अनुसार

EXAM 2026

समाजशास्त्र

SOCIOLOGY

अध्यायवार MCQs

Nodia

Scan QR Code
for Demo PDF

CUET UG 2026

समाजशास्त्र
SOCIOLOGY

अध्यायवार MCQ
NTA द्वारा जारी पाठ्यक्रम के अनुसार

NODIA

CUET UG SOCIOLOGY
Edition March 2026
Published by :NODIA
An Imprint of Nodia EDITIONS LLP

MRP ₹570.00

NODIA EDITIONS LLP
125, Sector 6, Vidyadhar Nagar, Jaipur 302039
Phone :+91 9024037387
email : mail@nodia.in

CONTENTS

भारतीय समाज

भारत में सामाजिक परिवर्तन और विकास

For the year 2026

SOCIOLOGY – 326

Syllabus for

CUET (UG)

NODIA

Indian Society

Unit - I: ***Structure of Indian Society***

- Demographic Structure
- Rural – Urban Linkages and Divisions

Unit - II: ***Social Institutions: Continuity and Change***

- Family and Kinship
- The Caste System
- Tribal Society
- The Market as a Social Institution

Unit - III: ***Social Inequality and Exclusion***

- Caste Prejudice, Scheduled Castes and Other Backward Class
- Marginalisation of Tribal Communities
- The Struggle for Women's Equality
- The Protection of Religious Minorities
- Caring of the Different Abled

Unit - IV: ***The Challenges of Unity in Diversity***

- Problems of Communalism, Regionalism and Casteism and Patriarchy
- Communities, Nations & Nation States
- Role of the State and Civil Society in a Plural and Unequal Society

Change and Development in India.

Unit – I: *Process of Social Change in India*

- Process of Structural Change: Colonialism, Industrialisation, Urbanisation
- Process of Cultural Change: Modernization, Westernisation, Sanskritisation, Secularisation
- Social Reform Movements and Laws

Unit- II: *Social Change and the Polity*

- The Constitution as an instrument of Social Change
- Parties, Pressure Groups and Democratic Politics
- Panchayati Raj and the Challenges of Social Transformation

Unit - III: *Social Change and the Economy*

- Land Reforms, the Green Revolution and Agrarian Society
- From Planned Industrialisation to Liberalisation
- Changes in the Class Structure

Unit - IV: *New Arenas of Social Change*

- Media and Social Change
- Globalisation and Social Change

Unit - V: *Social Movements*

- Class-Based Movements: Workers, Peasants
- Caste-Based Movements: Dalit Movement, Backward Castes, Trends in Upper Caste Responses
- Women's Movements in Independent India
- Tribal Movements
- Environmental Movements

अध्याय 01
भारतीय समाज : एक परिचय

1. समाजशास्त्र अन्य विषयों से किस महत्त्वपूर्ण अर्थ में अलग है?
   (A) इसकी विषय-वस्तु अधिक जटिल है।
   (B) इसमें कोई भी शून्य से शुरुआत नहीं करता है।
   (C) इसका अध्ययन केवल औपचारिक रूप से होता है।
   (D) यह पूरी तरह से सैद्धांतिक विषय है।

2. समाज के बारे में हमारा ज्ञान अक्सर 'स्वाभाविक' या 'अपने आप' प्राप्त किया हुआ क्यों प्रतीत होता है?
   (A) क्योंकि यह हमारे बड़े होने की प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण अभिन्न हिस्सा है।
   (B) क्योंकि यह ज्ञान हमें विद्यालय में व्यवस्थित रूप से सिखाया जाता है।
   (C) क्योंकि यह केवल वयस्कों द्वारा ही समझा जा सकता है।
   (D) क्योंकि यह एक दुर्लभ और विशेष ज्ञान है।

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
   अभिकथन (A): एक छः वर्षीय बच्चा भी समाज एवं सामाजिक संबंधों के बारे में कुछ न कुछ ज़रूर जानता है।
   कारण (R): समाज के बारे में ज्ञान केवल औपचारिक शिक्षा के माध्यम से ही प्राप्त होता है।
   (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
   (D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

4. समाजशास्त्र के लिए 'सहज बोध' या 'पहले से ही' प्राप्त किया गया ज्ञान किस प्रकार सहायक हो सकता है?
   (A) यह समाज का एक पूर्ण, तटस्थ और पूरी तरह निष्पक्ष दृष्टिकोण देता है।
   (B) यह जटिल समाजशास्त्रीय अनुसंधान और वैज्ञानिक खोज की आवश्यकता मिटाता है।
   (C) यह हमेशा उच्च वैज्ञानिक सिद्धांतों और सिद्ध तथ्यों पर आधारित होता है।
   (D) छात्र विषयवस्तु से पहले से ही परिचित और सहज महसूस करने लगते हैं।

5. समाजशास्त्र को सीखने से पहले हमें समाज के बारे में अपनी पूर्व धारणाओं को 'उधेड़ना' क्यों पड़ता है?
   (A) समाज के बारे में बनी पूर्व धारणाएं हमेशा पूरी तरह से गलत होती हैं।
   (B) समाजशास्त्र का हमारे दैनिक व्यक्तिगत जीवन से कोई विशेष संबंध नहीं है।
   (C) पूर्व बुनाई को उधेड़कर नए सिरे से सामाजिक समझ विकसित करने के लिए।
   (D) पूर्व धारणाएं केवल सैद्धांतिक होती हैं और व्यवहार में नहीं आती हैं।

6. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
   सूची I: (अवधारणा)
   P. सहज बोध
   Q. स्ववाचक
   R. अपूर्ण ज्ञान
   S. पूर्वाग्रहपूर्ण ज्ञान
   सूची II: (विवरण)
   1. स्वयं को 'बाहर से' देखने की क्षमता
   2. संपूर्ण का विलोम
   3. निष्पक्ष का विलोम
   4. समाज के बारे में पहले से प्राप्त ज्ञान
   (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
   (B) P-1, Q-2, R-3, S-4
   (C) P-4, Q-3, R-1, S-2
   (D) P-2, Q-1, R-4, S-3

7. समाज के बारे में हमारा 'सहज बोध' या सामान्य बोध अक्सर अपूर्ण और पूर्वाग्रहपूर्ण क्यों होता है?
   (A) क्योंकि यह व्यवस्थित और वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित होता है।
   (B) क्योंकि यह समाज की पूरी वास्तविकता को दर्शाता है।
   (C) क्योंकि यह हमेशा एक निष्पक्ष दृष्टिकोण से प्राप्त किया जाता है।
   (D) क्योंकि यह हमारे अपने सामाजिक समूह के हितों और मतों की तरफ झुका होता है।

8. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
   1. समाज के बारे में हमारा ज्ञान सुस्पष्ट पढ़ाई के बगैर प्राप्त होता है।
   2. समाजशास्त्र को सीखने के लिए हमें अपने सहज बोध को 'भूलने' की कोशिश करनी पड़ती है।
   3. हमारा सहज बोध हमेशा समाज का एक संपूर्ण and निष्पक्ष चित्र प्रस्तुत करता है।
   4. समाजशास्त्र हमें यह सिखाता है कि दूसरे हमें किस तरह

देखते हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं ?

(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 3 और 4 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 and 4 सही हैं।
(D) सभी 1, 2, 3 and 4 सही हैं।

9. 'स्ववाचकता' या 'आत्मवाचकता' की अवधारणा का सबसे अच्छा वर्णन कौन-सा विकल्प करता है?

(A) व्यक्तिगत भावनाओं और अपनी अनुभूतियों पर ही ध्यान केंद्रित करने की क्रिया।
(B) अन्य व्यक्तियों के सामाजिक दृष्टिकोणों को पूरी तरह से अनदेखा करना।
(C) अपनी दृष्टि को स्वयं की ओर घुमाकर स्वयं का आलोचनात्मक निरीक्षण करना।
(D) सामाजिक नियमों और स्थापित परंपराओं का आँख बंद करके पालन करना।

10. नीचे दो कथन दिए गए हैं। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:

कथन 1: समाजशास्त्र को सीखने के प्रारंभिक चरण में मुख्यतः 'भूलने की प्रक्रियाएँ' ही शामिल हैं।

कथन 2: समाज के बारे में हमारा पहले से प्राप्त ज्ञान, हमारा सामान्य बोध, एक विशिष्ट दृष्टिकोण से प्राप्त किया हुआ होता है जो पूर्वाग्रहपूर्ण हो सकता है।

(A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और कथन 2 दोनों गलत हैं।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

11. एक तुलनात्मक सामाजिक नक्शा व्यक्ति को समाज में उसके स्थान के बारे में क्या बताता है?

(A) व्यक्ति की केवल वर्तमान आर्थिक स्थिति और आय का स्तर।
(B) व्यक्ति की केवल धार्मिक पहचान और उसके समुदाय का नाम।
(C) व्यक्ति का केवल वर्तमान भौगोलिक स्थान और निवास का पता।
(D) विभिन्न सामाजिक समूहों जैसे आयु, लिंग, वर्ग और जाति में स्थिति।

12. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:

अभिकथन (A): समाजशास्त्र आपकी व्यक्तिगत परेशानियों एवं सामाजिक मुद्दों के बीच की कड़ियों एवं संबंधों को उजागर करने में मदद कर सकता है।

कारण (R): समाजशास्त्र केवल बड़े सामाजिक मुद्दों का अध्ययन करता है और व्यक्तिगत चिंताओं पर ध्यान नहीं देता।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

13. सी. राईट मिल्स के अनुसार 'व्यक्तिगत परेशानी' और 'सामाजिक मुद्दा' में क्या अंतर है?

(A) व्यक्तिगत परेशानी बड़े समूहों से संबंधित होती है, जबकि सामाजिक मुद्दा व्यक्तिगत होता है।
(B) दोनों में कोई अंतर नहीं है, वे एक ही हैं।
(C) व्यक्तिगत परेशानी व्यक्तिगत होती है, जबकि सामाजिक मुद्दा बड़े समूहों से संबंधित होता है।
(D) व्यक्तिगत परेशानी आर्थिक होती है, जबकि सामाजिक मुद्दा राजनीतिक होता है।

14. निम्नलिखित में से कौन-सा एक 'व्यक्तिगत परेशानी' का उदाहरण है?

(A) देश में बढ़ती बेरोजगारी की दर।
(B) समाज में व्यापक लैंगिक भेदभाव।
(C) किसी क्षेत्र में बढ़ता हुआ जातिगत तनाव।
(D) किसी एक व्यक्ति का अपने भविष्य की नौकरी को लेकर चिंतित होना।

15. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन भारतीय समाज के संदर्भ में सही नहीं है?

(A) समाजशास्त्र केवल व्यक्ति की व्यक्तिगत परेशानियों को समझने में मदद करता है।
(B) भारत की लगभग 40% जनसंख्या युवा या युवा से कम उम्र की है।
(C) प्रत्येक व्यक्ति की पहचान किसी न किसी क्षेत्रीय, भाषायी, धार्मिक या जातीय समूह से होती है।
(D) व्यक्ति की पहचान सामाजिक संबंधों के ताने-बाने में उसका स्थान निर्धारित करती है।

16. भारतीय समाज का परिचय प्राप्त करने के लिए सबसे उपयुक्त दृष्टिकोण कौन-सा है?

(A) केवल सहज बोध का नज़रिए से।
(B) समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से।
(C) केवल आर्थिक दृष्टिकोण से।
(D) केवल ऐतिहासिक दृष्टिकोण से।

17. सामाजिक अध्ययन में 'सामाजिक परिवर्तन एवं विकास' की विशिष्टताओं पर ध्यान केंद्रित करना क्यों आवश्यक है?

(A) यह भारतीय समाज की आधारभूत संरचना को समझने में मदद करता है।
(B) यह समाज में हो रहे बदलावों की प्रकृति और दिशा को स्पष्ट करता है।
(C) यह विश्व के अन्य समाजों के तुलनात्मक अध्ययन के लिए एकमात्र आधार है।
(D) यह केवल समाजशास्त्रीय सिद्धांतों के इतिहास की व्याख्या करता है।

18. निम्नलिखित को समाजशास्त्रीय अध्ययन की प्रक्रिया के अनुसार सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

1. समाज के व्यवस्थित व वैज्ञानिक अध्ययन को सीखना।
2. समाज के बारे में सहज बोध या सामान्य ज्ञान का होना।
3. सहज बोध को 'भूलने' या 'मिटा देने' की कोशिश करना।
4. समाज के बारे में पूर्व धारणाओं को उधेड़ना।

(A) 2, 3, 4, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 3, 2, 1

19. भारतीय जनसंख्या के अध्ययन में किस मुख्य पहलू पर विचार-विमर्श किया जाता है?

(A) केवल जनसंख्या वृद्धि के लाभों पर।
(B) केवल जनसंख्या के ऐतिहासिक आंकड़ों पर।
(C) जनसंख्या की जनसांख्यिकीय संरचना पर।
(D) केवल जनगणना प्रक्रिया पर।

20. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:

अभिकथन (A): भारत आने वाले समय में विश्व का सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश बन सकता है।

कारण (R): समाजशास्त्री और जनसांख्यिकीविद् जनसंख्या के सामाजिक और संरचनात्मक पहलुओं का अध्ययन करते हैं।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

21. जनसंख्या के समाजशास्त्रीय अध्ययन में निम्नलिखित में से कौन-सा प्रश्न महत्त्वपूर्ण है?

(A) जाति व्यवस्था का भविष्य क्या है?
(B) बाज़ार एक सामाजिक संस्था कैसे है?
(C) क्या हमारी जनसंख्या विकास में एक बाधा है या एक मदद?
(D) महिलाओं के आंदोलन का क्या प्रभाव पड़ा है?

22. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. सहज बोध समाज के व्यवस्थित व वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित है।
2. समाजशास्त्र को सीखने के लिए पहले की धारणाओं को उधेड़ना पड़ता है।
3. सी. राईट मिल्स ने व्यक्तिगत परेशानियों और सामाजिक मुद्दों में संबंध बताया।
4. एक सामाजिक मुद्दा केवल एक व्यक्ति विशेष से जुड़ा होता है।
5. 'स्ववाचकता' का अर्थ है स्वयं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 4 गलत हैं।
(B) केवल 2 और 3 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 5 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

23. भारतीय समाज के अध्ययन में किन आधारभूत रचना खंडों को महत्त्वपूर्ण माना जाता है?

(A) केवल बाज़ार और अर्थव्यवस्था।
(B) केवल राजनीतिक संस्थाएँ।
(C) जनसंख्या और शहरीकरण।
(D) जाति, जनजाति एवं परिवार।

24. किस सामाजिक संस्था को भारतीय उपमहाद्वीप का एक विशिष्ट लक्षण माना गया है?

(A) जाति
(B) परिवार
(C) बाज़ार
(D) जनजाति

25. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (विषय/संस्था)

P. जनसांख्यिकीय संरचना
Q. जाति, जनजाति एवं परिवार
R. बाज़ार के सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम
S. विषमता एवं बहिष्कार

सूची II: (प्रमुख संदर्भ)

1. आर्थिक विनिमय की सामाजिक प्रकृति
2. सामाजिक विभेदीकरण और शोषण
3. जनसंख्या की बनावट
4. भारतीय समाज के आधारभूत रचना खंड

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

26. 'जनजाति' की संकल्पना के संबंध में वर्तमान में कौन-सा प्रश्न महत्त्वपूर्ण है?

(A) जनजातीय समुदाय स्वयं को समकालीन भारत में कैसे परिभाषित करते हैं?
(B) जनजातियाँ केवल भारत में पाई जाती हैं।
(C) जनजातियों का भारतीय अर्थव्यवस्था में कोई योगदान नहीं है।
(D) 'जनजाति' की संकल्पना हमेशा से भारत में एक समान रही है।

27. परिवार संस्था के संबंध में निम्नलिखित में से किस बात पर समाजशास्त्रीय चर्चा की जाती है?

(A) भारत में केवल संयुक्त परिवार पाए जाते हैं।
(B) परिवार पर सामाजिक परिवर्तन का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

(C) परिवार एक आर्थिक संस्था मात्र है।
(D) भारत में पाए जाने वाले परिवार के विविध स्वरूपों में हो रहे परिवर्तन।

28. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के बारे में गलत है?
(A) यह व्यवस्थित और वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित है।
(B) यह हमारे सहज बोध को बिना किसी आलोचना के स्वीकार करता है।
(C) यह हमें स्वयं को 'बाहर से' देखना सिखाता है।
(D) यह व्यक्तिगत परेशानियों और सामाजिक मुद्दों के बीच संबंध स्थापित करता है।

29. विश्व इतिहास में सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का एक शक्तिशाली वाहक किसे माना गया है?
(A) राजनीतिक क्रांतियाँ
(B) धार्मिक आंदोलन
(C) बाज़ार
(D) वैज्ञानिक आविष्कार

30. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत में त्वरित आर्थिक परिवर्तन उपनिवेशवाद द्वारा लाए गए।
2. विकासशील नीतियों ने भी भारत में आर्थिक परिवर्तन लाए।
3. बाज़ार का अध्ययन केवल उसके पारंपरिक स्वरूपों तक सीमित है।
4. बाज़ार केवल एक आर्थिक संस्था है, सामाजिक नहीं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 3 और 4 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

31. समाजशास्त्र सीखने की प्रक्रिया में 'भूलने की प्रक्रिया' क्यों शामिल है?
(A) क्योंकि हमारा पहले से प्राप्त ज्ञान अक्सर एक विशिष्ट और पूर्वाग्रहपूर्ण दृष्टिकोण से होता है।
(B) क्योंकि पुराना ज्ञान पूरी तरह से अप्रासंगिक है।
(C) क्योंकि समाजशास्त्र में याद रखने के लिए कुछ भी नहीं है।
(D) क्योंकि यह एक नियम है जिसका कोई तार्किक आधार नहीं है।

32. 'स्ववाचकता' की प्रक्रिया में क्या अधिक और क्या कम होना चाहिए?
(A) आत्म-मुग्धता अधिक और समीक्षा कम।
(B) समीक्षा अधिक और आत्म-मुग्धता कम।
(C) दूसरों की आलोचना अधिक और आत्म-समीक्षा कम।
(D) सहज ज्ञान अधिक और वैज्ञानिक अध्ययन कम।

33. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): सी. राईट मिल्स के अनुसार, समाजशास्त्र व्यक्तिगत परेशानियों और सामाजिक मुद्दों के बीच संबंध उजागर करता है।
कारण (R): व्यक्तिगत परेशानियाँ और सामाजिक मुद्दे पूरी तरह से अलग-अलग घटनाएँ हैं जिनका आपस में कोई संबंध नहीं है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

34. समाज की कौन-कौन सी विशेषता सामाजिक स्तरीकरण के अध्ययन का मुख्य विषय है?
(A) विषमता एवं अपवर्जन (बहिष्कार)।
(B) सामाजिक सद्भाव और एकता।
(C) आर्थिक समृद्धि।
(D) तकनीकी विकास।

35. समाज में विषमता और बहिष्कार को मुख्य रूप से किन संदर्भों में देखा जाता है?
(A) केवल आर्थिक वर्ग के संदर्भ में।
(B) केवल राजनीतिक दलों के संदर्भ में।
(C) जाति, जनजाति, लिंग एवं 'अन्यथा सक्षम' लोगों के संदर्भ में।
(D) केवल शहरी और ग्रामीण विभाजन के संदर्भ में।

36. जाति व्यवस्था के संबंध में समाज में किस प्रकार के प्रयासों का उल्लेख मिलता है?
(A) जाति व्यवस्था को और मजबूत बनाने के प्रयास।
(B) जाति व्यवस्था को केवल एक अकादमिक विषय के रूप में अध्ययन करने के प्रयास।
(C) जाति व्यवस्था को भारत की एकमात्र पहचान बनाने के प्रयास।
(D) जाति व्यवस्था को मिटाने या उसमें सुधार लाने के संयोजित प्रयास।

37. निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा गलत है?
(A) अपूर्ण - संपूर्ण का विलोम
(B) पूर्वाग्रहपूर्ण - निष्पक्ष का विलोम
(C) सहज बोध - व्यवस्थित ज्ञान
(D) स्ववाचक - आत्म-निरीक्षण

38. 'अन्यथा सक्षम' या 'असक्षम' लोगों के संदर्भ में समाज के लिए कौन-सा प्रश्न महत्त्वपूर्ण है?
(A) उनकी विशेष क्षमताओं का व्यावसायिक उपयोग कैसे करें?

(B) हमारा समाज उनकी आवश्यकताओं के प्रति किस सीमा तक संवेदी है?
(C) उन्हें सामान्य समाज से कैसे अलग रखा जाए?
(D) उनकी जनसंख्या की गणना कैसे की जाए?

39. निम्नलिखित सामाजिक पहलुओं को समाजशास्त्रीय विश्लेषण के सामान्य क्रम में व्यवस्थित करें:
1. बाज़ार एक सामाजिक संस्था के रूप में।
2. जाति, जनजाति और परिवार।
3. सांस्कृतिक विविधता की चुनौतियाँ।
4. जनसंख्या की संरचना।

(A) 4, 2, 1, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 4, 1, 2, 3

40. महिला आंदोलनों का प्रभाव मुख्य रूप से किन क्षेत्रों पर देखा गया है?
(A) उन सामाजिक संस्थाओं पर जिन्होंने महिलाओं का शोषण किया।
(B) केवल महिलाओं की आर्थिक स्थिति पर।
(C) केवल राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं के प्रतिनिधित्व पर।
(D) पुरुषों पर महिला आंदोलनों के नकारात्मक प्रभाव पर।

41. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. समाजशास्त्र को सीखने के लिए पूर्व ज्ञान सहायक और बाधक दोनों है।
2. सहज बोध से प्राप्त ज्ञान हमेशा वैज्ञानिक होता है।
3. 'स्ववाचकता' का अर्थ है अपनी दृष्टि को बाहर की ओर रखना।
4. समाजशास्त्र आपको दिखाता है कि दूसरे आपको कैसे देखते हैं।
5. समाज के बारे में हमारा ज्ञान हमारे सामाजिक संदर्भों से प्रभावित होता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 4 और 5 सही हैं।
(B) केवल 2 और 3 गलत हैं।
(C) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

42. भारतीय समाज के अध्ययन में विविधता से उत्पन्न किस पहलू पर विचार किया जाता है?
(A) भारतीय समाज की असीम विविधता से उत्पन्न कठिन चुनौतियों के बारे में।
(B) भारतीय अर्थव्यवस्था की समस्याओं के बारे में।
(C) भारत की विदेश नीति के बारे में।
(D) भारत के प्राचीन इतिहास के बारे में।

43. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण हमें किस प्रकार के चिंतन से बाहर आने को आमंत्रित करता है?
(A) आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक चिंतन।
(B) वैज्ञानिक और तार्किक चिंतन।
(C) ऐतिहासिक और तुलनात्मक चिंतन।
(D) सामान्य, सुविधाजनक चिंतन।

44. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (सामाजिक समस्या)
P. सामुदायिक संघर्ष
Q. क्षेत्रीय उग्रराष्ट्रीयता
R. जातिवाद
S. अल्पसंख्यक असुरक्षा

सूची II: (विशेषता)
1. समूहों के बीच तनाव
2. क्षेत्र-आधारित अलगाववाद
3. जाति-आधारित भेदभाव
4. कम संख्या वाले समूहों में भय

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-1, Q-1, R-1, S-1
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

45. "विविधता में एकता" की अवधारणा के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन उपयुक्त है?
(A) यह अवधारणा पूरी तरह से निराधार है।
(B) भारत ने इस मोर्चे पर बहुत बुरा प्रदर्शन किया है।
(C) सभी चुनौतियों के बावजूद, भारत ने विविधता के प्रबंधन में उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है।
(D) विविधता केवल एक कमजोरी है, ताकत नहीं।

46. एक राष्ट्र के रूप में हमारे सामूहिक भविष्य के लिए क्या महत्त्वपूर्ण है?
(A) सभी अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यक संस्कृति अपनाने के लिए मजबूर करना।
(B) क्षेत्रीय और भाषायी पहचानों को पूरी तरह से खत्म कर देना।
(C) केवल आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) यह सुनिश्चित करना कि प्रत्येक अल्पसंख्यक असुरक्षित या खतरे में महसूस न करे।

47. समाजशास्त्र के पाठ्यक्रम में प्रयोगात्मक घटकों (Project work) को शामिल करने का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक अनुभवों से जोड़ना।
(B) परीक्षा की तैयारी को आसान बनाना।
(C) उच्च शिक्षा के लिए विषय चुनने में मदद करना।
(D) समाजशास्त्रीय निबंध लिखने की कला सिखाना।

48. समाजशास्त्र के अध्ययन का एक लाभ यह है कि यह आपको सिखाता है कि आप स्वयं को 'बाहर से' कैसे देख सकते हैं। इस क्षमता को क्या कहा जाता है?
(A) सामान्य बोध
(B) स्ववाचकता
(C) पूर्वाग्रह

(D) सामाजिक नियंत्रण

49. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): समाज के बारे में हमारा सामान्य बोध अक्सर हमारे अपने सामाजिक समूह के हितों की तरफ झुका होता है।
कारण (R): हमारा सामान्य बोध एक विशिष्ट सामाजिक वातावरण में समाजीकृत होने के परिणामस्वरुप बनता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

50. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और गलत कथन चुनें:
(A) समाजशास्त्र का अध्ययन करने से पहले हमें समाज के बारे में कुछ भी पता नहीं होता।
(B) समाजशास्त्र समाज के व्यवस्थित अध्ययन पर आधारित है।
(C) एक अठारह साल का वयस्क अपने समाज के बारे में बहुत कुछ जानता है।
(D) हमारा सहज बोध समाजशास्त्र के लिए सहायक और बाधक दोनों हो सकता है।

51. "व्यक्तिगत परेशानियों" से सी. राईट मिल्स का क्या तात्पर्य है?
(A) केवल मनोवैज्ञानिक समस्याएं।
(B) विभिन्न प्रकार की व्यक्तिगत चिंताएँ, समस्याएँ या सरोकार।
(C) केवल आर्थिक कठिनाइयाँ।
(D) बड़े सामाजिक समूहों द्वारा सामना की जाने वाली समस्याएं।

52. निम्नलिखित में से कौन-सा एक 'सामाजिक मुद्दे' का उदाहरण है?
(A) एक छात्र का परीक्षा में फेल हो जाना।
(B) दो दोस्तों के बीच झगड़ा।
(C) समाज में महिलाओं के खिलाफ व्यापक हिंसा।
(D) किसी व्यक्ति का अपनी नौकरी से असंतुष्ट होना।

53. सामाजिक संरचना के अध्ययन में विषयों के तार्किक क्रम को पहचानें:
1. विषमता एवं बहिष्कार पर चर्चा।
2. जनसंख्या संरचना का विश्लेषण।
3. बाज़ार के सामाजिक आयामों की खोज।
4. जाति, जनजाति एवं परिवार जैसी संस्थाओं का अध्ययन।
(A) 2, 4, 3, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 2, 3, 4, 1

54. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. समाजशास्त्र को सीखने के लिए किसी पूर्व ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती है।
2. सहज बोध हमारे सामाजिक संदर्भ से आकार लेता है।
3. 'स्ववाचकता' में आत्म-मुग्धता कम और समीक्षा अधिक होनी चाहिए।
4. सी. राईट मिल्स एक प्रसिद्ध भारतीय समाजशास्त्री थे।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं??
(A) केवल 1 और 4 गलत हैं।
(B) केवल 2 और 3 सही हैं।
(C) केवल 1 और 3 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

55. भारत की जनसंख्या के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सत्य है?
(A) भारत विश्व का सबसे अधिक जनसंख्या वाला देश है।
(B) भारत की जनसंख्या वृद्धि दर नकारात्मक है।
(C) भारत विश्व के विशालतम जनसंख्या वाले देशों में से एक है।
(D) भारत की जनसंख्या अगले कुछ दशकों में कम होने की उम्मीद है।

56. उपनिवेशवाद और विकासशील नीतियों ने भारत में किस प्रक्रिया को गहराई से प्रभावित किया?
(A) जाति व्यवस्था के विघटन को।
(B) परिवार संरचना के स्थिरीकरण को।
(C) धार्मिक सहिष्णुता में वृद्धि को।
(D) विभिन्न प्रकार के बाज़ारों के उदय और स्वरूप को।

57. नीचे दो कथन दिए गए। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
कथन 1: समाज में विषमता और बहिष्कार को जाति, जनजाति, लिंग एवं 'अन्यथा सक्षम' लोगों के संदर्भ में समझा जा सकता है।
कथन 2: इन समूहों के खिलाफ भेदभाव को समाप्त करने के लिए राज्य और समाज द्वारा निरंतर प्रयास किए गए हैं।
(A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और कथन 2 दोनों गलत हैं।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

58. समाजशास्त्र के अध्ययन के लिए क्या अनिवार्य माना जाता है?
(A) अपने सहज बोध पर पूरी तरह निर्भर रहना।
(B) अपने सहज बोध को आलोचनात्मक रूप से जांचने की कोशिश करना।
(C) केवल दूसरे समाजों का अध्ययन करना।
(D) केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त करना।

59. 'सामाजिक नक्शे' में किसी व्यक्ति का स्थान निर्धारित करने वाले कारकों में निम्नलिखित में से कौन-सा शामिल नहीं है?
(A) आर्थिक वर्ग
(B) धार्मिक समुदाय
(C) व्यक्तिगत पसंद और नापसंद
(D) भाषायी समुदाय

60. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): परिवार संस्था इस समय के त्वरित एवं गहन सामाजिक परिवर्तन के भारी दबाव का विषय रहा है।
कारण (R): आधुनिकता और सामाजिक बदलावों के कारण परिवार के पारंपरिक स्वरूपों में परिवर्तन आ रहा है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

61. निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(A) जनसांख्यिकीय संरचना - परिवार का अध्ययन
(B) बाज़ार - केवल आर्थिक विनिमय
(C) जाति - सामाजिक समानता का आधार
(D) सांस्कृतिक विविधता - सामुदायिक संघर्ष और चुनौतियाँ

62. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सहज बोध से प्राप्त ज्ञान अक्सर अपूर्ण होता है।
2. सहज बोध से प्राप्त ज्ञान हमेशा निष्पक्ष होता है।
3. समाजशास्त्र हमें स्वयं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना सिखाता है।
4. समाजशास्त्र का अध्ययन करने वाले छात्र विषय से हमेशा डरते हैं।
5. भारत की जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा युवा है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 3 सही हैं।
(B) केवल 2, 4 और 5 गलत हैं।
(C) केवल 1, 3 और 5 सही हैं।
(D) सभी कथन गलत हैं।

63. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, बाज़ार को किस रूप में देखा जाता है?
(A) केवल लाभ कमाने की जगह।
(B) एक शक्तिशाली सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था।
(C) पूरी तरह से एक अराजक व्यवस्था।
(D) केवल वस्तुओं के विनिमय का स्थान।

64. जनजातीय आंदोलनों के संदर्भ में 'स्वयं की पहचान' का प्रश्न किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है?
(A) उनकी आर्थिक स्थिति को सुधारने के संदर्भ में।
(B) उन्हें मुख्यधारा से अलग करने के संदर्भ में।
(C) अपनी विशिष्ट पहचान को पुनःस्थापित और सुरक्षित करने के संदर्भ में।
(D) उनके पारंपरिक रीति-रिवाजों को पूरी तरह बदलने के संदर्भ में।

65. युवा वयस्क वर्तमान समाज में किन चुनौतियों का सामना कर रहे हैं?
(A) केवल बेरोजगारी और आर्थिक मंदी।
(B) केवल परीक्षा का तनाव और प्रतिस्पर्धा।
(C) केवल तकनीकी परिवर्तन और आधुनिकीकरण।
(D) सामुदायिक संघर्ष, क्षेत्रीयता और जातिवाद जैसी सामाजिक जटिलताएँ।

66. समाजशास्त्र में "बिना सीखा गया ज्ञान" किसे कहा गया है?
(A) सहज सामान्य बोध।
(B) विद्यालय में प्राप्त औपचारिक ज्ञान।
(C) वैज्ञानिक अनुसंधान से प्राप्त ज्ञान।
(D) विशेषज्ञ द्वारा दिया गया ज्ञान।

67. समाजशास्त्र को सीखने की तुलना किस क्रिया से की गई है?
(A) एक नया घर बनाने से।
(B) एक बुने हुए स्वेटर को उधेड़कर फिर से बुनने से।
(C) एक बीज बोने और पौधे को बड़ा करने से।
(D) एक गणितीय समस्या को हल करने से।

68. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (समाजशास्त्री/अवधारणा)
P. सी. राईट मिल्स
Q. सामाजिक मुद्दा
R. व्यक्तिगत परेशानी
S. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण

सूची II: (विवरण)
1. व्यक्तिगत चिंता या सरोकार
2. बड़े समूहों से संबंधित समस्या
3. व्यक्तिगत परेशानी और सामाजिक मुद्दे के बीच संबंध की व्याख्या
4. सहज बोध से भिन्न व्यवस्थित समझ

(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

69. समाज के बारे में हमारा सामान्य बोध किस बात से सर्वाधिक प्रभावित होता है?
(A) केवल हमारे व्यक्तिगत अनुभवों से।
(B) केवल किताबों में पढ़े गए ज्ञान से।
(C) उस सामाजिक समूह और वातावरण से जिसमें हम समाजीकृत होते हैं।
(D) सार्वभौमिक और निरपेक्ष सत्यों से।

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): एक तुलनात्मक सामाजिक नक्शा आपको समाज में आपके निर्धारित स्थान के बारे में बता सकता है।
कारण (R): समाज में व्यक्ति का स्थान उसकी आयु, वर्ग, जाति, लिंग आदि कई कारकों द्वारा निर्धारित होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

71. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन समाजशास्त्र के बारे में सही है?
(A) यह एक ऐसा विषय है जिसमें छात्र शून्य से शुरुआत करते हैं।
(B) यह हमारे सहज बोध को बिना किसी प्रश्न के स्वीकार करता है।
(C) इसका उद्देश्य केवल व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान करना है।
(D) यह समाज का एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक अध्ययन है।

72. समाज के अध्ययन की समाजशास्त्रीय प्रक्रिया के चरणों का सही क्रम क्या है?
1. अपने सहज बोध को आलोचनात्मक रुप से परखना।
2. समाज के बारे में सहज ज्ञान का होना।
3. समाज का व्यवस्थित व वैज्ञानिक अध्ययन करना।
(A) 2, 1, 3
(B) 1, 2, 3
(C) 3, 2, 1
(D) 2, 3, 1

73. 'जनजाति' की संकल्पना को भारतीय संदर्भ में किस प्रकार देखा जाता है?
(A) यह संकल्पना हमेशा से भारत में मौजूद थी।
(B) यह संकल्पना मुग़ल काल की देन है।
(C) यह संकल्पना अभी हाल ही में गढ़ी गई है।
(D) यह संकल्पना एक विशिष्ट ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भ में आई थी।

74. निम्नलिखित में से कौन-सा एक "सामाजिक तथ्य" है जिसे समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से देखा जाना चाहिए?
(A) एक व्यक्ति की निजी गरीबी।
(B) समाज में व्यापक गरीबी और संरचनात्मक असमानता।
(C) एक व्यक्ति का अकेलेपन का क्षणिक अहसास।
(D) एक व्यक्ति की विशुद्ध व्यक्तिगत धार्मिक आस्था।

75. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. समाजशास्त्र और सहज बोध में कोई अंतर नहीं है।
2. 'स्ववाचकता' एक आलोचनात्मक प्रक्रिया है।
3. जाति व्यवस्था में सुधार के लिए उत्पीड़ित जातियों और राज्य द्वारा प्रयास किए गए हैं।
4. बाज़ार पर उपनिवेशवाद का कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 4 गलत हैं।
(B) केवल 2 और 3 सही हैं।
(C) केवल 1 और 3 सही हैं।
(D) सभी कथन गलत हैं।

76. समाजशास्त्र का अध्ययन क्यों आवश्यक है, जबकि हम पहले से ही समाज में रहते हैं?
(A) क्योंकि समाजशास्त्र हमें समाज से अलग रहना सिखाता है।
(B) यह आवश्यक नहीं है, यह केवल एक वैकल्पिक रुचि है।
(C) क्योंकि समाज में रहना और समाज को व्यवस्थित रुप से समझना दो अलग-अलग बातें हैं।
(D) क्योंकि समाजशास्त्र केवल अतीत के समाजों का अध्ययन करता है।

77. नीचे दो कथन दिए गए। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
कथन 1: हमारा 'बिना सीखा गया' ज्ञान या सहज सामान्य बोध अक्सर हमें सामाजिक वास्तविकता का केवल एक हिस्सा ही दिखलाता है।
कथन 2: यह सामान्य बोध सार्वभौमिक रुप से लागू होता है और सभी समाजों के लिए एक समान सत्य है।
(A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और कथन 2 दोनों गलत हैं।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

78. समाजशास्त्रीय ज्ञान की प्रकृति मुख्य रूप से कैसी होती है?
(A) व्यक्तिपरक और पक्षपाती।
(B) स्वाभाविक और स्वतः प्राप्त।
(C) अपूर्ण और पूर्वाग्रहपूर्ण।
(D) व्यवस्थित और वैज्ञानिक।

79. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (विषय)
P. महिला आंदोलनों का प्रभाव
Q. समाज की संवेदनशीलता का प्रश्न
R. जनजातीय पहचान का मुद्दा
S. जातिगत भेदभाव निवारण
सूची II: (संबंधित संदर्भ)
1. शोषण करने वाली संस्थाओं में परिवर्तन
2. 'अन्यथा सक्षम' लोगों की आवश्यकताएं
3. जनजातीय आंदोलन
4. उत्पीड़ित जातियों और राज्य के प्रयास

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-1, Q-3, R-2, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

80. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): समाज के बारे में हमारा बहुत सारा ज्ञान सुस्पष्ट पढ़ाई के बगैर प्राप्त किया हुआ होता है।
कारण (R): यह ज्ञान हमारे बड़े होने और समाजीकरण की प्रक्रिया का एक अभिन्न हिस्सा है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

81. व्यक्तिगत सामाजिक पहचान के क्या-क्या पक्ष हो सकते हैं?
(A) गर्व, तनाव, आत्मविश्वास या विभिन्न प्रकार की उलझन के स्रोत।
(B) केवल गर्व और आत्मविश्वास के स्रोत।
(C) केवल तनाव और उलझन के स्रोत।
(D) इनका सामाजिक संरचना से कोई लेना-देना नहीं है।

82. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. समाजशास्त्र का ज्ञान केवल औपचारिक रूप से सिखाया जाता है।
2. सहज बोध समाजशास्त्र के लिए केवल एक बाधा है।
3. समाजशास्त्र को सीखने में पूर्व मान्यताओं को छोड़ने की प्रक्रिया शामिल है।
4. सहज बोध से प्राप्त ज्ञान हमेशा अकाट्य होता है।
5. 'स्ववाचकता' में आत्म-मुग्धता का भाव समाहित होता है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 3 सही है।
(B) केवल 1, 2, 4 और 5 गलत हैं।
(C) केवल 3 और 5 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

83. समाजशास्त्र हमें हमारे अपने सामाजिक समूह के हितों और मतों से परे देखने में कैसे मदद करता है?
(A) हमें अन्य समूहों से अलगाव सिखाकर।
(B) हमें पूरी तरह से आत्मकेंद्रित बनाकर।
(C) एक व्यवस्थित और आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रदान करके।
(D) हमें केवल अपने समूह के हितों की रक्षा करना सिखाकर।

84. निम्नलिखित में से किसने "व्यक्तिगत परेशानियों" एवं "सामाजिक मुद्दों" के बीच की कड़ियों को उजागर करने पर बल दिया?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) एमिल दुर्खीम
(C) मैक्स वेबर
(D) सी. राईट मिल्स

85. वह कौन सी प्रक्रिया है जो समाज एवं सामाजिक संबंधों के बारे में हमारे मतों, आस्थाओं एवं अपेक्षाओं को प्रारंभिक रूप देती है?
(A) आर्थिक विकास
(B) राजनीतिक परिवर्तन
(C) समाजीकरण
(D) तकनीकी उन्नति

86. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन गलत है?
(A) हमारा सामान्य बोध सामाजिक वास्तविकता का केवल एक हिस्सा दिखलाता है।
(B) सहज बोध से प्राप्त ज्ञान समाजशास्त्र के लिए हमेशा पूर्णतः अनुपयोगी होता है।
(C) समाजशास्त्र हमें यह सिखाता है कि हम स्वयं को 'बाहर से' कैसे देख सकते हैं।
(D) समाजशास्त्र को सीखने के लिए पूर्व धारणाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करना पड़ता है।

87. जनसंख्या के अध्ययन में समाजशास्त्री और जनसांख्यिकीविद् मुख्य रूप से किस प्रकार के प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित करते हैं?
(A) केवल जनसंख्या की गणना की विधियां क्या हैं?
(B) केवल विभिन्न राष्ट्रों की कुल जनसंख्या कितनी है?
(C) जनसंख्या के कौन से पक्ष सामाजिक तौर पर महत्त्वपूर्ण हैं?
(D) केवल जनसंख्या के प्राचीन आंकड़ों का संग्रह कैसे हो?

88. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (समूह/पहचान)
P. युवा पीढ़ी
Q. भाषायी समुदाय
R. आर्थिक वर्ग
S. सामाजिक समूह (जैसे जनजाति)

सूची II: (पहचान का आधार)
1. गुजराती भाषी
2. आयु-समूह
3. जनजाति
4. निम्न मध्यम वर्ग

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

89. भारतीय समाज की प्रमुख चिंताओं में से किसे एक महत्त्वपूर्ण स्थान दिया गया है?
(A) इसकी असीमित विषमता एवं अपवर्जन उत्पन्न करने की प्रवृत्ति।
(B) इसकी अत्यधिक सांस्कृतिक एकरूपता।
(C) बाहरी प्रभावों के प्रति इसका पूर्ण प्रतिरोध।
(D) आधुनिक मूल्यों का समाज में पूर्ण अभाव।

90. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): भारतीय समाज की विविधता कई सामाजिक चुनौतियों को जन्म देती है।
कारण (R): भारत एक सांस्कृतिक रूप से विविधतापूर्ण देश है जहाँ विभिन्न भाषायी, धार्मिक और जातीय समूह रहते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

91. समाजशास्त्रीय अध्ययन की प्रक्रिया में शामिल चरणों को तार्किक क्रम में रखें:
1. अपनी पूर्व धारणाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करना।
2. समाज का व्यवस्थित और वैज्ञानिक अध्ययन करना।
3. अपने सहज बोध के पूर्वाग्रहों को पहचानना।
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 1, 2
(C) 2, 3, 1
(D) 1, 3, 2

92. निम्नलिखित में से कौन-सा एक 'सामाजिक नक्शे' का आधारभूत घटक नहीं माना जाता?
(A) माता-पिता का व्यवसाय
(B) परिवार की आय
(C) धार्मिक और जातीय पृष्ठभूमि
(D) व्यक्ति की व्यक्तिगत सिनेमाई पसंद

93. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. जाति भारतीय उपमहाद्वीप की एक विशिष्ट सामाजिक संस्था है।
2. परिवार संस्था आधुनिक सामाजिक परिवर्तनों के प्रभाव से अछूती है।
3. जनजातीय समुदाय आज भी स्वयं को पूरी तरह से अपरिवर्तित मानते हैं।
4. बाज़ार केवल एक विशुद्ध आर्थिक संस्था है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 सही है।
(B) केवल 2 और 4 गलत हैं।
(C) केवल 1 और 3 सही हैं।
(D) सभी कथन गलत हैं।

94. समाजशास्त्र का अध्ययन अक्सर छात्रों को परिचित क्यों लगता है?
(A) क्योंकि इसकी विषयवस्तु अत्यंत सरल और एकआयामी होती है।
(B) क्योंकि वे समाज की विषयवस्तु के बारे में अपने दैनिक जीवन से कुछ न कुछ जानते हैं।
(C) क्योंकि इसमें कोई जटिल सिद्धांत नहीं होते।
(D) क्योंकि यह केवल सामान्य ज्ञान पर आधारित है।

95. नीचे दो कथन दिए गए। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
कथन 1: सामाजिक मुद्दे व्यक्तिगत नहीं बल्कि व्यापक समूहों से संबंधित होते हैं।
कथन 2: व्यक्तिगत परेशानियों के मूल कारण अक्सर समाज की वृहद संरचना में छिपे होते हैं।
(A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और कथन 2 दोनों गलत हैं।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

96. "समाजशास्त्र समाज के व्यवस्थित व वैज्ञानिक अध्ययन पर आधारित है।" इस कथन का सर्वाधिक सटीक अर्थ क्या है?
(A) समाजशास्त्र का प्रयोग केवल प्रयोगशालाओं में संभव है।
(B) इसके निष्कर्ष पूर्णतः अपरिवर्तनीय और शाश्वत होते हैं।
(C) यह व्यक्तिगत विश्वासों को ही वैज्ञानिक तथ्य मानता है।
(D) यह तर्क, प्रमाण और व्यवस्थित शोध विधियों का उपयोग करता है।

97. भारत में त्वरित आर्थिक परिवर्तनों को प्रेरित करने वाली प्रमुख शक्तियाँ कौन-सी रही हैं?
(A) उपनिवेशवाद और स्वतंत्रता के बाद की विकासशील नीतियाँ।
(B) प्राचीन व्यापारिक मार्ग और स्थानीय कृषि।
(C) केवल वैश्वीकरण और वर्तमान सूचना प्रौद्योगिकी।
(D) मध्यकालीन प्रशासनिक व्यवस्था और भू-राजस्व।

98. निम्नलिखित में से कौन-सा विषय सामाजिक विषमता और बहिष्कार के अध्ययन का हिस्सा नहीं है?
(A) जाति आधारित बहिष्कार।
(B) बाज़ार के विशुद्ध तकनीकी और गणितीय आयाम।
(C) लिंग आधारित भेदभाव।
(D) जनजातीय समुदायों की चुनौतियां।

99. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (समाजशास्त्रीय क्षेत्र)
P. जनसांख्यिकीय संरचना
Q. सामाजिक संस्थाएं

R. सामाजिक विषमता
S. सांस्कृतिक विविधता से जुड़ी चुनौतियाँ
सूची II: (संबंधित उदाहरण)
1. लिंग और जाति आधारित विभेद
2. जनसंख्या का आयु-पिरामिड
3. क्षेत्रीयता और सांप्रदायिकता
4. जाति और परिवार
(A) P-2, Q-4, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

100. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): 'अन्यथा सक्षम' लोगों के प्रति समाज की संवेदनशीलता एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक प्रश्न है।
कारण (R): समाज में अक्सर 'अन्यथा सक्षम' लोगों को विभिन्न प्रकार की बाधाओं और भेदभाव का सामना करना पड़ता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

101. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत विश्व के विशालतम जनसंख्या वाले देशों में से एक है।
2. जनसंख्या के स्वरूप को विकास की चुनौती और अवसर दोनों रूपों में देखा जा सकता है।
3. आधुनिक समाज में जाति व्यवस्था का महत्त्व पूरी तरह समाप्त हो गया है।
4. भारतीय परिवार संरचना में कोई बदलाव नहीं आ रहा है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 3 और 4 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

102. समाज के बारे में सहज ज्ञान की मुख्य सीमा क्या है?
(A) यह वैज्ञानिक रूप से हमेशा सटीक होता है।
(B) यह पूरी तरह से निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ होता है।
(C) यह अक्सर अपूर्ण, संकीर्ण और पूर्वाग्रहपूर्ण हो सकता है।
(D) यह केवल उच्च शिक्षा के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

103. समकालीन भारत में कौन-सा समूह 'पहचान के संकट' और उसे सुरक्षित करने की चुनौती का सामना कर रहा है?
(A) उच्च आय वर्ग।
(B) बहुसंख्यक धार्मिक समूह।
(C) राजनीतिक सत्ताधारी वर्ग।
(D) जनजातीय समुदाय।

104. भारत में विविधता के प्रबंधन के संदर्भ में कौन-सा निष्कर्ष सर्वाधिक तर्कसंगत है?
(A) अनेक जटिलताओं के बावजूद भारत ने विविधता और लोकतांत्रिक एकता का सफल समन्वय किया है।
(B) विविधता भारत के लिए केवल एक बोझ साबित हुई है।
(C) भारत में कोई वास्तविक सांस्कृतिक विविधता शेष नहीं है।
(D) सभी सांस्कृतिक अंतरों को समाप्त कर देना ही एकमात्र समाधान है।

105. समाजशास्त्र के अध्ययन में पूर्व-निर्मित धारणाओं को उधेड़ने की आवश्यकता क्यों होती है?
(A) क्योंकि पुरानी धारणाएँ हमेशा तकनीकी रूप से गलत होती हैं।
(B) क्योंकि यह एक जटिल खेल की तरह है।
(C) क्योंकि नई और वैज्ञानिक समझ विकसित करने के लिए पुरानी पक्षपाती समझ को हटाना आवश्यक है।
(D) क्योंकि समाजशास्त्र केवल नई चीजों के बारे में बात करता है।

106. सी. राईट मिल्स द्वारा वर्णित 'समाजशास्त्रीय कल्पना' (Sociological Imagination) का क्या अर्थ है?
(A) केवल अपनी व्यक्तिगत कल्पनाओं को समाज पर थोपना।
(B) व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों को व्यापक सामाजिक और ऐतिहासिक शक्तियों के साथ जोड़कर देखना।
(C) भविष्य के समाज की काल्पनिक तस्वीर बनाना।
(D) सामाजिक आंकड़ों को पूरी तरह से नजरअंदाज करना।

107. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. समाजशास्त्र हमें यह दिखाता है कि दूसरे हमें किस तरह देखते हैं।
2. इस प्रक्रिया को 'स्ववाचकता' (Reflexivity) कहा जाता है।
3. स्ववाचकता में आत्म-मुग्धता का होना अनिवार्य है।
4. स्ववाचकता अपनी दृष्टि को केवल दूसरों पर केंद्रित करने की क्षमता है।
5. यह क्षमता आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक होनी चाहिए।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 5 सही हैं।
(B) केवल 3 और 4 गलत हैं।
(C) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

108. यदि किसी देश में व्यापक स्तर पर बेरोजगारी फैली हुई है, तो समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से इसे क्या माना जाएगा?

(A) एक विशुद्ध व्यक्तिगत विफलता।
(B) केवल एक मनोवैज्ञानिक समस्या।
(C) एक आकस्मिक और अप्रासंगिक घटना।
(D) एक गंभीर सामाजिक मुद्दा।

109. भारतीय समाज में आए आर्थिक और सामाजिक बदलावों का सही ऐतिहासिक क्रम क्या है?
1. उपनिवेशवाद के प्रभाव से हुए संरचनात्मक परिवर्तन।
2. जाति सुधार और सामाजिक न्याय के आंदोलन।
3. स्वाधीनता के पश्चात अपनाई गई विकास की नीतियां।

(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 1, 3, 2
(D) 3, 1, 2

110. भारतीय समाज के समाजशास्त्रीय अध्ययन में 'सामाजिक संरचना' और 'सामाजिक परिवर्तन' के बीच क्या संबंध है?
(A) संरचना स्थिर होती है और परिवर्तन का उससे कोई संबंध नहीं होता।
(B) संरचना का अध्ययन ही परिवर्तन के विविध आयामों को समझने का आधार प्रदान करता है।
(C) संरचना का अध्ययन ही परिवर्तन के विविध आयामों को समझने का आधार प्रदान करता है।
(D) समाजशास्त्र केवल संरचना का अध्ययन करता है, परिवर्तन का नहीं।

111. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): समाजशास्त्र का अध्ययन अन्य प्राकृतिक विज्ञानों के अध्ययन से भिन्न होता है।
कारण (R): समाज के बारे में प्रत्येक व्यक्ति को समाजीकरण के कारण पहले से ही कुछ व्यावहारिक ज्ञान होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

112. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (सामाजिक पक्ष)
P. जनसांख्यिकीय संरचना
Q. सामाजिक संस्थाएँ
R. बाज़ार
S. सामाजिक विषमता
सूची II: (मुख्य प्रश्न/मुद्दा)
1. जाति और परिवार के स्वरूपों में बदलाव
2. जनसंख्या का विकास पर प्रभाव
3. 'अन्यथा सक्षम' लोगों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण
4. आर्थिक विनिमय पर उपनिवेशवाद का प्रभाव

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

113. सहज बोध (Common sense) से प्राप्त आस्थाओं के बारे में कौन-सा कथन सत्य है?
(A) ये सही हो सकती हैं, परंतु पक्षपाती या गलत होने की संभावना भी रखती हैं।
(B) ये हमेशा वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित होती हैं।
(C) ये आस्थाएँ अनिवार्य रूप से गलत ही होती हैं।
(D) ये समाजशास्त्र का एकमात्र आधार होती हैं।

114. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और गलत कथन चुनें:
(A) सहज बोध समाजशास्त्र के लिए बाधक और सहायक दोनों हो सकता है।
(B) समाजशास्त्र को सीखने के लिए सहज बोध का आलोचनात्मक परीक्षण करना पड़ता है।
(C) सहज बोध समाजशास्त्र के लिए बाधक और सहायक दोनों हो सकता है।
(D) 'स्ववाचकता' का अर्थ स्वयं का तटस्थ और आलोचनात्मक मूल्यांकन करना है।

115. भारतीय समाज की विविधता के संदर्भ में कौन-सा कथन सही है?
(A) यह समाज को पूरी तरह से स्थिर बनाता है।
(B) भारत में सांस्कृतिक विविधता अब समाप्त हो चुकी है।
(C) विविधता कई सामाजिक और राजनीतिक चुनौतियों को जन्म देती है जिन्हें प्रबंधित करना आवश्यक है।
(D) विविधता के कारण समाज में कोई भी सामान्य नियम लागू नहीं हो सकता।

116. समाजशास्त्र के अध्ययन से प्राप्त होने वाला अपेक्षित परिणाम कौन-सा नहीं है?
(A) स्वयं को 'बाहर से' देखने की क्षमता विकसित करना।
(B) व्यक्तिगत परेशानियों और सामाजिक संरचना के बीच संबंध को समझना।
(C) सामाजिक वास्तविकता के प्रति एक वैज्ञानिक और आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्राप्त करना।
(D) अपने पूर्व-निर्मित पूर्वाग्रहों को और अधिक कट्टर बनाना।

117. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. समाज का ज्ञान केवल पुस्तकों से ही प्राप्त किया जा सकता है।
2. समाजशास्त्र सीखने में पुराने संकुचित विचारों को त्यागने की प्रक्रिया शामिल है।
3. 'सामाजिक नक्शा' व्यक्ति की केवल भौगोलिक स्थिति को दर्शाता है।
4. भारतीय समाज में विविधता केवल एक आर्थिक समस्या है।
5. स्ववाचकता का अर्थ दूसरों की गलतियां निकालना है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 2 सही है।
(B) केवल 1, 3, 4 और 5 गलत हैं।
(C) केवल 2 और 3 सही हैं।
(D) सभी कथन गलत हैं।

118. किसी व्यक्ति का आर्थिक वर्ग मुख्य रूप से किन कारकों द्वारा निर्धारित होता है?
(A) केवल उसके धार्मिक विश्वासों से।
(B) परिवार की आय और व्यावसायिक स्थिति से।
(C) उसके भाषायी कौशल से।
(D) उसके व्यक्तिगत फिल्म या संगीत की पसंद से।

119. समाजशास्त्रीय अध्ययन के दो प्रमुख स्तंभ कौन-से माने जाते हैं?
(A) केवल इतिहास और राजनीति।
(B) केवल अर्थशास्त्र और गणित।
(C) सामाजिक संरचना और सामाजिक परिवर्तन।
(D) प्राचीन परंपराएं और धार्मिक नियम।

120. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): बाज़ार एक ऐसी सामाजिक संस्था है जिसने विश्व इतिहास की दिशा बदलने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
कारण (R): भारत में बाज़ारों का वर्तमान स्वरूप औपनिवेशिक प्रभाव और बाद की आर्थिक नीतियों का परिणाम है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

121. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सामाजिक विषमता का अध्ययन जाति, जनजाति और लिंग के आधार पर किया जाता है।
2. भारतीय समाज में जाति व्यवस्था को सुधारने के लिए ऐतिहासिक प्रयास किए गए हैं।
3. महिला आंदोलनों ने पितृसत्तात्मक सामाजिक संस्थाओं को चुनौती दी है।
4. हमारा आधुनिक समाज 'अन्यथा सक्षम' लोगों के प्रति पूर्णतः और आदर्श रूप से संवेदी हो चुका है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(C) केवल 2 और 4 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

122. समाजशास्त्र के संदर्भ में 'पूर्व धारणाओं को उधेड़ने' का क्या अर्थ है?
(A) समाज के स्थापित नैतिक मूल्यों को पूरी तरह नष्ट करना।
(B) वैज्ञानिक सिद्धांतों को स्वीकार करने से मना करना।
(C) समाज से कटकर एकांत में रहना।
(D) अपने सामाजिक समूह से प्रभावित पक्षपाती धारणाओं पर सवाल उठाना।

123. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. सहज बोध
Q. स्ववाचकता
R. व्यक्तिगत परेशानी
S. सामाजिक मुद्दा

सूची II: (विशेषता)
1. आत्म-निरीक्षण की क्षमता
2. वृहद सामाजिक संरचना से संबंधित
3. व्यक्तिगत स्तर पर अनुभव की गई समस्या
4. समाजीकरण से प्राप्त सामान्य समझ

(A) P-4, Q-1, R-3, S-2
(B) P-1, Q-4, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

124. एक बालक अपने परिवेश में रहकर समाज के बारे में जो प्राथमिक ज्ञान प्राप्त करता है, उसे क्या कहा जाता है?
(A) औपचारिक शिक्षा
(B) वैज्ञानिक शोध
(C) उच्च स्तरीय समाजशास्त्र
(D) सहज सामान्य बोध

125. समाजशास्त्र के अध्ययन में 'वस्तुनिष्ठता' प्राप्त करने के लिए क्या आवश्यक है?
(A) अपनी व्यक्तिगत और समूह-आधारित पूर्वधारणाओं का त्याग करना।
(B) केवल अपनी भावनाओं के आधार पर निष्कर्ष निकालना।
(C) समाज के बारे में किसी भी प्रकार का अध्ययन न करना।
(D) केवल धार्मिक ग्रंथों का सहारा लेना।

126. "सहज बोध" (Common sense) के बारे में कौन-सा तथ्य सही है?
(A) यह केवल पुस्तकालयों में पाया जाता है।
(B) यह हमारे दैनिक जीवन और बड़े होने की प्रक्रिया का हिस्सा है।
(C) यह हमेशा पक्षपात से मुक्त होता है।
(D) इसे प्राप्त करने के लिए विशेष प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

127. समाजशास्त्र व्यक्ति को अपनी सामाजिक स्थिति को 'बाहर से' देखने में कैसे सक्षम बनाता है?
(A) उसे समाज से पूरी तरह अलग करके।

(B) उसे केवल अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के बारे में बताकर।
(C) उसे दूसरों के दृष्टिकोण और व्यापक सामाजिक संदर्भों को समझने का साधन देकर।
(D) उसे समाज के नियमों की अनदेखी करना सिखाकर।

128. भारतीय जनसंख्या की संरचना के बारे में कौन-सा कथन सत्य है?
(A) भारत की जनसंख्या पूरी तरह से सजातीय है।
(B) जनसंख्या का सामाजिक विकास से कोई संबंध नहीं है।
(C) जनसंख्या का अध्ययन केवल सांख्यिकीय आंकड़ों तक सीमित है।
(D) युवा जनसंख्या का अनुपात भारतीय समाज में महत्त्वपूर्ण है।

129. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. जाति, जनजाति और परिवार भारतीय समाज की बुनियादी इकाइयाँ हैं।
2. जनजाति की अवधारणा समकालीन संदर्भों में निरंतर विकसित और परिभाषित हो रही है।
3. सामाजिक परिवर्तन के कारण परिवार के पारंपरिक स्वरुपों में बदलाव आ रहा है।
4. जाति व्यवस्था ने सदियों से समाजशास्त्रियों और विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 4 सही हैं।
(B) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(C) सभी 1, 2, 3 और 4 सही हैं।
(D) केवल 2 और 3 सही हैं।

130. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): सामाजिक यथार्थ को पूरी तरह समझने के लिए केवल सहज ज्ञान पर्याप्त नहीं है।
कारण (R): सहज ज्ञान प्रायः हमारे अपने सामाजिक परिवेश और हितों तक ही सीमित होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

131. 'अपवर्जन' या 'बहिष्कार' का संबंध मुख्य रूप से किससे है?
(A) सामाजिक समानता से
(B) आर्थिक विकास की उच्चतम दर से
(C) सामाजिक विषमता और भेदभाव से
(D) पूर्ण सामाजिक एकीकरण से

132. भारतीय समाज के अध्ययन में किन संस्थाओं को आधारभूत माना जाता है?
(A) केवल आधुनिक राजनीतिक दल
(B) केवल अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक संगठन
(C) केवल तकनीकी संस्थाएँ
(D) जाति, जनजाति और परिवार

133. समाजशास्त्र का वह भाग जो सामाजिक बदलावों और उनके प्रभावों पर केंद्रित होता है, क्या कहलाता है?
(A) सामाजिक परिवर्तन एवं विकास
(B) सामाजिक सांख्यिकी
(C) सामाजिक भूगोल
(D) विशुद्ध सिद्धांत

134. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन बाज़ार के सामाजिक पहलू को दर्शाता है?
(A) बाज़ार केवल वस्तुओं की कीमत तय करने का स्थान है।
(B) बाज़ार एक सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था है जो सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती है।
(C) बाज़ार का समाज की संरचना से कोई संबंध नहीं होता।
(D) बाज़ार केवल व्यक्तिगत लाभ का साधन है।

135. 'तुलनात्मक सामाजिक नक्शा' व्यक्ति की किस प्रकार सहायता करता है?
(A) उसे सड़क मार्ग बताने में।
(B) उसे केवल अपनी आर्थिक आय गिनने में।
(C) उसे विभिन्न सामाजिक श्रेणियों में अपनी स्थिति और दूसरों से अपने संबंधों को समझने में।
(D) उसे दूसरे देशों की यात्रा करने में।

136. समाजशास्त्रीय अध्ययन के प्रमुख विषयों को तार्किक रूप से व्यवस्थित करें:
1. जनसंख्या की जनसांख्यिकीय विशेषताएं।
2. सामाजिक संस्थाओं (जाति, परिवार) का विश्लेषण।
3. विषमता, बहिष्कार और सामाजिक न्याय के मुद्दे।
4. सांस्कृतिक विविधता और राष्ट्रीय एकता की चुनौतियाँ।

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 4, 3, 2, 1
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 3, 4, 1, 2

137. नीचे दो कथन दिए गए। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
कथन 1: समाजशास्त्र का विषय छात्रों को अक्सर जाना-पहचाना लगता है।
कथन 2: छात्र अपने दैनिक जीवन के अनुभवों के कारण समाज के बारे में पहले से ही कुछ व्यावहारिक धारणाएँ रखते हैं।
(A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

138. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित करें।
सूची I: (सामाजिक चुनौती)
P. जातिवाद
Q. सांप्रदायिकता
R. क्षेत्रीयता
S. भाषायी उग्रवाद
सूची II: (विवरण)
1. जाति आधारित संकीर्णता
2. धार्मिक समूहों के बीच संघर्ष
3. क्षेत्र आधारित अलगाव की भावना
4. भाषा आधारित उग्र पहचान
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-1, Q-1, R-1, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

139. "सामाजिक मुद्दे" के अंतर्गत निम्नलिखित में से किसे शामिल किया जा सकता है?
(A) एक व्यक्ति की अपनी निजी आलस की समस्या।
(B) किसी एक व्यक्ति का अपने मित्र से मनमुटाव।
(C) एक छात्र का अपनी पसंद का विषय न चुन पाना।
(D) समाज में प्रचलित व्यापक जातिगत भेदभाव और असमानता।

140. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): भारतीय राष्ट्र की स्थिरता इस बात पर निर्भर करती है कि यहाँ के अल्पसंख्यक कितने सुरक्षित महसूस करते हैं।
कारण (R): विविधतापूर्ण समाज में अल्पसंख्यकों के हितों और सुरक्षा की रक्षा करना लोकतांत्रिक मूल्यों का आधार है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

141. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. समाजशास्त्र का अध्ययन केवल अमूर्त सिद्धांतों तक सीमित है।
2. सहज बोध समाजीकरण के माध्यम से प्राप्त होता है।
3. स्ववाचकता व्यक्ति को अपने कार्यों का विश्लेषण करना सिखाती है।
4. सामाजिक मुद्दे और व्यक्तिगत परेशानियां एक-दूसरे से जुड़ी होती हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 2, 3 और 4 सही हैं।
(B) केवल 1, 2 और 4 गलत हैं।
(C) केवल 2 और 4 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

142. समाजशास्त्र में 'स्ववाचकता' (Reflexivity) व्यक्ति को क्या सिखाती है?
(A) केवल अपनी प्रशंसा करना।
(B) दूसरों के जीवन में अनावश्यक हस्तक्षेप करना।
(C) समाज के सभी नियमों को बिना सोचे-समझे स्वीकार करना।
(D) समाज में स्वयं की स्थिति और व्यवहार का आलोचनात्मक विश्लेषण करना।

143. भारतीय समाज की आधारभूत संरचना को समझने के लिए किन तत्वों का अध्ययन आवश्यक है?
(A) केवल आधुनिक शहरी जीवन।
(B) केवल प्राचीन स्थापत्य कला।
(C) जनसंख्या, जाति, जनजाति और परिवार जैसी सामाजिक संस्थाएं।
(D) केवल विदेशी व्यापार के आंकड़े।

144. सहज सामान्य बोध की प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) यह पूरी तरह से वैज्ञानिक प्रयोगों पर आधारित होता है।
(B) यह हमेशा समाज का एक निष्पक्ष और वैश्विक चित्र प्रस्तुत करता है।
(C) यह कभी भी समाजशास्त्रीय अध्ययन में बाधक नहीं बनता।
(D) यह समाज में रहने के दौरान बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के प्राप्त होता है।

145. सामाजिक विषमता के अध्ययन में 'लिंग' (Gender) को एक महत्त्वपूर्ण आधार क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि यह समाज में संसाधनों और अवसरों के असमान वितरण का एक प्रमुख कारण रहा है।
(B) क्योंकि यह केवल जैविक अंतर को दर्शाता है।
(C) क्योंकि इसका समाज की संरचना से कोई लेना-देना नहीं है।
(D) क्योंकि यह केवल व्यक्तिगत समस्या है।

146. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. समाजशास्त्र को सीखने के लिए पहले से मौजूद पक्षपाती ज्ञान को छोड़ना पड़ता है।
2. स्ववाचकता एक प्रकार का आत्म-निरीक्षण है।
3. एक व्यक्ति की बेरोजगारी का व्यापक सामाजिक कारणों से संबंध हो सकता है।
4. समाज में व्यापक बेरोजगारी एक संरचनात्मक सामाजिक समस्या है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 3 और 4 सही हैं।
(C) सभी 1, 2, 3 और 4 सही हैं।
(D) केवल 1 और 4 सही हैं।

147. समाजशास्त्र को सीखने की प्रक्रिया में 'भूलने' का अर्थ क्या है?
(A) याददाश्त को पूरी तरह मिटा देना।
(B) परीक्षा के बाद विषयों को याद न रखना।
(C) अपने सहज बोध और पूर्वाग्रहों को आलोचनात्मक रूप से परख कर उन्हें त्यागना।
(D) केवल नए तथ्यों को रटना।

148. भारतीय उपमहाद्वीप में किस सामाजिक संस्था को विद्वानों ने सबसे अधिक विशिष्ट और जटिल माना है?
(A) संसदीय व्यवस्था
(B) आधुनिक शिक्षा पद्धति
(C) औद्योगिक प्रबंधन
(D) जाति व्यवस्था

149. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'स्ववाचकता' के बारे में सही नहीं है?
(A) इसमें केवल आत्म-प्रशंसा और मुग्धता शामिल होती है।
(B) यह अपनी स्थिति का तटस्थ मूल्यांकन है।
(C) यह स्वयं को सामाजिक संदर्भ में देखने की क्षमता है।
(D) यह हमें दूसरों के दृष्टिकोण को समझने में मदद करती है।

150. समाजशास्त्र के पाठ्यक्रम में प्रयोगात्मक कार्यों और परियोजनाओं का समावेश क्यों किया जाता है?
(A) केवल छात्रों को व्यस्त रखने के लिए।
(B) ताकि छात्र समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का वास्तविक परिवेश में परीक्षण कर सकें।
(C) क्योंकि सैद्धांतिक परीक्षा पर्याप्त नहीं है।
(D) ताकि छात्र समाज से पूरी तरह अलग हो सकें।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण की एक मौलिक विशेषता यह है कि यह सामान्य बोध या सहज ज्ञान से भिन्न होता है। सहज ज्ञान हमारे व्यक्तिगत अनुभवों, पूर्वाग्रहों और सामाजिक परिवेश से निर्मित होता है। यह अक्सर अव्यवस्थित, असत्यापित और विरोधाभासी होता है। उदाहरण के लिए, एक सामान्य धारणा हो सकती है कि गरीबी व्यक्ति के आलस्य या अकर्मण्यता का परिणाम है। इसके विपरीत, समाजशास्त्र इस धारणा को चुनौती देता है और व्यवस्थित जांच के माध्यम से गरीबी के संरचनात्मक कारणों, जैसे कि आर्थिक असमानता, शिक्षा तक पहुँच की कमी, और सामाजिक बहिष्करण की पड़ताल करता है। समाजशास्त्री पीटर बर्जर के अनुसार, समाजशास्त्र का पहला ज्ञान 'चीजें वैसी नहीं हैं जैसी वे दिखती हैं' है। यह हमें सिखाता है कि हम अपने सहज बोध से प्राप्त सतही व्याख्याओं से परे देखें और सामाजिक घटनाओं के गहरे, अंतर्निहित पैटर्न और संबंधों को समझें। इसके लिए समाजशास्त्रीय कल्पना की आवश्यकता होती है, जैसा कि सी. राइट मिल्स ने प्रस्तावित किया, जो व्यक्तिगत समस्याओं को व्यापक सामाजिक मुद्दों से जोड़ने की क्षमता है। इस प्रकार, समाजशास्त्र केवल तथ्यों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह सोचने का एक तरीका है, जो हमारे आस-पास की दुनिया के बारे में हमारी धारणाओं को आलोचनात्मक रूप से परखने के लिए हमें वैचारिक उपकरण प्रदान करता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण और सहज ज्ञान के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) समाजशास्त्र व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित एक व्यवस्थित पद्धति है, जबकि सहज ज्ञान केवल सतही जांच पर।
(B) समाजशास्त्र व्यवस्थित जांच और संरचनात्मक विश्लेषण पर आधारित है, जबकि सहज ज्ञान व्यक्तिगत अनुभवों पर।
(C) समाजशास्त्र और सहज ज्ञान में कोई मौलिक अंतर नहीं है क्योंकि यह सामान्य ज्ञान का अकादमिक रूप है।
(D) सहज ज्ञान व्यावहारिक रूप से सदैव गलत होता है, जबकि समाजशास्त्र की वैज्ञानिक जांच हमेशा सही होती।

152. स्रोत के अनुसार, गरीबी के संबंध में एक सामान्य सहज ज्ञान की धारणा क्या हो सकती है?
(A) यह व्यक्ति के आलस्य और अकर्मण्यता का परिणाम है।
(B) यह आर्थिक असमानता का परिणाम है।
(C) यह सामाजिक बहिष्करण के कारण होती है।
(D) यह शिक्षा तक पहुँच की कमी के कारण होती है।

153. पीटर बर्जर का कथन "चीजें वैसी नहीं हैं जैसी वे दिखती हैं" समाजशास्त्र के बारे में क्या बताता है?
(A) समाजशास्त्र केवल उन सामाजिक पहलुओं का वैज्ञानिक अध्ययन करता है जो मानवीय आंखों के लिए अदृश्य हैं।
(B) समाजशास्त्र जटिलताओं को बढ़ाकर सामाजिक वास्तविकता को अधिक व्यवस्थित और सूक्ष्म बनाने का प्रयास करता।
(C) समाजशास्त्र सामाजिक घटनाओं की सतही व्याख्याओं से परे जाकर गहरे अंतर्निहित अर्थों की खोज करता है।
(D) सामाजिक दुनिया में सब कुछ एक भ्रम है और यह मानवीय अनुभवों के माध्यम से कभी स्पष्ट नहीं होता।

154. 'समाजशास्त्रीय कल्पना' की अवधारणा, जैसा कि सी. राइट मिल्स ने वर्णित किया है, किस क्षमता को संदर्भित करती है?
(A) काल्पनिक सामाजिक परिदृश्य बनाने की क्षमता।
(B) केवल व्यक्तिगत समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने की क्षमता।
(C) सामाजिक सिद्धांतों को पूरी तरह से अनदेखा करने की क्षमता।
(D) व्यक्तिगत समस्याओं को व्यापक सामाजिक मुद्दों से जोड़ने की क्षमता।

155. अनुच्छेद के अनुसार, समाजशास्त्र का अध्ययन करने का मुख्य लाभ क्या है?
(A) यह सामाजिक तथ्यों का एक बहुत बड़ा और विशाल

व्यवस्थित वैज्ञानिक डेटा संग्रह प्रदान करता है।
(B) यह हमारे आस-पास की दुनिया के बारे में हमारी स्थापित सहज धारणाओं की सदैव पुष्टि करता है।
(C) यह हमें आस-पास की दुनिया का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने हेतु वैचारिक उपकरण प्रदान करता है।
(D) यह सभी जटिल सामाजिक और आर्थिक समस्याओं का तत्काल और प्रभावी व्यवहारिक समाधान प्रदान करता।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारतीय समाज की संरचना को समझने के लिए जनसांख्यिकी एक महत्वपूर्ण उपकरण है। जनसांख्यिकी, जनसंख्या का वैज्ञानिक अध्ययन है, जो इसके आकार, संरचना, वितरण और समय के साथ इन विशेषताओं में परिवर्तन का विश्लेषण करती है। भारत के संदर्भ में, जनसांख्यिकीय संक्रमण का सिद्धांत विशेष रूप से प्रासंगिक है। यह सिद्धांत बताता है कि आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन के साथ, समाज उच्च जन्म और उच्च मृत्यु दर की स्थिति से निम्न जन्म और निम्न मृत्यु दर की स्थिति में परिवर्तित हो जाता है। भारत वर्तमान में इस संक्रमण के अंतिम चरण में है, जहाँ मृत्यु दर में तेजी से गिरावट आई है, लेकिन जन्म दर में गिरावट धीमी रही है। इसका परिणाम 'जनसंख्या विस्फोट' के रूप में हुआ है। हालांकि, हाल के दशकों में, शिक्षा के प्रसार, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और परिवार नियोजन कार्यक्रमों के कारण जन्म दर में भी उल्लेखनीय कमी आई है। इस संक्रमण का एक महत्वपूर्ण परिणाम 'जनसांख्यिकीय लाभांश' (Demographic Dividend) है। यह वह स्थिति है जब देश की कार्यशील आयु (15-64 वर्ष) की जनसंख्या का अनुपात आश्रित जनसंख्या (बच्चे और वृद्ध) के अनुपात से अधिक हो जाता है। यह स्थिति आर्थिक विकास के लिए एक अनूठा अवसर प्रदान करती, बशर्ते कि युवा कार्यबल को अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर प्रदान किए जाएँ। यदि इन अवसरों का लाभ नहीं उठाया गया तो यही लाभांश एक जनसांख्यिकीय बोझ में बदल सकता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. जनसांख्यिकी को किस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है?
(A) सामाजिक व्यवहार और मानवीय अंतःक्रियाओं का एक विस्तृत वैज्ञानिक अध्ययन।
(B) जनसंख्या का वैज्ञानिक अध्ययन, जिसमें उसका आकार, संरचना और वितरण शामिल है।
(C) राजनीतिक प्रणालियों और उनके सामाजिक प्रभाव का एक गहन तुलनात्मक विश्लेषण।
(D) आर्थिक विकास के मॉडलों और उनकी जनसांख्यिकीय प्रासंगिकता का तकनीकी अध्ययन।

157. जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत के अनुसार, समाज किस स्थिति से किस स्थिति की ओर परिवर्तित होता है?
(A) निम्न जन्म और निम्न मृत्यु दर से उच्च जन्म और उच्च मृत्यु दर की ओर।
(B) उच्च जन्म और निम्न मृत्यु दर से निम्न जन्म और उच्च मृत्यु दर की ओर।
(C) निम्न जन्म और उच्च मृत्यु दर से उच्च जन्म और निम्न मृत्यु दर की ओर।
(D) उच्च जन्म और उच्च मृत्यु दर से निम्न जन्म और निम्न मृत्यु दर की ओर।

158. स्रोत के अनुसार, भारत में जन्म दर में कमी आने का निम्नलिखित में से कौन सा एक कारण नहीं है?
(A) मृत्यु दर में वृद्धि।
(B) शिक्षा का प्रसार।
(C) स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार।
(D) परिवार नियोजन कार्यक्रम।

159. 'जनसांख्यिकीय लाभांश' की स्थिति कब उत्पन्न होती है?
(A) जब आश्रित जनसंख्या का अनुपात कार्यशील आयु की जनसंख्या से अधिक हो जाता है।
(B) जब जन्म दर और मृत्यु दर दोनों बहुत अधिक होती हैं।
(C) जब कार्यशील आयु की जनसंख्या का अनुपात आश्रित जनसंख्या से अधिक हो जाता है।
(D) जब देश की कुल जनसंख्या घटने लगती है।

160. जनसांख्यिकीय लाभांश को सफलतापूर्वक भुनाने के लिए क्या आवश्यक है?
(A) युवा कार्यबल को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर प्रदान करना।
(B) देश के संसाधनों के संरक्षण हेतु कुल जनसंख्या वृद्धि पर पूर्णतः प्रभावी रोक लगाना।
(C) आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने हेतु केवल वृद्ध जनसंख्या की जरूरतों पर ध्यान देना।
(D) देश के आर्थिक बोझ को कम करने हेतु विदेशों में कार्यबल के प्रवास को बढ़ावा देना।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

जाति भारतीय समाज की एक अद्वितीय और स्थायी विशेषता रही है। यह सामाजिक स्तरीकरण की एक जटिल प्रणाली है जो जन्म पर आधारित है और इसमें पदानुक्रम, व्यावसायिक विशेषज्ञता और सामाजिक संबंधों पर कठोर नियम शामिल हैं। परंपरागत रूप से, जाति व्यवस्था को 'बंद' प्रणाली माना जाता था, जहाँ सामाजिक गतिशीलता लगभग असंभव थी। हालाँकि, समकालीन भारत में जाति की प्रकृति और कार्यप्रणाली में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं। उपनिवेशवाद, औद्योगिकीकरण, शहरीकरण और स्वतंत्रता के बाद भारतीय राज्य द्वारा अपनाई गई सकारात्मक कार्रवाई की नीतियों (जैसे आरक्षण) ने जाति की पारंपरिक संरचना को चुनौती दी है। अब, जाति और व्यवसाय के बीच का सीधा संबंध कमजोर पड़ गया है, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों में। अंतर्जातीय विवाह अभी भी दुर्लभ हैं, लेकिन उनकी स्वीकार्यता धीरे-धीरे बढ़ रही है। सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तनों में से एक राजनीति के क्षेत्र में देखा गया है। जाति एक महत्वपूर्ण राजनीतिक संसाधन बन गई है, जहाँ जातीय पहचान को लामबंद करके राजनीतिक

शक्ति प्राप्त की जाती है। इस प्रक्रिया को समाजशास्त्री रजनी कोठारी ने 'जाति का राजनीतिकरण' कहा है। इस प्रकार, जबकि सामाजिक और अनुष्ठानिक क्षेत्रों में जाति का प्रभाव कुछ हद तक कम हुआ है, वहीं राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में इसने नए रूप धारण कर लिए हैं। यह दर्शाता है कि जाति एक स्थिर संस्था नहीं है, बल्कि यह समय और परिस्थितियों के साथ निरंतर बदलती और अनुकूलित होती रहती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. परंपरागत रूप से जाति व्यवस्था को 'बंद' प्रणाली क्यों माना जाता था?

(A) क्योंकि यह पूरी तरह से विशिष्ट और जटिल व्यावसायिक विशेषज्ञता के सिद्धांतों पर आधारित थी।
(B) क्योंकि यह ऐतिहासिक रूप से केवल ग्रामीण भारत की कृषि-आधारित सामाजिक व्यवस्था में मौजूद थी।
(C) क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप से राजनीतिक शक्ति और सत्ता के वितरण के साथ अटूट रूप से जुड़ी थी।
(D) क्योंकि इसमें सामाजिक गतिशीलता असंभव थी और स्थिति जन्म द्वारा निर्धारित होती थी।

162. निम्नलिखित में से किस कारक ने समकालीन भारत में पारंपरिक जाति संरचना को चुनौती नहीं दी है?

(A) शहरीकरण और औद्योगिकीकरण।
(B) जाति व्यवस्था का पूर्ण उन्मूलन।
(C) सरकार द्वारा आरक्षण की नीतियां।
(D) उपनिवेशवाद के दौरान हुए परिवर्तन।

163. 'जाति का राजनीतिकरण' की अवधारणा से क्या तात्पर्य है?

(A) राजनीति के क्षेत्र से जाति की भूमिका को पूरी तरह से और संवैधानिक रूप से समाप्त कर देना।
(B) केवल उच्च और प्रभावशाली जातियों का लोकतांत्रिक राजनीति के हर स्तर पर पूर्ण प्रभुत्व होना।
(C) राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के लिए जातीय पहचान का एक संसाधन के रूप में उपयोग।
(D) जातिगत आधार पर मतदान को चुनाव आयोग द्वारा पूरी तरह अवैध और दंडनीय घोषित करना।

164. समकालीन भारत में जाति के संबंध में कौन सा कथन सबसे सटीक है?

(A) आधुनिक भारत में जाति एक सामाजिक पहचान के रूप में पूरी तरह से अप्रासंगिक हो गई है।
(B) जाति का प्रभाव अब केवल पारंपरिक सामाजिक मेलजोल और सीमित अनुष्ठानिक क्षेत्रों तक ही है।
(C) जाति और व्यावसायिक चयन के बीच का पारंपरिक संबंध आधुनिक समय में पहले से मजबूत हुआ है।
(D) जाति ने अपना रूप बदल लिया है और राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में प्रभावशाली बनी है।

165. अनुच्छेद के अनुसार, समकालीन भारत में जाति व्यवस्था की प्रकृति कैसी है?

(A) यह एक गतिशील संस्था है जो समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलती और अनुकूलित होती है।
(B) यह एक अत्यंत स्थिर, जड़ और किसी भी प्रकार के परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधी एक संस्था है।
(C) यह मुख्य रूप से केवल एक ग्रामीण परिघटना है जो शहरी क्षेत्रों में पूरी तरह समाप्त हो गई है।
(D) यह भारतीय इतिहास की एक पूरी तरह से समाप्त हो चुकी और अब मृत मानी जाने वाली प्रणाली है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

बाजार को अक्सर केवल एक आर्थिक स्थान के रूप में देखा जाता है जहाँ वस्तुओं और सेवाओं का आदान-प्रदान होता है। हालाँकि, एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण बाजार को एक सामाजिक संस्था के रूप में देखता है जो समाज के अन्य पहलुओं से गहराई से जुड़ा हुआ है और सामाजिक संबंधों द्वारा आकारित होता है। अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने 'अदृश्य हाथ' की अवधारणा दी, जिसके अनुसार बाजार व्यक्तियों के स्व-हित से संचालित होता है और अंततः समाज के लिए सर्वोत्तम परिणाम देता है। समाजशास्त्रियों ने इस दृष्टिकोण को चुनौती दी है। कार्ल पोलानी जैसे विचारकों का तर्क है कि बाजार अर्थव्यवस्था हमेशा समाज के अन्य संस्थानों, जैसे कि नातेदारी, धर्म और राजनीति में 'अंतःस्थापित' (embedded) रही है। आधुनिक पूंजीवाद के उदय ने बाजार को इन सामाजिक बंधनों से 'मुक्त' करने का प्रयास किया, जिससे समाज पर बाजार के तर्क का प्रभुत्व स्थापित हो गया। भारत में, हम देख सकते हैं कि बाजार किस प्रकार सामाजिक रूप से अंतःस्थापित हैं। उदाहरण के लिए, कई व्यापारिक समुदाय विशिष्ट जाति या नातेदारी समूहों पर आधारित होते हैं, जहाँ व्यापार विश्वास और सामाजिक नेटवर्क पर बहुत अधिक निर्भर करता है। साप्ताहिक ग्रामीण 'हाट' केवल आर्थिक विनिमय के स्थान नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक मेलजोल, सूचना के आदान-प्रदान और नातेदारी संबंधों को मजबूत करने के केंद्र भी हैं। इस प्रकार, बाजार केवल लाभ और हानि की गणना का क्षेत्र नहीं है, बल्कि यह सामाजिक मानदंडों, मूल्यों और शक्ति संबंधों का भी एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण बाजार को किस रूप में देखता है?

(A) केवल वस्तुओं और सेवाओं के आर्थिक आदान-प्रदान के लिए बने एक विशुद्ध आर्थिक स्थान के रूप में।
(B) एक जीवंत सामाजिक संस्था के रूप में जो विभिन्न सामाजिक संबंधों और मानदंडों द्वारा आकारित होती है।
(C) एक पूरी तरह से तर्कसंगत, गणितीय रूप से सटीक और मानवीय त्रुटियों से मुक्त कुशल प्रणाली के रूप में।
(D) समाज के अन्य सभी संस्थानों, जैसे धर्म और नातेदारी, से पूर्णतः स्वतंत्र एक स्वायत्त इकाई के रूप में।

167. एडम स्मिथ की 'अदृश्य हाथ' की अवधारणा का मूल विचार क्या है?

(A) बाजार को सरकारी नीतियों और सख्त कानूनी हस्तक्षेप

द्वारा नियंत्रित और संचालित किया जाना चाहिए।
(B) व्यक्तियों का निजी स्व-हित सामूहिक रूप से व्यापक समाज के लिए अंततः लाभकारी होता है।
(C) बाजार की समस्त प्रक्रियाएं पूरी तरह से अराजक, अनियंत्रित, अदृश्य और पूर्णतः अप्रत्याशित होती हैं।
(D) सभी महत्वपूर्ण आर्थिक निर्णय केवल पारंपरिक सामाजिक संबंधों और नैतिक मूल्यों पर आधारित होने चाहिए।

168. कार्ल पोलानी के अनुसार, बाजार अर्थव्यवस्था पारंपरिक रूप से किसमें 'अंतःस्थापित' रही है?
(A) समाज के अन्य संस्थानों जैसे नातेदारी, धर्म और राजनीति में।
(B) केवल लाभ के तर्क में।
(C) वैश्विक व्यापार नेटवर्क में।
(D) पूरी तरह से व्यक्तिगत स्व-हित में।

169. भारत के संदर्भ में, बाजार के 'सामाजिक रूप से अंतःस्थापित' होने का क्या उदाहरण दिया गया है?
(A) शेयर बाजार और कमोडिटी मार्केट का तकनीक द्वारा पूरी तरह से ऑनलाइन और वैश्विक संचालन।
(B) बड़े शॉपिंग मॉल और बहुराष्ट्रीय श्रृंखलाओं में वस्तुओं की निश्चित मूल्य वाली दुकानें।
(C) विशिष्ट जाति या नातेदारी आधारित व्यापारिक समुदाय और मेलजोल के केंद्र ग्रामीण 'हाट'।
(D) विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा भारतीय औद्योगिक क्षेत्रों में किया जाने वाला प्रत्यक्ष निवेश।

170. अनुच्छेद का समग्र निष्कर्ष क्या है?
(A) बाजार एक शुद्ध रूप से आर्थिक परिघटना है जिसका सामाजिक संस्थाओं से कोई विशेष संबंध नहीं है।
(B) आधुनिक पूंजीवादी व्यवस्थाओं ने बाजार को सामाजिक संबंधों से पूरी तरह से मुक्त कर दिया है।
(C) ग्रामीण 'हाट' और स्थानीय मेलों का समकालीन भारतीय अर्थव्यवस्था में अब कोई महत्व नहीं रह गया है।
(D) बाजार सामाजिक मानदंडों, मूल्यों और शक्ति संबंधों से प्रभावित तथा उन्हें प्रभावित करने वाला क्षेत्र है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

सामाजिक विषमता और बहिष्करण भारतीय समाज की गहरी और स्थायी सच्चाइयाँ हैं। सामाजिक स्तरीकरण की कोई भी प्रणाली अंतर्निहित रूप से असमानता पैदा करती है, लेकिन जब यह असमानता व्यवस्थित, संरचनात्मक और पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलने वाली हो जाती है, तो यह सामाजिक बहिष्करण का रूप ले लेती है। सामाजिक बहिष्करण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कुछ समूहों को समाज की मुख्य धारा में पूरी तरह से भाग लेने के अवसरों और संसाधनों से वंचित कर दिया जाता है। यह केवल आर्थिक वंचना नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक भागीदारी से अलगाव भी शामिल है। भारत में, जाति, जनजाति और लिंग बहिष्करण के प्रमुख आधार रहे हैं। दलितों को ऐतिहासिक रूप से अस्पृष्यता के कलंक के कारण अत्यधिक भेदभाव और बहिष्करण का सामना करना पड़ा है। यद्यपि कानून द्वारा इसे समाप्त कर दिया गया है, फिर भी इसके अवशेष सामाजिक व्यवहार में मौजूद हैं। इसी तरह, आदिवासी समुदायों को उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और भौगोलिक अलगाव के कारण अक्सर मुख्य धारा के विकास के लाभों से बाहर रखा गया है। लैंगिक असमानता भी व्यापक है, जहाँ महिलाओं को शिक्षा, स्वास्थ्य, संपत्ति और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में पुरुषों की तुलना में कम अवसर मिलते हैं। सामाजिक बहिष्करण न केवल उन लोगों के लिए हानिकारक है जो इसका अनुभव करते हैं, बल्कि यह पूरे समाज की क्षमता को भी कमजोर करता है, क्योंकि यह प्रतिभा और संसाधनों की बर्बादी करता है और सामाजिक एकजुटता को कमजोर करता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. सामाजिक बहिष्करण को सबसे अच्छी तरह कैसे परिभाषित किया जा सकता है?
(A) केवल अत्यधिक आर्थिक गरीबी और बुनियादी संसाधनों की कमी वाली एक अस्थायी सामाजिक स्थिति।
(B) एक स्वैच्छिक प्रक्रिया जिसमें कोई व्यक्ति समाज से पूर्णतः अलग रहना पसंद करता है।
(C) वह प्रक्रिया जिससे समूहों को मुख्य धारा के संसाधनों और अवसरों से व्यवस्थित वंचित किया जाता है।
(D) एक अस्थायी स्थिति जिसे व्यक्तिगत प्रयासों द्वारा बहुत आसानी से बदला जा सकता है।

172. सामाजिक बहिष्करण और आर्थिक वंचना में क्या संबंध है?
(A) ये दोनों अवधारणाएं एक ही हैं और इनमें कोई सैद्धांतिक या व्यावहारिक भिन्नता नहीं पाई जाती है।
(B) इसमें आर्थिक वंचना के अतिरिक्त सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्रों से अलगाव भी शामिल है।
(C) सामाजिक बहिष्करण का मुख्य आधार और अंतिम परिणाम केवल दीर्घकालिक आर्थिक वंचना की स्थिति ही है।
(D) आर्थिक वंचना की स्थिति सामाजिक बहिष्करण की तुलना में कहीं अधिक व्यापक और प्रभावपूर्ण है।

173. अनुच्छेद के अनुसार, भारत में सामाजिक बहिष्करण के प्रमुख आधार क्या रहे हैं?
(A) केवल क्षेत्रीय और भाषाई अंतर।
(B) व्यक्तिगत पसंद और जीवन शैली।
(C) आयु और शैक्षिक योग्यता।
(D) जाति, जनजाति और लिंग।

174. आदिवासी समुदायों को अक्सर मुख्य धारा से बहिष्कृत क्यों महसूस होता है?
(A) उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और भौगोलिक अलगाव के कारण।
(B) क्योंकि वे शहरी जीवन पसंद नहीं करते।

(C) क्योंकि वे आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हैं।
(D) क्योंकि सरकार उन पर ध्यान नहीं देती।

175. सामाजिक बहिष्करण का समग्र समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(A) यह प्रतिस्पर्धा उत्पन्न कर समाज को मजबूत और अधिक कुशल बनाने में सहायक होता है।
(B) इसका समाज पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता, इसका प्रभाव केवल संबंधित बहिष्कृत समूहों पर होता है।
(C) यह प्रतिभा और संसाधनों की बर्बादी करके तथा सामाजिक एकजुटता को घटाकर समाज को कमजोर करता है।
(D) यह समाज के विभिन्न वर्गों के बीच स्वस्थ आर्थिक और सामाजिक प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देता है।

ANSWERS

1. (B) इसमें कोई भी शून्य से शुरुआत नहीं करता है।
समाजशास्त्र एक ऐसा अनूठा विषय है जिसमें शिक्षार्थी पहले से ही समाज के बारे में कुछ न कुछ व्यावहारिक ज्ञान रखते हैं। अन्य विषयों जैसे अर्थशास्त्र या भौतिकी के विपरीत, यहाँ छात्र पूरी तरह अनभिज्ञ नहीं होते हैं। समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से प्राप्त यह प्रारंभिक अनुभव ही विषय की विषय-वस्तु को विशिष्ट और चुनौतीपूर्ण बनाता है।

2. (A) क्योंकि यह हमारे बड़े होने की प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण अभिन्न हिस्सा है।
समाज के बारे में हमारी समझ स्वाभाविक प्रतीत होती है क्योंकि हम एक सामाजिक वातावरण में निरंतर अंतःक्रिया करते हुए बढ़ते हैं। जन्म से ही परिवार, पड़ोस और स्कूल हमें अनौपचारिक रूप से सामाजिक नियमों, मूल्यों और संबंधों की शिक्षा देते हैं। इसी कारणवश यह ज्ञान हमारे व्यक्तित्व का हिस्सा बन जाता है और हमें सहज लगता है।

3. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
एक बच्चा जन्म से ही सामाजिक अंतःक्रियाओं में शामिल होता है, जिससे वह संबंधों और समाज की बुनियादी समझ विकसित कर लेता है। हालाँकि, यह कहना गलत होगा कि समाज का ज्ञान केवल औपचारिक शिक्षा से ही प्राप्त होता है। अनौपचारिक माध्यम जैसे परिवार और मित्र मंडल भी सामाजिक समझ विकसित करने में बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

4. (D) छात्र विषयवस्तु से पहले से ही परिचित और सहज महसूस करने लगते हैं।
समाजशास्त्र के अध्ययन में पहले से प्राप्त व्यावहारिक ज्ञान छात्रों के लिए एक शुरुआती बिंदु का कार्य करता है। चूंकि वे पहले से ही समाज का हिस्सा हैं, इसलिए वे जटिल अवधारणाओं को अपने दैनिक जीवन के अनुभवों से जोड़कर देख सकते हैं। यह पूर्व-परिचय विषय को अधिक रोचक बनाता है और सीखने की प्रक्रिया को कुछ हद तक आसान कर देता है।

5. (C) पूर्व बुनाई को उधेड़कर नए सिरे से सामाजिक समझ विकसित करने के लिए।
समाजशास्त्र को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने के लिए हमारे पहले से बने पूर्वाग्रहों और पक्षपाती धारणाओं को हटाना अनिवार्य होता है। जिस तरह एक पुराने स्वेटर को उधेड़कर नया बनाया जाता है, वैसे ही हमें अपनी संकुचित सामाजिक समझ को त्यागना पड़ता है। यह प्रक्रिया हमें अधिक व्यापक, निष्पक्ष और व्यवस्थित तरीके से समाज को देखने में सक्षम बनाती है।

6. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
सहज बोध समाज के बारे में पहले से प्राप्त वह ज्ञान है जो समाजीकरण से मिलता है। स्ववाचकता का अर्थ स्वयं को बाहरी दृष्टिकोण से देखने और आलोचनात्मक निरीक्षण करने की क्षमता है। अपूर्णता का तात्पर्य संपूर्ण ज्ञान के अभाव से है, जबकि पूर्वाग्रहपूर्ण ज्ञान वह है जो निष्पक्ष न होकर किसी विशेष हित या मत की ओर झुका होता है।

7. (D) क्योंकि यह हमारे अपने सामाजिक समूह के हितों और मतों की तरफ झुका होता है।
समाज के बारे में हमारा सामान्य ज्ञान अक्सर संकुचित होता है क्योंकि यह हमारे विशिष्ट सामाजिक परिवेश से प्रभावित होता है। हम अक्सर केवल उसी नज़रिए से समाज को देखते हैं जो हमारे अपने समूह या वर्ग के लिए अनुकूल होता है। यही कारण है कि यह ज्ञान अधूरा और पक्षपाती हो सकता है, जो पूर्ण सामाजिक वास्तविकता को नहीं दर्शाता।

8. (C) केवल 1, 2 and 4 सही हैं।
समाज के बारे में अधिकांश ज्ञान हमें अनौपचारिक रूप से प्राप्त होता है, जिसे वैज्ञानिक अध्ययन के लिए भूलना या आलोचनात्मक रूप से परखना पड़ता है। समाजशास्त्र हमें यह क्षमता प्रदान करता है कि हम स्वयं को दूसरों की दृष्टि से देख सकें। सामान्य बोध अक्सर पक्षपाती होता है, इसलिए यह समाज का हमेशा एक निष्पक्ष और संपूर्ण चित्र प्रस्तुत नहीं करता है।

9. (C) अपनी दृष्टि को स्वयं की ओर घुमाकर स्वयं का आलोचनात्मक निरीक्षण करना।
स्ववाचकता एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपनी चेतना को स्वयं की स्थिति और कार्यों की ओर मोड़ता है। यह आत्म-मुग्धता के विपरीत है क्योंकि इसमें स्वयं का निष्पक्ष और आलोचनात्मक मूल्यांकन शामिल होता है। यह क्षमता समाजशास्त्रियों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह उन्हें अपने शोध में व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों को पहचानने और उनसे बचने में मदद करती है।

10. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
समाजशास्त्र की शिक्षा में अक्सर पुरानी, अनौपचारिक और पक्षपाती धारणाओं को त्यागने की प्रक्रिया सबसे पहले आती है। हमारा सामान्य बोध अक्सर एक विशिष्ट सामाजिक पृष्ठभूमि से विकसित होता है, जो सामाजिक वास्तविकता का केवल एक ही पक्ष दिखाता है। इसलिए, वैज्ञानिक समझ विकसित करने के लिए इस पहले से प्राप्त ज्ञान का आलोचनात्मक विश्लेषण करना और पूर्वाग्रहों को छोड़ना अत्यंत आवश्यक होता है।

11. (D) विभिन्न सामाजिक समूहों जैसे आयु, लिंग, वर्ग और जाति में स्थिति।
एक तुलनात्मक सामाजिक नक्शा व्यक्ति को यह समझने में मदद करता है कि वह समाज के वृहद ताने-बाने में कहाँ खड़ा है। यह नक्शा केवल भौगोलिक स्थान नहीं, बल्कि सामाजिक

श्रेणियों जैसे वर्ग, जाति और धर्म के आधार पर उसकी स्थिति स्पष्ट करता है। इससे व्यक्ति अपनी पहचान और समाज के अन्य समूहों के साथ अपने संबंधों को बेहतर ढंग से समझ पाता है।

12. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
समाजशास्त्र व्यक्ति को यह समझने में सहायता करता है कि उसकी निजी कठिनाइयाँ अक्सर व्यापक सामाजिक संरचना और ऐतिहासिक परिवर्तनों से जुड़ी होती हैं। यह विषय केवल बड़े मुद्दों का ही नहीं, बल्कि व्यक्ति और समाज के बीच के सूक्ष्म संबंधों का भी गहराई से अध्ययन करता है। इसलिए यह कहना गलत है कि समाजशास्त्र केवल बड़े सामाजिक मुद्दों तक ही सीमित रहता है।

13. (C) व्यक्तिगत परेशानी व्यक्तिगत होती है, जबकि सामाजिक मुद्दा बड़े समूहों से संबंधित होता है।
सी. राईट मिल्स के अनुसार, व्यक्तिगत परेशानी एक व्यक्ति के चरित्र और उसके तात्कालिक संबंधों की सीमाओं के भीतर होती है। इसके विपरीत, सामाजिक मुद्दा एक ऐसा मामला है जिसका संबंध संपूर्ण समाज की संस्थाओं और संरचना से होता है। समाजशास्त्र इन दोनों के बीच के जटिल संबंधों को स्पष्ट करता है ताकि व्यक्ति अपनी समस्याओं के व्यापक सामाजिक कारणों को समझ सके।

14. (D) किसी एक व्यक्ति का अपने भविष्य की नौकरी को लेकर चिंतित होना।
जब कोई समस्या केवल एक व्यक्ति के निजी स्तर पर अनुभव की जाती है और उसकी अपनी परिस्थितियों तक सीमित होती है, तो उसे व्यक्तिगत परेशानी कहते हैं। नौकरी की चिंता एक व्यक्तिगत सरोकार है जो व्यक्ति के निजी जीवन और निर्णयों से संबंधित है। इसके विपरीत, व्यापक बेरोजगारी या जातिगत तनाव जैसे मामले सामाजिक मुद्दे होते हैं क्योंकि वे बड़े समूहों को प्रभावित करते हैं।

15. (A) समाजशास्त्र केवल व्यक्ति की व्यक्तिगत परेशानियों को समझने में मदद करता है।
समाजशास्त्र केवल व्यक्तिगत समस्याओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह व्यक्तिगत अनुभवों और व्यापक सामाजिक मुद्दों के बीच के संबंधों को उजागर करता है। भारतीय समाज के संदर्भ में, यह विभिन्न भाषायी, धार्मिक और क्षेत्रीय पहचानों का विश्लेषण करता है। यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक संरचना में व्यक्ति का स्थान उसके जीवन के अवसरों और पहचान को किस प्रकार गहराई से प्रभावित करता है।

16. (B) समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से।
भारतीय समाज जैसे जटिल और विविधतापूर्ण समाज को समझने के लिए समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण सबसे अधिक व्यापक और संतुलित होता है। यह दृष्टिकोण केवल ऐतिहासिक या आर्थिक पहलुओं तक सीमित न रहकर सामाजिक संबंधों, संस्थाओं और संरचनाओं का व्यवस्थित अध्ययन करता है। इससे हमें समाज की विषमताओं, परिवर्तनों और विविधता के प्रबंधन की एक समग्र और वस्तुनिष्ठ समझ प्राप्त करने में मदद मिलती है।

17. (B) यह समाज में हो रहे बदलावों की प्रकृति और दिशा को स्पष्ट करता है।
सामाजिक परिवर्तन और विकास के अध्ययन से हमें यह पता चलता है कि भारतीय समाज समय के साथ किस तरह विकसित हुआ है। यह विश्लेषण न केवल सामाजिक संरचना की वर्तमान स्थिति को समझने में मदद करता है, बल्कि भविष्य की प्रवृत्तियों को भी इंगित करता है। परिवर्तन की प्रक्रियाओं को जानकर ही हम समाज की जटिलताओं और उसमें आने वाली चुनौतियों का सही आकलन कर सकते हैं।

18. (A) 2, 3, 4, 1
समाजशास्त्रीय अध्ययन की शुरुआत हमारे स्वाभाविक सामान्य बोध से होती है जो समाजीकरण के दौरान प्राप्त होता है। इसके बाद, वैज्ञानिक समझ विकसित करने के लिए इस सहज बोध को जानबूझकर भूलने और पूर्व-धारणाओं को उधेड़ने की आवश्यकता पड़ती है। अंततः, इन पुरानी धारणाओं के हटने के बाद ही छात्र समाज का एक व्यवस्थित, निष्पक्ष और पूरी तरह वैज्ञानिक अध्ययन करना सीख पाते हैं।

19. (C) जनसंख्या की जनसांख्यिकीय संरचना पर।
भारतीय जनसंख्या के समाजशास्त्रीय अध्ययन में केवल संख्या की गणना नहीं की जाती, बल्कि उसकी आंतरिक बनावट का विश्लेषण किया जाता है। इसमें आयु वितरण, लिंगानुपात, साक्षरता दर और ग्रामीण-शहरी विभाजन जैसे महत्त्वपूर्ण पहलुओं पर विचार किया जाता है। यह संरचनात्मक विश्लेषण ही हमें यह समझने में मदद करता है कि जनसंख्या देश के सामाजिक और आर्थिक विकास को किस तरह प्रभावित कर सकती है।

20. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
भारत की विशाल जनसंख्या और उसकी वृद्धि दर को देखते हुए इसके सर्वाधिक आबादी वाला देश बनने की संभावना एक सांख्यिकीय तथ्य है। जनसांख्यिकीविद् और समाजशास्त्री निश्चित रूप से जनसंख्या के विभिन्न संरचनात्मक और सामाजिक पहलुओं का वैज्ञानिक अध्ययन करते हैं। हालाँकि, जनसंख्या अध्ययन की यह प्रक्रिया स्वयं जनसंख्या वृद्धि का कारण नहीं है, बल्कि यह केवल उस प्रवृत्ति का व्यवस्थित विश्लेषण करती है।

21. (C) क्या हमारी जनसंख्या विकास में एक बाधा है या एक मदद?
जनसंख्या के समाजशास्त्रीय अध्ययन में यह एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और बहस का विषय है कि विशाल आबादी देश की प्रगति में क्या भूमिका निभाती है। जहाँ कुछ विद्वान इसे बोझ मानते हैं, वहीं अन्य इसे 'जनसांख्यिकीय लाभांश' के रूप में देखते हैं। यह प्रश्न केवल आंकड़ों तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज की उत्पादन क्षमता, संसाधनों के वितरण और भविष्य की संभावनाओं से भी जुड़ा है।

22. (A) केवल 1 और 4 गलत हैं।
सहज बोध वैज्ञानिक अध्ययन पर नहीं, बल्कि अनौपचारिक समाजीकरण पर आधारित होता है और अक्सर पक्षपाती होता है। एक सामाजिक मुद्दा कभी भी केवल एक व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि यह व्यापक सामाजिक संरचना को प्रभावित करता है। इसके विपरीत, सी. राईट मिल्स ने व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों को जोड़ा है और स्ववाचकता का अर्थ स्वयं का आलोचनात्मक निरीक्षण करना ही है।

23. (D) जाति, जनजाति एवं परिवार।
भारतीय समाज की बनावट को समझने के लिए जाति, जनजाति और परिवार जैसी संस्थाओं को इसके बुनियादी स्तंभों के रूप में देखा जाता है। ये संस्थाएँ सदियों से भारतीय सामाजिक जीवन को निर्देशित और प्रभावित करती रही हैं। समाजशास्त्रीय विश्लेषण में इन इकाइयों का अध्ययन अत्यंत अनिवार्य है क्योंकि ये न केवल व्यक्ति की पहचान तय करती हैं बल्कि सामाजिक अंतःक्रियाओं को भी गहराई से प्रभावित करती हैं।

24. (A) जाति
जाति व्यवस्था भारतीय उपमहाद्वीप की एक अत्यंत विशिष्ट और अनूठी सामाजिक संस्था मानी गई है जो विश्व के अन्य समाजों में इस रूप में नहीं पाई जाती। यह एक जन्म आधारित सोपानक्रम है जो व्यक्ति के सामाजिक दर्जे, व्यवसाय और संबंधों को निर्धारित करता है। भारतीय समाज की संरचना को समझने के लिए जाति व्यवस्था का गहराई से विश्लेषण करना समाजशास्त्रियों के लिए सदैव प्राथमिक रहा है।

25. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
जनसांख्यिकीय संरचना सीधे तौर पर जनसंख्या की बनावट और विशेषताओं से संबंधित होती है। जाति, जनजाति और परिवार को भारतीय समाज की आधारभूत रचना इकाइयों के रूप में देखा जाता है। बाज़ार का समाजशास्त्रीय अध्ययन आर्थिक विनिमय की सामाजिक प्रकृति को उजागर करता है, जबकि विषमता और बहिष्कार का विश्लेषण समाज में प्रचलित विभेदीकरण, भेदभाव और विभिन्न समूहों के शोषण पर केंद्रित होता है।

26. (A) जनजातीय समुदाय स्वयं को समकालीन भारत में कैसे परिभाषित करते हैं?
वर्तमान समय में 'जनजाति' की संकल्पना केवल ऐतिहासिक या मानवशास्त्रीय आंकड़ों तक सीमित नहीं रह गई है। मुख्य प्रश्न यह है कि ये समुदाय आधुनिकता, विकास और राजनीतिक परिवर्तनों के बीच अपनी विशिष्ट पहचान को कैसे देखते हैं। अपनी अस्मिता को बचाने और संसाधनों पर अधिकारों के लिए किए जा रहे उनके संघर्षों ने इस अवधारणा को समाजशास्त्रीय बहस के केंद्र में ला दिया है।

27. (D) भारत में पाए जाने वाले परिवार के विविध स्वरूपों में हो रहे परिवर्तन।
समाजशास्त्रीय चर्चा में परिवार को एक स्थिर इकाई के रूप में नहीं, बल्कि निरंतर परिवर्तनशील संस्था के रूप में देखा जाता है। आधुनिकता, शहरीकरण और आर्थिक बदलावों के कारण परिवार के पारंपरिक स्वरूपों में व्यापक बदलाव आए हैं। विद्वान इस बात का अध्ययन करते हैं कि ये परिवर्तन सदस्यों के बीच के संबंधों, भूमिकाओं और सामाजिक संरचना को किस प्रकार प्रभावित कर रहे हैं।

28. (B) यह हमारे सहज बोध को बिना किसी आलोचना के स्वीकार करता है।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण कभी भी सामान्य बोध को बिना जांचे-परखे स्वीकार नहीं करता, बल्कि यह उसे आलोचनात्मक रूप से चुनौती देता है। यह विषय व्यवस्थित और वैज्ञानिक विधियों का उपयोग करके सामाजिक वास्तविकता की गहरी समझ प्रदान करता है। यह हमें स्वयं को एक तटस्थ बाहरी व्यक्ति के रूप में देखना सिखाता है और व्यक्तिगत चिंताओं को वृहद सामाजिक मुद्दों से जोड़कर विश्लेषित करता है।

29. (C) बाज़ार
बाज़ार केवल वस्तुओं के व्यापार का स्थान नहीं है, बल्कि इसे सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन का एक अत्यंत शक्तिशाली कारक माना गया है। इसने न केवल उत्पादन के तरीकों को बदला है, बल्कि सामाजिक संबंधों, वर्गों के गठन और संस्कृतियों के बीच विनिमय को भी प्रभावित किया है। विश्व इतिहास में कई बड़े बदलाव बाज़ारों के विस्तार और उनके बदलते स्वरूपों के कारण ही संभव हुए हैं।

30. (A) केवल 1 और 2 सही हैं।
भारत में आर्थिक परिवर्तनों की प्रक्रिया में ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने आधारभूत संरचनात्मक बदलाव लाए थे। स्वतंत्रता के पश्चात सरकार द्वारा अपनाई गई विकास नीतियों ने भी अर्थव्यवस्था और समाज के स्वरूप को बदलने में बड़ी भूमिका निभाई। बाज़ार केवल एक आर्थिक इकाई नहीं है, बल्कि इसके गहरे सामाजिक-सांस्कृतिक आयाम होते हैं, जिनका अध्ययन आधुनिक समाजशास्त्र में बहुत विस्तार से किया जाता है।

31. (A) क्योंकि हमारा पहले से प्राप्त ज्ञान अक्सर एक विशिष्ट और पूर्वाग्रहपूर्ण दृष्टिकोण से होता है।
समाजशास्त्र में 'भूलने की प्रक्रिया' अनिवार्य है क्योंकि जो ज्ञान हमें सहज रूप से मिलता है, वह अक्सर हमारे अपने सामाजिक परिवेश तक सीमित होता है। यह ज्ञान अधूरा और पक्षपाती हो सकता है, जो वस्तुनिष्ठ अध्ययन में बाधा डालता है। इसलिए, वैज्ञानिक और निष्पक्ष समझ विकसित करने के लिए इन पूर्व-निर्मित संकुचित धारणाओं को त्यागना और नए सिरे से विश्लेषण करना आवश्यक होता है।

32. (B) समीक्षा अधिक और आत्म-मुग्धता कम।
स्ववाचकता की प्रक्रिया में व्यक्ति को स्वयं के प्रति बहुत अधिक ईमानदार और आलोचनात्मक होना पड़ता है। इसमें अपनी उपलब्धियों पर गर्व करने या आत्म-मुग्ध होने के बजाय अपने कार्यों और विचारों की गहराई से समीक्षा करनी चाहिए। यह प्रक्रिया हमें अपने भीतर छिपे पूर्वाग्रहों को पहचानने में मदद करती है, जिससे समाज का अध्ययन अधिक वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक बन पाता है।

33. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
सी. राईट मिल्स का मुख्य तर्क यही था कि एक व्यक्ति की निजी परेशानियाँ वास्तव में समाज के व्यापक मुद्दों का ही प्रतिबिंब होती हैं। इन दोनों के बीच गहरा और अटूट संबंध होता है, जिसे समाजशास्त्र उजागर करता है। इसलिए यह कहना पूरी तरह गलत है कि व्यक्तिगत और सामाजिक घटनाएँ अलग-अलग हैं। समाजशास्त्र इन दोनों को एक सूत्र में पिरोकर समझाता है।

34. (A) विषमता एवं अपवर्जन (बहिष्कार)।
सामाजिक स्तरीकरण का मूल आधार समाज में मौजूद संसाधनों, प्रतिष्ठा और अवसरों का असमान वितरण है। समाजशास्त्री मुख्य रूप से इस बात का अध्ययन करते हैं कि समाज में विषमता कैसे पैदा होती है और कुछ समूहों को मुख्यधारा से कैसे बाहर रखा जाता है। यह विश्लेषण हमें सामाजिक न्याय और समानता के मार्ग में आने वाली बाधाओं को समझने में सहायता करता है।

35. (C) जाति, जनजाति, लिंग एवं 'अन्यथा सक्षम' लोगों के संदर्भ में।
समाज में विषमता और बहिष्कार केवल आर्थिक आधार पर नहीं होता, बल्कि इसके कई अन्य महत्त्वपूर्ण सामाजिक आयाम भी होते हैं। जाति आधारित भेदभाव, जनजातीय समुदायों का अलगाव, लैंगिक असमानता और शारीरिक रूप से अक्षम लोगों के प्रति उपेक्षा इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इन विभिन्न श्रेणियों का अध्ययन करने से ही हमें समाज में व्याप्त गहरे शोषण और अपवर्जन की वास्तविक प्रकृति का ज्ञान होता है।

36. (D) जाति व्यवस्था को मिटाने या उसमें सुधार लाने के संयोजित प्रयास।
भारतीय इतिहास और वर्तमान में जाति व्यवस्था की कठोरता को कम करने और उसमें सुधार करने के लिए निरंतर सामूहिक प्रयास हुए हैं। इनमें समाज सुधारकों के आंदोलन, दलितों के संघर्ष और राज्य द्वारा बनाए गए कानून एवं आरक्षण जैसी नीतियां शामिल हैं। ये सभी प्रयास सामाजिक न्याय स्थापित करने और जाति आधारित भेदभाव एवं छुआछूत जैसी कुरीतियों को समाप्त करने के उद्देश्य से किए गए हैं।

37. (C) सहज बोध - व्यवस्थित ज्ञान
सहज बोध और व्यवस्थित ज्ञान एक-दूसरे के विपरीत अवधारणाएँ हैं। सहज बोध समाजीकरण से प्राप्त वह सामान्य समझ है जो अक्सर अनौपचारिक और पक्षपाती होती है। इसके विपरीत, व्यवस्थित ज्ञान वैज्ञानिक शोध, तर्क और प्रमाणों पर आधारित होता है। समाजशास्त्र सहज बोध को चुनौती देकर एक व्यवस्थित और वस्तुनिष्ठ समझ विकसित करने का प्रयास करता है, न कि उसे ज्यों का त्यों स्वीकार करता है।

38. (B) हमारा समाज उनकी आवश्यकताओं के प्रति किस सीमा तक संवेदी है?
'अन्यथा सक्षम' व्यक्तियों के संदर्भ में मुख्य सामाजिक चिंता उनकी शारीरिक अक्षमता नहीं, बल्कि समाज का उनके प्रति रवैया है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह महत्त्वपूर्ण है कि हमारी संस्थाएँ और भौतिक ढाँचा उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए कितने तैयार हैं। यह संवेदनशीलता ही तय करती है कि वे समाज की मुख्यधारा में कितनी गरिमा के साथ शामिल हो सकते हैं।

39. (A) 4, 2, 1, 3
भारतीय समाज के अध्ययन की तार्किक शुरुआत जनसंख्या की जनसांख्यिकीय संरचना को समझने से होती है। इसके पश्चात, बुनियादी सामाजिक इकाइयों जैसे जाति, जनजाति और परिवार का विश्लेषण किया जाता है। फिर बाज़ार के सामाजिक आयामों और आर्थिक विनिमय की भूमिका पर चर्चा की जाती है। अंत में, समाज में मौजूद सांस्कृतिक विविधता और उससे उत्पन्न होने वाली चुनौतियों का गहराई से अध्ययन किया जाता है।

40. (A) उन सामाजिक संस्थाओं पर जिन्होंने महिलाओं का शोषण किया।
महिला आंदोलनों का सबसे गहरा प्रभाव उन पितृसत्तात्मक ढाँचों और सामाजिक मानदंडों पर पड़ा है जो सदियों से महिलाओं के दमन का कारण रहे थे। इन आंदोलनों ने न केवल महिलाओं की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार की माँग की, बल्कि परिवार, कार्यस्थल और कानून जैसी संस्थाओं में बुनियादी बदलावों को भी प्रेरित किया। इससे समाज में महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता और समानता की भावना बढ़ी है।

41. (A) केवल 1, 4 और 5 सही हैं।
समाजशास्त्र के अध्ययन में पूर्व ज्ञान जहाँ विषय से जुड़ाव पैदा करता है, वहीं पूर्वाग्रहों के कारण बाधा भी बन सकता है। यह विषय हमें स्वयं को दूसरों के दृष्टिकोण से देखना सिखाता है और यह स्पष्ट करता है कि हमारा ज्ञान हमारे सामाजिक संदर्भों से गहराई से प्रभावित होता है। सहज बोध हमेशा वैज्ञानिक नहीं होता और स्ववाचकता दृष्टि को बाहर के बजाय स्वयं पर केंद्रित करती है।

42. (A) भारतीय समाज की असीम विविधता से उत्पन्न कठिन चुनौतियों के बारे में।
भारतीय समाज भाषायी, धार्मिक, क्षेत्रीय और जातीय आधार पर अत्यंत विविधतापूर्ण है। समाजशास्त्रीय अध्ययन में इस बात पर विचार किया जाता है कि यह विविधता किस प्रकार विभिन्न समूहों के बीच प्रतिस्पर्धा, संघर्ष या एकता को जन्म देती है। इन विविधताओं के बीच एक लोकतांत्रिक राष्ट्र के रूप में सामंजस्य स्थापित करना और सामाजिक अखंडता को बनाए रखना एक निरंतर और जटिल चुनौती बनी हुई है।

43. (D) सामान्य, सुविधाजनक चिंतन।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण हमें उस सतही और सुविधाजनक चिंतन को छोड़ने के लिए प्रोत्साहित करता है जो हम दैनिक जीवन में बिना सोचे-समझे करते हैं। यह हमें केवल अपनी मान्यताओं को सही मानने के बजाय तथ्यों की गहराई में जाने और स्थापित धारणाओं पर प्रश्न उठाने का निमंत्रण देता है। यह चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया हमें समाज की अधिक जटिल और वास्तविक समझ प्राप्त करने की दिशा में ले जाती है।

44. (A) P-1, Q-2, R-3, S-4
सामुदायिक संघर्ष विभिन्न समूहों के बीच होने वाले तनाव और मतभेदों को दर्शाता है। क्षेत्रीय उग्रराष्ट्रीयता किसी विशेष क्षेत्र की पहचान के आधार पर अलगाववादी भावनाओं से संबंधित है। जातिवाद में जाति के आधार पर संकीर्णता और भेदभाव शामिल होता है, जबकि अल्पसंख्यक असुरक्षा का तात्पर्य उन समूहों से है जो अपनी कम संख्या के कारण समाज में भय या उपेक्षा का अनुभव करते हैं।

45. (C) सभी चुनौतियों के बावजूद, भारत ने विविधता के प्रबंधन में उल्लेखनीय प्रदर्शन किया है।
भारत जैसे विशाल और बहुलवादी देश में भाषायी, धार्मिक और सांस्कृतिक अंतर बहुत अधिक हैं। इन विविधताओं के कारण समय-समय पर संघर्ष भी हुए हैं, परंतु भारतीय लोकतंत्र ने इन सभी को साथ लेकर चलने में सफलता पाई है। यह विविधता केवल एक चुनौती ही नहीं है, बल्कि देश की एक बड़ी सांस्कृतिक शक्ति भी है, जिसने भारतीय राष्ट्रवाद को एक विशिष्ट स्वरूप दिया है।

46. (D) यह सुनिश्चित करना कि प्रत्येक अल्पसंख्यक असुरक्षित या खतरे में महसूस न करे।
एक स्वस्थ और लोकतांत्रिक राष्ट्र के लिए अल्पसंख्यकों का विश्वास जीतना और उन्हें सुरक्षा की गारंटी देना अत्यंत अनिवार्य है। यदि समाज के कुछ हिस्से स्वयं को हाशिए पर या असुरक्षित महसूस करते हैं, तो इससे राष्ट्रीय एकता और सामाजिक समरसता को गंभीर खतरा पैदा हो सकता है। सामूहिक भविष्य की समृद्धि इस बात पर निर्भर करती है कि विविधता का सम्मान करते हुए सबको समान अधिकार मिलें।

47. (A) सैद्धांतिक ज्ञान को व्यावहारिक अनुभवों से जोड़ना।
समाजशास्त्र में प्रयोगात्मक कार्य और प्रोजेक्ट्स का मुख्य उद्देश्य छात्रों को केवल किताबों तक सीमित न रखकर वास्तविक सामाजिक दुनिया में ले जाना है। इससे वे कक्षा में पढ़ी गई अवधारणाओं को अपने आस-पड़ोस के समाज में प्रत्यक्ष रूप से देख और परख सकते हैं। यह व्यावहारिक अनुभव उनकी विश्लेषण क्षमता को बढ़ाता है और उन्हें एक बेहतर सामाजिक शोधकर्ता बनने के लिए प्रेरित करता है।

48. (B) स्ववाचकता
स्ववाचकता वह अनूठी क्षमता है जो समाजशास्त्र हमें प्रदान करता, जिससे हम स्वयं को और अपने कार्यों को एक बाहरी निष्पक्ष प्रेक्षक की तरह देख सकते हैं। यह आत्म-प्रतिबिंब हमें यह समझने में मदद करता है कि हमारी सोच और व्यवहार हमारे सामाजिक परिवेश से कैसे प्रभावित होते हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से हम अपने भीतर समाए हुए व्यक्तिगत और सामाजिक पूर्वाग्रहों को दूर कर सकते हैं।

49. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
हमारा सामान्य बोध निष्पक्ष नहीं होता क्योंकि यह उसी सामाजिक वातावरण की देन है जिसमें हम पले-बढ़े हैं। हमारा परिवार, समुदाय और वर्ग हमें समाज को एक विशेष चश्मे से देखना सिखाते हैं, जो अक्सर हमारे अपने समूह के लाभ और मान्यताओं के पक्ष में होता है। इसलिए, समाजीकरण की यह प्रक्रिया ही हमारे सहज ज्ञान को पक्षपाती और संकुचित बनाने के लिए उत्तरदायी है।

50. (A) समाजशास्त्र का अध्ययन करने से पहले हमें समाज के बारे में कुछ भी पता नहीं होता।
यह कहना गलत है कि छात्र समाजशास्त्र पढ़ने से पहले समाज के बारे में कुछ नहीं जानते। वास्तव में, प्रत्येक व्यक्ति समाज में रहने के कारण समाजीकरण के माध्यम से बहुत अधिक व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर चुका होता है। यही पूर्व ज्ञान समाजशास्त्र को अन्य विषयों से अलग बनाता है, क्योंकि इसमें 'शून्य' से शुरुआत नहीं की जाती, बल्कि पहले से प्राप्त ज्ञान को वैज्ञानिक आधार पर परिष्कृत किया जाता है।

51. (B) विभिन्न प्रकार की व्यक्तिगत चिंताएँ, समस्याएँ या सरोकार।
व्यक्तिगत परेशानियों का संबंध व्यक्ति के अपने निजी जीवन, उसके चरित्र और उसके तत्काल सामाजिक दायरे से होता है। ये वे चुनौतियाँ हैं जिन्हें व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत विफलता या परिस्थिति के रूप में देखता है। सी. राईट मिल्स ने समझाया कि ये परेशानियाँ भले ही व्यक्तिगत लगें, लेकिन इनके समाधान और कारण अक्सर व्यक्ति के नियंत्रण के बाहर की सामाजिक और ऐतिहासिक शक्तियों में छिपे होते हैं।

52. (C) समाज में महिलाओं के खिलाफ व्यापक हिंसा।
जब कोई समस्या केवल एक व्यक्ति तक सीमित न रहकर समाज के एक बड़े वर्ग को प्रभावित करती है और उसके मूल कारण सामाजिक संरचना में होते हैं, तो उसे सामाजिक मुद्दा कहा जाता है। महिलाओं के खिलाफ हिंसा एक ढाँचागत समस्या है जो पितृसत्तात्मक मूल्यों और सामाजिक असमानता से जुड़ी है। यह व्यक्तिगत घटना नहीं बल्कि एक व्यापक संकट है जिसके लिए सामूहिक सामाजिक प्रयास और नीतिगत बदलाव आवश्यक हैं।

53. (A) 2, 4, 3, 1
सामाजिक संरचना के व्यवस्थित अध्ययन की शुरुआत जनसंख्या की बनावट और उसके जनसांख्यिकीय विश्लेषण से होती है। इसके बाद समाज की मूलभूत संस्थाओं जैसे जाति, जनजाति और परिवार की कार्यप्रणाली को समझा जाता है। तत्पश्चात बाज़ार के सामाजिक आयामों और आर्थिक विनिमय के प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। अंत में, समाज में व्याप्त विषमता, बहिष्कार और भेदभाव जैसे गंभीर ढाँचागत मुद्दों पर विस्तृत चर्चा की जाती है।

54. (A) केवल 1 और 4 गलत हैं।
समाजशास्त्र सीखने के लिए सहज बोध का होना एक आधार प्रदान करता है, इसलिए यह कहना गलत है कि किसी पूर्व ज्ञान की आवश्यकता नहीं होती। साथ ही, सी. राईट मिल्स एक प्रख्यात अमेरिकी समाजशास्त्री थे, भारतीय नहीं। सहज बोध निश्चित रूप से हमारे सामाजिक संदर्भों से बनता है और स्ववाचकता में आत्म-मुग्धता के स्थान पर कठोर समीक्षा और

आत्म-निरीक्षण का होना परम आवश्यक और अनिवार्य गुण माना जाता है।

55. (C) भारत विश्व के विशालतम जनसंख्या वाले देशों में से एक है।
भारत की जनसंख्या विश्व में चीन के साथ शीर्ष स्थानों पर बनी हुई है, जो इसे वैश्विक स्तर पर एक विशाल जनसांख्यिकीय शक्ति बनाती है। यह विशाल जनसंख्या देश के लिए अनेक चुनौतियाँ पैदा करती है, लेकिन साथ ही यह मानव संसाधन और आर्थिक विकास के अवसर भी प्रदान करती है। जनसांख्यिकीय दृष्टि से भारत की यह स्थिति इसके भविष्य की सामाजिक और आर्थिक नीतियों के निर्धारण में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

56. (D) विभिन्न प्रकार के बाज़ारों के उदय और स्वरुप को।
भारत में बाज़ारों का आधुनिक स्वरूप ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की नीतियों और स्वतंत्रता के बाद की नियोजित विकास नीतियों से गहराई से प्रभावित रहा है। इन ऐतिहासिक प्रक्रियाओं ने न केवल व्यापार के तरीकों को बदला, बल्कि नए प्रकार के आर्थिक संबंधों और सामाजिक वर्गों को भी जन्म दिया। औपनिवेशिक शोषण और बाद के औद्योगिक विकास ने भारतीय बाज़ार को एक विशिष्ट और जटिल सामाजिक-आर्थिक चरित्र प्रदान किया है।

57. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
सामाजिक विषमता और अपवर्जन को समझने के लिए जाति, जनजाति, लिंग और शारीरिक अक्षमता जैसे आधार अत्यंत प्रासंगिक हैं क्योंकि इन्हीं श्रेणियों के माध्यम से भेदभाव संचालित होता है। भारतीय राज्य ने संवैधानिक प्रावधानों और समाज सुधारकों ने निरंतर आंदोलनों के जरिए इस अन्याय को समाप्त करने का प्रयास किया है। ये दोनों प्रक्रियाएँ समाज में न्याय और समानता लाने की दिशा में मिलकर काम करती रही हैं।

58. (B) अपने सहज बोध को आलोचनात्मक रूप से जांचने की कोशिश करना।
समाजशास्त्र के विद्यार्थी के लिए यह अनिवार्य है कि वह अपने पहले से प्राप्त सामान्य बोध को वैज्ञानिक कसौटी पर परखे। चूंकि यह ज्ञान अक्सर पक्षपाती होता है, इसलिए इसकी आलोचनात्मक जांच के बिना वस्तुनिष्ठ सामाजिक सत्य तक पहुँचना संभव नहीं है। यह प्रक्रिया हमें अपने पूर्वाग्रहों से मुक्त होने और समाज को अधिक व्यापक और निष्पक्ष दृष्टिकोण से समझने की क्षमता प्रदान करती है।

59. (C) व्यक्तिगत पसंद और नापसंद
सामाजिक नक्शे में व्यक्ति का स्थान उसकी सामाजिक पहचान और संरचनात्मक स्थिति से तय होता है, न कि उसकी व्यक्तिगत रुचियों से। आर्थिक वर्ग, धार्मिक समुदाय, जाति और भाषायी पृष्ठभूमि वे कारक हैं जो व्यक्ति के जीवन के अवसरों और सामाजिक संबंधों को निर्धारित करते हैं। व्यक्तिगत पसंद-नापसंद एक निजी मामला है, जबकि सामाजिक नक्शा उन व्यापक श्रेणियों को दर्शाता है जो समाज में व्यक्ति का दर्जा तय करती हैं।

60. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आधुनिक समय में शहरीकरण, वैश्वीकरण और बदलती आर्थिक परिस्थितियों ने परिवार की पारंपरिक संरचना पर बहुत दबाव डाला है। पुरानी संयुक्त परिवार व्यवस्था का स्थान अब नाभिकीय परिवारों ने ले लिया है और परिवार के भीतर सदस्यों की भूमिकाओं में भी बड़े बदलाव आए हैं। सामाजिक परिवर्तन की इन तीव्र प्रक्रियाओं के कारण ही परिवार संस्था आज एक संक्रमण काल और पुनर्गठन के दौर से गुजर रही है।

61. (D) सांस्कृतिक विविधता - सामुदायिक संघर्ष और चुनौतियाँ
सांस्कृतिक विविधता जहाँ समाज को समृद्ध बनाती है, वहीं यह विभिन्न समूहों के बीच प्रतिस्पर्धा और कभी-कभी सामुदायिक संघर्षों को भी जन्म देती है। इन चुनौतियों का प्रबंधन करना किसी भी विविधतापूर्ण समाज के लिए एक बड़ा कार्य है। बाज़ार केवल आर्थिक नहीं बल्कि सामाजिक संस्था है, जाति समानता नहीं बल्कि विषमता का आधार है, और जनसांख्यिकी केवल परिवार नहीं बल्कि संपूर्ण जनसंख्या की बनावट का अध्ययन है।

62. (C) केवल 1, 3 और 5 सही हैं।
सहज बोध अक्सर हमारे सीमित अनुभवों पर आधारित होने के कारण अपूर्ण होता है। समाजशास्त्र की एक मुख्य शक्ति यह है कि वह व्यक्ति को स्वयं का तटस्थ और आलोचनात्मक मूल्यांकन करने में सक्षम बनाता है। वर्तमान में भारत की जनसांख्यिकी की एक बड़ी विशेषता इसकी विशाल युवा आबादी है, जो देश के लिए एक 'जनसांख्यिकीय लाभांश' के रूप में देखी जाती है। अन्य कथन वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विपरीत हैं।

63. (B) एक शक्तिशाली सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था।
समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य में बाज़ार केवल वस्तुओं के क्रय-विक्रय का स्थान नहीं है, बल्कि यह सामाजिक संबंधों और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रदर्शित करने वाला एक मंच है। यह लोगों के बीच अंतःक्रिया के नए तरीके बनाता है और सामाजिक स्थिति को भी प्रभावित करता है। बाज़ार की अपनी परंपराएँ, नियम और सामाजिक संरचना होती है, जो इसे आर्थिक विनिमय के साथ-साथ एक अत्यंत प्रभावशाली सामाजिक इकाई बनाती है।

64. (C) अपनी विशिष्ट पहचान को पुनःस्थापित और सुरक्षित करने के संदर्भ में।
जनजातीय आंदोलनों का एक मुख्य उद्देश्य अपनी सांस्कृतिक विरासत, भाषा और जीवन शैली को आधुनिकता के दबाव से बचाना रहा है। ये समुदाय अक्सर बाहरी प्रभावों के कारण अपनी जड़ों से कटने का खतरा महसूस करते हैं। इसलिए, उनके संघर्षों में 'स्वयं की पहचान' का प्रश्न केवल आर्थिक लाभ से कहीं अधिक गहरा है, जो उनके अस्तित्व और सम्मान की रक्षा से सीधा जुड़ा हुआ है।

65. (D) सामुदायिक संघर्ष, क्षेत्रीयता और जातिवाद जैसी सामाजिक जटिलताएँ।
आधुनिक भारत में युवा पीढ़ी न केवल व्यक्तिगत विकास की चुनौतियों से जूझ रही है, बल्कि वह एक बहुत ही जटिल सामाजिक वातावरण में रह रही है। उन्हें आए दिन जातिवाद, क्षेत्रीय भेदभाव और विभिन्न समुदायों के बीच होने वाले तनावों का सामना करना पड़ता है। ये सामाजिक मुद्दे उनके दृष्टिकोण, पहचान और भविष्य के निर्णयों को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं, जिससे उनके जीवन में अनिश्चितता और द्वंद्व पैदा होता है।

66. (A) सहज सामान्य बोध।
"बिना सीखा गया ज्ञान" वह समझ है जिसे हम बिना किसी औपचारिक कक्षा या पाठ्यपुस्तक के, केवल समाज में रहकर और बड़े होते हुए प्राप्त करते हैं। यह ज्ञान हमें स्वाभाविक लगता है क्योंकि यह हमारे दैनिक अनुभवों और अनौपचारिक समाजीकरण का हिस्सा होता है। हालाँकि यह उपयोगी है, परंतु समाजशास्त्र के व्यवस्थित अध्ययन के लिए इस ज्ञान की सीमाओं को समझना और उसे परखना बहुत आवश्यक है।

67. (B) एक बुने हुए स्वेटर को उधेड़कर फिर से बुनने से।
समाजशास्त्र सीखने की प्रक्रिया एक नए सिरे से निर्माण करने जैसी है, जहाँ हमें पहले से मौजूद संकुचित धारणाओं को हटाना पड़ता है। जिस तरह एक पुराने स्वेटर की ऊन का उपयोग करके नया और बेहतर स्वेटर बुना जा सकता है, वैसे ही हमें अपने सहज ज्ञान के पूर्वाग्रहों को 'उधेड़कर' वैज्ञानिक और व्यवस्थित सामाजिक समझ को 'बुनना' होता है। यह रूपक समाजशास्त्रीय शिक्षा की रचनात्मक और विश्लेषणात्मक प्रकृति को दर्शाता है।

68. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
सी. राईट मिल्स ने व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं के अंतर्संबंधों को स्पष्ट किया है। सामाजिक मुद्दा वह समस्या है जो बड़े समूहों को प्रभावित करती है, जबकि व्यक्तिगत परेशानी व्यक्ति के निजी सरोकारों तक सीमित रहती है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण वह व्यवस्थित समझ है जो हमारे स्वाभाविक सहज बोध से अलग होती है और समाज की गहरी संरचनात्मक वास्तविकताओं को उजागर करने का वैज्ञानिक प्रयास करती है।

69. (C) उस सामाजिक समूह और वातावरण से जिसमें हम समाजीकृत होते हैं।
हमारी सामान्य समझ पूरी तरह स्वतंत्र नहीं होती, बल्कि यह उस परिवेश की देन होती है जिसमें हम पलते-बढ़ते हैं। हमारे परिवार, जाति, धर्म और वर्ग के मूल्य हमारी सोच को एक निश्चित आकार देते हैं। इसीलिए हमारा सहज बोध अक्सर सार्वभौमिक न होकर केवल हमारे अपने समूह के दृष्टिकोण को ही दर्शाता है, जो वैज्ञानिक अध्ययन में एक सीमा या बाधा बन सकता है।

70. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
एक तुलनात्मक सामाजिक नक्शा व्यक्ति को यह समझाने में सफल होता है कि समाज में उसकी स्थिति क्या है क्योंकि यह स्थिति अनेक सामाजिक कारकों के मेल से बनती है। आयु, वर्ग, जाति और लिंग जैसे कारक मिलकर एक सामाजिक सोपानक्रम तैयार करते हैं। इन कारकों का विश्लेषण करने पर ही व्यक्ति यह जान पाता है कि वह अन्य समूहों की तुलना में कहाँ खड़ा है।

71. (D) यह समाज का एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक अध्ययन है।
समाजशास्त्र केवल कहानियों या व्यक्तिगत विचारों का संग्रह नहीं है, बल्कि यह समाज को समझने का एक कठोर और व्यवस्थित वैज्ञानिक तरीका है। यह शोध विधियों, साक्ष्यों और तार्किक विश्लेषण का उपयोग करके सामाजिक घटनाओं की व्याख्या करता है। यह हमारे सहज बोध को चुनौती देता है और हमें समाज की उन सूक्ष्म और वृहद संरचनाओं को समझने में मदद करता है जो ऊपर से दिखाई नहीं देतीं।

72. (A) 2, 1, 3
समाजशास्त्रीय अध्ययन की यात्रा स्वाभाविक रुप से प्राप्त सहज ज्ञान से शुरु होती है। इसके बाद, दूसरा महत्त्वपूर्ण चरण इस ज्ञान को आलोचनात्मक रूप से परखना और अपने पूर्वाग्रहों को पहचानना होता है। जब छात्र पुरानी और संकुचित धारणाओं के प्रभाव से मुक्त हो जाते हैं, तभी वे तीसरे चरण में प्रवेश करते हैं, जहाँ वे समाज का पूरी तरह व्यवस्थित, वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक अध्ययन करने में सफल होते हैं।

73. (D) यह संकल्पना एक विशिष्ट ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भ में आई थी।
'जनजाति' शब्द और इसकी आधुनिक संकल्पना कोई प्राचीन तथ्य नहीं है, बल्कि यह एक विशिष्ट कालखंड में सामाजिक और प्रशासनिक आवश्यकताओं के कारण उभरी है। औपनिवेशिक काल के दौरान ब्रिटिश प्रशासकों ने भारतीय समाज को वर्गीकृत करने के लिए इस श्रेणी का बड़े पैमाने पर उपयोग किया। वर्तमान में भी यह अवधारणा निरंतर चर्चा का विषय है क्योंकि जनजातीय समुदाय अपनी पहचान को नए सिरे से परिभाषित कर रहे हैं।

74. (B) समाज में व्यापक गरीबी और संरचनात्मक असमानता।
समाजशास्त्र में व्यक्तिगत घटनाओं के बजाय उन तथ्यों पर ध्यान दिया जाता है जो सामाजिक संरचना का हिस्सा होते हैं। व्यापक गरीबी एक व्यक्ति की निजी समस्या मात्र नहीं है, बल्कि यह संसाधनों के गलत वितरण और सामाजिक नीतियों की विफलता का परिणाम है। इसे एक 'सामाजिक तथ्य' माना जाता है क्योंकि इसका अस्तित्व समाज की बनावट में है और यह सामूहिक रूप से अनेक लोगों को प्रभावित करता है।

75. (B) केवल 2 and 3 सही हैं।
स्ववाचकता वास्तव में एक आलोचनात्मक प्रक्रिया है जो हमें स्वयं का निरीक्षण करना सिखाती है। भारतीय समाज में जातिगत भेदभाव को कम करने के लिए उत्पीड़ित समूहों के

आंदोलनों और राज्य की नीतियों ने बहुत महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समाजशास्त्र और सहज बोध में बहुत बड़ा अंतर है, क्योंकि सहज बोध अक्सर अवैज्ञानिक और पक्षपाती होता है, जबकि समाजशास्त्र एक व्यवस्थित और शोध-आधारित वैज्ञानिक अध्ययन पद्धति है।

76. (C) क्योंकि समाज में रहना और समाज को व्यवस्थित रूप से समझना दो अलग-अलग बातें हैं।
हम भले ही समाज का हिस्सा हों, लेकिन हमारा अनुभव अक्सर हमारे अपने छोटे से दायरे तक ही सीमित रहता है। समाजशास्त्र हमें इस व्यक्तिगत दायरे से बाहर निकलकर समाज को एक समग्र इकाई के रूप में देखने की दृष्टि देता है। यह हमें उन अदृश्य नियमों और संरचनाओं को समझने में मदद करता है जो हमारे जीवन को संचालित करती हैं, जिसे हम केवल अनुभव मात्र से नहीं जान सकते।

77. (C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
हमारा सहज ज्ञान अक्सर अपूर्ण होता है क्योंकि यह केवल हमारे व्यक्तिगत और समूह-आधारित अनुभवों तक सीमित रहता है। यह हमें सामाजिक वास्तविकता की पूरी और निष्पक्ष तस्वीर नहीं दिखा पाता। यह ज्ञान कभी भी सार्वभौमिक नहीं हो सकता क्योंकि अलग-अलग सामाजिक समूहों और संस्कृतियों का अपना अलग-अलग सामान्य बोध होता है। इसलिए, सहज ज्ञान को सभी समाजों के लिए एक समान सत्य मानना पूरी तरह गलत होगा।

78. (D) व्यवस्थित और वैज्ञानिक।
समाजशास्त्रीय ज्ञान की मुख्य विशेषता इसकी वैज्ञानिक प्रकृति है, जो इसे व्यक्तिगत मतों या सहज बोध से अलग करती है। यह ज्ञान व्यवस्थित शोध, प्रमाणों के एकत्रीकरण और तार्किक विश्लेषण के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। इसका लक्ष्य सामाजिक घटनाओं के पीछे छिपे वास्तविक कारणों को खोजना और वस्तुनिष्ठ निष्कर्षों तक पहुँचना है। यही कारण है कि यह ज्ञान अन्य प्रकार की सामाजिक समझ की तुलना में अधिक विश्वसनीय माना जाता है।

79. (A) P-1, Q-2, R-3, S-4
महिला आंदोलनों ने शोषणकारी सामाजिक संस्थाओं में सुधार लाने का काम किया है। समाज की संवेदनशीलता का परीक्षण 'अन्यथा सक्षम' लोगों की आवश्यकताओं के प्रति उसके रवैये से होता है। जनजातीय पहचान का मुद्दा मुख्य रूप से जनजातीय आंदोलनों से जुड़ा है। इसी प्रकार, जातिगत भेदभाव को दूर करने के लिए ऐतिहासिक रूप से उत्पीड़ित जातियों के संघर्ष और राज्य द्वारा उठाए गए नीतिगत कदम अत्यंत महत्त्वपूर्ण रहे हैं।

80. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
हम समाज के बारे में बहुत कुछ बिना किसी औपचारिक स्कूल या किताब के ही जान जाते हैं। यह इसलिए संभव होता है क्योंकि हमारा समाजीकरण जन्म से ही शुरु हो जाता है, जहाँ परिवार और समाज हमें सामाजिक व्यवहारों के बारे में निरंतर शिक्षित करते हैं। यह अनौपचारिक शिक्षा हमारे व्यक्तित्व और सामान्य बोध का अभिन्न अंग बन जाती है, जिससे हमें समाज का ज्ञान स्वाभाविक रूप से प्राप्त होता है।

81. (A) गर्व, तनाव, आत्मविश्वास या विभिन्न प्रकार की उलझन के स्रोत।
व्यक्ति की सामाजिक पहचान उसके जीवन के अनुभवों को कई तरह से प्रभावित कर सकती है। किसी विशेष समूह से जुड़े होने पर व्यक्ति गर्व या आत्मविश्वास महसूस कर सकता है, लेकिन वही पहचान भेदभाव के कारण तनाव और उलझन का कारण भी बन सकती है। यह इस पर निर्भर करता है कि समाज की व्यापक संरचना में उस विशेष पहचान को किस प्रकार देखा जाता है और उसके साथ कैसा व्यवहार किया जाता है।

82. (A) केवल 3 सही है।
समाजशास्त्र को सीखने की एक अनिवार्य शर्त यह है कि हमें अपनी पुरानी संकुचित मान्यताओं और पूर्वाग्रहों को छोड़ना पड़ता है। समाज का ज्ञान केवल औपचारिक रूप से नहीं मिलता, बल्कि सहज बोध भी एक बड़ा स्रोत है। सहज बोध समाजशास्त्र के लिए केवल बाधा नहीं बल्कि एक शुरुआती आधार भी है। स्ववाचकता में आत्म-मुग्धता नहीं बल्कि स्वयं की आलोचनात्मक समीक्षा का भाव गहराई से समाहित होता है।

83. (C) एक व्यवस्थित और आलोचनात्मक दृष्टिकोण प्रदान करके।
समाजशास्त्र हमें ऐसी वैज्ञानिक पद्धति और विश्लेषणात्मक उपकरण देता है जिनसे हम अपने व्यक्तिगत दायरे से बाहर झाँक सकें। यह हमें सिखाता है कि हम दूसरों के दृष्टिकोणों को भी महत्त्व दें और समाज को केवल अपने समूह के लाभ की दृष्टि से न देखें। यह निष्पक्ष और आलोचनात्मक नज़रिए का विकास ही हमें एक अधिक जागरूक और जिम्मेदार सामाजिक सदस्य के रूप में विकसित करता है।

84. (D) सी. राईट मिल्स
सी. राईट मिल्स ने 'सोशियोलॉजिकल इमेजिनेशन' (समाजशास्त्रीय कल्पना) की अपनी प्रसिद्ध अवधारणा में इस बात पर जोर दिया था कि व्यक्तिगत परेशानियाँ और सामाजिक मुद्दे आपस में गहरे जुड़े हैं। उन्होंने तर्क दिया कि हम अपने जीवन की समस्याओं को तब तक नहीं समझ सकते जब तक हम उन्हें समाज की वृहद संरचना और ऐतिहासिक परिवर्तनों के संदर्भ में न देखें। उनका यह विचार आधुनिक समाजशास्त्र का एक आधारभूत सिद्धांत बन चुका है।

85. (C) समाजीकरण
समाजीकरण वह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति समाज के नियमों, मूल्यों, विश्वासों और अपेक्षाओं को सीखता है। जन्म के समय से ही परिवार, स्कूल और समुदाय हमें सामाजिक वातावरण के अनुकूल बनाने का कार्य करते हैं। यही प्रक्रिया समाज और सामाजिक संबंधों के बारे में हमारी प्रारंभिक समझ और मतों को आकार देती है, जो बाद में हमारे सामान्य बोध का आधार बनती है।

86. (B) सहज बोध से प्राप्त ज्ञान समाजशास्त्र के लिए हमेशा पूर्णतः अनुपयोगी होता है।
यह कहना गलत है कि सहज बोध पूरी तरह अनुपयोगी है; वास्तव में यह समाजशास्त्रियों के लिए एक महत्त्वपूर्ण प्रारंभिक बिंदु और अध्ययन का विषय होता है। हालाँकि, यह अक्सर पक्षपाती और अपूर्ण होता है। समाजशास्त्र हमें सिखाता है कि हम स्वयं को 'बाहर से' देखें और वैज्ञानिक समझ विकसित करने के लिए अपनी पूर्व धारणाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करें, ताकि हम अधिक निष्पक्ष सामाजिक सत्य तक पहुँच सकें।

87. (C) जनसंख्या के कौन से पक्ष सामाजिक तौर पर महत्त्वपूर्ण हैं?
समाजशास्त्री और जनसांख्यिकीविद् केवल आंकड़ों का संग्रह नहीं करते, बल्कि वे इस बात का विश्लेषण करते हैं कि जनसंख्या की बनावट समाज के ढाँचे को कैसे प्रभावित करती है। वे आयु, लिंग, मृत्यु दर और जन्म दर जैसे पहलुओं के सामाजिक प्रभावों का अध्ययन करते हैं। उनका मुख्य सरोकार यह होता है कि जनसांख्यिकीय परिवर्तन सामाजिक संस्थाओं, संसाधनों के वितरण और भविष्य के सामाजिक विकास को किस दिशा में ले जा रहे हैं।

88. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
युवा पीढ़ी एक आयु-समूह आधारित पहचान है। गुजराती भाषी होना एक विशिष्ट भाषायी समुदाय की पहचान को दर्शाता है। निम्न मध्यम वर्ग व्यक्ति की आर्थिक स्थिति और वर्ग को इंगित करता है। इसी प्रकार, जनजाति एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक समूह है जो अपनी विशिष्ट संस्कृति और पहचान के लिए जाना जाता है। ये सभी अलग-अलग आधार व्यक्ति की समग्र सामाजिक पहचान को निर्मित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

89. (A) इसकी असीमित विषमता एवं अपवर्जन उत्पन्न करने की प्रवृत्ति।
भारतीय समाज के समाजशास्त्रीय अध्ययन में एक बड़ी चिंता यह रही है कि यहाँ की संरचना किस प्रकार कुछ समूहों के लिए लाभ और कुछ के लिए तीव्र भेदभाव पैदा करती है। जाति, लिंग और वर्ग के आधार पर समाज में संसाधनों और अवसरों का अत्यधिक असमान वितरण होता है। इस विषमता और कुछ वर्गों को हाशिए पर धकेलने की प्रवृत्ति को समझना सामाजिक न्याय की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम है।

90. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में मौजूद अनेक भाषायी, धार्मिक और जातीय समूहों के कारण यहाँ का सामाजिक ढाँचा अत्यंत विविध और जटिल है। यह विविधता जहाँ देश की सांस्कृतिक समृद्धि का आधार है, वहीं यह विभिन्न समूहों के बीच प्रतिस्पर्धा और हितों के टकराव के कारण कई सामाजिक एवं राजनीतिक चुनौतियाँ भी पैदा करती है। इस विविधता का सही प्रबंधन और सामंजस्य स्थापित करना भारतीय राष्ट्र के लिए एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है।

91. (B) 3, 1, 2
समाजशास्त्रीय अध्ययन की वैज्ञानिक प्रक्रिया सबसे पहले अपने सहज बोध में छिपे पूर्वाग्रहों को पहचानने से शुरू होती है। इसके बाद, छात्र अपनी पूर्व-निर्मित धारणाओं का गहराई से आलोचनात्मक विश्लेषण करते हैं ताकि वे पक्षपाती विचारों से मुक्त हो सकें। अंततः, इस मानसिक तैयारी के बाद ही समाज का व्यवस्थित और वैज्ञानिक अध्ययन संभव हो पाता है, जो तथ्यों और प्रमाणों पर आधारित एक वस्तुनिष्ठ सामाजिक समझ प्रदान करता है।

92. (D) व्यक्ति की व्यक्तिगत सिनेमाई पसंद
सामाजिक नक्शा उन ढाँचागत और सामूहिक कारकों पर आधारित होता है जो व्यक्ति के जीवन के अवसरों को प्रभावित करते हैं। माता-पिता का व्यवसाय, परिवार की आय और धार्मिक या जातीय पृष्ठभूमि ऐसे कारक हैं जो समाज में व्यक्ति का स्थान निर्धारित करते हैं। सिनेमाई पसंद एक विशुद्ध व्यक्तिगत रुचि है जिसका सामाजिक संरचना में व्यक्ति की स्थिति तय करने में कोई आधारभूत योगदान नहीं होता, इसलिए इसे सामाजिक नक्शे का हिस्सा नहीं माना जाता।

93. (A) केवल 1 सही है।
जाति व्यवस्था निश्चित रूप से भारतीय उपमहाद्वीप की एक अत्यंत विशिष्ट सामाजिक संस्था है। यह कहना गलत है कि परिवार संरचना अपरिवर्तित है, क्योंकि इसमें निरंतर बदलाव आ रहे हैं। इसी प्रकार, जनजातीय समुदाय भी आधुनिकता और विकास के साथ बदल रहे हैं। बाज़ार को भी केवल आर्थिक संस्था नहीं माना जा सकता, क्योंकि इसके गहरे सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव होते हैं जो समाज की संरचना को बहुत अधिक प्रभावित करते हैं।

94. (B) क्योंकि वे समाज की विषयवस्तु के बारे में अपने दैनिक जीवन से कुछ न कुछ जानते हैं।
समाजशास्त्र के छात्रों के लिए यह विषय इसलिए परिचित होता है क्योंकि वे स्वयं समाज के सक्रिय सदस्य हैं और उनके पास समाजीकरण के माध्यम से प्राप्त बहुत सारे व्यावहारिक अनुभव होते हैं। वे परिवार, विवाह, जाति और वर्ग जैसी अवधारणाओं को अपने आस-पड़ोस साक्षात् देखते हैं। यह पूर्व-परिचय उन्हें विषयवस्तु से जुड़ने में मदद करता है, हालाँकि वैज्ञानिक अध्ययन के लिए उन्हें इन अनुभवों का तटस्थ विश्लेषण भी करना पड़ता है।

95. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
सामाजिक मुद्दे व्यापक समूहों से जुड़े होते हैं और व्यक्तिगत परेशानियों के मूल कारण अक्सर समाज की वृहद संरचना और ऐतिहासिक बदलावों में निहित होते हैं। उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति की बेरोजगारी उसके लिए निजी परेशानी हो सकती है, लेकिन बड़े स्तर पर बेरोजगारी का होना एक सामाजिक मुद्दा है जो देश की आर्थिक नीतियों और सामाजिक ढाँचे की कमियों को पूरी तरह दर्शाता है। ये दोनों ही कथन समाजशास्त्रीय समझ के आधार स्तंभ हैं।

96. (D) यह तर्क, प्रमाण और व्यवस्थित शोध विधियों का उपयोग करता है।
समाजशास्त्र को वैज्ञानिक इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह केवल कल्पनाओं या व्यक्तिगत विश्वासों पर निर्भर नहीं रहता। यह सामाजिक घटनाओं को समझने के लिए कठोर शोध विधियों, साक्ष्यों और तर्कसंगत विश्लेषण का पालन करता है। इसका उद्देश्य सत्य का पता लगाना है जिसे प्रमाणों के माध्यम से पुष्ट किया जा सके। यह व्यवस्थित प्रक्रिया ही समाजशास्त्र को एक विश्वसनीय अकादमिक विषय के रूप में स्थापित करती है और उसे केवल सामान्य ज्ञान से अलग करती है।

97. (A) उपनिवेशवाद और स्वतंत्रता के बाद की विकासशील नीतियाँ।
भारत के आर्थिक इतिहास में ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने कृषि, व्यापार और उद्योग के पुराने ढाँचों को तोड़कर नए औपनिवेशिक हितों वाले ढाँचे बनाए। स्वतंत्रता के बाद, सरकार द्वारा अपनाई गई पंचवर्षीय योजनाओं और मिश्रित अर्थव्यवस्था की नीतियों ने आधुनिक भारत की आर्थिक संरचना को आकार दिया। इन दो ऐतिहासिक चरणों ने ही देश में तीव्र आर्थिक परिवर्तनों की नींव रखी, जिसके परिणाम आज भी हमारे सामाजिक और आर्थिक जीवन में स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं।

98. (B) बाज़ार के विशुद्ध तकनीकी और गणितीय आयाम।
सामाजिक विषमता और बहिष्कार का मुख्य ध्यान समाज में मौजूद भेदभाव और अन्यायपूर्ण संरचनाओं पर होता है। जाति आधारित बहिष्कार, लिंग भेद और जनजातियों की चुनौतियाँ इस अध्ययन के केंद्र में हैं क्योंकि ये मानवीय संबंधों और अधिकारों से जुड़ी हैं। इसके विपरीत, बाज़ार के विशुद्ध तकनीकी और गणितीय आयाम अर्थशास्त्र का विषय हो सकते हैं, परंतु समाजशास्त्र के विषमता वाले अध्ययन क्षेत्र में इनकी भूमिका गौण होती है।

99. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
जनसांख्यिकीय संरचना के अध्ययन में जनसंख्या का आयु-पिरामिड एक मुख्य उपकरण है। जाति और परिवार बुनियादी सामाजिक संस्थाएँ हैं जो समाज का ढाँचा बनाती हैं। सामाजिक विषमता में लिंग और जाति आधारित भेदभाव का विश्लेषण किया जाता है। सांस्कृतिक विविधता से जुड़ी चुनौतियों में क्षेत्रीयता और सांप्रदायिकता जैसे मुद्दे शामिल हैं, जो एक बहुलवादी समाज में सामंजस्य स्थापित करने के मार्ग में अक्सर बड़ी बाधा के रूप में सामने आते हैं।

100. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
'अन्यथा सक्षम' लोगों के प्रति संवेदनशीलता एक महत्त्वपूर्ण सामाजिक प्रश्न है क्योंकि हमारा समाज और भौतिक ढाँचा अक्सर उनकी जरूरतों को अनदेखा करता है। उन्हें न केवल शारीरिक बल्कि सामाजिक और मानसिक स्तर पर भी उपेक्षा और भेदभाव का सामना करना पड़ता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह मुद्दा इसलिए महत्त्वपूर्ण है क्योंकि यह दर्शाता है कि हमारा समाज अपनी विविधता के प्रति कितना समावेशी और जागरूक है।

101. (A) केवल 1 और 2 सही हैं।
भारत की विशाल जनसंख्या वैश्विक स्तर पर अत्यंत महत्त्वपूर्ण है और इसे विकास के लिए एक बड़ी चुनौती और अवसर (जनसांख्यिकीय लाभांश) दोनों रूपों में देखा जाता है। आधुनिक समय में जाति व्यवस्था और परिवार संरचना में व्यापक बदलाव आ रहे हैं, इसलिए यह कहना गलत है कि जाति का महत्त्व खत्म हो गया है या परिवार में कोई बदलाव नहीं हो रहा है। ये संस्थाएँ आज भी सामाजिक जीवन को प्रभावित कर रही हैं।

102. (C) यह अक्सर अपूर्ण, संकीर्ण और पूर्वाग्रहपूर्ण हो सकता है।
समाज के बारे में हमारा सहज ज्ञान सीमित होता है क्योंकि यह केवल हमारे अपने सामाजिक दायरे और व्यक्तिगत अनुभवों से उपजा होता है। हम अक्सर समाज को एक विशेष चश्मे से देखते हैं जो हमारे अपने समूह के हितों की ओर झुका हो सकता है। यह निष्पक्षता की कमी और अधूरापन ही सहज बोध की सबसे बड़ी सीमा है, जो हमें सामाजिक वास्तविकता का संपूर्ण और वास्तविक चित्र देखने से रोकती है।

103. (D) जनजातीय समुदाय।
आधुनिक भारत में जनजातीय समुदाय अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को लेकर गहरे संकट का सामना कर रहे हैं। विकास की परियोजनाओं, विस्थापन और मुख्यधारा की संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण उनकी सदियों पुरानी जीवन शैली और परंपराओं पर खतरा मंडरा रहा है। इसी कारण, अपनी अस्मिता को सुरक्षित करने और जल, जंगल, ज़मीन पर अपने अधिकारों को पुनः प्राप्त करने के लिए वे निरंतर आंदोलनों और संघर्षों में संलग्न हैं।

104. (A) अनेक जटिलताओं के बावजूद भारत ने विविधता और लोकतांत्रिक एकता का सफल समन्वय किया है।
भारतीय राष्ट्रवाद की सबसे बड़ी सफलता भाषायी, धार्मिक और क्षेत्रीय विविधताओं को एक लोकतांत्रिक ढाँचे में पिरोना रही है। समय-समय पर सांप्रदायिकता और अलगाववाद जैसी चुनौतियाँ सामने आई हैं, लेकिन भारत ने अपने लचीलेपन और संवैधानिक प्रतिबद्धता के जरिए एकता बनाए रखी है। यह सफल प्रबंधन यह सिद्ध करता है कि विविधता को दबाने के बजाय उसका सम्मान करना ही एक सुदृढ़ और अखंड राष्ट्र के निर्माण का सही मार्ग है।

105. (C) क्योंकि नई और वैज्ञानिक समझ विकसित करने के लिए पुरानी पक्षपाती समझ को हटाना आवश्यक है।
वैज्ञानिक अध्ययन के लिए मस्तिष्क को पूर्वाग्रहों से मुक्त करना बहुत जरूरी है। हमारी पुरानी धारणाएँ अक्सर बिना किसी प्रमाण के और एकतरफा दृष्टिकोण से बनी होती हैं। जब तक हम इन संकुचित विचारों को नहीं छोड़ेंगे, तब तक हम समाज की जटिल और वस्तुनिष्ठ वास्तविकता को नहीं समझ पाएंगे। इसीलिए, समाजशास्त्र में 'उधेड़ने' की प्रक्रिया नई और सच्ची समझ बनाने के लिए एक अनिवार्य आधार का कार्य करती है।

106. (B) व्यक्तिगत जीवन के अनुभवों को व्यापक सामाजिक और ऐतिहासिक शक्तियों के साथ जोड़कर देखना।
सी. राईट मिल्स के अनुसार, 'समाजशास्त्रीय कल्पना' वह क्षमता है जो हमें यह समझने में मदद करती है कि हमारे निजी सुख-दुःख समाज के वृहद ऐतिहासिक कालखंड और संरचनात्मक बदलावों से कैसे प्रभावित होते हैं। यह व्यक्ति को उसके एकाकीपन से बाहर निकालती है और उसे यह दिखाती है कि उसका जीवन समाज का एक अभिन्न हिस्सा है। इस दृष्टि के बिना हम अपने व्यक्तिगत अनुभवों के वास्तविक सामाजिक अर्थ को कभी नहीं समझ सकते।

107. (A) केवल 1, 2 और 5 सही हैं।
समाजशास्त्र हमें यह क्षमता प्रदान करता है कि हम दूसरों के नज़रिए से स्वयं को देख सकें, जिसे 'स्ववाचकता' या 'आत्मवाचकता' कहा जाता है। यह प्रक्रिया आत्म-मुग्धता के बिल्कुल विपरीत है और इसमें अपनी दृष्टि को स्वयं की ओर मोड़कर अपना आलोचनात्मक मूल्यांकन करना शामिल होता है। यह क्षमता विश्लेषणात्मक होनी चाहिए ताकि हम अपनी सामाजिक स्थिति और व्यवहारों को अधिक तटस्थता और वैज्ञानिकता के साथ गहराई से समझ सकें।

108. (D) एक गंभीर सामाजिक मुद्दा।
जब बेरोजगारी की समस्या देश में व्यापक स्तर पर फैलती है, तो इसे केवल व्यक्ति की अयोग्यता या विफलता नहीं माना जा सकता। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से यह एक संरचनात्मक संकट है जो अर्थव्यवस्था, शिक्षा व्यवस्था और सरकारी नीतियों की विफलता को दर्शाता है। चूंकि यह लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित करता है और इसके समाधान के लिए सामूहिक प्रयासों की आवश्यकता होती है, इसलिए इसे एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण सामाजिक मुद्दा माना जाता है।

109. (A) 1, 2, 3
भारतीय समाज के आधुनिक इतिहास में सबसे पहले ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने यहाँ की पुरानी व्यवस्थाओं में बड़े संरचनात्मक बदलाव किए। इसके साथ ही और इसके बाद, जाति व्यवस्था की बुराइयों के खिलाफ और सामाजिक न्याय के लिए अनेक सुधारवादी आंदोलन हुए। अंततः, स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने आधुनिक राष्ट्र-निर्माण और आर्थिक उन्नति के लिए सुनियोजित विकास की नीतियों को अपनाया। यह कालक्रम भारतीय समाज के विकास के मुख्य सोपानों को दर्शाता है।

110. (C) संरचना का अध्ययन ही परिवर्तन के विविध आयामों को समझने का आधार प्रदान करता है।
सामाजिक संरचना समाज के स्थिर ढाँचे को दर्शाती है, जबकि सामाजिक परिवर्तन इस ढाँचे में समय के साथ होने वाले बदलावों को दिखाता है। समाजशास्त्र में इन दोनों का अध्ययन एक-दूसरे का पूरक है। जब तक हम यह नहीं जानेंगे कि समाज किस आधार पर बना है (संरचना), तब तक हम यह नहीं समझ सकते कि उसमें बदलाव क्यों और कैसे आ रहे हैं। संरचनात्मक समझ ही परिवर्तन की गति और दिशा का सटीक आकलन करने में सक्षम बनाती है।

111. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
प्राकृतिक विज्ञानों में हम उन चीजों का अध्ययन करते हैं जिनके बारे में हमें कोई पूर्व व्यक्तिगत अनुभव नहीं होता, लेकिन समाजशास्त्र में हम उसी समाज का अध्ययन करते हैं जिसमें हम रहते हैं। समाजीकरण के कारण हमारे पास पहले से ही समाज की एक व्यावहारिक समझ होती है। यही पूर्व ज्ञान समाजशास्त्र के अध्ययन को चुनौतीपूर्ण बनाता है क्योंकि हमें वैज्ञानिक होने के लिए अपने इस पहले से प्राप्त ज्ञान को आलोचनात्मक रूप से जांचना पड़ता है।

112. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
जनसांख्यिकीय संरचना जनसंख्या के विकास और उसके सामाजिक प्रभावों से संबंधित है। सामाजिक संस्थाओं के अध्ययन में जाति और परिवार के बदलते स्वरूपों का विश्लेषण किया जाता है। बाज़ार का समाजशास्त्रीय अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि औपनिवेशिक नीतियों ने आर्थिक विनिमय को कैसे प्रभावित किया। सामाजिक विषमता के अंतर्गत 'अन्यथा सक्षम' लोगों के प्रति समाज के भेदभावपूर्ण और असंवेदनशील दृष्टिकोण का गहराई से परीक्षण किया जाता है, जो सामाजिक न्याय के लिए बहुत आवश्यक है।

113. (A) ये सही हो सकती हैं, परंतु पक्षपाती या गलत होने की संभावना भी रखती हैं।
सहज बोध से प्राप्त आस्थाएँ और विचार पूरी तरह व्यर्थ नहीं होते, वे हमारे दैनिक जीवन के व्यावहारिक अनुभवों पर आधारित होते हैं। हालाँकि, समस्या यह है कि वे वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित नहीं होते और अक्सर केवल एक विशेष सामाजिक समूह के हितों या संकुचित नज़रिए को दर्शाते हैं। इसलिए वे कभी सत्य हो सकते हैं और कभी पूर्वाग्रहपूर्ण, जिसकी समाजशास्त्र में वैज्ञानिक जांच की जाती है।

114. (B) समाजशास्त्र को सीखने के लिए सहज बोध का आलोचनात्मक परीक्षण करना पड़ता है।
यह कथन पूरी तरह सत्य है और समाजशास्त्र की बुनियादी पद्धति का हिस्सा है। गलत कथन चुनना था, लेकिन यहाँ विकल्प (B) वास्तव में एक सही अवधारणा को व्यक्त करता है। सहज बोध समाजशास्त्र के लिए एक कच्चा माल है जिसे वैज्ञानिक रूप से परिष्कृत करना आवश्यक है। स्ववाचकता का अर्थ भी स्वयं का तटस्थ मूल्यांकन है। समाजशास्त्र में 'भूलने' की प्रक्रिया का उद्देश्य पुरानी गलत धारणाओं को हटाकर सत्य तक पहुँचना है।

115. (C) विविधता कई सामाजिक और राजनीतिक चुनौतियों को जन्म देती है जिन्हें प्रबंधित करना आवश्यक है।
भारत जैसे देश में जहाँ अनेक धर्म, भाषाएँ और संस्कृतियाँ एक साथ रहती हैं, वहाँ अक्सर प्रतिस्पर्धा और हितों के टकराव की संभावना बनी रहती है। यह विविधता समाज को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध तो बनाती है, लेकिन यह सांप्रदायिकता, क्षेत्रीयता और जातीय संघर्ष जैसी जटिल चुनौतियाँ भी पेश करती है। इन चुनौतियों का सही प्रबंधन और लोकतांत्रिक

समाधान ही सामाजिक स्थिरता और राष्ट्रीय एकता सुनिश्चित करने के लिए परम आवश्यक और अपरिहार्य माना जाता है।

116. (D) अपने पूर्व-निर्मित पूर्वाग्रहों को और अधिक कट्टर बनाना।
समाजशास्त्र के अध्ययन का मुख्य लक्ष्य व्यक्ति के मानसिक क्षितिज को व्यापक बनाना और उसे पूर्वाग्रहों से मुक्त करना है। यह विषय हमें सिखाता है कि हम अपनी पुरानी संकुचित सोच को छोड़ें और समाज को वैज्ञानिक एवं निष्पक्ष दृष्टि से देखें। यदि कोई अध्ययन हमारे पूर्वाग्रहों को और अधिक मजबूत करता है, तो वह वास्तविक समाजशास्त्रीय शिक्षा नहीं है। इसका उद्देश्य तो समाज की गहरी और वस्तुनिष्ठ समझ विकसित करना ही होता है।

117. (A) केवल 2 सही है।
समाजशास्त्र सीखने की प्रक्रिया में वास्तव में पुराने संकुचित विचारों को त्यागना और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना शामिल है। अन्य कथन गलत हैं क्योंकि समाज का ज्ञान अनौपचारिक माध्यमों से भी मिलता है। 'सामाजिक नक्शा' व्यक्ति की सामाजिक स्थिति (जैसे जाति, वर्ग) को दर्शाता है, न कि केवल भूगोल को। विविधता एक बहुआयामी विषय है, केवल आर्थिक समस्या नहीं। स्ववाचकता स्वयं के विश्लेषण की क्षमता है, न कि दूसरों की गलतियाँ निकालने की।

118. (B) परिवार की आय और व्यावसायिक स्थिति से।
किसी व्यक्ति का आर्थिक वर्ग मुख्य रूप से उसकी भौतिक संपत्ति, आय के स्रोतों और उसके द्वारा किए जाने वाले व्यवसाय की प्रकृति पर निर्भर करता है। ये कारक तय करते हैं कि समाज के आर्थिक संसाधनों पर उस व्यक्ति का कितना नियंत्रण है और उसकी जीवन शैली कैसी होगी। यद्यपि शिक्षा और कौशल भी महत्त्वपूर्ण हैं, परंतु वर्ग की पहचान बुनियादी तौर पर परिवार की आर्थिक और व्यावसायिक पृष्ठभूमि से ही आकार लेती है।

119. (C) सामाजिक संरचना और सामाजिक परिवर्तन।
समाजशास्त्र का संपूर्ण अध्ययन मुख्य रूप से दो प्रमुख क्षेत्रों के इर्द-गिर्द घूमता है: समाज की वर्तमान बनावट और संस्थाओं को समझना (संरचना) और यह देखना कि समय के साथ इनमें कैसे बदलाव आ रहे हैं (परिवर्तन)। संरचना हमें समाज की स्थिरता और नियमों के बारे में बताती है, जबकि परिवर्तन हमें विकास और गत्यात्मकता का ज्ञान देता है। इन दोनों का संतुलित अध्ययन ही सामाजिक वास्तविकता की पूर्ण समझ प्रदान करता है।

120. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
बाज़ार निश्चित रूप से एक शक्तिशाली सामाजिक संस्था है जिसने ऐतिहासिक रूप से साम्राज्यों के उत्थान और संस्कृतियों के मिलन में बड़ी भूमिका निभाई है। भारत के संदर्भ में, यहाँ के बाज़ारों का आधुनिक स्वरूप औपनिवेशिक काल और बाद की विकास नीतियों से गहराई से प्रभावित रहा है। हालाँकि दोनों कथन सत्य हैं, लेकिन औपनिवेशिक प्रभाव बाज़ार के 'विश्व इतिहास बदलने' वाले वैश्विक और ऐतिहासिक महत्त्व की पूर्ण व्याख्या नहीं करता है।

121. (B) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
सामाजिक विषमता के अध्ययन में जाति, जनजाति और लिंग मुख्य आधार हैं और इनके सुधार के लिए ऐतिहासिक आंदोलन और राज्य के प्रयास निरंतर हुए हैं। महिला आंदोलनों ने भी पितृसत्तात्मक ढाँचों को सफलतापूर्वक चुनौती दी है। हालाँकि, यह कहना गलत है कि हमारा समाज 'अन्यथा सक्षम' लोगों के प्रति पूर्णतः और आदर्श रूप से संवेदी हो चुका है, क्योंकि उन्हें आज भी अनेक ढाँचागत और सामाजिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

122. (D) अपने सामाजिक समूह से प्रभावित पक्षपाती धारणाओं पर सवाल उठाना।
'पूर्व धारणाओं को उधेड़ने' का अर्थ समाजशास्त्र में एक ऐसी मानसिक सफाई प्रक्रिया से है जिसमें हम उन विचारों की समीक्षा करते हैं जो हमने अपने परिवेश से बिना सोचे-समझे अपना लिए हैं। यह प्रक्रिया हमें अपने संकुचित समूह-हितों से ऊपर उठकर समाज को एक व्यापक और निष्पक्ष परिप्रेक्ष्य में देखने के लिए तैयार करती है। यह वैज्ञानिक जांच की पहली शर्त है ताकि हम पूर्वाग्रह रहित होकर सामाजिक सत्य को खोज सकें।

123. (A) P-4, Q-1, R-3, S-2
सहज बोध समाजीकरण से प्राप्त वह सामान्य समझ है जो हमें समाज में रहने के लिए शुरुआती दिशा देती है। स्ववाचकता व्यक्ति की वह क्षमता है जिससे वह स्वयं का आलोचनात्मक निरीक्षण कर सकता है। व्यक्तिगत परेशानी वह समस्या है जिसे व्यक्ति अपने निजी जीवन में अनुभव करता है, जबकि सामाजिक मुद्दा एक व्यापक समस्या है जिसका संबंध समाज की वृहद संरचना और व्यवस्थाओं से होता है।

124. (D) सहज सामान्य बोध
एक बच्चा अपने आस-पास के लोगों, परिवार और वातावरण के साथ अंतःक्रिया करके समाज के बारे में जो पहली समझ विकसित करता है, उसे सहज सामान्य बोध कहा जाता है। इसके लिए उसे किसी औपचारिक कक्षा की आवश्यकता नहीं होती; यह ज्ञान वह स्वाभाविक रूप से जीवन जीने के दौरान ही सीख जाता है। यद्यपि यह ज्ञान उपयोगी होता है, परंतु समाजशास्त्रीय अध्ययन में इसे आलोचनात्मक रूप से परखना आवश्यक माना जाता है।

125. (A) अपनी व्यक्तिगत और समूह-आधारित पूर्वधारणाओं का त्याग करना।
समाजशास्त्रीय अध्ययन में वस्तुनिष्ठता प्राप्त करने का अर्थ है सामाजिक वास्तविकता को बिना किसी व्यक्तिगत राग-द्वेष या पूर्वाग्रह के देखना। इसके लिए शोधकर्ता को अपनी उन सभी पूर्व-निर्मित धारणाओं को एक तरफ रखना पड़ता है जो उसकी निष्पक्षता को प्रभावित कर सकती हैं। जब हम अपने समूह के हितों या व्यक्तिगत भावनाओं से ऊपर उठकर तथ्यों का विश्लेषण करते हैं, तभी हम एक सत्य और वैज्ञानिक निष्कर्ष तक पहुँच पाते हैं।

126. (B) यह हमारे दैनिक जीवन और बड़े होने की प्रक्रिया का हिस्सा है।
सहज बोध कोई पुस्तक से सीखा गया ज्ञान नहीं है, बल्कि यह वह व्यावहारिक समझ है जो हम प्रतिदिन के अनुभवों और समाजीकरण से प्राप्त करते हैं। यह हमें बताता है कि दूसरों से कैसे व्यवहार करना है और समाज के सामान्य नियम क्या हैं। चूंकि यह हमारे विकास की प्रक्रिया के साथ-साथ चलता है, इसलिए यह हमें अत्यंत स्वाभाविक और स्पष्ट लगता है, भले ही इसमें कुछ पूर्वाग्रह ही क्यों न हों।

127. (C) उसे दूसरों के दृष्टिकोण और व्यापक सामाजिक संदर्भों को समझने का साधन देकर।
समाजशास्त्र व्यक्ति को एक ऐसी दृष्टि प्रदान करता है जिससे वह स्वयं को केवल अपनी आँखों से नहीं, बल्कि समाज के एक सदस्य के रुप में देख सकता है। यह 'स्ववाचकता' की क्षमता उसे यह समझने में मदद करती है कि उसकी अपनी स्थिति समाज के अन्य समूहों और संरचनाओं के साथ कैसे जुड़ी है। यह व्यापक परिप्रेक्ष्य उसे आत्मकेंद्रित सोच से बाहर निकालता है और एक अधिक संतुलित सामाजिक समझ विकसित करता है।

128. (D) युवा जनसंख्या का अनुपात भारतीय समाज में महत्त्वपूर्ण है।
भारतीय जनसंख्या की वर्तमान जनसांख्यिकीय संरचना में युवाओं की एक बहुत बड़ी संख्या शामिल है। इस विशेषता को 'जनसांख्यिकीय लाभांश' कहा जाता है क्योंकि यह देश के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए एक बड़ी ऊर्जा और अवसर प्रदान करती है। समाजशास्त्री इस बात का अध्ययन करते हैं कि इस युवा शक्ति का सही उपयोग कैसे किया जाए और उनके सामने आने वाली सामाजिक चुनौतियाँ कौन-सी हैं।

129. (C) सभी 1, 2, 3 और 4 सही हैं।
जाति, जनजाति और परिवार वास्तव में भारतीय समाज की वे बुनियादी इकाइयाँ हैं जिन पर संपूर्ण सामाजिक ढाँचा टिका है। जनजातीय समुदायों की पहचान आधुनिक समय में नई चुनौतियों के साथ विकसित हो रही है। साथ ही, सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों के तीव्र दबाव के कारण परिवार के पारंपरिक स्वरूपों में भी स्पष्ट बदलाव देखे जा रहे हैं। जाति व्यवस्था का अध्ययन हमेशा से ही भारतीय समाजशास्त्रियों के लिए एक मुख्य विषय रहा है।

130. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
सहज ज्ञान भले ही व्यवहार में उपयोगी हो, लेकिन यह सामाजिक यथार्थ की पूरी तस्वीर पेश करने में असमर्थ रहता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि यह ज्ञान हमारे अपने संकुचित सामाजिक दायरे और हितों से प्रभावित होता है। हम अक्सर केवल वही देखते हैं जो हमारे समूह के लिए अनुकूल होता है, जिससे व्यापक सामाजिक सच्चाई ओझल हो जाती है। अतः, एक पूर्ण और निष्पक्ष समझ के लिए वैज्ञानिक समाजशास्त्रीय अध्ययन अनिवार्य है।

131. (C) सामाजिक विषमता और भेदभाव से
'अपवर्जन' या 'बहिष्कार' वह प्रक्रिया है जिसमें समाज के कुछ समूहों को उनकी पहचान, जैसे जाति, धर्म या लिंग के आधार पर मुख्यधारा के संसाधनों और अवसरों से जानबूझकर दूर रखा जाता है। यह सामाजिक विषमता का एक गंभीर रुप है जो भेदभाव की गहरी जड़ों को दर्शाता है। इसका अध्ययन करने से यह स्पष्ट होता है कि समाज के कुछ वर्ग क्यों पिछड़े रह जाते हैं और सामाजिक न्याय के लिए क्या कदम आवश्यक हैं।

132. (D) जाति, जनजाति और परिवार
भारतीय समाज की मौलिक संरचना को समझने के लिए जाति, जनजाति और परिवार जैसी संस्थाओं का अध्ययन अपरिहार्य माना जाता है। ये संस्थाएँ न केवल ऐतिहासिक रूप से महत्त्वपूर्ण रही हैं, बल्कि आज भी व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक जीवन को बहुत गहराई से निर्देशित करती हैं। समाजशास्त्र में इन्हें आधारभूत रचना खंड कहा गया है क्योंकि ये भारतीय समाज की विशिष्ट पहचान और उसकी जटिलताओं का मुख्य स्रोत हैं।

133. (A) सामाजिक परिवर्तन एवं विकास
समाजशास्त्र का यह विशेष क्षेत्र इस बात का विश्लेषण करता है कि समाज अपनी पुरानी अवस्था से नई अवस्था में कैसे पहुँचता है। इसमें आधुनिकीकरण, वैश्वीकरण और विभिन्न विकास नीतियों के कारण सामाजिक संस्थाओं और संबंधों में आने वाले बदलावों का गहराई से अध्ययन किया जाता है। यह विषय हमें यह समझने में मदद करता है कि समाज में हो रहे बदलावों की प्रकृति क्या है और उनके भविष्य में क्या परिणाम होंगे।

134. (B) बाज़ार एक सामाजिक-सांस्कृतिक संस्था है जो सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती है।
समाजशास्त्रीय दृष्टि से बाज़ार केवल लेन-देन का आर्थिक स्थान नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा मंच है जहाँ सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्य सक्रिय रहते हैं। बाज़ार के नियम, वहाँ होने वाली अंतःक्रियाएँ और विभिन्न समूहों की भागीदारी सामाजिक प्रतिष्ठा और संबंधों को आकार देती हैं। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि आर्थिक क्रियाएँ कभी भी समाज से अलग नहीं होतीं, बल्कि वे सामाजिक संरचना का ही एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा होती हैं।

135. (C) उसे विभिन्न सामाजिक श्रेणियों में अपनी स्थिति और दूसरों से अपने संबंधों को समझने में।
तुलनात्मक सामाजिक नक्शा व्यक्ति को एक व्यापक सामाजिक परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है। इससे वह यह जान पाता है कि उसकी जाति, वर्ग, धर्म या लिंग उसे समाज के सोपानक्रम में कहाँ रखते हैं। यह नक्शा उसे यह भी दिखाता है कि अन्य सामाजिक समूह उससे कैसे भिन्न हैं और उनके बीच शक्ति एवं संसाधनों का वितरण कैसा है। इस समझ से व्यक्ति की सामाजिक चेतना और अधिक परिपक्व होती है।

136. (A) 1, 2, 3, 4
भारतीय समाज के अध्ययन का तार्किक क्रम जनसंख्या की बुनियादी जनसांख्यिकीय विशेषताओं को समझने से शुरु

होता है। इसके बाद, मुख्य सामाजिक संस्थाओं जैसे जाति और परिवार की संरचना का विश्लेषण किया जाता है। फिर समाज में व्याप्त विषमता, बहिष्कार और भेदभाव के ढाँचागत मुद्दों पर चर्चा होती है। अंत में, सांस्कृतिक विविधता से उत्पन्न चुनौतियों और राष्ट्रीय एकता की दिशा में उनके प्रबंधन का गहराई से अध्ययन किया जाता है।

137. (A) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
समाजशास्त्र छात्रों को इसलिए जाना-पहचाना लगता है क्योंकि वे पहले से ही उसी समाज के सदस्य हैं जिसका वे अध्ययन करने जा रहे हैं। समाजीकरण के माध्यम से उन्हें अपने दैनिक जीवन में समाज के नियमों और व्यवहारों का व्यावहारिक ज्ञान मिल जाता है। यही कारण है कि कक्षा में चर्चा किए जाने वाले विषय जैसे परिवार या विवाह उनके लिए नए नहीं होते, बल्कि वे उनसे पूर्व-परिचित और सहज महसूस करते हैं।

138. (A) P-1, Q-2, R-3, S-4
जातिवाद में व्यक्ति अपनी जाति के प्रति संकीर्ण वफादारी और दूसरों के प्रति भेदभाव रखता है। सांप्रदायिकता धर्म के आधार पर समूहों के बीच होने वाले तनाव और संघर्ष को इंगित करती है। क्षेत्रीयता अपनी विशिष्ट भौगोलिक पहचान के आधार पर अलगाव या अधिक स्वायत्तता की भावना है। इसी प्रकार, भाषायी उग्रवाद भाषा को अपनी पहचान का सर्वोच्च आधार मानकर अन्य भाषाओं के प्रति विरोध या संघर्ष को बढ़ावा देता है।

139. (D) समाज में प्रचलित व्यापक जातिगत भेदभाव और असमानता।
सामाजिक मुद्दा वह समस्या है जो केवल एक व्यक्ति की निजी विफलता नहीं है, बल्कि समाज की वृहद संरचना की खामी है। जातिगत भेदभाव और असमानता इसी श्रेणी में आते हैं क्योंकि ये सदियों से स्थापित सामाजिक व्यवस्था का परिणाम हैं और पूरे समाज को प्रभावित करते हैं। इनका समाधान भी केवल व्यक्तिगत प्रयासों से संभव नहीं है, बल्कि इसके लिए व्यापक सामाजिक चेतना और सामूहिक नीतिगत बदलावों की आवश्यकता होती है।

140. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
किसी भी विविधतापूर्ण और लोकतांत्रिक राष्ट्र की असली मजबूती इस बात में निहित है कि उसके सभी नागरिक, विशेषकर अल्पसंख्यक, खुद को सुरक्षित और सम्मानित महसूस करें। यदि अल्पसंख्यक भय या उपेक्षा का अनुभव करते हैं, तो इससे सामाजिक समरसता और राष्ट्रीय अखंडता को खतरा पैदा हो सकता है। लोकतंत्र की मूल भावना ही यही है कि वह प्रत्येक समूह के अधिकारों और उसकी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षा प्रदान करे।

141. (A) केवल 2, 3 और 4 सही हैं।
सहज बोध समाजीकरण की एक स्वाभाविक उपज है और स्ववाचकता हमें अपने कार्यों का तटस्थ विश्लेषण करना सिखाती है। सामाजिक मुद्दे और व्यक्तिगत परेशानियाँ आपस में गहराई से जुड़ी होती हैं जैसा कि सी. राईट मिल्स ने बताया था। यह कहना गलत है कि समाजशास्त्र केवल अमूर्त सिद्धांतों तक सीमित है, क्योंकि यह समाज की ठोस और व्यावहारिक वास्तविकताओं का गहराई से वैज्ञानिक अध्ययन करने वाला विषय है।

142. (D) समाज में स्वयं की स्थिति और व्यवहार का आलोचनात्मक विश्लेषण करना।
स्ववाचकता वह अनूठी प्रक्रिया है जो व्यक्ति को एक बाहरी प्रेक्षक की तरह खुद को देखने में सक्षम बनाती है। यह हमें यह समझने में मदद करती है कि हमारी सोच और व्यवहार हमारे सामाजिक परिवेश से कैसे आकार लेते हैं। इस आलोचनात्मक दृष्टि के माध्यम से ही हम अपनी स्थिति को बेहतर समझ सकते हैं और अपने भीतर छिपे सामाजिक पूर्वाग्रहों को दूर करके एक अधिक संतुलित दृष्टिकोण अपना सकते हैं।

143. (C) जनसंख्या, जाति, जनजाति और परिवार जैसी सामाजिक संस्थाएं।
भारतीय समाज के आधारभूत ढाँचे को समझने के लिए इसके जनसांख्यिकीय स्वरूप और सदियों पुरानी सामाजिक संस्थाओं का अध्ययन अनिवार्य है। जाति व्यवस्था, जनजातीय समुदाय और परिवार जैसी इकाइयाँ भारतीय सामाजिक जीवन की रीढ़ हैं जो व्यक्ति की पहचान और उसके संबंधों को निर्देशित करती हैं। इन तत्वों का विश्लेषण करने पर ही हमें भारतीय समाज की वास्तविक प्रकृति, उसकी जटिलताओं और उसमें हो रहे परिवर्तनों की एक समग्र समझ मिल पाती है।

144. (D) समाज में रहने के दौरान बिना किसी औपचारिक प्रशिक्षण के प्राप्त होता है।
सहज सामान्य बोध की सबसे बड़ी विशेषता इसकी अनौपचारिकता है। इसे प्राप्त करने के लिए हमें किसी स्कूल या विशेष कोर्स की जरूरत नहीं होती; हम इसे केवल अपने परिवार, मित्रों और आस-पड़ोस के साथ रहकर स्वाभाविक रूप से सीख लेते हैं। यह ज्ञान हमारे दैनिक जीवन को चलाने में बहुत मददगार होता है, परंतु वैज्ञानिक सामाजिक अध्ययन के लिए इसकी सीमाओं और पूर्वाग्रहों को समझना भी अत्यंत आवश्यक होता है।

145. (A) क्योंकि यह समाज में संसाधनों और अवसरों के असमान वितरण का एक प्रमुख कारण रहा है।
समाजशास्त्र में लिंग (Gender) केवल एक जैविक श्रेणी नहीं, बल्कि एक सामाजिक संरचना है जिसने ऐतिहासिक रूप से पुरुषों और महिलाओं के बीच शक्ति और अवसरों का गहरा अंतर पैदा किया है। पितृसत्तात्मक समाजों में महिलाओं को अक्सर शिक्षा, संपत्ति और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं से दूर रखा गया है। इसलिए, सामाजिक विषमता के अध्ययन में लिंग एक केंद्रीय विषय है जो अन्याय और भेदभाव के ढाँचागत कारणों को उजागर करता है।

146. (C) सभी 1, 2, 3 और 4 सही हैं।
समाजशास्त्र में वैज्ञानिक समझ विकसित करने के लिए पूर्व-निर्मित पक्षपाती ज्ञान को त्यागना अनिवार्य है, और स्ववाचकता इसी आत्म-निरीक्षण की प्रक्रिया को कहते हैं। बेरोजगारी जैसे मुद्दे स्पष्ट करते हैं कि एक व्यक्ति की निजी परेशानी के पीछे व्यापक सामाजिक और आर्थिक कारण हो सकते हैं। जब यह समस्या व्यापक रूप धारण कर लेती है, तो यह एक संरचनात्मक सामाजिक समस्या बन जाती है जिसके लिए समाज की पूरी व्यवस्था जिम्मेदार होती है।

147. (C) अपने सहज बोध और पूर्वाग्रहों को आलोचनात्मक रूप से परख कर उन्हें त्यागना।
समाजशास्त्र में 'भूलने' का अर्थ किसी याददाश्त को खोना नहीं, बल्कि उन संकुचित और एकतरफा धारणाओं से मुक्ति पाना है जो हमें निष्पक्ष सामाजिक सत्य को देखने से रोकती हैं। यह एक सचेत प्रयास है जिसमें हम अपने सामान्य बोध को वैज्ञानिक कसौटी पर परखते हैं और जो विचार गलत या पक्षपाती पाए जाते हैं, उन्हें छोड़ देते हैं। यह प्रक्रिया नई और वस्तुनिष्ठ सामाजिक समझ बनाने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

148. (D) जाति व्यवस्था
विद्वानों और समाजशास्त्रियों ने भारतीय उपमहाद्वीप में जाति व्यवस्था को एक अत्यंत अनूठी और जटिल संस्था माना है जो विश्व में कहीं और इस रूप में नहीं मिलती। यह जन्म पर आधारित एक ऐसा कठोर सोपानक्रम है जो व्यक्ति के संपूर्ण जीवन को नियंत्रित करता है। इसकी संरचना, इसके नियम और इसमें होने वाले निरंतर परिवर्तनों का अध्ययन करना भारतीय समाज की वास्तविक गहराई को समझने के लिए हमेशा से ही एक अनिवार्य शर्त रहा है।

149. (A) इसमें केवल आत्म-प्रशंसा और मुग्धता शामिल होती है।
स्ववाचकता आत्म-प्रशंसा या मुग्धता के बिल्कुल विपरीत एक गंभीर और आलोचनात्मक प्रक्रिया है। इसका मुख्य उद्देश्य अपनी स्थिति का तटस्थ मूल्यांकन करना और यह देखना है कि हमारा सामाजिक परिवेश हमारी सोच को कैसे प्रभावित कर रहा है। यह हमें दूसरों के दृष्टिकोण को समझने में मदद करती है और हमें एक अधिक निष्पक्ष सामाजिक सदस्य बनाती है। इसमें आत्म-मुग्धता का कोई स्थान नहीं होता, बल्कि यह आत्म-सुधार और गहरी समझ का साधन है।

150. (B) ताकि छात्र समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का वास्तविक परिवेश में परीक्षण कर सकें।
समाजशास्त्र में प्रयोगात्मक और परियोजना कार्य का मुख्य उद्देश्य सैद्धांतिक ज्ञान और व्यावहारिक अनुभव के बीच की खाई को पाटना है। छात्र जब खुद समाज में जाकर आंकड़ों का संग्रह और लोगों से बातचीत करते हैं, तब वे किताब में पढ़ी गई अवधारणाओं को जीवंत रूप में देख पाते हैं। यह अनुभव न केवल उनकी समझ को पुख्ता करता है, बल्कि उनमें वैज्ञानिक शोध करने की क्षमता और सामाजिक संवेदनशीलता को भी विकसित करता है।

151. (B) समाजशास्त्र व्यवस्थित जांच और संरचनात्मक विश्लेषण पर आधारित है, जबकि सहज ज्ञान व्यक्तिगत अनुभवों पर।
समाजशास्त्र वैज्ञानिक अनुसंधान और व्यवस्थित पद्धतियों पर निर्भर करता है, जबकि सामान्य बोध अक्सर व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों और असत्यापित अनुभवों से आकार लेता है। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण सामाजिक घटनाओं के पीछे के गहरे संरचनात्मक कारणों की जांच करता है, जिससे वह अधिक विश्वसनीय बनता है। यह व्यवस्थित दृष्टिकोण हमें सतही व्याख्याओं को चुनौती देने और समाज की वास्तविक जटिलताओं को समझने में सक्षम बनाता है।

152. (A) यह व्यक्ति के आलस्य और अकर्मण्यता का परिणाम है।
सहज ज्ञान अक्सर गरीबी जैसी जटिल समस्याओं के लिए व्यक्तिगत दोषारोपण करता है, जैसे कि आलस्य या कड़ी मेहनत की कमी। यह दृष्टिकोण उन व्यापक आर्थिक और सामाजिक कारकों को नजरअंदाज कर देता है जो व्यक्तियों को गरीबी के चक्र में फंसाते हैं। समाजशास्त्र इस तरह की धारणाओं को चुनौती देते हुए संसाधनों तक पहुंच की कमी और सामाजिक बहिष्करण जैसे कारकों का विश्लेषण करता है।

153. (C) समाजशास्त्र सामाजिक घटनाओं की सतही व्याख्याओं से परे जाकर गहरे अंतर्निहित अर्थों की खोज करता है।
पीटर बर्जर का तर्क है कि समाजशास्त्र का प्राथमिक कार्य सामाजिक वास्तविकता के उन पहलुओं को उजागर करना है जो सामान्य अवलोकन में स्पष्ट नहीं होते हैं। यह विषय हमें सिखाता है कि सामाजिक क्रियाओं के पीछे छिपे हुए गहरे अर्थों और संबंधों की खोज करें। इस प्रकार, समाजशास्त्रीय विश्लेषण हमें दैनिक जीवन की घटनाओं के पीछे सक्रिय जटिल संरचनाओं और पैटर्नों को समझने में मदद करता है।

154. (D) व्यक्तिगत समस्याओं को व्यापक सामाजिक मुद्दों से जोड़ने की क्षमता।
समाजशास्त्रीय कल्पना एक व्यक्ति की निजी कठिनाइयों और समाज के व्यापक ऐतिहासिक या संरचनात्मक परिवर्तनों के बीच संबंध देखने की क्षमता है। यह अवधारणा व्यक्तियों को यह समझने में मदद करती है कि उनके व्यक्तिगत अनुभव सामाजिक शक्तियों द्वारा कैसे आकार लेते हैं। ऐसा करने से, लोग अपनी समस्याओं को केवल व्यक्तिगत असफलता के रूप में देखने के बजाय एक बड़े सामाजिक संदर्भ में देख पाते हैं।

155. (C) यह हमें आस-पास की दुनिया का आलोचनात्मक मूल्यांकन करने हेतु वैचारिक उपकरण प्रदान करता है।
समाजशास्त्र का अध्ययन करने का मुख्य लाभ यह है कि यह हमें अपनी स्थापित धारणाओं को गहराई से परखने के लिए आवश्यक विश्लेषण उपकरण प्रदान करता है। यह हमें सामाजिक घटनाओं का निष्पक्ष और आलोचनात्मक मूल्यांकन करने की क्षमता प्रदान करता है। इससे समाज के प्रति हमारी समझ अधिक वैज्ञानिक बनती है और हम सामाजिक व्यवस्थाओं के कामकाज के बारे में अधिक जागरूक बनते हैं।

156. (B) जनसंख्या का वैज्ञानिक अध्ययन, जिसमें उसका आकार, संरचना और वितरण शामिल है।
जनसांख्यिकी मानव जनसंख्या का एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक अध्ययन है जो इसके परिमाण, गठन और वितरण पर ध्यान केंद्रित करता है। यह समय के साथ होने वाले परिवर्तनों को मापने के लिए जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवास जैसे सांख्यिकीय डेटा का उपयोग करता है। यह विषय नीति निर्माताओं को समाज की भविष्य की आवश्यकताओं और विकास की संभावनाओं को समझने के लिए ठोस आधार प्रदान करता है।

157. (D) उच्च जन्म और उच्च मृत्यु दर से निम्न जन्म और निम्न मृत्यु दर की ओर।
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत के अनुसार, आर्थिक विकास के परिणामस्वरूप समाज में एक महत्वपूर्ण बदलाव आता है। प्रारंभिक अवस्था में जन्म और मृत्यु दर दोनों बहुत उच्च होती हैं, जो धीरे-धीरे गिरकर निम्न स्तर पर आ जाती हैं। यह परिवर्तन स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और सामाजिक जागरूकता के कारण होता है, जिससे अंततः जनसंख्या की वृद्धि दर स्थिर और नियंत्रित होने की दिशा में बढ़ती है।

158. (A) मृत्यु दर में वृद्धि।
भारत में जन्म दर में आई कमी मुख्य रूप से बेहतर शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं और व्यापक परिवार नियोजन कार्यक्रमों का परिणाम है। इसके विपरीत, मृत्यु दर में कमी आना जनसंख्या वृद्धि का कारण बनता है, न कि जन्म दर में कमी का। इसलिए, मृत्यु दर में होने वाला कोई भी उतार-चढ़ाव जन्म दर को सीधे कम करने के बजाय जनसंख्या के कुल आकार को प्रभावित करता है।

159. (C) जब कार्यशील आयु की जनसंख्या का अनुपात आश्रित जनसंख्या से अधिक हो जाता है।
जनसांख्यिकीय लाभांश उस आर्थिक लाभ को संदर्भित करता है जो तब प्राप्त होता है जब किसी देश की उत्पादक आबादी बच्चों और बुजुर्गों की तुलना में काफी बड़ी होती है। कार्यशील आयु के लोगों का यह उच्च अनुपात आर्थिक उत्पादकता को बढ़ाने और बचत दर को बेहतर बनाने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। यह स्थिति तब बनती है जब जन्म दर में तेजी से गिरावट आती है।

160. (A) युवा कार्यबल को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर प्रदान करना।
जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाने के लिए यह आवश्यक है कि युवा पीढ़ी को कौशल विकास, अच्छी शिक्षा और पर्याप्त रोजगार के अवसर मिलें। यदि देश अपने कार्यबल के स्वास्थ्य और प्रशिक्षण पर निवेश नहीं करता है, तो यह अवसर व्यर्थ जा सकता है। उचित नियोजन और नीतिगत हस्तक्षेप के माध्यम से ही बढ़ती हुई युवा आबादी को देश की आर्थिक प्रगति का मुख्य इंजन बनाया जा सकता है।

161. (D) क्योंकि इसमें सामाजिक गतिशीलता असंभव थी और स्थिति जन्म द्वारा निर्धारित होती थी।
परंपरागत रूप से जाति व्यवस्था को एक बंद प्रणाली माना जाता था क्योंकि किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति पूरी तरह से उसके जन्म से तय होती थी। इस व्यवस्था में व्यक्ति के पास अपनी सामाजिक श्रेणी को बदलने का कोई अवसर नहीं होता था। कठोर पदानुक्रम और जाति-आधारित नियमों के कारण पीढ़ियों तक एक ही सामाजिक स्थिति बनी रहती थी, जिससे किसी भी प्रकार की गतिशीलता अवरुद्ध रहती थी।

162. (B) जाति व्यवस्था का पूर्ण उन्मूलन।
आधुनिकता और कानून के प्रभावों के बावजूद, भारतीय समाज से जाति व्यवस्था का पूरी तरह से उन्मूलन नहीं हुआ है। शहरीकरण और औद्योगिकीकरण ने पारंपरिक जातिगत बंधनों को कमजोर जरूर किया है, लेकिन जाति ने अब नए राजनीतिक और आर्थिक रूप धारण कर लिए हैं। यद्यपि पदानुक्रम के पुराने रूप बदल रहे हैं, जाति आज भी पहचान और संगठित होने का एक महत्वपूर्ण आधार बनी हुई है।

163. (C) राजनीतिक शक्ति प्राप्त करने के लिए जातीय पहचान का एक संसाधन के रूप में उपयोग।
जाति के राजनीतिकरण का अर्थ है चुनाव जीतने और सत्ता हासिल करने के लिए जाति समूहों का संगठित होना। राजनीतिक दल अक्सर जातिगत समीकरणों के आधार पर अपनी रणनीतियां बनाते हैं और वोट बैंक हासिल करने का प्रयास करते हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि लोकतांत्रिक राजनीति में जाति एक सक्रिय और गतिशील उपकरण बन गई है, जो सामूहिक हितों की रक्षा के लिए उपयोग की जाती है।

164. (D) जाति ने अपना रूप बदल लिया है और राजनीतिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में प्रभावशाली बनी है।
समकालीन भारत में जाति ने अपनी पारंपरिक सीमाओं को पार कर लिया है और अब यह राजनीतिक तथा आर्थिक जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यद्यपि व्यावसायिक चयन और सामाजिक व्यवहार में कुछ लचीलापन आया है, लेकिन जाति आधारित नेटवर्क आज भी संसाधनों तक पहुंच और राजनीतिक लामबंदी को प्रभावित करते हैं। यह निरंतरता आधुनिक संस्थाओं के भीतर जाति की बदलती और प्रभावशाली भूमिका को स्पष्ट करती है।

165. (A) यह एक गतिशील संस्था है जो समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलती और अनुकूलित होती है।
जाति व्यवस्था एक स्थिर या मृत संस्था नहीं है, बल्कि यह बदलती सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों के साथ खुद को ढालने की अद्भुत क्षमता रखती है। यह ग्रामीण संदर्भों से निकलकर शहरी और राजनीतिक क्षेत्रों में नए रूपों में प्रकट हुई है। इस अनुकूलन क्षमता के कारण ही यह आधुनिकता की चुनौतियों के बीच भी भारतीय समाज की एक प्रमुख और प्रभावशाली विशेषता बनी हुई है।

166. (B) एक जीवंत सामाजिक संस्था के रूप में जो विभिन्न सामाजिक संबंधों और मानदंडों द्वारा आकारित होती है।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से बाजार केवल व्यापार का स्थान नहीं है, बल्कि यह सामाजिक मानदंडों और रिश्तों द्वारा निर्मित एक जटिल संस्था है। बाजार की गतिविधियां अक्सर विश्वास, नातेदारी और सामाजिक नेटवर्क पर आधारित होती हैं। यह दृष्टिकोण बाजार को व्यापक सामाजिक व्यवस्था का एक हिस्सा मानता है, जो पूरी तरह से स्वायत्त होने के बजाय समाज की अन्य संस्थाओं के साथ गहराई से जुड़ा होता है।

167. (B) व्यक्तियों का निजी स्व-हित सामूहिक रूप से व्यापक समाज के लिए अंततः लाभकारी होता है।
एडम स्मिथ का 'अदृश्य हाथ' सिद्धांत बताता है कि बाजार में प्रतिस्पर्धा और व्यक्तिगत लाभ की इच्छा अनजाने में समाज की भलाई की ओर ले जाती है। यह विचार मुक्त बाजार का समर्थन करता है, जहाँ सरकारी हस्तक्षेप के बिना आर्थिक गतिविधियां सुचारु रूप से चलती हैं। स्मिथ के अनुसार, स्व-हित की खोज अंततः संसाधनों के कुशल आवंटन और समग्र आर्थिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त करती है।

168. (A) समाज के अन्य संस्थानों जैसे नातेदारी, धर्म और राजनीति में।
कार्ल पोलानी के अनुसार, पारंपरिक आर्थिक प्रणालियां कभी भी स्वायत्त नहीं थीं, बल्कि वे सामाजिक संस्थाओं में मजबूती से 'अंतःस्थापित' थीं। व्यापार और विनिमय की प्रक्रियाएं धर्म, नातेदारी और राजनीतिक व्यवस्था के नियमों से संचालित होती थीं। यह धारणा इस बात पर जोर देती है कि आर्थिक व्यवहार सामाजिक मूल्यों और पारस्परिक संबंधों के ढांचे से अलग होकर कभी भी स्वतंत्र रूप से कार्य नहीं करता था।

169. (C) विशिष्ट जाति या नातेदारी आधारित व्यापारिक समुदाय और मेलजोल के केंद्र ग्रामीण 'हाट'।
भारत में बाजार का सामाजिक स्वरूप व्यापारिक समुदायों और साप्ताहिक ग्रामीण हाटों में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ये व्यापारिक समूह अक्सर जातिगत वफादारी और आपसी विश्वास पर काम करते हैं, जो आर्थिक लाभ से परे सामाजिक जुड़ाव को दर्शाते हैं। ग्रामीण हाट भी केवल खरीद-बिक्री के केंद्र नहीं होते, बल्कि वे सामाजिक मेलजोल और सूचनाओं के आदान-प्रदान के महत्वपूर्ण मंच होते हैं।

170. (D) बाजार सामाजिक मानदंडों, मूल्यों और शक्ति संबंधों से प्रभावित तथा उन्हें प्रभावित करने वाला क्षेत्र है।
बाजार और समाज के बीच का संबंध अटूट है, जहाँ आर्थिक लेन-देन सामाजिक मूल्यों और शक्ति की संरचनाओं से गहराई से प्रभावित होता है। बाजार न केवल आर्थिक विकास को दिशा देता है, बल्कि यह सामाजिक मानदंडों को भी सुदृढ़ या परिवर्तित कर सकता है। अतः, बाजार को एक ऐसी सामाजिक संस्था के रूप में समझना आवश्यक है जो निरंतर समाज के साथ संवाद करती है।

171. (C) वह प्रक्रिया जिससे समूहों को मुख्य धारा के संसाधनों और अवसरों से व्यवस्थित वंचित किया जाता है।
सामाजिक बहिष्करण एक ऐसी संरचनात्मक प्रक्रिया है जो कुछ समूहों को समाज की प्रमुख आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक गतिविधियों में भाग लेने से रोकती है। यह वंचना केवल आकस्मिक नहीं होती, बल्कि यह सामाजिक नियमों और संस्थाओं के माध्यम से व्यवस्थित रूप से लागू की जाती है। इसके परिणामस्वरूप बहिष्कृत समूहों के पास संसाधनों और विकास के अवसरों तक पहुँच बहुत सीमित या शून्य हो जाती है।

172. (B) इसमें आर्थिक वंचना के अतिरिक्त सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक क्षेत्रों से अलगाव भी शामिल है।
यद्यपि गरीबी सामाजिक बहिष्करण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन बहिष्करण का दायरा इससे कहीं अधिक विस्तृत है। इसमें किसी व्यक्ति या समूह का समाज की सांस्कृतिक पहचान और निर्णय लेने की राजनीतिक प्रक्रियाओं से पूरी तरह अलग होना भी शामिल है। अतः, सामाजिक बहिष्करण केवल धन की कमी नहीं है, बल्कि यह समाज के सदस्य के रूप में मिलने वाले अधिकारों से अलगाव है।

173. (D) जाति, जनजाति और लिंग।
भारतीय समाज में सामाजिक बहिष्करण के ऐतिहासिक आधार मुख्य रूप से जातिगत पहचान, जनजातीय पृष्ठभूमि और लैंगिक भिन्नता रहे हैं। इन कारकों ने संसाधनों, शिक्षा और सम्मानजनक जीवन के अवसरों के वितरण में गहरी असमानता पैदा की है। इन आधारों पर होने वाला भेदभाव न केवल आर्थिक रूप से हानिकारक है, बल्कि यह प्रभावित समूहों की गरिमा और सामाजिक भागीदारी को भी गंभीर रूप से बाधित करता है।

174. (A) उनकी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और भौगोलिक अलगाव के कारण।
आदिवासी समुदायों को अक्सर उनकी अलग सांस्कृतिक जीवनशैली और मुख्य धारा के केंद्रों से भौगोलिक दूरी के कारण विकास की प्रक्रियाओं से बाहर रखा गया है। यह भौगोलिक और सांस्कृतिक अलगाव उन्हें आधुनिक सेवाओं और आर्थिक अवसरों का लाभ उठाने में बाधा डालता है। इसके परिणामस्वरूप, वे अक्सर अपनी भूमि और संसाधनों पर नियंत्रण खोने के साथ-साथ सामाजिक रूप से उपेक्षित महसूस करते हैं।

175. (C) यह प्रतिभा और संसाधनों की बर्बादी करके तथा सामाजिक एकजुटता को घटाकर समाज को कमजोर करता है।
सामाजिक बहिष्करण केवल बहिष्कृत समूहों को ही प्रभावित नहीं करता, बल्कि यह पूरे समाज की प्रगति में बाधा उत्पन्न करता है। जब समाज का एक बड़ा वर्ग अपनी प्रतिभा का उपयोग करने से वंचित रह जाता है, तो समग्र उत्पादकता और नवाचार की हानि होती है। इसके अलावा, यह असमानता सामाजिक तनाव को जन्म देती है, जिससे समाज की एकता और शांति को खतरा पैदा होता है।

अध्याय 02
भारतीय समाज की जनसांख्यिकीय संरचना

1. 'डेमोग्राफी' (Demography) शब्द किन दो यूनानी शब्दों से मिलकर बना है?
(A) 'डेमोस' और 'लोजोस'
(B) 'डेमोस' और 'ग्राफीन'
(C) 'पॉपुलस' और 'ग्राफीन'
(D) 'एथनोस' और 'लोजोस'

2. आकारिक जनसांख्यिकी (formal demography) में मुख्य रूप से किसका अध्ययन किया जाता है?
(A) जनसंख्या के आकार यानी मात्रा का
(B) जनसंख्या के सामाजिक पहलुओं का
(C) जनसंख्या के राजनीतिक प्रभावों का
(D) जनसंख्या के आर्थिक वितरण का

3. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. आकारिक जनसांख्यिकी
Q. सामाजिक जनसांख्यिकी
R. जनगणना
S. राष्ट्र-राज्य
सूची II: (विवरण)
1. जनसंख्या के सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक पक्ष
2. जनसंख्या के आकार का मात्रात्मक अध्ययन
3. राजनीतिक संगठन का प्रमुख रूप
4. एक निर्धारित प्रदेश के लोगों के बारे में सुव्यवस्थित आँकड़े
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

4. निम्नलिखित कथनों में से कौन सा कथन भारत में जनगणना के संदर्भ में असत्य है?
(A) भारत में जनगणना का कार्य अंग्रेजी सरकार ने सर्वप्रथम 1867-72 के बीच प्रारंभ किया।
(B) 1881 से हर दस साल बाद दसवर्षीय जनगणना की जाती रही है।
(C) भारतीय जनगणना विश्व भर में जनगणना किए जाने का सबसे बड़ा कार्य है।
(D) स्वतंत्र भारत में पहली जनगणना 1947 में हुई थी।

5. थॉमस रॉबर्ट माल्थस के जनसंख्या वृद्धि के सिद्धांत के अनुसार, जनसंख्या में किस प्रकार वृद्धि होती है?
(A) गणितीय या समांतर रूप से
(B) स्थिर दर से
(C) ज्यामितीय या गुणोत्तर रूप से
(D) लॉगरिदमिक रूप से

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): माल्थस का मानना था कि मनुष्यों की जनसंख्या भरण-पोषण के साधनों की तुलना में अधिक तेज़ी से बढ़ती है।
कारण (R): जनसंख्या में वृद्धि ज्यामितीय रूप से होती है, जबकि कृषि उत्पादन में वृद्धि गणितीय रूप से होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

7. 'एन एस्से ऑन द प्रिंसिपल ऑफ़ पॉपुलेशन' नामक निबंध किस विद्वान ने लिखा था?
(A) एमिल दुर्खाइम
(B) कार्ल मार्क्स
(C) किंग्सले डेविस
(D) थॉमस रॉबर्ट माल्थस

8. माल्थस द्वारा बताए गए जनसंख्या वृद्धि पर 'प्राकृतिक निरोध' (Positive Checks) का उदाहरण निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) अकाल और बीमारियाँ
(B) बड़ी उम्र में विवाह करना
(C) यौन संयम
(D) ब्रह्मचर्य का पालन

9. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह सिद्धांत उनके 1798 के निबंध में स्पष्ट किया गया है।
2. उनका मानना था कि मनुष्य सदा ही गरीबी में जीने के लिए दंडित है।
3. उन्होंने जनसंख्या नियंत्रण के लिए कृत्रिम निरोधों का समर्थन किया।
4. उनके अनुसार समृद्धि बढ़ाने का एकमात्र तरीका जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करना है।
उपरोक्त में से कौन से कथन माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत के

संबंध में सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) उपरोक्त सभी

10. जनसांख्यिकीय संक्रमण के सिद्धांत की पहली अवस्था की क्या विशेषता है?
(A) उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर
(B) निम्न जन्म दर और निम्न मृत्यु दर
(C) उच्च जन्म दर और निम्न मृत्यु दर
(D) निम्न जन्म दर और उच्च मृत्यु दर

11. निम्नलिखित में से कौन सा कथन जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत के 'संक्रमणकालीन चरण' का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) समाज में जनसंख्या वृद्धि कम होती है क्योंकि जन्म और मृत्यु दर दोनों ऊँची होती हैं।
(B) समाज में जनसंख्या वृद्धि दर नीची रहती है क्योंकि जन्म और मृत्यु दर दोनों ही काफी कम हो जाती हैं।
(C) यह अवस्था केवल विकसित देशों में पाई जाती है।
(D) इस दौरान जनसंख्या वृद्धि की दरें बहुत ऊँची हो जाती हैं, जिसे 'जनसंख्या विस्फोट' कहते हैं।

12. भारत की जनसंख्या संवृद्धि के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. स्वतंत्रता प्राप्ति
2. इंफ्लूएंजा महामारी
3. ऋणात्मक वार्षिक संवृद्धि दर
4. जनसंख्या संवृद्धि दर का 2.2% पर पहुँचना
5. पहली दसवर्षीय जनगणना की शुरुआत

उपरोक्त घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
(A) 5, 2, 3, 1, 4
(B) 2, 3, 5, 1, 4
(C) 5, 1, 2, 3, 4
(D) 1, 5, 2, 4, 3

13. 'जनसंख्या विस्फोट' की स्थिति क्यों उत्पन्न होती है?
(A) जन्म दर और मृत्यु दर दोनों में तीव्र वृद्धि के कारण
(B) जन्म दर में तेज़ी से गिरावट जबकि मृत्यु दर का ऊँचा बने रहने के कारण
(C) मृत्यु दर में तेज़ी से गिरावट जबकि जन्म दर का ऊँचा बने रहने के कारण
(D) जन्म दर और मृत्यु दर दोनों में तीव्र गिरावट के कारण

14. 'प्रजनन दर' को किस रूप में परिभाषित किया गया है?
(A) प्रति 1000 व्यक्तियों की कुल जनसंख्या पर वार्षिक रूप से जीवित जन्मे बच्चों की संख्या
(B) किसी क्षेत्र विशेष में प्रति 1000 पुरुषों की इकाई के पीछे विद्यमान स्त्रियों की संख्या
(C) किसी विशेष क्षेत्र में रहने वाले एक औसत व्यक्ति के जीवित रहने की संभावित कुल वर्षों की संख्या
(D) प्रजनन आयु वाली प्रति 1000 स्त्रियों पर जीवित जन्मे बच्चों की संख्या

15. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (संकेतक)
P. शिशु मृत्यु दर
Q. मातृ-मृत्यु दर
R. स्त्री-पुरुष अनुपात
S. आयु संभाविता

सूची II: (परिभाषा)
1. 1,00,000 जीवित प्रसूति पर प्रसव के दौरान मरने वाली स्त्रियों की संख्या
2. प्रति 1000 पुरुषों के पीछे स्त्रियों की संख्या
3. एक व्यक्ति के जीवित रहने की अनुमानित औसत वर्ष संख्या
4. प्रति 1000 जीवित पैदा हुए बच्चों में से एक वर्ष की आयु से पहले मरने वाले बच्चों की संख्या

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

16. जनसंख्या की 'प्रतिस्थापन स्तर' (replacement level) की अवस्था क्या होती है?
(A) जब किसी क्षेत्र की जन्म दर, वहाँ की मृत्यु दर से बहुत अधिक ऊपर हो जाती है
(B) जब मृत्यु होने वाले वृद्धों का स्थान लेने हेतु पर्याप्त नए बच्चे पैदा होते हैं
(C) जब समाज की कुल मृत्यु दर, जन्म दर के वार्षिक औसत से अधिक बढ़ जाती है
(D) जब समाज में प्रजनन दर का स्तर पूर्ण रूप से शून्य की स्थिति पर पहुँच जाता है

17. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): शिशु और मातृ-मृत्यु की ऊँची दरें पिछड़ेपन और गरीबी की सूचक होती हैं।
कारण (R): समाज के विकास के साथ चिकित्सा सुविधाओं, शिक्षा और जागरुकता में वृद्धि होने से ये दरें तेज़ी से घटने लगती हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

18. 'पराश्रितता अनुपात' की गणना कैसे की जाती है?
(A) 15 से कम और 64+ आयु वर्ग को 15-64 आयु वर्ग की कुल संख्या से भाग देकर

(B) कुल कार्यशील जनसंख्या के अनुपात को कुल पराश्रित जनसंख्या की संख्या से भाग देकर
(C) किसी क्षेत्र की कुल जनसंख्या को वहाँ की वर्तमान कार्यशील जनसंख्या से भाग देकर
(D) 64 वर्ष से अधिक आयु के वृद्ध लोगों को 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों से भाग देकर

19. 'जनसांख्यिकीय लाभांश' की अवधारणा किससे संबंधित है?
(A) जनसंख्या में वृद्ध लोगों के अनुपात में वृद्धि
(B) जनसंख्या में बच्चों के अनुपात में वृद्धि
(C) जनसंख्या में कार्यशील लोगों के अनुपात में वृद्धि
(D) जनसंख्या के स्थिर हो जाने से

20. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. उन्होंने विभिन्न देशों में आत्महत्या की दरों में पाए जाने वाले अंतरों को स्पष्ट किया।
2. उनका कहना था कि आत्महत्या की दर को सामाजिक कारणों से स्पष्ट करना ज़रुरी है।
3. यह अध्ययन सामाजिक प्रघटना के अस्तित्व के लिए एक ठोस तर्क प्रस्तुत करता है।
4. उन्होंने तर्क दिया कि प्रत्येक आत्महत्या व्यक्तिगत कारणों से होती है।
5. यह अध्ययन आकारिक जनसांख्यिकी का एक उदाहरण है।

उपरोक्त में से कौन से कथन एमिल दुर्खाइम के आत्महत्या के अध्ययन के बारे में सही हैं?
(A) 1, 2 और 3
(B) 2, 3 और 4
(C) 1, 4 और 5
(D) 3, 4 और 5

21. ऐतिहासिक आंकड़ों के अनुसार, किस दशक में भारत की जनसंख्या संवृद्धि दर ऋणात्मक थी?
(A) 1901-1911
(B) 1921-1931
(C) 1911-1921
(D) 1941-1951

22. 1918-1919 के दौरान भारत में जनसंख्या में तीव्र गिरावट का मुख्य कारण क्या था?
(A) प्रथम विश्व युद्ध
(B) इंफ्लूएंजा महामारी
(C) भीषण अकाल
(D) बड़े पैमाने पर प्रवसन

23. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. आर्थिक संवृद्धि जनसंख्या वृद्धि से अधिक हो सकती है।
2. गरीबी का कारण जनसंख्या वृद्धि नहीं बल्कि संसाधनों का असमान वितरण है।
3. यूरोपीय देशों के अनुभव ने उनकी भविष्यवाणियों को गलत साबित कर दिया।
4. वे प्राकृतिक निरोधों को अनिवार्य नहीं मानते थे।

उपरोक्त में से कौन से कथन माल्थस के सिद्धांत की आलोचना के प्रमुख बिंदु हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

24. 'पैंडेमिक' (Pandemic) शब्द का प्रयोग किस प्रकार की महामारी के लिए किया जाता है?
(A) जो बहुत व्यापक भौगोलिक क्षेत्र को प्रभावित करती है
(B) जो किसी एक सीमित क्षेत्र को प्रभावित करती है
(C) जो केवल पशुओं में फैलती है
(D) जो जीवाणुओं द्वारा फैलती है

25. 1921 के बाद भारत में मृत्यु दर में गिरावट आने का प्रमुख कारण क्या था?
(A) जन्म दर में गिरावट
(B) विवाह की आयु में वृद्धि
(C) अकालों और महामारियों पर नियंत्रण
(D) विदेशों में प्रवसन

26. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (महामारी/रोग)
P. इंफ्लूएंजा
Q. प्लेग
R. डेंगी
S. एड्स

सूची II: (संबंधित जानकारी)
1. 1994 में सूरत नगर में प्रकोप
2. विषाणु द्वारा फैलने वाली बीमारी
3. 25 वर्षों में ढाई करोड़ मृत्यु
4. 2006 में भारत के अनेक भागों में फैली

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

27. अमर्त्य सेन के अनुसार, अकाल का मुख्य कारण क्या है?
(A) केवल अनाज के उत्पादन में गिरावट
(B) जनसंख्या में अत्यधिक वृद्धि
(C) खराब मौसम की स्थिति
(D) 'हकदारी की पूर्ति का अभाव'

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): सामान्यतः समृद्धि का बढ़ता स्तर जन्म दर को मजबूती से नीचे खींचता है।
कारण (R): जब शिशु मृत्यु दरों में गिरावट आती है और शिक्षा-जागरुकता बढ़ती है, तो परिवार का आकार छोटा होने लगता है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

29. वर्ष 2016 के आँकड़ों के अनुसार, निम्नलिखित में से किस राज्य की कुल प्रजनन दर (TFR) प्रतिस्थापन स्तर से नीचे है?
(A) बिहार
(B) उत्तर प्रदेश
(C) केरल
(D) राजस्थान

30. आर्थिक सर्वेक्षण 2018-19 के अनुसार, कौन से दो राज्य वर्ष 2041 तक भारतीय जनसंख्या में होने वाली वृद्धि का लगभग आधा (50%) भाग तक बढ़ा सकते हैं?
(A) महाराष्ट्र और गुजरात
(B) केरल और तमिलनाडु
(C) पंजाब और हरियाणा
(D) उत्तर प्रदेश और बिहार

31. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इससे तात्पर्य कुल जनसंख्या के विभिन्न आयु वर्गों में व्यक्तियों के अनुपात से है।
2. यह विकास के स्तरों के अनुसार बदलती रहती है।
3. भारत की जनसंख्या बहुत जवान है।
4. आयु संरचना में परिवर्तन को 'जनसंख्या का बूढ़ा होना' भी कहा जा सकता है।
5. भारत में 60 वर्ष से ऊपर के आयु वर्ग का हिस्सा सबसे बड़ा है।

उपरोक्त में से कौन से कथन जनसंख्या की आयु संरचना के संबंध में सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 2, 3, 4, 5
(C) केवल 1, 2, 3, 4
(D) उपरोक्त सभी

32. भारत की जनसंख्या की आयु संरचना के आंकड़ों के अनुसार 1971 से 2011 तक किस आयु वर्ग के हिस्से में निरंतर गिरावट आई है?
(A) 15-59 वर्ष
(B) 0-14 वर्ष
(C) 60 वर्ष से अधिक
(D) उपरोक्त में से कोई नहीं

33. 'जनसंख्या पिरामिड' के सबसे निचले हिस्से का सँकरा होना क्या दर्शाता है?
(A) उच्च मृत्यु दर
(B) निम्न जन्म दर
(C) उच्च जन्म दर
(D) उच्च आयु संभाविता

34. आयु संरचना में क्षेत्रीय अंतर के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा सही है?
(A) केरल की आयु संरचना विकसित देशों की स्थिति के समान है।
(B) उत्तर प्रदेश में वृद्धजनों का अनुपात अपेक्षाकृत अधिक है।
(C) भारत के सभी राज्यों में आयु संरचना लगभग एक समान है।
(D) केरल में छोटे आयु समूहों में जनसंख्या का अनुपात बहुत अधिक है।

35. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की घोषणा
2. राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान नसबंदी कार्यक्रम
3. 'एन एस्से ऑन द प्रिंसिपल ऑफ़ पॉपुलेशन' का प्रकाशन
4. अमेरिका में पहली आधुनिक जनगणना

(A) 4, 3, 1, 2
(B) 3, 4, 1, 2
(C) 4, 1, 3, 2
(D) 3, 1, 4, 2

36. जनसांख्यिकीय लाभांश को वास्तविक संवृद्धि में बदलने के लिए क्या आवश्यक है?
(A) समाज में कुल जनसंख्या वृद्धि दर को पूरी तरह से शून्य के स्तर पर लाना
(B) जनसंख्या में पराश्रितता-अनुपात के स्तर को जानबूझकर उच्च स्तर पर बढ़ाना
(C) केवल कार्यशील आयु वर्ग के आकार और उनकी कुल संख्या को अनियंत्रित बढ़ाना
(D) कार्यशील आयु वर्ग में शिक्षा और रोज़गार के स्तरों में वृद्धि

37. ऐतिहासिक तौर पर, अधिकांश देशों में स्त्री-पुरुष अनुपात स्त्रियों के पक्ष में क्यों रहा है?
(A) प्राकृतिक रूप से पैदा होने वाले नर बच्चों की संख्या मादा बच्चों की तुलना में सदा बहुत कम होती है
(B) प्राचीन और आधुनिक काल के भीषण युद्धों में पुरुषों की मृत्यु की दर स्त्रियों से बहुत अधिक होती है
(C) शैशवावस्था में बालिकाओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है और स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक जीती हैं।
(D) अधिकांश समाजों के सांस्कृतिक और सामाजिक मानक सदैव ही स्त्रियों के अधिकारों के प्रबल पक्ष में रहे हैं

38. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (वर्ष)
P. 1901
Q. 1961
R. 2001

S. 2011

सूची II: (बाल स्त्री-पुरुष अनुपात 0-6 वर्ष)

1. 927
2. 976
3. 919
4. इस वर्ष से आँकड़े उपलब्ध नहीं

(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

39. भारत में बाल स्त्री-पुरुष अनुपात में तीव्र गिरावट का सबसे प्रमुख कारण समाजविज्ञानी किसे मानते हैं?

(A) मातृ-मृत्यु दर में वृद्धि
(B) प्राकृतिक आपदाएँ
(C) बालकों का बेहतर पोषण
(D) बालिका शिशुओं के प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार

40. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।

अभिकथन (A): भारत में बाल स्त्री-पुरुष अनुपात में गिरावट आई है।

कारण (R): इसका एक प्रमुख कारण लिंग-विशेष के गर्भपात और बालिका शिशुओं की उपेक्षा है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

41. निम्नलिखित में से कौन सा एक कारक भारत में गिरते स्त्री-पुरुष अनुपात से सीधे तौर पर संबंधित नहीं है?

(A) बालिका शिशुओं की हत्या
(B) लिंग-चयनात्मक गर्भपात
(C) महिलाओं की उच्च साक्षरता दर
(D) बच्चियों की देखभाल में घोर उपेक्षा

42. प्रसवपूर्व नैदानिक प्रविधियाँ (PCPNDT) अधिनियम किस उद्देश्य से बनाया गया था?

(A) भ्रूण के लिंग का पता लगाकर चयनात्मक गर्भपात को रोकने के लिए
(B) विकासशील देशों में जनसंख्या वृद्धि को कृत्रिम रूप से तेज़ी से बढ़ावा देने के लिए
(C) भ्रूण में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार के आनुवंशिक विकारों का परीक्षण करने के लिए
(D) समाज में परिवार नियोजन के विभिन्न वैज्ञानिक और आधुनिक तरीकों को बढ़ावा देने के लिए

43. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. यह समस्या गरीबी या अज्ञान के कारण उत्पन्न नहीं हुई है।
2. निम्नतम बाल स्त्री-पुरुष अनुपात भारत के सबसे समृद्ध क्षेत्रों में पाए जाते हैं।
3. पंजाब, हरियाणा जैसे राज्यों में प्रति व्यक्ति आय उच्च है, लेकिन बाल स्त्री-पुरुष अनुपात निम्न है।
4. यह समस्या केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित है।

उपरोक्त में से कौन से कथन भारत में गिरते बाल स्त्री-पुरुष अनुपात के संबंध में सही हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

44. 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(A) केवल बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देना
(B) बाल स्त्री-पुरुष अनुपात को बढ़ाना
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजित करना
(D) महिलाओं के लिए स्वास्थ्य सुविधाएँ बेहतर करना

45. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में स्त्री और पुरुष साक्षरता दर के बीच लगभग कितना अंतर है?

(A) 10.4%
(B) 21.7%
(C) 16.3%
(D) 24.8%

46. भारत में साक्षरता के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?

(A) स्वतंत्रता के बाद साक्षरता के स्तरों में काफ़ी सुधार आया है।
(B) अनुसूचित जातियों और जनजातियों में साक्षरता की दरें नीची रही हैं।
(C) केरल जैसे राज्य सर्वजनीन साक्षरता की ओर अग्रसर हैं।
(D) पुरुषों में साक्षरता दर स्त्रियों की साक्षरता दर से कम है।

47. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची I: (राज्य)

P. हरियाणा
Q. केरल
R. बिहार
S. अरुणाचल प्रदेश

सूची II: (जनसांख्यिकीय विशेषता, 2011 के निकटतम आँकड़ों के अनुसार)

1. उच्चतम बाल स्त्री-पुरुष अनुपात (972)
2. सबसे कम बाल स्त्री-पुरुष अनुपात (793 के निकट)
3. उच्चतम प्रजनन दर
4. उच्चतम समग्र स्त्री-पुरुष अनुपात

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

48. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की कुल जनसंख्या का लगभग कितना प्रतिशत भाग नगरीय क्षेत्रों में रहता है?
(A) 17.3%
(B) 31.2%
(C) 27.8%
(D) 68.8%

49. ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर प्रवसन (migration) का एक सामाजिक कारण क्या है?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि के आधुनिक और लाभकारी अवसरों को उपलब्ध कराना
(B) शहरों में गुमनामी की ज़िंदगी, जो जातीय भेदभाव से बचाती है
(C) गाँवों में आधुनिक सुख-सुविधाओं और बेहतर मनोरंजन के साधनों की उपलब्धता
(D) गाँवों के भीतरी क्षेत्रों में साझी संपत्ति के संसाधनों में निरंतर होने वाली वृद्धि

50. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसे "स्पैनिश फ्लू" के नाम से भी जाना था।
2. अनुमान है कि इससे विश्व की 20% जनसंख्या पीड़ित हुई।
3. भारत में इससे लगभग 1.25 करोड़ (125 लाख) लोगों की मृत्यु हुई।
4. प्रथम विश्व युद्ध इसका प्रत्यक्ष कारण था।
5. इसने भारत की जनसंख्या का लगभग 5% भाग नष्ट कर दिया।

उपरोक्त में से कौन से कथन 1918-19 की सार्वभौमिक इंफ्लूएंजा महामारी के संबंध में सही हैं?
(A) 1, 2, 3 और 5
(B) 1, 3, 4 और 5
(C) 1, 2 और 4
(D) उपरोक्त सभी

51. भारत ने अपनी जनसंख्या नीति की स्पष्ट घोषणा सर्वप्रथम किस वर्ष में की थी?
(A) 1947
(B) 1950
(C) 1952
(D) 1975

52. राष्ट्रीय आपातकाल (1975-76) के दौरान परिवार नियोजन कार्यक्रम की सबसे विवादास्पद विशेषता क्या थी?
(A) सरकारी स्तर पर आम लोगों को विभिन्न प्रकार की गर्भ-निरोधक गोलियाँ वितरित करना
(B) सरकारी संस्थानों के माध्यम से परिवार नियोजन पर व्यापक जागरूकता अभियान चलाना
(C) विवाह की कानूनी उम्र को सभी नागरिकों के लिए समान रूप से अनिवार्य रूप से बढ़ाना
(D) बड़े पैमाने पर ज़ोर-ज़बरदस्ती से वंध्यकरण (sterilisation)

53. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोग अब नगरीय जीवन शैली और उपभोग के स्वरुपों से अपरिचित नहीं हैं।
कारण (R): रेडियो, टेलीविजन और समाचारपत्र जैसे जनसंचार के साधन अब ग्रामीण क्षेत्रों में भी नगरीय जीवन की तस्वीरें पेश कर रहे हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

54. आपातकाल के बाद 'राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम' का नाम बदलकर क्या रखा गया?
(A) राष्ट्रीय जनसंख्या कार्यक्रम
(B) राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम
(C) राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन
(D) परिवार सहायता कार्यक्रम

55. राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 2017 का एक प्रमुख लक्ष्य निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) जनस्वास्थ्य व्यय को जी.डी.पी. के 5% तक बढ़ाना
(B) 2025 तक शिशु मृत्यु दर को 50 करना
(C) तंबाकू के उपयोग को पूरी तरह समाप्त करना
(D) 2025 तक कुल प्रजनन दर (TFR) को 2.1 पर लाना

56. निम्नलिखित को उनके प्रकाशन/घोषणा के वर्ष के अनुसार कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति
2. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति
3. 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम
4. प्रसवपूर्व नैदानिक प्रविधियाँ (PCPNDT) अधिनियम

(A) 4, 2, 3, 1
(B) 2, 4, 3, 1
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 2, 1, 4, 3

57. जनसांख्यिकी के अध्ययन को समाजशास्त्र के उद्भव से क्यों जोड़ा जाता है?
(A) क्योंकि समाजशास्त्र और जनसांख्यिकी दोनों ही गरीबी की जड़ों का अध्ययन करते हैं
(B) क्योंकि इन दोनों विज्ञानों की वास्तविक उत्पत्ति केवल अमेरिका में ही हुई थी
(C) 18वीं सदी के अंत में राष्ट्र-राज्यों की स्थापना और सांख्यिकी के विकास के कारण
(D) क्योंकि ये दोनों विषय केवल ग्रामीण समाज की समस्याओं का गहरा अध्ययन करते हैं

58. माल्थस के अनुसार, भरण-पोषण के साधन (जैसे भोजन) में किस प्रकार वृद्धि होती है?
(A) गणितीय या समांतर रूप से
(B) ज्यामितीय या गुणोत्तर रूप से
(C) चरघातांकी रूप से
(D) कोई वृद्धि नहीं होती

59. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत में जनसांख्यिकीय संक्रमण अभी तक पूरा नहीं हुआ है।
2. यहाँ मृत्यु दर कम कर दी गई है पर जन्म दर उसी अनुपात में नहीं घटी है।
3. भारत संक्रमण के तीसरे चरण में पहुँच चुका है।
4. भारत में जन्म और मृत्यु दर दोनों बहुत ऊँची हैं।
उपरोक्त में से कौन से कथन भारत में जनसांख्यिकीय संक्रमण के संबंध में सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1 और 3
(D) केवल 2 और 4

60. 'शून्य वृद्धि दर' की स्थिति का क्या अर्थ है?
(A) जब किसी देश की सीमा के भीतर किसी भी शिशु का नया जन्म नहीं होता है
(B) जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का अंतर शून्य होता है।
(C) जब किसी समाज में स्वास्थ्य कारणों से किसी भी व्यक्ति की मृत्यु नहीं होती
(D) जब समाज में प्रजनन दर का स्तर आवश्यक प्रतिस्थापन दर से काफी कम होता है

61. किसी देश की जनसंख्या का 'बूढ़ा होना' (ageing of population) क्या इंगित करता है?
(A) जीवन अवधि का कम होना
(B) जनसंख्या में छोटी आयु के वर्गों का बड़ा हिस्सा और बड़ी आयु के वर्गों का छोटा हिस्सा
(C) जनसंख्या में छोटी आयु के वर्गों का छोटा हिस्सा और बड़ी आयु के वर्गों का बड़ा हिस्सा
(D) जन्म दर में वृद्धि

62. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (दशक)
P. 1961-1971
Q. 1971-1981
R. 1991-2001
S. 2001-2011
सूची II: (दशकीय संवृद्धि दर %)
1. 24.7
2. 17.7
3. 24.8
4. 21.5
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

63. 'महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम' (मनरेगा) का एक प्रमुख उद्देश्य क्या था?
(A) ग्रामीण इलाकों में भूख और भुखमरी की समस्या का समाधान करना
(B) देश के शहरी क्षेत्रों में बेरोजगार युवाओं को कुशल रोजगार के अवसर प्रदान करना
(C) ग्रामीण समाज में केवल शिक्षित और कुशल महिलाओं को ही सुरक्षित रोजगार देना
(D) देश के भीतरी भागों में भारी और मध्यम औद्योगिक विकास को तेज़ी से बढ़ावा देना

64. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): भारत की जनसंख्या की आयु संरचना में एक 'उभार' बन रहा है।
कारण (R): कुल जनसंख्या में बीच वाले यानी कार्यशील आयु समूहों का हिस्सा बढ़ता जा रहा है, जिसे 'जनसांख्यिकीय लाभांश' कहा जाता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

65. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) ज्यामितीय वृद्धि - 2, 4, 6, 8, 10
(B) कार्यशील आयु वर्ग - 15-64 वर्ष
(C) गणितीय वृद्धि - 2, 4, 8, 16, 32
(D) पराश्रित आयु वर्ग - 15-64 वर्ष

66. वर्ष 2026 के लिए अनुमानित जनसंख्या पिरामिड में केरल और उत्तर प्रदेश की आयु संरचना में क्या मुख्य अंतर दिखाई देता है?
(A) केरल का पिरामिड मध्य और ऊपर चौड़ा है, जो कम जन्म दर एवं दीर्घायु दर्शाता है
(B) केरल का पिरामिड अपने निचले भाग में काफी चौड़ा है, जो उच्च जन्म दर को दर्शाता है
(C) उत्तर प्रदेश का पिरामिड ऊपरी भाग में बहुत चौड़ा है, जो वृद्ध जनसंख्या को दर्शाता है
(D) दोनों ही राज्यों के जनसंख्या पिरामिड का आकार और स्वरुप लगभग एक जैसा ही रहता है

67. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यदि श्रमिक बल में शामिल नए लोग अशिक्षित हों, तो उनकी उत्पादकता नीची रहेगी।
2. यदि नए श्रमिक बेरोजगार रहते हैं, तो वे पराश्रितों की

श्रेणी में शामिल हो जाएँगे।
3. यह केवल पराश्रितता अनुपात की परिभाषा पर निर्भर करता है, न कि रोजगार पर।
4. इसका लाभ उठाने के लिए योजनाबद्ध विकास और नीतियों का उपयोग आवश्यक है।
5. यह लाभ हमेशा और हर परिस्थिति में प्राप्त होता है।

उपरोक्त में से कौन से कारण जनसांख्यिकीय लाभांश के स्वतः प्राप्त न होने से संबंधित हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 3, 4, 5
(C) केवल 1, 2, 4
(D) उपरोक्त सभी

68. 'बेटे को अधिमान्यता' (son preference) की सामाजिक प्रघटना का प्रत्यक्ष परिणाम क्या है?
(A) जनसंख्या में तीव्र वृद्धि
(B) साक्षरता दर में कमी
(C) बढ़ता हुआ पराश्रितता अनुपात
(D) घटता हुआ स्त्री-पुरुष अनुपात

69. भारत में साक्षरता की परिभाषा के अनुसार, किसे साक्षर माना जाता है?
(A) समाज का कोई भी वयस्क व्यक्ति जो केवल अपना नाम और पता ठीक से लिख सकता है
(B) केवल 15 वर्ष से अधिक आयु का वह व्यक्ति जो किसी भी भाषा को पढ़-लिख सकता है
(C) 7+ आयु का व्यक्ति जो किसी भाषा को समझ के साथ पढ़ और लिख सकता है
(D) देश का कोई भी नागरिक जो केवल हिंदी भाषा को सरलता से पढ़ और समझ संकेत सकता है

70. स्वतंत्रता के बाद भारत में ग्रामीण-नगरीय जनसंख्या के अनुपात में क्या प्रमुख परिवर्तन आया है?
(A) ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत बढ़ा है।
(B) नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत लगातार बढ़ा है।
(C) दोनों का प्रतिशत स्थिर रहा है।
(D) नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत घटा है।

71. निम्नलिखित में से कौन-सा एक ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर प्रवसन का 'खिंचाव कारक' (pull factor) नहीं है?
(A) बेहतर रोजगार के अवसर
(B) बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएँ
(C) शहरी जीवन शैली का आकर्षण
(D) गाँवों में साझी संपत्ति के संसाधनों में कमी

72. निम्नलिखित भारतीय जनगणना वर्षों को उनकी कुल जनसंख्या (लाखों में) के आरोही क्रम में व्यवस्थित करें:
1. 1901 (238)
2. 1951 (361)
3. 1981 (683)
4. 2011 (1210)

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 4, 3, 2, 1
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 2, 1, 4, 3

73. 'मेट्रोपोलिस' (महानगर) शहर किन्हें कहा जाता है?
(A) जिनकी आबादी एक लाख से ज़्यादा है
(B) जो किसी राज्य की राजधानी हैं
(C) जिनकी आबादी दस लाख से ज़्यादा है
(D) जिनमें बड़े उद्योग स्थापित हैं

74. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. जन्म के समय जीवन प्रत्याशा को 2025 तक 70 वर्ष करना।
2. 2025 तक कुल प्रजनन दर को 2.1 पर लाना।
3. 2020 तक एम.एम.आर. को 100 तक घटाना।
4. 2025 तक सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं का उपयोग 50% बढ़ाना।

उपरोक्त में से कौन से कथन राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 के लक्ष्यों के संबंध में सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

75. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अवधि)
P. 18वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध
Q. 1790
R. 1975-76
S. 1952

सूची II: (घटना)
1. भारत की पहली जनसंख्या नीति
2. अमेरिका की पहली जनगणना
3. भारत में राष्ट्रीय आपातकाल
4. यूरोप में राष्ट्र-राज्यों की स्थापना

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-2, R-3, S-1
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

76. 'ऋणात्मक संवृद्धि दर' का क्या तात्पर्य है?
(A) प्रजनन शक्ति स्तर का प्रतिस्थापन दर के बराबर होना
(B) प्रजनन शक्ति स्तर का प्रतिस्थापन दर से नीचा रहना
(C) प्रजनन शक्ति स्तर का प्रतिस्थापन दर से ऊँचा रहना
(D) जनसंख्या का स्थिर हो जाना

77. 1918-19 के इंफ्लूएंजा को 'स्पैनिश फ्लू' क्यों कहा जाता था, यद्यपि उसका प्रत्यक्ष कारण प्रथम विश्व युद्ध नहीं था?
(A) चूँकि इस घातक बीमारी की वास्तविक शुरुआत मुख्य रुप से स्पेन देश से हुई थी

(B) क्योंकि इस महामारी ने उस समय केवल स्पेन की पूरी जनसंख्या को प्रभावित किया था
(C) क्योंकि युद्ध के कारण लगे सेंसरशिप के बीच स्पेन ने सबसे पहले इसके बारे में खुलकर रिपोर्ट किया था
(D) क्योंकि इस बीमारी को फैलाने वाला घातक वायरस केवल स्पेनिश नस्ल का ही पाया गया

78. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): जनसांख्यिकीय आँकड़े राज्य की नीतियों, विशेष रूप से आर्थिक विकास और जन कल्याण के लिए महत्त्वपूर्ण होते हैं।
कारण (R): इन आँकड़ों के बिना सरकार स्वास्थ्य, शिक्षा या रोजगार जैसी नीतियों का प्रभावी ढंग से निर्माण और कार्यान्वयन नहीं कर सकती।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

79. थॉमस माल्थस ने किस संस्था में इतिहास और राजनीतिक अर्थशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया?
(A) ईस्ट इंडिया कंपनी कॉलेज, हैलीबरी
(B) कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय
(C) ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय
(D) लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स

80. जनसंख्या अध्ययन या सामाजिक जनसांख्यिकी का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) विभिन्न समाजों में होने वाले जनसंख्या परिवर्तन के प्रमुख संघटकों का मापन करना
(B) जनसंख्या संरचनाओं एवं परिवर्तनों के व्यापक कारणों तथा परिणामों का पता लगाना
(C) जनसंख्या वृद्धि का सटीक पूर्वानुमान लगाने हेतु जटिल गणितीय विधियाँ अपनाना
(D) किसी विशेष क्षेत्र में केवल वार्षिक जन्म और मृत्यु दर के सरकारी आँकड़े एकत्र करना

81. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 1971 में 0-14 आयु वर्ग का हिस्सा 42% था जो 2011 में घटकर 29% रह गया।
2. 15-59 आयु वर्ग का हिस्सा 1971 के 53% से बढ़कर 2011 में 63% हो गया।
3. 60 वर्ष से ऊपर की आयु वाले वर्ग का हिस्सा 1971-2011 के दौरान 5% से बढ़कर 8% हो गया।
4. 2026 तक 0-14 आयु वर्ग का हिस्सा घटकर 23% हो जाने का अनुमान है।
5. 2026 तक 60+ आयु वर्ग का हिस्सा बढ़कर 12% हो जाने का अनुमान है।

उपरोक्त में से कौन से कथन भारत में जनसंख्या की आयु संरचना के संबंध में सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 3, 4, 5
(C) केवल 1, 4, 5
(D) उपरोक्त सभी

82. 1991 से 2001 के दशक के दौरान बाल स्त्री-पुरुष अनुपात में कितनी गिरावट दर्ज की गई?
(A) 18 अंक
(B) 7 अंक
(C) 17 अंक
(D) 8 अंक

83. निम्नलिखित में से कौन-सा राज्य 2011 की जनगणना के अनुसार 900 से कम बाल स्त्री-पुरुष अनुपात वाले राज्यों में शामिल है?
(A) केरल
(B) असम
(C) हरियाणा
(D) पश्चिम बंगाल

84. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. बाल स्त्री-पुरुष अनुपात का समग्र स्त्री-पुरुष अनुपात से नीचे जाना
2. स्वतंत्रता के बाद पहली जनगणना
3. दशकीय संवृद्धि दर का ऋणात्मक होना
4. दशकीय संवृद्धि दर का उच्चतम स्तर (24.8%) पर पहुँचना

(A) 3, 2, 4, 1
(B) 2, 3, 4, 1
(C) 3, 4, 2, 1
(D) 2, 4, 1, 3

85. 'वंध्यकरण' (sterilisation) से क्या तात्पर्य है?
(A) शिशु जन्म को बढ़ावा देने वाली चिकित्सा पद्धति
(B) केवल महिलाओं के लिए उपयोग की जाने वाली गर्भनिरोधक विधि
(C) गर्भाधान और शिशुजन्म को रोकने वाली चिकित्सा पद्धतियाँ
(D) जन्म के समय लिंग का निर्धारण

86. पुरुषों और स्त्रियों के लिए उपयोग में लाई जाने वाली वंध्यकरण की शल्य पद्धतियों को क्रमशः क्या कहा जाता है?
(A) ट्यूबेक्टोमी और वासेक्टोमी
(B) वासेक्टोमी और ट्यूबेक्टोमी
(C) सोनोग्राम और एमआरआई
(D) अल्ट्रासाउंड और एक्सरे

87. भारत में जनसंख्या वृद्धि दर 1961-1981 के दौरान लगभग कितनी थी?
(A) 1.33%
(B) -0.03%
(C) 1.63%
(D) 2.2%

88. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (वर्ष)
P. 1951
Q. 1981
R. 2001
S. 2011
सूची II: (साक्षरता दर - व्यक्ति %)
1. 43.6
2. 18.3
3. 73.0
4. 65.4
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

89. 1951 में भारत में स्त्री साक्षरता दर कितनी थी?
(A) 27.2%
(B) 18.3%
(C) 8.9%
(D) 15.4%

90. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): भारत में साक्षरता की दर में पाई जाने वाली असमानताएँ पीढ़ियों के बीच भी असमानताएँ उत्पन्न करती हैं।
कारण (R): निरक्षर माता-पिता यह सुनिश्चित करने की सुविधा से और ज़्यादा वंचित हैं कि उनके बच्चे अच्छी तरह से शिक्षित हों।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

91. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत कितना है?
(A) 82.7%
(B) 72.2%
(C) 31.2%
(D) 68.8%

92. गाँवों में रहने वाले लोगों द्वारा खेती से अलग भिन्न व्यवसायों को अपनाने का क्या कारण है?
(A) गाँवों के भीतरी क्षेत्रों में कृषि कार्यों का अत्यधिक लाभदायक और सरल हो जाना
(B) कृषि का आर्थिक मूल्य तुलनात्मक रूप से घट जाना और आय के अन्य स्रोतों की आवश्यकता
(C) देश के प्रमुख शहरी क्षेत्रों में नए रोज़गार के अवसरों की निरंतर होने वाली कमी
(D) स्थानीय सरकार द्वारा ग्रामीणों को अन्य व्यवसायों को अपनाने हेतु मजबूर किया जाना

93. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह जनसंख्या का सुव्यवस्थित अध्ययन है।
2. इसका अंग्रेजी पर्याय यूनानी शब्दों 'डेमोस' और 'ग्राफीन' से बना है।
3. इसमें जन्म, मृत्यु तथा प्रवसन के स्वरूपों का अध्ययन किया जाता है।
4. इसमें केवल जनसंख्या के आकार का अध्ययन किया जाता है, संरचना का नहीं।

उपरोक्त में से कौन से कथन जनसांख्यिकी के अध्ययन के संबंध में सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

94. माल्थस के आलोचकों का गरीबी और भुखमरी के बारे में क्या तर्क था?
(A) ये समस्याएँ जनसंख्या वृद्धि के कारण होती हैं।
(B) ये समस्याएँ केवल अविकसित देशों में होती हैं।
(C) इन समस्याओं का कोई समाधान नहीं है।
(D) इन समस्याओं का आर्थिक संसाधनों के असमान वितरण के कारण होती हैं।

95. 'जीवन संभाविता' या 'आयु संभाविता' (Life Expectancy) क्या है?
(A) एक औसत व्यक्ति अनुमानतः कितने वर्षों तक जीवित रहेगा, इसका सूचक
(B) किसी व्यक्ति द्वारा जीए गए कुल वर्षों की संख्या
(C) बच्चे पैदा कर सकने की अधिकतम आयु
(D) किसी देश में सबसे वृद्ध व्यक्ति की आयु

96. चीन, दक्षिण कोरिया और भारत जैसे देशों में स्त्री-पुरुष अनुपात के घटने का क्या कारण बताया गया है?
(A) विभिन्न देशों में समय-समय पर आने वाली विनाशकारी और भीषण प्राकृतिक आपदाएँ
(B) 'बेटे को अधिमान्यता' और बालिका शिशुओं की उपेक्षा
(C) समाज में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी के कारण होने वाली उच्च मातृ-मृत्यु की दर
(D) शिक्षा और रोज़गार के लिए स्त्रियों का दूसरे विकसित देशों में होने वाला प्रवसन

97. जनसंख्या पिरामिड में समस्तरीय छड़ें (Horizontal bars) क्या दर्शाती हैं?
(A) किसी देश या क्षेत्र विशेष में निवास करने वाली कुल जनसंख्या की सकल संख्या
(B) किसी विशेष आयु समूह में पुरुष और स्त्रियों की संख्या या प्रतिशत
(C) किसी समाज में स्वास्थ्य कारणों से होने वाली वार्षिक मृत्यु दर के सरकारी आँकड़े
(D) किसी क्षेत्र में प्रति वर्ष पैदा होने वाले जीवित शिशुओं की कुल संख्या के आँकड़े

98. राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 के अनुसार, 2025 तक पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों में मृत्यु दर को कम करके कितना करने का लक्ष्य है?
(A) 23
(B) 16
(C) 100
(D) 2.1

99. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. काम की तलाश में लोग शहरों की ओर जाते हैं।
2. गाँवों में तालाबों और वन जैसे साझी संपत्ति संसाधनों में कमी प्रवसन का एक कारण है।
3. शहरी जीवन की गुमनामी प्रभुत्वशाली समूहों के गरीब लोगों को आकर्षित करती है।
4. अनुसूचित जातियों के लोग शहरों में रोज़मर्रा के अपमान से कुछ हद तक बच जाते हैं।
5. शहरों में प्रवसन की दर हाल के वर्षों में घटी है।
उपरोक्त में से कौन से कथन भारत में प्रवसन के संदर्भ में सही हैं?
(A) 1, 2 और 3
(B) 3, 4 और 5
(C) 1, 2, 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

100. भारत सरकार ने किस अधिनियम के माध्यम से बालिका भ्रूण हत्या को रोकने का प्रयास किया है?
(A) राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000
(B) राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति, 2017
(C) महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम
(D) प्रसवपूर्व नैदानिक प्रविधियाँ (PCPNDT) अधिनियम

101. 2001 से 2011 के बीच भारत की औसत वार्षिक संवृद्धि दर (%) क्या थी?
(A) 2.22
(B) 2.14
(C) 1.63
(D) 1.95

102. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (संकल्पना)
P. जनसंख्या विस्फोट
Q. प्रतिस्थापन स्तर
R. जनसांख्यिकीय लाभांश
S. जनसंख्या का बूढ़ा होना
सूची II: (अवस्था/विशेषता)
1. जन्म दर और मृत्यु दर का लगभग बराबर होना
2. कार्यशील आयु वर्ग का बड़ा अनुपात
3. संक्रमणकालीन चरण
4. बड़ी आयु के वर्गों का बड़ा हिस्सा
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-2, R-3, S-1

103. 'एपिडेमिक' (Epidemic) शब्द का प्रयोग किस प्रकार की महामारी के लिए किया जाता है?
(A) जो पूरे विश्व में फैल जाती है
(B) जो कभी समाप्त नहीं होती
(C) जो केवल जानवरों को प्रभावित करती है
(D) जो एक सीमित क्षेत्र में फैली होती है

104. भारत में 1921 से पहले मृत्यु दर के ऊँचे रहने का एक प्रमुख कारण क्या था?
(A) बार-बार पड़ने वाले अकाल और महामारियाँ
(B) आधुनिक चिकित्सा का अभाव
(C) निम्न जन्म दर
(D) लोगों की कम आयु संभाविता

105. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): भारत में गिरता हुआ बाल स्त्री-पुरुष अनुपात एक गंभीर चिंता का विषय है।
कारण (R): यह अनुपात सबसे अधिक समृद्ध राज्यों जैसे पंजाब और हरियाणा में सबसे कम है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

106. जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत के अनुसार, एक समाज किस अवस्था से किस अवस्था की ओर जाता है?
(A) पिछड़ी अवस्था से उन्नत अवस्था की ओर
(B) उन्नत अवस्था से पिछड़ी अवस्था की ओर
(C) ग्रामीण अवस्था से औद्योगिक अवस्था की ओर
(D) नगरीय अवस्था से ग्रामीण अवस्था की ओर

107. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म असत्य है?
(A) प्रति 1000 व्यक्तियों की औसत जनसंख्या पर वार्षिक रूप से होने वाले जीवित जन्म

(B) प्रति 1000 व्यक्तियों की औसत जनसंख्या पर वार्षिक रूप से होने वाली कुल मृत्यु
(C) 15-49 वर्ष के आयु वर्ग की प्रति 1000 स्त्रियों पर वार्षिक रूप से जीवित जन्मे बच्चे
(D) शिशु मृत्यु दर - प्रति 1000 जीवित जन्म पर 5 वर्ष से कम आयु में मृत्यु

108. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. पराश्रितता अनुपात में गिरावट।
2. 'जनसांख्यिकीय लाभांश' की संभावना।
3. वृद्धजनों के अनुपात में भविष्य में वृद्धि।
4. कार्यशील आयु वाले लोगों का बोझ कम होना।

उपरोक्त में से कौन से भारतीय जनसंख्या की आयु संरचना में परिवर्तन के परिणाम हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

109. 1991 और 2001 की जनगणनाओं के बीच स्त्री-पुरुष अनुपात के रुझानों में क्या असामान्यता दिखाई देती है?
(A) समग्र स्त्री-पुरुष अनुपात और बाल स्त्री-पुरुष अनुपात दोनों बढ़े।
(B) समग्र स्त्री-पुरुष अनुपात और बाल स्त्री-पुरुष अनुपात दोनों घटे।
(C) समग्र स्त्री-पुरुष अनुपात बढ़ा, लेकिन बाल स्त्री-पुरुष अनुपात में भारी गिरावट आई।
(D) समग्र स्त्री-पुरुष अनुपात घटा, लेकिन बाल स्त्री-पुरुष अनुपात बढ़ा।

110. भारत में साक्षरता दर में वृद्धि की गति धीमी क्यों रही है?
(A) शिक्षा पर कम खर्च के कारण
(B) स्कूलों की कमी के कारण
(C) लोगों की अरुचि के कारण
(D) उच्च जनसंख्या वृद्धि दर के कारण

111. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया बहुत तेज़ गति से चल रही है।
2. सबसे विराट शहर (महानगर) ही सबसे अधिक तेज़ी से फैल रहे हैं।
3. नगरीय जनसंख्या का दो-तिहाई से अधिक भाग 27 बड़े शहरों में रहता है।
4. छोटे कस्बे ग्रामीण प्रवासियों को आकर्षित नहीं करते हैं।
5. भारत की कुल नगरीय जनसंख्या 50% से अधिक है।

उपरोक्त में से कौन से कथन भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया के संबंध में सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 3, 4, 5
(C) केवल 1, 4, 5
(D) केवल 1, 2, 5

112. भारत के राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम के उद्देश्य क्या हैं?
(A) केवल देश की कुल जनसंख्या संवृद्धि की वार्षिक दर को कृत्रिम रूप से धीमा करना
(B) जनसंख्या वृद्धि दर को प्रभावित करना, जन-स्वास्थ्य सुधार और जागरुकता बढ़ाना
(C) सरकारी संस्थानों के माध्यम से केवल बड़े पैमाने पर ज़ोर-ज़बरदस्ती से वंध्यकरण करना
(D) समाज के भीतर केवल जन्म नियंत्रण के विभिन्न आधुनिक उपायों का निशुल्क वितरण करना

113. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में स्त्री साक्षरता दर कितनी है?
(A) 54.2%
(B) 64.6%
(C) 73.0%
(D) 80.9%

114. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (राज्य समूह)
P. उत्तर प्रदेश और बिहार
Q. आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक
R. महाराष्ट्र और गुजरात
S. पंजाब, हरियाणा और दिल्ली

सूची II: (2041 तक प्रक्षेपित जनसंख्या का हिस्सा)
1. 16%
2. 28%
3. 5%
4. 13%

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

115. भारत के कौन से राज्य जनसंख्या संवृद्धि के 'प्रतिस्थापन स्तरों' को प्राप्त कर चुके हैं या उसके निकट हैं?
(A) बिहार, उत्तर प्रदेश, राजस्थान
(B) मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड
(C) आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, तमिलनाडु
(D) हरियाणा, गुजरात, महाराष्ट्र

116. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): शहरी जीवन की गुमनामी सामाजिक रूप से पीड़ित समूहों के लिए लाभकारी हो सकती है।
कारण (R): शहरों में लोग गाँवों की तरह एक दूसरे की जाति से परिचित नहीं होते, जिससे रोज़मर्रा के जातीय अपमान से बचाव होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

117. 2020 में भारतीयों की औसत उम्र क्या थी, जो इसे विश्व के सबसे युवा देशों में से एक बनाती है?
(A) 37 साल
(B) 45 साल
(C) 29 साल
(D) 48 साल

118. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में नगरीकरण के प्रभाव को नहीं दर्शाता है?
(A) ग्रामीण और नगरीय इलाकों के बीच की खाई पट रही है।
(B) देश में राजनीतिक शक्ति प्रदान करने में ग्रामीण इलाकों की भूमिका समाप्त हो गई है।
(C) उपभोक्ता बाज़ार के साथ ग्रामीण इलाकों का जुड़ाव बढ़ रहा है।
(D) भारत का सार्वजनिक चेहरा अधिकाधिक नगरीय होता जा रहा है।

119. राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 के अनुसार क्षयरोग (TB) के संबंध में क्या लक्ष्य निर्धारित किया गया है?
(A) नए मामलों में 50% की कमी लाना।
(B) इलाज दर को 75% तक लाना।
(C) 2030 तक इसे समाप्त करना।
(D) 2025 तक इसे पूरी तरह समाप्त करना।

120. निम्नलिखित अवस्थाओं पर विचार करें:
1. निम्न वृद्धि दर: निम्न जन्म दर, निम्न मृत्यु दर
2. उच्च वृद्धि दर (जनसंख्या विस्फोट): उच्च जन्म दर, निम्न मृत्यु दर
3. निम्न वृद्धि दर: उच्च जन्म दर, उच्च मृत्यु दर

उपरोक्त में से जनसांख्यिकीय संक्रमण के विभिन्न चरणों का सही क्रम क्या है?
(A) 3, 2, 1
(B) 1, 2, 3
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 1, 2

121. भारत में 1994 से 2004 के दौरान युवाओं (15-30 वर्ष) में रोजगार वृद्धि की दर में क्या प्रवृत्ति देखी गई?
(A) दर में भारी वृद्धि हुई।
(B) दर स्थिर रही।
(C) दर में भारी गिरावट आई।
(D) केवल ग्रामीण क्षेत्रों में दर बढ़ी।

122. अल्ट्रासाउंड जैसी आधुनिक चिकित्सा तकनीकों का दुरुपयोग किस समस्या को बढ़ावा दे रहा है?
(A) चयनात्मक गर्भपात
(B) जनसंख्या वृद्धि
(C) मातृ मृत्यु
(D) शिशु मृत्यु

123. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत 1952 में जनसंख्या नीति घोषित करने वाले पहले देशों में से एक था।
2. प्रारंभ में इसका उद्देश्य जन्म नियंत्रण द्वारा जनसंख्या वृद्धि को धीमा करना था।
3. आपातकाल में ज़बरदस्ती नसबंदी के कारण इसे गहरा धक्का लगा।
4. वर्तमान में इसके उद्देश्य व्यापक सामाजिक-जनसांख्यिकीय हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन भारत की जनसंख्या नीति के संबंध में सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) उपरोक्त सभी

124. समाजशास्त्र के लिए जनसांख्यिकीय आँकड़ों का क्या महत्त्व है?
(A) यह केवल सरकार के लिए उपयोगी है।
(B) यह सामाजिक प्रघटना के अस्तित्व के लिए एक ठोस तर्क प्रस्तुत करता है।
(C) यह व्यक्तिगत व्यवहार को समझने में मदद करता है।
(D) इसका समाजशास्त्र से कोई संबंध नहीं है।

125. माल्थस ने अपने सिद्धांत में जनसंख्या को नियंत्रित करने वाले 'कृत्रिम निरोध' (Preventive Checks) में किसे शामिल किया था?
(A) अकाल और महामारी
(B) युद्ध और विनाश
(C) बड़ी उम्र में विवाह और यौन संयम
(D) गर्भनिरोधक उपायों का प्रयोग

126. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (जनगणना वर्ष)
P. 1921
Q. 1971
R. 2001
S. 2011

सूची II: (नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत)
1. 19.9
2. 11.2
3. 31.2
4. 27.8

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

127. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत का समग्र स्त्री-पुरुष अनुपात कितना है?
(A) 943
(B) 927
(C) 933
(D) 919

128. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): गिरता हुआ पराश्रितता अनुपात किसी देश के लिए आर्थिक संवृद्धि और समृद्धि का स्रोत बन सकता है।
कारण (R): इसका अर्थ है कि कार्यशील लोगों का अनुपात काम न करने वालों की तुलना में अधिक बड़ा है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

129. भारत में साक्षरता दर के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा असत्य है?
(A) 1951 में साक्षरता दर 18.3% थी।
(B) स्त्री-पुरुष के बीच साक्षरता का अंतर लगातार बढ़ रहा है।
(C) 2011 में साक्षरता दर 73.0% हो गई।
(D) स्त्रियों में साक्षरता पुरुषों के मुकाबले अधिक तेज़ी से बढ़ रही है।

130. 2001 की जनगणना के अनुसार, भारत का बाल स्त्री-पुरुष अनुपात (0-6 वर्ष) कितना था?
(A) 927
(B) 945
(C) 919
(D) 933

131. निम्नलिखित कारकों पर विचार करें:
1. बालिका शिशुओं की उपेक्षा।
2. लिंग-विशेष के गर्भपात।
3. बालिका शिशुओं की हत्या।
4. पुत्र को वरीयता देने वाले सामाजिक मानक।
5. बालिकाओं में उच्च प्राकृतिक मृत्यु दर।

उपरोक्त में से कौन से कारक भारत में घटते बाल स्त्री-पुरुष अनुपात के लिए जिम्मेदार हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 3, 4, 5
(C) केवल 1, 2, 3, 4
(D) उपरोक्त सभी

132. 'सामाजिक आँकड़े' (Social Statistics) से क्या तात्पर्य है?
(A) समाज के बारे में विभिन्न प्रकार की गुणात्मक और गैर-सांख्यिकीय कहानियाँ
(B) केवल किसी देश की सकल राष्ट्रीय आय और व्यय से संबंधित महत्वपूर्ण आँकड़े
(C) विभिन्न सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर लोकप्रिय और प्रसारित होने वाले आँकड़े
(D) जनसंख्या और अर्थव्यवस्था के विभिन्न पक्षों से संबंधित मात्रात्मक तथ्य

133. किस घटना के बाद भारत में मृत्यु दर में तेज़ी से गिरावट आई?
(A) 1901 के बाद
(B) 1947 के बाद
(C) 1921 के बाद
(D) 1981 के बाद

134. निम्नलिखित में से कौन-सी बीमारी ऐतिहासिक रूप से एक ऐसी प्रमुख महामारी नहीं रही है जिसने मृत्यु दर को गंभीर रूप से प्रभावित किया हो?
(A) प्लेग
(B) चेचक
(C) हैजा
(D) कैंसर

135. जनसंख्या पिरामिड के शीर्ष का चौड़ा होना क्या दर्शाता है?
(A) किसी समाज में होने वाली वार्षिक जन्म दर के ऊँचे और निरंतर स्तरों को दर्शाना
(B) किसी देश में होने वाली वार्षिक जन्म दर के निम्न और घटते हुए स्तरों को दर्शाना
(C) किसी विशेष क्षेत्र में होने वाली उच्च शिशु मृत्यु दर के सरकारी सांख्यिकीय आँकड़े
(D) लोगों की लंबी जीवन अवधि और वृद्ध जनसंख्या का बड़ा हिस्सा

136. 2011 की जनगणना के अनुसार, बाल स्त्री-पुरुष अनुपात (0-6 वर्ष) में सबसे खराब स्थिति किस राज्य की है?
(A) हरियाणा
(B) पंजाब
(C) दिल्ली
(D) उत्तर प्रदेश

137. ग्रामीण भारत में लोगों के लिए शहरों के आकर्षण का एक प्रमुख आर्थिक कारण क्या है?
(A) बेहतर मनोरंजन
(B) प्रदूषण मुक्त वातावरण
(C) गाँवों में रोजगार के अवसरों की कमी और शहरों में काम की तलाश
(D) पारंपरिक जीवन शैली

138. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 1901-1951 के बीच संवृद्धि दर साधारण रही।
2. 1911-1921 के बीच संवृद्धि दर ऋणात्मक थी।
3. स्वतंत्रता के बाद संवृद्धि दर में काफ़ी बढ़ोतरी हुई।

4. 1981 के बाद से वार्षिक संवृद्धि दर में गिरावट आई है।
उपरोक्त में से कौन से कथन भारत की जनसंख्या संवृद्धि दर के रुझानों के संबंध में सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

139. राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 के अनुसार, 2020 तक सभी के लिए क्या उपलब्ध करवाने का लक्ष्य था?
(A) मुफ्त आवास
(B) मुफ्त शिक्षा
(C) मुफ्त बिजली
(D) सुरक्षित पानी और स्वच्छता

140. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): भारत में परिवार नियोजन कार्यक्रम को राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान गहरा धक्का लगा।
कारण (R): आपातकाल के दौरान सरकार ने बड़े पैमाने पर ज़ोर-ज़बरदस्ती से वंध्यकरण का कार्यक्रम लागू किया था, जिसका जनता में व्यापक विरोध हुआ।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

141. 2011 में 15-59 आयु वर्ग का हिस्सा कुल जनसंख्या का कितना प्रतिशत था?
(A) 53%
(B) 59%
(C) 63%
(D) 64%

142. जनसांख्यिकीय संक्रमण के तीसरे (अंतिम) चरण की क्या विशेषता है?
(A) उच्च जन्म दर, निम्न मृत्यु दर
(B) उच्च जन्म दर, उच्च मृत्यु दर
(C) निम्न जन्म दर, उच्च मृत्यु दर
(D) निम्न जन्म दर, निम्न मृत्यु दर

143. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन माल्थस के सिद्धांत का सबसे प्रभावी खंडन प्रस्तुत करता है?
(A) यूरोपीय देशों का अनुभव जहाँ जनसंख्या वृद्धि के साथ जीवन स्तर उन्नत हुआ
(B) विभिन्न उदारवादी और मार्क्सवादी विद्वानों द्वारा प्रस्तुत की गई गहन आलोचना
(C) समाज में होने वाली जनसंख्या वृद्धि की दर का ज्यामितीय स्वरुप में न होना
(D) देश के भीतरी भागों में कृषि उत्पादन की दर का लंबे समय तक स्थिर बने रहना

144. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (विषय)
P. दुर्खाइम का अध्ययन
Q. माल्थस का निबंध
R. भारत की पहली जनगणना
S. PCPNDT अधिनियम
सूची II: (मुख्य विचार/वर्ष)
1. 1798
2. आत्महत्या की दर
3. 1867-72
4. लिंग-चयनात्मक गर्भपात पर रोक
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

145. भारत में कौन से ऐसे राज्य हैं जहाँ 2016 में प्रजनन दर 3.0 या उससे भी ऊपर थी?
(A) केरल और तमिलनाडु
(B) बिहार और उत्तर प्रदेश
(C) पंजाब और हरियाणा
(D) महाराष्ट्र और गुजरात

146. भारत में सबसे पहली आधुनिक किस्म की जनगणना का प्रयास किस अवधि में किया गया?
(A) 1867–72
(B) 1790-92
(C) 1881-83
(D) 1901-03

147. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत में मृत्यु दर की गिरावट जन्म दर की गिरावट से तेज रही है।
2. 1981 के बाद से जनसंख्या वृद्धि दर में गिरावट आई है, फिर भी यह ऊँची बनी हुई है।
3. केरल और तमिलनाडु जैसे राज्यों ने प्रजनन दर में काफी कमी की है।
4. बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में प्रजनन दर अभी भी काफी ऊँची है।
5. भारत पूरी तरह से जनसांख्यिकीय संक्रमण के अंतिम चरण में प्रवेश कर चुका है।
उपरोक्त में से कौन से कथन भारत में जनसांख्यिकीय रुझानों के संबंध में सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 1, 2, 3, 4
(C) केवल 3, 4, 5
(D) उपरोक्त सभी

148. भारत की दसवर्षीय जनगणना को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

1. 1921 की जनगणना
2. 2011 की जनगणना
3. 1951 की जनगणना
4. 1881 की जनगणना

(A) 4, 1, 3, 2
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 4, 3, 1, 2
(D) 1, 4, 3, 2

149. कौन सा आर्थिक-सामाजिक कारक साक्षरता और स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता को सीधे तौर पर प्रभावित करता है?

(A) नगरीकरण
(B) औद्योगीकरण
(C) साक्षरता
(D) प्रवसन

150. अंतिम विश्लेषण में, राज्य की नीतियों के अलावा, जनसांख्यिकीय परिवर्तनशील दरों को कौन से कारक मुख्य रुप से निर्धारित करते हैं?

(A) केवल राजनीतिक कारक
(B) आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारक
(C) केवल भौगोलिक कारक
(D) केवल तकनीकी कारक

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत जनसंख्या वृद्धि और आर्थिक विकास के बीच के जटिल संबंध को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण मॉडल प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांत मानता है कि सभी समाज जनसांख्यिकीय विकास के तीन (या कभी-कभी चार या पाँच) चरणों से गुजरते हैं। पहले चरण, जिसे 'उच्च स्थिर' अवस्था कहा जाता है, में जन्म और मृत्यु दर दोनों ही बहुत अधिक होती हैं, जिससे जनसंख्या वृद्धि लगभग स्थिर रहती है। यह अवस्था पूर्व-औद्योगिक समाजों की विशेषता है जहाँ स्वच्छता, पोषण और चिकित्सा सुविधाओं का अभाव होता है। दूसरा चरण, 'प्रारंभिक विस्तार' का चरण है, जहाँ मृत्यु दर में तेजी से गिरावट आती है। यह गिरावट सार्वजनिक स्वास्थ्य, बेहतर खाद्य आपूर्ति और चिकित्सा विज्ञान में प्रगति के कारण होती है, लेकिन जन्म दर सांस्कृतिक और सामाजिक कारकों के कारण उच्च बनी रहती है। इसके परिणामस्वरुप जनसंख्या में तीव्र विस्फोट होता है। तीसरा चरण, 'देर से विस्तार' का है, जिसमें शहरीकरण, शिक्षा के बढ़ते स्तर और परिवार नियोजन तक पहुँच के कारण जन्म दर भी गिरने लगती है, जिससे जनसंख्या वृद्धि की दर धीमी हो जाती है। अंतिम, चौथा चरण 'निम्न स्थिर' अवस्था का है, जिसमें जन्म और मृत्यु दर दोनों ही निम्न स्तर पर स्थिर हो जाती हैं, जिससे जनसंख्या या तो स्थिर हो जाती है या बहुत धीरे-धीरे बढ़ती है। कुछ जनसांख्यिकीविद् एक पाँचवें चरण का भी उल्लेख करते हैं जिसमें जन्म दर मृत्यु दर से भी नीचे चली जाती है, जिससे जनसंख्या में प्राकृतिक कमी होने लगती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. जनसांख्यिकीय संक्रमण के पहले चरण में जनसंख्या वृद्धि लगभग स्थिर क्यों रहती है?

(A) क्योंकि जन्म दर कम और मृत्यु दर अधिक होती है।
(B) क्योंकि जन्म दर और मृत्यु दर दोनों ही बहुत उच्च स्तर पर होती हैं।
(C) क्योंकि मृत्यु दर कम और जन्म दर अधिक होती है।
(D) क्योंकि जन्म दर और मृत्यु दर दोनों ही बहुत निम्न स्तर पर होती हैं।

152. अनुच्छेद के अनुसार, 'जनसंख्या विस्फोट' की घटना किस चरण की मुख्य विशेषता है?

(A) दूसरे चरण की
(B) पहले चरण की
(C) तीसरे चरण की
(D) चौथे चरण की

153. मृत्यु दर में गिरावट के लिए अनुच्छेद में निम्नलिखित में से कौन सा कारक उत्तरदायी नहीं बताया गया है?

(A) सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार
(B) बेहतर खाद्य आपूर्ति
(C) शहरीकरण और परिवार नियोजन
(D) चिकित्सा विज्ञान में प्रगति

154. तीसरे चरण में जन्म दर में गिरावट का मुख्य कारण क्या है?

(A) महामारियों का बढ़ना
(B) कृषि उत्पादकता में कमी
(C) सरकार द्वारा कठोर जनसंख्या नियंत्रण नीतियां
(D) शिक्षा का बढ़ता स्तर और शहरीकरण

155. यदि किसी देश में जन्म दर मृत्यु दर से भी कम हो जाए, तो जनसांख्यिकीय संक्रमण मॉडल के अनुसार यह किस संभावित चरण को इंगित करेगा?

(A) दूसरा चरण (प्रारंभिक विस्तार)
(B) तीसरा चरण (देर से विस्तार)
(C) पाँचवाँ चरण (जनसंख्या में कमी)
(D) चौथा चरण (निम्न स्थिर)

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

जनसांख्यिकीय लाभांश एक ऐसी संभावित आर्थिक वृद्धि की घटना है जो किसी देश की आयु संरचना में परिवर्तन के परिणामस्वरुप उत्पन्न हो सकती है। यह अवसर तब पैदा होता है जब कार्यशील आयु (आमतौर पर 15-64 वर्ष) की जनसंख्या का हिस्सा, गैर-कार्यशील या आश्रित जनसंख्या (14 वर्ष से कम और 65 वर्ष से अधिक) के हिस्से की तुलना में काफी बढ़ जाता है। यह स्थिति मुख्य रुप से प्रजनन दर में गिरावट के कारण उत्पन्न होती है, जिसके कारण बच्चों की संख्या कम हो जाती है और कुछ समय बाद कार्यबल में प्रवेश करने वाले युवाओं का अनुपात बढ़ जाता है। इस 'लाभांश' को

केवल तभी भुनाया जा सकता है जब सरकारें और समाज सही नीतियों में निवेश करें। इसके लिए एक स्वस्थ, शिक्षित और उत्पादक कार्यबल का निर्माण आवश्यक है। यदि युवाओं को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, कौशल विकास और स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान की जाती हैं, तो वे अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। इसके अतिरिक्त, एक लचीला श्रम बाजार और आर्थिक नीतियां जो रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करती हैं, भी आवश्यक हैं। यदि इस युवा कार्यबल को उत्पादक रोजगार नहीं मिलता है, तो यह 'लाभांश' एक 'आपदा' में बदल सकता है, जिससे सामाजिक अशांति और बेरोजगारी बढ़ सकती है। इसलिए, जनसांख्यिकीय लाभांश कोई स्वचालित लाभ नहीं है, बल्कि यह एक 'अवसर की खिड़की' है जिसके लिए सुविचारित और समय पर की गई कार्रवाई की आवश्यकता होती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. अनुच्छेद के अनुसार, जनसांख्यिकीय लाभांश की स्थिति का मुख्य कारण क्या है?
(A) मृत्यु दर में तीव्र वृद्धि
(B) प्रजनन दर में उल्लेखनीय गिरावट
(C) वृद्ध जनसंख्या में वृद्धि
(D) अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन में वृद्धि

157. जनसांख्यिकीय लाभांश को 'अवसर की खिड़की' क्यों कहा गया है?
(A) क्योंकि यह बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के स्वतः आर्थिक लाभ प्रदान करता है।
(B) क्योंकि यह स्थिति अनिवार्य रूप से व्यापक सामाजिक अशांति का कारण बनती है।
(C) क्योंकि इस प्रकार के अवसर केवल आर्थिक रूप से संपन्न देशों में ही संभव हैं।
(D) क्योंकि इसके लाभ हेतु सटीक नीतियों और निवेश की आवश्यकता होती है।

158. अनुच्छेद से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि जनसांख्यिकीय लाभांश की स्थिति में...
(A) कार्यशील आयु वर्ग का अनुपात आश्रित जनसंख्या की तुलना में बढ़ जाता है।
(B) देश में कुल आश्रित जनसंख्या का अनुपात अब कार्यशील जनसंख्या से अधिक हो जाता है।
(C) देश की कुल जनसंख्या के आकार में अचानक और निरंतर गिरावट आने लगती है।
(D) देश में बच्चों और वृद्धों की कुल संख्या में अब समान रूप से वृद्धि होती है।

159. यदि कोई देश अपने युवा कार्यबल को उत्पादक रोजगार प्रदान करने में विफल रहता है, तो इसका संभावित परिणाम क्या हो सकता है?
(A) राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों में तीव्र और निरंतर वृद्धि।
(B) देश की कुल प्रजनन दर में बिना किसी बाहरी कारण के स्वतः वृद्धि।
(C) समाज में व्यापक अशांति और बेरोजगारी की समस्या में तीव्र वृद्धि।
(D) देश के कुल जनसंख्या बोझ और आश्रितता अनुपात में उल्लेखनीय सुधार।

160. जनसांख्यिकीय लाभांश का सफलतापूर्वक उपयोग करने के लिए निम्नलिखित में से कौन सी नीतिगत कार्रवाई आवश्यक नहीं है?
(A) देश की सीमाओं को प्रवासन के लिए बंद करना।
(B) गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में निवेश।
(C) रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करने वाली आर्थिक नीतियां।
(D) कार्यबल के लिए कौशल विकास कार्यक्रम।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में गिरता हुआ बाल लिंगानुपात (0-6 वर्ष की आयु में प्रति 1000 लड़कों पर लड़कियों की संख्या) एक गंभीर सामाजिक और जनसांख्यिकीय चिंता का विषय है। यह समस्या केवल गरीबी या अशिक्षा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज में गहराई तक पैठी हुई पुत्र-प्राप्ति की प्रबल इच्छा (पुत्र-मोह) और लैंगिक पूर्वाग्रह को दर्शाती है। पारंपरिक रूप से, बेटों को वंश चलाने वाला, बुढ़ापे का सहारा और अंतिम संस्कार जैसे धार्मिक अनुष्ठानों को पूरा करने वाला माना जाता है, जबकि बेटियों को अक्सर एक 'आर्थिक बोझ' के रूप में देखा जाता है, विशेषकर दहेज प्रथा के कारण। इस सामाजिक-सांस्कृतिक मानसिकता का जब आधुनिक चिकित्सा प्रौद्योगिकी, विशेष रूप से अल्ट्रासाउंड, के साथ संगम हुआ, तो इसने लिंग-चयनात्मक गर्भपात को बढ़ावा दिया। यह तकनीक, जो मूल रूप से भ्रूण में जन्मजात विकारों का पता लगाने के लिए विकसित की गई थी, का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग भ्रूण के लिंग का पता लगाने और कन्या भ्रूण होने पर उसे समाप्त करने के लिए किया जाने लगा। इस प्रथा को रोकने के लिए भारत सरकार ने प्रसव-पूर्व निदान तकनीक (दुरुपयोग का विनियमन और रोकथाम) अधिनियम, 1994 (PC&PNDT Act) लागू किया, लेकिन इसके कार्यान्वयन में कई चुनौतियाँ हैं। गिरते बाल लिंगानुपात के दूरगामी नकारात्मक परिणाम हैं, जिनमें विवाह के लिए महिलाओं की कमी, महिलाओं के खिलाफ हिंसा में वृद्धि और सामाजिक असंतुलन शामिल हैं। यह केवल एक आँकड़ा नहीं, बल्कि समाज की नैतिक और नैतिक विफलता का प्रतीक है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. अनुच्छेद के अनुसार, भारत में गिरते बाल लिंगानुपात का मुख्य कारण क्या है?
(A) प्राकृतिक रूप से लड़कियों का कम जन्म लेना।
(B) लड़कियों में उच्च शिशु मृत्यु दर।
(C) लड़कियों का ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों में प्रवासन।
(D) पुत्र-प्राप्ति की इच्छा और लिंग-चयनात्मक गर्भपात।

162. आधुनिक चिकित्सा प्रौद्योगिकी ने गिरते बाल लिंगानुपात की समस्या को कैसे बढ़ाया है?
(A) इसने संपूर्ण स्वास्थ्य तंत्र में लड़कियों के उपचार को अत्यधिक महंगा बना दिया है।
(B) इसने भ्रूण परीक्षण के माध्यम से लिंग-चयनात्मक गर्भपात को सुलभ बनाया है।
(C) इसने प्रचलित परिवार नियोजन के सभी पारंपरिक तरीकों को पूर्णतः अप्रभावी किया है।
(D) इसने विशेष रूप से केवल पुरुष शिशुओं के लिए ही जीवन रक्षक टीकों का विकास किया है।

163. भारत सरकार द्वारा लिंग-चयनात्मक गर्भपात को रोकने के लिए बनाए गए कानून का क्या नाम है?
(A) भारतीय सामाजिक कुप्रथा दहेज निषेध अधिनियम
(B) राष्ट्रीय बाल विवाह रोकथाम एवं निषेध अधिनियम
(C) प्रसव-पूर्व निदान तकनीक (PC&PNDT) अधिनियम
(D) महिला सुरक्षा हेतु घरेलू हिंसा संरक्षण अधिनियम

164. अनुच्छेद से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि बाल लिंगानुपात में गिरावट की समस्या...
(A) समाज के केवल आर्थिक रूप से पिछड़े और पूर्णतः अशिक्षित परिवारों तक ही सीमित है।
(B) देश के केवल दूरदराज के पिछड़े हुए ग्रामीण और कृषि प्रधान क्षेत्रों में ही पाई जाती है।
(C) भविष्य में समाज की संरचना पर कोई भी नकारात्मक या दीर्घकालिक प्रभाव नहीं डालेगी।
(D) गहरे लैंगिक पूर्वाग्रह और सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों का संयुक्त परिणाम है।

165. निम्नलिखित में से कौन सा गिरते बाल लिंगानुपात का एक संभावित दूरगामी परिणाम नहीं है?
(A) साक्षरता दर में स्वतः सुधार।
(B) विवाह के लिए महिलाओं की उपलब्धता में कमी।
(C) महिलाओं के विरुद्ध हिंसा की घटनाओं में वृद्धि।
(D) गंभीर सामाजिक असंतुलन का निर्माण।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में आंतरिक प्रवासन, विशेष रूप से ग्रामीण से शहरी क्षेत्रों की ओर, एक बहुआयामी प्रक्रिया है जो विभिन्न 'धकेल' (पुश) और 'खिंचाव' (पुल) कारकों द्वारा संचालित होती है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि संकट, भूमि का असमान वितरण, रोजगार के अवसरों की कमी, और ऋणग्रस्तता जैसे कारक व्यक्तियों को अपने गाँवों को छोड़ने के लिए मजबूर करते हैं - ये 'पुश' कारक हैं। दूसरी ओर, शहरी केंद्र बेहतर रोजगार की संभावनाओं, उच्च मजदूरी, बेहतर शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं तथा एक अधिक आधुनिक जीवन शैली की आशा के साथ प्रवासियों को आकर्षित करते हैं - ये 'पुल' कारक हैं। इस प्रवासन का गंतव्य और स्रोत दोनों क्षेत्रों पर गहरा प्रभाव पड़ता है। शहरी क्षेत्रों में, प्रवासियों की आमद अक्सर अनौपचारिक क्षेत्र के विस्तार की ओर ले जाती है और वे मलिन बस्तियों (स्लम्स) और अनधिकृत कॉलोनियों में रहते हैं, जिससे शहरी बुनियादी ढाँचे और सार्वजनिक सेवाओं पर भारी दबाव पड़ता है। उन्हें अक्सर सामाजिक अलगाव और भेदभाव का भी सामना करना पड़ता है। स्रोत क्षेत्रों, यानी गाँवों पर, इसके दोहरे प्रभाव होते हैं। एक ओर, प्रवासियों द्वारा भेजे गए धन (प्रेषण या रेमिटेंस) से ग्रामीण परिवारों की आय में वृद्धि होती है और गरीबी कम होती है। दूसरी ओर, चयनात्मक प्रवासन, जिसमें अक्सर युवा और पुरुष सदस्य गाँव छोड़ देते हैं, से 'कृषि के नारीकरण' जैसी स्थिति उत्पन्न हो सकती है और गाँवों में केवल बच्चे और वृद्धजन रह जाते हैं, जिससे एक सामाजिक और देखभाल का संकट पैदा होता है।

उपर्युलिखित स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. निम्नलिखित में से कौन सा एक 'पुश' (धकेल) कारक का उदाहरण है जो ग्रामीण प्रवासन को प्रेरित करता है?
(A) शहरी केंद्रों में उपलब्ध उच्च गुणवत्ता वाली और बेहतर शिक्षा की व्यापक सुविधा।
(B) ग्रामीण अंचलों में स्थाई रोजगार के लाभकारी अवसरों की निरंतर होती कमी।
(C) विकसित शहरी क्षेत्रों में श्रमिकों के लिए मिलने वाली उच्च दैनिक मजदूरी की संभावना।
(D) नगरों की चकाचौंध से भरी आधुनिक और सुविधाजनक शहरी जीवन शैली का तीव्र आकर्षण।

167. 'कृषि का नारीकरण' (Feminization of Agriculture) की अवधारणा का अनुच्छेद के संदर्भ में क्या अर्थ है?
(A) ग्रामीण कृषि क्षेत्र में महिलाओं की आर्थिक एवं नीतिगत निर्णय लेने की शक्ति में वृद्धि।
(B) पुरुष प्रवास के कारण खेती के कार्यों का मुख्य उत्तरदायित्व महिलाओं पर आ जाना।
(C) राज्य सरकारों द्वारा कृषि क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं को प्रदान किया गया विशेष प्रोत्साहन।
(D) देश के सभी उच्च कृषि विश्वविद्यालयों में महिला छात्रों के लिए सीटों का विशेष आरक्षण।

168. ग्रामीण से शहरी प्रवासन का शहरी क्षेत्रों पर पड़ने वाला एक प्रमुख नकारात्मक प्रभाव क्या है?
(A) शहरी आधारभूत ढाँचे और सार्वजनिक सेवाओं पर पड़ने वाला अत्यधिक दबाव।
(B) नगरों में प्रचलित औसत साक्षरता दर में होने वाली अचानक गिरावट।
(C) शहरी क्षेत्रों की कुल वार्षिक जन्म दर में होने वाली तीव्र वृद्धि।
(D) शहरों के औपचारिक एवं संगठित क्षेत्र में रोजगार के अवसरों का विस्तार।

169. अनुच्छेद के अनुसार, प्रवासियों द्वारा गाँवों में भेजे गए धन (रेमिटेंस) का क्या सकारात्मक प्रभाव पड़ता है?
(A) यह ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त बेरोजगारी और आर्थिक संकट की समस्या को बढ़ाता है।
(B) यह ग्रामीण समाज में प्रचलित पारंपरिक सामाजिक

भेदभाव और ऊंच-नीच को बढ़ाता है।
(C) यह ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाकर गरीबी निवारण में महत्वपूर्ण सहायता करता है।
(D) यह कृषि उत्पादकता के स्तर को सीधे तौर पर प्रभावित कर उसमें कमी सुनिश्चित करता है।

170. इस अनुच्छेद का मुख्य तर्क क्या है?
(A) भारत में होने वाला संपूर्ण प्रवासन मुख्य रूप से केवल शहरी सुख-सुविधाओं के आकर्षण का परिणाम है।
(B) भारत की केंद्र और राज्य सरकारें ग्रामीण प्रवासन की दर को रोकने में अब तक पूरी तरह विफल रही हैं।
(C) जनसंख्या के प्रवासन का ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक ढांचे पर केवल नकारात्मक प्रभाव ही पड़ता है।
(D) प्रवासन एक जटिल प्रक्रिया है जिसके मूल और गंतव्य दोनों ही क्षेत्रों पर विविध प्रभाव पड़ते हैं।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत की जनसंख्या नीति का विकास एक महत्वपूर्ण यात्रा को दर्शाता है, जो समय के साथ अपने दृष्टिकोण में परिपक्व हुई है। 1952 में, भारत दुनिया का पहला देश बना जिसने परिवार नियोजन के लिए एक राष्ट्रीय कार्यक्रम शुरु किया। प्रारंभिक दशकों में, नीति का दृष्टिकोण मुख्य रूप से 'लक्ष्य-आधारित' और 'टॉप-डाउन' था, जिसमें जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए गर्भनिरोधक उपकरणों के उपयोग और नसबंदी जैसे स्थायी तरीकों पर जोर दिया गया। यह दृष्टिकोण 1975-77 के राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान अपने चरम पर पहुँच गया, जब एक आक्रामक और जबरन नसबंदी अभियान चलाया गया, जिसने बड़े पैमाने पर सामाजिक असंतोष को जन्म दिया। इस अनुभव से सीखते हुए, बाद की सरकारों ने अपनी रणनीति में बदलाव किया। एक महत्वपूर्ण वैचारिक परिवर्तन 1994 में काहिरा में आयोजित जनसंख्या और विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ICPD) के बाद आया। इस सम्मेलन ने जनसंख्या नियंत्रण के संकीर्ण दृष्टिकोण से हटकर महिलाओं के प्रजनन स्वास्थ्य, अधिकारों और सशक्तीकरण पर आधारित एक व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की वकालत की। इसी भावना को अपनाते हुए, भारत ने अपनी जनसंख्या नीति को 'परिवार कल्याण' कार्यक्रम के रूप में पुनः परिभाषित किया। राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000 इस विकसित दृष्टिकोण का प्रतीक है, जो स्वैच्छिक और सूचित विकल्प, स्वास्थ्य बुनियादी ढाँचे में सुधार, और शिशु मृत्यु दर एवं मातृ मृत्यु दर को कम करने जैसे व्यापक कल्याणकारी लक्ष्यों पर केंद्रित है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. भारत की प्रारंभिक जनसंख्या नीति का मुख्य दृष्टिकोण क्या था?
(A) ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की महिलाओं के समग्र सामाजिक सशक्तीकरण पर केंद्रित।
(B) नागरिकों के व्यापक प्रजनन स्वास्थ्य और उनके वैधानिक अधिकारों पर पूर्णतः आधारित।
(C) लक्ष्य-केंद्रित और गर्भनिरोधक विधियों के व्यापक उपयोग पर आधारित दृष्टिकोण।
(D) परिवार नियोजन के लिए जनसंख्या के स्वैच्छिक और सूचित विकल्पों पर दिया गया जोर।

172. भारत की जनसंख्या नीति में एक बड़ा वैचारिक परिवर्तन किस अंतर्राष्ट्रीय घटना के बाद आया?
(A) पर्यावरण संरक्षण हेतु आयोजित रियो पृथ्वी शिखर सम्मेलन, 1992
(B) काहिरा जनसंख्या और विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 1994
(C) महिला अधिकारों हेतु आयोजित बीजिंग विश्व महिला सम्मेलन, 1995
(D) जलवायु परिवर्तन नियंत्रण हेतु संपन्न हुआ क्योटो प्रोटोकॉल, 1997

173. राष्ट्रीय आपातकाल (1975-77) के दौरान जनसंख्या कार्यक्रम की क्या विशेषता थी?
(A) स्वैच्छिक परिवार नियोजन पर जोर।
(B) स्वास्थ्य बुनियादी ढाँचे का विस्तार।
(C) महिलाओं के प्रजनन अधिकारों पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) एक आक्रामक और जबरन नसबंदी अभियान।

174. राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000 निम्नलिखित में से किस पर जोर नहीं देती है?
(A) नसबंदी के लिए अनिवार्य कोटा।
(B) स्वैच्छिक और सूचित विकल्प।
(C) शिशु और मातृ मृत्यु दर को कम करना।
(D) स्वास्थ्य बुनियादी ढाँचे में सुधार।

175. अनुच्छेद से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भारत की जनसंख्या नीति का विकास कैसा रहा है?
(A) यह नीति अपने प्रारंभ काल से ही देश में हमेशा एक समान और पूरी तरह अपरिवर्तित रही है।
(B) यह नीतिगत परिवर्तन आंतरिक सुधारों के बजाय केवल बाहरी अंतर्राष्ट्रीय दबाव के कारण आया है।
(C) यह दंडात्मक नियंत्रण के स्थान पर अब व्यापक लोक-कल्याणकारी दृष्टिकोण की ओर विकसित हुई है।
(D) यह सरकारी कार्यक्रम आपातकाल के कड़वे अनुभवों के बाद देश में पूरी तरह से समाप्त कर दिया गया था।

ANSWERS

1. (B) 'डेमोस' और 'ग्राफीन'
'डेमोग्राफी' शब्द की उत्पत्ति यूनानी भाषा के दो मूल शब्दों से हुई है। 'डेमोस' का अर्थ है 'लोग' और 'ग्राफीन' का अर्थ है 'लिखना' या 'वर्णन करना'। इस प्रकार, जनसांख्यिकी का शाब्दिक अर्थ लोगों का व्यवस्थित वर्णन करना है। यह विज्ञान जनसंख्या के आकार, संरचना और परिवर्तनों का सांख्यिकीय विश्लेषण करता है।

2. (A) जनसंख्या के आकार यानी मात्रा का
आकारिक जनसांख्यिकी मुख्य रूप से जनसंख्या के मात्रात्मक पहलुओं पर केंद्रित होती है। इसमें जनसंख्या के कुल आकार, संरचना और वितरण का सांख्यिकीय मापन किया जाता है। इसके अंतर्गत जन्म दर, मृत्यु दर और प्रवसन जैसे चरों का विश्लेषण किया जाता है। यह अध्ययन पूरी तरह से गणितीय और सांख्यिकीय विधियों पर आधारित होता है ताकि सटीक आंकड़े प्राप्त हों।

3. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
आकारिक जनसांख्यिकी जनसंख्या के आकार का मात्रात्मक अध्ययन है। सामाजिक जनसांख्यिकी जनसंख्या के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक पक्षों का विश्लेषण करती है। जनगणना एक निर्धारित प्रदेश के लोगों के बारे में सुव्यवस्थित आंकड़े एकत्र करने की प्रक्रिया है। राष्ट्र-राज्य वर्तमान विश्व में राजनीतिक संगठन का प्रमुख रूप है, जो अपनी जनसंख्या के आंकड़ों का प्रबंधन और उपयोग करता है।

4. (D) स्वतंत्र भारत में पहली जनगणना 1947 में हुई थी।
भारत में जनगणना का कार्य ब्रिटिश शासन के दौरान 1867-72 में शुरू हुआ था। नियमित दसवर्षीय जनगणना की शुरुआत 1881 से हुई, जो आज भी जारी है। भारतीय जनगणना विश्व का सबसे बड़ा प्रशासनिक और सांख्यिकीय कार्य माना जाता है। स्वतंत्र भारत की पहली जनगणना 1951 में संपन्न हुई थी, न कि स्वतंत्रता प्राप्ति के वर्ष 1947 में।

5. (C) ज्यामितीय या गुणोत्तर रूप से
थॉमस रॉबर्ट माल्थस ने तर्क दिया कि मनुष्यों की जनसंख्या बहुत तीव्र गति से बढ़ती है। उनके अनुसार, जनसंख्या में वृद्धि ज्यामितीय या गुणोत्तर रूप से होती है, जैसे 2, 4, 8, 16, 32। इसके विपरीत, जीवन निर्वाह के साधन, विशेषकर कृषि उत्पादन, केवल गणितीय या समांतर रूप से बढ़ते हैं। यह असंतुलन अंततः गरीबी और भुखमरी का कारण बनता है।

6. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
माल्थस का सिद्धांत जनसंख्या वृद्धि और खाद्य आपूर्ति के बीच असंतुलन पर आधारित है। उनका मानना था कि जनसंख्या ज्यामितीय दर से बढ़ती है, जबकि खाद्य सामग्री का उत्पादन केवल गणितीय दर से बढ़ता है। इसी कारण जनसंख्या भरण-पोषण के साधनों की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ती है। यह विसंगति समाज में गरीबी, अकाल और विभिन्न कष्टों को जन्म देती है।

7. (D) थॉमस रॉबर्ट माल्थस
'एन एस्से ऑन द प्रिंसिपल ऑफ पॉपुलेशन' थॉमस रॉबर्ट माल्थस की सबसे प्रसिद्ध रचना है, जो 1798 में प्रकाशित हुई थी। इस निबंध में उन्होंने जनसंख्या वृद्धि और संसाधनों के बीच संबंधों का विश्लेषण किया है। माल्थस ने चेतावनी दी कि यदि जनसंख्या को नियंत्रित नहीं किया गया, तो यह भरण-पोषण के साधनों से अधिक हो जाएगी, जिससे संकट पैदा होगा।

8. (A) अकाल और बीमारियाँ
माल्थस ने जनसंख्या नियंत्रण के दो प्रकार के निरोध बताए थे। 'प्राकृतिक निरोध' या 'सकारात्मक निरोध' वे कारक हैं जो मृत्यु दर को बढ़ाकर जनसंख्या और खाद्य आपूर्ति में संतुलन स्थापित करते हैं। अकाल, बीमारियाँ, युद्ध और प्राकृतिक आपदाएँ इसके प्रमुख उदाहरण हैं। ये कारक प्रकृति द्वारा थोपे जाते हैं जब मनुष्य स्वयं जनसंख्या को नियंत्रित करने में विफल रहता है।

9. (C) केवल 1, 2 और 4
माल्थस ने 1798 में अपने सिद्धांत प्रस्तुत किए, जिसमें उन्होंने जनसंख्या और गरीबी के संबंधों को रेखांकित किया। उनका मानना था कि समृद्धि बढ़ाने का एकमात्र उपाय जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण है। हालांकि, वे कृत्रिम निरोधों या गर्भनिरोधकों के विरोधी थे। उन्होंने केवल नैतिक संयम, ब्रह्मचर्य और देर से विवाह जैसे 'निवारक निरोधों' का ही पुरजोर समर्थन किया था।

10. (A) उच्च जन्म दर और उच्च मृत्यु दर
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत की पहली अवस्था कम विकसित या अल्पविकसित समाज की विशेषता है। इस चरण में जन्म दर और मृत्यु दर दोनों ही बहुत ऊँची होती हैं। मृत्यु दर ऊँची होने का कारण स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव और महामारियाँ होती हैं। जन्म दर ऊँची रहने से जनसंख्या वृद्धि की शुद्ध दर बहुत धीमी या स्थिर बनी रहती है।

11. (D) इस दौरान जनसंख्या वृद्धि की दरें बहुत ऊँची हो जाती हैं, जिसे 'जनसंख्या विस्फोट' कहते हैं।
जनसांख्यिकीय संक्रमण के दूसरे चरण को संक्रमणकालीन चरण कहा जाता है। इसमें समाज पिछड़ी अवस्था से उन्नत अवस्था की ओर बढ़ता है। बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं और पोषण के कारण मृत्यु दर में तेजी से गिरावट आती है, लेकिन जन्म दर काफी समय तक ऊँची बनी रहती है। इस अंतर के कारण जनसंख्या में बहुत तीव्र वृद्धि होती है, जिसे जनसंख्या विस्फोट कहते हैं।

12. (A) 5, 2, 3, 1, 4
भारत में घटनाओं का क्रम ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण है। सबसे पहले 1881 में पहली दसवर्षीय जनगणना शुरू हुई। इसके बाद 1918-19 में विनाशकारी इंफ्लूएंजा महामारी आई, जिसके कारण 1911-1921 के दौरान जनसंख्या संवृद्धि दर ऋणात्मक हो गई। 1947 में भारत ने स्वतंत्रता प्राप्त की। अंततः, 1961-1981 के दौरान भारत की दशकीय जनसंख्या संवृद्धि दर अपने उच्चतम स्तर 2.2% के करीब पहुँच गई।

13. (C) मृत्यु दर में तेज़ी से गिरावट जबकि जन्म दर का ऊँचा बने रहने के कारण
जनसंख्या विस्फोट की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब मृत्यु दर में बहुत तेजी से गिरावट आती है लेकिन जन्म दर ऊँची बनी रहती है। चिकित्सा विज्ञान में प्रगति और बेहतर जीवन स्तर मृत्यु दर को नियंत्रित कर लेते हैं। चूंकि सामाजिक और सांस्कृतिक कारणों से जन्म दर को कम होने में समय लगता है, इसलिए जनसंख्या में अचानक भारी वृद्धि देखी जाती है।

14. (D) प्रजनन आयु वाली प्रति 1000 स्त्रियों पर जीवित जन्मे बच्चों की संख्या
प्रजनन दर का उपयोग किसी जनसंख्या की उत्पादकता मापने के लिए किया जाता है। इसे प्रजनन आयु वाली प्रति 1000 महिलाओं पर एक वर्ष में जीवित जन्मे बच्चों की संख्या के रूप में परिभाषित किया जाता है। आमतौर पर प्रजनन आयु वर्ग 15 से 49 वर्ष माना जाता है। यह दर कुल जन्म दर की तुलना में अधिक सटीक जनसांख्यिकीय संकेतक मानी जाती है।

15. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
शिशु मृत्यु दर 1000 जीवित जन्मों में एक वर्ष से कम उम्र के बच्चों की मृत्यु को दर्शाती है। मातृ-मृत्यु दर 1,00,000 प्रसवों पर होने वाली मौतों की संख्या है। स्त्री-पुरुष अनुपात प्रति 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या बताता है। आयु संभाविता का अर्थ है कि एक व्यक्ति के जीवित रहने की अनुमानित औसत वर्ष संख्या क्या है, जो स्वास्थ्य स्तर का सूचक है।

16. (B) जब मृत्यु होने वाले वृद्धों का स्थान लेने हेतु पर्याप्त नए बच्चे पैदा होते हैं
प्रतिस्थापन स्तर वह अवस्था है जहाँ जनसंख्या खुद को प्रतिस्थापित करती है। इसमें प्रजनन दर का स्तर ऐसा होता है कि मरने वाले व्यक्तियों का स्थान लेने के लिए पर्याप्त नए बच्चे पैदा होते हैं। इस स्थिति में, जनसंख्या वृद्धि दर शून्य हो जाती है और जनसंख्या स्थिर हो जाती है। विकसित देशों में यह स्तर आमतौर पर 2.1 की कुल प्रजनन दर पर प्राप्त होता है।

17. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
शिशु और मातृ-मृत्यु की ऊँची दरें किसी समाज की गरीबी और चिकित्सा सुविधाओं की कमी को दर्शाती हैं। जैसे-जैसे समाज का आर्थिक और सामाजिक विकास होता है, स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार होता है। शिक्षा और जागरूकता बढ़ने से लोग बेहतर पोषण और चिकित्सा देखभाल के प्रति सचेत होते हैं। परिणामस्वरुप, ये दरें कम होने लगती हैं, जो विकास और सामाजिक उन्नति का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

18. (A) 15 से कम और 64+ आयु वर्ग को 15-64 आयु वर्ग की कुल संख्या से भाग देकर
पराश्रितता अनुपात कार्यशील जनसंख्या पर आश्रित लोगों के आर्थिक बोझ को मापता है। इसकी गणना 15 वर्ष से कम आयु के बच्चों और 64 वर्ष से अधिक आयु के वृद्धों की संख्या को 15-64 वर्ष के कार्यशील आयु वर्ग की कुल संख्या से भाग देकर की जाती है। उच्च अनुपात का अर्थ है कि कम कार्यशील लोगों को अधिक आश्रितों का भरण-पोषण करना पड़ता है।

19. (C) जनसंख्या में कार्यशील लोगों के अनुपात में वृद्धि
जनसांख्यिकीय लाभांश उस आर्थिक लाभ को संदर्भित करता है जो जनसंख्या की आयु संरचना में परिवर्तन से प्राप्त होता है। यह तब होता है जब कुल जनसंख्या में कार्यशील आयु वर्ग का अनुपात आश्रित बच्चों और वृद्धों की तुलना में काफी अधिक बढ़ जाता है। यदि इस बड़ी कार्यशील शक्ति को पर्याप्त शिक्षा और रोजगार मिले, तो यह देश की आर्थिक प्रगति में क्रांतिकारी भूमिका निभा सकती है।

20. (A) 1, 2 और 3
एमिल दुर्खाइम ने आत्महत्या को एक व्यक्तिगत कृत्य न मानकर एक सामाजिक प्रघटना के रूप में सिद्ध किया। उन्होंने विभिन्न देशों और समुदायों में आत्महत्या की दरों में पाए जाने वाले सांख्यिकीय अंतरों का गहन विश्लेषण किया। उनका तर्क था कि आत्महत्या की दरें सामाजिक एकीकरण और नियमन के स्तरों पर निर्भर करती हैं। यह अध्ययन समाजशास्त्र में जनसांख्यिकीय आंकड़ों के उपयोग का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

21. (C) 1911-1921
भारतीय जनसांख्यिकीय इतिहास में 1911-1921 का दशक एकमात्र ऐसा समय था जब जनसंख्या संवृद्धि दर ऋणात्मक दर्ज की गई थी। इस अवधि के दौरान जनसंख्या में 0.03% की मामूली गिरावट आई। इसका मुख्य कारण अकाल और गंभीर महामारियाँ थीं, विशेष रूप से 1918-19 का विनाशकारी इंफ्लूएंजा। इस दशक ने भारत के जनसंख्या रुझानों में एक महत्वपूर्ण मोड़ या 'महान विभाजक' का कार्य किया।

22. (B) इंफ्लूएंजा महामारी
वर्ष 1918-19 में भारत में जनसंख्या में आई भारी कमी का मुख्य कारण इंफ्लूएंजा महामारी थी। इसे 'स्पैनिश फ्लू' भी कहा गया, जिसने दुनिया भर में तबाही मचाई थी। भारत में इस बीमारी से लगभग 1.25 करोड़ लोगों की मृत्यु हुई, जो तत्कालीन कुल जनसंख्या का करीब 5% था। युद्ध के बाद लौटे सैनिकों और खराब परिवहन व्यवस्था ने इस वायरस को तेजी से फैलाया।

23. (C) केवल 1, 2 और 3
माल्थस की आलोचना मुख्यतः तीन आधारों पर की जाती है। पहला, यूरोपीय देशों में जनसंख्या वृद्धि के साथ आर्थिक समृद्धि भी बढ़ी। दूसरा, विज्ञान और तकनीक ने खाद्य उत्पादन

में अभूतपूर्व वृद्धि की, जिससे माल्थस की भविष्यवाणियाँ गलत साबित हुईं। तीसरा, मार्क्सवादियों के अनुसार गरीबी का कारण जनसंख्या नहीं, बल्कि संसाधनों का असमान वितरण है। माल्थस ने प्राकृतिक निरोधों को अपरिहार्य माना था, जो सत्य नहीं रहा।

24. (A) जो बहुत व्यापक भौगोलिक क्षेत्र को प्रभावित करती है
'पैंडेमिक' या सार्वभौमिक महामारी उस संक्रामक बीमारी को कहते हैं जो बहुत बड़े भौगोलिक क्षेत्र में फैल जाती है। यह आमतौर पर कई देशों या महाद्वीपों को प्रभावित करती है और पूरी दुनिया की जनसंख्या के बड़े हिस्से को खतरे में डाल देती है। 1918-19 का इंफ्लूएंजा और हालिया कोविड-19 इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इसके विपरीत, 'एपिडेमिक' शब्द एक सीमित क्षेत्र में फैली बीमारी हेतु प्रयुक्त होता है।

25. (C) अकालों और महामारियों पर नियंत्रण
वर्ष 1921 के बाद भारत में मृत्यु दर में निरंतर गिरावट आने लगी। इसका प्रमुख कारण अकालों और महामारियों पर प्रभावी नियंत्रण था। परिवहन के साधनों के विकास से अकाल प्रभावित क्षेत्रों में खाद्यान्न पहुँचाना आसान हो गया। साथ ही, टीकाकरण और आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार ने प्लेग, हैजा और चेचक जैसी जानलेवा बीमारियों के प्रकोप को काफी हद तक कम कर दिया, जिससे जीवन प्रत्याशा बढ़ी।

26. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
इंफ्लूएंजा एक विषाणु जनित बीमारी है जिसने 1918-19 में भारी तबाही मचाई थी। प्लेग का प्रकोप 1994 में गुजरात के सूरत शहर में देखा गया था। डेंगी बुखार 2006 में भारत के कई हिस्सों में महामारी की तरह फैला था। एड्स एक वैश्विक संकट है, जिससे पिछले 25 वर्षों में विश्व भर में लगभग ढाई करोड़ लोगों की जान जा चुकी है। यह स्वास्थ्य चुनौतियों की गंभीरता को दर्शाता है।

27. (D) 'हकदारी की पूर्ति का अभाव'
प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेन ने तर्क दिया कि अकाल केवल खाद्यान्न उत्पादन में कमी के कारण नहीं आते। उन्होंने 'हकदारी की पूर्ति का अभाव' सिद्धांत दिया, जिसका अर्थ है कि भोजन खरीदने या प्राप्त करने की क्षमता समाप्त हो जाना। सेन के अनुसार, बाजार की विफलता, बेरोजगारी और अनाज के वितरण में दोषपूर्ण सरकारी नीतियों के कारण लोग भूखे मरते हैं, भले ही गोदाम भरे हों।

28. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
सामाजिक विकास और आर्थिक समृद्धि का सीधा संबंध जन्म दर में गिरावट से है। जब शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार होता है, तो शिशु मृत्यु दर कम हो जाती है। माता-पिता को भरोसा होता है कि उनके बच्चे जीवित रहेंगे, इसलिए वे बड़े परिवार की आवश्यकता महसूस नहीं करते। इसके अतिरिक्त, जागरूकता बढ़ने से लोग छोटे परिवार के लाभों को समझते हैं, जिससे कुल प्रजनन दर कम हो जाती है।

29. (C) केरल
केरल भारत का वह राज्य है जिसने साक्षरता और स्वास्थ्य के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। 2016 के आंकड़ों के अनुसार, केरल की कुल प्रजनन दर (TFR) प्रतिस्थापन स्तर (2.1) से काफी नीचे पहुँच चुकी थी। इसके विपरीत, बिहार, उत्तर प्रदेश और राजस्थान जैसे राज्यों में प्रजनन दर अब भी अपेक्षाकृत ऊँची बनी हुई है। यह क्षेत्रीय असमानता सामाजिक-आर्थिक विकास के विभिन्न स्तरों को दर्शाती है।

30. (D) उत्तर प्रदेश और बिहार
आर्थिक सर्वेक्षण 2018-19 के अनुसार, भारत में जनसंख्या वृद्धि की दर में भारी क्षेत्रीय अंतर हैं। उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे बड़े राज्यों में उच्च प्रजनन दर के कारण, यह अनुमान लगाया गया है कि 2041 तक देश की कुल जनसंख्या वृद्धि का लगभग आधा हिस्सा इन्हीं दो राज्यों से आएगा। इसके विपरीत, दक्षिण भारतीय राज्यों और केरल में जनसंख्या वृद्धि की दर काफी धीमी हो चुकी है।

31. (C) केवल 1, 2, 3, 4
जनसंख्या की आयु संरचना विभिन्न आयु वर्गों में व्यक्तियों के अनुपात को दर्शाती है। यह आर्थिक विकास के साथ बदलती रहती है। भारत वर्तमान में एक युवा देश है क्योंकि यहाँ कार्यशील जनसंख्या का हिस्सा बड़ा है। आयु संरचना में परिवर्तन से जब वृद्धों की संख्या बढ़ती है, तो इसे जनसंख्या का बूढ़ा होना कहते हैं। हालांकि, भारत में फिलहाल सबसे बड़ा हिस्सा 15-59 आयु वर्ग का है।

32. (B) 0-14 वर्ष
भारत की आयु संरचना के आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि 1971 से 2011 के बीच 0-14 वर्ष के बच्चों के अनुपात में निरंतर गिरावट आई है। 1971 में यह हिस्सा 42% था, जो 2011 में घटकर 29% रह गया। इसका मुख्य कारण जन्म दर में क्रमिक गिरावट है। इसके विपरीत, कार्यशील आयु वर्ग (15-59 वर्ष) और वृद्धों (60+) के प्रतिशत में इसी अवधि के दौरान वृद्धि हुई है।

33. (B) निम्न जन्म दर
जनसंख्या पिरामिड का निचला हिस्सा सबसे कम आयु वर्ग के बच्चों का प्रतिनिधित्व करता है। यदि यह हिस्सा सँकरा होता जा रहा है, तो इसका स्पष्ट अर्थ है कि उस समाज में जन्म लेने वाले बच्चों की संख्या कम हो रही है। यह निम्न जन्म दर और सफल परिवार नियोजन का संकेत है। विकसित देशों और भारत के केरल जैसे राज्यों के पिरामिड इसी प्रकार की विशेषता प्रदर्शित करते हैं।

34. (A) केरल की आयु संरचना विकसित देशों की स्थिति के समान है।
भारत के विभिन्न राज्यों के बीच आयु संरचना में व्यापक अंतर पाए जाते हैं। केरल में जन्म दर और मृत्यु दर दोनों बहुत कम हैं, जिससे उसकी आयु संरचना विकसित देशों के समान दिखाई देती है। वहां वृद्धों का अनुपात बढ़ रहा है और बच्चों का अनुपात कम है। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश और बिहार में जन्म

दर ऊँची होने के कारण युवा जनसंख्या का अनुपात काफी अधिक बना हुआ है।

35. (A) 4, 3, 1, 2
इन घटनाओं का सही ऐतिहासिक क्रम उनके घटित होने वाले वर्षों पर आधारित है। सबसे पहले 1790 में अमेरिका में पहली आधुनिक जनगणना हुई। इसके बाद 1798 में थॉमस माल्थस का प्रसिद्ध निबंध प्रकाशित हुआ। भारत ने 1952 में अपनी पहली राष्ट्रीय जनसंख्या नीति घोषित की। अंततः, 1975-76 के राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान विवादित नसबंदी कार्यक्रम लागू किया गया। यह क्रम जनसंख्या प्रबंधन के क्रमिक विकास को दर्शाता है।

36. (D) कार्यशील आयु वर्ग में शिक्षा और रोज़गार के स्तरों में वृद्धि
जनसांख्यिकीय लाभांश केवल कार्यशील जनसंख्या बढ़ने से स्वतः प्राप्त नहीं होता। इसे वास्तविक आर्थिक संवृद्धि में बदलने के लिए कार्यशील आयु वर्ग के लोगों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल प्रशिक्षण प्रदान करना अनिवार्य है। साथ ही, अर्थव्यवस्था में उनके लिए पर्याप्त रोजगार के अवसर सृजित होने चाहिए। यदि युवा शक्ति बेरोजगार या अकुशल रहती है, तो वह लाभ के बजाय समाज पर आर्थिक बोझ बन सकती है।

37. (C) शैशवावस्था में बालिकाओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता अधिक होती है और स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक जीती हैं।
ऐतिहासिक और जैविक रूप से स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में अधिक लचीली और दीर्घजीवी होती हैं। शैशवावस्था में बालिका शिशुओं की रोगों से लड़ने की क्षमता बालकों से अधिक होती है। इसके अलावा, पुरुषों की तुलना में स्त्रियों की औसत आयु सामान्यतः अधिक होती है। इन्हीं प्राकृतिक कारणों से, बिना किसी मानवीय हस्तक्षेप के, अधिकांश समाजों में स्त्री-पुरुष अनुपात स्वाभाविक रूप से स्त्रियों के पक्ष में बना रहता है।

38. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
भारत में बाल स्त्री-पुरुष अनुपात (0-6 वर्ष) के आंकड़े 1901 में उपलब्ध नहीं थे। 1961 में यह अनुपात 976 था, जो काफी बेहतर स्थिति दर्शाता था। हालांकि, बाद के दशकों में इसमें निरंतर गिरावट आई। 2001 में यह गिरकर 927 पर पहुँच गया और 2011 की जनगणना में यह और भी कम होकर 919 दर्ज किया गया। यह गिरावट समाज में गहरी जड़ें जमा चुकी लैंगिक असमानता का सूचक है।

39. (D) बालिका शिशुओं के प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार
समाजशास्त्री मानते हैं कि भारत में बाल स्त्री-पुरुष अनुपात में आई तीव्र गिरावट का मुख्य कारण बालिकाओं के प्रति भेदभावपूर्ण व्यवहार है। इसमें पुत्र प्राप्ति की तीव्र लालसा, बालिका भ्रूण हत्या और बालिकाओं के पोषण एवं स्वास्थ्य की घोर उपेक्षा शामिल है। आधुनिक तकनीक, जैसे अल्ट्रासाउंड, के दुरुपयोग ने लिंग-चयनात्मक गर्भपात को आसान बना दिया है। ये सभी कारक मिलकर कन्याओं की संख्या को निरंतर कम कर रहे हैं।

40. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में बाल स्त्री-पुरुष अनुपात का घटना एक गंभीर सामाजिक संकट है। जनगणना के आंकड़े स्पष्ट करते हैं कि 0-6 वर्ष के आयु वर्ग में बालिकाओं की संख्या लगातार कम हो रही है। इसका मुख्य कारण आधुनिक चिकित्सा तकनीकों का दुरुपयोग करके किया जाने वाला लिंग-चयनात्मक गर्भपात है। इसके अतिरिक्त, जन्म के बाद भी बालिकाओं की उपेक्षा की जाती है, जो इस असंतुलन को और अधिक बढ़ाती है।

41. (C) महिलाओं की उच्च साक्षरता दर
भारत में गिरते स्त्री-पुरुष अनुपात के लिए बालिका शिशु हत्या, लिंग-चयनात्मक गर्भपात और बच्चियों की देखभाल में उपेक्षा जैसे नकारात्मक कारक जिम्मेदार हैं। इसके विपरीत, महिलाओं की उच्च साक्षरता दर आमतौर पर जागरूकता बढ़ाती है और लैंगिक समानता का समर्थन करती है। इसलिए, साक्षरता का बढ़ना स्त्री-पुरुष अनुपात में गिरावट का कारण नहीं है, बल्कि यह इस समस्या के समाधान में सहायक सिद्ध हो सकता है।

42. (A) भ्रूण के लिंग का पता लगाकर चयनात्मक गर्भपात को रोकने के लिए
प्रसवपूर्व नैदानिक प्रविधियाँ (PCPNDT) अधिनियम 1994 में भ्रूण के लिंग परीक्षण और लिंग-चयनात्मक गर्भपात को रोकने के उद्देश्य से बनाया गया था। इस कानून के तहत अल्ट्रासाउंड केंद्रों के लिए लिंग का खुलासा करना अपराध घोषित किया गया है। इसका मुख्य लक्ष्य गिरते बाल स्त्री-पुरुष अनुपात को नियंत्रित करना और समाज में बालिकाओं के अस्तित्व एवं अधिकारों की रक्षा करना है ताकि लैंगिक संतुलन बना रहे।

43. (C) केवल 1, 2 और 3
भारत में गिरता बाल स्त्री-पुरुष अनुपात केवल गरीबी या अज्ञानता का परिणाम नहीं है। वास्तव में, निम्नतम अनुपात पंजाब और हरियाणा जैसे सबसे समृद्ध और उच्च आय वाले क्षेत्रों में पाया जाता है। यह दर्शाता है कि आधुनिक तकनीकों तक पहुँच और पुत्र की वरीयता का मेल इस समस्या को बढ़ा रहा है। यह समस्या शहरों और गाँवों दोनों में व्याप्त है, न कि केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित है।

44. (B) बाल स्त्री-पुरुष अनुपात को बढ़ाना
'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' भारत सरकार का एक प्रमुख अभियान है जिसका प्राथमिक उद्देश्य घटते बाल स्त्री-पुरुष अनुपात की समस्या का समाधान करना है। यह कार्यक्रम बालिकाओं के प्रति समाज की मानसिकता बदलने, उनकी उत्तरजीविता सुनिश्चित करने और शिक्षा के माध्यम से उन्हें सशक्त बनाने पर केंद्रित है। यह बहु-क्षेत्रीय हस्तक्षेप के माध्यम से कन्या भ्रूण हत्या को रोकने और बालिकाओं के अधिकारों की सुरक्षा पर बल देता है।

45. (C) 16.3%
2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, भारत में पुरुष साक्षरता दर 80.9% और महिला साक्षरता दर 64.6% थी। इन दोनों के बीच का अंतर लगभग 16.3 प्रतिशत है। हालांकि

स्वतंत्रता के बाद महिला साक्षरता में तेजी से वृद्धि हुई है, लेकिन यह लैंगिक अंतर अभी भी बना हुआ है। यह अंतर समाज में शिक्षा के अवसरों के वितरण में व्याप्त ऐतिहासिक और सामाजिक असमानता को दर्शाता है।

46. (D) पुरुषों में साक्षरता दर स्त्रियों की साक्षरता दर से कम है।
भारत में साक्षरता के संबंध में यह कथन पूरी तरह गलत है कि पुरुषों की साक्षरता दर स्त्रियों से कम है। वास्तव में, सभी जनगणनाओं में पुरुषों की साक्षरता दर महिलाओं की तुलना में काफी ऊँची रही है। हालांकि, केरल जैसे कुछ राज्यों ने लगभग शत-प्रतिशत साक्षरता प्राप्त कर ली है। दलितों और आदिवासियों के बीच साक्षरता दर अभी भी राष्ट्रीय औसत से काफी नीचे है, जो सामाजिक पिछड़ेपन का संकेत है।

47. (B) P-2, Q-4, R-3, S-1
हरियाणा भारत में सबसे कम बाल स्त्री-पुरुष अनुपात वाले राज्यों में से एक है। केरल अपने उच्चतम समग्र स्त्री-पुरुष अनुपात और बेहतर स्वास्थ्य मानकों के लिए जाना जाता है। बिहार में वर्तमान में भी देश की उच्चतम प्रजनन दरों में से एक दर्ज की जाती है। अरुणाचल प्रदेश जैसे पूर्वोत्तर राज्यों में बाल स्त्री-पुरुष अनुपात (972) राष्ट्रीय औसत की तुलना में काफी बेहतर और उच्चतम स्तर पर है।

48. (B) 31.2%
2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की कुल जनसंख्या का 31.2 प्रतिशत हिस्सा नगरीय क्षेत्रों में निवास करता है। शेष 68.8 प्रतिशत जनसंख्या अभी भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। हालांकि भारत का नगरीकरण वैश्विक औसत की तुलना में धीमा है, लेकिन शहरों की कुल जनसंख्या की संख्या बहुत बड़ी है। यह आंकड़ा पिछले दशकों की तुलना में नगरीय आबादी में होने वाली निरंतर वृद्धि को प्रदर्शित करता है।

49. (B) शहरों में गुमनामी की ज़िंदगी, जो जातीय भेदभाव से बचाती है
ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर प्रवसन के पीछे केवल आर्थिक कारण ही नहीं होते, बल्कि सामाजिक कारण भी महत्वपूर्ण हैं। शहरों की 'गुमनामी' या अज्ञातवास दलितों और अन्य उत्पीड़ित वर्गों के लिए एक वरदान की तरह है। शहरों में लोग एक-दूसरे की जाति से कम परिचित होते हैं, जिससे रोज़मर्रा के जातीय अपमान और भेदभाव से बचाव होता है। यह सामाजिक स्वतंत्रता प्रवासियों के लिए एक बड़ा आकर्षण है।

50. (A) 1, 2, 3 और 5
1918-19 का इंफ्लूएंजा, जिसे स्पैनिश फ्लू कहा गया, इतिहास की सबसे घातक महामारियों में से एक था। इसने विश्व की लगभग 20% आबादी को संक्रमित किया। भारत में इससे करीब 125 लाख लोगों की मृत्यु हुई, जो कुल जनसंख्या का 5% था। हालांकि यह प्रथम विश्व युद्ध के दौरान फैला, लेकिन युद्ध इसका प्रत्यक्ष कारण नहीं था। इस महामारी ने भारत की जनसंख्या संवृद्धि को गंभीर रूप से बाधित किया।

51. (C) 1952
भारत दुनिया के उन पहले देशों में शामिल था जिन्होंने आधिकारिक तौर पर अपनी जनसंख्या नीति घोषित की। इसकी स्पष्ट घोषणा सर्वप्रथम वर्ष 1952 में की गई थी। इस नीति का मुख्य उद्देश्य राष्ट्रीय विकास की आवश्यकताओं के अनुरूप जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करना था। इसके लिए 'राष्ट्रीय परिवार नियोजन कार्यक्रम' शुरू किया गया, जो बाद में स्वास्थ्य और कल्याण के व्यापक उद्देश्यों के साथ जोड़ दिया गया।

52. (D) बड़े पैमाने पर ज़ोर-ज़बरदस्ती से वंध्यकरण (sterilisation)
1975-76 के राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान भारत सरकार ने जनसंख्या नियंत्रण के लिए अत्यधिक कठोर कदम उठाए थे। इस दौरान सबसे विवादित और दमनकारी गतिविधि बड़े पैमाने पर किया गया जबरन वंध्यकरण (नसबंदी) कार्यक्रम था। निचले स्तर के सरकारी कर्मचारियों और आम नागरिकों पर इसके लिए भारी दबाव डाला गया। इस नीति के प्रति जनता में उपजे आक्रोश ने बाद में परिवार नियोजन कार्यक्रमों की विश्वसनीयता को गहरा नुकसान पहुँचाया।

53. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आधुनिक जनसंचार के साधनों ने ग्रामीण और नगरीय जीवन के बीच की दूरी को कम कर दिया है। रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट के माध्यम से शहरों की जीवन शैली, फैशन और उपभोग के स्वरूप अब गाँवों के कोने-कोने तक पहुँच चुके हैं। ग्रामीण युवा अब शहरी संस्कृति और सुविधाओं से पूरी तरह परिचित हैं। यही कारण है कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी अब नगरीय आकांक्षाएं और जीवन जीने के तरीके बढ़ रहे हैं।

54. (B) राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम
आपातकाल के दौरान वंध्यकरण कार्यक्रमों की जबरदस्ती के कारण 'परिवार नियोजन' शब्द जनता के बीच अलोकप्रिय हो गया था। इसी नकारात्मक प्रभाव को दूर करने के लिए, आपातकाल के बाद नई सरकार ने इसका नाम बदलकर 'राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम' कर दिया। इस बदलाव का उद्देश्य कार्यक्रम के अनिवार्य और दमनकारी स्वरूप को हटाकर इसे स्वास्थ्य, पोषण और परिवार के समग्र कल्याण से जोड़ना था।

55. (D) 2025 तक कुल प्रजनन दर (TFR) को 2.1 पर लाना
राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 भारत सरकार का एक महत्वाकांक्षी दस्तावेज है जो स्वास्थ्य सेवाओं के सार्वभौमिक विस्तार पर बल देता है। इसका एक प्रमुख जनसांख्यिकीय लक्ष्य 2025 तक देश की कुल प्रजनन दर (TFR) को प्रतिस्थापन स्तर यानी 2.1 पर लाना है। इसके अतिरिक्त, नीति में शिशु मृत्यु दर को कम करने और सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यय को जीडीपी के 2.5% तक बढ़ाने जैसे अन्य महत्वपूर्ण लक्ष्य भी शामिल किए गए हैं।

56. (A) 4, 2, 3, 1
इन नीतियों और अधिनियमों का कालानुक्रमिक क्रम उनके पारित होने के वर्षों से निर्धारित होता है। सबसे पहले 1994 में प्रसवपूर्व नैदानिक प्रविधियाँ (PCPNDT) अधिनियम बनाया गया। इसके बाद वर्ष 2000 में नई राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की घोषणा हुई। 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान 2015 में शुरू किया गया था। अंततः, नवीनतम राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 में जारी की गई, जो स्वास्थ्य के व्यापक लक्ष्यों को परिभाषित करती है।

57. (C) 18वीं सदी के अंत में राष्ट्र-राज्यों की स्थापना और सांख्यिकी के विकास के कारण
समाजशास्त्र और जनसांख्यिकी दोनों का उद्भव 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में आधुनिक राष्ट्र-राज्यों की स्थापना से जुड़ा है। राष्ट्र-राज्यों को अपनी सीमाओं के भीतर रहने वाली जनसंख्या का प्रबंधन करने और सामाजिक कल्याण की योजनाएं बनाने के लिए सटीक आंकड़ों की आवश्यकता थी। इसी दौरान सांख्यिकी और व्यवस्थित डेटा संग्रह की विधियों का विकास हुआ, जिससे इन दोनों विषयों को अकादमिक और व्यावहारिक आधार प्राप्त हुआ।

58. (A) गणितीय या समांतर रूप से
थॉमस माल्थस ने अपने जनसंख्या सिद्धांत में संसाधनों की वृद्धि दर को स्पष्ट किया था। उनके अनुसार, भूमि की सीमित उर्वरता और उत्पादन की प्रकृति के कारण भरण-पोषण के साधन, जैसे खाद्यान्न, केवल गणितीय या समांतर दर से बढ़ते हैं। यह वृद्धि 1, 2, 3, 4 की गति से होती है। चूंकि जनसंख्या ज्यामितीय दर से बढ़ती है, इसलिए संसाधनों और जनसंख्या के बीच संतुलन निरंतर बिगड़ता रहता है।

59. (A) केवल 1 और 2
भारत के संदर्भ में जनसांख्यिकीय संक्रमण अभी भी एक प्रक्रियाधीन चरण में है। देश में आधुनिक चिकित्सा के कारण मृत्यु दर में तो काफी गिरावट आ चुकी है, लेकिन सामाजिक कारणों से जन्म दर अभी भी उस अनुपात में कम नहीं हुई है। हालांकि भारत तीसरे चरण की ओर बढ़ रहा है, लेकिन उच्च प्रजनन दर वाले कुछ राज्यों के कारण यह संक्रमण अभी तक पूर्ण नहीं माना जा सकता है।

60. (B) जन्म दर और मृत्यु दर के बीच का अंतर शून्य होता है।
शून्य वृद्धि दर जनसंख्या की वह स्थिर अवस्था है जहाँ किसी निश्चित समय अवधि में जनसंख्या के आकार में कोई वृद्धि या कमी नहीं होती। यह स्थिति तब आती है जब जन्म दर और मृत्यु दर एक-दूसरे के लगभग बराबर हो जाती हैं। जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत के अनुसार, यह अंतिम चरण है जहाँ समाज आर्थिक रूप से विकसित हो जाता है और जनसंख्या का आकार स्थिर बना रहता है।

61. (C) जनसंख्या में छोटी आयु के वर्गों का छोटा हिस्सा और बड़ी आयु के वर्गों का बड़ा हिस्सा
जनसंख्या का बूढ़ा होना एक ऐसी जनसांख्यिकीय स्थिति है जिसमें कुल आबादी में वृद्ध लोगों (60 वर्ष से अधिक) का अनुपात निरंतर बढ़ता जाता है। यह आमतौर पर जन्म दर में कमी और बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के कारण बढ़ती जीवन प्रत्याशा का परिणाम होता है। विकसित देशों में यह एक प्रमुख चुनौती है, क्योंकि इससे पराश्रितता अनुपात बढ़ता है और स्वास्थ्य देखभाल पर होने वाले खर्च में वृद्धि होती है।

62. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारत की जनसंख्या संवृद्धि के आंकड़ों में 1961-1971 के दौरान 24.8% की उच्चतम दशकीय वृद्धि दर्ज की गई थी। 1971-1981 में यह दर मामूली घटकर 24.7% रही। 1991-2001 के दशक में इसमें स्पष्ट गिरावट आई और यह 21.5% पर आ गई। अंततः, 2001-2011 के दौरान यह दर और भी घटकर 17.7% रह गई। यह रुझान भारत में जनसांख्यिकीय संक्रमण के तीसरे चरण की ओर बढ़ने का संकेत देता है।

63. (A) ग्रामीण इलाकों में भूख और भुखमरी की समस्या का समाधान करना
महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) एक ऐतिहासिक कल्याणकारी योजना है। इसका प्राथमिक उद्देश्य ग्रामीण परिवारों को साल में कम से कम 100 दिनों के अकुशल शारीरिक कार्य की गारंटी देकर उनकी आजीविका और खाद्य सुरक्षा सुनिश्चित करना है। यह योजना ग्रामीण इलाकों में भुखमरी की समस्या को हल करने और संकट के समय ग्रामीणों को आर्थिक संबल प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

64. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत की जनसंख्या पिरामिड में वर्तमान में एक 'उभार' या मध्य भाग का चौड़ा होना स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। इसका कारण कुल जनसंख्या में 15 से 59 वर्ष के कार्यशील आयु वर्ग के अनुपात में होने वाली निरंतर वृद्धि है। इस स्थिति को जनसांख्यिकीय लाभांश कहा जाता है, जो देश के आर्थिक विकास के लिए एक सुनहरा अवसर प्रस्तुत करता है क्योंकि आश्रितों की तुलना में उत्पादक शक्ति बढ़ी है।

65. (B) कार्यशील आयु वर्ग - 15-64 वर्ष
जनसांख्यिकी में आयु वर्गों का विभाजन आर्थिक उत्पादकता के आधार पर किया जाता है। कार्यशील आयु वर्ग सामान्यतः 15 से 64 वर्ष के लोगों को माना जाता है, जो श्रम बल का हिस्सा होते हैं। इसके विपरीत, 15 वर्ष से कम और 64 वर्ष से अधिक आयु के लोग पराश्रित माने जाते हैं। ज्यामितीय वृद्धि का क्रम 2, 4, 8, 16 और गणितीय वृद्धि का क्रम 2, 4, 6, 8 होता है।

66. (A) केरल का पिरामिड मध्य और ऊपर चौड़ा है, जो कम जन्म दर एवं दीर्घायु दर्शाता है
2026 के अनुमानित आंकड़ों के अनुसार, केरल और उत्तर प्रदेश की आयु संरचना में जमीन-आसमान का अंतर होगा। केरल का जनसंख्या पिरामिड मध्य और ऊपरी हिस्से में चौड़ा होगा, जो घटती जन्म दर और बढ़ती जीवन प्रत्याशा को दर्शाता है। इसके विपरीत, उत्तर प्रदेश का पिरामिड अपने निचले हिस्से में चौड़ा

बना रहेगा, जो वहां निरंतर ऊँची बनी रहने वाली जन्म दर और विशाल युवा आबादी का संकेत देता है।

67. (C) केवल 1, 2, 4
जनसांख्यिकीय लाभांश एक संभावित अवसर है, कोई सुनिश्चित गारंटी नहीं। यदि श्रम बल में शामिल होने वाले नए युवा अशिक्षित और अकुशल हैं, तो उनकी उत्पादकता कम रहेगी। साथ ही, यदि अर्थव्यवस्था उनके लिए रोजगार के अवसर पैदा करने में विफल रहती है, तो वे उत्पादक बनने के बजाय पराश्रित बन जाएंगे। इसलिए, इस लाभ को प्राप्त करने के लिए उचित शिक्षा, स्वास्थ्य और आर्थिक नीतियों का नियोजन अत्यंत आवश्यक है।

68. (D) घटता हुआ स्त्री-पुरुष अनुपात
भारतीय समाज में 'बेटे की अधिमान्यता' एक गहरी सांस्कृतिक और सामाजिक प्रघटना है। इसके प्रत्यक्ष और विनाशकारी परिणाम के रूप में स्त्री-पुरुष अनुपात में निरंतर गिरावट देखी जा रही है। पुत्र की चाहत में लोग कन्या भ्रूण हत्या और बालिका शिशुओं की उपेक्षा जैसे कृत्य करते हैं। यह प्रवृत्ति समाज में लैंगिक असंतुलन पैदा करती है, जिससे भविष्य में विवाह और सामाजिक स्थिरता से संबंधित अनेक जटिल समस्याएं उत्पन्न होने का खतरा रहता है।

69. (C) 7+ आयु का व्यक्ति जो किसी भाषा को समझ के साथ पढ़ और लिख सकता है
भारतीय जनगणना के अनुसार, साक्षरता की एक विशिष्ट परिभाषा निर्धारित की गई है। इसके तहत सात वर्ष या उससे अधिक आयु का वह व्यक्ति साक्षर माना जाता है जो किसी भी भाषा को समझ के साथ पढ़ और लिख सकता है। केवल अपना नाम लिख पाना या अक्षर ज्ञान होना साक्षरता की श्रेणी में नहीं आता। यह मानक देश में शिक्षा के वास्तविक प्रसार और बौद्धिक स्तर को मापने का आधार है।

70. (B) नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत लगातार बढ़ा है।
स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से भारत की नगरीय जनसंख्या के अनुपात में निरंतर और तीव्र वृद्धि देखी गई है। औद्योगीकरण, शिक्षा के प्रसार और शहरों में बेहतर रोजगार के अवसरों ने ग्रामीण आबादी को बड़े पैमाने पर अपनी ओर आकर्षित किया है। 1951 में जहाँ नगरीय जनसंख्या मात्र 17% के आसपास थी, वहीं 2011 में यह बढ़कर 31.2% हो गई। यह परिवर्तन भारत के बढ़ते शहरीकरण और बदलती अर्थव्यवस्था को दर्शाता है।

71. (D) गाँवों में साझी संपत्ति के संसाधनों में कमी
प्रवसन के संदर्भ में 'खिंचाव कारक' (pull factors) वे सुविधाएं हैं जो शहरों की ओर आकर्षित करती हैं, जैसे बेहतर रोजगार, शिक्षा और आधुनिक जीवन शैली। इसके विपरीत, 'धक्का कारक' (push factors) गाँवों की वे कमियां हैं जो लोगों को बाहर जाने को मजबूर करती हैं। गाँवों में साझी संपत्ति के संसाधनों, जैसे चारागाह और वनों, में कमी आना एक 'धक्का कारक' है, न कि शहरों का आकर्षण।

72. (A) 1, 2, 3, 4
भारत की कुल जनसंख्या में पिछले सौ वर्षों में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। 1901 में भारत की जनसंख्या मात्र 238 लाख के करीब थी। 1951 में यह बढ़कर 361 लाख हो गई। 1981 तक यह आंकड़ा 683 लाख तक पहुँच गया और 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल जनसंख्या 1210 लाख दर्ज की गई। यह आरोही क्रम भारत में होने वाले जनसांख्यिकीय विस्तार की विशालता को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

73. (C) जिनकी आबादी दस लाख से ज़्यादा है
नगरीय भूगोल और जनसांख्यिकी में 'महानगर' या मेट्रोपोलिस उन शहरों को कहा जाता है जिनकी कुल जनसंख्या दस लाख (एक मिलियन) से अधिक होती है। भारत में मुंबई, दिल्ली, कोलकाता और चेन्नई जैसे बड़े शहर इसी श्रेणी में आते हैं। हाल के दशकों में ऐसे शहरों की संख्या में तेजी से वृद्धि हुई है। ये शहर आर्थिक गतिविधियों, संस्कृति और आधुनिक सेवाओं के प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करते हैं।

74. (D) उपरोक्त सभी
राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 ने स्वास्थ्य सुधार के लिए कई स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित किए हैं। इसमें 2025 तक जीवन प्रत्याशा को बढ़ाकर 70 वर्ष करना, कुल प्रजनन दर को 2.1 पर लाना और सार्वजनिक स्वास्थ्य सुविधाओं के उपयोग को 50% बढ़ाना शामिल है। इसके अतिरिक्त, 2020 तक मातृ मृत्यु दर और शिशु मृत्यु दर को कम करने के विशिष्ट लक्ष्य भी रखे गए हैं ताकि स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता बढ़े।

75. (B) P-4, Q-2, R-3, S-1
18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में यूरोप में आधुनिक राष्ट्र-राज्यों की स्थापना हुई। 1790 में संयुक्त राज्य अमेरिका में विश्व की पहली आधुनिक जनगणना आयोजित की गई थी। भारत में 1952 में प्रथम राष्ट्रीय जनसंख्या नीति की आधिकारिक घोषणा की गई। अंततः, 1975-76 का काल भारत में राष्ट्रीय आपातकाल के रूप में जाना जाता है, जिसने देश के सामाजिक और जनसांख्यिकीय कार्यक्रमों को काफी प्रभावित किया था।

76. (B) प्रजनन शक्ति स्तर का प्रतिस्थापन दर से नीचा रहना
ऋणात्मक संवृद्धि दर उस स्थिति को कहते हैं जब किसी जनसंख्या का आकार समय के साथ बढ़ने के बजाय घटने लगता है। यह तब होता है जब समाज की कुल प्रजनन दर प्रतिस्थापन स्तर (2.1) से काफी नीचे गिर जाती है। ऐसी स्थिति में पैदा होने वाले बच्चों की संख्या मरने वाले व्यक्तियों की तुलना में कम होती है। कई यूरोपीय देशों और जापान में वर्तमान में यह रुझान देखा जा रहा है।

77. (C) क्योंकि युद्ध के कारण लगे सेंसरशिप के बीच स्पेन ने सबसे पहले इसके बारे में खुलकर रिपोर्ट किया था
1918-19 की महामारी को 'स्पैनिश फ्लू' नाम मिलने का कारण युद्धकालीन राजनीति थी। प्रथम विश्व युद्ध में शामिल देशों ने मनोबल बनाए रखने के लिए बीमारी की खबरों को सेंसर कर दिया था। इसके विपरीत, स्पेन युद्ध में तटस्थ था और वहां प्रेस पर ऐसी कोई पाबंदी नहीं थी। स्पेन ने सबसे पहले इस घातक

वायरस के बारे में विस्तार से रिपोर्ट किया, जिससे दुनिया को लगा कि यह स्पेन से शुरु हुआ है।

78. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
किसी भी आधुनिक राज्य के लिए जनसांख्यिकीय आंकड़े अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। इन आंकड़ों के माध्यम से सरकार को जनसंख्या की जरूरतों, स्वास्थ्य स्थिति और आर्थिक संरचना का पता चलता है। सटीक जानकारी के बिना विकास योजनाओं का प्रभावी निर्माण संभव नहीं है। उदाहरण के लिए, स्कूलों, अस्पतालों और रोजगार की योजनाओं के लिए यह जानना जरूरी है कि किस आयु वर्ग के कितने लोग कहाँ रहते हैं।

79. (A) ईस्ट इंडिया कंपनी कॉलेज, हैलीबरी
थॉमस रॉबर्ट माल्थस ने अपने जीवन के एक बड़े हिस्से के दौरान ईस्ट इंडिया कंपनी कॉलेज, हैलीबरी में इतिहास और राजनीतिक अर्थशास्त्र के प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। यहाँ उन्होंने कंपनी के भविष्य के प्रशासकों को प्रशिक्षित किया। माल्थस के विचारों का तत्कालीन ब्रिटिश आर्थिक नीतियों और भारत जैसे उपनिवेशों के प्रशासन पर भी गहरा प्रभाव पड़ा था। उनकी शैक्षणिक पृष्ठभूमि ने उनके जनसंख्या सिद्धांतों को व्यापक सैद्धांतिक आधार प्रदान किया।

80. (B) जनसंख्या संरचनाओं एवं परिवर्तनों के व्यापक कारणों तथा परिणामों का पता लगाना
सामाजिक जनसांख्यिकी का मुख्य उद्देश्य केवल जनसंख्या के आंकड़ों को एकत्र करना नहीं है, बल्कि उन आंकड़ों के पीछे छिपे सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक कारणों का विश्लेषण करना है। यह विज्ञान इस बात की जांच करता है कि समाज की संरचना जनसंख्या को कैसे प्रभावित करती है और जनसंख्या में होने वाले परिवर्तन समाज को कैसे बदलते हैं। यह विकास, गरीबी और सामाजिक परिवर्तनों के व्यापक परिणामों को समझने में मदद करता है।

81. (D) उपरोक्त सभी
भारत की आयु संरचना में 1971 से 2011 के बीच महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। बच्चों (0-14) का हिस्सा 42% से घटकर 29% हो गया है, जबकि कार्यशील आयु वर्ग (15-59) का हिस्सा बढ़कर 63% हो गया है। साथ ही, वृद्धों (60+) के अनुपात में भी क्रमिक वृद्धि हुई है। भविष्य के अनुमान बताते हैं कि 2026 तक वृद्धों की संख्या बढ़कर 12% हो जाएगी, जो स्वास्थ्य और सामाजिक सुरक्षा हेतु नई चुनौतियां पेश करेगी।

82. (A) 18 अंक
भारत में बाल स्त्री-पुरुष अनुपात (0-6 वर्ष) में 1991 और 2001 के बीच एक चिंताजनक गिरावट दर्ज की गई। 1991 में यह अनुपात 945 था, जो 2001 की जनगणना में घटकर 927 रह गया। इस प्रकार मात्र दस वर्षों में इसमें 18 अंकों की भारी कमी आई। यह गिरावट कन्या भ्रूण हत्या और बालिकाओं के प्रति बढ़ते भेदभाव की पुष्टि करती है, जिसने सरकार को कड़े कानून बनाने हेतु प्रेरित किया।

83. (C) हरियाणा
2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, हरियाणा भारत के उन राज्यों में शीर्ष पर था जहाँ बाल स्त्री-पुरुष अनुपात सबसे चिंताजनक स्थिति में था। वहां 0-6 वर्ष के आयु वर्ग में प्रति 1000 बालकों पर बालिकाओं की संख्या 900 से भी काफी कम दर्ज की गई थी। इसके विपरीत, केरल और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में यह स्थिति काफी बेहतर है। यह क्षेत्रीय अंतर गहरी सामाजिक रुढ़ियों और पुत्र की अधिमान्यता को दर्शाता है।

84. (A) 3, 2, 4, 1
इन जनसांख्यिकीय घटनाओं का सही क्रम भारत के ऐतिहासिक रुझानों को दर्शाता है। सबसे पहले 1911-1921 के दशक में वार्षिक संवृद्धि दर ऋणात्मक हुई। इसके बाद 1951 में स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात पहली जनगणना आयोजित की गई। 1961-1971 के दशक में दशकीय संवृद्धि दर अपने उच्चतम स्तर 24.8% पर पहुँची। अंततः, 2001 के आसपास बाल स्त्री-पुरुष अनुपात के समग्र स्त्री-पुरुष अनुपात से नीचे जाने की प्रवृत्ति अधिक स्पष्ट हुई।

85. (C) गर्भाधान और शिशुजन्म को रोकने वाली चिकित्सा पद्धतियाँ
वंध्यकरण या नसबंदी एक स्थायी गर्भनिरोधक चिकित्सा पद्धति है जिसका उपयोग गर्भाधान और भविष्य में शिशुओं के जन्म को रोकने के लिए किया जाता है। यह जनसंख्या नियंत्रण का एक प्रभावी साधन माना जाता है। इसमें शल्य चिकित्सा के माध्यम से प्रजनन नलिकाओं को अवरुद्ध या काट दिया जाता है। भारत के परिवार नियोजन कार्यक्रम में इसे एक प्रमुख विधि के रूप में अपनाया गया है, हालांकि आपातकाल के दौरान इसके जबरन प्रयोग ने इसे विवादित बना दिया था।

86. (B) वासेक्टोमी और ट्यूबेक्टोमी
परिवार नियोजन के अंतर्गत वंध्यकरण की दो मुख्य शल्य पद्धतियाँ अपनाई जाती हैं। पुरुषों के लिए की जाने वाली नसबंदी को 'वासेक्टोमी' कहा जाता है, जो एक सरल प्रक्रिया है। इसके विपरीत, महिलाओं के लिए की जाने वाली नसबंदी को 'ट्यूबेक्टोमी' कहा जाता है। दोनों ही विधियां स्थाई रूप से गर्भधारण को रोकने में सक्षम हैं। जनसांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार, भारत में वासेक्टोमी की तुलना में ट्यूबेक्टोमी कराने वाली महिलाओं की संख्या काफी अधिक है।

87. (D) 2.2%
1961 से 1981 के बीच की अवधि को भारत में 'जनसंख्या विस्फोट' के काल के रूप में जाना जाता है। इस दौरान देश की वार्षिक जनसंख्या संवृद्धि दर लगभग 2.2% के अपने उच्चतम स्तर पर पहुँच गई थी। इसका मुख्य कारण स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार से मृत्यु दर में आई तीव्र गिरावट थी, जबकि जन्म दर ऊँची बनी रही। इस तीव्र वृद्धि ने भारत सरकार को परिवार नियोजन कार्यक्रमों को और अधिक सशक्त बनाने हेतु बाध्य किया।

88. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारत में साक्षरता के आंकड़ों में समय के साथ काफी प्रगति हुई है। 1951 में साक्षरता दर मात्र 18.3% थी। 1981 तक यह बढ़कर 43.6% हो गई। 2001 की जनगणना में साक्षरता का स्तर 65.4% तक पहुँच गया। अंततः, 2011 की जनगणना के अनुसार भारत की कुल साक्षरता दर 73.0% दर्ज की गई। यह निरंतर सुधार देश में शिक्षा के विस्तार और सरकारी प्रयासों की सफलता को प्रदर्शित करता है।

89. (C) 8.9%
स्वतंत्रता के ठीक बाद, 1951 में भारत में महिला साक्षरता की स्थिति अत्यंत दयनीय थी। उस समय देश की कुल महिलाओं में से मात्र 8.9 प्रतिशत ही साक्षर थीं। यह आंकड़ा उस समय की सामाजिक संरचना में महिलाओं की शिक्षा के प्रति घोर उपेक्षा और अवसरों की कमी को दर्शाता है। हालांकि बाद के दशकों में इसमें काफी सुधार हुआ, लेकिन शुरुआत में यह स्तर बहुत ही निम्न था।

90. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में साक्षरता दर की असमानता न केवल वर्तमान पीढ़ी को प्रभावित करती है, बल्कि यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होती है। निरक्षर माता-पिता अक्सर गरीबी और सूचना के अभाव के कारण अपने बच्चों को बेहतर शैक्षिक अवसर प्रदान करने में असमर्थ होते हैं। इससे पिछड़ेपन का एक चक्र बन जाता है। इस शैक्षिक अंतर को पाटना सामाजिक न्याय और देश के समग्र आर्थिक विकास के लिए अत्यंत अनिवार्य है।

91. (D) 68.8%
2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की अधिकांश जनसंख्या अभी भी गाँवों में निवास करती है। कुल आबादी का लगभग 68.8 प्रतिशत हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है। यह आंकड़ा स्पष्ट करता है कि भारत आज भी 'गाँवों का देश' है। हालांकि शहरों की आबादी तेजी से बढ़ रही है, लेकिन ग्रामीण क्षेत्रों की विशालता और वहां की कृषि आधारित अर्थव्यवस्था भारतीय समाज और राजनीति की मुख्य धुरी बनी हुई है।

92. (B) कृषि का आर्थिक मूल्य तुलनात्मक रूप से घट जाना और आय के अन्य स्रोतों की आवश्यकता
ग्रामीण क्षेत्रों में अब लोग केवल खेती पर निर्भर नहीं रह पा रहे हैं। इसके कई कारण हैं, जिनमें कृषि जोतों का छोटा होना और खेती की बढ़ती लागत शामिल है। कृषि से होने वाली आय अब जीवन निर्वाह के लिए पर्याप्त नहीं रही, जिससे इसका आर्थिक महत्व तुलनात्मक रूप से घटा है। फलस्वरूप, ग्रामीण लोग अपनी आय बढ़ाने के लिए मजदूरी, व्यापार और छोटे-मोटे गैर-कृषि व्यवसायों की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं।

93. (C) केवल 1, 2 और 3
जनसांख्यिकी जनसंख्या का एक सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक अध्ययन है। यह यूनानी शब्दों 'डेमोस' और 'ग्राफीन' से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है लोगों का वर्णन करना। इसमें जन्म, मृत्यु, प्रवसन और जनसंख्या की संरचना जैसे विभिन्न पहलुओं का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जाता है। यह केवल आकार का ही नहीं, बल्कि जनसंख्या की बनावट, घनत्व और वितरण का भी व्यापक अध्ययन करता है ताकि नीतियां बनाई जा सकें।

94. (D) इन समस्याओं का आर्थिक संसाधनों के असमान वितरण के कारण होती हैं।
माल्थस के आलोचकों, विशेष रूप से मार्क्सवादी विचारकों का तर्क था कि गरीबी और भुखमरी का मुख्य कारण जनसंख्या वृद्धि नहीं है। उनके अनुसार, यह समस्या आर्थिक संसाधनों के दोषपूर्ण और असमान वितरण का परिणाम है। यदि समाज में संसाधनों का न्यायसंगत बँटवारा हो और उत्पादन के साधनों पर सबका समान अधिकार हो, तो बढ़ती जनसंख्या के बावजूद भुखमरी को पूरी तरह समाप्त किया जा सकता है।

95. (A) एक औसत व्यक्ति अनुमानतः कितने वर्षों तक जीवित रहेगा, इसका सूचक
जीवन संभाविता या आयु संभाविता एक महत्वपूर्ण जनसांख्यिकीय संकेतक है। यह उस औसत आयु को दर्शाता है, जहाँ तक एक व्यक्ति के जीवित रहने की संभावना होती है। इसकी गणना जन्म के समय उपलब्ध स्वास्थ्य सुविधाओं और पोषण स्तर के आधार पर की जाती है। उच्च आयु संभाविता बेहतर जीवन स्तर और उन्नत चिकित्सा सेवाओं का प्रमाण है, जबकि निम्न संभाविता पिछड़ेपन और उच्च मृत्यु दर को इंगित करती है।

96. (B) 'बेटे को अधिमान्यता' और बालिका शिशुओं की उपेक्षा
चीन, भारत और दक्षिण कोरिया जैसे एशियाई देशों में स्त्री-पुरुष अनुपात में आई गिरावट के पीछे गहरी सामाजिक और सांस्कृतिक मान्यताएं हैं। इन समाजों में 'बेटे की अधिमान्यता' का भाव अत्यंत प्रबल है, क्योंकि पुत्र को वंश चलाने वाला और बुढ़ापे का सहारा माना जाता है। इसी मानसिकता के कारण बालिका भ्रूण हत्या, लिंग-चयनात्मक गर्भपात और बच्चियों के स्वास्थ्य एवं पोषण की उपेक्षा की जाती है, जो अंततः लैंगिक असंतुलन पैदा करती है।

97. (B) किसी विशेष आयु समूह में पुरुष और स्त्रियों की संख्या या प्रतिशत
जनसंख्या पिरामिड एक ग्राफिकल प्रतिनिधित्व है जो किसी देश की आयु-लिंग संरचना को दर्शाता है। इसमें बनी समस्तरीय छड़ें (Horizontal bars) प्रत्येक विशिष्ट आयु वर्ग में पुरुषों और स्त्रियों की कुल संख्या या उनके प्रतिशत को प्रदर्शित करती हैं। बाईं ओर की छड़ें पुरुषों को और दाईं ओर की स्त्रियों को दर्शाती हैं। इन छड़ों की लंबाई से उस समाज के जन्म, मृत्यु और संवृद्धि के स्वरूपों का पता चलता है।

98. (A) 23
राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 के तहत बाल स्वास्थ्य में सुधार के लिए कड़े लक्ष्य निर्धारित किए गए हैं। इसके अंतर्गत 2025 तक पाँच वर्ष से कम आयु के बच्चों की मृत्यु दर को घटाकर प्रति 1000 जीवित जन्मों पर 23 करने का लक्ष्य रखा गया है। यह नीति शिशु उत्तरजीविता को सुनिश्चित करने के लिए टीकाकरण, पोषण और प्रसव पूर्व एवं पश्चात की बेहतर

देखभाल पर बल देती है ताकि बाल मृत्यु को न्यूनतम किया जा सके।

99. (C) 1, 2, 3 और 4
भारत में प्रवसन के पीछे आर्थिक और सामाजिक दोनों कारण महत्वपूर्ण हैं। लोग अक्सर रोजगार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करते हैं। गाँवों में तालाबों और चरागाहों जैसे सामुदायिक संसाधनों की कमी भी उन्हें बाहर जाने पर मजबूर करती है। इसके अतिरिक्त, शहरों की गुमनामी दलितों और वंचितों को ग्रामीण क्षेत्रों के जातीय अपमान और उत्पीड़न से बचने का अवसर प्रदान करती है। हाल के वर्षों में प्रवसन की दर बढ़ी है, न कि घटी है।

100. (D) प्रसवपूर्व नैदानिक प्रविधियाँ (PCPNDT) अधिनियम
भारत सरकार ने बालिका भ्रूण हत्या की गंभीर समस्या से निपटने के लिए प्रसवपूर्व नैदानिक प्रविधियाँ (PCPNDT) अधिनियम लागू किया है। यह कानून गर्भावस्था के दौरान भ्रूण का लिंग परीक्षण करने पर पूरी तरह रोक लगाता है। इसका उद्देश्य कन्या भ्रूण हत्या को रोकना और समाज में घटते बाल स्त्री-पुरुष अनुपात को नियंत्रित करना है। इस अधिनियम के उल्लंघन पर डॉक्टर और परिजनों दोनों के लिए सजा एवं जुर्माने का कड़ा प्रावधान है।

101. (C) 1.63
2001 से 2011 के दशक के दौरान भारत की जनसंख्या संवृद्धि दर में स्पष्ट गिरावट देखी गई। इस अवधि में भारत की औसत वार्षिक संवृद्धि दर 1.63 प्रतिशत दर्ज की गई, जो पिछले दशक की 1.95 प्रतिशत की दर से काफी कम थी। हालांकि जनसंख्या अभी भी बढ़ रही है, लेकिन वृद्धि की गति का धीमा होना सफल परिवार नियोजन और बढ़ती सामाजिक जागरुकता का एक सकारात्मक संकेत माना जाता है।

102. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
जनसंख्या विस्फोट जनसांख्यिकीय संक्रमण के उस संक्रमणकालीन चरण को दर्शाता है जहाँ मृत्यु दर कम और जन्म दर ऊँची होती है। प्रतिस्थापन स्तर वह अवस्था है जहाँ जन्म और मृत्यु दरें बराबर होकर जनसंख्या को स्थिर करती हैं। जनसांख्यिकीय लाभांश कार्यशील आयु वर्ग के बड़े अनुपात से संबंधित है। जनसंख्या का बूढ़ा होना उस स्थिति को कहते हैं जहाँ कुल आबादी में बड़ी आयु के वर्गों का हिस्सा बढ़ जाता है।

103. (D) जो एक सीमित क्षेत्र में फैली होती है
'एपिडेमिक' या महामारी उस संक्रामक रोग को संदर्भित करती है जो अचानक एक विशिष्ट और सीमित भौगोलिक क्षेत्र में बड़ी संख्या में लोगों को प्रभावित करती है। यह सार्वभौमिक महामारी (पैंडेमिक) की तुलना में कम व्यापक होती है। उदाहरण के लिए, किसी विशेष शहर या राज्य में अचानक फैला प्लेग या हैजा एपिडेमिक कहलाएगा। यदि यही बीमारी महाद्वीपों की सीमाओं को पार कर वैश्विक हो जाए, तो उसे पैंडेमिक कहा जाता है।

104. (A) बार-बार पड़ने वाले अकाल और महामारियाँ
1921 से पहले भारत में मृत्यु दर के ऊँचे और अस्थिर रहने का प्राथमिक कारण बार-बार आने वाले भीषण अकाल और अनियंत्रित महामारियाँ थीं। प्लेग, चेचक, हैजा और इंफ्लूएंजा जैसी बीमारियों ने करोड़ों लोगों की जान ली। इसके अतिरिक्त, कृषि की मानसून पर निर्भरता और खाद्यान्न वितरण की दोषपूर्ण व्यवस्था के कारण अकाल सामान्य बात थी। इन आपदाओं के कारण उस समय जनसंख्या वृद्धि की दर बहुत धीमी और अनिश्चित बनी रही।

105. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
भारत में बाल स्त्री-पुरुष अनुपात का गिरना एक अत्यंत गंभीर सामाजिक समस्या है। यह तथ्य सत्य है कि पंजाब और हरियाणा जैसे आर्थिक रूप से समृद्ध राज्यों में यह अनुपात सबसे कम है। हालांकि, यह कारण (R) अभिकथन (A) की व्याख्या नहीं करता कि यह चिंता का विषय क्यों है। वास्तव में, यह चिंता का विषय इसलिए है क्योंकि यह कन्या भ्रूण हत्या और भविष्य के सामाजिक असंतुलन को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

106. (A) पिछड़ी अवस्था से उन्नत अवस्था की ओर
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत के अनुसार, प्रत्येक समाज अपनी जनसंख्या वृद्धि के दौरान एक निश्चित क्रम का पालन करता है। वह समाज पिछड़ी और अल्पविकसित अवस्था से धीरे-धीरे उन्नत और औद्योगिक अवस्था की ओर बढ़ता है। यह संक्रमण स्वास्थ्य, शिक्षा और आर्थिक समृद्धि के स्तरों में होने वाले सुधारों का सीधा परिणाम होता है, जो विकास को दर्शाता है।

107. (D) शिशु मृत्यु दर - प्रति 1000 जीवित जन्म पर 5 वर्ष से कम आयु में मृत्यु
जनसांख्यिकी में शिशु मृत्यु दर (IMR) की परिभाषा 5 वर्ष नहीं, बल्कि 1 वर्ष से संबंधित है। इसे प्रति 1000 जीवित जन्मों पर एक वर्ष की आयु पूरी करने से पहले मरने वाले बच्चों की संख्या के रूप में मापा जाता है। शेष सभी युग्म सही हैं: जन्म दर 1000 व्यक्तियों पर वार्षिक जन्म है, मृत्यु दर वार्षिक मृत्यु है, और प्रजनन दर 15-49 वर्ष की महिलाओं द्वारा दिए गए जन्मों का औसत है।

108. (D) उपरोक्त सभी
भारत की आयु संरचना में होने वाले बदलावों के कई महत्वपूर्ण परिणाम सामने आए हैं। इनमें पराश्रितता अनुपात में कमी आना और जनसांख्यिकीय लाभांश की प्रबल संभावना शामिल है, क्योंकि कार्यशील लोगों का अनुपात बढ़ रहा है। साथ ही, भविष्य में वृद्धों की संख्या बढ़ने का अनुमान है। कार्यशील जनसंख्या के बड़े होने से आश्रितों का आर्थिक बोझ कम हुआ है, जो यदि सही ढंग से नियोजित हो, तो आर्थिक विकास को गति दे सकता है।

109. (C) समग्र स्त्री-पुरुष अनुपात बढ़ा, लेकिन बाल स्त्री-पुरुष अनुपात में भारी गिरावट आई।
1991 और 2001 की जनगणनाओं के बीच भारत के स्त्री-पुरुष अनुपात में एक विरोधाभासी और असामान्य प्रवृत्ति देखी गई। इस अवधि के दौरान कुल जनसंख्या का समग्र स्त्री-पुरुष अनुपात तो बढ़ा, लेकिन 0-6 वर्ष के आयु वर्ग के बाल स्त्री-पुरुष अनुपात में अभूतपूर्व और भारी गिरावट दर्ज की गई। यह विसंगति दर्शाती है कि समाज में वयस्क महिलाओं की स्थिति में सुधार के बावजूद, बालिका शिशुओं के प्रति भेदभाव और भ्रूण हत्या बढ़ी है।

110. (D) उच्च जनसंख्या वृद्धि दर के कारण
भारत में साक्षरता दर बढ़ाने के सरकारी प्रयासों के बावजूद इसकी गति धीमी रहने का एक मुख्य कारण यहाँ की उच्च जनसंख्या वृद्धि दर है। हर साल साक्षर होने वाले लोगों की संख्या बढ़ती तो है, लेकिन साथ ही आबादी में जुड़ने वाले नए निरक्षर बच्चों की संख्या भी बहुत बड़ी होती है। इस तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण शैक्षिक संसाधनों और स्कूलों पर भारी दबाव बना रहता है, जिससे शत-प्रतिशत साक्षरता का लक्ष्य प्राप्त करना कठिन हो जाता है।

111. (A) केवल 1, 2, 3
भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया बहुत तीव्र है और बड़े महानगरों का विस्तार सबसे अधिक हो रहा है। देश की कुल नगरीय जनसंख्या का दो-तिहाई से अधिक भाग मात्र 27 बड़े शहरों में केंद्रित है। हालांकि, भारत की कुल नगरीय जनसंख्या अभी भी 31.2% है, जो 50% से काफी कम है। छोटे कस्बे भी प्रवासियों को आकर्षित करते हैं, लेकिन बड़े शहरों का खिंचाव उनकी तुलना में कहीं अधिक शक्तिशाली और व्यापक बना हुआ है।

112. (B) जनसंख्या वृद्धि दर को प्रभावित करना, जन-स्वास्थ्य सुधार और जागरूकता बढ़ाना
भारत के राष्ट्रीय परिवार कल्याण कार्यक्रम के उद्देश्य अब केवल जनसंख्या वृद्धि को धीमा करने तक सीमित नहीं हैं। इसका व्यापक लक्ष्य जन-स्वास्थ्य में सुधार करना, मातृत्व और शिशु स्वास्थ्य सुनिश्चित करना और परिवार नियोजन के प्रति जागरूकता बढ़ाना है। यह कार्यक्रम अब स्वैच्छिक आधार पर कार्य करता है और लोगों को छोटे परिवार के लाभों के प्रति शिक्षित करता है ताकि वे स्वयं जिम्मेदार जनसांख्यिकीय निर्णय ले सकें।

113. (B) 64.6%
2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में महिलाओं की साक्षरता दर 64.6 प्रतिशत दर्ज की गई थी। हालांकि यह 2001 की 53.7 प्रतिशत की दर की तुलना में एक महत्वपूर्ण सुधार है, लेकिन यह पुरुषों की 80.9 प्रतिशत की साक्षरता दर से काफी पीछे है। महिला साक्षरता में इस वृद्धि ने सामाजिक जागरूकता और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा दिया है, लेकिन पूर्ण साक्षरता के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए अभी निरंतर प्रयासों की आवश्यकता है।

114. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
भविष्य के जनसांख्यिकीय अनुमानों के अनुसार, 2041 तक भारत की जनसंख्या वृद्धि में उत्तर प्रदेश और बिहार का हिस्सा करीब 28% होगा। इसके विपरीत, दक्षिण भारतीय राज्यों (आंध्र, तमिलनाडु, केरल आदि) का हिस्सा घटकर 16% रह जाएगा। महाराष्ट्र और गुजरात जैसे औद्योगिक राज्यों का योगदान लगभग 13% रहने का अनुमान है, जबकि पंजाब, हरियाणा और दिल्ली जैसे उत्तर भारतीय राज्यों का सामूहिक हिस्सा मात्र 5% के आसपास रहने की संभावना है।

115. (C) आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, तमिलनाडु
भारत में कई राज्यों ने जनसंख्या नियंत्रण के क्षेत्र में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त की है। आंध्र प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, तमिलनाडु और केरल जैसे राज्यों ने अपनी कुल प्रजनन दर (TFR) को प्रतिस्थापन स्तर (2.1) तक पहुँचा दिया है या उसके बहुत निकट हैं। इन राज्यों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं का बेहतर स्तर इस उपलब्धि का मुख्य कारण है। इसके विपरीत, बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे राज्य अभी भी इस लक्ष्य से काफी दूर हैं।

116. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
शहरों का सामाजिक वातावरण गाँवों की तुलना में काफी भिन्न और 'गुमनाम' होता है। शहरों में लोग आमतौर पर अपने पड़ोसियों की जाति या सामाजिक पृष्ठभूमि के बारे में अधिक पूछताछ नहीं करते। यह गुमनामी विशेष रूप से दलितों और उत्पीड़ित समूहों के लिए लाभकारी सिद्ध होती है, क्योंकि यह उन्हें गाँवों में होने वाले प्रत्यक्ष जातीय भेदभाव और अपमान से मुक्ति दिलाती है। यही कारण है कि हाशिए के समूह शहरी जीवन को अधिक स्वतंत्रतापूर्ण और सुरक्षित मानते हैं।

117. (C) 29 साल
वर्ष 2020 के जनसांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार, भारतीयों की औसत आयु मात्र 29 वर्ष थी। यह आंकड़ा भारत को विश्व के सबसे युवा देशों की श्रेणी में खड़ा करता है। इसकी तुलना में चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका में औसत आयु 37 वर्ष और यूरोप में 45 वर्ष से अधिक है। यह युवा आबादी भारत के लिए एक विशाल कार्यबल और जनसांख्यिकीय लाभांश का अवसर प्रदान करती है, जो भविष्य के आर्थिक विकास का इंजन बन सकती है।

118. (B) देश में राजनीतिक शक्ति प्रदान करने में ग्रामीण इलाकों की भूमिका समाप्त हो गई है।
भारत में नगरीकरण का प्रभाव गहरा है, जिससे ग्रामीण-नगरीय दूरियां कम हो रही हैं और उपभोग के शहरी स्वरूप गाँवों तक पहुँच रहे हैं। हालांकि, यह कहना गलत है कि ग्रामीण क्षेत्रों की राजनीतिक शक्ति समाप्त हो गई है। वास्तव में, भारत की दो-तिहाई जनसंख्या अब भी गाँवों में रहती है, जिसके कारण लोकसभा और विधानसभा चुनावों में ग्रामीण मतदाताओं की भूमिका आज भी निर्णायक और सर्वोपरि बनी हुई है।

119. (D) 2025 तक इसे पूरी तरह समाप्त करना।
राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 ने संक्रामक रोगों के उन्मूलन के लिए समयबद्ध लक्ष्य निर्धारित किए हैं। क्षयरोग (TB) के संदर्भ में, भारत सरकार ने वैश्विक लक्ष्य (2030) से पाँच वर्ष पहले, यानी 2025 तक इसे देश से पूरी तरह समाप्त करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य रखा है। इसके लिए व्यापक जांच, निःशुल्क उपचार और मरीजों को पोषण सहायता प्रदान करने जैसे कदम उठाए जा रहे हैं ताकि इस बीमारी पर पूर्ण नियंत्रण पाया जा सके।

120. (A) 3, 2, 1
जनसांख्यिकीय संक्रमण की प्रक्रिया एक निश्चित क्रम में चलती है। प्रथम चरण में जन्म और मृत्यु दरें दोनों ऊँची होती हैं, जिससे वृद्धि दर निम्न रहती है। द्वितीय चरण में मृत्यु दर गिरती है लेकिन जन्म दर ऊँची बनी रहती है, जिससे जनसंख्या विस्फोट होता है। अंतिम तृतीय चरण में जन्म और मृत्यु दरें दोनों निम्न हो जाती हैं, जिससे पुनः निम्न वृद्धि दर की स्थिति प्राप्त होती है। अतः सही क्रम 3, 2, 1 है।

121. (C) दर में भारी गिरावट आई।
भारत में 1994 से 2004 के दशक के दौरान युवाओं (15-30 वर्ष) के लिए रोजगार के अवसरों में चिंताजनक प्रवृत्ति देखी गई। इस अवधि में रोजगार वृद्धि की दर में भारी गिरावट आई। ग्रामीण क्षेत्रों में यह दर 1.5% से गिरकर 0.3% और शहरी क्षेत्रों में 2.4% से गिरकर 0.7% रह गई। यह गिरावट जनसांख्यिकीय लाभांश के मार्ग में एक बड़ी बाधा है, क्योंकि बढ़ती युवा आबादी को पर्याप्त कार्य के अवसर प्राप्त नहीं हो पा रहे थे।

122. (A) चयनात्मक गर्भपात
अल्ट्रासाउंड और सोनोग्राफी जैसी आधुनिक चिकित्सा तकनीकें भ्रूण की स्वास्थ्य समस्याओं का पता लगाने के लिए विकसित की गई थीं। हालांकि, भारत में इनका व्यापक दुरुपयोग भ्रूण के लिंग का पता लगाने के लिए किया जाता है। इसके परिणामस्वरूप लिंग-चयनात्मक गर्भपात की घटनाओं में वृद्धि हुई है, जहाँ मादा भ्रूणों को नष्ट कर दिया जाता है। इस अनैतिक कृत्य ने देश के बाल स्त्री-पुरुष अनुपात को बुरी तरह प्रभावित किया है।

123. (D) उपरोक्त सभी
भारत ने 1952 में दुनिया की पहली आधिकारिक जनसंख्या नीति अपनाई, जिसका प्रारंभिक फोकस जन्म नियंत्रण पर था। 1975-76 के आपातकाल के दौरान जबरन नसबंदी के कारण इस कार्यक्रम को भारी सार्वजनिक विरोध और धक्का लगा। वर्तमान में, भारत की जनसंख्या नीति बहुत व्यापक है, जो केवल जन्म नियंत्रण ही नहीं, बल्कि प्रजनन स्वास्थ्य, मातृ एवं शिशु मृत्यु दर में कमी और लड़कियों की शिक्षा जैसे लक्ष्यों पर भी केंद्रित है।

124. (B) यह सामाजिक प्रघटना के अस्तित्व के लिए एक ठोस तर्क प्रस्तुत करता है।
समाजशास्त्र के लिए जनसांख्यिकीय आंकड़े अत्यंत महत्वपूर्ण हैं क्योंकि ये सिद्ध करते हैं कि मानवीय व्यवहार केवल व्यक्तिगत नहीं, बल्कि सामाजिक कारकों से भी संचालित होता है। उदाहरण के लिए, एमिल दुर्खाइम ने आत्महत्या की दरों के आंकड़ों का उपयोग करके यह दिखाया कि आत्महत्या जैसी व्यक्तिगत क्रिया के पीछे भी गहरे सामाजिक कारण होते हैं। ये आंकड़े सामाजिक प्रघटनाओं के स्वरूप को वैज्ञानिक आधार पर समझने के लिए ठोस प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।

125. (C) बड़ी उम्र में विवाह और यौन संयम
थॉमस माल्थस ने जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के लिए 'निवारक' या कृत्रिम निरोधों का सुझाव दिया था। इनमें उन्होंने मुख्य रूप से 'नैतिक संयम' पर बल दिया, जिसमें बड़ी उम्र में विवाह करना, ब्रह्मचर्य का पालन करना और यौन संयम शामिल थे। दिलचस्प बात यह है कि माल्थस आधुनिक गर्भनिरोधक उपायों के विरोधी थे। उनका मानना था कि मनुष्य को स्वयं अपनी इच्छाशक्ति से संतानोत्पत्ति पर नियंत्रण रखना चाहिए।

126. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारत में नगरीकरण की प्रगति को जनगणना के आंकड़े स्पष्ट करते हैं। 1921 में नगरीय जनसंख्या मात्र 11.2% थी, जो उस समय के ग्रामीण स्वरूप को दर्शाती है। 1971 तक यह बढ़कर 19.9% हो गई। 2001 की जनगणना में यह आंकड़ा 27.8% तक पहुँचा। अंततः, 2011 में भारत की नगरीय जनसंख्या 31.2% दर्ज की गई। यह क्रमिक वृद्धि देश के बदलते आर्थिक ढांचे और शहरों की ओर बढ़ते पलायन का प्रत्यक्ष परिणाम है।

127. (A) 943
2011 की जनगणना के अंतिम आंकड़ों के अनुसार, भारत का समग्र स्त्री-पुरुष अनुपात 943 दर्ज किया गया था। इसका अर्थ है कि देश में प्रति 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या 943 है। यह 2001 के अनुपात (933) की तुलना में 10 अंकों का एक मामूली लेकिन सकारात्मक सुधार था। हालांकि राष्ट्रीय स्तर पर यह अनुपात बढ़ा है, लेकिन कई राज्यों और विशेष रूप से बाल स्त्री-पुरुष अनुपात में गिरावट अभी भी एक गंभीर चुनौती बनी हुई है।

128. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पराश्रितता अनुपात में गिरावट किसी भी देश के लिए आर्थिक प्रगति का एक बड़ा अवसर होती है। जब कुल जनसंख्या में 15 से 64 वर्ष के कार्यशील लोगों का अनुपात बढ़ता है, तो वे कम संख्या में आश्रितों (बच्चों और वृद्धों) का भरण-पोषण करते हैं। इससे प्रति व्यक्ति आय बढ़ती है और बचत एवं निवेश की संभावनाएं बढ़ जाती हैं। इसी स्थिति को जनसांख्यिकीय लाभांश कहा जाता है, जो राष्ट्र की समृद्धि का मुख्य स्रोत बन सकता है।

129. (B) स्त्री-पुरुष के बीच साक्षरता का अंतर लगातार बढ़ रहा है।
भारत में साक्षरता के रुझानों के संदर्भ में यह कहना गलत है कि स्त्री-पुरुष के बीच साक्षरता का अंतर बढ़ रहा है। वास्तव में, पिछले कुछ दशकों में महिलाओं की साक्षरता दर पुरुषों की तुलना में अधिक तेजी से बढ़ी है, जिससे यह अंतर धीरे-धीरे कम हो रहा है। 1951 में साक्षरता मात्र 18.3% थी जो 2011 में

बढ़कर 73% हो गई। हालांकि पुरुषों की साक्षरता दर ऊँची है, लेकिन लैंगिक अंतर में निरंतर कमी आई है।

130. (A) 927
2001 की जनगणना में भारत का बाल स्त्री-पुरुष अनुपात (0-6 वर्ष) 927 दर्ज किया गया था। यह 1991 के 945 के अनुपात से 18 अंकों की एक भारी गिरावट थी, जिसने पूरे देश का ध्यान इस गंभीर सामाजिक समस्या की ओर खींचा। यह गिरावट विशेष रूप से पंजाब, हरियाणा और दिल्ली जैसे विकसित क्षेत्रों में अधिक देखी गई। इसी डेटा के आधार पर सरकार ने कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिए नीतियों को और कड़ा किया था।

131. (C) केवल 1, 2, 3, 4
भारत में घटते बाल स्त्री-पुरुष अनुपात के लिए कई सामाजिक और तकनीकी कारक जिम्मेदार हैं। इनमें सबसे प्रमुख है लिंग-चयनात्मक गर्भपात, जो अल्ट्रासाउंड तकनीक के दुरुपयोग से किया जाता है। इसके अतिरिक्त, पुत्र प्राप्ति की प्रबल चाहत, बालिका शिशुओं की हत्या और उनके पोषण एवं स्वास्थ्य की घोर उपेक्षा भी मुख्य कारण हैं। यह ध्यान देने योग्य है कि बालिकाओं में कोई प्राकृतिक उच्च मृत्यु दर नहीं होती, बल्कि यह भेदभाव का परिणाम है।

132. (D) जनसंख्या और अर्थव्यवस्था के विभिन्न पक्षों से संबंधित मात्रात्मक तथ्य
सामाजिक आंकड़े उन मात्रात्मक तथ्यों और सांख्यिकीय जानकारियों को कहते हैं जो जनसंख्या की स्थिति, संरचना और अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं। इसमें जन्म दर, मृत्यु दर, साक्षरता, आय और रोजगार जैसे डेटा शामिल होते हैं। ये आंकड़े समाज की वास्तविक स्थिति का दर्पण होते हैं। सरकारें इनका उपयोग जन कल्याण की नीतियां बनाने, संसाधनों के आवंटन और सामाजिक विकास की प्रगति को मापने के लिए करती हैं।

133. (C) 1921 के बाद
भारतीय जनसांख्यिकी में 1921 को 'महान विभाजक वर्ष' कहा जाता है। इस वर्ष के बाद भारत में मृत्यु दर में निरंतर और तीव्र गिरावट आने लगी। इसका श्रेय अकालों पर नियंत्रण, परिवहन के बेहतर साधनों और सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार को जाता है। 1921 से पहले महामारियां करोड़ों लोगों को अपना ग्रास बना लेती थीं, लेकिन इसके बाद टीकाकरण और स्वच्छता अभियानों ने जीवन प्रत्याशा को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

134. (D) कैंसर
इतिहास में प्लेग, चेचक और हैजा जैसी संक्रामक महामारियों ने सामूहिक रूप से करोड़ों लोगों की जान ली है और मृत्यु दर को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इसके विपरीत, कैंसर एक गैर-संक्रामक बीमारी है जो मुख्य रूप से व्यक्तिगत स्वास्थ्य और जीवन शैली से जुड़ी है। हालांकि कैंसर एक गंभीर बीमारी है, लेकिन इसने कभी भी संक्रामक महामारियों की तरह अचानक और बड़े भौगोलिक क्षेत्र में मृत्यु दर में भारी वृद्धि नहीं की है।

135. (D) लोगों की लंबी जीवन अवधि और वृद्ध जनसंख्या का बड़ा हिस्सा
जनसंख्या पिरामिड का शीर्ष भाग समाज के सबसे वृद्ध आयु वर्गों का प्रतिनिधित्व करता है। यदि किसी देश के पिरामिड का शीर्ष हिस्सा चौड़ा है, तो यह स्पष्ट रूप से उच्च जीवन संभाविता को दर्शाता है। इसका अर्थ है कि वहां स्वास्थ्य सुविधाएं उन्नत हैं और लोग लंबी उम्र जी रहे हैं। विकसित देशों में यह प्रवृत्ति अधिक पाई जाती है, जहाँ कुल आबादी में वृद्धों का अनुपात बढ़ रहा है।

136. (A) हरियाणा
2011 की जनगणना के अनुसार, हरियाणा भारत का वह राज्य था जहाँ बाल स्त्री-पुरुष अनुपात (0-6 वर्ष) की स्थिति सबसे खराब थी। वहां प्रति 1000 बालकों पर बालिकाओं की संख्या मात्र 834 के आसपास थी। यह स्तर राष्ट्रीय औसत से बहुत नीचे था और वहां की समाज में व्याप्त गहरी पितृसत्तात्मक मानसिकता एवं कन्या भ्रूण हत्या की समस्या को उजागर करता है। इसी कारण 'बेटी बचाओ' अभियान की शुरुआत हरियाणा से की गई थी।

137. (C) गाँवों में रोजगार के अवसरों की कमी और शहरों में काम की तलाश
ग्रामीण भारत में कृषि की घटती लाभप्रदता और रोजगार के अवसरों का अभाव लोगों को शहरों की ओर पलायन करने के लिए मजबूर करता है। शहरों में औद्योगीकरण और सेवा क्षेत्र के विस्तार के कारण काम के बेहतर और नियमित अवसर उपलब्ध होते हैं। ग्रामीण युवा अक्सर अपने परिवार की आय बढ़ाने और गरीबी से बाहर निकलने के लिए शहरों की ओर खिंचे चले आते हैं। यह आर्थिक मजबूरी ही प्रवसन का मुख्य चालक है।

138. (D) उपरोक्त सभी
भारत की जनसंख्या संवृद्धि के रुझान ऐतिहासिक रूप से बदलते रहे हैं। 1901-1951 के बीच संवृद्धि सामान्य थी, जबकि 1911-1921 में यह ऋणात्मक रही। स्वतंत्रता के बाद मृत्यु दर में कमी से जनसंख्या तेजी से बढ़ी। हालांकि 1981 के बाद से वार्षिक संवृद्धि दर में क्रमिक गिरावट आई है, लेकिन जनसंख्या का कुल आधार इतना बड़ा है कि वृद्धि की वास्तविक संख्या अब भी काफी ऊँची बनी हुई है।

139. (D) सुरक्षित पानी और स्वच्छता
राष्ट्रीय स्वास्थ्य नीति 2017 का एक अल्पकालिक लक्ष्य 2020 तक देश के सभी नागरिकों के लिए सुरक्षित पेयजल और स्वच्छता की उपलब्धता सुनिश्चित करना था। सरकार का मानना है कि अधिकांश बीमारियाँ जल जनित और अस्वच्छता के कारण होती हैं। इसलिए, बुनियादी ढांचे में सुधार करके बीमारियों के मूल कारणों को समाप्त करने पर बल दिया गया है। यह लक्ष्य 'स्वच्छ भारत मिशन' जैसी योजनाओं के साथ मिलकर बनाया गया है।

140. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
1975-76 के राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान भारत के परिवार नियोजन कार्यक्रम की छवि को अपूरणीय क्षति पहुँची। सरकार द्वारा लागू किए गए जबरन नसबंदी अभियान ने आम जनता के मन में डर और अविश्वास पैदा कर दिया। वंध्यकरण के लिए अपनाई गई कठोरता के कारण लोगों ने इस कार्यक्रम का विरोध किया। इसके बाद, सरकार को अपनी नीतियों में बदलाव करना पड़ा और कार्यक्रम का नाम 'परिवार कल्याण' रख दिया गया।

141. (C) 63%
2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, भारत की कुल जनसंख्या में 15 से 59 वर्ष के कार्यशील आयु वर्ग का हिस्सा 63 प्रतिशत था। यह 1971 के 53 प्रतिशत की तुलना में एक बड़ी वृद्धि है। इस आयु वर्ग का बढ़ता हुआ अनुपात भारत को एक 'युवा राष्ट्र' बनाता है और जनसांख्यिकीय लाभांश की स्थिति पैदा करता है। यदि इस कार्यबल को सही शिक्षा और रोजगार मिले, तो यह विकास में बड़ा योगदान दे सकता है।

142. (D) निम्न जन्म दर, निम्न मृत्यु दर
जनसांख्यिकीय संक्रमण का तीसरा और अंतिम चरण एक विकसित समाज की पहचान है। इस अवस्था में, शिक्षा के प्रसार और बेहतर स्वास्थ्य जागरूकता के कारण जन्म दर में भारी गिरावट आती है। साथ ही, आधुनिक चिकित्सा सुविधाओं के कारण मृत्यु दर भी बहुत निम्न स्तर पर बनी रहती है। फलस्वरूप, जनसंख्या वृद्धि की दर बहुत धीमी या स्थिर हो जाती है। अधिकांश विकसित देश वर्तमान में इसी चरण में हैं।

143. (A) यूरोपीय देशों का अनुभव जहाँ जनसंख्या वृद्धि के साथ जीवन स्तर उन्नत हुआ
माल्थस के सिद्धांत का सबसे सशक्त खंडन 19वीं और 20वीं शताब्दी के यूरोपीय देशों के अनुभव से प्राप्त होता है। माल्थस ने भविष्यवाणी की थी कि बढ़ती जनसंख्या अनिवार्य रूप से गरीबी और अकाल लाएगी। इसके विपरीत, यूरोप में जनसंख्या वृद्धि के साथ-साथ औद्योगिक क्रांति के कारण जीवन स्तर में अभूतपूर्व सुधार हुआ। इसने सिद्ध कर दिया कि तकनीक और संसाधनों के प्रबंधन से बढ़ती जनसंख्या को समृद्धि में बदला जा सकता है।

144. (B) P-2, Q-1, R-3, S-4
एमिल दुर्खाइम का अध्ययन आत्महत्या की दर को सामाजिक प्रघटना के रूप में विश्लेषित करता है। थॉमस माल्थस का ऐतिहासिक निबंध 1798 में प्रकाशित हुआ था, जिसने जनसांख्यिकीय बहस को जन्म दिया। भारत में जनगणना का प्रथम व्यवस्थित प्रयास 1867-72 की अवधि में किया गया था। प्रसवपूर्व नैदानिक प्रविधियाँ अधिनियम लिंग-चयनात्मक गर्भपात पर रोक लगाने के लिए बनाया गया कानून है, जो लैंगिक समानता की दिशा में एक बड़ा कदम है।

145. (B) बिहार और उत्तर प्रदेश
2016 के जनसांख्यिकीय आंकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि भारत के उत्तरी राज्यों, विशेष रूप से बिहार और उत्तर प्रदेश में प्रजनन दर अभी भी काफी ऊँची बनी हुई है। इन राज्यों में कुल प्रजनन दर 3.0 या उससे भी अधिक दर्ज की गई थी, जो राष्ट्रीय औसत से काफी ऊपर है। इसके विपरीत, केरल और तमिलनाडु जैसे दक्षिणी राज्यों ने इसे सफलतापूर्वक प्रतिस्थापन स्तर से नीचे ला दिया है।

146. (A) 1867–72
भारत में आधुनिक किस्म की जनगणना का सबसे पहला प्रयास ब्रिटिश शासन के दौरान 1867 से 1872 के बीच किया गया था। हालांकि यह प्रयास पूरे देश में एक साथ नहीं था, लेकिन इसने सांख्यिकीय डेटा संग्रह की नींव रखी। इसके बाद, 1881 में पहली बार संपूर्ण भारत की एक साथ नियमित दसवर्षीय जनगणना की शुरुआत हुई। यह प्रक्रिया तब से लेकर आज तक निरंतर जारी है और नियोजन के लिए महत्वपूर्ण है।

147. (B) केवल 1, 2, 3, 4
भारत में जनसांख्यिकीय संक्रमण के रुझान दर्शाते हैं कि मृत्यु दर में गिरावट जन्म दर की तुलना में अधिक तीव्र रही है। 1981 के बाद से वृद्धि दर कम हुई है, लेकिन यह अब भी अपेक्षाकृत ऊँची बनी हुई है। केरल और तमिलनाडु जैसे राज्यों ने प्रजनन दर को नियंत्रित करने में बड़ी सफलता पाई है, जबकि बिहार और उत्तर प्रदेश में यह दर अब भी ऊँची है। भारत अभी पूरी तरह से अंतिम चरण में प्रवेश नहीं कर पाया है।

148. (A) 4, 1, 3, 2
भारतीय जनगणना के इतिहास का सही क्रम देश की विकास यात्रा को समझने में मदद करता है। सबसे पहले 1881 में नियमित दसवर्षीय जनगणना की शुरुआत हुई। इसके बाद 1921 की जनगणना हुई, जिसे 'महान विभाजक वर्ष' माना जाता है। स्वतंत्रता के पश्चात 1951 में पहली भारतीय जनगणना आयोजित की गई। अंततः, 2011 की जनगणना नवीनतम पूर्ण आंकड़ों को प्रस्तुत करती है। यह क्रम सांख्यिकीय प्रबंधन के व्यवस्थित विकास का प्रमाण है।

149. (C) साक्षरता
साक्षरता स्वयं में एक ऐसा शक्तिशाली कारक है जो सीधे तौर पर स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता और अन्य सामाजिक परिवर्तनों को प्रभावित करता है। एक साक्षर व्यक्ति स्वास्थ्य सेवाओं, परिवार नियोजन और पोषण के महत्व को बेहतर ढंग से समझ सकता है। साक्षरता बढ़ने से लोग अंधविश्वासों से दूर होते हैं और आधुनिक जीवन की चुनौतियों का सामना करने के लिए जागरूक बनते हैं। इसीलिए साक्षरता दर विकास का एक बुनियादी पैमाना है।

150. (B) आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारक
यद्यपि सरकारी नीतियां जनसंख्या नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, लेकिन अंतिम विश्लेषण में जनसांख्यिकीय दरों का निर्धारण समाज के आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों द्वारा होता है। लोगों की शिक्षा का स्तर, धार्मिक

मान्यताएं और पुत्र की चाहत जन्म और मृत्यु दर को गहराई से प्रभावित करती हैं। जब तक समाज की बुनियादी सोच में सकारात्मक बदलाव नहीं आता, तब तक केवल नीतियों से स्थाई जनसांख्यिकीय परिवर्तन लाना कठिन होता है।

151. (B) क्योंकि जन्म दर और मृत्यु दर दोनों ही बहुत उच्च स्तर पर होती हैं।
जनसांख्यिकीय संक्रमण सिद्धांत के प्रथम चरण में जन्म दर और मृत्यु दर दोनों ही अत्यधिक उच्च बनी रहती हैं। इस अवस्था में चिकित्सा सुविधाओं की कमी और पोषण के निम्न स्तर के कारण मृत्यु दर अधिक होती है, जबकि सामाजिक और सांस्कृतिक कारणों से जन्म दर भी उच्च रहती है। इन दोनों के बीच संतुलन से जनसंख्या वृद्धि लगभग स्थिर बनी रहती है।

152. (A) दूसरे चरण की
जनसांख्यिकीय संक्रमण के दूसरे चरण को प्रारंभिक विस्तार का काल माना जाता है। इस दौरान स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और बेहतर खाद्य आपूर्ति के कारण मृत्यु दर में तेजी से गिरावट आती है। हालांकि, सामाजिक मान्यताओं के कारण जन्म दर उच्च ही बनी रहती है। जन्म और मृत्यु दर के बीच यह बड़ा अंतर ही समाज में तीव्र जनसंख्या विस्फोट का मुख्य कारण बनता है।

153. (C) शहरीकरण और परिवार नियोजन
चिकित्सा विज्ञान में प्रगति, सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार और खाद्य आपूर्ति की बेहतर उपलब्धता जैसे कारक मृत्यु दर को कम करने के लिए उत्तरदायी होते हैं। इसके विपरीत, शहरीकरण, शिक्षा और परिवार नियोजन जैसे तत्व मुख्य रूप से जन्म दर को प्रभावित करते हैं। ये कारक समाज में छोटे परिवारों के प्रति जागरूकता बढ़ाकर दीर्घकाल में जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने में अत्यंत सहायक होते हैं।

154. (D) शिक्षा का बढ़ता स्तर और शहरीकरण
तीसरे चरण में समाज का स्वरूप बदलने लगता है और शिक्षा के प्रसार के साथ लोगों की मानसिकता में परिवर्तन आता है। शहरीकरण के कारण जीवन शैली अधिक जटिल हो जाती है, जिससे छोटे परिवारों की आवश्यकता महसूस होती है। साथ ही, बेहतर शिक्षा और परिवार नियोजन तक पहुँच बढ़ने से लोग स्वेच्छा से जन्म दर को कम करने का प्रयास करते हैं, जिससे वृद्धि धीमी होती है।

155. (C) पाँचवाँ चरण (जनसंख्या में कमी)
जनसांख्यिकीय संक्रमण के उन्नत चरणों में सामाजिक और आर्थिक विकास के चरम पर पहुँचने से जन्म दर बहुत कम हो जाती है। जब जन्म दर मृत्यु दर से भी नीचे गिर जाती है, तो जनसंख्या की प्राकृतिक वृद्धि दर नकारात्मक हो जाती है। यह स्थिति जनसंख्या में शुद्ध कमी को दर्शाती है, जिसे कुछ विशेषज्ञों द्वारा इस मॉडल के पांचवें चरण के रूप में पहचाना गया है।

156. (B) प्रजनन दर में उल्लेखनीय गिरावट
जनसांख्यिकीय लाभांश का मुख्य आधार प्रजनन दर में होने वाली निरंतर गिरावट है। जब जन्म लेने वाले बच्चों की संख्या कम हो जाती है, तो धीरे-धीरे कुल जनसंख्या में आश्रितों का बोझ घटने लगता है। इसके परिणामस्वरुप समाज में कार्यशील आयु वर्ग का अनुपात बढ़ जाता है, जो आर्थिक उत्पादन में वृद्धि कर देश की समृद्धि और आर्थिक विकास का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक होता है।

157. (D) क्योंकि इसके लाभ हेतु सटीक नीतियों और निवेश की आवश्यकता होती है।
जनसांख्यिकीय लाभांश केवल जनसंख्या संरचना में बदलाव से प्राप्त होने वाला कोई स्वचालित लाभ नहीं है। इसे एक सीमित समय के अवसर के रूप में देखा जाता है जिसे सही नीतियों के माध्यम से ही भुनाया जा सकता है। सरकार को इस युवा शक्ति को उत्पादक बनाने के लिए शिक्षा, कौशल विकास और स्वास्थ्य सेवाओं में भारी निवेश करने के साथ-साथ रोजगार सृजन भी करना होगा।

158. (A) कार्यशील आयु वर्ग का अनुपात आश्रित जनसंख्या की तुलना में बढ़ जाता है।
जनसांख्यिकीय लाभांश की स्थिति तब उत्पन्न होती है जब देश की आयु संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन आता है। इस दौरान 15 से 64 वर्ष की आयु वाले कार्यशील लोगों की संख्या बच्चों और वृद्धों की कुल संख्या से अधिक हो जाती है। यह बढ़ता हुआ अनुपात देश के लिए उच्च बचत और अधिक निवेश के माध्यम से तेज आर्थिक विकास करने का एक सुनहरा अवसर प्रदान करता है।

159. (C) समाज में व्यापक अशांति और बेरोजगारी की समस्या में तीव्र वृद्धि।
यदि कार्यशील आयु की बढ़ती जनसंख्या को पर्याप्त और उत्पादक रोजगार नहीं मिलता है, तो जनसांख्यिकीय लाभांश के लाभ विपरीत परिणाम दे सकते हैं। बेरोजगार युवाओं में हताशा और आक्रोश बढ़ सकता है, जिससे समाज में अपराध और अशांति फैल सकती है। ऐसी स्थिति में, आर्थिक अवसर का यह संभावित लाभ राष्ट्र के लिए एक बड़ी सामाजिक और आर्थिक आपदा में भी बदल सकता है।

160. (A) देश की सीमाओं को प्रवासन के लिए बंद करना।
लाभांश को सफल बनाने के लिए मानव पूंजी में निवेश करना सबसे अनिवार्य कदम है। इसमें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना, स्वास्थ्य सेवाओं को सुलभ बनाना और युवाओं के कौशल को विकसित करना शामिल है। साथ ही, रोजगार के नए अवसर पैदा करने वाली आर्थिक नीतियां बनाना भी आवश्यक है। सीमाओं को बंद करना या प्रवासन पर प्रतिबंध लगाना इस लाभांश के प्रभावी उपयोग के लिए आवश्यक नहीं है।

161. (D) पुत्र-प्राप्ति की इच्छा और लिंग-चयनात्मक गर्भपात।
भारत में बाल लिंगानुपात में गिरावट के पीछे गहरी सामाजिक मान्यताएँ जिम्मेदार हैं। पुत्र को वंश चलाने वाला और आर्थिक सुरक्षा का आधार माना जाता है, जबकि कन्याओं को दहेज और

सामाजिक कारणों से बोझ समझा जाता है। इस मानसिकता के चलते लोग आधुनिक तकनीकों का सहारा लेकर भ्रूण की लिंग जांच और लिंग-चयनात्मक गर्भपात को बढ़ावा देते हैं, जिससे बालिकाओं की संख्या निरंतर कम होती है।

162. (B) इसने भ्रूण परीक्षण के माध्यम से लिंग-चयनात्मक गर्भपात को सुलभ बनाया है।
आधुनिक चिकित्सा तकनीकों, जैसे कि अल्ट्रासाउंड, का प्राथमिक उद्देश्य भ्रूण के स्वास्थ्य और विकारों की जांच करना था। परंतु, समाज में व्याप्त पुत्र-मोह के कारण इन तकनीकों का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग होने लगा। लोग जन्म से पहले ही लिंग का पता लगाकर कन्या भ्रूण को समाप्त करने लगे, जिससे प्राकृतिक लिंग अनुपात में गंभीर गिरावट आई और यह तकनीक समस्या का माध्यम बन गई।

163. (C) प्रसव-पूर्व निदान तकनीक (PC&PNDT) अधिनियम
लिंग-चयनात्मक गर्भपात की अनैतिक प्रथा को जड़ से खत्म करने के लिए भारत सरकार ने 1994 में प्रसव-पूर्व निदान तकनीक अधिनियम लागू किया। इस कानून का मुख्य उद्देश्य अल्ट्रासाउंड जैसी तकनीकों के माध्यम से लिंग परीक्षण को रोकना और उल्लंघन करने वालों को दंडित करना है। हालांकि, कड़े कानून के बावजूद सामाजिक मानसिकता और कार्यान्वयन की चुनौतियों के कारण यह समस्या आज भी समाज में विद्यमान है।

164. (D) गहरे लैंगिक पूर्वाग्रह और सामाजिक-सांस्कृतिक कारकों का संयुक्त परिणाम है।
बाल लिंगानुपात की समस्या केवल अशिक्षा या गरीबी से जुड़ी नहीं है, बल्कि यह संपन्न और शिक्षित वर्गों में भी देखी जाती है। यह दर्शाती है कि समाज में महिलाओं के प्रति भेदभाव की जड़ें बहुत गहरी हैं। यह समस्या आधुनिक तकनीक और पारंपरिक पुत्र-प्राप्ति की इच्छा के खतरनाक मेल का परिणाम है, जो स्पष्ट रूप से समाज में व्याप्त व्यापक लैंगिक पूर्वाग्रह की ओर संकेत करती है।

165. (A) साक्षरता दर में स्वतः सुधार।
बाल लिंगानुपात में कमी आने से भविष्य में विवाह योग्य महिलाओं की संख्या में भारी गिरावट आएगी, जिससे सामाजिक असंतुलन पैदा होगा। इसके परिणामस्वरूप महिलाओं के खिलाफ अपहरण और तस्करी जैसी हिंसा की घटनाओं में वृद्धि हो सकती है। हालांकि, इस जनसांख्यिकीय संकट का साक्षरता दर में सुधार से कोई सीधा या सकारात्मक संबंध नहीं है, क्योंकि साक्षरता पूरी तरह से शैक्षिक नीतियों पर निर्भर करती है।

166. (B) ग्रामीण अंचलों में स्थाई रोजगार के लाभकारी अवसरों की निरंतर होती कमी।
प्रवासन के संदर्भ में 'पुश' कारक वे परिस्थितियाँ होती हैं जो लोगों को अपना मूल स्थान छोड़ने के लिए मजबूर करती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि संकट, बढ़ती बेरोजगारी और संसाधनों की कमी ऐसे प्रमुख कारण हैं। जब लोगों को अपने गाँव में जीवन यापन के पर्याप्त अवसर नहीं मिलते, तो वे बेहतर भविष्य की तलाश में मजबूर होकर शहरों की ओर पलायन करने का निर्णय लेते हैं।

167. (B) पुरुष प्रवास के कारण खेती के कार्यों का मुख्य उत्तरदायित्व महिलाओं पर आ जाना।
जब ग्रामीण क्षेत्रों से युवा पुरुष बेहतर आय के लिए शहरों की ओर पलायन करते हैं, तो गाँवों में कृषि कार्य के लिए श्रम की कमी हो जाती है। ऐसी स्थिति में, खेती की देखभाल और प्रबंधन का पूरा भार घर की महिलाओं पर आ जाता है। इस बढ़ती भूमिका को ही 'कृषि का नारीकरण' कहा जाता है, जहाँ महिलाएँ अब प्राथमिक कृषक और मुख्य निर्णयकर्ता बन जाती हैं।

168. (A) शहरी आधारभूत ढाँचे और सार्वजनिक सेवाओं पर पड़ने वाला अत्यधिक दबाव।
ग्रामीण क्षेत्रों से बड़े पैमाने पर होने वाला प्रवासन शहरों की वहन क्षमता को प्रभावित करता है। अचानक बढ़ी आबादी के कारण आवास, पानी, बिजली और स्वच्छता जैसी बुनियादी सुविधाओं की भारी कमी हो जाती है। इसके परिणामस्वरूप शहरों में मलिन बस्तियों का विस्तार होता है और सार्वजनिक परिवहन एवं स्वास्थ्य सेवाओं पर अत्यधिक दबाव पड़ता है, जिससे शहरी नियोजन में कई नई चुनौतियाँ उत्पन्न होती हैं।

169. (C) यह ग्रामीण परिवारों की आय बढ़ाकर गरीबी निवारण में महत्वपूर्ण सहायता करता है।
प्रवासियों द्वारा अपने घर वापस भेजा गया धन ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए जीवनरेखा का कार्य करता है। यह आय परिवारों को बेहतर भोजन, शिक्षा और स्वास्थ्य सुविधाएँ प्राप्त करने में मदद करती है। प्रेषण के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में ऋणग्रस्तता कम होती है और यह स्थानीय उपभोग एवं छोटे निवेशों को बढ़ावा देकर गरीबी रेखा से नीचे रहने वाले लोगों के जीवन में सुधार करता है।

170. (D) प्रवासन एक जटिल प्रक्रिया है जिसके मूल और गंतव्य दोनों ही क्षेत्रों पर विविध प्रभाव पड़ते हैं।
प्रवासन केवल एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की सरल प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह एक बहुआयामी सामाजिक-आर्थिक घटना है। इसके प्रभाव स्रोत गाँवों और गंतव्य शहरों दोनों पर गहरे और भिन्न होते हैं। जहाँ यह गाँवों के लिए प्रेषण के रूप में आर्थिक लाभ लाता है, वहीं शहरों के लिए बुनियादी ढाँचे की चुनौतियाँ भी पैदा करता है। यह सकारात्मक और नकारात्मक परिणामों का मिश्रण है।

171. (C) लक्ष्य-केंद्रित और गर्भनिरोधक विधियों के व्यापक उपयोग पर आधारित दृष्टिकोण।
भारत के शुरुआती जनसंख्या नियंत्रण प्रयासों में मुख्य ध्यान जन्म दर को कम करने के लिए विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने पर था। इस दौरान सरकार ने नसबंदी और विभिन्न गर्भनिरोधक उपकरणों के वितरण को प्राथमिकता दी। यह एक 'टॉप-डाउन' मॉडल था, जिसमें लोगों के अधिकारों या व्यापक स्वास्थ्य के बजाय केवल सांख्यिकीय उद्देश्यों को पूरा करने के लिए जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित किया गया था।

172. (B) काहिरा जनसंख्या और विकास पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन, 1994

1994 में काहिरा में हुए सम्मेलन ने दुनिया भर में जनसंख्या नीतियों की दिशा बदल दी। इसने केवल जनसंख्या नियंत्रण के स्थान पर प्रजनन स्वास्थ्य और महिलाओं के अधिकारों पर जोर दिया। भारत ने भी इस आधुनिक दृष्टिकोण को अपनाते हुए अपनी नीतियों में बदलाव किया, जिससे जनसंख्या नियोजन का लक्ष्य केवल संख्या कम करना न रहकर नागरिकों के समग्र स्वास्थ्य और कल्याण में सुधार करना बन गया।

173. (D) एक आक्रामक और जबरन नसबंदी अभियान।

राष्ट्रीय आपातकाल के दौरान भारत का जनसंख्या कार्यक्रम अपनी चरम कठोरता पर पहुँच गया था। इस समय सरकार ने जनसंख्या नियंत्रण के लिए अनिवार्य और बलपूर्वक नसबंदी का मार्ग अपनाया। इस दंडात्मक दृष्टिकोण के कारण नागरिकों की व्यक्तिगत स्वतंत्रता का हनन हुआ और समाज में व्यापक असंतोष पैदा हुआ। इस कड़वे अनुभव ने भविष्य की नीतियों को अधिक स्वैच्छिक और कल्याणकारी बनाने के लिए प्रेरित किया।

174. (A) नसबंदी के लिए अनिवार्य कोटा।

राष्ट्रीय जनसंख्या नीति, 2000 ने पुराने दंडात्मक और कोटा-आधारित दृष्टिकोण को पूरी तरह त्याग दिया। इसके बजाय, यह नीति नागरिकों को स्वैच्छिक और सूचित विकल्प प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित करती है। इसका मुख्य लक्ष्य स्वास्थ्य सेवाओं के बुनियादी ढाँचे को मजबूत करना और शिशु एवं मातृ मृत्यु दर को कम करना है। यह नीति दमन के बजाय सेवा वितरण के माध्यम से लक्ष्य प्राप्त करना चाहती है।

175. (C) यह दंडात्मक नियंत्रण के स्थान पर अब व्यापक लोक-कल्याणकारी दृष्टिकोण की ओर विकसित हुई है।

भारत की जनसंख्या नीति एक लंबी विकास यात्रा से गुजरी है, जहाँ यह शुरुआत में केवल जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए दंडात्मक उपायों पर आधारित थी। समय के साथ, अनुभवों और वैश्विक बदलावों से सीखते हुए, यह अब एक अधिकार-आधारित दृष्टिकोण में बदल गई है। वर्तमान नीति महिलाओं के सशक्तीकरण, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के माध्यम से जनसंख्या स्थिरीकरण के व्यापक लक्ष्यों को प्राप्त करने पर केंद्रित है।

अध्याय 03
सामाजिक संस्थाएँ : निरंतरता एवं परिवर्तन

1. अंग्रेजी शब्द 'कास्ट' (caste) की उत्पत्ति पुर्तगाली मूल के किस शब्द से हुई है, जिसका अर्थ 'विशुद्ध नस्ल' है?
(A) कास्टो
(B) कास्टा
(C) कास्टिया
(D) कास्टम

2. भारतीय भाषाओं में जाति संस्था के संदर्भ में किन दो विभिन्न शब्दों का प्रयोग किया जाता है?
(A) वर्ण और जाति
(B) कुल और गोत्र
(C) धर्म और संप्रदाय
(D) वंश और नस्ल

3. समाज के चार श्रेणियों - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र - में विभाजन को क्या कहा जाता है?
(A) जाति
(B) गोत्र
(C) वर्ण
(D) कुल

4. निम्नलिखित में से कौन सा समूह वर्ण व्यवस्था के चार श्रेणियों के विभाजन में शामिल नहीं था और जिसे कभी-कभी 'पंचम' श्रेणी कहा जाता था?
(A) केवल विदेशी और दास
(B) केवल युद्धों में पराजित लोग
(C) केवल 'जाति बहिष्कृत' लोग
(D) उपरोक्त सभी

5. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वर्ण को एक अखिल भारतीय सामूहिक वर्गीकरण के रूप में समझा जा सकता है।
2. जाति को एक क्षेत्रीय या स्थानीय उप-वर्गीकरण के रूप में समझा जा सकता है।

उपरोक्त कथनों के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा सही है?
(A) कथन 1 सही है, किन्तु कथन 2 गलत है।
(B) कथन 1 गलत है, किन्तु कथन 2 सही है।
(C) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
(D) कथन 1 और कथन 2 दोनों गलत हैं।

6. जाति व्यवस्था की उत्पत्ति का सुनिश्चित काल लगभग कितना पुराना माना जाता है?
(A) एक हजार साल
(B) तीन हजार साल
(C) दो हजार साल
(D) पाँच हजार साल

7. उत्तर-वैदिक काल में जाति व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) यह एक कठोर संस्था बन गई।
(B) यह जन्म से निर्धारित होने लगी।
(C) इसे प्रसिद्ध परिभाषाओं द्वारा पहचाना जाने लगा।
(D) वर्गों के बीच स्थान परिवर्तन संभव और सामान्य था।

8. निम्नलिखित मदों का मिलान कीजिए:
सूची I: (जाति की विशेषता)
P. जन्म से निर्धारण
Q. सजातीय विवाह
R. खंडात्मक संगठन
S. वंशानुगत व्यवसाय

सूची II: (विवरण)
1. विवाह समूह के सदस्यों में ही हो सकते हैं।
2. एक बच्चा अपने माता-पिता की जाति में ही जन्म लेता है।
3. एक जाति में जन्म लेने वाला व्यक्ति उसी जाति से जुड़े व्यवसाय को अपनाता था।
4. जातियों में हमेशा उप-जातियाँ होती हैं।

कोड:
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

9. जाति की सदस्यता के संबंध में कौन सा कथन सही है?
(A) व्यक्ति अपनी जाति का चुनाव कर सकता है।
(B) व्यक्ति अपनी जाति को आसानी से बदल सकता.
(C) जाति कभी चुनाव का विषय नहीं होती।
(D) व्यक्ति किसी भी जाति में शामिल होने का चुनाव कर सकता है।

10. केरल में निम्न जातियों एवं दलितों के नेता कौन थे, जिनके प्रयासों से दलितों को सार्वजनिक सड़कों पर चलने की आजादी मिली?
(A) अयन्कली
(B) श्री नारायण गुरु

(C) पेरियार ई.वी. रामास्वामी नायकर
(D) जोतिराव फुले

11. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): जाति समूह 'सजातीय' होते हैं।
कारण (R): जाति व्यवस्था में विवाह अपनी जाति के समूह के सदस्यों के बीच ही हो सकते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

12. जाति व्यवस्था में "खंडात्मक संगठन" (segmental organisation) का क्या तात्पर्य है?
(A) जातियों का उनके पारंपरिक आर्थिक व्यवसायों के आधार पर स्पष्ट विभाजन।
(B) जातियों का उप-जातियों और उप-उप-जातियों में आंतरिक विभाजन।
(C) जातियों का एक निश्चित रैखिक एवं श्रेणीबद्ध क्रम में व्यवस्थित होना।
(D) विभिन्न जातीय समूहों के बीच आपसी आर्थिक प्रतिस्पर्धा का पूर्ण अभाव।

13. जाति व्यवस्था में पारंपरिक रूप से व्यवसायों की क्या प्रकृति थी?
(A) वे पूर्णतः व्यक्तिगत रुचि और कौशल के चयन पर आधारित थे।
(B) वे औपचारिक शिक्षा और अर्जित ज्ञान के स्तर पर आधारित थे।
(C) वे जन्म आधारित, वंशानुगत तथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित थे।
(D) वे सरकारी नीतियों के अनुसार हर दस वर्ष की अवधि में बदलते थे।

14. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. जाति व्यवस्था को सिद्धांतों के दो समुच्चयों के मिश्रण के रूप में समझा जा सकता है।
2. एक सिद्धांत भिन्नता और अलगाव पर आधारित है।
3. दूसरा सिद्धांत संपूर्णता और अधिक्रम पर आधारित है।
4. प्रत्येक जाति से दूसरी जाति से भिन्न रहने की अपेक्षा की जाती है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

15. जोतिराव गोविन्दराव फुले ने 1873 में किस समाज की स्थापना की थी?
(A) सत्यशोधक समाज
(B) ब्रह्म समाज
(C) आर्य समाज
(D) प्रार्थना समाज

16. जाति की अधिक्रमित व्यवस्था धार्मिक या कर्मकांडीय दृष्टि से किस अवधारणा पर आधारित है?
(A) आर्थिक शक्ति और सैन्य शक्ति
(B) 'शुद्धता' और 'अशुद्धता'
(C) शिक्षा और ज्ञान
(D) राजनीतिक प्रभुत्व

17. जाति व्यवस्था में जातियों का एक-दूसरे की सहयोगी होने और उनमें प्रतिस्पर्धा न होने का क्या कारण था?
(A) जातियों के बीच कोई अंतःक्रिया नहीं थी।
(B) प्रत्येक जाति का व्यवस्था में स्थान तय था।
(C) सभी जातियों की आर्थिक स्थिति समान थी।
(D) सभी जातियाँ समान व्यवसायों में लगी हुई थीं।

18. औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश प्रशासकों ने जाति व्यवस्था की जटिलताओं को समझने का प्रयत्न क्यों शुरु किया?
(A) देश पर अधिक कुशलतापूर्वक शासन करने की युक्ति सीखने हेतु।
(B) भारतीय सामाजिक कुरीतियों में व्यापक स्तर पर सुधार करने हेतु।
(C) देश से पुरानी जाति व्यवस्था को पूर्णतः समाप्त करने हेतु।
(D) पारंपरिक भारतीय संस्कृति और मूल्यों को वैश्विक बढ़ावा देने हेतु।

19. भारत में जनगणना का कार्य सर्वप्रथम किस दशक में प्रारंभ किया गया था?
(A) 1850 के दशक में
(B) 1880 के दशक में
(C) 1860 के दशक में
(D) 1901 के दशक में

20. भारत में ब्रिटिश सरकार द्वारा नियमित रूप से हर दस वर्ष बाद जनगणना कब से कराई जाने लगी?
(A) 1861 से
(B) 1871 से
(C) 1901 से
(D) 1881 से

21. किस समाज सुधारक ने अपना पूरा जीवन शूद्रों और अति शूद्रों को शिक्षा अर्पण करने में लगा दिया और प्लेग से पीड़ित मरीज़ों की देखभाल के दौरान उनकी मृत्यु हुई?
(A) जोतिराव फुले
(B) पेरियार

(C) सावित्री बाई फुले
(D) अयन्कली

22. 1901 की जनगणना किसके निर्देशन में कराई गई थी, जो जाति के सामाजिक अधिक्रम की जानकारी इकट्ठी करने के लिए महत्त्वपूर्ण थी?
(A) लॉर्ड कर्जन
(B) हरबर्ट रिजले
(C) विलियम हंटर
(D) लॉर्ड मैकाले

23. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): औपनिवेशिक काल में जातीय गणना और जातियों की प्रस्थिति के आधिकारिक अभिलेखन ने जाति संस्था के स्वरूप को बदल दिया।
कारण (R): इससे पहले जातियों की पहचान अपेक्षाकृत अधिक अस्थिर तथा कम कठोर थी, लेकिन गणना के बाद जाति का एक नया जीवन प्रारंभ हो गया।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

24. किस अधिनियम के तहत 'अनुसूचित जनजातियाँ' और 'अनुसूचित जातियाँ' शब्द अस्तित्व में आए?
(A) 1935 का भारत सरकार अधिनियम
(B) 1919 का भारत सरकार अधिनियम
(C) 1947 का भारतीय स्वतंत्रता अधिनियम
(D) 1909 का मॉर्ले-मिंटो सुधार

25. 'अनुसूचित जातियों' की श्रेणी में किन जातियों को शामिल किया गया?
(A) सामाजिक-जातीय अधिक्रम में सबसे ऊपर स्थित प्रभुत्वशाली जातियाँ
(B) सामाजिक-जातीय अधिक्रम में बीच के स्तर पर आने वाली कृषक जातियाँ
(C) जातीय अधिक्रम के निचले स्तर पर स्थित भेदभाव की शिकार जातियाँ
(D) केवल वे जनजातीय जातियाँ जो प्राचीन काल के युद्धों में पराजित हुई थीं

26. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सावित्री बाई फुले देश में बालिकाओं के लिए बने पहले विद्यालय की पहली प्रधान अध्यापिका थीं।
2. उन्होंने किसानों और मज़दूरों के लिए रात्रि विद्यालयों की शुरुआत की।
3. उन्होंने पुणे में विद्यालय स्थापित किया था।
4. उन्होंने अपना जीवन केवल उच्च जाति की महिलाओं की शिक्षा के लिए समर्पित किया।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

27. दक्षिण भारत में निम्न जाति आंदोलन के नेता के रूप में कौन जाने जाते हैं, जिन्होंने लोगों को स्वतंत्रता और समानता के लिए उद्बोधित किया?
(A) श्री नारायण गुरु
(B) अयन्कली
(C) पेरियार (ई. वी. रामास्वामी नायकर)
(D) बाबा साहेब अंबेडकर

28. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में 'दलित वर्गों' को संगठित करने के प्रयत्न में शामिल पश्चिमी भारत के प्रमुख नेता कौन थे?
(A) महात्मा गांधी और पेरियार
(B) महात्मा जोतिबा फुले और बाबा साहेब अंबेडकर
(C) श्री नारायण गुरु और अयन्कली
(D) हरबर्ट रिजले और लॉर्ड कर्जन

29. महात्मा गांधी और बाबा साहेब अंबेडकर दोनों ने किस दशक से अस्पृश्यता के विरुद्ध अपने विरोधांदोलन शुरू कर दिए थे?
(A) 1910 के दशक से
(B) 1930 के दशक से
(C) 1920 के दशक से
(D) 1940 के दशक से

30. स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राज्य का जाति प्रथा के प्रति कैसा दृष्टिकोण था?
(A) राज्य जाति प्रथा के उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध था, जैसा कि संविधान में उल्लेखित है।
(B) राज्य जाति आधारित असमानता के आर्थिक आधार को दुर्बल बनाने में अनिच्छुक था।
(C) राज्य ने यह माना कि जाति प्रथा की ओर आँखें बंद करने से वह स्वतः ही समाप्त हो जाएगी।
(D) उपरोक्त सभी।
(A) राज्य जाति प्रथा के उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध था, जैसा कि संविधान में उल्लेखित है।
(B) राज्य जाति आधारित असमानता के आर्थिक आधार को दुर्बल बनाने में अनिच्छुक था।
(C) राज्य ने यह माना कि जाति प्रथा की ओर आँखें बंद करने से वह स्वतः ही समाप्त हो जाएगी।
(D) उपरोक्त सभी।

31. केरल में किसने 'सबके लिए एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर' का नारा दिया?
(A) श्री नारायण गुरु
(B) अयन्कली
(C) पेरियार

(D) जोतिबा फुले

32. स्वातंत्र्योत्तर भारत में सरकारी पदों पर नियुक्तियों के मामले में जाति के संबंध में क्या नीति अपनाई गई?
(A) केवल उच्च जातियों को प्राथमिकता दी गई।
(B) जाति का कोई ध्यान नहीं रखा जाता था, सिवाय अनुसूचित जातियों/जनजातियों के आरक्षण के।
(C) केवल निम्न जातियों को ही नियुक्त किया जाता था।
(D) सभी नियुक्तियाँ जाति के आधार पर ही होती थीं।

33. निम्नलिखित घटनाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. सत्यशोधक समाज की स्थापना।
2. 1935 का भारत सरकार अधिनियम पारित होना।
3. भारत में नियमित दशकीय जनगणना की शुरुआत।
4. अस्पृश्यता के विरुद्ध गांधी और अंबेडकर के आंदोलन की शुरुआत।
(A) 1, 3, 4, 2
(B) 3, 1, 4, 2
(C) 1, 4, 3, 2
(D) 4, 1, 2, 3

34. आधुनिक उद्योगों और नगरीकरण ने जाति व्यवस्था को किस प्रकार प्रभावित किया?
(A) इसने नए रोजगार के अवसर पैदा किए जिनके लिए कोई जातीय नियम नहीं थे।
(B) जाति व्यवस्था और मजबूत हो गई।
(C) नगरीकरण ने जाति-पृथक्कृत स्वरूपों को बढ़ावा दिया।
(D) औद्योगिक नौकरियों में भर्ती केवल योग्यता के आधार पर होती थी।

35. औद्योगिक नौकरियों में भर्ती, जैसे मुंबई की कपड़ा मिलों या कोलकाता की जूट मिलों में, अक्सर किस आधार पर होती थी?
(A) केवल योग्यता और शिक्षा के आधार पर।
(B) केवल ब्रिटिश अधिकारियों की सिफारिश पर।
(C) जाति और नातेदारी के आधार पर।
(D) लॉटरी प्रणाली के आधार पर।

36. निम्नलिखित मदों का मिलान कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. संस्कृतीकरण
Q. प्रबल-जाति
R. होमो हेरारकिकस
S. सत्यशोधक समाज
सूची II: (समाजशास्त्री)
1. जोतिराव फुले
2. लुई ड्यूमो
3. एम. एन. श्रीनिवास
4. एम. एन. श्रीनिवास
कोड:
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

37. एम. एन. श्रीनिवास द्वारा दी गई 'संस्कृतिकरण' की परिभाषा क्या है?
(A) यह एक आधुनिक प्रक्रिया है जिसमें निम्न जातियाँ पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाती हैं।
(B) यह एक सरकारी प्रक्रिया है जिसके माध्यम से जातियों के बीच सामाजिक समानता लाई जाती है।
(C) यह प्रक्रिया है जिसमें निम्न जातियाँ उच्च जातियों के कर्मकांडों का अनुकरण करती हैं।
(D) यह एक आर्थिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा जातियाँ अपने पुराने व्यवसाय छोड़ देती हैं।

38. 'प्रबल जाति' शब्द का प्रयोग किन जातियों के लिए किया जाता है?
(A) वे अल्पसंख्याक जातियाँ जिनकी जनसंख्या कम है परंतु वे आर्थिक रूप से बहुत धनी हैं।
(B) वे सघन जनसंख्या वाली जातियाँ जिन्हें भूमि सुधारों से भू-स्वामित्व के अधिकार मिले।
(C) वे उच्चतर जातियाँ जो धार्मिक और कर्मकांड की दृष्टि से समाज में सर्वोच्च स्थान रखती हैं।
(D) वे शिक्षित जातियाँ जो नगरीय क्षेत्रों में रहती हैं और आधुनिक व्यावसायिक क्षेत्रों में सक्रिय हैं।

39. निम्नलिखित में से कौन सी जाति 'प्रबल जाति' का उदाहरण नहीं है?
(A) बिहार और उत्तर प्रदेश के यादव
(B) कर्नाटक के वोक्कलिंग
(C) महाराष्ट्र के मराठे
(D) बंगाल के ब्राह्मण

40. समकालीन दौर में किन समूहों के लिए जाति व्यवस्था 'अदृश्य' होती जा रही है?
(A) उच्च जातियों, नगरीय मध्यम और उच्च वर्गों के लिए
(B) ग्रामीण गरीब और खेतिहर मजदूर
(C) अनुसूचित जातियाँ और जनजातियाँ
(D) सभी भारतीय नागरिकों के लिए

41. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): स्वातंत्र्योत्तर काल की विकासात्मक नीतियों से सर्वाधिक लाभान्वित समूहों के लिए जातीयता का महत्त्व कम हो गया है।
कारण (R): इन समूहों की जातीय प्रस्थिति ने उन्हें तीव्र विकास द्वारा प्रदत्त अवसरों का लाभ उठाने के लिए आवश्यक आर्थिक तथा शैक्षिक संसाधन उपलब्ध कराने में निर्णायक भूमिका निभाई।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही

व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

42. अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए जाति क्यों 'अधिक दिखने वाली' हो गई है?
(A) क्योंकि जातीय पहचान उनकी सामूहिक परिसंपत्तियों में से एक है और वे भेदभाव के शिकार हैं।
(B) क्योंकि उन्हें विरासत में शैक्षिक और सामाजिक पूँजी मिली है।
(C) क्योंकि उन्हें उच्च जाति समूहों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं करनी पड़ती।
(D) क्योंकि उन्होंने आधुनिक शिक्षा और व्यवसायों को पूरी तरह से अस्वीकार कर दिया है।

43. 'द रिमेम्बरड विलेज' नामक पुस्तक किसकी कृति है, जिसे सामाजिक मानवविज्ञान में गाँवों पर किए गए सर्वश्रेष्ठ अध्ययनों में से एक माना जाता है?
(A) लुई ड्यूमो
(B) आंद्रे बेते
(C) दीपांकर गुप्ता
(D) एम. एन. श्रीनिवास

44. निम्नलिखित में से कौन सी एक 'जनजाति' की नकारात्मक परिभाषा के अनुसार विशेषता नहीं है?
(A) वे किसी लिखित धर्मग्रंथ के अनुसार धर्म का पालन नहीं करते।
(B) उनके समुदाय कठोर रूप से वर्गों में बँटे हुए थे।
(C) उनका कोई सामान्य प्रकार का राज्य या राजनीतिक संगठन नहीं था।
(D) वे उप-महाद्वीप के सबसे पुराने निवासी माने जाते हैं।

45. जनजातियों को उनके 'स्थायी' लक्षणों के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। निम्नलिखित में से कौन सा एक स्थायी लक्षण नहीं है?
(A) क्षेत्र
(B) भाषा
(C) आजीविका का साधन
(D) शारीरिक विशिष्टताएँ

46. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत की जनजातीय जनसंख्या का लगभग 85% भाग 'मध्य भारत' में रहता है।
2. जनजातीय जनसंख्या के शेष 15% में से 11% से अधिक पूर्वोत्तर राज्यों में रहते हैं।
3. पूर्वोत्तर राज्यों में, असम को छोड़कर, जनजातीय घनत्व 30% से अधिक है।
4. अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम और नागालैंड में जनजातीय आबादी 60% से अधिक है।
5. देश के शेष भागों में उड़ीसा और मध्य प्रदेश को छोड़कर जनजातीय जनसंख्या 12% से कम है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5 सभी

47. भाषा की दृष्टि से जनजातियों को कितनी श्रेणियों में विभाजित किया गया है?
(A) चार
(B) दो
(C) तीन
(D) पाँच

48. जनजातियों द्वारा बोली जाने वाली भाषाओं के संबंध में कौन सा कथन गलत है?
(A) लगभग 1% जनजातियाँ भारतीय-आर्य परिवार की भाषाएँ बोलती हैं।
(B) आस्ट्रिक और तिब्बती-बर्मी भाषा समूह केवल जनजातीय लोगों द्वारा ही बोले जाते हैं।
(C) लगभग 3% जनजातियाँ द्रविड़ परिवार की भाषाएँ बोलती हैं।
(D) आस्ट्रिक परिवार की भाषाएँ पूर्ण रूप से जनजातीय लोगों द्वारा बोली जाती हैं।

49. जनसंख्या के आकार की दृष्टि से सबसे बड़ी जनजातियों (जैसे गोंड, भील, संथाल) की जनसंख्या कितनी है?
(A) कम-से-कम एक लाख
(B) कम-से-कम दस लाख
(C) कम-से-कम पचास लाख
(D) कम-से-कम एक करोड़

50. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की कुल जनसंख्या में जनजातियों का प्रतिशत कितना है?
(A) 8.6%
(B) 8.2%
(C) 9.1%
(D) 7.8%

51. निम्नलिखित मदों का मिलान कीजिए:
सूची I: (शारीरिक-प्रजातीय श्रेणी)
P. नीग्रिटो, आस्ट्रैलॉइड, मंगोलॉइड
Q. द्रविड़ और आर्य
R. आस्ट्रिक
S. तिब्बती-बर्मी

सूची II: (जनसंख्या समूह)
1. जनजातीय और गैर-जनजातीय दोनों
2. केवल जनजातीय
3. मुख्य रूप से जनजातीय भाषा समूह
4. पूर्ण रूप से जनजातीय भाषा समूह

कोड:
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-3, Q-2, R-1, S-4

52. जनजातियों के वर्गीकरण में 'अर्जित लक्षणों' का आधार क्या है?
(A) केवल आजीविका के साधन
(B) केवल हिंदू समाज में उनके समावेश की सीमा
(C) केवल उनकी शारीरिक विशेषताएँ
(D) आजीविका के साधन और हिंदू समाज में समावेश की सीमा, दोनों

53. आजीविका के आधार पर जनजातियों का वर्गीकरण करते समय निम्नलिखित में से कौन सी श्रेणी शामिल नहीं है?
(A) मछुआ, खाद्य संग्राहक और आखेटक
(B) झूम खेती करने वाले और कृषक
(C) सरकारी अधिकारी और राजनेता
(D) बागान तथा औद्योगिक कामगार

54. 1960 के दशक में विद्वानों के बीच जनजाति और जाति आधारित कृषक समाज के संबंध में क्या वाद-विवाद था?
(A) क्या जनजातियाँ कृषक समाज का विस्तार हैं या एक भिन्न समुदाय हैं।
(B) क्या जनजातियों को आरक्षण दिया जाना चाहिए।
(C) क्या जनजातियों को शहरों में बसना चाहिए।
(D) क्या जनजातियों को अपनी भाषा छोड़ देनी चाहिए।

55. उन विद्वानों का क्या तर्क था जो मानते थे कि जनजातियाँ जाति आधारित समाज से मौलिक रूप से भिन्न नहीं हैं?
(A) उनमें स्तरीकरण बहुत कम हुआ है।
(B) उनमें संसाधनों का स्वामित्व समुदाय आधारित अधिक है।
(C) उनमें शुद्धता और अशुद्धता का भाव नहीं है।
(D) (A) और (B) दोनों।

56. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): कुछ विद्वानों के अनुसार, जनजातियाँ जातियों से पूरी तरह भिन्न होती हैं।
कारण (R): जनजातियों में धार्मिक या कर्मकांडीय दृष्टि से शुद्धता और अशुद्धता का भाव नहीं होता, जो कि जाति व्यवस्था का केंद्र-बिंदु है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

57. निम्नलिखित में से कौन सी 'जनजाति' एक शिकारी-संग्राहक जनजाति का उदाहरण है?
(A) संथाल
(B) गोंड
(C) बिहार की बिरहोर
(D) मुंडा

58. भारतीय इतिहास में जनजातीय समूहों को हिंदू समाज के जातीय अधिक्रम में आत्मसात् करने के पीछे क्या कारण थे?
(A) ज़मीनों पर बस्तियाँ बसा दी गईं।
(B) जंगलों का सफाया कर दिया गया।
(C) (A) और (B) दोनों।
(D) जनजातियों ने स्वेच्छा से हिंदू धर्म अपना लिया।

59. कुछ विद्वानों के अनुसार जनजातियों को 'द्वितीयक प्रघटना' क्यों माना जाना चाहिए?
(A) क्योंकि वे हमेशा से अलग-थलग रहे हैं।
(B) क्योंकि वे सभ्यता से अछूते रहे हैं।
(C) क्योंकि वे आधुनिक समाज का हिस्सा नहीं बनना चाहते।
(D) क्योंकि वे पहले से विद्यमान राज्यों और राज्येतर समूहों के बीच शोषणात्मक संपर्क के परिणामस्वरुप अस्तित्व में आए।

60. मध्य भारत में पाए जाने वाले गोंड राज्यों के उदाहरण क्या हैं?
(A) विजयनगर या बहमनी
(B) गढ़ मांडला या चाँदा
(C) मगध या कोसल
(D) अवंती या वत्स

61. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. आदिवासी लोग सदा इतने पीड़ित समूह नहीं थे जितने वे आज हैं।
2. मध्य भारत में अनेक गोंड राज्य रहे हैं।
3. राजपूत राज्यों में से अनेक रजवाड़े आदिवासी समुदायों में स्तरीकरण से उत्पन्न हुए।
4. आदिवासी लोग हमेशा मैदानी इलाकों के लोगों पर निर्भर रहे हैं।
5. आदिवासी लोग वन्य उत्पाद, नमक और हाथी का व्यापार करते थे।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 4
(B) केवल 5
(C) केवल 1 और 2
(D) केवल 3 और 4

62. राष्ट्रीय विकास के नाम पर जनजातीय लोगों को अनुपात से बहुत अधिक कीमत क्यों चुकानी पड़ी?
(A) क्योंकि वे विकास परियोजनाओं में भाग नहीं लेना चाहते थे।
(B) क्योंकि उन्होंने अपनी ज़मीनें स्वेच्छा से दे दीं।
(C) क्योंकि वे शहरी क्षेत्रों में स्थानांतरित होना चाहते थे।

(D) क्योंकि जनजातीय इलाके देश के खनिज-संपन्न और वनाच्छादित भागों में स्थित थे।

63. वनों पर निजी मालिकाना हक दिए जाने से जनजातीय लोगों पर प्रतिकूल प्रभाव क्यों पड़ा?
(A) क्योंकि उनके यहाँ समुदाय आधारित सामूहिक स्वामित्व की प्रथा थी।
(B) क्योंकि वे वनों की कटाई करना चाहते थे।
(C) क्योंकि वे अपनी ज़मीन बेचना चाहते थे।
(D) क्योंकि वे निजी संपत्ति के पक्ष में थे।

64. झारखंड के औद्योगिक इलाकों में विकास का क्या नकारात्मक प्रभाव पड़ा?
(A) वहाँ कोई औद्योगिक विकास नहीं हुआ।
(B) वहाँ की जनसंख्या में जनजातीय अनुपात कम हो गया।
(C) जनजातीय संस्कृति और मजबूत हो गई।
(D) जनजातीय लोगों को सभी लाभ मिले।

65. किस पूर्वोत्तर राज्य की जनसंख्या में जनजातीय लोगों का अनुपात एक ही दशक में घटकर आधा रह गया?
(A) असम
(B) त्रिपुरा
(C) मणिपुर
(D) नागालैंड

66. निम्नलिखित घटनाओं को उनके सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. भारत में जनगणना की शुरुआत।
2. हरबर्ट रिजले के निर्देशन में जनगणना।
3. भारत सरकार अधिनियम 1935 का पारित होना।
4. झारखंड और छत्तीसगढ़ को अलग राज्य का दर्जा मिलना।

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 3, 1, 2, 4

67. आज अनेक जनजातीय पहचानें किस विचार पर अपना ध्यान केंद्रित कर रही हैं?
(A) गैर-जनजातीय जगत के साथ पूर्ण एकीकरण।
(B) अपनी पारंपरिक जीवन शैली को पूरी तरह से छोड़ना।
(C) गैर-जनजातीय जगत की दुर्दमनीय शक्ति का प्रतिरोध एवं विरोध करना।
(D) पश्चिमी संस्कृति को पूरी तरह अपनाना।

68. जनजातीय समुदायों में शनैः-शनैः किस नए वर्ग का उद्भव हो रहा है?
(A) एक अशिक्षित श्रमिक वर्ग
(B) एक पारंपरिक पुजारी वर्ग
(C) एक सैन्य अभिजात वर्ग
(D) एक शिक्षित मध्य वर्ग

69. जनजातीय आंदोलनों को तूल देने वाले दो प्रमुख प्रकार के मुद्दे कौन से हैं?
(A) शहरी रोजगार और राजनीतिक प्रतिनिधित्व।
(B) धार्मिक रूपांतरण और भाषा का संरक्षण।
(C) भूमि और वन पर नियंत्रण, तथा नृजातीय-सांस्कृतिक पहचान।
(D) अंतर्राष्ट्रीय प्रवासन और विदेशी सहायता।

70. निम्नलिखित मदों का मिलान कीजिए:
सूची I: (राज्य)
P. बिहार और उत्तर प्रदेश
Q. कर्नाटक
R. महाराष्ट्र
S. गुजरात
सूची II: (प्रबल जाति/जनजाति)
1. वोक्कलिंग
2. यादव
3. पाटीदार
4. मराठे
कोड:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

71. परिवार की संरचना का अध्ययन किन दो रूपों में किया जा सकता है?
(A) केवल एक सामाजिक संस्था के रूप में
(B) केवल समाज की अन्य संस्थाओं से उसके संबंध के रूप में
(C) केवल एक आर्थिक इकाई के रूप में
(D) एक सामाजिक संस्था के रूप में और समाज की अन्य संस्थाओं से उसके संबंध के रूप में

72. परिवार को वंशानुक्रम की दृष्टि से किन दो प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है?
(A) मातृवंशीय और पितृवंशीय
(B) एकल और संयुक्त
(C) मूल और विस्तृत
(D) पत्नी-स्थानिक और पति-स्थानिक

73. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): परिवार की संरचना या उसके गठन में परिवर्तन हो सकता है।
कारण (R): इन परिवर्तनों को समाज में होने वाले अन्य परिवर्तनों जैसे राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि के संदर्भ में समझा जा सकता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही

व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

74. मूल परिवार (nuclear family) में सामान्यतः कौन शामिल होते हैं?
(A) केवल माता-पिता (दंपति) और उनके बच्चे
(B) माता-पिता, बच्चे, दादा-दादी और चाचा-चाची
(C) एक ही वंश के कई भाई और उनके परिवार
(D) तीन या अधिक पीढ़ियों के लोग

75. विस्तृत परिवार, जिसे 'संयुक्त परिवार' भी कहा जाता है, की मुख्य विशेषता क्या है?
(A) इसमें केवल एक दंपति होता है।
(B) यह हमेशा मातृवंशीय होता है।
(C) यह भारतीय समाज का सबसे आम पारिवारिक रुप है।
(D) इसमें एक से अधिक युगल (दंपति) होते हैं और अक्सर दो से अधिक पीढ़ियों के लोग एकसाथ रहते हैं।

76. आई.पी. देसाई के अनुसार, अंग्रेजी का 'ज्वाइंट फैमिली' शब्द के बारे में क्या रुचिकर है?
(A) यह एक प्राचीन भारतीय शब्द का अनुवाद है।
(B) यह किसी भी भारतीय शब्द का अनुवाद नहीं है, बल्कि भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्द इसी का अनुवादित पर्याय है।
(C) इसका प्रयोग केवल ब्रिटिश समाजशास्त्रियों द्वारा किया गया था।
(D) यह मूल परिवार को संदर्भित करता है।

77. आवास के नियम के आधार पर, 'पत्नी-स्थानिक' (matrilocal) समाज में नवविवाहित जोड़ा कहाँ रहता है?
(A) वर के माता-पिता के साथ
(B) वे एक नया घर बनाते हैं
(C) वधू के माता-पिता के साथ
(D) वर के चाचा के साथ

78. उत्तराधिकार के नियम के अनुसार, मातृवंशीय समाज में जायदाद किसे मिलती है?
(A) पिता से पुत्र को
(B) माँ से पुत्र को
(C) पिता से बेटी को
(D) माँ से बेटी को

79. पितृतंत्रात्मक परिवार संरचना की क्या विशेषता है?
(A) पुरुषों की सत्ता व प्रभुत्व
(B) स्त्रियों की सत्ता व प्रभुत्व
(C) सत्ता का समान वितरण
(D) बच्चों द्वारा निर्णय लेना

80. मातृतंत्र और मातृवंश के बीच क्या मुख्य अंतर है?
(A) मातृवंश एक सैद्धांतिक कल्पना है, जबकि मातृतंत्रात्मक समाज वास्तव में पाए जाते हैं।
(B) मातृतंत्र एक सैद्धांतिक कल्पना है जिसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है, जबकि मातृवंशीय समाज वास्तव में पाए जाते हैं।
(C) दोनों शब्द एक ही अवधारणा को संदर्भित करते हैं।
(D) मातृतंत्र में पुरुषों का प्रभुत्व होता है और मातृवंश में महिलाओं का।

81. मातृवंशीय समाज के संबंध में कौन सा कथन सत्य है?
(A) स्त्रियाँ अपनी माताओं से उत्तराधिकार में जायदाद पाती हैं और उन पर उनका पूर्ण स्वामित्व होता है।
(B) स्त्रियाँ माताओं से जायदाद पाती हैं पर उन पर पुरुषों का नियंत्रण और निर्णय अधिकार होता है।
(C) स्त्रियाँ समाज में पूर्णतः प्रभुत्वशाली होती हैं और सभी सार्वजनिक क्षेत्रों में निर्णय लेती हैं।
(D) यह समाज केवल समाजशास्त्रीय कल्पनाओं में विद्यमान हैं और वास्तविक जगत में कहीं नहीं पाए जाते।

82. निम्नलिखित में से कौन जाति की एक विशेषता है जिसके अनुसार विवाह समूह के सदस्यों में ही हो सकते हैं?
(A) सजातीयता
(B) बहिर्विवाह
(C) खंडात्मक संगठन
(D) अधिक्रम

83. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. जाति व्यवस्था में, हर व्यक्ति की एक जाति होती है।
2. हर जाति का सभी जातियों के अधिक्रम में एक निर्धारित स्थान होता है।
3. अनेक जातियों की अधिक्रमित स्थिति एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में बदल सकती है।
4. अधिक्रम की व्यवस्था हमेशा हर क्षेत्र में समान रूप से पाई जाती है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

84. 'जाति' शब्द का प्रयोग भारतीय भाषाओं में सामान्यतः किसके संदर्भ में किया जाता है?
(A) केवल अचेतन वस्तुओं के प्रकार
(B) केवल जीव-जंतुओं के वंश
(C) राजनीतिक दलों के वर्गीकरण
(D) जाति संस्था के संदर्भ में

85. वैदिक काल (900-500 ई. पू.) में जाति व्यवस्था का स्वरुप क्या था?
(A) यह एक कठोर और जन्म-आधारित व्यवस्था थी।
(B) इसमें वर्गों के बीच स्थान परिवर्तन असंभव था।
(C) यह वास्तव में वर्ण व्यवस्था ही थी जिसके केवल चार

विभाजन थे।
(D) यह व्यवसाय पर आधारित नहीं थी।

86. औपनिवेशिक शासन के बाद के काल को क्या कहा जाता है?
(A) औपनिवेशिक काल
(B) स्वातंत्र्योत्तर या उत्तर-औपनिवेशिक काल
(C) पूर्व-औपनिवेशिक काल
(D) मध्य काल

87. भारत में जाति व्यवस्था के प्रचलन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सबसे उपयुक्त है?
(A) यह केवल हिंदू समाज तक सीमित है।
(B) यह केवल मुसलमानों और ईसाइयों में पाई जाती है।
(C) भारतीय उपमहाद्वीप में इसका कोई अस्तित्व नहीं है।
(D) यह हिंदू समाज की संस्थात्मक विशेषता है पर इसका प्रचलन अन्य धार्मिक समुदायों में भी फैला है।

88. निम्नलिखित में से किस समाज सुधारक का जन्म केरल में नहीं हुआ था?
(A) जोतिराव फुले
(B) अयन्कली
(C) श्री नारायण गुरु
(D) पेरियार (ई. वी. रामास्वामी नायकर)

89. निम्नलिखित मदों का मिलान कीजिए:
सूची I: (सुधारक)
P. जोतिराव फुले
Q. पेरियार
R. अयन्कली
S. श्री नारायण गुरु
सूची II: (जन्म/कार्य क्षेत्र)
1. केरल
2. दक्षिण भारत
3. पश्चिमी भारत (महाराष्ट्र)
4. केरल
कोड:
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

90. 1901 की जनगणना के दौरान, विभिन्न जातियों के प्रतिनिधियों ने जनगणना आयुक्त के पास याचिकाएँ क्यों भेजीं?
(A) सामाजिक क्रम में अपनी जाति को अधिक ऊँचा स्थान देने की माँग करने के लिए।
(B) जनगणना का बहिष्कार करने के लिए।
(C) जाति आधारित गणना को समाप्त करने की माँग करने के लिए।
(D) अपनी जाति के लिए वित्तीय सहायता की माँग करने के लिए।

91. 'अनुपस्थित यानी दूरवासी ज़मींदार' किन्हें कहा गया है?
(A) वे किसान जो स्वयं अपनी भूमि जोतते थे।
(B) वे खेतिहर मजदूर जो जमींदारों की भूमि पर काम करते थे।
(C) वे मध्यवर्ती जातियाँ जिन्हें भूमि सुधारों से लाभ हुआ।
(D) ऊँची जातियों के वे सदस्य जो लगान वसूल करने के अलावा खेतिहर अर्थव्यवस्था में कोई भूमिका अदा नहीं करते थे।

92. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. स्वतंत्र भारत में लोकतांत्रिक राजनीति गहनता से जाति आधारित रही है।
2. 1980 के दशक से जाति आधारित राजनीतिक दलों का उदय हुआ।
3. प्रारंभ में, जातीय भाईचारे की भूमिका चुनावों में निर्णायक प्रतीत हुई।
4. वर्तमान में, जाति और राजनीति का संबंध बहुत सरल हो गया है।
5. भिन्न-भिन्न दलों ने जातीय आधार पर मत प्राप्त करने का हिसाब लगाना शुरु कर दिया।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5 सभी

93. एम. एन. श्रीनिवास ने किन दो महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय संकल्पनाओं को गढ़ा?
(A) पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण
(B) वर्ग संघर्ष और अलगाव
(C) संस्कृतीकरण और प्रबल-जाति
(D) पवित्र और अपवित्र

94. स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद प्रबल जातियों के उदय का मुख्य कारण क्या था?
(A) उन्हें सरकार द्वारा विशेष औद्योगिक रियायतें और भारी आर्थिक अनुदान प्रदान किए गए।
(B) उन्होंने आधुनिक पश्चिमी शिक्षा और तकनीकी कौशल के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।
(C) उन्होंने धार्मिक सुधार आंदोलनों के माध्यम से कर्मकांडीय दृष्टि से सर्वोच्च स्थान प्राप्त कर लिया।
(D) भूमि सुधारों से प्राप्त भू-स्वामित्व और सघन जनसंख्या से प्राप्त राजनीतिक शक्ति।

95. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): उच्च जातियों के संभ्रांत लोगों की दूसरी तथा तीसरी पीढ़ियों को यह विश्वास होने लगा कि उनकी प्रगति का जाति से कोई लेना-देना नहीं है।
कारण (R): उनकी आर्थिक तथा शैक्षिक पूँजी अकेले ही यह सुनिश्चित करने के लिए पर्याप्त थी कि उन्हें जीवन में सर्वोत्तम

अवसर प्राप्त होते रहेंगे।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

96. जनजातियों के पारिस्थितिक आवासों में निम्नलिखित में से क्या शामिल नहीं है?
(A) पहाड़ियाँ और वन
(B) विशेष आर्थिक क्षेत्र
(C) ग्रामीण मैदान
(D) नगरीय औद्योगिक इलाके

97. 80% से अधिक जनजातियों द्वारा कौन सा भाषा परिवार बोला जाता है?
(A) भारतीय-आर्य
(B) तिब्बती-बर्मी
(C) द्रविड़
(D) आस्ट्रिक

98. जनजातियों के प्रति हिंदू समाज की अभिवृत्ति के संबंध में क्या सच है?
(A) जनजातियों की अभिवृत्तियों में काफ़ी अंतर है; कुछ का सकारात्मक झुकाव है तो कुछ प्रतिरोध करती हैं।
(B) सभी जनजातियों का हिंदुत्व की ओर सकारात्मक झुकाव है।
(C) सभी जनजातियाँ हिंदुत्व का प्रतिरोध करती हैं।
(D) जनजातियों और हिंदू समाज के बीच कोई अंतःक्रिया नहीं हुई है।

99. निम्नलिखित घटनाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. जाति-जनजाति पर 1960 के दशक का वाद-विवाद।
2. जनजातियों का 'द्वितीयक प्रघटना' के रूप में प्रस्ताव।
3. मध्य भारत में गोंड राज्यों का अस्तित्व।
4. पूँजीवादी अर्थव्यवस्था द्वारा जनजातीय समाजों का मुख्यधारा से संपर्क।

(A) 3, 4, 1, 2
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 3, 1, 2, 4

100. 'विकास' की अनिवार्यताओं के कारण जनजातीय लोगों को किस प्रकार की हानि हुई?
(A) बड़े बाँधों और कारखानों के लिए विस्थापन।
(B) खनिज-संपन्न और वनाच्छादित भूमि का छिन जाना।
(C) पारंपरिक आजीविका का विनाश।
(D) उपरोक्त सभी।

101. जनजातीय आंदोलनों के संदर्भ में, मध्यवर्गीय लोगों और गरीब जनजातीय लोगों के दावों में क्या भिन्नता हो सकती है?
(A) दोनों समूहों के दावे हमेशा समान होते हैं।
(B) गरीब लोग सांस्कृतिक पहचान की परवाह नहीं करते।
(C) मध्यवर्गीय लोग सांस्कृतिक पहचान पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जबकि गरीब लोग आजीविका के मुद्दों पर।
(D) मध्यवर्गीय लोग आर्थिक मुद्दों से चिंतित नहीं हैं।

102. आवास के नियम के आधार पर, 'पति-स्थानिक' (patrilocal) समाज में नवविवाहित जोड़ा कहाँ रहता है?
(A) वधू के माता-पिता के साथ
(B) वर के माता-पिता के साथ
(C) वधू के चाचा के साथ
(D) वे अलग रहते हैं

103. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. पितृवंशीय समाज में जायदाद पिता से पुत्र को मिलती है।
2. पितृतंत्रात्मक परिवार संरचना में पुरुषों की सत्ता व प्रभुत्व होता है।
3. मातृतंत्रात्मक परिवार संरचना में स्त्रियाँ समान प्रभुत्वकारी भूमिका निभाती हैं।
4. मातृतंत्र का कोई ऐतिहासिक या मानवशास्त्रीय प्रमाण नहीं है।
5. मातृवंशीय समाज अवश्य पाए जाते हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2, 4 और 5
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5 सभी

104. जाति व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) जाति में श्रेणी एवं प्रस्थिति का कोई अधिक्रम नहीं होता है।
(B) जाति जन्म से निर्धारित होती है।
(C) जाति की सदस्यता के साथ विवाह संबंधी कठोर नियम शामिल होते हैं।
(D) पारंपरिक तौर पर जातियाँ व्यवसाय से जुड़ी होती थीं।

105. जाति व्यवस्था को 'शुद्धता' और 'अशुद्धता' की धारणा के आधार पर समझने का प्रयास किस समाजशास्त्री से मुख्य रूप से जुड़ा है?
(A) एम. एन. श्रीनिवास
(B) आंद्रे बेते
(C) लुई ड्यूमो
(D) जी. एस. घुरिये

106. निम्नलिखित मदों का मिलान कीजिए:
सूची I: (पुस्तक/अवधारणा)

P. द डोमिनेंट कास्ट एंड अदर एस्सेज
Q. होमो हेरारकिकस
R. कास्ट एंड रेस इन इंडिया
S. इंटेरोगेटिंग कास्ट
सूची II: (लेखक)
1. लुई ड्यूमो
2. एम. एन. श्रीनिवास
3. दीपांकर गुप्ता
4. जी. एस. घुरिये
कोड:
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

107. स्वातंत्र्योत्तर भारत में जाति के संबंध में कौन सा परिवर्तन सबसे घटनापूर्ण और महत्त्वपूर्ण रहा है?
(A) घरेलू क्षेत्र में
(B) विवाह के क्षेत्र में
(C) शिक्षा के क्षेत्र में
(D) राजनीति के क्षेत्र में

108. सार्वजनिक जीवन में जाति की भूमिका के संदर्भ में, उच्च जातियों और अनुसूचित जातियों/जनजातियों के अनुभव में क्या विरोधाभास है?
(A) उच्च जातियों के लिए जाति अदृश्य हो गई, जबकि दलितों के लिए यह अधिक दिखने वाली हो गई।
(B) उच्च जातियों के लिए जाति अदृश्य हो गई, जबकि दलितों के लिए यह अधिक दिखने वाली हो गई।
(C) दोनों के लिए जाति अदृश्य हो गई है।
(D) दोनों के लिए जाति अधिक दिखने वाली हो गई है।

109. 2001 की जनगणना के अनुसार भारत में जनजातियों की कुल जनसंख्या लगभग कितनी थी?
(A) 7.4 करोड़
(B) 9.4 करोड़
(C) 8.4 करोड़
(D) 10.4 करोड़

110. अंडमान द्वीपवासियों की जनसंख्या, जो सबसे छोटी जनजातियों में से एक है, लगभग कितनी है?
(A) 1000 से कम
(B) 500 से कम
(C) 2000
(D) 100 से भी कम

111. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): 1970 के दशक तक, जनजाति की सभी प्रमुख परिभाषाएँ दोषपूर्ण दिखाई देने लगीं।
कारण (R): जनजाति और कृषक समुदाय के बीच का अंतर आकार, पृथक्करण, धर्म या आजीविका जैसे किसी भी कसौटी पर खरा नहीं उतरता था।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

112. "जनजातियाँ आदिम समुदाय हैं जो सभ्यता से अछूते रहकर अपना अलग-थलग जीवन व्यतीत करते हैं", इस दृष्टिकोण के विपक्ष में क्या साक्ष्य है?
(A) संथाल और गोंड जैसी जनजातियाँ बहुत बड़ी हैं और विस्तृत क्षेत्र में फैली हैं।
(B) मुंडा और हो जैसी जनजातियाँ लंबे समय से खेती कर रही हैं।
(C) बिरहोर जैसी शिकारी-संग्राहक जनजातियों ने भी घर बसा लिए हैं।
(D) उपरोक्त सभी।

113. परिवार की संरचना में परिवर्तन के क्या कारण हो सकते हैं?
(A) पुरुषों का काम के लिए प्रवसन।
(B) युवा माता-पिता का कार्य-समय।
(C) युवाओं द्वारा स्वयं जीवन-साथी का चुनाव।
(D) उपरोक्त सभी।

114. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. परिवार गहरे स्नेह एवं देखभाल का स्थान है।
2. परिवार कटु संघर्षों, अन्याय और हिंसा का स्थान भी हो सकता है।
3. मादा शिशु की हत्या और संपत्ति के लिए विवाद परिवार में नहीं होते।
4. प्यार, त्याग एवं बलिदान भी परिवार का हिस्सा हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

115. वर्ण व्यवस्था की 'पंचम' श्रेणी में किन्हें शामिल किया जाता था?
(A) केवल ब्राह्मण और क्षत्रिय
(B) केवल वैश्य और शूद्र
(C) जाति बहिष्कृत, विदेशी, दास और पराजित लोग
(D) केवल व्यापारी वर्ग

116. समाजशास्त्रियों के अनुसार, परिवर्तन का सबसे महत्त्वपूर्ण क्षेत्र कौन सा रहा है, जहाँ जाति एक केंद्रीय भूमिका निभाती है?
(A) अर्थव्यवस्था
(B) शिक्षा

(C) धर्म
(D) राजनीति

117. 'कास्ट्स ऑफ़ माइंड: कोलोनियलिज्म एंड द मेकिंग ऑफ़ मॉडर्न इंडिया' पुस्तक किसने लिखी है, जिसमें उपनिवेशवाद और जाति निर्माण के संबंधों पर प्रकाश डाला गया है?
(A) एम. एन. श्रीनिवास
(B) लुई ड्यूमो
(C) निकलस डिर्क
(D) सतीश देशपांडे

118. निम्नलिखित घटनाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. जोतिराव फुले का जन्म।
2. अयन्कली का जन्म।
3. श्री नारायण गुरु का जन्म।
4. सावित्री बाई फुले का जन्म।
(A) 1, 4, 3, 2
(B) 4, 1, 2, 3
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 2, 3, 4, 1

119. निम्नलिखित में से कौन सा एक जनजातीय समुदाय के 'स्थायी लक्षण' के अंतर्गत नहीं आता है?
(A) क्षेत्र
(B) भाषा
(C) पारिस्थितिक आवास
(D) हिंदू समाज में समावेश की सीमा

120. निम्नलिखित मदों का मिलान कीजिए:
सूची I: (जनजातिय जनसंख्या प्रतिशत)
P. ~85%
Q. ~11% से अधिक
R. ~3% से थोड़ा अधिक
S. 60% से 95% तक
सूची II: (क्षेत्र)
1. पूर्वोत्तर राज्य
2. मध्य भारत
3. अरुणाचल प्रदेश, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड
4. शेष भारत
कोड:
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

121. "परिवार की यह आंतरिक संरचना आमतौर पर, समाज की अन्य संरचनाओं जैसे राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आदि संरचनाओं से जुड़ी होती है।" इस कथन का क्या अर्थ है?
(A) परिवार समाज से पूरी तरह से एक स्वतंत्र इकाई है।
(B) परिवार में होने वाले परिवर्तन केवल आंतरिक कारकों से होते हैं।
(C) परिवार (निजी क्षेत्र) समाज के सार्वजनिक क्षेत्रों (आर्थिक, राजनीतिक, आदि) से प्रभावित होता है और उन्हें प्रभावित करता है।
(D) राजनीतिक और आर्थिक संरचनाओं का परिवार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

122. औपनिवेशिक काल के ब्रिटिश प्रशासक जो प्रशासनिक अधिकारी होने के साथ-साथ सर्वेक्षण और अध्ययन कार्यों में रुचि लेते थे, उन्हें क्या कहा गया है?
(A) शौकिया तौर पर नृजातिविज्ञानी
(B) पेशेवर इतिहासकार
(C) पेशेवर समाजशास्त्री
(D) राजनीतिक विश्लेषक

123. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): राष्ट्रवादी आंदोलन में यह प्रबल दृष्टिकोण था कि जाति एक सामाजिक कुरीति है।
कारण (R): राष्ट्रवादी नेता जाति को भारतीयों के बीच फूट डालने की एक औपनिवेशिक युक्ति मानते थे।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

124. निम्नलिखित में से किसने जाति व्यवस्था के अन्याय की भर्त्सना की और छुआछूत के नियमों की घोर निंदा की?
(A) हरबर्ट रिज़ले
(B) जोतिराव फुले
(C) एम. एन. श्रीनिवास
(D) लॉर्ड कर्जन

125. 'संस्कृतिकरण' की प्रक्रिया में सामान्यतः कौन सी जातियाँ भाग लेती हैं?
(A) केवल उच्च जातियाँ
(B) केवल ब्राह्मण
(C) मध्य या निम्न जातियाँ
(D) केवल 'प्रबल जातियाँ'

126. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. जाति जन्म से निर्धारित होती है।
2. जाति में खाने और खाना बाँटने के नियम होते हैं।
3. जाति समूह बहिर्विवाही होते हैं।
4. पारंपरिक तौर पर जातियाँ व्यवसाय से जुड़ी नहीं थीं।
5. जाति व्यवस्था में अधिक्रम हमेशा पाया जाता है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 5
(B) केवल 2, 3 और 4

(C) केवल 1, 3 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5 सभी

127. 'पवित्र' और 'अपवित्र' की अवधारणा के बीच का अंतर जाति की किस प्रकार की व्यवस्था की व्याख्या करता है?
(A) अधिक्रमित व्यवस्था
(B) अर्थव्यवस्था
(C) राजनीतिक व्यवस्था
(D) समानतावादी व्यवस्था

128. भारत में आज भी विवाह के संदर्भ में जाति का क्या प्रभाव देखा जाता है?
(A) अधिकांश विवाह अंतर्जातीय होते हैं।
(B) अधिकांश विवाह आज भी जाति की परिसीमाओं के भीतर ही होते हैं।
(C) जाति का विवाह पर कोई प्रभाव नहीं है।
(D) सरकार केवल अंतर्जातीय विवाहों को ही मान्यता देती है।

129. किस समाज सुधारक को 'पेरियार' के नाम से जाना जाता है?
(A) ई. वी. रामास्वामी नायकर
(B) जोतिराव फुले
(C) श्री नारायण गुरु
(D) अयन्कली

130. 'जनजातीय सशक्तिकरण' (Tribal Empowerment) के लिए कौन सी प्रमुख संस्था कार्य करती है?
(A) TRIFED
(B) UNICEF
(C) UNESCO
(D) NITI Aayog

131. निम्नलिखित मदों का मिलान कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. मातृवंशीय
Q. पितृवंशीय
R. पत्नी-स्थानिक
S. पति-स्थानिक
सूची II: (अर्थ)
1. वंश परंपरा पिता से पुत्र को जाती है।
2. वंश परंपरा माँ से बेटी को जाती है।
3. नवविवाहित जोड़ा वधू के माता-पिता के साथ रहता है।
4. नवविवाहित जोड़ा वर के माता-पिता के साथ रहता है।
कोड:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

132. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. झारखंड और छत्तीसगढ़ को एक लंबे संघर्ष के बाद अलग राज्य का दर्जा मिला।
2. पूर्वोत्तर क्षेत्र के अनेक राज्य विशेष कानूनों के अंतर्गत हैं, जिनसे नागरिक स्वतंत्रताएँ सीमित होती हैं।
3. जनजातीय समुदायों में एक शिक्षित मध्य वर्ग का उद्भव हो रहा है।
4. आरक्षण की नीतियों ने एक नगरीकृत व्यावसायिक वर्ग के निर्माण में मदद की है।
उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4 सभी

133. परिवार के संबंध में कौन सा कथन परिवर्तन की आकस्मिकता को दर्शाता है?
(A) जब युवा लोग स्वयं जीवन-साथी का चुनाव करते हैं।
(B) जब समाज में समलैंगिक प्यार का खुले तौर पर इजहार किया जाता है।
(C) जब कोई लड़ाई छिड़ जाती है और लोग अन्यत्र जा बसते हैं।
(D) जब परिवार की संरचना में धीरे-धीरे बदलाव आता है।

134. जाति की 'खंडात्मक' संरचना का क्या अर्थ है?
(A) जातियों का व्यवसायों में बँटा होना।
(B) जातियों का उप-जातियों में विभाजित होना।
(C) जातियों का एक सरल रैखिक क्रम।
(D) जातियों के बीच कोई विभाजन न होना।

135. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): सामाजिक स्तर से भौतिक शक्ति (आर्थिक या सैन्य शक्ति) नज़दीकी से जुड़ी होती है।
कारण (R): इतिहास में, जो लोग युद्धों में पराजित हुए थे उन्हें अक्सर निम्न जाति की स्थिति मिली।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

136. राष्ट्रीय विकास और जनजातीय विकास के बीच के संघर्ष का मुख्य कारण क्या है?
(A) विकास परियोजनाओं का मुख्य रूप से जनजातीय क्षेत्रों में स्थित होना, जिससे उनका विस्थापन होता है।
(B) जनजातीय लोगों की विकास में अरुचि।
(C) जनजातीय क्षेत्रों में संसाधनों का अभाव।
(D) सरकार द्वारा जनजातीय विकास की पूर्ण उपेक्षा।

137. भारत के समाजशास्त्रीय अध्ययन में 'प्रबल जाति' की अवधारणा किसने प्रस्तुत की?

(A) लुई ड्यूमो
(B) जी. एस. घुरिये
(C) एम. एन. श्रीनिवास
(D) आंद्रे बेते

138. निम्नलिखित घटनाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. भारत में पहला जनगणना का प्रयास।
2. सत्यशोधक समाज की स्थापना।
3. सावित्री बाई फुले द्वारा पुणे में विद्यालय की स्थापना।
4. 1935 का भारत सरकार अधिनियम।

(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 3, 2, 1, 4

139. परिवार के संदर्भ में 'पितृतंत्र' (Patriarchy) क्या है?
(A) एक संरचना जिसमें माता का प्रभुत्व होता है।
(B) एक संरचना जिसमें बच्चे निर्णय लेते हैं।
(C) एक संरचना जहाँ सत्ता समान रूप से वितरित होती है।
(D) एक संरचना जिसमें पुरुषों की सत्ता व प्रभुत्व होता है।

140. जनजातियों के वर्गीकरण के लिए 'अर्जित लक्षण' का आधार क्या है?
(A) शारीरिक विशेषताएँ और भाषा।
(B) आजीविका के साधन और हिंदू समाज में समावेश।
(C) जन्म स्थान और वंश।
(D) क्षेत्र और पारिस्थितिक आवास।

141. निम्नलिखित मदों का मिलान कीजिए:
सूची I: (समाज सुधारक)
P. सावित्री बाई फुले
Q. पेरियार ई. वी. रामास्वामी
R. श्री नारायण गुरु
S. जोतिराव फुले

सूची II: (मुख्य योगदान)
1. सत्यशोधक समाज
2. एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर
3. आत्म-सम्मान आंदोलन
4. बालिकाओं के लिए पहला विद्यालय

कोड:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

142. औपनिवेशिक काल में जनगणना के कार्य ने जाति को किस प्रकार प्रभावित किया?
(A) इसने पारंपरिक जाति व्यवस्था को भारतीय समाज से पूरी तरह समाप्त कर दिया।
(B) इसने जाति की पुरानी पहचान को पहले की तुलना में अधिक अस्थिर और लचीला बना दिया।
(C) इसने केवल जनसंख्या की गणना की और जाति व्यवस्था पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
(D) इसने जातीय श्रेणियों को परिभाषित कर उनकी पहचान को अधिक कठोर बना दिया।

143. निम्नलिखित में से कौन सी एक 'प्रबल जाति' की विशेषता नहीं है?
(A) कर्मकांड की दृष्टि से सर्वोच्च स्थान
(B) बड़ी जनसंख्या
(C) भूमि अधिकार
(D) राजनीतिक शक्ति

144. 'जनजाति' और 'जाति' के बीच अंतर को दर्शाने वाला केंद्रीय बिंदु क्या है?
(A) आर्थिक स्थिति
(B) शुद्धता और अशुद्धता की भावना
(C) राजनीतिक संगठन
(D) भाषा

145. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): स्वातंत्र्योत्तर भारत में, राज्य जाति प्रथा के उन्मूलन के लिए प्रतिबद्ध था।
कारण (R): फिर भी, राज्य उन आमूलचूल सुधारों को लाने में असमर्थ रहा जो जातीय असमानता के आर्थिक आधार को दुर्बल बना देते।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है, लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है, लेकिन (R) सत्य है।

146. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. विस्तृत परिवार को आमतौर पर 'संयुक्त परिवार' कहा जाता है।
2. विस्तृत परिवार में अक्सर दो से अधिक पीढ़ियों के लोग एकसाथ रहते हैं।
3. विस्तृत परिवार हमेशा भारतीय समाज में परिवार का प्रमुख रूप रहा है।
4. 'ज्वाइंट फैमिली' शब्द एक देशज भारतीय शब्द है।
5. विस्तृत परिवार में एक से अधिक युगल हो सकते हैं।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 5
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) 1, 2, 3, 4 और 5 सभी

147. हिमालयी क्षेत्र के गाँवों में उन परिवारों का अनुपात क्यों बढ़ सकता है जिनकी मुखिया स्त्रियाँ हैं?

(A) क्षेत्र की मातृवंशीय परंपरा के कारण।
(B) महिलाओं द्वारा संपत्ति के स्वामित्व के कारण।
(C) पुरुषों के काम के लिए प्रवसन के कारण।
(D) उच्च महिला साक्षरता दर के कारण।

148. निम्नलिखित में से कौन सी प्रक्रिया जनजातियों के हिंदू समाज में आत्मसात्करण से संबंधित नहीं है?
(A) संस्कृतीकरण
(B) परसंस्कृतिग्रहण (acculturation)
(C) विजय के बाद शूद्रवर्ण में शामिल करना
(D) पृथक्करण

149. 'कास्ट' शब्द का अंग्रेजी में क्या अर्थ है?
(A) एक विस्तृत संस्थागत व्यवस्था
(B) एक छोटा समुदाय
(C) एक विशुद्ध नस्ल
(D) एक व्यावसायिक समूह

150. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. जाति व्यवस्था में श्रम का सामाजिक विभाजन होता है।
2. सैद्धांतिक तौर पर यह किसी भी प्रकार की परिवर्तनशीलता की अनुमति नहीं देती है।
3. जातियाँ एक दूसरे की सहयोगी होती हैं और उनमें प्रतिस्पर्धा नहीं होती।
4. जाति व्यवसाय से भी जुड़ी हुई है।

उपरोक्त में से कौन-सा/कौन-से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) 1, 2, 3, 4 और 5 सभी

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

जाति व्यवस्था की समाजशास्त्रीय समझ में, फ्रांसीसी समाजशास्त्री लुई ड्यूमों ने 'होमो हायरेरिकस' की अपनी अवधारणा के माध्यम से एक मौलिक सैद्धांतिक ढाँचा प्रस्तुत किया। ड्यूमों का तर्क है कि भारतीय समाज की पारंपरिक संरचना 'शुद्धता' और 'अशुद्धता' के वैचारिक विरोध पर आधारित है। यह सिद्धांत न केवल सामाजिक स्तरीकरण को, बल्कि संपूर्ण विश्वदृष्टि को भी आकार देता है। इस दृष्टिकोण में, जाति व्यवस्था एक अधिक्रमित समग्रता है जहाँ प्रत्येक जाति का स्थान दूसरों के संबंध में उसकी कर्मकांडीय शुद्धता के स्तर से निर्धारित होता है। यह व्यवस्था व्यक्ति के बजाय समूह को प्राथमिकता देती है, जहाँ व्यक्ति का मूल्य और पहचान उसके जाति समूह की सदस्यता से उत्पन्न होती है। ड्यूमों ने इस 'होमो हायरेरिकस' (अधिक्रमित मानव) की तुलना पश्चिमी समाज के 'होमो एक्वालिस' (समानतावादी मानव) से की, जहाँ व्यक्तिवाद और समानता प्रमुख मूल्य हैं। ड्यूमों के अनुसार, भारत में, धर्म पारंपरिक रूप से राजनीति और अर्थशास्त्र को समाहित करता है, जिससे जाति का अधिक्रम जीवन के सभी पहलुओं पर व्याप्त हो जाता है। इस समग्रवादी संरचना में, विभिन्न जातियों के बीच संबंध अलगाव और अन्योन्याश्रितता दोनों पर आधारित होते हैं, जो एक जटिल सामाजिक ताने-बाने का निर्माण करते हैं।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. लुई ड्यूमों के अनुसार, भारतीय जाति व्यवस्था का मूल सिद्धांत क्या है?
(A) आर्थिक संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा और संघर्ष
(B) शुद्धता और अशुद्धता का वैचारिक विरोध
(C) व्यक्तिगत स्वतंत्रता तथा सामाजिक समानता
(D) राजनीतिक शक्ति और संसाधनों का असमान वितरण

152. 'होमो हायरेरिकस' की अवधारणा का क्या अर्थ है?
(A) सामाजिक अधिक्रम में स्थान द्वारा निर्धारित पहचान और स्थिति वाला व्यक्ति।
(B) एक व्यक्ति जो केवल अपनी व्यक्तिगत उपलब्धियों को सर्वोच्च महत्त्व देता है।
(C) एक व्यक्ति जो निरंतर समाज में आर्थिक समानता लाने के लिए प्रयास करता है।
(D) एक व्यक्ति जो समाज के सभी पारंपरिक और वैधानिक बंधनों को अस्वीकार करता है।

153. ड्यूमों ने भारतीय समाज की तुलना पश्चिमी समाज से किस आधार पर की?
(A) राष्ट्रों के आर्थिक विकास के स्तर पर
(B) समाज की तकनीकी प्रगति के आधार पर
(C) 'होमो हायरेरिकस' बनाम 'होमो एक्वालिस' के वैचारिक मॉडल पर
(D) विभिन्न राजनीतिक प्रणालियों की संरचना पर

154. अनुच्छेद के अनुसार, पारंपरिक भारतीय सामाजिक संरचना में व्यक्ति की पहचान का मुख्य स्रोत क्या है?
(A) उसकी व्यक्तिगत योग्यता और शिक्षा
(B) उसका आर्थिक धन और संपत्ति
(C) उसके राजनीतिक संबंध
(D) उसके जाति समूह की सदस्यता

155. ड्यूमों के सिद्धांत के अनुसार, भारत में धर्म की क्या भूमिका है?
(A) यह राजनीति और अर्थशास्त्र के विषयों से पूरी तरह से अलग और स्वतंत्र है।
(B) यह केवल व्यक्तिगत आस्था और निजी विश्वास का एक गौण विषय मात्र है।
(C) यह पारंपरिक रूप से जीवन के राजनीतिक और आर्थिक पहलुओं को समाहित करता है।
(D) यह सामाजिक अधिक्रम और पदानुक्रम को चुनौती देने का एक प्रमुख माध्यम है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

उपनिवेशवाद ने भारतीय जाति व्यवस्था की गतिशीलता में एक निर्णायक हस्तक्षेप किया, विशेष रूप से जनगणना के

माध्यम से। ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासकों ने भारतीय समाज को समझने और उस पर कुशलतापूर्वक शासन करने के प्रयास में, इसे वर्गीकृत और व्यवस्थित करने की कोशिश की। 1871 से शुरु हुई दशकीय जनगणना इस प्रक्रिया में एक प्रमुख साधन बन गई। जनगणना कार्यों में प्रत्येक व्यक्ति की जाति को दर्ज करना, उन्हें एक पदानुक्रम में व्यवस्थित करना और उनकी सामाजिक स्थिति का दस्तावेजीकरण करना शामिल था। इस प्रशासनिक अभ्यास ने अनजाने में जाति की पहले से अधिक तरल और प्रासंगिक प्रकृति को एक कठोर, स्थायी और अखिल भारतीय ढांचे में बदल दिया। जातियों का यह 'वस्तुनिष्ठकरण' (objectification) हुआ, जिससे वे मूर्त और गणनीय श्रेणियों में परिवर्तित हो गईं। इसके परिणामस्वरूप, विभिन्न जाति समूहों के बीच अपनी सामाजिक स्थिति को जनगणना रिकॉर्ड में ऊपर दर्ज कराने के लिए एक नई प्रतिस्पर्धा उत्पन्न हुई। समूहों ने जनगणना आयुक्तों को याचिकाएँ भेजीं, जिनमें ऐतिहासिक और पौराणिक साक्ष्यों का हवाला देकर उच्चतर दावेदारी प्रस्तुत की गई। इस प्रक्रिया ने जातिगत पहचान को और अधिक सचेत और राजनीतिक रुप से संवेदनशील बना दिया, जिससे समकालीन भारत में जाति की राजनीति की नींव पड़ी। यह केवल सूचना संग्रह नहीं था, बल्कि इसने सामाजिक यथार्थ को ही नया आकार दे दिया।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. अनुच्छेद के अनुसार, उपनिवेशवाद ने किस प्रशासनिक उपकरण का उपयोग करके जाति व्यवस्था को प्रभावित किया?
(A) न्यायिक प्रणाली
(B) दशकीय जनगणना
(C) शैक्षिक नीतियाँ
(D) भू-राजस्व प्रणाली

157. जनगणना की प्रक्रिया ने जाति की प्रकृति को कैसे बदल दिया?
(A) इसने भारतीय समाज से जाति को पूरी तरह से समाप्त कर दिया।
(B) इसने जातिगत पहचान को सामाजिक रुप से कम महत्वपूर्ण बना दिया।
(C) इसने केवल समाज की उच्च और प्रभुत्वशाली जातियों को प्रभावित किया।
(D) इसने तरल जातिगत प्रकृति को एक कठोर और स्थायी ढांचे में बदला।

158. जाति के 'वस्तुनिष्ठकरण' से लेखक का क्या तात्पर्य है?
(A) जाति को अमूर्त विचार से मूर्त एवं प्रशासनिक श्रेणी में बदलना।
(B) जाति व्यवस्था के प्रति एक पूर्णतः वस्तुनिष्ठ और वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाना।
(C) जातिगत पहचान को उसके विशिष्ट ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संदर्भ से अलग करना।
(D) समाज में व्याप्त जाति आधारित भेदभाव और उत्पीड़न का कड़ा विरोध करना।

159. जनगणना के परिणामस्वरुप विभिन्न जाति समूहों में किस प्रकार की प्रतिक्रिया उत्पन्न हुई?
(A) उन्होंने ब्रिटिश सरकार द्वारा आयोजित जनगणना का पूरी तरह से बहिष्कार किया।
(B) वे अपनी जातिगत पहचान और सामाजिक स्थिति के प्रति पूर्णतः उदासीन हो गए।
(C) जनगणना में उच्च स्थिति हेतु प्रतिस्पर्धा करना और याचिकाएँ भेजना।
(D) उन्होंने समाज में अंतर्जातीय विवाहों और सामाजिक मेलजोल को बढ़ावा दिया।

160. औपनिवेशिक जनगणना का दीर्घकालिक परिणाम क्या हुआ?
(A) इसने जातिगत पहचान को अधिक सचेत और राजनीतिक रुप से संवेदनशील बनाया।
(B) इसने भारतीय सामाजिक व्यवस्था में पूर्ण आर्थिक और सामाजिक समानता स्थापित की।
(C) इसने भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि संबंधों को बहुत मजबूत किया।
(D) इसने समाज में प्रचलित सभी पुराने और पारंपरिक व्यवसायों को समाप्त कर दिया।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारतीय समाज के अध्ययन में 'जनजाति' और 'जाति' के बीच संबंध एक जटिल और विवादास्पद विषय रहा है। एक प्रमुख समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण 'जनजाति-जाति सांतत्यक' (Tribe-Caste Continuum) की अवधारणा प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांत इस विचार को चुनौती देता है कि जनजातियाँ और जातियाँ दो पूरी तरह से अलग और पृथक सामाजिक श्रेणियाँ हैं। इसके बजाय, यह तर्क दिया जाता है कि वे एक सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक सांतत्यक या निरंतरता के दो छोरों का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, कई जनजातीय समूहों ने ऐतिहासिक रुप से हिंदू समाज के रीति-रिवाजों, विश्वासों और सामाजिक संरचनाओं को अपनाया है, और धीरे-धीरे जाति व्यवस्था के भीतर एक जाति के रुप में एकीकृत हो गए हैं। यह प्रक्रिया अक्सर 'संस्कृतिकरण' से जुड़ी होती है। सांतत्यक के एक छोर पर अपेक्षाकृत पृथक, समतावादी और जीववादी मान्यताओं वाले जनजातीय समूह हैं, जबकि दूसरे छोर पर अधिक्रमित, स्तरीकृत और कर्मकांडीय शुद्धता की अवधारणाओं वाली हिंदू जाति व्यवस्था है। हालाँकि, इन दोनों के बीच कई मध्यवर्ती समूह हैं जो दोनों की विशेषताओं को प्रदर्शित करते हैं। यह मॉडल मानता है कि जनजाति से जाति में परिवर्तन एकतरफा या रैखिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह संपर्क, आर्थिक एकीकरण और सांस्कृतिक आदान-प्रदान की एक जटिल और गतिशील प्रक्रिया है जो क्षेत्र और ऐतिहासिक संदर्भ के आधार पर भिन्न होती है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. 'जनजाति-जाति सांतत्यक' की अवधारणा का मुख्य तर्क क्या है?
(A) जनजातियाँ और जातियाँ हमेशा एक-दूसरे के साथ निरंतर संघर्ष करती रही हैं।
(B) जनजातियाँ और जातियाँ दो पूर्णतः पृथक, स्वतंत्र और भिन्न सामाजिक श्रेणियाँ हैं।
(C) सभी जनजातीय समूह अनिवार्य रूप से समय के साथ जातियों में परिवर्तित होते हैं।
(D) जनजातियाँ और जातियाँ एक निरंतरता के दो छोर हैं, जिनमें मध्यवर्ती समूह हैं।

162. यह सिद्धांत किस पारंपरिक विचार को चुनौती देता है?
(A) यह कि सभी हिंदू जातियाँ अनिवार्य रूप से अधिक्रमित और स्तरीकृत होती हैं।
(B) यह कि जनजातियाँ और जातियाँ पूर्णतः पृथक और अलग सामाजिक इकाइयाँ हैं।
(C) यह कि प्रत्येक जनजातीय समूह की अपनी एक बहुत ही अनूठी और अलग संस्कृति होती है।
(D) यह कि किसी भी व्यक्ति की जाति का निर्धारण मुख्य रूप से उसके जन्म पर आधारित है।

163. अनुच्छेद के अनुसार, एक जनजातीय समूह का जाति व्यवस्था में एकीकरण अक्सर किस प्रक्रिया से जुड़ा होता है?
(A) पश्चिमीकरण
(B) नगरीकरण
(C) संस्कृतिकरण
(D) औद्योगीकरण

164. सांतत्यक मॉडल में, जनजातियों को आम तौर पर किस विशेषता वाला माना जाता है?
(A) अत्यधिक स्तरीकृत और अधिक्रमित
(B) कर्मकांडीय शुद्धता पर केंद्रित
(C) व्यक्तिगत संपत्ति पर आधारित
(D) अपेक्षाकृत पृथक और समतावादी

165. इस मॉडल के अनुसार, जनजाति से जाति में परिवर्तन की प्रक्रिया कैसी है?
(A) संपर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर आधारित एक जटिल एवं गतिशील प्रक्रिया।
(B) यह समाज में होने वाली एक अत्यंत तीव्र और क्रांतिकारी प्रकृति की प्रक्रिया है।
(C) यह समाज के भीतर होने वाली एक बहुत ही सरल और एक-आयामी प्रक्रिया है।
(D) यह मुख्य रूप से सरकार द्वारा संचालित एक प्रशासनिक और कानूनी प्रक्रिया है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

समकालीन भारत में परिवार संस्था वैश्वीकरण, नगरीकरण और आधुनिकीकरण की शक्तियों के प्रभाव में महत्वपूर्ण परिवर्तनों से गुजर रही है। पारंपरिक रूप से, संयुक्त परिवार, जिसमें कई पीढ़ियाँ एक साथ एक ही छत के नीचे रहती थीं, भारतीय समाज का आदर्श माना जाता था। हालाँकि, आर्थिक अवसरों की तलाश में ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी केंद्रों की ओर प्रवास, बढ़ती व्यक्तिवादिता, और पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव ने एकल परिवारों (Nuclear Families) के उदय को बढ़ावा दिया है। यह परिवर्तन केवल संरचनात्मक नहीं है, बल्कि यह परिवार के भीतर के संबंधों और सत्ता की गतिशीलता को भी प्रभावित कर रहा है। महिलाओं की शिक्षा और कार्यबल में उनकी बढ़ती भागीदारी ने पारंपरिक पितृसत्तात्मक अधिकारों को चुनौती दी है, जिससे परिवार में निर्णय लेने की प्रक्रिया अधिक सहभागितापूर्ण हो रही है। फिर भी, यह कहना सरलीकरण होगा कि संयुक्त परिवार प्रणाली पूरी तरह से समाप्त हो रही है। कई मामलों में, यह एक 'कार्यात्मक संयुक्त परिवार' (Functional Joint Family) के रूप में अनुकूलित हो गई है, जहाँ सदस्य भौगोलिक रूप से अलग रहते हुए भी आर्थिक, सामाजिक और भावनात्मक रूप से एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं और महत्वपूर्ण अवसरों पर एक साथ आते हैं। इस प्रकार, भारतीय परिवार एक संक्रमणकालीन अवस्था में है, जो निरंतरता और परिवर्तन के बीच संतुलन बना रहा है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. अनुच्छेद के अनुसार समकालीन भारतीय परिवार में परिवर्तन के मुख्य कारक क्या हैं?
(A) केवल समाज में होने वाले कुछ विशिष्ट धार्मिक सुधार
(B) वैश्वीकरण, नगरीकरण, और आधुनिकीकरण की शक्तियाँ
(C) देश के विभिन्न हिस्सों में व्याप्त राजनीतिक अस्थिरता
(D) पुरानी और पारंपरिक ग्रामीण कलाओं का क्रमिक पतन

167. पारंपरिक संयुक्त परिवार की तुलना में किस प्रकार के परिवार का उदय हो रहा है?
(A) मातृवंशीय परिवार
(B) एकल परिवार
(C) खानाबदोश परिवार
(D) बहुपत्नी परिवार

168. परिवार के भीतर सत्ता की गतिशीलता में परिवर्तन का एक प्रमुख कारण क्या है?
(A) महिलाओं की शिक्षा और कार्यबल में बढ़ती हुई सक्रिय भागीदारी
(B) आधुनिक काल के पुरुषों की औपचारिक शिक्षा में भारी कमी आना
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक कृषि व्यवस्था का पूर्ण पतन
(D) देश की कुल जनसंख्या दर में होने वाली निरंतर गिरावट

169. 'कार्यात्मक संयुक्त परिवार' की अवधारणा से क्या तात्पर्य है?
(A) एक परिवार जिसे कानूनी रूप से सरकारी रिकॉर्ड में एक एकल इकाई माना गया है।
(B) एक ऐसा परिवार जहाँ परिवार के सभी सदस्य केवल एक ही व्यवसाय में लगे हों।
(C) भौगोलिक अलगाव के बावजूद सदस्यों में आर्थिक और

भावनात्मक जुड़ाव रहना।
(D) एक परिवार जो सरकारी कल्याण योजनाओं के माध्यम से कार्यशील पूंजी पाता है।

170. कुल मिलाकर, अनुच्छेद भारतीय परिवार को किस अवस्था में वर्णित करता है?
(A) पारंपरिक संबंधों के पूर्ण विघटन की एक दर्दनाक अवस्था।
(B) बिना किसी बदलाव के अपरिवर्तनीय स्थिरता की एक अवस्था।
(C) प्राचीन काल की परंपराओं की ओर पूर्ण वापसी की एक अवस्था।
(D) निरंतरता और परिवर्तन के बीच संतुलन की संक्रमणकालीन अवस्था।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारतीय समाज में सामाजिक गतिशीलता और शक्ति संरचना को समझने के लिए समाजशास्त्री एम. एन. श्रीनिवास द्वारा विकसित 'संस्कृतिकरण' और 'प्रबल जाति' की अवधारणाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। 'संस्कृतिकरण' वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा निम्न हिंदू जाति या कोई अन्य समूह, किसी उच्च और विशेष रूप से 'द्विज' जाति की जीवन शैली, रीति-रिवाजों, कर्मकांडों और विचारधाराओं को अपनाकर स्थानीय सामाजिक पदानुक्रम में अपनी स्थिति को ऊपर उठाने का प्रयास करता है। यह एक सांस्कृतिक प्रक्रिया है जो जाति व्यवस्था के भीतर स्थितिगत परिवर्तन की संभावना को दर्शाती, हालांकि यह व्यवस्था की संरचना को चुनौती नहीं देती। दूसरी ओर, 'प्रबल जाति' की अवधारणा उन जातियों को संदर्भित करती है जो किसी गाँव या क्षेत्र विशेष में आर्थिक और राजनीतिक रूप से प्रभुत्व रखती हैं। प्रबलता के लिए पारंपरिक कर्मकांडीय पदानुक्रम में उच्च स्थान होना आवश्यक नहीं है। इसके बजाय, इसके प्रमुख निर्धारक तत्व संख्यात्मक शक्ति, भूमि पर स्वामित्व, और आधुनिक शिक्षा तथा सरकारी नौकरियों तक पहुँच हैं। ये जातियाँ ग्रामीण क्षेत्रों में शक्ति के केंद्र के रूप में कार्य करती हैं और स्थानीय राजनीति तथा संसाधनों के वितरण को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती हैं। ये दोनों अवधारणाएँ मिलकर दिखाती हैं कि जाति व्यवस्था स्थिर नहीं है, बल्कि इसमें गतिशीलता और शक्ति के लिए निरंतर संघर्ष होता रहता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. 'संस्कृतिकरण' और 'प्रबल जाति' की अवधारणाएँ किस समाजशास्त्री ने विकसित कीं?
(A) लुई ड्यूमों
(B) जी. एस. घुरये
(C) एम. एन. श्रीनिवास
(D) आंद्रे बेतेई

172. 'संस्कृतिकरण' की प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था को पूरी तरह से समाप्त करना।
(B) सामाजिक पदानुक्रम में अपनी जाति की स्थिति को ऊपर उठाना।
(C) आधुनिक दौर की पश्चिमी जीवन शैली और संस्कृति को अपनाना।
(D) समाज के सभी वर्गों के बीच पूर्ण आर्थिक समानता प्राप्त करना।

173. निम्नलिखित में से कौन-सा एक 'प्रबल जाति' का आवश्यक निर्धारक तत्व नहीं है, जैसा कि अनुच्छेद में वर्णित है?
(A) संख्यात्मक शक्ति
(B) भूमि पर स्वामित्व
(C) राजनीतिक शक्ति
(D) कर्मकांडीय पदानुक्रम में सर्वोच्च स्थान

174. 'प्रबल जाति' किसी क्षेत्र में अपना प्रभाव कैसे डालती है?
(A) आर्थिक और राजनीतिक प्रभुत्व के माध्यम से।
(B) केवल धार्मिक अनुष्ठानों के माध्यम से।
(C) अन्य जातियों से पूर्ण अलगाव के माध्यम से।
(D) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के माध्यम से।

175. संस्कृतिकरण की प्रक्रिया जाति व्यवस्था के बारे में क्या दर्शाती है?
(A) यह समाज की एक पूरी तरह से बंद और पूर्णतः अपरिवर्तनीय सामाजिक व्यवस्था है।
(B) यह प्रक्रिया केवल आधुनिक शहरी और औद्योगिक क्षेत्रों में ही अधिक प्रासंगिक है।
(C) यह व्यवस्था में संरचनात्मक बदलाव के बिना स्थितिगत परिवर्तन की अनुमति देती है।
(D) यह प्रक्रिया केवल व्यक्ति की आर्थिक स्थिति और आय के स्तर पर आधारित है।

ANSWERS

1. (B) कास्टा
अंग्रेजी शब्द 'कास्ट' की व्युत्पत्ति पुर्तगाली भाषा के मूल शब्द 'कास्टा' से हुई है। इस शब्द का शाब्दिक अर्थ विशुद्ध नस्ल या जन्मगत विशिष्टता से जुड़ा है। समाजशास्त्र में इसका प्रयोग उस सामाजिक व्यवस्था को परिभाषित करने हेतु किया जाता है जो जन्म पर आधारित होती है। पुर्तगालियों ने भारतीय समाज के श्रेणीबद्ध विभाजन और ऊंच-नीच के स्वरूप को समझने के लिए सर्वप्रथम इस शब्द का उपयोग किया था।

2. (A) वर्ण और जाति
भारतीय भाषाओं में जाति संस्था के सामाजिक पहलुओं को व्यक्त करने के लिए 'वर्ण' और 'जाति' जैसे दो प्रमुख शब्दों का प्रयोग किया जाता है। जहाँ वर्ण व्यवस्था पूरे भारत में एक व्यापक और सैद्धांतिक सामूहिक वर्गीकरण का प्रतिनिधित्व करती है, वहीं जाति स्थानीय स्तर पर समाज के व्यावहारिक उप-विभाजनों को दर्शाती है। ये दोनों अवधारणाएं मिलकर भारतीय सामाजिक संरचना की जटिलता और उसकी सांस्कृतिक जड़ों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करती हैं।

3. (C) वर्ण
समाज का ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र जैसी चार श्रेणियों में किया गया पारंपरिक विभाजन वर्ण व्यवस्था कहलाता है। यह प्राचीन सामाजिक वर्गीकरण वैदिक काल के दौरान गुणों और कर्तव्यों के आधार पर विकसित हुआ था। यह व्यवस्था समाज के विभिन्न वर्गों के सामाजिक उत्तरदायित्वों और उनके स्थान को निर्धारित करती थी। भारतीय इतिहास और धार्मिक ग्रंथों में वर्ण को सामाजिक संगठन का एक व्यापक अखिल भारतीय ढांचा माना गया है।

4. (D) उपरोक्त सभी
प्राचीन भारतीय समाज में वर्ण व्यवस्था की चार मुख्य श्रेणियों के अलावा एक पाँचवीं श्रेणी भी अस्तित्व में थी जिसे 'पंचम' कहा जाता था। इसमें उन लोगों को शामिल किया गया था जो मुख्य सामाजिक ढाँचे से बाहर थे। इनमें विदेशी, युद्धों में पराजित लोग, दास और समाज से निष्कासित व्यक्तियों को रखा जाता था। यह श्रेणी भारतीय सामाजिक स्तरीकरण की कठोरता और ऐतिहासिक रूप से प्रचलित भेदभावपूर्ण स्वरूप को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

5. (C) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
वर्ण को अखिल भारतीय स्तर पर एक आदर्श सामूहिक वर्गीकरण के रूप में समझा जाता है, जबकि जाति एक क्षेत्रीय या स्थानीय उप-वर्गीकरण के रूप में कार्य करती है। वर्ण व्यवस्था के चार विभाग पूरे देश में समान रूप से मान्य रहे हैं, परंतु जातियों की संख्या और उनकी प्रस्थिति अलग-अलग क्षेत्रों में समय के साथ बदलती रहती है। ये दोनों प्रणालियाँ मिलकर भारतीय समाज के सूक्ष्म और व्यापक ढांचे का निर्माण करती हैं।

6. (B) तीन हजार साल
भारतीय समाज में जाति व्यवस्था की जड़ें अत्यंत प्राचीन मानी जाती हैं और इसकी उत्पत्ति का सुनिश्चित काल लगभग तीन हजार वर्ष पुराना है। उत्तर-वैदिक युग के दौरान यह व्यवस्था अपनी प्रारंभिक वर्ण संरचना से विकसित होकर अधिक जटिल और कठोर होने लगी थी। समय के साथ इसमें जन्म आधारित प्रतिबंध और व्यवसायों का वंशानुगत जुड़ाव बढ़ता गया, जिससे कालांतर में इसने एक स्थाई और अनिवार्य सामाजिक संस्था का रूप ले लिया।

7. (D) वर्गों के बीच स्थान परिवर्तन संभव और सामान्य था।
उत्तर-वैदिक काल में जाति व्यवस्था एक अत्यंत कठोर संस्था के रूप में विकसित हो गई थी जहाँ जन्म से ही व्यक्ति की सामाजिक स्थिति तय होने लगी थी। इस दौर में विभिन्न वर्गों के बीच स्थान परिवर्तन पूरी तरह असंभव हो गया था। समाज के नियमों द्वारा इस कठोरता को कड़ाई से लागू किया गया था। व्यवसाय और सामाजिक प्रतिष्ठा पूरी तरह वंशानुगत हो गई थी, जिससे पारंपरिक सामाजिक व्यवस्था में गतिशीलता पूरी तरह समाप्त हो गई।

8. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
जाति व्यवस्था की विशेषताओं में जन्म से निर्धारण का अर्थ है कि व्यक्ति अपनी जाति में पैदा होता है। सजातीय विवाह के नियम के अनुसार विवाह केवल अपनी जाति के भीतर ही हो सकते हैं। खंडात्मक संगठन यह दर्शाता है कि जातियों के भीतर अनेक उप-जातियाँ होती हैं। वहीं वंशानुगत व्यवसाय का अर्थ है कि व्यक्ति अपनी जाति से जुड़े पारंपरिक कार्य को अपनाता है। ये तत्व सामूहिक रूप से जाति के सामाजिक ढांचे को मजबूती प्रदान करते हैं।

9. (C) जाति कभी चुनाव का विषय नहीं होती।
जाति की सदस्यता पूरी तरह जन्म पर आधारित होती है और इसे व्यक्ति की इच्छा या चुनाव से बदला नहीं जा सकता है। एक व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता है, वह जीवनभर उसी का सदस्य बना रहता है। यह व्यवस्था किसी भी व्यक्ति को अपनी पसंद की जाति चुनने या उसे त्यागने की अनुमति नहीं देती है। इस प्रकार जाति एक अनिवार्य और स्थाई सामाजिक पहचान है जिसे किसी भी स्थिति में बदला नहीं जा सकता।

10. (A) अयन्कली
केरल में दलितों और निम्न जातियों के अधिकारों के लिए अयन्कली ने महत्वपूर्ण संघर्ष किया था। उनके नेतृत्व में हुए आंदोलनों ने सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध आवाज उठाई और दलितों को सार्वजनिक सड़कों पर चलने का अधिकार

दिलवाया। उन्होंने शिक्षा और सामाजिक समानता के लिए निरंतर प्रयास किए। उनके कार्यों ने केरल के सामाजिक सुधारों के इतिहास में दलित चेतना को एक नई और मजबूत पहचान दी, जिससे समाज में व्यापक बदलाव आए।

11. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
जाति समूह अपनी प्रकृति में सजातीय होते हैं क्योंकि इस व्यवस्था के अंतर्गत विवाह संबंधी नियम अत्यंत कठोर और सीमित होते हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से सजातीय विवाह का अर्थ अपनी ही जाति के सदस्यों के भीतर विवाह करना है। यह प्रक्रिया जाति की शुद्धता और उसकी विशिष्ट पहचान को बनाए रखने का एक प्रमुख साधन मानी जाती है। इससे जातीय सीमाओं का उल्लंघन करना वर्जित होता है, जिससे समूह की सजातीयता बनी रहती है।

12. (B) जातियों का उप-जातियों और उप-उप-जातियों में आंतरिक विभाजन।
जाति व्यवस्था में खंडात्मक संगठन का तात्पर्य समाज के एक ऐसे जटिल विभाजन से है जहाँ प्रत्येक जाति स्वयं कई उप-जातियों और छोटे समूहों में बँटी होती है। यह आंतरिक विभाजन सामाजिक संबंधों, विवाह के नियमों और खान-पान की मर्यादाओं को और अधिक सूक्ष्म बनाता है। इस व्यवस्था के कारण जातियों के भीतर भी एक अलग प्रकार का स्तरीकरण पाया जाता है, जो भारतीय समाज की विविधता और विखंडित स्वरूप को गहराई से प्रदर्शित करता है।

13. (C) वे जन्म आधारित, वंशानुगत तथा पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित थे।
जाति व्यवस्था में पारंपरिक रूप से व्यवसायों की प्रकृति पूरी तरह जन्म आधारित और वंशानुगत रही है। प्रत्येक जाति एक विशेष कार्य या पेशे से जुड़ी होती थी, जिसे पिता से पुत्र को हस्तांतरित किया जाता था। व्यक्ति के पास अपना व्यवसाय चुनने की कोई स्वतंत्रता नहीं थी और उसे अपनी जाति के लिए निर्धारित कार्यों का ही पालन करना पड़ता था। यह श्रम विभाजन समाज में स्थिरता और व्यावसायिक विशेषज्ञता बनाए रखने के लिए बनाया गया था।

14. (D) 1, 2, 3 और 4 सभी
जाति व्यवस्था दो विरोधाभासी सिद्धांतों के मिश्रण पर आधारित है जिसमें एक ओर भिन्नता और अलगाव है, तो दूसरी ओर संपूर्णता और अधिक्रम विद्यमान है। प्रत्येक जाति को दूसरी जाति से अलग और विशिष्ट रखने का प्रयास किया जाता है। इसके बावजूद, सभी जातियाँ एक समग्र सामाजिक व्यवस्था के भीतर एक निश्चित ऊंच-नीच के क्रम में जुड़ी होती हैं। यह व्यवस्था समाज में एक साथ विविधता और कठोर श्रेणीबद्ध नियंत्रण को बनाए रखने का कार्य करती है।

15. (A) सत्यशोधक समाज
जोतिराव गोविन्दराव फुले एक महान समाज सुधारक थे जिन्होंने वर्ष 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना की थी। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य शूद्रों और अति-शूद्रों को सामाजिक अन्याय और जातिवादी भेदभाव से मुक्ति दिलाना था। उन्होंने शिक्षा के माध्यम से दलित वर्गों में आत्म-सम्मान की चेतना जागृत करने और उन्हें मानवीय गरिमा दिलाने का प्रयास किया। उनके क्रांतिकारी कार्यों ने भारतीय समाज सुधार आंदोलनों को एक नई और प्रभावशाली दिशा प्रदान की।

16. (B) 'शुद्धता' और 'अशुद्धता'
जाति की अधिक्रमित व्यवस्था धार्मिक और कर्मकांडीय रूप से 'शुद्धता' और 'अशुद्धता' की अवधारणाओं पर टिकी है। इस सिद्धांत के अनुसार, कुछ जातियों को उनके कार्यों और जीवनशैली के आधार पर पवित्र माना जाता है, जबकि कुछ को अपवित्र श्रेणी में रखा जाता है। यह धारणा विभिन्न समूहों के बीच सामाजिक दूरी, खान-पान के नियमों और शारीरिक स्पर्श के निषेध को निर्धारित करती है। यही विचार भारतीय समाज में ऊंच-नीच के कठोर ढांचे का मूल आधार बना रहा है।

17. (B) प्रत्येक जाति का व्यवस्था में स्थान तय था।
पारंपरिक जाति व्यवस्था में जातियों के बीच आपसी सहयोग की भावना इसलिए बनी रहती थी क्योंकि प्रत्येक जाति का सामाजिक और आर्थिक स्थान पूर्व-निर्धारित था। चूंकि प्रत्येक समूह का व्यवसाय और भूमिका निश्चित थी, इसलिए उनके बीच संसाधनों के लिए कोई प्रत्यक्ष प्रतिस्पर्धा नहीं होती थी। यह व्यवस्था एक प्रकार के कार्यात्मक एकीकरण को बढ़ावा देती थी, जहाँ सभी जातियाँ अपनी सीमाओं में रहकर समाज के सुचारु संचालन में योगदान देती थीं, जिससे संघर्ष की संभावना कम थी।

18. (A) देश पर अधिक कुशलतापूर्वक शासन करने की युक्ति सीखने हेतु।
औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश प्रशासकों ने भारतीय जाति व्यवस्था की जटिलताओं को समझने का प्रयास अपनी शासन व्यवस्था को मजबूत करने के लिए किया था। उनका मानना था कि समाज के आंतरिक विभाजनों को जानकर वे अधिक कुशलतापूर्वक नियंत्रण और प्रशासन कर सकेंगे। इस उद्देश्य हेतु उन्होंने विभिन्न सर्वेक्षणों और नृजातीय अध्ययनों का सहारा लिया। यह ज्ञान ब्रिटिश सरकार के लिए 'फूट डालो और राज करो' की नीति को लागू करने में भी सहायक सिद्ध हुआ था।

19. (C) 1860 के दशक में
भारत में जनगणना का कार्य सर्वप्रथम 1860 के दशक में शुरु किया गया था। यह ब्रिटिश शासन की एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक पहल थी जिसका उद्देश्य जनसंख्या के विभिन्न पहलुओं का डेटा एकत्रित करना था। हालांकि, यह शुरुआती प्रयास सीमित थे, लेकिन इन्होंने भविष्य की व्यवस्थित जनगणनाओं के लिए एक ठोस आधार तैयार किया। इसी समय से सामाजिक समूहों और उनकी जातियों के बारे में सांख्यिकीय जानकारी प्राप्त करने की प्रक्रिया को आधिकारिक रूप से गति मिली थी।

20. (D) 1881 से
भारत में ब्रिटिश सरकार द्वारा नियमित रूप से प्रति दस वर्ष के अंतराल पर जनगणना कराने की व्यवस्थित परंपरा 1881 से

प्रारंभ हुई। इस प्रक्रिया ने भारतीय समाज की जनसांख्यिकी को समझने के लिए एक वैज्ञानिक और सांख्यिकीय ढांचा प्रदान किया। जनगणना के माध्यम से जातियों, धर्मों और व्यवसायों के विस्तृत आँकड़े जुटाए गए। तब से लेकर आज तक, यह दशकीय अभ्यास देश की नीतियों के निर्माण और सामाजिक-आर्थिक नियोजन के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधार बना हुआ है।

21. (C) सावित्री बाई फुले
सावित्री बाई फुले ने अपना पूरा जीवन समाज के वंचित वर्गों, विशेषकर शूद्रों और महिलाओं की शिक्षा के लिए समर्पित कर दिया। उन्होंने अपने पति के साथ मिलकर देश में बालिका शिक्षा की नींव रखी। समाज सेवा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता इतनी गहरी थी कि प्लेग की महामारी के दौरान बीमारों की सेवा करते हुए वे स्वयं संक्रमित हो गईं और उनकी मृत्यु हो गई। उनके साहसी संघर्ष ने भारतीय महिला आंदोलन और दलित चेतना को सदैव प्रेरित किया है।

22. (B) हरबर्ट रिजले
वर्ष 1901 की जनगणना हरबर्ट रिजले के निर्देशन में संपन्न हुई थी, जो जाति व्यवस्था के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए मील का पत्थर मानी जाती है। रिजले ने जातियों के सामाजिक अधिक्रम और उनकी प्रस्थिति के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्र करने पर विशेष जोर दिया। इस जनगणना ने जातिगत पहचान को आधिकारिक रूप से प्रलेखित किया, जिससे विभिन्न समूहों के बीच अपनी सामाजिक स्थिति को ऊँचा दिखाने की प्रतिस्पर्धा शुरू हुई। इसने भारतीय सामाजिक संरचना को स्थाई रूप से प्रभावित किया।

23. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश सरकार द्वारा की गई जातीय गणना और आधिकारिक अभिलेखन ने जाति संस्था के स्वरूप को अधिक कठोर बना दिया। जनगणना से पहले जातियों की पहचान अपेक्षाकृत लचीली थी, परंतु आधिकारिक सूची में नाम दर्ज होने के बाद उनमें अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करने की होड़ मच गई। इस प्रक्रिया ने जाति व्यवस्था को एक नई राजनीतिक और सामाजिक पहचान प्रदान की, जिससे वह आधुनिक संदर्भ में अधिक संगठित और मुखर होकर उभरी।

24. (A) 1935 का भारत सरकार अधिनियम
'अनुसूचित जनजातियाँ' और 'अनुसूचित जातियाँ' जैसे संवैधानिक शब्द सर्वप्रथम 1935 के भारत सरकार अधिनियम के माध्यम से अस्तित्व में आए। इस कानून के तहत सरकार ने उन वर्गों की एक विशेष सूची तैयार की जो सामाजिक और आर्थिक रूप से अत्यंत पिछड़े और भेदभाव के शिकार थे। इसका उद्देश्य इन समूहों को प्रशासनिक संरक्षण और विशेष अधिकार प्रदान करना था। स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान ने भी इन श्रेणियों को मान्यता देकर उनके उत्थान हेतु विशेष प्रावधान किए।

25. (C) जातीय अधिक्रम के निचले स्तर पर स्थित भेदभाव की शिकार जातियाँ
'अनुसूचित जातियों' की श्रेणी में उन समूहों को शामिल किया गया जो पारंपरिक जातीय अधिक्रम में सबसे निचले स्तर पर स्थित थे और सदियों से सामाजिक भेदभाव व अस्पृश्यता के शिकार रहे थे। इन जातियों को मुख्यधारा के समाज से अलग रखा गया था और उन्हें बुनियादी अधिकारों से वंचित किया गया था। सरकार ने उनकी ऐतिहासिक वंचना को स्वीकार करते हुए उन्हें विशेष विधिक सुरक्षा और उत्थान के अवसर प्रदान करने के लिए इस विशिष्ट वर्ग में वर्गीकृत किया।

26. (C) केवल 1, 2 और 3
सावित्री बाई फुले आधुनिक भारत की पहली महिला शिक्षिका और समाज सुधारक थीं। उन्होंने पुणे में बालिकाओं के लिए पहला विद्यालय स्थापित किया और समाज के वंचित वर्गों के लिए रात्रि पाठशालाएं शुरू कीं। उनका मुख्य लक्ष्य केवल उच्च वर्ग नहीं, बल्कि दलितों, किसानों और मजदूरों को शिक्षित करना था। उन्होंने सामाजिक रूढ़ियों का कड़ा विरोध किया और शिक्षा को मुक्ति का साधन माना। उनके योगदान ने भारतीय शिक्षा व्यवस्था और महिला सशक्तिकरण की दिशा बदल दी।

27. (C) पेरियार (ई. वी. रामास्वामी नायकर)
दक्षिण भारत में निम्न जाति आंदोलन के सबसे प्रभावशाली नेता के रूप में ई. वी. रामास्वामी नायकर, जिन्हें 'पेरियार' के नाम से जाना जाता है, प्रसिद्ध हैं। उन्होंने आत्म-सम्मान आंदोलन के माध्यम से लोगों को स्वतंत्रता, तर्कवाद और समानता के मूल्यों के प्रति जागरूक किया। उन्होंने जातिवाद और ब्राह्मणवादी वर्चस्व के विरुद्ध एक सशक्त वैचारिक लड़ाई लड़ी। उनके विचारों ने दक्षिण भारतीय राजनीति और समाज में एक क्रांतिकारी बदलाव की नींव रखी, जो आज भी अत्यंत प्रासंगिक है।

28. (B) महात्मा जोतिबा फुले और बाबा साहेब अंबेडकर
पश्चिमी भारत में 19वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और 20वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में दलितों को संगठित करने का मुख्य श्रेय जोतिबा फुले और डॉ. बी.आर. अंबेडकर को जाता है। फुले ने सत्यशोधक समाज के माध्यम से शिक्षा और जागरूकता का प्रसार किया, जबकि अंबेडकर ने कानूनी और राजनीतिक संघर्ष के जरिए दलितों को अधिकार दिलाए। इन दोनों महापुरुषों ने जाति आधारित शोषण के विरुद्ध एक सशक्त मंच तैयार किया, जिससे देश में सामाजिक न्याय की नींव और अधिक मजबूत हुई।

29. (C) 1920 के दशक से
महात्मा गांधी और बाबा साहेब अंबेडकर दोनों ने 1920 के दशक से अस्पृश्यता और जातिवाद के विरुद्ध अपने संगठित आंदोलन और अभियान शुरू कर दिए थे। गांधीजी ने 'हरिजन' शब्द का प्रयोग कर सामाजिक शुद्धि पर बल दिया, जबकि अंबेडकर ने दलितों के राजनीतिक अधिकारों और स्वाभिमान के लिए संघर्ष किया। इस कालखंड ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के भीतर सामाजिक सुधारों को एक अनिवार्य मुद्दा बना दिया,

जिससे स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संवैधानिक प्रावधानों का मार्ग पूरी तरह प्रशस्त हुआ।

30. (D) उपरोक्त सभी।
स्वतंत्रता के बाद भारतीय राज्य ने जाति प्रथा के उन्मूलन के लिए संवैधानिक प्रतिबद्धता जताई, परंतु व्यवहार में इसके आर्थिक आधार को कमजोर करने में पूर्ण सफलता नहीं मिली। राज्य ने अस्पृश्यता को कानूनन अपराध घोषित किया, फिर भी कई बार जातीय मुद्दों के प्रति उपेक्षा का दृष्टिकोण अपनाया गया जिससे व्यवस्था स्वतः समाप्त नहीं हो सकी। यह विरोधाभास दर्शाता है कि केवल कानूनी प्रावधानों से गहरी जड़ों वाली जाति व्यवस्था को पूरी तरह समाप्त करना एक अत्यंत चुनौतीपूर्ण और जटिल कार्य है।

31. (A) श्री नारायण गुरु
केरल के महान समाज सुधारक श्री नारायण गुरु ने समाज में व्याप्त भेदभाव को मिटाने के लिए 'सबके लिए एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर' का क्रांतिकारी नारा दिया। उन्होंने मानवता को सर्वोपरि मानते हुए जातिगत संकीर्णताओं से ऊपर उठने का संदेश दिया। उन्होंने निम्न जातियों के लिए मंदिरों का निर्माण कराया और शिक्षा को सशक्तिकरण का मुख्य हथियार माना। उनके आध्यात्मिक और सामाजिक उपदेशों ने दक्षिण भारत में सामाजिक समरसता की एक नई लहर पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

32. (B) जाति का कोई ध्यान नहीं रखा जाता था, सिवाय अनुसूचित जातियों/जनजातियों के आरक्षण के।
स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने सार्वजनिक रोजगार के मामले में एक धर्मनिरपेक्ष और योग्यता-आधारित नीति अपनाई, जिसमें सामान्यतः जाति के आधार पर कोई भेदभाव नहीं किया जाता था। हालांकि, ऐतिहासिक रूप से वंचित अनुसूचित जातियों और जनजातियों के सामाजिक उत्थान के लिए आरक्षण की विशेष व्यवस्था की गई। इसका उद्देश्य समाज के सबसे पिछड़े वर्गों को शासन और प्रशासन में प्रतिनिधित्व प्रदान करना था। अन्य सभी पदों के लिए योग्यता ही भर्ती का प्राथमिक और एकमात्र संवैधानिक आधार बनी रही।

33. (A) 1, 3, 4, 2
ऐतिहासिक घटनाओं के क्रम में सबसे पहले 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना हुई। इसके बाद 1881 में भारत में नियमित दशकीय जनगणना की शुरुआत हुई। 1920 के दशक में महात्मा गांधी और डॉ. अंबेडकर द्वारा अस्पृश्यता विरोधी आंदोलन सक्रिय हुए। अंत में, 1935 का भारत सरकार अधिनियम पारित किया गया जिसने संवैधानिक ढांचे को आकार दिया। यह कालानुक्रम दर्शाता है कि सामाजिक सुधारों के प्रयास जनगणना और विधायी परिवर्तनों के साथ-साथ एक निरंतर और समानांतर प्रक्रिया के रूप में चलते रहे।

34. (A) इसने नए रोजगार के अवसर पैदा किए जिनके लिए कोई जातीय नियम नहीं थे।
आधुनिक उद्योगों और नगरीकरण ने जाति व्यवस्था की कठोरता को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। शहरों में विकसित हुए नए व्यवसायों और औद्योगिक नौकरियों में चयन का आधार जाति के बजाय योग्यता और कौशल बन गया। कारखानों और कार्यालयों में अलग-अलग जातियों के लोग एक साथ काम करने लगे, जिससे पारंपरिक छुआछूत और सामाजिक दूरी के नियम धीरे-धीरे कमजोर पड़ने लगे। नगरीय जीवन की गुमनामी ने भी व्यक्ति को उसकी जातीय पहचान से कुछ हद तक मुक्ति प्रदान की।

35. (C) जाति और नातेदारी के आधार पर।
प्रारंभिक दौर में मुंबई और कोलकाता जैसे औद्योगिक केंद्रों में श्रमिकों की भर्ती अक्सर जाति और नातेदारी के नेटवर्क के माध्यम से होती थी। मिलों के जॉबर या ठेकेदार अपनी ही जाति या गाँव के लोगों को काम पर रखना पसंद करते थे। इससे शहरी उद्योगों के भीतर भी जातीय समूहों का जमावड़ा हो गया और कार्यस्थलों पर अनौपचारिक रूप से जातीय पहचान बनी रही। हालांकि यह आधुनिक उद्योग थे, लेकिन सामाजिक संबंधों के पुराने ढांचे ने भर्ती की प्रक्रिया को गहराई से प्रभावित किया।

36. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
भारतीय समाजशास्त्र में एम. एन. श्रीनिवास ने संस्कृतीकरण और प्रबल-जाति जैसी महत्वपूर्ण संकल्पनाएं प्रदान कीं, जो सामाजिक गतिशीलता को समझने में सहायक हैं। लुई ड्यूमो ने अपनी पुस्तक 'होमो हेरारकिकस' में जाति के अधिक्रम की शास्त्रीय व्याख्या की है। वहीं, जोतिराव फुले ने सत्यशोधक समाज के माध्यम से निम्न वर्गों के उत्थान का मार्ग प्रशस्त किया। ये सभी विद्वान और उनकी अवधारणाएं भारतीय सामाजिक संरचना के विविध आयामों, संघर्षों और परिवर्तनों को समझने के लिए अत्यंत अनिवार्य और आधारभूत मानी जाती हैं।

37. (C) यह प्रक्रिया है जिसमें निम्न जातियाँ उच्च जातियों के कर्मकांडों का अनुकरण करती हैं।
एम. एन. श्रीनिवास द्वारा दी गई संस्कृतीकरण की संकल्पना वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से कोई निम्न या मध्य जाति किसी उच्च या 'द्विज' जाति के रीति-रिवाजों, कर्मकांडों और जीवनशैली को अपनाती है। इस अनुकरण का मुख्य उद्देश्य सामाजिक अधिक्रम में अपनी स्थिति को ऊँचा उठाना और उच्च वर्ग की प्रस्थिति प्राप्त करना होता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि जाति व्यवस्था पूरी तरह स्थिर नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक गतिशीलता के लिए सांस्कृतिक प्रयास निरंतर होते रहते हैं।

38. (B) वे सघन जनसंख्या वाली जातियाँ जिन्हें भूमि सुधारों से भू-स्वामित्व के अधिकार मिले।
'प्रबल जाति' शब्द उन मध्यवर्ती जातियों के लिए प्रयुक्त होता है जिनकी जनसंख्या किसी क्षेत्र में अधिक होती है और जिन्हें स्वतंत्रता के बाद हुए भूमि सुधारों से मालिकाना हक प्राप्त हुआ। इन जातियों ने अपनी आर्थिक मजबूती और संख्यात्मक बल का उपयोग राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए किया। चूँकि इनके पास कृषि योग्य भूमि और वोट बैंक दोनों थे, इसलिए वे ग्रामीण भारत के सामाजिक और राजनीतिक जीवन में अत्यंत प्रभावशाली बनकर उभरीं, जिससे पुरानी सत्ता का संतुलन बदल गया।

39. (D) बंगाल के ब्राह्मण
बंगाल के ब्राह्मण पारंपरिक रूप से शिक्षित और उच्च प्रस्थिति वाले रहे हैं, परंतु वे 'प्रबल जाति' की उस श्रेणी में नहीं आते जिन्हें भूमि सुधारों और सघन जनसंख्या के कारण ग्रामीण सत्ता मिली हो। प्रबल जातियों में आमतौर पर वे कृषक समूह शामिल हैं जिन्होंने भू-स्वामित्व के जरिए आर्थिक और राजनीतिक प्रभुत्व हासिल किया है, जैसे यादव या मराठा। ब्राह्मणों का प्रभाव मुख्य रूप से उनके धार्मिक और बौद्धिक वर्चस्व पर आधारित रहा है, न कि कृषि आधारित भूमि संपत्ति या विशाल संख्यात्मक बल पर।

40. (A) उच्च जातियों, नगरीय मध्यम और उच्च वर्गों के लिए
समकालीन शहरी भारत में उच्च जातियों और समृद्ध मध्यम वर्ग के लिए जाति व्यवस्था अक्सर 'अदृश्य' हो जाती है क्योंकि उनकी सामाजिक स्थिति अब शिक्षा, पेशा और आय जैसे आधुनिक कारकों से तय होती है। इन समूहों को अपनी पहचान के लिए जाति का सहारा लेने की आवश्यकता नहीं पड़ती, और वे अक्सर यह मानते हैं कि समाज अब जाति-मुक्त हो गया है। हालांकि, यह उनके विशेषाधिकारों का परिणाम है, क्योंकि उनके लिए जाति अब सामाजिक भेदभाव का कारण नहीं रह गई है।

41. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
स्वतंत्रता के बाद की विकास नीतियों से लाभान्वित होने वाले समूहों के लिए जाति का महत्व इसलिए कम हो गया है क्योंकि उनकी पुरानी जातीय प्रस्थिति ने ही उन्हें आधुनिक अवसर प्राप्त करने में मदद की। उनकी उच्च सामाजिक पृष्ठभूमि ने उन्हें बेहतर शिक्षा और आर्थिक संसाधन उपलब्ध कराए, जिससे वे आज के प्रतिस्पर्धी युग में सफल हो सके। अब वे अपनी सफलता का श्रेय केवल अपनी योग्यता को देते हैं, जबकि वास्तव में उनकी जातीय पूँजी ने उनकी प्रगति की आधारशिला रखी थी।

42. (A) क्योंकि जातीय पहचान उनकी सामूहिक परिसंपत्तियों में से एक है और वे भेदभाव के शिकार हैं।
अनुसूचित जातियों और जनजातियों के लिए जाति आज भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण और 'दृश्य' वास्तविकता है क्योंकि वे आज भी सामाजिक भेदभाव और वंचना का सामना करते हैं। उनकी जातीय पहचान उनके अधिकारों की मांग करने और सामूहिक रूप से संगठित होने का एक प्रमुख जरिया है। आरक्षण जैसी नीतियां भी उन्हें अपनी जाति के प्रति जागरूक रखती हैं। जहाँ उच्च वर्ग के लिए जाति एक गौण विषय हो सकता है, वहीं दलितों के लिए यह उनके संघर्ष और अस्तित्व की पहचान बनी हुई है।

43. (D) एम. एन. श्रीनिवास
'द रिमेम्बरड विलेज' प्रसिद्ध भारतीय समाजशास्त्री एम. एन. श्रीनिवास की एक कालजयी कृति है। इस पुस्तक में उन्होंने कर्नाटक के रामपुरा गाँव के सूक्ष्म सामाजिक जीवन और वहाँ की जातिगत संरचना का गहन नृजातीय विवरण प्रस्तुत किया है। इसे ग्रामीण समाजशास्त्र और मानवविज्ञान के क्षेत्र में एक उत्कृष्ट अध्ययन माना जाता है क्योंकि यह गाँव के भीतर होने वाले परिवर्तनों, शक्ति संबंधों और परंपराओं को बड़ी बारीकी से चित्रित करता है। यह पुस्तक शोधकर्ताओं के लिए आज भी अध्ययन का एक प्रमुख स्रोत है।

44. (B) उनके समुदाय कठोर रूप से वर्गों में बँटे हुए थे।
जनजातियों की नकारात्मक परिभाषा के अनुसार, उनमें जाति व्यवस्था की तरह कोई कठोर श्रेणीबद्ध विभाजन या वर्ग संरचना नहीं पाई जाती थी। वे आमतौर पर समतावादी समाज माने जाते थे जहाँ संसाधनों पर पूरे समुदाय का सामूहिक अधिकार होता था। उनमें शुद्धता और अशुद्धता जैसी जटिल धार्मिक धारणाएं भी मौजूद नहीं थीं। जनजातियाँ अपने सरल सामाजिक और राजनीतिक ढांचे के कारण मुख्यधारा के समाज से भिन्न थीं, जहाँ ऊंच-नीच के स्थान पर सामुदायिक एकता और समानता का भाव अधिक प्रबल था।

45. (C) आजीविका का साधन
जनजातियों के वर्गीकरण में आजीविका के साधनों को एक 'अर्जित लक्षण' माना जाता है, न कि 'स्थायी लक्षण'। स्थायी लक्षणों के अंतर्गत उनका विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र, बोली जाने वाली भाषा और शारीरिक या प्रजातीय विशिष्टताएँ शामिल होती हैं। आजीविका समय और परिस्थितियों के साथ बदल सकती है, जैसे शिकारी-संग्राहक से खेतिहर मजदूर बनना। इसके विपरीत, भौगोलिक जड़ें और भाषाई पहचान लंबे समय तक स्थिर रहती हैं, जो किसी जनजातीय समुदाय की मौलिक और प्राथमिक पहचान को परिभाषित करने में आधारभूत भूमिका निभाती हैं।

46. (D) 1, 2, 3, 4 और 5 सभी
भारत की जनजातीय जनसंख्या का वितरण अत्यंत विविधतापूर्ण है, जिसमें लगभग 85% आबादी मध्य भारत के राज्यों में निवास करती है। पूर्वोत्तर राज्यों में जनजातीय घनत्व बहुत अधिक है, जहाँ कई राज्यों में यह 60% से भी ऊपर है। शेष भारत में इनका अनुपात तुलनात्मक रूप से कम है। यह क्षेत्रीय वितरण स्पष्ट करता है कि जनजातियाँ कुछ विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों में सघन रूप से बसी हुई हैं। यह विविधता उनकी संस्कृति, भाषा और विकास की विभिन्न स्थितियों को गहराई से प्रभावित करती है।

47. (A) चार
भाषाई दृष्टिकोण से भारतीय जनजातियों को मुख्य रूप से चार प्रमुख श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है। इनमें भारतीय-आर्य, द्रविड़, आस्ट्रिक और तिब्बती-बर्मी भाषा परिवार शामिल हैं। यह भाषाई विविधता उनके विभिन्न मूल और ऐतिहासिक प्रवासों को दर्शाती है। जहाँ कुछ जनजातियाँ मुख्यधारा की क्षेत्रीय भाषाएँ बोलती हैं, वहीं कई समूह अपनी विशिष्ट बोलियों को संरक्षित किए हुए हैं। यह भाषाई वर्गीकरण जनजातीय समुदायों की सांस्कृतिक पहचान और उनके ऐतिहासिक विकास को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करता है।

48. (B) आस्ट्रिक और तिब्बती-बर्मी भाषा समूह केवल जनजातीय लोगों द्वारा ही बोले जाते हैं।
यह कहना पूरी तरह सही नहीं है कि आस्ट्रिक और तिब्बती-बर्मी भाषाएं केवल जनजातीय लोगों द्वारा ही बोली जाती हैं, हालांकि इनका अधिकांश प्रयोग उन्हीं के बीच है। आस्ट्रिक परिवार की भाषाएं पूर्णतः जनजातीय हैं, जबकि द्रविड़ और भारतीय-आर्य भाषाएं जनजातीय और गैर-जनजातीय दोनों समुदायों द्वारा साझा की जाती हैं। भाषाई सीमाएं हमेशा नृजातीय सीमाओं के साथ पूरी तरह मेल नहीं खातीं। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान और ऐतिहासिक अंतःक्रियाओं का परिणाम है जिसने भाषाई परिदृश्य को काफी जटिल बना दिया है।

49. (B) कम-से-कम दस लाख
भारत में कुछ जनजातीय समुदाय जनसंख्या के मामले में बहुत बड़े हैं, जैसे गोंड, भील और संथाल। इनमें से प्रत्येक की व्यक्तिगत जनसंख्या कम से कम दस लाख या उससे भी अधिक है। ये बड़ी जनजातियाँ विस्तृत भौगोलिक क्षेत्रों में फैली हुई हैं और इनका अपना समृद्ध इतिहास व संगठित सामाजिक ढांचा है। इनके बड़े आकार के कारण ये राजनीतिक और सामाजिक रूप से भी काफी प्रभावशाली हैं। यह तथ्य दर्शाता है कि जनजातियाँ केवल छोटे और अलग-थलग समूह नहीं, बल्कि विशाल जनसमूह भी हैं।

50. (A) 8.6%
2011 की आधिकारिक जनगणना के आँकड़ों के अनुसार, भारत की कुल जनसंख्या में जनजातीय आबादी का हिस्सा लगभग 8.6% है। यह एक महत्वपूर्ण अनुपात है जो देश की विविधतापूर्ण जनसांख्यिकीय संरचना को उजागर करता है। जनजातीय समूह देश के विभिन्न हिस्सों में फैले हुए हैं और उनके पास अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत है। सरकार द्वारा उनके कल्याण और विकास के लिए बनाई जाने वाली नीतियों और बजटीय आवंटन में इस जनसंख्या प्रतिशत को एक मुख्य आधार के रूप में प्रयोग किया जाता है।

51. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
जनजातियों का शारीरिक और भाषाई वर्गीकरण उनकी उत्पत्ति के विविध स्रोतों को स्पष्ट करता है। नीग्रिटो और मंगोलॉइड जैसे लक्षण केवल जनजातीय समूहों में पाए जाते हैं, जबकि द्रविड़ और आर्य श्रेणियाँ दोनों समूहों में साझा हैं। आस्ट्रिक भाषाएं पूर्णतः जनजातीय पहचान से जुड़ी हैं, जबकि तिब्बती-बर्मी भाषाएं मुख्य रुप से इसी समूह द्वारा बोली जाती हैं। यह जटिल वर्गीकरण दर्शाता है कि भारतीय जनजातियाँ कोई एकरूप समूह नहीं हैं, बल्कि वे विभिन्न प्रजातीय और भाषाई धाराओं का एक समृद्ध संगम हैं।

52. (D) आजीविका के साधन और हिंदू समाज में समावेश की सीमा, दोनों
जनजातियों के वर्गीकरण में 'अर्जित लक्षणों' का निर्धारण दो मुख्य आधारों पर किया जाता है। पहला उनकी आजीविका के साधन हैं, जैसे वे शिकारी हैं, किसान हैं या औद्योगिक श्रमिक हैं। दूसरा आधार हिंदू समाज के साथ उनके संपर्क और उसमें शामिल होने की सीमा है। ये लक्षण जन्मजात नहीं होते, बल्कि समय के साथ बाहरी प्रभावों और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के कारण विकसित होते हैं। यह वर्गीकरण जनजातियों के आधुनिक समाज के साथ जुड़ाव और उनकी बदलती जीवनशैली को समझने में मदद करता है।

53. (C) सरकारी अधिकारी और राजनेता
आजीविका के आधार पर जनजातियों का पारंपरिक वर्गीकरण उन्हें मछुआ, खाद्य संग्राहक, शिकारी, झूम खेती करने वाले और बागान श्रमिकों के रूप में विभाजित करता है। सरकारी अधिकारी और राजनेता जैसे आधुनिक पेशे इस पारंपरिक वर्गीकरण की श्रेणियों में शामिल नहीं हैं। हालांकि अब जनजातीय लोग इन आधुनिक क्षेत्रों में भी प्रवेश कर चुके हैं, लेकिन समाजशास्त्रीय अध्ययन में उनके आजीविका संबंधी वर्गीकरण का मूल आधार अभी भी उनकी प्रकृति के साथ जुड़ाव और पारंपरिक कार्य पद्धतियों को ही माना जाता है।

54. (A) क्या जनजातियाँ कृषक समाज का विस्तार हैं या एक भिन्न समुदाय हैं।
1960 के दशक में समाजशास्त्रियों और मानवविज्ञानियों के बीच यह प्रमुख विवाद था कि जनजातियों को जाति आधारित कृषक समाज से अलग माना जाए या उसी का एक पिछड़ा हुआ हिस्सा। कुछ विद्वानों का तर्क था कि जनजातियाँ पूरी तरह अलग-थलग समुदाय हैं, जबकि अन्य उन्हें मुख्यधारा के समाज के निरंतरता के रूप में देखते थे। यह बहस जनजातियों की विशिष्ट पहचान को समझने और उनके लिए उपयुक्त विकास नीतियां तैयार करने के उद्देश्य से अत्यंत महत्वपूर्ण थी, जो आज भी प्रासंगिक है।

55. (D) (A) और (B) दोनों।
कई विद्वानों का मानना है कि जनजातियाँ जाति आधारित समाज से बहुत अलग नहीं हैं, बल्कि वे कृषकों का ही एक सरल रूप हैं। उनके तर्क का आधार यह था कि जनजातियों में संसाधनों का स्वामित्व अक्सर पूरे समुदाय के पास होता है और उनमें स्तरीकरण या ऊंच-नीच की भावना बहुत कम होती है। वे एक समतावादी सामाजिक संरचना का पालन करती हैं जहाँ जातिगत कठोरता का अभाव पाया जाता है। यही कारण है कि उन्हें एक कम जटिल परंतु कृषक समाज के समान माना गया।

56. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
जनजातियों को जातियों से भिन्न मानने का सबसे प्रबल तर्क उनकी धार्मिक और वैचारिक संरचना है। जाति व्यवस्था पूरी तरह 'शुद्धता' और 'अशुद्धता' के कर्मकांडीय नियमों पर आधारित है, जबकि जनजातीय समाजों में इस प्रकार की कोई कट्टर धारणा नहीं पाई जाती। वे प्राकृतिक और सामुदायिक मूल्यों पर अधिक जोर देते हैं। उनके बीच कोई धार्मिक अधिक्रम नहीं होता, जिससे उनकी सामाजिक संरचना जातियों की तुलना में अधिक लचीली और समतावादी बनी रहती है। यही अंतर उन्हें एक विशिष्ट समुदाय बनाता है।

57. (C) बिहार की बिरहोर
बिहार और झारखंड के जंगलों में निवास करने वाली 'बिरहोर' जनजाति एक पारंपरिक शिकारी-संग्राहक समुदाय का प्रमुख उदाहरण है। वे मुख्य रूप से भोजन की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर प्रवास करते हैं और वन उत्पादों पर निर्भर रहते हैं। हालांकि आधुनिक समय में उनके जीवन में बदलाव आए हैं, लेकिन वे आज भी अपनी प्राचीन जीवनशैली के कुछ हिस्सों को बनाए हुए हैं। बिरहोर जैसी छोटी जनजातियाँ मानवविज्ञानियों के लिए आदिम जीवन के तौर-तरीकों को समझने का एक महत्वपूर्ण स्रोत रही हैं।

58. (C) (A) और (B) दोनों।
भारतीय इतिहास में जनजातियों का हिंदू समाज में समावेश अक्सर बाहरी दबावों के कारण हुआ। जब वनों का सफाया किया गया और उन जमीनों पर खेती के लिए बस्तियाँ बसाई गईं, तो जनजातीय लोग मुख्यधारा के संपर्क में आए। इस प्रक्रिया में वे अक्सर भूमिहीन मजदूर या निम्न जाति के रूप में समाज के निचले स्तर पर आत्मसात् हो गए। यह एकीकरण स्वेच्छा के बजाय संसाधनों के छिनने और भौगोलिक परिवर्तनों का परिणाम था, जिसने उनकी पारंपरिक स्वायत्तता और जीवन पद्धति को स्थाई रूप से बदल दिया।

59. (D) क्योंकि वे पहले से विद्यमान राज्यों और राज्येतर समूहों के बीच शोषणात्मक संपर्क के परिणामस्वरूप अस्तित्व में आए।
कुछ आधुनिक समाजशास्त्रियों के अनुसार, जनजातियों को एक 'द्वितीयक प्रघटना' माना जाना चाहिए। उनका तर्क है कि कई समूह जिन्हें हम आज जनजाति कहते हैं, वे वास्तव में आधुनिक राज्यों के विस्तार और उनके साथ हुए शोषणात्मक संपर्कों के कारण इस रूप में उभरे हैं। जंगलों में उनका शरण लेना और अलग-थलग पड़ना एक प्रतिक्रियात्मक प्रक्रिया थी। इस दृष्टिकोण से जनजातीय पहचान कोई आदिम स्थिति नहीं, बल्कि ऐतिहासिक और राजनीतिक संघर्षों की उपज है जिसने उन्हें मुख्यधारा से अलग कर दिया।

60. (B) गढ़ मांडला या चाँदा
मध्य भारत का इतिहास गवाह है कि जनजातीय लोग हमेशा कमजोर नहीं थे; यहाँ गढ़ मांडला और चाँदा जैसे कई शक्तिशाली गोंड राज्यों का अस्तित्व रहा है। इन राज्यों का अपना प्रशासनिक ढांचा, राजस्व व्यवस्था और सैन्य शक्ति थी। ये जनजातीय शासक मध्यकालीन भारत की राजनीति में सक्रिय भूमिका निभाते थे। यह उदाहरण इस धारणा को गलत सिद्ध करता है कि जनजातियाँ हमेशा से ही सभ्यता से दूर और शोषित रही हैं। उनके राज्यों का पतन कालांतर में बाहरी आक्रमणों और उपनिवेशवाद के कारण हुआ।

61. (A) केवल 4
यह कहना गलत है कि आदिवासी लोग हमेशा मैदानी इलाकों के लोगों पर निर्भर रहे हैं। ऐतिहासिक रूप से, आदिवासी समुदायों ने अपनी स्वायत्तता बनाए रखी और वे नमक, हाथी और अन्य बहुमूल्य वन उत्पादों के व्यापार में सक्रिय भागीदार थे। मध्य भारत के गोंड राज्यों और राजपूतों के साथ उनके संबंधों के प्रमाण मिलते हैं। वे एक स्वतंत्र आर्थिक इकाई के रूप में कार्य करते थे। उनकी वर्तमान दयनीय स्थिति आधुनिक औपनिवेशिक नीतियों और संसाधनों के शोषण के बाद पैदा हुई है, न कि यह उनकी मूल प्रकृति है।

62. (D) क्योंकि जनजातीय इलाके देश के खनिज-संपन्न और वनाच्छादित भागों में स्थित थे।
राष्ट्रीय विकास की भारी कीमत जनजातीय लोगों को इसलिए चुकानी पड़ी क्योंकि उनकी ज़मीनें प्राकृतिक संसाधनों और खनिजों से भरपूर थीं। देश की औद्योगिक प्रगति के लिए जब भी बड़े बाँधों, कारखानों या खदानों की आवश्यकता हुई, तो जनजातीय क्षेत्रों को ही इसके लिए चुना गया। इस प्रक्रिया में लाखों आदिवासियों को उनकी पैतृक भूमि से विस्थापित होना पड़ा। विकास का लाभ तो राष्ट्र को मिला, लेकिन बदले में जनजातीय समुदायों को गरीबी, बेघर होने और अपनी संस्कृति खोने की पीड़ा ही प्राप्त हुई।

63. (A) क्योंकि उनके यहाँ समुदाय आधारित सामूहिक स्वामित्व की प्रथा थी।
वनों पर निजी मालिकाना हक और नए वन कानूनों के लागू होने से जनजातीय लोगों पर अत्यंत प्रतिकूल प्रभाव पड़ा। उनकी पारंपरिक व्यवस्था में वन और भूमि पर किसी एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि पूरे समुदाय का सामूहिक अधिकार होता था। निजी संपत्ति की अवधारणा उनके लिए पराई थी। जब सरकार और निजी कंपनियों ने वनों पर नियंत्रण किया, तो आदिवासियों के चराई, शिकार और संग्रहण के अधिकार छीन लिए गए। इससे उनकी पूरी आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था छिन्न-भिन्न हो गई और वे अपनी ही भूमि पर बेगाने हो गए।

64. (B) वहाँ की जनसंख्या में जनजातीय अनुपात कम हो गया।
झारखंड के औद्योगिक क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर हुए विकास का एक नकारात्मक प्रभाव यह हुआ कि वहाँ की कुल जनसंख्या में जनजातीय लोगों का अनुपात तेजी से गिर गया। उद्योगों और खदानों में काम करने के लिए देश के अन्य हिस्सों से बड़ी संख्या में बाहरी लोग आकर बस गए। इसके साथ ही, स्थानीय आदिवासियों का विस्थापन भी हुआ। इस जनसांख्यिकीय बदलाव ने आदिवासियों को अपने ही प्रदेश में अल्पसंख्यक बना दिया और उनके राजनीतिक व सामाजिक प्रभाव को काफी कमजोर कर दिया।

65. (B) त्रिपुरा
त्रिपुरा एक ऐसा राज्य है जहाँ बाहरी प्रवासन के कारण जनजातीय जनसंख्या का अनुपात एक ही दशक में नाटकीय रूप से घटकर आधा रह गया। विभाजन के बाद और बाद के वर्षों में हुई जनसांख्यिकीय उथल-पुथल ने वहाँ के मूल निवासियों को उनकी अपनी भूमि पर हाशिए पर धकेल दिया। इससे जनजातीय और गैर-जनजातीय समूहों के बीच तनाव और संघर्ष भी बढ़ा। यह उदाहरण दर्शाता है कि अनियंत्रित प्रवासन और भूमि पर बढ़ते दबाव से किसी समुदाय की पहचान और अस्तित्व किस प्रकार संकट में पड़ सकते हैं।

66. (A) 1, 2, 3, 4
ऐतिहासिक दृष्टि से सबसे पहले 1860 के दशक में जनगणना के प्रारंभिक प्रयास हुए, जिसके बाद 1901 में रिजले के निर्देशन में महत्वपूर्ण गणना हुई। 1935 के अधिनियम ने इन समूहों को आधिकारिक पहचान दी और अंततः 2000 में झारखंड और छत्तीसगढ़ को जनजातीय पहचान के आधार पर अलग राज्य का दर्जा मिला। यह विकास यात्रा दर्शाती है कि जनजातियों की पहचान सांख्यिकीय आँकड़ों से शुरु होकर एक सशक्त राजनीतिक स्वायत्तता के संघर्ष तक पहुँची है।

67. (C) गैर-जनजातीय जगत की दुर्दमनीय शक्ति का प्रतिरोध एवं विरोध करना।
वर्तमान दौर में अनेक जनजातीय समूह अपनी विशिष्ट पहचान को बचाने के लिए मुखर हो रहे हैं। वे बाहरी दुनिया और राज्य की उन शक्तियों का विरोध कर रहे हैं जो उनके संसाधनों, भूमि और संस्कृति पर अतिक्रमण करती हैं। यह प्रतिरोध उनकी स्वायत्तता की रक्षा और आत्म-सम्मान के लिए है। अब वे केवल मूक दर्शक नहीं हैं, बल्कि अपनी आवाज़ संगठित रूप से उठा रहे हैं। यह संघर्ष उनकी सांस्कृतिक विरासत को आधुनिकता के नकारात्मक प्रभावों से सुरक्षित रखने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

68. (D) एक शिक्षित मध्य वर्ग
आधुनिक शिक्षा और आरक्षण नीतियों के प्रभाव से जनजातीय समुदायों के भीतर धीरे-धीरे एक नया शिक्षित मध्य वर्ग विकसित हो रहा है। यह वर्ग वकालत, चिकित्सा, शिक्षण और प्रशासनिक सेवाओं में अपनी जगह बना रहा है। यही वर्ग अब जनजातीय अधिकारों की लड़ाई में बौद्धिक नेतृत्व प्रदान कर रहा है। हालांकि उनकी संख्या अभी भी कम है, लेकिन इस शिक्षित वर्ग का उदय पारंपरिक जनजातीय समाज के भीतर सामाजिक गतिशीलता और नई राजनीतिक चेतना का एक सकारात्मक संकेत माना जा रहा है।

69. (C) भूमि और वन पर नियंत्रण, तथा नृजातीय-सांस्कृतिक पहचान।
जनजातीय आंदोलनों के केंद्र में हमेशा दो मुख्य विषय रहे हैं: पहला अपनी पारंपरिक भूमि और वनों पर अपना अधिकार बनाए रखना, और दूसरा अपनी विशिष्ट नृजातीय-सांस्कृतिक पहचान की रक्षा करना। बाहरी हस्तक्षेप और विकास परियोजनाओं ने उनके इन दोनों आधारों को संकट में डाल दिया है। यही कारण है कि वे समय-समय पर बड़े आंदोलनों के माध्यम से अपनी स्वायत्तता की मांग करते रहे हैं। ये मुद्दे उनके अस्तित्व और जीवन पद्धति से सीधे तौर पर जुड़े हुए हैं।

70. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारत के विभिन्न राज्यों में प्रबल जातियों का उदय उनकी भू-संपत्ति और संख्यात्मक शक्ति पर आधारित है। उत्तर प्रदेश और बिहार में यादवों ने राजनीतिक रूप से अपनी मजबूत पहचान बनाई है। कर्नाटक में वोक्कलिंग और महाराष्ट्र में मराठों ने भूमि सुधारों का लाभ उठाकर सत्ता में अपनी पकड़ मजबूत की है। गुजरात में पाटीदार समुदाय इसी प्रकार का प्रभुत्व रखता है। ये सभी समूह ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नियंत्रित करते हैं और आधुनिक लोकतांत्रिक राजनीति में निर्णायक भूमिका निभाते हैं।

71. (D) एक सामाजिक संस्था के रूप में और समाज की अन्य संस्थाओं से उसके संबंध के रूप में
समाजशास्त्र में परिवार का अध्ययन दो महत्वपूर्ण आयामों से किया जाता है। प्रथम, इसे एक प्राथमिक सामाजिक संस्था माना जाता है जहाँ मूल्यों का संचार होता है। द्वितीय, इसके आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक संस्थाओं के साथ संबंधों का विश्लेषण किया जाता है। परिवार समाज से अलग-थलग नहीं है, बल्कि यह व्यापक सामाजिक परिवर्तनों से प्रभावित होता है और उन्हें प्रभावित भी करता है। यह दृष्टिकोण परिवार की आंतरिक और बाह्य संरचना के बीच की जटिल अंतःक्रिया को स्पष्ट करता है।

72. (A) मातृवंशीय और पितृवंशीय
वंशानुक्रम के आधार पर परिवारों को मातृवंशीय और पितृवंशीय श्रेणियों में विभाजित किया गया है। पितृवंशीय परिवार में नाम और संपत्ति का हस्तांतरण पिता से पुत्र को होता है, जो दुनिया के अधिकांश समाजों में प्रचलित है। इसके विपरीत, मातृवंशीय परिवार में वंश परंपरा माँ से बेटी की ओर चलती है। यह वर्गीकरण परिवार के भीतर सत्ता के वितरण, उत्तराधिकार के नियमों और सदस्यों की सामाजिक भूमिकाओं को समझने के लिए एक अनिवार्य आधार प्रदान करता है।

73. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
परिवार की संरचना कभी भी स्थाई नहीं रहती, बल्कि इसमें समय के साथ निरंतर बदलाव आते रहते हैं। ये परिवर्तन समाज की आर्थिक स्थितियों, राजनीतिक व्यवस्थाओं और सांस्कृतिक मूल्यों में होने वाले बदलावों के साथ गहराई से जुड़े होते हैं। उदाहरण के लिए, औद्योगिकीकरण के कारण संयुक्त परिवार टूटकर एकल परिवारों में बदल गए। इस प्रकार, परिवार की आंतरिक बनावट बाहरी सामाजिक वातावरण के साथ सामंजस्य बिठाने की प्रक्रिया में लगातार विकसित और परिवर्तित होती रहती है।

74. (A) केवल माता-पिता (दंपति) और उनके बच्चे
एकल या मूल परिवार आधुनिक समाज की एक प्रमुख विशेषता है, जिसमें केवल पति, पत्नी और उनके अविवाहित बच्चे शामिल होते हैं। यह छोटी इकाई होती है जो आमतौर पर आर्थिक और सामाजिक रूप से स्वतंत्र होती है। नगरीकरण और बढ़ती व्यावसायिक गतिशीलता के कारण इस प्रकार के परिवारों की संख्या में काफी वृद्धि हुई है। मूल परिवार में सदस्यों के बीच आपसी संबंध अधिक घनिष्ठ होते हैं, परंतु इसमें विस्तृत परिवार से मिलने वाली पारंपरिक सहायता और सुरक्षा का अभाव होता है।

75. (D) इसमें एक से अधिक युगल (दंपति) होते हैं और अक्सर दो से अधिक पीढ़ियों के लोग एकसाथ रहते हैं।
विस्तृत या संयुक्त परिवार की मुख्य विशेषता इसकी विशाल संरचना है, जहाँ कई पीढ़ियों के सदस्य एक ही छत के नीचे

रहते हैं और एक ही रसोई का भोजन करते हैं। इसमें भाई, उनके परिवार, माता-पिता और दादा-दादी एक साथ मिलकर रहते हैं। यह व्यवस्था न केवल आर्थिक रूप से साझा होती है, बल्कि भावनात्मक और सामाजिक सुरक्षा का भी एक मजबूत आधार प्रदान करती है। भारतीय ग्रामीण समाज में पारंपरिक रूप से संयुक्त परिवार को आदर्श माना गया है।

76. (B) यह किसी भी भारतीय शब्द का अनुवाद नहीं है, बल्कि भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त शब्द इसी का अनुवादित पर्याय है।
समाजशास्त्री आई.पी. देसाई का यह विचार अत्यंत महत्वपूर्ण है कि 'ज्वाइंट फैमिली' शब्द मूलतः अंग्रेजी भाषा की देन है। भारतीय भाषाओं में इसके लिए प्रयुक्त होने वाले शब्द वास्तव में इसी अंग्रेजी शब्दावली के अनुवाद हैं। यह दर्शाता है कि परिवार के इस रूप का वैज्ञानिक अध्ययन और नामकरण औपनिवेशिक काल के दौरान अधिक व्यवस्थित हुआ। हालांकि संयुक्त परिवार की अवधारणा भारत में प्राचीन है, परंतु इसे इस विशेष तकनीकी नाम से पहचान आधुनिक समाजशास्त्रीय अध्ययन के प्रभाव से मिली।

77. (C) वधू के माता-पिता के साथ
आवास के नियमों के अनुसार, पत्नी-स्थानिक समाज में विवाह के पश्चात नवविवाहित जोड़ा वधू के परिवार या उसके माता-पिता के साथ ही रहता है। इस व्यवस्था में परिवार का केंद्र महिला होती है और पुरुष को अपनी पत्नी के घर जाकर बसना पड़ता है। भारत में मेघालय की खासी जनजाति इस प्रकार की पारिवारिक व्यवस्था का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह प्रथा पितृसत्तात्मक समाजों के बिल्कुल विपरीत है और महिलाओं को परिवार व संपत्ति के मामलों में अधिक प्रधानता प्रदान करती है।

78. (D) माँ से बेटी को
उत्तराधिकार के नियमों के तहत, मातृवंशीय समाज में संपत्ति और जायदाद का हस्तांतरण माँ से उसकी बेटी को किया जाता है। इस व्यवस्था में बेटियाँ ही परिवार की संपत्ति की कानूनी वारिस होती हैं और वंश का नाम भी माता के माध्यम से ही चलता है। यह सुनिश्चित करता है कि आर्थिक संसाधन महिलाओं के हाथ में रहें। हालांकि व्यवहार में निर्णय लेने की शक्ति अक्सर मामा या अन्य पुरुष रिश्तेदारों के पास हो सकती है, फिर भी संपत्ति का वैधानिक स्वामित्व महिलाओं के पास ही रहता है।

79. (A) पुरुषों की सत्ता व प्रभुत्व
पितृतंत्रात्मक परिवार वह संरचना है जहाँ निर्णय लेने की शक्ति, अधिकार और सत्ता मुख्य रूप से पुरुषों के हाथों में केंद्रित होती है। इस व्यवस्था में घर का बड़ा पुरुष मुखिया होता है और परिवार के अन्य सभी सदस्य उसके निर्देशों का पालन करते हैं। संपत्ति का अधिकार, धार्मिक अनुष्ठान और सार्वजनिक जीवन में पुरुषों का वर्चस्व बना रहता है। यह व्यवस्था दुनिया के अधिकांश समाजों में गहराई से रची-बसी है और लैंगिक असमानता को बनाए रखने का एक प्रमुख सामाजिक आधार है।

80. (B) मातृतंत्र एक सैद्धांतिक कल्पना है जिसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं है, जबकि मातृवंशीय समाज वास्तव में पाए जाते हैं।
समाजशास्त्र और मानवविज्ञान में मातृतंत्र और मातृवंश के बीच स्पष्ट अंतर किया गया है। मातृतंत्र एक ऐसी स्थिति है जहाँ समाज के हर क्षेत्र में स्त्रियों का पूर्ण शासन और प्रभुत्व हो, परंतु वास्तविक इतिहास में इसके ठोस प्रमाण नहीं मिलते। इसके विपरीत, मातृवंशीय समाज एक वास्तविकता हैं जहाँ वंश और संपत्ति का हस्तांतरण माता की ओर से होता है। ऐसे समाजों में स्त्रियाँ महत्वपूर्ण होती हैं, फिर भी सार्वजनिक सत्ता और निर्णय अक्सर पुरुषों द्वारा ही लिए जाते हैं।

81. (B) स्त्रियाँ माताओं से जायदाद पाती हैं पर उन पर पुरुषों का नियंत्रण और निर्णय अधिकार होता है।
मातृवंशीय समाज की एक रोचक और जटिल वास्तविकता यह है कि यहाँ संपत्ति का मालिकाना हक तो महिलाओं के पास होता है, परंतु उस संपत्ति का प्रबंधन और नियंत्रण अक्सर उनके भाई या मामा जैसे पुरुषों द्वारा किया जाता है। स्त्रियों को आर्थिक सुरक्षा तो मिलती है, लेकिन वास्तविक अधिकार और सामाजिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में पुरुषों की भूमिका अभी भी प्रधान बनी रहती है। यह स्थिति दर्शाती है कि मातृवंश का अर्थ अनिवार्य रूप से पूर्ण महिला प्रभुत्व या मातृतंत्र नहीं होता।

82. (A) सजातीयता
सजातीयता जाति व्यवस्था की वह मौलिक विशेषता है जो विवाह के नियमों को कड़ाई से नियंत्रित करती है। इसके अनुसार, व्यक्ति को केवल अपनी ही जाति के समूह के भीतर विवाह करना अनिवार्य होता है। यह नियम जाति की शुद्धता को अक्षुण्ण रखने और उसकी सामाजिक पहचान को सुरक्षित रखने के लिए बनाया गया है। सजातीय विवाह के उल्लंघन को समाज में अक्सर गंभीर अपराध माना जाता रहा है। यह विशेषता जाति व्यवस्था को एक बंद और अपरिवर्तनीय समूह के रूप में बनाए रखने में मदद करती है।

83. (C) केवल 1, 2 और 3
जाति व्यवस्था में प्रत्येक व्यक्ति का जन्म से ही एक निर्धारित स्थान होता है, जो एक निश्चित अधिक्रम या ऊंच-नीच के क्रम में व्यवस्थित रहता है। हालांकि यह अधिक्रम अखिल भारतीय स्तर पर माना जाता है, लेकिन व्यवहार में जातियों की वास्तविक स्थिति और सम्मान का स्तर एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न हो सकता है। यह व्यवस्था हर स्थान पर पूरी तरह एक समान नहीं होती, बल्कि स्थानीय सामाजिक और आर्थिक कारकों के अनुसार इसमें सूक्ष्म बदलाव और विविधताएं पाई जाती हैं।

84. (D) जाति संस्था के संदर्भ में
भारतीय भाषाओं में 'जाति' शब्द का प्रयोग अत्यंत व्यापक है और यह मुख्य रूप से उस प्राचीन सामाजिक संस्था को संदर्भित करता है जो जन्म पर आधारित समूहों में विभाजित है। हालांकि इसका प्रयोग कभी-कभी वस्तुओं के प्रकार या जीव-जंतुओं के वर्गीकरण के लिए भी किया जाता है, परंतु सामाजिक संदर्भ में यह हमेशा मनुष्यों के उन वंशानुगत समूहों को दर्शाता है जिनके

अपने विशिष्ट रीति-रिवाज और व्यवसाय होते हैं। यह शब्द भारतीय समाज के ताने-बाने को समझने की प्राथमिक कुंजी है।

85. (C) यह वास्तव में वर्ण व्यवस्था ही थी जिसके केवल चार विभाजन थे।
प्राचीन वैदिक काल के दौरान, सामाजिक संरचना आज की जाति व्यवस्था जितनी जटिल और कठोर नहीं थी। उस समय मुख्य रूप से वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी, जो केवल चार प्रमुख श्रेणियों—ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र—में विभाजित थी। यह व्यवस्था काफी हद तक लचीली थी और इसमें व्यवसायों का चुनाव गुणों के आधार पर संभव था। कालांतर में, यही वर्ण व्यवस्था विकसित होकर हजारों जातियों और उप-जातियों में बदल गई और इसमें जन्म आधारित कठोरता और व्यावसायिक गतिहीनता आ गई।

86. (B) स्वातंत्र्योत्तर या उत्तर-औपनिवेशिक काल
1947 में भारत की स्वतंत्रता के बाद के समय को इतिहास और समाजशास्त्र में 'स्वातंत्र्योत्तर' या 'उत्तर-औपनिवेशिक' काल कहा जाता है। यह वह दौर है जब भारत ने सदियों की गुलामी के बाद अपने स्वयं के संविधान और लोकतांत्रिक संस्थाओं का निर्माण किया। इस काल में समाज में जाति, जनजाति और परिवार जैसी पारंपरिक संस्थाओं में कई महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं। देश ने आधुनिकता की ओर कदम बढ़ाते हुए अपनी पुरानी सामाजिक कुरीतियों को दूर करने और एक समानतावादी समाज बनाने का लक्ष्य निर्धारित किया।

87. (D) यह हिंदू समाज की संस्थात्मक विशेषता है पर इसका प्रचलन अन्य धार्मिक समुदायों में भी फैला है।
जाति व्यवस्था को मूलतः हिंदू धर्म और समाज की एक विशिष्ट संस्थात्मक पहचान माना जाता है, परंतु भारतीय उपमहाद्वीप के सामाजिक प्रभाव के कारण यह अन्य धर्मों जैसे इस्लाम, ईसाइयत और सिख धर्म में भी किसी न किसी रूप में प्रवेश कर गई है। हालांकि इन धर्मों के सिद्धांत समानता की बात करते हैं, लेकिन व्यवहार में यहाँ भी जातीय श्रेणियाँ और भेदभाव देखने को मिलते हैं। यह तथ्य दर्शाता है कि जाति भारतीय संस्कृति की एक गहरी जड़ है जो धार्मिक सीमाओं को भी लांघ जाती है।

88. (A) जोतिराव फुले
जोतिराव फुले का जन्म और कार्यक्षेत्र मुख्य रूप से पश्चिमी भारत का महाराष्ट्र राज्य था, न कि केरल। उन्होंने पुणे में रहकर सामाजिक न्याय और शिक्षा के लिए महान कार्य किए। इसके विपरीत, अयन्कली, श्री नारायण गुरु और पेरियार जैसे अन्य सुधारकों का संबंध दक्षिण भारत के केरल और तमिलनाडु राज्यों से था। फुले ने महाराष्ट्र में दलितों और महिलाओं के लिए जो आंदोलन शुरु किए, उन्होंने न केवल उनके प्रांत को बल्कि पूरे देश की सामाजिक चेतना को गहराई से प्रभावित किया।

89. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
जोतिराव फुले महाराष्ट्र (पश्चिमी भारत) के प्रसिद्ध समाज सुधारक थे, जिन्होंने शिक्षा और जाति-विरोधी आंदोलन को बढ़ावा दिया। पेरियार दक्षिण भारत में द्रविड़ आंदोलन और सामाजिक समानता के प्रमुख नेता थे। अयन्कली केरल के दलित नेता थे जिन्होंने सामाजिक अधिकारों के लिए संघर्ष किया। श्री नारायण गुरु भी केरल के महान संत-सुधारक थे, जिन्होंने जाति भेदभाव के विरुद्ध समानता और सामाजिक सुधार का संदेश दिया।

90. (A) सामाजिक क्रम में अपनी जाति को अधिक ऊँचा स्थान देने की माँग करने के लिए।
वर्ष 1901 की जनगणना ने जातियों के बीच एक नई प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया। जब सरकार ने जातियों का आधिकारिक वर्गीकरण और अधिक्रम प्रलेखित करना शुरु किया, तो विभिन्न जातियों के प्रतिनिधियों ने जनगणना आयुक्त को हजारों याचिकाएँ भेजीं। उनका मुख्य उद्देश्य अपनी जाति को सामाजिक श्रेणी में अधिक सम्मानजनक और ऊँचा स्थान दिलाना था। इस घटना ने स्पष्ट किया कि आधिकारिक सरकारी रिकॉर्ड अब सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण जरिया बन गए थे, जिससे जातीय राजनीति को नई दिशा मिली।

91. (D) ऊँची जातियों के वे सदस्य जो लगान वसूल करने के अलावा खेतिहर अर्थव्यवस्था में कोई भूमिका अदा नहीं करते थे।
'अनुपस्थित या दूरवासी ज़मींदार' उन भू-स्वामियों को कहा जाता था जो स्वयं गाँव में रहकर खेती की देखरेख नहीं करते थे, बल्कि शहरों में रहते थे। उनका मुख्य सरोकार केवल लगान वसूल करना होता था और वे कृषि सुधार या किसानों के कल्याण में कोई रुचि नहीं रखते थे। यह वर्ग कृषक अर्थव्यवस्था पर बोझ की तरह था, जिसने किसानों का अत्यधिक शोषण किया। स्वतंत्रता के बाद भूमि सुधारों के माध्यम से इस बिचौलिए वर्ग को समाप्त करने का प्रयास किया गया था।

92. (C) केवल 1, 2, 3 और 5
आधुनिक भारत में राजनीति और जाति का संबंध अत्यंत जटिल और गहरा हो गया है। 1980 के दशक से जाति आधारित राजनीतिक दलों के उदय ने चुनावी गणनाओं को पूरी तरह बदल दिया है। प्रारंभ में, जातीय भाईचारे ने मतदान में बड़ी भूमिका निभाई, जिससे विभिन्न दलों ने जातीय समीकरणों के आधार पर अपनी रणनीतियाँ बनाईं। हालांकि वर्तमान में यह संबंध इतना सरल नहीं रह गया है, फिर भी चुनावी राजनीति में जाति आज भी एक अत्यंत प्रभावशाली और निर्णायक कारक बनी हुई है।

93. (C) संस्कृतीकरण और प्रबल-जाति
एम. एन. श्रीनिवास ने भारतीय समाजशास्त्र को 'संस्कृतीकरण' और 'प्रबल-जाति' जैसी दो अत्यंत महत्वपूर्ण और कालजयी संकल्पनाएं दीं। संस्कृतीकरण के माध्यम से उन्होंने निम्न जातियों की सामाजिक गतिशीलता को समझाया, जबकि प्रबल-जाति के जरिए उन्होंने ग्रामीण भारत में शक्ति और प्रभुत्व के नए केंद्रों का विश्लेषण किया। ये दोनों अवधारणाएं आज भी शोधकर्ताओं के लिए भारतीय समाज में होने वाले सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तनों को गहराई से समझने हेतु एक अनिवार्य सैद्धांतिक आधार प्रदान करती हैं।

94. (D) भूमि सुधारों से प्राप्त भू-स्वामित्व और सघन जनसंख्या से प्राप्त राजनीतिक शक्ति।
स्वतंत्रता के बाद प्रबल जातियों के उदय के दो मुख्य कारण थे: भूमि सुधार और लोकतांत्रिक राजनीति। जब 'अनुपस्थित जमींदारों' से जमीन लेकर खेती करने वाली मध्यवर्ती जातियों को मालिकाना हक मिला, तो वे आर्थिक रूप से समृद्ध हो गईं। साथ ही, उनकी बड़ी जनसंख्या ने उन्हें चुनावी राजनीति में एक शक्तिशाली वोट बैंक के रूप में स्थापित कर दिया। इस आर्थिक और संख्यात्मक शक्ति के मेल ने उन्हें समाज और शासन में एक प्रभावशाली स्थिति प्रदान की, जिसे श्रीनिवास ने 'प्रबल जाति' कहा।

95. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
शहरी क्षेत्रों में रहने वाली उच्च जातियों की नई पीढ़ियों को अक्सर यह महसूस होता है कि उनकी प्रगति में जाति का कोई योगदान नहीं है। इसका मुख्य कारण यह है कि उनके पास पहले से ही पर्याप्त आर्थिक और शैक्षिक संसाधन मौजूद हैं, जो उनकी जातीय पृष्ठभूमि की देन हैं। ये संसाधन उन्हें आधुनिक व्यवसायों में आसानी से सफलता दिलाते हैं। वे इसे अपनी व्यक्तिगत योग्यता मानते हैं, जबकि उनकी सफलता के पीछे उनकी पारिवारिक और जातीय पूँजी की बहुत बड़ी और निर्णायक भूमिका छिपी होती है।

96. (B) विशेष आर्थिक क्षेत्र
जनजातियों के पारिस्थितिक आवासों के अंतर्गत पारंपरिक रूप से पहाड़ियाँ, घने वन, ग्रामीण मैदान और वर्तमान समय में कुछ नगरीय औद्योगिक इलाके शामिल हैं। 'विशेष आर्थिक क्षेत्र' (SEZ) एक आधुनिक औद्योगिक अवधारणा है जो जनजातियों के प्राकृतिक या पारंपरिक निवास का हिस्सा नहीं है। जनजातियाँ मुख्य रूप से प्रकृति के करीब उन दुर्गम क्षेत्रों में बसी हैं जहाँ की भौगोलिक परिस्थितियाँ उन्हें बाहरी दुनिया से अलग रखती हैं। उनकी जीवनशैली इन्हीं पारिस्थितिक आवासों के संसाधनों और जलवायु के अनुरूप विकसित हुई है।

97. (B) तिब्बती-बर्मी
भारत के पूर्वोत्तर राज्यों में रहने वाली अधिकांश जनजातियाँ तिब्बती-बर्मी भाषा परिवार की बोलियाँ बोलती हैं। हालांकि राष्ट्रीय स्तर पर जनजातियों की भाषाई विविधता बहुत अधिक है, लेकिन जनसंख्या के एक बड़े हिस्से, विशेषकर पहाड़ी क्षेत्रों के समूहों में इस भाषा परिवार का गहरा प्रभाव देखा जाता है। यह भाषाई संबंध उनके ऐतिहासिक मूल और सांस्कृतिक जुड़ाव को दर्शाता है। यह भाषा परिवार जनजातीय अस्मिता और उनकी पारंपरिक पहचान को अक्षुण्ण बनाए रखने में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करता है।

98. (A) जनजातियों की अभिवृत्तियों में काफ़ी अंतर है; कुछ का सकारात्मक झुकाव है तो कुछ प्रतिरोध करती हैं।
जनजातियों और हिंदू समाज के बीच के संबंध काफी विविधतापूर्ण रहे हैं। कुछ जनजातीय समूहों ने समय के साथ हिंदू रीति-रिवाजों और कर्मकांडों को अपना लिया है, जिसे संस्कृतीकरण की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। इसके विपरीत, कई अन्य समूह अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखने के लिए बाहरी सांस्कृतिक प्रभावों का कड़ा प्रतिरोध करते हैं। यह प्रतिक्रिया उनकी भौगोलिक स्थिति, ऐतिहासिक अनुभवों और स्वायत्तता की भावना पर निर्भर करती है। अतः इन संबंधों को किसी एक निश्चित सांचे में नहीं बांधा जा सकता।

99. (A) 3, 4, 1, 2
ऐतिहासिक क्रम में सबसे पहले मध्य भारत में शक्तिशाली गोंड राज्यों का अस्तित्व था। इसके बाद पूँजीवादी व्यवस्था के विस्तार से जनजातियों का मुख्यधारा से संपर्क बढ़ा। 1960 के दशक में समाजशास्त्रियों के बीच जाति-जनजाति संबंधों पर गहन वाद-विवाद हुआ, जिसके परिणामस्वरुप जनजातियों को एक 'द्वितीयक प्रघटना' के रूप में देखने का प्रस्ताव आया। यह कालक्रम स्पष्ट करता है कि जनजातीय समुदायों की पहचान और उनके अध्ययन के दृष्टिकोण समय के साथ राजनीतिक और शैक्षणिक बदलावों के साथ विकसित होते रहे हैं।

100. (D) उपरोक्त सभी।
राष्ट्रीय विकास की आंधी में जनजातीय समुदायों को अपूरणीय क्षति हुई है। बड़े बाँधों, राजमार्गों और औद्योगिक कारखानों के निर्माण के कारण उन्हें अपनी पुश्तैनी भूमि से बेदखल होना पड़ा। उनकी खनिज-संपन्न ज़मीनों पर सरकार और निजी कंपनियों का कब्ज़ा हो गया, जिससे उनकी पारंपरिक शिकार और संग्रहण आधारित आजीविका पूरी तरह नष्ट हो गई। इस विस्थापन ने उन्हें न केवल आर्थिक रूप से कंगाल बना दिया, बल्कि उनकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और सामुदायिक जीवन को भी छिन्न-भिन्न कर दिया।

101. (C) मध्यवर्गीय लोग सांस्कृतिक पहचान पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं, जबकि गरीब लोग आजीविका के मुद्दों पर।
जनजातीय आंदोलनों के भीतर भी विभिन्न वर्गों के हितों में भिन्नता देखी जाती है। उभरता हुआ शिक्षित जनजातीय मध्य वर्ग अक्सर अपनी नृजातीय-सांस्कृतिक पहचान, भाषा और गौरव को बचाने के प्रति अधिक संवेदनशील होता है। इसके विपरीत, गरीब जनजातीय आबादी के लिए सबसे प्राथमिक और बड़ा संघर्ष अपनी ज़मीन बचाना और आजीविका प्राप्त करना होता है। हालांकि दोनों के लक्ष्य एक ही समुदाय के उत्थान से जुड़े हैं, लेकिन उनकी प्राथमिकताओं में वर्गगत स्थितियों के कारण यह स्वाभाविक अंतर दिखाई देता है।

102. (B) वर के माता-पिता के साथ
पति-स्थानिक समाज में, जो दुनिया भर में सबसे अधिक प्रचलित व्यवस्था है, विवाह के बाद वधू को अपना घर छोड़कर वर के परिवार या उसके माता-पिता के निवास स्थान पर जाकर रहना पड़ता है। इस व्यवस्था में परिवार का विस्तार पितृपक्ष की ओर से होता है। यह प्रथा पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना को मजबूती प्रदान करती है, जहाँ पुरुष सत्ता का केंद्र होता है और स्त्रियाँ दूसरे परिवार का हिस्सा बनती हैं। भारतीय समाज के अधिकांश हिस्सों में यही आवास नियम मान्य है।

103. (B) केवल 1, 2, 4 और 5
पितृवंशीय समाज में संपत्ति पिता से पुत्र को हस्तांतरित होती है और पितृसत्ता में पुरुषों का दबदबा रहता है। समाजशास्त्रियों के अनुसार, 'मातृतंत्र' जहाँ स्त्रियाँ पूर्ण शासन करती हों, का कोई ऐतिहासिक प्रमाण नहीं मिलता है, परंतु 'मातृवंशीय' समाज आज भी वास्तविकता में मौजूद हैं। इन समाजों में वंश माता से चलता है, फिर भी व्यवहार में सत्ता के कुछ रूप पुरुषों के पास हो सकते हैं। यह समझना अनिवार्य है कि मातृवंश और मातृतंत्र दो अलग अवधारणाएँ हैं, जिनमें से एक यथार्थ है और दूसरी सैद्धांतिक।

104. (A) जाति में श्रेणी एवं प्रस्थिति का कोई अधिक्रम नहीं होता है।
यह कहना पूरी तरह गलत है कि जाति में कोई अधिक्रम नहीं होता, क्योंकि जाति व्यवस्था का मूल आधार ही श्रेणीबद्ध ऊंच-नीच की भावना है। प्रत्येक जाति समाज में अपनी एक विशिष्ट स्थिति रखती है, जो कर्मकांडीय शुद्धता के आधार पर तय होती है। इसमें जन्म से ही प्रस्थिति का निर्धारण होता है, विवाह के कड़े नियम होते हैं और पारंपरिक रूप से प्रत्येक समूह का एक व्यवसाय निश्चित होता है। अधिक्रम के बिना जाति संस्था का कोई अर्थपूर्ण अस्तित्व संभव ही नहीं है।

105. (C) लुई ड्यूमो
प्रसिद्ध फ्रांसीसी समाजशास्त्री लुई ड्यूमो ने अपनी पुस्तक 'होमो हेरारकिकस' में जाति व्यवस्था को समझने का एक अनूठा सैद्धांतिक ढांचा प्रस्तुत किया। उन्होंने तर्क दिया कि भारतीय जाति व्यवस्था का मुख्य आधार 'शुद्धता' और 'अशुद्धता' के बीच का धार्मिक और कर्मकांडीय विरोध है। उनके अनुसार, यही विचार समाज में ब्राह्मणों को सर्वोच्च और अछूतों को सबसे निचले स्तर पर रखने का कारण है। ड्यूमो का यह सिद्धांत जाति के वैचारिक और अधिक्रमित स्वरूप को गहराई से विश्लेषित करता है।

106. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
समाजशास्त्रीय साहित्य में एम. एन. श्रीनिवास ने प्रबल जाति के सिद्धांतों को प्रलेखित किया, जबकि लुई ड्यूमो ने अधिक्रमित समाज की व्याख्या की। जी. एस. घुरिये ने भारत में जाति और प्रजाति के संबंधों पर मौलिक कार्य किया और दीपांकर गुप्ता ने समकालीन जाति व्यवस्था के नए आयामों पर प्रकाश डाला। ये सभी कृतियाँ और उनके लेखक भारतीय सामाजिक संरचना के ऐतिहासिक विकास, संरचनात्मक ढाँचे और उसमें आने वाले आधुनिक परिवर्तनों को समझने के लिए सबसे महत्वपूर्ण और विश्वसनीय शैक्षणिक स्रोत माने जाते हैं।

107. (D) राजनीति के क्षेत्र में
स्वतंत्रता के बाद भारत में जाति का सबसे प्रभावशाली और क्रांतिकारी परिवर्तन राजनीतिक क्षेत्र में देखा गया है। लोकतांत्रिक व्यवस्था ने जातियों को संगठित होकर सत्ता में अपनी हिस्सेदारी मांगने का अवसर प्रदान किया है। अब जातियाँ केवल धार्मिक समूह नहीं, बल्कि एक शक्तिशाली राजनीतिक दबाव समूह और वोट बैंक के रूप में कार्य करती हैं। चुनावों में टिकटों का वितरण और सरकार की नीतियों का निर्माण अक्सर जातीय समीकरणों को ध्यान में रखकर किया जाता है, जिसने भारतीय लोकतंत्र को एक विशिष्ट स्वरूप दिया है।

108. (B) उच्च जातियों के लिए जाति अदृश्य हो गई, जबकि दलितों के लिए यह अधिक दिखने वाली हो गई।
समकालीन भारत में जाति के अनुभव में एक गहरा विरोधाभास है। उच्च जातियों के लिए, जिन्होंने शिक्षा और आर्थिक संसाधनों का लाभ उठाकर आधुनिक पेशों में जगह बना ली है, जाति अब उनके दैनिक जीवन में बाधा नहीं बनती, इसलिए वह उनके लिए 'अदृश्य' है। इसके विपरीत, अनुसूचित जातियों के लिए जाति आज भी भेदभाव, अपमान और संघर्ष की एक निरंतर 'दिखने वाली' कड़वी हकीकत है। यह स्थिति सामाजिक असमानता और संसाधनों के वितरण में मौजूद गहरी खाई को स्पष्ट रूप से उजागर करती है।

109. (C) 8.4 करोड़
वर्ष 2001 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, भारत में अनुसूचित जनजातियों की कुल जनसंख्या लगभग 8.4 करोड़ दर्ज की गई थी। यह उस समय की कुल राष्ट्रीय जनसंख्या का एक बड़ा और महत्वपूर्ण हिस्सा था। इस जनसंख्या डेटा ने जनजातीय समुदायों की जनसांख्यिकीय स्थिति और उनकी भौगोलिक व्यापकता को स्पष्ट किया। इस जानकारी का उपयोग सरकार द्वारा जनजातीय क्षेत्रों के लिए पंचवर्षीय योजनाओं और विशेष विकास पैकेजों के निर्माण में किया गया ताकि उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके।

110. (D) 100 से भी कम
अंडमान द्वीपसमूह में रहने वाले कुछ जनजातीय समूह दुनिया के सबसे छोटे और विलुप्तप्राय समुदायों में शामिल हैं। इनमें से कुछ समूहों की जनसंख्या आज घटकर 100 से भी कम रह गई है। वे आधुनिक सभ्यता से लगभग कटे हुए हैं और अपनी प्राचीन जीवनशैली के साथ जीवित रहने का संघर्ष कर रहे हैं। इन समूहों का अस्तित्व जैव-विविधता और मानवशास्त्रीय अध्ययन की दृष्टि से अत्यंत बहुमूल्य है। उनके संरक्षण के लिए सरकार विशेष नीतियां अपनाती है ताकि उन्हें बाहरी बीमारियों और हस्तक्षेपों से बचाया जा सके।

111. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
1970 के दशक तक विद्वानों ने महसूस किया कि जनजातियों की पारंपरिक परिभाषाएं अधूरी हैं क्योंकि वे वास्तविक धरातल पर खरी नहीं उतरतीं। जनजातियों और कृषक समाजों के बीच का अंतर धुंधला होता गया क्योंकि कई जनजातियाँ खेती करने लगी थीं और मुख्यधारा के धर्मों के संपर्क में थीं। पृथक्करण की धारणा भी कमजोर पड़ी क्योंकि वे लंबे समय से बाहरी समूहों के साथ आर्थिक लेन-देन कर रहे थे। इस अहसास ने जनजातीय अध्ययनों में एक नए और अधिक व्यापक दृष्टिकोण की आवश्यकता को जन्म दिया।

112. (D) उपरोक्त सभी।
यह धारणा कि जनजातियाँ हमेशा अलग-थलग और आदिम रही हैं, ऐतिहासिक साक्ष्यों से गलत सिद्ध होती है। संथाल और

गोंड जैसे बड़े समुदायों का विस्तार और मुंडाओं द्वारा लंबे समय से की जा रही व्यवस्थित खेती उनके विकसित सामाजिक ढाँचे को दर्शाती है। यहाँ तक कि शिकारी-संग्राहक समूहों ने भी समय के साथ स्थिर जीवन अपनाया है। वे सदियों से व्यापार और राजनीतिक संपर्कों के माध्यम से मुख्यधारा के समाज से जुड़े रहे हैं। अतः उन्हें केवल सभ्यता से दूर रहने वाला समूह मानना एक संकुचित दृष्टिकोण है।

113. (D) उपरोक्त सभी।
परिवार की पारंपरिक संरचना में परिवर्तन के कई आधुनिक कारण हैं। काम की तलाश में पुरुषों का शहरों की ओर प्रवास घर की मुखिया के रूप में महिलाओं की भूमिका बढ़ा देता है। कामकाजी माता-पिता के व्यस्त समय के कारण बच्चों के पालन-पोषण का तरीका बदल रहा है। साथ ही, युवाओं द्वारा स्वयं जीवन-साथी चुनने की बढ़ती प्रवृत्ति ने विवाह और परिवार के पारंपरिक प्रतिमानों को चुनौती दी है। ये सभी कारक मिलकर परिवार को एक अधिक लचीली और व्यक्तिगत पसंद पर आधारित संस्था बना रहे हैं।

114. (C) केवल 1, 2 और 4
परिवार एक अत्यंत जटिल संस्था है जहाँ स्नेह, देखभाल और त्याग जैसे सकारात्मक भावों के साथ-साथ अन्याय और हिंसा जैसे नकारात्मक पहलू भी मौजूद हो सकते हैं। यह प्यार और बलिदान का स्थान तो है ही, परंतु कई बार संपत्ति के विवाद और पितृसत्तात्मक दबाव के कारण यह संघर्ष का अखाड़ा भी बन जाता है। मादा शिशु हत्या जैसी कुरीतियाँ भी दुर्भाग्य से परिवार के भीतर ही जन्म लेती हैं। अतः परिवार का अध्ययन करते समय उसकी इस द्वंद्वात्मक प्रकृति को समझना अत्यंत आवश्यक है।

115. (C) जाति बहिष्कृत, विदेशी, दास और पराजित लोग
वर्ण व्यवस्था के पारंपरिक चार श्रेणियों के ढाँचे से बाहर रखे गए लोगों को 'पंचम' या पाँचवीं श्रेणी में वर्गीकृत किया गया था। इसमें मुख्य रूप से वे लोग शामिल थे जिन्हें समाज से बहिष्कृत कर दिया गया था, या जो विदेशी थे, या फिर युद्धों में पराजित होकर दास बना लिए गए थे। इन्हें धार्मिक और सामाजिक अनुष्ठानों से दूर रखा जाता था और इनकी स्थिति अत्यंत दयनीय थी। यह श्रेणी भारतीय समाज में हाशिए पर रहने वाले समूहों के ऐतिहासिक उत्पीड़न का प्रतीक मानी जाती है।

116. (D) राजनीति
समाजशास्त्रियों का मानना है कि आधुनिक भारत में जाति का सबसे गहरा और व्यापक रूपांतरण राजनीति के क्षेत्र में हुआ है। जाति अब केवल एक सामाजिक पहचान नहीं रह गई है, बल्कि यह राजनीतिक लामबंदी और सत्ता प्राप्ति का एक अनिवार्य उपकरण बन गई है। राजनीतिक दल जातीय गौरव और हितों के नाम पर वोट मांगते हैं, जिससे जातियों में एक नई प्रकार की एकजुटता और चेतना आई है। इस राजनीतिकरण ने पारंपरिक जातीय अधिक्रम को चुनौती दी है और लोकतांत्रिक प्रक्रिया को एक नया आयाम प्रदान किया है।

117. (C) निकलस डिर्क
निकलस डिर्क ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'कास्ट्स ऑफ़ माइंड' में यह महत्वपूर्ण तर्क दिया है कि आधुनिक भारत में हम जिस जाति व्यवस्था को देखते हैं, उसे औपनिवेशिक काल के दौरान अंग्रेजों ने काफी हद तक पुनर्गठित और कठोर बनाया था। उनके अनुसार, ब्रिटिश जनगणना और प्रशासनिक नीतियों ने जातियों को परिभाषित कर उन्हें स्थाई पहचान दी। इस पुस्तक ने जाति के अध्ययन में एक नया ऐतिहासिक दृष्टिकोण प्रदान किया, जो बताता है कि उपनिवेशवाद ने भारतीय सामाजिक संरचना को किस प्रकार अपने हितों के अनुसार ढाला और प्रभावित किया।

118. (A) 1, 4, 3, 2
भारतीय समाज सुधारकों के जन्म का कालक्रम उनके द्वारा किए गए कार्यों की पृष्ठभूमि को समझने में सहायक है। जोतिराव फुले (1827) और सावित्री बाई फुले (1831) ने सबसे पहले शिक्षा और सामाजिक समानता की नींव रखी। इसके बाद श्री नारायण गुरु (1856) और अयन्कली (1863) ने दक्षिण भारत में दलितों और पिछड़ों के अधिकारों के लिए आंदोलनों का नेतृत्व किया। यह अनुक्रम दर्शाता है कि 19वीं शताब्दी के दौरान भारत के विभिन्न हिस्सों में सामाजिक चेतना और सुधार की लहरें लगभग साथ-साथ उठ रही थीं।

119. (D) हिंदू समाज में समावेश की सीमा
जनजातियों के वर्गीकरण में 'स्थायी लक्षण' वे होते हैं जो भौगोलिक, भाषाई और शारीरिक रूप से अपरिवर्तनीय माने जाते हैं, जैसे क्षेत्र और पारिस्थितिक आवास। इसके विपरीत, 'हिंदू समाज में समावेश की सीमा' एक अर्जित लक्षण है क्योंकि यह बाहरी सामाजिक संपर्क और सांस्कृतिक बदलावों का परिणाम है। जनजातियाँ हिंदू धर्म को अपनाती हैं या नहीं, यह उनकी ऐतिहासिक परिस्थितियों पर निर्भर करता है। अतः इसे उनकी मूल और स्थाई पहचान का हिस्सा नहीं माना जा सकता, बल्कि यह उनके सामाजिक रूपांतरण की एक प्रक्रिया है।

120. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारत में जनजातीय जनसंख्या का वितरण अत्यंत विशिष्ट है। लगभग 85% आदिवासी मध्य भारत के खनिज और वन क्षेत्रों में रहते हैं। पूर्वोत्तर राज्यों में उनकी संख्या कुल जनजातीय आबादी का 11% है, लेकिन वहाँ के कुछ राज्यों में वे कुल जनसंख्या का 60% से 95% तक हिस्सा रखते हैं। शेष भारत में उनका अनुपात काफी कम है। यह क्षेत्रीय भिन्नता उनके विकास के स्तर, राजनीतिक प्रभाव और सांस्कृतिक संरक्षण की स्थितियों को व्यापक रूप से प्रभावित करती है, जिससे प्रत्येक क्षेत्र की अपनी अलग चुनौतियाँ हैं।

121. (C) परिवार (निजी क्षेत्र) समाज के सार्वजनिक क्षेत्रों (आर्थिक, राजनीतिक, आदि) से प्रभावित होता है और उन्हें प्रभावित करता है।
परिवार को केवल एक निजी इकाई मानना गलत है; वास्तव में यह समाज की व्यापक आर्थिक और राजनीतिक प्रणालियों के साथ गहराई से जुड़ा होता है। उदाहरण के लिए, आर्थिक मंदी या नई सरकारी नीतियां परिवार की संरचना और सदस्यों के संबंधों को सीधे प्रभावित करती हैं। ठीक इसी तरह, परिवार

में दिए जाने वाले संस्कार और मूल्य आगे चलकर समाज के राजनीतिक और सामाजिक चरित्र का निर्माण करते हैं। यह निरंतर चलने वाली एक द्वि-मार्गी प्रक्रिया है जो निजी और सार्वजनिक जीवन के बीच की सीमा को धुंधला करती है।

122. (A) शौकिया तौर पर नृजातिविज्ञानी
औपनिवेशिक काल के दौरान कई ब्रिटिश प्रशासनिक अधिकारी अपनी शासकीय भूमिका के साथ-साथ भारतीय जातियों और रीति-रिवाजों का अध्ययन करने में गहरी रुचि लेते थे। समाजशास्त्रीय शब्दावली में उन्हें 'शौकिया तौर पर नृजातिविज्ञानी' कहा गया है। उनके द्वारा किए गए विस्तृत सर्वेक्षण और रिपोर्ट आज भी भारतीय समाज के उस दौर के इतिहास को समझने के लिए महत्वपूर्ण दस्तावेज माने जाते हैं। हालांकि उनके अध्ययन का उद्देश्य शासन को सुगम बनाना था, फिर भी उन्होंने भारतीय सामाजिक विविधता का एक विशाल सांख्यिकीय और वर्णनात्मक आधार तैयार किया।

123. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान नेताओं का यह दृढ़ मत था कि जाति एक सामाजिक बुराई है जिसे समाप्त किया जाना चाहिए। उनका मानना था कि अंग्रेजों ने भारतीयों को विभाजित करने और अपनी सत्ता बनाए रखने के लिए जातिगत भेदों को जानबूझकर बढ़ावा दिया है। राष्ट्रवादी नेताओं ने तर्क दिया कि एक एकजुट भारत के निर्माण के लिए जातिगत संकीर्णताओं से ऊपर उठना अनिवार्य है। इसीलिए, स्वतंत्रता संग्राम के साथ-साथ सामाजिक सुधारों और छुआछूत विरोधी अभियानों को भी राष्ट्रीय एजेंडे में प्रमुखता से शामिल किया गया था।

124. (B) जोतिराव फुले
जोतिराव फुले उन महान सुधारकों में से एक थे जिन्होंने जाति व्यवस्था के अन्याय के विरुद्ध सबसे प्रखर आवाज़ उठाई। उन्होंने छुआछूत के अमानवीय नियमों की कड़ी निंदा की और इसे समाज के लिए एक कलंक बताया। फुले ने ब्राह्मणवादी वर्चस्व को चुनौती दी और तर्क दिया कि सभी मनुष्य समान हैं। उन्होंने न केवल मौखिक रूप से इसका विरोध किया, बल्कि व्यावहारिक रूप से दलितों और शूद्रों को शिक्षित करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। उनके क्रांतिकारी विचारों ने भारत में सामाजिक न्याय की लड़ाई की आधारशिला रखी।

125. (C) मध्य या निम्न जातियाँ
संस्कृतीकरण की प्रक्रिया मुख्य रूप से उन जातियों में देखी जाती है जो सामाजिक अधिक्रम के मध्य या निचले स्तर पर स्थित हैं। ये समूह अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए उच्च या 'द्विज' जातियों के कर्मकांडों, शाकाहार और पहनावे का अनुकरण करते हैं। ब्राह्मण स्वयं इस प्रक्रिया में भाग नहीं लेते क्योंकि वे पहले से ही अधिक्रम में सर्वोच्च स्थान पर होते हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि निम्न जातियाँ अपनी प्रस्थिति को बदलने के लिए सांस्कृतिक प्रतीकों का सहारा लेती हैं, जो जाति व्यवस्था की आंतरिक गतिशीलता का प्रमाण है।

126. (A) केवल 1, 2 और 5
जाति व्यवस्था की मूलभूत विशेषताओं में इसका जन्म से निर्धारित होना, खान-पान के कड़े नियमों का पालन करना और एक निश्चित ऊंच-नीच के अधिक्रम में व्यवस्थित होना शामिल है। पारंपरिक रूप से प्रत्येक जाति एक विशिष्ट व्यवसाय से गहराई से जुड़ी रही है। हालांकि आधुनिक समय में इन नियमों में कुछ ढील आई है, लेकिन सैद्धांतिक रूप से ये तत्व अभी भी जाति की पहचान के मुख्य स्तंभ माने जाते हैं। विवाह के मामले में जाति समूह सजातीय होते हैं, न कि बहिर्विवाही, जो समूह की आंतरिक एकता को बनाए रखता है।

127. (A) अधिक्रमित व्यवस्था
जाति व्यवस्था की पूरी संरचना 'पवित्र' (शुद्ध) और 'अपवित्र' (अशुद्ध) की अवधारणाओं के बीच के बुनियादी अंतर पर आधारित है। यही विचार समाज में एक स्पष्ट अधिक्रम या सोपानतंत्र निर्मित करता है, जहाँ कुछ जातियों को उच्च और कुछ को निम्न माना जाता है। शुद्धता की रक्षा के लिए ही भोजन, स्पर्श और सामाजिक मेल-जोल के कड़े प्रतिबंध लगाए जाते हैं। यह अधिक्रमित व्यवस्था केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक स्तर पर भी असमानता को जन्म देती है, जो भारतीय समाज का एक जटिल पहलू है।

128. (B) अधिकांश विवाह आज भी जाति की परिसीमाओं के भीतर ही होते हैं।
आधुनिकता और शिक्षा के बावजूद, भारतीय समाज में विवाह आज भी जातिगत बंधनों से गहराई से प्रभावित है। सांख्यिकीय आंकड़े और वैवाहिक विज्ञापन यह स्पष्ट करते हैं कि अधिकांश लोग आज भी अपनी ही जाति में विवाह करना पसंद करते हैं। हालांकि अंतर्जातीय विवाहों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है, लेकिन वे अभी भी एक बहुत छोटा हिस्सा हैं। यह दर्शाता है कि निजी जीवन और पारिवारिक संबंधों के क्षेत्र में जाति की जड़ें इतनी गहरी हैं कि उन्हें कानूनी या आधुनिक बदलावों से पूरी तरह नहीं हिलाया जा सका है।

129. (A) ई. वी. रामास्वामी नायकर
दक्षिण भारत के क्रांतिकारी समाज सुधारक ई. वी. रामास्वामी नायकर को उनके अनुयायी और जनता आदर से 'पेरियार' के नाम से बुलाती है, जिसका अर्थ है 'महान आत्मा' या 'सम्मानित व्यक्ति'। उन्होंने तर्कवाद और आत्म-सम्मान का संदेश दिया और जातिगत भेदभाव व पितृसत्ता के विरुद्ध जीवन भर संघर्ष किया। उनके नेतृत्व में हुए आंदोलनों ने तमिल समाज की सामाजिक और राजनीतिक दिशा को बदल दिया। पेरियार का नाम आज भी सामाजिक न्याय और समानता के संघर्ष का एक शक्तिशाली प्रतीक माना जाता है।

130. (A) TRIFED
भारतीय जनजातीय सहकारी विपणन विकास संघ (TRIFED) एक प्रमुख राष्ट्रीय संस्था है जो जनजातीय लोगों के आर्थिक और सामाजिक सशक्तिकरण के लिए कार्य करती है। इसका मुख्य उद्देश्य जनजातीय उत्पादों के विपणन में सहायता करना और उन्हें बिचौलियों के शोषण से बचाकर उनके श्रम का उचित मूल्य दिलाना है। यह संस्था लघु वन उपज और हस्तशिल्प के

माध्यम से आदिवासियों की आजीविका को मजबूत करने का प्रयास करती है। जनजातीय विकास की दिशा में यह सरकार की एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावी पहल मानी जाती है।

131. (B) P-2, Q-1, R-3, S-4
परिवार की संरचना और आवास के नियम समाज की विविधता को दर्शाते हैं। मातृवंशीय व्यवस्था में वंश माँ से चलता है, जबकि पितृवंशीय में पिता से। आवास के मामले में, पत्नी-स्थानिक समाज में जोड़ा वधू के माता-पिता के साथ रहता है, जबकि पति-स्थानिक में वर के परिवार के साथ। ये नियम केवल रहने की जगह तय नहीं करते, बल्कि परिवार में शक्ति, उत्तराधिकार और सामाजिक संबंधों के पूरे ढांचे को निर्धारित करते हैं। अधिकांश भारतीय समाज पितृवंशीय और पति-स्थानिक प्रतिमानों का ही कड़ाई से पालन करते हैं।

132. (D) 1, 2, 3 और 4 सभी
समकालीन भारत में जनजातीय परिदृश्य तेजी से बदल रहा है। झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे नए राज्यों का गठन उनकी राजनीतिक आकांक्षाओं की पूर्ति का परिणाम है। पूर्वोत्तर में सुरक्षा और विशेष कानून एक बड़ी चुनौती हैं, फिर भी वहाँ एक नया शिक्षित मध्य वर्ग और नगरीकृत व्यावसायिक वर्ग उभर रहा है। आरक्षण की नीतियों ने उन्हें शासन और प्रशासन में भागीदारी का अवसर दिया है। यह प्रगति दर्शाती है कि जनजातीय समुदाय अब केवल पिछड़े हुए समूह नहीं हैं, बल्कि वे आधुनिक भारत की मुख्यधारा में अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं।

133. (C) जब कोई लड़ाई छिड़ जाती है और लोग अन्यत्र जा बसते हैं।
परिवार की संरचना में परिवर्तन कभी-कभी बहुत धीरे-धीरे होते हैं, लेकिन कई बार ये आकस्मिक और बाहरी कारकों के कारण भी होते हैं। युद्ध, प्राकृतिक आपदा या सामाजिक दंगों जैसी स्थितियाँ लोगों को अपना घर छोड़कर सुरक्षित स्थानों पर पलायन करने को मजबूर कर देती हैं। ऐसी परिस्थितियों में संयुक्त परिवार बिखर जाते हैं और लोग मजबूरी में नई और छोटी पारिवारिक इकाइयाँ बनाने को विवश होते हैं। यह परिवर्तन की आकस्मिकता को दर्शाता है, जहाँ समाज की अस्थिरता परिवार के ढांचे को तत्काल बदल देती है।

134. (B) जातियों का उप-जातियों में विभाजित होना।
जाति व्यवस्था की 'खंडात्मक' संरचना का अर्थ है कि समाज केवल मुख्य जातियों में ही नहीं बँटा है, बल्कि प्रत्येक जाति के भीतर भी अनेक उप-जातियाँ और छोटे-छोटे समूह होते हैं। यह व्यवस्था समाज को कई स्वतंत्र और स्वायत्त खंडों में विभाजित कर देती है। प्रत्येक खंड के अपने कड़े सामाजिक नियम और सीमाएं होती हैं। यह संरचना भारतीय समाज को एक अत्यंत जटिल और विखंडित स्वरूप प्रदान करती है, जहाँ सामाजिक मेल-जोल और विवाह के संबंध इन छोटे खंडों के भीतर ही सीमित होकर रह जाते हैं।

135. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
समाजशास्त्र में यह माना जाता है कि सामाजिक स्थिति और भौतिक शक्ति (आर्थिक या सैन्य) के बीच गहरा संबंध होता है। इतिहास गवाह है कि जो समूह युद्धों में पराजित हुए, उन्हें विजयी समूहों द्वारा अक्सर सामाजिक रूप से अपमानित कर निम्न जातियों या दासों की श्रेणी में डाल दिया गया। उनकी आर्थिक शक्ति छीन ली गई, जिससे उनकी सामाजिक प्रतिष्ठा भी गिर गई। इस प्रकार, जाति व्यवस्था केवल एक धार्मिक विचार नहीं है, बल्कि यह ऐतिहासिक संघर्षों और शक्ति के असमान वितरण का भी परिणाम है।

136. (A) विकास परियोजनाओं का मुख्य रूप से जनजातीय क्षेत्रों में स्थित होना, जिससे उनका विस्थापन होता है।
राष्ट्रीय विकास और जनजातीय हितों के बीच संघर्ष का मूल कारण भौगोलिक है। भारत के अधिकांश खनिज संसाधन, जल और वन संपदा उन्हीं क्षेत्रों में स्थित हैं जहाँ जनजातियाँ सदियों से निवास कर रही हैं। जब राष्ट्र की प्रगति के लिए इन संसाधनों का दोहन किया जाता है, तो वहाँ की मूल आबादी को विस्थापित होना पड़ता है। विकास की इस प्रक्रिया में आदिवासियों को अपनी जमीन और संस्कृति गंवानी पड़ती है, जबकि उसके लाभ अक्सर उन तक नहीं पहुँच पाते। यही विरोधाभास आज एक बड़ी चुनौती है।

137. (C) एम. एन. श्रीनिवास
एम. एन. श्रीनिवास ने भारतीय ग्रामीण समाज में शक्ति संबंधों को समझने के लिए 'प्रबल जाति' (Dominant Caste) की संकल्पना पेश की। उन्होंने पाया कि गाँवों में कुछ विशेष जातियों के पास भूमि, संख्यात्मक बल और उच्च सामाजिक स्थिति होती है, जिससे वे पूरे समुदाय पर अपना नियंत्रण रखती हैं। यह अवधारणा भारतीय राजनीति और समाज के जमीनी हकीकत को समझने के लिए अत्यंत प्रभावी सिद्ध हुई। श्रीनिवास के इस योगदान ने समाजशास्त्र के क्षेत्र में पारंपरिक जाति व्यवस्था के अध्ययन को एक नया और व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रदान किया।

138. (A) 3, 1, 2, 4
आधुनिक भारतीय इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं के क्रम में सावित्री बाई फुले द्वारा पुणे में विद्यालय की स्थापना एक प्रारंभिक शिक्षा क्रांति थी। इसके बाद 1860 के दशक में जनगणना के शुरुआती प्रयास हुए और 1873 में जोतिराव फुले ने सत्यशोधक समाज की स्थापना की। अंत में, 1935 का भारत सरकार अधिनियम आया जिसने प्रशासनिक और संवैधानिक ढांचे को व्यवस्थित किया। यह क्रम दर्शाता है कि सामाजिक और शैक्षणिक सुधारों के प्रयास सरकारी नीतियों और प्रशासनिक परिवर्तनों से काफी पहले ही समाज सुधारकों द्वारा शुरु कर दिए गए थे।

139. (D) एक संरचना जिसमें पुरुषों की सत्ता व प्रभुत्व होता है।
पितृतंत्र (Patriarchy) एक ऐसी व्यापक सामाजिक और पारिवारिक संरचना है जहाँ सत्ता और निर्णय लेने के सर्वाधिकार पुरुषों के हाथों में सुरक्षित होते हैं। इसमें परिवार का मुखिया

पुरुष होता है और वंश का नाम व संपत्ति का हस्तांतरण भी पुरुषों के माध्यम से ही होता है। यह व्यवस्था महिलाओं को गौण स्थिति में रखती है और उनके अधिकारों व स्वतंत्रता को सीमित करती है। पितृतंत्र केवल परिवार तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज की राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संस्थाओं में भी पुरुषों के वर्चस्व को बनाए रखता है।

140. (B) आजीविका के साधन और हिंदू समाज में समावेश।
जनजातियों के वर्गीकरण में 'अर्जित लक्षण' उन विशेषताओं को कहते हैं जो समूह द्वारा समय के साथ बाहरी दुनिया के संपर्क में आने पर अपनाई जाती हैं। इसमें उनकी आजीविका के तरीके, जैसे शिकार छोड़कर खेती या मजदूरी अपनाना, और हिंदू धर्म व संस्कृति के साथ उनके जुड़ाव की मात्रा शामिल है। ये लक्षण स्थाई नहीं होते और सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के साथ बदल सकते हैं। यह वर्गीकरण जनजातियों के आधुनिक समाज की मुख्यधारा में शामिल होने की प्रक्रिया और उनकी बदलती सामाजिक स्थिति को समझने में मदद करता है।

141. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
भारत के महान समाज सुधारकों ने अलग-अलग क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। सावित्री बाई फुले ने महिला शिक्षा की नींव रखी, जबकि उनके पति जोतिराव फुले ने सत्यशोधक समाज के जरिए दलितों को जागृत किया। दक्षिण भारत में पेरियार ने आत्म-सम्मान आंदोलन चलाकर जातिवाद को चुनौती दी और श्री नारायण गुरु ने मानवतावादी धर्म का संदेश दिया। इन सभी के सम्मिलित प्रयासों ने भारतीय समाज में व्याप्त भेदभाव की जड़ों पर प्रहार किया और एक अधिक न्यायपूर्ण और समतावादी समाज की कल्पना को धरातल पर उतारने का प्रयास किया।

142. (D) इसने जातीय श्रेणियों को परिभाषित कर उनकी पहचान को अधिक कठोर बना दिया।
औपनिवेशिक काल में जनगणना की प्रक्रिया ने भारतीय जाति व्यवस्था के लचीलेपन को समाप्त कर दिया। जब अंग्रेजों ने जातियों को वर्गीकृत कर उन्हें आधिकारिक सरकारी दस्तावेजों में दर्ज किया, तो इन पहचानों को एक वैधानिक मान्यता मिल गई। इससे पहले जातियों की सीमाएं कुछ हद तक अस्पष्ट थीं, लेकिन जनगणना के बाद प्रत्येक समूह अपनी स्थिति और अधिकारों के प्रति अधिक सचेत हो गया। इस प्रशासनिक कार्य ने अनजाने में जातिवाद को और अधिक संगठित और कठोर बना दिया, जिसका प्रभाव आज भी भारतीय राजनीति और समाज पर स्पष्ट रुप से दिखाई देता है।

143. (A) कर्मकांड की दृष्टि से सर्वोच्च स्थान
'प्रबल जाति' होने के लिए कर्मकांड की दृष्टि से सर्वोच्च (ब्राह्मण) होना अनिवार्य नहीं है; वास्तव में, प्रबल जातियाँ अक्सर मध्यवर्ती स्तर की होती हैं। प्रबल जाति की पहचान उसके पास मौजूद प्रचुर कृषि भूमि, विशाल जनसंख्या और स्थानीय राजनीति पर उसके मजबूत नियंत्रण से होती है। ब्राह्मणों के पास धार्मिक श्रेष्ठता तो थी, लेकिन उनके पास अक्सर वह संख्यात्मक बल और भू-संपत्ति नहीं थी जो किसी जाति को 'प्रबल' बनाती है। अतः प्रभुत्व का आधार कर्मकांडीय शुद्धता के बजाय आर्थिक और राजनीतिक शक्ति होता है।

144. (B) शुद्धता और अशुद्धता की भावना
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से जनजाति और जाति के बीच का सबसे मौलिक अंतर 'शुद्धता' और 'अशुद्धता' की अवधारणा है। जाति व्यवस्था पूरी तरह इन कर्मकांडीय नियमों पर टिकी है, जहाँ समूहों के बीच सामाजिक दूरी और ऊंच-नीच इसी आधार पर तय होती है। इसके विपरीत, जनजातीय समाजों में इस प्रकार की कोई धार्मिक कट्टरता या अधिक्रमित भेदभाव नहीं पाया जाता। वे आमतौर पर अधिक समतावादी होते हैं और सामुदायिक एकता पर जोर देते हैं। यही वैचारिक अंतर जनजातियों को जाति आधारित समाज से पूरी तरह अलग और विशिष्ट बनाता है।

145. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
स्वतंत्रता के बाद भारतीय राज्य ने संवैधानिक रूप से जाति प्रथा को समाप्त करने और एक आधुनिक समाज बनाने का संकल्प लिया, परंतु व्यावहारिक धरातल पर उसे पूर्ण सफलता नहीं मिली। राज्य ने अस्पृश्यता के विरुद्ध कड़े कानून तो बनाए, लेकिन वह उन आमूलचूल आर्थिक सुधारों, जैसे प्रभावी भूमि सुधार, को लागू करने में हिचकिचाता रहा जो जातीय असमानता की जड़ पर प्रहार कर सकते थे। हालांकि दोनों कथन सत्य हैं, पर केवल आर्थिक पक्ष ही राज्य की विफलता का एकमात्र कारण नहीं था; सामाजिक और राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी भी इसमें शामिल थी।

146. (A) केवल 1, 2 और 5
विस्तृत या संयुक्त परिवार भारतीय समाज का एक पारंपरिक और महत्वपूर्ण रुप है, जिसमें कई पीढ़ियों के सदस्य और एक से अधिक विवाहित युगल साथ रहते हैं। 'ज्वाइंट फैमिली' शब्द भारतीय न होकर अंग्रेजी मूल का है, जो औपनिवेशिक समाजशास्त्रीय अध्ययन की देन है। संयुक्त परिवार में साझा संपत्ति और सामूहिक उत्तरदायित्व की भावना प्रबल होती है। हालांकि यह हमेशा एकमात्र रुप नहीं रहा, लेकिन ग्रामीण भारत में इसकी प्रधानता लंबे समय तक बनी रही है। यह व्यवस्था अपने सदस्यों को एक मजबूत सामाजिक और भावनात्मक सुरक्षा प्रदान करती है।

147. (C) पुरुषों के काम के लिए प्रवसन के कारण।
हिमालयी और कई अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में उन परिवारों की संख्या बढ़ रही है जहाँ घर की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं के कंधों पर है। इसका मुख्य कारण रोजगार के अभाव में पुरुषों का बड़े शहरों की ओर पलायन करना है। पुरुष घर से बाहर रहकर धन कमाते हैं, जबकि पीछे रह गई महिलाएँ खेती, बच्चों की देखभाल और घरेलू निर्णय लेने में अग्रणी भूमिका निभाती हैं। यह स्थिति परिवार की पारंपरिक पितृसत्तात्मक संरचना में बदलाव ला रही है और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में महिलाओं के महत्व और उनके उत्तरदायित्वों को बढ़ा रही है।

148. (D) पृथक्करण
जनजातियों का हिंदू समाज में आत्मसात्करण कई प्रक्रियाओं के माध्यम से हुआ है, जैसे संस्कृतीकरण, परसंस्कृतिग्रहण और ऐतिहासिक रूप से उन्हें निम्न वर्णों में शामिल करना। इसके विपरीत, 'पृथक्करण' (Isolation) वह स्थिति है जहाँ जनजातियों को मुख्यधारा से दूर और अलग रखने की नीति अपनाई जाती है। यह एकीकरण का नहीं, बल्कि अलगाव का तरीका है। ब्रिटिश काल में कुछ क्षेत्रों को 'वर्जित' घोषित करना इसी नीति का हिस्सा था। अतः पृथक्करण की नीति जनजातियों को व्यापक समाज में घुलने-मिलने से रोकती है, न कि उन्हें आत्मसात् करती है।

149. (C) एक विशुद्ध नस्ल
अंग्रेजी के 'कास्ट' शब्द का मूल पुर्तगाली 'कास्टा' है, जिसका अर्थ 'विशुद्ध नस्ल' होता है। औपनिवेशिक काल के दौरान जब यूरोपीय लोग भारत आए, तो उन्होंने भारतीय समाज के भीतर पाए जाने वाले कठोर वंशानुगत समूहों को इस शब्द से संबोधित किया। उनका मानना था कि ये समूह अपनी रक्त की शुद्धता और वंश परंपरा को बनाए रखने के लिए बाहरी लोगों से अलग रहते हैं। हालांकि भारतीय संदर्भ में जाति के अर्थ इससे कहीं अधिक जटिल और सांस्कृतिक हैं, फिर भी यह शाब्दिक अर्थ इसकी जन्म आधारित कठोरता को दर्शाता है।

150. (D) 1, 2, 3, 4 और 5 सभी
जाति व्यवस्था एक ऐसी जटिल संस्था है जो श्रम के सामाजिक विभाजन पर आधारित है, जहाँ प्रत्येक समूह का कार्य पूर्व-निर्धारित होता है। यह व्यवस्था सैद्धांतिक रूप से बहुत कठोर है और व्यक्ति को अपनी जातीय स्थिति बदलने की अनुमति नहीं देती। पारंपरिक ग्रामीण ढाँचे में विभिन्न जातियाँ एक-दूसरे की पूरक और सहयोगी बनकर रहती थीं, जिससे उनके बीच प्रतिस्पर्धा की संभावना कम थी। व्यवसाय और जाति का यह गहरा संबंध भारतीय सामाजिक और आर्थिक जीवन को सदियों से एक निश्चित और स्थिर स्वरूप प्रदान करता रहा है।

151. (B) शुद्धता और अशुद्धता का वैचारिक विरोध
लुई ड्यूमों इस बात पर जोर देते हैं कि भारतीय जाति व्यवस्था शुद्धता और अशुद्धता के बीच एक मौलिक वैचारिक विरोध पर बनी है। यह द्विआधारी तर्क सामाजिक स्तरीकरण और विभिन्न समूहों के पदानुक्रमित क्रम को नियंत्रित करता है। यह संपूर्ण विश्वदृष्टि को आकार देता है, प्रत्येक जाति को उनकी अनुष्ठानिक स्वच्छता के स्तर के आधार पर दूसरों के सापेक्ष जटिल सामाजिक समग्रता में स्थान देता है।

152. (A) सामाजिक अधिक्रम में स्थान द्वारा निर्धारित पहचान और स्थिति वाला व्यक्ति।
'होमो हायरेरिकस' की अवधारणा एक ऐसे मानव का प्रतिनिधित्व करती है जिसकी पहचान और सामाजिक स्थिति मौलिक रूप से एक पदानुक्रमित प्रणाली के भीतर उनके स्थान से परिभाषित होती है। पश्चिमी समाजों के व्यक्तिवादी फोकस के विपरीत, यह मॉडल सामूहिक समूह को प्राथमिकता देता है। व्यक्ति का मूल्य और सामाजिक भूमिका उनकी विशिष्ट जाति समूह की सदस्यता से उत्पन्न होती है और सामूहिक पहचान का हिस्सा बनती है।

153. (C) 'होमो हायरेरिकस' बनाम 'होमो एक्वालिस' के वैचारिक मॉडल पर
लुई ड्यूमों ने वैचारिक मॉडलों का उपयोग करके भारतीय और पश्चिमी समाजों की तुलना उनके भिन्न मूल मूल्यों को उजागर करने के लिए की। उन्होंने पारंपरिक भारतीय सामाजिक संरचनाओं की समग्र प्रकृति का वर्णन करने के लिए 'होमो हायरेरिकस' शब्द का उपयोग किया। इसके विपरीत, 'होमो एक्वालिस' पश्चिमी समाजों की विशेषता बताता है, जो व्यक्तिवाद और समानता के सिद्धांत को सामाजिक व्यवस्था के आधार के रूप में प्राथमिकता देते हैं।

154. (D) उसके जाति समूह की सदस्यता
पारंपरिक भारतीय सामाजिक ढांचे में, किसी व्यक्ति की पहचान व्यक्तिगत योग्यता के बजाय मुख्य रूप से एक विशिष्ट जाति समूह की सदस्यता से प्राप्त होती है। इस सामूहिक अभिविन्यास का अर्थ है कि सामाजिक मूल्य और स्थिति विरासत में मिलती है और जन्म से तय होती है। यह व्यवस्था व्यक्ति पर समूह की प्राथमिकता पर जोर देती है, जिससे जाति इकाई व्यक्ति के सामाजिक अस्तित्व की केंद्रीय विशेषता बन जाती है।

155. (C) यह पारंपरिक रूप से जीवन के राजनीतिक और आर्थिक पहलुओं को समाहित करता है।
लुई ड्यूमों के अनुसार, धर्म पारंपरिक भारतीय समाज में एक समावेशी भूमिका निभाता है, जो राजनीति और अर्थशास्त्र जैसे अन्य क्षेत्रों को अपने अधीन करता है। इसका मतलब है कि धार्मिक मूल्य और शुद्धता का पदानुक्रम जीवन के सभी पहलुओं में व्याप्त है। एक अलग क्षेत्र होने के बजाय, धार्मिक ढांचा वह व्यापक संरचना प्रदान करता है जो विभिन्न जाति समूहों के बीच सामाजिक और आर्थिक बातचीत व्यवस्थित करता है।

156. (B) दशकीय जनगणना
ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासकों ने जटिल भारतीय जनसंख्या को वर्गीकृत और प्रबंधित करने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक उपकरण के रूप में दशकीय जनगणना का उपयोग किया। 1871 में शुरु हुए इस व्यवस्थित डेटा संग्रह का उद्देश्य प्रत्येक व्यक्ति को जाति के आधार पर वर्गीकृत करना और उनकी स्थिति रिकॉर्ड करना था। यह प्रक्रिया विविध सामाजिक परिदृश्य का एक संरचित और प्रलेखित मानचित्र बनाकर औपनिवेशिक शासन को सरल बनाने के लिए थी।

157. (D) इसने तरल जातिगत प्रकृति को एक कठोर और स्थायी ढांचे में बदला।
जनगणना प्रक्रिया ने जाति व्यवस्था की तरल और संदर्भ-आधारित प्रकृति को एक कठोर, प्रलेखित ढांचे के साथ बदलकर उसे बदल दिया। आधिकारिक सरकारी अभिलेखों में जातिगत पहचान दर्ज करके, ब्रिटिश प्रशासन ने अनजाने में सामाजिक श्रेणियों को मजबूत किया। इस संस्थागतकरण ने जाति को एक निश्चित, अखिल भारतीय ढांचे में बदल दिया,

जिससे यह स्थानीय विविधताओं और ऐतिहासिक परिवर्तनों के प्रति पहले की तुलना में कम अनुकूल बन गई।

158. (A) जाति को अमूर्त विचार से मूर्त एवं प्रशासनिक श्रेणी में बदलना।
वस्तुनिष्ठकरण उस प्रक्रिया को संदर्भित करता है जहां जाति की अमूर्त सामाजिक अवधारणा को एक ठोस, गणनीय और प्रशासनिक श्रेणी में बदल दिया गया था। जनगणना के माध्यम से, औपनिवेशिक राज्य ने जाति को एक मूर्त रूप दिया जिसे मापा जा सकता था। इस बदलाव ने जातिगत पहचान को अधिक दृश्यमान और स्थायी बना दिया, क्योंकि वे औपनिवेशिक नौकरशाही तंत्र और व्यापक जन चेतना के भीतर आधिकारिक डेटा बन गए।

159. (C) जनगणना में उच्च स्थिति हेतु प्रतिस्पर्धा करना और याचिकाएँ भेजना।
जनगणना ने विभिन्न जाति समूहों के बीच तीव्र प्रतिस्पर्धा पैदा की जिन्होंने अपनी आधिकारिक सामाजिक स्थिति सुधारने की कोशिश की। कई समूहों ने जनगणना आयुक्तों को याचिकाएं भेजीं, जिनमें पदानुक्रम में उच्च रैंक का दावा करने के लिए ऐतिहासिक और पौराणिक साक्ष्यों का उपयोग किया गया। इस प्रशासनिक अभ्यास ने सामाजिक स्थिति को आधिकारिक रिकॉर्ड का विषय बनाया, जिससे समूहों को बेहतर स्थिति और आधिकारिक पहचान हेतु सक्रिय रूप से जुटने की प्रेरणा मिली।

160. (A) इसने जातिगत पहचान को अधिक सचेत और राजनीतिक रूप से संवेदनशील बनाया।
औपनिवेशिक जनगणना का एक महत्वपूर्ण दीर्घकालिक प्रभाव अधिक सचेत और राजनीतिक रूप से संवेदनशील जातिगत पहचान का निर्माण था। सामाजिक पदानुक्रमों को आधिकारिक और सार्वजनिक करके, इस प्रक्रिया ने आधुनिक जाति की राजनीति की नींव रखी। सामाजिक समूह अपने सामूहिक हितों और स्थिति के बारे में तेजी से जागरूक हो गए, जिससे आधुनिक राजनीतिक जीवन में एक शक्तिशाली और प्रभावी शक्ति के रूप में जाति की सफल लामबंदी हुई।

161. (D) जनजातियाँ और जातियाँ एक निरंतरता के दो छोर हैं, जिनमें मध्यवर्ती समूह हैं।
जनजाति-जाति सांतत्यक सुझाव देता है कि जनजातियाँ और जातियाँ परस्पर अनन्य श्रेणियाँ नहीं हैं, बल्कि एक ही सामाजिक और सांस्कृतिक स्पेक्ट्रम के दो छोरों का प्रतिनिधित्व करती हैं। यह मॉडल विभिन्न मध्यवर्ती समूहों के अस्तित्व को स्वीकार करता है जो दोनों प्रकार की विशेषताओं को साझा करते हैं। यह इन सामाजिक रूपों के बीच तरल सीमाओं पर प्रकाश डालता है, बजाय इसके कि उन्हें पूरी तरह से अलग इकाइयों के रूप में देखा जाए।

162. (B) यह कि जनजातियाँ और जातियाँ पूर्णतः पृथक और अलग सामाजिक इकाइयाँ हैं।
यह समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य इस पारंपरिक विश्वास को चुनौती देता है कि जनजातियाँ और जातियाँ पूरी तरह से विशिष्ट और अलग सामाजिक इकाइयाँ हैं। पारंपरिक रूप से, उन्हें बिना ओवरलैपिंग विशेषताओं वाले अलग समूहों के रूप में देखा जाता था। हालाँकि, सांतत्यक मॉडल का तर्क है कि ऐतिहासिक संपर्क ने उनके बीच एक सेतु बना दिया है, जिससे जनजातीय समाजों और हिंदू जाति व्यवस्था के बीच एक स्पष्ट रेखा खींचना काफी मुश्किल हो गया है।

163. (C) संस्कृतिकरण
हिंदू जाति पदानुक्रम में जनजातीय समूहों का एकीकरण अक्सर संस्कृतिकरण की प्रक्रिया से जुड़ा होता है। इस सांस्कृतिक तंत्र के माध्यम से, जनजातियाँ सामाजिक मान्यता प्राप्त करने के लिए उच्च स्थिति वाली हिंदू जातियों के रीति-रिवाजों और विश्वासों को अपनाती हैं। यह क्रमिक संक्रमण जनजातीय समुदायों को प्रभावशाली समूहों के जीवन पैटर्न की नकल करके जाति ढांचे के भीतर जाने की अनुमति देता है, जिससे उनकी सामाजिक स्थिति में क्रमिक परिवर्तन आता है।

164. (D) अपेक्षाकृत पृथक और समतावादी
जनजाति-जाति सांतत्यक मॉडल के भीतर, जनजातीय समूहों को आम तौर पर अपेक्षाकृत अलग-थलग रहने और समतावादी सामाजिक संरचनाओं को बनाए रखने के रूप में जाना जाता है। स्तरीकृत और पदानुक्रमित जाति व्यवस्था के विपरीत, पारंपरिक जनजातियाँ अक्सर सांप्रदायिक जीवन और जीववादी मान्यताओं को प्राथमिकता देती हैं। उनमें उन जटिल अनुष्ठानिक शुद्धता नियमों और कठोर सामाजिक परतों की कमी होती है जो रुढ़िवादी हिंदू सामाजिक संगठन को परिभाषित करते हैं।

165. (A) संपर्क और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर आधारित एक जटिल एवं गतिशील प्रक्रिया।
जनजाति से जाति में संक्रमण को सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आर्थिक एकीकरण से जुड़ी एक जटिल और गतिशील प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया गया है। यह कोई सरल मार्ग नहीं है बल्कि क्षेत्रीय इतिहास और सामाजिक संपर्क के आधार पर काफी भिन्न होता है। यह विकास सामाजिक प्रणालियों के बीच बातचीत को दर्शाता है, जहां समूह व्यापक हिंदू समाज और संस्थानों के साथ लंबे जुड़ाव के माध्यम से स्वयं को ढालते हैं।

166. (B) वैश्वीकरण, नगरीकरण, और आधुनिकीकरण की शक्तियाँ
समकालीन भारतीय परिवार वैश्वीकरण, नगरीकरण और आधुनिकीकरण की शक्तिशाली ताकतों से प्रेरित महत्वपूर्ण परिवर्तनों से गुजर रहे हैं। ये बाहरी प्रभाव बेहतर आर्थिक अवसरों के लिए शहरों की ओर प्रवास को प्रोत्साहित करते हैं और नए शैक्षिक मूल्यों को पेश करते हैं। सामूहिक रूप से, ये कारक पारंपरिक आवासीय पैटर्न को कमजोर करते हैं और बदलते सामाजिक-आर्थिक परिदृश्य के भीतर छोटी, अधिक स्वायत्त परिवार इकाइयों के उदय को प्रभावी ढंग से बढ़ावा देते हैं।

167. (B) एकल परिवार
पारंपरिक संयुक्त परिवार संरचना आधुनिक भारत में तेजी से एकल परिवार मॉडल की ओर बढ़ रही है। यह बदलाव मुख्य रूप से शहरी प्रवास, व्यक्तिगत करियर की तलाश और पश्चिमी शिक्षा के प्रभाव के कारण है। एकल परिवारों में, माता-पिता

और उनके बच्चे स्वतंत्र रूप से रहते हैं, जो व्यक्तिवाद की ओर एक व्यापक प्रवृत्ति और भीड़भाड़ वाले शहरी वातावरण में रहने की विभिन्न व्यावहारिक सामाजिक और आर्थिक आवश्यकताओं को दर्शाता है।

168. (A) महिलाओं की शिक्षा और कार्यबल में बढ़ती हुई सक्रिय भागीदारी
भारतीय परिवार के भीतर सत्ता की गतिशीलता में बदलाव का मुख्य श्रेय महिलाओं की शिक्षा और कार्यबल में उनकी भागीदारी को दिया जाता है। जैसे-जैसे महिलाएं वित्तीय स्वतंत्रता हासिल करती हैं, पारंपरिक पितृसत्तात्मक अधिकार को चुनौती दी जा रही है। इसके परिणामस्वरुप अधिक सहयोगी निर्णय लेने की प्रक्रियाएं होती हैं, जहां महत्वपूर्ण घरेलू मामलों में महिलाओं की आवाज और पसंद का काफी वजन होता है और उनकी स्वायत्तता बढ़ती है।

169. (C) भौगोलिक अलगाव के बावजूद सदस्यों में आर्थिक और भावनात्मक जुड़ाव रहना।
कार्यात्मक संयुक्त परिवार की अवधारणा ऐसी स्थिति का वर्णन करती है जहां परिवार के सदस्य अलग-अलग स्थानों पर रहते हैं लेकिन मजबूत भावनात्मक, सामाजिक और आर्थिक संबंध बनाए रखते हैं। हालांकि वे एक ही छत साझा नहीं करते, वे वित्तीय जरूरतों के दौरान एक-दूसरे का समर्थन करते हैं और महत्वपूर्ण जीवन कार्यक्रमों के लिए इकट्ठा होते हैं। यह अनुकूलन आधुनिक और गतिशील समाज के भीतर संयुक्त प्रणाली के सार को जीवित रहने देता है।

170. (D) निरंतरता और परिवर्तन के बीच संतुलन की संक्रमणकालीन अवस्था।
भारतीय परिवार को वर्तमान में निरंतरता और परिवर्तन की शक्तियों को संतुलित करने वाली एक संक्रमणकालीन अवस्था में वर्णित किया गया है। जबकि आधुनिक दबाव एकल व्यवस्था और व्यक्तिवादी मूल्यों को प्रोत्साहित करते हैं, पारंपरिक बंधन और कार्यात्मक संबंध मजबूत बने हुए हैं। यह विकास बताता है कि परिवार संस्था ढह नहीं रही है, बल्कि समकालीन सामाजिक और आर्थिक वास्तविकताओं के अनुरूप अपने रूप और कार्यों को सफलतापूर्वक ढाल रही है।

171. (C) एम. एन. श्रीनिवास
संस्कृतिकरण और प्रबल जाति की अवधारणाएँ प्रसिद्ध भारतीय समाजशास्त्री एम. एन. श्रीनिवास द्वारा विकसित की गई थीं। उनके काम ने जाति की गतिशील प्रकृति को उजागर करके भारतीय सामाजिक संरचना की समझ को मौलिक रूप से बदल दिया। इन सैद्धांतिक ढांचों के माध्यम से, श्रीनिवास ने ग्रामीण भारतीय समुदायों और देश के व्यापक सामाजिक ताने-बाने के भीतर सामाजिक गतिशीलता और शक्ति के वितरण का विश्लेषण करने का एक महत्वपूर्ण तरीका प्रदान किया।

172. (B) सामाजिक पदानुक्रम में अपनी जाति की स्थिति को ऊपर उठाना।
संस्कृतिकरण का प्राथमिक लक्ष्य किसी निम्न-स्तर की जाति या समूह के लिए स्थानीय सामाजिक पदानुक्रम के भीतर अपनी स्थिति को ऊपर उठाना है। उच्च जातियों के रीति-रिवाजों और विचारधाराओं को अपनाकर, ये समूह अपनी सामाजिक स्थिति में सुधार करना चाहते हैं। यह प्रक्रिया मौजूदा जाति ढांचे के भीतर स्थितिगत परिवर्तन की अनुमति देती है, भले ही यह प्रणाली के समग्र संरचनात्मक तर्क को मौलिक रूप से नहीं बदलती है।

173. (D) कर्मकांडीय पदानुक्रम में सर्वोच्च स्थान
लेख के अनुसार, अनुष्ठानिक पदानुक्रम में उच्चतम रैंक धारण करना प्रबल जाति होने के लिए अनिवार्य आवश्यकता नहीं है। इसके बजाय, प्रबलता धर्मनिरपेक्ष कारकों जैसे संख्यात्मक शक्ति, भूमि पर स्वामित्व और आधुनिक शिक्षा या सरकारी नौकरियों तक पहुंच से निर्धारित होती है। एक समूह शीर्ष धार्मिक स्थिति पर कब्जा किए बिना किसी क्षेत्र में शक्तिशाली और प्रभावशाली होकर स्थानीय सामाजिक संरचना पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकता है।

174. (A) आर्थिक और राजनीतिक प्रभुत्व के माध्यम से।
एक प्रबल जाति मुख्य रूप से आर्थिक और राजनीतिक संसाधनों पर अपने नियंत्रण के माध्यम से किसी विशिष्ट क्षेत्र पर अपना प्रभाव डालती है। भूमि का स्वामित्व और बड़ी आबादी इन समूहों को स्थानीय शासन पर हावी होने और संसाधनों के वितरण को निर्धारित करने की अनुमति देती है। यह धर्मनिरपेक्ष शक्ति उन्हें ग्रामीण सामाजिक जीवन में केंद्रीय अधिकारियों के रूप में कार्य करने और अन्य जातियों को प्रभावित करने में सक्षम बनाती है।

175. (C) यह व्यवस्था में संरचनात्मक बदलाव के बिना स्थितिगत परिवर्तन की अनुमति देती है।
संस्कृतिकरण दर्शाता है कि जाति व्यवस्था मौलिक संरचनात्मक परिवर्तनों के बिना स्थितिगत गतिशीलता की अनुमति देती है। जबकि व्यक्तिगत समूह अपनी जीवनशैली और अनुष्ठानों को बदलकर पदानुक्रम में ऊपर जा सकते हैं, प्रणाली का समग्र ढांचा बरकरार रहता है। यह प्रक्रिया साबित करती है कि जाति पूरी तरह से स्थिर नहीं है, फिर भी प्रणाली की पदानुक्रमित तर्क और सीमाएं सामाजिक संबंधों को परिभाषित करना जारी रखती हैं।

अध्याय 04
बाज़ार एक सामाजिक संस्था के रूप में

1. दैनिक बोलचाल में 'बाज़ार' शब्द का प्रयोग निम्नलिखित में से किसके लिए हो सकता है?
   (A) केवल क्रय-विक्रय हेतु निर्धारित किया गया एक निश्चित स्थान
   (B) उपरोक्त सभी विकल्प
   (C) किसी एक विशेष उत्पाद या सेवा की होने वाली कुल माँग
   (D) स्थानीय खरीदारों और विक्रेताओं का एक बड़ा सामाजिक जमावड़ा

2. अर्थशास्त्र की पारंपरिक समझ के विपरीत, समाजशास्त्र बाज़ार को किस रूप में देखता है?
   (A) सांस्कृतिक रूप से निर्मित एक विशिष्ट सामाजिक संस्था
   (B) एक विशुद्ध आर्थिक संस्था जिसमें केवल व्यक्तिगत लाभ का महत्व हो
   (C) एक राजनीतिक संस्था जो पूर्णतः सत्ता के नियमों द्वारा संचालित हो
   (D) एक पूरी तरह से स्वतंत्र, स्व-नियामक और स्वायत्त आर्थिक प्रणाली

3. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
   सूची I: (अवधारणा)
   P. अदृश्य हाथ
   Q. पण्यीकरण
   R. प्रतिष्ठा का प्रतीक
   S. जजमानी व्यवस्था
   सूची II: (विवरण)
   1. कार्ल मार्क्स
   2. मैक्स वेबर
   3. एडम स्मिथ
   4. गैर-बाज़ारी विनिमय
   कूट:
   (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
   (B) P-1, Q-2, R-3, S-4
   (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
   (D) P-2, Q-1, R-4, S-3

4. समाजशास्त्रियों का यह मानना कि 'अर्थव्यवस्थाएँ समाज में रची-बसी हैं' का क्या तात्पर्य है?
   (A) अर्थव्यवस्था और समाज दो पूर्णतः भिन्न और स्वतंत्र प्रणालियाँ हैं।
   (B) मानव समाज पूर्णतः केवल कठोर आर्थिक सिद्धांतों द्वारा ही नियंत्रित है।
   (C) आधुनिक अर्थव्यवस्था का अध्ययन समाज से पूर्णतः पृथक होकर संभव है।
   (D) आर्थिक व्यवहार सामाजिक मानदंडों और मूल्यों से गहरा जुड़ाव रखता है।

5. एडम स्मिथ ने अपनी किस पुस्तक में बाज़ार की अर्थव्यवस्था को समझने का प्रयास किया?
   (A) द ग्रेट ट्रांसफॉर्मेशन
   (B) दास कैपिटल
   (C) द वेल्थ ऑफ नेशन्स
   (D) द डिवीज़न ऑफ़ लेबर इन सोसायटी

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
   अभिकथन (A): एडम स्मिथ का कारण था कि बाज़ारी अर्थव्यवस्था व्यक्तियों के बीच सौदों का एक लंबा क्रम है जो स्वतः एक कार्यशील और स्थिर व्यवस्था की स्थापना करती है।
   कारण (R): यह व्यवस्था तब भी बनती है जब लेन-देन में शामिल कोई भी व्यक्ति इसकी स्थापना का इरादा नहीं रखता है।
   (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
   (D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

7. छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के धोराई गाँव का साप्ताहिक 'आदिवासी बाज़ार' किस बात का एक प्रमुख उदाहरण है?
   (A) एक स्थायी शहरी बाज़ार का
   (B) एक ऑनलाइन बाज़ार का
   (C) एक अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले का
   (D) एक आवधिक बाज़ार या 'हाट' का

8. साप्ताहिक आदिवासी हाटों में आर्थिक लेन-देन के अलावा कौन सी सामाजिक गतिविधियाँ महत्त्वपूर्ण होती हैं?
   (A) रिश्तेदारों से मिलना, विवाह तय करना और गपशप करना
   (B) केवल विभिन्न प्रकार की वस्तुओं की निरंतर खरीद-बिक्री
   (C) केवल स्थानीय राजनीतिक रैलियों और सभाओं का

आयोजन
(D) केवल पारंपरिक धार्मिक अनुष्ठानों का सार्वजनिक प्रदर्शन

9. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. साप्ताहिक हाट ग्रामीण और नगरीय भारत में एक आम नज़ारा है।
2. आदिवासी इलाकों में साप्ताहिक बाज़ार सामाजिक मेल-मिलाप की एक प्रमुख संस्था बन जाता है।
3. इन बाज़ारों में केवल आर्थिक गतिविधियाँ होती हैं।
4. इन हाटों में विक्रेता मुख्यतः आदिवासी होते हैं, पर खरीददार जाति-प्रधान हिंदू होते हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही संयोजन है/हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 2 और 3 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

10. उपनिवेशिक शासन के दौरान जनजातीय क्षेत्रों को वृहद अर्थव्यवस्था से जोड़ने का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों और खनिजों तक पहुँच बनाना
(B) जनजातीय लोगों का सर्वांगीण विकास और कल्याण सुनिश्चित करना
(C) जनजातीय संस्कृति और स्थानीय परंपराओं को सक्रिय बढ़ावा देना
(D) स्थानीय लोगों को प्रशासनिक और राजनीतिक अधिकार प्रदान करना

11. बस्तर जिले के साप्ताहिक बाज़ार में आदिवासियों और अन्य लोगों के बीच किस प्रकार का संबंध देखा जाता है?
(A) पूर्ण सामाजिक समानता और आपसी सहयोग का संबंध
(B) पूर्ण सामाजिक अलगाव और संपर्क की समाप्ति का संबंध
(C) सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आपसी समझ का व्यापक अभाव
(D) बाहरी व्यापारियों द्वारा किया जाने वाला आर्थिक शोषण

12. उपनिवेशवाद से पहले भारतीय अर्थव्यवस्था की विशेषता के बारे में ऐतिहासिक शोध क्या दर्शाते हैं?
(A) अर्थव्यवस्था पूरी तरह से गैर-बाज़ारी और आत्मनिर्भर थी।
(B) एक विस्तृत और परिष्कृत व्यापारिक तंत्र पहले से ही विद्यमान था।
(C) रुपये-पैसे का प्रयोग केवल उपनिवेश काल में शुरु हुआ।
(D) भारत का बाहरी दुनिया से कोई व्यापारिक संबंध नहीं था।

13. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अवधारणा/वस्तु)
P. हुंडी
Q. धोराई
R. वैश्य
S. मारवाड़ी

सूची II: (विवरण)
1. चार वर्णों में से एक
2. एक सफल व्यापारिक समुदाय
3. विनिमय का बिल
4. आदिवासी बाज़ार वाला गाँव

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

14. 'पारंपरिक व्यापारिक समुदायों' के व्यापार में सफलता का एक मुख्य कारण क्या था?
(A) सरकारी प्रशासन द्वारा प्राप्त विशेष संरक्षण
(B) विदेशी व्यापारियों के साथ होने वाली सीधी प्रतिस्पर्धा
(C) आधुनिक विनिर्माण और वितरण प्रौद्योगिकी का उपयोग
(D) जाति और नातेदारी आधारित घनिष्ठ सामाजिक तंत्र

15. निम्नलिखित में से कौन सा कथन तमिलनाडु के नाकरट्टारों के संदर्भ में सही है?
(A) उनकी बैंकिंग व्यवस्था जाति और प्रतिष्ठा पर आधारित थी।
(B) वे सरकार नियंत्रित केंद्रीय बैंक के नियमों के अनुसार कार्य करते थे।
(C) उनका व्यापारिक नेटवर्क नातेदारी संबंधों से परे था।
(D) उन्होंने आधुनिक पश्चिमी बैंकिंग प्रणाली को पूरी तरह से अपना लिया था।

16. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. पारसी
2. सिंधी
3. बोहरा
4. जैन
5. बंजारे

उपरोक्त में से कौन-कौन से समुदाय भारत में 'पारंपरिक व्यापारिक समुदायों' के उदाहरण हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 4 और 5
(D) उपरोक्त सभी

17. भारत में व्यापार के कुछ विशेष क्षेत्रों पर किसी एक जाति के एकाधिकार का क्या कारण है?
(A) क्योंकि केंद्र सरकार द्वारा उन्हें यह एकाधिकार प्रदान किया जाता है।
(B) क्योंकि व्यापार मुख्य रूप से जाति एवं नातेदारी तंत्रों में ही होता है।

(C) क्योंकि अन्य जातियों को व्यापारिक गतिविधियों की अनुमति नहीं दी गई थी।
(D) क्योंकि उन विशेष जातियों के पास दैवीय अथवा अलौकिक शक्तियाँ थीं।

18. उपनिवेशवाद के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था में क्या प्रमुख परिवर्तन आया?
(A) भारत कच्चे माल का स्रोत और निर्मित वस्तुओं का उपभोक्ता बना।
(B) भारत तैयार निर्मित माल का एक विश्वस्तरीय प्रमुख निर्यातक बन गया।
(C) भारतीय स्थानीय हथकरघा और लघु उद्योग का चहुंमुखी विकास हुआ।
(D) भारत की घरेलू अर्थव्यवस्था विश्व अर्थव्यवस्था से पूर्णतः अलग हो गई।

19. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): उपनिवेश काल के दौरान मारवाड़ी एक सफल व्यापारिक समुदाय के रूप में उभरे।
कारण (R): उन्होंने कलकत्ता जैसे उपनिवेशिक शहरों में मिलने वाले नए सुअवसरों का लाभ उठाया और देश के विभिन्न भागों में बस गए।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

20. मारवाड़ियों की व्यापारिक सफलता में उनके 'गहन सामाजिक तंत्र' की क्या भूमिका थी?
(A) इसने उन्हें राज्य की सर्वोच्च राजनीतिक और सैन्य शक्ति प्रदान की।
(B) इसने उन्हें विदेशी आक्रमणों से पूर्ण सैन्य और भौतिक सुरक्षा प्रदान की।
(C) इसका उनकी व्यावसायिक सफलता में वास्तव में कोई योगदान नहीं था।
(D) इसने बैंकिंग हेतु आवश्यक विश्वासपूर्ण संबंधों को स्थापित किया।

21. कार्ल मार्क्स ने पूँजीवाद को किस प्रकार की व्यवस्था के रूप में समझा?
(A) आपसी सहयोग और समानता पर आधारित एक आदर्श सामाजिक व्यवस्था।
(B) एक पूरी तरह से पारंपरिक और ग्रामीण कृषि-आधारित व्यवस्था।
(C) पण्य (commodity) उत्पादन और श्रमिक मजदूरी आधारित व्यवस्था
(D) एक राज्य-नियंत्रित और पूर्णतः केंद्रीकृत आर्थिक व्यवस्था।

22. कार्ल मार्क्स के अनुसार, पूँजीवादी उत्पादन विधि के अंतर्गत समाज के दो आधारभूत वर्ग कौन से हैं?
(A) ग्रामीण जमींदार और भूमिहीन बटाईदार किसान
(B) प्रभुत्वशाली पूँजीपति और सर्वहारा श्रमिक
(C) धार्मिक पुजारी और रक्षक योद्धा वर्ग
(D) स्वतंत्र व्यापारी और हस्तशिल्प कारीगर

23. 'पण्यीकरण' (Commodification) की प्रक्रिया से क्या तात्पर्य है?
(A) किसी वस्तु को बाज़ार की आपूर्ति से पूर्णतः हटा देना।
(B) बाज़ार में उपलब्ध वस्तुओं का जनता के बीच मुफ्त वितरण।
(C) केवल पारंपरिक और स्थानीय वस्तुओं का सीमित विनिमय।
(D) गैर-बाज़ारी वस्तुओं का बाज़ार में क्रय-विक्रय योग्य बनना

24. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (स्थान)
P. बस्तर
Q. कलकत्ता
R. तमिलनाडु
S. पुष्कर
सूची II: (संबंधित संदर्भ)
1. नाकरट्टार समुदाय
2. गोंड आदिवासी और साप्ताहिक हाट
3. वार्षिक पशु मेला
4. मारवाड़ियों द्वारा नए अवसरों का लाभ
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

25. निम्नलिखित में से कौन सा समकालीन भारत में पण्यीकरण का उदाहरण है?
(A) पारंपरिक रुप से आयोजित पारिवारिक विवाह समारोह
(B) परिवार के बुजुर्गों के भीतर सिखाया जाने वाला शिष्टाचार
(C) व्यावसायिक विवाह ब्यूरो और व्यक्तित्व सुधार पाठ्यक्रम
(D) स्थानीय समुदायों द्वारा धार्मिक उत्सवों का आयोजन

26. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. मार्क्स के अनुसार, अर्थव्यवस्था चीजों से नहीं बल्कि लोगों के बीच के रिश्तों से बनती है।
2. पूँजीवाद में, श्रमिकों को अपनी श्रम शक्ति को बाज़ार में बेचना पड़ता है।
3. पूँजीपति श्रमिकों को उनके काम का पूरा मूल्य चुकाते हैं।

4. पूँजीवाद में, श्रम एक बिकाऊ सामान बन जाता है।

उपरोक्त कथनों में से गलत कथन की पहचान कीजिए।

(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 3
(D) केवल 4

27. मैक्स वेबर ने उपभोग की वस्तुओं और जीवनशैली को समाज में व्यक्ति की स्थिति से कैसे जोड़ा?

(A) उन्होंने इस विशेष प्रक्रिया को 'अतिरिक्त मूल्य' का नाम दिया।
(B) उन्होंने इसे सामाजिक 'पण्यीकरण' की संज्ञा प्रदान की।
(C) उन्होंने इसे आर्थिक सिद्धांत का 'अदृश्य हाथ' कहा।
(D) उन्होंने इसे 'प्रतिष्ठा का प्रतीक' (Status Symbol) कहा।

28. भूमंडलीकरण के युग की शुरुआत भारत में किस बड़े नीतिगत परिवर्तन से जुड़ी है?

(A) संरक्षणवादी आर्थिक नीतियों को और अधिक मजबूत करना
(B) उदारवाद की ओर आर्थिक नीतियों का रणनीतिक परिवर्तन
(C) घरेलू बाज़ारों पर सरकारी नियंत्रण को और अधिक बढ़ाना
(D) विदेशी व्यापार और निवेश पर पूर्ण कानूनी प्रतिबंध लगाना

29. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:

1. भूमंडलीकरण का अर्थ है अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वस्तुओं, पूँजी और लोगों का बढ़ता संचलन।
2. भूमंडलीकरण दुनिया भर के बाज़ारों के विस्तार और एकीकरण से संबंधित है।
3. अमेरीकी बाज़ार में गिरावट का भारतीय सॉफ्टवेयर उद्योग पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
4. भारत में BPO उद्योग भूमंडलीकरण का एक प्रमुख परिणाम है।
5. भूमंडलीकरण केवल एक आर्थिक प्रक्रिया है।

उपरोक्त कथनों में से सही संयोजन का चयन कीजिए।

(A) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
(B) केवल 3 और 5 गलत हैं।
(C) केवल 1, 2, 3 और 4 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

30. भूमंडलीकरण के संदर्भ में, 'संस्कृति का बाज़ारीकरण' का एक उदाहरण क्या है?

(A) स्थानीय त्योहारों का केवल स्थानीय लोगों द्वारा मनाया जाना
(B) विदेशी फिल्मों और संगीत के प्रसारण पर पूर्ण प्रतिबंध
(C) पारंपरिक लोक कलाओं का समाज से पूर्णतः लुप्त हो जाना
(D) पश्चिम में भारतीय ज्ञान प्रणालियों की बढ़ती लोकप्रियता

31. राजस्थान का प्रसिद्ध पुष्कर मेला, जो मूल रूप से एक पशु मेला है, अब अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर किस रूप में भी जाना जाता है?

(A) एक अत्यंत महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल
(B) एक उच्च स्तरीय औद्योगिक प्रदर्शनी
(C) एक राष्ट्रीय स्तर का राजनीतिक सम्मेलन
(D) एक शैक्षणिक और वैज्ञानिक संगोष्ठी

32. उदारीकरण की नीति में निम्नलिखित में से क्या शामिल नहीं है?

(A) सरकारी विभागों का निजीकरण
(B) आयात शुल्क में वृद्धि और विदेशी वस्तुओं पर प्रतिबंध
(C) विदेशी कंपनियों को भारत में उद्योग स्थापित करने में सहूलियत देना
(D) पूँजी, श्रम और व्यापार में सरकारी दखल कम करना

33. उदारीकरण के समर्थक इसके पक्ष में क्या तर्क देते हैं?

(A) इससे समाज के सभी वर्गों में पूर्ण समानता बढ़ती है।
(B) कुशल निजी संस्थाओं के कारण आर्थिक संवृद्धि होती है।
(C) यह देश के अत्यंत छोटे उत्पादकों की सदैव रक्षा करता है।
(D) यह सभी सुरक्षित सरकारी नौकरियों को हमेशा बनाए रखता है।

34. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।

अभिकथन (A): उदारीकरण का भारतीय समाज पर मिश्रित प्रभाव रहा है।

कारण (R): जबकि कुछ क्षेत्रों जैसे सॉफ्टवेयर को फायदा हुआ है, वहीं अन्य क्षेत्रों जैसे छोटे उत्पादकों को विदेशी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

35. कृषि क्षेत्र पर उदारीकरण के प्रभाव के संदर्भ में, 'सहायता मूल्य' (Support Price) और 'सब्सिडी' को हटाने का किसानों पर क्या असर हुआ?

(A) सभी लघु और सीमांत किसानों की आय में भारी वृद्धि हुई।
(B) किसान अब विश्व बाज़ार की प्रतिस्पर्धा से पूर्णतः सुरक्षित हो गए।
(C) कई किसान आजीविका अर्जित करने में असफल रहे।
(D) राष्ट्रीय कृषि उत्पादन में अभूतपूर्व और स्थायी वृद्धि हुई।

36. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (अवधारणा)
P. उदारीकरण
Q. भूमंडलीकरण
R. पण्यीकरण
S. साप्ताहिक हाट
सूची II: (उदाहरण/परिणाम)
1. धोराई गाँव का बाज़ार
2. बोतल का पानी
3. BPO उद्योग का विकास
4. सरकारी विभागों का निजीकरण
कूट:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

37. एक सामाजिक संस्था के रूप में बाज़ार की तुलना किन अन्य सामाजिक संस्थाओं से की जा सकती है?
(A) स्थानीय सरकार और संवैधानिक न्यायालय
(B) सामुदायिक स्कूल और सार्वजनिक अस्पताल
(C) जाति, जनजाति और परिवार
(D) देश की थल सेना और नागरिक पुलिस

38. अठारहवीं शताब्दी के इंग्लैंड में अर्थशास्त्र को क्या कहा जाता था?
(A) सामाजिक भौतिकी
(B) राजनीतिक अर्थव्यवस्था
(C) प्राकृतिक दर्शन
(D) नैतिक विज्ञान

39. धोराई गाँव के साप्ताहिक बाज़ार में गैर-बाज़ारी दिनों में सामाजिक जीवन कहाँ तक सीमित रहता है?
(A) गाँव के मुख्य स्थानीय मंदिर में
(B) गाँव के सार्वजनिक पंचायत घर में
(C) गाँव के स्कूल के मुख्य मैदान में
(D) दो प्राचीन स्थानीय चाय की दुकानों तक

40. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. औपनिवेशिक दौर में जनजातीय श्रम का एक 'बाज़ार' विकसित हुआ।
2. बाहर से साहूकारों और व्यापारियों के आने से आदिवासियों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।
3. उपनिवेशवाद ने जनजातीय अर्थव्यवस्थाओं को बड़े बाज़ारों से जोड़ा, जिसका असर हमेशा सकारात्मक रहा।
4. कई आदिवासियों ने अपनी जमीन बाहरी लोगों के हाथ खो दी।

उपरोक्त कथनों में से सही संयोजन का चयन कीजिए।
(A) केवल 1 और 4 सही हैं।
(B) केवल 2 और 3 सही हैं।
(C) केवल 1 और 3 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

41. बस्तर के साप्ताहिक बाज़ार में खरीददार और विक्रेता की सामाजिक संरचना के बारे में क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
(A) स्थानीय खरीददार और विक्रेता दोनों ही मुख्य रूप से आदिवासी होते हैं।
(B) स्थानीय खरीददार और विक्रेता दोनों ही मुख्य रूप से जाति-प्रधान हिंदू होते हैं।
(C) खरीददार मुख्यतः आदिवासी, जबकि विक्रेता जाति-प्रधान हिंदू हैं।
(D) खरीददार मुख्यतः जाति-प्रधान हिंदू, जबकि विक्रेता आदिवासी होते हैं।

42. उपनिवेश-पूर्व भारत में व्यापार में इस्तेमाल होने वाले 'हुंडी' का क्या कार्य था?
(A) यह लंबी दूरी के व्यापार हेतु विनिमय का बिल था।
(B) यह एक विशेष प्रकार का चांदी का सिक्का था।
(C) यह राज्य द्वारा जारी किया गया व्यापार का लाइसेंस था।
(D) यह जहाजों द्वारा माल ले जाने का एक विशेष दस्तावेज़ था।

43. 'वैश्य' वर्ण का पारंपरिक रूप से किस कार्य से संबंध रहा है?
(A) प्रशासन का संचालन और युद्ध में रक्षा
(B) धार्मिक पूजा-पाठ और शिक्षा का प्रचार
(C) ग्रामीण कृषि और पशुपालन की गतिविधियाँ
(D) व्यापार और वाणिज्य की गतिविधियाँ

44. उपनिवेश काल में नमक का दूर-दराज़ तक व्यापार करने वाले जनजातीय समूह का क्या नाम था?
(A) गोंड
(B) बंजारे
(C) संथाल
(D) भील

45. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): मार्क्स के अनुसार, पूँजीवाद में श्रमिकों का शोषण होता है।
कारण (R): पूँजीपति श्रमिकों को उनके श्रम के बराबर दाम नहीं देते और 'अतिरिक्त मूल्य' के रूप में मुनाफा कमाते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

46. हाल के दिनों में पानी की बोतलों का सर्वत्र उपलब्ध होना किस प्रक्रिया का एक उदाहरण है?
(A) प्रशासनिक उदारीकरण

(B) वैश्विक भूमंडलीकरण
(C) तीव्र निजीकरण
(D) सामाजिक पण्यीकरण

47. उपभोक्ता द्वारा खरीदी गई कार का मॉडल या सेलफोन का ब्रांड किस बात का प्रमुख साधन बन गया है?
(A) व्यक्ति की सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति का
(B) व्यक्ति की अपनी व्यक्तिगत राजनीतिक विचारधारा का
(C) व्यक्ति की अटूट धार्मिक आस्था का प्रदर्शन करने का
(D) व्यक्ति की औपचारिक शैक्षणिक योग्यता की पुष्टि का

48. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (विचारक)
P. एडम स्मिथ
Q. कार्ल मार्क्स
R. मैक्स वेबर
S. अल्फ्रेड गेल
सूची II: (योगदान/अध्ययन)
1. पूँजीवाद और अतिरिक्त मूल्य
2. प्रतिष्ठा का प्रतीक
3. अदृश्य हाथ और द वेल्थ ऑफ नेशन्स
4. धोराई के आदिवासी बाज़ार का अध्ययन
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

49. 'बाज़ार' शब्द के विभिन्न अर्थों में कौन सी एक बात समान है?
(A) वे सभी शब्द केवल और केवल भौतिक स्थानों का उल्लेख करते हैं।
(B) वे सभी विशिष्ट संदर्भ के अनुसार ही समझे जा सकते हैं।
(C) वे सभी केवल अमूर्त और जटिल आर्थिक प्रक्रियाओं का वर्णन करते हैं।
(D) वे सभी केवल और केवल खरीदारों के बड़े जमावड़े को दर्शाते हैं।

50. एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, बाज़ारों का नियंत्रण या संगठन अक्सर किनके द्वारा होता है?
(A) विशेष सामाजिक समूहों या वर्गों द्वारा
(B) केवल देश की निर्वाचित सरकार द्वारा
(C) केवल अमूर्त वैश्विक आर्थिक शक्तियों द्वारा
(D) केवल बहुराष्ट्रीय विदेशी कंपनियों द्वारा

51. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. भारत में उदारीकरण की नीतियों की शुरुआत।
2. एडम स्मिथ द्वारा 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' का प्रकाशन।
3. भारत में उपनिवेशवाद की स्थापना और अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप।
4. नाकरट्टारों जैसी पारंपरिक व्यापारिक व्यवस्थाओं का सक्रिय होना।
(A) 4, 3, 2, 1
(B) 2, 4, 3, 1
(C) 4, 2, 3, 1
(D) 2, 3, 4, 1

52. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'आधुनिक अर्थशास्त्र' की आधारभूत मान्यता को दर्शाता है?
(A) अर्थव्यवस्था को समाज के एक अविभाज्य हिस्से के रूप में पढ़ा जाना चाहिए।
(B) अर्थव्यवस्था पूरी तरह से राजनीतिक निर्णयों पर निर्भर है।
(C) आर्थिक व्यवहार हमेशा पूरी तरह तर्कहीन होता है।
(D) अर्थव्यवस्था समाज से पृथक नियमों से चल सकती है।

53. साप्ताहिक हाट उन पहाड़ी और जंगलाती इलाकों में विशेष रूप से महत्वपूर्ण क्यों हैं?
(A) क्योंकि वहाँ के लोग आर्थिक रूप से अत्यंत समृद्ध होते हैं।
(B) क्योंकि वहाँ रोज़ नए आधुनिक शॉपिंग मॉल खुल रहे हैं।
(C) वहाँ अधिवास बिखरा है और संचार व्यवस्था जीर्ण-शीर्ण है।
(D) क्योंकि वहाँ के लोगों को नियमित व्यापार करना पसंद नहीं है।

54. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और गलत कथन की पहचान करें:
(A) साप्ताहिक बाज़ारों में साहूकार, मसखरे, और ज्योतिषी भी अपनी सेवाएँ देने आते हैं।
(B) साप्ताहिक हाट केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं और उनका राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था से कोई संबंध नहीं होता।
(C) आवधिक बाज़ारों का एक उदाहरण पशुबाज़ार भी है।
(D) धोराई के बाज़ार में वन अधिकारी भी आदिवासी श्रमिकों को भत्ता बाँटने आते हैं।

55. बस्तर के साप्ताहिक हाट में आदिवासी अपने कमाए हुए पैसे को मुख्यतः किन चीज़ों पर खर्च करते हैं?
(A) आधुनिक लक्जरी कारों और बड़े विलासितापूर्ण घरों पर
(B) शेयर बाज़ार और वित्तीय प्रतिभूतियों में निवेश पर
(C) ग्रामीण क्षेत्र में अतिरिक्त खेती योग्य ज़मीन खरीदने पर
(D) गहनों और बने-बनाए सस्ते कपड़ों पर

56. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. नाकरट्टारों की बैंकिंग व्यवस्था एक जाति आधारित बैंकिंग व्यवस्था थी।
2. नाकरट्टारों में विनिमय सरकारी नियमों के बजाय नेकनामी (प्रतिष्ठा), निर्णय, और क्षमता पर आधारित था।
3. एक एकल नाकरट्टार व्यक्ति को संपूर्ण जाति का प्रतिनिधि माना जाता था।
4. उनकी व्यवस्था आधुनिक पश्चिमी बैंकिंग व्यवस्था के

समान थी।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(C) केवल 4 गलत है।
(D) (B) और (C) दोनों

57. उपनिवेश काल से पहले भारत किन वस्तुओं का एक मुख्य निर्माता और निर्यातक था?

(A) आधुनिक कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर सेवाएँ
(B) ऑटोमोबाइल पुर्जे और आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरण
(C) हथकरघा कपड़े (सूती/रेशमी) और मसालों का निर्यात
(D) भारी औद्योगिक मशीनरी और उच्च गुणवत्ता वाला इस्पात

58. मारवाड़ी समुदाय का प्रतिनिधित्व किनसे होता है?

(A) बड़े औद्योगिक घरानों से लेकर छोटे दुकानदारों तक सभी
(B) केवल बिड़ला जैसे विशाल और पुराने औद्योगिक घरानों से
(C) केवल ग्रामीण इलाकों के छोटे दुकानदारों और व्यापारियों से
(D) केवल पारंपरिक साहूकारों और साहूकारी करने वाले परिवारों से

59. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।

अभिकथन (A): पारंपरिक रूप से पहले विवाह परिवार के लोगों द्वारा तय किए जाते थे।

कारण (R): आज व्यावसायिक विवाह ब्यूरो की भरमार पण्यीकरण की प्रक्रिया को दर्शाती है, जहाँ विवाह तय कराने की सेवा एक बिकाऊ वस्तु बन गई है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

60. 1980 के दशक के बाद भारत द्वारा अपनाई गई उदारवाद की आर्थिक नीति को क्या कहा जाता है?

(A) एक पूर्णतः नियोजित मिश्रित अर्थव्यवस्था
(B) अर्थव्यवस्था का व्यापक बाज़ारीकरण
(C) शुद्ध आर्थिक विकास का समाजवादी मॉडल
(D) घरेलू उद्योगों हेतु कठोर संरक्षणवाद

61. Business Process Outsourcing (BPO) उद्योग, जैसे call center, किस प्रकार भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ते हैं?

(A) भारी मात्रा में भारत में विदेशी विलासिता की वस्तुओं का आयात करके।
(B) भारतीय पर्यटकों को भारी संख्या में विदेश यात्रा पर भेजकर।
(C) पश्चिमी देशों को सस्ता श्रम और सेवाएँ प्रदान करके।
(D) भारत में प्रत्यक्ष विदेशी निवेश पर पूर्ण कानूनी रोक लगाकर।

62. पुष्कर मेले में किनका सम्मेलन होता है?

(A) केवल रेगिस्तानी ऊँटों और स्थानीय छोटे पशु व्यापारियों का
(B) केवल हिंदू तीर्थयात्रियों और कुछ विदेशी सैलानियों का
(C) केवल स्थानीय संगीतकारों और आध्यात्मिक रहस्यवादियों का
(D) तीर्थयात्रियों, पशुओं, व्यापारियों और सैलानियों का मिश्रण

63. 'निजीकरण' से क्या तात्पर्य है, जो उदारीकरण की नीति का एक हिस्सा है?

(A) सरकारी संस्थानों को प्राइवेट कंपनियों के हाथों बेचना।
(B) सरकारी संस्थानों को और अधिक प्रशासनिक अधिकार प्रदान करना।
(C) निजी कंपनियों की गतिविधियों पर सरकारी नियंत्रण को बढ़ाना।
(D) नई सरकारी विनिर्माण और सेवा कंपनियाँ स्थापित करना।

64. निम्नलिखित में से किस भारतीय उद्योग को वैश्विक बाज़ार से फायदा होने की संभावना व्यक्त की गई है?

(A) ऑटोमोबाइल विनिर्माण और घरेलू इलेक्ट्रॉनिक्स उत्पाद
(B) सॉफ्टवेयर विकास और सूचना तकनीकी क्षेत्र
(C) तेलीय अनाजों का स्थानीय और राष्ट्रीय कृषि उद्योग
(D) उपरोक्त सभी दिए गए विकल्प

65. निम्नलिखित में से कौन सा कथन बाज़ार पर समाजशास्त्री दृष्टिकोण को सबसे अच्छी तरह से दर्शाता है?

(A) बाज़ार केवल और केवल माँग और आपूर्ति के कठोर नियमों से चलते हैं।
(B) बाज़ार सांस्कृतिक संदर्भ में निहित एक सामाजिक संस्था है।
(C) बाज़ार विशुद्ध आर्थिक संस्थाएँ हैं जिनका व्यापक समाज से कोई लेना-देना नहीं है।
(D) बाज़ार केवल और केवल व्यक्तियों के तर्कसंगत स्व-हित का सीधा परिणाम हैं।

66. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:

सूची I: (प्रक्रिया)

P. पण्यीकरण
Q. उदारीकरण
R. उपनिवेशीकरण
S. सामाजिक मेल-मिलाप

सूची II: (संबंधित उदाहरण/स्थान)

1. साप्ताहिक आदिवासी हाट
2. भारतीय अर्थव्यवस्था का कच्चे माल का स्रोत बनना
3. व्यावसायिक विवाह ब्यूरो
4. कृषि में सब्सिडी कम करना

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

67. समाजशास्त्र में 'बृहत् अर्थ में' बाज़ार किसके लगभग समान है?
(A) पारंपरिक संयुक्त परिवार
(B) राष्ट्रीय स्तर की राजनीति
(C) व्यापक राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था
(D) सांस्कृतिक और सामाजिक धर्म

68. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. एडम स्मिथ को समकालीन आर्थिक विचारों का उद्गमकर्ता माना जाता है।
2. स्मिथ का मानना था कि तार्किक स्वयं-लाभ आर्थिक समृद्धि को बढ़ावा देता है।
3. स्मिथ ने यह विचार खुली-बाज़ार अर्थव्यवस्था के संदर्भ में दिया।
4. स्मिथ ने राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था का समर्थन किया।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(C) केवल 4 गलत है।
(D) (B) और (C) दोनों

69. जनजातीय क्षेत्रों को 'खोलने' के लिए औपनिवेशिक सरकार ने क्या तरीके अपनाए?
(A) स्थानीय लोगों को प्रत्यक्ष वित्तीय सहायता प्रदान करना
(B) जनजातीय संस्कृति का व्यापक स्तर पर प्रचार-प्रसार करना
(C) सड़कों का निर्माण कर बाह्य संपर्क को सुगम बनाया
(D) स्थानीय स्व-शासन और पंचायत को निरंतर बढ़ावा देना

70. "यह माना जाता रहा है कि आर्थिक रूपांतरण उपनिवेशवाद के साथ ही शुरू हुआ।" इस कथन के संबंध में ऐतिहासिक शोध क्या दर्शाते हैं?
(A) यह कथन ऐतिहासिक रूप से पूरी तरह से सही है।
(B) यह गलत है; पूर्व में भी विकसित व्यापारिक अर्थव्यवस्था थी।
(C) आर्थिक रूपांतरण वास्तव में केवल स्वतंत्रता के बाद ही शुरू हुआ।
(D) उपनिवेशवाद का भारतीय अर्थव्यवस्था पर कोई वास्तविक प्रभाव नहीं पड़ा।

71. निम्नलिखित में से कौन सा एक पारंपरिक गैर-बाज़ारी विनिमय व्यवस्था का उदाहरण है?
(A) आधुनिक शेयर बाज़ार
(B) शहरी सुपरमार्केट
(C) डिजिटल ऑनलाइन शॉपिंग
(D) ग्रामीण जजमानी व्यवस्था

72. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के काल के अनुसार क्रमबद्ध करें:
1. भारत में भूमंडलीकरण और उदारीकरण की प्रक्रिया का तेज होना।
2. उपनिवेशवाद के दौरान भारत का ब्रिटिश निर्मित माल के लिए बाज़ार बनना।
3. 'हुंडी' जैसी प्रणालियों के साथ एक परिष्कृत पूर्व-औपनिवेशिक व्यापार नेटवर्क का अस्तित्व।

(A) 1, 2, 3
(B) 3, 2, 1
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 1, 2

73. कार्ल मार्क्स ने किस बात पर जोर दिया कि अर्थव्यवस्था किससे बनती है?
(A) केवल भौतिक चीजों और क्रय-विक्रय की वस्तुओं से
(B) केवल संचित नगद पैसे और भौतिक पूँजी के भंडार से
(C) उत्पादन प्रक्रिया से जुड़े लोगों के सामाजिक संबंधों से
(D) सरकार द्वारा बनाई गई कठोर विनियामक आर्थिक नीतियों से

74. मानव अंगों के पण्यीकरण के संबंध में क्या नैतिक चिंता व्यक्त की गई है?
(A) लोग मानते हैं कि यह अनैतिक और मानव मूल्यों के विरुद्ध है।
(B) यह आर्थिक रूप से सभी वर्गों के लिए बहुत लाभदायक है।
(C) यह आधुनिक चिकित्सा का एक अत्यंत आवश्यक और अनिवार्य अंग है।
(D) इस प्रक्रिया पर वर्तमान में समाज में कोई विवाद नहीं है।

75. टेलीविजन विज्ञापनों और होर्डिंग्स का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?
(A) केवल उत्पाद की विशिष्ट विशेषताओं के बारे में जानकारी देना।
(B) सरकार की विभिन्न जनकल्याणकारी नीतियों का प्रचार करना।
(C) आम लोगों को भविष्य हेतु अधिक बचत करने के लिए प्रोत्साहित करना।
(D) उत्पाद को प्रस्थिति या संस्कृति के प्रतीक के रूप में बेचना

76. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भूमंडलीकरण के कारण दुनिया के किसी एक कोने के बाज़ार में हुए परिवर्तन का असर दूसरे कोनों पर भी पड़ सकता है।
कारण (R): न्यूयॉर्क में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हुए हमले के बाद भारतीय सॉफ्टवेयर उद्योग में गिरावट इसका एक उदाहरण है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

77. पुष्कर मेले का धार्मिक महत्व किस कारण से है?
(A) वहाँ एक बहुत विशाल और ऐतिहासिक चर्च स्थित है।
(B) यह बौद्ध समुदाय का एक प्रमुख और प्राचीन तीर्थ स्थल है।
(C) कार्तिक पूर्णिमा पर होने वाला पवित्र तालाब स्नान
(D) इसका कोई धार्मिक महत्व नहीं है, यह केवल एक शुद्ध व्यापारिक मेला है।

78. 'बाज़ारीकरण' (Marketization) की प्रक्रिया में क्या शामिल है?
(A) समस्याओं के समाधान के लिए सरकारी नियमों और नीतियों का उपयोग।
(B) बाज़ारों और बाज़ार की गतिविधियों को पूरी तरह से खत्म कर देना।
(C) सभी निजी उद्योगों का पूर्णतः और तत्काल राष्ट्रीयकरण कर देना।
(D) समस्याओं हेतु बाज़ार-आधारित प्रक्रियाओं का उपयोग करना

79. उदारीकरण के आलोचकों का क्या मानना है?
(A) विदेशी प्रतिस्पर्धा से कुछ भारतीय उद्योग समाप्त हो सकते हैं।
(B) उदारीकरण से सभी भारतीय उद्योगों को समान रूप से लाभ होगा।
(C) उदारीकरण का भारतीय परिवेश पर कोई प्रतिकूल असर नहीं होगा।
(D) उदारीकरण से रोज़गार के स्थायी और सुरक्षित अवसर बढ़ेंगे।

80. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (समुदाय/वर्ग)
P. नाकरट्टार
Q. मारवाड़ी
R. श्रमिक
S. गोंड आदिवासी
सूची II: (विशेषता/अवधारणा)
1. अपनी श्रम शक्ति बेचते हैं
2. जाति-आधारित बैंकिंग
3. छत्तीसगढ़ के आदिवासी
4. सफल व्यापारिक समुदाय
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

81. "एक साप्ताहिक सब्ज़ी बाज़ार नगरीय पड़ोस या पड़ोसी गाँव में हफ़्ते के हर दिन विभिन्न स्थानों पर पाया जा सकता है।" यह किस प्रकार के बाज़ार का उदाहरण है?
(A) एक पूर्णतः स्थायी बाज़ार
(B) एक नियमित आवधिक बाज़ार
(C) एक आधुनिक आभासी बाज़ार
(D) एक विशेषीकृत व्यावसायिक बाज़ार

82. धोराई गाँव (बस्तर) के साप्ताहिक बाज़ार के संबंध में निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. यह छत्तीसगढ़ के उत्तरी बस्तर जिले में स्थित है।
2. बाज़ार के दिन यह गाँव एक शांत स्थान से एक व्यस्त केंद्र में बदल जाता है।
3. बाज़ार में केवल आदिवासी लोग ही सामान बेचने आते हैं।
4. बाज़ार एक चतुर्भुजीय जमीनी हिस्से पर लगता है जिसके बीच में एक बरगद का पेड़ है।
5. वन विभाग के अधिकारी भी यहाँ मौजूद रहते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2, और 4 सही हैं।
(B) केवल 1, 2, 4, और 5 सही हैं।
(C) केवल 3 गलत है।
(D) (B) and (C) both are correct.

83. 'पारंपरिक' और 'आधुनिक' अर्थव्यवस्था के बीच विभाजन के बारे में समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण क्या है?
(A) यह विभाजन व्यवहार में बहुत स्पष्ट और सटीक है।
(B) पारंपरिक अर्थव्यवस्था हमेशा आधुनिक से श्रेष्ठ और बेहतर थी।
(C) यह विभाजन स्पष्ट नहीं है, दोनों घुले-मिले हुए हैं।
(D) आधुनिक अर्थव्यवस्था का पारंपरिक अर्थव्यवस्था से कोई संबंध नहीं है।

84. उपनिवेशवाद के आगमन से भारतीय अर्थव्यवस्था में हुए विघटन का एक प्रमुख उदाहरण क्या है?
(A) आधुनिक राष्ट्रीय इस्पात उद्योग का तीव्र विकास
(B) राष्ट्रीय बैंकिंग व्यवस्था का और अधिक सुदृढ़ होना
(C) कुल राष्ट्रीय कृषि उत्पादन में भारी और निरंतर वृद्धि
(D) पारंपरिक हथकरघा उद्योगों का पूर्णतः नष्ट हो जाना

85. मार्क्स के अनुसार, पूँजीपति वर्ग को मुनाफा कैसे होता है?

(A) सभी श्रमिकों को उनके काम का पूरा और उचित मूल्य देकर।
(B) सरकार से समय-समय पर वित्तीय सब्सिडी प्राप्त करके।
(C) श्रमिकों के श्रम से 'अतिरिक्त मूल्य' का दोहन करके
(D) बाज़ार में वस्तुओं की कीमतें कृत्रिम रुप से बढ़ाकर।

86. निम्नलिखित में से कौन सी चीज पहले बाज़ार का हिस्सा नहीं थी, पर अब पण्यीकरण के कारण बन गई है?
(A) दैनिक उपभोग का अनाज
(B) निजी संस्थाओं द्वारा व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण
(C) शरीर ढंकने के लिए कपड़े
(D) भोजन के लिए साधारण नमक

87. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन मैक्स वेबर के 'प्रतिष्ठा के प्रतीक' की अवधारणा को सही ढंग से स्पष्ट करता है?
(A) लोग अपनी बुनियादी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ही सामान खरीदते हैं।
(B) वस्तुओं की कीमत केवल उनकी वास्तविक उपयोगिता से ही तय होती है।
(C) व्यक्तिगत उपभोग का सामाजिक प्रस्थिति से कोई वास्तविक संबंध नहीं है।
(D) हैसियत दिखाने के लिए विशेष ब्रांड की वस्तुओं का उपयोग

88. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. भारत में विदेशी वस्तुओं का आसान आयात संभव हुआ।
2. भारत में कृषि उत्पादों के लिए सहायता मूल्य और सब्सिडी की व्यवस्था थी।
3. सरकारी विभागों का निजीकरण शुरु हुआ।
(A) 2, 1, 3
(B) 2, 3, 1
(C) 1, 2, 3
(D) 3, 2, 1

89. निजीकरण के कारण सरकारी विभागों के कर्मचारियों पर क्या असर हुआ है?
(A) उनकी सेवा और नौकरियाँ अब और अधिक सुरक्षित हो गईं।
(B) उनके मासिक वेतन और भत्तों में भारी वृद्धि दर्ज हुई।
(C) उनकी नौकरियों और रोज़गार की स्थिरता कम हो गई
(D) उन्हें विभाग में पदोन्नति के और अधिक अवसर प्राप्त हुए।

90. असंगठित क्षेत्र के रोज़गार की क्या मुख्य विशेषता है?
(A) कम तनख्वाह और अस्थायी प्रकृति की नौकरियाँ
(B) उच्च मासिक तनख्वाह और पूर्णतः स्थायी नौकरी
(C) अच्छी कार्य दशाएं और व्यापक सामाजिक सुरक्षा का लाभ
(D) नियमित समय पर पदोन्नति और सवेतन छुट्टियां मिलना

91. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): समाजशास्त्री परिप्रेक्ष्य के अनुसार, बाज़ार केवल आर्थिक विनिमय के स्थान नहीं हैं।
कारण (R): बाज़ार सामाजिक संस्थाएं भी हैं जो जाति, वर्ग और परिवार जैसी अन्य सामाजिक संस्थाओं से जटिल तरीकों से जुड़े हुए हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

92. आदिवासी हाट में जाने का प्रमुख 'सामाजिक' कारण क्या है?
(A) केवल बहुत ही सस्ता और स्थानीय सामान खरीदना
(B) रिश्तेदारों से मिलना और विवाह संबंधी चर्चा करना
(C) विभिन्न व्यापारियों से वस्तुओं का मोलभाव करना
(D) स्थानीय साहूकार से उच्च ब्याज पर कर्ज प्राप्त करना

93. निम्नलिखित में से किसने दावा किया कि अर्थव्यवस्था को समाज के एक पृथक हिस्से के रुप में पढ़ा जा सकता है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) मैक्स वेबर
(C) एडम स्मिथ जैसे प्रारंभिक विचारक
(D) ईमाइल दुर्खाइम

94. बस्तर के साप्ताहिक बाज़ार में विभिन्न प्रकार के विक्रेताओं में कौन शामिल नहीं है?
(A) बनी-बनाई वस्तुएं बेचने वाले (गहने, बर्तन)
(B) स्थानीय खाद्य सामग्री बेचने वाले विक्रेता
(C) जंगल के उत्पाद (इमली, तिलहन) लाने वाले आदिवासी
(D) भारी औद्योगिक मशीनरी बेचने वाले विक्रेता

95. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (पुस्तक)
P. द वेल्थ ऑफ नेशन्स
Q. द डिवीज़न ऑफ़ लेबर इन सोसायटी
R. अर्बोनॉट्स ऑफ़ द वेस्टर्न पेसिफिक
S. द गिफ्ट
सूची II: (लेखक)
1. ईमाइल दुर्खाइम
2. एडम स्मिथ
3. मार्शल मॉस
4. ब्रान्सला मेलिनोवस्की
कूट:
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

96. नाकरट्टारों की व्यापारिक व्यवस्था में विश्वास कैसे सुनिश्चित होता था?
(A) राज्य की सरकारी पुलिस और प्रशासन द्वारा
(B) जाति और नातेदारी आधारित सामाजिक संबंधों द्वारा
(C) कठोर लिखित कानूनी अनुबंधों और समझौतों द्वारा
(D) क्षेत्र की प्रभावी सैन्य शक्ति और नियंत्रण द्वारा

97. उपनिवेश काल के दौरान नए व्यापारिक समुदायों के उदय का क्या प्रमुख कारण था?
(A) पुराने समुदायों ने स्वेच्छा से व्यापार छोड़ दिया था।
(B) उपनिवेशवाद द्वारा प्रदान किए गए नए सुअवसर
(C) सरकार ने नए समुदायों को व्यापार करने का आदेश दिया था।
(D) धार्मिक नेताओं के विशेष आह्वान और निर्देशों पर।

98. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. मार्क्स के अनुसार हर उत्पादन विधि एक विशिष्ट वर्ग संरचना का निर्माण करती है।
2. पूँजीवाद में केवल एक वर्ग होता है - पूँजीपति।
3. पूँजीवाद में श्रम शक्ति एक पण्य नहीं है।
4. पूँजीवादी व्यवस्था में, उत्पादन के साधनों पर पूँजीपतियों का स्वामित्व होता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 4 सही हैं।
(B) केवल 2 और 3 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

99. भूमंडलीकरण के अंतर्गत किन चीज़ों का दुनिया भर में परिचालन होता है?
(A) केवल संचित पूँजी और भौतिक वस्तुओं का
(B) केवल लोगों और विभिन्न सांस्कृतिक उत्पादों का
(C) पूँजी, वस्तु, लोग, संस्कृति और छवियों का संचलन
(D) केवल डिजिटल सूचना और आधुनिक प्रौद्योगिकी का

100. पुष्कर मेले के वर्णन में किस बात पर सर्वाधिक जोर दिया गया है?
(A) मेले के दौरान होने वाली शांति और नीरसता पर
(B) मेले में केवल शुद्ध व्यापारिक गतिविधियों के संचालन पर
(C) मेले के क्षेत्रीय और राष्ट्रीय राजनीतिक महत्व पर
(D) रंग, चहल-पहल और धार्मिक-सांस्कृतिक मिश्रण पर

101. निम्नलिखित में से कौन-सा एक उदारीकरण के संभावित नकारात्मक परिणाम के रूप में देखा जाता है?
(A) समाज के सभी वर्गों के लिए पूर्ण आर्थिक समृद्धि
(B) रोज़गार के नए अवसरों में निरंतर होने वाली वृद्धि
(C) विदेशी प्रतिस्पर्धा के कारण छोटे उत्पादकों का नुकसान
(D) सरकारी राजकोष और खजाने में होने वाली अपार वृद्धि

102. विनिमय के कौन से प्रमुख पहलू होते हैं?
(A) केवल कठोर आर्थिक पहलू
(B) आर्थिक, सांकेतिक और सांस्कृतिक सभी पहलू
(C) केवल प्रतीकात्मक और सांकेतिक पहलू
(D) केवल स्थानीय सांस्कृतिक पहलू

103. 'जहाँ जनजातीय क्षेत्रों में साप्ताहिक बाज़ार एक बहुत पुरानी संस्था है वहीं समय के साथ इनके स्वरूप में परिवर्तन भी हुआ है।' यह परिवर्तन मुख्य रूप से किस कारण से आया?
(A) स्थानीय आदिवासियों की समय के साथ बदलती रुचियों के कारण।
(B) क्षेत्र में होने वाले दीर्घकालिक जलवायु परिवर्तन के कारण।
(C) जनजातीय नेताओं और पंचायतों के सामूहिक निर्णय के कारण।
(D) औपनिवेशिक नियंत्रण और बड़ी अर्थव्यवस्थाओं से जुड़ाव

104. 'पारंपरिक व्यापारिक समुदायों' के अध्ययन के लिए समाजशास्त्रियों ने किस समुदाय पर सर्वाधिक ध्यान दिया है?
(A) नाकरट्टार समुदाय
(B) बंजारे समुदाय
(C) गोंड समुदाय
(D) संथाल समुदाय

105. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): व्यापारी अपने स्वयं के समुदायों के लोगों पर अधिक विश्वास करते हैं।
कारण (R): इस विश्वास के कारण, वे बाहर के लोगों की बजाय अपने ही संपर्कों में व्यापार करते हैं, जिससे कभी-कभी व्यापार के कुछ क्षेत्रों पर एक जाति का एकाधिकार हो जाता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

106. निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) पूँजीवाद एक जटिल सामाजिक व्यवस्था भी है।
(B) पूँजीवाद में श्रमिक को अपनी श्रम शक्ति बेचनी पड़ती है।
(C) मार्क्स के अनुसार पूँजीवाद एक शोषण रहित व्यवस्था है।
(D) पण्यीकरण की प्रक्रिया पूँजीवाद के विकास से जुड़ी है।

107. निम्नलिखित में से कौन सा भारत में शिक्षा के पण्यीकरण का एक उदाहरण है?
(A) राज्य द्वारा संचालित सरकारी स्कूल
(B) संयुक्त परिवार द्वारा बच्चों को दिया जाने वाला ज्ञान

(C) इंटरनेट पर उपलब्ध मुफ्त ऑनलाइन शैक्षिक संसाधन
(D) व्यक्तित्व और अंग्रेज़ी सिखाने वाली निजी कोचिंग

108. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. आवधिक बाज़ार
Q. पारंपरिक व्यापारिक समुदाय
R. पण्य का उदाहरण
S. प्रतिष्ठा का प्रतीक
सूची II: (उदाहरण)
1. नाकरट्टार
2. साप्ताहिक आदिवासी हाट
3. ब्रांडेड कार
4. बोतल बंद पानी
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

109. भूमंडलीकरण की एक केंद्रीय विशेषता क्या है?
(A) बाज़ारों का निरंतर संकुचन और उनका पूर्ण अलगाव।
(B) केवल स्थानीय उत्पादों को ही सक्रिय बढ़ावा देना।
(C) वैश्विक स्तर पर बाज़ारों का विस्तार और एकीकरण
(D) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और आवाजाही पर कानूनी रोक लगाना।

110. उदारीकरण के तहत कृषि सब्सिडी कम करने का क्या परिणाम हुआ?
(A) ग्रामीण किसानों की उत्पादन लागत काफी कम हो गई।
(B) केंद्र सरकार पर पड़ने वाला वित्तीय बोझ बहुत बढ़ गया।
(C) सभी किसानों को राज्य द्वारा न्यूनतम आय की गारंटी मिली।
(D) किसानों हेतु खाद और डीजल जैसे कृषि इनपुट महंगे हुए

111. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. समाजशास्त्र बाज़ार को एक सामाजिक संस्था मानता है।
2. अर्थशास्त्र बाज़ार को एक आर्थिक संस्था मानता है।
3. एडम स्मिथ ने बाज़ार में 'अदृश्य हाथ' की अवधारणा दी।
4. कार्ल मार्क्स ने बाज़ार का पूर्ण समर्थन किया।
5. मैक्स वेबर ने 'प्रतिष्ठा का प्रतीक' की अवधारणा दी।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2, 3, और 5 सही हैं।
(B) केवल 1, 2, 4, और 5 सही हैं।
(C) केवल 4 गलत है।
(D) (A) और (C) दोनों।

112. धोराई के साप्ताहिक बाज़ार में 'समृद्धि के साथ अस्त-व्यस्तता' का दृश्य क्या दर्शाता है?
(A) बाज़ार में कोई भी वास्तविक खरीदार या विक्रेता उपस्थित नहीं है।
(B) बड़ी संख्या में लोग, वस्तुएँ और गतिविधियाँ मौजूद हैं
(C) बाज़ार में बेचने हेतु बहुत ही कम मात्रा में सामान उपलब्ध है।
(D) बाज़ार बहुत ही अधिक साफ-सुथरा और पूर्णतः व्यवस्थित है।

113. 'जजमानी व्यवस्था' के विपरीत, जो एक गैर-बाज़ारी विनिमय था, उपनिवेशवाद ने किस चीज को बढ़ावा दिया?
(A) वस्तु विनिमय की पारंपरिक प्रणाली को
(B) व्यावसायिक रुपये-पैसे आधारित अर्थव्यवस्था को
(C) पूर्णतः आत्मनिर्भर ग्रामीण समुदायों की स्थापना को
(D) तीव्र सामाजिक अलगाव और विखंडन को

114. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में, निम्नलिखित को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. भारत में उदारीकरण की नीतियां।
2. उपनिवेशवाद के दौरान मारवाड़ी समुदाय का उदय।
3. तमिलनाडु के नाकरट्टारों की जाति-आधारित बैंकिंग प्रणाली।
(A) 1, 2, 3
(B) 3, 2, 1
(C) 2, 3, 1
(D) 3, 1, 2

115. 'पहले के समय में, सामाजिक कौशल और शिष्टाचार परिवार में ही सिखाया जाता था।' आज यह कार्य मुख्य रुप से किनके द्वारा किया जा रहा है?
(A) जिला प्रशासन द्वारा संचालित सरकारी स्कूलों द्वारा
(B) स्थानीय और राष्ट्रीय स्तर के धार्मिक संस्थानों द्वारा
(C) व्यक्तित्व सँवारने वाली निजी शिक्षण संस्थाओं द्वारा
(D) आस-पड़ोस और दोस्तों के अनौपचारिक समूहों द्वारा

116. किस विचारक ने सबसे पहले इस बात को सामने रखा कि लोग जो सामान खरीदते हैं, वह समाज में उनकी 'प्रस्थिति' से जुड़ा होता है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) एडम स्मिथ
(C) अल्फ्रेड गेल
(D) मैक्स वेबर

117. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): उदारवाद के कार्यक्रमों के तहत हुए परिवर्तनों ने भारतीय बाज़ारों को विदेशी कंपनियों के लिए खोला।
कारण (R): इसके परिणामस्वरुप, अब भारत में कई विदेशी वस्तुएँ बिकती हैं, जो पहले यहाँ उपलब्ध नहीं थीं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही

व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

118. आधुनिक भारत में किस प्रकार के बाज़ार मौजूद हैं?
(A) केवल ग्रामीण इलाकों के पारंपरिक हाट
(B) ग्रामीण हाट से लेकर अप्रत्यक्ष स्टॉक एक्सचेंज तक सभी
(C) केवल बड़े शहरों के आधुनिक स्टॉक एक्सचेंज
(D) केवल इंटरनेट आधारित डिजिटल ऑनलाइन बाज़ार

119. साप्ताहिक आदिवासी बाज़ारों को 'आवधिक बाज़ार' क्यों कहा जाता है?
(A) क्योंकि वे व्यापार हेतु हमेशा खुले रहते हैं।
(B) क्योंकि वे केवल एक ही प्रकार की व्यावसायिक वस्तु बेचते हैं।
(C) क्योंकि वे भौगोलिक रूप से केवल शहरों में स्थित होते हैं।
(D) क्योंकि वे एक निश्चित अंतराल पर आयोजित होते हैं

120. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें और गलत कथन चुनें।
(A) बाज़ार में विनिमय होने वाली सभी वस्तुएँ स्थानीय रूप से निर्मित होती हैं।
(B) बस्तर जिले में गोंड आदिवासी रहते हैं।
(C) साप्ताहिक बाज़ार में गैर-जनजातीय हिंदू भी भाग लेते हैं।
(D) वन अधिकारी भी बाज़ार में कर्तव्यों के निर्वहन हेतु आते हैं।

121. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (शब्द)
P. हाट
Q. हुंडी
R. BPO
S. वैश्य
सूची II: (अर्थ)
1. व्यापारिक वर्ण
2. बाह्यस्रोतों के प्रयोग का उद्योग
3. आवधिक बाज़ार
4. विनिमय का बिल
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

122. मारवाड़ियों की सफलता में किस कारक ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई?
(A) उनके जाति आधारित गहन सामाजिक तंत्रों ने
(B) तात्कालीन सरकारी वित्तीय and प्रशासनिक सहायता ने
(C) अत्याधुनिक and महँगी विदेशी विनिर्माण प्रौद्योगिकी ने
(D) उनकी प्रभावी क्षेत्रीय सैन्य and राजनीतिक शक्ति ने

123. "गरीब लोगों द्वारा अपनी किडनी को अमीर लोगों को बेचना" किस सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया का चरम उदाहरण है?
(A) प्रशासनिक उदारीकरण
(B) संस्थागत निजीकरण
(C) वैश्विक भूमंडलीकरण
(D) अंगों का पण्यीकरण

124. पुष्कर मेले में धार्मिक और सांस्कृतिक तत्वों का बाज़ारीकरण कैसे होता है?
(A) इन तत्वों पर राज्य द्वारा पूरी तरह से प्रतिबंध लगाकर।
(B) पर्यटन बाज़ार हेतु आकर्षण का केंद्र बनाकर
(C) केवल स्थानीय निवासियों को ही इनमें भाग लेने की अनुमति देकर।
(D) मेले से सभी धार्मिक या सांस्कृतिक तत्वों को पूर्णतः हटाकर।

125. "क्या हम कह सकते हैं कि भारत में अध्यात्म का एक बाज़ार है?" यह कथन किस संदर्भ में सर्वाधिक सटीक है?
(A) स्थानीय साप्ताहिक आदिवासी हाटों के विशेष संदर्भ में।
(B) नाकरट्टारों की पारंपरिक बैंकिंग प्रणाली के संदर्भ में।
(C) योग और आयुर्वेद के बढ़ते बाज़ारीकरण के संदर्भ में
(D) मार्क्स द्वारा किए गए पूँजीवाद के गहन विश्लेषण के संदर्भ में।

126. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. उदारीकरण से भारत में विदेशी पूँजी का निवेश बढ़ा है।
2. माना जाता है कि सरकारी कंपनियों के निजीकरण से कुशलता बढ़ती है।
3. उदारीकरण से सभी भारतीय उद्योगों को समान रूप से लाभ हुआ है।
4. उदारीकरण के बाद भी कृषि में सहायता मूल्य और सब्सिडी अपरिवर्तित रही है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2 सही हैं।
(B) केवल 3 और 4 सही हैं।
(C) केवल 1, 2 और 3 सही हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

127. उदारीकरण की नीतियों के परिणामस्वरुप, रोज़गार के बाजार में क्या रुझान देखा गया है?
(A) असंगठित क्षेत्र में अस्थायी नौकरियों की वृद्धि
(B) संगठित सरकारी विभागों में स्थायी नौकरियों की व्यापक वृद्धि।
(C) समाज के सभी वर्गों के लिए पूर्ण रोज़गार की सुरक्षा।
(D) राष्ट्रीय स्तर पर बेरोज़गारी का पूर्ण और स्थायी उन्मूलन।

128. कार्ल मार्क्स और एडम स्मिथ के विचारों में मुख्य अंतर क्या है?
(A) स्मिथ ने बाज़ार की आलोचना की, जबकि मार्क्स ने

इसका समर्थन किया।
(B) स्मिथ इसे स्व-नियामक मानते थे, मार्क्स शोषणकारी
(C) दोनों के आर्थिक विचारों में वास्तव में कोई मौलिक अंतर नहीं था।
(D) स्मिथ ने समाजवाद का समर्थन किया, जबकि मार्क्स ने पूँजीवाद का।

129. निम्नलिखित में से कौन सी प्रक्रिया भारत के 1980 के दशक के बाद के आर्थिक इतिहास की विशेषता नहीं है?
(A) तीव्र भूमंडलीकरण
(B) घरेलू संरक्षणवाद
(C) आर्थिक उदारीकरण
(D) व्यापक निजीकरण

130. एक समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य से, एक साप्ताहिक आदिवासी हाट और एक ऑनलाइन स्टॉक एक्सचेंज में क्या समानता है?
(A) दोनों विशिष्ट सामाजिक संदर्भों वाली संस्थाएं हैं
(B) दोनों में आमने-सामने की व्यक्तिगत बातचीत होना अनिवार्य है।
(C) दोनों में केवल और केवल भौतिक वस्तुओं का ही आदान-प्रदान होता है।
(D) दोनों बाज़ार प्रणालियों में वास्तव में कोई मौलिक समानता नहीं है।

131. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): समाजशास्त्री मानते हैं कि बाज़ारों का संगठन और नियंत्रण अक्सर विशेष सामाजिक समूहों द्वारा होता है।
कारण (R): भारत में नाकरट्टार और मारवाड़ी जैसे समुदायों का व्यापार के विशेष क्षेत्रों में प्रभुत्व इसका एक उदाहरण है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

132. औपनिवेशिक काल से पहले भारत की आर्थिक स्थिति के बारे में पारंपरिक विवरण क्या था?
(A) भारत एक अत्यधिक और आधुनिक औद्योगिक देश था।
(B) भारत तात्कालीन विश्व अर्थव्यवस्था का एकमात्र केंद्र था।
(C) भारत की घरेलू अर्थव्यवस्था पूरी तरह से मौद्रीकृत थी।
(D) प्राचीन गैर-बाज़ारी ग्रामीण समुदायों वाला देश

133. उपनिवेश काल के दौरान मारवाड़ी परिवारों द्वारा अपनी पूँजी का उपयोग किस प्रकार किया गया, जिसने वाणिज्यिक विस्तार में मदद की?
(A) उन्होंने अपनी संचित पूँजी को अचल शहरी संपत्ति में निवेश किया।
(B) उन्होंने अपनी सारी संचित पूँजी जन कल्याण हेतु दान कर दी।
(C) उन्होंने बैंकिंग और ब्याज पर कर्ज देने का कार्य किया
(D) उन्होंने अपनी पूँजी से केवल धार्मिक मंदिर और धर्मशालाएं बनवाईं।

134. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. बाज़ार का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य आर्थिक परिप्रेक्ष्य से भिन्न है।
2. साप्ताहिक हाट एक प्रकार का आवधिक बाज़ार है।
3. 'हुंडी' पूर्व-औपनिवेशिक भारत में एक महत्वपूर्ण व्यापारिक साधन था।
4. पण्यीकरण का अर्थ है किसी वस्तु का बाज़ार से बाहर हो जाना।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2, और 3 सही हैं।
(B) केवल 1 और 2 सही हैं।
(C) केवल 4 गलत है।
(D) (A) और (C) दोनों

135. उपभोग के बारे में मैक्स वेबर की क्या समझ है?
(A) उपभोग केवल और केवल एक सामान्य आर्थिक क्रिया है।
(B) उपभोग का सामाजिक प्रस्थिति से कोई भी वास्तविक लेना-देना नहीं है।
(C) दुनिया के सभी लोग एक ही तरह से वस्तुओं का उपभोग करते हैं।
(D) उपभोग से लोग जीवनशैली और प्रस्थिति का प्रदर्शन करते हैं

136. सूची-I को सूची-II के साथ सुमेलित कीजिए:
सूची I: (घटना)
P. धोराई गाँव का साप्ताहिक हाट
Q. नाकरट्टारों की बैंकिंग
R. मारवाड़ियों का उदय
S. पुष्कर मेले का बाज़ारीकरण

सूची II: (संबंधित प्रक्रिया/काल)
1. उपनिवेश काल
2. भूमंडलीकरण और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन
3. आवधिक बाज़ार और सामाजिक-आर्थिक आदान-प्रदान
4. जाति-आधारित व्यापार और वित्त

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

137. बाज़ारीकरण या उदारीकरण की नीतियों का समर्थन करने वाले क्या मानते हैं?
(A) सरकारी संस्थाएँ निजी संस्थाओं की तुलना में सदैव अधिक कुशल होती हैं।

(B) बाज़ार की सभी गतिविधियों पर पूर्ण सरकारी नियंत्रण होना चाहिए।
(C) कुशल निजी संस्थाओं द्वारा ही आर्थिक संवृद्धि संभव है
(D) आर्थिक संवृद्धि और सामाजिक समृद्धि के बीच कोई संबंध नहीं है।

138. निम्नलिखित को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. कार्ल मार्क्स द्वारा पूँजीवाद का विश्लेषण।
2. एडम स्मिथ द्वारा 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' का लेखन।
3. भारत में उदारीकरण और भूमंडलीकरण नीतियों का कार्यान्वयन।

(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 1, 2
(D) 2, 3, 1

139. 'अदृश्य हाथ' की अवधारणा किससे संबंधित है?
(A) सरकार द्वारा बाज़ार का किया जाने वाला प्रत्यक्ष और कठोर नियंत्रण।
(B) विभिन्न व्यापारियों द्वारा बाज़ार में की जाने वाली धोखाधड़ी।
(C) एक गुप्त संगठन जो बाज़ार की सभी गतिविधियों को नियंत्रित करता है।
(D) बाज़ार की स्व-नियामक प्रकृति और सामूहिक भलाई

140. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. धोराई का बाज़ार शुक्रवार को लगता है।
2. बाज़ार में हिंदू तरकारी बेचने वाले और विशेषज्ञ शिल्पकार भी शामिल होते हैं।
3. बाज़ार में खरीददार और विक्रेता दोनों मुख्यतः आदिवासी होते हैं।
4. आदिवासी जंगल और खेतों के उत्पाद बेचने के लिए लाते हैं।
5. बाज़ार में कोई सामाजिक या धार्मिक गतिविधि नहीं होती।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही संयोजन है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
(B) केवल 1, 3 और 5 सही हैं।
(C) केवल 3 और 5 गलत हैं।
(D) सभी कथन सही हैं।

141. बाज़ार पर समाजशास्त्री अध्ययन क्या उजागर करने का प्रयास करता है?
(A) यह कि वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य बाज़ार में कैसे तय होते हैं।
(B) किए गए निवेश का भविष्य में संभावित होने वाला आर्थिक असर।
(C) बाज़ारों का व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक ढाँचा
(D) आम लोगों को खर्च करने हेतु प्रभावित करने वाले मनोवैज्ञानिक कारक।

142. औपनिवेशिक काल में जनजातीय श्रम के 'बाज़ार' के विकास का स्थानीय लोगों पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) वे सभी वर्ग आर्थिक रूप से अभूतपूर्व रूप से समृद्ध हो गए।
(B) उनके सामान्य जीवन स्तर में बहुत अधिक सुधार दर्ज हुआ।
(C) उन्हें अपनी पैतृक जमीन पर पूर्ण और स्थायी कानूनी अधिकार मिल गया।
(D) नकारात्मक प्रभाव पड़ा और वे दरिद्र हो गए

143. भारतीय अर्थव्यवस्था में व्यापार में रुपए-पैसे का प्रयोग कब से विद्यमान था?
(A) यह उपनिवेशिकता के समय से ही भारत में विद्यमान था।
(B) केवल भारत में उपनिवेशिकता के आगमन के बाद से।
(C) केवल 1991 के बड़े आर्थिक सुधारों के लागू होने के बाद से।
(D) यह भारतीय अर्थव्यवस्था के history में कभी विद्यमान नहीं था।

144. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): स्वतंत्रता के बाद, कुछ मारवाड़ी परिवारों ने अपने आपको आधुनिक उद्योगों में रूपांतरित कर लिया।
कारण (R): आज भी भारत के औद्योगिक क्षेत्र में मारवाड़ियों की महत्वपूर्ण भागीदारी बनी हुई है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

145. पूँजीवादी समाज में उपभोग के अत्यधिक महत्त्व का मुख्य कारण क्या है?
(A) इसके पीछे के केवल कठोर और शुद्ध आर्थिक कारण।
(B) प्रतीकात्मक अर्थ जो सामाजिक भिन्नता को दर्शाता है
(C) इसके पीछे के केवल और केवल कठोर राजनीतिक कारण।
(D) समाज में इसका वास्तव में कोई विशेष अथवा महत्वपूर्ण कारण नहीं है।

146. भारत के किन उद्योगों पर उदारीकरण का गहरा असर पड़ने की आशंका व्यक्त की गई है?
(A) ऑटोमोबाइल्स, इलेक्ट्रॉनिक्स और तेलीय अनाज उद्योग
(B) सॉफ्टवेयर विकास और आधुनिक सूचना तकनीकी सेवाएँ
(C) स्थानीय मछली पालन या फल उत्पादन की गतिविधियाँ
(D) पारंपरिक और प्राचीन ग्रामीण हस्तशिल्प उद्योग

147. एक सामाजिक संस्था के रूप में बाजार की कौन सी विशेषता नहीं है?
(A) यह सांस्कृतिक तरीकों द्वारा निर्मित और संचालित होता है।
(B) इसका नियंत्रण विशेष सामाजिक समूहों या वर्गों के हाथ में हो सकता है।
(C) यह सामाजिक संदर्भ से सदैव पूर्णतः स्वतंत्र और अलग होता है।
(D) यह अन्य सामाजिक संस्थाओं जैसे परिवार और जाति से जुड़ा होता है।

148. आदिवासियों के लिए साप्ताहिक हाट जाने का प्रमुख कारण क्या है?
(A) विशुद्ध रूप से कठोर आर्थिक कारण
(B) स्थानीय और क्षेत्रीय राजनीतिक कारण
(C) व्यक्तिगत और पारंपरिक धार्मिक कारण
(D) व्यापक सामाजिक और सामुदायिक कारण

149. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में जाति और व्यापार के संबंध को सही ढंग से दर्शाता है?
(A) व्यापार और जाति के बीच वास्तव में कोई गहरा संबंध नहीं है।
(B) केवल 'वैश्य' वर्ण के लोग ही व्यापारिक कार्य कर सकते हैं।
(C) व्यापारिक प्रभुत्व अक्सर जाति और नातेदारी से तय होता है
(D) सभी जातियों का व्यापार में वर्तमान में समान प्रतिनिधित्व है।

150. बाज़ार के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा समाजशास्त्रीय निष्कर्ष सही है?
(A) बाज़ार केवल और केवल एक विशुद्ध आर्थिक घटना है।
(B) बाज़ार आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं से बने हैं
(C) भारत में बाज़ार समय के साथ पूर्णतः अपरिवर्तित रहे हैं।
(D) उदारीकरण का भारत पर केवल और केवल सकारात्मक प्रभाव पड़ा है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
अठारहवीं शताब्दी के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडम स्मिथ ने अपनी कृति 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' में 'अदृश्य हाथ' (Invisible Hand) की अवधारणा प्रस्तुत की। इस सिद्धांत के अनुसार, जब व्यक्ति अपने निजी स्वार्थ की पूर्ति के लिए आर्थिक क्रियाएँ करते हैं, तो एक 'अदृश्य हाथ' द्वारा निर्देशित होकर वे अनजाने में ही समग्र समाज के कल्याण में योगदान करते हैं। स्मिथ का मानना था कि बाजार एक स्व-नियमित तंत्र है जिसे बाहरी हस्तक्षेप की आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण इस विचार को चुनौती देता है। समाजशास्त्री, विशेष रूप से कार्ल पोलानी जैसे विचारकों ने 'अभिनिवेश' (embeddedness) की अवधारणा का उपयोग यह दर्शाने के लिए किया कि अर्थव्यवस्था और बाजार समाज से पृथक नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक संबंधों, सांस्कृतिक मूल्यों और राजनीतिक संस्थाओं में गहराई से 'अभिनिवष्ट' या 'रचे-बसे' होते हैं। इस परिप्रेक्ष्य के अनुसार, बाजार का व्यवहार केवल मांग और पूर्ति के नियमों से नहीं, बल्कि विश्वास, सामाजिक नेटवर्क, प्रतिष्ठा और शक्ति संबंधों जैसे गैर-आर्थिक कारकों से भी प्रभावित होता है। उदाहरण के लिए, एक व्यापारी किससे व्यापार करता है या एक उपभोक्ता क्या खरीदता है, यह निर्णय केवल कीमत पर ही नहीं, बल्कि सामाजिक पहचान और सामुदायिक संबंधों पर भी निर्भर कर सकता है। इस प्रकार, समाजशास्त्र बाजार को एक विशुद्ध आर्थिक क्षेत्र के बजाय एक जटिल सामाजिक क्षेत्र के रूप में देखता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. एडम स्मिथ के 'अदृश्य हाथ' की अवधारणा का मुख्य तर्क क्या है?
(A) बाज़ार को सुचारु संचालन हेतु सदैव सरकारी हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।
(B) व्यक्तिगत स्वार्थ अनजाने में सामूहिक सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देता है।
(C) सामाजिक और सांस्कृतिक संबंध आर्थिक निर्णयों को पूरी तरह से निर्धारित करते हैं।
(D) अर्थव्यवस्था को सामाजिक मूल्यों से पूरी तरह अलग और स्वतंत्र रखा जाना चाहिए।

152. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण, एडम स्मिथ के बाजार के मॉडल की आलोचना क्यों करता है?
(A) क्योंकि यह बाजार को सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों से अलग मानता है।
(B) क्योंकि यह व्यक्तिगत आर्थिक स्वार्थ की मूल प्रवृत्ति को पूरी तरह से नकारता है।
(C) क्योंकि यह मानता है कि बाज़ार के तंत्र हमेशा बुनियादी रूप से अराजक होते हैं।
(D) क्योंकि यह केवल कृषि प्रधान समाजों के बाज़ारों पर ही अपना ध्यान केंद्रित करता है।

153. 'अभिनिवेश' (embeddedness) की अवधारणा का क्या अर्थ है?
(A) बाज़ार और उसकी समस्त क्रियाएँ पूरी तरह से सरकार के प्रत्यक्ष नियंत्रण में होती हैं।
(B) व्यक्ति सदैव और प्रत्येक स्थिति में केवल तर्कसंगत और स्वार्थी आर्थिक निर्णय लेते हैं।
(C) आर्थिक गतिविधियाँ सामाजिक संबंधों और संस्थाओं में रची-बसी होती हैं।
(D) आधुनिक और विकसित समाजों में बाज़ार का अब कोई भी वास्तविक महत्व नहीं रह गया है।

154. समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सा एक गैर-आर्थिक कारक है जो बाजार के व्यवहार को प्रभावित कर सकता है?
(A) उत्पादन की कुल लागत

(B) वस्तु की बाज़ार मांग
(C) आपूर्ति श्रृंखला की दक्षता
(D) विश्वास और सामाजिक नेटवर्क

155. स्रोत के अनुसार, समाजशास्त्र बाजार को किस रूप में देखता है?
(A) केवल मांग और पूर्ति का एक खेल
(B) एक स्व-नियमित और कुशल तंत्र
(C) एक जटिल सामाजिक क्षेत्र
(D) केवल व्यक्तिगत लाभ का एक स्रोत

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में लगने वाले आवधिक बाजार, जिन्हें 'हाट' या 'साप्ताहिक बाजार' के नाम से जाना जाना जाता है, केवल आर्थिक विनिमय के केंद्र नहीं होते, बल्कि वे गहन सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन के भी महत्वपूर्ण मंच हैं। आर्थिक दृष्टि से, ये बाजार स्थानीय उत्पादकों को अपनी अधिशेष कृषि उपज, हस्तशिल्प और वन उत्पादों को बेचने तथा उन आवश्यक वस्तुओं को खरीदने का अवसर प्रदान करते हैं जो उनके गाँवों में उपलब्ध नहीं हैं, जैसे कि नमक, मसाले और कारखाने में बने उपकरण। यह स्थानीय अर्थव्यवस्था को एक व्यापक क्षेत्रीय नेटवर्क से जोड़ता है। हालाँकि, इनका सामाजिक महत्व शायद और भी अधिक गहरा है। ये हाट लोगों के लिए दूर-दराज के गाँवों में रहने वाले रिश्तेदारों और दोस्तों से मिलने, सामाजिक सूचनाओं का आदान-प्रदान करने और सामुदायिक संबंधों को मजबूत करने का एक प्रमुख अवसर होते हैं। यहीं पर विवाह संबंधों की बात चलती है, स्थानीय विवादों को सुलझाया जाता है और त्योहारों की योजना बनाई जाती है। मनोरंजनकर्ता, ज्योतिषी और पारंपरिक चिकित्सक भी अपनी सेवाएँ प्रदान करने के लिए यहाँ आते हैं। इस प्रकार, हाट एक ऐसा सामाजिक स्थान बन जाता है जहाँ समुदाय की पहचान और एकजुटता का पुनर्निर्माण होता है, जो आधुनिक शहरी बाजारों के अवैयक्तिक और लेन-देहन आधारित स्वरूप के बिल्कुल विपरीत है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. आवधिक 'हाट' का आर्थिक कार्य क्या है?
(A) ग्रामीणों को केवल सांस्कृतिक और पारंपरिक मनोरंजन के साधन प्रदान करना।
(B) स्थानीय उत्पादकों को उपज बेचने और आवश्यक वस्तुओं की खरीद का मंच देना।
(C) सामुदायिक स्तर पर केवल विवाह संबंधों और पारिवारिक रिश्तों को तय करना।
(D) ग्रामीण क्षेत्रों में केवल सरकारी कल्याणकारी योजनाओं का व्यापक प्रचार करना।

157. आर्थिक कार्यों के अलावा, साप्ताहिक बाजारों का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य क्या है?
(A) ये केवल औपचारिक राजनीतिक बहसों और स्थानीय चुनाव प्रचार के केंद्र के रूप में होते हैं।
(B) ये बड़े औद्योगिक घरानों को ग्रामीण क्षेत्रों में अपनी इकाइयाँ स्थापित करने में मदद करते हैं।
(C) ये आधुनिक और पश्चिमी शहरी जीवन शैली को ग्रामीण क्षेत्रों में व्यापक स्तर पर बढ़ावा देते हैं।
(D) ये सामाजिक मेलजोल, सूचना के आदान-प्रदान और सामुदायिक संबंधों को मजबूत करने के मंच के रूप में कार्य करते हैं।

158. स्रोत के अनुसार, आधुनिक शहरी बाजारों और पारंपरिक हाटों के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) हाटों में एक गहरा सामाजिक और सामुदायिक पहलू होता है, जबकि शहरी बाजार अधिक अवैयक्तिक होते हैं।
(B) शहरी बाजारों में हाटों की तुलना में बहुत अधिक विविधतापूर्ण उत्पाद उपलब्ध होते हैं।
(C) ग्रामीण हाटों में केवल शुद्ध कृषि उत्पादों और वन उपजों का ही भौतिक विनिमय होता है।
(D) आधुनिक शहरी बाजारों में किसी भी प्रकार की कोई वास्तविक आर्थिक गतिविधि नहीं होती है।

159. निम्नलिखित में से कौन सी गतिविधि है जो साप्ताहिक हाट के सामाजिक महत्व को दर्शाती है?
(A) एक स्थानीय किसान द्वारा अपनी अधिशेष फसल को व्यापारी को बेचना।
(B) एक बाहरी व्यापारी द्वारा ग्रामीण ग्राहकों को नमक और मसाले बेचना।
(C) विभिन्न गाँवों के लोगों द्वारा विवाह संबंधों पर चर्चा करना।
(D) एक ग्रामीण व्यक्ति द्वारा खेती के लिए नए कृषि उपकरण खरीदना।

160. स्रोत यह बताता है कि हाट "स्थानीय अर्थव्यवस्था को एक व्यापक क्षेत्रीय नेटवर्क से जोड़ता है।" इसका क्या तात्पर्य है?
(A) हाट के माध्यम से, ग्रामीण अर्थव्यवस्था बड़े बाजारों और क्षेत्रों के साथ आर्थिक रूप से एकीकृत होती है।
(B) हाट में आने वाले लोग केवल अपने ही गाँव के परिचित लोगों से संवाद करते हैं।
(C) हाट एक पूर्णतः बंद व्यवस्था है जिसका बाहरी आर्थिक दुनिया से कोई संबंध नहीं है।
(D) हाट के माध्यम से ग्रामीण लोग केवल गैर-आर्थिक और प्रतीकात्मक वस्तुओं का विनिमय करते हैं।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

पण्यीकरण (Commodification) वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा वस्तुओं, सेवाओं, विचारों और यहाँ तक कि मानवीय संबंधों को भी बाजारीय विनिमय की वस्तु बना दिया जाता है, अर्थात उन्हें खरीदा और बेचा जा सकता है। यह प्रक्रिया पूंजीवादी समाजों का एक केंद्रीय लक्षण है, जहाँ बाजार का तर्क जीवन के उन क्षेत्रों में भी फैल जाता है जो पहले इससे अछूते थे। उदाहरण के लिए, पानी, जो पारंपरिक रूप से एक साझा और मुफ्त प्राकृतिक संसाधन माना जाता था, आज

बोतलबंद पानी के रूप में एक प्रमुख पण्य वस्तु बन गया है। इसी तरह, पारंपरिक ज्ञान, जैसे कि आयुर्वेद या योग, जो गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से प्रसारित होता था, अब वैश्विक कल्याण उद्योग में पैकेज्ड सेवाओं और उत्पादों के रूप में बेचा जाता है। यह प्रक्रिया 'अनुभव अर्थव्यवस्था' (experience economy) में भी देखी जा सकती है, जहाँ साहसिक पर्यटन या सांस्कृतिक उत्सवों जैसे अनुभवों को खरीद-बिक्री के लिए मानकीकृत पैकेजों में बदल दिया जाता है। पण्यीकरण के आलोचकों का तर्क है कि यह प्रक्रिया वस्तुओं और संबंधों के सामाजिक और सांस्कृतिक अर्थ को कम कर देती है, उन्हें केवल उनके मौद्रिक मूल्य तक सीमित कर देती है, और इससे सामाजिक असमानता बढ़ सकती है क्योंकि जो लोग भुगतान नहीं कर सकते वे इन 'वस्तुओं' से वंचित रह जाते हैं।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. 'पण्यीकरण' की प्रक्रिया को सबसे अच्छी तरह कैसे परिभाषित किया जा सकता है?
(A) समस्त वस्तुओं और सेवाओं को सक्रिय बाज़ार से पूरी तरह हटाने की प्रक्रिया।
(B) केवल औद्योगिक कारखानों में बड़े पैमाने पर वस्तुओं का उत्पादन करने की प्रक्रिया।
(C) सरकार द्वारा सभी आवश्यक वस्तुओं की अधिकतम कीमत पूर्व-निर्धारित करने की प्रक्रिया।
(D) वस्तुओं और सेवाओं को बाजारीय विनिमय के योग्य बनाने की प्रक्रिया।

162. स्रोत में बोतलबंद पानी का उदाहरण पण्यीकरण के किस पहलू को उजागर करता है?
(A) कैसे एक विशिष्ट पारंपरिक हस्तशिल्प का आधुनिक समय में व्यवसायीकरण होता है।
(B) कैसे एक पूर्व में मुफ्त और साझा संसाधन को एक बाजारीय उत्पाद में बदल दिया जाता है।
(C) कैसे उन्नत तकनीक हमेशा समाज के सभी वर्गों के लिए बुनियादी रूप से फायदेमंद होती है।
(D) कैसे सरकार जल संसाधनों का भविष्य की पीढ़ियों के लिए स्थाई संरक्षण करती है।

163. पण्यीकरण के आलोचक इसके बारे में क्या चिंता व्यक्त करते हैं?
(A) इससे बाज़ार में उपलब्ध वस्तुओं की गुणवत्ता में निरंतर और व्यापक सुधार होता है।
(B) यह समाज के प्रत्येक शिक्षित और कुशल व्यक्ति के लिए नया रोजगार पैदा करता है।
(C) यह वस्तुओं और संबंधों के सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य को कम कर सकता है और असमानता बढ़ा सकता है।
(D) यह वैश्विक स्तर पर मुक्त बाज़ार के भौगोलिक विस्तार को प्रभावी रूप से रोकता है।

164. 'अनुभव अर्थव्यवस्था' का उदाहरण क्या दर्शाता है?
(A) लोग अब बाज़ार से किसी भी प्रकार की भौतिक वस्तु खरीदना पसंद नहीं करते हैं।
(B) केवल मूर्त और भौतिक वस्तुओं का ही बाज़ार में प्रभावी रूप से पण्यीकरण किया जा सकता है।
(C) मानवीय अनुभव सदैव मुफ्त होते हैं और उन्हें कभी भी बाज़ार में बेचा नहीं जा सकता।
(D) पर्यटन जैसी गैर-भौतिक चीजों को भी खरीद-बिक्री के लिए पैकेज किया जा सकता है।

165. स्रोत के अनुसार, पण्यीकरण की प्रक्रिया में क्या शामिल है?
(A) उपयोग-मूलय को विनिमय-मूल्य में बदलना।
(B) वस्तुओं को अधिक टिकाऊ बनाना।
(C) केवल अवैध वस्तुओं का व्यापार करना।
(D) पारंपरिक बाजारों को समाप्त करना।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भूमंडलीकरण ने, विशेष रूप से मीडिया और बहुराष्ट्रीय निगमों के विस्तार के माध्यम से, विश्व भर में उपभोग की संस्कृति को मौलिक रूप से बदल दिया है। उपभोग अब केवल आवश्यकताओं की पूर्ति का साधन नहीं रहा, बल्कि यह पहचान निर्माण, सामाजिक स्थिति और जीवन शैली की अभिव्यक्ति का एक प्रमुख माध्यम बन गया है। मैक्स वेबर के 'प्रतिष्ठा का प्रतीक' (status symbol) की अवधारणा इस संदर्भ में अत्यधिक प्रासंगिक हो जाती है। वैश्विक ब्रांड, जैसे कि विशेष स्मार्टफोन, डिजाइनर कपड़े या विदेशी कारें, अब केवल अपनी उपयोगिता के लिए नहीं, बल्कि उस सामाजिक प्रतिष्ठा के लिए भी खरीदे जाते हैं जो वे प्रदान करते हैं। विज्ञापन और मीडिया ऐसी आकांक्षात्मक छवियाँ बनाते हैं जो उपभोक्ताओं को यह विश्वास दिलाते हैं कि इन उत्पादों का उपभोग करके वे एक विशेष, वांछनीय जीवन शैली का हिस्सा बन सकते हैं। इस प्रक्रिया का एक दिलचस्प पहलू 'ग्लोकलाइजेशन' (glocalization) है, जहाँ वैश्विक कंपनियाँ स्थानीय संस्कृतियों और स्वादों के अनुरूप अपने उत्पादों और विपणन रणनीतियों को अनुकूलित करती हैं। उदाहरण के लिए, एक अंतरराष्ट्रीय फास्ट-फूड श्रृंखला द्वारा अपने मेनू में स्थानीय मसालों और व्यंजनों को शामिल करना। इस प्रकार, भूमंडलीकृत उपभोग न तो पूरी तरह से सांस्कृतिक समरूपीकरण (homogenization) है और न ही पूरी तरह से स्थानीय, बल्कि यह वैश्विक और स्थानीय के बीच एक सरल अंतःक्रिया है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. भूमंडलीकरण ने उपभोग की संस्कृति को कैसे बदला है?
(A) इसने उपभोग को केवल बुनियादी आवश्यकता-आधारित गतिविधि तक सीमित कर दिया है।
(B) इसने उपभोग को पहचान और सामाजिक स्थिति की अभिव्यक्ति का माध्यम बना दिया है।
(C) इसने विश्व स्तर पर संचालित होने वाले सभी बड़े वैश्विक ब्रांडों को समाप्त कर दिया है।
(D) इसने केवल विशुद्ध स्थानीय उत्पादों के पारंपरिक उपभोग को ही हर जगह बढ़ावा दिया है।

167. मैक्स वेबर की 'प्रतिष्ठा का प्रतीक' की अवधारणा आज के संदर्भ में कैसे प्रासंगिक है?
(A) यह बताती है कि लोग गुणवत्ता की परवाह किए बिना केवल सबसे सस्ती वस्तुएँ खरीदते हैं।
(B) यह बताती है कि ब्रांड और उत्पाद सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदर्शित करने के लिए उपयोग किए जाते हैं।
(C) यह सिद्ध करती है कि सामाजिक प्रतिष्ठा का वस्तुओं के उपभोग से कोई भी लेना-देना नहीं है।
(D) यह अवधारणा केवल प्राचीन और पारंपरिक कृषि प्रधान समाजों पर ही पूर्णतः लागू होती है।

168. 'ग्लोकलाइजेशन' (glocalization) की अवधारणा का क्या अर्थ है?
(A) वैश्विक कंपनियों द्वारा अपने उत्पादों को स्थानीय संस्कृति और स्वाद के अनुसार ढालना।
(B) सभी वैश्विक उत्पादों का पूरी दुनिया में प्रत्येक स्थान पर एक समान बने रहना।
(C) स्थानीय उत्पादों का वैश्विक प्रतिस्पर्धी बाजारों में पूरी तरह से गायब हो जाना।
(D) केवल स्थानीय उत्पादों को ही बढ़ावा देने वाली एक नई संरक्षणात्मक वैश्विक नीति।

169. एक अंतरराष्ट्रीय फास्ट-फूड श्रृंखला द्वारा अपने मेनू में स्थानीय व्यंजन शामिल करना किसका उदाहरण है?
(A) सांस्कृतिक समरूपीकरण
(B) बाजार का पतन
(C) ग्लोकलाइजेशन
(D) पण्यीकरण का विरोध

170. स्रोत के अनुसार, विज्ञापन और मीडिया भूमंडलीकृत उपभोग में क्या भूमिका निभाते हैं?
(A) वे विज्ञापित उत्पादों की तकनीकी कमियों को पारदर्शी रूप से उजागर करते हैं।
(B) वे उपभोक्ताओं को अपनी आय से अधिक बचत करने के लिए सदैव प्रोत्साहित करते हैं।
(C) वे आम लोगों को उपभोग की प्रवृत्तियों से दूर रहने के लिए निरंतर प्रेरित करते हैं।
(D) वे उत्पादों को वांछनीय जीवन शैली से जोड़कर आकांक्षात्मक छवियाँ बनाते हैं।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में पारंपरिक व्यापारिक समुदायों की सफलता का विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि व्यापार केवल आर्थिक कौशल पर ही नहीं, बल्कि गहरे सामाजिक संबंधों पर भी निर्भर करता है। मारवाड़ी, चेट्टियार (नाकरट्टार) और बोहरा जैसे समुदायों ने विस्तृत और परिष्कृत व्यापारिक नेटवर्क का निर्माण किया जो जाति और नातेदारी की नींव पर आधारित थे। इन नेटवर्कों ने 'सामाजिक पूंजी' के एक शक्तिशाली रूप के रूप में कार्य किया। इस प्रणाली में, विश्वास एक केंद्रीय तत्व था। एक ही समुदाय के सदस्यों के बीच व्यापार करने से धोखाधड़ी का जोखिम कम हो जाता था, क्योंकि समुदाय से बहिष्कृत होने का भय एक मजबूत निवारक के रूप में कार्य करता था। इसने ऋण और पूंजी के प्रवाह को भी सुगम बनाया। 'हुंडी' जैसी अनौपचारिक ऋण प्रणालियाँ पूरी तरह से जारीकर्ता की प्रतिष्ठा और सामुदायिक नेटवर्क के भीतर उसकी साख पर निर्भर करती थीं। इसके अलावा, ये नेटवर्क सूचना के तीव्र प्रसार के लिए उत्कृष्ट माध्यम थे; बाजार के रुझान, कीमतों और अवसरों के बारे में जानकारी समुदाय के भीतर तेजी से फैलती थी। इन घनिष्ठ संबंधों ने बाहरी लोगों के लिए इन व्यापार क्षेत्रों में प्रवेश करना लगभग असंभव बना दिया, जिससे इन समुदायों को कुछ वस्तुओं या मार्गों पर एकाधिकार स्थापित करने में मदद मिली। यह दर्शाता है कि बाजार की सफलता में आर्थिक कारकों के साथ-साथ सामाजिक संरचनाएँ कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. पारंपरिक व्यापारिक समुदायों के व्यापारिक नेटवर्क किस नींव पर आधारित थे?
(A) केवल तत्कालीन सरकार द्वारा प्रदान किए गए प्रत्यक्ष समर्थन पर।
(B) बड़े पैमाने पर किए गए आधुनिक संस्थागत विदेशी निवेश पर।
(C) जाति और नातेदारी के सामाजिक संबंधों पर।
(D) जटिल और आधुनिक पश्चिमी कानूनी अनुबंधों के पालन पर।

172. स्रोत में 'सामाजिक पूंजी' का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है?
(A) व्यापारिक गतिविधियों को शुरू करने के लिए आवश्यक भौतिक धन।
(B) सामाजिक संबंधों का वह नेटवर्क जो आर्थिक लाभ प्रदान करता है।
(C) सरकार द्वारा पिछड़े समुदायों को प्रदान की जाने वाली विशेष सब्सिडी।
(D) पूरे समुदाय के उपयोग हेतु भवनों और बड़े स्कूलों का सामूहिक निर्माण।

173. 'हुंडी' जैसी ऋण प्रणालियाँ किस पर सबसे अधिक निर्भर करती थीं?
(A) औपचारिक और लिखित जटिल कानूनी अनुबंधों के प्रावधानों पर।
(B) स्थानीय कानून प्रवर्तन और पुलिस प्रशासन की कठोरता के डर पर।
(C) ऋण के बदले जमा की गई सोने और बहुमूल्य रत्नों की गारंटी पर।
(D) जारीकर्ता की प्रतिष्ठा और सामुदायिक विश्वास पर।

174. इन व्यापारिक नेटवर्कों ने कुछ क्षेत्रों में सामुदायिक एकाधिकार स्थापित करने में कैसे मदद की?
(A) उनके घनिष्ठ सामाजिक संबंधों ने बाहरी लोगों के लिए प्रवेश करना मुश्किल बना दिया।

(B) उन्होंने व्यापारिक हितों की रक्षा हेतु निजी सैन्य बल का प्रयोग किया।
(C) उन्होंने केंद्र सरकार से विशेष व्यापारिक लाइसेंस और रियायतें प्राप्त कीं।
(D) उन्होंने अन्य समुदायों को कानूनन व्यापार करने से पूरी तरह प्रतिबंधित कर दिया।

175. इन नेटवर्कों के भीतर विश्वास (trust) कैसे सुनिश्चित किया जाता था?
(A) हर छोटे और बड़े व्यापारिक सौदे के लिए एक पेशेवर वकील नियुक्त करके।
(B) धोखाधड़ी करने वाले सदस्यों के लिए अत्यधिक कठोर शारीरिक दंड की व्यवस्था द्वारा।
(C) समुदाय से बहिष्कृत होने के सामाजिक भय के माध्यम से।
(D) समुदाय के प्रत्येक सदस्य की गतिविधियों पर चौबीसों घंटे कड़ी निगरानी रखकर।

ANSWERS

1. (B) उपरोक्त सभी विकल्प
दैनिक बोलचाल में बाज़ार शब्द का तात्पर्य केवल क्रय-विक्रय के लिए निर्धारित भौगोलिक स्थान तक सीमित नहीं है। यह किसी विशिष्ट सेवा या उत्पाद की कुल माँग को भी प्रदर्शित करता है। इसके अतिरिक्त, बाज़ार स्थानीय स्तर पर खरीदारों और विक्रेताओं के एक बड़े सामाजिक जमावड़े का प्रतिनिधित्व करता है, जहाँ आर्थिक विनिमय के साथ-साथ महत्वपूर्ण सामाजिक और सामुदायिक अंतःक्रियाएँ भी होती हैं।

2. (A) सांस्कृतिक रूप से निर्मित एक विशिष्ट सामाजिक संस्था
समाजशास्त्र बाज़ार को एक स्वतंत्र आर्थिक प्रणाली के रूप में देखने के बजाय उसे एक सामाजिक संस्था मानता है। यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि बाज़ार सामाजिक मानदंडों, सांस्कृतिक मूल्यों और विशिष्ट समूहों के आपसी संबंधों से निर्मित होते हैं। आर्थिक विनिमय की प्रक्रियाएँ अक्सर समाज की व्यापक संरचनाओं, जैसे जाति, वर्ग और नातेदारी तंत्रों में गहराई से रची-बसी और उन्हीं से नियंत्रित होती हैं।

3. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
एडम स्मिथ ने बाज़ार की स्व-नियामक प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए अदृश्य हाथ की अवधारणा प्रस्तुत की थी। कार्ल मार्क्स ने वस्तुओं के बाज़ारीकरण की प्रक्रिया को पण्यीकरण के रूप में विश्लेषित किया। मैक्स वेबर ने उपभोग की वस्तुओं को सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रतीक से जोड़ा। अंततः, जजमानी व्यवस्था भारत में प्रचलित एक पारंपरिक गैर-बाज़ारी विनिमय प्रणाली है, जो सामाजिक संबंधों पर आधारित थी।

4. (D) आर्थिक व्यवहार सामाजिक मानदंडों और मूल्यों से गहरा जुड़ाव रखता है।
समाजशास्त्रियों का मानना है कि अर्थव्यवस्थाएँ समाज से अलग कोई स्वतंत्र इकाई नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक संरचनाओं का अभिन्न अंग हैं। इसका अर्थ है कि व्यक्ति का आर्थिक व्यवहार, निर्णय और विनिमय के तरीके उसके सामाजिक मानदंडों, विश्वासों और सांस्कृतिक मूल्यों से प्रभावित होते हैं। आर्थिक गतिविधियाँ हमेशा सामाजिक संदर्भ में संपन्न होती हैं और उन्हें समाज से पृथक करके नहीं समझा जा सकता।

5. (C) द वेल्थ ऑफ नेशन्स
एडम स्मिथ ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक द वेल्थ ऑफ नेशन्स में बाज़ार की अर्थव्यवस्था का विस्तृत विश्लेषण किया था। इस कृति में उन्होंने तर्क दिया कि बाज़ार एक स्व-नियामक व्यवस्था है जो व्यक्तियों के तर्कसंगत स्व-हित द्वारा संचालित होती है। उन्होंने यह विचार भी प्रस्तुत किया कि बाज़ार की शक्तियाँ सामूहिक रूप से समाज की भलाई और आर्थिक समृद्धि को बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के बढ़ावा देती हैं।

6. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
एडम स्मिथ का मानना था कि बाज़ार की अर्थव्यवस्था व्यक्तियों के बीच होने वाले अनगिनत सौदों का परिणाम है। यद्यपि इन लेन-देन में शामिल व्यक्ति केवल अपना व्यक्तिगत लाभ देखते हैं, फिर भी यह प्रक्रिया स्वतः एक स्थिर और कार्यशील व्यवस्था का निर्माण कर देती है। इसे ही उन्होंने अदृश्य हाथ कहा, जो बिना किसी मानवीय पूर्व-योजना या इरादे के बाज़ार में संतुलन और स्थिरता सुनिश्चित करता है।

7. (D) एक आवधिक बाज़ार या 'हाट' का
छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में स्थित धोराई गाँव का साप्ताहिक बाज़ार एक आवधिक बाज़ार का प्रमुख उदाहरण है। ऐसे बाज़ार एक निश्चित समय अंतराल पर आयोजित किए जाते हैं और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का केंद्र होते हैं। ये हाट न केवल वस्तुओं के क्रय-विक्रय के स्थान हैं, बल्कि दूर-दराज के इलाकों में रहने वाले समुदायों को आपस में जोड़ने वाली एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था भी हैं।

8. (A) रिश्तेदारों से मिलना, विवाह तय करना और गपशप करना
साप्ताहिक आदिवासी हाट केवल आर्थिक लेन-देन के केंद्र नहीं होते, बल्कि उनमें सामाजिक गतिविधियों की प्रधानता होती है। दूर-दराज के गाँवों से आने वाले आदिवासी इन बाज़ारों का उपयोग अपने रिश्तेदारों से मिलने, वैवाहिक चर्चाएँ करने और क्षेत्रीय समाचारों या गपशप के आदान-प्रदान के लिए करते हैं। यह बाज़ार एक जीवंत सामाजिक स्थल है जो सामुदायिक एकता और आपसी संबंधों को निरंतर सुदृढ़ करता है।

9. (A) केवल 1 और 2 सही हैं।
साप्ताहिक हाट भारत के ग्रामीण और नगरीय क्षेत्रों में विनिमय की एक सामान्य प्रणाली हैं। विशेषकर आदिवासी क्षेत्रों में, ये बाज़ार सामाजिक मेल-मिलाप की एक अत्यंत महत्वपूर्ण संस्था के रूप में कार्य करते हैं। हालांकि, इन बाज़ारों में केवल आर्थिक गतिविधियाँ नहीं होतीं, बल्कि व्यापक सामाजिक अंतःक्रियाएँ भी होती हैं। साथ ही, विक्रेताओं और खरीदारों की संरचना में विविधता होती है जो सामाजिक जटिलता दर्शाती है।

10. (A) क्षेत्र के प्राकृतिक संसाधनों और खनिजों तक पहुँच बनाना
औपनिवेशिक शासन के दौरान जनजातीय क्षेत्रों को बड़ी अर्थव्यवस्था से जोड़ने का प्राथमिक लक्ष्य आर्थिक शोषण था। सड़कों के निर्माण और संचार के विस्तार के माध्यम से ब्रिटिश शासन इन दुर्गम क्षेत्रों के प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों, जैसे लकड़ी और खनिजों तक पहुँच प्राप्त करना चाहता था। इस प्रक्रिया ने आदिवासी समाज की आत्मनिर्भरता को समाप्त कर उन्हें वैश्विक पूँजीवादी बाज़ार के साथ जबरन एकीकृत कर दिया।

11. (D) बाहरी व्यापारियों द्वारा किया जाने वाला आर्थिक शोषण
बस्तर जैसे साप्ताहिक बाज़ारों में स्थानीय आदिवासियों और बाहरी व्यापारियों के बीच अक्सर असमान संबंध देखे जाते हैं। बाहरी व्यापारी अक्सर आदिवासियों के सीधेपन का लाभ उठाकर उनके द्वारा लाए गए वन उत्पादों को कम कीमत पर खरीदते हैं और शहरी वस्तुएं ऊँची कीमतों पर बेचते हैं। यह अंतःक्रिया केवल व्यापारिक नहीं है, बल्कि यह आर्थिक शोषण और सामाजिक शक्ति के असंतुलन को भी स्पष्ट रूप से उजागर करती है।

12. (B) एक विस्तृत और परिष्कृत व्यापारिक तंत्र पहले से ही विद्यमान था।
ऐतिहासिक शोध यह प्रमाणित करते हैं कि उपनिवेशवाद से पहले भारत की अर्थव्यवस्था पूरी तरह पिछड़ी या केवल आत्मनिर्भर नहीं थी। भारत में एक अत्यंत विकसित और परिष्कृत व्यापारिक नेटवर्क मौजूद था जो न केवल घरेलू स्तर पर बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी सक्रिय था। यहाँ हुंडी जैसी बैंकिंग प्रणालियों और पारंपरिक व्यापारिक समुदायों का प्रभाव था, जो भारतीय माल को वैश्विक बाज़ारों तक पहुँचाते थे।

13. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
हुंडी पूर्व-औपनिवेशिक काल में व्यापार के लिए उपयोग किया जाने वाला विनिमय का एक महत्वपूर्ण बिल था। धोराई गाँव बस्तर का वह स्थान है जहाँ प्रसिद्ध साप्ताहिक आदिवासी बाज़ार लगता है। वैश्य हिंदू वर्ण व्यवस्था के अंतर्गत व्यापार और वाणिज्य के लिए उत्तरदायी वर्ण है। मारवाड़ी एक अत्यंत सफल व्यापारिक समुदाय के रूप में जाने जाते हैं जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर व्यापारिक नेटवर्क स्थापित किया।

14. (D) जाति और नातेदारी आधारित घनिष्ठ सामाजिक तंत्र
पारंपरिक व्यापारिक समुदायों की व्यावसायिक सफलता का रहस्य उनके जाति और नातेदारी पर आधारित घनिष्ठ सामाजिक तंत्र में निहित था। ये नेटवर्क आपसी विश्वास और जवाबदेही सुनिश्चित करते थे, जो व्यापार के लिए आवश्यक पूँजी और ऋण के प्रवाह को सुगम बनाते थे। सामाजिक संबंधों के इस जाल ने उन्हें बाहरी प्रतिस्पर्धा से निपटने और दूर-दराज के क्षेत्रों में अपना व्यापारिक एकाधिकार बनाए रखने में मदद की।

15. (A) उनकी बैंकिंग व्यवस्था जाति और प्रतिष्ठा पर आधारित थी।
तमिलनाडु के नाकरट्टार समुदाय की बैंकिंग प्रणाली पारंपरिक सामाजिक मूल्यों पर आधारित थी। उनकी व्यवस्था में ऋण और लेनदेन सरकारी नियमों के बजाय व्यक्ति की नेकनामी, जाति के भीतर उसकी प्रतिष्ठा और पारिवारिक साख पर निर्भर करते थे। इस स्वदेशी बैंकिंग तंत्र ने उन्हें दक्षिण-पूर्व एशिया में अपने व्यापार का विस्तार करने और एक अत्यंत विश्वसनीय वित्तीय नेटवर्क विकसित करने में सहायता प्रदान की थी।

16. (D) उपरोक्त सभी
भारत में व्यापारिक गतिविधियों का संचालन ऐतिहासिक रूप से विभिन्न विशिष्ट समुदायों द्वारा किया जाता रहा है। पारसी, सिंधी, बोहरा, जैन और बंजारे जैसे समुदायों ने अपने सामाजिक संगठनों और अंतर्निहित विश्वास के माध्यम से भारतीय व्यापार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये सभी समूह पारंपरिक व्यापारिक समुदायों के श्रेष्ठ उदाहरण हैं, जिन्होंने अपनी जातीय पहचान और नातेदारी संबंधों का उपयोग आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु किया।

17. (B) क्योंकि व्यापार मुख्य रूप से जाति एवं नातेदारी तंत्रों में ही होता है।
भारत में व्यापारिक गतिविधियों का जाति और नातेदारी तंत्रों से गहरा जुड़ाव रहा है। व्यापारिक कौशल, पूँजी और ऋण की सुविधा अक्सर एक ही जाति के भीतर प्रवाहित होती है, जिससे उस समूह का विशेष क्षेत्रों पर एकाधिकार स्थापित हो जाता है। विश्वास और आपसी सहयोग के ये सामाजिक बंधन बाहरी लोगों के प्रवेश को कठिन बनाते हैं, जिससे व्यापारिक गतिविधियाँ सामाजिक रूप से संगठित रहती हैं।

18. (A) भारत कच्चे माल का स्रोत और निर्मित वस्तुओं का उपभोक्ता बना।
उपनिवेशवाद ने भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना में आमूलचूल परिवर्तन किया। भारत, जो पहले तैयार माल का निर्यातक था, अब ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल का प्रमुख स्रोत बन गया। इसके साथ ही, भारतीय बाज़ार इंग्लैंड में निर्मित वस्तुओं के लिए एक बड़े उपभोग केंद्र में बदल गए। इस नीति ने भारत के पारंपरिक उद्योगों को भारी क्षति पहुँचाई और उसे वैश्विक अर्थव्यवस्था के अधीन कर दिया।

19. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
औपनिवेशिक काल में मारवाड़ी समुदाय ने नए व्यापारिक सुअवसरों को पहचानकर अपनी सफलता के द्वार खोले। उन्होंने कलकत्ता जैसे नव-निर्मित औपनिवेशिक व्यापारिक केंद्रों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई और धीरे-धीरे पूरे देश के व्यापारिक गलियारों में फैल गए। उनके इस विस्तार और व्यावसायिक दक्षता ने उन्हें भारत का सबसे प्रभावशाली और सफल व्यापारिक समुदाय बनाया, जिसकी जड़ें उनके सुदृढ़ सामाजिक और पारिवारिक नेटवर्क में थीं।

20. (D) इसने बैंकिंग हेतु आवश्यक विश्वासपूर्ण संबंधों को स्थापित किया।
मारवाड़ी समुदाय की सफलता में उनके गहन सामाजिक तंत्र ने एक अनौपचारिक बैंकिंग व्यवस्था की भूमिका निभाई। उनके समुदाय के भीतर आपसी विश्वास इतना गहरा था कि वे बिना किसी औपचारिक लिखित अनुबंध के बड़े वित्तीय लेन-देन कर सकते थे। इस सामाजिक पूँजी ने उन्हें व्यापार विस्तार के लिए आवश्यक ऋण और धन का सुचारु प्रवाह सुनिश्चित किया, जो किसी भी सफल व्यवसाय के लिए अनिवार्य शर्त है।

21. (C) पण्य (commodity) उत्पादन और श्रमिक मजदूरी आधारित व्यवस्था
कार्ल मार्क्स ने पूँजीवाद को एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था के रूप में विश्लेषित किया जहाँ उत्पादन मुख्य रूप से बाज़ार में बिक्री के लिए होता है। इस व्यवस्था में श्रम भी एक पण्य बन

जाता है, जिसे श्रमिक मजदूरी के बदले बाज़ार में बेचता है। पूँजीवाद के अंतर्गत सारा आर्थिक ढाँचा पण्यों के उत्पादन, उनके विनिमय और पूँजी के निरंतर संचय के इर्द-गिर्द घूमता है, जो वर्ग संघर्ष को जन्म देता है।

22. (B) प्रभुत्वशाली पूँजीपति और सर्वहारा श्रमिक
मार्क्सवादी विश्लेषण के अनुसार, पूँजीवादी उत्पादन प्रणाली समाज को दो प्रमुख वर्गों में विभाजित करती है। पहला वर्ग प्रभुत्वशाली पूँजीपतियों का है, जिनका उत्पादन के साधनों पर पूर्ण नियंत्रण होता है। दूसरा वर्ग सर्वहारा श्रमिकों का है, जिनके पास केवल अपनी श्रम शक्ति होती है जिसे वे जीवन यापन के लिए पूँजीपतियों को बेचते हैं। इन दोनों वर्गों के हितों के बीच अंतर्निहित विरोध पूँजीवाद की विशेषता है।

23. (D) गैर-बाज़ारी वस्तुओं का बाज़ार में क्रय-विक्रय योग्य बनना
पण्यीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें उन वस्तुओं या सेवाओं को भी बाज़ार में क्रय-विक्रय के लिए लाया जाता है जो पहले व्यावसायिक लेन-देन का हिस्सा नहीं थीं। उदाहरण के तौर पर, पारंपरिक रुप से परिवार या समुदाय के भीतर मिलने वाली देखभाल या ज्ञान अब बाज़ार में उत्पाद के रूप में बिकने लगे हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि बाज़ार कैसे सामाजिक जीवन के निजी क्षेत्रों में भी प्रवेश कर गया है।

24. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
बस्तर जिला छत्तीसगढ़ के गोंड आदिवासियों और उनके साप्ताहिक हाटों के लिए प्रसिद्ध है। कलकत्ता औपनिवेशिक भारत का वह शहर था जहाँ मारवाड़ी समुदाय ने नए व्यापारिक अवसरों का भरपूर लाभ उठाया। तमिलनाडु का नाकरट्टार समुदाय अपनी अद्वितीय जाति-आधारित बैंकिंग प्रणाली के लिए जाना जाता है। राजस्थान के पुष्कर में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला वार्षिक पशु मेला अब एक वैश्विक पर्यटन केंद्र बन चुका है।

25. (C) व्यावसायिक विवाह ब्यूरो और व्यक्तित्व सुधार पाठ्यक्रम
समकालीन भारत में विवाह और व्यक्तित्व का विकास पण्यीकरण के ज्वलंत उदाहरण हैं। पहले जो कार्य परिवार और बुज़ुर्गों द्वारा अनौपचारिक रूप से किए जाते थे, वे अब व्यावसायिक विवाह ब्यूरो और प्रशिक्षण केंद्रों द्वारा शुल्क के बदले किए जा रहे हैं। ये सेवाएँ अब बाज़ार में बिकने वाले उत्पादों में बदल गई हैं, जो इस बात का प्रमाण हैं कि मानवीय संबंध और कौशल भी अब पण्य बन चुके हैं।

26. (C) केवल 3
कार्ल मार्क्स का तर्क था कि पूँजीवाद अनिवार्य रूप से श्रमिकों के शोषण पर आधारित है। पूँजीपति श्रमिकों को उनके द्वारा उत्पादित कुल मूल्य के बराबर दाम कभी नहीं देते, बल्कि वे केवल उतनी ही मजदूरी देते हैं जो उनके अस्तित्व के लिए आवश्यक हो। शेष बचा हुआ मूल्य, जिसे अतिरिक्त मूल्य कहा जाता है, पूँजीपति मुनाफे के रूप में रख लेते हैं। अतः यह कहना गलत है कि उन्हें पूरा मूल्य मिलता है।

27. (D) उन्होंने इसे 'प्रतिष्ठा का प्रतीक' (Status Symbol) कहा।
मैक्स वेबर ने बाज़ार के अध्ययन में उपभोग के सामाजिक पक्ष पर विशेष बल दिया। उन्होंने स्पष्ट किया कि लोग केवल उपयोगिता के लिए वस्तुएं नहीं खरीदते, बल्कि वे अपनी सामाजिक प्रस्थिति प्रदर्शित करने के लिए विशेष ब्रांडों और जीवनशैली का चयन करते हैं। इसे उन्होंने प्रतिष्ठा का प्रतीक कहा, जो दर्शाता है कि बाज़ार में व्यक्ति की उपभोग शैली समाज में उसकी ऊँची या नीची हैसियत को व्यक्त करती है।

28. (B) उदारवाद की ओर आर्थिक नीतियों का रणनीतिक परिवर्तन
भारत में भूमंडलीकरण के युग का सूत्रपात 1991 में अपनाई गई आर्थिक उदारीकरण की नीतियों से हुआ। इस परिवर्तन के तहत भारतीय अर्थव्यवस्था के द्वार विदेशी निवेश और व्यापार के लिए खोल दिए गए। राज्य के नियंत्रण को कम किया गया और बाज़ार की शक्तियों को अधिक स्वतंत्रता दी गई। इस नीतिगत बदलाव ने भारतीय बाज़ार को वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत करने की प्रक्रिया को अत्यंत तीव्र कर दिया।

29. (A) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
भूमंडलीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें वस्तुओं, पूँजी और लोगों का वैश्विक आवागमन शामिल है। यह दुनिया भर के बाज़ारों के एकीकरण को बढ़ावा देता है। भारत में BPO उद्योग इसी का प्रत्यक्ष परिणाम है। हालांकि, यह कहना गलत है कि वैश्विक बाज़ारों में उतार-चढ़ाव का भारत पर प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि आज के अंतर्संबंधित युग में एक देश की आर्थिक घटनाएं दूसरे देशों को गहराई से प्रभावित करती हैं।

30. (D) पश्चिम में भारतीय ज्ञान प्रणालियों की बढ़ती लोकप्रियता
संस्कृति का बाज़ारीकरण तब होता है जब सांस्कृतिक तत्वों को बाज़ार में उत्पाद के रूप में बेचा जाने लगता है। पश्चिम में भारतीय योग, आयुर्वेद और आध्यात्मिक ज्ञान की बढ़ती लोकप्रियता इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। ये प्राचीन ज्ञान प्रणालियाँ अब वैश्विक बाज़ार में लाभदायक उत्पाद और सेवाएँ बन चुकी हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि कैसे वैश्विक पूँजीवाद स्थानीय और सांस्कृतिक ज्ञान को व्यावसायिक लाभ के लिए पुनर्गठित कर सकता है।

31. (A) एक अत्यंत महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल
पुष्कर मेला, जो मूलतः पशुओं के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था, अब अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के एक बड़े केंद्र के रूप में रुपांतरित हो चुका है। यहाँ की स्थानीय संस्कृति, धार्मिक गतिविधियाँ और पशु व्यापार अब वैश्विक पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य बिंदु बन गए हैं। इस मेले का यह नया स्वरूप दर्शाता है कि कैसे पारंपरिक संस्थाएँ भूमंडलीकरण के प्रभाव में आकर एक बड़े व्यावसायिक और सांस्कृतिक बाज़ार में बदल जाती हैं।

32. (B) आयात शुल्क में वृद्धि और विदेशी वस्तुओं पर प्रतिबंध
उदारीकरण की नीति का मुख्य उद्देश्य बाज़ार को और अधिक खुला और प्रतिस्पर्धी बनाना है। इसके अंतर्गत आयात शुल्क में कटौती की जाती है और विदेशी वस्तुओं के प्रवेश पर लगे प्रतिबंधों को हटाया जाता है, न कि बढ़ाया जाता है। उदारीकरण में सरकारी दखल कम करना, निजीकरण को बढ़ावा देना और

विदेशी निवेश को सरल बनाना जैसे महत्वपूर्ण कदम उठाए जाते हैं ताकि आर्थिक संवृद्धि को गति मिल सके।

33. (B) कुशल निजी संस्थाओं के कारण आर्थिक संवृद्धि होती है।
उदारीकरण के समर्थक यह तर्क देते हैं कि मुक्त बाज़ार और निजी क्षेत्र की सक्रिय भागीदारी से अर्थव्यवस्था में अधिक कुशलता आती है। उनके अनुसार, निजी संस्थाएँ लाभ और प्रतिस्पर्धा के कारण संसाधनों का बेहतर उपयोग करती हैं, जिससे उत्पादन बढ़ता है और अंततः देश की आर्थिक संवृद्धि होती है। उनका मानना है कि सरकारी नियंत्रण कम होने से नवाचार और विकास के नए अवसरों को पर्याप्त बढ़ावा मिलता है।

34. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में उदारीकरण के प्रभावों का विश्लेषण करने पर एक मिश्रित तस्वीर सामने आती है। सॉफ्टवेयर और सूचना प्रौद्योगिकी जैसे क्षेत्रों ने वैश्विक बाज़ार में अपनी मजबूत पहचान बनाकर अत्यधिक लाभ कमाया है। इसके विपरीत, स्थानीय छोटे उत्पादकों को विदेशी कंपनियों और सस्ती आयातित वस्तुओं से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा है। यह विरोधाभास दर्शाता है कि उदारीकरण ने समाज के विभिन्न वर्गों को असमान रूप से प्रभावित किया है।

35. (C) कई किसान आजीविका अर्जित करने में असफल रहे।
उदारीकरण की नीतियों के तहत कृषि क्षेत्र में सरकारी सहायता और सब्सिडी में कमी की गई। इससे खाद, बीज और बिजली जैसे कृषि इनपुट महंगे हो गए, जबकि अंतरराष्ट्रीय बाज़ार की प्रतिस्पर्धा के कारण किसानों को उनके उत्पादों का सही दाम मिलना कठिन हो गया। परिणामस्वरूप, छोटे और सीमांत किसानों की आय कम हुई और कई अपनी आजीविका चलाने में असमर्थ हो गए, जिससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में संकट बढ़ा।

36. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
उदारीकरण की नीति में सरकारी विभागों का निजीकरण एक प्रमुख कदम है। भूमंडलीकरण के कारण भारत में BPO उद्योग का व्यापक विकास हुआ है। बोतल बंद पानी का चलन पण्यीकरण की प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से दर्शाता है, जहाँ एक प्राकृतिक संसाधन को उत्पाद बनाकर बेचा जा रहा है। धोराई गाँव का बाज़ार एक पारंपरिक साप्ताहिक हाट का उदाहरण है जो स्थानीय स्तर पर आज भी बहुत महत्वपूर्ण है।

37. (C) जाति, जनजाति और परिवार
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, बाज़ार केवल एक आर्थिक तंत्र नहीं है, बल्कि यह जाति, जनजाति और परिवार जैसी सामाजिक संस्थाओं के समान ही एक महत्वपूर्ण सामाजिक इकाई है। बाज़ार सामाजिक मानदंडों द्वारा विनियमित होता है और यह अन्य संस्थाओं के साथ जटिल रूप से अंतर्संबंधित है। जिस प्रकार परिवार या जाति समाज में व्यक्ति की स्थिति और संबंधों को तय करते हैं, उसी प्रकार बाज़ार भी सामाजिक संबंधों को आकार देता है।

38. (B) राजनीतिक अर्थव्यवस्था
अठारहवीं शताब्दी के इंग्लैंड में अर्थशास्त्र को 'राजनीतिक अर्थव्यवस्था' के नाम से जाना जाता था। उस समय बाज़ार और अर्थव्यवस्था के अध्ययन को राजनीति और समाज के व्यापक संदर्भों से जोड़कर देखा जाता था। प्रसिद्ध अर्थशास्त्री एडम स्मिथ जैसे विचारकों ने इसी ढांचे के भीतर अपने सिद्धांतों को विकसित किया था। यह शब्दावली इस विचार को पुष्ट करती है कि आर्थिक प्रणालियाँ और राजनीतिक सत्ता आपस में गहराई से जुड़ी होती हैं।

39. (D) दो प्राचीन स्थानीय चाय की दुकानों तक
धोराई गाँव में साप्ताहिक बाज़ार के दिन अभूतपूर्व चहल-पहल रहती है, लेकिन बाज़ार के समाप्त होने के बाद यह गाँव पुनः अपनी शांत अवस्था में लौट आता है। गैर-बाज़ारी दिनों में यहाँ का सामाजिक जीवन अत्यंत सीमित हो जाता है। उस समय गाँव की केवल दो प्राचीन स्थानीय चाय की दुकानें ही एकमात्र ऐसी जगहें बचती हैं जहाँ लोग गपशप या सामाजिक मेल-मिलाप के लिए एकत्र हो सकते हैं।

40. (A) केवल 1 और 4 सही हैं।
औपनिवेशिक शासन ने जनजातीय इलाकों को बाहरी दुनिया से जोड़कर वहां श्रम का एक नया बाज़ार विकसित किया, जिससे आदिवासियों का शोषण बढ़ा। साहूकारों और व्यापारियों के आगमन से आदिवासियों की आर्थिक स्थिति सुधरने के बजाय और खराब हो गई, क्योंकि उन्हें ऋण के जाल में फँसाया गया। इसके कारण कई आदिवासियों ने अपनी पैतृक जमीन खो दी। अतः इस एकीकरण के परिणाम आदिवासियों के लिए मुख्यतः नकारात्मक रहे।

41. (C) खरीददार मुख्यतः आदिवासी, जबकि विक्रेता जाति-प्रधान हिंदू हैं।
बस्तर के साप्ताहिक बाज़ारों में एक विशिष्ट सामाजिक संरचना देखी जाती है जो स्थानीय शक्ति संबंधों को प्रतिबिंबित करती है। यहाँ खरीददारों में बहुसंख्यक स्थानीय आदिवासी होते हैं जो अपनी बुनियादी ज़रूरतें पूरी करने आते हैं। इसके विपरीत, प्रमुख वस्तुओं और निर्मित माल के विक्रेताओं में मुख्य रूप से बाहरी या मैदानी इलाकों से आए जाति-प्रधान हिंदू व्यापारी होते हैं। यह विभाजन बाज़ार में मौजूद आर्थिक और सामाजिक विषमता को दर्शाता है।

42. (A) यह लंबी दूरी के व्यापार हेतु विनिमय का बिल था।
'हुंडी' पूर्व-औपनिवेशिक भारत की एक अत्यंत परिष्कृत वित्तीय संस्था थी। यह कागज़ का एक ऐसा टुकड़ा या विनिमय का बिल था जिसने व्यापारियों को भारी मात्रा में नकद पैसा साथ ले जाने के जोखिम के बिना लंबी दूरी का व्यापार करने में सक्षम बनाया। हुंडी की स्वीकार्यता व्यापारियों के आपसी विश्वास और उनकी साख पर आधारित थी, जो तत्कालीन बैंकिंग व्यवस्था की मजबूती और स्वायत्तता को प्रमाणित करती थी।

43. (D) व्यापार और वाणिज्य की गतिविधियाँ
हिंदू वर्ण व्यवस्था के पारंपरिक ढाँचे में 'वैश्य' वर्ण का मुख्य उत्तरदायित्व आर्थिक गतिविधियों का संचालन करना है।

इसमें व्यापार, वाणिज्य और कृषि जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र शामिल थे। वैश्य समुदाय ने ऐतिहासिक रूप से भारतीय बाज़ार और अर्थव्यवस्था के विकास में आधारभूत भूमिका निभाई है। उनके द्वारा स्थापित व्यापारिक नेटवर्क और वित्तीय संस्थाओं ने प्राचीन काल से ही भारत को एक समृद्ध आर्थिक शक्ति के रूप में बनाए रखा।

44. (B) बंजारे
उपनिवेश काल से पहले, बंजारे एक ऐसा प्रमुख जनजातीय समूह था जो घुमंतू व्यापारियों के रूप में कार्य करता था। वे नमक और अनाज जैसी आवश्यक वस्तुओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाने का विशाल नेटवर्क संचालित करते थे। ऊँटों और बैलों के अपने बड़े काफिलों के साथ, वे देश के दुर्गम क्षेत्रों को मुख्य व्यापारिक मार्गों से जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करते थे, जो तात्कालीन अर्थव्यवस्था की रीढ़ था।

45. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
कार्ल मार्क्स के अनुसार, पूँजीवाद की बुनियाद ही श्रमिकों के शोषण पर टिकी है। उनका तर्क था कि श्रमिक जितना मूल्य पैदा करते हैं, पूँजीपति उन्हें उसका केवल एक छोटा हिस्सा मजदूरी के रूप में देते हैं। इस अंतर को 'अतिरिक्त मूल्य' कहा जाता है, जो अंततः पूँजीपति का मुनाफा बनता है। यह मुनाफा सीधे तौर पर श्रमिक के श्रम की चोरी है, जो पूँजीवादी व्यवस्था में निरंतर जारी रहती है।

46. (D) सामाजिक पण्यीकरण
पीने का पानी पहले एक निशुल्क प्राकृतिक संसाधन माना जाता था, जिसे अब बाज़ार में उत्पाद के रूप में बेचा जा रहा है। यह प्रक्रिया सामाजिक पण्यीकरण का एक सशक्त उदाहरण है। इसके माध्यम से एक बुनियादी मानवीय आवश्यकता को व्यावसायिक लाभ की वस्तु में बदल दिया गया है। यह दर्शाता है कि कैसे आधुनिक बाज़ार नई ज़रूरतें पैदा करते हैं और उन चीज़ों को भी बेचते हैं जो पहले मुफ्त थीं।

47. (A) व्यक्ति की सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति का
आधुनिक समाज में उपभोक्ता वस्तुओं का चयन केवल उपयोगिता तक सीमित नहीं रह गया है। किसी व्यक्ति द्वारा उपयोग की जाने वाली कार का ब्रांड या सेलफोन का मॉडल उसकी सामाजिक और आर्थिक हैसियत का पैमाना बन गया है। ये वस्तुएं समाज में व्यक्ति की 'प्रस्थिति' को प्रदर्शित करती हैं, जिससे दूसरे लोग उसकी आय और जीवनस्तर का अंदाज़ा लगाते हैं। यह उपभोग के प्रतीकात्मक महत्व को स्पष्ट करता है।

48. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
एडम स्मिथ ने बाज़ार के अदृश्य हाथ का सिद्धांत दिया और द वेल्थ ऑफ नेशन्स पुस्तक लिखी। कार्ल मार्क्स ने पूँजीवाद में अतिरिक्त मूल्य और शोषण का विश्लेषण किया। मैक्स वेबर ने उपभोग और जीवनशैली को सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रतीक के रूप में परिभाषित किया। अल्फ्रेड गेल एक प्रसिद्ध मानवविज्ञानी और समाजशास्त्री हैं जिन्होंने छत्तीसगढ़ के धोराई स्थित आदिवासी बाज़ार का गहन और विस्तृत अध्ययन किया था।

49. (B) वे सभी विशिष्ट संदर्भ के अनुसार ही समझे जा सकते हैं।
बाज़ार शब्द का प्रयोग विभिन्न अर्थों में किया जाता है, लेकिन इन सभी प्रयोगों में एक बात समान है कि उनका अर्थ संदर्भ पर निर्भर करता है। चाहे वह एक साप्ताहिक हाट हो, शेयर बाज़ार हो या किसी उत्पाद की कुल माँग, इन सभी को समझने के लिए उस विशेष सामाजिक और आर्थिक परिवेश की जानकारी होना आवश्यक है। बाज़ार का स्वरूप और उसका कार्यकरण हमेशा उसके विशिष्ट संदर्भ से ही निर्धारित होता है।

50. (A) विशेष सामाजिक समूहों या वर्गों द्वारा
समाजशास्त्रीय अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि बाज़ार पूरी तरह स्वतंत्र या निष्पक्ष नहीं होते। अक्सर व्यापार और विनिमय की गतिविधियों पर कुछ विशेष सामाजिक समूहों, जातियों या वर्गों का प्रभुत्व और नियंत्रण होता है। ये समूह अपने सामाजिक नेटवर्क, पूँजी और पहुँच का उपयोग करके बाज़ार के नियमों और संचालन को अपने पक्ष में प्रभावित करते हैं। बाज़ार का यह संगठन सामाजिक असमानताओं और शक्ति संबंधों को भी दर्शाता है।

51. (C) 4, 2, 3, 1
ऐतिहासिक क्रम के अनुसार, नाकरट्टारों की पारंपरिक व्यापारिक व्यवस्था सदियों पुरानी है। इसके बाद, 1776 में एडम स्मिथ की द वेल्थ ऑफ नेशन्स प्रकाशित हुई। औपनिवेशिक काल के दौरान भारत में ब्रिटिश शासन ने अर्थव्यवस्था में हस्तक्षेप कर उसे कच्चे माल के स्रोत में बदल दिया। अंततः, 1991 के बाद भारत में आर्थिक उदारीकरण और भूमंडलीकरण की आधुनिक नीतियों की औपचारिक रूप से शुरुआत हुई, जिसने बाज़ार को वैश्विक बनाया।

52. (D) अर्थव्यवस्था समाज से पृथक नियमों से चल सकती है।
आधुनिक अर्थशास्त्र की एक आधारभूत मान्यता यह है कि अर्थव्यवस्था एक स्वायत्त प्रणाली है जो समाज के अन्य अंगों से स्वतंत्र होकर कार्य कर सकती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, आर्थिक व्यवहार पूरी तरह तर्कसंगत होता है और माँग एवं आपूर्ति जैसे सार्वभौमिक नियमों द्वारा निर्देशित होता है। यह समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के विपरीत है, जो मानता है कि अर्थव्यवस्था हमेशा सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों में रची-बसी रहती है।

53. (C) वहाँ अधिवास बिखरा है और संचार व्यवस्था जीर्ण-शीर्ण है।
पहाड़ी और जंगली इलाकों में साप्ताहिक हाटों का महत्व इसलिए अधिक है क्योंकि वहाँ जनसंख्या का घनत्व कम है और बस्तियाँ दूर-दूर बसी हुई हैं। भौगोलिक दुर्गमता के कारण वहां संचार और परिवहन की स्थायी सुविधाएं अक्सर अनुपलब्ध या बहुत कमजोर होती हैं। ऐसे में ये बाज़ार एक निश्चित समय पर लोगों को आवश्यक सामान उपलब्ध कराने और सामाजिक संपर्क स्थापित करने का एकमात्र और प्रभावी माध्यम बनते हैं।

54. (B) साप्ताहिक हाट केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करते हैं और उनका राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था से कोई संबंध नहीं होता।
यह कहना पूरी तरह गलत है कि साप्ताहिक हाटों का राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था से कोई संबंध नहीं होता। वास्तव में, ये बाज़ार स्थानीय वन उत्पादों और कृषि सामग्री को बड़ी व्यापारिक श्रृंखलाओं तक पहुँचाने की पहली कड़ी हैं। यहाँ से एकत्र किया गया कच्चा माल अक्सर राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों तक पहुँचता है। साथ ही, राष्ट्रीय उद्योगों द्वारा निर्मित वस्तुएं इन्हीं हाटों के माध्यम से ग्रामीण उपभोक्ताओं तक पहुँचती हैं।

55. (D) गहनों और बने-बनाए सस्ते कपड़ों पर
बस्तर के साप्ताहिक हाटों में आदिवासी समुदाय अपनी आय का एक बड़ा हिस्सा गहनों, श्रृंगार की वस्तुओं और बाज़ार में मिलने वाले बने-बनाए सस्ते कपड़ों पर खर्च करते हैं। उनके लिए ये वस्तुएं केवल उपभोग की चीजें नहीं हैं, बल्कि वे उनकी सामाजिक पहचान और खुशी का भी हिस्सा हैं। यह उपभोग पैटर्न दर्शाता है कि कैसे बाज़ार आदिवासियों की बदलती रुचियों और उनकी सामाजिक आकांक्षाओं को प्रभावित करता है।

56. (D) (B) और (C) दोनों
तमिलनाडु के नाकरट्टारों की बैंकिंग व्यवस्था पूर्णतः जाति और नातेदारी पर आधारित थी, जहाँ व्यक्ति की साख और प्रतिष्ठा ही व्यापार का मुख्य आधार थी। उनकी व्यवस्था आधुनिक पश्चिमी बैंकिंग की तुलना में कहीं अधिक व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों पर टिकी थी। एक नाकरट्टार व्यक्ति को उसकी संपूर्ण जाति का प्रतिनिधि माना जाता था, जिससे ऋण और भुगतान में उच्च स्तर का विश्वास और सुरक्षा बनी रहती थी।

57. (C) हथकरघा कपड़े (सूती/रेशमी) और मसालों का निर्यात
उपनिवेश काल से पहले भारत एक प्रमुख औद्योगिक शक्ति था, जो मुख्य रूप से उच्च गुणवत्ता वाले हथकरघा कपड़ों, जैसे महीन सूती और रेशमी मलमल, के लिए विश्व भर में विख्यात था। इसके अलावा, भारतीय मसालों की वैश्विक स्तर पर भारी माँग थी। इन वस्तुओं के निर्यात ने भारत को एक धनी राष्ट्र बनाया था और पूरी दुनिया के व्यापारी इन कीमती सामानों के व्यापार के लिए भारत की ओर आकर्षित होते थे।

58. (A) बड़े औद्योगिक घरानों से लेकर छोटे दुकानदारों तक सभी
मारवाड़ी समुदाय की व्यापारिक संरचना बहुत व्यापक और समावेशी है। इस समुदाय में बिड़ला जैसे विशाल औद्योगिक घरानों से लेकर शहरों और गाँवों के छोटे-छोटे परचून दुकानदार और साहूकार तक शामिल हैं। मारवाड़ियों की यह विविधता और देशव्यापी उपस्थिति उनके सुदृढ़ सामाजिक नेटवर्क और व्यापारिक बुद्धिमत्ता को दर्शाती है। उन्होंने विभिन्न स्तरों पर आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित कर भारतीय बाज़ार में अपनी मजबूत पकड़ बनाई है।

59. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पूर्व में विवाह एक विशुद्ध पारिवारिक और सामुदायिक मामला था, जिसे रिश्तेदारों के माध्यम से तय किया जाता था। आज के समय में व्यावसायिक विवाह ब्यूरो और ऑनलाइन मैट्रिमोनियल वेबसाइटों की बाढ़ पण्यीकरण की प्रक्रिया का स्पष्ट उदाहरण है। यहाँ जीवनसाथी खोजने की सेवा अब एक उत्पाद बन गई है जिसे शुल्क देकर खरीदा जा सकता है। यह परिवर्तन दर्शाता है कि कैसे बाज़ार ने हमारे निजी सामाजिक जीवन में प्रवेश कर लिया है।

60. (B) अर्थव्यवस्था का व्यापक बाज़ारीकरण
1980 के दशक के उत्तरार्ध और 1991 के बाद भारत द्वारा अपनाई गई उदारवाद की नीति को अर्थव्यवस्था का व्यापक बाज़ारीकरण कहा जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य सरकारी नियंत्रण को कम करना और आर्थिक गतिविधियों के संचालन के लिए बाज़ार की शक्तियों, जैसे माँग और आपूर्ति, को खुली छूट देना था। इस नीति ने भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक प्रतिस्पर्धी बाज़ार की ओर मोड़ दिया और निजी क्षेत्र की भूमिका को केंद्रीय बना दिया।

61. (C) पश्चिमी देशों को सस्ता श्रम और सेवाएँ प्रदान करके।
BPO उद्योग या कॉल सेंटर भूमंडलीकरण का एक प्रमुख अंग हैं, जो संचार क्रांति के कारण संभव हुए हैं। भारत अपनी विशाल शिक्षित और अंग्रेजी बोलने वाली आबादी के माध्यम से पश्चिमी देशों की कंपनियों को बहुत ही सस्ती दर पर तकनीकी और ग्राहक सेवाएँ प्रदान करता है। यह उद्योग भारत को वैश्विक अर्थव्यवस्था से जोड़ता है और दर्शाता है कि कैसे श्रम और सेवाएँ अब भौगोलिक सीमाओं से परे वैश्विक उत्पाद बन चुके हैं।

62. (D) तीर्थयात्रियों, पशुओं, व्यापारियों और सैलानियों का मिश्रण
पुष्कर मेला अपनी अनूठी विविधता के लिए प्रसिद्ध है, जहाँ आध्यात्मिक और व्यावसायिक गतिविधियों का अद्भुत संगम होता है। यहाँ एक ओर हिंदू तीर्थयात्री पवित्र स्नान के लिए एकत्र होते हैं, तो दूसरी ओर बड़ी संख्या में ऊँटों और पशुओं का व्यापार करने वाले ग्रामीण जुटते हैं। इनके साथ ही, विदेशी सैलानियों की उपस्थिति इसे एक वैश्विक सांस्कृतिक और आर्थिक केंद्र बना देती है, जो पारंपरिक बाज़ार के आधुनिक रूपांतरण को दर्शाती है।

63. (A) सरकारी संस्थानों को प्राइवेट कंपनियों के हाथों बेचना।
निजीकरण आर्थिक उदारीकरण का एक प्रमुख स्तंभ है, जिसके तहत सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों या सरकारी विभागों की हिस्सेदारी निजी निवेशकों या कंपनियों को बेची जाती है। इसका मुख्य तर्क यह है कि सरकारी नियंत्रण की तुलना में निजी प्रबंधन अधिक कुशल, लाभकारी और आधुनिक होता है। निजीकरण के माध्यम से राज्य अर्थव्यवस्था के प्रत्यक्ष संचालन से पीछे हट जाता है और उसकी भूमिका केवल एक नियामक की रह जाती है।

64. (B) सॉफ्टवेयर विकास और सूचना तकनीकी क्षेत्र
भारतीय सॉफ्टवेयर और सूचना प्रौद्योगिकी उद्योग को भूमंडलीकरण और वैश्विक बाज़ार से सर्वाधिक लाभ हुआ है। भारत में कुशल और सस्ते इंजीनियरों की प्रचुरता के कारण

दुनिया भर की बड़ी कंपनियाँ यहाँ से सेवाएँ लेती हैं। इस क्षेत्र ने न केवल भारत के विदेशी मुद्रा भंडार को बढ़ाया है, बल्कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में भारत की प्रतिष्ठा को भी स्थापित किया है। यह क्षेत्र वैश्विक प्रतिस्पर्धा में टिके रहने की भारत की क्षमता का सबसे सफल उदाहरण है।

65. (B) बाज़ार सांस्कृतिक संदर्भ में निहित एक सामाजिक संस्था है।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण बाज़ार को केवल अंकों या ग्राफों के माध्यम से नहीं देखता, बल्कि उसे एक मानवीय और सामाजिक प्रक्रिया मानता है। बाज़ार हमेशा एक विशिष्ट सांस्कृतिक परिवेश में स्थित होते हैं और वे समाज के रीति-रिवाजों, जातिगत संरचनाओं और सामाजिक विश्वासों से संचालित होते हैं। यह दृष्टिकोण रेखांकित करता है कि आर्थिक विनिमय कभी भी सामाजिक संदर्भ से अलग नहीं होता, बल्कि वह समाज का ही एक प्रतिबिंब है।

66. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
व्यावसायिक विवाह ब्यूरो पण्यीकरण का उदाहरण है जहाँ सामाजिक सेवाएँ उत्पाद बन गई हैं। उदारीकरण के तहत कृषि सब्सिडी कम करना राज्य के नियंत्रण में कमी को दर्शाता है। उपनिवेशीकरण ने भारतीय अर्थव्यवस्था को कच्चे माल का स्रोत बना दिया था। साप्ताहिक आदिवासी हाट सामाजिक मेल-मिलाप का प्रमुख केंद्र है जहाँ व्यापार के साथ सामुदायिक रिश्ते भी मजबूत होते हैं। ये सभी बाज़ार के विभिन्न सामाजिक-आर्थिक आयामों को प्रकट करते हैं।

67. (C) व्यापक राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था
समाजशास्त्र और अर्थशास्त्र में बाज़ार शब्द का 'बृहत् अर्थ' केवल एक बाज़ार स्थल तक सीमित नहीं है। यह संपूर्ण राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के लगभग समानार्थक है, जिसमें देश की सभी आर्थिक गतिविधियाँ, विनिमय प्रणालियाँ और नीतियां शामिल होती हैं। इस अर्थ में बाज़ार एक विशाल अमूर्त व्यवस्था है जो पूरे समाज के आर्थिक जीवन को संगठित करती है। यह व्यापक ढाँचा ही तय करता है कि समाज में संसाधनों का वितरण और उपभोग कैसे होगा।

68. (D) (B) और (C) दोनों
एडम स्मिथ को आधुनिक अर्थशास्त्र का जनक माना जाता है क्योंकि उन्होंने तर्क दिया था कि जब प्रत्येक व्यक्ति अपने लाभ के लिए कार्य करता है, तो समाज की कुल समृद्धि बढ़ती है। उन्होंने खुली बाज़ार अर्थव्यवस्था की वकालत की जहाँ राज्य का हस्तक्षेप न्यूनतम हो। स्मिथ के अनुसार, बाज़ार में एक स्व-नियमन की शक्ति होती है। हालांकि, उन्होंने राज्य-नियंत्रित अर्थव्यवस्था का समर्थन नहीं किया, बल्कि वे मुक्त व्यापार के समर्थक थे।

69. (C) सड़कों का निर्माण कर बाह्य संपर्क को सुगम बनाया
औपनिवेशिक सरकार ने जनजातीय क्षेत्रों को 'खोलने' के लिए व्यापक स्तर पर बुनियादी ढांचे, विशेषकर सड़कों का विकास किया। इसका उद्देश्य इन क्षेत्रों के प्रचुर संसाधनों का दोहन करना और वहां तक अपनी सैन्य और प्रशासनिक पहुँच बनाना था। सड़कों के निर्माण ने बाहरी व्यापारियों, साहूकारों और अधिकारियों के प्रवेश को सुगम बनाया, जिसने अंततः आदिवासियों की आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था को नष्ट कर उन्हें बड़ी बाजार अर्थव्यवस्था के साथ अधीनस्थ के रूप में जोड़ दिया।

70. (B) यह गलत है; पूर्व में भी विकसित व्यापारिक अर्थव्यवस्था थी।
यह एक सामान्य भ्रम है कि भारत में आर्थिक बदलाव केवल अंग्रेजों के आने से शुरु हुए। ऐतिहासिक साक्ष्य बताते हैं कि उपनिवेशवाद से बहुत पहले ही भारत में एक अत्यंत विकसित और गतिशील व्यापारिक अर्थव्यवस्था मौजूद थी। भारत वैश्विक व्यापार का एक प्रमुख केंद्र था, जहाँ बैंकिंग, क्रेडिट और विनिमय के उन्नत तरीके जैसे हुंडी का नियमित उपयोग होता था। अतः भारत की आर्थिक प्रगति की जड़ें उसके प्राचीन और मध्यकालीन इतिहास में गहराई से समाहित हैं।

71. (D) ग्रामीण जजमानी व्यवस्था
जजमानी व्यवस्था पूर्व-औपनिवेशिक भारत में गैर-बाज़ारी विनिमय का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसमें विभिन्न जातियों के बीच सेवाओं और वस्तुओं का आदान-प्रदान नकद भुगतान के बजाय पारंपरिक सामाजिक और धार्मिक संबंधों के आधार पर होता था। यह व्यवस्था आर्थिक लेन-देन को सामाजिक दायित्वों और आपसी निर्भरता के ताने-बाने में बुनती थी, जो आधुनिक मुद्रा-आधारित बाज़ार विनिमय से पूरी तरह भिन्न और सामाजिक रूप से नियंत्रित प्रणाली थी।

72. (B) 3, 2, 1
ऐतिहासिक दृष्टि से, भारत में सर्वप्रथम हुंडी जैसी परिष्कृत प्रणालियों के साथ एक मजबूत पूर्व-औपनिवेशिक व्यापार नेटवर्क विद्यमान था। इसके बाद, औपनिवेशिक काल में भारतीय बाज़ार को ब्रिटिश निर्मित माल के उपभोग का केंद्र बना दिया गया। अंत में, बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में भूमंडलीकरण और उदारीकरण की प्रक्रिया शुरु हुई, जिसने भारतीय बाज़ार को विश्व के साथ पूर्णतः एकीकृत कर दिया। यह क्रम भारत के क्रमिक आर्थिक रूपांतरण को स्पष्ट करता है।

73. (C) उत्पादन प्रक्रिया से जुड़े लोगों के सामाजिक संबंधों से
कार्ल मार्क्स का मौलिक विचार था कि अर्थव्यवस्था केवल निर्जीव वस्तुओं या पैसे का ढेर नहीं है, बल्कि यह उन सामाजिक संबंधों से बनती है जो लोग उत्पादन के दौरान आपस में विकसित करते हैं। पूँजीवादी व्यवस्था में, यह रिश्ता मालिक और मज़दूर के बीच का होता है, जो शक्ति के असंतुलन और शोषण पर आधारित है। मार्क्स के लिए बाज़ार और उत्पादन का अध्ययन अनिवार्य रूप से सामाजिक वर्ग संबंधों का अध्ययन है।

74. (A) लोग मानते हैं कि यह अनैतिक और मानव मूल्यों के विरुद्ध है।
मानव अंगों का पण्यीकरण आधुनिक समाज में एक अत्यंत संवेदनशील और विवादास्पद मुद्दा है। यद्यपि बाज़ार की शक्तियाँ इसे एक उत्पाद के रूप में देख सकती हैं, लेकिन समाज का एक बड़ा हिस्सा इसे अनैतिक और मानवीय गरिमा के विरुद्ध मानता है। गरीब लोगों द्वारा मजबूरी में अपने अंगों

को बेचना सामाजिक विषमता और शोषण का चरम रूप है, जो बाज़ार के अनियंत्रित विस्तार की नैतिक सीमाओं पर गंभीर प्रश्न खड़ा करता है।

75. (D) उत्पाद को प्रस्थिति या संस्कृति के प्रतीक के रूप में बेचना
आधुनिक विज्ञापन केवल उत्पाद की उपयोगिता के बारे में जानकारी नहीं देते, बल्कि वे उपभोक्ता की भावनाओं और सामाजिक आकांक्षाओं को लक्षित करते हैं। विज्ञापन किसी विशेष वस्तु को खरीदने को एक बेहतर जीवनशैली, ऊँची सामाजिक प्रस्थिति या आधुनिक संस्कृति का हिस्सा बनने से जोड़कर पेश करते हैं। इस प्रकार, विज्ञापन बाज़ार में न केवल सामान बेचते हैं, बल्कि वे प्रतीकात्मक मूल्यों और पहचान का भी निर्माण करते हैं।

76. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भूमंडलीकरण ने दुनिया भर के बाज़ारों को एक अटूट कड़ी में जोड़ दिया है, जिससे वे एक-दूसरे पर अत्यधिक निर्भर हो गए हैं। न्यूयॉर्क में वर्ल्ड ट्रेड सेंटर पर हमले जैसी राजनीतिक घटना का भारतीय सॉफ्टवेयर उद्योग पर तत्काल नकारात्मक प्रभाव पड़ना इसी अंतर-निर्भरता का प्रमाण है। यह दर्शाता है कि वैश्विक स्तर पर होने वाली कोई भी बड़ी हलचल अब दूर-दराज के स्थानीय बाज़ारों की स्थिरता और आर्थिक भविष्य को गहराई से प्रभावित कर सकती है।

77. (C) कार्तिक पूर्णिमा पर होने वाला पवित्र तालाब स्नान
पुष्कर मेले का गहरा धार्मिक महत्व यहाँ स्थित पवित्र पुष्कर सरोवर से जुड़ा है। हिंदू धर्म में कार्तिक पूर्णिमा के अवसर पर इस सरोवर में स्नान करना अत्यंत पुण्यदायी माना जाता है। इसी धार्मिक आस्था के कारण हर साल हज़ारों श्रद्धालु यहाँ एकत्र होते हैं। आस्था और धर्म का यह संगम ही मेले को वह आधार प्रदान करता है, जिस पर बाद में व्यापारिक और पर्यटन गतिविधियाँ विकसित हुई हैं।

78. (D) समस्याओं हेतु बाज़ार-आधारित प्रक्रियाओं का उपयोग करना
बाज़ारीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें सामाजिक या आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए बाज़ार की प्रतिस्पर्धा और कार्यकुशलता का सहारा लिया जाता है। इसके तहत शिक्षा, स्वास्थ्य और बुनियादी सुविधाओं जैसे क्षेत्रों में सरकारी नियंत्रण कम करके निजी बाज़ार की भागीदारी बढ़ाई जाती है। माना जाता है कि बाज़ार-आधारित प्रक्रियाएँ अधिक पारदर्शी और प्रभावी होती हैं, यद्यपि यह दृष्टिकोण सार्वजनिक कल्याण और पहुँच के संदर्भ में सदैव बहस का विषय रहा है।

79. (A) विदेशी प्रतिस्पर्धा से कुछ भारतीय उद्योग समाप्त हो सकते हैं।
उदारीकरण के आलोचक यह तर्क देते हैं कि भारतीय बाज़ारों को विदेशी कंपनियों के लिए खोलने से स्थानीय लघु और कुटीर उद्योगों को गंभीर खतरा पैदा हो गया है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पास अपार संसाधन और उन्नत तकनीक होती है, जिसका सामना करना छोटे भारतीय उत्पादकों के लिए कठिन होता है। इससे कई पारंपरिक उद्योग और रोज़गार के अवसर समाप्त हो सकते हैं, जिससे समाज में आर्थिक विषमता और बेरोज़गारी बढ़ने की आशंका रहती है।

80. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
नाकरट्टार समुदाय अपनी पारंपरिक जाति-आधारित बैंकिंग व्यवस्था के लिए विख्यात है। मारवाड़ी भारत के एक अत्यंत सफल और प्रभावशाली व्यापारिक समुदाय का प्रतिनिधित्व करते हैं। श्रमिक वर्ग अपनी आजीविका के लिए अपनी श्रम शक्ति को पूँजीपतियों के पास बेचता है। गोंड आदिवासी छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले के मूल निवासी हैं, जिनकी संस्कृति और बाज़ार प्रणालियों का समाजशास्त्रियों ने विस्तृत अध्ययन किया है। यह मिलान विभिन्न समूहों की विशिष्ट भूमिकाओं को स्पष्ट करता है।

81. (B) एक नियमित आवधिक बाज़ार
साप्ताहिक सब्ज़ी बाज़ार आवधिक बाज़ार का एक स्पष्ट उदाहरण है क्योंकि यह हफ़्ते के एक निश्चित दिन और समय पर आयोजित होता है। ऐसे बाज़ार स्थायी दुकानों के बजाय अस्थायी रूप से लगते हैं और फिर अगले सप्ताह उसी स्थान पर लौटते हैं। यह व्यवस्था खरीदारों को ताज़ा उत्पाद उपलब्ध कराने और छोटे विक्रेताओं को बिना भारी निवेश के व्यापार करने का अवसर प्रदान करती है, जो शहरी और ग्रामीण दोनों परिवेशों में लोकप्रिय है।

82. (D) (B) and (C) both are correct.
धोराई का साप्ताहिक बाज़ार छत्तीसगढ़ के बस्तर जिले में स्थित है, जो बाज़ार के दिन एक अत्यंत व्यस्त केंद्र बन जाता है। यहाँ की संरचना विशिष्ट है जिसमें बीच में एक बरगद का पेड़ और चतुर्भुजीय मैदान होता है। इस हाट में आदिवासियों के साथ-साथ हिंदू व्यापारी भी सक्रिय होते हैं और सरकारी वन अधिकारी भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं। अतः यह बाज़ार आर्थिक विनिमय के साथ प्रशासनिक और सामाजिक अंतःक्रिया का भी संगम है।

83. (C) यह विभाजन स्पष्ट नहीं है, दोनों घुले-मिले हुए हैं।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण के अनुसार, 'पारंपरिक' और 'आधुनिक' अर्थव्यवस्थाओं के बीच कोई कठोर सीमा रेखा खींचना संभव नहीं है। वास्तव में, ये दोनों व्यवस्थाएँ आपस में गहराई से घुली-मिली हुई हैं। आधुनिक बाज़ारों में भी जाति और नातेदारी जैसे पारंपरिक तत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जबकि पारंपरिक हाटों में भी आधुनिक मुद्रा और वैश्विक उत्पाद पहुँच चुके हैं। यह संकरण ही भारतीय अर्थव्यवस्था की वास्तविक पहचान और उसकी जटिलता को दर्शाता है।

84. (D) पारंपरिक हथकरघा उद्योगों का पूर्णतः नष्ट हो जाना
औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था को पहुँचाया गया सबसे बड़ा नुकसान यहाँ के विश्व प्रसिद्ध हथकरघा उद्योग का विनाश था। ब्रिटिश सरकार ने भारतीय सूती और रेशमी कपड़ों पर भारी शुल्क लगाए और मैनचेस्टर में मशीनों से बने सस्ते कपड़ों को भारतीय बाज़ारों में उतार दिया। इस नीति ने करोड़ों बुनकरों की आजीविका छीन ली और भारत

को एक स्वावलंबी विनिर्माता देश से बदलकर ब्रिटेन का एक आर्थिक उपनिवेश बना दिया।

85. (C) श्रमिकों के श्रम से 'अतिरिक्त मूल्य' का दोहन करके
मार्क्स के अनुसार, पूँजीपति का मुनाफा बाज़ार में केवल सामान बेचने से नहीं आता, बल्कि वह उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान श्रमिक के शोषण से पैदा होता है। श्रमिक अपनी मेहनत से जो कुल मूल्य सृजित करता है और उसे मिलने वाली मजदूरी के बीच का अंतर ही 'अतिरिक्त मूल्य' है। पूँजीपति इस अतिरिक्त मूल्य को अपनी जेब में रखकर अपनी पूँजी को बढ़ाता है, जो पूँजीवाद में वर्ग संघर्ष का मूल कारण है।

86. (B) निजी संस्थाओं द्वारा व्यक्तित्व विकास का प्रशिक्षण
व्यक्तित्व विकास और सामाजिक कौशल का प्रशिक्षण पहले परिवार और समुदाय के भीतर स्वाभाविक रूप से प्राप्त होता था, जिसका कोई मूल्य नहीं था। पण्यीकरण की आधुनिक प्रक्रिया ने इसे एक व्यावसायिक उत्पाद में बदल दिया है। अब निजी कोचिंग संस्थान शुल्क लेकर लोगों को बोलना, व्यवहार करना और शिष्टाचार सिखा रहे हैं। यह परिवर्तन दर्शाता है कि कैसे बाज़ार अब मानवीय स्वभाव और व्यक्तिगत गुणों को भी खरीद-बिक्री की वस्तु बना रहा है।

87. (D) हैसियत दिखाने के लिए विशेष ब्रांड की वस्तुओं का उपयोग
मैक्स वेबर की 'प्रतिष्ठा के प्रतीक' की अवधारणा इस विचार पर टिकी है कि उपभोग एक सामाजिक प्रदर्शन है। लोग अक्सर अपनी वास्तविक ज़रूरतों से ऊपर उठकर ऐसी वस्तुएं खरीदते हैं जो समाज में उनकी ऊँची स्थिति और धन को प्रदर्शित कर सकें। उदाहरण के तौर पर, महँगी घड़ी या ब्रांडेड कार का उपयोग केवल समय देखने या यात्रा करने के लिए नहीं, बल्कि अपनी विशिष्ट सामाजिक पहचान और हैसियत जताने के लिए किया जाता है।

88. (B) 2, 3, 1
भारत की आर्थिक नीतियों का क्रम देखें तो सबसे पहले कृषि क्षेत्र में आत्मनिर्भरता के लिए सरकारी सहायता और सब्सिडी की सुदृढ़ व्यवस्था थी। इसके बाद, 1991 के सुधारों के साथ सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों और सरकारी विभागों का निजीकरण शुरू हुआ। इसी प्रक्रिया के अगले चरण में, व्यापार नियमों को सरल बनाया गया जिससे विदेशी वस्तुओं का बड़े पैमाने पर और आसान आयात संभव हो सका। यह क्रम भारत के बाज़ारीकरण की यात्रा को दर्शाता है।

89. (C) उनकी नौकरियों और रोज़गार की स्थिरता कम हो गई
निजीकरण के कारण सरकारी विभागों और सार्वजनिक उपक्रमों के कर्मचारियों के सामने रोज़गार की असुरक्षा का संकट पैदा हुआ है। निजी कंपनियाँ अक्सर लाभ बढ़ाने के लिए कर्मचारियों की संख्या कम करती हैं और पुराने स्थायी लाभों को समाप्त कर देती हैं। इससे कर्मचारियों की नौकरियों की स्थिरता कम हो गई है और उन्हें अधिक कार्यभार तथा अनिश्चित भविष्य का सामना करना पड़ रहा है, जो उदारीकरण का एक प्रमुख सामाजिक प्रभाव है।

90. (A) कम तनख्वाह और अस्थायी प्रकृति की नौकरियाँ
असंगठित क्षेत्र की सबसे बड़ी विशेषता रोज़गार की अनिश्चितता और सामाजिक सुरक्षा का अभाव है। यहाँ काम करने वाले श्रमिकों को बहुत कम मजदूरी मिलती है और उनकी नौकरियाँ अस्थायी प्रकृति की होती हैं, जिन्हें कभी भी बिना किसी कारण के समाप्त किया जा सकता है। इसके अलावा, उन्हें सवेतन अवकाश, पेंशन या स्वास्थ्य बीमा जैसी सुविधाएं भी प्राप्त नहीं होतीं, जो उन्हें आर्थिक और सामाजिक रूप से अत्यंत कमज़ोर बनाती हैं।

91. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि बाज़ार केवल निर्जीव आर्थिक विनिमय के स्थल नहीं हैं। वे जीवंत सामाजिक संस्थाएं हैं जो समाज की अन्य महत्वपूर्ण संस्थाओं, जैसे जाति, वर्ग और परिवार के साथ गहराई से जुड़ी हुई हैं। भारत में नाकरट्टार और मारवाड़ी जैसे समुदायों का व्यापार पर नियंत्रण इस बात का प्रमाण है कि सामाजिक संबंध कैसे आर्थिक गतिविधियों को संगठित, नियंत्रित और सफल बनाने में आधारभूत भूमिका निभाते हैं।

92. (B) रिश्तेदारों से मिलना और विवाह संबंधी चर्चा करना
आदिवासी हाट आदिवासियों के सामाजिक जीवन की आधारशिला हैं। यहाँ आने का उद्देश्य केवल बाज़ार से सामान खरीदना नहीं है, बल्कि यह दूर-दूर तक फैले हुए समुदाय के लोगों को एक स्थान पर मिलने का अवसर प्रदान करता है। लोग यहाँ आकर अपने रिश्तेदारों का हालचाल जानते हैं, बच्चों के विवाह के लिए बातचीत करते हैं और सामाजिक उत्सवों की योजना बनाते हैं। यह बाज़ार आदिवासियों के सांस्कृतिक और पारिवारिक संबंधों को जीवंत रखने का माध्यम है।

93. (C) एडम स्मिथ जैसे प्रारंभिक विचारक
एडम स्मिथ जैसे प्रारंभिक अर्थशास्त्रियों ने इस विचार को स्थापित किया कि अर्थव्यवस्था को समाज के अन्य हिस्सों से अलग एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में पढ़ा जा सकता है। उन्होंने आर्थिक गतिविधियों को केवल स्व-हित और बाज़ार के नियमों द्वारा संचालित माना, जिसमें सामाजिक कारकों की भूमिका को गौण कर दिया गया। इसी दृष्टिकोण ने आधुनिक अर्थशास्त्र की नींव रखी, जो आर्थिक प्रणालियों को पूरी तरह स्वायत्त और तर्कसंगत व्यवस्था के रूप में विश्लेषित करता है।

94. (D) भारी औद्योगिक मशीनरी बेचने वाले विक्रेता
बस्तर जैसे साप्ताहिक हाटों का स्वरूप मुख्य रूप से ग्रामीण और स्थानीय आवश्यकताओं पर आधारित होता है। यहाँ गहने, बर्तन, स्थानीय खाद्य पदार्थ और आदिवासियों द्वारा लाए गए वन उत्पादों जैसे इमली और तिलहन की बिक्री प्रमुखता से होती है। चूंकि ये बाज़ार बुनियादी ज़रूरतों की पूर्ति के लिए होते हैं, इसलिए यहाँ भारी औद्योगिक मशीनरी जैसे विक्रेताओं की कोई उपस्थिति नहीं होती। ऐसे उत्पाद केवल बड़े शहरी व्यावसायिक केंद्रों में ही उपलब्ध होते हैं।

95. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
एडम स्मिथ ने आर्थिक सिद्धांतों पर आधारित अपनी महान कृति द वेल्थ ऑफ नेशन्स लिखी। ईमाइल दुर्खाइम ने समाज में श्रम विभाजन के सामाजिक पहलुओं का विश्लेषण द डिवीज़न ऑफ़ लेबर इन सोसायटी में किया। ब्रान्सला मेलिनोवस्की ने अर्बोनॉट्स ऑफ़ द वेस्टर्न पेसिफिक के माध्यम से जनजातीय विनिमय प्रणालियों का अध्ययन किया। मार्शल मॉस ने उपहारों के सामाजिक महत्व पर द गिफ्ट नामक महत्वपूर्ण पुस्तक की रचना की थी।

96. (B) जाति और नातेदारी आधारित सामाजिक संबंधों द्वारा
नाकरट्टार समुदाय की व्यापारिक व्यवस्था में विश्वास किसी कानूनी दस्तावेज़ से नहीं, बल्कि उनके मजबूत सामाजिक ताने-बाने से सुनिश्चित होता था। चूंकि व्यापार उनके अपनी ही जाति और नातेदारी समूहों के भीतर होता था, इसलिए किसी भी प्रकार की धोखाधड़ी का अर्थ सामाजिक बहिष्कार और प्रतिष्ठा की हानि था। इस सामाजिक दबाव और आपसी संबंधों की गहराई ने एक ऐसा विश्वासपूर्ण वातावरण बनाया जिसने उनके बैंकिंग साम्राज्य को सुरक्षा और स्थिरता प्रदान की।

97. (B) उपनिवेशवाद द्वारा प्रदान किए गए नए सुअवसर
उपनिवेशवाद ने भारतीय समाज में नए प्रशासनिक और व्यापारिक ढांचे का निर्माण किया, जिसने कुछ विशेष समुदायों के लिए सफलता के नए द्वार खोले। मारवाड़ी जैसे समुदायों ने कलकत्ता और बॉम्बे जैसे उभरते औपनिवेशिक शहरों में अवसरों को पहचाना और वहां बस गए। उन्होंने नई व्यापारिक परिस्थितियों और ब्रिटिश शासन की ज़रूरतों के साथ तालमेल बिठाकर अपनी आर्थिक शक्ति को सुदृढ़ किया, जिससे वे आधुनिक भारत के प्रमुख व्यापारिक समुदायों के रूप में उभरे।

98. (A) केवल 1 और 4 सही हैं।
मार्क्सवादी सिद्धांत के अनुसार, प्रत्येक आर्थिक उत्पादन प्रणाली एक विशिष्ट वर्ग संरचना को जन्म देती है, जिसमें प्रभुत्वशाली और अधीनस्थ वर्ग होते हैं। पूँजीवाद में उत्पादन के साधनों पर पूरी तरह से पूँजीपति वर्ग का स्वामित्व होता है। श्रमिक को अपनी श्रम शक्ति बाज़ार में एक पण्य के रूप में बेचनी पड़ती है। अतः पूँजीवाद केवल एक वर्ग की व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह दो मुख्य विरोधी वर्गों के अंतर्संबंधों से संचालित होती है।

99. (C) पूँजी, वस्तु, लोग, संस्कृति और छवियों का संचलन
भूमंडलीकरण केवल आर्थिक एकीकरण नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक वैश्विक प्रवाह है। इसके तहत केवल पैसे और माल का ही आदान-प्रदान नहीं होता, बल्कि लोग, विचार, सांस्कृतिक मूल्य और डिजिटल छवियां भी सीमाओं के पार तेजी से संचरित होती हैं। यह प्रक्रिया पूरी दुनिया को एक 'वैश्विक गाँव' में बदल देती है, जहाँ किसी एक स्थान की संस्कृति या घटना का प्रभाव पूरी दुनिया के सामाजिक जीवन पर तत्काल पड़ता है।

100. (D) रंग, चहल-पहल और धार्मिक-सांस्कृतिक मिश्रण पर
पुष्कर मेले के वर्णनों में इसकी जीवंतता और विविधता को केंद्र में रखा जाता है। यह मेला केवल व्यापार का स्थल नहीं है, बल्कि यह राजस्थानी संस्कृति के चटख रंगों, लोगों के उत्साह और धार्मिक श्रद्धा का एक अनूठा संगम है। यहाँ होने वाली चहल-पहल, ऊँटों की दौड़ और पवित्र स्नान इसे एक ऐसा उत्सव बनाते हैं जहाँ आर्थिक गतिविधियाँ सांस्कृतिक उल्लास और धार्मिक अनुष्ठानों के साथ सहज रूप से घुल-मिल जाती हैं।

101. (C) विदेशी प्रतिस्पर्धा के कारण छोटे उत्पादकों का नुकसान
उदारीकरण का एक गंभीर नकारात्मक पक्ष यह है कि इससे भारतीय बाज़ार में विशाल बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रवेश सुलभ हो गया है। इन कंपनियों की असीमित वित्तीय शक्ति और उन्नत तकनीक के सामने स्थानीय छोटे उत्पादक और कारीगर टिक नहीं पाते। इससे कई घरेलू कुटीर उद्योग बंद हो रहे हैं, जिससे न केवल पारंपरिक आजीविका का संकट पैदा हुआ है, बल्कि स्थानीय आर्थिक आत्मनिर्भरता भी धीरे-धीरे कमज़ोर होती जा रही है।

102. (B) आर्थिक, सांकेतिक और सांस्कृतिक सभी पहलू
समाजशास्त्रीय दृष्टि से विनिमय की प्रक्रिया बहुआयामी होती है। इसमें केवल वस्तुओं का आर्थिक मूल्य ही महत्वपूर्ण नहीं होता, बल्कि विनिमय के माध्यम से प्रतीकात्मक संदेश और सांस्कृतिक मूल्य भी साझा किए जाते हैं। उपहारों का लेन-देन या विशिष्ट बाज़ारों में खरीदारी के तरीके सामाजिक रिश्तों को पुष्ट करते हैं और सामुदायिक पहचान को व्यक्त करते हैं। अतः विनिमय आर्थिक लाभ के साथ-साथ सामाजिक संबंधों के निर्माण और प्रदर्शन का भी माध्यम है।

103. (D) औपनिवेशिक नियंत्रण और बड़ी अर्थव्यवस्थाओं से जुड़ाव
जनजातीय बाज़ारों में आया मौलिक परिवर्तन ब्रिटिश औपनिवेशिक नीतियों का परिणाम था। सड़कों के विस्तार और प्रशासनिक नियंत्रण ने इन स्थानीय बाज़ारों को वैश्विक पूँजीवादी व्यवस्था के अधीन कर दिया। इसके कारण आदिवासियों की पारंपरिक वस्तु-विनमय प्रणाली कमज़ोर हुई और वे मुद्रा-आधारित शोषणकारी व्यापार चक्र में फँस गए। इस एकीकरण ने उनके हाटों के स्वरूप को केवल सामाजिक केंद्र से बदलकर बाहरी शोषण के प्रवेश द्वार में बदल दिया।

104. (A) नाकरट्टार समुदाय
पारंपरिक व्यापारिक समुदायों के सामाजिक संगठन को समझने के लिए समाजशास्त्रियों ने तमिलनाडु के नाकरट्टार समुदाय का अत्यंत विस्तृत अध्ययन किया है। यह समुदाय अपनी अनूठी जाति-आधारित बैंकिंग प्रणाली और दूर-दराज के देशों तक फैले अपने व्यापारिक जाल के कारण शोध का मुख्य विषय रहा है। उनके अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि कैसे सामाजिक रिश्ते और जातीय पहचान आर्थिक सफलता और वित्तीय स्थिरता को सुनिश्चित करने में सक्षम होते हैं।

105. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
व्यापार में विश्वास एक महत्वपूर्ण कारक है, और व्यापारी अक्सर अपने ही समुदाय या जाति के लोगों पर अधिक भरोसा करते हैं क्योंकि उनके बीच साझा सामाजिक और नैतिक बंधन होते हैं। इस विश्वास के कारण, व्यापारिक अवसर, पूँजी और ऋण अक्सर एक ही जाति के भीतर घूमते रहते हैं। इससे व्यापार के विशेष क्षेत्रों पर उस जाति का एकाधिकार स्थापित हो जाता है, क्योंकि बाहरी लोगों के लिए उस विश्वास आधारित नेटवर्क में प्रवेश करना कठिन होता है।

106. (C) मार्क्स के अनुसार पूँजीवाद एक शोषण रहित व्यवस्था है।
कार्ल मार्क्स ने पूँजीवाद की सबसे तीखी आलोचना उसके शोषणकारी स्वभाव के कारण ही की थी। उन्होंने तर्क दिया कि यह व्यवस्था मुनाफे के लिए श्रमिक की मेहनत की चोरी करती है और समाज में गहरी आर्थिक विषमता पैदा करती है। मार्क्स के लिए पूँजीवाद कभी भी शोषण रहित नहीं हो सकता, क्योंकि इसमें पूँजीपति और श्रमिक के बीच का बुनियादी रिश्ता ही शक्ति के असंतुलन और अन्याय पर टिका होता है।

107. (D) व्यक्तित्व और अंग्रेज़ी सिखाने वाली निजी कोचिंग
आधुनिक भारत में व्यक्तित्व विकास और अंग्रेज़ी बोलने के कौशल को सिखाने वाले निजी संस्थान शिक्षा के पण्यीकरण के प्रमुख उदाहरण हैं। ये संस्थान सामाजिक कौशल और आत्मविश्वास जैसी अमूर्त मानवीय विशेषताओं को एक 'उत्पाद' के रूप में पेश करते हैं और इसके लिए भारी शुल्क लेते हैं। यह दर्शाता है कि अब शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन नहीं, बल्कि बाज़ार की माँग के अनुसार खुद को एक बेहतर 'पण्य' के रूप में तैयार करना भी हो गया है।

108. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
साप्ताहिक आदिवासी हाट आवधिक बाज़ार का सटीक उदाहरण है जो अंतराल पर आयोजित होता है। नाकरट्टार एक पारंपरिक व्यापारिक समुदाय हैं जो अपनी बैंकिंग दक्षता के लिए जाने जाते हैं। बोतल बंद पानी पण्य का उदाहरण है क्योंकि इसे बाज़ार में व्यावसायिक लाभ के लिए बेचा जा रहा है। ब्रांडेड कार प्रतिष्ठा का प्रतीक है, जिसे लोग समाज में अपनी प्रस्थिति और हैसियत दिखाने के लिए खरीदते और प्रदर्शित करते हैं।

109. (C) वैश्विक स्तर पर बाज़ारों का विस्तार और एकीकरण
भूमंडलीकरण की सबसे प्रमुख विशेषता दुनिया भर के राष्ट्रीय बाज़ारों को एक एकल वैश्विक बाज़ार में एकीकृत करना है। इसके तहत व्यापारिक बाधाएं कम की जाती हैं और सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से दूर-दराज के बाज़ारों को आपस में जोड़ा जाता है। इस एकीकरण के कारण, एक देश में उत्पादित वस्तुएं और सेवाएँ दुनिया के किसी भी कोने में आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं, जिससे वैश्विक आर्थिक निर्भरता और प्रतिस्पर्धा बढ़ती है।

110. (D) किसानों हेतु खाद और डीजल जैसे कृषि इनपुट महंगे हुए
उदारीकरण के दौर में सरकार ने बजटीय घाटे को कम करने के लिए कृषि सब्सिडी में भारी कटौती की। इससे किसानों को मिलने वाली खाद, बीज, कीटनाशक और सिंचाई के लिए आवश्यक बिजली व डीजल की कीमतें बढ़ गईं। इनपुट लागत में हुई इस वृद्धि ने विशेषकर छोटे और सीमांत किसानों की लाभप्रदता को कम कर दिया। सरकारी संरक्षण के अभाव में किसानों को सीधे बाज़ार की अनिश्चितताओं और वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा।

111. (D) (A) और (C) दोनों।
समाजशास्त्र बाज़ार को सामाजिक संस्था और अर्थशास्त्र इसे आर्थिक इकाई मानता है। एडम स्मिथ ने 'अदृश्य हाथ' की अवधारणा दी, जबकि मैक्स वेबर ने उपभोग को सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़ा। ये सभी तथ्य सही हैं। हालांकि, कार्ल मार्क्स ने बाज़ार का समर्थन नहीं किया था, बल्कि उन्होंने पूँजीवादी बाज़ार को शोषणकारी माना था। अतः चौथा कथन गलत है, जबकि शेष सभी कथन बाज़ार के विभिन्न शैक्षणिक दृष्टिकोणों को सही ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

112. (B) बड़ी संख्या में लोग, वस्तुएँ और गतिविधियाँ मौजूद हैं
धोराई के साप्ताहिक बाज़ार के संदर्भ में 'समृद्धि के साथ अस्त-व्यस्तता' का अर्थ बाज़ार की अत्यधिक जीवंतता और भीड़भाड़ से है। यहाँ बड़ी संख्या में दूर-दराज से आए लोग, विभिन्न प्रकार की स्थानीय और बाहरी वस्तुएं तथा विविध सामाजिक-आर्थिक गतिविधियाँ एक साथ घटित होती हैं। यह दृश्य बाज़ार की ऊर्जा और उसकी सामुदायिक सघनता को दर्शाता है, जहाँ औपचारिक व्यवस्था के बजाय एक सहज सामाजिक कोलाहल की प्रधानता होती है।

113. (B) व्यावसायिक रुपये-पैसे आधारित अर्थव्यवस्था को
जजमानी व्यवस्था एक ऐसी प्रणाली थी जहाँ सामाजिक संबंधों और पारंपरिक कर्तव्यों के आधार पर वस्तुओं का विनिमय होता था, जिसमें मुद्रा की भूमिका नगण्य थी। इसके विपरीत, उपनिवेशवाद ने भारत में एक व्यावसायिक और मौद्रीकृत अर्थव्यवस्था को तेजी से बढ़ावा दिया। उसने नकद कर प्रणाली और बाज़ारी व्यापार को अनिवार्य बना दिया, जिससे पारंपरिक निर्भरता की प्रणालियाँ ध्वस्त हो गईं और भारतीय समाज पूरी तरह से रुपये-पैसे आधारित वैश्विक बाज़ार में समाहित हो गया।

114. (B) 3, 2, 1
ऐतिहासिक कालक्रम के अनुसार, नाकरट्टारों की जाति-आधारित बैंकिंग प्रणाली एक अत्यंत प्राचीन और स्वदेशी व्यवस्था है। औपनिवेशिक शासन के दौरान मारवाड़ी समुदाय ने कलकत्ता जैसे केंद्रों में अपनी व्यापारिक पैठ बनाकर सफलता प्राप्त की। अंततः, बीसवीं सदी के अंतिम दशकों में भारत में उदारीकरण और भूमंडलीकरण की आधुनिक नीतियां लागू की गईं। यह क्रम भारतीय व्यापारिक इतिहास के पारंपरिक, औपनिवेशिक और आधुनिक चरणों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करता है।

115. (C) व्यक्तित्व सँवारने वाली निजी शिक्षण संस्थाओं द्वारा
सामाजिक कौशल और शिष्टाचार सिखाने की पारंपरिक जिम्मेदारी अब परिवार के बजाय बाज़ार के हाथ में चली गई है। आज व्यक्तित्व विकास के लिए विशेष रूप से समर्पित निजी कोचिंग और शिक्षण संस्थाएं फल-फूल रही हैं, जो एक शुल्क लेकर लोगों को समाज में रहने और बोलने के तरीके सिखाती हैं। यह परिवर्तन पण्यीकरण का हिस्सा है, जहाँ व्यक्तिगत गुण और सामाजिक व्यवहार अब एक व्यावसायिक सेवा के रूप में बाज़ार में उपलब्ध हैं।

116. (D) मैक्स वेबर
समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने सर्वप्रथम यह विचार प्रस्तुत किया कि लोगों की उपभोग की आदतें उनकी सामाजिक प्रस्थिति और जीवनशैली का प्रतिबिंब होती हैं। उन्होंने स्पष्ट किया कि बाज़ार में व्यक्ति क्या खरीदता है और कैसे रहता है, यह केवल आर्थिक आवश्यकता नहीं बल्कि समाज में उसकी हैसियत प्रदर्शित करने का एक तरीका है। वेबर की यह समझ आज भी उपभोक्ता व्यवहार और विज्ञापनों के विश्लेषण में अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रासंगिक मानी जाती है।

117. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में उदारीकरण की नीतियों ने घरेलू बाज़ार की बाधाओं को हटाकर उसे वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए खोल दिया। इसके प्रत्यक्ष परिणाम के रूप में, आज भारतीय बाज़ार में बड़ी संख्या में ऐसी विदेशी वस्तुएं और ब्रांड उपलब्ध हैं जो 1991 से पहले यहाँ मिलना लगभग असंभव था। यह बदलाव दर्शाता है कि कैसे नीतिगत परिवर्तनों ने उपभोक्ताओं की पसंद का विस्तार किया है और भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक उपभोग संस्कृति के साथ जोड़ दिया है।

118. (B) ग्रामीण हाट से लेकर अप्रत्यक्ष स्टॉक एक्सचेंज तक सभी
आधुनिक भारत में आर्थिक विविधता के कारण बाज़ारों के कई स्तर एक साथ मौजूद हैं। यहाँ एक ओर ग्रामीण क्षेत्रों में लगने वाले पारंपरिक साप्ताहिक हाट हैं जहाँ आमने-सामने का विनिमय होता है, तो दूसरी ओर मुंबई जैसे शहरों में अत्याधुनिक डिजिटल स्टॉक एक्सचेंज हैं जहाँ पूरी तरह अमूर्त और वैश्विक व्यापार होता है। यह विविधता भारतीय समाज की उस जटिलता को प्रकट करती है जहाँ परंपरा और आधुनिकता एक साथ सह-अस्तित्व में हैं।

119. (D) क्योंकि वे एक निश्चित अंतराल पर आयोजित होते हैं
साप्ताहिक आदिवासी बाज़ारों को 'आवधिक बाज़ार' इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे रोज़ाना नहीं लगते, बल्कि हफ़्ते के एक तय दिन या एक निश्चित अंतराल पर आयोजित किए जाते हैं। यह आवधिकता ग्रामीण इलाकों के लिए सुविधाजनक होती है क्योंकि इससे दूर-दूर बसे लोग एक निश्चित दिन एकत्र हो सकते हैं। यह प्रणाली संसाधनों के कुशल उपयोग और सामाजिक मेल-मिलाप के लिए एक सुव्यवस्थित ढाँचा प्रदान करती है, जो ग्रामीण जीवन की लय के अनुकूल है।

120. (A) बाज़ार में विनिमय होने वाली सभी वस्तुएँ स्थानीय रूप से निर्मित होती हैं।
बस्तर के साप्ताहिक बाज़ारों के संबंध में यह मानना गलत है कि वहाँ बिकने वाली सभी वस्तुएं स्थानीय रूप से निर्मित होती हैं। यद्यपि आदिवासी वहां स्थानीय वन उत्पाद और सब्जियां लाते हैं, लेकिन बाज़ार का एक बड़ा हिस्सा शहरी क्षेत्रों और कारखानों में बनी वस्तुओं जैसे बर्तन, प्लास्टिक का सामान, सिंथेटिक कपड़े और गहनों से भरा होता है। यह दर्शाता है कि आदिवासी हाट भी अब व्यापक राष्ट्रीय और वैश्विक उत्पादन श्रृंखला का हिस्सा बन चुके हैं।

121. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
हाट शब्द का तात्पर्य उन आवधिक बाज़ारों से है जो निश्चित समय पर आयोजित होते हैं। हुंडी पूर्व-औपनिवेशिक काल का एक प्रसिद्ध विनिमय बिल है जिसने व्यापार को सुगम बनाया। BPO उद्योग बाह्यस्रोतों के प्रयोग के माध्यम से वैश्विक सेवाएँ प्रदान करता है। वैश्य हिंदू समाज का वह वर्ण है जो पारंपरिक रूप से व्यापारिक गतिविधियों के लिए उत्तरदायी है। यह मिलान भारतीय आर्थिक और सामाजिक शब्दावली के विभिन्न आयामों को स्पष्ट करता है।

122. (A) उनके जाति आधारित गहन सामाजिक तंत्रों ने
मारवाड़ी समुदाय की असाधारण व्यावसायिक सफलता का मुख्य स्तंभ उनके जाति और नातेदारी पर आधारित सुदृढ़ सामाजिक नेटवर्क हैं। इन नेटवर्कों ने उन्हें समुदाय के भीतर आपसी विश्वास, आसान ऋण की उपलब्धता और व्यापारिक सूचनाओं के त्वरित आदान-प्रदान में मदद की। इस सामाजिक पूँजी ने उन्हें उन क्षेत्रों और शहरों में भी पैर ज़माने की शक्ति दी जहाँ वे बिल्कुल नए थे। यह उदाहरण दिखाता है कि सामाजिक संबंध आर्थिक विकास को कैसे गति दे सकते हैं।

123. (D) अंगों का पण्यीकरण
गरीबी के कारण लोगों द्वारा अपने शरीर के अंगों, जैसे किडनी, को अमीर खरीदारों को बेचना पण्यीकरण की प्रक्रिया का सबसे क्रूर और चरम उदाहरण है। यह दर्शाता है कि कैसे बाज़ार की तर्कसंगतता मानवीय शरीर और उसके अंगों को भी क्रय-विक्रय योग्य वस्तु बना सकती है। यह मुद्दा केवल आर्थिक लेनदेन का नहीं है, बल्कि यह गंभीर नैतिक, मानवीय और सामाजिक न्याय से जुड़े प्रश्नों को जन्म देता है, जो बाज़ार के अनियंत्रित प्रसार का परिणाम है।

124. (B) पर्यटन बाज़ार हेतु आकर्षण का केंद्र बनाकर
पुष्कर मेले में धार्मिक और सांस्कृतिक तत्वों का बाज़ारीकरण उन्हें पर्यटन के उत्पाद के रूप में पेश करके किया जाता है। यहाँ की स्थानीय परंपराओं, पशु व्यापार और धार्मिक अनुष्ठानों को वैश्विक दर्शकों के लिए आकर्षक 'पैकेज' की तरह विज्ञापित किया जाता है। इससे मेला केवल स्थानीय भक्तों के लिए नहीं, बल्कि पूरी दुनिया के पर्यटकों के लिए एक उपभोग योग्य अनुभव बन जाता है। यह प्रक्रिया पारंपरिक संस्कृति को व्यावसायिक लाभ के माध्यम में बदल देती है।

अध्याय 05
सामाजिक विषमता एवं बहिष्कार के स्वरूप

1. भौतिक संपत्ति एवं आय को किस प्रकार की पूँजी के रूप में वर्गीकृत किया जाता है?
(A) सांस्कृतिक पूँजी
(B) आर्थिक पूँजी
(C) सामाजिक पूँजी
(D) प्रतीकात्मक पूँजी

2. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सामाजिक विषमता के संदर्भ में असत्य है?
(A) यह केवल व्यक्तिगत प्राकृतिक भिन्नता का परिणाम है।
(B) यह उस समाज द्वारा उत्पन्न की जाती है जिसमें व्यक्ति रहते हैं।
(C) यह सामाजिक संसाधनों तक असमान पहुँच की एक पद्धति है।
(D) यह व्यवस्थित एवं संरचनात्मक स्वरूप की प्रक्रिया होती है।

3. सूची-I का सूची-II से मिलान कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. आर्थिक पूँजी
Q. सांस्कृतिक पूँजी
R. सामाजिक पूँजी
S. सामाजिक स्तरीकरण
सूची II: (विवरण)
1. प्रतिष्ठा और शैक्षणिक योग्यताएँ
2. समाज में लोगों का अधिक्रमित वर्गीकरण
3. धन और संपत्ति
4. सामाजिक संगतियों एवं संपर्कों का जाल
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-2, R-4, S-1

4. 'पूर्वाग्रह' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?
(A) पश्च-निर्णय
(B) तार्किक निर्णय
(C) सामूहिक निर्णय
(D) पूर्वनिर्णय

5. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन 1: पूर्वाग्रह सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों हो सकता है।
कथन 2: रुढ़िबद्ध धारणाएँ केवल नकारात्मक समूहों के बारे में ही होती हैं।
(A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं।
(C) केवल कथन 1 सही है।
(D) केवल कथन 2 सही है।

6. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सामाजिक विषमता व्यक्ति से नहीं बल्कि समूह से संबद्ध है।
2. सामाजिक विषमता केवल आर्थिक होती है।
3. सामाजिक विषमता व्यवस्थित एवं संरचनात्मक है।
4. सामाजिक विषमता का व्यक्तिगत योग्यता से कोई संबंध नहीं है।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) 1 और 3
(B) 2 और 4
(C) 1, 2 और 3
(D) केवल 1

7. "यदि परिश्रम इतनी ही अच्छी चीज़ होती तो अमीर लोग हमेशा उसे अपने लिए बचा कर रखते!" यह कहावत सामाजिक विषमता के किस पहलू पर प्रकाश डालती है?
(A) धनी वर्गों की उदारता एवं दानशीलता का प्रदर्शन।
(B) निर्धन वर्गों की व्यक्तिगत योग्यता में निहित कमी।
(C) कठोर परिश्रम के प्रति व्याप्त सामाजिक सम्मान।
(D) कठिन परिश्रम और प्राप्त पुरस्कार की विसंगति।

8. रुढ़िबद्ध धारणाएँ (Stereotypes) सामान्यतः किस पर आधारित होती हैं?
(A) अपरिवर्तनीय, कठोर और सुनी-सुनाई बातों पर
(B) वैज्ञानिक तथ्यों और विस्तृत शोध पर
(C) व्यक्तिगत अनुभव और तार्किक विश्लेषण पर
(D) समाज के सभी सदस्यों की आम सहमति पर

9. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सामाजिक स्तरीकरण पीढ़ी-दर-पीढ़ी बना रहता है।
कारण (R): एक व्यक्ति की सामाजिक स्थिति काफी हद तक प्रदत्त होती है और परिवार के माध्यम से उत्तराधिकार में मिलती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

135. (D) उपभोग से लोग जीवनशैली और प्रस्थिति का प्रदर्शन करते हैं
मैक्स वेबर ने स्पष्ट किया कि उपभोग की प्रक्रिया केवल भौतिक ज़रूरतों को पूरा करने के लिए नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक संदेश है। लोग अपनी वस्तुओं और उपभोग के तरीकों के माध्यम से यह प्रदर्शित करते हैं कि वे समाज के किस वर्ग या जीवनशैली का हिस्सा हैं। उपभोग व्यक्ति की प्रस्थिति का प्रतीक बन जाता है, जिससे वह दूसरों से अपनी भिन्नता और श्रेष्ठता स्थापित करता है। वेबर की यह समझ बाज़ार और समाज के अटूट संबंध को स्पष्ट करती है।

136. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
धोराई गाँव का हाट आवधिक बाज़ार का जीवंत केंद्र है। नाकरट्टार अपनी विशिष्ट जाति-आधारित बैंकिंग और वित्त प्रणाली के लिए जाने जाते हैं। मारवाड़ी समुदाय का उदय औपनिवेशिक काल की नई आर्थिक परिस्थितियों और अवसरों के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। पुष्कर मेले का आधुनिक रूपांतरण भूमंडलीकरण और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटन के व्यापक प्रभाव को दर्शाता है। यह सुमेलन भारत के विभिन्न आर्थिक संस्थानों और उनके समय-काल के जटिल अंतर्संबंधों को पूरी तरह स्पष्ट करता है।

137. (C) कुशल निजी संस्थाओं द्वारा ही आर्थिक संवृद्धि संभव है
उदारीकरण के पैरोकारों का यह दृढ़ विश्वास है कि निजी क्षेत्र सरकारी क्षेत्र की तुलना में अधिक नवाचारी और कुशल होता है। उनका मानना है कि जब बाज़ार को सरकारी बाधाओं से मुक्त कर दिया जाता है, तो स्वस्थ प्रतिस्पर्धा पैदा होती है, जो उत्पादन की गुणवत्ता सुधारती है और लागत कम करती है। इसी दक्षता के कारण निवेश बढ़ता है और अंततः राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में तेज और स्थायी संवृद्धि का मार्ग प्रशस्त होता है, जो समाज के सर्वांगीण विकास हेतु आवश्यक है।

138. (B) 2, 1, 3
आर्थिक विचारों का कालक्रम देखें तो सबसे पहले एडम स्मिथ ने 1776 में 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' के माध्यम से मुक्त बाज़ार के सिद्धांत दिए। इसके दशकों बाद, उन्नीसवीं सदी में कार्ल मार्क्स ने पूँजीवाद का व्यापक और आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया। अंत में, बीसवीं सदी के अंत में भारत में आधुनिक उदारीकरण और भूमंडलीकरण की नीतियों को व्यावहारिक रूप से लागू किया गया। यह क्रम बाज़ार के प्रति बदलते वैश्विक और राष्ट्रीय दृष्टिकोण को सटीक रूप से दर्शाता है।

139. (D) बाज़ार की स्व-नियामक प्रकृति और सामूहिक भलाई
एडम स्मिथ द्वारा प्रतिपादित 'अदृश्य हाथ' की अवधारणा का अर्थ है कि बाज़ार बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के स्वयं को विनियमित करने की क्षमता रखता है। जब बाज़ार में प्रत्येक व्यक्ति अपने तर्कसंगत स्व-हित के लिए काम करता है, तो एक अदृश्य शक्ति बाज़ार में संतुलन और समाज की सामूहिक भलाई सुनिश्चित करती है। यह सिद्धांत मुक्त बाज़ार अर्थव्यवस्था का आधार है, जो मानता है कि माँग और आपूर्ति की स्वतंत्र शक्तियाँ स्वतः ही संसाधनों का सर्वोत्तम उपयोग सुनिश्चित करती हैं।

140. (A) केवल 1, 2 और 4 सही हैं।
धोराई का साप्ताहिक बाज़ार शुक्रवार के दिन लगता है और यह एक अत्यंत व्यस्त सामाजिक केंद्र है। यहाँ आदिवासी अपने वन और कृषि उत्पाद बेचने लाते हैं, जबकि हिंदू व्यापारी तरकारी और शिल्पकारी की वस्तुएं बेचते हैं। हालांकि, यह कहना गलत है कि खरीददार और विक्रेता दोनों मुख्यतः आदिवासी हैं, क्योंकि विक्रेता अक्सर गैर-आदिवासी होते हैं। साथ ही, बाज़ार में अनेक सामाजिक और धार्मिक गतिविधियाँ भी नियमित रुप से संपन्न होती हैं, जो इसे जीवंत बनाती हैं।

141. (C) बाज़ारों का व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक ढाँचा
समाजशास्त्रीय अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह उजागर करना है कि बाज़ार कोई स्वतंत्र आर्थिक मशीन नहीं हैं, बल्कि वे समाज के सांस्कृतिक और सामाजिक ढांचे में गहराई से जकड़े हुए हैं। यह अध्ययन बाज़ार के उन अनकहे नियमों, जातिगत एकाधिकारों और सामाजिक नेटवर्कों की पड़ताल करता है जो विनिमय की प्रक्रिया को वास्तव में नियंत्रित करते हैं। यह दृष्टिकोण हमें यह समझने में मदद करता है कि आर्थिक निर्णय वास्तव में सामाजिक और सांस्कृतिक कारकों से कैसे प्रभावित होते हैं।

142. (D) नकारात्मक प्रभाव पड़ा और वे दरिद्र हो गए
औपनिवेशिक शासन द्वारा जनजातीय श्रम का बाज़ार विकसित करने का उद्देश्य आदिवासियों का कल्याण नहीं, बल्कि ब्रिटिश उद्योगों और बागानों के लिए सस्ते श्रम की आपूर्ति करना था। इस प्रक्रिया ने आदिवासियों को उनकी पैतृक भूमि और आत्मनिर्भर आजीविका से विस्थापित कर दिया। वे साहूकारों के कर्ज और कम मजदूरी के दुष्चक्र में फँस गए, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति दयनीय हो गई। इस बाज़ारीकरण ने उन्हें उनके ही संसाधनों से वंचित कर अत्यंत दरिद्र बना दिया।

143. (A) यह उपनिवेशिकता के समय से ही भारत में विद्यमान था।
भारत में रुपये-पैसे और एक सुव्यवस्थित मौद्रिक प्रणाली का इतिहास अत्यंत प्राचीन है। उपनिवेशवाद से बहुत पहले ही भारत में सिक्कों और हुंडी जैसे वित्तीय साधनों का व्यापक उपयोग होता था। भारत के पारंपरिक बाज़ारों और लंबी दूरी के व्यापार में नकद लेनदेन और क्रेडिट की व्यवस्था पूरी तरह से परिपक्व थी। अतः यह कहना ऐतिहासिक रूप से सही है कि भारतीय अर्थव्यवस्था में रुपये-पैसे का प्रयोग औपनिवेशिक शासन के आगमन से सदियों पहले से ही सफलतापूर्वक विद्यमान था।

144. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
स्वतंत्रता के बाद मारवाड़ी परिवारों ने अपनी परंपरागत व्यापारिक जड़ों से आगे बढ़कर आधुनिक विनिर्माण और भारी उद्योगों में अपनी पहचान बनाई, जो उनकी व्यावसायिक लचीलेपन को दर्शाता है। आज भारत के औद्योगिक परिदृश्य में उनकी महत्वपूर्ण भागीदारी इसी ऐतिहासिक अनुकूलन का परिणाम है। हालांकि, वर्तमान में उनकी भागीदारी का होना एक तथ्य है, लेकिन यह अकेले उस ऐतिहासिक प्रक्रिया या कारणों

की व्याख्या नहीं करता जिसके कारण उन्होंने उद्योगों में अपना पूर्ण रूपांतरण सफलतापूर्वक किया था।

145. (B) प्रतीकात्मक अर्थ जो सामाजिक भिन्नता को दर्शाता है
पूँजीवादी समाज में उपभोग केवल भौतिक आवश्यकता नहीं रह गया है, बल्कि यह एक प्रतीकात्मक क्रिया है। लोग क्या और कैसे उपभोग करते हैं, इससे वे समाज में अपनी विशिष्ट पहचान और दूसरों से अपनी आर्थिक व सामाजिक भिन्नता को प्रदर्शित करते हैं। महँगी वस्तुओं का उपभोग एक 'प्रस्थिति' की घोषणा बन जाता है, जो वर्ग भेद को स्पष्ट करता है। पूँजीवाद इस उपभोग संस्कृति को बढ़ावा देता है क्योंकि यह निरंतर माँग पैदा कर पूँजी के संचय को गति प्रदान करती है।

146. (A) ऑटोमोबाइल्स, इलेक्ट्रॉनिक्स और तेलीय अनाज उद्योग
उदारीकरण के बाद ऑटोमोबाइल्स और इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे उद्योगों को वैश्विक बहुराष्ट्रीय कंपनियों से कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ रहा है। इसी प्रकार, आयात शुल्क में कमी के कारण भारत का तेलीय अनाज उत्पादन भी प्रभावित हुआ है क्योंकि विदेशों से सस्ते खाद्य तेलों का आयात बढ़ा है। इन क्षेत्रों में काम करने वाले भारतीय उत्पादकों के लिए अंतरराष्ट्रीय मानकों और कीमतों के साथ तालमेल बिठाना एक बड़ी चुनौती बन गई है, जिससे उनकी स्थिरता पर गहरा असर पड़ा है।

147. (C) यह सामाजिक संदर्भ से सदैव पूर्णतः स्वतंत्र और अलग होता है।
समाजशास्त्रीय रूप से बाज़ार को कभी भी सामाजिक संदर्भ से स्वतंत्र नहीं माना जा सकता। बाज़ार का हर पहलू, चाहे वह विनिमय का तरीका हो या व्यापारियों के बीच का विश्वास, सामाजिक मानदंडों और सांस्कृतिक मूल्यों से प्रभावित होता है। बाज़ार जाति, वर्ग और नातेदारी जैसी अन्य सामाजिक संस्थाओं के साथ गहराई से अंतर्निहित होता है। अतः यह दावा करना गलत है कि बाज़ार समाज से अलग कोई स्वायत्त इकाई है, क्योंकि वह समाज का ही एक गतिशील अंग है।

148. (D) व्यापक सामाजिक और सामुदायिक कारण
आदिवासियों के लिए साप्ताहिक हाट जाने का मुख्य प्रेरणा स्रोत केवल व्यापार नहीं, बल्कि वे व्यापक सामाजिक और सामुदायिक कारण हैं जो उनके जीवन को परिभाषित करते हैं। यह हाट उनके लिए एक ऐसा मंच है जहाँ वे अपनी संस्कृति का उत्सव मनाते हैं, सामुदायिक संबंधों को ताजा करते हैं और बाहरी दुनिया के साथ अपनी शर्तों पर अंतःक्रिया करते हैं। यह सामाजिक एकजुटता और सामुदायिक पहचान को बनाए रखने का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और अपरिहार्य सांस्कृतिक केंद्र है।

149. (C) व्यापारिक प्रभुत्व अक्सर जाति एवं नातेदारी तंत्रों से तय होता है
भारत में व्यापार और जाति के बीच का संबंध ऐतिहासिक रूप से बहुत गहरा है। अधिकांश व्यापारिक गतिविधियों पर कुछ विशेष जातियों का वर्चस्व रहा है क्योंकि व्यापार हेतु आवश्यक विश्वास, पूँजी और व्यावसायिक समझ इन्हीं नातेदारी तंत्रों के भीतर सुरक्षित रहती है। जाति आधारित ये नेटवर्क नए व्यापारियों के लिए बाधा बन सकते हैं, लेकिन वे उस समुदाय के सदस्यों के लिए सुरक्षा और समर्थन का एक मजबूत ढाँचा भी प्रदान करते हैं, जो उनके व्यापारिक प्रभुत्व का आधार है।

150. (B) बाज़ार आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक प्रक्रियाओं से बने हैं
समाजशास्त्रीय निष्कर्ष यह है कि बाज़ार कोई सरल आर्थिक तंत्र नहीं है, बल्कि यह आर्थिक विनिमय, सामाजिक शक्ति और सांस्कृतिक मूल्यों का एक जटिल मिश्रण है। बाज़ार के भीतर होने वाली हर गतिविधि समाज की व्यापक संरचनाओं को प्रतिबिंबित करती है। उदारीकरण और भूमंडलीकरण जैसी आधुनिक प्रक्रियाओं ने भी इन बाज़ारों के केवल स्वरूप को बदला है, लेकिन उनके सामाजिक और सांस्कृतिक आधार आज भी उतने ही महत्वपूर्ण और प्रभावी बने हुए हैं।

151. (B) व्यक्तिगत स्वार्थ अनजाने में सामूहिक सामाजिक कल्याण को बढ़ावा देता है।
एडम स्मिथ का 'अदृश्य हाथ' सिद्धांत यह प्रतिपादित करता है कि जब व्यक्ति अपनी निजी लाभ की इच्छा से प्रेरित होकर आर्थिक निर्णय लेता है, तो बाज़ार की शक्तियाँ स्वतः ही समाज के लिए सकारात्मक परिणाम उत्पन्न करती हैं। यह अवधारणा बाज़ार को एक स्वयं-संचालित इकाई मानती है जहाँ व्यक्तिगत स्वार्थ अंततः सामाजिक हित और प्रगति में बदल जाता है।

152. (A) क्योंकि यह बाजार को सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों से अलग मानता है।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण स्मिथ के मॉडल को चुनौती देता है क्योंकि स्मिथ बाज़ार को एक स्वतंत्र आर्थिक इकाई मानते हैं। इसके विपरीत, समाजशास्त्री तर्क देते हैं कि आर्थिक क्रियाएँ सामाजिक मूल्यों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि से गहरे स्तर पर जुड़ी होती हैं। यह आलोचना स्पष्ट करती है कि बाज़ार के व्यवहार को विशुद्ध आर्थिक नियमों के आधार पर पूरी तरह नहीं समझा जा सकता है।

153. (C) आर्थिक गतिविधियाँ सामाजिक संबंधों और संस्थाओं में रची-बसी होती हैं।
'अभिनिवेश' का अर्थ यह है कि आर्थिक व्यवहार समाज से अलग कोई पृथक क्षेत्र नहीं है। कार्ल पोलानी के अनुसार, बाज़ार के लेन-देन सामाजिक नेटवर्क, विश्वास और संस्थागत ढांचों के भीतर ही घटित होते हैं। यह विचार इस बात पर बल देता है कि समाज की संरचना और सांस्कृतिक मूल्य ही वास्तव में आर्थिक निर्णयों और बाज़ार की गतिविधियों को दिशा प्रदान करते हैं।

154. (D) विश्वास और सामाजिक नेटवर्क
बाज़ार के व्यवहार को प्रभावित करने वाले कारकों में केवल मांग और आपूर्ति ही शामिल नहीं होती है। समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य के अनुसार, विश्वास और सामाजिक नेटवर्क जैसे गैर-आर्थिक तत्व महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये तत्व व्यापारिक संबंधों को मजबूती देते हैं और जोखिम को कम करते हैं, जिससे बाज़ार में होने वाली आर्थिक क्रियाओं की दिशा और स्थिरता पर सीधा प्रभाव पड़ता है।

155. (C) एक जटिल सामाजिक क्षेत्र
समाजशास्त्र बाज़ार को केवल आर्थिक विनिमय का स्थान नहीं मानता, बल्कि इसे एक जटिल सामाजिक क्षेत्र के रूप में परिभाषित करता है। यहाँ आर्थिक गतिविधियाँ शक्ति संबंधों, सामाजिक प्रतिष्ठा और सामुदायिक पहचान से प्रभावित होती हैं। बाज़ार को सामाजिक रूप से देखने का तात्पर्य यह है कि इसके भीतर होने वाले सभी लेन-देन और निर्णय समाज की व्यापक संरचनात्मक व्यवस्था का हिस्सा होते हैं।

156. (B) स्थानीय उत्पादकों को उपज बेचने और आवश्यक वस्तुओं की खरीद का मंच देना।
आवधिक हाट ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं क्योंकि ये स्थानीय किसानों और कारीगरों को अपनी अतिरिक्त उपज बेचने हेतु स्थान प्रदान करते हैं। साथ ही, ये ग्रामीणों को शहर या अन्य क्षेत्रों से आई नमक और मसालों जैसी आवश्यक वस्तुओं को प्राप्त करने में मदद करते हैं। इस प्रकार, ये बाज़ार स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति और आर्थिक चक्र को गति देते हैं।

157. (D) ये सामाजिक मेलजोल, सूचना के आदान-प्रदान और सामुदायिक संबंधों को मजबूत करने के मंच के रूप में कार्य करते हैं।
साप्ताहिक बाज़ार केवल व्यापार के केंद्र नहीं हैं, बल्कि वे महत्वपूर्ण सामाजिक मिलन स्थल भी हैं। यहाँ लोग दूर-दराज के क्षेत्रों से आकर अपने रिश्तेदारों और मित्रों से मिलते हैं। यह मंच सामाजिक सूचनाओं के साझाकरण, सामुदायिक एकता के निर्माण और आपसी संबंधों को प्रगाढ़ करने का अवसर प्रदान करता है। इस प्रक्रिया में हाट एक जीवंत सामाजिक और सांस्कृतिक स्थान का रूप लेते हैं।

158. (A) हाटों में एक गहरा सामाजिक और सामुदायिक पहलू होता है, जबकि शहरी बाजार अधिक अवैयक्तिक होते हैं।
पारंपरिक हाट और आधुनिक शहरी बाज़ारों के बीच बुनियादी अंतर उनकी प्रकृति में निहित है। हाटों में व्यक्तिगत परिचय, सामाजिक संबंध और सामुदायिक भागीदारी को अत्यधिक महत्व दिया जाता है, जिससे वहाँ का वातावरण सजीव होता है। इसके विपरीत, शहरी बाज़ार मुख्य रूप से व्यावसायिक लाभ और अवैयक्तिक लेन-देहन पर केंद्रित होते हैं, जहाँ खरीदार और विक्रेता के बीच गहरा सामाजिक जुड़ाव प्रायः अनुपस्थित रहता है।

159. (C) विभिन्न गाँवों के लोगों द्वारा विवाह संबंधों पर चर्चा करना।
साप्ताहिक हाट का सामाजिक महत्व इस बात से स्पष्ट होता है कि यहाँ केवल वस्तुओं का क्रय-विक्रय नहीं होता, बल्कि लोग सामाजिक दायित्वों का निर्वहन भी करते हैं। विभिन्न गाँवों के परिवारों के बीच विवाह संबंधों की चर्चा करना और रिश्तों को अंतिम रूप देना हाट का एक प्रमुख कार्य है। यह गतिविधि दर्शाती है कि ग्रामीण समाज में बाज़ार एक सशक्त सामाजिक संस्था है।

160. (A) हाट के माध्यम से, ग्रामीण अर्थव्यवस्था बड़े बाजारों और क्षेत्रों के साथ आर्थिक रूप से एकीकृत होती है।
ग्रामीण हाट स्थानीय स्तर की आर्थिक गतिविधियों को एक बड़े क्षेत्रीय नेटवर्क के साथ जोड़ने का कार्य करते हैं। इसके माध्यम से गाँवों में उत्पादित वस्तुएं बाहरी बाज़ारों तक पहुँचती हैं और बाहर की वस्तुएं गाँवों तक आती हैं। यह प्रक्रिया ग्रामीण क्षेत्र के पृथक जीवन को समाप्त कर उसे व्यापक आर्थिक व्यवस्था का हिस्सा बनाती है, जिससे संसाधनों और वस्तुओं का प्रवाह सुगम होता है।

161. (D) वस्तुओं और सेवाओं को बाजारीय विनिमय के योग्य बनाने की प्रक्रिया।
पण्यीकरण एक ऐसी सामाजिक और आर्थिक प्रक्रिया है जिसमें उन चीजों को बाज़ार में बिकने वाली वस्तुओं में बदल दिया जाता है जो पहले व्यावसायिक नहीं थीं। इसमें मानवीय श्रम, सेवाएं और यहाँ तक कि अमूर्त विचारों को भी मूल्य प्रदान कर उन्हें क्रय-विक्रय के योग्य बनाया जाता है। यह पूंजीवादी व्यवस्था की एक मुख्य विशेषता है जो बाज़ार के दायरे को निरंतर विस्तृत करती रहती है।

162. (B) कैसे एक पूर्व में मुफ्त और साझा संसाधन को एक बाजारीय उत्पाद में बदल दिया जाता है।
बोतलबंद पानी का उदाहरण पण्यीकरण की गहराई को दर्शाता है, जहाँ पानी जैसा प्राकृतिक और साझा संसाधन अब एक व्यावसायिक वस्तु बन चुका है। जो वस्तु कभी प्रकृति से मुफ्त में प्राप्त होती थी, उसे अब पैकेजिंग और ब्रांडिंग के माध्यम से बेचा जा रहा है। यह परिवर्तन स्पष्ट करता है कि कैसे बाज़ार की ताकतें बुनियादी जीवन स्रोतों को लाभ के माध्यम में बदल देती हैं।

163. (C) यह वस्तुओं और संबंधों के सामाजिक-सांस्कृतिक मूल्य को कम कर सकता है और असमानता बढ़ा सकता है।
पण्यीकरण के आलोचकों का मानना है कि जब सब कुछ बिकाऊ हो जाता है, तो मानवीय संबंधों और सांस्कृतिक परंपराओं की गरिमा कम हो जाती है। वे केवल मौद्रिक मूल्य तक सीमित रह जाते हैं। इसके अतिरिक्त, इससे समाज में विभाजन बढ़ता है क्योंकि जो वर्ग भुगतान करने में असमर्थ हैं, वे उन बुनियादी सेवाओं और संसाधनों से वंचित रह जाते हैं जिनका अब व्यवसायीकरण हो चुका है।

164. (D) पर्यटन जैसी गैर-भौतिक चीजों को भी खरीद-बिक्री के लिए पैकेज किया जा सकता है।
'अनुभव अर्थव्यवस्था' यह स्पष्ट करती है कि अब केवल भौतिक वस्तुओं का ही नहीं, बल्कि मानवीय अनुभवों का भी व्यापार होने लगा है। साहसिक पर्यटन और सांस्कृतिक कार्यक्रमों को एक उत्पाद के रूप में मानकीकृत पैकेजों में बेचा जाता है। यह दर्शाता है कि बाज़ार अब व्यक्ति की अनुभूतियों और यादों तक विस्तृत हो गया है, जहाँ अनुभवों को भी लाभ कमाने के उद्देश्य से खरीदा और बेचा जाता है।

165. (A) उपयोग-मूलय को विनिमय-मूल्य में बदलना।
पण्यीकरण की प्रक्रिया में किसी वस्तु या सेवा के 'उपयोग-मूल्य' को उसके 'विनिमय-मूल्य' में परिवर्तित किया जाता है। इसका अर्थ है कि किसी वस्तु की उपयोगिता से अधिक उसके बाज़ार में बिकने वाले दाम को महत्व दिया जाता है। जब कोई वस्तु स्वयं के उपभोग के बजाय केवल मुनाफे के लिए बेचने के उद्देश्य से तैयार की जाती है, तो वह पण्यीकरण के तर्क के अधीन आ जाती है।

166. (B) इसने उपभोग को पहचान और सामाजिक स्थिति की अभिव्यक्ति का माध्यम बना दिया है।
भूमंडलीकरण ने उपभोक्तावाद की एक नई शैली विकसित की है जहाँ व्यक्ति वस्तुओं को केवल ज़रूरत के लिए नहीं, बल्कि अपनी पहचान प्रदर्शित करने के लिए खरीदता है। अब उपभोग यह दर्शाता है कि व्यक्ति समाज के किस वर्ग से संबंधित है और उसकी जीवन शैली कितनी आधुनिक है। इस प्रकार, बाज़ार की वस्तुएं सामाजिक प्रतिष्ठा और व्यक्तित्व के निर्माण में एक महत्वपूर्ण उपकरण की भूमिका निभाती हैं।

167. (B) यह बताती है कि ब्रांड और उत्पाद सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदर्शित करने के लिए उपयोग किए जाते हैं।
मैक्स वेबर के अनुसार, कुछ वस्तुएं 'प्रतिष्ठा के प्रतीक' के रूप में कार्य करती हैं जो समाज में व्यक्ति के उच्च स्थान को दर्शाती हैं। समकालीन समय में, महंगे वैश्विक ब्रांड और गैजेट्स इसी अवधारणा को पुष्ट करते हैं। लोग इन उत्पादों का उपयोग यह दिखाने के लिए करते हैं कि उनके पास विशेष आर्थिक और सामाजिक शक्ति है, जिससे बाज़ार केवल आर्थिक विनिमय न रहकर प्रतिष्ठा का मंच बन जाता है।

168. (A) वैश्विक कंपनियों द्वारा अपने उत्पादों को स्थानीय संस्कृति और स्वाद के अनुसार ढालना।
'ग्लोकलाइजेशन' शब्द वैश्विक और स्थानीय के सम्मिश्रण को दर्शाता है। इसमें बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अपने उत्पादों के मूल स्वरुप को बनाए रखते हुए उनमें स्थानीय पसंद और सांस्कृतिक तत्वों को शामिल करती हैं। यह रणनीति उन्हें अलग-अलग देशों के बाज़ारों में अधिक स्वीकार्य बनाती है। इस प्रकार, यह प्रक्रिया वैश्विक व्यापारिक मॉडल और स्थानीय सांस्कृतिक पहचान के बीच एक संतुलित तालमेल स्थापित करने का प्रयास करती है।

169. (C) ग्लोकलाइजेशन
जब एक अंतरराष्ट्रीय फास्ट-फूड श्रृंखला अपने मेनू में स्थानीय मसालों और व्यंजनों को शामिल करती है, तो वह 'ग्लोकलाइजेशन' का एक सटीक उदाहरण प्रस्तुत करती है। यह दर्शाता है कि वैश्विक ब्रांड स्थानीय लोगों की सांस्कृतिक आदतों और स्वादों को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते। सफलता प्राप्त करने के लिए उन्हें अपनी वैश्विक पहचान के साथ स्थानीय परंपराओं का समावेश करना पड़ता है, जिससे वे स्थानीय उपभोक्ताओं के अधिक निकट आ सकें।

170. (D) वे उत्पादों को वांछनीय जीवन शैली से जोड़कर आकांक्षात्मक छवियाँ बनाते हैं।
विज्ञापन और मीडिया आधुनिक उपभोग संस्कृति के प्रमुख सूत्रधार हैं जो उत्पादों को एक आकर्षक और वांछनीय जीवन शैली के प्रतीक के रूप में पेश करते हैं। वे उपभोक्ताओं के मन में एक आदर्श जीवन की छवि निर्मित करते हैं, जिससे लोग उन उत्पादों को खरीदने के लिए प्रेरित होते हैं। इस प्रकार, विज्ञापन उपभोग को केवल खरीदारी तक सीमित न रखकर उसे एक भावनात्मक और आकांक्षात्मक अनुभव में बदल देते हैं।

171. (C) जाति और नातेदारी के सामाजिक संबंधों पर।
भारत के प्रमुख व्यापारिक समुदायों की सफलता का आधार उनके जातिगत और पारिवारिक संबंध रहे हैं। ये समुदाय अपने व्यापारिक नेटवर्क को सुदृढ़ बनाने के लिए नातेदारी के रिश्तों का कुशलतापूर्वक उपयोग करते थे। जाति और परिवार पर आधारित यह संरचना एक सुरक्षित व्यापारिक परिवेश तैयार करती थी, जहाँ लोग एक-दूसरे से गहरे जुड़े होते थे। इसी सामाजिक ढांचे ने उन्हें बड़े पैमाने पर व्यापारिक गतिविधियों के संचालन में सहायता प्रदान की।

172. (B) सामाजिक संबंधों का वह नेटवर्क जो आर्थिक लाभ प्रदान करता है।
'सामाजिक पूंजी' से तात्पर्य उन संसाधनों और लाभों से है जो व्यक्तियों को उनके सामाजिक संबंधों और नेटवर्क के माध्यम से प्राप्त होते हैं। व्यापारिक समुदायों के संदर्भ में, आपसी मेलजोल और सामुदायिक जुड़ाव ने एक ऐसी पूंजी के रूप में कार्य किया जिसने व्यवसाय के विस्तार और स्थिरता में मदद की। यह दर्शाता है कि आर्थिक सफलता केवल भौतिक धन पर ही नहीं, बल्कि समाज में उपलब्ध संबंधों की मजबूती पर भी निर्भर करती है।

173. (D) जारीकर्ता की प्रतिष्ठा और सामुदायिक विश्वास पर।
'हुंडी' प्रणाली पूरी तरह से अनौपचारिक और आपसी भरोसे पर आधारित थी, जहाँ कागजी अनुबंधों के बजाय व्यक्ति की प्रतिष्ठा अधिक मायने रखती थी। चूँकि यह लेन-देन एक ही सामुदायिक नेटवर्क के भीतर होता था, इसलिए जारीकर्ता की सामाजिक साख ही ऋण की गारंटी मानी जाती थी। विश्वास का यह गहरा तंत्र ही था जिसने बिना किसी आधुनिक कानूनी हस्तक्षेप के सदियों तक व्यापारिक वित्त व्यवस्था को सुचारु रूप से संचालित रखा।

174. (A) उनके घनिष्ठ सामाजिक संबंधों ने बाहरी लोगों के लिए प्रवेश करना मुश्किल बना दिया।
व्यापारिक समुदायों ने अपनी घनिष्ठ सामाजिक संरचनाओं और नातेदारी नेटवर्क के माध्यम से बाज़ार के विशिष्ट क्षेत्रों पर अपना नियंत्रण बनाए रखा। इन समुदायों के भीतर सूचनाओं और पूंजी का प्रवाह इतना सीमित और सुरक्षित था कि किसी बाहरी व्यक्ति के लिए उस तंत्र में प्रवेश करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण हो जाता था। इसी सामाजिक एकाधिकार ने उन्हें व्यापारिक मार्गों और वस्तुओं पर लंबे समय तक अपना प्रभुत्व बनाए रखने में सक्षम बनाया।

175. (C) समुदाय से बहिष्कृत होने के सामाजिक भय के माध्यम से। इन नेटवर्कों के भीतर विश्वास बनाए रखने के लिए किसी पुलिस बल की आवश्यकता नहीं थी, बल्कि सामाजिक दबाव ही पर्याप्त था। यदि कोई सदस्य धोखाधड़ी करता था, तो उसे समुदाय से बाहर निकाल दिए जाने का भय बना रहता था, जो उसके व्यापार और प्रतिष्ठा को समाप्त कर सकता था। सामाजिक बहिष्कार की यह कड़ी चेतावनी एक प्रभावी नियंत्रण तंत्र के रूप में कार्य करती थी, जो सदस्यों को ईमानदारी से व्यापार करने हेतु प्रेरित करती थी।

(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

19. 'हरिजन' शब्द का प्रयोग 1930 के दशक में किसने लोकप्रिय किया?
(A) डॉ. बी. आर. अंबेडकर
(B) ज्योतिबा फुले
(C) महात्मा गाँधी
(D) पेरियार

20. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन 1: आधुनिक काल में, जाति तथा व्यवसाय के बीच के संबंध काफ़ी ढीले हुए हैं।
कथन 2: आज अमीर तथा गरीब लोग हर जाति में पाए जाते हैं, और जाति-वर्ग का सहसंबंध पूरी तरह समाप्त हो गया है।
(A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं।
(C) केवल कथन 1 सही है।
(D) केवल कथन 2 सही है।

21. दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की नीति का क्या उद्देश्य था?
(A) विभिन्न प्रजातियों के मध्य पूर्ण सामाजिक समानता स्थापित करना।
(B) पीड़ित अश्वेत नागरिकों को विशेष आर्थिक सहायता प्रदान करना।
(C) अल्पसंख्यक श्वेतों का राजनीतिक नियंत्रण सुनिश्चित करना।
(D) संपूर्ण राष्ट्र का संतुलित एवं एकसमान विकास सुनिश्चित करना।

22. 'अन्य पिछड़े वर्ग' (OBC) को संवैधानिक रूप से किस आधार पर परिभाषित किया गया है?
(A) गंभीर रूप से पिछड़े हुए आर्थिक वर्ग।
(B) सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए वर्ग।
(C) समाज में धार्मिक रूप से अल्पसंख्यक वर्ग।
(D) केवल व्यावसायिक रूप से पिछड़े हुए समूह।

23. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 'अन्य पिछड़े वर्गों' का समूह, दलितों अथवा आदिवासियों की तुलना में अधिक विविधतापूर्ण है।
कारण (R): OBC में उच्च भूमिधर जातियों से लेकर अत्यंत गरीब और सुविधावंचित समूह तक शामिल हैं, और यह सभी प्रमुख भारतीय धर्मों में पाए जाते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

24. 1953 में नियुक्त प्रथम पिछड़े वर्ग आयोग के अध्यक्ष कौन थे?
(A) काका कालेलकर
(B) बी. पी. मंडल
(C) जवाहरलाल नेहरू
(D) डॉ. अंबेडकर

25. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. अस्पृश्यता को भारतीय संविधान के अनुच्छेद 17 द्वारा समाप्त कर दिया गया है।
2. 1989 का अत्याचार निवारण अधिनियम केवल दलितों के विरुद्ध हिंसा पर लागू होता है।
3. 'दलित पैंथर्स' का उदय पश्चिमी भारत में हुआ था।
4. दलित साहित्य ने केवल मराठी भाषा में ही योगदान दिया है।
5. जोतिबा फुले और पेरियार स्वतंत्रता-पूर्व काल के प्रमुख दलित नेता थे।

निम्नलिखित में से कौन-सा संयोजन सही है?
(A) 1, 2 और 5
(B) 1, 3 और 5
(C) 2, 4 और 5
(D) 1, 3 and 4

26. 'आदिवासी' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?
(A) मूल निवासी
(B) वन में रहने वाला
(C) पिछड़ा हुआ व्यक्ति
(D) घुमंतू समूह

27. आदिवासी संघर्षों की एक उल्लेखनीय उपलब्धि क्या रही है?
(A) सभी विकास परियोजनाओं का पूर्ण स्थगन।
(B) शहरी क्षेत्रों में पूर्ण आरक्षण की प्राप्ति।
(C) वनों पर पूर्ण स्वामित्व का अधिकार प्राप्त करना।
(D) झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे अलग राज्यों का दर्जा प्राप्त करना।

28. औपनिवेशिक काल में आदिवासियों की आर्थिक स्थिति के बिगड़ने का मुख्य कारण क्या था?
(A) आदिवासी समूहों के मध्य व्याप्त गंभीर आंतरिक संघर्ष।
(B) ब्रिटिश सरकार द्वारा संसाधनों और वनों पर पूर्ण नियंत्रण।
(C) क्षेत्र में अज्ञात और नई संक्रामक बीमारियों का प्रसार।
(D) कृषि के आधुनिक तरीकों को अपनाने में उनकी विफलता।

29. 'डिक्कू' शब्द का प्रयोग आदिवासी समूहों द्वारा किन्हें संदर्भित करने के लिए किया जाता है?
(A) अपने कबीले के मुखिया को
(B) मित्र जनजातीय समूहों को
(C) बाहरी लोगों जैसे साहूकारों और व्यापारियों को
(D) सरकारी अधिकारियों को

30. सूची-I का सूची-II से मिलान कीजिए:

(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

10. सामाजिक बहिष्कार क्या है?
(A) वह प्रक्रिया जो व्यक्तियों को समाज में पूर्ण भागीदारी से वंचित करती है।
(B) किसी व्यक्ति द्वारा अपनी इच्छा से मुख्य सामाजिक समूहों से दूरी बनाना।
(C) गंभीर आर्थिक संकट अथवा गरीबी के कारण मुख्य सामाजिक धारा से कटना।
(D) अत्यंत दुर्गम भौगोलिक परिस्थितियों अथवा दूरस्थ क्षेत्रों में निवास की विवशता।

11. भेदभाव (Discrimination) को किस रूप में सर्वोत्तम रूप से परिभाषित किया जा सकता है?
(A) किसी विशिष्ट समूह के सदस्यों के प्रति मन में नकारात्मक पूर्वाग्रह रखना।
(B) अन्य सांस्कृतिक समूहों की परंपराओं और मूल्यों को समझने में विफल रहना।
(C) अपनी स्वयं की सामाजिक संस्कृति को दूसरे समूहों से श्रेष्ठ मानकर चलना।
(D) वह व्यवहार जो किसी समूह को सामाजिक अवसरों से वंचित करता है।

12. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. काका कालेलकर आयोग की रिपोर्ट
2. मंडल आयोग की रिपोर्ट का कार्यान्वयन
3. संविधान (93वाँ संशोधन) अधिनियम
4. अनुसूचित जाति और जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम

(A) 1, 4, 2, 3
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 2, 4, 3
(D) 4, 3, 1, 2

13. 'सामाजिक अपवर्जन' की विशेषता क्या नहीं है?
(A) यह व्यवस्थित होता है।
(B) यह समाज की संरचनात्मक विशेषताओं का परिणाम है।
(C) यह व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है।
(D) यह लोगों को उन अवसरों से वंचित करता है जो अधिकांश के लिए खुले हैं।

14. ऐतिहासिक रूप से जाति व्यवस्था का मुख्य आधार क्या था?
(A) व्यक्तियों का उनकी व्यक्तिगत योग्यता और धन के आधार पर वर्गीकरण।
(B) व्यक्तियों का उनके धार्मिक विश्वासों के आधार पर वर्गीकरण।
(C) व्यक्तियों का उनके राजनीतिक झुकाव के आधार पर वर्गीकरण।
(D) व्यक्तियों का उनके व्यवसाय तथा प्रस्थिति के आधार पर वर्गीकरण।

15. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सामाजिक स्तरीकरण केवल व्यक्तियों की विभिन्नता का प्रकार्य है।
2. सामाजिक स्तरीकरण समाज की एक विशिष्टता है।
3. सामाजिक स्तरीकरण पीढ़ी-दर-पीढ़ी बना रहता है।
4. सामाजिक स्तरीकरण को किसी विश्वास या विचारधारा का समर्थन प्राप्त नहीं होता।
5. सामाजिक स्तरीकरण केवल आदिम समाजों में पाया जाता है।

निम्नलिखित में से कौन-सा संयोजन सही है?
(A) 1 और 4
(B) 2 और 3
(C) 3 और 5
(D) 1 और 5

16. दलितों द्वारा अपने लिए 'दलित' शब्द का प्रयोग क्या दर्शाता है?
(A) ऐतिहासिक रूप से झेले गए शोषण तथा उत्पीड़न की मूक स्वीकृति।
(B) अधिकारों एवं मान-मर्यादा हेतु संघर्ष की एक सामूहिक चेतना।
(C) प्रशासन द्वारा किए गए औपचारिक श्रेणीबद्ध वर्गीकरण का अंगीकार।
(D) सामाजिक सुधारों के प्रति महात्मा गाँधी द्वारा दिए गए विचारों का समर्थन।

17. अस्पृश्यता के तीन मुख्य आयाम कौन-से हैं?
(A) गरीबी, अशिक्षा और बेरोजगारी
(B) अपवर्जन, अनादर एवं अधीनता, और शोषण
(C) धार्मिक भिन्नता, भाषाई अंतर और क्षेत्रीय असमानता
(D) शारीरिक दूरी, सामाजिक अलगाव और राजनीतिक उदासीनता

18. सूची-I का सूची-II से मिलान कीजिए:
सूची I: (अधिनियम/आयोग)
P. जातीय निर्योग्यता निवारण अधिनियम
Q. प्रथम पिछड़े वर्ग आयोग
R. अनुसूचित जाति और जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम
S. संविधान (93वाँ संशोधन)

सूची II: (वर्ष)
1. 1953
2. 2005
3. 1850
4. 1989

(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4

125. (C) योग और आयुर्वेद के बढ़ते बाज़ारीकरण के संदर्भ में
आधुनिक विश्व में अध्यात्म के बाज़ार का तात्पर्य योग, ध्यान और आयुर्वेद जैसी प्राचीन प्रणालियों के व्यावसायिक उपयोग से है। इन आध्यात्मिक अभ्यासों को अब महंगे पैकेजों, ब्रांडेड उत्पादों और वैश्विक सेवा केंद्रों के माध्यम से एक लाभदायक व्यवसाय के रूप में बेचा जा रहा है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि कैसे शांति और स्वास्थ्य की खोज जैसी आंतरिक मानवीय अनुभूतियाँ भी अब वैश्विक बाज़ार का एक महत्वपूर्ण और आकर्षक हिस्सा बन चुकी हैं।

126. (A) केवल 1 और 2 सही हैं।
उदारीकरण ने भारत में विदेशी पूँजी के निवेश को सरल बनाया है और माना जाता है कि निजीकरण से प्रबंधन की कार्यकुशलता में सुधार होता है। हालांकि, यह कहना गलत है कि इससे सभी उद्योगों को समान लाभ हुआ है, क्योंकि छोटे उत्पादकों को भारी प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा है। साथ ही, उदारीकरण के कारण कृषि सब्सिडी और सहायता मूल्यों में कमी की गई है। अतः केवल पहले दो कथन ही उदारीकरण के सकारात्मक दावों को सही दर्शाते हैं।

127. (A) असंगठित क्षेत्र में अस्थायी नौकरियों की वृद्धि
उदारीकरण के बाद भारतीय रोज़गार बाज़ार में एक बड़ा बदलाव यह आया है कि अब असंगठित क्षेत्र का विस्तार हुआ है। यहाँ मिलने वाली नौकरियाँ प्रकृति में अस्थायी होती हैं और इनमें किसी भी प्रकार की सामाजिक सुरक्षा या पेंशन का लाभ नहीं मिलता। कंपनियाँ अब लागत कम करने के लिए ठेके पर काम कराने को प्राथमिकता देती हैं। इससे रोज़गार के आंकड़े तो बढ़ सकते हैं, लेकिन काम की गुणवत्ता और सुरक्षा में भारी गिरावट दर्ज की गई है।

128. (B) स्मिथ इसे स्व-नियामक मानते थे, मार्क्स शोषणकारी
एडम स्मिथ और कार्ल मार्क्स के विचारों में बाज़ार को लेकर बुनियादी अंतर है। स्मिथ बाज़ार को एक ऐसी अद्भुत स्व-नियामक व्यवस्था मानते थे जो बिना किसी हस्तक्षेप के समाज का भला करती है। इसके विपरीत, मार्क्स ने बाज़ार को पूँजीपतियों द्वारा श्रमिकों के शोषण का एक साधन माना। जहाँ स्मिथ बाज़ार में संतुलन और समृद्धि देखते थे, वहीं मार्क्स ने इसमें वर्ग संघर्ष और श्रमिकों की बेबसी को पहचाना, जो पूँजीवाद का अनिवार्य हिस्सा है।

129. (B) घरेलू संरक्षणवाद
1980 के दशक के बाद और विशेष रूप से 1991 के सुधारों के साथ भारत ने घरेलू संरक्षणवाद की पुरानी नीति को त्याग दिया। इसके स्थान पर उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण की नई नीतियों को अपनाया गया। संरक्षणवाद का अर्थ था घरेलू उद्योगों को विदेशी प्रतिस्पर्धा से बचाने के लिए ऊँचे आयात शुल्क लगाना, जो उदारीकरण के मूल सिद्धांतों के विरुद्ध है। अतः आधुनिक भारत का आर्थिक इतिहास संरक्षणवाद से बाज़ार की ओर बढ़ने की कहानी है।

130. (A) दोनों विशिष्ट सामाजिक संदर्भों वाली संस्थाएं हैं
एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से साप्ताहिक हाट और ऑनलाइन स्टॉक एक्सचेंज दोनों ही सामाजिक संस्थाएं हैं क्योंकि वे विशिष्ट नियमों और सामाजिक संदर्भों द्वारा संचालित होते हैं। यद्यपि हाट भौतिक है और स्टॉक एक्सचेंज आभासी, लेकिन दोनों ही मानवीय व्यवहार और विश्वास पर आधारित हैं। दोनों ही प्रणालियों में विनिमय के तरीके और भागीदारी समाज की व्यापक संरचनाओं और आधुनिक संचार तकनीकों द्वारा निर्धारित होते हैं, जो उन्हें एक सामाजिक इकाई बनाते हैं।

131. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
बाज़ार कभी भी पूर्णतः मुक्त या तटस्थ नहीं होते; उनका संगठन अक्सर कुछ विशेष सामाजिक समूहों के हाथ में होता है। भारत में नाकरट्टार और मारवाड़ी जैसे समुदायों का इतिहास इसका स्पष्ट प्रमाण है कि कैसे उन्होंने अपनी जातीय एकता और नातेदारी का उपयोग करके व्यापार के बड़े क्षेत्रों पर नियंत्रण बनाए रखा। यह नियंत्रण उन्हें प्रतिस्पर्धा में बढ़त देता है और बाज़ार को एक ऐसी सामाजिक संरचना में बदल देता है जहाँ वर्ग और जाति केंद्रीय भूमिका निभाते हैं।

132. (D) प्राचीन गैर-बाज़ारी ग्रामीण समुदायों वाला देश
औपनिवेशिक काल से पहले भारत के बारे में पारंपरिक रूप से यह माना जाता था कि यहाँ की अर्थव्यवस्था केवल आत्मनिर्भर और गैर-बाज़ारी ग्रामीण समुदायों तक सीमित थी। इस विवरण के अनुसार, गाँव अपनी ज़रूरतों के लिए स्वयं पर निर्भर थे और व्यापार का कोई बड़ा नेटवर्क नहीं था। हालांकि, आधुनिक ऐतिहासिक शोध ने इस विचार को चुनौती दी है और यह प्रमाणित किया है कि भारत में उस समय भी एक अत्यंत सक्रिय और विकसित व्यापारिक बाज़ार मौजूद था।

133. (C) उन्होंने बैंकिंग और ब्याज पर कर्ज देने का कार्य किया
मारवाड़ी परिवारों ने औपनिवेशिक काल के दौरान अपनी संचित पूँजी का चतुराई से उपयोग किया। उन्होंने केवल वस्तुओं का व्यापार नहीं किया, बल्कि बैंकिंग और साहूकारी के क्षेत्र में भी महारत हासिल की। वे अन्य व्यापारियों और यहाँ तक कि रियासतों को भी ब्याज पर कर्ज देते थे। इस वित्तीय नियंत्रण ने उन्हें व्यापारिक विस्तार के लिए आवश्यक आधार प्रदान किया और उन्हें भारत के आर्थिक ढांचे में एक अत्यंत शक्तिशाली और अपरिहार्य समुदाय के रूप में स्थापित कर दिया।

134. (D) (A) and (C) दोनों
बाज़ार का समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य उसे केवल लाभ-हानि का केंद्र नहीं बल्कि एक सामाजिक संस्था मानता है। साप्ताहिक हाट आवधिक बाज़ार हैं और हुंडी पूर्व-औपनिवेशिक भारत का एक प्रमुख वित्तीय साधन थी। ये सभी तथ्य सही हैं। हालांकि, पण्यीकरण का अर्थ बाज़ार से बाहर होना नहीं, बल्कि किसी वस्तु का बाज़ार में क्रय-विक्रय के लिए उपलब्ध होना है। अतः चौथा कथन गलत है, जबकि पहले तीन कथन समाजशास्त्रीय सत्यों को सही प्रकार से उजागर करते हैं।

सूची I: (समाज सुधारक)
P. राजा राममोहन राय
Q. ज्योतिबा फुले
R. दयानंद सरस्वती
S. सर सैयद अहमद खान
सूची II: (प्रमुख सुधार क्षेत्र/संगठन)
1. सत्यशोधक समाज
2. इस्लाम में सुधार
3. सती प्रथा का विरोध
4. आर्य समाज
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-1, Q-4, R-2, S-3

31. उन्नीसवीं सदी के समाज सुधार आंदोलनों को अक्सर 'मध्यवर्गीय' क्यों कहा जाता है?
(A) क्योंकि सुधारक पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त भारतीय मध्य वर्ग से थे
(B) क्योंकि वे केवल मध्य वर्ग की समस्याओं पर केंद्रित थे।
(C) क्योंकि इन आंदोलनों को केवल मध्य भारत के राज्यों में ही समर्थन मिला।
(D) क्योंकि वे समाज की मूल संरचना में कोई बड़ा परिवर्तन नहीं चाहते थे।

32. निम्नलिखित में से किस समाज सुधारक ने एक साथ जातीय और लैंगिक अत्याचारों के विरुद्ध आवाज उठाई?
(A) राजा राममोहन राय
(B) ज्योतिबा फुले
(C) सर सैयद अहमद खान
(D) एम. जी. रानाडे

33. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. 19वीं सदी के समाज सुधारकों ने केवल पश्चिमी विचारों का उपयोग किया।
2. राजा राममोहन राय ने सती प्रथा का विरोध हिंदू शास्त्रों और मानवतावादी तर्कों के आधार पर किया।
3. ज्योतिबा फुले ने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की।
4. सर सैयद अहमद खान ने लड़कियों की शिक्षा का पूर्ण रूप से विरोध किया।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) 1 और 4
(B) 2 और 3
(C) 1, 2 और 3
(D) 2, 3 और 4

34. 1882 में 'स्त्री-पुरुष तुलना' नामक पुस्तक किसने लिखी थी?
(A) ताराबाई शिंदे
(B) बेगम रोकेया सखावत हुसैन
(C) सावित्रीबाई फुले
(D) पंडिता रमाबाई

35. बेगम रोकेया सखावत हुसैन द्वारा लिखित 'सुल्तानाज़ ड्रीम' की विषय-वस्तु क्या है?
(A) एक प्राचीन ऐतिहासिक युद्ध का विस्तृत साहित्यिक वर्णन।
(B) महिलाओं के लिए शिक्षा की अनिवार्यता पर एक औपचारिक निबंध।
(C) एक ऐसी काल्पनिक दुनिया जहाँ लिंग भूमिकाएँ उलट जाती हैं।
(D) ग्रामीण बंगाल के कठिन जीवन का एक पूर्णतः यथार्थवादी चित्रण।

36. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1931 के कराची अधिवेशन में नागरिकों के मूल अधिकारों की घोषणा में क्या शामिल नहीं था?
(A) कानून के समक्ष सभी नागरिकों की समानता।
(B) सार्वजनिक रोजगार में लिंग के आधार पर कोई अयोग्यता नहीं।
(C) सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार।
(D) संपत्ति का अधिकार केवल पुरुषों तक सीमित।

37. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 'अन्यथा सक्षम' (differently abled) लोग केवल अपनी शारीरिक या मानसिक बाधा के कारण 'अक्षम' नहीं होते।
कारण (R): समाज की बनावट, जो उनकी जरूरतों को पूरा नहीं करती, उन्हें अक्षम बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

38. 'अक्षमता' (disability) के बारे में पारंपरिक भारतीय सांस्कृतिक सोच का मूल तत्व क्या है?
(A) इसे एक सामाजिक समस्या के रूप में देखा जाता है।
(B) इसे पिछले कर्मों का फल या दुर्भाग्य का परिणाम माना जाता है।
(C) इसे चिकित्सा विज्ञान द्वारा आसानी से हल करने योग्य माना जाता है।
(D) इसे राज्य की जिम्मेदारी माना जाता है।

39. निम्नलिखित में से कौन-सा शब्द विकलांगता के प्रति एक सकारात्मक और आधुनिक दृष्टिकोण को दर्शाता है?
(A) अपंग
(B) बाधित
(C) बेचारा
(D) अन्यथा सक्षम

40. निम्नलिखित को कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:

1. बहुजन समाज पार्टी का उदय
2. काका कालेलकर आयोग का गठन
3. मंडल आयोग का गठन
4. दलित पैंथर्स का उदय

(A) 2, 4, 3, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 3, 2, 4, 1

83. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): कोई भी सरकारी कार्यवाही अकेले ही सामाजिक परिवर्तन नहीं ला सकती।
कारण (R): स्थायी सामाजिक परिवर्तन के लिए जन-सहयोग, जागरूकता और संवेदनशीलता के साथ एक सतत सामाजिक अभियान की आवश्यकता होती है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

84. दक्षिण अफ्रीका के 'बांटुस्तान' या 'गृहक्षेत्र' क्या थे?

(A) अश्वेतों हेतु आरक्षित अत्यधिक समृद्ध औद्योगिक क्षेत्र।
(B) वे श्वेतों और अश्वेतों हेतु समान सुविधायुक्त आवासीय क्षेत्र।
(C) पर्यटक स्थल जो केवल विदेशी नागरिकों हेतु उपलब्ध थे।
(D) वे निर्धन क्षेत्र जहाँ अश्वेतों को बलपूर्वक बसाया गया।

85. 'मातृवंशीय समाज' का उदाहरण कहाँ पाया जाता है?

(A) बंगाल का पारंपरिक ब्राह्मण समाज।
(B) पंजाब का सुप्रसिद्ध जाट समाज।
(C) केरल के नायर और मेघालय के खासी समाज।
(D) राजस्थान का प्राचीन राजपूत समाज।

86. निम्नलिखित में से क्या सामाजिक बहिष्कार का परिणाम नहीं है?

(A) जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं से वंचन।
(B) समाज में पूर्ण और सक्रिय भागीदारी।
(C) शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी सेवाओं तक पहुँच में कमी।
(D) पुलिस और न्यायपालिका जैसी संस्थाओं तक पहुँच में बाधा।

87. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. पूर्वाग्रह एक समूह के सदस्यों द्वारा दूसरे समूह के बारे में पूर्वकल्पित विचार है।
2. पूर्वाग्रह हमेशा सुनी-सुनाई बातों पर आधारित होता है।
3. भेदभाव, पूर्वाग्रह का व्यावहारिक रूप है।
4. भेदभाव को प्रमाणित करना हमेशा आसान होता है।
5. एक व्यक्ति को उसकी जाति के आधार पर नौकरी से मना करना भेदभाव का उदाहरण है।

निम्नलिखित में से कौन-सा संयोजन सही है?

(A) 1, 2 और 3
(B) 2, 4 और 5
(C) 1, 3 और 5
(D) 3, 4 और 5

88. 'बेगार' से क्या तात्पर्य है?

(A) बिना भुगतान के अथवा न्यूनतम मजदूरी पर जबरन कार्य
(B) श्रमिकों को बहुत कम मजदूरी पर काम सौंपना।
(C) अपनी स्वेच्छा से की गई निःस्वार्थ सामाजिक सेवा।
(D) एक निश्चित कानूनी अनुबंध के आधार पर किया गया कार्य।

89. 19वीं सदी के किन दो समाज सुधारकों ने आधुनिक पाश्चात्य विचारधारा और परंपरागत धर्मग्रंथों दोनों का सहारा लिया?

(A) समाज सुधारक ज्योतिबा फुले और पेरियार।
(B) स्वामी दयानंद सरस्वती और ताराबाई शिंदे।
(C) राजा राममोहन राय और सर सैयद अहमद खान
(D) एम. जी. रानाडे और बेगम रोकेया हुसैन।

90. सूची-I का सूची-II से मिलान कीजिए:
सूची I: (शब्द)
P. पूर्वाग्रह
Q. रुढ़िबद्ध धारणा
R. भेदभाव
S. बहिष्कार
सूची II: (अर्थ)
1. समूह के बारे में कठोर और अपरिवर्तनीय धारणा
2. दूसरों को अवसरों से वंचित करने वाला व्यवहार
3. समाज में पूर्ण भागीदारी से रोकना
4. किसी समूह के बारे में पूर्वकल्पित विचार

(A) P-1, Q-4, R-2, S-3
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

91. अक्षमता (disability) के संबंध में यह तर्क कि 'अक्षमता समाज की संरचना या विचारधारा में निहित है, व्यक्ति की शारीरिक दशा में नहीं', किस दृष्टिकोण को पुष्ट करता है?

(A) चिकित्सा मॉडल
(B) व्यक्तिगत मॉडल
(C) दान मॉडल
(D) सामाजिक मॉडल

92. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन 1: 1999-2000 के आँकड़ों के अनुसार, ग्रामीण भारत में सिखों में अमीरी का प्रतिशत राष्ट्रीय औसत से बहुत अधिक था।
कथन 2: 1999-2000 के आँकड़ों के अनुसार, नगरीय भारत

(C) केवल पुरुष या स्त्री के रुप में सामाजिक वर्गीकरण।
(D) एक विशेष प्रकार की वेशभूषा धारण करना।

51. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): दलितों के विपरीत, आदिवासी अपने लिए अलग राज्य की माँग करने में सफल रहे।
कारण (R): आदिवासी समूह दलितों की तरह पूरे देश में फैले होने के बजाय कुछ विशेष इलाकों में संकेंद्रित थे।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

52. 'थर्ड-जेंडर' (तीसरा जेंडर) की श्रेणी में कौन लोग आते हैं?
(A) केवल पुरुष जो महिलाओं की तरह व्यवहार करते हैं।
(B) केवल महिलाएं जो पुरुषों की तरह व्यवहार करती हैं।
(C) वे लोग जो अपनी जेंडर पहचान को गुप्त रखते हैं।
(D) वे लोग जो न तो पूर्ण पुरुष और न ही पूर्ण महिला हैं, या जिनमें दोनों की विशेषताएँ हैं।

53. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सामाजिक बहिष्कार आकस्मिक या अनायास होता है।
2. यह व्यवस्थित तरीके से होता है।
3. यह समाज की संरचनात्मक विशेषताओं का परिणाम है।
4. इसके लिए कानून अकेले ही पर्याप्त समाधान हैं।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) 1 और 4
(B) 2 और 3
(C) 1, 2 और 3
(D) 2, 3 और 4

54. ऐतिहासिक रूप से, ब्राह्मण और क्षत्रिय राजाओं के बीच शक्ति का संतुलन कैसा था?
(A) ब्राह्मणों के पास पारलौकिक और इह-लौकिक दोनों क्षेत्र की पूर्ण शक्तियाँ थीं।
(B) राजा इह-लौकिक क्षेत्र में सर्वोपरि थे, पर आनुष्ठानिक क्षेत्र में वे ब्राह्मणों के अधीन थे।
(C) राजाओं के पास कोई वास्तविक शक्ति नहीं थी और संपूर्ण सत्ता ब्राह्मणों में निहित थी।
(D) ब्राह्मणों और राजाओं के मध्य शक्ति का समाज में कोई स्पष्ट विभाजन विद्यमान नहीं था।

55. नेल्सन मंडेला ने किस संगठन के नेतृत्व में दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरुद्ध संघर्ष किया?
(A) संयुक्त राष्ट्र
(B) दक्षिण अफ्रीकी श्वेत लीग
(C) बांटुस्तान लिबरेशन आर्मी
(D) अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस

56. निम्नलिखित में से कौन-सा एक सामाजिक स्तरीकरण का सिद्धांत नहीं है?
(A) यह व्यक्तियों के बीच की प्राकृतिक भिन्नता का सीधा परिणाम है।
(B) यह समाज की एक विशिष्टता है।
(C) यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी बना रहता है।
(D) इसे विश्वासों या विचारधारा द्वारा समर्थन मिलता है।

57. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. दक्षिण अफ्रीका में नेल्सन मंडेला की सरकार का बनना
2. रंगभेद को कानूनी मान्यता मिलना
3. डच व्यापारियों का दक्षिण अफ्रीका में बसना
4. ब्रिटिश उपनिवेशकों द्वारा डचों के वंशजों को भीतरी प्रदेशों में खदेड़ना

(A) 3, 4, 2, 1
(B) 2, 3, 4, 1
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 4, 3, 2, 1

58. 1990 में मंडल आयोग की रिपोर्ट को लागू करने के निर्णय का राष्ट्रीय राजनीति पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) अन्य पिछड़े वर्गों का मुद्दा एक प्रमुख राष्ट्रीय राजनीतिक विषय के रूप में उभरा।
(B) भारत की संपूर्ण जाति-आधारित राजनीति देश में पूरी तरह से समाप्त हो गई।
(C) इस निर्णय से केवल भारत के दक्षिणी राज्यों की क्षेत्रीय राजनीति प्रभावित हुई।
(D) इस महत्वपूर्ण राजनीतिक निर्णय का भारतीय राजनीति पर कोई खास प्रभाव नहीं पड़ा।

59. आदिवासी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर विस्थापन का मुख्य कारण क्या रहा है?
(A) आदिवासी समूहों के मध्य होने वाले निरंतर आपसी युद्ध।
(B) प्राकृतिक आपदाएँ जैसे विनाशकारी बाढ़ और तीव्र सूखा।
(C) बेहतर सुविधाओं की तलाश में किया गया पूर्णतः स्वैच्छिक प्रवास।
(D) राष्ट्रीय विकास हेतु खनन तथा बाँध जैसी परियोजनाओं का निर्माण।

60. 'सत्यशोधक समाज' का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) वेदों की प्राचीन सत्ता को समाज में पुनर्स्थापित करना।
(B) सत्य पर बल देते हुए जातीय और लैंगिक भेदभाव का विरोध करना।
(C) केवल ब्राह्मण वर्ग के सदस्यों हेतु शिक्षा का प्रसार करना।
(D) आधुनिक पश्चिमी संस्कृति का समाज में पूर्ण अनुकरण करना।

(A) 50%
(B) 80%
(C) 14%
(D) 25%

102. सूची-I का सूची-II से मिलान कीजिए:
सूची I: (विचारक)
P. पूँजी के तीन रूप (सिद्धांतकार)
Q. महात्मा गाँधी
R. डॉ. अंबेडकर
S. ज्योतिबा फुले
सूची II: (संबद्ध अवधारणा/शब्द)
1. हरिजन
2. सत्यशोधक समाज
3. आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक पूँजी
4. दलितों के सशक्तिकरण का दर्शन
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

103. 'दलित' शब्द का शाब्दिक अर्थ क्या है?
(A) ईश्वर की संतान
(B) मूल निवासी
(C) पिछड़ा हुआ
(D) पैरों से कुचला हुआ

104. 'विकास परियोजनाओं' के नाम पर आदिवासियों को किन मुख्य समस्याओं का सामना करना पड़ा है?
(A) वनों का छिनना, भूमि अपहरण और बार-बार होने वाला विस्थापन।
(B) शिक्षा और स्वास्थ्य की पूर्व की अपेक्षा बेहतर सुविधाएँ।
(C) उनकी राजनीतिक शक्ति और स्वायत्तता में अचानक हुई वृद्धि।
(D) आधुनिक शहरी क्षेत्रों में प्राप्त होने वाला सम्मानजनक रोजगार।

105. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. अनुसूचित जाति और जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम का पारित होना
2. जातीय निर्योग्यता निवारण अधिनियम का पारित होना
3. भारतीय संविधान का लागू होना (अनुच्छेद 17 के साथ)
4. मंडल आयोग की रिपोर्ट का कार्यान्वयन
(A) 2, 3, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 2, 1, 3, 4

106. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन 1: उच्च स्तर के अन्य पिछड़े वर्ग (OBC) और निम्न स्तर के अन्य पिछड़े वर्गों के बीच घोर विषमताएँ हैं।
कथन 2: उच्च स्तर के OBC अधिकतर भूमिधर जातियाँ हैं, जबकि निम्न स्तर के OBC की स्थिति दलितों से बहुत भिन्न नहीं है।
(A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 का एक उदाहरण/स्पष्टीकरण है।
(B) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 का स्पष्टीकरण नहीं है।
(C) केवल कथन 1 सही है।
(D) केवल कथन 2 सही है।

107. एम. जी. रानाडे ने किस विश्वविद्यालय के पाठ्यक्रम में शामिल नैतिक दर्शन का उपयोग विधवा पुनर्विवाह के तर्कों के लिए किया?
(A) कलकत्ता विश्वविद्यालय
(B) मद्रास विश्वविद्यालय
(C) दिल्ली विश्वविद्यालय
(D) मुंबई विश्वविद्यालय

108. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ताराबाई शिंदे की पुस्तक 'स्त्री-पुरुष तुलना' ने पुरुष प्रधान समाज के दोहरे मापदंडों का विरोध किया।
2. बेगम रोकेया हुसैन की 'सुल्तानाज़ ड्रीम' एक विज्ञान कथा है।
3. ये दोनों रचनाएँ पुरुष सुधारकों द्वारा लिखी गई थीं।
4. 'स्त्री-पुरुष तुलना' एक ब्राह्मण विधवा के मृत्युदंड की घटना से प्रेरित थी।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) 1, 2 और 4
(B) 2, 3 और 4
(C) 1 और 3
(D) सभी सही हैं।

109. विकलांग लोगों की 'अदृश्य स्थिति' की तुलना निम्नलिखित में से किसके साथ की जा सकती है?
(A) शेक्सपियर के किसी प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक के पात्र से।
(B) मुंशी प्रेमचंद के अमर उपन्यास 'गोदान' के मुख्य नायक से।
(C) राल्फ एलिसन के सुप्रसिद्ध उपन्यास 'इनविजिबल Men' से।
(D) प्राचीन काल के किसी अत्यंत शक्तिशाली शासक की स्थिति से।

110. भारतीय संविधान का कौन सा अनुच्छेद अस्पृश्यता का उन्मूलन करता है?
(A) अनुच्छेद 14
(B) अनुच्छेद 15
(C) अनुच्छेद 21
(D) अनुच्छेद 17

1. 'आरक्षण' का उद्देश्य ऐतिहासिक भेदभाव की क्षतिपूर्ति करना है।
2. आरक्षण में विधानमंडलों, सरकारी नौकरियों और शैक्षिक संस्थाओं में सीटें शामिल हैं।
3. आरक्षित सीटों का अनुपात हमेशा संबंधित समूह की जनसंख्या के अनुपात से कम होता है।
4. आरक्षण की नीति केवल अनुसूचित जातियों के लिए है।
5. अन्य पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षण का आधार अलग है।

निम्नलिखित में से कौन-सा संयोजन सही है?
(A) 1, 2 और 5
(B) 2, 3 और 4
(C) 1, 3 और 4
(D) 1, 2 और 4

72. एम. जी. रानाडे ने विधवा पुनर्विवाह के समर्थन में किन तर्कों का प्रयोग किया?
(A) पाश्चात्य तर्कसंगति और भारतीय शास्त्रों दोनों का
(B) केवल आधुनिक पाश्चात्य तर्कसंगति का।
(C) केवल भारत के पारंपरिक शास्त्रों का।
(D) तात्कालिक आर्थिक आवश्यकताओं का।

73. "यह पानी का नलका सभी जातियों और धर्मों के लिए खुला है" - यह कथन समाज के संदर्भ में क्या दर्शाता है?
(A) समाज में पूर्ण सामाजिक और धार्मिक समानता की स्थापना।
(B) उस विशेष क्षेत्र में जल संसाधनों की अत्यधिक प्रचुरता।
(C) विभाजित और श्रेणीबद्ध सामाजिक संरचना पर किया गया व्यंग्य।
(D) ग्रामीण क्षेत्रों में आधुनिक प्रौद्योगिकी की विशेष प्रशंसा।

74. निम्नलिखित में से कौन 'अन्य पिछड़े वर्गों' की श्रेणी में नहीं आते हैं?
(A) (A) और (B) दोनों
(B) वे जातियाँ जो 'अगड़ी' मानी जाती हैं।
(C) वे जातियाँ जो 'दलित' मानी जाती हैं।
(D) सेवा करने वाली शिल्पी जातियाँ।

75. किस घटना के बाद 'अन्य पिछड़े वर्गों' का मुद्दा केंद्रीय स्तर पर 1970 के दशक के अंत में फिर से उभरा?
(A) हरित क्रांति के बाद
(B) भारत-चीन युद्ध के बाद
(C) पहले पोखरण परमाणु परीक्षण के बाद
(D) आपातकाल के बाद जनता पार्टी के सत्ता में आने पर

76. सूची-I का सूची-II से मिलान कीजिए:
सूची I: (क्षेत्र/राज्य)
P. बंगाल
Q. बाम्बे प्रेसिडेंसी
R. झारखंड/छत्तीसगढ़
S. पश्चिमी भारत

सूची II: (संबंधित आंदोलन/समूह)
1. रानाडे का विधवा पुनर्विवाह आंदोलन
2. दलित पैंथर्स
3. राजा राममोहन राय का सती-विरोधी अभियान
4. आदिवासी राज्य का दर्जा आंदोलन

(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

77. बाल लैंगिक अनुपात में गिरावट क्या दर्शाती है?
(A) बालिकाओं के स्वास्थ्य में सुधार।
(B) लड़कों और लड़कियों के जन्म की समान दर।
(C) बालिकाओं के विरुद्ध सामाजिक पक्षपातपूर्ण रवैया।
(D) शिक्षा के प्रति जागरूकता में वृद्धि।

78. 2005 का संविधान (93वाँ संशोधन) अधिनियम किससे संबंधित था?
(A) अस्पृश्यता के पूर्ण सामाजिक उन्मूलन से।
(B) महिलाओं को पैतृक संपत्ति में अधिकार देने से।
(C) पंचायती राज में महिलाओं के अनिवार्य आरक्षण से।
(D) उच्च शिक्षण संस्थानों में अन्य पिछड़े वर्गों के आरक्षण से।

79. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सामाजिक विषमता हमेशा व्यक्तिगत प्रयासों और योग्यता में अंतर को दर्शाती है।
2. सामाजिक स्तरीकरण एक ऐसी व्यवस्था है जो समाज में लोगों का वर्गीकरण करती है।
3. पूँजी केवल आर्थिक रूप में होती है।
4. पूर्वाग्रह हमेशा नकारात्मक होता है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन गलत हैं?
(A) 1, 3 और 4
(B) 2 और 4
(C) केवल 1 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

80. 'अक्षमता को एक जैविक कमजोरी माना जाता है' - यह विचार किस मॉडल से संबंधित है?
(A) अक्षमता के आधुनिक सामाजिक मॉडल से।
(B) अक्षमता के चिकित्सा अथवा व्यक्तिगत मॉडल से।
(C) अक्षमता के व्यापक मानवाधिकार मॉडल से।
(D) अक्षमता के पारंपरिक चैरिटी मॉडल से।

81. 1850 का जातीय निर्योग्यता निवारण अधिनियम क्यों महत्वपूर्ण था?
(A) इसने अस्पृश्यता को समाप्त कर दिया।
(B) इसने सरकारी स्कूलों में दलितों को भर्ती करने की इजाजत दी।
(C) इसने विधवा पुनर्विवाह को कानूनी बना दिया।
(D) इसने बाल विवाह पर रोक लगा दी।

82. निम्नलिखित को कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:

1. 'स्त्री-पुरुष तुलना' का प्रकाशन
2. ब्रह्म समाज की स्थापना
3. 'सुल्तानाज़ ड्रीम' का प्रकाशन
4. कांग्रेस का कराची अधिवेशन

(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 3, 1, 4
(D) 3, 1, 2, 4

41. गरीबी और असक्षमता के बीच संबंध के बारे में क्या सत्य है?
(A) गरीबी का असक्षमता के होने से कोई प्रत्यक्ष कारण नहीं होता है।
(B) असक्षमता के कारण व्यक्ति कभी भी गरीबी की ओर प्रवृत्त नहीं होता।
(C) कुपोषण और खराब स्वास्थ्य सेवाएँ निर्धनों में असक्षमता का जोखिम बढ़ाती हैं।
(D) धनी राष्ट्रों में असक्षमता की दर निर्धन राष्ट्रों की तुलना में अधिक है।

42. भारत में सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था को किससे समर्थन मिलता है?
(A) विश्वास या विचारधारा से, जैसे शुद्धता और अशुद्धता की धारणाएँ
(B) केवल आर्थिक कारकों से
(C) केवल राजनीतिक कानूनों से
(D) व्यक्तिगत पसंद और योग्यता से

43. जाति व्यवस्था की 'अंतर्विवाह' प्रथा का क्या परिणाम होता है?
(A) यह जातीय विभाजनों को कमजोर करती है।
(B) यह व्यावसायिक गतिशीलता को बढ़ावा देती है।
(C) इसका जाति व्यवस्था पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
(D) यह जातीय विभाजनों को मजबूत करती है।

44. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. पूँजी के तीन मुख्य रूप होते हैं: आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक।
2. आर्थिक पूँजी को सांस्कृतिक पूँजी में बदला जा सकता है।
3. सामाजिक पूँजी का अर्थ है सामाजिक संपर्कों का जाल।
4. ये तीनों पूँजी के रूप एक दूसरे से पूरी तरह स्वतंत्र हैं।
5. एक संपन्न परिवार का व्यक्ति अपनी आर्थिक पूँजी से महँगी शिक्षा प्राप्त कर सकता है।

निम्नलिखित में से कौन-सा संयोजन सही है?
(A) 1, 2 और 3
(B) 2, 3 और 5
(C) 1, 4 और 5
(D) 2, 3 और 4

45. 'दूर से अशुद्धता' की धारणा का क्या तात्पर्य है?
(A) 'अछूत' व्यक्ति से केवल शारीरिक दूरी बनाना।
(B) 'अछूत' व्यक्ति के साथ भोजन करने से बचना।
(C) 'अछूत' व्यक्ति की केवल छाया को ही अशुद्ध मानना।
(D) 'अछूत' व्यक्ति को गाँव से बाहर रखना।

46. मंडल आयोग की नियुक्ति किस सरकार के कार्यकाल में हुई थी?
(A) कांग्रेस सरकार (आपातकाल के दौरान)
(B) संयुक्त मोर्चा सरकार
(C) राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन सरकार
(D) जनता पार्टी सरकार

47. सूची-I का सूची-II से मिलान कीजिए:
सूची I: (पुस्तक/र रचना)
P. स्त्री-पुरुष तुलना
Q. सुल्तानाज़ ड्रीम
R. दि टेक्स्टस् ऑफ द हिंदू लॉ ऑन द लॉफुलनेस ऑफ द रीमैरिज ऑफ विडोज
S. इनविजिबल Men

सूची II: (लेखक)
1. बेगम रोकेया सखावत हुसैन
2. एम. जी. रानाडे
3. राल्फ एलिसन
4. ताराबाई शिंदे

(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-4, R-3, S-2
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

48. भारत में उदारीकरण की नीतियों का, जो 1990 के दशक में अपनाई गईं, आदिवासियों पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) उनके जीवन स्तर में महत्वपूर्ण सुधार हुआ।
(B) निगमित फर्मों के लिए उन्हें विस्थापित करना और आसान हो गया।
(C) उन्हें अपने संसाधनों पर पूर्ण नियंत्रण मिल गया।
(D) उनके पारंपरिक व्यवसायों को संरक्षण मिला।

49. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन 1: 1970 के दशक में भारत में महिला आंदोलन ने 'आधुनिक' मुद्दों जैसे मीडिया में महिलाओं के प्रतिनिधित्व पर ध्यान केंद्रित किया।
कथन 2: 19वीं सदी के सुधार आंदोलन पूरी तरह से विफल रहे थे, इसलिए नए मुद्दों की आवश्यकता थी।
(A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं।
(C) केवल कथन 1 सही है।
(D) केवल कथन 2 सही है।

50. 'ट्रांसजेंडर' की अवधारणा से क्या तात्पर्य है?
(A) पुरुष से स्त्री या स्त्री से पुरुष के रूप में स्वेच्छा से बदलाव की स्थिति।
(B) जन्म से प्राप्त जेंडर पहचान को स्वीकार करना।

में अनुसूचित जातियों में अमीरी का प्रतिशत राष्ट्रीय औसत से काफी कम था।
(A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं।
(C) केवल कथन 1 सही है।
(D) केवल कथन 2 सही है।

93. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. 'अन्यथा सक्षम' शब्द अक्षमता के पारंपरिक नकारात्मक अर्थ पर प्रश्नचिह्न लगाता है।
2. भारतीय पौराणिक कथाओं में विकलांग लोगों का चित्रण हमेशा सकारात्मक रहा है।
3. 'मानसिक रूप से चुनौतीग्रस्त' जैसे शब्दों का प्रयोग पुराने नकारात्मक शब्दों के स्थान पर किया जाने लगा है।
4. विकलांगता का कारण हमेशा व्यक्ति की अपनी जैविक अक्षमता होती है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) 1 और 3
(B) 2 और 4
(C) 1, 2 और 3
(D) केवल 1

94. उपनिवेशवाद ने भारतीय अभिजात्य वर्ग को भेदभाव से कैसे अवगत कराया?
(A) ब्रिटिश औपनिवेशिक अधिकारियों ने अभिजात्य वर्ग से पूर्ण समानता का व्यवहार किया।
(B) औपनिवेशिक शासन ने भारत में व्याप्त प्राचीन जाति व्यवस्था को पूर्णतः समाप्त कर दिया।
(C) ब्रिटिश शासकों ने केवल समाज की आर्थिक रूप से निचली जातियों के साथ भेदभाव किया।
(D) भारतीय अभिजात्य वर्ग को ब्रिटिश शासकों के अपमानजनक व्यवहार का सामना करना पड़ा।

95. 'आर्थिक पूँजी' को 'सांस्कृतिक पूँजी' में बदलने का क्या उदाहरण है?
(A) एक संपन्न व्यक्ति द्वारा बच्चों को प्रतिष्ठित एवं महँगे शिक्षण संस्थानों में भेजना
(B) एक व्यक्ति द्वारा अपने प्रभावशाली संपर्कों का प्रयोग कर नई नौकरी प्राप्त करना।
(C) एक उद्यमी द्वारा अपनी व्यक्तिगत संपत्ति का निवेश कर नया व्यवसाय प्रारंभ करना।
(D) एक परोपकारी व्यक्ति द्वारा सामाजिक कल्याण हेतु बड़ी धनराशि का दान देना।

96. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सामाजिक बहिष्कार आकस्मिक नहीं बल्कि व्यवस्थित होता है।
कारण (R): यह समाज की संरचनात्मक विशेषताओं, जैसे जाति या लिंग, का परिणाम होता है और अक्सर पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

97. 2011 की जनगणना में विकलांगता संबंधी सूचना एकत्र करने के लिए क्या प्रयास किए गए?
(A) केवल विकलांग व्यक्तियों से ही सवाल पूछे गए।
(B) विकलांगता की आठ श्रेणियों के बारे में जानकारी एकत्र करने का प्रयास किया गया।
(C) केवल 'राष्ट्रीय' परिवारों को कवर किया गया।
(D) केवल 2001 की जनगणना के प्रश्नों को दोहराया गया।

98. निम्नलिखित में से कौन-सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) ताराबाई शिंदे - स्त्री-पुरुष तुलना
(B) काका कालेलकर - द्वितीय पिछड़ा वर्ग आयोग
(C) बी. पी. मंडल - प्रथम पिछड़ा वर्ग आयोग
(D) ज्योतिबा फुले - आर्य समाज

99. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में लिंग, धर्म, नृजातीयता, भाषा, जाति और विकलांगता के कारण भेदभाव होता है।
2. एक अभिजात्य वर्ग की महिला भी यौन उत्पीड़न का शिकार हो सकती है।
3. एक धार्मिक अल्पसंख्यक समूह के मध्य वर्ग के व्यक्ति को घर खोजने में कठिनाई हो सकती है।
4. सामाजिक भेदभाव केवल आर्थिक संसाधनों के विभेदीकरण का परिणाम है।
5. पूर्वाग्रह केवल अशिक्षित लोगों में पाया जाता है।

निम्नलिखित में से कौन-सा संयोजन सही है?
(A) 1, 2 और 3
(B) 2, 3 और 4
(C) 1, 4 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

100. भारत में 'अन्य पिछड़े वर्गों' का मुद्दा दक्षिणी राज्यों में उत्तरी राज्यों की तुलना में पहले क्यों महत्वपूर्ण हो गया?
(A) उत्तरी भारत के राज्यों में ऐतिहासिक रूप से कोई भी पिछड़ी जाति विद्यमान नहीं थी।
(B) तात्कालिक केंद्र सरकार ने उस समय केवल भारत के दक्षिणी राज्यों पर ध्यान दिया था।
(C) दक्षिण भारतीय राज्यों में जाति व्यवस्था उत्तर भारत की तुलना में अधिक कठोर थी।
(D) दक्षिणी राज्यों में पिछड़ी जातियों के राजनीतिक आंदोलनों का एक लंबा इतिहास रहा है।

101. दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के दौरान, अश्वेतों को जनसंख्या का 80% होने के बावजूद देश की कितनी भूमि का हिस्सा दिया गया था?

परिवर्तन नहीं आया।
(D) खनिज एवं विद्युत संसाधनों हेतु आदिवासी भूमि का बड़े पैमाने पर अधिग्रहण।

120. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन 1: सामाजिक विषमता केवल विकासशील देशों में ही पाई जाती है।
कथन 2: सामाजिक स्तरीकरण सभी समाजों की एक सार्वभौमिक विशेषता है, यद्यपि इसके रूप भिन्न हो सकते हैं।
(A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं।
(C) केवल कथन 1 सही है।
(D) केवल कथन 2 सही है।

121. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सामाजिक विषमता का अनुभव केवल गलियों और रेलवे प्लेटफॉर्म पर ही होता है।
2. लोग अक्सर गरीबी को व्यक्ति की योग्यता की कमी या परिश्रम न करने का परिणाम मानते हैं।
3. सामाजिक बहिष्कार का रोज़मर्रापन उसे स्वाभाविक बना देता है।
4. फिल्मी कहानियों में गरीब का उद्योगपति बनना एक यथार्थवादी चित्रण है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) 1 और 4
(B) 2 और 3
(C) 1, 2 और 3
(D) 2, 3 और 4

122. 'सामाजिक स्तरीकरण की कोई भी व्यवस्था पीढ़ी-दर-पीढ़ी नहीं चल सकती जब तक कि...' वाक्य को पूरा करने वाला सबसे उपयुक्त विकल्प क्या है?
(A) ...व्यापक तौर पर इसे न्यायसंगत या अपरिहार्य माना जाता हो।
(B) ...इसे राज्य द्वारा कठोर कानूनी नियमों से लागू न किया जाए।
(C) ...इसे बनाए रखने हेतु सैन्य बल का पूर्ण समर्थन न प्राप्त हो।
(D) ...समाज के सभी वर्गों के सदस्य इस व्यवस्था से संतुष्ट न हों।

123. कर्नाटक की 'दलित संघर्ष समिति' किसका उदाहरण है?
(A) केंद्र सरकार द्वारा संचालित एक विकास एजेंसी का।
(B) एक सुप्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन का।
(C) साहित्य एवं कला के क्षेत्र में कार्यरत एक संस्था का।
(D) राजनीतिक अधिकारों हेतु संघर्षरत एक समकालीन संगठन का।

124. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): जाति हिंदू धर्म तक ही सीमित नहीं रही है, बल्कि सभी प्रमुख भारतीय धर्मों में घुस आई है।
कारण (R): अन्य धर्मों में भी पाई जाने वाली पिछड़ी जातियों की समान परंपरागत व्यावसायिक पहचान और सामाजिक-आर्थिक प्रस्थिति होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

125. 1970 और 1980 के दशक में महिला आंदोलन ने किन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया?
(A) समाज में व्याप्त प्राचीन सती प्रथा और बाल विवाह की कुरीतियों पर।
(B) सार्वजनिक जीवन में महिलाओं हेतु मतदान के संवैधानिक अधिकार पर।
(C) मीडिया प्रतिनिधित्व, असमान विकास और कानून सुधार जैसे आधुनिक मुद्दे।
(D) महिलाओं के हेतु समाज में प्राथमिक और उच्च शिक्षा के प्रसार पर।

126. निम्नलिखित में से किसे "पूंजी" के एक रूप में नहीं माना जाता है?
(A) आर्थिक
(B) सांस्कृतिक
(C) सामाजिक
(D) व्यक्तिगत

127. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में सामाजिक विषमता और बहिष्कार एक आधुनिक घटना है।
2. कई लोग असमानता को 'न्यायसंगत' मानते हैं, पीड़ितों को उनकी स्थिति के लिए दोषी ठहराते हैं।
3. समाज के सबसे निम्न स्तर के लोग अक्सर सबसे ज्यादा परिश्रम करते हैं।
4. जाति, लिंग और धर्म जैसे कारक भेदभाव और बहिष्कार का कारण बनते हैं।
5. सामाजिक बहिष्कार केवल आर्थिक होता है।

निम्नलिखित में से कौन-सा संयोजन सही है?
(A) 1, 4, और 5
(B) 2, 3, और 4
(C) 1, 2, और 3
(D) 3, 4, और 5

128. वह व्यवस्था जो एक समाज में लोगों का वर्गीकरण करते हुए एक अधिक्रमित संरचना में उन्हें श्रेणीबद्ध करती है, उसे क्या कहते हैं?
(A) सामाजिक गतिशीलता
(B) सामाजिक स्तरीकरण
(C) सामाजिक एकता

111. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): फिल्म 'इकबाल' में, एक गूंगा-बहरा लड़का एक सफल क्रिकेटर बनता है।
कारण (R): यह फिल्म दर्शाती है कि 'अन्यथा सक्षम' शब्द के कई सकारात्मक अर्थ हो सकते हैं और संकल्प-शक्ति बाधाओं को दूर कर सकती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

112. 2011-12 के आंकड़ों के अनुसार, नगरीय भारत में किस धार्मिक समूह में गरीबी रेखा से नीचे की जनसंख्या का प्रतिशत सबसे कम था?
(A) हिंदू
(B) सिख
(C) ईसाई
(D) मुसलमान

113. 'सामाजिक पूँजी' को 'आर्थिक पूँजी' में बदलने का सबसे अच्छा उदाहरण क्या है?
(A) व्यक्ति द्वारा अपनी उच्च शैक्षणिक योग्यता से सम्मानजनक नौकरी पाना।
(B) प्रभावशाली संपर्कों की सहायता से उच्च आय वाली नौकरी प्राप्त करना।
(C) एक व्यक्ति द्वारा अपनी पिछली आर्थिक बचत का लाभ हेतु निवेश करना।
(D) व्यक्ति द्वारा धन का प्रयोग समाज में अत्यधिक प्रतिष्ठा प्राप्त करने हेतु करना।

114. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) एम. जी. रानाडे - आर्य समाज
(B) राजा राममोहन राय - सती-विरोधी अभियान
(C) ज्योतिबा फुले - सत्यशोधक समाज
(D) सर सैयद अहमद खान - अलीगढ़ आंदोलन

115. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सर सैयद अहमद खान ने लड़कियों की घर की चारदीवारी के भीतर शिक्षा का समर्थन किया।
2. दयानंद सरस्वती ने महिलाओं के लिए एक अलग पाठ्यक्रम की वकालत की।
3. इन दोनों सुधारकों ने महिलाओं की शिक्षा का पूर्ण रूप से विरोध किया।
4. उनके विचार आज रुढ़िवादी लग सकते हैं, लेकिन उस समय शिक्षा के अधिकार को स्वीकार करना एक कदम आगे था।
5. वे केवल पुरुषों के लिए पश्चिमी शिक्षा चाहते थे।
निम्नलिखित में से कौन-सा संयोजन सही है?
(A) 1, 2 और 4
(B) 3 और 5
(C) 2, 3 और 5
(D) 1 और 5

116. किस कानून ने यह व्यवस्था की कि केवल धर्म या जाति के परिवर्तन के कारण नागरिकों के अधिकारों को कम नहीं किया जाएगा?
(A) 1989 का अनुसूचित जाति/जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम।
(B) 1955 का अस्पृश्यता अपराध अथवा नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम।
(C) वर्ष 2005 में पारित किया गया संविधान का 93वाँ संशोधन अधिनियम।
(D) वर्ष 1850 का सुप्रसिद्ध जातीय निर्योग्यता निवारण अधिनियम।

117. 'नारीवादी' दृष्टिकोण के अनुसार, पुरुषों और स्त्रियों के बीच असमानता का मुख्य कारण क्या है?
(A) पुरुषों और स्त्रियों के मध्य विद्यमान जैविक एवं शारीरिक अंतर।
(B) प्रकृति द्वारा प्रदत्त अथवा ईश्वरीय व्यवस्था का सीधा परिणाम।
(C) सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से निर्मित संरचनाएँ एवं संस्थाएँ।
(D) प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत योग्यता और पसंद में व्याप्त अंतर।

118. सूची-I का सूची-II से मिलान कीजिए:
सूची I: (समस्या)
P. अस्पृश्यता
Q. रंगभेद
R. लैंगिक असमानता
S. आदिवासी विस्थापन
सूची II: (संबंधित स्थान/संदर्भ)
1. दक्षिण अफ्रीका
2. झारखंड
3. भारतीय जाति व्यवस्था
4. स्त्री-पुरुष तुलना
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

119. आजादी के बाद भारत सरकार की पूँजी-प्रधान औद्योगीकरण की नीति का आदिवासी क्षेत्रों पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) इन क्षेत्रों में आदिवासियों के पारंपरिक उद्योगों को विशेष प्रोत्साहन मिला।
(B) आदिवासी समुदायों को अपनी भूमि और वनों पर पूर्ण स्वायत्तता प्राप्त हुई।
(C) इस औद्योगिक नीति से इन विशेष क्षेत्रों में कोई भी

61. निम्नलिखित में से कौन-सी एक रूढ़िबद्ध धारणा (stereotype) का उदाहरण है?
(A) राम एक बुद्धिमान छात्र है।
(B) कुछ लोग कभी-कभी आलसी हो सकते हैं।
(C) 'X' समुदाय के सभी लोग चालाक होते हैं।
(D) सीता ने अपनी परीक्षा के लिए कड़ी मेहनत की।

62. सूची-I का सूची-II से मिलान कीजिए:
सूची I: (समूह)
P. दलित
Q. आदिवासी
R. अन्य पिछड़े वर्ग
S. महिला
सूची II: (प्रमुख संघर्ष/मुद्दा)
1. लैंगिक समानता और अधिकार
2. अस्पृश्यता और सामाजिक बहिष्कार
3. विस्थापन और वन अधिकार
4. आरक्षण और राजनीतिक प्रतिनिधित्व
(A) P-1, Q-4, R-3, S-2
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

63. 'अक्षमता' के संदर्भ में 'अदृश्यता' की भावना को दर्शाने के लिए किस उपन्यास का उपयोग किया जाता है?
(A) इनविजिबल Men
(B) गोदान
(C) सुल्ताना'स ड्रीम
(D) स्त्री-पुरुष तुलना

64. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन 1: 'असक्षमता' जितनी शारीरिक है उतनी ही सामाजिक भी है।
कथन 2: समाज का भौतिक और सामाजिक ढाँचा अक्सर विकलांग व्यक्तियों के लिए बाधाएँ उत्पन्न करता है, जिससे उनकी 'असक्षमता' बढ़ जाती है।
(A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
(B) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) कथन 1 सही है लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है लेकिन कथन 2 सही है।

65. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. जाति व्यवस्था में प्रदत्त स्थिति (Ascribed Status) का महत्व होता है।
2. जन्म ही व्यक्ति के व्यावसायिक अवसरों को निर्धारित करता था।
3. अंतर्विवाह प्रथा जातीय विभाजन को कमजोर करती है।
4. आधुनिक समय में जाति और व्यवसाय का संबंध पूरी तरह समाप्त हो गया है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) 1 और 2
(B) 2 और 3
(C) 3 और 4
(D) 1 और 4

66. 'दलित पैंथर्स' क्या था?
(A) पश्चिमी भारत में उभरा एक उग्र दलित युवा समूह
(B) एक साहित्यिक पत्रिका
(C) एक राजनीतिक दल
(D) एक सरकारी योजना

67. 'आंतरिक उपनिवेशवाद' की अवधारणा का प्रयोग आदिवासियों के संदर्भ में क्यों किया गया है?
(A) यह बताने के लिए कि आदिवासी स्वेच्छा से अलग-थलग रहते हैं।
(B) यह आदिवासियों द्वारा अन्य समूहों पर शासन करने की प्रक्रिया है।
(C) स्वतंत्र भारत में भी राज्य द्वारा उनके संसाधनों का दोहन दर्शाने हेतु।
(D) यह विदेशी शक्तियों द्वारा किए गए सीधे शासन को संदर्भित करता है।

68. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सामाजिक विषमता और बहिष्कार का रोज़मर्रापन उन्हें स्वाभाविक बना देता है।
कारण (R): लोग अक्सर यह मानने लगते हैं कि यह स्थिति सामान्य, प्राकृतिक और अपरिवर्तनीय है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

69. 2011-12 के आँकड़ों के अनुसार, ग्रामीण भारत में किस समुदाय में गरीबी का प्रतिशत सबसे अधिक था?
(A) अनुसूचित जातियाँ
(B) अन्य पिछड़े वर्ग
(C) अनुसूचित जनजातियाँ
(D) मुसलमान

70. 1999-2000 के आँकड़ों के अनुसार, ग्रामीण भारत में किस समुदाय में 'समृद्ध' जनसंख्या का प्रतिशत सर्वाधिक था?
(A) ईसाई
(B) सिख
(C) हिंदू
(D) अन्य उच्च जातियाँ

71. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

(D) सामाजिक आंदोलन

129. दक्षिण भारत में, 'दूर से अशुद्धता' की धारणा किस सामाजिक कुरीति की चरम सीमा को दर्शाती है?
(A) बाल विवाह
(B) अस्पृश्यता
(C) सती प्रथा
(D) देवदासी प्रथा

130. सूची-I का सूची-II से मिलान कीजिए:
सूची I: (दलित नेता/विचारक)
P. जोतिबा फुले
Q. इयोतीदास
R. पेरियार
S. अंबेडकर
सूची II: (योगदान/आंदोलन)
1. तमिलनाडु में आत्म-सम्मान आंदोलन
2. संविधान मसौदा समिति के अध्यक्ष
3. सत्यशोधक समाज की स्थापना
4. दक्षिण भारत में बौद्ध धर्म का पुनरुत्थान
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

131. 'आदिवासी' शब्द को 1930 के दशक में गढ़ने का क्या संदर्भ था?
(A) तत्कालीन सरकार द्वारा समाज में एक नई पहचान बनाने का प्रयास।
(B) विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय संगठनों द्वारा आदिम समूहों को दिया गया नाम।
(C) औपनिवेशिक सरकार और बाहरी घुसपैठ के विरुद्ध किया गया संघर्ष।
(D) एक विशेष उच्च स्तरीय अकादमिक सम्मेलन में गढ़ा गया आधुनिक शब्द।

132. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन 1: पुरुषों और स्त्रियों के बीच असमानताएँ प्राकृतिक नहीं, बल्कि सामाजिक हैं।
कथन 2: मातृवंशीय समाजों का अस्तित्व यह दर्शाता है कि पारिवारिक मुखिया और संपत्ति का उत्तराधिकार जैविक रूप से निर्धारित नहीं है।
(A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 के तर्क का समर्थन करता है।
(B) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं, लेकिन कथन 2, कथन 1 के तर्क का समर्थन नहीं करता है।
(C) केवल कथन 1 सही है।
(D) केवल कथन 2 सही है।

133. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में, न्यायालय भवन अक्सर विकलांगों के लिए दुर्गम होते हैं।
2. यह न्यायपालिका की 'अपवर्जनात्मक' नीति को दर्शाता है।
3. विकलांगता केवल ग्रामीण क्षेत्रों की समस्या है।
4. कानून बनाकर ही विकलांगों की सभी समस्याएँ हल हो गई हैं।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) 1 और 2
(B) 3 और 4
(C) 1, 2 और 4
(D) सभी सही हैं।

134. "असक्षमता तो समाज की संरचना या विचारधारा में ही निहित है, व्यक्ति की शारीरिक दशा में नहीं।" यह कथन किस अवधारणा का समर्थन करता है?
(A) अक्षमता का पारंपरिक चिकित्सा मॉडल।
(B) अक्षमता का आधुनिक सामाजिक मॉडल
(C) अक्षमता का प्राचीन धार्मिक दान मॉडल।
(D) अक्षमता का व्यक्तिगत कर्म आधारित मॉडल।

135. 'जाति' और 'प्रजाति' की तुलना में क्या समानता पाई जाती है?
(A) दोनों व्यक्तिगत उपलब्धि पर आधारित हैं।
(B) दोनों व्यवस्थाएं सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित करती हैं।
(C) दोनों केवल आर्थिक भिन्नताओं पर आधारित हैं।
(D) दोनों जन्म पर आधारित हैं और सामाजिक अधिक्रम का निर्माण करते हैं।

136. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था में, जो लोग अधिक्रम में सबसे ऊपर होते हैं, वे अक्सर इस व्यवस्था का जोरदार समर्थन करते हैं।
कारण (R): जिन्हें अधिक सामाजिक विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं, वे अपनी स्थिति को बनाए रखना चाहते हैं और उसे न्यायसंगत ठहराते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

137. 'दलित पैंथर्स' नाम का उदय किस घटना के दौरान व्यापक रूप से हुआ?
(A) 1947 में भारत की स्वतंत्रता के दौरान।
(B) 1990 में मंडल आयोग के कार्यान्वयन के दौरान।
(C) 1970 के दशक में मुंबई में हुए जातीय दंगों के दौरान।
(D) 2002 के गुजरात दंगों के दौरान।

के कारण असमान व्यवहार किया जाता है। यह व्यक्तियों को रोजगार, शिक्षा या आवास जैसे सामाजिक अवसरों से वंचित करता है। जहाँ पूर्वाग्रह मन की एक धारणा है, वहीं भेदभाव एक वास्तविक क्रिया है जो लोगों के अधिकारों और समाज में उनकी स्थिति को प्रभावित करती है।

12. (A) 1, 4, 2, 3
काका कालेलकर आयोग की रिपोर्ट 1953 में प्रस्तुत की गई थी। अनुसूचित जाति और जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम 1989 में पारित हुआ। मंडल आयोग की रिपोर्ट का कार्यान्वयन 1990 के दशक के आरंभ में हुआ। अंततः संविधान का 93वाँ संशोधन अधिनियम 2005 में आया। यह कालानुक्रमिक क्रम भारत में सामाजिक न्याय और आरक्षण नीतियों के क्रमिक विकास और उनके ऐतिहासिक महत्व को दर्शाता है।

13. (C) यह व्यक्ति की इच्छा पर निर्भर करता है।
सामाजिक अपवर्जन या बहिष्कार व्यक्ति की अपनी इच्छा पर निर्भर नहीं करता, बल्कि यह समाज की संरचनात्मक विशेषताओं का परिणाम है। यह एक व्यवस्थित प्रक्रिया है जो लोगों को उन अवसरों और संसाधनों से वंचित करती है जो बहुसंख्यक आबादी के लिए खुले होते हैं। व्यक्ति अक्सर अपनी मर्जी के खिलाफ मुख्यधारा से बाहर कर दिया जाता है, जिससे यह एक अनिवार्य सामाजिक प्रक्रिया बन जाती है।

14. (D) व्यक्तियों का उनके व्यवसाय तथा प्रस्थिति के आधार पर वर्गीकरण।
ऐतिहासिक रूप से भारतीय जाति व्यवस्था का मुख्य आधार श्रम का विभाजन और व्यवसायों का अनुवांशिक वर्गीकरण रहा है। प्रत्येक जाति एक विशिष्ट व्यवसाय से जुड़ी होती थी, जो व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति और शुद्धता के स्तर को निर्धारित करती थी। यह व्यवस्था जन्म पर आधारित थी, जहाँ व्यक्ति का व्यवसाय और समाज में उसका स्थान उसके परिवार की जातीय पहचान से तय होता था।

15. (B) 2 और 3
सामाजिक स्तरीकरण समाज की एक मूलभूत विशेषता है जो व्यक्तियों के बीच केवल प्राकृतिक भिन्नता नहीं बल्कि संरचनात्मक असमानता को दर्शाती है। यह व्यवस्था पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनी रहती है क्योंकि यह उत्तराधिकार और सामाजिक मानदंडों के माध्यम से हस्तांतरित होती है। इसे धार्मिक विश्वासों या विचारधाराओं का प्रबल समर्थन प्राप्त होता है, और यह लगभग सभी जटिल समाजों में किसी न न किसी रूप में अवश्य पाया जाता है।

16. (B) अधिकारों एवं मान-मर्यादा हेतु संघर्ष की एक सामूहिक चेतना।
'दलित' शब्द का प्रयोग उन समूहों द्वारा किया जाता है जिन्होंने ऐतिहासिक रूप से दमन और छुआछूत का सामना किया है। यह शब्द केवल एक पहचान नहीं, बल्कि शोषण के विरुद्ध राजनीतिक और सामाजिक चेतना का प्रतीक है। यह शब्द स्वाभिमान, समानता और मान-मर्यादा प्राप्त करने के लिए किए गए लंबे संघर्ष और एकजुटता की भावना को सशक्त रूप से समाज के समक्ष व्यक्त करता है।

17. (B) अपवर्जन, अनादर एवं अधीनता, और शोषण
अस्पृश्यता के तीन मुख्य आयामों में अपवर्जन, अनादर एवं अधीनता, और शोषण शामिल हैं। अपवर्जन के तहत अछूतों को धार्मिक और सामाजिक गतिविधियों से बाहर रखा जाता है। अनादर के माध्यम से उन्हें अपमानजनक व्यवहार सहन करने के लिए विवश किया जाता है। शोषण के अंतर्गत उनसे बिना भुगतान या कम मजदूरी पर बेगार कराई जाती है। ये तीनों आयाम मिलकर अस्पृश्यता की क्रूरता को दर्शाते हैं।

18. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
जातीय निर्योग्यता निवारण अधिनियम 1850 में ब्रिटिश काल के दौरान बनाया गया था। प्रथम पिछड़े वर्ग आयोग की स्थापना 1953 में काका कालेलकर की अध्यक्षता में हुई थी। अनुसूचित जाति और जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम 1989 में पारित हुआ। संविधान का 93वाँ संशोधन 2005 में आया, जिसने उच्च शिक्षण संस्थानों में ओबीसी आरक्षण का मार्ग प्रशस्त किया। यह मिलान सामाजिक सुधारों के इतिहास को स्पष्ट करता है।

19. (C) महात्मा गाँधी
'हरिजन' शब्द का अर्थ है 'ईश्वर की संतान'। इस शब्द को 1930 के दशक में महात्मा गाँधी ने अस्पृश्य मानी जाने वाली जातियों के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण बदलने के लिए लोकप्रिय बनाया था। गाँधीजी का उद्देश्य इन समूहों को समाज की मुख्यधारा में सम्मानजनक स्थान दिलाना और हिंदू धर्म के भीतर सुधार लाना था। यद्यपि बाद में दलित समूहों ने अपनी स्वतंत्र पहचान के लिए 'दलित' शब्द को प्राथमिकता दी।

20. (C) केवल कथन 1 सही है।
आधुनिक समय में शहरीकरण और औद्योगिक विकास के कारण जाति और व्यवसाय के बीच का पारंपरिक संबंध काफी ढीला हुआ है, जिससे पहला कथन सत्य है। हालाँकि, जाति और वर्ग का सहसंबंध पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है; आज भी उच्च जातियों का प्रभुत्व उच्च आय वाले व्यवसायों में अधिक है। अतः दूसरा कथन गलत है क्योंकि आर्थिक विषमताएँ अभी भी जातीय श्रेणियों के साथ गहराई से जुड़ी हुई हैं।

21. (C) अल्पसंख्यक श्वेतों का राजनीतिक नियंत्रण सुनिश्चित करना।
दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की नीति का मुख्य उद्देश्य अल्पसंख्यक श्वेत आबादी के राजनीतिक और आर्थिक वर्चस्व को बनाए रखना था। इस व्यवस्था के तहत अश्वेतों को नागरिक अधिकारों से वंचित किया गया और उन्हें अलग-थलग बस्तियों में रहने के लिए मजबूर किया गया। यह नस्लीय अलगाव की एक क्रूर व्यवस्था थी, जिसका उद्देश्य संसाधनों पर श्वेतों का पूर्ण नियंत्रण सुनिश्चित करना और अश्वेत प्रतिरोध को दबाना था।

(A) अक्षमता को एक जैविक कमजोरी माना जाता है।
(B) अक्षम व्यक्ति को हमेशा शिकार यानी पीड़ित व्यक्ति के रूप में देखा जाता है।
(C) उपरोक्त सभी
(D) निर्योग्यता का मूल भाव यह दर्शाता है कि निर्योग्य व्यक्तियों को सहायता की आवश्यकता है।

148. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): फिल्म देखने या उपन्यास पढ़ने से पूर्वाग्रहों को समझा जा सकता है।
कारण (R): फिल्में और उपन्यास अक्सर समाज में मौजूद रुढ़िबद्ध धारणाओं और पूर्वाग्रहों को दर्शाते या चुनौती देते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

149. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सामाजिक स्तरीकरण समाज में व्यापक रूप से पाई जाने वाली एक व्यवस्था है।
2. तकनीकी रूप से अधिक उन्नत समाजों में सामाजिक संसाधन अधिक समान रूप से बँटे होते हैं।
3. जाति व्यवस्था में जन्म व्यावसायिक अवसरों को निर्धारित करता है।
4. सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था बिना किसी वैचारिक समर्थन के भी चल सकती है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) 1 और 3
(B) 2 और 4
(C) 1, 2 और 3
(D) 2, 3 और 4

150. सामाजिक विषमता और बहिष्कार के संदर्भ में कौन-सा निष्कर्ष सर्वाधिक उपयुक्त है?
(A) सामाजिक विषमता एक पूर्णतः प्राकृतिक, जैविक और अपरिवर्तनीय सत्य है।
(B) सामाजिक संरचनाओं द्वारा निर्मित विषमता जिसके विरुद्ध निरंतर संघर्ष होते हैं।
(C) केवल कठोर कानूनी प्रावधानों द्वारा समाज की सभी विषमताओं को नष्ट करना।
(D) आधुनिक भारत के किसी भी क्षेत्र में अब कोई सामाजिक विषमता शेष नहीं है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
सामाजिक स्तरीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिससे समाज में लोगों को एक अधिक्रमिक संरचना में वर्गीकृत किया जाता है। यह केवल आर्थिक असमानताओं पर आधारित नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक प्रतिष्ठा, शक्ति और संसाधनों तक पहुँच के विभिन्न आयाम शामिल होते हैं। फ्रांसीसी समाजशास्त्री पियरे बोरद्यू ने इस प्रक्रिया को समझने के लिए तीन प्रकार की पूँजी की अवधारणा प्रस्तुत की: आर्थिक पूँजी (धन और संपत्ति), सांस्कृतिक पूँजी (ज्ञान, कौशल, शैक्षणिक योग्यताएँ), और सामाजिक पूँजी (सामाजिक नेटवर्क और संबंध)। बोरद्यू का तर्क है कि ये पूँजी के रूप आपस में परिवर्तनीय होते हैं। उदाहरण के लिए, एक उच्च आर्थिक पूँजी वाला परिवार अपने बच्चों को प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थानों में भेजकर सांस्कृतिक पूँजी अर्जित करने में मदद कर सकता है। इसी तरह, प्रभावशाली सामाजिक संपर्कों (सामाजिक पूँजी) का उपयोग अच्छी नौकरी या व्यावसायिक अवसर प्राप्त करने के लिए किया जा सकता है, जो अंततः आर्थिक पूँजी में परिवर्तित हो जाता है। यह स्तरीकरण पीढ़ी-दर-पीढ़ी बना रहता है क्योंकि विशेषाधिकार प्राप्त समूह अपनी संचित पूँजी को अपने बच्चों तक पहुँचाते हैं, जिससे सामाजिक गतिशीलता की संभावनाएँ सीमित हो जाती हैं। इस प्रकार, सामाजिक विषमता केवल व्यक्तिगत योग्यता या प्रयास की कमी का परिणाम नहीं है, बल्कि यह एक संरचनात्मक वास्तविकता है जो पूँजी के इन विभिन्न रूपों के असमान वितरण से उत्पन्न होती है और समाज द्वारा इसे वैध ठहराया जाता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. पियरे बोरद्यू के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सा पूँजी का एक रूप नहीं है?
(A) आर्थिक पूँजी
(B) राजनीतिक पूँजी
(C) सांस्कृतिक पूँजी
(D) सामाजिक पूँजी

152. स्रोत के अनुसार, पूँजी के विभिन्न रूपों की 'परिवर्तनीयता' का क्या अर्थ है?
(A) पूँजी का एक रूप दूसरे रूप को प्राप्त करने या उसमें बदलने में मदद कर सकता है।
(B) पूँजी के सभी रूप अंततः आर्थिक पूँजी में बदल जाते हैं।
(C) सांस्कृतिक पूँजी सबसे महत्वपूर्ण पूँजी है।
(D) सामाजिक पूँजी का मूल्य निश्चित नहीं होता है।

153. एक धनी व्यवसायी अपने बेटे को विदेश के एक शीर्ष विश्वविद्यालय में पढ़ने के लिए भेजता है। यह किस प्रक्रिया का उदाहरण है?
(A) आर्थिक पूँजी का सामाजिक पूँजी में परिवर्तन।
(B) सामाजिक पूँजी का सांस्कृतिक पूँजी में परिवर्तन।
(C) आर्थिक पूँजी का सांस्कृतिक पूँजी में परिवर्तन।
(D) सांस्कृतिक पूँजी का आर्थिक पूँजी में परिवर्तन।

154. स्रोत यह क्यों तर्क देता है कि सामाजिक स्तरीकरण पीढ़ी-दर-पीढ़ी बना रहता है?
(A) क्योंकि गरीब लोग कड़ी मेहनत नहीं करते हैं।
(B) क्योंकि सरकारें सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहित नहीं करती हैं।

वर्गों को जागरूक करने और उन्हें उनके अधिकार दिलाने का कार्य किया।

33. (B) 2 और 3
राजा राममोहन राय ने हिंदू शास्त्रों और मानवतावादी तर्कों के मेल से सती प्रथा का कड़ा विरोध किया। ज्योतिबा फुले ने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। 19वीं सदी के सुधारकों ने पश्चिमी विचारों के साथ-साथ भारतीय परंपराओं का भी प्रयोग किया। सर सैयद अहमद खान ने लड़कियों की शिक्षा का पूर्ण विरोध नहीं किया था, बल्कि वे इसे एक सीमित दायरे में रहकर प्रोत्साहित करने के पक्षधर थे।

34. (A) ताराबाई शिंदे
'स्त्री-पुरुष तुलना' नामक पुस्तक 1882 में ताराबाई शिंदे द्वारा लिखी गई थी। यह भारतीय साहित्य की एक अत्यंत महत्वपूर्ण कृति है जिसमें पुरुष प्रधान समाज के दोहरे मापदंडों और महिलाओं के प्रति होने वाले भेदभाव की तीखी आलोचना की गई है। शिंदे ने इस पुस्तक के माध्यम से समाज में महिलाओं की अधीनस्थ स्थिति पर प्रश्न उठाए और उनके अधिकारों और मानवीय गरिमा के पक्ष में सशक्त तर्क प्रस्तुत किए।

35. (C) एक ऐसी काल्पनिक दुनिया जहाँ लिंग भूमिकाएँ उलट जाती हैं।
बेगम रोकेया सखावत हुसैन द्वारा लिखित 'सुल्तानाज़ ड्रीम' एक प्रभावशाली काल्पनिक कथा है। इसमें एक 'नारीस्तान' नामक दुनिया का चित्रण किया गया है जहाँ महिलाएँ शासन करती हैं और पुरुष पर्दे में रहते हैं। यह कहानी व्यंग्य के माध्यम से समाज में प्रचलित लिंग भूमिकाओं और पितृसत्तात्मक व्यवस्था पर चोट करती है। यह कृति महिलाओं की बौद्धिक क्षमता और शिक्षा के महत्व को बहुत ही रोचक ढंग से रेखांकित करती है।

36. (D) संपत्ति का अधिकार केवल पुरुषों तक सीमित।
1931 के कराची अधिवेशन में कांग्रेस ने घोषणा की थी कि जाति, पंथ या लिंग के आधार पर कानून के समक्ष कोई भेदभाव नहीं होगा। इसमें सार्वजनिक रोजगार में लिंग के आधार पर किसी भी अयोग्यता को अस्वीकार किया गया और सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार का समर्थन किया गया। संपत्ति का अधिकार केवल पुरुषों तक सीमित रखने जैसी कोई बात इसमें शामिल नहीं थी; इसके विपरीत, यह घोषणापत्र आधुनिक समानता के सिद्धांतों पर आधारित था।

37. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
'अन्यथा सक्षम' व्यक्ति केवल अपनी शारीरिक बाधाओं के कारण अक्षम नहीं होते, बल्कि समाज की बनावट भी उन्हें अक्षम बनाने में बड़ी भूमिका निभाती है। यदि सार्वजनिक स्थान, परिवहन और सूचना के स्रोत उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं बने हैं, तो समाज उन्हें पूर्ण भागीदारी से रोकता है। अतः अक्षमता केवल एक व्यक्तिगत चिकित्सीय स्थिति नहीं है, बल्कि यह एक गंभीर सामाजिक और संरचनात्मक बाधा का परिणाम भी है।

38. (B) इसे पिछले कर्मों का फल या दुर्भाग्य का परिणाम माना जाता है।
पारंपरिक भारतीय समाज में अक्षमता के प्रति एक धार्मिक और नियतिवादी दृष्टिकोण व्याप्त रहा है। इसे अक्सर व्यक्ति के पिछले जन्मों के कर्मों का फल, दैवीय कोप या दुर्भाग्य का परिणाम माना जाता रहा है। यह सोच अक्षम व्यक्ति के प्रति सहानुभूति या दया तो पैदा करती है, लेकिन उनके अधिकारों और समाज में उनकी समान भागीदारी के आधुनिक विचार को पूरी तरह से दबा देती है, जिससे उनका सामाजिक बहिष्कार बढ़ता है।

39. (D) अन्यथा सक्षम
'अन्यथा सक्षम' (differently abled) शब्द विकलांगता के प्रति एक सकारात्मक और आधुनिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है। यह शब्द इस विचार पर बल देता है कि इन व्यक्तियों में अक्षमता नहीं, बल्कि कार्य करने के अलग तरीके और क्षमताएँ होती हैं। यह पुराने नकारात्मक शब्दों जैसे 'अपंग' या 'बेचारा' को प्रतिस्थापित करता है और विकलांग व्यक्तियों के स्वाभिमान, उनकी विशिष्ट प्रतिभाओं और समाज में उनके योगदान की गरिमा को स्वीकार करता है।

40. (A) 2, 1, 3, 4
ब्रह्म समाज की स्थापना 1828 में हुई थी। ताराबाई शिंदे की 'स्त्री-पुरुष तुलना' 1882 में प्रकाशित हुई। बेगम रोकेया की 'सुल्तानाज़ ड्रीम' 1905 में सामने आई। कांग्रेस का कराची अधिवेशन 1931 में आयोजित हुआ था। यह कालक्रम भारत में समाज सुधार आंदोलनों और महिलाओं के अधिकारों के प्रति बढ़ती चेतना के विभिन्न चरणों को दर्शाता है, जो समय के साथ और अधिक मुखर और विस्तृत होते गए।

41. (C) कुपोषण और खराब स्वास्थ्य सेवाएँ निर्धनों में असक्षमता का जोखिम बढ़ाती हैं।
गरीबी और असक्षमता के बीच एक गहरा और प्रत्यक्ष संबंध है। निर्धन परिवारों में पर्याप्त पोषण की कमी, असुरक्षित कार्य परिस्थितियाँ और आधुनिक स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँच का अभाव असक्षमता की घटनाओं को बढ़ा देता है। साथ ही, घर में किसी सदस्य के अक्षम होने से परिवार पर आर्थिक बोझ बढ़ता है, जो उन्हें गरीबी के दुष्चक्र में और अधिक धकेल देता है। इस प्रकार, गरीबी और अक्षमता एक-दूसरे को पुष्ट करते हैं।

42. (A) विश्वास या विचारधारा से, जैसे शुद्धता और अशुद्धता की धारणाएँ
भारत में सामाजिक स्तरीकरण, विशेष रूप से जाति व्यवस्था, को धार्मिक विश्वासों और वैचारिक आधारों से प्रबल समर्थन मिलता है। इसमें शुद्धता और अशुद्धता की धारणाएँ अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जो जातियों के बीच ऊँच-नीच के पदानुक्रम को समाज में न्यायसंगत ठहराती हैं। यह विचारधारा पीढ़ियों से लोगों के मन में गहराई से बैठी हुई है, जिससे यह व्यवस्था कानून या केवल आर्थिक कारकों के बिना भी समाज में निरंतर बनी रहती है।

महज़ छुआछूत की एक प्रथा नहीं है, बल्कि यह एक जटिल सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक व्यवस्था है जो बहिष्कार, अधीनता और शोषण के तीन स्तंभों पर टिकी है और जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी लाखों लोगों को मानवीय गरिमा से वंचित करती है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. अस्पृश्यता की प्रथा किस मूल विचारधारा पर आधारित है?
(A) आर्थिक प्रतिस्पर्धा
(B) राजनीतिक मतभेद
(C) शैक्षिक योग्यता
(D) शुद्धता और प्रदूषण

162. स्रोत के अनुसार, अस्पृश्यता के आर्थिक परिणाम क्या हैं?
(A) इससे 'अछूत' समुदायों को आर्थिक स्वतंत्रता मिली।
(B) उन्हें भूमि स्वामित्व और शिक्षा जैसे संसाधनों से वंचित किया गया, जिससे वे गरीब बने रहे।
(C) उन्हें केवल उच्च वेतन वाले व्यवसायों में काम करने की अनुमति थी।
(D) इसका कोई विशेष आर्थिक परिणाम नहीं हुआ।

163. अनुच्छेद में वर्णित अस्पृश्यता के तीन स्तंभ कौन से हैं?
(A) शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार
(B) जाति, धर्म और लिंग
(C) बहिष्कार, अधीनता और शोषण
(D) धन, शक्ति और प्रतिष्ठा

164. स्रोत यह क्यों कहता है कि अस्पृश्यता केवल एक सामाजिक पूर्वाग्रह नहीं है?
(A) क्योंकि यह कानून द्वारा समर्थित है।
(B) क्योंकि यह केवल ग्रामीण क्षेत्रों में मौजूद है।
(C) क्योंकि यह केवल कुछ लोगों द्वारा ही मानी जाती है।
(D) क्योंकि यह एक गहरी संरचनात्मक व्यवस्था है जो जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है।

165. "यह आर्थिक शोषण और सामाजिक अधीनता का एक चक्र बनाता है, जहाँ उनकी दयनीय स्थिति को ही उनकी 'अशुद्धता' के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।" इस वाक्य का क्या अर्थ है?
(A) अस्पृश्यता के कारण हुई गरीबी को ही यह सिद्ध करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है कि वे स्वाभाविक रूप से 'अशुद्ध' हैं।
(B) अमीर लोग हमेशा गरीब लोगों को अशुद्ध मानते हैं।
(C) आर्थिक स्थिति का शुद्धता की अवधारणा से कोई लेना-देना नहीं है।
(D) सामाजिक अधीनता हमेशा आर्थिक शोषण की ओर ले जाती है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारत में आदिवासी या जनजातीय समुदायों के संघर्षों को अक्सर 'आंतरिक उपनिवेशवाद' की अवधारणा के माध्यम से समझा जा सकता है। यह अवधारणा बताती है कि कैसे एक स्वतंत्र राष्ट्र के भीतर ही, एक प्रभावी समूह दूसरे (अक्सर स्वदेशी) समूह के संसाधनों का शोषण करता है, ठीक उसी तरह जैसे एक औपनिवेशिक शक्ति किसी बाहरी क्षेत्र का करती है। स्वतंत्रता के बाद, भारत ने राष्ट्रीय विकास और औद्योगीकरण के लिए एक महत्वाकांक्षी मार्ग अपनाया। इस विकास मॉडल के लिए बड़े पैमाने पर प्राकृतिक संसाधनों, विशेष रूप से खनिज, जल और वन संपदा की आवश्यकता थी। विडंबना यह है कि भारत के अधिकांश प्राकृतिक संसाधन आदिवासी आबादी वाले क्षेत्रों में केंद्रित थे। परिणामस्वरूप, बड़े बांधों, खनन परियोजनाओं और औद्योगिक संयंत्रों के नाम पर राज्य और कॉर्पोरेट हितों ने इन क्षेत्रों में प्रवेश किया। इस प्रक्रिया में, लाखों आदिवासियों को उनकी पैतृक भूमि, जंगलों और आजीविका के स्रोतों से विस्थापित कर दिया गया, अक्सर बिना पर्याप्त मुआवजे या पुनर्वास के। 'राष्ट्रीय हित' के नाम पर किए गए इस विस्थापन ने आदिवासियों को उनके अपने ही घर में अजनबी बना दिया, उनकी संस्कृतियों को नष्ट कर दिया और उन्हें गरीबी और शोषण के चक्र में धकेल दिया। इस प्रकार, राज्य द्वारा प्रायोजित विकास की प्रक्रिया उनके लिए विकास के बजाय विनाश का कारण बन गई, जो आंतरिक उपनिवेशवाद के तर्क को पुष्ट करती है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. 'आंतरिक उपनिवेशवाद' की अवधारणा क्या दर्शाती है?
(A) एक देश का दूसरे देश पर सैन्य नियंत्रण।
(B) एक राष्ट्र के भीतर एक समूह द्वारा दूसरे समूह के संसाधनों का शोषण।
(C) विभिन्न देशों के बीच व्यापारिक संबंध।
(D) सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।

167. स्रोत के अनुसार, स्वतंत्रता के बाद भारत की विकास परियोजनाओं का आदिवासियों पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) उन्होंने आदिवासियों के जीवन स्तर में बहुत सुधार किया।
(B) उन्होंने आदिवासियों को उनकी भूमि से विस्थापित किया और उनकी आजीविका को नष्ट कर दिया।
(C) उन्होंने आदिवासी संस्कृति और परंपराओं को संरक्षित करने में मदद की।
(D) उन्होंने आदिवासियों को राजनीतिक शक्ति में बराबर का भागीदार बनाया।

168. आदिवासियों के विस्थापन को अक्सर किस आधार पर उचित ठहराया गया?
(A) 'राष्ट्रीय हित' और आर्थिक विकास के नाम पर।
(B) उनकी सांस्कृतिक पिछड़ापन के आधार पर।
(C) जनसंख्या नियंत्रण की आवश्यकता के आधार पर।
(D) उनकी अपनी सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए।

169. अनुच्छेद के अनुसार, भारत के अधिकांश प्राकृतिक संसाधन कहाँ केंद्रित हैं?

138. शहरी गंदी बस्तियों में रहने वाले माता-पिता के लिए शिक्षा का क्या महत्व होता है?
(A) शिक्षा को मुख्य रूप से रोजगार की दुनिया से संबंधित होना चाहिए।
(B) इन क्षेत्रों के निवासियों हेतु शिक्षा का कोई वास्तविक महत्व नहीं है।
(C) यहाँ शिक्षा केवल ललित कला और साहित्य पर ही केंद्रित होनी चाहिए।
(D) शिक्षा का प्रबंध केवल उन क्षेत्रों के विकलांग बच्चों हेतु होना चाहिए।

139. निम्नलिखित में से कौन सा भारत में जातीय विषमता को दूर करने के लिए राज्य द्वारा उठाया गया एक कदम नहीं है?
(A) आरक्षण की नीति।
(B) अस्पृश्यता उन्मूलन कानून।
(C) अनुसूचित जाति/जनजाति अत्याचार निवारण अधिनियम।
(D) सामाजिक बहिष्कार को प्रोत्साहित करना।

140. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सामाजिक स्तरीकरण व्यक्तियों के बीच की विभिन्नता का प्रकार्य ही नहीं बल्कि समाज की एक विशिष्टता है।
2. सामाजिक स्तरीकरण पीढ़ी-दर-पीढ़ी बना रहता है।
3. सामाजिक स्तरीकरण को विश्वास या विचारधारा द्वारा समर्थन मिलता है।
4. उन्नत समाजों में सामाजिक स्तरीकरण समाप्त हो जाता है।
5. भारत में जाति व्यवस्था को कर्मकांडीय शुद्धता के आधार पर न्यायोचित ठहराया जाता है।

निम्नलिखित में से कौन-सा संयोजन सही है?
(A) 1, 2, 3 और 4
(B) 2, 3, 4 और 5
(C) 1, 2, 3 और 5
(D) 1, 3, 4 और 5

141. 'सामाजिकता' के वे तीन अर्थ क्या हैं जिनके आधार पर विषमता को 'सामाजिक' कहा जाता है?
(A) समाज में व्याप्त आर्थिक, राजनीतिक और व्यापक सांस्कृतिक कारक।
(B) व्यक्ति के पूर्णतः व्यक्तिगत, क्षणिक, और आकस्मिक अनुभव।
(C) समूह-संबद्ध, गैर-आर्थिक, और व्यवस्थित संरचनात्मक स्वरूप।
(D) समाज के ऐतिहासिक, भौगोलिक, और मनोवैज्ञानिक प्रभाव।

142. सच्चर समिति की रिपोर्ट किस समुदाय की सामाजिक-आर्थिक स्थिति पर केंद्रित थी?
(A) सिख समुदाय
(B) ईसाई समुदाय
(C) जैन समुदाय
(D) मुस्लिम समुदाय

143. सूची-I का सूची-II से मिलान कीजिए:
सूची I: (अवधि)
P. 1930 का दशक
Q. 1953
R. 1970 का दशक
S. 1990

सूची II: (घटना)
1. प्रथम पिछड़े वर्ग आयोग की रिपोर्ट
2. मंडल आयोग की रिपोर्ट का कार्यान्वयन
3. गाँधीजी द्वारा 'हरिजन' शब्द का प्रयोग
4. दलित पैंथर्स का उदय

(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-4, S-1
(D) P-1, Q-3, R-2, S-4

144. 'असक्षमता' और गरीबी के बीच एक अटूट संबंध क्यों है?
(A) समाज के लगभग सभी निर्धन श्रेणी के लोग अक्षम ही होते हैं।
(B) कुपोषण और खराब स्वास्थ्य सेवाएँ गरीबों में इसका जोखिम बढ़ाती हैं।
(C) वर्तमान सरकार केवल धनी अक्षम व्यक्तियों की ही वित्तीय सहायता करती है।
(D) असक्षमता और गरीबी के मध्य वास्तव में कोई भी प्रत्यक्ष संबंध नहीं है।

145. जाति और जनजाति की व्यवस्थाओं के संदर्भ में 'न्यायसंगत सिद्ध करने' से क्या तात्पर्य है?
(A) यह व्यवस्था समाज के सभी वर्गों हेतु वास्तव में न्यायपूर्ण होती है।
(B) विचारधारा के माध्यम से व्यवस्था को उचित या प्राकृतिक दर्शाना।
(C) यह व्यवस्था कानूनी रूप से राष्ट्र के सभी नागरिकों हेतु समान है।
(D) यह व्यवस्था समाज के सभी वर्गों को समान अवसर प्रदान करती है।

146. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
कथन 1: वर्तमान में जाति और आर्थिक स्थिति का सहसंबंध कमजोर हुआ है।
कथन 2: आज उच्च जातियों में कोई गरीब व्यक्ति नहीं है और निम्न जातियों में कोई अमीर व्यक्ति नहीं है।
(A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं।
(C) केवल कथन 1 सही है।
(D) केवल कथन 2 सही है।

147. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'अन्यथा सक्षम' (differently abled) की अवधारणा के मूल विचार का खंडन करता है?

ANSWERS

1. (B) आर्थिक पूँजी
भौतिक संपत्ति और आय को आर्थिक पूँजी के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। यह पूँजी का वह रूप है जिसे मुद्रा में सीधे परिवर्तित किया जा सकता है और संपत्ति के अधिकारों के रूप में संस्थागत बनाया जा सकता है। यह समाज में व्यक्ति की क्रय शक्ति और भौतिक संसाधनों तक पहुँच को निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

2. (A) यह केवल व्यक्तिगत प्राकृतिक भिन्नता का परिणाम है।
सामाजिक विषमता केवल व्यक्तिगत प्राकृतिक भिन्नताओं का परिणाम नहीं है, बल्कि यह उस सामाजिक व्यवस्था द्वारा निर्मित होती है जिसमें व्यक्ति रहते हैं। यह संसाधनों तक असमान पहुँच की एक व्यवस्थित और संरचनात्मक पद्धति है। समाज व्यक्तियों को समूहों में वर्गीकृत करता है, जिससे कुछ को अधिक विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं जबकि अन्य वंचित रह जाते हैं।

3. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
आर्थिक पूँजी भौतिक संपत्ति और धन से संबंधित है। सांस्कृतिक पूँजी का अर्थ प्रतिष्ठा और शैक्षिक योग्यता से है। सामाजिक पूँजी सामाजिक संपर्कों और नेटवर्क के जाल को दर्शाती है। सामाजिक स्तरीकरण समाज में लोगों के पदानुक्रमित वर्गीकरण की प्रक्रिया है। ये सभी अवधारणाएँ मिलकर समाज में शक्ति और संसाधनों के वितरण की जटिल संरचना को पूर्णतः स्पष्ट करती हैं।

4. (D) पूर्वनिर्णय
'पूर्वाग्रह' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'पूर्वनिर्णय' होता है। यह किसी समूह के सदस्यों के बारे में पहले से बनाई गई एक राय या धारणा है जो वास्तविक तथ्यों या अनुभव पर आधारित नहीं होती है। पूर्वाग्रह अक्सर सुनी-सुनाई बातों पर आधारित होते हैं और नए साक्ष्यों के मिलने के बावजूद इन्हें बदलना बहुत कठिन और चुनौतीपूर्ण कार्य होता है।

5. (C) केवल कथन 1 सही है।
पूर्वाग्रह सकारात्मक और नकारात्मक दोनों प्रकार के हो सकते हैं, इसलिए प्रथम कथन सत्य है। रूढ़िबद्ध धारणाएँ केवल नकारात्मक समूहों के बारे में नहीं होतीं, बल्कि वे किसी भी समूह के बारे में कठोर और अपरिवर्तनीय छवियाँ हो सकती हैं। अतः दूसरा कथन असत्य है क्योंकि रूढ़ियाँ अक्सर सकारात्मक गुणों का अतिशयोक्तिपूर्ण चित्रण भी कर सकती हैं जो वास्तविकता से भिन्न हों।

6. (A) 1 और 3
सामाजिक विषमता व्यक्ति के बजाय समूहों से संबंधित होती है और यह समाज की एक व्यवस्थित और संरचनात्मक विशेषता है। यह केवल आर्थिक नहीं होती, बल्कि इसके सामाजिक और सांस्कृतिक आयाम भी होते हैं। व्यक्तिगत योग्यता का इससे संबंध हो सकता है, लेकिन यह मुख्य रूप से समाज में संसाधनों के असमान वितरण की संरचनात्मक व्यवस्था पर आधारित होती है।

7. (D) कठिन परिश्रम और प्राप्त पुरस्कार की विसंगति।
यह कहावत इस सामाजिक वास्तविकता को दर्शाती है कि समाज में कठिन परिश्रम और उससे प्राप्त होने वाले पुरस्कारों के बीच अक्सर गहरा विरोधाभास होता है। समाज के सबसे निचले स्तर पर रहने वाले लोग प्रायः सबसे अधिक शारीरिक श्रम करते हैं, फिर भी उन्हें सबसे कम पारिश्रमिक प्राप्त होता है। यह सामाजिक संरचना में व्याप्त गहरी विषमता का एक सटीक चित्रण है।

8. (A) अपरिवर्तनीय, कठोर और सुनी-सुनाई बातों पर
रुढ़िबद्ध धारणाएँ किसी विशेष समूह के बारे में एक निश्चित, कठोर और अपरिवर्तनीय छवि होती हैं। ये अक्सर वैज्ञानिक तथ्यों या व्यक्तिगत अनुभवों के बजाय सुनी-सुनाई बातों और सामाजिक पूर्वाग्रहों पर आधारित होते हैं। ऐसी धारणाएँ पूरे समूह को एक ही श्रेणी में रख देती हैं और व्यक्तिगत भिन्नताओं को पूरी तरह से अनदेखा कर देती हैं, जिससे सामाजिक भेदभाव बढ़ता है।

9. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
सामाजिक स्तरीकरण की एक मुख्य विशेषता इसकी पीढ़ी-दर-पीढ़ी निरंतरता है। व्यक्ति की सामाजिक स्थिति काफी हद तक जन्म से निर्धारित होती है और परिवार के माध्यम से उत्तराधिकार में प्राप्त होती है। यह प्रदत्त स्थिति समाज की संरचना को स्थिर रखती है, जिससे संसाधनों और विशेषाधिकारों का वितरण एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक बिना किसी बाधा के हस्तांतरित होता रहता है।

10. (A) वह प्रक्रिया जो व्यक्तियों को समाज में पूर्ण भागीदारी से वंचित करती है।
सामाजिक बहिष्कार उन तरीकों को संदर्भित करता है जिनके माध्यम से व्यक्तियों या समूहों को उन अवसरों और संसाधनों से दूर रखा जाता है जो समाज के अन्य सदस्यों के लिए उपलब्ध होते हैं। यह स्वैच्छिक नहीं बल्कि संरचनात्मक होता है। यह केवल आर्थिक अभाव नहीं है, बल्कि यह शिक्षा, स्वास्थ्य और नागरिक अधिकारों जैसी मुख्यधारा की सुविधाओं तक पहुँच को रोकता है।

11. (D) वह व्यवहार जो किसी समूह को सामाजिक अवसरों से वंचित करता है।
भेदभाव पूर्वाग्रह का व्यावहारिक और क्रियात्मक रूप है, जहाँ किसी विशिष्ट समूह के सदस्यों के साथ उनकी पहचान

(A) बड़े शहरी केंद्रों में।
(B) तटीय क्षेत्रों में।
(C) आदिवासी आबादी वाले क्षेत्रों में।
(D) कृषि के लिए उपजाऊ मैदानों में।

170. स्रोत का मुख्य तर्क यह है कि आदिवासियों के लिए 'विकास' अक्सर 'विनाश' का पर्याय बन गया है। इस कथन का सबसे उपयुक्त अर्थ क्या है?
(A) विकास परियोजनाएँ तकनीकी रूप से विफल रहीं।
(B) आदिवासियों ने आधुनिक विकास का विरोध किया।
(C) विकास के कारण प्राकृतिक आपदाएँ आईं जिनसे आदिवासी प्रभावित हुए।
(D) राष्ट्रीय विकास के नाम पर की गई परियोजनाओं ने आदिवासियों के जीवन और संस्कृति को लाभ पहुँचाने के बजाय नष्ट कर दिया।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
विकलांगता की समझ में 'चिकित्सा मॉडल' और 'सामाजिक मॉडल' दो प्रमुख दृष्टिकोण हैं। चिकित्सा मॉडल, जो पारंपरिक रूप से प्रभावी रहा है, विकलांगता को एक व्यक्तिगत समस्या के रूप में देखता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, विकलांगता व्यक्ति के शरीर या मन में एक 'कमी' या 'दोष' का परिणाम है, जिसे चिकित्सा हस्तक्षेप के माध्यम से 'ठीक' करने या 'सामान्य' बनाने की आवश्यकता होती है। यह मॉडल विकलांग व्यक्ति को एक असहाय पीड़ित के रूप में प्रस्तुत करता है जिसे देखभाल और उपचार की जरूरत है। इसके विपरीत, विकलांगता का सामाजिक मॉडल एक क्रांतिकारी वैचारिक बदलाव प्रस्तुत करता है। यह तर्क देता है कि समस्या व्यक्ति की शारीरिक या मानसिक स्थिति में नहीं, बल्कि समाज की संरचना और दृष्टिकोण में है। इस मॉडल के अनुसार, 'बाधा' (impairment) एक शारीरिक स्थिति है, जबकि 'विकलांगता' (disability) समाज द्वारा बनाई गई एक स्थिति है। समाज ही है जो सीढ़ियों वाली इमारतें बनाकर, सुलभ परिवहन प्रदान न करके, और नकारात्मक रूढ़ियों को बढ़ावा देकर शारीरिक रूप से अक्षम लोगों को 'विकलांग' बनाता है। यह मॉडल इस बात पर जोर देता है कि विकलांगता का समाधान व्यक्ति को बदलने में नहीं, बल्कि एक समावेशी और बाधा-मुक्त समाज बनाने में निहित है जो सभी प्रकार की मानवीय विविधता को समायोजित कर सके।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. विकलांगता का 'चिकित्सा मॉडल' समस्या को कहाँ स्थित मानता है?
(A) समाज की संरचना में।
(B) परिवार के समर्थन की कमी में।
(C) व्यक्ति के शरीर या मन में एक कमी के रूप में।
(D) सरकार की नीतियों में।

172. विकलांगता के 'सामाजिक मॉडल' के अनुसार, 'विकलांगता' (disability) का मुख्य कारण क्या है?
(A) व्यक्ति की शारीरिक स्थिति।
(B) समाज द्वारा निर्मित भौतिक और सामाजिक बाधाएँ।
(C) व्यक्ति का मनोवैज्ञानिक रवैया।
(D) चिकित्सा देखभाल की कमी।

173. 'बाधा' (impairment) और 'विकलांगता' (disability) के बीच सामाजिक मॉडल क्या अंतर करता है?
(A) दोनों में कोई अंतर नहीं है।
(B) बाधा एक सामाजिक स्थिति है, जबकि विकलांगता एक शारीरिक स्थिति है।
(C) बाधा अस्थायी है, जबकि विकलांगता स्थायी है।
(D) बाधा एक शारीरिक स्थिति है, जबकि विकलांगता समाज द्वारा निर्मित एक सामाजिक स्थिति है।

174. एक कार्यालय भवन में व्हीलचेयर के लिए रैंप का न होना, विकलांगता के किस मॉडल के दृष्टिकोण को दर्शाता है?
(A) यह सामाजिक मॉडल के तर्क को पुष्ट करता है कि समाज बाधाएँ उत्पन्न करता है।
(B) यह चिकित्सा मॉडल के अनुसार एक व्यक्तिगत समस्या है।
(C) यह दर्शाता है कि व्हीलचेयर का उपयोग करने वाले लोगों को काम नहीं करना चाहिए।
(D) यह एक अपरिहार्य वास्तुशिल्प सीमा है।

175. अनुच्छेद के अनुसार, विकलांगता की समस्या का सामाजिक मॉडल क्या समाधान सुझाता है?
(A) विकलांग व्यक्तियों के लिए और अधिक अस्पतालों का निर्माण।
(B) व्यक्तियों को उनकी बाधाओं से निपटने के लिए प्रशिक्षित करना।
(C) एक बाधा-मुक्त और समावेशी समाज का निर्माण करना।
(D) विकलांग व्यक्तियों को विशेष संस्थानों में अलग रखना।

22. (B) सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए वर्ग।
भारतीय संविधान में 'अन्य पिछड़े वर्ग' (OBC) को सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े हुए समूहों के रूप में परिभाषित किया गया है। यह श्रेणी उन जातियों को शामिल करती है जो न तो ऊंची जातियों में आती हैं और न ही अनुसूचित जातियों या जनजातियों में, लेकिन वे विकास के लाभों से वंचित रही हैं। उनकी पहचान के लिए सामाजिक स्थिति, शिक्षा का स्तर और व्यावसायिक पृष्ठभूमि को आधार बनाया जाता है।

23. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
अन्य पिछड़े वर्गों (OBC) का समूह अत्यंत विविधतापूर्ण है क्योंकि इसमें प्रभुत्वशाली भूमिधर जातियों से लेकर अत्यंत निर्धन शिल्पी जातियाँ तक शामिल हैं। यह विविधता इसलिए भी अधिक है क्योंकि ओबीसी समूह भारत के लगभग सभी प्रमुख धर्मों में पाए जाते हैं। यही कारण है कि उनकी राजनीतिक और आर्थिक माँगें अक्सर एक-दूसरे से भिन्न होती हैं, जो इस समूह की जटिल सामाजिक संरचना को स्पष्ट करती हैं।

24. (A) काका कालेलकर
भारत के राष्ट्रपति द्वारा 1953 में नियुक्त प्रथम पिछड़े वर्ग आयोग की अध्यक्षता काका कालेलकर ने की थी। इस आयोग का मुख्य कार्य पिछड़े वर्गों की पहचान करना और उनकी स्थिति में सुधार के लिए सिफारिशें देना था। हालाँकि, आयोग की रिपोर्ट को पूरी तरह से स्वीकार नहीं किया गया क्योंकि इसमें पिछड़ेपन के निर्धारण के लिए जाति को मुख्य आधार मानने पर आंतरिक मतभेद विद्यमान थे।

25. (B) 1, 3 और 5
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 17 अस्पृश्यता का पूर्णतः उन्मूलन करता है। 'दलित पैंथर्स' आंदोलन का उदय 1970 के दशक में महाराष्ट्र (पश्चिमी भारत) में हुआ था। ज्योतिबा फुले और पेरियार स्वतंत्रता से पूर्व के अत्यंत प्रभावशाली समाज सुधारक थे जिन्होंने जातिवाद के विरुद्ध संघर्ष किया। 1989 का अधिनियम आदिवासियों पर भी लागू होता है और दलित साहित्य अनेक भारतीय भाषाओं में उपलब्ध है, न कि केवल मराठी में।

26. (A) मूल निवासी
'आदिवासी' शब्द का शाब्दिक अर्थ 'मूल निवासी' होता है। यह शब्द उन समुदायों के लिए प्रयोग किया जाता है जो किसी क्षेत्र विशेष में सबसे पहले बसे थे और जिनकी अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा और सामाजिक संरचना होती है। 1930 के दशक में यह शब्द एक राजनीतिक पहचान के रूप में उभरा, जो इन समूहों के जल, जंगल और जमीन पर उनके पारंपरिक अधिकारों के संघर्ष को दर्शाता है।

27. (D) झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे अलग राज्यों का दर्जा प्राप्त करना।
आदिवासी संघर्षों की एक महत्वपूर्ण राजनीतिक उपलब्धि बिहार और मध्य प्रदेश से अलग होकर क्रमशः झारखंड और छत्तीसगढ़ राज्यों का गठन होना है। यह उपलब्धि इन क्षेत्रों में आदिवासियों की विशिष्ट पहचान, संसाधनों पर उनके अधिकार और अपनी राजनीतिक स्वायत्तता की लंबी माँग का परिणाम थी। यह दर्शाता है कि संगठित होकर आदिवासी समुदाय अपनी क्षेत्रीय और सांस्कृतिक पहचान को संवैधानिक मान्यता दिलाने में सफल रहे हैं।

28. (B) ब्रिटिश सरकार द्वारा संसाधनों और वनों पर पूर्ण नियंत्रण।
औपनिवेशिक काल में आदिवासियों की आर्थिक स्थिति बिगड़ने का मुख्य कारण ब्रिटिश सरकार द्वारा वनों का राष्ट्रीयकरण और कड़े वन कानूनों का लागू होना था। इन कानूनों ने आदिवासियों की अपने ही संसाधनों और भूमि तक पहुँच को प्रतिबंधित कर दिया। वनों को व्यावसायिक लाभ के लिए आरक्षित कर दिया गया, जिससे आदिवासियों की पारंपरिक आजीविका नष्ट हो गई और वे साहूकारों तथा व्यापारियों के शोषण के शिकार बन गए।

29. (C) बाहरी लोगों जैसे साहूकारों और व्यापारियों को
आदिवासी समूहों, विशेष रूप से झारखंड क्षेत्र के मुंडा और उरांव समुदायों द्वारा 'डिक्कू' शब्द का प्रयोग बाहरी लोगों के लिए किया जाता था। इनमें मुख्य रूप से साहूकार, व्यापारी और ज़मींदार शामिल थे जो औपनिवेशिक शासन के दौरान आदिवासी क्षेत्रों में आए थे। इन 'डिक्कूओं' को आदिवासियों के शोषण, उनकी भूमि हड़पने और उनकी पारंपरिक जीवन शैली को नष्ट करने के लिए मुख्य रूप से जिम्मेदार माना जाता था।

30. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरुद्ध ऐतिहासिक अभियान चलाया। ज्योतिबा फुले ने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की जो पिछड़ी जातियों के उत्थान के लिए समर्पित था। स्वामी दयानंद सरस्वती ने 'आर्य समाज' के माध्यम से वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया। सर सैयद अहमद खान ने अलीगढ़ आंदोलन के माध्यम से मुस्लिम समाज में आधुनिक शिक्षा और सुधारों को प्रोत्साहित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

31. (A) क्योंकि सुधारक पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त भारतीय मध्य वर्ग से थे
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधार आंदोलनों को 'मध्यवर्गीय' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इनके प्रणेता पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त भारतीय बुद्धिजीवी थे। ये सुधारक नवोदित शहरी मध्य वर्ग का हिस्सा थे जो आधुनिक उदारवादी मूल्यों और भारतीय परंपराओं के बीच सामंजस्य बिठाना चाहते थे। उनकी शिक्षा ने उन्हें सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध तर्क करने और सुधारों की आवश्यकता को समाज के समक्ष प्रस्तुत करने की दृष्टि प्रदान की थी।

32. (B) ज्योतिबा फुले
ज्योतिबा फुले एक क्रांतिकारी समाज सुधारक थे जिन्होंने जाति व्यवस्था और लैंगिक भेदभाव दोनों के विरुद्ध एक साथ संघर्ष किया। उन्होंने माना कि शूद्रों और महिलाओं का उत्पीड़न समान सामाजिक संरचना का परिणाम है। फुले ने अपनी पत्नी सावित्रीबाई के साथ मिलकर लड़कियों के लिए पहला स्कूल खोला और 'सत्यशोधक समाज' के माध्यम से समाज के वंचित

(C) क्योंकि लोगों की व्यक्तिगत योग्यता में कोई अंतर नहीं होता है।
(D) क्योंकि विशेषाधिकार प्राप्त समूह अपनी विभिन्न प्रकार की पूँजी अपनी अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं।

155. इस अनुच्छेद का मुख्य तर्क क्या है?
(A) सामाजिक विषमता मुख्य रूप से व्यक्तिगत प्रयासों का परिणाम है।
(B) आर्थिक पूँजी ही एकमात्र पूँजी है जो समाज में मायने रखती है।
(C) सामाजिक विषमता एक संरचनात्मक मुद्दा है जो विभिन्न प्रकार की पूँजी के असमान वितरण से कायम रहती है।
(D) सामाजिक नेटवर्क का आधुनिक समाज में कोई महत्व नहीं है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

सामाजिक बहिष्कार को समझने के लिए पूर्वाग्रह, रुढ़िबद्ध धारणा और भेदभाव के बीच के अंतर को समझना महत्वपूर्ण है। पूर्वाग्रह एक समूह या उसके सदस्यों के प्रति एक पूर्व-कल्पित, अक्सर नकारात्मक, दृष्टिकोण या मनोवृत्ति है। यह दृष्टिकोण अपर्याप्त जानकारी या सुनी-सुनाई बातों पर आधारित होता है और नए सबूतों के सामने भी मुश्किल से बदलता है। जब ये पूर्वाग्रह किसी समूह के सभी सदस्यों पर लागू होने वाली सरलीकृत और अति-सामान्यीकृत मान्यताओं का रूप ले लेते हैं, तो वे रुढ़िबद्ध धारणा (स्टीरियोटाइप) बन जाते हैं। उदाहरण के लिए, यह मानना कि किसी विशेष क्षेत्र के सभी लोग 'आलसी' होते हैं, एक रुढ़िबद्ध धारणा है। यह व्यक्तिगत भिन्नताओं को नकारता है और पूरे समूह को एक ही श्रेणी में डाल देता है। जबकि पूर्वाग्रह एक दृष्टिकोण है और रुढ़िबद्ध धारणा एक विश्वास है, भेदभाव इन दोनों का व्यावहारिक रूप है। भेदभाव का अर्थ है किसी व्यक्ति या समूह के साथ उनके समूह की सदस्यता के आधार पर अनुचित व्यवहार करना। यह व्यवहार उन्हें अवसरों, संसाधनों या अधिकारों से वंचित कर सकता है जो दूसरों के लिए उपलब्ध हैं। उदाहरण के लिए, किसी व्यक्ति को उसकी जाति या धर्म के कारण नौकरी देने से इनकार करना भेदभाव का एक स्पष्ट कार्य है। इस प्रकार, पूर्वाग्रह (सोच), रुढ़िबद्ध धारणा (विश्वास) और भेदभाव (कार्य) मिलकर एक दुष्चक्र बनाते हैं जो सामाजिक समूहों के बीच असमानता को मजबूत करता है और हाशिए पर पड़े समुदायों के लिए बहिष्कार के द्वार खोलता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. पूर्वाग्रह को सबसे सटीक रूप से कैसे परिभाषित किया जा सकता है?
(A) एक समूह के खिलाफ किया गया वास्तविक व्यवहार।
(B) एक समूह के प्रति एक पूर्व-कल्पित दृष्टिकोण या मनोवृत्ति।
(C) एक समूह के बारे में एक अति-सामान्यीकृत विश्वास।
(D) एक समूह के सदस्यों के बीच व्यक्तिगत भिन्नताएँ।

157. "सभी राजनेता भ्रष्ट होते हैं" यह कथन किसका उदाहरण है?
(A) पूर्वाग्रह
(B) भेदभाव
(C) सामाजिक बहिष्कार
(D) रुढ़िबद्ध धारणा

158. पूर्वाग्रह और भेदभाव के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) पूर्वाग्रह एक दृष्टिकोण (सोच) है, जबकि भेदभाव एक व्यवहार (कार्य) है।
(B) पूर्वाग्रह एक विश्वास है, जबकि भेदभाव एक दृष्टिकोण है।
(C) पूर्वाग्रह सकारात्मक है, जबकि भेदभाव नकारात्मक है।
(D) पूर्वाग्रह व्यक्तिगत होता है, जबकि भेदभाव सामूहिक होता है।

159. एक मकान मालिक का किसी परिवार को केवल उनके धर्म के आधार पर अपना घर किराए पर देने से इनकार करना किसका स्पष्ट उदाहरण है?
(A) रुढ़िबद्ध धारणा
(B) पूर्वाग्रह
(C) भेदभाव
(D) व्यक्तिगत पसंद

160. स्रोत के अनुसार, पूर्वाग्रह, रुढ़िबद्ध धारणा और भेदभाव मिलकर क्या परिणाम उत्पन्न करते हैं?
(A) वे सामाजिक असमानता को मजबूत करते हैं और बहिष्कार को जन्म देते हैं।
(B) वे सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देते हैं।
(C) वे व्यक्तिगत भिन्नताओं को महत्व देते हैं।
(D) वे नए सबूतों के आधार पर आसानी से बदल जाते हैं।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

अस्पृश्यता भारतीय जाति व्यवस्था का सबसे चरम और अमानवीय पहलू है, जो शुद्धता और प्रदूषण की विचारधारा पर आधारित है। यह केवल एक सामाजिक पूर्वाग्रह नहीं, बल्कि एक गहरी संरचनात्मक व्यवस्था है जो कुछ जातियों को 'अछूत' मानकर उन्हें सामाजिक पदानुक्रम से बाहर कर देती है। इस व्यवस्था के तहत, इन समूहों को न केवल अनुष्ठानिक रूप से 'अशुद्ध' माना जाता है, बल्कि उन्हें सार्वजनिक स्थानों जैसे कुओं, मंदिरों और यहाँ तक कि सड़कों के उपयोग से भी वंचित किया जाता है। यह बहिष्कार केवल धार्मिक या सामाजिक जीवन तक ही सीमित नहीं रहता, बल्कि इसके गंभीर आर्थिक परिणाम भी होते हैं। पारंपरिक रूप से, 'अछूत' माने जाने वाले समुदायों को सबसे निम्न और अमानवीय समझे जाने वाले कार्यों जैसे मैला ढोना, मृत जानवरों को हटाना आदि करने के लिए मजबूर किया गया। उन्हें भूमि के स्वामित्व और शिक्षा जैसे संसाधनों से व्यवस्थित रूप से वंचित रखा गया, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय बनी रही। यह आर्थिक शोषण और सामाजिक अधीनता का एक चक्र बनाता है, जहाँ उनकी दयनीय स्थिति को ही उनकी 'अशुद्धता' के प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार, अस्पृश्यता

43. (D) यह जातीय विभाजनों को मजबूत करती है।
जाति व्यवस्था की 'अंतर्विवाह' प्रथा, जिसमें व्यक्ति को अपनी ही जाति के भीतर विवाह करना अनिवार्य होता है, जातीय विभाजनों को अत्यधिक मजबूत बनाती है। यह प्रथा जाति की शुद्धता को बनाए रखने और समूहों के बीच की सीमाओं को स्पष्ट रखने का कार्य करती है। यह जातियों के आपस में विलय को रोकती है और सामाजिक स्तरीकरण की संरचना को पीढ़ी-दर-पीढ़ी स्थिर बनाए रखने में एक प्रमुख भूमिका निबंधाती है।

44. (B) 2, 3 और 5
आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पूँजी के रूप एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। एक संपन्न परिवार अपनी आर्थिक पूँजी का उपयोग करके बच्चों को महँगी और गुणवत्तापूर्ण शिक्षा दिला सकता है, जो बाद में सांस्कृतिक पूँजी में बदल जाती है। सामाजिक पूँजी का तात्पर्य उन मूल्यवान सामाजिक संपर्कों और नेटवर्कों से है जो व्यक्ति को लाभ पहुँचाते हैं। ये तीनों रूप स्वतंत्र नहीं हैं, बल्कि निरंतर एक-दूसरे में परिवर्तित होकर व्यक्ति की स्थिति सुधारते हैं।

45. (C) 'अछूत' व्यक्ति की केवल छाया को ही अशुद्ध मानना।
'दूर से अशुद्धता' की धारणा अस्पृश्यता की एक अत्यंत क्रूर और चरम सीमा थी, जो मुख्य रूप से दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में प्रचलित थी। इसके तहत यह माना जाता था कि किसी 'अछूत' व्यक्ति की छाया मात्र पड़ने से भी उच्च जाति का व्यक्ति अशुद्ध हो सकता है। यह प्रथा मानव गरिमा का घोर उल्लंघन थी, जो सामाजिक बहिष्कार और भेदभाव को भौतिक दूरी से परे मानसिक स्तर तक ले जाती थी।

46. (D) जनता पार्टी सरकार
मंडल आयोग (द्वितीय पिछड़ा वर्ग आयोग) की नियुक्ति 1979 में तत्कालीन जनता पार्टी सरकार के कार्यकाल के दौरान की गई थी। इस आयोग के अध्यक्ष बी. पी. मंडल थे। आयोग का मुख्य कार्य सामाजिक और शैक्षिक रूप से पिछड़े वर्गों की पहचान करना और उनके उत्थान हेतु सिफारिशें देना था। 1980 में प्रस्तुत इसकी रिपोर्ट ने बाद के वर्षों में भारतीय राजनीति और आरक्षण की नीतियों में एक युगांतरकारी परिवर्तन लाया।

47. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
ताराबाई शिंदे ने 'स्त्री-पुरुष तुलना' लिखकर पितृसत्ता को चुनौती दी। बेगम रोकेया ने 'सुल्तानाज़ ड्रीम' के माध्यम से महिला सशक्तिकरण का स्वप्न देखा। एम. जी. रानाडे ने विधवा पुनर्विवाह के समर्थन में महत्वपूर्ण कानूनी और सामाजिक तर्क प्रस्तुत किए। राल्फ एलिसन का उपन्यास 'इनविजिबल Men' अश्वेतों और अक्षम व्यक्तियों की समाज में 'अदृश्य' स्थिति का मार्मिक चित्रण करता है। ये रचनाएँ समाज में हाशिए पर खड़े समूहों की आवाज़ को मजबूती से उठाती हैं।

48. (B) निगमित फर्मों के लिए उन्हें विस्थापित करना और आसान हो गया।
1990 के दशक की उदारीकरण की नीतियों ने खनिज संपन्न आदिवासी क्षेत्रों में निजी कंपनियों और निगमित फर्मों के प्रवेश का मार्ग प्रशस्त किया। विकास की इस प्रक्रिया में खनन और औद्योगिक परियोजनाओं के लिए आदिवासियों की भूमि का बड़े पैमाने पर अधिग्रहण किया गया। इससे आदिवासियों का बड़े स्तर पर विस्थापन हुआ और वे अपनी जमीन, आजीविका तथा सांस्कृतिक पहचान से वंचित हो गए, जिससे उनकी आर्थिक और सामाजिक स्थिति और अधिक संकटग्रस्त हो गई।

49. (C) केवल कथन 1 सही है।
1970 के दशक में भारतीय महिला आंदोलन ने हिंसा, मीडिया में महिलाओं के चित्रण और असमान विकास जैसे नए एवं आधुनिक मुद्दों को प्राथमिकता दी, अतः पहला कथन सही है। दूसरा कथन गलत है क्योंकि 19वीं सदी के सुधार आंदोलन पूरी तरह विफल नहीं थे; उन्होंने शिक्षा और कानूनी सुधारों की मजबूत नींव रखी थी, जिस पर बाद के आंदोलनों ने अपनी विशिष्ट और विस्तृत इमारत खड़ी की।

50. (A) पुरुष से स्त्री या स्त्री से पुरुष के रूप में स्वेच्छा से बदलाव की स्थिति।
'ट्रांसजेंडर' उन व्यक्तियों को संदर्भित करता है जिनकी जेंडर पहचान या व्यवहार उनके जन्म के समय निर्धारित लिंग से मेल नहीं खाता है। इसमें वे लोग शामिल हैं जो सर्जरी या अन्य माध्यमों से अपनी शारीरिक पहचान को अपनी आंतरिक जेंडर पहचान के अनुरूप बदलना चाहते हैं। यह अवधारणा पारंपरिक बाइनरी (केवल पुरुष या स्त्री) जेंडर की सीमाओं को चुनौती देती है और जेंडर विविधता की पहचान को आधुनिक समाज में स्वीकार्यता प्रदान करती है।

51. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आदिवासी समूह भारत के कुछ विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों जैसे मध्य भारत और उत्तर-पूर्व में घनी आबादी में संकेंद्रित हैं। इस भौगोलिक संकेंद्रण के कारण वे पृथक राज्यों की माँग करने और उसे प्राप्त करने में सफल रहे, जैसा कि झारखंड और छत्तीसगढ़ के मामलों में देखा गया। इसके विपरीत, दलित पूरे देश में बिखरे हुए हैं, जिससे उनकी माँगें राजनीतिक रूप से अधिक विस्तृत होने के बावजूद क्षेत्रीय राज्य गठन की दिशा में सफल नहीं हो सकीं।

52. (D) वे लोग जो न तो पूर्ण पुरुष और न ही पूर्ण महिला हैं, या जिनमें दोनों की विशेषताएँ हैं।
'थर्ड-जेंडर' या तीसरा जेंडर एक व्यापक श्रेणी है जिसमें वे व्यक्ति शामिल होते हैं जो स्वयं को पारंपरिक पुरुष या महिला की श्रेणियों में नहीं पाते हैं। इसमें हिजड़ा, किन्नर और अन्य जेंडर गैर-अनुरूपता वाले लोग आते हैं। भारतीय सर्वोच्च न्यायालय ने भी उन्हें कानूनी मान्यता दी है। यह श्रेणी जेंडर की विविधता को स्वीकार करती है और यह मानती है कि पहचान केवल पुरुष या स्त्री के दो विकल्पों तक ही सीमित नहीं है।

53. (B) 2 और 3
सामाजिक बहिष्कार कोई आकस्मिक घटना नहीं है, बल्कि यह समाज की संरचनात्मक विशेषताओं जैसे जाति, लिंग और धर्म के कारण व्यवस्थित रूप से घटित होता है। यह पीढ़ियों से चला आ रहा एक गहरा ढाँचा है जो लोगों को अवसरों से

संपर्कों या 'पहचान' का उपयोग करके एक ऐसी नौकरी प्राप्त करता है जहाँ उसे उच्च वेतन और आर्थिक लाभ मिलता है, तो वह वास्तव में अपनी सामाजिक पूँजी को आर्थिक पूँजी में बदल रहा होता है। यह प्रक्रिया दर्शाता है कि समाज में व्यक्ति के संबंध न केवल उसे प्रतिष्ठा दिलाते हैं, बल्कि उसके आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निबंधाते हैं।

114. (A) एम. जी. रानाडे - आर्य समाज
एम. जी. रानाडे 'आर्य समाज' से नहीं, बल्कि 'प्रार्थना समाज' से गहराई से जुड़े थे। 'आर्य समाज' की स्थापना 1875 में स्वामी दयानंद सरस्वती ने की थी। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरुद्ध ऐतिहासिक अभियान चलाया, ज्योतिबा फुले ने 'सत्यशोधक समाज' के माध्यम से पिछड़ों की आवाज़ उठाई और सर सैयद अहमद खान अलीगढ़ आंदोलन के प्रणेता थे। अतः रानाडे और आर्य समाज का युग्म पूरी तरह से गलत है और ऐतिहासिक तथ्यों के विपरीत है।

115. (A) 1, 2 और 4
सर सैयद अहमद खान और दयानंद सरस्वती जैसे सुधारकों ने महिलाओं की शिक्षा का समर्थन किया, लेकिन एक सीमित और अलग दायरे में। वे महिलाओं को शिक्षित तो करना चाहते थे, लेकिन उनके लिए अलग पाठ्यक्रम और घर के भीतर की शिक्षा के पक्षधर थे। उनके विचार आज के मानकों के अनुसार रूढ़िवादी लग सकते हैं, परंतु उस समय महिलाओं के शिक्षा के अधिकार को स्वीकार करना ही सामाजिक प्रगति की दिशा में एक बहुत बड़ा और साहसी कदम माना जाता था।

116. (D) वर्ष 1850 का सुप्रसिद्ध जातीय निर्योग्यता निवारण अधिनियम।
1850 का जातीय निर्योग्यता निवारण अधिनियम एक अत्यंत महत्वपूर्ण ब्रिटिश कानून था जिसने भारत में नागरिक अधिकारों की रक्षा की दिशा में पहल की। इसने यह सुनिश्चित किया कि यदि कोई व्यक्ति अपना धर्म या जाति बदलता है, तो केवल इस आधार पर उसके कानूनी अधिकारों या संपत्ति के उत्तराधिकार को छीना नहीं जा सकता। इसने पारंपरिक सामाजिक और धार्मिक नियमों को चुनौती दी, जो पहले धर्म परिवर्तन करने वालों को बहिष्कृत कर देते थे और उनके अधिकारों को पूरी तरह से समाप्त कर देते थे।

117. (C) सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से निर्मित संरचनाएँ एवं संस्थाएँ।
नारीवादी दृष्टिकोण यह स्पष्ट करता है कि पुरुषों और स्त्रियों के बीच व्याप्त असमानता का कारण जैविक अंतर नहीं, बल्कि समाज द्वारा निर्मित पितृसत्तात्मक संरचनाएं हैं। समाज ही यह तय करता है कि महिलाओं और पुरुषों की क्या भूमिकाएं, अधिकार और सीमाएं होंगी। ये संरचनाएं परिवारों, धर्म और कानून जैसी संस्थाओं के माध्यम से पीढ़ियों तक बनी रहती हैं। अतः लैंगिक असमानता एक प्राकृतिक सत्य नहीं, बल्कि एक सामाजिक निर्माण है जिसे बदला जाना संभव और अनिवार्य है।

118. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
अस्पृश्यता भारतीय जाति व्यवस्था की एक गहरी बुराई है। रंगभेद दक्षिण अफ्रीका की एक दमनकारी नस्लीय नीति थी। लैंगिक असमानता के मुद्दे को ताराबाई शिंदे ने अपनी पुस्तक 'स्त्री-पुरुष तुलना' में प्रखरता से उठाया। आदिवासी विस्थापन का मुद्दा झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे खनिज संपन्न राज्यों में अत्यंत ज्वलंत और गंभीर रहा है। यह मिलान समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा झेली जाने वाली विशिष्ट समस्याओं और उनके भौगोलिक या साहित्यिक संदर्भों को बहुत ही स्पष्ट और सटीक रूप से प्रस्तुत करता है।

119. (D) खनिज एवं विद्युत संसाधनों हेतु आदिवासी भूमि का बड़े पैमाने पर अधिग्रहण।
आजादी के बाद की औद्योगिकीकरण की नीतियों ने उन आदिवासी क्षेत्रों को प्रभावित किया जहाँ खनिज और जल संसाधन प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थे। राष्ट्र निर्माण के नाम पर इन क्षेत्रों में बड़े बाँधों और स्टील प्लांटों की स्थापना की गई, जिसके लिए आदिवासियों की पैतृक भूमि का व्यापक अधिग्रहण किया गया। इस प्रक्रिया में विस्थापित आदिवासियों को न तो उचित मुआवजा मिला और न ही पुनर्वास की पर्याप्त व्यवस्था हुई, जिससे वे अपने ही घर में बेगाने और आर्थिक रूप से लाचार हो गए।

120. (D) केवल कथन 2 सही है।
सामाजिक विषमता केवल विकासशील देशों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह दुनिया के सभी विकसित राष्ट्रों में भी किसी न किसी रूप में अवश्य पाई जाती है। अतः पहला कथन गलत है। सामाजिक स्तरीकरण एक सार्वभौमिक मानवीय विशेषता है जो लगभग हर समाज में पदानुक्रम और संसाधनों के असमान वितरण के रूप में विद्यमान रहती है। भले ही इसके आधार (जैसे जाति, वर्ग या प्रजाति) अलग-अलग हो सकते हैं, लेकिन इसका अस्तित्व समाज की एक अंतर्निहित सच्चाई है।

121. (B) 2 और 3
समाज में अक्सर गरीबी को व्यक्ति की व्यक्तिगत विफलता या आलस्य का परिणाम मानकर उसे ही दोष दिया जाता है, जबकि वास्तविकता संरचनात्मक विषमता की होती है। सामाजिक बहिष्कार का रोज़मर्रापन, जैसे सार्वजनिक स्थानों पर कुछ लोगों का तिरस्कार, इसे समाज की नजरों में एक 'स्वाभाविक' प्रक्रिया बना देता है। विषमता का अनुभव केवल सड़कों पर ही नहीं, बल्कि बंद दरवाजों और उच्च पदों पर भी होता है। फिल्मों में गरीबी से अमीरी की कहानियाँ प्रायः यथार्थ से दूर होती हैं।

122. (A) ...व्यापक तौर पर इसे न्यायसंगत या अपरिहार्य माना जाता हो।
सामाजिक स्तरीकरण की कोई भी व्यवस्था लंबे समय तक तभी टिक सकती है जब उसे समाज में वैचारिक समर्थन प्राप्त हो। जब लोग यह मानने लगते हैं कि ऊँच-नीच की यह व्यवस्था ईश्वर द्वारा निर्मित, न्यायपूर्ण या अपरिहार्य है, तो वे इसके विरुद्ध विद्रोह नहीं करते। यह विचारधारा ही विषमता को 'प्राकृतिक' बनाती है और उसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनाए रखने का कार्य करती

सबसे सूक्ष्म और गहरा रूप है, जहाँ वे भीड़ में होकर भी समाज के लिए अस्तित्वहीन होते हैं।

64. (A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 की सही व्याख्या करता है।
अक्षमता का सामाजिक मॉडल यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति केवल शारीरिक दोष के कारण अक्षम नहीं होता, बल्कि समाज का भौतिक ढांचा (जैसे सीढ़ियाँ, संकीर्ण रास्ते) उसे अक्षम बनाता है। यदि समाज की संरचना समावेशी नहीं है, तो वह व्यक्ति की स्वायत्तता को सीमित कर देती है। अतः अक्षमता जितनी एक जैविक स्थिति है, उससे कहीं अधिक वह समाज द्वारा निर्मित बाधाओं और भेदभावपूर्ण मानसिकता का एक प्रत्यक्ष परिणाम है।

65. (A) 1 और 2
जाति व्यवस्था में प्रदत्त स्थिति (जन्म से प्राप्त स्थिति) ही सर्वोपरि होती है और यही व्यक्ति के भविष्य के व्यावसायिक अवसरों को मुख्य रूप से निर्धारित करती थी। अंतर्विवाह प्रथा जातीय विभाजनों को मजबूत करती है, न कि कमजोर। यद्यपि आधुनिक काल में जाति और व्यवसाय का पुराना संबंध ढीला अवश्य हुआ है, लेकिन यह पूरी तरह से समाप्त नहीं हुआ है; आज भी कई क्षेत्रों में जाति के आधार पर आर्थिक गतिविधियाँ संचालित होती हैं।

66. (A) पश्चिमी भारत में उभरा एक उग्र दलित युवा समूह
'दलित पैंथर्स' की स्थापना 1970 के दशक में महाराष्ट्र के शिक्षित दलित युवाओं द्वारा की गई थी। यह अमेरिका के 'ब्लैक पैंथर्स' से प्रेरित था। इस समूह ने दलितों के विरुद्ध होने वाली हिंसा और भेदभाव का मुकाबला करने के लिए उग्र और सक्रिय प्रतिरोध का मार्ग अपनाया। उन्होंने साहित्य, कविता और जन-आंदोलनों के माध्यम से दलित चेतना को एक नई धार दी और जातिवादी समाज की क्रूरता को बेनकाब किया।

67. (C) स्वतंत्र भारत में भी राज्य द्वारा उनके संसाधनों का दोहन दर्शाने हेतु।
'आंतरिक उपनिवेशवाद' की अवधारणा यह बताती है कि कैसे स्वतंत्र भारत में भी आदिवासी क्षेत्रों के संसाधनों (कोयला, लौह अयस्क, वन) का उपयोग राष्ट्र के विकास के नाम पर किया गया, लेकिन इसका लाभ आदिवासियों को नहीं मिला। जैसे औपनिवेशिक शक्तियाँ भारत का शोषण करती थीं, वैसे ही राज्य ने इन क्षेत्रों की भूमि का अधिग्रहण किया और वहाँ के मूल निवासियों को विस्थापित कर उन्हें अपनी ही जड़ों से अलग कर दिया।

68. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
सामाजिक विषमता और बहिष्कार जब हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन जाते हैं, तो वे लोगों को 'सामान्य' लगने लगते हैं। लोग इसे ईश्वर की इच्छा, भाग्य या प्राकृतिक नियम मानकर स्वीकार कर लेते हैं और इसके पीछे की अन्यायपूर्ण सामाजिक संरचना पर प्रश्न नहीं उठाते। यह 'रोज़मर्रापन' अन्याय को समाज में गहराई से स्थापित कर देता है और किसी भी बड़े सामाजिक परिवर्तन के प्रति प्रतिरोध उत्पन्न करने का कार्य करता है।

69. (C) अनुसूचित जनजातियाँ
2011-12 के सरकारी आँकड़ों के अनुसार, ग्रामीण भारत में अनुसूचित जनजातियों (आदिवासियों) में गरीबी का स्तर अन्य सभी सामाजिक समूहों की तुलना में सबसे अधिक था। इसका मुख्य कारण उनकी भूमि का छिनना, वनों तक उनकी पहुँच का बाधित होना और विकास परियोजनाओं के कारण होने वाला विस्थापन है। भौगोलिक रूप से दुर्गम क्षेत्रों में निवास और बुनियादी सुविधाओं की कमी भी उन्हें गरीबी के दुष्चक्र में बनाए रखने में बड़ी भूमिका निभाती है।

70. (B) सिख
1999-2000 के आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि ग्रामीण भारत में सिख समुदाय के भीतर समृद्ध या धनी जनसंख्या का प्रतिशत राष्ट्रीय औसत से काफी अधिक था। पंजाब जैसे राज्यों में कृषि की उन्नत तकनीकों, सिंचाई की बेहतर सुविधाओं और हरित क्रांति के सफल क्रियान्वयन ने इस समुदाय की आर्थिक स्थिति को मजबूत बनाने में योगदान दिया। यह दर्शाता है कि कैसे क्षेत्रीय विकास और आधुनिक कृषि पद्धतियाँ किसी विशिष्ट समुदाय की समृद्धि को प्रभावित करती हैं।

71. (A) 1, 2 और 5
आरक्षण की नीति का मूल उद्देश्य उन समूहों को ऐतिहासिक रूप से हुए अन्याय और भेदभाव की क्षतिपूर्ति करना है जिन्हें समाज में हाशिए पर रखा गया। इसमें विधायिका, सरकारी नौकरियों और शैक्षणिक संस्थानों में सीटों का आवंटन शामिल है। ओबीसी के लिए आरक्षण का आधार सामाजिक और शैक्षिक पिछड़ापन है। आरक्षित सीटों का अनुपात हमेशा संबंधित समूह की कुल जनसंख्या के अनुपात में ही निर्धारित किया जाता है, जिससे प्रतिनिधित्व सुनिश्चित हो सके।

72. (A) पाश्चात्य तर्कसंगति और भारतीय शास्त्रों दोनों का
महादेव गोविंद रानाडे ने विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में अपने तर्कों को आधुनिक पाश्चात्य उदारवादी मूल्यों और प्राचीन भारतीय धर्मग्रंथों के मेल से निर्मित किया था। उन्होंने शास्त्रों की उदार व्याख्या के माध्यम से यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि हिंदू धर्म विधवाओं को पुनः विवाह करने की अनुमति देता है। इस दृष्टिकोण ने न केवल रुढ़िवादियों के तर्कों को चुनौती दी, बल्कि सुधारों को एक पारंपरिक धार्मिक स्वीकृति दिलाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

73. (C) विभाजित और श्रेणीबद्ध सामाजिक संरचना पर किया गया व्यंग्य।
"यह नलका सभी जातियों के लिए खुला है" जैसा कथन वास्तव में समाज में व्याप्त गहरी छुआछूत और भेदभाव की कड़वी सच्चाई पर एक तीखा व्यंग्य है। यह दर्शाता है कि एक सामान्य सार्वजनिक सुविधा तक पहुँच भी जाति के आधार पर प्रतिबंधित हो सकती है। यह सामाजिक विषमता की उस स्थिति को उजागर करता है जहाँ समानता के दावे तो किए

जाते हैं, लेकिन व्यावहारिक स्तर पर भेदभाव की दीवारें अभी भी बहुत ऊँची हैं।

74. (A) (A) और (B) दोनों
'अन्यथा सक्षम' के संदर्भ में प्रश्न होने पर, 'अन्य पिछड़े वर्गों' की श्रेणी में अगड़ी जातियाँ और दलित शामिल नहीं होते। अगड़ी जातियाँ सामाजिक और शैक्षिक रूप से संपन्न मानी जाती हैं, जबकि दलित 'अनुसूचित जाति' की अलग श्रेणी में आते हैं जिन्हें ऐतिहासिक रुप से अस्पृश्यता का सामना करना पड़ा। ओबीसी में मुख्यतः वे मध्यम दर्जे की जातियाँ शामिल होती हैं जो सामाजिक और शैक्षिंक रूप से पिछड़ी हुई हैं और जिन्हें पर्याप्त सरकारी प्रतिनिधित्व प्राप्त नहीं है।

75. (D) आपातकाल के बाद जनता पार्टी के सत्ता में आने पर
1970 के दशक के उत्तरार्ध में, जब 1977 में आपातकाल के बाद जनता पार्टी की सरकार केंद्र में आई, तब अन्य पिछड़े वर्गों (OBC) का मुद्दा पुनः राष्ट्रीय स्तर पर उठा। इसी सरकार ने 1979 में बी. पी. मंडल की अध्यक्षता में दूसरे पिछड़ा वर्ग आयोग की नियुक्ति की थी। यह वह समय था जब पिछड़ी जातियों ने अपनी राजनीतिक पहचान को संगठित करना शुरू किया और राज्य की नीतियों में अपने अधिकारों के लिए आवाज उठाई।

76. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
बंगाल में राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरुद्ध अभियान का नेतृत्व किया। बाम्बे प्रेसिडेंसी में एम. जी. रानाडे ने विधवा पुनर्विवाह और सामाजिक सुधारों के लिए कार्य किया। झारखंड और छत्तीसगढ़ में आदिवासियों ने अपनी अलग पहचान और राज्य के दर्जे के लिए आंदोलन किया। पश्चिमी भारत, विशेष रूप से महाराष्ट्र, 1970 के दशक में 'दलित पैंथर्स' जैसे क्रांतिकारी आंदोलनों के उदय का प्रमुख केंद्र रहा है।

77. (C) बाल लैंगिक अनुपात में गिरावट क्या दर्शाती है?
बाल लैंगिक अनुपात में गिरावट समाज में बालिकाओं के प्रति व्याप्त गहरे पक्षपात और भेदभावपूर्ण रवैये को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। यह कन्या भ्रूण हत्या और बालिकाओं के प्रति स्वास्थ्य तथा पोषण में की जाने वाली लापरवाही का प्रत्यक्ष परिणाम है। यह स्थिति उजागर करती है कि आधुनिक शिक्षा और तकनीक के प्रसार के बावजूद, समाज की मानसिक संरचना में पुत्र-वरीयता की रूढ़िवादी सोच अभी भी बहुत प्रभावशाली ढंग से विद्यमान है।

78. (D) उच्च शिक्षण संस्थानों में अन्य पिछड़े वर्गों के आरक्षण से।
2005 का 93वाँ संविधान संशोधन अधिनियम एक ऐतिहासिक कदम था, जिसने निजी शिक्षण संस्थानों सहित सभी उच्च शिक्षण संस्थानों में अन्य पिछड़े वर्गों (OBC) के लिए 27% आरक्षण का प्रावधान सुनिश्चित किया। इस अधिनियम का उद्देश्य शिक्षा के उच्च स्तरों पर पिछड़ी जातियों के प्रतिनिधित्व को बढ़ाना और उन्हें बेहतर व्यावसायिक अवसरों तक पहुँच प्रदान करना था। इसने भारतीय शिक्षा प्रणाली में सामाजिक न्याय और समावेशिता के सिद्धांतों को संवैधानिक रूप से और अधिक मजबूत किया।

79. (A) 1, 3 और 4
सामाजिक विषमता व्यक्तिगत प्रयासों का नहीं, बल्कि सामाजिक संरचना का परिणाम है। पूँजी केवल आर्थिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक रुपों में भी पाई जाती है। पूर्वाग्रह हमेशा नकारात्मक नहीं होते, वे सकारात्मक भी हो सकते हैं। सामाजिक स्तरीकरण समाज की एक सार्वभौमिक व्यवस्था है जो लोगों का वर्गीकरण करती है। अतः कथन 1, 3 और 4 पूरी तरह से गलत हैं क्योंकि वे समाजशास्त्र के इन बुनियादी सिद्धांतों के विपरीत तर्क प्रस्तुत करते हैं।

80. (B) अक्षमता के चिकित्सा अथवा व्यक्तिगत मॉडल से।
अक्षमता का चिकित्सा या व्यक्तिगत मॉडल यह मानता है कि अक्षमता व्यक्ति की एक जैविक या शारीरिक कमी है जिसे चिकित्सा द्वारा ठीक करने की आवश्यकता है। यह दृष्टिकोण अक्षम व्यक्ति को एक 'मरीज' या 'पीड़ित' के रूप में देखता है और समस्या का समाधान केवल उपचार में ढूंढता है। यह मॉडल इस बात की पूरी तरह से अनदेखी करता है कि समाज की बनावट और उसका दृष्टिकोण भी व्यक्ति को अक्षम बना सकते हैं।

81. (B) इसने सरकारी स्कूलों में दलितों को भर्ती करने की इजाजत दी।
1850 का जातीय निर्योग्यता निवारण अधिनियम एक प्रगतिशील कानून था जिसने यह व्यवस्था दी कि किसी व्यक्ति के धर्म या जाति बदलने से उसके नागरिक अधिकारों में कोई कमी नहीं आएगी। साथ ही, इसने दलितों (उस समय के अछूतों) के लिए सरकारी स्कूलों के दरवाजे खोलने का कानूनी आधार तैयार किया। यह ब्रिटिश शासन द्वारा सामाजिक समानता की दिशा में उठाया गया एक प्रारंभिक कदम था, जिसने जाति-आधारित पारंपरिक प्रतिबंधों को पहली बार कानूनी चुनौती दी।

82. (A) 2, 4, 3, 1
काका कालेलकर आयोग का गठन 1953 में हुआ था। दलित पैंथर्स का उदय 1970 के दशक के आरंभ में हुआ। मंडल आयोग की नियुक्ति 1979 में हुई और इसकी रिपोर्ट 1980 में आई। बहुजन समाज पार्टी का राष्ट्रीय राजनीति में उभार 1980 के दशक के मध्य और अंत में हुआ। यह क्रम भारत में पिछड़े और दलित वर्गों के राजनीतिक सशक्तीकरण और उनके संवैधानिक अधिकारों की रक्षा हेतु किए गए प्रयासों के चरणों को दर्शाता है।

83. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
सामाजिक परिवर्तन केवल कानून या सरकारी आदेशों से नहीं आ सकता। कानून एक दिशा प्रदान कर सकते हैं, लेकिन उन्हें प्रभावी बनाने के लिए समाज की सक्रिय भागीदारी और मानसिकता में बदलाव अनिवार्य है। जब तक लोग जागरूक और संवेदनशील नहीं होंगे, तब तक सामाजिक विषमताएँ और भेदभाव जैसी जड़ें पूरी तरह से समाप्त नहीं होंगी। अतः सरकार की कार्यवाही और सामाजिक आंदोलनों का मेल ही वास्तविक और स्थायी परिवर्तन लाने में सक्षम होता है।

84. (D) वे निर्धन क्षेत्र जहाँ अश्वेतों को बलपूर्वक बसाया गया।
दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद शासन के दौरान 'बांटुस्तान' या 'गृहक्षेत्र' (Homelands) वे बंजर और सुविधाहीन इलाके थे जहाँ अश्वेत आबादी को रहने के लिए विवश किया गया था। सरकार ने उनकी नागरिकता छीन ली और उन्हें इन पृथक क्षेत्रों में धकेल दिया। इसका उद्देश्य मुख्य शहरों और संसाधनों पर श्वेतों का नियंत्रण बनाए रखना था। ये क्षेत्र गरीबी, बेरोजगारी और भुखमरी के केंद्र थे, जो नस्लीय अलगाव की क्रूरता का एक प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करते थे।

85. (C) केरल के नायर और मेघालय के खासी समाज।
मातृवंशीय समाज वह व्यवस्था है जहाँ वंश का नाम और संपत्ति का उत्तराधिकार माँ से बेटी की ओर हस्तांतरित होता है। भारत में इसके प्रमुख उदाहरण केरल के नायर और मेघालय की खासी जनजाति में मिलते हैं। इन समाजों में महिला की स्थिति परिवार में महत्वपूर्ण होती है, हालाँकि यह आवश्यक नहीं कि सत्ता भी उन्हीं के पास हो। यह व्यवस्था भारत के अधिकांश पितृसत्तात्मक समाजों के विपरीत एक अत्यंत अनूठी और महत्वपूर्ण सांस्कृतिक भिन्नता को दर्शाती है।

86. (B) समाज में पूर्ण और सक्रिय भागीदारी।
सामाजिक बहिष्कार का सीधा परिणाम समाज की मुख्यधारा से कटना है, न कि उसमें भागीदारी करना। बहिष्कार के कारण व्यक्ति जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं जैसे अच्छी शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं और न्यायपालिका तक पहुँच से वंचित हो जाता है। यह प्रक्रिया लोगों को हाशिए पर धकेल देती है और उन्हें उन अधिकारों और अवसरों का उपयोग करने से रोकती है जो एक नागरिक के रूप में उनके विकास के लिए अनिवार्य और अत्यंत आवश्यक होते हैं।

87. (C) 1, 3 और 5
पूर्वाग्रह एक समूह के बारे में बिना किसी ठोस आधार के बनाए गए पूर्वकल्पित विचार हैं। भेदभाव उसी पूर्वाग्रह का प्रत्यक्ष और व्यावहारिक रूप है जहाँ लोगों के साथ असमान व्यवहार किया जाता है। किसी की जाति के कारण उसे नौकरी न देना भेदभाव का स्पष्ट उदाहरण है। पूर्वाग्रह केवल सुनी-सुनाई बातों पर ही नहीं, बल्कि गहरी सांस्कृतिक मान्यताओं पर भी आधारित हो सकते हैं। भेदभाव को अक्सर गुप्त रूप से किया जाता है, जिससे इसे प्रमाणित करना काफी कठिन होता है।

88. (A) बिना भुगतान के अथवा न्यूनतम मजदूरी पर जबरन कार्य
'बेगार' जबरन श्रम की एक ऐसी व्यवस्था है जहाँ व्यक्ति को बिना किसी पारिश्रमिक या बहुत ही कम मजदूरी पर काम करने के लिए मजबूर किया जाता है। भारत में ऐतिहासिक रूप से उच्च जातियों द्वारा दलितों और निम्न वर्गों से बेगार कराई जाती थी। यह मानवाधिकारों का घोर उल्लंघन है और इसे भारतीय संविधान के तहत एक दंडनीय अपराध घोषित किया गया है। यह व्यवस्था सामाजिक और आर्थिक शोषण का एक सबसे क्रूर और अमानवीय स्वरूप प्रस्तुत करती है।

89. (C) राजा राममोहन राय और सर सैयद अहमद खान
राजा राममोहन राय और सर सैयद अहमद खान दोनों ही ऐसे सुधारक थे जिन्होंने सामाजिक सुधारों के लिए दोहरी रणनीति अपनाई। उन्होंने एक ओर पाश्चात्य उदारवादी विचारों और आधुनिक विज्ञान का समर्थन किया, तो दूसरी ओर अपनी धार्मिक परंपराओं (हिंदू और इस्लाम) के भीतर से ही सुधारों के पक्ष में तर्क ढूँढे। उन्होंने समाज को यह समझाने का सफल प्रयास किया कि आधुनिकता और उनके धर्म के मूल तत्व आपस में पूर्णतः संगत और विरोधाभासी नहीं हैं।

90. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
पूर्वाग्रह किसी समूह के बारे में पहले से बनी एक राय है। रुढ़िबद्ध धारणा एक पूरे समूह के बारे में कठोर और अपरिवर्तनीय छवि होती है जो बदलाव को स्वीकार नहीं करती। भेदभाव वह व्यवहार है जो लोगों को समान अवसरों से वंचित कर देता है। सामाजिक बहिष्कार वह व्यापक प्रक्रिया है जो व्यक्तियों को समाज की पूर्ण भागीदारी और संसाधनों तक पहुँच से बाहर कर देती है। ये सभी शब्द समाज में व्याप्त असमानता के विभिन्न चरणों को स्पष्ट करते हैं।

91. (D) सामाजिक मॉडल
अक्षमता का सामाजिक मॉडल यह तर्क देता है कि समस्या व्यक्ति के शरीर में नहीं, बल्कि समाज के दृष्टिकोण और संरचना में है। यह मॉडल मानता है कि समाज अपनी अक्षमता (जैसे रैंप न होना या सांकेतिक भाषा का अभाव) के कारण ऐसे व्यक्तियों को 'अपंग' बना देता है। इसका उद्देश्य चिकित्सा उपचार के बजाय समाज की बाधाओं को दूर करना और समावेशी वातावरण तैयार करना है, ताकि अक्षम व्यक्ति भी स्वतंत्र रूप से जीवन जी सकें।

92. (A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
1999-2000 के आँकड़े यह स्पष्ट करते हैं कि ग्रामीण क्षेत्रों में सिख समुदाय की आर्थिक स्थिति काफी बेहतर थी, जो हरित क्रांति के प्रभाव को दर्शाती है। वहीं, शहरों में अनुसूचित जातियों का आर्थिक स्तर राष्ट्रीय औसत से बहुत नीचे था, जो शहरी अर्थव्यवस्था में भी जातीय भेदभाव और अवसरों की कमी की ओर संकेत करता है। ये आँकड़े भारत में धर्म और जाति के आधार पर व्याप्त गहरी आर्थिक विषमताओं को सांख्यिकीय रूप से पुष्ट करते हैं।

93. (A) 1 और 3
'अन्यथा सक्षम' जैसे शब्द अक्षमता के नकारात्मक अर्थों को चुनौती देते हैं और उनकी विशिष्ट योग्यताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इसी प्रकार, 'मानसिक रूप से चुनौतीग्रस्त' जैसे शब्दों का प्रयोग संवेदनशीलता को दर्शाता है। भारतीय पौराणिक कथाओं में अक्सर विकलांग पात्रों को नकारात्मक या मजाक के पात्र के रूप में चित्रित किया गया है। अक्षमता केवल जैविक नहीं होती, बल्कि सामाजिक बाधाएं भी व्यक्ति की स्वायत्तता को सीमित कर उसे अक्षम बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

132. (A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 के तर्क का समर्थन करता है।
पुरुषों और स्त्रियों के बीच असमानता प्राकृतिक नहीं है, बल्कि समाज द्वारा गढ़ी गई है। मातृवंशीय समाजों, जैसे मेघालय की खासी जनजाति का अस्तित्व यह ठोस प्रमाण देता है कि उत्तराधिकार और वंश के नियम केवल पितृसत्तात्मक ही नहीं होते। यह दर्शाता है कि समाज अपनी जरूरतों के अनुसार लिंग भूमिकाओं और पारिवारिक संरचनाओं को अलग-अलग रूप में निर्मित कर सकता है। अतः लैंगिक असमानता एक सामाजिक संस्था है जिसे बदला जा सकता है, न कि कोई जैविक अनिवार्यता।

133. (A) 1 और 2
भारत में कई सार्वजनिक भवन, जिनमें न्यायालय भी शामिल हैं, रैंप या लिफ्ट जैसी बुनियादी सुविधाओं के अभाव के कारण अक्सर विकलांगों के लिए दुर्गम होते हैं। यह भौतिक अवरोध समाज और न्यायपालिका की एक अनकही 'अपवर्जनात्मक' नीति को प्रदर्शित करता है जो अक्षम व्यक्तियों की समान भागीदारी को हतोत्साहित करती है। अक्षमता केवल ग्रामीण क्षेत्रों की समस्या नहीं है, बल्कि यह शहरी बुनियादी ढाँचे की एक बड़ी कमी है। कानून तो बने हैं, लेकिन उनका व्यावहारिक कार्यान्वयन अभी भी बहुत दूर है।

134. (B) अक्षमता का आधुनिक सामाजिक मॉडल
यह तर्क अक्षमता के 'सामाजिक मॉडल' का आधार है। यह मॉडल मानता है कि व्यक्ति अपनी शारीरिक स्थिति के कारण नहीं, बल्कि समाज की बनावट और पूर्वाग्रहों के कारण अक्षम महसूस करता है। यदि समाज का ढाँचा समावेशी हो और सभी के लिए सुलभ हो, तो शारीरिक भिन्नता किसी व्यक्ति की प्रगति में बाधक नहीं बनेगी। यह दृष्टिकोण अक्षमता की समस्या को व्यक्ति के शरीर से हटाकर समाज की संरचनात्मक और वैचारिक कमियों पर केंद्रित करता है, जो अधिक प्रगतिशील है।

135. (D) दोनों जन्म पर आधारित हैं और सामाजिक अधिक्रम का निर्माण करते हैं।
जाति और प्रजाति (नस्ल) दोनों ही जन्म पर आधारित व्यवस्थाएँ हैं जिन्हें व्यक्ति चाहकर भी बदल नहीं सकता। ये दोनों प्रणालियाँ समाज में लोगों को उच्च और निम्न श्रेणियों में विभाजित करती हैं, जिससे एक कठोर सामाजिक पदानुक्रम या अधिक्रम का निर्माण होता है। इनमें व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति उसकी मेहनत या उपलब्धि के बजाय उसके जन्म के संयोग से ही तय होती है, जिससे समाज में गहरी और स्थायी संरचनात्मक असमानताएँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनी रहती हैं।

136. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।.
सामाजिक स्तरीकरण की व्यवस्था में शीर्ष पर बैठे लोग हमेशा इसका समर्थन करते हैं क्योंकि यह उन्हें विशेष अधिकार, शक्ति और संसाधन प्रदान करती है। वे इस व्यवस्था को 'न्यायसंगत' और 'प्राकृतिक' ठहराने के लिए विभिन्न विचारधाराओं का सहारा लेते हैं ताकि उनकी स्थिति को कोई चुनौती न मिले। अपनी श्रेष्ठता और लाभ को बनाए रखने की यह मानवीय प्रवृत्ति ही समाज में असमानता के ऊँचे ढाँचों को लंबे समय तक स्थिर और सुरक्षित बनाए रखने का मुख्य कारण बनती है।

137. (C) 1970 के दशक में मुंबई में हुए जातीय दंगों के दौरान।
'दलित पैंथर्स' संगठन का उदय 1970 के दशक के आरंभ में महाराष्ट्र, विशेष रूप से मुंबई के शहरी इलाकों में हुआ था। यह वह समय था जब दलित युवाओं में अपने अधिकारों और आत्म-सम्मान के प्रति एक नई चेतना जागृत हुई थी। मुंबई के जातीय दंगों और दलितों के विरुद्ध होने वाली हिंसा ने इस समूह को उग्र और संगठित प्रतिरोध करने के लिए प्रेरित किया। इस आंदोलन ने न केवल राजनीति बल्कि मराठी साहित्य और दलित विमर्श की दिशा को भी पूरी तरह बदल दिया।

138. (A) शिक्षा को मुख्य रूप से रोजगार की दुनिया से संबंधित होना चाहिए।
शहरी गंदी बस्तियों में रहने वाले गरीब माता-पिताओं के लिए शिक्षा का सबसे बड़ा मूल्य आर्थिक सुरक्षा और बेहतर भविष्य की उम्मीद है। वे चाहते हैं कि उनके बच्चों की शिक्षा उन्हें ऐसे कौशल और प्रमाण-पत्र प्रदान करे जो उन्हें सम्मानजनक रोजगार दिलाने में सहायक हों। उनके लिए शिक्षा केवल ज्ञानार्जन का माध्यम नहीं, बल्कि गरीबी के दुष्चक्र से बाहर निकलने का एकमात्र और सबसे शक्तिशाली रास्ता है। अतः वे शिक्षा के व्यावहारिक और व्यावसायिक पक्ष को सर्वाधिक प्राथमिकता देते हैं।

139. (D) सामाजिक बहिष्कार को प्रोत्साहित करना।
भारत एक लोकतांत्रिक और कल्याणकारी राज्य है, जिसका संवैधानिक लक्ष्य सामाजिक न्याय और समानता स्थापित करना है। इसलिए, राज्य आरक्षण की नीति, अस्पृश्यता उन्मूलन और अत्याचार निवारण जैसे कानूनों के माध्यम से जातीय विषमता को दूर करने का निरंतर प्रयास करता है। सामाजिक बहिष्कार को प्रोत्साहित करना राज्य की नीतियों के बिल्कुल विपरीत है; वास्तव में, राज्य का कार्य बहिष्कार जैसी कुरीतियों को जड़ से समाप्त करना और सभी नागरिकों की समाज में पूर्ण भागीदारी सुनिश्चित करना है।

140. (C) 1, 2, 3 और 5
सामाजिक स्तरीकरण समाज की एक विशिष्टता है जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी बनी रहती है और इसे विचारधारात्मक समर्थन मिलता है। भारत में जाति व्यवस्था को शुद्धता और अशुद्धता के कर्मकांडीय विश्वासों द्वारा न्यायोचित ठहराया जाता है। यह कहना गलत है कि उन्नत समाजों में स्तरीकरण समाप्त हो जाता है; वास्तव में, वहाँ इसके रूप बदलकर वर्ग या प्रजाति आधारित हो सकते हैं, लेकिन संसाधनों का असमान वितरण और पदानुक्रम किसी न किसी रूप में लगभग हर समाज में विद्यमान रहता है।

141. (C) समूह-संबद्ध, गैर-आर्थिक, और व्यवस्थित संरचनात्मक स्वरूप।
विषमता को 'सामाजिक' इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह व्यक्तिगत नहीं बल्कि समूहों से संबंधित होती है। यह

और शोषण के विरुद्ध उठने वाली एक सामूहिक और जागृत राजनीतिक चेतना का सशक्त प्रतीक भी है।

104. (A) वनों का छिनना, भूमि अपहरण और बार-बार होने वाला विस्थापन।
विकास की वर्तमान अवधारणा ने आदिवासियों के जीवन पर अत्यंत नकारात्मक प्रभाव डाला है। बाँधों के निर्माण, भारी उद्योगों की स्थापना और खनिज उत्खनन के लिए उनकी पारंपरिक जमीनों का बड़े पैमाने पर अधिग्रहण किया गया। इससे आदिवासियों को न केवल अपने घरों से विस्थापित होना पड़ा, बल्कि उनके वनों पर अधिकार भी छीन लिए गए। विस्थापन की इस प्रक्रिया ने उनकी आजीविका, संस्कृति और सामुदायिक ढाँचे को पूरी तरह से छिन्न-भिन्न कर दिया है।

105. (A) 2, 3, 1, 4
जातीय निर्योग्यता निवारण अधिनियम 1850 में आया। भारतीय संविधान 1950 में लागू हुआ, जिसके अनुच्छेद 17 ने अस्पृश्यता को प्रतिबंधित किया। अनुसूचित जाति और जनजाति (अत्याचार निवारण) अधिनियम 1989 में पारित किया गया। मंडल आयोग की रिपोर्ट का कार्यान्वयन 1990 के दशक के आरंभ में हुआ। यह क्रम भारत में पिछड़े और दलित वर्गों को कानूनी सुरक्षा और सामाजिक न्याय प्रदान करने के ऐतिहासिक विकासवादी सफर को सांख्यिकीय और कालानुक्रमिक रूप से दर्शाता है।

106. (A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं, और कथन 2, कथन 1 का एक उदाहरण/स्पष्टीकरण है।
अन्य पिछड़े वर्गों (OBC) के भीतर अत्यधिक आंतरिक विविधता और विषमता विद्यमान है। जहाँ एक ओर कुछ 'अगड़ी' ओबीसी जातियाँ भूमिधर और राजनीतिक रूप से अत्यंत शक्तिशाली हैं, वहीं दूसरी ओर 'अति पिछड़ी' जातियों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति अनुसूचित जातियों के समान ही दयनीय है। यह विविधता यह स्पष्ट करती है कि ओबीसी एक सजातीय समूह नहीं है, और उनके लिए बनाई गई नीतियों में इस गहरे आंतरिक अंतर को समझना अनिवार्य है।

107. (D) मुंबई विश्वविद्यालय
एम. जी. रानाडे ने मुंबई विश्वविद्यालय के स्नातक पाठ्यक्रम में पढ़ाए जाने वाले नैतिक दर्शन के सिद्धांतों का प्रभावी ढंग से उपयोग किया। उन्होंने विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में मानवीय और तर्कसंगत आधार तैयार करने के लिए पश्चिमी दर्शन के उच्च मूल्यों को भारतीय संदर्भों के साथ जोड़ा। उनके कार्यों ने बौद्धिक समाज में विधवाओं के प्रति सहानुभूति उत्पन्न करने और समाज सुधार की लहर को अकादमिक और सामाजिक दोनों स्तरों पर एक नई गति प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

108. (A) 1, 2 और 4
ताराबाई शिंदे ने 'स्त्री-पुरुष तुलना' में समाज के दोहरे चरित्र को उजागर किया। बेगम रोकेया की 'सुल्तानाज़ ड्रीम' एक प्रारंभिक विज्ञान कथा है। ताराबाई की पुस्तक सूरत में एक ब्राह्मण विधवा को मिले मृत्युदंड की प्रतिक्रिया में लिखी गई थी। ये दोनों कृतियाँ स्वयं महिलाओं द्वारा लिखी गई थीं, न कि पुरुष सुधारकों द्वारा। अतः कथन 3 गलत है। इन रचनाओं ने पितृसत्ता को चुनौती देने में महिलाओं की अपनी आवाज़ और एजेंसी को प्रमुखता से समाज के सामने रखा।

109. (C) राल्फ एलिसन के सुप्रसिद्ध उपन्यास 'इनविजिबल Men' से।
विकलांग व्यक्तियों की समाज में स्थिति को राल्फ एलिसन के उपन्यास 'इनविजिबल Men' के माध्यम से बहुत ही प्रभावी ढंग से समझा जा सकता है। जैसे उपन्यास का नायक समाज में शारीरिक रूप से मौजूद होने के बावजूद लोगों की नज़रों में अदृश्य है, वैसे ही विकलांगों की जरूरतों और उनके अस्तित्व को समाज अनदेखा कर देता है। यह 'अदृश्यता' उनके सामाजिक बहिष्कार का सबसे दुखद पहलू है, जहाँ वे भीड़ का हिस्सा होकर भी अलग-थलग रहते हैं।

110. (D) अनुच्छेद 17
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 17 एक अत्यंत क्रांतिकारी प्रावधान है जो अस्पृश्यता (छुआछूत) का पूर्णतः उन्मूलन करता है। यह किसी भी रूप में अस्पृश्यता के आचरण को प्रतिबंधित करता है और इसके अभ्यास को कानून के अनुसार एक दंडनीय अपराध घोषित करता है। यह अनुच्छेद समाज के वंचित वर्गों को गरिमापूर्ण जीवन जीने का संवैधानिक अधिकार प्रदान करता है और सदियों से चली आ रही एक अमानवीय सामाजिक बुराई को जड़ से समाप्त करने की राज्य की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

111. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
फिल्म 'इकबाल' एक उत्कृष्ट उदाहरण है जो विकलांगता के प्रति पारंपरिक सोच को चुनौती देती है। एक गूंगा-बहरा होने के बावजूद नायक का सफल क्रिकेटर बनना यह दर्शाता है कि शारीरिक बाधाएं संकल्प-शक्ति के सामने गौण हैं। यह फिल्म 'अन्यथा सक्षम' शब्द के सकारात्मक भाव को पुष्ट करती है और समाज को यह संदेश देती है कि यदि अवसर और समर्थन मिले, तो अक्षम व्यक्ति भी किसी भी क्षेत्र में असाधारण सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

112. (B) सिख
2011-12 के सांख्यिकीय आँकड़ों के अनुसार, नगरीय भारत में सिख समुदाय में गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली जनसंख्या का प्रतिशत अन्य सभी धार्मिक समूहों की तुलना में सबसे कम पाया गया। यह स्थिति इस समुदाय की व्यापारिक कुशलता, उद्यमशीलता और शहरी अर्थव्यवस्था में उनकी मजबूत भागीदारी को दर्शाती है। सिखों की यह आर्थिक समृद्धि उनके संगठित सामुदायिक सहयोग और शिक्षा तथा व्यवसाय के प्रति उनके प्रगतिशील दृष्टिकोण का एक सुखद परिणाम है, जो उन्हें नगरीय क्षेत्रों में आर्थिक रूप से सुदृढ़ बनाता है।

113. (B) प्रभावशाली संपर्कों की सहायता से उच्च आय वाली नौकरी प्राप्त करना।
सामाजिक पूँजी का अर्थ है व्यक्ति के मूल्यवान सामाजिक संबंधों और नेटवर्कों का जाल। जब कोई व्यक्ति अपने इन

94. (D) भारतीय अभिजात्य वर्ग को ब्रिटिश शासकों के अपमानजनक व्यवहार का सामना करना पड़ा।
उपनिवेशवाद के दौरान, यहाँ तक कि पाश्चात्य शिक्षा प्राप्त और धनी भारतीय अभिजात्य वर्ग को भी ब्रिटिश शासकों द्वारा नस्लीय भेदभाव और अपमान का सामना करना पड़ा। उन्हें यूरोपीय क्लबों, होटलों और ट्रेनों के प्रथम श्रेणी के डिब्बों में प्रवेश से वंचित किया गया। इस कड़वे अनुभव ने उन्हें यह अहसास कराया कि शिक्षा और धन के बावजूद, वे गुलाम भारत में दोयम दर्जे के नागरिक हैं, जिससे उनमें राष्ट्रीय चेतना और समानता की भावना विकसित हुई।

95. (A) एक संपन्न व्यक्ति द्वारा बच्चों को प्रतिष्ठित एवं महँगे शिक्षण संस्थानों में भेजना
जब एक संपन्न व्यक्ति अपनी आर्थिक पूँजी (धन) का निवेश अपने बच्चों की उच्च और प्रतिष्ठित शिक्षा में करता है, तो वह उसे सांस्कृतिक पूँजी में बदल रहा होता है। यह सांस्कृतिक पूँजी बच्चों को समाज में उच्च प्रतिष्ठा, बेहतर संप्रेषण कौशल और भविष्य में प्रभावशाली पद प्राप्त करने में मदद करती है। इस प्रकार, धन का उपयोग केवल भौतिक वस्तुओं के लिए ही नहीं, बल्कि सामाजिक स्थिति और ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी किया जाता है।

96. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
सामाजिक बहिष्कार कोई यादृच्छिक घटना नहीं है, बल्कि यह समाज की गहरी संरचनात्मक विशेषताओं जैसे जाति, लिंग या धर्म का परिणाम है। यह व्यवस्थित होता है क्योंकि समाज के नियम और संस्थाएँ कुछ समूहों को जानबूझकर हाशिए पर रखती हैं। चूंकि यह स्थिति पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती है, इसलिए यह एक निरंतर जारी रहने वाला चक्र बन जाता है जिसे तोड़ना बहुत कठिन होता है। यही कारण है कि बहिष्कार के स्वरूप और प्रभाव समाज में स्पष्ट दिखाई देते हैं।

97. (B) विकलांगता की आठ श्रेणियों के बारे में जानकारी एकत्र करने का प्रयास किया गया।
2011 की जनगणना में विकलांगता के आँकड़ों को अधिक सटीक बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास किया गया। इसमें विकलांगता की श्रेणियों को विस्तृत करते हुए आठ अलग-अलग प्रकार की अक्षमताओं के बारे में जानकारी माँगी गई थी। यह कदम इसलिए उठाया गया ताकि सरकार विकलांग व्यक्तियों की वास्तविक संख्या और उनकी विशिष्ट जरूरतों को बेहतर ढंग से समझ सके और उनके कल्याण के लिए अधिक लक्षित और प्रभावी नीतियों तथा कार्यक्रमों का निर्माण कर सके।

98. (A) ताराबाई शिंदे - स्त्री-पुरुष तुलना
ताराबाई शिंदे ने 1882 में 'स्त्री-पुरुष तुलना' लिखकर भारतीय नारीवाद की एक मजबूत आधारशिला रखी थी। काका कालेलकर प्रथम पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष थे, न कि द्वितीय के। बी. पी. मंडल द्वितीय पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष थे। ज्योतिबा फुले ने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की थी, जबकि 'आर्य समाज' की स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने की थी। अतः केवल ताराबाई शिंदे का युग्म ही उनकी ऐतिहासिक कृति के साथ पूर्णतः सही सुमेलित है।

99. (A) 1, 2 और 3
भारत में सामाजिक भेदभाव के अनेक आधार हैं जिनमें लिंग, धर्म और जाति प्रमुख हैं। भेदभाव आर्थिक संसाधनों तक ही सीमित नहीं है; यहाँ तक कि उच्च वर्ग की महिलाएँ भी पितृसत्तात्मक हिंसा का शिकार हो सकती हैं और संपन्न अल्पसंख्यकों को भी सामाजिक पूर्वाग्रहों के कारण आवास जैसी समस्याएँ झेलनी पड़ती हैं। पूर्वाग्रह केवल अशिक्षितों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि यह समाज के शिक्षित वर्ग में भी गहराई से व्याप्त हो सकते हैं, जो इसे एक जटिल समस्या बनाता है।

100. (D) दक्षिणी राज्यों में पिछड़ी जातियों के राजनीतिक आंदोलनों का एक लंबा इतिहास रहा है।
दक्षिण भारतीय राज्यों जैसे तमिलनाडु और कर्नाटक में, पिछड़ी जातियों के आंदोलनों (जैसे आत्म-सम्मान आंदोलन) का इतिहास 20वीं सदी के आरंभ से ही रहा है। इन आंदोलनों ने वहाँ की जातियों को राजनीतिक रूप से जागरूक और संगठित कर दिया था, जिसके कारण वहाँ आरक्षण की व्यवस्था उत्तर भारत की तुलना में बहुत पहले ही लागू हो गई थी। उत्तर भारत में यह प्रक्रिया 1970 और 1980 के दशक में मंडल राजनीति के उदय के साथ अधिक मुखर और व्यापक हुई।

101. (C) 14%
दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की व्यवस्था आर्थिक और भौगोलिक शोषण का एक चरम उदाहरण थी। वहाँ अश्वेत आबादी कुल जनसंख्या का लगभग 80% थी, लेकिन उन्हें देश की कुल भूमि का केवल 14% हिस्सा ही आवंटित किया गया था। शेष 86% उपजाऊ और संसाधन संपन्न भूमि अल्पसंख्यक श्वेत आबादी के नियंत्रण में थी। यह असमान वितरण अश्वेतों को गरीबी और अधीनता की स्थिति में बनाए रखने की एक सोची-समझी सरकारी और राजनीतिक साजिश का परिणाम था।

102. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
फ्रांसीसी समाजशास्त्री पियरे बोर्दियो ने पूँजी के तीन रूपों—आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक—का सिद्धांत दिया। महात्मा गाँधी ने अस्पृश्य जातियों के लिए 'हरिजन' शब्द का प्रयोग किया। डॉ. बी. आर. अंबेडकर ने दलितों के सशक्तीकरण और उनके संवैधानिक अधिकारों के लिए जीवनपर्यंत संघर्ष किया और एक दर्शन दिया। ज्योतिबा फुले ने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना कर जाति व्यवस्था की जड़ों पर प्रहार किया। यह मिलान सामाजिक सुधारों के प्रमुख स्तंभों और उनके विचारों को स्पष्ट करता है।

103. (D) पैरों से कुचला हुआ
'दलित' शब्द संस्कृत के मूल शब्द 'दल' से निकला है, जिसका शाब्दिक अर्थ है 'कुचला हुआ', 'तोड़ा हुआ' या 'दबाया हुआ'। यह शब्द उन समुदायों की ऐतिहासिक और सामाजिक स्थिति को दर्शाता है जिन्होंने सदियों तक जाति-आधारित छुआछूत, शोषण और उत्पीड़न को झेला है। यह शब्द केवल एक सामाजिक श्रेणी नहीं है, बल्कि यह आत्म-सम्मान, संघर्ष

है। बिना ऐसी गहरी सामाजिक और मानसिक स्वीकृति के, कोई भी असमान व्यवस्था लंबे समय तक अस्तित्व में नहीं रह सकती।

123. (D) राजनीतिक अधिकारों हेतु संघर्षरत एक समकालीन संगठन का।
कर्नाटक की 'दलित संघर्ष समिति' (DSS) एक प्रभावशाली समकालीन संगठन है जो दलितों के संवैधानिक अधिकारों, भूमि अधिकारों और सामाजिक गरिमा के लिए लड़ता है। यह संगठन न केवल चुनावी राजनीति को प्रभावित करता है, बल्कि स्थानीय स्तर पर जाति-आधारित अत्याचारों के विरुद्ध भी सक्रिय रूप से आवाज़ उठाता है। यह दर्शाता है कि कैसे आधुनिक लोकतंत्र में दलितों ने स्वयं को संगठित कर अपनी पहचान और न्याय के लिए सामूहिक चेतना के माध्यम से एक सशक्त मंच तैयार किया है।

124. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
यद्यपि जाति हिंदू धर्म की एक विशेषता मानी जाती है, लेकिन यह भारत के अन्य धर्मों जैसे इस्लाम, ईसाई और सिख धर्म में भी व्यापक रूप से समाहित हो गई है। इन धर्मों में भी जातियों के आधार पर सामाजिक दूरियाँ और व्यावसायिक पहचान स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं। इसका कारण यह है कि धर्मांतरण के बावजूद व्यक्तियों की पूर्व की व्यावसायिक और सामाजिक-आर्थिक स्थिति नहीं बदली, जिससे जाति की जड़ें उन धर्मों की सामाजिक संरचना में भी बहुत गहराई तक पहुँच गईं।

125. (C) मीडिया प्रतिनिधित्व, असमान विकास और कानून सुधार जैसे आधुनिक मुद्दे।
1970 और 1980 के दशक का महिला आंदोलन 19वीं सदी के सुधारों से आगे निकल गया था। इस दौरान महिलाओं ने केवल सामाजिक कुरीतियों पर ही नहीं, बल्कि अधिक जटिल और आधुनिक मुद्दों जैसे कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न, दहेज विरोधी कानून, मीडिया में महिलाओं के वस्तुकरण और आर्थिक विकास की प्रक्रियाओं में महिलाओं की उपेक्षा पर ध्यान केंद्रित किया। इन आंदोलनों ने लैंगिक समानता की लड़ाई को कानूनी और नीतिगत स्तर पर अधिक मुखर, व्यापक और संगठित बनाने में सफलता प्राप्त की।

126. (D) व्यक्तिगत
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से पूँजी के तीन मुख्य और स्वीकृत रूप होते हैं: आर्थिक (धन और संपत्ति), सांस्कृतिक (शिक्षा और प्रतिष्ठा), और सामाजिक (नेटवर्क और संपर्क)। 'व्यक्तिगत' पूँजी को आमतौर पर पूँजी के इन व्यापक सामाजिक रूपों में स्वतंत्र श्रेणी के रूप में नहीं गिना जाता है। पूँजी के ये तीनों रूप आपस में गहराई से जुड़े हुए हैं और एक व्यक्ति की समाज में स्थिति, उसके प्रभाव और संसाधनों तक उसकी पहुँच को सामूहिक रूप से निर्धारित करने का कार्य करते हैं।

127. (B) 2, 3, और 4
समाज में कई लोग असमानता को 'न्यायसंगत' मानकर पीड़ितों को ही उनकी दयनीय स्थिति के लिए जिम्मेदार ठहराते हैं। यह एक कटु सत्य है कि समाज के सबसे निचले स्तर के लोग, जैसे खेतिहर मजदूर या सफाई कर्मचारी, प्रायः सबसे कठिन शारीरिक परिश्रम करते हैं। जाति, लिंग और धर्म जैसे कारक आज भी भेदभाव और बहिष्कार के प्रमुख कारण बने हुए हैं। सामाजिक विषमता कोई आधुनिक नहीं, बल्कि एक प्राचीन घटना है और बहिष्कार केवल आर्थिक ही नहीं होता है।

128. (B) सामाजिक स्तरीकरण
सामाजिक स्तरीकरण समाज की वह व्यवस्था है जिसके अंतर्गत व्यक्तियों और समूहों को एक पदानुक्रमित क्रम में श्रेणीबद्ध किया जाता है। यह व्यवस्था संसाधनों, शक्ति और प्रतिष्ठा के असमान वितरण को दर्शाती है। यह समाज को अलग-अलग परतों या 'स्तरों' में विभाजित करती है, जहाँ कुछ समूहों को दूसरों की तुलना में अधिक विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं। यह प्रक्रिया जन्म, व्यवसाय, धन या जाति जैसे विभिन्न सामाजिक आधारों पर काम करती है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी समाज में निरंतर बनी रहती है।

129. (B) अस्पृश्यता
'दूर से अशुद्धता' की धारणा अस्पृश्यता या छुआछूत की सबसे घृणित और चरम सीमा थी। यह दक्षिण भारत के कुछ क्षेत्रों में इतनी कठोर थी कि 'अछूत' समझे जाने वाले लोगों को उच्च जाति के लोगों से एक निश्चित दूरी बनाए रखनी पड़ती थी, ताकि उनकी छाया मात्र से भी कोई अशुद्ध न हो जाए। यह प्रथा मानवीय गरिमा का पूर्ण अपमान थी और इसने समाज के एक बड़े वर्ग को पशुवत जीवन जीने और घोर सामाजिक बहिष्कार सहन करने के लिए विवश किया था।

130. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
ज्योतिबा फुले ने 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की। इयोतीदास ने दक्षिण भारत में दलितों के बीच बौद्ध धर्म के पुनरुत्थान के लिए कार्य किया। ई. वी. रामास्वामी 'पेरियार' ने तमिलनाडु में प्रसिद्ध आत्म-सम्मान आंदोलन चलाया। डॉ. बी. आर. अंबेडकर ने भारतीय संविधान की मसौदा समिति के अध्यक्ष के रूप में देश को एक आधुनिक और समावेशी कानूनी ढाँचा प्रदान किया। यह मिलान भारत में दलित और वंचित वर्गों के उत्थान के लिए समर्पित प्रमुख नायकों के योगदान को दर्शाता है।

131. (C) औपनिवेशिक सरकार और बाहरी घुसपैठ के विरुद्ध किया गया संघर्ष।
'आदिवासी' शब्द को 1930 के दशक में एक राजनीतिक और सामूहिक पहचान के रूप में गढ़ा गया था। यह उन समुदायों के बीच उभरा जो औपनिवेशिक शोषण, वनों के राष्ट्रीयकरण और बाहरी लोगों (डिक्कूओं) द्वारा उनकी भूमि के अधिग्रहण के विरुद्ध संघर्ष कर रहे थे। यह शब्द 'मूल निवासी' होने के उनके दावे को पुष्ट करता है और यह दर्शाता है कि उनकी लड़ाई अपनी स्वायत्तता, संसाधनों पर अधिकार और अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान को बचाने के लिए एक सामूहिक और ऐतिहासिक आंदोलन है।

वंचित करता है। यद्यपि कानून सहायक हैं, लेकिन वे अकेले पर्याप्त नहीं हैं क्योंकि इसके लिए समाज की मानसिकता में परिवर्तन और व्यापक स्तर पर जन-जागरुकता की अत्यधिक आवश्यकता होती है।

54. (B) राजा इह-लौकिक क्षेत्र में सर्वोपरि थे, पर आनुष्ठानिक क्षेत्र में वे ब्राह्मणों के अधीन थे।
प्राचीन और मध्यकालीन भारतीय समाज में शक्ति का एक जटिल संतुलन था। राजा के पास सांसारिक और राजनीतिक सत्ता (इह-लौकिक) थी, लेकिन धार्मिक अनुष्ठानों और आध्यात्मिक मार्गदर्शन के लिए वह ब्राह्मणों पर निर्भर था। ब्राह्मणों को अनुष्ठानिक रूप से श्रेष्ठ माना जाता था क्योंकि वे देवताओं और मनुष्यों के बीच मध्यस्थ थे। इस प्रकार, सत्ता और धार्मिक श्रेष्ठता के बीच एक स्पष्ट और परस्पर पूरक विभाजन समाज में विद्यमान था।

55. (D) अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस
नेल्सन मंडेला ने अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस (ANC) के नेतृत्व में दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की क्रूर व्यवस्था के विरुद्ध एक लंबा और कठिन संघर्ष किया। उन्होंने अश्वेतों के समान अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी, जिसके कारण उन्हें 27 वर्षों तक जेल में रहना पड़ा। उनके नेतृत्व में हुए शांतिपूर्ण और सशस्त्र आंदोलनों ने अंततः 1994 में रंगभेद को समाप्त किया और वे दक्षिण अफ्रीका के पहले लोकतांत्रिक रूप से चुने गए राष्ट्रपति बने।

56. (A) यह व्यक्तियों के बीच की प्राकृतिक भिन्नता का सीधा परिणाम है।
सामाजिक स्तरीकरण व्यक्तिगत प्राकृतिक भिन्नताओं का परिणाम नहीं है, बल्कि यह समाज की एक निर्मित संरचना है। इसके सिद्धांतों के अनुसार, यह पूरे समाज की एक विशेषता है, न कि केवल व्यक्तिगत प्रतिभा का अंतर। यह पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तांतरित होता है और इसे समाज की प्रचलित विचारधाराओं या विश्वासों से निरंतर समर्थन मिलता है। यह व्यक्तियों को समूहों में वर्गीकृत करके उनमें संसाधनों और अवसरों का असमान वितरण सुनिश्चित करता है।

57. (A) 3, 4, 2, 1
दक्षिण अफ्रीका के इतिहास में सबसे पहले 17वीं सदी में डच व्यापारी वहाँ बसे। बाद में ब्रिटिश उपनिवेशकों ने डचों के वंशजों (बोअर्स) को भीतरी इलाकों की ओर खदेड़ा। 1948 में रंगभेद की नीति को आधिकारिक रूप से कानूनी मान्यता मिली। अंततः लंबे संघर्ष के बाद 1994 में नेल्सन मंडेला के नेतृत्व में पहली लोकतांत्रिक सरकार बनी। यह क्रम नस्लीय भेदभाव की स्थापना और उसके अंत के ऐतिहासिक चरणों को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

58. (A) अन्य पिछड़े वर्गों का मुद्दा एक प्रमुख राष्ट्रीय राजनीतिक विषय के रूप में उभरा।
1990 में मंडल आयोग की रिपोर्ट लागू होने से भारतीय राजनीति में 'मंडल युग' की शुरुआत हुई। इसने अन्य पिछड़े वर्गों (OBC) को एक ठोस राजनीतिक पहचान दी और देश भर में आरक्षण की माँगों को लेकर व्यापक बहस और आंदोलन छेड़ दिए। इस निर्णय ने न केवल चुनावों के स्वरुप को बदला, बल्कि समाज के वंचित वर्गों की सत्ता में भागीदारी और सामाजिक न्याय के विमर्श को राष्ट्रीय एजेंडे के केंद्र में ला खड़ा किया।

59. (D) राष्ट्रीय विकास हेतु खनन तथा बाँध जैसी परियोजनाओं का निर्माण।
आजादी के बाद भारत में बड़े पैमाने पर औद्योगीकरण और बुनियादी ढाँचे के विकास पर जोर दिया गया। चूँकि अधिकांश खनिज भंडार और जल संसाधन आदिवासी क्षेत्रों में स्थित थे, इसलिए खनन, बाँध निर्माण और बिजली परियोजनाओं के लिए आदिवासियों की भूमि का बड़े पैमाने पर अधिग्रहण किया गया। इस प्रक्रिया में लाखों आदिवासियों को उनकी पारंपरिक भूमि से बेदखल होना पड़ा, जिससे उनका जीवन स्तर और सांस्कृतिक पहचान दोनों ही अत्यंत बुरी तरह प्रभावित हुए।

60. (B) सत्य पर बल देते हुए जातीय और लैंगिक भेदभाव का विरोध करना।
ज्योतिबा फुले द्वारा स्थापित 'सत्यशोधक समाज' का मुख्य लक्ष्य जातिवाद के बंधनों को तोड़ना और महिलाओं तथा निम्न जातियों के प्रति हो रहे अन्याय को समाप्त करना था। इस संस्था ने तर्क दिया कि सभी मनुष्य समान हैं और किसी को भी जन्म के आधार पर विशेषाधिकार नहीं मिलना चाहिए। इसने सामाजिक समानता, शिक्षा और मानवीय गरिमा को बढ़ावा देने के लिए कार्य किया और पुरोहितों के वर्चस्व को खुली चुनौती दी।

61. (C) 'X' समुदाय के सभी लोग चालाक होते हैं।
रुढ़िबद्ध धारणा या स्टीरियोटाइप का अर्थ है किसी पूरे समूह के सदस्यों पर एक ही प्रकार की छवि थोप देना। जब हम कहते हैं कि 'एक विशेष समुदाय के सभी लोग चालाक होते हैं', तो हम उस समूह की व्यक्तिगत भिन्नताओं को पूरी तरह से नजरअंदाज कर देते हैं। यह एक सरलीकृत और अक्सर गलत धारणा होती है जो पूर्वाग्रहों को जन्म देती है और समाज में आपसी समझ और सद्भाव में बड़ी बाधा बनती है।

62. (B) P-2, Q-3, R-4, S-1
दलित समुदाय का मुख्य संघर्ष अस्पृश्यता और सामाजिक बहिष्कार के विरुद्ध रहा है। आदिवासियों के लिए जल, जंगल और जमीन से विस्थापन तथा वनों पर उनके पारंपरिक अधिकार सबसे प्रमुख मुद्दे हैं। अन्य पिछड़े वर्ग (OBC) मुख्य रूप से आरक्षण और राजनीतिक प्रतिनिधित्व के लिए संघर्षरत रहे हैं। महिलाओं का आंदोलन लैंगिक समानता, सुरक्षा और समान अधिकारों की प्राप्ति के इर्द-गिर्द केंद्रित है। यह मिलान विविध समूहों की विशिष्ट समस्याओं को दर्शाता है।

63. (A) इनविजिबल Men
राल्फ एलिसन का उपन्यास 'इनविजिबल Men' समाज में हाशिए पर रहने वाले लोगों, जैसे अश्वेतों और अक्षम व्यक्तियों की स्थिति को दर्शाने के लिए उपयोग किया जाता है। समाज उन्हें भौतिक रूप से तो देखता है, लेकिन एक व्यक्ति के रूप में उनकी पहचान, जरूरतों और भावनाओं को पूरी तरह से अनदेखा कर देता है। यह 'अदृश्यता' उनके सामाजिक बहिष्कार का

केवल आय या धन की कमी (आर्थिक) नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक संसाधनों तक असमान पहुँच भी शामिल है। अंत में, यह विषमता व्यवस्थित और संरचनात्मक होती है, जिसका अर्थ है कि यह समाज के नियमों और संस्थाओं में बहुत गहराई से रची-बसी है। ये तीन अर्थ मिलकर स्पष्ट करते हैं कि सामाजिक विषमता कैसे एक व्यक्तिगत समस्या से परे समाज की एक व्यापक संरचना है।

142. (D) मुस्लिम समुदाय
न्यायमूर्ति राजिंदर सच्चर की अध्यक्षता में गठित सच्चर समिति ने 2006 में अपनी ऐतिहासिक रिपोर्ट प्रस्तुत की थी। यह रिपोर्ट भारतीय मुस्लिम समुदाय की सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक स्थिति के विस्तृत अध्ययन पर केंद्रित थी। रिपोर्ट ने उजागर किया कि कई मानकों पर मुस्लिम समुदाय की स्थिति अनुसूचित जातियों और जनजातियों के समान या उनसे भी खराब है। इस रिपोर्ट ने अल्पसंख्यकों के विकास और उनके समावेशी सशक्तिकरण की नीतियों पर राष्ट्रीय स्तर पर एक महत्वपूर्ण और गंभीर बहस को जन्म दिया।

143. (B) P-3, Q-1, R-4, S-2
1930 के दशक में महात्मा गाँधी ने 'हरिजन' शब्द का प्रयोग किया था। 1953 में प्रथम पिछड़े वर्ग आयोग की रिपोर्ट प्रस्तुत हुई। 1970 का दशक 'दलित पैंथर्स' जैसे आंदोलनों के उदय का गवाह बना। 1990 में मंडल आयोग की सिफारिशों को आधिकारिक रूप से लागू करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया। यह मिलान भारत में दलितों और पिछड़े वर्गों के सामाजिक और राजनीतिक उत्थान के प्रमुख मील के पत्थरों और उनके क्रमिक ऐतिहासिक घटनाक्रम को सांख्यिकीय रूप से प्रदर्शित करता है।

144. (B) कुपोषण और खराब स्वास्थ्य सेवाएँ गरीबों में इसका जोखिम बढ़ाती हैं।
गरीबी और अक्षमता एक-दूसरे को पुष्ट करने वाली स्थितियाँ हैं। निर्धनता के कारण बच्चों और गर्भवती महिलाओं को पर्याप्त पोषण नहीं मिल पाता, जिससे जन्मजात अक्षमता का खतरा बढ़ जाता है। इसके अतिरिक्त, गरीबों के लिए सुरक्षित पेयजल, स्वच्छता और आधुनिक स्वास्थ्य सुविधाओं का अभाव बीमारियों को अक्षमता में बदल देता है। दूसरी ओर, अक्षम व्यक्ति के कारण परिवार की आय घटती है और खर्चे बढ़ते हैं, जो उन्हें निर्धनता की खाई में और अधिक गहराई तक धकेल देता है।

145. (B) विचारधारा के माध्यम से व्यवस्था को उचित या प्राकृतिक दर्शाना।
'न्यायसंगत सिद्ध करने' का अर्थ है किसी असमान सामाजिक व्यवस्था को समाज के सामने सही या अनिवार्य साबित करना। जाति व्यवस्था के संदर्भ में, इसे 'शुद्धता-अशुद्धता' या 'कर्म' के सिद्धांतों के माध्यम से उचित ठहराया जाता है, ताकि लोग इसे अपनी नियति मानकर स्वीकार कर लें। जब विषमता को विचारधारा का समर्थन मिलता है, तो यह समाज में स्थिर हो जाती है और लोग इसके विरुद्ध प्रश्न उठाना बंद कर देते हैं, जिससे शोषणकारी संरचनाएं लंबे समय तक जीवित रहती हैं।

146. (C) केवल कथन 1 सही है।
शहरीकरण और आधुनिक शिक्षा के प्रसार के कारण जाति और आर्थिक स्थिति का पारंपरिक संबंध पहले की तुलना में कुछ ढीला अवश्य हुआ है, इसलिए पहला कथन सत्य है। हालाँकि, दूसरा कथन पूरी तरह गलत है क्योंकि आज भी भारत में आर्थिक संसाधनों का वितरण काफी हद तक जातीय आधार पर विषम है। उच्च जातियों में आज भी गरीबों की संख्या काफी कम है और निम्न जातियों में अमीरों की संख्या बहुत सीमित है, जो निरंतर जातीय-वर्ग सहसंबंध को दर्शाता है।

147. (C) उपरोक्त सभी
'अन्यथा सक्षम' की अवधारणा इन सभी पारंपरिक विचारों का खंडन करती है जो अक्षमता को केवल एक जैविक कमजोरी, व्यक्ति को एक लाचार पीड़ित या सहायता का पात्र मानते हैं। यह आधुनिक दृष्टिकोण व्यक्ति की विशिष्ट क्षमताओं और समाज की समावेशी जिम्मेदारी पर बल देता है। यह इस रुढ़िवादी सोच को पूरी तरह से नकारता है कि अक्षम व्यक्ति समाज पर बोझ हैं; इसके विपरीत, यह उनके स्वाभिमान, उनकी सक्रिय भागीदारी और उनके द्वारा समाज में किए जा सकने वाले सार्थक योगदान को प्रमुखता देता है।

148. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।.
फिल्में और उपन्यास समाज का दर्पण होते हैं, जो प्रचलित पूर्वाग्रहों और रुढ़ियों को बहुत ही बारीकी से चित्रित करते हैं। एक संवेदनशील पाठक या दर्शक इन कहानियों के माध्यम से यह समझ सकता है कि समाज में कुछ समूहों के प्रति नकारात्मक धारणाएँ कैसे काम करती हैं और वे लोगों के जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं। इस प्रकार, कला और साहित्य सामाजिक विषमता को समझने और उसे चुनौती देने के लिए एक सशक्त माध्यम और प्रभावशाली उपकरण के रूप में कार्य करते हैं।

149. (A) 1 और 3
सामाजिक स्तरीकरण समाज की एक सार्वभौमिक और व्यापक व्यवस्था है। जाति जैसी व्यवस्थाओं में जन्म ही व्यक्ति के भविष्य के व्यावसायिक अवसरों को निर्धारित करने का मुख्य आधार होता है। यह कहना गलत है कि तकनीकी रूप से उन्नत समाजों में संसाधन समान रूप से बँटे होते हैं; वहाँ भी वर्ग और आय की भारी असमानताएँ मौजूद रहती हैं। कोई भी स्तरीकरण व्यवस्था बिना वैचारिक समर्थन के लंबे समय तक नहीं चल सकती क्योंकि इसे समाज में न्यायसंगत ठहराना अनिवार्य होता है।

150. (B) सामाजिक संरचनाओं द्वारा निर्मित विषमता जिसके विरुद्ध निरंतर संघर्ष होते हैं।
सामाजिक विषमता और बहिष्कार कोई प्राकृतिक सत्य नहीं, बल्कि मानवीय और सामाजिक संरचनाओं द्वारा निर्मित व्यवस्थाएं हैं। ये व्यवस्थाएं संसाधनों और अवसरों तक असमान पहुँच सुनिश्चित करती हैं, जिसका समाज के वंचित समूहों द्वारा हमेशा से निरंतर विरोध और संघर्ष किया जाता रहा है। यह निष्कर्ष रेखांकित करता है कि विषमता एक परिवर्तनशील स्थिति है, और सामूहिक प्रयासों तथा चेतना के माध्यम से

172. (B) समाज द्वारा निर्मित भौतिक और सामाजिक बाधाएँ।
विकलांगता का सामाजिक मॉडल यह तर्क देता है कि अक्षमता शारीरिक नहीं, बल्कि संरचनात्मक है। समाज की बनावट ऐसी है जो विशिष्ट शारीरिक स्थितियों वाले लोगों की जरूरतों को नजरअंदाज करती है। अनुपयुक्त बुनियादी ढांचा, भेदभावपूर्ण नीतियां और नकारात्मक सामाजिक दृष्टिकोण मिलकर लोगों को विकलांग बनाते हैं। इस प्रकार, विकलांगता व्यक्ति के भीतर नहीं, बल्कि समाज द्वारा खड़ी की गई बाहरी बाधाओं में निहित एक अवस्था है।

173. (D) बाधा एक शारीरिक स्थिति है, जबकि विकलांगता समाज द्वारा निर्मित एक सामाजिक स्थिति है।
सामाजिक मॉडल 'बाधा' और 'विकलांगता' के बीच एक स्पष्ट विभाजन रेखा खींचता है। बाधा एक व्यक्ति की शारीरिक, संवेदी या मानसिक स्थिति को दर्शाती है, जो एक जैविक वास्तविकता है। इसके विपरीत, विकलांगता तब उत्पन्न होती है जब समाज इन शारीरिक भिन्नताओं को समायोजित करने में विफल रहता है। अतः, विकलांगता समाज द्वारा थोपी गई एक ऐसी सीमा है जो व्यक्ति की पूर्ण भागीदारी को रोकती है।

174. (A) यह सामाजिक मॉडल के तर्क को पुष्ट करता है कि समाज बाधाएँ उत्पन्न करता है।
किसी इमारत में रैंप का न होना विकलांगता के सामाजिक मॉडल का एक सटीक उदाहरण है। यह दर्शाता है कि व्यक्ति अपनी शारीरिक अक्षमता के कारण नहीं, बल्कि वास्तुशिल्प की कमी के कारण भवन में प्रवेश करने में असमर्थ है। यदि समाज समावेशी संरचनाओं का निर्माण करे, तो शारीरिक भिन्नता वाले लोग भी बिना किसी बाधा के कार्य कर समान अवसर प्राप्त करने में सक्षम हो सकते हैं।

175. (C) एक बाधा-मुक्त और समावेशी समाज का निर्माण करना।
सामाजिक मॉडल के अनुसार, विकलांगता की चुनौती का समाधान चिकित्सा सुधारों के बजाय व्यापक सामाजिक बदलावों में निहित है। इसके लिए एक ऐसी दुनिया बनाने की आवश्यकता है जहाँ भौतिक संरचनाएं, परिवहन और संचार के साधन सभी के लिए सुलभ हों। एक समावेशी समाज वह है जो विविधता का सम्मान करता है और सभी प्रकार की मानवीय क्षमताओं को स्थान देने के लिए अपनी व्यवस्था करता है।

पवित्र माना जाता है, जबकि अन्य को अशुद्ध घोषित कर दिया जाता है। यह पदानुक्रमित विभाजन ही वह आधार है जिसके माध्यम से कुछ समुदायों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाता रहा है और उन्हें सामाजिक व्यवस्था से बाहर रखा गया है।

162. (B) उन्हें भूमि स्वामित्व और शिक्षा जैसे संसाधनों से वंचित किया गया, जिससे वे गरीब बने रहे।
अस्पृश्यता का प्रभाव केवल सामाजिक दूरियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके गहरे आर्थिक परिणाम भी हैं। बहिष्कृत समुदायों को भूमि रखने और शिक्षा प्राप्त करने जैसे मौलिक अधिकारों से वंचित करके उन्हें आर्थिक रूप से पंगु बना दिया गया। संसाधनों के अभाव में वे केवल निम्न श्रेणी के कार्यों में फंसे रहे, जिससे उनकी गरीबी और निर्भरता एक स्थायी चक्र के रूप में बनी रही।

163. (C) बहिष्कार, अधीनता और शोषण
अस्पृश्यता एक त्रि-आयामी संकट है जो बहिष्कार, अधीनता और शोषण के मजबूत स्तंभों पर आधारित है। बहिष्कार के माध्यम से समूहों को समाज से अलग किया जाता है, अधीनता उन्हें पदानुक्रम में नीचे बनाए रखती है, और शोषण उनकी श्रम शक्ति का अनुचित लाभ उठाने की अनुमति देता है। ये तीनों तत्व मिलकर मानवीय गरिमा को नष्ट करते हैं और एक दमनकारी सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखते हैं।

164. (D) क्योंकि यह एक गहरी संरचनात्मक व्यवस्था है जो जीवन के सभी पहलुओं को प्रभावित करती है।
अस्पृश्यता महज़ व्यक्तिगत पसंद या नापसंद का मामला नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक ढांचा है। यह व्यवस्था व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक जीवन के हर क्षेत्र को नियंत्रित करती है। इसकी संरचनात्मक प्रकृति के कारण ही यह सदियों से समाज में गहराई तक व्याप्त है, जहाँ संसाधनों के वितरण और मानवीय संबंधों को जाति के कड़े नियमों द्वारा निरंतर संचालित किया जाता है।

165. (A) अस्पृश्यता के कारण हुई गरीबी को ही यह सिद्ध करने के लिए इस्तेमाल किया जाता है कि वे स्वाभाविक रूप से 'अशुद्ध' हैं।
सामाजिक अधीनता और आर्थिक बदहाली का एक जटिल अंतर्संबंध है जो अस्पृश्यता को पुष्ट करता है। संसाधनों से वंचित समूहों की दयनीय जीवन स्थितियों को सुधारने के बजाय, समाज अक्सर इसी गरीबी को उनकी अशुद्धता के प्रमाण के रूप में पेश करता है। यह तर्क प्रणाली शोषण को सही ठहराती है और पीड़ितों को उनकी ही खराब सामाजिक स्थिति के लिए स्वयं दोषी मानती है।

166. (B) एक राष्ट्र के भीतर एक समूह द्वारा दूसरे समूह के संसाधनों का शोषण।
आंतरिक उपनिवेशवाद की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि शोषण केवल विदेशी शक्तियों तक सीमित नहीं है। एक स्वतंत्र देश के भीतर, शक्तिशाली समूह विशिष्ट क्षेत्रों के प्राकृतिक संसाधनों पर कब्जा कर लेते हैं। यह प्रक्रिया औपनिवेशिक शासन के समान ही विनाशकारी होती है, जहाँ स्थानीय लोगों की उपेक्षा कर केवल व्यापक राष्ट्रीय लाभ देखा जाता है और स्वदेशी आबादी का व्यवस्थित शोषण किया जाता है।

167. (B) उन्होंने आदिवासियों को उनकी भूमि से विस्थापित किया और उनकी आजीविका को नष्ट कर दिया।
स्वतंत्रता के बाद लागू किए गए औद्योगीकरण के मॉडल ने आदिवासी समुदायों पर अत्यंत प्रतिकूल प्रभाव डाला है। बड़े बांधों और खनन परियोजनाओं के कारण लाखों आदिवासियों को उनकी पैतृक भूमि से जबरन बेदखल होना पड़ा। विस्थापन की इस प्रक्रिया ने न केवल उनके पारंपरिक आजीविका के साधनों को छीन लिया, बल्कि उन्हें अपनी जड़ों से काटकर सामाजिक और भीषण आर्थिक असुरक्षा के दलदल में धकेल दिया।

168. (A) 'राष्ट्रीय हित' और आर्थिक विकास के नाम पर।
आदिवासी क्षेत्रों में होने वाले विस्थापन को अक्सर व्यापक 'राष्ट्रीय हित' के तर्क के साथ वैध ठहराया जाता है। सरकारों और निगमों का मानना है कि देश की आर्थिक प्रगति के लिए इन क्षेत्रों में मौजूद खनिजों और जल संसाधनों का दोहन अनिवार्य है। इस प्रक्रिया में, आदिवासी समुदायों के व्यक्तिगत और सामुदायिक अधिकारों की बलि दे दी जाती है और विकास के लाभ उन तक नहीं पहुँचते।

169. (C) आदिवासी आबादी वाले क्षेत्रों में।
भारत की प्राकृतिक संपदा, जैसे खनिज, सघन वन और प्रमुख जल स्रोत, मुख्य रूप से उन भौगोलिक क्षेत्रों में केंद्रित हैं जहाँ आदिवासी समुदाय निवास करते हैं। संसाधनों की यह प्रचुरता ही इन क्षेत्रों में बाहरी हस्तक्षेप और संघर्ष का प्रमुख कारण बनी है। विडंबना यह है कि अपनी भूमि पर इतने समृद्ध संसाधन होने के बावजूद, आदिवासी समुदाय स्वयं गरीबी और विस्थापन की मार झेल रहे हैं।

170. (D) राष्ट्रीय विकास के नाम पर की गई परियोजनाओं ने आदिवासियों के जीवन और संस्कृति को लाभ पहुँचाने के बजाय नष्ट कर दिया।
आदिवासियों के लिए विकास की परिभाषा विनाश में बदल गई है क्योंकि उनके हितों को राष्ट्रीय परियोजनाओं के नीचे दबा दिया गया। विस्थापन ने उनकी आत्मनिर्भर जीवनशैली, सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक ताने-बाने को अपूरणीय क्षति पहुँचाई है। बिना उचित पुनर्वास के की गई इन गतिविधियों ने उन्हें हाशिए पर धकेल दिया है, जिससे स्पष्ट है कि यह विकास उनके जीवन के लिए पूरी तरह विनाशकारी रहा है।

171. (C) व्यक्ति के शरीर या मन में एक कमी के रूप में।
चिकित्सा मॉडल विकलांगता को पूरी तरह से एक व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या या जैविक त्रुटि के रूप में देखता है। इस दृष्टिकोण के तहत, समस्या का मूल कारण व्यक्ति के शारीरिक या मानसिक अंगों की कार्यप्रणाली में विफलता माना जाता है। यहाँ सारा ध्यान चिकित्सा उपचार और व्यक्ति को समाज के तथाकथित 'सामान्य' मानकों के अनुरूप ढालने पर ही केंद्रित होता है, न कि सामाजिक संरचनाओं पर।

एक अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी समाज की स्थापना करना पूर्णतः संभव और समाज के लिए अत्यंत आवश्यक है।

151. (B) राजनीतिक पूँजी
पियरे बोरद्यू ने सामाजिक स्तरीकरण को समझने के लिए तीन प्रमुख प्रकार की पूँजी की पहचान की है। इसमें आर्थिक पूँजी के तहत धन और संपत्ति, सांस्कृतिक पूँजी के अंतर्गत ज्ञान और शिक्षा, तथा सामाजिक पूँजी के रूप में सामाजिक नेटवर्क शामिल हैं। राजनीतिक शक्ति या पूँजी का उल्लेख बोरद्यू की इस विशिष्ट वर्गीकरण सूची में सीधे तौर पर एक स्वतंत्र रूप में नहीं किया गया है।

152. (A) पूँजी का एक रूप दूसरे रूप को प्राप्त करने या उसमें बदलने में मदद कर सकता है।
पूँजी की परिवर्तनीयता का सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि विभिन्न प्रकार की पूँजी एक-दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करती हैं। एक व्यक्ति अपनी आर्थिक संपदा का उपयोग उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्राप्त करने के लिए कर सकता है। इसी प्रकार, प्रभावशाली सामाजिक संबंधों का लाभ उठाकर नए आर्थिक अवसरों को बढ़ाना संभव होता है, जिससे स्तरीकरण की प्रक्रिया समाज में निरंतर सुदृढ़ बनी रहती है।

153. (C) आर्थिक पूँजी का सांस्कृतिक पूँजी में परिवर्तन।
जब कोई धनी अभिभावक अपने संसाधनों का निवेश संतान की उच्च शिक्षा और कौशल विकास में करता है, तो यह संचित धन का ज्ञान में रूपांतरण है। यहाँ आर्थिक पूँजी का उपयोग विशिष्ट शैक्षणिक योग्यता और बौद्धिक क्षमता हासिल करने के लिए किया जा रहा है। बोरद्यू के अनुसार, यह प्रक्रिया दर्शाती है कि कैसे प्रचुर भौतिक संसाधन अंततः समाज में सांस्कृतिक लाभ और प्रतिष्ठा में बदल जाते हैं।

154. (D) क्योंकि विशेषाधिकार प्राप्त समूह अपनी विभिन्न प्रकार की पूँजी अपनी अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करते हैं।
सामाजिक स्तरीकरण की स्थिरता का मुख्य कारण संसाधनों का पीढ़ीगत हस्तांतरण है। समृद्ध परिवार अपने बच्चों को न केवल विरासत में धन देते हैं, बल्कि उन्हें बेहतर सामाजिक संपर्क और उत्कृष्ट शिक्षा भी प्रदान करते हैं। यह संचित लाभ अगली पीढ़ी को समाज के उच्च स्तर पर बनाए रखता है, जिससे वंचित समूहों के लिए ऊपर उठना और इच्छित सामाजिक गतिशीलता प्राप्त करना अत्यंत कठिन हो जाता है।

155. (C) सामाजिक विषमता एक संरचनात्मक मुद्दा है जो विभिन्न प्रकार की पूँजी के असमान वितरण से कायम रहती है।
सामाजिक विषमता केवल व्यक्तिगत प्रयासों या अक्षमता का परिणाम नहीं है, बल्कि यह समाज की संरचनात्मक बनावट में निहित है। विभिन्न प्रकार की पूँजी का असमान वितरण और पीढ़ीगत हस्तांतरण इस असमानता को वैध और स्थायी बनाता है। यह व्यवस्था सुनिश्चित करती है कि शक्ति और संसाधनों तक पहुँच समाज के केवल कुछ विशिष्ट समूहों तक ही सीमित बनी रहे, जिससे सामाजिक असंतुलन बना रहता है।

156. (B) एक समूह के प्रति एक पूर्व-कल्पित दृष्टिकोण या मनोवृत्ति।
पूर्वाग्रह किसी विशेष समूह या उसके सदस्यों के प्रति पहले से बनाई गई एक मानसिक धारणा है। यह अक्सर नकारात्मक होती है और पर्याप्त तथ्यों या व्यक्तिगत अनुभव के बिना केवल सुनी-सुनाई बातों पर आधारित होती है। चूँकि यह एक आंतरिक दृष्टिकोण है, इसलिए नए और विरोधाभासी सबूत मिलने के बावजूद पूर्वाग्रहपूर्ण सोच को बदलना एक व्यक्ति के लिए अत्यंत कठिन और चुनौतीपूर्ण कार्य होता है।

157. (D) रुढ़िबद्ध धारणा
जब किसी समूह के सभी सदस्यों के बारे में एक ही प्रकार की सरलीकृत और अति-सामान्यीकृत धारणा बना ली जाती है, तो उसे रुढ़िबद्ध धारणा कहा जाता है। किसी विशिष्ट वर्ग के प्रत्येक व्यक्ति को बिना जांचे एक ही श्रेणी में डाल देना व्यक्तिगत भिन्नताओं को पूरी तरह नजरअंदाज करता है। यह विश्वास समाज में पक्षपातपूर्ण व्यवहार को बढ़ावा देता है और समूहों के प्रति गलत धारणाएं बनाता है।

158. (A) पूर्वाग्रह एक दृष्टिकोण (सोच) है, जबकि भेदभाव एक व्यवहार (कार्य) है।
पूर्वाग्रह और भेदभाव के बीच का अंतर मानसिक अवस्था और क्रिया के बीच का है। पूर्वाग्रह एक आंतरिक विचार या नकारात्मक मनोवृत्ति है जो किसी समूह के प्रति मन में बनी रहती है। इसके विपरीत, भेदभाव उस सोच का बाहरी और व्यावहारिक प्रकटीकरण है। जब कोई व्यक्ति अपनी नकारात्मक सोच के आधार पर दूसरों के साथ अनुचित व्यवहार करता है, तो वह क्रिया भेदभाव की श्रेणी में आती है।

159. (C) भेदभाव
किसी व्यक्ति को उसकी पहचान, जैसे धर्म या जाति के आधार पर बुनियादी सुविधाओं या अधिकारों से वंचित करना भेदभाव की श्रेणी में आता है। यहाँ मकान मालिक की क्रिया एक सक्रिय व्यवहार है जो किरायेदार को उसके समूह की सदस्यता के कारण समान अवसर से रोकती है। यह कृत्य दर्शाता है कि कैसे व्यक्तिगत पूर्वाग्रह और रुढ़ियाँ समाज में सक्रिय रूप से अन्यायपूर्ण कार्यों में बदल जाती हैं।

160. (A) वे सामाजिक असमानता को मजबूत करते हैं और बहिष्कार को जन्म देते हैं।
पूर्वाग्रह, रुढ़िबद्ध धारणाएँ और भेदभाव परस्पर जुड़कर एक ऐसा नकारात्मक तंत्र बनाते हैं जो समाज को विभाजित करता है। यह दुष्चक्र न केवल मौजूदा सामाजिक असमानताओं को और गहरा करता है, बल्कि हाशिए पर रहने वाले समुदायों के लिए मुख्यधारा से जुड़ने के मार्ग भी बंद कर देता है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक अन्याय स्थायी हो जाता है और प्रभावित समूहों का व्यवस्थित रूप से बहिष्कार किया जाता है।

161. (D) शुद्धता और प्रदूषण
भारतीय जाति व्यवस्था में अस्पृश्यता की जड़ें शुद्धता और प्रदूषण की धार्मिक-सामाजिक अवधारणाओं में समाहित हैं। इस विचारधारा के अनुसार, कुछ जातियों को जन्मजात रूप से

अध्याय 06
सांस्कृतिक विविधता की चुनौतियाँ

1. 'सांस्कृतिक विविधता' शब्द किस पर बल देता है?
(A) सामाजिक असमानताओं पर
(B) सामाजिक अंतरों पर
(C) आर्थिक स्तरीकरण पर
(D) राजनीतिक पदानुक्रम पर

2. सामुदायिक पहचान का आधार क्या होता है?
(A) जन्म तथा अपनेपन का भाव
(B) व्यक्तिगत उपलब्धि और योग्यता
(C) व्यावसायिक कुशलता और शिक्षा
(D) राजनीतिक दल की सदस्यता

3. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सामुदायिक पहचान के संदर्भ में 'प्रदत्त' होने का सबसे सटीक वर्णन करता है?
(A) यह एक ऐसी पहचान है जिसे व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत पसंद और रुचि के आधार पर चुनता है।
(B) यह एक ऐसी पहचान है जिसे कड़ी मेहनत और कठिन प्रतियोगी परीक्षा पास करके हासिल की जाती है।
(C) जन्म आधारित पहचान जिसमें व्यक्ति की पसंद शामिल नहीं होती।
(D) यह एक ऐसी अस्थायी पहचान है जिसे परिस्थितियों के अनुसार आसानी से बदला जा सकता है।

4. मैक्स वेबर के अनुसार, राज्य को परिभाषित करने वाला मुख्य तत्व क्या है?
(A) एक साझा ऐतिहासिक विरासत और संस्कृति का विकास होना।
(B) सभी नागरिकों के लिए समान रूप से व्यापक आर्थिक अवसर प्रदान करना।
(C) एक समान भाषा और विशिष्ट धार्मिक विश्वासों का व्यापक प्रचार करना।
(D) विधिसम्मत बल प्रयोग पर एकाधिकार का दावा।

5. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): सामुदायिक पहचानें बहुत प्रबल होती हैं और तीव्र भावावेशों को भड़का सकती हैं।
कारण (R): सामुदायिक पहचान जन्म पर आधारित होती है और यह 'हम क्या हैं' के भाव को दर्शाती है, न कि 'हम क्या बन गए हैं'।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

6. राष्ट्र और राज्य के बीच के संबंध को अक्सर 'एकैक' कहा जाता है, इसका क्या तात्पर्य है?
(A) एक राज्य में अनेक राष्ट्र हो सकते हैं।
(B) प्रत्येक राष्ट्र का अपना राज्य, और प्रत्येक राज्य राष्ट्र का प्रतिनिधि।
(C) एक राष्ट्र अनेक राज्यों में फैला हो सकता है।
(D) राज्य और राष्ट्र दो पूर्णतः अलग-अलग अवधारणाएँ हैं।

7. 'दोहरी नागरिकता' का कानून किसी व्यक्ति को क्या अनुमति देता है?
(A) एक ही समय में दो व्यवसायों में काम करने की
(B) दो अलग-अलग राजनीतिक दलों का सदस्य बनने की
(C) एक ही देश में दो अलग-अलग स्थानों पर मतदान करने की
(D) एक ही समय में दो अलग-अलग राज्यों का नागरिक बनने की

8. निम्नलिखित सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (अवधारणा)
P. आत्मसात्करणवादी नीति
Q. एकीकरणवादी नीति
R. राज्य-राष्ट्र मॉडल
S. राष्ट्र-राज्य
सूची II: (विवरण)
1. सार्वजनिक क्षेत्र से सांस्कृतिक विभिन्नताओं को दूर करना, पर निजी क्षेत्र में अनुमति देना।
2. सभी नागरिकों को प्रभावशाली समूह के सांस्कृतिक मूल्यों को अपनाने के लिए मजबूर करना।
3. आधुनिक युग में राजनीतिक वैधता का एक प्रमुख स्रोत, जहाँ राष्ट्र और राज्य संरेखित होते हैं।
4. विभिन्न नृजातीय या धार्मिक पहचानों वाले "राष्ट्रों" का एक ही राज्य व्यवस्था में सह-अस्तित्व।
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनें:
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

9. राज्य अक्सर सांस्कृतिक विविधता के प्रति शंकालु क्यों होते हैं?
(A) क्योंकि विविधता से आर्थिक विकास में तेजी आती है।
(B) क्योंकि सांस्कृतिक विविधता से राज्य का अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव बढ़ता है।
(C) सांस्कृतिक अंतरों को मान्यता देने से सामाजिक विखंडन का भय।
(D) क्योंकि विविध समूह हमेशा राजनीतिक रूप से निष्क्रिय होते हैं।

10. निम्नलिखित में से कौन सी एक आत्मसात्करणवादी या एकीकरणवादी रणनीति नहीं है?
(A) अल्पसंख्यक समूहों को अपनी भाषा और संस्कृति के प्रचार के लिए विशेष अनुदान देना।
(B) प्रभावशाली समूह की भाषा को एकमात्र राष्ट्रभाषा बनाना।
(C) प्रभावशाली समूह के इतिहास और शूरवीरों को सम्मान देने वाले राज्य प्रतीकों को अपनाना।
(D) अल्पसंख्यक समूहों से जमीनें और जंगल छीनकर उन्हें 'राष्ट्रीय संसाधन' घोषित कर देना।

11. निम्नलिखित घटनाओं को पढ़ें:
1. सूचना का अधिकार अधिनियम संसद द्वारा पारित किया गया।
2. सूचना का अधिकार अधिनियम लागू हुआ।
3. भारत में सरकारी गुप्त अधिनियम का प्रतिबंध।
4. राजस्थान के एक ग्रामीण क्षेत्र में सूचना के अधिकार के लिए आंदोलन की शुरुआत।

उपरोक्त घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
(A) 4, 3, 1, 2
(B) 3, 4, 1, 2
(C) 4, 1, 2, 3
(D) 1, 2, 3, 4

12. भारत के संविधान की किस अनुसूची में 22 भाषाओं को आधिकारिक रूप से मान्यता दी गई है?
(A) सातवीं अनुसूची
(B) आठवीं अनुसूची
(C) नौवीं अनुसूची
(D) दसवीं अनुसूची

13. भारत की स्थिति को 'राज्य-राष्ट्र' का एक अच्छा उदाहरण क्यों माना जा सकता है?
(A) क्योंकि इसने एक अकेली हिंदू पहचान को पूरे देश पर थोप दिया है।
(B) क्योंकि इसने सभी अल्पसंख्यक धर्मों को पूरी तरह से समाप्त कर दिया है।
(C) विभिन्न सांस्कृतिक पहचानों के बावजूद बना हुआ एक जीवंत लोकतंत्र।
(D) क्योंकि यहाँ केवल एक ही भाषा और एक ही धर्म मौजूद है।

14. भारतीय राष्ट्र-राज्य के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत की नीति न तो पूरी तरह से आत्मसात्करणवादी है और न ही एकीकरणवादी।
2. संविधान भारत को एक धर्म-निरपेक्ष राज्य घोषित करता है।
3. राज्य द्वारा अल्पसंख्यक धर्मों को व्यक्त रूप से मान्यता और संवैधानिक सुरक्षा प्रदान की गई है।
4. भारत में कानून के पालन में कभी कोई कमी नहीं रही है।

उपरोक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

15. भारत में क्षेत्रवाद का मुख्य कारण क्या है?
(A) भाषाओं, संस्कृतियों, जनजातियों और धर्मों की विविधता का भौगोलिक संकेंद्रण
(B) केवल आर्थिक असमानता
(C) केवल राजनीतिक महत्वाकांक्षा
(D) विदेशी शक्तियों का हस्तक्षेप

16. स्वतंत्रता के बाद, भारतीय राज्य ने प्रारंभ में किस प्रशासनिक व्यवस्था को अपनाए रखा था?
(A) रियासतों की व्यवस्था
(B) ब्रिटिश-भारतीय व्यवस्था जिसमें 'प्रेसीडेंसी' शामिल थीं
(C) मुगलकालीन सूबा व्यवस्था
(D) ग्राम पंचायत की व्यवस्था

17. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): स्वतंत्रता प्राप्ति के तुरंत बाद, कांग्रेस नेतृत्व भाषाई राज्यों के गठन को लेकर हिचकिचा रहा था।
कारण (R): देश के विभाजन के अनुभव के कारण नेताओं को डर था कि भाषा पर आधारित राज्य देश में और अधिक बँटवारे करवा सकते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य लेकिन (R) सत्य है।

18. किस घटना के कारण आंध्र प्रदेश राज्य का गठन हुआ और राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना हुई?
(A) पोट्टि श्रीरामुलु की आमरण अनशन के बाद मृत्यु
(B) महात्मा गांधी का अनशन
(C) 1952 का आम चुनाव
(D) भारत-चीन युद्ध

19. राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट कब कार्यान्वित की गई?
(A) 15 अगस्त 1947
(B) 26 जनवरी 1950
(C) 1 नवंबर 1956
(D) 1 दिसंबर 1952

20. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भाषाई राज्यों के निर्माण ने भारतीय एकता को मजबूत किया है।
2. श्रीलंका में सिंहली को एकमात्र राजभाषा बनाने के कारण गृहयुद्ध को बढ़ावा मिला।
3. पाकिस्तान का 1971 में विभाजन भाषाई भावनाओं की उपेक्षा का परिणाम था।
4. भारत में भाषा पर आधारित राज्य कभी-कभी आपस में लड़ते हैं, लेकिन यह स्थिति विभाजन से बेहतर है।
5. सन् 2000 में बने छत्तीसगढ़, उत्तरांचल और झारखंड राज्यों के निर्माण में भाषा मुख्य कारक थी।

उपरोक्त कथनों में से कौन से सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 5
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

21. भारत के संविधान में केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों के विभाजन के लिए कौन सी सूची मौजूद नहीं है?
(A) संघ सूची
(B) राज्य सूची
(C) जिला सूची
(D) समवर्ती सूची

22. केंद्र और राज्यों के बीच राजस्व के बँटवारे के लिए हर पाँच साल में किस आयोग की स्थापना की जाती है?
(A) योजना आयोग
(B) वित्त आयोग
(C) चुनाव आयोग
(D) विधि आयोग

23. 'धर्मनिरपेक्षता' और 'सांप्रदायिकता' के प्रश्न किससे संबंधित होते हैं?
(A) केवल व्यक्तिगत धार्मिक विश्वासों से
(B) केवल आर्थिक विकास के मुद्दों से
(C) केवल अंतर्राष्ट्रीय संबंधों से
(D) राज्य के धर्म और धार्मिक पहचान वाले राजनीतिक समूहों के साथ संबंधों से

24. निम्नलिखित सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:

सूची I: (राज्य)
P. पुराना बंबई राज्य
Q. पुराना मद्रास राज्य
R. पंजाब
S. नागालैंड

सूची II: (विशेषता)
1. सिख बहुसंख्यक
2. ईसाई बहुसंख्यक
3. तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम भाषी
4. मराठी, गुजराती, कन्नड़, कोंकणी भाषी

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनें:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

25. भारतीय राष्ट्रवाद की प्रभावशाली प्रवृत्ति कैसी रही है?
(A) अपवर्जनात्मक और तानाशाही
(B) आक्रामक और विस्तारवादी
(C) समावेशात्मक और लोकतंत्रात्मक
(D) अलगाववादी और संकीर्ण

26. समाजशास्त्रीय अर्थ में 'अल्पसंख्यक' शब्द का प्रयोग किसके लिए होता है?
(A) अपेक्षाकृत छोटे और सुविधावंचित समूह के लिए, जिसमें सामूहिकता का भाव हो
(B) किसी भी समूह के लिए जिसकी संख्या कम हो
(C) केवल आर्थिक रूप से पिछड़े समूहों के लिए
(D) अत्यंत धनवान लोगों के समूह के लिए

27. निम्नलिखित में से कौन सा समूह समाजशास्त्रीय अर्थ में अल्पसंख्यक नहीं है?
(A) भारत में पारसी समुदाय
(B) भारत में यहूदी समुदाय
(C) भारत में सिख समुदाय
(D) 29 फरवरी को जन्मे लोग

28. भारतीय राष्ट्रवाद पर किन दो महानुभावों ने अपवर्जनात्मक राष्ट्रवाद के विरुद्ध व्यापक टीका-टिप्पणी की थी?
(A) जवाहरलाल नेहरु और सरदार पटेल
(B) महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर
(C) सुभाष चंद्र बोस और भगत सिंह
(D) बी. आर. अंबेडकर और सी. राजगोपालाचारी

29. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. अल्पसंख्यक वर्ग के सदस्यों में अपने समूह के प्रति एकात्मता और एकजुटता का प्रबल भाव होता है।
2. यह भाव अक्सर पूर्वाग्रह और भेदभाव का शिकार होने के अनुभव से उत्पन्न होता है।
3. आर्थिक रूप से संपन्न समूह कभी भी सांस्कृतिक रूप से सुविधावंचित नहीं हो सकते।
4. बाएँ हाथ से लिखने वाले लोग एक समाजशास्त्रीय अल्पसंख्यक समूह हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3

(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 3
(D) केवल 4

52. राष्ट्र को परिभाषित करना कठिन क्यों है?
(A) क्योंकि सभी राष्ट्रों में एक समान भाषा और धर्म होता है।
(B) क्योंकि राष्ट्र हमेशा एक ही नृजातीय समूह से बने होते हैं।
(C) क्योंकि राष्ट्र की अवधारणा आधुनिक युग में अप्रासंगिक हो गई है।
(D) निश्चित पारिभाषिक कसौटी का अभाव तथा अपवादों की उपस्थिति।

53. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): आज के युग में, राज्यों को राष्ट्र की उतनी ही आवश्यकता है जितनी राष्ट्रों को राज्यों की।
कारण (R): आधुनिक युग में लोकतंत्र और राष्ट्रवाद राजनीतिक वैधता के प्रमुख स्रोत बन गए हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

54. 'आत्मसात्करण' को बढ़ावा देने वाली नीतियों का अंतिम उद्देश्य क्या होता है?
(A) सभी नागरिकों को विविध सांस्कृतिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए प्रोत्साहित करना।
(B) सभी नागरिकों को एक समान सांस्कृतिक मूल्यों और मानकों को अपनाने के लिए राजी करना।
(C) प्रभावशाली सामाजिक समूह को अधीनस्थ समूह की संस्कृति अपनाने के लिए कहना।
(D) सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए एक खुला मंच प्रदान करना।

55. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में हिंदुओं के बाद दूसरा सबसे बड़ा धार्मिक समुदाय कौन सा है?
(A) ईसाई
(B) सिख
(C) बौद्ध
(D) मुसलमान

56. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत में तीन ईसाई-बहुल राज्य पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्थित हैं।
2. गोवा और केरल में ईसाइयों की बड़ी आबादी निवास करती है।
3. सिखों का विशेष जमाव पंजाब में है, जहाँ वे बहुसंख्यक हैं।
4. महाराष्ट्र में बौद्धों का अनुपात भारत के सभी राज्यों में सर्वाधिक है।
5. जैनों का सर्वाधिक अनुपात महाराष्ट्र, दिल्ली और गुजरात में पाया जाता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 5
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

57. डॉ. अंबेडकर द्वारा दिए गए आयरलैंड के उदाहरण में, रेडमंड और कारसन क्रमशः किन समूहों के नेता थे?
(A) रेडमंड (प्रोटेस्टेंट), कारसन (कैथोलिक)
(B) दोनों कैथोलिक नेता थे
(C) रेडमंड (बहुसंख्यक कैथोलिक), कारसन (अल्पसंख्यक प्रोटेस्टेंट)
(D) दोनों प्रोटेस्टेंट नेता थे

58. बांग्लादेश के निर्माण के पीछे एक प्रमुख कारण क्या था?
(A) पश्चिमी पाकिस्तान द्वारा बांग्लादेशी लोगों के भाषाई और सांस्कृतिक अधिकारों को मान्यता न देना
(B) आर्थिक मतभेद
(C) धार्मिक अंतर
(D) भौगोलिक दूरी

59. अंग्रेजी भाषा में 'कम्युनल' (communal) शब्द का क्या अर्थ है?
(A) धार्मिक रूप से आक्रामक
(B) व्यक्तिगत और निजी
(C) धर्म-निरपेक्ष और तटस्थ
(D) व्यक्ति की बजाय समुदाय या सामूहिकता से जुड़ा हुआ

60. निम्नलिखित सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (लेखक/विचारक)
P. मैक्स वेबर
Q. रवींद्रनाथ टैगोर
R. बी. आर. अंबेडकर
S. कबीरदास

सूची II: (संबंधित विचार/रचना)
1. अपवर्जनात्मक राष्ट्रवाद की आलोचना
2. राज्य की परिभाषा (विधिसम्मत बल प्रयोग पर एकाधिकार)
3. समन्वयी भक्ति परंपरा ("मोको कहाँ ढूंढ़े रे बंदे")
4. संविधान सभा में अल्पसंख्यक अधिकारों की वकालत

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनें:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

61. 'सांस्कृतिक विविधता कठोर चुनौतियाँ प्रस्तुत कर सकती है', इसका एक मुख्य कारण क्या है?

(C) सभी धर्मों के प्रति समान आदर
(D) केवल अल्पसंख्यक धर्मों का संरक्षण

42. भारत में भाषाई राज्यों के पुनर्गठन से संबंधित निम्नलिखित घटनाओं को पढ़ें:
1. राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट का कार्यान्वयन।
2. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा भाषाई आधार पर पुनर्गठन का वादा।
3. आंध्र प्रदेश राज्य की स्थापना।
4. विभाजन के बाद कांग्रेस नेतृत्व की भाषाई राज्यों पर हिचकिचाहट।

उपरोक्त घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
(A) 2, 4, 3, 1
(B) 4, 2, 1, 3
(C) 1, 3, 4, 2
(D) 2, 3, 1, 4

43. 'अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण' का आरोप किस संदर्भ में लगाया जाता है?
(A) जब राज्य बहुसंख्यक समुदाय को विशेष अधिकार देता है।
(B) जब राज्य सभी धर्मों के प्रति तटस्थ रहता है।
(C) जब राज्य आर्थिक नीतियों पर ध्यान केंद्रित करता है।
(D) जब राज्य अल्पसंख्यकों के संरक्षण के लिए विशेष प्रावधान करता है।

44. 'नागरिक समाज' को किस क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया गया है?
(A) परिवार के निजी क्षेत्र के भीतर
(B) परिवार से परे, राज्य और बाज़ार के बाहर का क्षेत्र।
(C) राज्य और बाज़ार के क्षेत्र के भीतर
(D) केवल सरकारी संस्थाओं का क्षेत्र

45. निम्नलिखित सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (अनुच्छेद)
P. अनुच्छेद 29(1)
Q. अनुच्छेद 29(2)
R. अनुच्छेद 30(1)
S. अनुच्छेद 30(2)

सूची II: (प्रावधान)
1. राज्य सहायता प्राप्त शिक्षण संस्थानों में धर्म, जाति आदि के आधार पर प्रवेश से वंचित नहीं करेगा।
2. नागरिकों के किसी भी वर्ग को अपनी विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति को बनाए रखने का अधिकार।
3. राज्य अल्पसंख्यक द्वारा प्रबंधित संस्था को सहायता देने में भेदभाव नहीं करेगा।
4. धर्म या भाषा पर आधारित अल्पसंख्यकों को अपनी रुचि की शिक्षण संस्थाओं की स्थापना और प्रशासन का अधिकार।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनें:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

46. निम्नलिखित में से कौन नागरिक समाज का अंग नहीं है?
(A) गैर-सरकारी संगठन (NGO)
(B) मजदूर संघ
(C) जनसंचार माध्यम
(D) सशस्त्र सेनाएँ

47. सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) नागरिकों को सरकारी अभिलेखों तक पहुँच का अधिकार देना
(B) निजी कंपनियों की जानकारी सार्वजनिक करना
(C) राजनेताओं की व्यक्तिगत संपत्ति का खुलासा करना
(D) विदेशी दूतावासों की गतिविधियों की निगरानी करना

48. सूचना का अधिकार अधिनियम के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान की शुरुआत कहाँ से हुई?
(A) दिल्ली में एक शहरी आंदोलन से
(B) ग्रामीण राजस्थान में एक आंदोलन से
(C) मुंबई के मजदूर संघों द्वारा
(D) कोलकाता के बुद्धिजीवियों द्वारा

49. निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) नागरिक समाज राज्य-नियंत्रित नहीं होना चाहिए।
(B) नागरिक समाज केवल राज्य के समर्थन में कार्य करता है।
(C) नागरिक समाज का उद्देश्य विशुद्ध रूप से वाणिज्यिक मुनाफा कमाना नहीं होना चाहिए।
(D) राजनीतिक दल नागरिक समाज का हिस्सा हो सकते हैं।

50. एक सत्तावादी राज्य की क्या विशेषता होती है?
(A) यह नागरिक स्वतंत्रताओं को सीमित या समाप्त कर देता है।
(B) यह लोगों की आवाज सुनता है और उनके प्रति उत्तरदायी होता है।
(C) यह प्रेस की पूर्ण स्वतंत्रता सुनिश्चित करता है।
(D) यह राजनीतिक क्रियाकलाप को प्रोत्साहित करता है।

51. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. प्रदत्त पहचानें अर्जित योग्यताओं पर आधारित होती हैं।
2. समाजीकरण की प्रक्रिया केवल बचपन तक सीमित होती है।
3. हमारा समुदाय हमें भाषा और सांस्कृतिक मूल्य प्रदान करता है।
4. सामुदायिक पहचान 'हम क्या बन गए हैं' के भाव की द्योतक है।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 4

(C) केवल 3 और 4
(D) केवल 1 और 4

30. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में मुसलमानों की जनसंख्या का प्रतिशत कितना था?
(A) 13.4%
(B) 2.3%
(C) 80%
(D) 14.2%

31. भारत का कौन सा राज्य मुस्लिम-बहुल है?
(A) जम्मू और कश्मीर
(B) उत्तर प्रदेश
(C) पश्चिम बंगाल
(D) केरल

32. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): धार्मिक अथवा सांस्कृतिक अल्पसंख्यकों को बहुसंख्यक वर्ग के जनसांख्यिकीय प्रभुत्व के कारण विशेष संरक्षण की आवश्यकता होती है।
कारण (R): एक मजबूत और लोकतंत्रात्मक राष्ट्र के लिए अल्पसंख्यक समूहों के अधिकारों को सुनिश्चित करने वाले संवैधानिक प्रावधानों की आवश्यकता होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

33. संविधान सभा में डॉ. अंबेडकर ने अल्पसंख्यकों को किसके विरुद्ध एक सुरक्षा उपाय के रूप में चेतावनी दी थी?
(A) अल्पसंख्यक वर्ग हमेशा बहुसंख्यकों के साथ मिलकर रहना चाहते हैं।
(B) अल्पसंख्यक वर्ग की राज्य संरचना को खंडित करने की शक्ति।
(C) अल्पसंख्यक वर्ग को किसी सुरक्षा की आवश्यकता नहीं है।
(D) अल्पसंख्यक वर्ग को शासन में कोई रुचि नहीं होती है।

34. भारतीय संविधान का कौन सा अनुच्छेद धर्म या भाषा पर आधारित सभी अल्पसंख्यक-वर्गों को अपनी रुचि की शिक्षा संस्थाओं की स्थापना और प्रशासन का अधिकार देता है?
(A) अनुच्छेद 30(1)
(B) अनुच्छेद 29(1)
(C) अनुच्छेद 29(2)
(D) अनुच्छेद 30(2)

35. सन् 2000 में गठित हुए नए राज्यों के समूह की पहचान करें।
(A) गोवा, मिज़ोरम, अरुणाचल प्रदेश
(B) सिक्किम, मणिपुर, त्रिपुरा
(C) छत्तीसगढ़, उत्तरांचल, झारखंड
(D) हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश

36. रोज़मर्रा की भाषा में 'सांप्रदायिकता' का क्या अर्थ है?
(A) विभिन्न समुदायों के बीच शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व
(B) धर्म के प्रति एक तटस्थ दृष्टिकोण
(C) सभी धर्मों का समान आदर
(D) धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक उग्रवाद

37. एक सांप्रदायिकतावादी का मुख्य विश्वास क्या होता है?
(A) आर्थिक विकास सभी समस्याओं का समाधान है।
(B) व्यक्ति की जातिगत पहचान सबसे महत्वपूर्ण है।
(C) धार्मिक पहचान व्यक्ति की अन्य सभी पहचानों से सर्वोपरि है।
(D) राष्ट्रीय पहचान सभी धार्मिक पहचानों से ऊपर है।

38. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सांप्रदायिकता धर्म से नहीं, बल्कि राजनीति से सरोकार रखती है।
2. एक सांप्रदायिकतावादी व्यक्ति का श्रद्धालु होना आवश्यक नहीं है।
3. सांप्रदायिकता का दावा है कि एक धर्म के सभी अनुयायियों के हित समान होते हैं।
4. भारत में सांप्रदायिक दंगे केवल औपनिवेशिक काल में ही हुए।
5. कबीर की कविताएँ समन्वयी परंपराओं का प्रतीक हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 और 5
(B) केवल 2, 4 और 5
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

39. पाश्चात्य संदर्भ में 'धर्मनिरपेक्षता' का मुख्य भाव क्या है?
(A) सभी धर्मों का उत्सव मनाना
(B) नास्तिकता को बढ़ावा देना
(C) केवल एक धर्म को संरक्षण देना
(D) चर्च और राज्य की पृथकता

40. भारतीय संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता का सर्वाधिक सामान्य अर्थ क्या है?
(A) 'सांप्रदायिक' शब्द के विलोम के रूप में
(B) धर्म का पूर्ण बहिष्कार
(C) केवल हिंदू धर्म का प्रचार
(D) पश्चिमी संस्कृति का अनुकरण

41. भारत में राज्य का धर्मनिरपेक्ष चरित्र किस विचार को दर्शाता है?
(A) धर्म से पूर्ण अलगाव
(B) धार्मिक मामलों में कोई हस्तक्षेप नहीं

(A) सांस्कृतिक पहचानें कमजोर होती हैं और आसानी से बदल जाती हैं।
(B) सांस्कृतिक अंतरों के साथ कभी भी आर्थिक असमानताएँ नहीं जुड़ती हैं।
(C) सांस्कृतिक पहचानों की प्रबलता और तीव्र भावावेश भड़काने की क्षमता।
(D) विभिन्न समुदाय संसाधनों के लिए कभी प्रतिस्पर्धा नहीं करते हैं।

62. समाजीकरण की प्रक्रिया में कौन शामिल नहीं होता है?
(A) माता-पिता और परिवार
(B) नातेदार समूह और समुदाय
(C) ये सभी समाजीकरण की प्रक्रिया का हिस्सा हैं
(D) अजनबी व्यक्ति जिनसे कभी संवाद नहीं होता

63. निम्नलिखित में से कौन सी पहचान 'प्रदत्त' पहचान का उदाहरण है?
(A) किसी विशेष जाति में जन्म लेना
(B) डॉक्टर का पेशा
(C) किसी खेल टीम की सदस्यता
(D) विश्वविद्यालय की डिग्री

64. ब्रिटिश काल की कौन सी तीन बड़ी 'प्रेसिडेंसियाँ' थीं?
(A) दिल्ली, आगरा, लाहौर
(B) मद्रास, बंबई, कलकत्ता
(C) मैसूर, हैदराबाद, बड़ौदा
(D) पूना, नागपुर, पटना

65. निम्नलिखित भारतीय प्रशासनिक इकाइयों के सही कालानुक्रमिक क्रम का चयन करें:
1. बहुभाषी प्रांतीय राज्यों (प्रेसिडेंसी) का प्रभुत्व।
2. भाषा-आधारित राज्यों का गठन (राज्य पुनर्गठन आयोग के बाद)।
3. जनजातीय पहचान और क्षेत्रीय वंचन पर आधारित राज्यों का गठन।
(A) 1, 2, 3
(B) 2, 1, 3
(C) 3, 1, 2
(D) 1, 3, 2

66. "एक भाषा, दो राष्ट्र" और "दो भाषाएँ, एक राष्ट्र" की चेतावनी किस संदर्भ में दी गई थी?
(A) श्रीलंका (सीलोन) में सिंहली को एकमात्र राजभाषा बनाने के संदर्भ में
(B) भारत में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने के संदर्भ में
(C) पाकिस्तान में उर्दू भाषा के प्रभुत्व के संदर्भ में
(D) कनाडा में फ्रांसीसी और अंग्रेजी भाषा के विवाद में

67. भारतीय संविधान में शक्तियों का विभाजन यह सुनिश्चित करता है कि:
(A) सभी शक्तियाँ केंद्र सरकार के पास रहें।
(B) राज्यों के पास केंद्र से अधिक शक्तियाँ हों।
(C) राज्य एक बड़े संघीय ढांचे के अंतर्गत स्वायत्त इकाई के रूप में कार्य कर सकें।
(D) न्यायपालिका सभी विधायी शक्तियों को नियंत्रित करे।

68. निम्नलिखित में से कौन सा एक 'एकीकरणवादी' और 'आत्मसात्करणवादी' नीति का साझा लक्ष्य है?
(A) सांस्कृतिक बहुलवाद को बढ़ावा देना
(B) अल्पसंख्यक समूहों को स्वायत्तता प्रदान करना
(C) क्षेत्रीय भाषाओं को प्रोत्साहित करना
(D) एक अकेली राष्ट्रीय पहचान स्थापित करना

69. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारतीय संविधान में 'विविधता में अनेकता' के मुहावरे को स्थान मिला है।
2. संविधान के अनुच्छेद 29 के अनुसार, नागरिकों को अपनी विशेष भाषा, लिपि या संस्कृति को बनाए रखने का अधिकार है।
3. अनुच्छेद 30 केवल धार्मिक अल्पसंख्यकों को शिक्षण संस्थान स्थापित करने का अधिकार देता है।
4. भारत में अल्पसंख्यक अधिकार केवल कागजों पर हैं और उन्हें कभी लागू नहीं किया गया।

उपरोक्त कथनों में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) केवल 1 और 4

70. धर्मनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया किससे संबंधित है?
(A) जनजीवन में धर्म के बढ़ते महत्व से
(B) जनजीवन से धर्म के उत्तरोत्तर पीछे हटते जाने से
(C) विज्ञान और तर्कशक्ति के पतन से
(D) धार्मिक संस्थानों के राजनीतिकरण से

71. नागरिक समाज के संगठनों की गतिविधियों में क्या शामिल नहीं है?
(A) राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अभिकरणों के साथ पक्ष समर्थन
(B) विभिन्न सामाजिक आंदोलनों में सक्रिय भागीदारी
(C) भूमि अधिकारों और आवासीय अधिकारों के लिए अभियान चलाना
(D) केवल वाणिज्यिक लाभ के लिए कार्य करना

72. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:

अभिकथन (A): सांप्रदायिकता का दावा है कि धार्मिक पहचान अन्य सभी पहचानों से सर्वोपरि होती है।

कारण (R): यह दावा समाज को विभिन्न धार्मिक समूहों में विभाजित करता है और यह मानकर चलता है कि उनके हित एक दूसरे के विरोधी हैं।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही

(C) शैक्षणिक योग्यता और व्यावसायिक सफलता
(D) राजनीतिक विचारधारा और दलगत निष्ठा

152. अनुच्छेद के अनुसार, सामुदायिक पहचान व्यक्ति को क्या प्रदान करती है?
(A) मनोवैज्ञानिक सुरक्षा और सामाजिक अवलंब
(B) केवल आर्थिक और व्यावसायिक अवसर
(C) राजनीतिक शक्ति और सामाजिक प्रभुत्व
(D) व्यक्तिगत स्वतंत्रता और नागरिक स्वायत्तता

153. यह क्यों कहा जाता है कि सामुदायिक पहचान एक 'प्रदत्त स्थिति' है?
(A) क्योंकि इसे समाज द्वारा पुरस्कार के रूप में दिया जाता है
(B) क्योंकि इसे किसी भी परिस्थिति में बदला नहीं जा सकता
(C) क्योंकि यह व्यक्तिगत चयन या प्रयास पर आधारित नहीं होती
(D) क्योंकि यह राज्य या सरकार द्वारा प्रदान की जाती है

154. सामुदायिक पहचान पर खतरे की स्थिति में तीव्र प्रतिक्रिया क्यों होती है?
(A) क्योंकि यह केवल आर्थिक हितों को चुनौती देती है
(B) क्योंकि यह मूलभूत कानूनी और संवैधानिक अधिकारों का उल्लंघन है
(C) क्योंकि यह सत्तासीन राजनीतिक दलों को अत्यधिक कमजोर करती है
(D) क्योंकि यह व्यक्ति के आत्म-बोध और अस्तित्व से जुड़ी है

155. अनुच्छेद में 'सामाजिक जीवन की विडंबना' किसे कहा गया है?
(A) व्यक्ति अपनी पहचान पूर्णतः स्वयं चुनने में सक्षम है
(B) आर्थिक सफलता ही व्यक्ति की एकमात्र अंतिम पहचान है
(C) जिन पहचानों को व्यक्ति चुनता नहीं, वे ही सबसे शक्तिशाली हैं
(D) सभी प्रकार की सामुदायिक पहचानें अनिवार्यतः संघर्ष को जन्म देती हैं

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

आधुनिक राष्ट्र-राज्य के उदय की प्रक्रिया अक्सर एक समरूप राष्ट्रीय संस्कृति के निर्माण के विचार से गहराई से जुड़ी रही है। उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में, कई राज्यों ने यह माना कि एक मजबूत और एकीकृत राष्ट्र के लिए एक साझा भाषा, एक साझा इतिहास और समान सांस्कृतिक मूल्यों का होना अनिवार्य है। इस दृष्टिकोण के पीछे यह तर्क था कि सांस्कृतिक एकरूपता प्रशासनिक सुविधा, राजनीतिक स्थिरता और नागरिकों में 'हम-भावना' को बढ़ावा देती है। इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए, राज्यों ने अक्सर आत्मसात्करण (assimilation) की नीतियां अपनाईं। इन नीतियों का उद्देश्य अल्पसंख्यक समूहों को अपनी विशिष्ट भाषाई, धार्मिक और सांस्कृतिक पहचानों को त्यागकर प्रभावशाली समूह की संस्कृति को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना या मजबूर करना था। मानकीकृत शिक्षा प्रणाली, एक राष्ट्रभाषा का प्रचार, और राष्ट्रीय प्रतीकों का निर्माण इस प्रक्रिया के प्रमुख उपकरण थे। हालाँकि, इस समरुपीकरण की प्रक्रिया ने अक्सर सांस्कृतिक विविधता को एक समस्या के रूप में देखा और अल्पसंख्यक समूहों के बहिष्करण और हाशिए पर जाने का मार्ग प्रशस्त किया। इन नीतियों ने अक्सर सांस्कृतिक अधिकारों का हनन किया और प्रभावशाली तथा अधीनस्थ समूहों के बीच तनाव और संघर्ष को जन्म दिया।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. आधुनिक राष्ट्र-राज्यों द्वारा सांस्कृतिक समरुपता को बढ़ावा देने का मुख्य तर्क क्या था?
(A) अल्पसंख्यक संस्कृतियों को संरक्षित करना
(B) प्रशासनिक सुविधा और राजनीतिक स्थिरता प्राप्त करना
(C) अंतर्राष्ट्रीय संबंधों को मजबूत करना
(D) आर्थिक विकास को गति देना

157. 'आत्मसात्करण' (assimilation) की नीतियों का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) सभी अल्पसंख्यक संस्कृतियों को संवैधानिक दर्जा देना
(B) सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आपसी समझ को बढ़ावा देना
(C) समावेशी और बहु-सांस्कृतिक समाजों के निर्माण का समर्थन करना
(D) अल्पसंख्यक समूहों को प्रभावशाली संस्कृति अपनाने हेतु प्रेरित करना

158. स्रोत के अनुसार, सांस्कृतिक एकरूपता प्राप्त करने के लिए राज्यों द्वारा उपयोग किए जाने वाले उपकरणों में क्या शामिल नहीं था?
(A) बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन
(B) मानकीकृत शिक्षा प्रणाली
(C) एक राष्ट्रभाषा का प्रचार
(D) राष्ट्रीय प्रतीकों का निर्माण

159. सांस्कृतिक समरुपीकरण की प्रक्रिया का अल्पसंख्यक समूहों पर क्या नकारात्मक प्रभाव पड़ा?
(A) उन्हें पूर्व की तुलना में अधिक राजनीतिक अधिकार प्राप्त हुए
(B) उनका आर्थिक विकास और सामाजिक उत्थान तेजी से हुआ
(C) उन्हें अक्सर बहिष्करण और हाशिए पर जाने का सामना करना पड़ा
(D) उनकी संस्कृतियों का वैश्विक स्तर पर व्यापक प्रचार-प्रसार हुआ

(B) प्रभुत्वशाली अल्पसंख्यक
(C) सुविधावंचित अल्पसंख्यक
(D) सांख्यिकीय अल्पसंख्यक

83. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. अधिकांश प्रदत्त पहचानें इतनी पक्की होती हैं कि उन्हें हिलाया नहीं जा सकता।
2. समुदायों के बीच विवादों को निपटाना अक्सर आसान होता है क्योंकि दोनों पक्ष तार्किक होते हैं।
3. विवाद का प्रत्येक पक्ष सामने वाले पक्ष को शत्रु मानते हुए घृणा की दृष्टि से देखता है।
4. जब दो राष्ट्रों के बीच युद्ध होता है, तो प्रत्येक पक्ष यह विश्वास करता है कि परमेश्वर उनके साथ है।

उपरोक्त कथनों में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 2 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 and 4

84. भारत के पड़ोसी देशों के कौन से उदाहरण दिखाते हैं कि भाषाई मांगों की उपेक्षा करने से गंभीर परिणाम हो सकते हैं?
(A) नेपाल और भूटान
(B) चीन और म्यांमार
(C) अफगानिस्तान और ईरान
(D) श्रीलंका और पाकिस्तान

85. एक पंचवर्षीय योजना में राज्यों की भूमिका क्या होती है?
(A) उनकी कोई भूमिका नहीं होती, सब कुछ केंद्र तय करता है।
(B) राज्य केवल केंद्रीय योजनाओं को बिना किसी बदलाव के लागू करते हैं।
(C) राज्य योजना आयोगों द्वारा तैयार विस्तृत योजनाओं का समावेश।
(D) राज्य पंचवर्षीय योजनाओं का विरोध करते हैं।

86. सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के तहत, एक नागरिक को क्या अधिकार नहीं है?
(A) किसी भी 'सार्वजनिक प्राधिकरण' से सूचना का अनुरोध करना।
(B) किसी मंत्री के निजी ईमेल और फोन कॉल्स की जाँच करना।
(C) दस्तावेजों, कार्यों और अभिलेखों का निरीक्षण करना।
(D) कार्य की सामग्रियों के प्रमाणित नमूने लेना।

87. भारतीय राष्ट्रवाद को समावेशी बनाने में किसका योगदान रहा है?
(A) केवल राजनीतिक नेताओं का
(B) केवल संवैधानिक प्रावधानों का
(C) केवल आर्थिक विकास का
(D) मानवतावादी विचारों और गांधी-टैगोर जैसे विचारकों का

88. निम्नलिखित में से कौन सा कथन एकीकरणवादी नीति का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) निजी क्षेत्र में विभिन्नताओं की अनुमति, परंतु सार्वजनिक क्षेत्र में सांस्कृतिक समरुपता।
(B) यह सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में सांस्कृतिक विविधता को समाप्त करने का प्रयास करती है।
(C) यह सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में सांस्कृतिक बहुलवाद को प्रोत्साहित करती है।
(D) यह प्रभावशाली समूह को अपनी संस्कृति छोड़ने के लिए कहती है।

89. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): भारत में भाषाई राज्यों के निर्माण ने देश की एकता को मजबूत करने में मदद की है।
कारण (R): इसने विभिन्न भाषाई समूहों को एक पहचान दी और अलगाव की भावना को कम किया, जिससे वे भारतीय संघ के साथ एकीकृत महसूस कर सके।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

90. 'सांस्कृतिक विविधता का दमन करना बहुत महँगा पड़ सकता है', क्यों?
(A) इससे उन समुदायों का अलगाव होता है जिनकी संस्कृति अमान्य की जाती है।
(B) क्योंकि इससे राज्य का खर्च बढ़ जाता है।
(C) क्योंकि इससे अंतर्राष्ट्रीय व्यापार कम हो जाता है।
(D) क्योंकि इससे बहुसंख्यक समुदाय नाराज हो जाता है।

91. भारत में निम्नलिखित धार्मिक समूहों को उनकी जनसंख्या के आकार (2011 की जनगणना के अनुसार) के अवरोही क्रम में व्यवस्थित करें:
1. ईसाई
2. सिख
3. मुसलमान
4. जैन

(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 2, 3, 1, 4

92. नागरिक समाज को सक्रिय नागरिकता का क्षेत्र क्यों कहा जाता है?
(A) क्योंकि यहाँ व्यक्ति केवल अपने निजी हितों के लिए कार्य करते हैं।
(B) जहाँ नागरिक सामाजिक मुद्दों पर चर्चा कर राज्य को

(B) केवल 3
(C) केवल 3 and 4
(D) केवल 2 and 3

113. एक छात्र भारतीय समाज में विभिन्न समूहों के बीच सह-अस्तित्व के ऐतिहासिक उदाहरणों का अध्ययन कर रहा है। उसे भक्ति और सूफी आंदोलनों के भक्ति गीत और काव्य मिलते हैं। यह विरासत किस अवधारणा का सबसे अच्छा उदाहरण है?
(A) सांप्रदायिक ध्रुवीकरण
(B) समन्वयी विरासत
(C) आत्मसात्करण
(D) सांस्कृतिक अलगाव

114. 'अल्पसंख्यक' की समाजशास्त्रीय परिभाषा के लिए कौन से दो तत्व आवश्यक हैं?
(A) समूह के प्रति एकात्मता और सुविधावंचित होने का भाव।
(B) संख्यात्मक कमी और आर्थिक समृद्धि
(C) राजनीतिक शक्ति और भौगोलिक संकेंद्रण
(D) उच्च शिक्षा और शहरी निवासी

115. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): नागरिक समाज को राज्य और बाज़ार दोनों से बाहर के क्षेत्र के रूप में परिभाषित किया गया है।
कारण (R): नागरिक समाज में राजनीतिक दल और जनसंचार माध्यम जैसी संस्थाएँ शामिल होती हैं जो राज्य और बाज़ार दोनों को प्रभावित कर सकती हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

116. भारतीय राज्य द्वारा अल्पसंख्यकों के संरक्षण की नीति का आलोचकों द्वारा क्या कहकर विरोध किया जाता है?
(A) राष्ट्र-विरोधी गतिविधि
(B) बहुसंख्यकवाद
(C) आर्थिक बोझ
(D) पक्षपात या 'तुष्टीकरण'

117. 'प्रदत्त' पहचानों की एक प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) वे अस्थायी और परिवर्तनशील होती हैं।
(B) वे पसंद और योग्यता पर आधारित होती हैं।
(C) वे आकस्मिक और लगभग अनिवारणीय होती हैं।
(D) वे व्यक्ति को समाज से अलग करती हैं।

118. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. राष्ट्र एक अनूठे किस्म का समुदाय है जिसे परिभाषित करना कठिन है।
2. राष्ट्र और राज्य के बीच हमेशा 'एकैक' संबंध रहा है।
3. आधुनिक युग में, राज्य यह दावा करते हैं कि वे एक राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं।
4. लोकतंत्र और राष्ट्रवाद राजनीतिक वैधता के प्रमुख स्रोत हैं।
5. सोवियत संघ ने कभी भी अपने भीतर की राष्ट्रीयताओं को मान्यता नहीं दी।

उपरोक्त कथनों में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 and 3
(B) केवल 3, 4 and 5
(C) केवल 1, 3 and 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4 and 5

119. यदि कोई देश विभिन्न नृजातीय समूहों को अपने-अपने कानूनों का पालन करने की अनुमति देता है, लेकिन एक राष्ट्रीय भाषा और राष्ट्रीय शिक्षा प्रणाली लागू करता है, तो यह किस नीति का मिश्रण हो सकता है?
(A) शुद्ध आत्मसात्करण
(B) शुद्ध एकीकरण
(C) शुद्ध क्षेत्रवाद
(D) एकीकरणवादी और बहुसांस्कृतिक तत्वों का मिश्रण

120. भारत में भाषाई पुनर्गठन का अंतिम परिणाम क्या हुआ?
(A) भारतीय एकता को कोई ठेस नहीं पहुँची, बल्कि वह और मजबूत हुई।
(B) देश कई टुकड़ों में बँट गया।
(C) सभी भाषाएँ विलुप्त हो गईं और केवल हिंदी बची।
(D) देश में एक स्थायी गृहयुद्ध छिड़ गया।

121. सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 ने किस पुराने कानून को प्रभावहीन कर दिया?
(A) भारतीय दंड संहिता, 1860
(B) भारतीय अनुबंध अधिनियम, 1872
(C) सरकारी गुप्त अधिनियम, 1923
(D) संपत्ति का हस्तांतरण अधिनियम, 1882

122. निम्नलिखित सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (घटना/अवधारणा)
P. पोट्टि श्रीरामुलु की मृत्यु
Q. आर.टी.आई. अधिनियम
R. अनुच्छेद 30
S. सांप्रदायिकता

सूची II: (परिणाम/विशेषता)
1. नागरिक समाज की जीत
2. भाषाई राज्य का गठन
3. धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक राजनीति
4. अल्पसंख्यक शिक्षण संस्थान

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनें:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4

(D) केवल 1 and 2

103. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): अल्पसंख्यक समूहों की समाजशास्त्रीय धारणा केवल संख्यात्मक कमी पर आधारित नहीं है।
कारण (R): इसमें आमतौर पर असुविधा या हानि का कुछ भाव निहित होता है और समूह के सदस्यों में सामूहिकता की भावना होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

104. 'संस्कृति एवं लोकतंत्र' विषय पर संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की रिपोर्ट (2004) किस बात पर जोर देती है?
(A) प्रतिसंवेदी नीतियों द्वारा सांस्कृतिक विविधता के साथ राष्ट्र निर्माण संभव है।
(B) कि बहुसांस्कृतिक राज्यों में लोकतंत्र स्थायी नहीं हो सकता।
(C) कि स्थायी लोकतंत्र के लिए सांस्कृतिक अपवर्जन आवश्यक है।
(D) कि 'राज्य-राष्ट्र' का मॉडल एक असफल अवधारणा है।

105. 'अनिवासी' जमैकाइयों की संख्या 'निवासी' जमैकाइयों से अधिक होने का उदाहरण क्या सिद्ध करता है?
(A) कि एक राष्ट्र के सभी लोग एक ही राज्य के नागरिक होते हैं।
(B) कि जमैका एक बहुत छोटा देश है।
(C) कि एक राष्ट्र को अस्तित्व प्रदान करने वाले लोग विभिन्न राज्यों के नागरिक या निवासी हो सकते हैं।
(D) कि दोहरी नागरिकता एक सामान्य प्रथा नहीं है।

106. निम्नलिखित घटनाओं का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
1. राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना।
2. पोट्टि श्रीरामुलु की मृत्यु।
3. राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट को लागू करना।
4. आंध्र प्रदेश राज्य का गठन।
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 2, 1, 3

107. निम्नलिखित में से कौन सा संगठन सामान्यतः नागरिक समाज का हिस्सा नहीं माना जाएगा?
(A) एक पर्यावरण-संबंधी गैर-सरकारी संगठन
(B) एक राजनीतिक दल
(C) एक मजदूर संघ
(D) एक वाणिज्यिक निगम (जैसे रिलायंस इंडस्ट्रीज)

108. निम्नलिखित सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (राज्य/क्षेत्र)
P. जम्मू और कश्मीर
Q. पंजाब
R. नागालैंड, मिजोरम, मेघालय
S. महाराष्ट्र, दिल्ली, गुजरात
सूची II: (प्रमुख धार्मिक समूह/विशेषता)
1. ईसाई बहुल राज्य
2. जैनियों का महत्वपूर्ण अनुपात
3. मुस्लिम बहुल
4. सिख बहुल
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनें:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

109. भारतीय संविधान के अनुसार, यदि कोई विषय संघ सूची, राज्य सूची या समवर्ती सूची में नहीं है, तो उस पर कानून बनाने का अधिकार किसे है?
(A) केवल राज्य विधानमंडल को
(B) सर्वोच्च न्यायालय को
(C) केवल केंद्र (संसद) को
(D) राष्ट्रपति को

110. 'विविधता में अनेकता' का मुहावरा भारतीय समाज के किस पहलू को उजागर करता है?
(A) समाज के समरूप स्वरुप को
(B) समाज के आर्थिक पिछड़ेपन को
(C) समाज की राजनीतिक अस्थिरता को
(D) समाज के बहुल एवं विविध स्वरुप को

111. निम्नलिखित में से क्या एक आक्रामक राजनीतिक विचारधारा है जो धर्म से जुड़ी होती है?
(A) सांप्रदायिकता
(B) धर्मनिरपेक्षता
(C) बहुलवाद
(D) राष्ट्रवाद

112. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सांप्रदायिकतावादी हमेशा बहुत धार्मिक होते हैं।
2. सांप्रदायिकता का दावा है कि एक धर्म के अनुयायियों के हित भिन्न होते हैं।
3. भारत में समन्वयी परंपराओं का एक लंबा इतिहास रहा है, जैसा कि भक्ति और सूफ़ी आंदोलनों में देखा जाता है।
4. औपनिवेशिक शासकों की 'फूट डालो और शासन करो' की नीति ने सांप्रदायिक दंगों में कोई भूमिका नहीं निभाई।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 and 2

प्रभावित करते हैं।
(C) क्योंकि यह पूरी तरह से सरकार द्वारा नियंत्रित होता है।
(D) क्योंकि इसके सभी सदस्य सरकारी कर्मचारी होते हैं।

93. निम्नलिखित सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (अवधारणा)
P. प्रदत्त पहचान
Q. अर्जित पहचान
R. राष्ट्र
S. राज्य
सूची II: (उदाहरण/परिभाषा)
1. एक वास्तुकार की पहचान
2. परिवार या नातेदारी
3. विधिसम्मत बल प्रयोग पर एकाधिकार वाला निकाय
4. समुदायों से मिलकर बना एक बड़ा समुदाय
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनें:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

94. 'राज्य-राष्ट्र' के निर्माण के लिए कौन सी रणनीति सफल हो सकती है?
(A) विविधता को पूरी तरह से दबा देना।
(B) एक अकेली पहचान सब पर थोप देना।
(C) अल्पसंख्यकों के अधिकारों की पूरी तरह से उपेक्षा करना।
(D) प्रतिसंवेदी नीतियों द्वारा सांस्कृतिक विविधता का सार्थक समायोजन करना।

95. भारतीय संदर्भ में क्षेत्रवाद को बढ़ावा देने में 'क्षेत्रीय वंचन' का भाव किस प्रकार कार्य करता है?
(A) यह आग में घी का काम करता है।
(B) यह लोगों को एकजुट करता है।
(C) यह शांति स्थापित करता है।
(D) यह विकास को गति देता है।

96. निम्नलिखित में से कौन सा एक भारतीय धर्मनिरपेक्षता की विशेषता नहीं है?
(A) यह 'सांप्रदायिक' शब्द के विलोम है।
(B) यह राज्य और धर्म के बीच पूर्ण अलगाव (पृथक्करण) पर आधारित है।
(C) यह सभी धर्मों के प्रति समान आदर का द्योतक है।
(D) राज्य धार्मिक त्योहारों पर सार्वजनिक अवकाश घोषित कर सकता है।

97. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सांस्कृतिक विविधता केवल भाषा और धर्म तक सीमित है।
2. सांस्कृतिक अंतर कभी भी आर्थिक और सामाजिक असमानताओं से नहीं जुड़ते हैं।
3. भारत में क्षेत्रवाद केवल भाषाई मतभेदों के कारण है।
4. नागरिक समाज पूरी तरह से बाजार के सिद्धांतों पर काम करता है।
5. सांप्रदायिकता धर्म का एक राजनीतिक उपयोग है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 5
(B) केवल 4 and 5
(C) केवल 1, 2 and 3
(D) केवल 3 and 5

98. भारतीय संविधान का अनुच्छेद 29(2) नागरिकों को क्या सुरक्षा प्रदान करता है?
(A) राज्य द्वारा पोषित शिक्षा संस्था में धर्म, मूलवंश, जाति या भाषा के आधार पर प्रवेश से वंचित नहीं किया जाएगा।
(B) किसी भी धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता।
(C) सरकारी नौकरी में आरक्षण।
(D) अपनी संस्कृति को बनाए रखने का अधिकार।

99. 1920 के दशक में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपनी प्रांतीय इकाइयों का पुनर्गठन किस आधार पर किया था?
(A) आर्थिक आधार पर
(B) धार्मिक आधार पर
(C) भाषाई आधार पर
(D) जातिगत आधार पर

100. एक सत्तावादी राज्य के विरुद्ध नागरिक समाज का क्या महत्व है?
(A) नागरिक समाज सत्तावादी राज्य का समर्थन करता है।
(B) नागरिक समाज का सत्तावादी राज्य में कोई अस्तित्व नहीं हो सकता।
(C) नागरिक समाज राज्य को और अधिक सत्तावादी बनने में मदद करता है।
(D) नागरिक समाज राज्य पर नजर रख सकता है और उसके अन्यायपूर्ण कार्यों का विरोध कर सकता है।

101. भारत में निम्नलिखित में से कौन सा राज्य ईसाई-बहुल नहीं है?
(A) नागालैंड
(B) मिजोरम
(C) अरुणाचल प्रदेश
(D) मेघालय

102. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत में, हिंदू एक समजातीय समूह हैं।
2. 2011 में, भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मुसलमान देश था।
3. सिख धर्मावलंबी केवल पंजाब में ही रहते हैं।
4. भारत में जैन समुदाय का अस्तित्व नहीं है।
उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 3 and 4

(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

123. भारतीय समाज के संदर्भ में "मैं कौन हूँ?" इस प्रश्न का उत्तर पाने में व्यक्ति की मदद कौन करता है?
(A) केवल विद्यालयी शिक्षा
(B) केवल आर्थिक स्थिति
(C) केवल व्यक्तिगत प्रयास
(D) समाजीकरण की प्रक्रिया और समुदाय

124. किसी समुदाय के प्रति हमारी गहरी भावनात्मक संबद्धता का एक संभावित कारण क्या है?
(A) क्योंकि हमने उस समुदाय में शामिल होने के लिए बहुत प्रयास किया है।
(B) क्योंकि उस समुदाय की सदस्यता आकस्मिक और शर्त रहित होती है।
(C) क्योंकि वह समुदाय हमें आर्थिक लाभ प्रदान करता है।
(D) क्योंकि उस समुदाय की सदस्यता अस्थायी होती है।

125. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सांस्कृतिक विविधता से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों के संदर्भ में गलत है?
(A) सांस्कृतिक पहचानें तीव्र भावावेशों को भड़का सकती हैं।
(B) सांस्कृतिक अंतरों के साथ आर्थिक और सामाजिक असमानताएँ जुड़ सकती हैं।
(C) सांस्कृतिक विविधता हमेशा सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देती है।
(D) दुर्लभ संसाधनों का बँटवारा स्थिति को और जटिल बना सकता है।

126. भारत में वर्तमान में कितने राज्य और संघ राज्यक्षेत्र हैं?
(A) 29 राज्य और 7 संघ राज्यक्षेत्र
(B) 28 राज्य और 9 संघ राज्यक्षेत्र
(C) 29 राज्य और 8 संघ राज्यक्षेत्र
(D) 28 राज्य और 8 संघ राज्यक्षेत्र

127. निम्नलिखित घटनाओं/प्रक्रियाओं को पढ़ें:
1. ब्रिटिश प्रेसिडेंसी व्यवस्था का अंत और भाषाई राज्यों का उदय।
2. भक्ति और सूफ़ी आंदोलनों का उदय।
3. सूचना का अधिकार अधिनियम का पारित होना।
4. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा भाषाई पुनर्गठन का वादा।

उपरोक्त का सही कालानुक्रमिक क्रम क्या है?
(A) 2, 4, 1, 3
(B) 4, 2, 1, 3
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 1, 4, 2, 3

128. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:

अभिकथन (A): धर्मनिरपेक्षता का भारतीय और पाश्चात्य अर्थ पूरी तरह से समान नहीं है।

कारण (R): भारतीय धर्मनिरपेक्षता राज्य और धर्म के पूर्ण अलगाव के बजाय 'सर्व धर्म समभाव' या सभी धर्मों के प्रति समान आदर पर जोर देती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

129. निम्नलिखित में से कौन सा एक 'राज्य' (State) की विशेषता है, 'राष्ट्र' (Nation) की नहीं?
(A) साझा सांस्कृतिक चिह्न
(B) राजनीतिक-विधिक संस्थाओं का समुच्चय
(C) सामूहिक पहचान की भावना
(D) साझा इतिहास की भावना

130. एकीकरणवादी नीतियों के तहत, सांस्कृतिक विभिन्नताओं को किस क्षेत्र में बनाए रखने की अनुमति दी जा सकती है?
(A) निजी क्षेत्र में
(B) सार्वजनिक कार्यक्षेत्र में
(C) राजनीतिक कार्यक्षेत्र में
(D) आर्थिक कार्यक्षेत्र में

131. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत में क्षेत्रवाद केवल धर्म के कारण पाया जाता है।
2. भारतीय संघवाद क्षेत्रीय भावुकताओं को समायोजित करने का एक साधन है।
3. पुराना मद्रास राज्य एकभाषी था।
4. सन् 2000 में बने तीन नए राज्यों के निर्माण में भाषा ने कोई प्रमुख भूमिका अदा नहीं की।

उपरोक्त कथनों में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 and 3
(B) केवल 2 and 4
(C) केवल 2, 3 and 4
(D) केवल 1, 2 and 4

132. निम्नलिखित में से कौन सा एक सत्तावादी राज्य का लक्षण है?
(A) विधि की अपेक्षित प्रक्रियाओं का अधिकार
(B) प्रेस की स्वतंत्रता
(C) राजनीतिक क्रियाकलाप की स्वतंत्रता
(D) भाषण की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध

133. रवींद्रनाथ टैगोर के अनुसार, पाश्चात्य राष्ट्रवाद की भावना बच्चों को क्या सिखाती है?
(A) सभी प्रजातियों के लिए प्रेम और सम्मान
(B) शांति और सह-अस्तित्व
(C) घृणा करना और महत्वाकांक्षाओं का पोषण करना
(D) कला और साहित्य का महत्व

134. निम्नलिखित सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (वर्ष)
P. 1956
Q. 1971
R. 2000
S. 2005
सूची II: (संबंधित घटना)
1. सूचना का अधिकार अधिनियम लागू
2. झारखंड राज्य का गठन
3. पाकिस्तान का विभाजन
4. राज्य पुनर्गठन आयोग की रिपोर्ट का कार्यान्वयन
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनें:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

135. जब सांस्कृतिक अंतरों के साथ-साथ आर्थिक और सामाजिक असमानताएँ भी जुड़ जाती हैं, तो स्थिति कैसी हो जाती है?
(A) सरल हो जाती है
(B) कोई परिवर्तन नहीं होता
(C) संघर्ष समाप्त हो जाता है
(D) और भी जटिल हो जाती है

136. भारतीय संविधान में अल्पसंख्यकों के अधिकारों को शामिल करने का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) सुदृढ़ और लोकतंत्रात्मक राष्ट्र निर्माण सुनिश्चित करना।
(B) बहुसंख्यक समुदाय को कमजोर करना
(C) देश को धर्म के आधार पर विभाजित करना
(D) अंतर्राष्ट्रीय दबाव का पालन करना

137. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. नागरिक समाज में केवल सरकारी संगठन शामिल होते हैं।
2. नागरिक समाज का मुख्य उद्देश्य मुनाफा कमाना होता है।
3. नागरिक समाज राज्य के कामकाज पर नजर रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
4. सूचना के अधिकार का अभियान नागरिक समाज की पहल का एक प्रमुख उदाहरण है।
5. नागरिक समाज परिवार के निजी क्षेत्र से बाहर होता है।
उपरोक्त कथनों में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 and 5
(B) केवल 3, 4 and 5
(C) केवल 1, 3 and 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4 and 5

138. एक "राज्य-राष्ट्र" का मॉडल राष्ट्र-राज्य के पारंपरिक मॉडल से कैसे भिन्न है?
(A) यह सांस्कृतिक विविधता के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को मान्यता देता है।
(B) एक राष्ट्र, एक राज्य के सिद्धांत पर जोर देता है।
(C) यह सांस्कृतिक विविधता को पूरी तरह से खत्म करने का प्रयास करता है।
(D) यह केवल सैन्य शक्ति पर आधारित होता है।

139. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभुकिथन (A): भारत में सिखों, पारसियों जैसे धार्मिक अल्पसंख्यक आर्थिक रूप से संपन्न हो सकते हैं।
कारण (R): आर्थिक संपन्नता के बावजूद, वे हिंदुओं की विशाल जनसंख्या की तुलना में सांस्कृतिक अर्थ में सुविधावंचित हो सकते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

140. राज्य द्वारा सांस्कृतिक विविधता को कम करने या मिटाने की कोशिशों के क्या परिणाम हो सकते हैं?
(A) राष्ट्रीय एकता का सुदृढ़ीकरण
(B) अल्पसंख्यक समुदायों का अलगाव एवं उनकी पहचान का सुदृढ़ीकरण।
(C) तीव्र आर्थिक विकास
(D) अंतर्राष्ट्रीय प्रशंसा

141. भारत की 2011 की जनगणना के अनुसार, जनसंख्या की दृष्टि से इसका विश्व में कौन सा स्थान था?
(A) पहला
(B) तीसरा
(C) दूसरा
(D) चौथा

142. निम्नलिखित में से कौन सी भारतीय राज्य की विशेषता नहीं है?
(A) यह एक धर्म-निरपेक्ष राज्य है।
(B) यह एक लोकतंत्रात्मक गणराज्य है।
(C) यह एक संघीय राज्य है।
(D) यह एक आत्मसात्करणवादी राज्य है।

143. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. राष्ट्रवाद की भावना हमेशा सकारात्मक और समावेशी होती है।
2. रवींद्रनाथ टैगोर ने अपवर्जनात्मक राष्ट्रवाद की आलोचना की थी।
3. भारतीय संविधान अल्पसंख्यकों के अधिकारों को कोई संरक्षण प्रदान नहीं करता है।
4. भारत का 'राज्य-राष्ट्र' मॉडल सफल रहा है।
उपरोक्त कथनों में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 and 3

(B) केवल 2 and 4
(C) केवल 1, 2 and 4
(D) केवल 2, 3 and 4

144. ‘दोहरी नागरिकता’ का उदाहरण यहूदी जाति के अमेरिकी लोगों के संदर्भ में किन दो देशों के लिए दिया गया है?
(A) अमेरिका और ब्रिटेन
(B) इज़राइल और संयुक्त राज्य अमेरिका
(C) इज़राइल और फिलिस्तीन
(D) अमेरिका और कनाडा

145. सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत कोई भी व्यक्ति किससे सूचना के लिए अनुरोध कर सकता है?
(A) किसी भी निजी कंपनी से
(B) किसी ‘सार्वजनिक प्राधिकरण’ से
(C) किसी भी विदेशी नागरिक से
(D) संयुक्त राष्ट्र से

146. भारतीय संविधान की प्रस्तावना में निहित ‘धर्मनिरपेक्ष’ शब्द क्या दर्शाता है?
(A) राज्य का कोई आधिकारिक धर्म नहीं होगा।
(B) केवल हिंदू धर्म को बढ़ावा दिया जाएगा।
(C) सभी नागरिकों को नास्तिक बनना होगा।
(D) राज्य धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप करेगा।

147. निम्नलिखित में से कौन सी एक सांप्रदायिकता की विशेषता नहीं है?
(A) यह धर्म पर आधारित एक आक्रामक राजनीतिक विचारधारा है।
(B) यह दावा करती है कि धार्मिक पहचान सर्वोपरि है।
(C) यह मानती है कि विभिन्न धर्मों के लोगों के हित समान हो सकते हैं।
(D) यह अपने समूह को श्रेष्ठ और अन्य समूहों को निम्न मानती है।

148. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। इन कथनों को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): एक सत्तावादी राज्य लोकतंत्रात्मक राज्य का विपरीत होता है।
कारण (R): सत्तावादी राज्य में लोगों की आवाज नहीं सुनी जाती और शक्तिधारी किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं होते।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

149. निम्नलिखित में से कौन सा भारत में हाल के नागरिक समाज के आंदोलनों का मुद्दा नहीं रहा है?
(A) भूमि संबंधी अधिकारों के लिए जनजातीय संघर्ष
(B) स्त्रियों के प्रति हिंसा के विरुद्ध अभियान
(C) राजशाही की पुनर्स्थापना के लिए अभियान
(D) प्राथमिक शिक्षा संबंधी सुधार

150. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सांस्कृतिक विविधता असमानताओं के बजाय अंतरों पर बल देती है।
2. सामुदायिक पहचान जन्म पर आधारित होती है और इसे ‘प्रदत्त’ कहा जाता है।
3. मैक्स वेबर के अनुसार राज्य के पास विधिसम्मत बल प्रयोग का एकाधिकार होता है।
4. भारत की नीति को ‘आत्मसात्करणवादी’ कहा जा सकता है।
5. नागरिक समाज, राज्य और बाज़ार के क्षेत्र से बाहर होता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 and 5
(B) केवल 2, 4 and 5
(C) केवल 1, 3 and 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4 and 5

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
सामुदायिक पहचान, व्यक्ति के अस्तित्व का एक मौलिक आयाम है, जो मुख्य रुप से जन्म और संबंधितता की भावना पर आधारित होती है। यह किसी अर्जित योग्यता या व्यक्तिगत उपलब्धि का परिणाम नहीं, अपितु एक प्रदत्त स्थिति है। परिवार, नातेदारी, जाति, धर्म और भाषा जैसे समूह, व्यक्ति को जन्म से ही एक विशिष्ट सामाजिक और सांस्कृतिक विश्व प्रदान करते हैं। इसी विश्व के माध्यम से व्यक्ति अपनी आरंभिक समझ, मूल्य और व्यवहार के प्रतिमान सीखता है। यह पहचान ‘हम’ की एक प्रबल भावना का निर्माण करती है जो व्यक्ति को मनोवैज्ञानिक सुरक्षा और सामाजिक अवलंब प्रदान करती है। चूँकि यह पहचान व्यक्ति के आत्म-बोध का अभिन्न अंग होती है, इसलिए इस पर किसी भी प्रकार का कथित या वास्तविक खतरा एक तीव्र भावनात्मक और अक्सर आक्रामक प्रतिक्रिया को जन्म दे सकता है। लोग अपनी सामुदायिक पहचान की रक्षा के लिए बड़े से बड़ा बलिदान देने को तत्पर हो जाते हैं क्योंकि यह उनके अस्तित्व की सार्थकता और निरंतरता का प्रश्न होता है। सामाजिक जीवन की यह विडंबना है कि जिन पहचानों को चुनने में व्यक्ति की कोई भूमिका नहीं होती, वे ही उसके जीवन की सबसे शक्तिशाली और निर्धारक पहचानें बन जाती हैं, जो सामाजिक □□हति और संघर्ष, दोनों का स्रोत हो सकती हैं।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. स्रोत के अनुसार, सामुदायिक पहचान का प्राथमिक आधार क्या है?
(A) व्यक्तिगत उपलब्धियाँ और कौशल
(B) जन्म और संबंधितता की भावना

व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

73. एक 'राज्य' और एक 'राष्ट्र' के बीच मुख्य संकल्पनात्मक अंतर क्या है?
(A) राष्ट्र का एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र होता है, जबकि राज्य का नहीं।
(B) राज्य हमेशा लोकतांत्रिक होता है, जबकि राष्ट्र नहीं।
(C) राज्य एक राजनीतिक-विधिक इकाई है, जबकि राष्ट्र एक सामूहिक पहचान पर आधारित समुदाय है।
(D) राष्ट्र में हमेशा एक ही भाषा होती है, जबकि राज्य में अनेक हो सकती हैं।

74. सोवियत संघ का उदाहरण राष्ट्र-राज्य के मानक मॉडल के बारे में क्या दर्शाता है?
(A) यह दर्शाता है कि एक राज्य अपने भीतर कई 'राष्ट्रों' या 'राष्ट्रीयताओं' को मान्यता दे सकता है।
(B) यह दर्शाता है कि एक राज्य केवल एक ही राष्ट्र का प्रतिनिधित्व कर सकता है।
(C) यह दर्शाता है कि सभी नागरिकों की एक ही भाषा होनी चाहिए।
(D) यह दोहरी नागरिकता का एक सफल उदाहरण था।

75. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. विविधता का अर्थ असमानता नहीं, बल्कि अंतर है।
2. प्रदत्त पहचानें अर्जित की जाती हैं।
3. राष्ट्र-राज्य के युग में, राष्ट्र और राज्य के बीच एकैक संबंध माना जाता है।
4. भारत एक आत्मसात्करणवादी राष्ट्र-राज्य का प्रमुख उदाहरण है।
5. नागरिक समाज परिवार के निजी क्षेत्र का ही एक हिस्सा है।

उपरोक्त कथनों में से कौन से कथन गलत हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 4 और 5
(C) केवल 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

76. भारतीय संदर्भ में, धर्म, भाषा और जनजातीय पहचान ने मिलकर किसका आधार तैयार किया है?
(A) एक अखंड राष्ट्रीय पहचान का
(B) नृजातीय-राष्ट्रीय पहचान और क्षेत्रवाद का
(C) पूर्ण सामाजिक समरसता का
(D) विदेशी प्रभाव के पूर्ण उन्मूलन का

77. 'राज्य' शब्द का प्रयोग जब किसी राष्ट्र के भीतर की संघीय इकाइयों या प्रांतों को संदर्भित करने के लिए किया जाता है, तो उसका क्या अर्थ होता है?
(A) संपूर्ण भारतीय राष्ट्र-राज्य
(B) मैक्स वेबर द्वारा परिभाषित अमूर्त सत्व
(C) भारतीय राष्ट्र-राज्य की एक संघीय इकाई (प्रांत)
(D) एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन

78. निम्नलिखित सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (शब्द)
P. क्षेत्रवाद
Q. सांप्रदायिकता
R. धर्मनिरपेक्षता (भारतीय)
S. नागरिक समाज
सूची II: (मुख्य विचार)
1. धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक उग्रवाद
2. सभी धर्मों के प्रति समान आदर
3. गैर-राजकीय, गैर-बाज़ारी सार्वजनिक क्षेत्र
4. पहचान चिह्नों का भौगोलिक संकेंद्रण और वंचन का भाव
नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनें:
(A) P-1, Q-4, R-2, S-3
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-2, R-4, S-1

79. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में कुल कितनी भिन्न-भिन्न भाषाएँ और बोलियाँ बोली जाती हैं?
(A) 1,632
(B) 22
(C) 100
(D) 544

80. भारतीय संविधान के निर्माताओं ने यह क्यों माना कि सभी वर्गों को अपने धर्म, संस्कृति और भाषा के विकास की स्वतंत्रता होनी चाहिए?
(A) क्योंकि वे देश को कई छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित करना चाहते थे।
(B) संयुक्त और सुदृढ़ राष्ट्र निर्माण के लिए यह आवश्यक माना गया।
(C) क्योंकि वे बहुसंख्यक समुदाय को कमजोर करना चाहते थे।
(D) क्योंकि यह ब्रिटिश सरकार का एक निर्देश था।

81. भारत में पाए जाने वाले छोटे धार्मिक समूहों, जैसे बौद्ध और जैन, की जनसंख्या प्रतिशत छोटे होने के बावजूद उनकी संख्या बड़ी क्यों हो जाती है?
(A) क्योंकि उनका विकास दर बहुत अधिक है।
(B) भारत की विशाल कुल जनसंख्या के कारण।
(C) जनगणना के आंकड़ों में त्रुटि के कारण।
(D) विदेशों से लगातार प्रवसन के कारण।

82. 'अत्यंत धनवान लोग' जैसे विशेषाधिकार प्राप्त अल्पसंख्यकों के लिए किस शब्द का प्रयोग किया जाता है?
(A) विशेषाधिकारप्राप्त अल्पसंख्यक

160. अनुच्छेद के अनुसार, आत्मसात्करण की नीतियों ने अक्सर किन समस्याओं को जन्म दिया?
(A) प्रभावशाली and अधीनस्थ समूहों के बीच तनाव और संघर्ष को
(B) सुदृढ़ राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बनाए रखना
(C) राष्ट्र में तीव्र आर्थिक विकास और सामाजिक समृद्धि को
(D) वैश्विक शांति और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग की स्थापना को

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारतीय राष्ट्र-राज्य ने सांस्कृतिक विविधता के प्रबंधन में एक विशिष्ट पथ का अनुसरण किया है, जिसे अक्सर 'राज्य-राष्ट्र' (state-nation) मॉडल के रूप में वर्णित किया जाता है। यूरोपीय 'राष्ट्र-राज्य' मॉडल के विपरीत, जो एक राष्ट्र (एकल सांस्कृतिक-नृजातीय समूह) के लिए एक राज्य की परिकल्पना पर आधारित है, भारतीय दृष्टिकोण एक राजनीतिक-संवैधानिक ढांचे के भीतर कई विविध 'राष्ट्रों' या पहचानों के सह-अस्तित्व को स्वीकार करता है। स्वतंत्रता के बाद, भारत ने बलपूर्वक आत्मसात्करण की नीति को अस्वीकार कर दिया। इसके बजाय, भारतीय संविधान ने भाषाई, धार्मिक और जनजातीय विविधताओं को समायोजित करने के लिए एक विस्तृत ढांचा प्रदान किया। भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन इस नीति का एक प्रमुख उदाहरण है, जिसने क्षेत्रीय भाषाओं और संस्कृतियों को फलने-फूलने का अवसर दिया। इसी प्रकार, अल्पसंख्यकों के सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकारों को मौलिक अधिकारों के रूप में संरक्षित किया गया है। यह मॉडल इस विश्वास पर आधारित है कि राष्ट्रीय एकता को सांस्कृतिक समरूपता थोपकर नहीं, बल्कि विभिन्न पहचानों को सम्मान और स्वायत्तता देकर अधिक मजबूती से प्राप्त किया जा सकता है। यह 'विविधता में एकता' के सिद्धांत का एक व्यावहारिक और संस्थागत कार्यान्वयन है, जो भारत को एक बहुलवादी लोकतंत्र के रूप में परिभाषित करता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. भारतीय मॉडल को 'राज्य-राष्ट्र' (state-nation) क्यों कहा जाता है?
(A) क्योंकि यह केवल एक ही सांस्कृतिक समूह को मान्यता देता है
(B) क्योंकि यह राज्य की सत्ता को राष्ट्र की पहचान से अधिक महत्वपूर्ण मानता है
(C) क्योंकि यह यूरोपीय राष्ट्र-राज्य मॉडल की एक हूबहू और सटीक नकल है
(D) क्योंकि यह संवैधानिक ढांचे में विविध पहचानों के सह-अस्तित्व को स्वीकारता है

162. स्वतंत्रता के बाद भारत ने सांस्कृतिक विविधता के संबंध में कौन सी नीति अपनाई?
(A) बलपूर्वक पूर्ण सांस्कृतिक आत्मसात्करण की कठोर नीति
(B) भाषाई और धार्मिक विविधताओं को समायोजित करने की नीति
(C) सभी क्षेत्रीय और स्थानीय संस्कृतियों के पूर्ण दमन की नीति
(D) एक राष्ट्र, एक भाषा और एक संस्कृति के अनिवार्य पालन की नीति

163. अनुच्छेद में भारत की समायोजन की नीति का एक प्रमुख उदाहरण क्या दिया गया है?
(A) एक समान नागरिक संहिता लागू करना
(B) केवल एक राष्ट्रीय त्योहार मनाना
(C) भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन
(D) शिक्षा प्रणाली का पूर्ण केंद्रीकरण

164. भारतीय मॉडल किस विश्वास पर आधारित है?
(A) राष्ट्रीय एकता स्थापित करने हेतु सांस्कृतिक समरूपता थोपना अनिवार्य है
(B) सांस्कृतिक विविधता राष्ट्रीय एकता और अखंडता के लिए एक सीधा खतरा है
(C) केवल प्रभावशाली या बहुसंख्यक समूह की संस्कृति को ही बढ़ावा मिलना चाहिए
(D) विभिन्न पहचानों को सम्मान देकर राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया जा सकता है

165. 'विविधता में एकता' के सिद्धांत का व्यावहारिक कार्यान्वयन भारत में कैसे दिखाई देता है?
(A) संविधान द्वारा अल्पसंख्यक अधिकार सुरक्षित करने और स्वायत्तता प्रदान करने से
(B) पूरे देश में केवल एक ही आधिकारिक धर्म होने से
(C) सभी नागरिकों के एक समान सामाजिक रीति-रिवाजों का पालन करने से
(D) पूरे देश में केवल एक ही संपर्क भाषा के बोले जाने की अनिवार्यता से

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

धर्मनिरपेक्षता की अवधारणा, यद्यपि सार्वभौमिक रूप से महत्वपूर्ण है, विभिन्न सामाजिक-ऐतिहासिक संदर्भों में भिन्न-भिन्न अर्थ ग्रहण करती है। पश्चिमी परिप्रेक्ष्य में, विशेष रूप से यूरोप में, धर्मनिरपेक्षता का विकास चर्च और राज्य के बीच संघर्ष की पृष्ठभूमि में हुआ। यहाँ, इसका अर्थ मुख्य रूप से राज्य का धर्म से पूर्ण पृथक्करण है, जहाँ राज्य धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं करता और धर्म सार्वजनिक जीवन में कोई भूमिका नहीं निभाता। इसके विपरीत, भारतीय संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता का अर्थ राज्य और धर्म का पूर्ण अलगाव नहीं है। यहाँ, इसे 'सर्वधर्म समभाव' या सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान के सिद्धांत के रूप में समझा जाता है। भारतीय राज्य किसी एक धर्म को आधिकारिक धर्म के रूप में बढ़ावा नहीं देता, लेकिन वह सभी धार्मिक समुदायों के साथ एक 'सैद्धांतिक दूरी' (principled distance) बनाए रखता है। इसका तात्पर्य है कि राज्य आवश्यकता पड़ने पर सभी धर्मों का समर्थन कर सकता है (जैसे कि विभिन्न धर्मों के त्योहारों पर सार्वजनिक अवकाश) और साथ ही सामाजिक सुधार के लिए धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप भी कर सकता है (जैसे अस्पृश्यता

ANSWERS

1. (B) सामाजिक अंतरों पर
   'सांस्कृतिक विविधता' शब्द समाज में मौजूद विभिन्न समूहों के बीच के सामाजिक अंतरों को रेखांकित करता है। यह अवधारणा इस बात पर जोर देती है कि एक ही समाज के भीतर अलग-अलग भाषाओं, धर्मों और परंपराओं वाले समुदाय सह-अस्तित्व में रह सकते हैं। यह अंतरों को नकारात्मक असमानता के रूप में देखने के बजाय उन्हें समाज की एक स्वाभाविक विशेषता के रूप में स्वीकार करती है।

2. (A) जन्म तथा अपनेपन का भाव
   सामुदायिक पहचान का प्राथमिक आधार जन्म और उससे जुड़ा अपनेपन का गहरा भाव होता है। इसे समाजशास्त्र में 'प्रदत्त' पहचान कहा जाता है क्योंकि यह व्यक्ति को बिना किसी प्रयास या विकल्प के जन्म से ही प्राप्त हो जाती है। यह पहचान व्यक्ति को उसके परिवार, जाति और धर्म से जोड़ती है, जिससे उसमें एक सामूहिक सुरक्षा और भावनात्मक जुड़ाव की भावना विकसित होती है।

3. (C) जन्म आधारित पहचान जिसमें व्यक्ति की पसंद शामिल नहीं होती।
   सामुदायिक पहचान के संदर्भ में 'प्रदत्त' होने का अर्थ है कि यह पहचान पूर्णतः जन्म पर आधारित होती है। इसमें व्यक्ति की व्यक्तिगत रुचि, योग्यता या पसंद की कोई भूमिका नहीं होती है। व्यक्ति जिस परिवार, समुदाय या धर्म में जन्म लेता है, वही उसकी स्थायी पहचान बन जाती है। यह एक ऐसी अनिवार्य सदस्यता है जिसे व्यक्ति अपनी इच्छा से आसानी से बदल नहीं सकता है।

4. (D) विधिसम्मत बल प्रयोग पर एकाधिकार का दावा।
   प्रसिद्ध समाजशास्त्री मैक्स वेबर के अनुसार, राज्य एक ऐसी संस्था है जो किसी निश्चित भू-भाग के भीतर विधिसम्मत भौतिक बल प्रयोग के एकाधिकार का सफल दावा करती है। यह परिभाषा राज्य को अन्य सामाजिक संगठनों से अलग करती है। इसका अर्थ है कि केवल राज्य के पास ही कानून को लागू करने और व्यवस्था बनाए रखने के लिए कानूनी रूप से शक्ति का उपयोग करने का अधिकार होता है।

5. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
   सामुदायिक पहचानें जन्म पर आधारित होने के कारण अत्यधिक प्रभावशाली होती हैं क्योंकि वे 'हम क्या हैं' के भाव को दर्शाती हैं। चूँकि ये पहचानें व्यक्ति के मूल अस्तित्व से जुड़ी होती हैं, इसलिए इनमें तीव्र भावनात्मक शक्ति होती है। यही कारण है कि सामुदायिक मुद्दों पर अक्सर लोग बहुत भावुक हो जाते हैं, जो कभी-कभी तीव्र सामाजिक प्रतिक्रियाओं या भावावेशों को जन्म दे सकते हैं।

6. (B) प्रत्येक राष्ट्र का अपना राज्य, और प्रत्येक राज्य राष्ट्र का प्रतिनिधि।
   राष्ट्र और राज्य के बीच 'एकैक' संबंध का तात्पर्य उस 'राष्ट्र-राज्य' मॉडल से है जहाँ प्रत्येक राष्ट्र के पास अपनी संप्रभु राजनीतिक सत्ता यानी राज्य होता है। इस अवधारणा के अनुसार, राज्य को उस राष्ट्र का एकमात्र राजनीतिक प्रतिनिधि माना जाता है। यह मॉडल सांस्कृतिक पहचान और राजनीतिक सीमाओं को एक ही सूत्र में पिरोने का प्रयास करता है, जिससे राजनीतिक वैधता को मजबूती मिलती है।

7. (D) एक ही समय में दो अलग-अलग राज्यों का नागरिक बनने की
   'दोहरी नागरिकता' एक कानूनी प्रावधान है जो किसी व्यक्ति को एक ही समय में दो अलग-अलग देशों या राज्यों का औपचारिक नागरिक बनने की अनुमति देता है। यह स्थिति व्यक्ति को दोनों देशों के कानूनी अधिकारों का लाभ उठाने और कर्तव्यों का पालन करने में सक्षम बनाती है। आधुनिक युग में बढ़ते वैश्विक प्रवास के कारण कई देश इस प्रकार की नागरिकता को मान्यता प्रदान करते हैं।

8. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
   सांस्कृतिक विविधता को प्रबंधित करने के लिए राज्य विभिन्न नीतियाँ अपनाते हैं। आत्मसात्करणवादी नीति में अल्पसंख्यकों को प्रभावशाली समूह की संस्कृति अपनाने पर मजबूर किया जाता है, जबकि एकीकरणवादी नीति सार्वजनिक क्षेत्र में सांस्कृतिक समरुपता पर बल देती है। राज्य-राष्ट्र मॉडल विभिन्न नृजातीय पहचानों के सह-अस्तित्व को स्वीकार करता है, और राष्ट्र-राज्य मॉडल में राजनीतिक वैधता के लिए राष्ट्र और राज्य का संरेखण आवश्यक होता है।

9. (C) सांस्कृतिक अंतरों को मान्यता देने से सामाजिक विखंडन का भय।
   राज्य अक्सर सांस्कृतिक विविधता के प्रति शंकालु रहते हैं क्योंकि उन्हें डर होता है कि अलग-अलग सांस्कृतिक पहचानों को मान्यता देने से सामाजिक विखंडन हो सकता है। उन्हें भय रहता है कि विविध समूहों की मांगें अंततः पृथकतावाद या गृहयुद्ध का रूप ले सकती हैं। इसलिए, स्थिरता बनाए रखने के लिए राज्य अक्सर एक समरूप और साझा राष्ट्रीय पहचान थोपने की कोशिश करते हैं।

10. (A) अल्पसंख्यक समूहों को अपनी भाषा और संस्कृति के प्रचार के लिए विशेष अनुदान देना।
    अल्पसंख्यक समूहों को उनकी भाषा और संस्कृति के संरक्षण हेतु विशेष अनुदान देना बहुसंस्कृतिवाद की विशेषता है, न कि आत्मसात्करण या एकीकरण की। आत्मसात्करणवादी नीतियाँ सांस्कृतिक विशिष्टताओं को समाप्त कर एक समान

(D) अपने समुदाय का महिमामंडन और दूसरों को शत्रु के रूप में चित्रित करके

174. अनुच्छेद के अनुसार, सांप्रदायिकता समाज पर क्या प्रभाव डालती है?

(A) यह 'हम' बनाम 'वे' की भावना को बढ़ावा देकर सामाजिक ध्रुवीकरण पैदा करती है

(B) यह संपूर्ण समाज में सामाजिक सद्भाव, प्रेम और एकता को बढ़ावा देती है

(C) यह विभिन्न समुदायों के बीच परस्पर आर्थिक और सामाजिक सहयोग को प्रोत्साहित करती है

(D) यह समाज में तार्किक चिंतन और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को और अधिक मजबूत करती है

175. सांप्रदायिकता का अंतिम राजनीतिक लक्ष्य क्या होता है?

(A) व्यापक सामाजिक न्याय और पूर्ण आर्थिक समानता को स्थापित करना

(B) समाज के सभी वर्गों के लिए समान आर्थिक अवसर पैदा करना

(C) धार्मिक समुदाय को राजनीतिक इकाई के रूप में संगठित कर सत्ता हासिल करना

(D) संपूर्ण विश्व में अंतरराष्ट्रीय शांति और वैश्विक सहयोग को बढ़ावा देना

63. (A) किसी विशेष जाति में जन्म लेना
जाति एक 'प्रदत्त' पहचान का सबसे सटीक उदाहरण है क्योंकि यह जन्म के साथ ही अनिवार्य रूप से जुड़ जाती है। व्यक्ति अपनी जाति को खुद नहीं चुनता और न ही अपनी मेहनत से इसे बदल सकता है। इसके विपरीत, डॉक्टर बनना या डिग्री हासिल करना अर्जित पहचानें हैं जो व्यक्ति की अपनी मेहनत और पसंद पर निर्भर करती हैं। प्रदत्त पहचानें समाज में व्यक्ति की आरंभिक स्थिति और उसके सामाजिक जुड़ाव को निर्धारित करती हैं।

64. (B) मद्रास, बंबई, कलकत्ता
ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान भारत को प्रशासनिक सुविधा के लिए तीन विशाल प्रेसीडेंसियों—मदरास, बंबई और कलकत्ता में विभाजित किया गया था। ये प्रेसीडेंसियाँ बहुभाषी और विविध संस्कृतियों का मिश्रण थीं। स्वतंत्रता के बाद, इन इकाइयों के भीतर रहने वाले विभिन्न भाषाई समूहों ने अपनी अलग पहचान के लिए मांग उठानी शुरू की, जिसके परिणामस्वरूप बाद में भाषाई आधार पर नए राज्यों का गठन करना आवश्यक हो गया।

65. (A) 1, 2, 3
भारत के प्रशासनिक भूगोल का विकास क्रमिक रहा है। सबसे पहले ब्रिटिश काल की बहुभाषी प्रेसीडेंसियों की व्यवस्था थी। आजादी के बाद 1956 में भाषाई आधार पर राज्यों का व्यापक पुनर्गठन हुआ। इसके बाद के चरणों में, विशेष रूप से सन् 2000 में, झारखंड और छत्तीसगढ़ जैसे राज्यों का निर्माण हुआ जो मुख्य रूप से जनजातीय पहचान और क्षेत्रीय पिछड़ेपन को दूर करने की मांगों पर आधारित थे। यह प्रक्रिया निरंतर जारी है।

66. (A) श्रीलंका (सीलोन) में सिंहली को एकमात्र राजभाषा बनाने के संदर्भ में
श्रीलंका में 1956 में सिंहली को एकमात्र आधिकारिक भाषा घोषित करने पर यह चेतावनी दी गई थी कि यदि भाषाई विविधता को सम्मान नहीं दिया गया, तो एक भाषा दो राष्ट्रों के जन्म का कारण बन सकती है। यह आशंका सच साबित हुई और भाषाई भेदभाव ने वहाँ एक खूनी गृहयुद्ध को जन्म दिया। यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि बहुभाषी समाजों में एक ही भाषा थोपना राष्ट्रीय एकता के लिए आत्मघाती हो सकता है।

67. (C) राज्य एक बड़े संघीय ढांचे के अंतर्गत स्वायत्त इकाई के रूप में कार्य कर सकें।
भारतीय संविधान में शक्तियों का विभाजन संघीय व्यवस्था की आत्मा है। यह सुनिश्चित करता है कि राज्य सरकारें केंद्र के अधीन मात्र एजेंट बनकर न रहें, बल्कि अपने अधिकार क्षेत्र में स्वायत्तता के साथ कार्य करें। इससे क्षेत्रीय विशिष्टताओं और स्थानीय जरूरतों को बेहतर ढंग से संबोधित किया जा सकता है। यह संतुलन राष्ट्रीय अखंडता बनाए रखने के साथ-साथ विविध संस्कृतियों को फलने-फूलने का संवैधानिक अवसर और सुरक्षा प्रदान करता है।

68. (D) एक अकेली राष्ट्रीय पहचान स्थापित करना
एकीकरणवादी और आत्मसात्करणवादी दोनों ही नीतियों का साझा लक्ष्य विविधता को कम करके एक मजबूत और एकीकृत राष्ट्रीय पहचान का निर्माण करना है। हालाँकि इनके तरीके अलग हो सकते हैं, लेकिन दोनों ही विचारधाराएँ मानती हैं कि साझा मूल्य और एक समान पहचान ही राष्ट्र की स्थिरता के लिए आवश्यक हैं। ये नीतियाँ अक्सर स्थानीय या अल्पसंख्यक पहचानों को गौण मानती हैं और एक व्यापक राष्ट्रीय स्वरूप पर ही सारा ध्यान केंद्रित करती हैं।

69. (A) केवल 1 और 2
भारतीय संविधान 'विविधता में एकता' के दर्शन को अपनाता है और अनुच्छेद 29 के माध्यम से प्रत्येक नागरिक वर्ग को अपनी विशिष्ट भाषा और संस्कृति को संरक्षित करने का मौलिक अधिकार प्रदान करता है। अनुच्छेद 30 केवल धार्मिक ही नहीं, बल्कि भाषाई अल्पसंख्यकों को भी शिक्षण संस्थान चलाने की अनुमति देता है। भारत में ये अधिकार केवल कानूनी नहीं हैं, बल्कि वे देश की बहुलवादी लोकतांत्रिक व्यवस्था का एक जीवंत और अनिवार्य हिस्सा हैं।

70. (B) जनजीवन से धर्म के उत्तरोत्तर पीछे हटते जाने से
धर्मनिरपेक्षीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें सार्वजनिक जीवन, राजनीति और कानून पर धर्म का प्रभाव धीरे-धीरे कम होता जाता है। आधुनिक समाजों में विज्ञान और तर्कशक्ति के बढ़ने से धार्मिक मान्यताओं का स्थान धर्मनिरपेक्ष मूल्यों ने ले लिया है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि समाज कैसे परंपराओं से आधुनिकता की ओर बढ़ता है, जहाँ धार्मिक विश्वास को केवल एक व्यक्तिगत मामला मान लिया जाता है और सार्वजनिक नीति तर्कों पर आधारित होती है।

71. (D) केवल वाणिज्यिक लाभ के लिए कार्य करना
नागरिक समाज के संगठन मुख्य रूप से सार्वजनिक कल्याण और सामाजिक मुद्दों के लिए कार्य करते हैं, न कि निजी मुनाफे के लिए। वाणिज्यिक लाभ के लिए कार्य करना बाज़ार या कॉर्पोरेट क्षेत्र की विशेषता है। नागरिक समाज का उद्देश्य लोगों को जागरूक करना, उनके अधिकारों के लिए लड़ना और सरकार की जवाबदेही तय करना है। यह क्षेत्र निस्वार्थ सेवा और नागरिक भागीदारी पर आधारित होता है जो समाज के लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूती प्रदान करता है।

72. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
सांप्रदायिकता इस खतरनाक धारणा पर आधारित है कि एक धर्म के लोगों के हित अन्य धर्मों के लोगों से बिल्कुल अलग और विरोधी होते हैं। यह विचारधारा धार्मिक पहचान को मनुष्य की सबसे महत्वपूर्ण पहचान घोषित कर देती है, जिससे समाज में अविश्वास और विभाजन बढ़ता है। जब लोग केवल अपने धार्मिक समूह के चश्मे से दुनिया को देखते हैं, तो आपसी सद्भाव की जगह प्रतिस्पर्धा और घृणा ले लेती है जो लोकतंत्र के लिए हानिकारक है।

73. (C) राज्य एक राजनीतिक-विधिक इकाई है, जबकि राष्ट्र एक सामूहिक पहचान पर आधारित समुदाय है।
राज्य एक संगठित राजनीतिक ढांचा है जिसके पास संप्रभुता और कानून लागू करने की शक्ति होती है। इसके विपरीत,

राष्ट्रीय पहचान बनाने का प्रयास करती हैं। इसके विपरीत, अल्पसंख्यकों को अपनी पहचान बनाए रखने के लिए सहायता देना उनकी विशिष्टता को स्वीकार करने और उसे बढ़ावा देने का एक लोकतांत्रिक तरीका है।

11. (C) 4, 1, 2, 3
सूचना के अधिकार की यात्रा ग्रामीण राजस्थान में जन आंदोलनों के साथ शुरु हुई थी। इसके बाद व्यापक जन दबाव के कारण संसद द्वारा सूचना का अधिकार अधिनियम पारित किया गया और अंततः इसे देशभर में लागू किया गया। इस कानून के क्रियान्वयन ने पुराने 'सरकारी गुप्त अधिनियम' के प्रभाव को सीमित कर दिया, जिससे भारतीय शासन व्यवस्था में पारदर्शिता और जवाबदेही के एक नए युग की शुरुआत हुई।

12. (B) आठवीं अनुसूची
भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची में वर्तमान में 22 भाषाओं को आधिकारिक रूप से मान्यता प्रदान की गई है। यह अनुसूची देश की विशाल भाषाई विविधता को संवैधानिक संरक्षण देने का एक महत्वपूर्ण साधन है। इसमें शामिल भाषाओं को आधिकारिक कार्यों, शिक्षा और प्रशासनिक सेवाओं में विशेष स्थान दिया जाता है, जिससे विभिन्न भाषाई समुदायों की सांस्कृतिक पहचान और उनके हितों की सुरक्षा सुनिश्चित होती है।

13. (C) विभिन्न सांस्कृतिक पहचानों के बावजूद बना हुआ एक जीवंत लोकतंत्र।
भारत को 'राज्य-राष्ट्र' का उत्कृष्ट उदाहरण माना जाता है क्योंकि यहाँ अत्यधिक सांस्कृतिक, भाषाई और धार्मिक विविधता के बावजूद एक सुदृढ़ लोकतांत्रिक व्यवस्था बनी हुई है। भारत ने एक राष्ट्र, एक भाषा के विचार को थोपने के बजाय सभी समूहों की विशिष्टताओं को संवैधानिक स्थान दिया है। यह समावेशी दृष्टिकोण विविध समुदायों को भारतीय संघ के भीतर अपनी पहचान के साथ गौरव से रहने का अवसर देता है।

14. (C) केवल 1, 2 और 3
भारतीय राष्ट्र-राज्य का मॉडल समावेशी है, जो धर्मनिरपेक्षता के सिद्धांतों पर आधारित है। यहाँ राज्य न तो अल्पसंख्यक पहचानों को मिटाने का प्रयास करता है और न ही उन्हें सार्वजनिक क्षेत्र से पूरी तरह बाहर रखता है। संविधान अल्पसंख्यकों को अपनी संस्कृति और शैक्षणिक संस्थानों के माध्यम से विशेष सुरक्षा प्रदान करता है। हालाँकि, कानून के पालन में व्यावहारिक चुनौतियाँ और कमियाँ समाज में हमेशा बनी रहती हैं।

15. (A) भाषाओं, संस्कृतियों, जनजातियों और धर्मों की विविधता का भौगोलिक संकेंद्रण
भारत में क्षेत्रवाद का मुख्य स्रोत विभिन्न सांस्कृतिक पहचानों का एक विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र में केंद्रित होना है। जब किसी क्षेत्र विशेष में रहने वाले लोग अपनी विशिष्ट भाषा, जनजाति या धर्म के आधार पर स्वयं को दूसरों से अलग महसूस करते हैं और साथ ही आर्थिक वंचन का अनुभव करते हैं, तो क्षेत्रवाद की भावना प्रबल हो जाती है। यह मेल एक क्षेत्रीय राजनीतिक चेतना को जन्म देता है।

16. (B) ब्रिटिश-भारतीय व्यवस्था जिसमें 'प्रेसीडेंसी' शामिल थीं
स्वतंत्रता के तत्काल बाद, भारत ने प्रशासनिक सुविधा के लिए वही ढाँचा बनाए रखा जो ब्रिटिश शासन के दौरान प्रचलित था। इसमें मद्रास, बंबई और कलकत्ता जैसी बड़ी 'प्रेसिडेंसियाँ' शामिल थीं। ये इकाइयाँ बहुभाषी और विशाल थीं, जिनमें अलग-अलग भाषाओं और संस्कृतियों वाले लोगों को एक साथ रखा गया था। बाद में भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग ने इस व्यवस्था को बदल दिया।

17. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
स्वतंत्रता के बाद कांग्रेस नेतृत्व भाषाई राज्यों के गठन को लेकर आशंकित था क्योंकि देश ने अभी-अभी विभाजन की त्रासदी झेली थी। नेताओं को डर था कि भाषा के आधार पर राज्यों का निर्माण क्षेत्रीय भावनाओं को भड़का सकता है, जिससे राष्ट्रीय एकता ख़तरे में पड़ सकती है। विभाजन के कड़वे अनुभवों ने उन्हें अधिक सतर्क बना दिया था, जिससे भाषाई पुनर्गठन में प्रारंभ में देरी हुई।

18. (A) पोट्टि श्रीरामुलु की आमरण अनशन के बाद मृत्यु
तेलुगु भाषी लोगों के लिए अलग आंध्र राज्य की मांग को लेकर पोट्टि श्रीरामुलु ने आमरण अनशन किया था, जिसके बाद उनकी मृत्यु हो गई। इस घटना ने पूरे क्षेत्र में भारी जनाक्रोश पैदा कर दिया, जिससे मजबूर होकर सरकार को भाषाई आधार पर पहले राज्य, आंध्र प्रदेश के गठन की घोषणा करनी पड़ी। इसी दबाव के कारण भविष्य में राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना का मार्ग भी प्रशस्त हुआ।

19. (C) 1 नवंबर 1956
राज्य पुनर्गठन आयोग की सिफारिशों को आधिकारिक तौर पर 1 नवंबर 1956 को लागू किया गया था। इसके साथ ही भारत के राजनीतिक मानचित्र का व्यापक पुनर्गठन हुआ और राज्यों की सीमाओं को मुख्य रूप से भाषाई आधार पर निर्धारित किया गया। इस ऐतिहासिक कदम ने क्षेत्रीय भाषाई समुदायों की आकांक्षाओं को मान्यता दी और भारतीय संघवाद के भीतर विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के समायोजन की एक नई शुरुआत की।

20. (C) केवल 1, 2, 3 और 4
भाषाई आधार पर राज्यों के निर्माण ने भारतीय लोकतंत्र और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ किया है। वैश्विक अनुभव बताते हैं कि भाषाई मांगों की उपेक्षा करने से श्रीलंका और पाकिस्तान जैसे देशों में संघर्ष और विभाजन हुए। भारत में भाषाई राज्यों के बीच छोटे विवाद हो सकते हैं, लेकिन यह व्यवस्था अलगाववाद से कहीं बेहतर है। हालाँकि, सन् 2000 में बने राज्य भाषाई नहीं, बल्कि क्षेत्रीय वंचन पर आधारित थे।

21. (C) जिला सूची
भारतीय संविधान में केंद्र और राज्यों के बीच शक्तियों के स्पष्ट विभाजन के लिए तीन सूचियाँ दी गई हैं: संघ सूची, राज्य सूची और समवर्ती सूची। यहाँ 'जिला सूची' जैसा कोई प्रावधान नहीं है। शक्तियों का यह त्रिस्तरीय विभाजन सुनिश्चित करता है कि

43. (D) जब राज्य अल्पसंख्यकों के संरक्षण के लिए विशेष प्रावधान करता है।
'अल्पसंख्यकों का तुष्टीकरण' एक विवादास्पद आरोप है जो अक्सर तब लगाया जाता है जब राज्य अल्पसंख्यकों को उनकी विशिष्ट पहचान सुरक्षित रखने के लिए संवैधानिक या कानूनी सुरक्षा उपाय प्रदान करता है। आलोचकों का मानना है कि ऐसे प्रावधान समानता के सिद्धांत के विरुद्ध हैं। इसके विपरीत, समर्थकों का तर्क है कि लोकतंत्र में संख्यात्मक रुप से कमजोर समूहों को बहुसंख्यकों के वर्चस्व से बचाने के लिए ऐसे विशेष संरक्षण अत्यंत आवश्यक और न्यायपूर्ण हैं।

44. (B) परिवार से परे, राज्य और बाज़ार के बाहर का क्षेत्र।
नागरिक समाज उस सार्वजनिक क्षेत्र को कहते हैं जो परिवार के निजी दायरे से अलग है और जिस पर राज्य या बाज़ार का सीधा नियंत्रण नहीं होता। यह स्वेच्छा से बनाए गए संगठनों का समूह है जहाँ नागरिक सार्वजनिक हितों के लिए एकजुट होते हैं। इसमें गैर-सरकारी संगठन, स्वयं सहायता समूह और सामाजिक आंदोलन शामिल हैं। यह क्षेत्र लोकतंत्र में नागरिकों की सक्रिय भागीदारी और जवाबदेही सुनिश्चित करने का महत्वपूर्ण माध्यम है।

45. (C) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारतीय संविधान के अनुच्छेद 29 और 30 अल्पसंख्यकों के सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकारों की रक्षा करते हैं। अनुच्छेद 29(1) नागरिकों को अपनी भाषा और संस्कृति बनाए रखने का अधिकार देता है, जबकि 29(2) शिक्षण संस्थानों में भेदभाव रोकता है। अनुच्छेद 30(1) अल्पसंख्यकों को अपनी संस्थाएं चलाने की स्वायत्तता देता है और 30(2) सुनिश्चित करता है कि राज्य वित्तीय सहायता देने में इन संस्थाओं के साथ किसी भी आधार पर भेदभाव नहीं करेगा।

46. (D) सशस्त्र सेनाएँ
नागरिक समाज में वे संगठन शामिल होते हैं जो नागरिक स्वयं अपनी मर्जी से और स्वतंत्र रूप से बनाते हैं, जैसे मजदूर संघ या मीडिया। सशस्त्र सेनाएँ राज्य की एक औपचारिक और अनुशासित संस्था हैं जो सरकार के सीधे नियंत्रण में कार्य करती हैं, इसलिए वे नागरिक समाज का हिस्सा नहीं हो सकतीं। नागरिक समाज की प्रमुख विशेषता उसकी स्वायत्तता और गैर-राजकीय प्रकृति है, जो लोगों को राज्य की सत्ता पर नियंत्रण रखने में सक्षम बनाती है।

47. (A) नागरिकों को सरकारी अभिलेखों तक पहुँच का अधिकार देना
सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 का मूल उद्देश्य सरकारी कामकाज में पारदर्शिता और जवाबदेही लाना है। इसके तहत नागरिकों को यह कानूनी अधिकार मिला है कि वे किसी भी सरकारी कार्यालय से आवश्यक जानकारी या अभिलेख माँग सकें। यह कानून भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाने और लोकतंत्र को वास्तव में जनता के प्रति उत्तरदायी बनाने का एक सशक्त हथियार है, जिससे आम आदमी शासन की प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी कर सकता है।

48. (B) ग्रामीण राजस्थान में एक आंदोलन से
भारत में सूचना के अधिकार के लिए ऐतिहासिक संघर्ष ग्रामीण राजस्थान के पिछड़े क्षेत्रों से शुरु हुआ था। 'मजदूर किसान शक्ति संगठन' जैसे समूहों ने अकाल राहत कार्यों में हुए भ्रष्टाचार को उजागर करने के लिए सरकारी रिकॉर्ड तक पहुँच की मांग की थी। इस स्थानीय आंदोलन ने धीरे-धीरे एक राष्ट्रव्यापी अभियान का रुप ले लिया, जिसके परिणामस्वरूप सरकार को सूचना की पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए 2005 का क्रांतिकारी अधिनियम पारित करना पड़ा।

49. (B) नागरिक समाज केवल राज्य के समर्थन में कार्य करता है।
यह कहना गलत है कि नागरिक समाज केवल राज्य के समर्थन में कार्य करता है। वास्तव में, नागरिक समाज की एक मुख्य भूमिका राज्य के कार्यों की आलोचना करना और उस पर नजर रखना है। जब भी राज्य अपने अधिकारों का दुरुपयोग करता है या जनता के हितों की अनदेखी करता है, तो नागरिक समाज के संगठन उसका विरोध करते हैं। इसकी स्वायत्तता ही इसे लोकतंत्र का एक महत्वपूर्ण प्रहरी और आवश्यक स्तंभ बनाती है।

50. (A) यह नागरिक स्वतंत्रताओं को सीमित या समाप्त कर देता है।
सत्तावादी राज्य वह शासन व्यवस्था है जहाँ सत्ता कुछ ही हाथों में केंद्रित होती है और वह जनता के प्रति उत्तरदायी नहीं होती। ऐसे राज्यों में प्रेस की स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की आजादी और राजनीतिक विरोध को बेरहमी से कुचल दिया जाता है। यहाँ कानून का शासन नहीं, बल्कि शासकों की मर्जी चलती है। सत्तावादी शासन नागरिकों के अधिकारों को छीनकर उन्हें केवल आदेशों का पालन करने वाले विषय के रूप में देखता है।

51. (C) केवल 3
समुदाय हमें भाषा और वे सांस्कृतिक मूल्य प्रदान करता है जिनसे हमारा व्यक्तित्व निर्मित होता है। प्रदत्त पहचानें जन्म पर आधारित होती हैं, न कि अर्जित योग्यताओं पर। समाजीकरण एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो बचपन के बाद भी जीवन भर जारी रहती है। सामुदायिक पहचान मुख्य रूप से 'हम क्या हैं' के भाव को व्यक्त करती है, जो हमें हमारे पूर्वजों और जन्म के आधार पर प्राप्त सामाजिक समूह से जोड़ती है।

52. (D) निश्चित पारिभाषिक कसौटी का अभाव तथा अपवादों की उपस्थिति।
राष्ट्र को परिभाषित करना कठिन है क्योंकि इसके लिए कोई एक सर्वसम्मत विशेषता नहीं है जो सभी राष्ट्रों पर लागू हो। कुछ राष्ट्रों में साझा भाषा होती है, तो कुछ में नहीं। कुछ का एक विशिष्ट धर्म होता है, तो कई राष्ट्रों में अनेक धर्म होते हैं। अंततः राष्ट्र एक ऐसा समुदाय है जो अपने लिए एक स्वतंत्र राज्य का दावा करता है, लेकिन इसकी भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाएं हमेशा बदलती रहती हैं।

के बल पर उनकी संस्कृति और अधिकारों को प्रभावित कर सकता है। लोकतांत्रिक मजबूती के लिए यह अनिवार्य है कि अल्पसंख्यकों को यह विश्वास हो कि उनकी विशिष्ट पहचान सुरक्षित है। इसलिए, संवैधानिक प्रावधान केवल सुरक्षा उपाय नहीं हैं, बल्कि वे एक न्यायपूर्ण और समावेशी राष्ट्र के निर्माण की अनिवार्य शर्त भी हैं।

33. (B) अल्पसंख्यक वर्ग की राज्य संरचना को खंडित करने की शक्ति।
डॉ. अंबेडकर ने संविधान सभा में चेतावनी दी थी कि यदि अल्पसंख्यकों के अधिकारों को सुरक्षित नहीं किया गया, तो वे निराश होकर राज्य की संरचना को खंडित करने की शक्ति रखते हैं। उनका मानना था कि एक असुरक्षित अल्पसंख्यक वर्ग राष्ट्र की एकता के लिए खतरा बन सकता है। इसलिए, उन्होंने तर्क दिया कि अल्पसंख्यकों को संवैधानिक सुरक्षा देना राष्ट्र की अखंडता और स्थिरता को बनाए रखने का एक आवश्यक उपाय है।

34. (A) अनुच्छेद 30(1)
भारतीय संविधान का अनुच्छेद 30(1) धार्मिक और भाषाई अल्पसंख्यकों को अपनी पसंद की शिक्षण संस्थाएं स्थापित करने और उनका प्रबंधन करने का मौलिक अधिकार प्रदान करता है। यह अनुच्छेद यह सुनिश्चित करता है कि अल्पसंख्यक वर्ग अपनी संस्कृति, भाषा और लिपि को भावी पीढ़ियों तक पहुँचाने के लिए स्वतंत्र हों। यह प्रावधान भारत की धर्मनिरपेक्ष और बहुलवादी छवि को संवैधानिक रूप से मजबूती प्रदान करने के उद्देश्य से बनाया गया है।

35. (C) छत्तीसगढ़, उत्तरांचल, झारखंड
वर्ष 2000 में भारत में तीन नए राज्यों का गठन किया गया था: छत्तीसगढ़ (मध्य प्रदेश से), उत्तरांचल जिसे अब उत्तराखंड कहा जाता है (उत्तर प्रदेश से), और झारखंड (बिहार से)। इन राज्यों के निर्माण के पीछे भाषा के बजाय क्षेत्रीय आर्थिक वंचन और विशिष्ट जनजातीय पहचान प्रमुख कारक थे। यह पुनर्गठन इस बात का प्रमाण था कि प्रशासनिक सुविधा और क्षेत्रीय न्याय के लिए भी राज्यों का निर्माण किया जा सकता है।

36. (D) धार्मिक पहचान पर आधारित आक्रामक उग्रवाद
सामान्य बोलचाल में 'सांप्रदायिकता' का तात्पर्य उस आक्रामक राजनीतिक विचारधारा से है जो केवल अपनी धार्मिक पहचान को ही सर्वश्रेष्ठ मानती है। यह विचारधारा अन्य धर्मों के प्रति शत्रुता या घृणा का भाव पैदा करती है। सांप्रदायिकता समाज को धार्मिक आधार पर विभाजित करने का प्रयास करती है और अक्सर राजनीतिक लाभ के लिए धार्मिक भावनाओं का उपयोग करती है, जिससे सामाजिक शांति और सद्भाव को गंभीर खतरा पैदा हो सकता है।

37. (C) धार्मिक पहचान व्यक्ति की अन्य सभी पहचानों से सर्वोपरि है।
एक सांप्रदायिकतावादी व्यक्ति का यह अटूट विश्वास होता है कि उसकी धार्मिक पहचान अन्य सभी सामाजिक या राजनीतिक पहचानों से ऊपर है। वह मानता है कि एक ही धर्म के सभी लोगों के हित समान होते हैं और वे दूसरे धर्म के लोगों से अनिवार्य रूप से भिन्न या विरोधी होते हैं। यह संकीर्ण दृष्टिकोण व्यक्ति की भाषाई, क्षेत्रीय या वर्गीय पहचान को गौण बना देता है और केवल धर्म को प्राथमिकता देता है।

38. (A) केवल 1, 2, 3 और 5
सांप्रदायिकता मुख्य रूप से एक राजनीतिक विचारधारा है, जिसका उपयोग सत्ता हासिल करने के लिए किया जाता है, भले ही संबंधित व्यक्ति व्यक्तिगत रूप से धार्मिक न हो। यह विश्वास दिलाती है कि एक धर्म के सभी लोगों के हित एक समान हैं। भारत में कबीर जैसी समन्वयी परंपराओं का लंबा इतिहास रहा है जो धार्मिक भेदों को मिटाती हैं। हालाँकि, सांप्रदायिक दंगे दुर्भाग्यवश स्वतंत्रता के बाद भी भारत में होते रहे हैं।

39. (D) चर्च और राज्य की पृथकता
पश्चिमी इतिहास में धर्मनिरपेक्षता का उदय मुख्य रूप से चर्च और राज्य की शक्तियों के पूर्ण अलगाव के विचार से हुआ था। इसका उद्देश्य राजनीतिक और सार्वजनिक जीवन को धार्मिक संस्थानों के प्रभाव से मुक्त करना था। इस संदर्भ में, राज्य धार्मिक मामलों में कोई हस्तक्षेप नहीं करता और न ही चर्च राज्य की नीतियों को प्रभावित कर सकता है। यह मॉडल सार्वजनिक शासन व्यवस्था और व्यक्तिगत धार्मिक विश्वास को पूरी तरह अलग मानता है।

40. (A) 'सांप्रदायिक' शब्द के विलोम के रूप में
भारतीय समाज में धर्मनिरपेक्षता का प्रयोग अक्सर 'सांप्रदायिकता' के विलोम शब्द के रूप में किया जाता है। एक धर्मनिरपेक्ष व्यक्ति वह माना जाता है जो धार्मिक पूर्वाग्रहों से मुक्त हो और सभी धर्मों के प्रति सम्मान का भाव रखता हो। यह पश्चिमी मॉडल की तुलना में अधिक सकारात्मक और समावेशी है क्योंकि यहाँ धर्म का बहिष्कार करने के बजाय उसके शांतिपूर्ण और सद्भावपूर्ण सह-अस्तित्व पर विशेष बल दिया जाता है।

41. (C) सभी धर्मों के प्रति समान आदर
भारत में राज्य का धर्मनिरपेक्ष चरित्र 'सर्व धर्म समभाव' के सिद्धांत पर टिका है, जिसका अर्थ है सभी धर्मों के प्रति समान आदर। भारतीय संविधान के अनुसार राज्य का अपना कोई आधिकारिक धर्म नहीं है, लेकिन वह सभी नागरिकों को अपने धर्म का पालन करने की स्वतंत्रता देता है। राज्य धार्मिक अल्पसंख्यकों को विशेष संरक्षण भी प्रदान करता है ताकि समाज के बहुलवादी स्वरूप को संवैधानिक सुरक्षा दी जा सके।

42. (A) 2, 4, 3, 1
भाषाई राज्यों के पुनर्गठन की मांग स्वतंत्रता संग्राम के दौरान कांग्रेस के वादे से शुरु हुई थी। स्वतंत्रता के बाद विभाजन के डर से नेताओं में हिचकिचाहट पैदा हुई। हालाँकि, पोट्टि श्रीरामुलु के आंदोलन और बलिदान के बाद आंध्र प्रदेश का गठन हुआ, जिसने केंद्र सरकार को मजबूर कर दिया। अंततः राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना हुई और 1956 में भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की रिपोर्ट को व्यापक रूप से लागू किया गया।

राष्ट्रीय महत्व के विषय केंद्र के पास, स्थानीय महत्व के विषय राज्यों के पास और साझा हित के विषय दोनों के अधिकार क्षेत्र में रहें।

22. (B) वित्त आयोग
भारतीय संविधान के अनुच्छेद 280 के तहत प्रत्येक पाँच वर्ष में वित्त आयोग का गठन किया जाता है। इसका मुख्य कार्य केंद्र सरकार द्वारा एकत्र किए गए राजस्व में से राज्यों का हिस्सा निर्धारित करना और राज्यों को दिए जाने वाले अनुदान के सिद्धांतों पर सिफारिशें देना है। यह आयोग वित्तीय संसाधनों के न्यायसंगत बँटवारे को सुनिश्चित करके केंद्र-राज्य संबंधों में संतुलन बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

23. (D) राज्य के धर्म और धार्मिक पहचान वाले राजनीतिक समूहों के साथ संबंधों से
धर्मनिरपेक्षता और सांप्रदायिकता केवल व्यक्तिगत विश्वास के मुद्दे नहीं हैं, बल्कि इनका सीधा संबंध इस बात से है कि राज्य धर्म के प्रति क्या दृष्टिकोण अपनाता है। ये अवधारणाएँ यह भी स्पष्ट करती हैं कि धार्मिक पहचान के आधार पर संगठित राजनीतिक समूह राज्य के साथ कैसे संवाद करते हैं। ये प्रश्न एक विविधतापूर्ण समाज में राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और लोकतांत्रिक स्थिरता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।

24. (B) P-4, Q-3, R-1, S-2
भारत के राज्यों का इतिहास विभिन्न भाषाई और धार्मिक पहचानों के संगम को दर्शाता है। पुराना बंबई राज्य मराठी और गुजराती भाषियों का मेल था, जबकि मद्रास में दक्षिण भारत की कई भाषाएँ बोली जाती थीं। बाद में पंजाब का पुनर्गठन सिख बहुसंख्यक आधार पर हुआ और नागालैंड जैसे राज्यों का गठन विशिष्ट नृजातीय और ईसाई बहुसंख्यक पहचान को मान्यता देने के लिए किया गया था।

25. (C) समावेशात्मक और लोकतंत्रात्मक
भारतीय राष्ट्रवाद की मुख्य धारा हमेशा से समावेशी और लोकतांत्रिक रही है। इसने एक संकीर्ण पहचान थोपने के बजाय भारत की विशाल विविधता को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विकसित हुए इन मूल्यों ने सुनिश्चित किया कि स्वतंत्र भारत सभी धर्मों, भाषाओं और जातियों के लोगों के लिए समान स्थान रखेगा, जिससे एक लचीले और एकजुट राष्ट्र का निर्माण संभव हो सका।

26. (A) अपेक्षाकृत छोटे और सुविधावंचित समूह के लिए, जिसमें सामूहिकता का भाव हो
समाजशास्त्रीय अर्थ में 'अल्पसंख्यक' केवल कम संख्या वाला समूह नहीं है, बल्कि वह समूह है जो सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक रूप से वंचित हो। इन समूहों के सदस्यों में अपनी पहचान के प्रति एकजुटता और सामूहिकता का प्रबल भाव होता है। यह पहचान अक्सर बहुसंख्यक समाज के प्रभुत्व और भेदभाव के अनुभवों के विरुद्ध सुरक्षा और एकजुटता की भावना से विकसित होती है जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

27. (D) 29 फरवरी को जन्मे लोग
समाजशास्त्रीय अल्पसंख्यक बनने के लिए किसी समूह में सांस्कृतिक एकजुटता और ऐतिहासिक वंचन का अनुभव होना आवश्यक है। भारत में पारसी, यहूदी और सिख समुदाय अपनी विशिष्ट धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान के कारण अल्पसंख्यक माने जाते हैं। इसके विपरीत, 29 फरवरी को जन्मे लोग केवल एक सांख्यिकीय समूह हैं। उनमें न तो कोई सामूहिक सांस्कृतिक पहचान होती है और न ही वे किसी साझा भेदभाव का शिकार होते हैं।

28. (B) महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर
महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर ने भारतीय राष्ट्रवाद को संकीर्ण और अपवर्जनात्मक होने से बचाने पर विशेष जोर दिया था। टैगोर विशेष रूप से पश्चिमी प्रकार के आक्रामक राष्ट्रवाद के आलोचक थे, जो अन्य समूहों के प्रति घृणा पर आधारित होता है। इन दोनों महापुरुषों ने एक ऐसे समावेशी भारत का सपना देखा था जहाँ मानवता और प्रेम राष्ट्रीयता की संकीर्ण सीमाओं से ऊपर हो और विविधता का सम्मान हो।

29. (A) केवल 1 और 2
अल्पसंख्यक समूहों में अपने समुदाय के प्रति एकात्मता की भावना बहुत मजबूत होती है, जो अक्सर बहुसंख्यक समाज से मिलने वाले पूर्वाग्रहों और भेदभाव के साझा अनुभवों से पुष्ट होती है। यह सच है कि आर्थिक रूप से समृद्ध समूह भी सांस्कृतिक रूप से स्वयं को असुरक्षित या वंचित महसूस कर सकते हैं। हालाँकि, शारीरिक विशेषताओं जैसे बाएँ हाथ से लिखना किसी व्यक्ति को समाजशास्त्रीय अर्थ में अल्पसंख्यक समुदाय का सदस्य नहीं बनाता है।

30. (D) 14.2%
वर्ष 2011 की जनगणना के आधिकारिक आंकड़ों के अनुसार, भारत की कुल जनसंख्या में मुसलमानों का हिस्सा 14.2 प्रतिशत दर्ज किया गया था। यह समुदाय भारत का सबसे बड़ा धार्मिक अल्पसंख्यक समूह है। इनकी जनसंख्या का यह अनुपात भारत के विभिन्न राज्यों में अलग-अलग है, जो देश की विशाल जनसांख्यिकीय और धार्मिक विविधता को दर्शाता है। यह आंकड़ा सामाजिक और नीतिगत चर्चाओं में अल्पसंख्यक प्रतिनिधित्व हेतु महत्वपूर्ण आधार है।

31. (A) जम्मू और कश्मीर
भारत के राज्यों में जम्मू और कश्मीर एकमात्र ऐसा राज्य (अब केंद्र शासित प्रदेश) है जहाँ मुस्लिम समुदाय बहुसंख्यक है। अन्य राज्यों जैसे उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल और केरल में मुसलमानों की अच्छी जनसंख्या होने के बावजूद वे वहाँ अल्पसंख्यक ही हैं। यह जनसांख्यिकीय विशिष्टता जम्मू और कश्मीर को भारत के धार्मिक मानचित्र पर एक अलग पहचान देती है, जो क्षेत्रीय विविधता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण है।

32. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
किसी भी लोकतंत्र में अल्पसंख्यकों को विशेष संरक्षण की आवश्यकता होती है क्योंकि बहुसंख्यक वर्ग अपनी संख्या

53. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आधुनिक विश्व में राज्य और राष्ट्र एक-दूसरे के पूरक बन गए हैं। राज्यों को अपनी राजनीतिक वैधता और जनता के समर्थन के लिए राष्ट्रवादी भावनाओं की आवश्यकता होती है, जबकि राष्ट्रों को अपनी सुरक्षा और अंतरराष्ट्रीय मान्यता के लिए एक संगठित राज्य की जरूरत होती है। लोकतंत्र के इस युग में राष्ट्रवाद शासन का मुख्य आधार बन गया है, जिससे राज्य और राष्ट्र का मेल आधुनिक राजनीति की एक अनिवार्य वास्तविकता बन गया है।

54. (B) सभी नागरिकों को एक समान सांस्कृतिक मूल्यों और मानकों को अपनाने के लिए राजी करना।
आत्मसात्करणवादी नीतियों का मुख्य लक्ष्य सांस्कृतिक विविधता को समाप्त कर समाज में पूर्ण समरूपता लाना होता है। ये नीतियाँ अल्पसंख्यकों को अपनी विशिष्ट पहचान छोड़कर प्रभावशाली समूह की संस्कृति, भाषा और जीवनशैली को पूरी तरह अपनाने के लिए प्रोत्साहित या मजबूर करती हैं। इसका अंतिम उद्देश्य एक ऐसी साझा राष्ट्रीय पहचान का निर्माण करना है जहाँ कोई भी समूह अपनी अलग सांस्कृतिक विशेषताओं के आधार पर स्वयं को अलग न समझे।

55. (D) मुसलमान
भारत की जनसांख्यिकीय संरचना में मुसलमानों का स्थान हिंदुओं के बाद दूसरा है। 2011 की जनगणना के अनुसार, वे देश के सबसे बड़े अल्पसंख्यक धार्मिक समुदाय हैं। उनकी आबादी का यह बड़ा हिस्सा भारत की बहुलवादी संस्कृति और धर्मनिरपेक्षता को एक विशेष आयाम प्रदान करता है। मुसलमानों की उपस्थिति देश के लगभग सभी हिस्सों में है, जो भारत के सामाजिक और राजनीतिक जीवन को गहराई से प्रभावित करती है और विविधता बढ़ाती है।

56. (C) केवल 1, 2, 3 और 5
भारत के धार्मिक भूगोल में ईसाई समुदाय पूर्वोत्तर के तीन राज्यों के साथ-साथ गोवा और केरल में भी प्रमुखता से मौजूद है। सिख समुदाय पंजाब में बहुसंख्यक है, जबकि जैन समुदाय की महत्वपूर्ण संख्या महाराष्ट्र और गुजरात जैसे राज्यों में है। हालाँकि, महाराष्ट्र में बौद्धों की संख्या अधिक है, लेकिन पूरे देश के राज्यों में उनका अनुपात केवल एक ही स्थान पर सीमित नहीं है, बल्कि यह अन्य सामाजिक कारकों पर भी निर्भर है।

57. (C) रेडमंड (बहुसंख्यक कैथोलिक), कारसन (अल्पसंख्यक प्रोटेस्टेंट)
डॉ. अंबेडकर ने आयरलैंड का उदाहरण देते हुए बताया था कि रेडमंड बहुसंख्यक कैथोलिक समुदाय के नेता थे जो स्वशासन चाहते थे, जबकि कारसन अल्पसंख्यक प्रोटेस्टेंट समूह का नेतृत्व कर रहे थे जिन्हें बहुसंख्यकों के वर्चस्व का डर था। इस उदाहरण का उद्देश्य यह समझाना था कि एक ही राष्ट्र के भीतर अलग-अलग समूहों के हित टकरा सकते हैं और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा के बिना राष्ट्र का निर्माण चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

58. (A) पश्चिमी पाकिस्तान द्वारा बांग्लादेशी लोगों के भाषाई और सांस्कृतिक अधिकारों को मान्यता न देना
बांग्लादेश के उदय के पीछे सबसे महत्वपूर्ण कारण भाषाई भेदभाव था। तत्कालीन पश्चिमी पाकिस्तान ने पूर्वी पाकिस्तान के बंगाली भाषियों पर उर्दू थोपने का प्रयास किया, जिससे सांस्कृतिक अस्मिता का संकट पैदा हो गया। जब बंगाली लोगों की भाषाई और राजनीतिक स्वायत्तता की मांगों को कुचला गया, तो इसने एक तीव्र राष्ट्रीय आंदोलन को जन्म दिया। अंततः भाषाई अधिकारों की अनदेखी के कारण 1971 में पाकिस्तान का विभाजन होकर नया राष्ट्र बना।

59. (D) व्यक्ति की बजाय समुदाय या सामूहिकता से जुड़ा हुआ
अंग्रेजी के मूल शब्द 'कम्युनल' का अर्थ सामूहिकता या साझा संसाधनों से है, लेकिन भारतीय संदर्भ में इसका अर्थ पूरी तरह बदल गया है। यहाँ इसे संकीर्ण धार्मिक विद्वेष और आक्रामक उग्रवाद के रूप में देखा जाता है। यह अंतर दर्शाता है कि कैसे कोई शब्द अलग-अलग सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों में विपरीत अर्थ ग्रहण कर सकता है। भारत में यह शब्द अक्सर सामाजिक तनाव और धार्मिक आधार पर विभाजन को सूचित करता है।

60. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
विभिन्न विचारकों ने भारतीय समाज और राजनीति को नई दिशा दी है। मैक्स वेबर ने राज्य की शक्ति और वैधता को परिभाषित किया, जबकि टैगोर ने मानवतावाद पर आधारित राष्ट्रवाद की वकालत की। डॉ. अंबेडकर ने वंचितों और अल्पसंख्यकों के अधिकारों के लिए संवैधानिक संघर्ष किया। कबीर ने अपनी भक्ति और कविताओं के माध्यम से धार्मिक कट्टरता पर चोट की और सभी धर्मों के बीच एक साझा मानवीय धरातल तलाशने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

61. (C) सांस्कृतिक पहचानों की प्रबलता और तीव्र भावावेश भड़काने की क्षमता।
सांस्कृतिक विविधता कभी-कभी गंभीर चुनौतियाँ पैदा करती है क्योंकि सामुदायिक पहचानें लोगों के आत्म-सम्मान और गौरव से गहराई से जुड़ी होती हैं। इन पहचानों के नाम पर लोगों को आसानी से संगठित किया जा सकता है, जो अक्सर तीव्र भावनाओं और संघर्षों का कारण बनता है। जब अलग-अलग समुदायों के बीच संसाधनों या राजनीतिक शक्ति के लिए प्रतिस्पर्धा होती है, तो ये सांस्कृतिक अंतर एक बड़े सामाजिक विवाद या टकराव का रूप ले सकते हैं।

62. (D) अजनबी व्यक्ति जिनसे कभी संवाद नहीं होता
समाजीकरण एक सामाजिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति अपने परिवार, मित्रों और समुदाय के साथ अंतःक्रिया करके समाज के तौर-तरीके सीखता है। इसमें वे लोग महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जिनसे हमारा नियमित संपर्क होता है। अजनबी व्यक्ति जिनसे हमारा कभी कोई संवाद नहीं होता, वे हमारे समाजीकरण की प्रक्रिया में कोई योगदान नहीं दे सकते। समाजीकरण के लिए आपसी संप्रेषण और सामाजिक संबंधों का होना एक अनिवार्य शर्त मानी जाती है।

का उन्मूलन या तीन तलाक पर प्रतिबंध)। इस प्रकार, भारतीय धर्मनिरपेक्षता एक नकारात्मक अवधारणा नहीं है जो केवल अलगाव पर जोर दे, बल्कि एक सकारात्मक अवधारणा है जो अंतर-धार्मिक समानता और सहिष्णुता को बढ़ावा देने का प्रयास करती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. पश्चिमी और भारतीय धर्मनिरपेक्षता मॉडल के बीच मूल अंतर क्या है?
(A) पश्चिमी मॉडल में धर्म व्यक्तिगत है, जबकि भारतीय मॉडल में पूर्णतः सार्वजनिक
(B) पश्चिमी मॉडल राज्य और धर्म के पूर्ण पृथक्करण पर जोर देता है, जबकि भारतीय मॉडल नहीं
(C) भारतीय मॉडल पूर्ण नास्तिकता पर आधारित है, जबकि पश्चिमी मॉडल पूर्ण आस्तिकता पर
(D) दोनों मॉडलों की कार्यप्रणाली और वैचारिक पृष्ठभूमि में कोई मूल अंतर नहीं है

167. भारतीय संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता को अक्सर किस सिद्धांत के रूप में समझा जाता है?
(A) सभी धर्मों का सममूल और पूर्ण विनाश
(B) सर्वधर्म समभाव (सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान)
(C) धार्मिक मूल्यों के प्रति पूर्ण उदासीनता
(D) केवल एक विशिष्ट धर्म का राज्य द्वारा समर्थन

168. भारतीय धर्मनिरपेक्षता में 'सैद्धांतिक दूरी' (principled distance) का क्या अर्थ है?
(A) राज्य सभी धर्मों के साथ समानता और न्याय के आधार पर संबंध बनाता है
(B) राज्य सदैव धर्म के सभी सार्वजनिक पहलुओं से पूर्णतः दूर रहता है
(C) राज्य धार्मिक मामलों और व्यक्तिगत विश्वासों में कभी हस्तक्षेप नहीं करता
(D) राज्य केवल प्रभावशाली या बहुसंख्यक धर्म का ही सैद्धांतिक समर्थन करता है

169. निम्नलिखित में से कौन सा भारतीय धर्मनिरपेक्षता के सकारात्मक हस्तक्षेप का उदाहरण है?
(A) सभी धार्मिक गतिविधियों पर प्रतिबंध लगाना
(B) धार्मिक संस्थानों को कोई वित्तीय सहायता न देना
(C) सामाजिक सुधार के लिए अस्पृश्यता का उन्मूलन
(D) किसी भी धार्मिक त्योहार पर अवकाश न देना

170. स्रोत के अनुसार, भारतीय धर्मनिरपेक्षता का अंतिम लक्ष्य क्या है?
(A) धर्म को सार्वजनिक जीवन से पूरी तरह समाप्त करना
(B) एक नया राष्ट्रीय धर्म निर्मित करना
(C) पश्चिमी धर्मनिरपेक्षता मॉडल को पूरी तरह से अपनाना
(D) अंतर-धार्मिक समानता और सहिष्णुता को बढ़ावा देना

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

सांप्रदायिकता एक राजनीतिक विचारधारा है जो धर्म को राजनीतिक लामबंदी के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग करती है। इसे धार्मिकता या व्यक्तिगत आस्था के साथ नहीं जोड़ा जाना चाहिए। एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति सांप्रदायिक हो भी सकता है और नहीं भी। सांप्रदायिकता का मूल आधार यह विश्वास है कि एक ही धर्म के अनुयायियों के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक हित समान होते हैं और ये हित अन्य धार्मिक समुदायों के हितों से भिन्न और उनके विरोधी होते हैं। यह विचारधारा समाज को विभिन्न धार्मिक समुदायों के रूप में देखती है जो एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा में हैं। सांप्रदायिक सोच इतिहास की एक चयनात्मक और विकृत व्याख्या प्रस्तुत करती है, जिसमें अपने समुदाय की उपलब्धियों का महिमामंडन किया जाता है और दूसरे समुदायों को शत्रु या 'अन्य' के रूप में चित्रित किया जाता है। यह अक्सर 'हम' बनाम 'वे' की भावना को बढ़ावा देकर सामाजिक ध्रुवीकरण पैदा करती है। इसका अंतिम लक्ष्य एक धार्मिक समुदाय को एक राजनीतिक इकाई के रूप में संगठित करना और राजनीतिक सत्ता हासिल करने के लिए उसकी सामूहिक पहचान का उपयोग करना है, भले ही इससे राष्ट्रीय एकता और सामाजिक सद्भाव को कितना भी नुकसान क्यों न हो। यह एक आक्रामक और अपवर्जक विचारधारा है जो विविधता को स्वीकार नहीं करती।

उपर्पयुक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. स्रोत के अनुसार, सांप्रदायिकता को सबसे सटीक रूप से कैसे परिभाषित किया जा सकता है?
(A) गहरी और शुद्ध व्यक्तिगत धार्मिक आस्था
(B) सभी ज्ञात धर्मों के प्रति सम्मान और प्रेम की भावना
(C) राजनीतिक लामबंदी के लिए धर्म का उपयोग करने वाली एक विचारधारा
(D) धार्मिक सुधार और सामाजिक उत्थान का एक संगठित आंदोलन

172. सांप्रदायिकता का मूल विश्वास क्या है?
(A) सभी मनुष्यों के सामाजिक और आर्थिक हित सदैव समान होते हैं
(B) एक धर्म के लोगों के राजनीतिक हित समान होते हैं और वे अन्य धर्मों के विरोधी होते हैं
(C) धर्म और सक्रिय राजनीति को सदैव एक-दूसरे से अलग रखा जाना चाहिए
(D) व्यक्तिगत आस्था का कभी भी सार्वजनिक या सामूहिक प्रदर्शन नहीं करना चाहिए

173. सांप्रदायिक सोच इतिहास की व्याख्या कैसे करती है?
(A) एक पूर्णतः वस्तुनिष्ठ, निष्पक्ष और तथ्यात्मक तरीके से
(B) सभी समुदायों के समान ऐतिहासिक योगदान को स्वीकार करते हुए
(C) पिछली समस्त ऐतिहासिक घटनाओं को पूरी तरह से नजरअंदाज करके

राष्ट्र एक सांस्कृतिक और भावनात्मक अवधारणा है जो साझा इतिहास, भाषा या पहचान की भावना से जुड़ी होती है। एक राज्य के भीतर कई राष्ट्र हो सकते हैं और एक राष्ट्र कई राज्यों में फैला हो सकता है। राज्य शासन करने का यंत्र है, जबकि राष्ट्र लोगों के बीच गहरे जुड़ाव की एक मनोवैज्ञानिक अनुभूति है।

74. (A) यह दर्शाता है कि एक राज्य अपने भीतर कई 'राष्ट्रों' या 'राष्ट्रीयताओं' को मान्यता दे सकता है।
सोवियत संघ का उदाहरण यह सिद्ध करता है कि एक ही विशाल राजनीतिक इकाई या राज्य के भीतर अलग-अलग 'राष्ट्रीयताओं' को आधिकारिक पहचान और स्वायत्तता दी जा सकती है। यह पारंपरिक 'एक राष्ट्र-एक राज्य' के संकीर्ण विचार को चुनौती देता है। इससे पता चलता है कि राजनीतिक एकता बनाए रखने के लिए यह अनिवार्य नहीं है कि सभी नागरिकों की सांस्कृतिक या नृजातीय पहचान एक ही हो, बल्कि विविधता का समायोजन भी संभव है।

75. (B) केवल 2, 4 और 5
प्रदत्त पहचानें जन्म से प्राप्त होती हैं, उन्हें अर्जित नहीं किया जा सकता। भारत एक समावेशी राज्य-राष्ट्र है, न कि आत्मसात्करणवादी, क्योंकि यहाँ विविधता को दबाया नहीं जाता बल्कि मान्यता दी जाती है। नागरिक समाज परिवार के निजी दायरे से बाहर की स्वतंत्र संस्थाओं का क्षेत्र है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि आधुनिक समाज में पहचान और नागरिकता के मुद्दे बहुत जटिल हैं और वे सरल वर्गीकरणों से परे व्यापक सामाजिक अर्थ रखते हैं।

76. (B) नृजातीय-राष्ट्रीय पहचान और क्षेत्रवाद का
भारत में जब धर्म, भाषा और जनजातीय पहचान एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र के साथ जुड़ जाती हैं, तो वे एक मजबूत क्षेत्रीय चेतना पैदा करती हैं। इसे नृजातीय-राष्ट्रीय पहचान कहा जाता है जो क्षेत्रवाद को बढ़ावा देती है। जब किसी क्षेत्र के लोगों को लगता है कि उनकी विशिष्ट पहचान खतरे में है या उनके साथ आर्थिक अन्याय हो रहा है, तो वे अधिक राजनीतिक स्वायत्तता या अलग राज्य की मांग करने लगते हैं।

77. (C) भारतीय राष्ट्र-राज्य की एक संघीय इकाई (प्रांत)
भारतीय संदर्भ में 'राज्य' शब्द का प्रयोग अक्सर देश के भीतर की उन इकाइयों या प्रांतों के लिए किया जाता है जिनके पास अपनी सरकार और विधानसभा होती है, जैसे उत्तर प्रदेश या केरल। यद्यपि समाजशास्त्र में 'राज्य' का अर्थ संपूर्ण संप्रभु सत्ता से है, लेकिन संघीय ढांचे में यह क्षेत्रीय प्रशासनिक इकाइयों को सूचित करता है। यह शब्दावली भारत की विविध शासन व्यवस्था और शक्तियों के विकेंद्रीकरण की प्रकृति को स्पष्ट करती है।

78. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
समाज के विभिन्न आयामों को समझने के लिए ये अवधारणाएँ महत्वपूर्ण हैं। क्षेत्रवाद अक्सर संसाधनों की कमी और क्षेत्रीय पहचान के मेल से पैदा होता है। सांप्रदायिकता धार्मिक पहचान के हिंसक राजनीतिक उपयोग को दर्शाती है। भारतीय धर्मनिरपेक्षता सभी धर्मों को समान सम्मान देने पर आधारित है, जबकि नागरिक समाज उस क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करता है जहाँ लोग स्वतंत्र रूप से संगठित होकर सामाजिक भलाई और लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए सक्रिय रूप से कार्य करते हैं।

79. (A) 1, 632
2011 की जनगणना के अनुसार भारत में 1,632 अलग-अलग भाषाएँ और बोलियाँ दर्ज की गई थीं। यह संख्या भारत की अद्भुत भाषाई गहराई को प्रदर्शित करती है। इनमें से केवल 22 भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में विशेष दर्जा प्राप्त है, लेकिन बोलियों की इतनी विशाल संख्या यह बताती है कि भारत का हर क्षेत्र अपनी विशिष्ट मौखिक परंपरा और सांस्कृतिक पहचान को आज भी गर्व से संजोए हुए है।

80. (B) संयुक्त और सुदृढ़ राष्ट्र निर्माण के लिए यह आवश्यक माना गया।
भारतीय संविधान निर्माताओं ने महसूस किया कि एक विविधतापूर्ण देश में एकता तभी बनी रह सकती है जब प्रत्येक समुदाय सुरक्षित महसूस करे। उन्होंने माना कि किसी एक संस्कृति को थोपने से विद्रोह और असंतोष पैदा होगा। इसलिए, उन्होंने सभी वर्गों को अपनी भाषा और धर्म को विकसित करने की स्वतंत्रता दी। यह समावेशी दृष्टिकोण देश की अखंडता को मजबूत करने और सभी नागरिकों में राष्ट्र के प्रति विश्वास जगाने की एक रणनीतिक और नैतिक आवश्यकता थी।

81. (B) भारत की विशाल कुल जनसंख्या के कारण।
भारत की कुल जनसंख्या इतनी अधिक है कि यहाँ छोटे प्रतिशत वाले समूहों की संख्या भी करोड़ों में पहुँच जाती है। उदाहरण के लिए, यदि कोई धार्मिक समूह कुल आबादी का मात्र 1 प्रतिशत भी है, तो उसकी वास्तविक संख्या कई विकसित देशों की कुल जनसंख्या से अधिक हो सकती है। यही कारण है कि भारत में अल्पसंख्यक समुदायों का प्रभाव और उनकी उपस्थिति सामाजिक व राजनीतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण और व्यापक मानी जाती है।

82. (A) विशेषाधिकारप्राप्त अल्पसंख्यक
वे अल्पसंख्यक जो आर्थिक रूप से अत्यंत समृद्ध और शक्तिशाली होते हैं, उन्हें 'विशेषाधिकारप्राप्त अल्पसंख्यक' कहा जाता है। समाजशास्त्र में अल्पसंख्यक शब्द का प्रयोग अक्सर वंचित समूहों के लिए होता है, लेकिन धनी वर्ग संख्या में कम होने के बावजूद समाज पर अपना गहरा प्रभाव रखते हैं। उन्हें संरक्षण की नहीं, बल्कि उनके सामाजिक उत्तरदायित्व की चर्चा की आवश्यकता होती है क्योंकि उनके पास संसाधनों और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं पर अत्यधिक नियंत्रण होता है।

83. (B) केवल 1, 3 और 4
सामुदायिक पहचानें जन्मजात होने के कारण अत्यंत दृढ़ होती हैं और विवादों के समय लोग तार्किक होने के बजाय भावनात्मक हो जाते हैं। संघर्ष की स्थिति में विरोधी पक्ष को शत्रु मानकर घृणा करना एक आम मानवीय प्रतिक्रिया बन जाती है। यहाँ तक कि युद्धों में भी लोग अपनी आस्था का सहारा लेते हुए यह विश्वास करते हैं कि न्याय और ईश्वर केवल उनके ही साथ हैं।

का यह पैमाना ही भारत की भाषाई, धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता को और अधिक व्यापक और सघन बनाता है। इतनी बड़ी आबादी के प्रबंधन के लिए एक मजबूत लोकतांत्रिक ढांचे और समावेशी नीतियों की आवश्यकता होती है ताकि समाज के हर वर्ग को विकास के समान अवसर प्राप्त हो सकें।

142. (D) यह एक आत्मसात्करणवादी राज्य है।
भारत एक आत्मसात्करणवादी राज्य नहीं है क्योंकि यहाँ की नीतियाँ अल्पसंख्यकों को अपनी अलग पहचान छोड़ने के लिए मजबूर नहीं करतीं। इसके विपरीत, भारत एक धर्मनिरपेक्ष और लोकतांत्रिक गणराज्य है जो अपनी विशाल विविधता को संजोकर रखने में विश्वास करता है। यहाँ का संघीय ढांचा क्षेत्रीय और भाषाई विशिष्टताओं को फलने-फूलने का संवैधानिक अवसर देता है। भारत का 'राज्य-राष्ट्र' मॉडल समावेशी है, जहाँ अलग-अलग संस्कृतियों के लोग अपनी पहचान बनाए रखते हुए भी भारतीयता के गौरव से जुड़े रहते हैं।

143. (B) केवल 2 and 4
रवींद्रनाथ टैगोर ने हमेशा ऐसे राष्ट्रवाद की आलोचना की जो दूसरों को बाहर निकालता हो या घृणा पर आधारित हो। उन्होंने मानवता को सर्वोपरि माना। साथ ही, भारत का 'राज्य-राष्ट्र' मॉडल एक सफल उदाहरण है जिसने इतनी अधिक विविधताओं के बावजूद देश को एक सूत्र में पिरोए रखा है। भारतीय संविधान अल्पसंख्यकों के अधिकारों को स्पष्ट सुरक्षा प्रदान करता है, जिससे वे अपनी पहचान सुरक्षित रख पाते हैं। अतः समावेशी राष्ट्रवाद और विविधता का सम्मान ही आधुनिक भारतीय राज्य की सफलता का मूल मंत्र है।

144. (B) इज़राइल और संयुक्त राज्य अमेरिका
यहूदी मूल के अमेरिकी लोगों का उदाहरण अक्सर 'दोहरी नागरिकता' या दोहरी निष्ठा के संदर्भ में दिया जाता है। ऐसे कई लोग इज़राइल और अमेरिका दोनों के नागरिक हो सकते हैं, जो यह दर्शाता है कि आधुनिक युग में किसी व्यक्ति की राष्ट्रीय पहचान एक ही देश की सीमाओं में बँधी रहना अनिवार्य नहीं है। यह स्थिति वैश्विक प्रवास और सांस्कृतिक जुड़ाव के कारण पैदा हुई है, जहाँ लोग अपने पूर्वजों की भूमि और अपने वर्तमान निवास वाले देश, दोनों के प्रति वफादार रहते हैं।

145. (B) किसी 'सार्वजनिक प्राधिकरण' से
सूचना का अधिकार अधिनियम के तहत नागरिक केवल 'सार्वजनिक प्राधिकरणों' से ही जानकारी माँग सकते हैं। इसमें केंद्र और राज्य सरकार के सभी विभाग, पंचायतें, नगरपालिकाएं और वे संस्थाएं शामिल हैं जिन्हें सरकार द्वारा वित्त पोषित किया जाता है। निजी कंपनियों या निजी व्यक्तियों की निजी जानकारी इसके दायरे में नहीं आती। यह कानून शासन में पारदर्शिता लाने के लिए है ताकि जनता यह जान सके कि सार्वजनिक धन और सरकारी शक्तियों का उपयोग किस प्रकार और किन कार्यों के लिए किया जा रहा है।

146. (A) राज्य का कोई आधिकारिक धर्म नहीं होगा।
भारतीय संविधान की प्रस्तावना में 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द का अर्थ है कि भारत का कोई अपना 'राजकीय धर्म' नहीं होगा। राज्य सभी धर्मों से एक समान दूरी बनाए रखेगा और किसी एक विशेष धर्म को संरक्षण नहीं देगा। यह सभी नागरिकों को अपने विश्वास के अनुसार किसी भी धर्म को मानने, आचरण करने और प्रचार करने की पूर्ण स्वतंत्रता देता है। इसका उद्देश्य एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जहाँ धर्म के आधार पर किसी भी नागरिक के साथ कोई भेदभाव न हो।

147. (C) यह मानती है कि विभिन्न धर्मों के लोगों के हित समान हो सकते हैं।
सांप्रदायिकता की विचारधारा इस बात को पूरी तरह नकारती है कि अलग-अलग धर्मों के लोगों के हित एक समान हो सकते हैं। इसके विपरीत, यह दावा करती है कि धार्मिक पहचान ही सर्वोपरि है और विभिन्न धर्मों के अनुयायियों के बीच हमेशा हितों का टकराव होता है। यह संकीर्ण सोच समाज को प्रतिद्वंद्वी समूहों में बांट देती है। सांप्रदायिकता आपसी सहयोग और साझा हितों की संभावना को खत्म कर घृणा और प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देती है, जो एक स्वस्थ और शांतिपूर्ण समाज के लिए घातक है।

148. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
सत्तावादी शासन लोकतंत्र का बिल्कुल उल्टा होता है क्योंकि इसमें शासन की शक्ति जनता से नहीं मिलती। ऐसे राज्यों में शासक अपनी मर्जी से निर्णय लेते हैं और वे किसी भी स्वतंत्र संस्था या जनता के प्रति जवाबदेह नहीं होते। यहाँ लोगों की शिकायतें सुनने का कोई तंत्र नहीं होता और विरोध को शक्ति से कुचल दिया जाता है। चूँकि इसमें उत्तरदायित्व का अभाव होता है, इसलिए यह लोकतांत्रिक मूल्यों और व्यक्तिगत स्वतंत्रताओं के लिए सबसे बड़ा खतरा माना जाता है।

149. (C) राजशाही की पुनर्स्थापना के लिए अभियान
आधुनिक भारत में नागरिक समाज के आंदोलनों का केंद्र लोकतांत्रिक अधिकार, सामाजिक न्याय और पर्यावरण जैसे मुद्दे रहे हैं। राजशाही की पुनर्स्थापना जैसे प्रतिगामी विचार कभी भी नागरिक समाज की मुख्यधारा का हिस्सा नहीं रहे। भारत के नागरिक संगठन जनजातीय अधिकारों, महिलाओं के विरुद्ध हिंसा और शिक्षा सुधार जैसे आधुनिक और प्रगतिशील लक्ष्यों के लिए कार्य करते हैं। ये आंदोलन लोकतंत्र को अधिक गहरा और समावेशी बनाने के लिए निरंतर संघर्षरत रहते हैं, जो सामंती व्यवस्थाओं के पूरी तरह से विपरीत है।

150. (A) केवल 1, 2, 3 and 5
समाजशास्त्रीय अवधारणाएँ हमें समाज की गहरी संरचना को समझने में मदद करती हैं। सांस्कृतिक विविधता अंतरों को स्वीकार करती है, जबकि सामुदायिक पहचानें जन्म से मिलने वाली 'प्रदत्त' पहचानें होती हैं। मैक्स वेबर ने राज्य को शक्ति के वैध उपयोग से परिभाषित किया, जो शासन की आधारशिला है। नागरिक समाज राज्य और बाज़ार के बीच एक स्वतंत्र स्थान है जहाँ लोग अपने अधिकारों के लिए संगठित होते हैं। भारत का मॉडल आत्मसात्करणवादी नहीं, बल्कि विविधता का सम्मान करने वाला समावेशी मॉडल है जो एकता को बल देता है।

एकजुट होता है, और राज्य वह कानूनी संस्था है जो शक्ति और कानून के माध्यम से शासन संचालित करती है। ये चारों तत्व मिलकर किसी भी आधुनिक समाज की संरचना और उसकी कार्यप्रणाली को परिभाषित करते हैं।

94. (D) प्रतिसंवेदी नीतियों द्वारा सांस्कृतिक विविधता का सार्थक समायोजन करना।
'राज्य-राष्ट्र' के सफल निर्माण के लिए विविधता को दबाने के बजाय उसे स्वीकार करना और सम्मान देना आवश्यक है। प्रतिसंवेदी नीतियों का अर्थ है ऐसी सरकारी योजनाएँ जो अलग-अलग समुदायों की विशिष्ट जरूरतों और पहचानों के प्रति संवेदनशील हों। जब सभी समूहों को लगता है कि राज्य उनके साथ न्याय कर रहा है और उनकी संस्कृति सुरक्षित है, तभी वे राष्ट्र के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ते हैं। यही समावेशी दृष्टिकोण एक मजबूत और एकीकृत राष्ट्र का आधार बनता है।

95. (A) यह आग में घी का काम करता है।
क्षेत्रवाद तब और अधिक उग्र हो जाता है जब किसी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान वाले क्षेत्र के लोगों को लगता है कि वे आर्थिक रूप से पिछड़े रह गए हैं। यह 'क्षेत्रीय वंचन' का भाव लोगों में असंतोष पैदा करता है और वे अपनी गरीबी या पिछड़ेपन के लिए केंद्र सरकार या अन्य क्षेत्रों को जिम्मेदार ठहराने लगते हैं। इस प्रकार, आर्थिक अभाव सांस्कृतिक पहचान के साथ मिलकर क्षेत्रीय आंदोलनों को और अधिक तीव्र और आक्रामक बना देता है।

96. (B) यह राज्य और धर्म के बीच पूर्ण अलगाव (पृथक्करण) पर आधारित है।
भारतीय धर्मनिरपेक्षता पश्चिमी मॉडल से भिन्न है क्योंकि यह राज्य और धर्म के बीच पूर्ण या अभेद्य दीवार नहीं बनाती। भारत में राज्य धार्मिक मामलों में सकारात्मक हस्तक्षेप कर सकता है, जैसे छुआछूत जैसी कुरीतियों को मिटाना या अल्पसंख्यक संस्थानों को वित्तीय सहायता देना। भारतीय राज्य सभी धर्मों से एक समान दूरी बनाए रखते हुए भी उनके प्रति आदरपूर्ण दृष्टिकोण रखता है, जो इसे केवल 'धर्म-त्याग' के बजाय 'धर्म-समभाव' का रूप देता है।

97. (A) केवल 5
सांप्रदायिकता धर्म का एक राजनीतिक औजार के रूप में उपयोग है, जिसका उद्देश्य आध्यात्मिक उत्थान नहीं बल्कि सत्ता हासिल करना होता है। सांस्कृतिक विविधता केवल भाषा-धर्म तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें जीवनशैली भी शामिल है। सांस्कृतिक अंतर अक्सर आर्थिक असमानताओं से गहरे जुड़े होते हैं। नागरिक समाज मुनाफे के लिए नहीं बल्कि सेवा और अधिकारों के लिए कार्य करता है। अतः सांप्रदायिकता के राजनीतिक स्वरूप को समझना समाजशास्त्रीय दृष्टि से सबसे अधिक सटीक और आवश्यक है।

98. (A) राज्य द्वारा पोषित शिक्षा संस्था में धर्म, मूलवंश, जाति या भाषा के आधार पर प्रवेश से वंचित नहीं किया जाएगा।
अनुच्छेद 29(2) यह सुनिश्चित करता है कि सरकारी या सरकार से सहायता प्राप्त किसी भी शिक्षण संस्थान के दरवाजे सभी नागरिकों के लिए समान रूप से खुले रहें। यह प्रावधान शिक्षा के क्षेत्र में किसी भी प्रकार के धार्मिक या भाषाई भेदभाव को रोकता है। यह नागरिकों के मौलिक अधिकार के रूप में समानता को पुष्ट करता है और यह सुनिश्चित करता है कि सार्वजनिक संसाधन बिना किसी पक्षपात के समाज के हर वर्ग तक पहुँच सकें।

99. (C) भाषाई आधार पर
1920 के दशक में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपनी संगठनात्मक इकाइयों का पुनर्गठन भाषाई आधार पर किया था। इसका उद्देश्य स्थानीय भाषाओं के माध्यम से आम जनता को स्वतंत्रता आंदोलन से जोड़ना था। इस निर्णय ने यह संदेश दिया कि भविष्य के स्वतंत्र भारत में क्षेत्रीय भाषाओं का सम्मान किया जाएगा। यही कारण था कि आजादी के बाद भाषाई राज्यों के गठन की मांग इतनी प्रबल हुई क्योंकि जनता इसे कांग्रेस के पुराने वादे के रूप में देख रही थी।

100. (D) नागरिक समाज राज्य पर नजर रख सकता है और उसके अन्यायपूर्ण कार्यों का विरोध कर सकता है।
सत्तावादी राज्यों में जहाँ जनता के अधिकारों को दबाया जाता है, वहाँ नागरिक समाज एक सशक्त प्रहरी की भूमिका निभाता है। स्वतंत्र संगठन, प्रेस और जागरूक नागरिक समूह राज्य की निरंकुशता को चुनौती देते हैं। वे मानवाधिकारों के हनन को उजागर करते हैं और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दबाव बनाने का कार्य करते हैं। एक मजबूत नागरिक समाज ही सत्तावादी शासन के विरुद्ध जनता की आवाज़ को जीवित रख सकता है और लोकतांत्रिक सुधारों की मांग कर सकता है।

101. (C) अरुणाचल प्रदेश
पूर्वोत्तर भारत के कई राज्यों जैसे नागालैंड, मिजोरम और मेघालय में ईसाई समुदाय बहुसंख्यक है, लेकिन अरुणाचल प्रदेश में स्थिति अलग है। यहाँ की जनसांख्यिकी अधिक विविध है, जहाँ हिंदू, बौद्ध और पारंपरिक जनजातीय धर्मों को मानने वाले लोगों की संख्या अधिक है। यह तथ्य दर्शाता है कि पूर्वोत्तर के सभी राज्यों को एक ही चश्मे से नहीं देखा जा सकता और हर राज्य की अपनी विशिष्ट धार्मिक और सांस्कृतिक बनावट है जिसे समझना आवश्यक है।

102. (B) केवल 2
2011 की जनगणना के समय भारत दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा मुस्लिम आबादी वाला देश था, जो इंडोनेशिया के बाद आता है। यह भारत की विशाल जनसांख्यिकीय क्षमता और विविधता को रेखांकित करता है। हिंदू समुदाय एक समजातीय समूह नहीं है, बल्कि इसमें अपार आंतरिक विविधता है। इसी प्रकार, सिख और जैन समुदाय भी भारत के विभिन्न हिस्सों में फैले हुए हैं। अतः भारत की मुस्लिम जनसंख्या का यह वैश्विक स्थान इसकी बहुलवादी पहचान का एक महत्वपूर्ण प्रमाण है।

103. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
समाजशास्त्र में 'अल्पसंख्यक' होने का अर्थ केवल संख्या में कम होना नहीं है, बल्कि इसमें सत्ता और संसाधनों की कमी

ये भावुक पक्ष ही सामुदायिक विवादों को सुलझाना कठिन बना देते हैं।

84. (D) श्रीलंका और पाकिस्तान

श्रीलंका और पाकिस्तान के उदाहरण दिखाते हैं कि भाषाई विविधता की अनदेखी करना कितना घातक हो सकता है। श्रीलंका में सिंहली भाषा थोपने से तमिलों के साथ संघर्ष हुआ और दशकों तक गृहयुद्ध चला। इसी तरह, पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) के बंगाली भाषियों पर उर्दू थोपने के कारण 1971 में पाकिस्तान का विभाजन हो गया। ये घटनाएं सिद्ध करती हैं कि भाषाई अधिकारों का सम्मान करना राष्ट्रीय स्थिरता और अखंडता बनाए रखने के लिए अनिवार्य है।

85. (C) राज्य योजना आयोगों द्वारा तैयार विस्तृत योजनाओं का समावेश।

भारत की पंचवर्षीय योजनाओं में राज्यों की भूमिका सक्रिय और सहयोगात्मक रही है। योजना आयोग (अब नीति आयोग) केवल केंद्र से नीतियाँ नहीं थोपता, बल्कि राज्यों द्वारा तैयार की गई स्थानीय योजनाओं को भी राष्ट्रीय योजना का हिस्सा बनाता है। यह सहकारी संघवाद का एक उदाहरण है जहाँ क्षेत्रीय विकास की जरूरतों को राष्ट्रीय लक्ष्यों के साथ जोड़ने का प्रयास किया जाता है, जिससे देश के हर हिस्से का संतुलित आर्थिक विकास सुनिश्चित हो सके।

86. (B) किसी मंत्री के निजी ईमेल और फोन कॉल्स की जाँच करना।

सूचना का अधिकार अधिनियम सार्वजनिक कार्यों में पारदर्शिता के लिए है, न कि किसी की निजी जिंदगी में तांक-झांक करने के लिए। कोई भी नागरिक सरकारी दस्तावेजों, खर्चों और परियोजनाओं की जानकारी तो माँग सकता है, लेकिन वह किसी मंत्री या अधिकारी के व्यक्तिगत संचार और निजता का उल्लंघन नहीं कर सकता। कानून में 'सार्वजनिक हित' और 'व्यक्तिगत निजता' के बीच एक स्पष्ट संतुलन बनाया गया है ताकि इस अधिकार का दुरुपयोग न हो।

87. (D) मानवतावादी विचारों और गांधी-टैगोर जैसे विचारकों का

भारतीय राष्ट्रवाद को समावेशी बनाने में महात्मा गांधी और रवींद्रनाथ टैगोर जैसे विचारकों के वैश्विक और मानवीय दृष्टिकोण का बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने राष्ट्रवाद को संकीर्ण धार्मिक या नृजातीय सीमाओं से ऊपर उठाकर सत्य, अहिंसा और सर्वभौमिक बंधुत्व के मूल्यों से जोड़ा। उनके विचारों ने यह सुनिश्चित किया कि भारतीय राष्ट्रवाद किसी समूह को बाहर निकालने के बजाय सभी को गले लगाने वाला बने, जिससे भारत की विविधता इसकी शक्ति बन सके।

88. (A) निजी क्षेत्र में विभिन्नताओं की अनुमति, परंतु सार्वजनिक क्षेत्र में सांस्कृतिक समरूपता।

एकीकरणवादी नीतियाँ मानती हैं कि राष्ट्रीय एकता के लिए सार्वजनिक जीवन में सभी नागरिकों को एक समान नियमों और भाषा का पालन करना चाहिए। हालाँकि, ये नीतियाँ लोगों को उनके निजी घरों में अपनी विशिष्ट भाषा बोलने या धार्मिक रीति-रिवाजों का पालन करने की छूट देती हैं। यह दृष्टिकोण सार्वजनिक समरूपता और निजी विविधता के बीच एक संतुलन बनाने का प्रयास करता है, ताकि एक साझा नागरिक पहचान विकसित हो सके और राष्ट्र मजबूत बने।

89. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

भाषाई आधार पर राज्यों के निर्माण ने भारत में अलगाववाद को रोकने में मदद की है। जब विभिन्न भाषाई समूहों को लगा कि भारतीय संघ के भीतर उनकी भाषा और संस्कृति को सम्मान और राजनीतिक स्थान मिल रहा है, तो उनकी निष्ठा देश के प्रति और बढ़ गई। इसने क्षेत्रीय गौरव को राष्ट्रीय मुख्यधारा से जोड़ने का काम किया। इस प्रकार, विविधता को स्वीकार करना ही अंततः भारत जैसे विशाल देश की एकता का सबसे बड़ा आधार सिद्ध हुआ।

90. (A) इससे उन समुदायों का अलगाव होता है जिनकी संस्कृति अमान्य की जाती है।

यदि कोई राज्य किसी समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को दबाने या उसे कमतर दिखाने का प्रयास करता है, तो वह समुदाय स्वयं को राष्ट्र से अलग महसूस करने लगता है। यह अलगाव की भावना भविष्य में बड़े विद्रोहों या संघर्षों की जड़ बन सकती है। सांस्कृतिक विविधता का दमन करना न केवल अनैतिक है, बल्कि राजनीतिक रूप से भी जोखिम भरा है क्योंकि इससे आंतरिक अशांति बढ़ती है जो राष्ट्र के विकास को बाधित करती है।

91. (A) 3, 1, 2, 4

2011 की जनगणना के आंकड़ों के अनुसार, भारत में मुसलमानों के बाद ईसाई समुदाय तीसरा सबसे बड़ा धार्मिक समूह है। इसके बाद सिख और फिर जैन समुदाय का स्थान आता है। यह क्रम भारत की धार्मिक विविधता के संख्यात्मक परिदृश्य को स्पष्ट करता है। इन समुदायों की जनसंख्या का आकार उनके सामाजिक प्रतिनिधित्व और नीति निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिससे भारत की बहुलवादी संस्कृति और उसके विभिन्न रंगों का पता चलता है।

92. (B) जहाँ नागरिक सामाजिक मुद्दों पर चर्चा कर राज्य को प्रभावित करते हैं।

नागरिक समाज सक्रिय नागरिकता का क्षेत्र है क्योंकि यहाँ लोग केवल वोट देने तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे संगठित होकर नीतिगत फैसलों पर प्रभाव डालते हैं। यहाँ होने वाली सार्वजनिक बहसें और आंदोलन सरकार को जनता की जरूरतों के प्रति जागरूक और उत्तरदायी बनाते हैं। नागरिक समाज ही वह स्थान है जहाँ आम आदमी अपनी आवाज़ बुलंद कर सकता है और लोकतंत्र को केवल चुनाव तक सीमित न रखकर एक जीवंत प्रक्रिया बनाता है।

93. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3

समाज और राजनीति की समझ के लिए इन मूल अवधारणाओं का ज्ञान आवश्यक है। प्रदत्त पहचान हमें परिवार से मिलती है, जबकि अर्जित पहचान हमारी व्यावसायिक योग्यता से बनती है। राष्ट्र समुदायों का एक ऐसा संगम है जो भावनात्मक रूप से

113. (B) समन्वयी विरासत
भक्ति और सूफ़ी आंदोलनों की परंपरा भारत की 'समन्वयी विरासत' का सबसे सुंदर उदाहरण है। कबीर जैसे संतों की वाणी ने हिंदू और मुस्लिम दोनों परंपराओं के श्रेष्ठ तत्वों को आत्मसात किया। यह विरासत सिखाती है कि विभिन्न धर्मों के लोग एक-दूसरे की मान्यताओं और संस्कृति से जुड़कर एक साझा सामाजिक और आध्यात्मिक संस्कृति का निर्माण कर सकते हैं। यह विचारधारा सांप्रदायिकता के संकीर्ण दावों को चुनौती देती है और आपसी सद्भाव व सह-अस्तित्व को मजबूती प्रदान करती है।

114. (A) समूह के प्रति एकात्मता और सुविधावंचित होने का भाव।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अल्पसंख्यक की पहचान के लिए केवल संख्या का कम होना पर्याप्त नहीं है। इसके लिए समूह के सदस्यों के भीतर एक मजबूत सामूहिक पहचान और एकता का भाव होना चाहिए। साथ ही, यह समूह बहुसंख्यक वर्ग की तुलना में सामाजिक या आर्थिक रूप से कुछ हद तक 'सुविधावंचित' या हाशिए पर होना चाहिए। ये दोनों तत्व मिलकर एक समूह को अल्पसंख्यक का दर्जा और समाज में उनकी विशिष्ट स्थिति को परिभाषित करने का कार्य करते हैं।

115. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
नागरिक समाज वह सार्वजनिक स्थान है जो परिवार, बाज़ार और राज्य के नियंत्रण से स्वतंत्र होता है। हालाँकि यह इन क्षेत्रों से बाहर है, लेकिन यह मीडिया और राजनीतिक संगठनों के माध्यम से राज्य और बाज़ार की गतिविधियों पर गहरा प्रभाव डाल सकता है। यहाँ सत्य दोनों कथन हैं, परंतु कारण अभिकथन की पूरी व्याख्या नहीं करता क्योंकि नागरिक समाज की परिभाषा केवल संगठनों की मौजूदगी तक सीमित नहीं है, बल्कि इसकी स्वतंत्र और स्वैच्छिक प्रकृति अधिक महत्वपूर्ण है।

116. (D) पक्षपात या 'तुष्टीकरण'
भारत में जब राज्य अल्पसंख्यकों को विशेष संवैधानिक सुरक्षा या अधिकार प्रदान करता है, तो आलोचक इसे अक्सर 'तुष्टीकरण' कहकर इसकी निंदा करते हैं। उनका मानना है कि ऐसे प्रावधान बहुसंख्यकों के साथ अन्याय हैं। हालाँकि, संवैधानिक विशेषज्ञों का तर्क है कि लोकतंत्र में संख्यात्मक रूप से कमजोर समूहों को बहुसंख्यकवाद के खतरों से बचाने के लिए ऐसे विशेष संरक्षण अनिवार्य हैं। यह बहस भारतीय राजनीति और धर्मनिरपेक्षता के व्यावहारिक स्वरूप को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक मानी जाती है।

117. (C) वे आकस्मिक और लगभग अनिवारणीय होती हैं।
प्रदत्त पहचानों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये व्यक्ति को जन्म से ही 'आकस्मिक' रूप से प्राप्त हो जाती हैं। चूँकि इसमें व्यक्ति की अपनी कोई पसंद नहीं होती, इसलिए ये पहचानें 'अनिवारणीय' और स्थायी होती हैं। कोई व्यक्ति अपनी जाति, नृजातीयता या जन्म के परिवार को नहीं बदल सकता। ये पहचानें जीवन भर व्यक्ति के साथ रहती हैं और समाज में उसके शुरुआती स्थान और उसके सामाजिक संबंधों के दायरे को काफी हद तक निर्धारित करती हैं।

118. (C) केवल 1, 3 and 4
राष्ट्र एक ऐसी जटिल सामूहिक पहचान है जिसे केवल एक भाषा या धर्म से परिभाषित नहीं किया जा सकता। आधुनिक युग में राज्य स्वयं को वैध बनाने के लिए राष्ट्रवाद और लोकतंत्र का सहारा लेते हैं। सोवियत संघ ने अपने भीतर विभिन्न राष्ट्रीयताओं को मान्यता दी थी, जिससे पता चलता है कि एक राज्य में कई राष्ट्र हो सकते हैं। अतः राज्य और राष्ट्र का संबंध हमेशा एक जैसा नहीं रहा है, बल्कि यह समय और राजनीति के साथ बदलता रहा है।

119. (D) एकीकरणवादी और बहुसांस्कृतिक तत्वों का मिश्रण
यदि कोई राज्य अल्पसंख्यकों को अपने निजी कानूनों के पालन की छूट देता है लेकिन सार्वजनिक जीवन में एक समान भाषा और शिक्षा थोपता है, तो वह एकीकरण और बहुसंस्कृतिवाद के बीच का रास्ता अपना रहा है। यहाँ निजी क्षेत्र में विविधता की अनुमति बहुसांस्कृतिक दृष्टिकोण है, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र में समरूपता लाना एकीकरणवादी नीति है। यह हाइब्रिड मॉडल अक्सर आधुनिक लोकतांत्रिक देशों में अलग-अलग समुदायों के बीच संतुलन और शांति बनाए रखने के लिए उपयोग किया जाता है।

120. (A) भारतीय एकता को कोई ठेस नहीं पहुँची, बल्कि वह और मजबूत हुई।
भाषाई आधार पर राज्यों के निर्माण के बाद जो आशंकाएँ जताई गई थीं, वे निर्मूल साबित हुईं। इस पुनर्गठन ने क्षेत्रीय भाषाओं और संस्कृतियों को सम्मान दिया, जिससे लोगों का भारतीय संघ के प्रति विश्वास बढ़ा। इसने क्षेत्रीय गौरव को भारतीय राष्ट्रीयता का विरोधी बनाने के बजाय उसका पूरक बना दिया। परिणामस्वरूप, विभिन्न भाषाई समूहों के समायोजन ने भारत को और अधिक लोकतांत्रिक और एकजुट बनाया, जिससे देश की आंतरिक स्थिरता को बहुत मजबूती प्राप्त हुई।

121. (C) सरकारी गुप्त अधिनियम, 1923
सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 ने औपनिवेशिक काल के पुराने 'सरकारी गुप्त अधिनियम, 1923' की कठोरता को प्रभावी ढंग से कम कर दिया है। जहाँ पुराना कानून शासन को रहस्यमयी बनाने और सूचनाएं छिपाने के लिए उपयोग किया जाता था, वहीं आर.टी.आई. ने पारदर्शिता को अनिवार्य बना दिया। अब सरकार किसी जानकारी को बिना ठोस कारण के गुप्त नहीं रख सकती। इसने सरकारी गोपनीयता की संस्कृति को बदलकर जनता के प्रति जवाबदेही की एक नई लोकतांत्रिक परंपरा स्थापित की है।

122. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारतीय इतिहास की ये महत्वपूर्ण घटनाएं समाज और राजनीति के विभिन्न पहलुओं को दर्शाती हैं। पोट्टि श्रीरामुलु का संघर्ष भाषाई राज्यों की नींव बना, जबकि आर.टी.आई. नागरिक समाज की एक बड़ी उपलब्धि है। अनुच्छेद 30 अल्पसंख्यकों को उनकी शिक्षा संस्थाएं चलाने का संवैधानिक अधिकार देता

सांस्कृतिक एकरूपता अनिवार्य नहीं है। इसके बजाय यह विभिन्न भाषाई, धार्मिक और नृजातीय समूहों के सम्मानजनक सह-अस्तित्व और उनकी विशिष्ट पहचानों को संवैधानिक संरक्षण प्रदान करता है।

162. (B) भाषाई और धार्मिक विविधताओं को समायोजित करने की नीति
स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने विविधता के प्रबंधन के लिए एक समावेशी मार्ग चुना और बलपूर्वक आत्मसात्करण की नीतियों को पूरी तरह अस्वीकार कर दिया। देश ने अपनी भाषाई, धार्मिक और जनजातीय विविधताओं को दबाने के बजाय उन्हें संवैधानिक रूप से समायोजित करने की नीति अपनाई। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य सभी समुदायों को समान अवसर प्रदान करना और उनकी विशिष्ट संस्कृतियों को फलने-फूलने के लिए सुरक्षित वातावरण देना था।

163. (C) भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन
भारत में सांस्कृतिक समायोजन की नीति का सबसे प्रभावशाली उदाहरण भाषाई आधार पर राज्यों का पुनर्गठन करना था। इस महत्वपूर्ण कदम ने विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं और उनसे जुड़ी संस्कृतियों को प्रशासनिक और राजनीतिक मान्यता प्रदान की। इसने न केवल क्षेत्रीय अस्मिताओं को सशक्त किया बल्कि विविध भाषाई समूहों की आकांक्षाओं को संतुष्ट करके भारतीय लोकतंत्र की जड़ों और राष्ट्रीय एकता को और अधिक मजबूती प्रदान की।

164. (D) विभिन्न पहचानों को सम्मान देकर राष्ट्रीय एकता को मजबूत किया जा सकता है
भारतीय मॉडल इस गहन विश्वास पर टिका है कि राष्ट्रीय एकता सांस्कृतिक समरुपता थोपने से नहीं बल्कि विविधता के सम्मान से प्राप्त होती है। यह दृष्टिकोण मानता है कि जब विभिन्न पहचानों को स्वायत्तता और सुरक्षा प्रदान की जाती है तो नागरिकों का राष्ट्र के प्रति लगाव और बढ़ता है। विभिन्न समूहों के बीच परस्पर विश्वास और सम्मान ही एक बहुलवादी समाज में एकता का वास्तविक और स्थायी आधार है।

165. (A) संविधान द्वारा अल्पसंख्यक अधिकार सुरक्षित करने और स्वायत्तता प्रदान करने से
'विविधता में एकता' का सिद्धांत भारत में संवैधानिक प्रावधानों के माध्यम से व्यावहारिक रूप में लागू किया गया है। संविधान अल्पसंख्यकों को उनके सांस्कृतिक और शैक्षिक अधिकारों की गारंटी देता है और उन्हें अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखने की स्वायत्तता प्रदान करता है। यह संस्थागत ढांचा सुनिश्चित करता है कि बहुलतावाद केवल एक नारा न रहकर नागरिकों के दैनिक जीवन और राज्य की कार्यप्रणाली का हिस्सा बने।

166. (B) पश्चिमी मॉडल राज्य और धर्म के पूर्ण पृथक्करण पर जोर देता है, जबकि भारतीय मॉडल नहीं
पश्चिमी और भारतीय धर्मनिरपेक्षता के बीच मूलभूत अंतर राज्य और धर्म के आपसी संबंधों की प्रकृति में निहित है। पश्चिमी मॉडल, विशेष रूप से यूरोपीय देशों में, चर्च और राज्य के बीच पूर्ण और स्पष्ट पृथक्करण की वकालत करता है जहाँ धर्म व्यक्तिगत मामला है। इसके विपरीत, भारतीय मॉडल राज्य और धर्म के बीच पूर्ण अलगाव के बजाय एक संतुलित और सैद्धांतिक जुड़ाव का समर्थन करता है।

167. (B) सर्वधर्म समभाव (सभी धर्मों के प्रति समान सम्मान)
भारतीय संदर्भ में धर्मनिरपेक्षता को 'सर्वधर्म समभाव' के प्राचीन और समावेशी आदर्श के रूप में परिभाषित किया जाता है। इसका अर्थ यह है कि राज्य किसी एक धर्म को आधिकारिक दर्जा नहीं देता है बल्कि सभी धार्मिक परंपराओं को समान सम्मान और सुरक्षा प्रदान करता है। यह अवधारणा धर्म के प्रति उदासीनता या विरोध के बजाय सभी आस्थाओं के प्रति एक सकारात्मक और न्यायपूर्ण दृष्टिकोण अपनाने पर जोर देती है।

168. (A) राज्य सभी धर्मों के साथ समानता और न्याय के आधार पर संबंध बनाता है
भारतीय धर्मनिरपेक्षता में 'सैद्धांतिक दूरी' का तात्पर्य है कि राज्य सभी धर्मों के साथ समानता और न्याय के मूल्यों पर आधारित संबंध विकसित करता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि राज्य धर्म से पूरी तरह कटा हुआ है बल्कि यह आवश्यकतानुसार हस्तक्षेप या समर्थन कर सकता है। राज्य सभी धार्मिक समुदायों के प्रति निष्पक्ष रहते हुए सार्वजनिक हित और संवैधानिक मर्यादाओं के अनुसार अपनी भूमिका निभाता है।

169. (C) सामाजिक सुधार के लिए अस्पृश्यता का उन्मूलन
भारतीय धर्मनिरपेक्षता एक सक्रिय अवधारणा है जो सामाजिक बुराइयों को दूर करने के लिए धार्मिक मामलों में सकारात्मक हस्तक्षेप की अनुमति देती है। अस्पृश्यता का उन्मूलन इस हस्तक्षेप का एक प्रमुख उदाहरण है जहाँ राज्य ने मानवीय गरिमा और समानता के संवैधानिक मूल्यों को स्थापित करने के लिए धार्मिक आधार वाली भेदभावपूर्ण प्रथा को समाप्त किया। यह दर्शाता है कि राज्य धर्म का सम्मान करते हुए भी सुधार हेतु प्रतिबद्ध है।

170. (D) अंतर-धार्मिक समानता और सहिष्णुता को बढ़ावा देना
भारतीय धर्मनिरपेक्षता का अंतिम और व्यापक लक्ष्य एक ऐसा समाज निर्मित करना है जहाँ विभिन्न धर्मों के बीच पूर्ण समानता और आपसी सहिष्णुता बनी रहे। यह मॉडल केवल कानूनी अलगाव पर ध्यान नहीं देता बल्कि सकारात्मक रूप से एक बहुलवादी संस्कृति को पोषित करने का प्रयास करता है। इसका मुख्य उद्देश्य धार्मिक विविधता को सुरक्षित रखते हुए सामाजिक सद्भाव और राष्ट्रीय एकता के आदर्शों को प्राप्त करना है।

171. (C) राजनीतिक लामबंदी के लिए धर्म का उपयोग करने वाली एक विचारधारा
सांप्रदायिकता मूल रूप से एक आक्रामक राजनीतिक विचारधारा है जो सत्ता प्राप्त करने के लिए धर्म को एक प्रभावी उपकरण के रूप में उपयोग करती है। यह व्यक्तिगत धार्मिक आस्था या आध्यात्मिकता से पूरी तरह अलग है क्योंकि इसका मुख्य सरोकार धार्मिक मूल्यों से नहीं बल्कि सामूहिक राजनीतिक शक्ति से होता है। सांप्रदायिकता धर्म का सहारा

132. (D) भाषण की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध
एक सत्तावादी राज्य की सबसे बड़ी पहचान यह है कि वह नागरिकों की अभिव्यक्ति की आजादी और भाषण की स्वतंत्रता पर कड़े प्रतिबंध लगा देता है। ऐसे शासन में सरकार की आलोचना करना अपराध माना जा सकता है। सत्तावादी राज्य में लोगों के पास अपनी आवाज़ उठाने या शांतिपूर्ण विरोध करने का कोई कानूनी अधिकार नहीं होता। यहाँ सत्ता केवल बल और नियंत्रण के माध्यम से अपनी बात थोपती है, जिससे नागरिक स्वतंत्रताओं का पूरी तरह से दमन हो जाता है जो लोकतंत्र के विपरीत है।

133. (C) घृणा करना और महत्वाकांक्षाओं का पोषण करना
रवींद्रनाथ टैगोर का मानना था कि पश्चिमी प्रकार का आक्रामक राष्ट्रवाद बच्चों में दूसरे देशों और संस्कृतियों के प्रति घृणा और अपनी संकीर्ण महत्वाकांक्षाओं को पालना सिखाता है। वे ऐसे राष्ट्रवाद के कट्टर विरोधी थे जो मानवता को बांटता हो। टैगोर ने एक ऐसे विश्व की कल्पना की थी जहाँ ज्ञान और प्रेम की कोई सीमा न हो। उनके अनुसार, राष्ट्रवाद जब अंधा हो जाता है, तो वह शांति और वैश्विक भाईचारे के लिए सबसे बड़ा खतरा बन जाता है।

134. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
भारतीय इतिहास के ये वर्ष महत्वपूर्ण परिवर्तनों के गवाह रहे हैं। 1956 में भाषाई राज्यों का गठन हुआ, जिसने देश को नया प्रशासनिक स्वरुप दिया। 1971 में पाकिस्तान का विभाजन होकर बांग्लादेश बना, जिसने दक्षिण एशिया की राजनीति बदल दी। सन् 2000 में झारखंड जैसे नए राज्यों का निर्माण हुआ जो क्षेत्रीय आकांक्षाओं का प्रतीक था। अंततः 2005 में आर.टी.आई. कानून लागू हुआ, जिसने भारतीय नागरिकों को सरकारी सूचनाओं तक पहुँच प्रदान कर लोकतंत्र को और अधिक पारदर्शी बना दिया।

135. (D) और भी जटिल हो जाती है
समाज में जब सांस्कृतिक भिन्नताओं के साथ आर्थिक अभाव और सामाजिक असमानता भी जुड़ जाती है, तो स्थिति अत्यंत विस्फोटक और जटिल हो जाती है। ऐसी स्थिति में लोग अपनी गरीबी और पिछड़ेपन का दोष अपनी सांस्कृतिक पहचान के अपमान से जोड़कर देखने लगते हैं। इससे समुदायों के बीच अविश्वास की खाई और गहरी हो जाती है और छोटे-छोटे विवाद भी बड़े हिंसक संघर्षों का रूप ले सकते हैं। इन बहुआयामी समस्याओं का समाधान केवल आर्थिक विकास या केवल सांस्कृतिक पहचान से नहीं हो सकता।

136. (A) सुदृढ़ और लोकतंत्रात्मक राष्ट्र निर्माण सुनिश्चित करना।
भारतीय संविधान निर्माताओं ने अल्पसंख्यकों को विशेष अधिकार इसलिए दिए ताकि एक न्यायपूर्ण और समावेशी राष्ट्र का निर्माण हो सके। उनका मानना था कि जब तक अल्पसंख्यक वर्ग सुरक्षित महसूस नहीं करेगा, तब तक देश की एकता और लोकतंत्र मजबूत नहीं हो सकते। इन अधिकारों का उद्देश्य किसी समूह का पक्ष लेना नहीं, बल्कि बहुसंख्यक समाज के संभावित वर्चस्व से कमजोर समूहों की संस्कृति और हितों की रक्षा करना था, जिससे एक स्थिर और सुदृढ़ भारतीय राष्ट्र का विकास संभव हो सके।

137. (B) केवल 3, 4 and 5
नागरिक समाज सरकारी नियंत्रण से मुक्त होता है और इसका उद्देश्य मुनाफा कमाना नहीं होता। यह समाज का वह जागरूक क्षेत्र है जो राज्य के कार्यों पर नजर रखता है और अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाता है। सूचना के अधिकार के लिए चला आंदोलन इसकी सफलता का बड़ा प्रमाण है। यह परिवार के निजी दायरे से बाहर स्वतंत्र संगठनों और आंदोलनों का क्षेत्र है जहाँ नागरिक अपनी स्वेच्छा से लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को मजबूत करने के लिए संगठित होकर सक्रिय रूप से कार्य करते हैं।

138. (A) यह सांस्कृतिक विविधता के शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को मान्यता देता है।
'राज्य-राष्ट्र' का मॉडल पारंपरिक 'राष्ट्र-राज्य' से अलग है क्योंकि यह एक समरुप पहचान थोपने के बजाय सांस्कृतिक विविधता को स्वीकार करता है। जहाँ राष्ट्र-राज्य 'एक राष्ट्र, एक भाषा' पर बल देता है, वहीं राज्य-राष्ट्र मानता है कि एक ही राज्य के भीतर कई अलग-अलग सांस्कृतिक और भाषाई समूह अपनी विशिष्टताओं के साथ गौरव से रह सकते हैं। यह मॉडल विविधता को कमजोरी नहीं बल्कि शक्ति मानता है और लोकतांत्रिक माध्यमों से विभिन्न समुदायों के बीच सार्थक सामंजस्य और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व स्थापित करता है।

139. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में कुछ धार्मिक अल्पसंख्यक समुदाय जैसे सिख और पारसी आर्थिक रूप से काफी संपन्न रहे हैं और व्यापार, उद्योग तथा शिक्षा में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा है। फिर भी उनकी जनसंख्या कम होने के कारण वे सांस्कृतिक रूप से बहुसंख्यक समाज की तुलना में सुविधावंचित महसूस कर सकते हैं। इसलिए आर्थिक समृद्धि होने के बावजूद सांस्कृतिक अल्पसंख्यकता की स्थिति बनी रहती है, जिससे कारण अभिकथन की सही व्याख्या करता है।

140. (B) अल्पसंख्यक समुदायों का अलगाव एवं उनकी पहचान का सुदृढ़ीकरण।
जब राज्य किसी विशिष्ट संस्कृति को दबाने या उसे जबरन मिटाने की कोशिश करता है, तो उस समुदाय के भीतर अपनी पहचान को लेकर जिद और बढ़ जाती है। इससे समुदाय के सदस्य स्वयं को राष्ट्र की मुख्यधारा से अलग महसूस करने लगते हैं, जिससे अलगाववाद को बढ़ावा मिलता है। दमनकारी नीतियाँ अक्सर संघर्षों को जन्म देती हैं क्योंकि कोई भी समूह अपनी मूल पहचान और संस्कृति को इतनी आसानी से छोड़ने के लिए तैयार नहीं होता है, जिससे अशांति बढ़ती है।

141. (C) दूसरा
वर्ष 2011 की जनगणना के समय, भारत जनसंख्या के मामले में विश्व में दूसरे स्थान पर था। इतनी विशाल आबादी भारत के लिए एक बड़ी चुनौती भी है और एक अवसर भी। जनसंख्या

भी शामिल है। अल्पसंख्यक वर्ग अक्सर समाज में भेदभाव का सामना करता है, जिससे उनके सदस्यों में एक मजबूत एकजुटता और साझा पहचान विकसित होती है। यह सामूहिकता उन्हें बहुसंख्यक समाज के संभावित दबाव के विरुद्ध सुरक्षा प्रदान करती है। अतः अल्पसंख्यक की अवधारणा सामाजिक शक्ति संतुलन और समूह की मनोवैज्ञानिक एकता से गहराई से जुड़ी हुई है।

104. (A) प्रतिसंवेदी नीतियों द्वारा सांस्कृतिक विविधता के साथ राष्ट्र निर्माण संभव है।
संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की 2004 की रिपोर्ट इस बात पर जोर देती है कि सांस्कृतिक विविधता राष्ट्र निर्माण में बाधा नहीं है, बशर्ते राज्य संवेदनशील नीतियां अपनाए। रिपोर्ट के अनुसार, यदि राज्य अलग-अलग पहचानों को मान्यता देता है और उनके अधिकारों की रक्षा करता है, तो लोग अधिक एकजुट महसूस करते हैं। यह विचार इस पुराने डर को खारिज करता है कि विविधता से देश टूट जाते हैं, और समावेशी लोकतंत्र को विकास की कुंजी बताता है।

105. (C) कि एक राष्ट्र को अस्तित्व प्रदान करने वाले लोग विभिन्न राज्यों के नागरिक या निवासी हो सकते हैं।
जमैका का उदाहरण यह सिद्ध करता है कि एक राष्ट्र केवल एक भौगोलिक सीमा या एक ही राज्य के भीतर सीमित नहीं होता। जब किसी राष्ट्र के बहुत से लोग विदेशों में रहते हैं, तब भी उनकी सांस्कृतिक और भावनात्मक पहचान अपने मूल राष्ट्र से जुड़ी रहती है। यह 'प्रवासी' समुदाय अपने राष्ट्र की अस्मिता को वैश्विक स्तर पर फैलाता है। इससे स्पष्ट होता है कि राष्ट्र एक मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक जुड़ाव है जो नागरिकता की कानूनी सीमाओं को पार कर सकता है।

106. (A) 2, 4, 1, 3
आंध्र प्रदेश के गठन का इतिहास एक महत्वपूर्ण अनुक्रम में चला। सबसे पहले पोट्टि श्रीरामुलु का बलिदान हुआ, जिसके तुरंत बाद दबाव में आंध्र प्रदेश राज्य का गठन किया गया। इस घटना के बाद ही सरकार ने पूरे देश के लिए राज्य पुनर्गठन आयोग की स्थापना की। अंत में, 1956 में इस आयोग की रिपोर्ट के आधार पर राज्यों का व्यापक भाषाई पुनर्गठन किया गया। यह क्रम दिखाता है कि कैसे जन-दबाव ने संवैधानिक और प्रशासनिक परिवर्तनों का मार्ग प्रशस्त किया।

107. (D) एक वाणिज्यिक निगम (जैसे रिलायंस इंडस्ट्रीज)
नागरिक समाज में वे संगठन आते हैं जो गैर-राजकीय और गैर-व्यावसायिक होते हैं। रिलायंस जैसी कंपनियाँ बाज़ार का हिस्सा हैं और उनका मुख्य उद्देश्य आर्थिक लाभ कमाना है। इसके विपरीत, नागरिक समाज के संगठन जैसे एनजीओ या मजदूर संघ, सामाजिक भलाई और जनहित के लिए स्वेच्छा से कार्य करते हैं। नागरिक समाज का अस्तित्व बाज़ार के आर्थिक हितों और राज्य की शक्ति के बीच एक स्वतंत्र स्थान के रूप में होता है जहाँ सार्वजनिक विमर्श संभव है।

108. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विशिष्ट धार्मिक समूहों का संकेंद्रण देखा जा सकता है। जम्मू और कश्मीर मुस्लिम बहुसंख्यक है, जबकि पंजाब सिख बहुसंख्यक राज्य है। पूर्वोत्तर के राज्य जैसे नागालैंड और मिजोरम ईसाई बहुसंख्यक हैं। इसी तरह, महाराष्ट्र और गुजरात जैसे शहरीकृत और व्यापारिक राज्यों में जैन समुदाय का एक महत्वपूर्ण अनुपात पाया जाता है। यह विविधता भारत के सामाजिक ताने-बाने को समृद्ध बनाती है और प्रत्येक क्षेत्र को एक विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान प्रदान करती है।

109. (C) केवल केंद्र (संसद) को
भारतीय संविधान में शक्तियों का बँटवारा तीन सूचियों के माध्यम से किया गया है। यदि कोई नया विषय उभरता है जो इन तीनों सूचियों में शामिल नहीं है, तो उस पर कानून बनाने का विशेष अधिकार 'अवशिष्ट शक्तियों' के तहत केवल केंद्र सरकार यानी संसद को प्राप्त है। यह व्यवस्था भारत के संघीय ढांचे को मजबूत बनाती है और सुनिश्चित करती है कि राष्ट्रीय महत्व के अनपेक्षित मुद्दों पर केंद्र का निर्णय ही सर्वोपरि और अंतिम रूप से प्रभावी रहे।

110. (D) समाज के बहुल एवं विविध स्वरूप को
'विविधता में अनेकता' भारतीय समाज की वह अनूठी विशेषता है जहाँ अलग-अलग भाषाओं, धर्मों और जातियों के लोग एक साझा राष्ट्रीय पहचान के अंतर्गत शांति से रहते हैं। यह मुहावरा स्पष्ट करता है कि भारत का समाज समरुप नहीं है, बल्कि यह अनेक संस्कृतियों का एक सुंदर गुलदस्ता है। यहाँ विभिन्नताएं कमजोरी नहीं बल्कि शक्ति हैं, जो देश को एक बहुलवादी और जीवंत लोकतंत्र बनाती हैं जहाँ हर समूह का अपना विशेष महत्व और स्थान है।

111. (A) सांप्रदायिकता
सांप्रदायिकता एक आक्रामक राजनीतिक विचारधारा है जो धर्म का उपयोग सत्ता और शक्ति प्राप्त करने के लिए करती है। यह विचारधारा यह दावा करती है कि एक धर्म के अनुयायियों के हित दूसरे धर्म के लोगों से पूरी तरह अलग और अक्सर शत्रुतापूर्ण होते हैं। यह समाज में विभाजन और अविश्वास की भावना पैदा करती है। सांप्रदायिकता अक्सर धार्मिक पहचान को उग्र बनाकर सामाजिक सद्भाव को बिगाड़ने का काम करती है, जो किसी भी लोकतंत्र के लिए एक बड़ी चुनौती है।

112. (B) केवल 3
भारत का इतिहास भक्ति और सूफ़ी जैसे समन्वयवादी आंदोलनों से समृद्ध रहा है, जिन्होंने धर्मों के बीच प्रेम और भाईचारे का संदेश दिया। सांप्रदायिकता धर्म से अधिक राजनीति से जुड़ी है, और अक्सर कम धार्मिक लोग भी सांप्रदायिक राजनीति में सक्रिय हो सकते हैं। यह विचारधारा झूठा दावा करती है कि एक धर्म के सभी लोगों के हित एक समान हैं। औपनिवेशिक शासकों ने भी सांप्रदायिक दंगे भड़काने के लिए 'फूट डालो और राज करो' की नीति का सक्रिय सहारा लिया था।

151. (B) जन्म और संबंधितता की भावना
सामुदायिक पहचान व्यक्ति के अस्तित्व का एक अत्यंत मौलिक आयाम है जो मुख्य रूप से जन्म की परिस्थितियों और संबंधितता की गहरी भावना पर आधारित होती है। यह पहचान किसी व्यक्ति की व्यक्तिगत उपलब्धियों या अर्जित योग्यताओं का परिणाम नहीं होती है। इसके बजाय यह एक प्रदत्त स्थिति है जो जन्म के साथ ही व्यक्ति को एक विशिष्ट सामाजिक और सांस्कृतिक विश्व प्रदान करती है।

152. (A) मनोवैज्ञानिक सुरक्षा और सामाजिक अवलंब
सामुदायिक पहचान व्यक्ति के भीतर 'हम' की एक अत्यंत प्रबल भावना का निर्माण करती है जो उसे सामाजिक जीवन में स्थिरता प्रदान करती है। यह पहचान व्यक्ति को आवश्यक मनोवैज्ञानिक सुरक्षा और सामाजिक अवलंब सुनिश्चित करती है। इसी के माध्यम से व्यक्ति अपने आरंभिक मूल्यों और व्यवहार के प्रतिमानों को सीखता है जो उसके संपूर्ण जीवन के आत्म-बोध और सार्थकता का एक अनिवार्य आधार बन जाते हैं।

153. (C) क्योंकि यह व्यक्तिगत चयन या प्रयास पर आधारित नहीं होती
समाजशास्त्र में सामुदायिक पहचान को एक प्रदत्त स्थिति माना जाता है क्योंकि इसे प्राप्त करने में व्यक्ति की अपनी कोई सक्रिय भूमिका नहीं होती है। मनुष्य अपनी जाति, धर्म, भाषा या परिवार को अपनी इच्छा या व्यक्तिगत प्रयास से नहीं चुनता है। ये पहचानें उसे जन्म से ही स्वतः प्राप्त हो जाती हैं और उसके जीवन की सबसे शक्तिशाली और निर्धारक सामाजिक विशेषताएँ बन जाती हैं।

154. (D) क्योंकि यह व्यक्ति के आत्म-बोध और अस्तित्व से जुड़ी है
सामुदायिक पहचान किसी भी व्यक्ति के आत्म-बोध और उसके अस्तित्व की निरंतरता का एक अभिन्न अंग होती है। जब इस पहचान पर कोई वास्तविक या कल्पित खतरा आता है तो व्यक्ति इसे अपने स्वयं के अस्तित्व पर संकट के रूप में देखता है। यही कारण है कि लोग अपनी सामुदायिक पहचान की रक्षा के लिए अत्यंत तीव्र भावनात्मक प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं और बड़े बलिदान हेतु तत्पर रहते हैं।

155. (C) जिन पहचानों को व्यक्ति चुनता नहीं, वे ही सबसे शक्तिशाली हैं
सामाजिक जीवन की प्रमुख विडंबना यह है कि जिन पहचानों को चुनने में व्यक्ति का कोई योगदान नहीं होता वे ही उसके जीवन को सर्वाधिक प्रभावित करती हैं। जन्म से प्राप्त ये प्रदत्त पहचानें व्यक्ति की अर्जित उपलब्धियों की तुलना में कहीं अधिक शक्तिशाली और निर्धारक होती हैं। ये पहचानें न केवल सामाजिक संहति का आधार बनती हैं बल्कि अक्सर गंभीर सामाजिक संघर्षों का मुख्य स्रोत भी होती हैं।

156. (B) प्रशासनिक सुविधा और राजनीतिक स्थिरता प्राप्त करना
आधुनिक राष्ट्र-राज्यों ने सांस्कृतिक समरुपता को बढ़ावा देने के पीछे यह तर्क दिया कि एक साझा भाषा और संस्कृति शासन को सरल बनाती है। सांस्कृतिक एकरुपता के माध्यम से राज्यों का लक्ष्य प्रशासनिक सुविधा और दीर्घकालिक राजनीतिक स्थिरता प्राप्त करना था। उनका मानना था कि एक समान नागरिक समाज में 'हम-भावना' अधिक सुदृढ़ होती है जिससे राष्ट्र की एकता और अखंडता को बनाए रखना आसान होता है।

157. (D) अल्पसंख्यक समूहों को प्रभावशाली संस्कृति अपनाने हेतु प्रेरित करना
आत्मसात्करण की नीतियों का प्राथमिक उद्देश्य समाज में व्याप्त सांस्कृतिक विविधता को समाप्त करके एक समरुप राष्ट्रीय पहचान विकसित करना था। ये नीतियाँ अल्पसंख्यक समूहों को उनकी अपनी विशिष्ट भाषाई और धार्मिक पहचान त्यागने के लिए प्रोत्साहित या बाध्य करती थीं। इसका अंतिम लक्ष्य इन समूहों को प्रभावशाली बहुसंख्यक समुदाय की संस्कृति में पूरी तरह विलीन करना था ताकि राष्ट्र के भीतर कोई भिन्न सांस्कृतिक अस्तित्व न रहे।

158. (A) बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन
राष्ट्र-राज्यों ने सांस्कृतिक एकरुपता प्राप्त करने के लिए मानकीकृत शिक्षा प्रणालियों, एक राष्ट्रभाषा के प्रचार और राष्ट्रीय प्रतीकों के निर्माण जैसे प्रभावी उपकरणों का उपयोग किया था। इसके विपरीत, बहुभाषी शिक्षा को प्रोत्साहन देना सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करने का एक तरीका है जो समरुपीकरण के मूल लक्ष्यों के विरुद्ध जाता है। इसलिए आत्मसात्करण की प्रक्रिया में बहुभाषी शिक्षा को कभी भी बढ़ावा नहीं दिया गया था।

159. (C) उन्हें अक्सर बहिष्करण और हाशिए पर जाने का सामना करना पड़ा
सांस्कृतिक समरुपीकरण की प्रक्रिया ने विविधता को एक समस्या के रुप में देखा जिसके कारण अल्पसंख्यक समूहों के अधिकारों का हनन हुआ। इन समूहों को अपनी पहचान बनाए रखने के प्रयासों के बदले अक्सर सामाजिक और राजनीतिक बहिष्करण का सामना करना पड़ा। इस प्रक्रिया ने अल्पसंख्यकों को समाज के हाशिए पर धकेल दिया और प्रभावशाली एवं अधीनस्थ समूहों के बीच गहरी असमानता और असंतोष को जन्म दिया।

160. (A) प्रभावशाली and अधीनस्थ समूहों के बीच तनाव और संघर्ष को
आत्मसात्करण की कठोर नीतियों ने अक्सर समाज के विभिन्न वर्गों के बीच अविश्वास और शत्रुता की भावना पैदा की। जब राज्य ने जबरन एक संस्कृति थोपने का प्रयास किया तो इससे प्रभावशाली और अधीनस्थ समूहों के बीच गंभीर तनाव और संघर्ष उत्पन्न हुए। ये नीतियाँ विविधता को समायोजित करने में विफल रहीं जिसके परिणामस्वरुप सामाजिक समरसता के स्थान पर राष्ट्र के भीतर विभिन्न समुदायों में टकराव हुआ।

161. (D) क्योंकि यह संवैधानिक ढांचे में विविध पहचानों के सह-अस्तित्व को स्वीकारता है
भारतीय 'राज्य-राष्ट्र' मॉडल अपनी विशिष्टता के कारण यूरोपीय मॉडल से भिन्न है क्योंकि यह एक ही राजनीतिक ढांचे के भीतर अनेक सांस्कृतिक पहचानों को मान्यता देता है। यह मॉडल इस विचार पर आधारित है कि एक मजबूत राज्य के लिए

है। वहीं, सांप्रदायिकता वह नकारात्मक प्रवृत्ति है जो धर्म को आक्रामक राजनीति का रूप देती है। ये सभी तत्व मिलकर भारतीय लोकतंत्र के विकास और इसकी चुनौतियों की एक समग्र तस्वीर पेश करते हैं।

123. (D) समाजीकरण की प्रक्रिया और समुदाय
समाज में "मैं कौन हूँ?" का उत्तर पाने में समाजीकरण की प्रक्रिया और हमारा समुदाय सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जन्म के साथ ही समुदाय हमें एक भाषा, सांस्कृतिक मूल्य और सामाजिक स्थान प्रदान करता है। परिवार और समाज के साथ अंतःक्रिया के माध्यम से हम अपनी पहचान को समझते और विकसित करते हैं। यह पहचान केवल व्यक्तिगत प्रयास नहीं है, बल्कि यह उन सामाजिक और सामुदायिक संबंधों का परिणाम है जो हमें बचपन से ही घेरे रहते हैं।

124. (B) क्योंकि उस समुदाय की सदस्यता आकस्मिक और शर्त रहित होती है।
किसी समुदाय के प्रति हमारा गहरा भावनात्मक लगाव इसलिए होता है क्योंकि इसकी सदस्यता हमें जन्म से ही 'बिना किसी शर्त' के प्राप्त हो जाती है। हमें इस पहचान को हासिल करने के लिए अपनी योग्यता साबित करने की आवश्यकता नहीं होती। यह 'घर' जैसा अहसास देता है जहाँ हमें बिना किसी भेदभाव के स्वीकार किया जाता है। यही शर्त रहित और स्थायी जुड़ाव समुदाय को व्यक्ति के जीवन में एक अत्यंत सुरक्षित और भावनात्मक आधार प्रदान करता है।

125. (C) सांस्कृतिक विविधता हमेशा सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देती है।
यह कहना गलत है कि सांस्कृतिक विविधता हमेशा सामाजिक सद्भाव ही बढ़ाती है। यद्यपि विविधता समाज को समृद्ध करती है, लेकिन यदि इसे ठीक से प्रबंधित न किया जाए, तो यह गंभीर संघर्षों और अविश्वास का कारण भी बन सकती है। सांस्कृतिक अंतर जब आर्थिक और राजनीतिक असमानताओं के साथ जुड़ जाते हैं, तो वे समाज में तनाव और विभाजन पैदा कर सकते हैं। इसलिए, विविधता की उपस्थिति ही काफी नहीं है, बल्कि इसके लिए समावेशी और न्यायपूर्ण नीतियों का होना अनिवार्य है।

126. (D) 28 राज्य और 8 संघ राज्यक्षेत्र
भारत की वर्तमान प्रशासनिक व्यवस्था के अनुसार देश में कुल 28 राज्य और 8 केंद्र शासित प्रदेश या संघ राज्यक्षेत्र हैं। यह ढांचा समय-समय पर हुए भाषाई, क्षेत्रीय और राजनीतिक पुनर्गठन का परिणाम है। राज्यों के पास अपनी निर्वाचित सरकारें होती हैं, जबकि संघ राज्यक्षेत्रों का प्रशासन मुख्य रूप से केंद्र सरकार द्वारा संचालित होता है। यह विभाजन भारत की विशाल भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता को प्रभावी ढंग से प्रबंधित करने और शासन को सुचारू बनाने के लिए किया गया है।

127. (A) 2, 4, 1, 3
भारतीय समाज के विकास का क्रम भक्ति आंदोलनों की समन्वयवादी परंपरा से शुरु हुआ। इसके बाद, आजादी के आंदोलन के दौरान कांग्रेस ने भाषाई राज्यों का वादा किया। आजादी के बाद प्रेसीडेंसी व्यवस्था को बदलकर भाषाई राज्यों का निर्माण किया गया, जो भारतीय लोकतंत्र का एक बड़ा मोड़ था। हाल के वर्षों में सूचना के अधिकार जैसे कानूनों ने शासन में पारदर्शिता लाकर इस विकास यात्रा को और अधिक आधुनिक और नागरिक-केंद्रित बना दिया है, जिससे लोकतंत्र की जड़ें और गहरी हुई हैं।

128. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारतीय धर्मनिरपेक्षता पश्चिमी मॉडल से इस मायने में अलग है कि यह धर्म और राज्य के बीच पूर्ण अलगाव के बजाय सभी धर्मों को समान सम्मान देने पर जोर देती है। जहाँ पश्चिम में राज्य धर्म से पूरी तरह तटस्थ रहता है, वहीं भारत में राज्य अल्पसंख्यकों को उनके धर्म और संस्कृति के संरक्षण के लिए विशेष सहायता और अधिकार प्रदान कर सकता है। यह 'सर्व धर्म समभाव' का दृष्टिकोण भारत की जटिल और विविध धार्मिक वास्तविकताओं के अनुकूल है।

129. (B) राजनीतिक-विधिक संस्थाओं का समुच्चय
'राज्य' एक राजनीतिक और विधिक ढांचा है जिसमें सरकार, सेना, पुलिस और न्यायपालिका जैसी संस्थाएँ शामिल होती हैं। इसके विपरीत, 'राष्ट्र' एक मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक भावना है जो साझा पहचान पर आधारित होती है। राज्य के पास कानून बनाने और बल प्रयोग करने की औपचारिक शक्ति होती है, जबकि राष्ट्र लोगों के बीच के गहरे भावनात्मक जुड़ाव का नाम है। अतः संस्थागत और विधिक संरचना राज्य की अनिवार्य विशेषता है, जो इसे केवल एक सांस्कृतिक समुदाय यानी राष्ट्र से अलग बनाती है।

130. (A) निजी क्षेत्र में
एकीकरणवादी नीतियाँ यह अपेक्षा करती हैं कि सार्वजनिक जीवन, जैसे दफ्तर, स्कूल और सरकारी संस्थानों में सभी लोग एक समान राष्ट्रीय मानकों और पहचान का पालन करें। हालाँकि, ये नीतियाँ लोगों को उनके निजी जीवन और घरों में अपनी सांस्कृतिक विशिष्टता, भाषा या धार्मिक रीति-रिवाजों को बनाए रखने की पूर्ण स्वतंत्रता देती हैं। इस प्रकार, निजी क्षेत्र में विविधता की अनुमति दी जाती है, जबकि सार्वजनिक क्षेत्र में एक साझा और समरुप नागरिक पहचान विकसित करने का लक्ष्य रखा जाता है।

131. (B) केवल 2 and 4
भारतीय संघवाद एक ऐसा लचीला ढांचा है जो क्षेत्रीय भावनाओं को समायोजित कर देश की एकता बनाए रखता है। यह सच है कि सन् 2000 में बने तीन नए राज्यों—झारखंड, छत्तीसगढ़ और उत्तराखंड—के गठन में भाषा नहीं, बल्कि जनजातीय पहचान और क्षेत्रीय पिछड़ेपन की समस्या मुख्य कारक थी। इन राज्यों का निर्माण यह दर्शाता है कि भारत में राज्यों के पुनर्गठन की मांग केवल भाषाई नहीं होती, बल्कि प्रशासनिक न्याय और आर्थिक वंचन भी इसके बड़े आधार हो सकते हैं।

लेकर लोगों को एक विशिष्ट राजनीतिक एजेंडे के इर्द-गिर्द संगठित करने का प्रयास करती है।

172. (B) एक धर्म के लोगों के राजनीतिक हित समान होते हैं और वे अन्य धर्मों के विरोधी होते हैं
सांप्रदायिकता इस बुनियादी विश्वास पर आधारित है कि एक ही धर्म के सभी अनुयायियों के सामाजिक और राजनीतिक हित एक समान होते हैं। यह विचारधारा यह भी मानती है कि ये सामूहिक हित अनिवार्य रूप से अन्य धार्मिक समुदायों के हितों के विपरीत और उनके प्रति प्रतिस्पर्धी होते हैं। यह संकीर्ण सोच समाज को विभिन्न धार्मिक गुटों में बाँटकर उनके बीच स्थायी राजनीतिक और सामाजिक विभाजन पैदा करती है।

173. (D) अपने समुदाय का महिमामंडन और दूसरों को शत्रु के रूप में चित्रित करके
सांप्रदायिक सोच इतिहास को एक पक्षपाती और विकृत दृष्टिकोण से देखती है जिसमें केवल अपने धार्मिक समुदाय की उपलब्धियों का अनुचित महिमामंडन किया जाता है। साथ ही यह इतिहास के चुनिंदा प्रसंगों का उपयोग अन्य समुदायों को शत्रु, विदेशी या 'अन्य' के रूप में चित्रित करने के लिए करती है। ऐसी व्याख्या का उद्देश्य वर्तमान में नफरत फैलाना और अपने समुदाय के भीतर एक कृत्रिम एकता पैदा करना होता है।

174. (A) यह 'हम' बनाम 'वे' की भावना को बढ़ावा देकर सामाजिक ध्रुवीकरण पैदा करती है
सांप्रदायिकता समाज के ताने-बाने को 'हम' बनाम 'वे' की विनाशकारी भावना को बढ़ावा देकर अत्यंत कमजोर कर देती है। यह विचारधारा विभिन्न समुदायों के बीच अविश्वास और शत्रुता पैदा करके व्यापक सामाजिक ध्रुवीकरण को जन्म देती है। इसके परिणामस्वरूप सामाजिक सद्भाव और परस्पर सहयोग का स्थान निरंतर चलने वाली प्रतिस्पर्धा और संघर्ष ले लेते हैं जिससे अंततः राष्ट्र की एकता और शांति को भारी क्षति पहुँचती है।

175. (C) धार्मिक समुदाय को राजनीतिक इकाई के रूप में संगठित कर सत्ता हासिल करना
सांप्रदायिकता का अंतिम और प्राथमिक लक्ष्य किसी विशिष्ट धार्मिक समुदाय को एक संगठित राजनीतिक इकाई में परिवर्तित करना है। इस सामूहिक पहचान का उपयोग राजनीतिक सत्ता हथियाने और अपने संकीर्ण हितों को साधने के लिए किया जाता है। यह विचारधारा विविधता और बहुलवाद को स्वीकार नहीं करती है और सत्ता प्राप्ति के संघर्ष में अक्सर सामाजिक समरसता और लोकतांत्रिक मूल्यों की पूरी तरह से अनदेखी कर देती है।

(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

78. 'सामाजिक रचनावाद' (Social constructionism) किस बात पर अधिक बल देता है?
(A) जीव विज्ञान और प्रकृति पर
(B) भौतिक वास्तविकता की अपरिवर्तनीयता पर
(C) व्यक्तिगत मनोविज्ञान पर
(D) सामाजिक संबंधों, मूल्यों और अंतःक्रियाओं पर

79. 'राज्य' (State) की अमूर्त इकाई में निम्नलिखित में से क्या शामिल है?
(A) विधान मंडल, न्यायपालिका, कार्यपालिका, सेना जैसी अनेक संस्थाएँ
(B) केवल विधान मंडल और न्यायपालिका
(C) केवल सेना और पुलिस
(D) केवल एक राजनीतिक दल

80. एक शोधकर्ता यह अध्ययन करना चाहता है कि पिछले 50 वर्षों में विवाह के विज्ञापनों का स्वरूप कैसे बदला है। उसके लिए सबसे उपयुक्त शोध स्रोत क्या होगा?
(A) नवविवाहित जोड़ों का साक्षात्कार
(B) पुराने समाचार पत्र और पत्रिकाएँ
(C) विवाह सलाहकारों का सर्वेक्षण
(D) विवाह समारोहों का प्रेक्षण

81. 'स्तरीकरण' (Stratification) का निहितार्थ क्या है?
(A) समानता
(B) असमानता
(C) एकरूपता
(D) अराजकता

82. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह जन्म के आधार पर निर्धारित होती है।
2. इसमें वंशागत पेशे अपनाए जाते हैं।
3. यह एक अधिक्रमित अनुक्रम है।
4. इसके सदस्य अपनी ही परिसीमाओं में विवाह करते हैं (अंतर्विवाह)।

उपरोक्त में से कौन-से कथन 'जाति' (Caste) की विशेषताओं का वर्णन करते हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

83. यदि एक शोध परियोजना का विषय 'घर-परिवार में काम आने वाले उपकरण' है, तो लड़कों को इस कार्य के लिए प्रोत्साहित करने का मुख्य उद्देश्य क्या हो सकता है?
(A) क्योंकि लड़के तकनीकी उपकरणों के कार्यों के बारे में अधिक गहराई से जानते हैं।
(B) क्योंकि घरेलू कार्यों के कारण लड़कियों के पास शोध के लिए समय नहीं होता है।
(C) विषय को व्यापक बनाने और लैंगिक पूर्वाग्रहों को समाप्त करने के लिए।
(D) क्योंकि यह छात्रों के लिए एक बहुत ही सरल और सहज शोध विषय होता है।

84. 'आभासी बाज़ार' (Virtual market) किस रूप में मौजूद होता है?
(A) एक भौतिक स्थान के रूप में
(B) केवल किताबों में एक अवधारणा के रूप में
(C) एक पारंपरिक साप्ताहिक बाज़ार के रूप में
(D) इलेक्ट्रॉनिक रूप में, जहाँ कंप्यूटरों के द्वारा लेन-देन होता है

85. 'महामारी' (Epidemic) और 'स्थानिक भारी महामारी' (endemic) में क्या अंतर है?
(A) महामारी सदैव एक बहुत ही छोटे क्षेत्र में सीमित होती है, जबकि स्थानिक भारी महामारी बड़े क्षेत्र में।
(B) महामारी की स्थिति केवल गंभीर संक्रामक और जानलेवा रोगों के फैलने के समय ही उत्पन्न होती है।
(C) स्थानिक महामारी में बीमारी की दर निरंतर ऊँची रहती है, जबकि महामारी में अचानक वृद्धि होती है।
(D) महामारी और स्थानिक भारी महामारी दोनों शब्दों का प्रयोग समाजशास्त्र में एक ही अर्थ हेतु होता है।

86. 'अंतःस्थापित' (Embedded) की अवधारणा का क्या अर्थ है जब कहा जाता है कि आर्थिक संस्थाएँ समाज में अंतःस्थापित हैं?
(A) समस्त आर्थिक संस्थाएँ वर्तमान समाज से पूरी तरह से स्वतंत्र होकर कार्य करती हैं।
(B) आर्थिक संस्थाएं समाज में विद्यमान होकर सामाजिक नियमों से प्रभावित होती हैं।
(C) संपूर्ण समाज का अस्तित्व ही बुनियादी रूप से आर्थिक संस्थाओं के भीतर विद्यमान है।
(D) आर्थिक संस्थाओं का समाज के सांस्कृतिक और नैतिक मूल्यों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

87. समाजशास्त्रीय अनुसंधान में नैतिकता का क्या महत्व है?
(A) इसका कोई भी वास्तविक महत्व नहीं है, शोध के केवल अंतिम परिणाम ही मायने रखते हैं।
(B) यह शोध प्रक्रिया को अनावश्यक रूप से और भी अधिक महंगा और समय लेने वाला बनाता है।
(C) यह केवल बड़ी सरकारी वित्त पोषित और अंतर्राष्ट्रीय परियोजनाओं के लिए ही अनिवार्य है।
(D) उत्तरदाताओं की सुरक्षा और उनकी पूर्ण गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए।

88. 'एक वस्तु की जीवनी' परियोजना में, छात्रों को वस्तु के दृष्टिकोण से उसकी आत्मकथा की कल्पना करने के लिए क्यों कहा जाता है?
(A) यह छात्रों को वस्तु के दृष्टिकोण से सामाजिक संबंधों की

(B) क्योंकि यह संपूर्ण अध्ययन प्रक्रिया को अनावश्यक रूप से और अधिक जटिल बनाता है।
(C) किसी समूह की अनुपस्थिति या व्यवहार के विशिष्ट पैटर्न को उजागर करने हेतु।
(D) क्योंकि यह अध्ययन प्रक्रिया के दौरान हमेशा एक तकनीकी त्रुटि का संकेत है।

10. एक ही शोध प्रश्न पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार करने के लिए शोधकर्ता क्या कर सकता है?
(A) पद्धतियों का सम्मिश्रण
(B) केवल एक ही पद्धति का कठोरता से पालन
(C) शोध प्रश्न को बदलना
(D) केवल द्वितीयक आँकड़ों पर निर्भर रहना

11. निम्नलिखित में से कौन सा विषय 'सार्वजनिक परिवहन' पर एक शोध परियोजना के लिए उपयुक्त नहीं है?
(A) लोगों के जीवन में सार्वजनिक परिवहन की भूमिका
(B) सार्वजनिक परिवहन से जुड़ी समस्याएँ और मुद्दे
(C) समय के साथ सार्वजनिक परिवहन के साधनों में बदलाव
(D) व्यक्तिगत वाहनों के निर्माण की तकनीकी प्रक्रिया

12. दिल्ली मेट्रो पर एक 'विज्ञान-कथा' लिखने की परियोजना में, लेखक को अपनी कल्पनाओं के लिए क्या प्रदान करना आवश्यक है?
(A) वैज्ञानिक सूत्र
(B) कारण और वर्तमान से जुड़ाव
(C) सरकारी आँकड़े
(D) एक सुखद अंत

13. सामाजिक जीवन में संचार माध्यमों के अध्ययन के लिए निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसमें समाचारपत्र, टेलीविजन और इंटरनेट जैसे जनसंचार के साधन शामिल हैं।
2. इसमें दूरभाष और पत्र जैसे परस्पर संपर्क के साधन भी शामिल किए जा सकते हैं।
3. शोध का एक विषय विभिन्न समूहों की फिल्मों या पुस्तकों के प्रति पसंद-नापसंद हो सकता है।
4. नए संचार माध्यमों जैसे मोबाइल फोन के प्रभाव का अध्ययन नहीं किया जा सकता है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सत्य हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

14. 'एक वस्तु की जीवनी' लिखने की परियोजना का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) वस्तु की कुल निर्माण लागत और बाज़ार मूल्य की विस्तृत गणना करना।
(B) उपभोक्ता के लिए वस्तु का प्रभावशाली व्यावसायिक विज्ञापन तैयार करना।
(C) वस्तु के विभिन्न भौतिक और रासायनिक घटकों का वैज्ञानिक विश्लेषण करना।
(D) वस्तु के सामाजिक संबंधों और उसके प्रतीकात्मक महत्त्व को गहराई से खोजना।

15. वह प्रक्रिया जिसके द्वारा मध्यम या निम्न जातियाँ अपने से ऊँची जातियों के सामाजिक आचार-व्यवहार को अपनाकर समाज में ऊपर उठने का प्रयत्न करती हैं, क्या कहलाती है?
(A) संस्कृतीकरण
(B) पश्चिमीकरण
(C) आधुनिकीकरण
(D) पंथनिरपेक्षता

16. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (अवधारणा)
P. आत्मसात्मीकरण
Q. एकीकरण
R. भेदभाव
S. पूर्वाग्रह

सूची II: (अर्थ)
1. किसी समूह के बारे में पूर्वनिर्धारित विचार रखना
2. किसी समूह को संसाधनों से वंचित रखने वाला व्यवहार
3. अधीनस्थ समूह द्वारा अपनी विशिष्ट संस्कृति खो देना
4. सांस्कृतिक विभेदों का निजी क्षेत्र में चले जाना

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

17. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): पूँजीवाद एक ऐसी सामाजिक व्यवस्था है जहाँ श्रम शक्ति भी बाज़ार में बिकने वाली वस्तु बन जाती है।
कारण (R): पूँजीवादी व्यवस्था में, श्रमिकों के पास अपनी श्रम शक्ति के अलावा बेचने के लिए कुछ और नहीं होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

18. 'नागरिक समाज' (Civil Society) की अवधारणा में क्या शामिल नहीं है?
(A) परिवार
(B) स्वैच्छिक संस्थाएँ
(C) गैर-राजकीय संगठन
(D) सामाजिक आंदोलन

अध्याय 07

परियोजना कार्य के लिए सुझाव

1. परियोजना कार्य का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) केवल विशिष्ट सैद्धांतिक और किताबी ज्ञान प्राप्त करना
(B) व्यावहारिक प्रयास और साक्ष्य संकलन का अनुभव प्राप्त करना
(C) वार्षिक परीक्षा में अधिकतम अंक और ग्रेड प्राप्त करना
(D) अध्यापकों के शैक्षणिक कार्यभार को काफी कम करना

2. किसी शोध प्रश्न का उत्तर देने के लिए शोधकर्ता का सबसे पहला काम क्या होता है?
(A) उपयुक्त शोध प्रणाली का चयन करना
(B) आँकड़ों का विश्लेषण करना
(C) रिपोर्ट लिखना
(D) साक्षात्कार आयोजित करना

3. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (शोध पद्धति)
P. सर्वेक्षण
Q. साक्षात्कार
R. प्रेक्षण
S. ऐतिहासिक
सूची II: (विशेषता)
1. परिस्थिति में क्या हो रहा है इस पर बारीकी से नज़र रखना
2. अतीत की घटनाओं और प्रवृत्तियों का अध्ययन
3. अपेक्षाकृत कम लोगों से व्यक्तिगत रुप से बातचीत
4. निर्धारित प्रश्नों को अपेक्षाकृत बड़ी संख्या में लोगों से पूछना
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-1, Q-2, R-3, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

4. एक शोधकर्ता 'सह-शिक्षा' और 'केवल बालकों वाले' विद्यालयों के छात्रों की खुशी के स्तर की तुलना करना चाहता है। इसके लिए कौन सी पद्धति सबसे कम उपयुक्त होगी?
(A) छात्रों से साक्षात्कार
(B) विद्यालयों का प्रत्यक्ष प्रेक्षण
(C) छात्रों के बीच सर्वेक्षण
(D) विद्यालयों के ऐतिहासिक अभिलेखों का अध्ययन

5. शोध प्रणाली के चयन को प्रभावित करने वाला एक व्यावहारिक कारक निम्नलिखित में से कौन सा है?
(A) शोधकर्ता की व्यक्तिगत पसंद
(B) विषय की लोकप्रियता
(C) अनुसंधान के लिए उपलब्ध समय की मात्रा
(D) प्रश्न की जटिलता

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सर्वेक्षण प्रणाली के द्वारा जो प्रश्न पूछे जाते हैं वे पहले से ही निर्धारित होते हैं।
कारण (R): इससे शोधकर्ता को प्रश्न पूछते वक्त कोई फेरबदल करने की सुविधा नहीं मिलती, जिससे कभी-कभी भ्रामक परिणाम उत्पन्न हो सकते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

7. 'साक्षात्कार' पद्धति की एक प्रमुख कमजोरी क्या है?
(A) इसमें लचीलापन नहीं होता है।
(B) इसमें गहन जानकारी प्राप्त करना मुश्किल होता है।
(C) यह केवल संरचित प्रश्नों के लिए उपयुक्त है।
(D) यह बहुत ज़्यादा लोगों को शामिल नहीं कर सकती।

8. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. प्रश्नावली को भरने के लिए अध्यापकों से अनुमति न मिलना।
2. उत्तरदाताओं द्वारा प्रश्नावली को अधूरा भरना या न लौटाना।
3. शोध के लिए अपर्याप्त धन और समय।
4. विषय के बारे में पूर्व-मौजूद ज्ञान का अभाव।
5. सभी उत्तरदाताओं का पूर्ण सहयोग मिलना।
एक शोध परियोजना के दौरान शोधकर्ता को उपरोक्त में से किन व्यावहारिक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) केवल 1, 2 और 4

9. 'प्रेक्षण' पद्धति में, "जो घटित नहीं हो रहा है" वह भी महत्त्वपूर्ण क्यों हो सकता है?
(A) क्योंकि यह अक्सर व्यक्तिगत शोधकर्ता के पूर्वाग्रह को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

3. क्या उपकरणों ने घर में श्रम-विभाजन को बदल दिया है?
4. ताँगे और रिक्शे का मुकाबला किन साधनों से रहा है?

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

29. टी.आर. माल्थस के अनुसार, 'प्राकृतिक निरोध' (positive checks) का उदाहरण क्या है?
(A) विवाह देरी से करना
(B) ब्रह्मचर्य का पालन
(C) अकाल और महामारियाँ
(D) संतति निरोध के उपाय

30. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): एक अच्छी विज्ञान-कथा लिखना आसान नहीं होता है।
कारण (R): विज्ञान-कथा में की गई कल्पनाएँ वर्तमान वस्तुओं और स्थितियों से जुड़ी होनी चाहिए और उनके लिए कारण भी दिए जाने चाहिए।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

31. 'प्रबल जाति' (Dominant caste) की अवधारणा में क्या शामिल नहीं है?
(A) हमेशा 'द्विज' वर्ण से संबंधित होना
(B) बड़ी जनसंख्या
(C) भूमि-स्वामित्व के नवार्जित अधिकार
(D) राजनीतिक और आर्थिक प्रबलता

32. शोध करते समय, उपयुक्त शोध प्रणाली का चयन किन कसौटियों के आधार पर किया जाना चाहिए?
(A) केवल तकनीकी कसौटियाँ
(B) तकनीकी कसौटियाँ और व्यावहारिकता दोनों
(C) केवल व्यावहारिकता
(D) शोधकर्ता की व्यक्तिगत रुचि

33. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यदि उत्तरदाता प्रश्न को ठीक से नहीं समझ पाते तो गलत परिणाम आ सकते हैं।
2. उत्तरदाता की किसी दिलचस्प बात पर आगे नए प्रश्न नहीं पूछे जा सकते।
3. यह एक निश्चित समय पर खींची गई तस्वीर की तरह होता है और बदली हुई स्थितियों को शामिल नहीं कर सकता।
4. इसमें बहुत अधिक लचीलापन होता है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सर्वेक्षण पद्धति की कमजोरियों को दर्शाते हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 3 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

34. 'अहस्तक्षेप नीति' (Laissez-faire) का क्या अर्थ है?
(A) मुक्त बाज़ार प्रणाली और आर्थिक मामलों में सरकार का अल्पतम हस्तक्षेप
(B) आर्थिक मामलों में सरकार का अधिकतम हस्तक्षेप
(C) सरकार द्वारा सभी आर्थिक गतिविधियों का पूर्ण नियंत्रण
(D) बाज़ार को पूरी तरह से समाप्त करना

35. 'संरचित साक्षात्कार' और 'असंरचित साक्षात्कार' में क्या अंतर है?
(A) संरचित में सीमित संख्या में लोग होते हैं, जबकि असंरचित में बहुत अधिक संख्या।
(B) संरचित साक्षात्कार अत्यधिक लंबा होता है, जबकि असंरचित तुलनात्मक रूप से छोटा।
(C) संरचित में पूर्व निर्धारित प्रश्न होते हैं, असंरचित में वार्तालाप से प्रश्न उभरते हैं।
(D) संरचित केवल व्यक्तिगत रूप से होता है, जबकि असंरचित केवल सामूहिक चर्चा में।

36. 'बदलती आकांक्षाओं' पर शोध करते समय साक्षात्कार के लिए चुने गए छात्र अपने ही विद्यालय के क्यों नहीं होने चाहिए?
(A) क्योंकि वे सच नहीं बोलेंगे।
(B) क्योंकि दूसरे स्कूल के बच्चे अधिक बुद्धिमान होते हैं।
(C) क्योंकि इससे समय की बचत होती है।
(D) ताकि वे अधिक सहज और खुले मन से बात कर सकें।

37. एक समाजशास्त्रीय परियोजना में, यदि कोई संचार माध्यमों पर शोध कर रहा है, तो 'विषय-वस्तु का विश्लेषण' किस पर लागू हो सकता है?
(A) टेलीविजन देखने वालों की संख्या पर
(B) समाचार पत्रों की छपाई की लागत पर
(C) समाचार पत्रों या टीवी कार्यक्रमों में पर्यावरण जैसे विषयों के विवेचन पर
(D) रेडियो की फ्रीक्वेंसी पर

38. 'जन्म परिवार' (Natal family) और 'ससुराल के परिवार' में क्या अंतर है?
(A) जन्म परिवार में केवल निकट रक्त-संबंधी होते हैं, जबकि ससुराल में वैवाहिक संबंधी।
(B) जन्म परिवार जन्म आधारित होता है, ससुराल का परिवार विवाह आधारित होता है।
(C) जन्म परिवार आकार में सदैव छोटा होता है, जबकि ससुराल का परिवार बहुत बड़ा।

(D) 1, 2, 3, 4

58. 'पूँजी' (Capital) को केवल बचाकर इकट्ठी की गई धनराशि से अलग क्या बनाता है?
(A) निवेश के माध्यम से धनराशि को निरंतर बढ़ाने के उद्देश्य से सँभाल कर रखना।
(B) पूँजी का उपयोग दैनिक जीवन में केवल व्यक्तिगत उपभोग के उद्देश्यों के लिए होता है।
(C) समाज में पूँजी सदैव केवल भौतिक अचल संपत्ति के रूप में ही विद्यमान होती है।
(D) किसी भी स्थिति में पूँजी के निवेश पर कोई अतिरिक्त लाभ नहीं कमाया जा सकता।

59. निम्नलिखित में से कौन-सा शोध विषय 'प्रेक्षण' पद्धति के लिए सबसे उपयुक्त है?
(A) भारत में गरीबी के ऐतिहासिक कारण।
(B) देश भर के युवाओं की राजनीतिक राय।
(C) किसी कंपनी का वार्षिक वित्तीय विवरण।
(D) सार्वजनिक स्थानों पर लोग मोबाइल फोन का उपयोग कैसे करते हैं।

60. 'जनजाति' (Tribe) और 'जाति' (Caste) में एक मुख्य अंतर क्या है?
(A) जनजाति एक अधिक्रमिक व्यवस्था है, जबकि जाति एक समावेशात्मक समूह है।
(B) जाति एक अधिक्रमिक व्यवस्था है, जबकि जनजाति एक समावेशात्मक समूह है।
(C) जनजाति हमेशा शहरी क्षेत्रों में पाई जाती है, जाति ग्रामीण क्षेत्रों में।
(D) जाति और जनजाति में कोई अंतर नहीं है।

61. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (शोध पद्धति)
P. असंरचित साक्षात्कार
Q. सर्वेक्षण
R. प्रत्यक्ष प्रेक्षण
S. ऐतिहासिक पद्धति
सूची II: (उदाहरण)
1. किसी कस्बे में ताँगे के इतिहास का अध्ययन
2. कक्षा में छात्रों के व्यवहार का अवलोकन
3. एक अनुभवी नेता के जीवन के अनुभवों पर लंबी बातचीत
4. चुनाव से पहले मतदाताओं की राय जानने के लिए प्रश्नावली
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-1, Q-2, R-3, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

62. "सांस्कृतिक एकीकरण और समजातीयता की एक प्रक्रिया जिसके द्वारा अधीनस्थ समूह अपनी विशिष्ट संस्कृति को खो देते हैं और प्रभुत्वशाली बहुसंख्यकों की संस्कृति को अपना लेते हैं", यह परिभाषा किस अवधारणा की है?
(A) समन्वयवाद (Syncretism)
(B) अलगाववाद (Separatism)
(C) बहुसंस्कृतिवाद (Multiculturalism)
(D) आत्मसात्मीकरण (Assimilation)

63. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'लोकतंत्र' (Democracy) की परिभाषा के अनुसार सही नहीं है?
(A) यह हमेशा एक राजा द्वारा शासित होता है।
(B) यह सरकार का वह रुप है जो जनता से अपनी वैधता प्राप्त करता है।
(C) यह जनता के स्पष्ट समर्थन पर आश्रित रहता है।
(D) इसमें वैधता का स्रोत चुनाव या जनमत संग्रह हो सकता है।

64. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सामाजिक शोध में, एक ही प्रश्न का उत्तर अक्सर एक से अधिक पद्धतियों से दिया जा सकता है।
कारण (R): प्रत्येक शोध प्रश्न के लिए केवल एक और एकमात्र सही पद्धति होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

65. 'प्रतिस्थापन दर' (Replacement level) का 2.1 होना क्या सुनिश्चित करता है?
(A) जनसंख्या में तीव्र वृद्धि
(B) अगली पीढ़ी का आकार वर्तमान पीढ़ी के लगभग बराबर रहे
(C) जनसंख्या में तीव्र कमी
(D) केवल लड़कों का जन्म

66. 'अपमार्जन' (Scavenging) की प्रथा किससे संबंधित है?
(A) मानव मल तथा कूड़ा-कर्कट को हाथ से साफ करने से
(B) पुरातात्विक स्थलों की खुदाई से
(C) जंगलों से जड़ी-बूटियाँ इकट्ठा करने से
(D) समुद्र से मछली पकड़ने से

67. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. शोध के लिए समय की मात्रा एक महत्वपूर्ण कारक है।
2. उपलब्ध संसाधन (लोग एवं सामग्री) भी विचारणीय हैं।
3. शोध की परिस्थितियाँ प्रणाली के चयन को प्रभावित नहीं करती हैं।
4. शोधकर्ता को अप्रत्याशित समस्याओं के लिए तैयार रहना चाहिए।
उपरोक्त में से कौन-से कथन सत्य हैं?

4. इन उपकरणों की मरम्मत कैसे की जाती है?
5. इन उपकरणों को बनाने वाली कंपनियों का मुनाफा कितना है?

एक परियोजना कार्य के अंतर्गत 'घरेलू उपकरणों' के विषय में शोध करते समय, एक शोधकर्ता उपरोक्त में से किन प्रश्नों पर ध्यान केंद्रित कर सकता है?

(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3, 4 और 5
(D) केवल 1, 2, 3, 4 और 5

49. समाजशास्त्रीय शब्दावली में, 'अतिरिक्त मूल्य' (Surplus value) क्या है?

(A) उत्पादन के उपरांत कारखानों में श्रमिकों को दिया जाने वाला अतिरिक्त वार्षिक बोनस।
(B) अधिशेष श्रम से प्राप्त वह मूल्य जो मज़दूरी चुकाने के बाद शेष बच जाता है।
(C) किसी विशिष्ट वस्तु का उपभोक्ता बाज़ार में निर्धारित किया गया कुल बाज़ार मूल्य।
(D) सरकार द्वारा औद्योगिक उत्पादन और बिक्री की वस्तुओं पर लगाया गया विभिन्न कर।

50. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।

अभिकथन (A): साक्षात्कार पद्धति में साक्षात्कारों में लचीलापन होता है।

कारण (R): साक्षात्कार में संबंधित विषयों पर विस्तार से चर्चा की जा सकती है और प्रश्नों को आवश्यकतानुसार संशोधित किया जा सकता है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

51. 'जजमानी व्यवस्था' की क्या विशेषता है?

(A) यह पूरी तरह से बाज़ार आधारित एक आधुनिक और उन्नत शहरी आर्थिक व्यवस्था है।
(B) इसमें विनिमय हेतु आधुनिक मुद्रा का बहुत ही बड़े पैमाने पर प्रयोग होता है।
(C) भारतीय गाँवों में उपज और सेवाओं का गैर-बाज़ारी पारंपरिक आदान-प्रदान।
(D) यह पूरी तरह से आधुनिक औद्योगिक संबंधों और संविदात्मक श्रम पर आधारित है।

52. 'जीवनशैली' (Lifestyle) शब्द का समाजशास्त्र में क्या अर्थ है?

(A) किसी व्यक्ति की कुल जीवन प्रत्याशा।
(B) किसी व्यक्ति का पेशा या व्यवसाय।
(C) किसी व्यक्ति की राजनीतिक विचारधारा।
(D) ज़िंदगी जीने का तरीका, विशेष रूप से उपभोग के विशिष्ट प्रकार।

53. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. उपनिवेशवाद में एक देश दूसरे देश को जीतकर अपना उपनिवेश बनाता है।
2. उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद में कोई संबंध नहीं है।
3. उपनिवेशवादी देश उपनिवेश में बसने और स्थानीय नियंत्रण में अधिक रुचि रखता है।
4. साम्राज्यवादी देश उपनिवेश को लूटकर दूर से ही शासन कर सकता है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सत्य हैं?

(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

54. यदि कोई शोधकर्ता यह अध्ययन करना चाहता है कि "क्या टेलीविज़न ने समाचारपत्रों के महत्त्व को कम कर दिया है?", तो उसे किन दो पद्धतियों का सम्मिश्रण करना सबसे उपयोगी होगा?

(A) प्रेक्षण और साक्षात्कार
(B) सर्वेक्षण और ऐतिहासिक पद्धति
(C) केवल प्रेक्षण
(D) केवल साक्षात्कार

55. 'बहिर्विवाह' (Exogamy) की प्रथा का क्या अर्थ है?

(A) व्यक्ति अपने समूह के भीतर ही विवाह करता है।
(B) व्यक्ति विवाह ही नहीं करता है।
(C) एक समय में एक से अधिक साथियों से विवाह करना।
(D) व्यक्ति अपने समूह के बाहर विवाह करता है।

56. 'अस्पृश्यता' (Untouchability) की प्रथा किसके द्वारा और किसके विरुद्ध अपनाई जाती है?

(A) यह उच्च जातियों द्वारा तथाकथित 'अपवित्र' समझी जाने वाली निम्न जातियों के विरुद्ध अपनाई जाती है।
(B) यह निम्न जातियों द्वारा उच्च जातियों के विरुद्ध अपनाई जाती है।
(C) यह सभी जातियों द्वारा एक-दूसरे के विरुद्ध अपनाई जाती है।
(D) इसका जाति व्यवस्था से कोई संबंध नहीं है।

57. एक शोध प्रक्रिया के निम्नलिखित चरणों को सही क्रम में व्यवस्थित करें:

1. आँकड़ों का विश्लेषण
2. उपयुक्त शोध पद्धति का चयन
3. शोध प्रश्न का निर्धारण
4. आँकड़े इकट्ठा करना

(A) 3, 2, 4, 1
(B) 2, 3, 4, 1
(C) 3, 4, 2, 1

19. घरेलू उपकरणों (जैसे मिक्सर, वॉशिंग मशीन) पर एक परियोजना कार्य में किस पहलू का अध्ययन किया जा सकता है?
(A) इन उपकरणों का विद्युत सर्किट आरेख
(B) इन उपकरणों के आयात-निर्यात आँकड़े
(C) घर-परिवार के भीतर श्रम-विभाजन पर उनका प्रभाव
(D) इन उपकरणों का रासायनिक संघटन

20. परियोजना कार्य के लिए सुझाए गए विषयों में से कौन-सा विषय विशेष रूप से 'समय के साथ परिवर्तन' के अध्ययन पर केंद्रित है?
(A) सार्वजनिक स्थान का उपयोग
(B) विभिन्न आयु वर्गों की बदलती हुई आकांक्षाएँ
(C) एक वस्तु की जीवनी
(D) उपरोक्त सभी

21. 'बदलती हुई आकांक्षाओं' पर शोध करते समय विभिन्न आयु-वर्गों (जैसे कक्षा 5, 8, 11) के बच्चों को क्यों चुना जाता है?
(A) क्योंकि विद्यालयी छात्र शोधकर्ता के लिए बहुत आसानी से उपलब्ध होते हैं।
(B) क्योंकि वयस्क लोग सार्वजनिक रूप से अपनी निजी आकांक्षाओं पर बात नहीं करते।
(C) आकांक्षाओं में परिवर्तन के विशेष स्वरूप का अध्ययन करने हेतु।
(D) क्योंकि बच्चों की सामाजिक और शैक्षिक आकांक्षाएँ सदैव स्थिर रहती हैं।

22. निम्नलिखित कथनों में से कौन सा 'साक्षात्कार' पद्धति के बारे में सही है?
(A) यह हमेशा पूर्व-निर्धारित प्रश्नों का उपयोग करता है।
(B) इसमें प्रश्नों को आवश्यकतानुसार संशोधित किया जा सकता है।
(C) यह बड़ी संख्या में लोगों के विचारों का प्रतिनिधित्व करता है।
(D) इसमें उत्तरदाता और शोधकर्ता के बीच कोई व्यक्तिगत संपर्क नहीं होता है।

23. 'पण्यीकरण' (Commodification) का क्या अर्थ है?
(A) किसी वस्तु को बाज़ार से हटाना
(B) वस्तुओं का मुफ्त वितरण
(C) केवल सेवाओं का बाज़ारीकरण
(D) किसी गैर-पण्य वस्तु का पण्य (बिकने वाली वस्तु) में रूपांतरण

24. निम्नलिखित में से कौन सा एक 'प्रत्यक्ष प्रेक्षण' पद्धति का उदाहरण है?
(A) कैंटीन में छात्रों के खान-पान की आदतों का प्रत्यक्ष अवलोकन करना।
(B) छात्रों के टीवी देखने की आदतों के विषय में उन्हें विस्तृत प्रश्नावली भेजना।
(C) किसी पुरानी ऐतिहासिक घटना के विषय में पुस्तकालय में पुरानी पत्रिकाएं पढ़ना।
(D) फैक्ट्री प्रबंधक के माध्यम से उसके अधीन कार्यरत कर्मचारियों का विवरण मांगना।

25. सामाजिक अनुसंधान में पद्धतियों के सम्मिश्रण की सिफारिश क्यों की जाती है?
(A) क्योंकि यह अनुसंधान को सस्ता बनाता है।
(B) क्योंकि यह शोधकर्ता के लिए काम आसान करता है।
(C) एक ही शोध प्रश्न पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार करने के लिए।
(D) क्योंकि एक पद्धति हमेशा अपर्याप्त होती है।

26. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. विभिन्न वर्गों के लोग सार्वजनिक स्थान के बारे में क्या महसूस करते हैं?
2. समय के साथ किसी खाली जगह का इस्तेमाल कैसे बदलता रहा है?
3. क्या सार्वजनिक स्थान के उपयोग को लेकर कोई झगड़ा होता है?
4. सार्वजनिक स्थान की भूमि का कानूनी स्वामित्व किसके पास है?
5. सार्वजनिक स्थान पर निर्माण की लागत क्या होगी?

सार्वजनिक स्थान के उपयोग पर एक परियोजना में, उपरोक्त में से किस प्रश्न का अन्वेषण किया जा सकता है?
(A) केवल 1, 2 और 5
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 1, 4 और 5

27. 'लिंग' (Gender) और 'यौन' (sex) शब्दों के बीच समाजशास्त्रीय अंतर क्या है?
(A) कोई अंतर नहीं है, वे पर्यायवाची हैं।
(B) 'लिंग' शारीरिक अंतरों को संदर्भित करता है जबकि 'यौन' सामाजिक अंतरों को।
(C) 'लिंग' केवल महिलाओं से संबंधित है और 'यौन' पुरुषों से।
(D) 'यौन' शारीरिक अंतरों को संदर्भित करता है जबकि 'लिंग' सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से उत्पन्न अंतरों को।

28. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (अनुसंधान विषय)
P. सार्वजनिक परिवहन
Q. घरेलू उपकरण
R. संचार माध्यम
S. बदलती आकांक्षाएँ

सूची II: (संभावित शोध प्रश्न)
1. क्या टेलीविजन ने रेडियो के महत्त्व को कम कर दिया है?
2. क्या सह-शिक्षा वाले स्कूलों के बच्चे अधिक खुश रहते हैं?

(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 2, 3 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

68. 'गणितीय वृद्धि' (समांतर वृद्धि) का सही उदाहरण कौन सा है?
(A) 2, 4, 8, 16, 32...
(B) 3, 9, 27, 81...
(C) 1, 1, 2, 3, 5, 8...
(D) 5, 9, 13, 17, 21...

69. एक शोधकर्ता यह जानना चाहता है कि किसी विशेष समाचार पत्र में स्थानीय समाचारों को कितना स्थान दिया जाता है। उसे किस पद्धति का उपयोग करना चाहिए?
(A) साक्षात्कार
(B) प्रेक्षण
(C) विषय-वस्तु का विश्लेषण
(D) सर्वेक्षण

70. 'भूमिका संघर्ष' (Role conflict) का एक उदाहरण क्या है?
(A) एक ही भूमिका को अच्छी तरह से निभाना।
(B) एक व्यक्ति द्वारा निभाई जाने वाली विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं के बीच संघर्ष।
(C) किसी भी सामाजिक भूमिका को निभाने से इंकार करना।
(D) एक नई सामाजिक भूमिका सीखना।

71. 'वसीयतनामा' (Will) क्या है?
(A) व्यक्ति की जीवित रहने की इच्छा।
(B) सरकार द्वारा जारी किया गया एक आदेश।
(C) एक अकादमिक डिग्री।
(D) एक कानूनी दस्तावेज़ जिसमें मृत्यु के बाद संपत्ति के उपयोग के बारे में निर्देश होते हैं।

72. निम्नलिखित में से कौन 'BPO - 'व्यावसायिक प्रक्रिया आउटसोर्सिंग ' का एक उदाहरण है?
(A) एक टेलीफोन कंपनी द्वारा अपने ग्राहक सेवा कार्य के लिए किसी दूसरी कंपनी को ठेका देना।
(B) एक कार कंपनी द्वारा अपनी ही फैक्ट्री में टायर बनाना।
(C) एक किसान द्वारा अपने खेत में स्वयं फसल उगाना।
(D) एक शिक्षक द्वारा अपने ही स्कूल में पढ़ाना।

73. एक शोध परियोजना के चरणों को क्रमबद्ध करें:
1. उपयुक्त पद्धति का चयन
2. परिणामों का विश्लेषण
3. एक निर्धारित प्रश्न चुनना
4. प्रश्नावली वितरित करना और इकट्ठा करना
(A) 3, 1, 4, 2
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 3, 4, 1, 2
(D) 4, 3, 1, 2

74. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह व्यक्तियों का एक समूह है।
2. सदस्य नातेदारी संबंधों द्वारा आपस में जुड़े होते हैं।
3. वयस्क सदस्य बच्चों की देखभाल की जिम्मेदारी लेते हैं।
4. सदस्यों का हमेशा एक ही घर में रहना अनिवार्य है।
5. परिवार में केवल दो पीढ़ियाँ हो सकती हैं।
'परिवार' (Family) की समाजशास्त्रीय परिभाषा में उपरोक्त में से क्या शामिल है?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 2, 3 और 5
(D) केवल 1, 4 और 5

75. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): पंथनिरपेक्षता का एक अर्थ सांप्रदायिकता का विरोधी होना है।
कारण (R): सांप्रदायिकता धार्मिक पहचान पर आधारित उग्र राष्ट्रवाद है, जबकि पंथनिरपेक्षता किसी भी धर्म के पक्ष या विपक्ष में नहीं होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

76. 'आर्थिक मानवविज्ञान' (Economic anthropology) का अध्ययन क्षेत्र क्या है?
(A) केवल आधुनिक और जटिल औद्योगिक बाज़ारी अर्थव्यवस्थाएँ।
(B) समस्त प्रकार की आर्थिक व्यवस्थाएँ, विशेष रूप से गैर-बाज़ारी।
(C) केवल वैश्विक और राष्ट्रीय स्टॉक मार्केट का विस्तृत अध्ययन।
(D) केवल बड़ी बहुराष्ट्रीय कंपनियों के प्रबंधन का तकनीकी अध्ययन।

77. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (शब्द)
P. गुणोत्तर वृद्धि
Q. समांतर वृद्धि
R. प्रतिस्थापन दर
S. प्रजनन शक्ति
सूची II: (उदाहरण/मान)
1. 2.1 बच्चे प्रति स्त्री
2. 4, 20, 100, 500
3. 6, 10, 14, 18
4. बच्चे पैदा करने की क्षमता
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-2, R-4, S-1

(D) समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से इन दोनों श्रेणियों में वास्तव में कोई भी अंतर नहीं है।

39. 'राष्ट्र-राज्य' (Nation-state) की अवधारणा में क्या शामिल है?
(A) केवल एक साझा भाषा और धर्म
(B) एक वैश्विक सरकार
(C) बिना किसी सीमा के एक समुदाय
(D) एक सरकार, एक निर्धारित भौगोलिक क्षेत्र और नागरिक

40. निम्नलिखित कथनों में से कौन-सा 'रूढ़िबद्ध धारणा' (Stereotype) का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
(A) किसी समूह के लोगों का एक निश्चित और अनम्य (अपरिवर्तनीय) स्वरूप।
(B) किसी समूह के बारे में एक सकारात्मक और लचीला विचार।
(C) एक वैज्ञानिक रूप से सिद्ध तथ्य।
(D) एक व्यक्तिगत राय जो किसी को नुकसान नहीं पहुँचाती।

41. निम्नलिखित को उनके घटित होने के अनुमानित कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. टेलीविजन का आगमन
2. समाचारपत्रों का प्रचलन
3. इंटरनेट और मोबाइल फोन का व्यापक उपयोग
4. रेडियो का लोकप्रिय होना
(A) 2, 1, 4, 3
(B) 2, 4, 1, 3
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 1, 2, 3, 4

42. 'उत्पादन विधि' (Mode of production) की मार्क्सवादी अवधारणा किन दो चीजों का गठजोड़ है?
(A) उत्पादन की शक्तियाँ और उत्पादन के संबंध
(B) कृषि और उद्योग
(C) बाज़ार और राज्य
(D) पूँजी और श्रम

43. 'भूमंडलीकरण' (Globalisation) की परिभाषा के अनुसार, यह किसकी एक जटिल श्रृंखला है?
(A) केवल विश्व स्तर पर होने वाले व्यापक आर्थिक परिवर्तनों की।
(B) केवल विश्व स्तर पर होने वाले विभिन्न सांस्कृतिक परिवर्तनों की।
(C) केवल विभिन्न राष्ट्रों के मध्य राजनीतिक सीमाओं के क्रमिक विघटन की।
(D) विभिन्न क्षेत्रों के आर्थिक, सामाजिक, प्रौद्योगिकीय और सांस्कृतिक परिवर्तनों की।

44. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'वर्ग' (Class) की समाजशास्त्रीय अवधारणा को सही ढंग से परिभाषित करता है?
(A) यह जन्म पर आधारित एक समूह है।
(B) यह एक ऐसा आर्थिक समूह है जो उत्पादन के सामाजिक संबंधों में समान स्थिति पर आधारित होता है।
(C) यह एक ऐसा धार्मिक समूह है जिसके सदस्य समान विश्वास रखते हैं।
(D) यह एक ऐसा सांस्कृतिक समूह है जिसकी भाषा समान होती है।

45. एक शोध पद्धति के रूप में 'प्रत्यक्ष प्रेक्षण' के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) शोधकर्ता को बारीकी से नज़र रखनी होती है।
(B) शोधकर्ता को जो कुछ हो रहा है उसका अभिलेख तैयार करना होता है।
(C) यह काम हमेशा बहुत आसान और सरल होता है।
(D) क्या प्रासंगिक है और क्या नहीं, इसका पूर्वनिर्णय करना कठिन हो सकता है।

46. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (शब्द)
P. विविधता
Q. संजातीयता
R. राष्ट्रवाद
S. क्षेत्रवाद
सूची II: (परिभाषा)
1. एक खास क्षेत्रीय पहचान के लिए प्रतिबद्ध विचारधारा
2. अपने राष्ट्र के प्रति प्रतिबद्धता और अभिनति
3. एक साझी सांस्कृतिक पहचान के प्रति जागरूकता
4. अनेक विभिन्न प्रकार के समुदायों की उपस्थिति
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

47. 'सामाजिक अपवर्जन' (Social exclusion) को परिभाषित किया गया है:
(A) वंचन और भेदभाव का प्रतिफल जो लोगों को समाज में शामिल होने से रोकता है।
(B) व्यक्तियों का अपनी स्वेच्छा से मुख्यधारा के समाज से दूर अलग-थलग रहना।
(C) केवल समाज के निचले स्तर पर रहने वाले लोगों की आर्थिक गरीबी की स्थिति।
(D) एक जटिल कानूनी प्रक्रिया के माध्यम से अपराधियों को समाज से बाहर किया जाता है।

48. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. क्या इन उपकरणों ने काम को वास्तव में आसान बना दिया है?
2. क्या घर में आयु से संबंधित कार्यों में कोई परिवर्तन आया है?
3. इन उपकरणों का इस्तेमाल करने वाले अधिकतर पुरुष हैं या स्त्रियाँ?

कल्पना करने में मदद करता है।
(B) यह एक साहित्यिक अभ्यास है जिसका समाजशास्त्र से कोई लेना-देना नहीं है।
(C) क्योंकि वस्तुएं वास्तव में सोच और बोल सकती हैं।
(D) यह रिपोर्ट को और अधिक मनोरंजक बनाने का एक तरीका है।

89. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): 'भेदभाव' और 'पूर्वाग्रह' परस्पर जुड़े हुए हैं लेकिन समान नहीं हैं।
कारण (R): पूर्वाग्रह एक अभिवृत्ति या विचार है, जबकि भेदभाव एक वास्तविक व्यवहार या कार्य है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

90. शोध करते समय, यदि प्रश्नावली वितरित करने के बाद बहुत कम प्रतियाँ वापस आती हैं, तो शोधकर्ता को क्या निर्णय लेना पड़ सकता है?
(A) अपूर्ण प्रश्नावलियों के प्रबंधन हेतु एक नई वैकल्पिक रणनीति तैयार करना।
(B) शोध कार्य को निष्फल मानकर उसे तुरंत उसी समय पूरी तरह छोड़ देना।
(C) अपनी सुविधा के अनुसार शोध रिपोर्ट हेतु मनगढ़ंत और काल्पनिक डेटा बनाना।
(D) केवल उन्हीं सीमित उत्तरों का उपयोग करना जो उसकी पूर्व परिकल्पना का समर्थन करें।

91. 'संजातीय सफाई' (Ethnic cleansing) का क्या उद्देश्य होता है?
(A) किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र को सांस्कृतिक रूप से अत्यंत विविध और समृद्ध बनाना।
(B) विभिन्न परस्पर विरोधी नृजातीय समूहों के बीच दीर्घकालिक शांति और सद्भाव स्थापित करना।
(C) नृजातीय समूहों की सांस्कृतिक प्रथाओं को शुद्ध करना।
(D) नृजातीय समूहों को हटाकर क्षेत्र को संजातीय दृष्टि से समरूप बनाना।

92. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह हमेशा व्यक्तिगत रूप से किया जाता है।
2. इसमें अपेक्षाकृत काफी कम लोगों को शामिल किया जाता है।
3. यह संरचित या असंरचित हो सकता है।
4. यह अधिक या कम गहन हो सकता है।
5. यह व्यक्तियों के एक चयनित समूह के विचारों को ही प्रस्तुत कर सकता है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन 'साक्षात्कार' पद्धति की विशेषताओं का वर्णन करते हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

93. समाज में सार्वजनिक परिवहन के साधनों के विकास के क्रम को व्यवस्थित करें (सबसे पुराने से सबसे नए तक):
1. मेट्रो रेल
2. ताँगा/बैलगाड़ी
3. मोटर बसें
4. रेलवे (पारंपरिक)

(A) 2, 4, 3, 1
(B) 2, 3, 4, 1
(C) 4, 2, 3, 1
(D) 3, 2, 4, 1

94. 'सार्वजनिक परिवहन' पर आधारित शोध परियोजना को अपेक्षाकृत बड़े शहरों के लिए ही अधिक उपयुक्त क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि छोटे कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक परिवहन की कोई व्यवस्था नहीं है।
(B) क्योंकि छोटे शहरों के निवासी सामान्यतः शोध परियोजनाओं में उत्साहपूर्वक भाग नहीं लेते।
(C) क्योंकि बड़े महानगरों में शोध करना अन्य स्थानों की तुलना में काफी आसान होता है।
(D) विभिन्न परिवहन साधनों की उपलब्धता के कारण बड़े शहरों में यह अधिक प्रासंगिक है।

95. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (परियोजना विषय)
P. सार्वजनिक परिवहन का इतिहास
Q. घरेलू उपकरणों पर लोगों की राय
R. खाली जगह का उपयोग
S. मोबाइल फोन का प्रभाव

सूची II: (उपयुक्त पद्धति)
1. साक्षात्कार
2. ऐतिहासिक
3. प्रेक्षण
4. सर्वेक्षण और प्रेक्षण

(A) P-1, Q-3, R-4, S-2
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-2, R-3, S-1

96. 'उदारीकरण' (Liberalisation) की प्रक्रिया में क्या होता है?
(A) आर्थिक कार्यकलाप पर राज्य के मौजूदा नियंत्रणों को और अधिक सख्त एवं व्यापक बना दिया जाता है।
(B) राजकीय नियंत्रण कम करना और गतिविधियों को बाज़ार की ताकतों पर छोड़ना।
(C) व्यापार और विनिर्माण से संबंधित मौजूदा कानूनों को

सबसे बड़ी शक्ति इसकी क्षमता है कि यह अपेक्षाकृत कम समय और लागत में बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँच सकती है, जिससे प्राप्त निष्कर्षों की सांख्यिकीय सार्थकता बढ़ जाती है। हालाँकि, इसकी कुछ सीमाएँ भी हैं। सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त जानकारी अक्सर सतही होती है और यह सामाजिक घटनाओं के गहरे या सूक्ष्म पहलुओं को पकड़ने में विफल हो सकती है। इसके अतिरिक्त, प्रतिक्रिया पूर्वाग्रह (रिस्पांस बायस), जहाँ उत्तरदाता सामाजिक रूप से वांछनीय उत्तर देते हैं, और गैर-प्रतिक्रिया पूर्वाग्रह (नॉन-रिस्पांस बायस), जहाँ चयनित प्रतिदर्श के कुछ सदस्य भाग लेने से इनकार करते हैं, परिणामों की वैधता को प्रभावित कर सकते हैं।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. समाजशास्त्रीय अनुसंधान में सर्वेक्षण पद्धति का प्राथमिक उद्देश्य क्या है?
(A) किसी एक विशिष्ट व्यक्ति या इकाई का अत्यंत गहन और विस्तृत अध्ययन करना।
(B) एक प्रतिदर्श के आधार पर संपूर्ण जनसंख्या का सामान्यीकरण करना।
(C) एक छोटे सामाजिक समूह के विविध सांस्कृतिक व्यवहारों का सूक्ष्म अवलोकन करना।
(D) पुराने ऐतिहासिक दस्तावेजों का व्यवस्थित विश्लेषण करके सामाजिक परिवर्तन समझना।

152. अनुप्रस्थ-काट (क्रॉस-सेक्शनल) सर्वेक्षण की मुख्य विशेषता क्या है?
(A) यह एक विशिष्ट समय बिंदु पर आँकड़े एकत्र करता है।
(B) यह लंबी अवधि तक आँकड़े एकत्र करता है।
(C) यह केवल गुणात्मक आँकड़े उत्पन्न करता है।
(D) यह प्रतिभागियों के साथ गहन साक्षात्कार पर निर्भर करता है।

153. स्रोत के अनुसार, सर्वेक्षण पद्धति की प्रमुख शक्ति क्या है?
(A) यह सामाजिक घटनाओं की गहरी और सूक्ष्म समझ प्रदान करती है।
(B) यह उत्तरदाताओं के साथ व्यक्तिगत संबंध बनाने की अनुमति देती है।
(C) यह कम लागत में बड़ी संख्या में लोगों से आँकड़े एकत्र कर सकती है।
(D) यह साक्षात्कारकर्ता के पूर्वाग्रह से पूरी तरह मुक्त है।

154. 'प्रतिक्रिया पूर्वाग्रह' (रिस्पांस बायस) का क्या अर्थ है?
(A) जब उत्तरदाता प्रश्नावली को पूरी तरह से भरने से इनकार कर देते हैं।
(B) जब उत्तरदाता शोधकर्ता को खुश करने के लिए गलत जानकारी देते हैं।
(C) जब प्रश्नावली के प्रश्न अस्पष्ट और भ्रामक होते हैं।
(D) जब उत्तरदाता सत्य के बजाय सामाजिक रूप से स्वीकार्य उत्तर देते हैं।

155. यदि कोई शोधकर्ता दस वर्षों की अवधि में हर दो साल में युवाओं की बदलती राजनीतिक राय का अध्ययन करना चाहता है, तो उसे किस प्रकार के सर्वेक्षण का उपयोग करना चाहिए?
(A) अनुप्रस्थ-काट (क्रॉस-सेक्शनल) सर्वेक्षण
(B) प्रयोगात्मक सर्वेक्षण
(C) अनुदैर्ध्य (लॉन्गिट्यूडिनल) सर्वेक्षण
(D) सहभागी सर्वेक्षण

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

साक्षात्कार पद्धति समाजशास्त्रीय अनुसंधान में एक महत्वपूर्ण गुणात्मक तकनीक है, जो शोधकर्ताओं को व्यक्तियों के अनुभवों, दृष्टिकोणों और विश्वदृष्टि की गहन समझ प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। सर्वेक्षणों के विपरीत, जो मानकीकृत प्रश्न पूछते हैं, साक्षात्कार अधिक लचीले हो सकते हैं। इन्हें मोटे तौर पर तीन प्रकारों में विभाजित किया जा सकता है: संरचित, अर्ध-संरचित और असंरचित। संरचित साक्षात्कार एक निश्चित प्रश्नावली का सख्ती से पालन करते हैं, जो मात्रात्मक विश्लेषण के लिए उपयोगी है। दूसरी ओर, असंरचित साक्षात्कार एक खुली बातचीत के समान होते हैं, जहाँ शोधकर्ता विषयों की एक सूची के साथ शुरुआत करता है लेकिन चर्चा को स्वाभाविक रूप से विकसित होने देता है। अर्ध-संरचित साक्षात्कार इन दोनों के बीच का मार्ग अपनाते हैं, जहाँ कुछ पूर्व-निर्धारित प्रश्न होते हैं, लेकिन नए प्रश्न पूछने और विषयों की गहराई में जाने की भी स्वतंत्रता होती है। इस पद्धति की सफलता काफी हद तक शोधकर्ता और उत्तरदाता के बीच 'तालमेल' या सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करने पर निर्भर करती है। एक अच्छा तालमेल विश्वास का माहौल बनाता है, जिससे उत्तरदाता संवेदनशील जानकारी साझा करने के लिए अधिक इच्छुक होते हैं। हालाँकि, साक्षात्कार पद्धति की अपनी चुनौतियाँ हैं, जिनमें 'साक्षात्कारकर्ता पूर्वाग्रह' भी शामिल है, जहाँ शोधकर्ता की उपस्थिति, लहजा या प्रश्नों का तरीका उत्तरों को अनजाने में प्रभावित कर सकता है। इसके अलावा, यह समय लेने वाली प्रक्रिया है और छोटे प्रतिदर्श आकार के कारण इसके निष्कर्षों को व्यापक जनसंख्या पर सामान्यीकृत करना मुश्किल होता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. साक्षात्कार पद्धति को मुख्य रूप से एक गुणात्मक तकनीक क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि यह संख्यात्मक आँकड़ों और सांख्यिकीय विश्लेषण पर केंद्रित है।
(B) क्योंकि यह व्यक्तियों के अनुभवों और दृष्टिकोणों की गहन समझ प्रदान करती है।
(C) क्योंकि इसका उपयोग हमेशा बड़ी जनसंख्या पर सामान्यीकरण के लिए किया जाता है।
(D) क्योंकि यह पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ और पूर्वाग्रह से मुक्त है।

157. असंरचित साक्षात्कार की सबसे उपयुक्त परिभाषा क्या है?

(B) क्योंकि वे अधिक दिलचस्प होते हैं।
(C) क्योंकि अध्यापक केवल उन्हीं विषयों को मंजूरी देते हैं।
(D) क्योंकि वे कम समय में पूरे हो जाते हैं।

107. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (अंग्रेजी शब्द)
P. Assimilation
Q. Capitalism
R. Community
S. Democracy
सूची II: (हिंदी शब्द)
1. समुदाय
2. लोकतंत्र
3. आत्मसात्मीकरण
4. पूँजीवाद
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-1, Q-2, R-3, S-4
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

108. टी.आर. माल्थस द्वारा वर्णित 'कृत्रिम निरोध' (preventive checks) किसके द्वारा लगाए जाते हैं?
(A) प्रकृति द्वारा, मानव इच्छाओं की परवाह किए बिना।
(B) मनुष्यों द्वारा, स्वयं अपने ऊपर स्वेच्छा से।
(C) सरकार द्वारा, कानून के माध्यम से।
(D) विदेशी शक्तियों द्वारा।

109. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): प्रेक्षण पद्धति ऊपर से तो बहुत आसान दिखाई देती है पर व्यावहारिक रूप से हमेशा इतनी सरल नहीं होती।
कारण (R): शोधकर्ता को यह पूर्वनिर्णय करना होता है कि कौन-सी घटना शोध कार्य की दृष्टि से प्रासंगिक है और कौन-सी नहीं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

110. 'अल्पसंख्यक समूह' (Minority group) की परिभाषा में क्या शामिल है?
(A) केवल संख्या में कम होना।
(B) समाज में सबसे शक्तिशाली समूह होना।
(C) हमेशा बहुसंख्यक समूह के साथ संघर्ष में रहना।
(D) संख्या में कम होना और असमानता की स्थिति में होना।

111. संचार माध्यमों पर शोध करते समय, प्रेक्षण के माध्यम से कही गई बातों और वास्तविक व्यवहार के बीच के अंतर का पता कैसे लगाया जा सकता है?
(A) टीवी देखने की समय-अवधि पूछना और फिर प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा उसकी जांच करना।
(B) केवल स्थानीय लोगों के व्यक्तिगत विचारों और पसंद का व्यापक स्तर पर सर्वेक्षण करके।
(C) केवल वर्तमान में प्रसारित होने वाले लोकप्रिय टीवी कार्यक्रमों का विषय-वस्तु विश्लेषण करके।
(D) विभिन्न क्षेत्रों में दैनिक समाचारपत्रों की कुल बिक्री के प्रमाणित सरकारी आँकड़े देखकर।

112. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 'बज़ारीकरण' का अर्थ है सामाजिक समस्याओं के समाधान के लिए बाज़ार-आधारित समाधानों का प्रयोग करना।
2. 'पण्यीकरण' का अर्थ है किसी गैर-पण्य वस्तु का पण्य में रूपांतरण।
3. 'उदारीकरण' का अर्थ है आर्थिक गतिविधियों पर राज्य का नियंत्रण बढ़ाना।
4. 'भूमंडलीकरण' का अर्थ है विभिन्न स्थानों के लोगों में पारस्परिक निर्भरता को बढ़ावा देना।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन असत्य है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3
(C) केवल 3 और 4
(D) केवल 1 और 4

113. 'नातेदारी' (Kinship) के संबंध किससे स्थापित होते हैं?
(A) केवल विवाह के माध्यम से
(B) विवाह अथवा वंशानुक्रम दोनों के माध्यम से
(C) केवल वंशानुक्रम की रेखा के माध्यम से
(D) केवल दोस्ती के माध्यम से

114. एक शोधकर्ता यह जानना चाहता है कि किसी एक खाली सार्वजनिक भूखंड का उपयोग पिछले बीस वर्षों में कैसे-कैसे बदला है। उसे कौन सी शोध पद्धति अपनानी चाहिए?
(A) पुराने रिकॉर्ड, तस्वीरों और साक्षात्कारों के माध्यम से ऐतिहासिक पद्धति अपनाना।
(B) भूखंड के वर्तमान उपयोगकर्ताओं का केवल एक बार किया जाने वाला सामान्य सर्वेक्षण।
(C) वर्तमान समय में उस स्थान का उपयोग करने वाले चुनिंदा लोगों का गहन साक्षात्कार।
(D) भूखंड पर होने वाली विभिन्न गतिविधियों का शोधकर्ता द्वारा केवल प्रत्यक्ष प्रेक्षण।

115. निम्नलिखित को एक तार्किक अनुक्रम में रखें:
1. अधीनस्थ समूह प्रभुत्वशाली संस्कृति को अपनाता है।
2. अधीनस्थ समूह अपनी विशिष्ट संस्कृति खो देता है।
3. सांस्कृतिक एकीकरण और समजातीयता होती है।
यह प्रक्रिया क्या कहलाती है?
(A) एकीकरण
(B) अलगाव
(C) आत्मसात्मीकरण

(D) भेदभाव

116. 'विवाह' (Marriage) की समाजशास्त्रीय परिभाषा के अनुसार, यह क्या है?
(A) दो व्यक्तियों के बीच किसी भी प्रकार का भावनात्मक या सामाजिक और आर्थिक संबंध।
(B) समाज में केवल एक पवित्र और पारंपरिक धार्मिक रीति-रिवाजों वाला समारोह।
(C) संपत्ति के उत्तराधिकार हेतु केवल एक औपचारिक और अनिवार्य कानूनी अनुबंध।
(D) वयस्क व्यक्तियों के मध्य सामाजिक रूप से स्वीकृत एवं अनुमोदित यौन संबंध।

117. 'कथन' या 'प्रवचन' (Discourse) की अवधारणा का क्या अर्थ है?
(A) किसी विशेष अवसर पर दिया जाने वाला एक बहुत ही प्रभावशाली और लंबा भाषण।
(B) दो विरोधी पक्षों के मध्य आयोजित की जाने वाली एक अत्यंत औपचारिक बहस।
(C) सामाजिक जीवन के क्षेत्र में चिंतन की एक सुव्यवस्थित रुपरेखा या परिपाटी।
(D) किसी प्रसिद्ध लेखक द्वारा रचित एक महान और उत्कृष्ट साहित्यिक कृति।

118. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (अवधारणा)
P. अंतर्विवाह
Q. बहिर्विवाह
R. एकविवाह
S. बहुविवाह
सूची II: (अर्थ)
1. समूह के बाहर विवाह
2. एक समय में एक ही साथी
3. समूह के भीतर विवाह
4. एक समय में एक से अधिक साथी
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

119. 'अतिक्रमण' (Transgression) शब्द का क्या अर्थ है?
(A) समाज में स्थापित किसी विशिष्ट नियम या व्यवहार के प्रतिमान का पूर्णतः पालन करना।
(B) अपनी स्वेच्छा से एक भौगोलिक स्थान से दूसरे स्थायी स्थान पर पलायन करना।
(C) समाज के कल्याण हेतु किसी प्रगतिशील और बिल्कुल नई परंपरा की शुरुआत करना।
(D) समाज के किसी स्थापित सामाजिक या सांस्कृतिक नियम अथवा मानदंड का उल्लंघन करना।

120. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): संस्कृतीकरण की प्रक्रिया हमेशा सामाजिक गतिशीलता की गारंटी नहीं देती है।
कारण (R): प्रभुत्वशाली जातियाँ अक्सर निम्न जातियों द्वारा उनके रीति-रिवाजों को अपनाने का विरोध करती हैं और उन्हें सामाजिक सीढ़ी में ऊपर नहीं चढ़ने देतीं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

121. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसमें लचीलापन होता है।
2. संबंधित विषयों पर विस्तार से चर्चा की जा सकती है।
3. प्रश्नों को आवश्यकतानुसार तोड़ा-मरोड़ा जा सकता है।
4. उत्तरदाता से उत्तर को स्पष्ट करने के लिए कहा जा सकता है।
5. यह बड़ी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने के लिए सर्वोत्तम है।
उपरोक्त में से कौन-से कथन 'साक्षात्कार' पद्धति के लाभों को दर्शाते हैं?
(A) केवल 1, 2 और 5
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

122. 'स्टॉक बाज़ार' (Stock market) क्या है?
(A) कंपनियों के स्टॉक या शेयरों की खरीद-फरोख्त का बाज़ार।
(B) सब्जियों की खरीद-फरोख्त का स्थान।
(C) पशुधन की खरीद-फरोख्त का स्थान।
(D) पुरानी वस्तुओं की खरीद-फरोख्त का स्थान।

123. अनुसंधान के संदर्भ में, 'व्यावहारिकता' में क्या शामिल नहीं है?
(A) अनुसंधान के लिए उपलब्ध समय की मात्रा।
(B) उपलब्ध संसाधन (लोग एवं सामग्री)।
(C) वे परिस्थितियाँ जिनमें शोध किया जाना है।
(D) शोधकर्ता की सैद्धांतिक विशेषज्ञता।

124. 'कृषि की उत्पादकता' की गणना कैसे की जाती है?
(A) किसी क्षेत्र विशेष में उपलब्ध कृषि योग्य कुल भौगोलिक क्षेत्र को वैज्ञानिक विधि से मापकर।
(B) किसी क्षेत्र में प्रति इकाई क्षेत्रफल में होने वाली कृषि उपज की कुल राशि से।
(C) किसी गांव या जिले में कृषि कार्य में लगे हुए किसानों की कुल वास्तविक संख्या से।
(D) खेती के दौरान आधुनिक तकनीकों और उपयोग किए

गए ट्रैक्टरों की कुल वार्षिक संख्या से।

125. एक शोध परियोजना का पहला चरण क्या है?
(A) एक व्यापक विषय चुनना।
(B) डेटा एकत्र करना।
(C) एक विशेष प्रश्न तैयार करना जिसका उत्तर देना हो।
(D) निष्कर्ष लिखना।

126. 'प्रतिवर्ती' (Reflexive) समाजशास्त्र क्या करने का प्रयास करता है?
(A) केवल बाह्य संसार और सामाजिक परिवेश के बारे में तार्किक स्पष्टीकरण प्रस्तुत करना।
(B) समाज के विकास हेतु केवल अमूर्त और जटिल समाजशास्त्रीय सिद्धांतों का निर्माण करना।
(C) समाजशास्त्र के अध्ययन को पूरी तरह से प्राकृतिक विज्ञान की पद्धतियों से अलग रखना।
(D) समाजशास्त्र को स्वयं एक विशिष्ट सामाजिक प्रघटना के रूप में वर्णित करना।

127. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (अनुसंधान कार्य)
P. नियमित रूप से बस का उपयोग करने वालों के विचार जानना
Q. पुराने विज्ञापनों का स्वरूप देखना
R. सार्वजनिक पार्क में लोगों के व्यवहार को देखना
S. देशव्यापी राय जानना
सूची II: (पद्धति)
1. ऐतिहासिक
2. प्रेक्षण
3. सर्वेक्षण
4. साक्षात्कार
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

128. 'आदान-प्रदान या परस्परता' (Reciprocity) क्या है?
(A) एक आधुनिक बाज़ारी अर्थव्यवस्था में मुद्रा आधारित वस्तुओं का औपचारिक विनिमय करना।
(B) गैर-बाज़ारी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं का अनौपचारिक और सांस्कृतिक विनिमय करना।
(C) त्योहारों या विशेष अवसरों पर केवल व्यक्तिगत उपहारों का स्वेच्छा से आदान-प्रदान।
(D) राष्ट्रीय स्टॉक एक्सचेंज में विभिन्न कंपनियों के शेयरों का ऑनलाइन व्यापार करना।

129. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 'लिंग' (Gender) प्रकृति द्वारा उत्पन्न होता है।
2. 'यौन' (Sex) समाज द्वारा रचित होता है।
3. 'लिंग' सामाजिक तथा सांस्कृतिक रूप से उत्पन्न अंतरों को दर्शाता है।
4. 'यौन' (Sex) शारीरिक-जैव वैज्ञानिक अंतरों को स्पष्ट करता है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सत्य हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1 और 4
(D) केवल 2 और 3

130. 'सत्तावाद' (Authoritarianism) में सरकार अपनी वैधता कहाँ से प्राप्त करती है?
(A) यह अपनी वैधता लोगों से प्राप्त नहीं करती है।
(B) जनता से, चुनावों के माध्यम से।
(C) एक लोकतांत्रिक संविधान से।
(D) अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से।

131. एक परियोजना में जो सार्वजनिक परिवहन के भविष्य पर केंद्रित है, 2060 में दिल्ली मेट्रो की कल्पना करने के लिए क्या आवश्यक है?
(A) केवल तकनीकी विशिष्टताओं का वर्णन करना।
(B) केवल किराए की दरों का अनुमान लगाना।
(C) वर्तमान परिस्थितियों से यह कैसे विकसित होगा, इसकी कल्पना करना।
(D) अन्य देशों की मेट्रो प्रणालियों की नकल करना।

132. 'जीवनावसर' (Life chances) का क्या अर्थ है?
(A) किसी व्यक्ति की जन्म से लेकर मृत्यु तक की कुल अनुमानित जीवन काल अवधि।
(B) जीवन के विभिन्न चरणों में आने वाली अनेक सामाजिक और आर्थिक कठिनाइयाँ।
(C) एक व्यक्ति द्वारा अपनाई गई संतुलित आहार और योग आधारित स्वस्थ जीवन शैली।
(D) व्यक्ति को जीवन में उपलब्ध होने वाले समस्त संभावित विकास और उन्नति के अवसर।

133. एक शोध परियोजना के दौरान, यदि कोई छात्र अपने अध्यापकों के साथ विचार-विमर्श करता है, तो इसका क्या लाभ है?
(A) इसका कोई लाभ नहीं है, क्योंकि छात्र को हमेशा पूर्णतः स्वतंत्र रूप से काम करना चाहिए।
(B) छात्र का विषय चुनने में मदद के बाद अध्यापक स्वयं उसके लिए पूरी परियोजना लिख देगा।
(C) छात्र बेहतर शोध कार्य तैयार करने हेतु आवश्यक मार्गदर्शन और दिशा प्राप्त कर सकता है।
(D) यह शैक्षणिक प्रक्रिया में केवल एक सामान्य और अनिवार्य मानी जाने वाली औपचारिकता है।

134. निम्नलिखित में से कौन सी प्रक्रिया समाज में असमानता से सबसे अधिक निकटता से जुड़ी है?
(A) एकीकरण
(B) स्तरीकरण
(C) समुदाय निर्माण

समाज में और अधिक कठोर बना दिया जाता है।
(D) संपूर्ण बाज़ार व्यवस्था को पूरी तरह से राज्य और सरकारी संस्थाओं द्वारा नियंत्रित किया जाता है।

97. 'पुत्र-अधिमान्यता' (Son preference) को कैसे मापा जा सकता है?
(A) केवल जन्म के आँकड़ों को देखकर।
(B) उपरोक्त (B) और (C) दोनों तरीकों से।
(C) केवल पुत्रों और पुत्रियों के प्रति सामाजिक व्यवहार का अवलोकन करके।
(D) लोगों से सीधे उनकी पसंद पूछकर।

98. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): शोधकर्ता को शोध कार्य के दौरान अनेक व्यावहारिक समस्याओं से निपटने के लिए तैयार रहना चाहिए।
कारण (R): वास्तविक अनुसंधान हमेशा एक सहज और बिना किसी बाधा के चलने वाली प्रक्रिया होती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

99. 'समन्वयवाद' (Syncretism) का सबसे अच्छा उदाहरण क्या है?
(A) दो विभिन्न धार्मिक परंपराओं का समाज में एक दूसरे से बिल्कुल अलग और स्वतंत्र रहना।
(B) समाज से किसी पुरानी और स्थापित धार्मिक परंपरा का पूरी तरह से धीरे-धीरे लुप्त हो जाना।
(C) विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं के मिलन से एक नए संकर रूप का निर्माण होना।
(D) समाज में एक बिल्कुल नई और आधुनिक धार्मिक परंपरा का शून्य से नवीन निर्माण होना।

100. 'वर्ण' (Varna) व्यवस्था भारतीय समाज को कितने अधिक्रमिक समूहों में विभाजित करती है?
(A) दो
(B) तीन
(C) पाँच
(D) चार

101. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सर्वेक्षण पद्धति के लाभ को दर्शाता है?
(A) यह प्रत्येक व्यक्ति के निजी जीवन के बारे में अत्यंत सूक्ष्म और गहन जानकारी प्रदान करता है।
(B) यह उत्तरदाता को साक्षात्कार के दौरान अपनी पसंद के अनुसार प्रश्न बदलने की अनुमति देता है।
(C) इसके माध्यम से एक साथ बहुत बड़ी संख्या में लोगों के विचार जाने जा सकते हैं।
(D) यह पूरी प्रक्रिया बहुत ही जल्दी और बिना किसी अतिरिक्त वित्तीय लागत के पूरी हो जाती है।

102. यदि कोई शोधकर्ता यह जानना चाहता है कि फोन सुलभ हो जाने के बाद लोग पत्र लिखने में आई गिरावट के बारे में क्या महसूस करते हैं, तो उसे किस पद्धति का उपयोग करना चाहिए?
(A) प्रेक्षण
(B) साक्षात्कार
(C) सर्वेक्षण
(D) ऐतिहासिक अभिलेख

103. 'श्रम-शक्ति' (Labour power) और 'श्रम' (Labour) में क्या अंतर है?
(A) श्रम-शक्ति पूर्णतः किया गया कार्य है और श्रम केवल कार्य करने की अंतर्निहित क्षमता है।
(B) इन दोनों पारिभाषिक शब्दों में वास्तव में कोई अंतर नहीं है, वे परस्पर पर्यायवाची हैं।
(C) श्रम-शक्ति केवल मानसिक क्षमता है, जबकि श्रम केवल बाह्य और कठिन शारीरिक कार्य है।
(D) श्रम-शक्ति कार्य करने की क्षमता है और श्रम किया गया वास्तविक कार्य है।

104. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. सार्वजनिक स्थानों का उपयोग हमेशा एक ही तरीके से होता है।
2. खाली पड़ी जगहों पर कभी-कभी छोटे-मोटे काम-धंधे चलते हैं।
3. कुछ खाली स्थानों का उपयोग विवाह या धार्मिक समारोहों के लिए किया जाता है।
4. अनेक खाली स्थानों पर बेघर गरीब लोग रहने लगते हैं।
5. सार्वजनिक स्थान के उपयोग को लेकर कभी कोई मनमुटाव नहीं होता।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सत्य हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) केवल 2, 3, 4 और 5

105. 'एकविवाह प्रथा' (Monogamy) की क्या परिभाषा है?
(A) एक समय में एक से अधिक जीवन साथी रखने की अनुमति।
(B) विवाह न करने की प्रथा।
(C) एक समय में एक ही जीवन साथी (पति/पत्नी) रखने की अनुमति।
(D) अपने ही समूह में विवाह करने की प्रथा।

106. शोध कार्य के लिए किसी सुपरिचित सामाजिक विषय को चुनना आसान क्यों होता है?
(A) क्योंकि उनके लिए जानकारी और संदर्भ आसानी से उपलब्ध होते हैं।

(C) छात्रों को समाजशास्त्रीय अवधारणाओं और कठिन शब्दावली को याद करने हेतु मजबूर करना।
(D) छात्रों को यह सिद्ध करके दिखाना कि वास्तविक शोध करना एक अत्यंत असंभव कार्य है।

144. 'संतति निरोध' (Birth control) शब्द का क्या अर्थ है?
(A) किसी विशेष समुदाय या क्षेत्र में वार्षिक जन्म दर को बहुत अधिक बढ़ावा देना।
(B) गर्भाधान रोकने हेतु विभिन्न आधुनिक गर्भनिरोधक उपायों का सफलतापूर्वक प्रयोग करना।
(C) बिना किसी योजना के केवल शिशु जन्म को अस्थायी रूप से कुछ समय हेतु रोकना।
(D) समाज में सामाजिक और धार्मिक रूप से केवल बड़े परिवारों को निरंतर प्रोत्साहित करना।

145. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): सामाजिक शोध में प्रश्न और पद्धति के बीच संगतता होनी चाहिए।
कारण (R): एक उपयुक्त अनुसंधान पद्धति का चयन यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि शोध प्रश्न का उत्तर प्रभावी ढंग से दिया जा सके।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

146. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (परियोजना कार्य का सुझाव)
P. लड़कों को भी घरेलू उपकरणों पर शोध के लिए प्रोत्साहित करना
Q. आकांक्षाओं पर शोध के लिए दूसरे स्कूल के छात्र चुनना
R. उन खाली जगहों को चुनना जिनसे शोधकर्ता परिचित हों
S. पत्र लेखन में गिरावट पर पूर्वनिर्णय न लेना
सूची II: (कारण/टिप्पणी)
1. ताकि साक्षात्कार अधिक सहज हो सके
2. ताकि विषय 'लड़कियों का' न रह जाए
3. ताकि पहले से कोई धारणा न बनाई जाए
4. ताकि विषय से बेहतर संबंध स्थापित हो सके
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

147. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. एक समाज में केवल एक ही भाषा और धर्म का होना।
2. एक बड़े राष्ट्रीय संदर्भ में अनेक विभिन्न प्रकार के समुदायों की उपस्थिति।
3. पहचानों की बहुलता अथवा अनेकता।
4. समाज में पूर्ण समरूपता।
उपरोक्त में से कौन-से कथन 'सांस्कृतिक विविधता' को दर्शाते हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 4

148. कौन सी शोध पद्धति समय के साथ होने वाले परिवर्तनों का अध्ययन करने के लिए विशेष रूप से उपयोगी है?
(A) प्रेक्षण
(B) सर्वेक्षण
(C) असंरचित साक्षात्कार
(D) ऐतिहासिक पद्धति

149. यदि आप "विभिन्न आयु वर्गों की बदलती हुई आकांक्षाओं" पर शोध कर रहे हैं, तो वयस्कों को शामिल करने से क्या पता चल सकता है?
(A) केवल बच्चों की आकांक्षाओं के बारे में।
(B) विभिन्न सरकारी और निजी क्षेत्रों में वयस्कों की वर्तमान कार्यशील नौकरी की स्थिति।
(C) युवावस्था की यादों और शिक्षा उपरांत होने वाले महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों हेतु।
(D) देश में होने वाले आगामी चुनावों के प्रति वयस्कों की व्यक्तिगत राजनीतिक प्राथमिकताएँ।

150. "अनुसंधान के बारे में पढ़ने और उसे वास्तव में करने में बहुत अंतर होता है।" इस कथन का क्या तात्पर्य है?
(A) किसी भी विषय पर अनुसंधान के बारे में केवल पुस्तकों से पढ़ना ही सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।
(B) अनुसंधान प्रक्रिया सैद्धांतिक ज्ञान की तुलना में अधिक व्यावहारिक चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है।
(C) शोध के सिद्धांतों को पढ़ने और उन्हें करने में समाजशास्त्रीय दृष्टि से कोई अंतर नहीं है।
(D) किसी भी सामाजिक विषय पर अनुसंधान करना हमेशा सिद्धांतों को पढ़ने से बहुत आसान होता है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
समाजशास्त्रीय अनुसंधान में सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग व्यापक स्तर पर आँकड़े एकत्रित करने के लिए किया जाता है। यह एक मात्रात्मक अनुसंधान तकनीक है जिसमें एक बड़ी जनसंख्या से संरचित प्रश्नावली या साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी प्राप्त की जाती है। इसका मुख्य उद्देश्य एक प्रतिदर्श (सैंपल) के अध्ययन के आधार पर पूरी जनसंख्या की विशेषताओं, व्यवहारों या दृष्टिकोणों के बारे में सामान्यीकरण करना है। सर्वेक्षणों को अक्सर दो मुख्य प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है: अनुप्रस्थ-काट (क्रॉस-सेक्शनल) सर्वेक्षण, जो एक विशिष्ट समय बिंदु पर आँकड़े एकत्र करते हैं, और अनुदैर्ध्य (लॉन्गिट्यूडिनल) सर्वेक्षण, जो समय के साथ परिवर्तनों का अध्ययन करने के लिए लंबी अवधि तक बार-बार आँकड़े एकत्र करते हैं। इस पद्धति की

(D) परस्परता

135. नीचे दो कथन दिए गए हैं, एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है।
अभिकथन (A): ऐतिहासिक पद्धति का उपयोग यह जानने के लिए किया जा सकता है कि पहले पत्रिकाएँ या समाचारपत्र होते थे।
कारण (R): सर्वेक्षण पद्धति यह बताती है कि आज क्या हो रहा है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

136. किसी भी शोध परियोजना को एक "वास्तविक" अनुसंधान परियोजना से कम विस्तृत क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि उन्हें उपलब्ध सीमित समय में पूरा करना होता है।
(B) क्योंकि छात्र उन्हें करते हैं।
(C) क्योंकि वे महत्वपूर्ण विषयों पर नहीं होते हैं।
(D) क्योंकि उनका कोई व्यावहारिक मूल्य नहीं होता है।

137. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान करें:
सूची I: (शोध समस्या)
P. विभिन्न पीढ़ियों की आकांक्षाओं का सर्वेक्षण
Q. किसी खाली जगह के उपयोग के बारे में विभिन्न समूहों की राय
R. फोन आने के बाद पत्र लिखने में गिरावट पर लोगों की भावनाएं
S. विभिन्न प्रकार के उपकरणों के प्रति लोगों की प्रतिक्रिया
सूची II: (पद्धति)
1. साक्षात्कार
2. सर्वेक्षण (याद्दाश्त के आधार पर)
(A) P-2, Q-1, R-1, S-1
(B) P-1, Q-2, R-2, S-2
(C) P-2, Q-1, R-2, S-1
(D) P-1, Q-2, R-1, S-2

138. 'पण्यरीति' (Commodity fetishism) की स्थिति में क्या होता है?
(A) सामाजिक संबंधों को वस्तुओं के मध्य होने वाले संबंधों की तरह ही अभिव्यक्त करना।
(B) उपभोक्ता बाज़ार में लोग संगठित होकर विदेशी वस्तुओं का सामूहिक बहिष्कार करने लगते हैं।
(C) आर्थिक मंदी के कारण औद्योगिक स्तर पर वस्तुओं का कुल उत्पादन पूरी तरह बंद हो जाता है।
(D) बाज़ार में उपभोक्ताओं के लिए केवल जीवन की अनिवार्य और आवश्यक वस्तुओं का उत्पादन।

139. एक शोध परियोजना के चरणों को सही कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. उपयुक्त शोध प्रणाली का चयन
2. शोध प्रश्न का सावधानीपूर्वक निर्धारण
3. आँकड़ों का विश्लेषण
4. साक्ष्य इकट्ठा करना
(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 4, 2, 1, 3

140. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. साक्षात्कार पद्धति में लचीलापन होता है।
2. सर्वेक्षण पद्धति से प्राप्त परिणाम अधिक प्रतिनिधि हो सकते हैं।
3. प्रेक्षण पद्धति में, जो घटित नहीं हो रहा है वह भी महत्वपूर्ण हो सकता है।
4. पद्धतियों का सम्मिश्रण शोध के लिए अनुशंसित नहीं है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन असत्य है/हैं?
(A) केवल 4
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 3
(D) केवल 2 और 4

141. 'उत्पादन संबंध' (Relations of production) विशेष रूप से किन संबंधों को संदर्भित करते हैं?
(A) परिवार और नातेदारी के संबंध
(B) मित्रता और प्रेम के संबंध
(C) संपत्ति तथा श्रम से संबंधित संबंध
(D) शिक्षक और छात्र के संबंध

142. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. रिक्शा कब और कैसे शुरू हुआ।
2. इसका अन्य किन साधनों के साथ मुकाबला रहा।
3. इस मुकाबले में किसकी जीत या हार हुई।
4. रिक्शा चालकों की वर्तमान सामाजिक-आर्थिक स्थिति।
5. इसका भविष्य कैसा हो सकता है।
एक छात्र अपने कस्बे में रिक्शा के इतिहास पर एक परियोजना करना चाहता है, तो उसे उपरोक्त में से कौन सी जानकारी एकत्र करने का प्रयास करना चाहिए?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5 सभी

143. समाजशास्त्रीय शिक्षा में छात्रों के लिए परियोजना कार्य (Project Work) का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) शोध के प्रति उत्साह उत्पन्न करना और आवश्यक व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना।
(B) छात्रों को शोध प्रक्रिया संपन्न करने के लिए केवल एक ही सबसे सही तरीका सिखाना।

(A) यह पूर्व-निर्धारित प्रश्नों वाली एक निश्चित प्रश्नावली का सख्ती से पालन करता है।
(B) इसमें उत्तरदाता के लिए केवल 'हाँ' या 'नहीं' में उत्तर देने वाले सीमित प्रश्न होते हैं।
(C) यह शोध प्रक्रिया हमेशा एक ही समय में एक बड़े समूह के साथ ही आयोजित की जाती है।
(D) यह खुली बातचीत जैसी विधि है जहाँ चर्चा के विषय स्वाभाविक रूप से उभरते हैं।

158. साक्षात्कार में 'तालमेल' (rapport) स्थापित करने का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) विश्वास का माहौल बनाना ताकि उत्तरदाता खुलकर जानकारी साझा कर सकें।
(B) साक्षात्कार प्रक्रिया को जल्दी से समाप्त करना।
(C) उत्तरदाता पर बौद्धिक श्रेष्ठता स्थापित करना।
(D) यह सुनिश्चित करना कि उत्तरदाता केवल सामाजिक रूप से वांछनीय उत्तर दें।

159. 'साक्षात्कारकर्ता पूर्वाग्रह' का क्या तात्पर्य है?
(A) अध्ययन के दौरान उत्तरदाता द्वारा जानबूझकर गलत या भ्रामक जानकारी प्रदान करना।
(B) शोध निष्कर्षों के सांख्यिकीय विश्लेषण के दौरान होने वाली गंभीर गणितीय त्रुटियाँ।
(C) शोधकर्ता के व्यवहार या प्रश्नों द्वारा उत्तरों का अनजाने में प्रभावित होना।
(D) चयनित उत्तरदाता का किसी कारणवश शोध साक्षात्कार की प्रक्रिया में भाग लेने से इनकार करना।

160. संरचित और अर्ध-संरचित साक्षात्कार के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) संरचित में लचीलेपन का अभाव होता है, जबकि अर्ध-संरचित में कुछ लचीलापन होता है।
(B) संरचित साक्षात्कार मूलतः गुणात्मक होते हैं, जबकि अर्ध-संरचित साक्षात्कार पूरी तरह मात्रात्मक होते हैं।
(C) संरचित साक्षात्कार केवल असंरचित विषयों पर आधारित होते हैं, जबकि अर्ध-संरचित विशिष्ट विषयों पर होते हैं।
(D) संरचित साक्षात्कार के दौरान तालमेल की आवश्यकता नहीं होती, जबकि अर्ध-संरचित में यह अनिवार्य होती है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

अवलोकन या प्रेक्षण समाजशास्त्र और नृविज्ञान में एक मौलिक अनुसंधान पद्धति है, जिसमें लोगों के व्यवहार को उनके प्राकृतिक वातावरण में व्यवस्थित रूप से देखना, सुनना और दर्ज करना शामिल है। यह पद्धति इस आधार पर टिकी है कि लोग जो कहते हैं और जो वे वास्तव में करते हैं, उसमें अक्सर अंतर होता है। अवलोकन को दो मुख्य प्रकारों में बाँटा जा सकता है: सहभागी अवलोकन और गैर-सहभागी अवलोकन। सहभागी अवलोकन में, शोधकर्ता अध्ययन किए जा रहे समूह की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेता है ताकि उनके दृष्टिकोण से दुनिया को समझ सके। इसके विपरीत, गैर-सहभागी अवलोकन में, शोधकर्ता एक बाहरी व्यक्ति के रूप में दूरी बनाए रखता है और हस्तक्षेप किए बिना व्यवहार का अवलोकन करता है। इस पद्धति की ताकत वास्तविक व्यवहार पर प्रत्यक्ष, गहन और समृद्ध आँकड़े प्रदान करने की क्षमता में निहित है। यह उन सामाजिक प्रक्रियाओं की सूक्ष्मताओं को उजागर कर सकता है जिन्हें प्रश्नावली या साक्षात्कार के माध्यम से नहीं समझा जा सकता। हालाँकि, अवलोकन की अपनी सीमाएँ हैं। एक प्रमुख चुनौती 'हॉथोर्न प्रभाव' (Hawthorne effect) है, जिसमें व्यक्ति अपने व्यवहार को बदल देते हैं क्योंकि उन्हें पता होता है कि उन पर नजर रखी जा रही है, जिससे आँकड़ों की स्वाभाविकता प्रभावित होती है। इसके अलावा, यह विधि अत्यधिक व्यक्तिपरक हो सकती है; शोधकर्ता की अपनी व्याख्याएँ और पूर्वाग्रह आँकड़ों के संग्रह और विश्लेषण को प्रभावित कर सकते हैं। छोटे पैमाने पर होने के कारण, इसके निष्कर्षों को बड़े पैमाने पर सामान्यीकृत करना भी कठिन होता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. अवलोकन पद्धति का उपयोग क्यों महत्वपूर्ण माना जाता है?
(A) क्योंकि लोग हमेशा वही करते हैं जो वे कहते हैं।
(B) क्योंकि यह सबसे तेज और सबसे सस्ती अनुसंधान विधि है।
(C) क्योंकि यह हमेशा वस्तुनिष्ठ और सामान्यीकरण योग्य परिणाम देता है।
(D) क्योंकि लोगों के कहने/और उनके वास्तविक व्यवहार में अंतर हो सकता है।

162. सहभागी और गैर-सहभागी अवलोकन के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) सहभागी अवलोकन में मानकीकृत प्रश्नावली का उपयोग होता है, जबकि गैर-सहभागी अवलोकन में ऐसा नहीं होता।
(B) सहभागी में शोधकर्ता सक्रिय रूप से भाग लेता है, जबकि गैर-सहभागी में वह दूरी बनाए रखता है।
(C) सहभागी अवलोकन की प्रकृति सदैव गुप्त होती है, जबकि गैर-सहभागी अवलोकन की प्रकृति हमेशा प्रकट होती है।
(D) सहभागी अवलोकन पूर्णतः मात्रात्मक तकनीक है, जबकि गैर-सहभागी अवलोकन पूर्णतः एक गुणात्मक तकनीक है।

163. 'हॉथोर्न प्रभाव' अनुसंधान की वैधता को कैसे प्रभावित करता है?
(A) यह शोधकर्ता को अपने व्यक्तिगत और सामाजिक पूर्वाग्रहों को अधिक स्पष्टता से पहचानने में सहायता प्रदान करता है।
(B) यह अध्ययन के दौरान सभी प्रतिभागियों को अधिक ईमानदार और सटीक उत्तर देने के लिए विशेष रूप से प्रोत्साहित करता है।
(C) यह प्रतिभागियों के व्यवहार को अस्वाभाविक बनाता है

क्योंकि उन्हें पता होता है कि उन्हें देखा जा रहा है।
(D) यह एकत्रित किए गए आँकड़ों के वैज्ञानिक सामान्यीकरण की प्रक्रिया को शोधकर्ता के लिए अत्यंत सरल बना देता है।

164. स्रोत के अनुसार, अवलोकन पद्धति की एक प्रमुख सीमा क्या है?
(A) यह पद्धति सामाजिक यथार्थ के बारे में केवल सतही और अत्यंत सीमित जानकारी ही प्रदान कर पाने में सक्षम है।
(B) यह अनुसंधान प्रक्रिया बहुत बड़ी मात्रा में जटिल सांख्यिकीय और संख्यात्मक आँकड़े निरंतर उत्पन्न करती रहती है।
(C) यह विधि हमेशा प्रतिभागियों की ओर से सामाजिक रूप से वांछनीय और आदर्श प्रतिक्रियाओं को ही जन्म देती है।
(D) यह अत्यधिक व्यक्तिपरक हो सकती है और शोधकर्ता के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से प्रभावित हो सकती है।

165. यदि कोई समाजशास्त्री एक कारखाने में श्रमिकों के बीच अनौपचारिक सामाजिक संबंधों का अध्ययन करने के लिए स्वयं एक श्रमिक के रूप में काम करना शुरु कर देता है, तो वह किस पद्धति का उपयोग कर रहा है?
(A) सहभागी अवलोकन
(B) गैर-सहभागी अवलोकन
(C) संरचित साक्षात्कार
(D) अनुप्रस्थ-काट सर्वेक्षण

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
समाजशास्त्रीय अनुसंधान में, कोई भी एकल पद्धति दोषरहित नहीं होती; प्रत्येक की अपनी ताकत और कमजोरियाँ होती हैं। इन सीमाओं को दूर करने के लिए, शोधकर्ता अक्सर 'पद्धतिगत बहुलवाद' (methodological pluralism) या 'त्रिकोणीयकरण' (triangulation) नामक एक रणनीति का उपयोग करते हैं। त्रिकोणीयकरण का तात्पर्य एक ही शोध प्रश्न की जांच के लिए दो या दो से अधिक अनुसंधान विधियों के संयोजन से है। इसका मूल सिद्धांत यह है कि एक विधि की कमजोरियों को दूसरी विधि की ताकत से संतुलित किया जा सकता है, जिससे अनुसंधान के निष्कर्षों की समग्र वैधता और विश्वसनीयता में वृद्धि होती है। उदाहरण के लिए, एक शोधकर्ता शहरी गरीबी के मुद्दे का अध्ययन करने के लिए एक बड़े पैमाने पर सर्वेक्षण (मात्रात्मक) का उपयोग कर सकता है ताकि गरीबी की व्यापकता और पैटर्न को समझा जा सके, और साथ ही, कुछ गरीब परिवारों के साथ गहन, असंरचित साक्षात्कार (गुणात्मक) आयोजित कर सकता है ताकि उनके जीवित अनुभवों और संघर्षों की गहरी समझ प्राप्त हो सके। इस तरह, सर्वेक्षण से प्राप्त 'क्या' का उत्तर साक्षात्कारों से प्राप्त 'क्यों' और 'कैसे' के उत्तरों से पूरित होता है। त्रिकोणीयकरण केवल मात्रात्मक और गुणात्मक विधियों के संयोजन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें एक ही दृष्टिकोण के भीतर विभिन्न तकनीकों (जैसे, साक्षात्कार और अवलोकन) या विभिन्न प्रकार के आँकड़ों (जैसे, प्राथमिक और द्वितीयक आँकड़े) का उपयोग भी शामिल हो सकता है। यह दृष्टिकोण सामाजिक यथार्थ की एक अधिक पूर्ण, सूक्ष्म और बहुआयामी तस्वीर प्रस्तुत करता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. समाजशास्त्रीय अनुसंधान में 'त्रिकोणीयकरण' का उपयोग क्यों किया जाता है?
(A) संपूर्ण अनुसंधान प्रक्रिया को जानबूझकर अधिक जटिल, समय लेने वाली और बहुत महंगा बनाने के लिए।
(B) एकल पद्धति की कमजोरियों को दूर करने और निष्कर्षों की समग्र वैधता को बढ़ाने के लिए।
(C) शोध के दौरान केवल मात्रात्मक आँकड़ों और सांख्यिकीय गणनाओं पर ही विशेष रूप से ध्यान केंद्रित करने के लिए।
(D) शोधकर्ता के अपने व्यक्तिगत पूर्वाग्रह और दृष्टिकोण को शोध के अंतिम निष्कर्षों में शामिल करने के लिए।

167. स्रोत में दिए गए शहरी गरीबी के उदाहरण में, सर्वेक्षण और साक्षात्कार का संयोजन कैसे फायदेमंद है?
(A) सर्वेक्षण सामाजिक समस्याओं के 'क्यों' का उत्तर प्रदान करता है और साक्षात्कार केवल 'क्या' का उत्तर देता है।
(B) सर्वेक्षण गरीबी के पैटर्न बताता है, जबकि साक्षात्कार उनके जीवित अनुभवों की गहराई को प्रकट करता है।
(C) सर्वेक्षण द्वारा केवल गुणात्मक आँकड़े प्राप्त होते हैं, जबकि साक्षात्कार सदैव मात्रात्मक आँकड़े प्रदान करता है।
(D) ये दोनों ही अनुसंधान विधियाँ सदैव एक ही प्रकार की सतही और सीमित जानकारी प्रदान करने का कार्य करती हैं।

168. त्रिकोणीयकरण का मूल सिद्धांत क्या है?
(A) एक विधि की ताकत के माध्यम से दूसरी विधि की सीमाओं या कमजोरियों को संतुलित करना।
(B) किसी भी शोध विषय के अध्ययन के लिए हमेशा सबसे सरल और सुलभ अनुसंधान पद्धति का ही चयन करना।
(C) संपूर्ण शोध कार्य के लिए केवल एक ही विशिष्ट स्रोत से सभी प्रकार के आँकड़े निरंतर एकत्र करना।
(D) अपने अनुसंधान कार्य को केवल एक ही विशिष्ट सैद्धांतिक दृष्टिकोण या विचारधारा तक सीमित रखना।

169. निम्नलिखित में से कौन सा त्रिकोणीयकरण का उदाहरण नहीं है?
(A) एक व्यापक सर्वेक्षण करने के साथ-साथ चुनिंदा उत्तरदाताओं का गहन साक्षात्कार आयोजित करना।
(B) सहभागी अवलोकन तकनीक के साथ-साथ संबंधित क्षेत्र के पुराने ऐतिहासिक दस्तावेजों का विश्लेषण करना।
(C) किसी विषय के अध्ययन के लिए केवल एक बड़े पैमाने पर सर्वेक्षण तकनीक का उपयोग करना।
(D) एक ही शोध परियोजना में विभिन्न स्वतंत्र शोधकर्ताओं

द्वारा अलग-अलग विधि से आँकड़े एकत्र करवाना।

170. त्रिकोणीयकरण को एक मजबूत अनुसंधान रणनीति क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि यह शोध प्रक्रिया में लगने वाले बहुमूल्य समय और आर्थिक संसाधनों की काफी बचत करता है।
(B) क्योंकि यह प्रक्रिया हमेशा पूर्णतः वैज्ञानिक और सामान्यीकरण योग्य परिणाम सुनिश्चित करने वाली होती है।
(C) क्योंकि यह शोधकर्ता को किसी भी प्रकार की व्यक्तिपरक व्याख्याओं और पूर्वाग्रहों से पूरी तरह बचाता है।
(D) क्योंकि यह सामाजिक यथार्थ की अधिक पूर्ण, सूक्ष्म और बहुआयामी तस्वीर प्रस्तुत करता है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

सार्वजनिक परिवहन किसी भी शहरी समाज की जीवन रेखा है, जो न केवल लोगों को गतिशीलता प्रदान करता है, बल्कि सामाजिक संरचना और आर्थिक गतिविधियों को भी प्रभावित करता है। एक समाजशास्त्रीय परियोजना के रूप में, सार्वजनिक परिवहन का अध्ययन विभिन्न वर्गों, लिंगों और आयु समूहों के लिए इसके महत्व और पहुंच का विश्लेषण कर सकता है। उदाहरण के लिए, एक शोध यह पता लगा सकता है कि निम्न-आय वर्ग के श्रमिक अपने कार्यस्थलों तक पहुँचने के लिए सार्वजनिक बसों पर कितने निर्भर हैं, जबकि मध्यम वर्ग के लोग निजी वाहनों या मेट्रो जैसी तीव्र पारगमन प्रणालियों को प्राथमिकता दे सकते हैं। यह निर्भरता केवल आर्थिक नहीं, बल्कि सामाजिक भी है; बसें और ट्रेनें विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के लोगों के लिए साझा स्थान बन जाती हैं, जहाँ सामाजिक अंतःक्रिया के अनौपचारिक नियम देखे जा सकते हैं। एक शोध परियोजना महिलाओं के लिए सार्वजनिक परिवहन की सुरक्षा संबंधी चिंताओं पर भी ध्यान केंद्रित कर सकती है, जिसमें उनके यात्रा के अनुभवों का साक्षात्कार के माध्यम से अध्ययन किया जा सकता है। इसके अलावा, अवलोकन पद्धति का उपयोग यह समझने के लिए किया जा सकता है कि पीक आवर्स के दौरान लोग किस प्रकार व्यवहार करते हैं, सीटों के लिए प्रतिस्पर्धा कैसे होती है, और बुजुर्गों या विकलांग व्यक्तियों के प्रति कैसा व्यवहार किया जाता है। इस प्रकार, सार्वजनिक परिवहन का अध्ययन केवल गतिशीलता का विश्लेषण नहीं है, बल्कि यह शहरी जीवन, सामाजिक असमानता और रोजमर्रा की सामाजिक अंतःक्रियाओं को समझने का एक शक्तिशाली माध्यम है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. स्रोत के अनुसार, सार्वजनिक परिवहन का समाजशास्त्रीय अध्ययन क्यों महत्वपूर्ण है?
(A) यह अध्ययन केवल सार्वजनिक वाहनों की तकनीकी विशिष्टताओं और उनकी इंजनों की क्षमता का विश्लेषण करता है।
(B) यह अनुसंधान मुख्य रूप से बड़ी परिवहन कंपनियों के शुद्ध लाभ और उनके व्यावसायिक मॉडल का अध्ययन करता है।
(C) यह शहरी जीवन, सामाजिक असमानता और सामाजिक अंतःक्रिया को समझने का माध्यम है।
(D) यह शोध केवल विभिन्न रूटों के लिए टिकट की कीमतों के आर्थिक निर्धारण और राजस्व पर ही केंद्रित रहता है।

172. यदि कोई शोधकर्ता महिलाओं के लिए सार्वजनिक परिवहन में सुरक्षा के अनुभव का अध्ययन करना चाहता है, तो स्रोत के अनुसार कौन सी विधि सबसे उपयुक्त होगी?
(A) ऐतिहासिक दस्तावेजों का विश्लेषण
(B) अनुभव जानने के लिए साक्षात्कार
(C) एक संरचित सर्वेक्षण
(D) एक नियंत्रित प्रयोगशाला प्रयोग

173. स्रोत यह क्यों सुझाता है कि बसें और ट्रेनें "साझा स्थान" हैं?
(A) क्योंकि वे वाहन किसी निजी स्वामित्व वाली संस्था या व्यक्ति द्वारा संचालित और नियंत्रित हैं।
(B) क्योंकि वे साधन केवल एक ही विशिष्ट सामाजिक या आर्थिक वर्ग के व्यक्तियों द्वारा उपयोग किए जाते हैं।
(C) क्योंकि उन सार्वजनिक वाहनों में हमेशा बहुत आरामदायक और सुरक्षित सीटों की व्यवस्था उपलब्ध होती है।
(D) क्योंकि वे विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के लोगों को एक स्थान पर लाते हैं।

174. पीक आवर्स के दौरान यात्रियों के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए कौन सी शोध पद्धति विशेष रूप से उपयोगी होगी?
(A) अवलोकन पद्धति
(B) प्रश्नावली पद्धति
(C) द्वितीयक आँकड़ा विश्लेषण
(D) ऐतिहासिक पद्धति

175. स्रोत के अनुसार, विभिन्न सामाजिक वर्गों द्वारा सार्वजनिक परिवहन के उपयोग में क्या अंतर देखा जा सकता है?
(A) समाज के सभी सामाजिक वर्ग सार्वजनिक परिवहन की सुविधाओं का एक ही समान रूप से निरंतर उपयोग करते हैं।
(B) शहर में रहने वाला केवल मध्यम वर्ग ही नियमित रूप से सार्वजनिक परिवहन की सुविधाओं का उपयोग करता है।
(C) निम्न-आय वर्ग बसों पर निर्भर हो सकता है, जबकि मध्यम वर्ग अन्य साधनों को चुन सकता है।
(D) उच्च-आय वर्ग के लोग अपनी गतिशीलता के लिए सार्वजनिक परिवहन के साधनों पर सबसे अधिक निर्भर रहते हैं।

ही सही पद्धति होती है। वास्तव में, पद्धतियों का चयन शोध के लक्ष्यों और उपलब्ध संसाधनों पर निर्भर करता है। अक्सर विविध पद्धतियों का समन्वय अधिक गहन और विश्वसनीय परिणाम प्रदान करने में सहायक सिद्ध होता है।

65. (B) अगली पीढ़ी का आकार वर्तमान पीढ़ी के लगभग बराबर रहे
प्रतिस्थापन दर (2.1) वह औसत संख्या है जो एक पीढ़ी को अगली पीढ़ी से प्रतिस्थापित करने के लिए आवश्यक है। यदि यह दर बनी रहती है, तो जनसंख्या न तो बढ़ती है और न ही घटती है, बल्कि स्थिर रहती है। यह संतुलन दीर्घकालिक सामाजिक और आर्थिक स्थिरता के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। इससे कम दर जनसंख्या में गिरावट लाती है, जबकि अधिक दर तीव्र वृद्धि का कारण बनती है।

66. (A) मानव मल तथा कूड़ा-कर्कट को हाथ से साफ करने से
अपमार्जन या 'हाथ से मैला ढोना' एक अत्यंत अपमानजनक प्रथा है जो भारत में ऐतिहासिक रूप से कुछ विशेष जातियों पर थोपी गई थी। यह सामाजिक भेदभाव और अस्पृश्यता का एक चरम रूप है। यद्यपि कानूनन इस पर रोक लगा दी गई है, लेकिन समाज के कुछ हिस्सों में यह अब भी विद्यमान है। यह प्रथा मानवीय गरिमा के विरुद्ध है और सामाजिक सुधार आंदोलनों का मुख्य केंद्र रही है।

67. (B) केवल 1, 2 और 4
शोध पद्धति का चयन हमेशा व्यावहारिक कारकों से प्रभावित होता है। समय और संसाधनों (धन और जनशक्ति) की उपलब्धता यह तय करती है कि कौन-सी विधि अपनाई जाए। शोधकर्ता को यह भी समझना चाहिए कि सामाजिक परिस्थितियाँ पद्धति के प्रभाव को बदल सकती हैं। इसके अलावा, फील्ड वर्क के दौरान आने वाली अप्रत्याशित चुनौतियों के प्रति लचीला रुख अपनाना शोध की सफलता के लिए अत्यंत आवश्यक होता है।

68. (D) 5, 9, 13, 17, 21...
गणितीय या समांतर वृद्धि वह श्रृंखला है जिसमें प्रत्येक अगला अंक एक निश्चित संख्या को जोड़ने पर प्राप्त होता है। दिए गए उदाहरण में प्रत्येक पद में '4' जोड़ा जा रहा है, जो समांतर प्रगति को दर्शाता है। थॉमस माल्थस के सिद्धांत के अनुसार, खाद्य संसाधनों की वृद्धि समांतर दर से होती है, जबकि जनसंख्या गुणोत्तर दर से बढ़ती है, जिससे भविष्य में संसाधनों की कमी का संकट उत्पन्न होता है।

69. (C) विषय-वस्तु का विश्लेषण
समाचार पत्रों में किसी विशेष सामग्री के स्थान और महत्व को मापने के लिए विषय-वस्तु विश्लेषण सबसे सटीक पद्धति है। इसमें शोधकर्ता समाचारों की श्रेणीबद्धता, उनकी लंबाई और दी गई प्राथमिकता का व्यवस्थित अध्ययन करता है। यह विधि संचार माध्यमों के झुकाव और उनकी कार्यप्रणाली को वैज्ञानिक ढंग से समझने में मदद करती है, जो केवल अवलोकन या साक्षात्कार जैसी अन्य विधियों से पूर्णतः संभव नहीं है।

70. (B) एक व्यक्ति द्वारा निभाई जाने वाली विभिन्न सामाजिक भूमिकाओं के बीच संघर्ष।
भूमिका संघर्ष तब उत्पन्न होता है जब एक व्यक्ति एक ही समय में दो या दो से अधिक भूमिकाओं को निभाता है और उनकी अपेक्षाएँ आपस में टकराती हैं। उदाहरण के लिए, एक कामकाजी महिला को अपने पेशेवर दायित्वों और घरेलू जिम्मेदारियों के बीच सामंजस्य बिठाने में आने वाली कठिनाई। यह स्थिति अक्सर तनाव और भ्रम पैदा करती है, क्योंकि दोनों भूमिकाओं को एक साथ कुशलता से निभाना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

71. (D) एक कानूनी दस्तावेज़ जिसमें मृत्यु के बाद संपत्ति के उपयोग के बारे में निर्देश होते हैं।
वसीयतनामा एक महत्वपूर्ण विधिक प्रपत्र है जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी संपत्ति के उत्तराधिकार का निर्धारण करता है। यह सुनिश्चित करता है कि व्यक्ति की मृत्यु के बाद उसके संसाधनों का वितरण उसकी इच्छा के अनुसार हो। समाजशास्त्र में, यह परिवारों के भीतर संपत्ति के हस्तांतरण और शक्ति संबंधों को समझने का एक माध्यम है, क्योंकि यह पीढ़ियों के बीच आर्थिक संसाधनों के प्रवाह को नियंत्रित करता है।

72. (A) एक टेलीफोन कंपनी द्वारा अपने ग्राहक सेवा कार्य के लिए किसी दूसरी कंपनी को ठेका देना।
बिजनेस प्रोसेस आउटसोर्सिंग (BPO) एक ऐसी रणनीति है जहाँ एक मुख्य कंपनी अपने गैर-प्रमुख कार्यों को किसी बाहरी विशेषज्ञ कंपनी को सौंप देती है। यह अक्सर लागत कम करने और दक्षता बढ़ाने के लिए किया जाता है। टेलीफोन कंपनी द्वारा कॉल सेंटर सेवाओं को आउटसोर्स करना इसका एक मानक उदाहरण है। यह वैश्विक अर्थव्यवस्था में श्रम के विभाजन और सूचना प्रौद्योगिकी के प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

73. (A) 3, 1, 4, 2
शोध परियोजना का एक व्यवस्थित क्रम होता है। सबसे पहले एक केंद्रित शोध प्रश्न चुना जाता है, जो अध्ययन की दिशा तय करता है। इसके बाद उस प्रश्न के लिए सबसे उपयुक्त पद्धति का चुनाव किया जाता है। फिर फील्ड में जाकर साक्ष्य जुटाने हेतु प्रश्नावली वितरित और संकलित की जाती है। अंत में, प्राप्त परिणामों का गहराई से विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाले जाते हैं, जो पूरी प्रक्रिया को सार्थक बनाते हैं।

74. (A) केवल 1, 2 और 3
परिवार की समाजशास्त्रीय परिभाषा में नातेदारी संबंधों से जुड़े लोगों का समूह महत्वपूर्ण है, जो बच्चों की देखभाल और सामाजिकरण की जिम्मेदारी साझा करते हैं। हालांकि सदस्य एक ही घर में रह सकते हैं, लेकिन आधुनिक समय में काम या अन्य कारणों से अलग रहने वाले सदस्य भी परिवार का हिस्सा माने जाते हैं। साथ ही, परिवारों में दो से अधिक पीढ़ियाँ (जैसे दादा-दादी) भी शामिल हो सकती हैं, जो इसे विस्तृत बनाती हैं।

व्यापक और संतुलित दृष्टिकोण प्राप्त होता है, जिससे निष्कर्षों की विश्वसनीयता और गहराई बढ़ जाती है।

11. (D) व्यक्तिगत वाहनों के निर्माण की तकनीकी प्रक्रिया
सार्वजनिक परिवहन पर समाजशास्त्रीय शोध मुख्य रूप से मानवीय संबंधों, सामाजिक आवश्यकताओं और ऐतिहासिक परिवर्तनों पर केंद्रित होता है। परिवहन की भूमिका, संबंधित समस्याएँ और उनके विकास का इतिहास समाजशास्त्र के अध्ययन क्षेत्र में आते हैं। इसके विपरीत, व्यक्तिगत वाहनों के निर्माण की तकनीकी और इंजीनियरिंग प्रक्रिया पूरी तरह से यांत्रिक और औद्योगिक विज्ञान का विषय है, जिसका प्रत्यक्ष सामाजिक संबंध नगण्य है।

12. (B) कारण और वर्तमान से जुड़ाव
विज्ञान-कथा लेखन केवल कोरी कल्पना नहीं है, बल्कि यह वर्तमान वास्तविकता और वैज्ञानिक तर्क पर आधारित होनी चाहिए। दिल्ली मेट्रो जैसी समकालीन व्यवस्था पर भविष्य की कल्पना करते समय, लेखक को उन परिवर्तनों के पीछे ठोस कारण देने होते हैं। वर्तमान परिस्थितियों से जुड़ाव ही कथा को विश्वसनीय बनाता है और पाठकों को यह समझने में मदद करता है कि भविष्य कैसा और क्यों हो सकता है।

13. (B) केवल 1, 2 और 3
संचार माध्यमों के अध्ययन में जनसंचार के साधन जैसे टीवी और इंटरनेट के साथ-साथ व्यक्तिगत संपर्क के माध्यम भी शामिल हैं। लोगों की फिल्मों या पुस्तकों के प्रति पसंद उनकी सांस्कृतिक पहचान को दर्शाती है। आधुनिक समाज में मोबाइल फोन जैसे नए माध्यमों के प्रभाव का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि ये सामाजिक व्यवहार और संवाद के तरीकों को मौलिक रूप से बदल रहे हैं।

14. (D) वस्तु के सामाजिक संबंधों और उसके प्रतीकात्मक महत्त्व को गहराई से खोजना।
किसी वस्तु की जीवनी लिखने का उद्देश्य उसके केवल भौतिक गुणों का अध्ययन करना नहीं है, बल्कि समाज के साथ उसके जुड़ाव को समझना है। यह परियोजना दिखाती है कि कैसे एक साधारण वस्तु उत्पादन, विनिमय और उपभोग की प्रक्रिया के दौरान विभिन्न मानवीय संबंधों का हिस्सा बनती है। यह वस्तु के पीछे छिपे सांस्कृतिक अर्थों और सामाजिक प्रतिष्ठा के प्रतीकों का विश्लेषण करने में मदद करती है।

15. (A) संस्कृतीकरण
समाजशास्त्री एम.एन. श्रीनिवास द्वारा प्रतिपादित संस्कृतीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें निम्न या मध्यम जातियाँ उच्च जातियों के रीति-रिवाजों और जीवन शैली का अनुकरण करती हैं। इसका मुख्य उद्देश्य जाति अधिक्रम में अपनी सामाजिक स्थिति को ऊपर उठाना होता है। यह प्रक्रिया केवल कर्मकांडों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें खान-पान और धार्मिक विश्वासों में परिवर्तन भी शामिल है, जिससे सामाजिक गतिशीलता बढ़ती है।

16. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
सामाजिक अवधारणाएँ मानवीय व्यवहार के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करती हैं। आत्मसात्मीकरण में एक अधीनस्थ समूह अपनी पहचान खो देता है, जबकि एकीकरण में सांस्कृतिक विभिन्नताएँ निजी क्षेत्र तक सीमित हो जाती हैं। भेदभाव एक नकारात्मक व्यवहार है जो लोगों को संसाधनों से दूर रखता है, और पूर्वाग्रह किसी समूह के प्रति पहले से बने हुए अनम्य और अक्सर भ्रामक विचारों को संदर्भित करता है।

17. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पूँजीवाद में बाज़ार का विस्तार मानवीय श्रम तक हो जाता है। चूंकि श्रमिकों के पास उत्पादन के साधनों जैसे भूमि या कारखानों का स्वामित्व नहीं होता, इसलिए उनके पास जीविकोपार्जन के लिए केवल अपनी शारीरिक या मानसिक मेहनत बेचने का विकल्प बचता है। यह स्थिति श्रम को एक बिकाऊ वस्तु में बदल देती है, जो पूँजीवादी व्यवस्था की एक मौलिक और अनिवार्य विशेषता मानी जाती है।

18. (A) family
नागरिक समाज में वे स्वैच्छिक संस्थाएँ और संगठन शामिल होते हैं जो राज्य और बाज़ार के नियंत्रण से बाहर स्वतंत्र रूप से कार्य करते हैं। इसमें गैर-सरकारी संगठन, ट्रेड यूनियन और सामाजिक आंदोलन शामिल हैं जो नागरिकों के अधिकारों के लिए आवाज उठाते हैं। यद्यपि परिवार एक महत्वपूर्ण सामाजिक इकाई है, लेकिन इसे नागरिक समाज की श्रेणी में नहीं रखा जाता क्योंकि यह प्राथमिक और निजी संबंधों का क्षेत्र है।

19. (C) घर-परिवार के भीतर श्रम-विभाजन पर उनका प्रभाव
घरेलू उपकरणों पर समाजशास्त्रीय शोध यह समझने के लिए किया जाता है कि कैसे तकनीक ने पारिवारिक जीवन को प्रभावित किया है। इन उपकरणों के आने से घरेलू कार्यों में लगने वाला समय और मेहनत कम हुई है, जिससे पारंपरिक श्रम-विभाजन में बदलाव आ सकता है। यह अध्ययन लैंगिक भूमिकाओं और घर के भीतर शक्ति संबंधों के बदलते स्वरूप को समझने में बहुत ही सहायक सिद्ध होता है।

20. (D) उपरोक्त सभी
सुझाए गए सभी विषय सामाजिक परिवर्तन के विभिन्न आयामों को दर्शाते हैं। सार्वजनिक स्थानों का उपयोग समय के साथ बदलता है, जैसे पार्कों का रूपांतरण। आकांक्षाओं का अध्ययन यह दिखाता है कि कैसे पीढ़ियों के साथ लक्ष्य बदलते हैं। वस्तु की जीवनी भी उसके उत्पादन से लेकर उपभोग तक की यात्रा और बदलते महत्व को स्पष्ट करती है। ये सभी परियोजनाएँ समाज की निरंतर विकासशील प्रकृति को समझने पर केंद्रित हैं।

21. (C) आकांक्षाओं में परिवर्तन के विशेष स्वरूप का अध्ययन करने हेतु।
विभिन्न आयु वर्गों के छात्रों का चयन इसलिए किया जाता है ताकि यह समझा जा सके कि उम्र और परिपक्वता के साथ जीवन के लक्ष्यों में क्या बदलाव आता है। छोटे बच्चों की

43. (D) विभिन्न क्षेत्रों के आर्थिक, सामाजिक, प्रौद्योगिकीय और सांस्कृतिक परिवर्तनों की।
भूमंडलीकरण केवल एक आर्थिक प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह दुनिया भर में लोगों, विचारों और वस्तुओं के तीव्र प्रवाह को संदर्भित करता है। इसमें सूचना तकनीक के विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक आदान-प्रदान और राष्ट्रीय सीमाओं का बढ़ता हुआ महत्व शामिल है। यह एक ऐसी जटिल श्रृंखला है जो वैश्विक स्तर पर विभिन्न समाजों को एक-दूसरे पर अधिक निर्भर बनाती है, जिससे सामाजिक जीवन के सभी क्षेत्र प्रभावित होते हैं।

44. (B) यह एक ऐसा आर्थिक समूह है जो उत्पादन के सामाजिक संबंधों में समान स्थिति पर आधारित होता है।
वर्ग एक ऐसी सामाजिक श्रेणी है जो मुख्य रूप से आर्थिक आधार पर निर्मित होती है। जाति के विपरीत, वर्ग जन्म से निर्धारित नहीं होता और इसमें गतिशीलता संभव है। एक ही वर्ग के लोगों की आय, संपत्ति और उत्पादन के साधनों तक पहुँच समान होती है। यह स्थिति उनकी जीवनशैली और अवसरों को प्रभावित करती है, जो समाज में शक्ति के वितरण को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम है।

45. (C) यह काम हमेशा बहुत आसान और सरल होता है।
प्रत्यक्ष प्रेक्षण देखने में सरल लग सकता है, लेकिन यह एक चुनौतीपूर्ण पद्धति है। शोधकर्ता को यह निर्णय लेना पड़ता है कि कौन-सी घटना प्रासंगिक है और उसे निरंतर बदलती परिस्थितियों में वस्तुनिष्ठ बने रहना पड़ता है। घटनाओं का सटीक अभिलेख तैयार करना और अनपेक्षित व्यवहारों को समझना मानसिक एकाग्रता और धैर्य की मांग करता है, जो इसे एक जटिल वैज्ञानिक प्रक्रिया बनाता है।

46. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
सामाजिक और राजनीतिक अवधारणाएँ पहचान के विभिन्न रूपों को स्पष्ट करती हैं। विविधता समाज में विभिन्न समुदायों की मौजूदगी को दर्शाती है, जबकि संजातीयता साझी सांस्कृतिक पहचान पर आधारित होती है। राष्ट्रवाद राष्ट्र के प्रति निष्ठा का भाव है, और क्षेत्रवाद किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र के हितों और पहचान के प्रति अत्यधिक समर्पण को प्रदर्शित करने वाली एक शक्तिशाली विचारधारा है।

47. (A) वंचन और भेदभाव का प्रतिफल जो लोगों को समाज में शामिल होने से रोकता है।
सामाजिक अपवर्जन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा कुछ समूहों को मुख्यधारा के समाज से जानबूझकर बाहर रखा जाता है। यह केवल गरीबी नहीं है, बल्कि संसाधनों, अधिकारों और अवसरों तक पहुँच का अभाव है। यह अपवर्जन अक्सर जाति, धर्म या लिंग के आधार पर होता है और व्यक्तियों की इच्छा के विरुद्ध उन पर थोपा जाता है, जिससे उनकी सामाजिक भागीदारी बाधित होती है।

48. (A) केवल 1, 2 और 3
घरेलू उपकरणों पर समाजशास्त्रीय शोध के दौरान, मुख्य ध्यान मानवीय संबंधों और कार्यों पर होता है। इसमें यह देखा जाता है कि क्या इन मशीनों ने वास्तव में श्रम को हल्का किया है और क्या इससे परिवार के भीतर विभिन्न आयु या लिंग के लोगों के काम करने के तरीकों में कोई बदलाव आया है। कंपनियों के मुनाफे जैसे वित्तीय प्रश्न आर्थिक अध्ययन का हिस्सा हैं, न कि सामाजिक व्यवहार का।

49. (B) अधिशेष श्रम से प्राप्त वह मूल्य जो मज़दूरी चुकाने के बाद शेष बच जाता है।
मार्क्सवादी सिद्धांत में, 'अतिरिक्त मूल्य' वह लाभ है जो पूँजीपति श्रमिकों के श्रम के माध्यम से कमाते हैं। श्रमिक जो मूल्य पैदा करते हैं, वह उन्हें दी जाने वाली मजदूरी से कहीं अधिक होता है। इस मूल्य और मजदूरी के बीच का अंतर ही पूँजीपति की संपत्ति बढ़ाता है। यह अवधारणा पूँजीवाद में होने वाले आर्थिक शोषण और वर्गों के बीच असमानता को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

50. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
साक्षात्कार पद्धति अपनी अनुकूलनशीलता के कारण श्रेष्ठ मानी जाती है। इसमें शोधकर्ता केवल पहले से तय प्रश्नों तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह उत्तरदाता के जवाबों के अनुसार नए प्रश्न पूछ सकता है या किसी विषय की गहराई में जा सकता है। यह लचीलापन किसी सामाजिक मुद्दे के अनछुए पहलुओं को सामने लाने और विषय की व्यापक समझ विकसित करने में बहुत ही प्रभावी सिद्ध होता है।

51. (C) भारतीय गाँवों में उपज और सेवाओं का गैर-बाज़ारी पारंपरिक आदान-प्रदान।
जजमानी व्यवस्था ग्रामीण भारत की एक पारंपरिक आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था थी। इसमें विभिन्न जातियाँ एक-दूसरे को सेवाएँ प्रदान करती थीं और बदले में उन्हें अनाज या अन्य वस्तुएँ दी जाती थीं। यह नकद भुगतान पर आधारित न होकर पीढ़ियों से चले आ रहे संबंधों पर आधारित थी। यह व्यवस्था ग्रामीण समाज में आत्मनिर्भरता और पारस्परिक निर्भरता का एक महत्वपूर्ण उदाहरण रही है।

52. (D) ज़िंदगी जीने का तरीका, विशेष रूप से उपभोग के विशिष्ट प्रकार।
जीवनशैली समाजशास्त्र में केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं है, बल्कि यह किसी व्यक्ति या समूह की सामाजिक और आर्थिक स्थिति का प्रतिबिंब है। इसमें खान-पान, पहनावा, मनोरंजन के साधन और उपभोग की आदतें शामिल होती हैं। जीवनशैली अक्सर वर्ग, पहचान और प्रतिष्ठा को दर्शाती है, जिससे यह पता चलता है कि लोग अपनी पहचान को समाज में किस प्रकार व्यक्त और प्रदर्शित करना चाहते हैं।

53. (C) केवल 1, 3 और 4
उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के बीच गहरा संबंध है, जहाँ एक देश दूसरे पर नियंत्रण स्थापित करता है। उपनिवेशवाद अक्सर विदेशी क्षेत्रों में बसने और वहाँ के संसाधनों पर प्रत्यक्ष नियंत्रण करने की प्रक्रिया है। इसके विपरीत, साम्राज्यवाद में शासक देश दूर से ही अपनी राजनीतिक और सैन्य शक्ति के

32. (B) तकनीकी कसौटियाँ और व्यावहारिकता दोनों
शोध पद्धति का चयन करते समय शोधकर्ता को वैज्ञानिक मानकों और व्यावहारिक सीमाओं के बीच संतुलन बनाना होता है। तकनीकी कसौटियाँ यह सुनिश्चित करती हैं कि पद्धति शोध प्रश्न के लिए उपयुक्त और सटीक हो। वहीं, व्यावहारिकता के अंतर्गत उपलब्ध समय, बजट और पहुँच जैसे कारकों पर विचार किया जाता है। इन दोनों का समन्वय ही एक सफल और विश्वसनीय शोध परियोजना का आधार बनता है।

33. (B) केवल 1, 2 और 3
सर्वेक्षण पद्धति की अपनी कुछ सीमाएँ हैं। यदि प्रश्न कठिन हों, तो उत्तरदाता उन्हें गलत समझ सकते हैं, जिससे डेटा की सटीकता प्रभावित होती है। इसमें साक्षात्कार की तरह लचीलापन नहीं होता, इसलिए नए उभरते हुए मुद्दों पर चर्चा संभव नहीं है। साथ ही, यह एक विशिष्ट समय की स्थिति को दर्शाता है और निरंतर बदलते सामाजिक परिवेश की जटिलताओं को पूरी तरह पकड़ने में असमर्थ रह सकता है।

34. (A) मुक्त बाज़ार प्रणाली और आर्थिक मामलों में सरकार का अल्पतम हस्तक्षेप
'अहस्तक्षेप' या लैज़े फेयर फ्रांसीसी शब्द है जिसका अर्थ है 'होने दो'। यह आर्थिक सिद्धांत इस विचार पर आधारित है कि बाज़ार अपनी शक्तियों के माध्यम से स्वयं को संतुलित कर सकता है। इसमें सरकार की भूमिका केवल कानून व्यवस्था बनाए रखने तक सीमित होती है, जिससे व्यापार और उद्योगों को बिना किसी बाहरी बाधा के विकसित होने का अवसर मिलता है, जो आर्थिक स्वतंत्रता को बढ़ावा देता है।

35. (C) संरचित में पूर्व निर्धारित प्रश्न होते हैं, असंरचित में वार्तालाप से प्रश्न उभरते हैं।
संरचित साक्षात्कार एक निश्चित प्रश्नावली का पालन करता है ताकि सभी उत्तरदाताओं से समान डेटा प्राप्त हो सके। इसके विपरीत, असंरचित साक्षात्कार एक खुली बातचीत की तरह होता है, जहाँ शोधकर्ता उत्तरदाता के अनुभवों के अनुसार नए सवाल पूछता है। संरचित साक्षात्कार मात्रात्मक विश्लेषण के लिए बेहतर है, जबकि असंरचित साक्षात्कार किसी विषय की गुणात्मक और सूक्ष्म समझ विकसित करने में अधिक उपयोगी होता है।

36. (D) ताकि वे अधिक सहज और खुले मन से बात कर सकें।
शोध के दौरान उत्तरदाता की सहजता अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि छात्र अपने ही विद्यालय के साथियों का साक्षात्कार लेते हैं, तो वे अपनी वास्तविक आकांक्षाओं या समस्याओं को बताने में झिझक सकते हैं। अपरिचित छात्रों के साथ बातचीत करते समय वे अपनी व्यक्तिगत राय अधिक स्पष्टता और ईमानदारी से व्यक्त कर पाते हैं। इससे शोध की गुणवत्ता बढ़ती है और प्राप्त डेटा पूर्वाग्रहों से मुक्त रहता है।

37. (C) समाचार पत्रों या टीवी कार्यक्रमों में पर्यावरण जैसे विषयों के विवेचन पर
विषय-वस्तु विश्लेषण एक ऐसी शोध पद्धति है जो मीडिया द्वारा प्रसारित सामग्री के संदेशों और प्रवृत्तियों की जाँच करती है। इसमें यह देखा जाता है कि किसी विशेष मुद्दे, जैसे पर्यावरण, को कितना महत्व दिया गया है और उसे किस दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। यह केवल संख्या या लागत का अध्ययन नहीं है, बल्कि संचार के सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभावों का एक सूक्ष्म विश्लेषण है।

38. (B) जन्म परिवार जन्म आधारित होता है, ससुराल का परिवार विवाह आधारित होता है।
समाजशास्त्र में परिवारों को उनके मूल के आधार पर वर्गीकृत किया जाता है। 'जन्म परिवार' वह प्राथमिक इकाई है जहाँ व्यक्ति का जन्म और पालन-पोषण होता है, जिसमें माता-पिता और भाई-बहन शामिल होते हैं। वहीं, 'ससुराल का परिवार' विवाह के माध्यम से बनता है और इसमें पति या पत्नी के संबंधी शामिल होते हैं। यह अंतर सामाजिक संबंधों और उत्तरदायित्वों की प्रकृति को समझने के लिए मौलिक है।

39. (D) एक सरकार, एक निर्धारित भौगोलिक क्षेत्र और नागरिक
राष्ट्र-राज्य आधुनिक राजनीति की एक प्रमुख अवधारणा है। यह केवल एक सांस्कृतिक समुदाय नहीं है, बल्कि इसमें एक संप्रभु सरकार होती है जिसका एक स्पष्ट भौगोलिक क्षेत्र पर नियंत्रण होता है। इसके निवासी नागरिक कहलाते हैं जिनके पास अधिकार और कर्तव्य होते हैं। यह संगठन साझा राजनीतिक पहचान और प्रशासनिक संरचना के माध्यम से आधुनिक विश्व व्यवस्था में समुदायों को संगठित करने का कार्य करता है।

40. (A) किसी समूह के लोगों का एक निश्चित और अनम्य (अपरिवर्तनीय) स्वरूप।
रुढ़िबद्ध धारणाएं किसी विशेष सामाजिक समूह के प्रति बनाए गए सरलीकृत और अक्सर गलत विचार होते हैं। ये विचार इतने अनम्य होते हैं कि व्यक्ति साक्ष्य मिलने पर भी उन्हें बदलने को तैयार नहीं होता। ये धारणाएं अक्सर भेदभाव और पूर्वाग्रहों को जन्म देती हैं, क्योंकि ये व्यक्तियों की अपनी विशिष्टता को अनदेखा कर उन्हें केवल एक समूह के लेबल के रूप में देखती हैं।

41. (B) 2, 4, 1, 3
संचार माध्यमों का विकास एक ऐतिहासिक प्रक्रिया है। सबसे पहले समाचारपत्रों ने जनसंचार की नींव रखी। इसके बाद 20वीं सदी के पूर्वार्ध में रेडियो ने दुनिया भर में लोकप्रियता हासिल की। 1950 और 60 के दशक के बाद टेलीविजन का आगमन हुआ और अंततः 21वीं सदी में इंटरनेट और मोबाइल फोन ने सूचना क्रांति ला दी। यह क्रम समाज में सूचना के प्रवाह के बदलते तरीकों को दर्शाता है।

42. (A) उत्पादन की शक्तियाँ और उत्पादन के संबंध
कार्ल मार्क्स के अनुसार, उत्पादन विधि समाज की आर्थिक संरचना का आधार है। इसमें 'उत्पादन की शक्तियाँ' (जैसे तकनीक, श्रम और कच्चा माल) और 'उत्पादन के संबंध' (जैसे संपत्ति का स्वामित्व और श्रमिकों का मालिक से संबंध) शामिल हैं। इन दोनों के बीच का अंतर्संबंध ही यह निर्धारित करता है कि समाज कैसा होगा, चाहे वह आदिम, सामंतवादी हो या आधुनिक पूँजीवादी समाज हो।

आकांक्षाएँ अक्सर कल्पनाशील होती हैं, जबकि बड़े होते ही वे अधिक यथार्थवादी और करियर-उन्मुख हो जाती हैं। तुलनात्मक अध्ययन से शोधकर्ता यह पहचान पाता है कि सामाजिक और शैक्षिक वातावरण आकांक्षाओं को कैसे ढालता है।

22. (B) इसमें प्रश्नों को आवश्यकतानुसार संशोधित किया जा सकता है।
साक्षात्कार पद्धति अपनी लचीली प्रकृति के लिए जानी जाती है। शोधकर्ता बातचीत के दौरान उत्तरदाता की प्रतिक्रियाओं के आधार पर नए प्रश्न पूछ सकता है या अस्पष्ट उत्तरों को स्पष्ट करने के लिए कह सकता है। यह लचीलापन किसी विषय की गहराई तक जाने और सूक्ष्म विवरण प्राप्त करने में मदद करता है, जो पूर्व-निर्धारित प्रश्नावली वाले सर्वेक्षणों में संभव नहीं हो पाता है।

23. (D) किसी गैर-पण्य वस्तु का पण्य (बिकने वाली वस्तु) में रूपांतरण
पण्यीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके तहत उन चीजों या सेवाओं को बाज़ार में बेचने योग्य बनाया जाता है जो पहले व्यावसायिक नहीं थीं। उदाहरण के लिए, पारंपरिक रूप से परिवार द्वारा की जाने वाली देखभाल अब व्यावसायिक सेवाओं के रूप में खरीदी जाती है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि कैसे पूँजीवाद सामाजिक जीवन के हर पहलू को आर्थिक लेनदेन और लाभ-हानि के दायरे में ले आता है।

24. (A) कैंटीन में छात्रों के खान-पान की आदतों का प्रत्यक्ष अवलोकन करना।
प्रत्यक्ष प्रेक्षण वह विधि है जिसमें शोधकर्ता स्वयं घटनास्थल पर उपस्थित होकर घटनाओं को उनके प्राकृतिक स्वरूप में घटित होते हुए देखता है। कैंटीन में छात्रों के व्यवहार को देखना इसका सटीक उदाहरण है क्योंकि यहाँ शोधकर्ता बिना हस्तक्षेप किए वास्तविक डेटा एकत्र कर रहा है। अन्य विकल्प जैसे प्रश्नावली या ऐतिहासिक अभिलेखों का अध्ययन परोक्ष विधियाँ हैं जो प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित नहीं हैं।

25. (C) एक ही शोध प्रश्न पर विभिन्न दृष्टिकोणों से विचार करने के लिए।
पद्धतियों के सम्मिश्रण से शोध की गुणवत्ता और विश्वसनीयता बढ़ती है। जहाँ सर्वेक्षण व्यापक आँकड़े प्रदान करता है, वहीं साक्षात्कार उन आँकड़ों के पीछे के मानवीय कारणों को स्पष्ट करता है। अलग-अलग विधियों का उपयोग करने से शोधकर्ता एक ही समस्या के कई पहलुओं को देख पाता है, जिससे प्राप्त निष्कर्ष अधिक संतुलित, निष्पक्ष और समाज के वास्तविक चित्रण के करीब पहुँच जाते हैं।

26. (C) केवल 1, 2 और 3
सार्वजनिक स्थान के उपयोग पर शोध करते समय समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण लोगों के अनुभवों, ऐतिहासिक बदलावों और सामाजिक संघर्षों पर केंद्रित होता है। लोग उस स्थान के बारे में क्या महसूस करते हैं, इसका उपयोग समय के साथ कैसे बदला और क्या इसके उपयोग को लेकर विभिन्न समूहों में तनाव है, ये प्रश्न सामाजिक संबंधों को समझने में मदद करते हैं। निर्माण लागत या कानूनी स्वामित्व जैसे प्रश्न मुख्य रूप से तकनीकी या प्रशासनिक प्रकृति के होते हैं।

27. (D) 'यौन' शारीरिक अंतरों को संदर्भित करता है जबकि 'लिंग' सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से उत्पन्न अंतरों को।
समाजशास्त्र में 'यौन' और 'लिंग' के बीच स्पष्ट भेद किया जाता है। 'यौन' का संबंध जैविक विशेषताओं और जन्मजात शारीरिक बनावट से है। इसके विपरीत, 'लिंग' समाज द्वारा गढ़ी गई उन भूमिकाओं, अपेक्षाओं और व्यवहारों को दर्शाता है जिन्हें हम स्त्री या पुरुष के रूप में पहचानते हैं। यह अंतर समझना अनिवार्य है क्योंकि सामाजिक असमानताएँ अक्सर जैविक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक रूप से निर्मित होती हैं।

28. (B) P-4, Q-3, R-1, S-2
प्रत्येक शोध विषय के लिए विशिष्ट प्रश्न तैयार किए जाते हैं। सार्वजनिक परिवहन में ऐतिहासिक प्रतिस्पर्धा का अध्ययन किया जाता है, जबकि घरेलू उपकरणों में श्रम-विभाजन का प्रभाव देखा जाता है। संचार माध्यमों में विभिन्न माध्यमों की तुलना की जाती है और आकांक्षाओं के अध्ययन में अक्सर स्कूली बच्चों के सुख और भविष्य के लक्ष्यों की तुलना की जाती है ताकि सामाजिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया जा सके।

29. (C) अकाल और महामारियाँ
थॉमस माल्थस ने जनसंख्या नियंत्रण के दो प्रकार के अवरोध बताए थे। 'प्राकृतिक निरोध' वे घटनाएँ हैं जो प्रकृति द्वारा अनियंत्रित जनसंख्या वृद्धि को रोकने के लिए घटित होती हैं, जैसे अकाल, युद्ध और भयानक महामारियाँ। ये निरोध तब सक्रिय होते हैं जब जनसंख्या संसाधनों की तुलना में बहुत अधिक बढ़ जाती है। अन्य विकल्प जैसे देरी से विवाह करना, माल्थस के अनुसार 'कृत्रिम निरोध' की श्रेणी में आते हैं।

30. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
विज्ञान-कथा लेखन एक जटिल कार्य है क्योंकि इसमें केवल कल्पना की उड़ान ही पर्याप्त नहीं है। एक प्रभावी कथा के लिए यह आवश्यक है कि भविष्य की तकनीक या समाज का वर्तमान स्थितियों के साथ तार्किक संबंध हो। लेखक को अपनी कल्पनाओं के लिए वैज्ञानिक या सामाजिक कारण देने पड़ते हैं, जिससे कथा पाठकों को काल्पनिक होते हुए भी संभव और अत्यंत विचारोत्तेजक प्रतीत होती है।

31. (A) हमेशा 'द्विज' वर्ण से संबंधित होना
'प्रबल जाति' की अवधारणा एम.एन. श्रीनिवास ने दी थी। इसके लिए किसी जाति का 'द्विज' होना अनिवार्य नहीं है; इसके मुख्य मानदंड आर्थिक और राजनीतिक शक्ति, बड़ी जनसंख्या और भूमि पर स्वामित्व हैं। कई क्षेत्रों में ऐसी जातियाँ भी प्रबल हैं जो वर्ण व्यवस्था में पारंपरिक रूप से उच्च नहीं मानी जाती थीं, लेकिन भूमि सुधारों के कारण वे शक्तिशाली बनकर उभरी हैं।

माध्यम से नियंत्रण बनाए रखता है। दोनों ही व्यवस्थाएं आर्थिक शोषण और राजनीतिक प्रभुत्व के सिद्धांतों पर आधारित होती हैं।

54. (B) सर्वेक्षण और ऐतिहासिक पद्धति
इस शोध प्रश्न का उत्तर देने के लिए दो प्रकार के डेटा की आवश्यकता है। ऐतिहासिक पद्धति के माध्यम से शोधकर्ता पुराने विज्ञापनों और अभिलेखों का विश्लेषण करके अतीत की स्थिति को समझ सकता है। वहीं, सर्वेक्षण पद्धति वर्तमान में लोगों की आदतों और उनकी प्राथमिकताओं को जानने में मदद करती है। इन दोनों का सम्मिश्रण ही समय के साथ संचार माध्यमों में आए बदलावों की सटीक तस्वीर पेश कर सकता है।

55. (D) व्यक्ति अपने समूह के बाहर विवाह करता है।
बहिर्विवाह वह नियम है जो किसी व्यक्ति को अपने स्वयं के सामाजिक समूह, जैसे कि गोत्र या कबीले के बाहर जीवनसाथी चुनने के लिए बाध्य करता है। यह नियम विभिन्न समुदायों के बीच संबंधों को मजबूत करने और रक्त संबंधों में निकटता से बचने के लिए बनाया जाता है। यह अंतर्विवाह के विपरीत है, जहाँ व्यक्ति को अपने ही समूह के भीतर विवाह करना अनिवार्य होता है।

56. (A) यह उच्च जातियों द्वारा तथाकथित 'अपवित्र' समझी जाने वाली निम्न जातियों के विरुद्ध अपनाई जाती है।
अस्पृश्यता जाति व्यवस्था का सबसे क्रूर और अमानवीय पहलू है। यह शुद्धता और अपवित्रता की धार्मिक धारणा पर आधारित है, जहाँ कुछ समूहों को जन्म से ही अछूत माना जाता है। इसके तहत उन्हें सार्वजनिक सुविधाओं के उपयोग से रोका जाता है और सामाजिक अलगाव सहना पड़ता है। यद्यपि भारतीय संविधान में इसे प्रतिबंधित किया गया है, लेकिन यह ऐतिहासिक अन्याय की एक गहरी जड़ है।

57. (A) 3, 2, 4, 1
एक सफल शोध के लिए तार्किक चरणों का पालन करना अनिवार्य है। सबसे पहले एक स्पष्ट शोध प्रश्न निर्धारित किया जाता है। इसके बाद, उस प्रश्न के उत्तर के लिए सबसे उपयुक्त शोध पद्धति का चुनाव किया जाता है। फिर उस पद्धति का उपयोग करके साक्ष्य या आँकड़े एकत्र किए जाते हैं। अंत में, एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण करके निष्कर्ष निकाले जाते हैं, जो शोध के उद्देश्य को पूरा करते हैं।

58. (A) निवेश के माध्यम से धनराशि को निरंतर बढ़ाने के उद्देश्य से सँभाल कर रखना।
पूँजी केवल संचित धन नहीं है, बल्कि यह वह धन है जिसे उत्पादन की प्रक्रिया में पुनः निवेश किया जाता है ताकि अधिक लाभ कमाया जा सके। यह आर्थिक गतिविधियों का मुख्य चालक है, जहाँ धन का उपयोग नई संपत्तियों या सेवाओं के निर्माण के लिए होता है। निरंतर मूल्य वृद्धि की यह प्रक्रिया ही पूँजी को सामान्य बचत या व्यक्तिगत उपभोग के लिए रखे गए धन से अलग बनाती है।

59. (D) सार्वजनिक स्थानों पर लोग मोबाइल फोन का उपयोग कैसे करते हैं।
प्रेक्षण पद्धति तब सबसे प्रभावी होती है जब हमें लोगों के वास्तविक और स्वाभाविक व्यवहार का अध्ययन करना हो। मोबाइल फोन के उपयोग जैसे विषयों के लिए शोधकर्ता लोगों को उनके प्राकृतिक परिवेश में देखकर डेटा एकत्र कर सकता है, जो केवल प्रश्नावली या साक्षात्कार से संभव नहीं है। यह पद्धति व्यवहार के उन सूक्ष्म पहलुओं को पकड़ती है जिन्हें लोग अक्सर खुद भी महसूस नहीं कर पाते हैं।

60. (B) जाति एक अधिक्रमिक व्यवस्था है, जबकि जनजाति एक समावेशात्मक समूह है।
जाति व्यवस्था जन्म पर आधारित ऊंच-नीच के सोपानों में विभाजित होती है, जहाँ प्रत्येक समूह का स्थान निश्चित होता है। इसके विपरीत, जनजाति एक ऐसा सामाजिक समूह है जो अपनी विशिष्ट संस्कृति, भाषा और क्षेत्र के आधार पर संगठित होता है और इसके भीतर समानता का भाव अधिक होता है। जनजाति में जाति की तरह शुद्धता और अपवित्रता पर आधारित सख्त अधिक्रम नहीं पाया जाता है।

61. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
विभिन्न शोध उद्देश्यों के लिए अलग-अलग विधियाँ उपयुक्त होती हैं। किसी व्यक्ति के गहन अनुभवों के लिए असंरचित साक्षात्कार श्रेष्ठ है, जबकि जनमत जानने हेतु प्रश्नावली आधारित सर्वेक्षण प्रभावी होता है। व्यवहार के प्रत्यक्ष अवलोकन के लिए प्रेक्षण पद्धति का उपयोग किया जाता है, और किसी संस्था या वस्तु के अतीत और विकास को समझने के लिए ऐतिहासिक पद्धति सबसे उपयुक्त और विश्वसनीय मानी जाती है।

62. (D) आत्मसात्मीकरण (Assimilation)
आत्मसात्मीकरण एक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रक्रिया है जिसमें अल्पसंख्यक या अधीनस्थ समूह अपनी मौलिक पहचान को पूरी तरह त्यागकर प्रभुत्वशाली समूह की संस्कृति में समाहित हो जाते हैं। यह प्रक्रिया अक्सर दबाव या सामाजिक प्रतिष्ठा की चाह में होती है। इसका परिणाम समाज में सांस्कृतिक विविधता का समाप्त होना और एक ऐसी समरूपता का उदय होना है जहाँ अलग-अलग समूहों की विशिष्टताएँ पूरी तरह लुप्त हो जाती हैं।

63. (A) यह हमेशा एक राजा द्वारा शासित होता है।
लोकतंत्र की मुख्य विशेषता यह है कि सत्ता का स्रोत जनता होती है, न कि कोई वंशानुगत राजा। इसमें सरकार को अपनी वैधता स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनावों के माध्यम से प्राप्त होती है। राजा का शासन राजतंत्र कहलाता है, जो लोकतंत्र के मूल सिद्धांतों के विपरीत है। लोकतंत्र में प्रत्येक नागरिक को समान अधिकार प्राप्त होते हैं और सरकार जनता के प्रति पूरी तरह जवाबदेह होती है।

64. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
सामाजिक शोध में एक ही प्रश्न के विभिन्न पहलुओं को समझने के लिए कई पद्धतियों का उपयोग किया जा सकता है। यह विचार गलत है कि प्रत्येक शोध प्रश्न के लिए केवल एक

एक उच्च दर पर बना रहता है। यह अंतर स्वास्थ्य नीति और रोग नियंत्रण रणनीतियों के निर्माण में सहायक होता है।

86. (B) आर्थिक संस्थाएं समाज में विद्यमान होकर सामाजिक नियमों से प्रभावित होती हैं।
आर्थिक क्रियाएँ कभी भी शून्य में घटित नहीं होतीं; वे हमेशा सामाजिक संबंधों, सांस्कृतिक मूल्यों और राजनीतिक नियमों के ढांचे के भीतर काम करती हैं। 'अंतःस्थापित' होने का अर्थ है कि बाज़ार के नियम समाज के व्यापक मानदंडों से अलग नहीं हैं। उदाहरण के लिए, उपहार देना या धार्मिक मेलों में व्यापार करना दिखाता है कि आर्थिक लेनदेन कैसे सामाजिक रीति-रिवाजों और सामुदायिक भावनाओं के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं।

87. (D) उत्तरदाताओं की सुरक्षा और उनकी पूर्ण गोपनीयता सुनिश्चित करने के लिए।
सामाजिक अनुसंधान में नैतिकता का पालन करना अनिवार्य है क्योंकि शोधकर्ता अक्सर लोगों के निजी जीवन का अध्ययन करते हैं। उत्तरदाताओं की पहचान गुप्त रखना और उन्हें किसी भी प्रकार की मानसिक या शारीरिक क्षति से बचाना शोध की साख बढ़ाता है। नैतिक मानकों का पालन करने से उत्तरदाताओं में विश्वास पैदा होता है, जिससे वे शोध में अधिक ईमानदारी और सहयोग के साथ भाग लेते हैं, जो सटीक निष्कर्षों के लिए आवश्यक है।

88. (A) यह छात्रों को वस्तु के दृष्टिकोण से सामाजिक संबंधों की कल्पना करने में मदद करता है।
वस्तु की आत्मकथा लिखवाना एक रचनात्मक समाजशास्त्रीय उपकरण है। यह छात्रों को प्रेरित करता है कि वे सोचें कि एक वस्तु कैसे विभिन्न हाथों से गुजरती है और किन सामाजिक प्रक्रियाओं का हिस्सा बनती है। यह अभ्यास उन्हें निर्जीव वस्तुओं के पीछे छिपे मानवीय श्रम, आर्थिक विनिमय और सांस्कृतिक अर्थों को पहचानने में मदद करता है, जिससे समाज की एक नई और सूक्ष्म समझ विकसित होती है।

89. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पूर्वाग्रह और भेदभाव समाजशास्त्रीय दृष्टि से भिन्न हैं लेकिन आपस में संबंधित हैं। पूर्वाग्रह एक मानसिक स्थिति है, जिसमें हम किसी समूह के बारे में बिना सोचे-समझे नकारात्मक राय रखते हैं। जब इस पूर्वाग्रह के आधार पर किसी समूह के साथ बुरा बर्ताव किया जाता है या उन्हें अधिकारों से वंचित किया जाता है, तो उसे भेदभाव कहते हैं। अतः विचार (पूर्वाग्रह) ही अक्सर कार्य (भेदभाव) का आधार बनता है।

90. (A) अपूर्ण प्रश्नावलियों के प्रबंधन हेतु एक नई वैकल्पिक रणनीति तैयार करना।
शोध के दौरान जब प्रतिक्रिया दर बहुत कम होती है, तो शोधकर्ता को हतोत्साहित होने के बजाय अपने डेटा संग्रह की विधि में बदलाव करना चाहिए। वह उत्तरदाताओं को अनुस्मारक भेज सकता है या साक्षात्कार जैसी वैकल्पिक विधि अपना सकता है। डेटा के साथ छेड़छाड़ करना या अधूरा काम छोड़ना अनैतिक है। एक लचीली रणनीति शोध की गुणवत्ता बनाए रखने और प्राप्त सीमित जानकारी का सही विश्लेषण करने में मदद करती है।

91. (D) नृजातीय समूहों को हटाकर क्षेत्र को संजातीय दृष्टि से समरूप बनाना।
संजातीय सफाई एक हिंसक और दमनकारी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य किसी विशेष क्षेत्र से 'अवांछित' समझे जाने वाले नृजातीय या धार्मिक समूहों को बलपूर्वक हटाना या समाप्त करना होता है। इसका लक्ष्य एक ऐसा समाज बनाना है जहाँ केवल एक ही संजातीय समूह का प्रभुत्व हो। यह प्रक्रिया मानवाधिकारों का उल्लंघन करती है और अक्सर गृहयुद्ध, नरसंहार और भारी मानवीय संकटों का कारण बनती है।

92. (D) 1, 2, 3, 4 और 5
साक्षात्कार पद्धति एक व्यापक अनुसंधान उपकरण है जिसमें व्यक्तिगत संपर्क और लचीलापन मुख्य होता है। यह संरचित या असंरचित हो सकता है, जिससे गहन जानकारी प्राप्त होती है। हालांकि इसमें सीमित संख्या में लोगों को शामिल किया जा सकता है, लेकिन यह उन व्यक्तियों के विचारों और अनुभवों का गहरा प्रतिनिधित्व करता है। शोधकर्ता अपनी आवश्यकतानुसार इस पद्धति को छोटे या बड़े समूहों के साथ समायोजित कर सकता है।

93. (A) 2, 4, 3, 1
परिवहन के साधनों का विकास तकनीकी प्रगति और शहरीकरण के साथ जुड़ा हुआ है। प्राचीन काल से ताँगा और बैलगाड़ी प्राथमिक साधन रहे। औद्योगिक क्रांति के साथ रेलवे का विस्तार हुआ, जिसने लंबी दूरी की यात्रा सुगम बनाई। इसके बाद सड़क परिवहन में मोटर बसें आईं और आधुनिक युग में तेज एवं कुशल परिवहन के लिए मेट्रो रेल का विकास हुआ। यह क्रमिक विकास समाज की बढ़ती गतिशीलता को दर्शाता है।

94. (D) विभिन्न परिवहन साधनों की उपलब्धता के कारण बड़े शहरों में यह अधिक प्रासंगिक है।
बड़े महानगरों में सार्वजनिक परिवहन की प्रणालियाँ (जैसे मेट्रो, बस, ट्रेन) अत्यंत जटिल और विविध होती हैं, जो लाखों लोगों के दैनिक जीवन का आधार हैं। यहाँ शोध करने से यह पता चलता है कि विभिन्न वर्ग और समुदाय इन साधनों का उपयोग कैसे करते हैं। विविधता अधिक होने के कारण शोधकर्ता को परिवहन के सामाजिक, आर्थिक और ऐतिहासिक पहलुओं का गहराई से अध्ययन करने के लिए पर्याप्त आँकड़े और अवसर प्राप्त होते हैं।

95. (B) P-2, Q-1, R-3, S-4
शोध के विषयों की प्रकृति के अनुसार पद्धतियाँ चुनी जाती हैं। इतिहास जानने के लिए अभिलेखीय विधि, व्यक्तिगत राय के लिए साक्षात्कार और लोगों के वास्तविक व्यवहार को समझने के लिए प्रेक्षण सबसे उपयुक्त है। यदि हमें किसी तकनीक जैसे मोबाइल के प्रभाव का अध्ययन करना हो, तो सर्वेक्षण और प्रेक्षण का सम्मिश्रण मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों प्रकार के

75. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पंथनिरपेक्षता और सांप्रदायिकता विपरीत विचारधाराएँ हैं। सांप्रदायिकता जहाँ धर्म को राजनीतिक पहचान और संघर्ष का आधार बनाती है, वहीं पंथनिरपेक्षता राज्य और धर्म के बीच दूरी बनाए रखने पर जोर देती है। पंथनिरपेक्ष दृष्टिकोण सभी धर्मों के प्रति सम्मान और तटस्थता का भाव रखता है, जिससे वह सांप्रदायिक कट्टरता का प्रभावी ढंग से मुकाबला कर पाता है और समाज में आपसी भाईचारा बढ़ाने में सहायक होता है।

76. (B) समस्त प्रकार की आर्थिक व्यवस्थाएँ, विशेष रूप से गैर-बाज़ारी।
आर्थिक मानवविज्ञान का उद्देश्य यह समझना है कि विभिन्न समाजों में लोग अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे करते हैं। यह केवल आधुनिक बाज़ारी अर्थव्यवस्था तक सीमित नहीं है, बल्कि यह उन जनजातीय और पारंपरिक समाजों का भी अध्ययन करता है जहाँ वस्तु विनिमय और उपहार विनिमय जैसी गैर-बाज़ारी प्रणालियाँ प्रचलित हैं। यह अध्ययन दिखाता है कि आर्थिक क्रियाएँ सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों से कैसे गहराई से जुड़ी होती हैं।

77. (C) P-2, Q-3, R-1, S-4
सांख्यिकीय और जनसांख्यिकीय अवधारणाएँ जनसंख्या परिवर्तनों को मापने में मदद करती हैं। गुणोत्तर वृद्धि (जैसे 4, 20, 100) तीव्र विस्तार को दर्शाती है, जबकि समांतर वृद्धि (जैसे 6, 10, 14) क्रमिक बढ़त को। प्रतिस्थापन दर जनसंख्या स्थिरता के लिए आवश्यक प्रजनन स्तर है, और प्रजनन शक्ति एक महिला की अपनी जीवन अवधि में संतान पैदा करने की जैविक और सामाजिक क्षमता को संदर्भित करती है।

78. (D) सामाजिक संबंधों, मूल्यों और अंतःक्रियाओं पर
सामाजिक रचनावाद इस विचार पर आधारित है कि हमारी वास्तविकता और ज्ञान का निर्माण सामाजिक अंतःक्रियाओं के माध्यम से होता है। यह जीव विज्ञान या भौतिक वस्तुओं के बजाय उन अर्थों और मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करता है जो समाज किसी वस्तु या घटना को देता है। इसके अनुसार, 'लिंग' या 'बचपन' जैसी अवधारणाएँ प्राकृतिक नहीं, बल्कि सामाजिक रूप से निर्मित होती हैं और समय के साथ बदलती रहती हैं।

79. (A) विधान मंडल, न्यायपालिका, कार्यपालिका, सेना जैसी अनेक संस्थाएँ
राज्य एक विशाल और अमूर्त संस्थागत संरचना है जो किसी समाज में शक्ति का प्रयोग करती है। यह केवल एक दल या व्यक्ति नहीं है, बल्कि इसमें कानून बनाने वाली, न्याय करने वाली और कानूनों को लागू करने वाली विभिन्न संस्थाएँ शामिल होती हैं। सेना और पुलिस इसकी दमनकारी शक्ति के अंग हैं। ये सभी संस्थाएँ मिलकर समाज में व्यवस्था बनाए रखने और संप्रभुता की रक्षा करने का कार्य करती हैं।

80. (B) पुराने समाचार पत्र और पत्रिकाएँ
सामाजिक प्रवृत्तियों में समय के साथ आए बदलावों का अध्ययन करने के लिए पुराने समाचार पत्र और पत्रिकाएँ प्राथमिक ऐतिहासिक स्रोत होते हैं। विवाह के विज्ञापनों का विश्लेषण करने से यह स्पष्ट होता है कि कैसे पसंद, भाषा और सामाजिक अपेक्षाएँ दशकों के दौरान बदली हैं। यह विधि शोधकर्ता को प्रत्यक्ष अवलोकन या साक्षात्कार की तुलना में लंबे समय के डेटा तक पहुँच प्रदान करती है, जो परिवर्तन को समझने के लिए अनिवार्य है।

81. (B) असमानता
सामाजिक स्तरीकरण का सीधा अर्थ समाज का विभिन्न परतों या स्तरों में विभाजन है, जहाँ प्रत्येक स्तर के पास संसाधनों, शक्ति और प्रतिष्ठा का अलग-अलग हिस्सा होता है। यह विभाजन समाज में असमानता को व्यवस्थित रूप देता है। चाहे वह जाति, वर्ग या लिंग के आधार पर हो, स्तरीकरण यह सुनिश्चित करता है कि समाज के सभी सदस्यों के पास जीवन में उन्नति के समान अवसर और सुविधाएँ नहीं हैं।

82. (D) 1, 2, 3 और 4
जाति भारतीय समाज की एक मौलिक संस्था है जिसकी कई विशिष्ट विशेषताएं हैं। यह जन्म से निर्धारित होती है और इसे बदला नहीं जा सकता। इसमें सदस्य अक्सर अपने पूर्वजों के व्यवसाय को ही अपनाते हैं और समाज एक सख्त ऊंच-नीच के क्रम में बँटा होता है। इसके अलावा, अंतर्विवाह का नियम सदस्यों को अपने ही समूह में विवाह करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे जाति की पहचान बनी रहती है।

83. (C) विषय को व्यापक बनाने और लैंगिक पूर्वाग्रहों को समाप्त करने के लिए।
पारंपरिक रूप से घरेलू कार्यों और उपकरणों को केवल महिलाओं के क्षेत्र से जोड़कर देखा जाता है। शोध परियोजना में लड़कों को शामिल करने का उद्देश्य इस लैंगिक रुढ़िवादिता को तोड़ना है। जब लड़के इस विषय पर शोध करते हैं, तो वे घरेलू श्रम के सामाजिक महत्व को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं। इससे शोध में विविधता आती है और यह संदेश जाता है कि घरेलू कार्य किसी विशेष लिंग की जिम्मेदारी नहीं है।

84. (D) इलेक्ट्रॉनिक रूप में, जहाँ कंप्यूटरों के द्वारा लेन-देन होता है
आभासी बाज़ार एक ऐसा आधुनिक मंच है जहाँ वस्तुओं और सेवाओं का व्यापार किसी भौतिक स्थान पर मिलने के बजाय इंटरनेट और डिजिटल तकनीक के माध्यम से किया जाता है। ई-कॉमर्स और ऑनलाइन बैंकिंग इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यह बाज़ार पारंपरिक बाधाओं को समाप्त कर देता है और खरीदारों तथा विक्रेताओं को वैश्विक स्तर पर जोड़ता है, जिससे व्यापार की गति और पहुंच में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है।

85. (C) स्थानिक महामारी में बीमारी की दर निरंतर ऊँची रहती है, जबकि महामारी में अचानक वृद्धि होती है।
जनस्वास्थ्य और समाजशास्त्र में इन शब्दों के बीच महत्वपूर्ण अंतर है। 'महामारी' तब होती है जब कोई बीमारी एक निश्चित जनसंख्या में बहुत कम समय में तेजी से फैलती है। इसके विपरीत, 'स्थानिक भारी महामारी' (endemic) वह स्थिति है जहाँ कोई विशेष रोग किसी विशेष क्षेत्र या समुदाय में हमेशा

ANSWERS

1. (B) व्यावहारिक प्रयास और साक्ष्य संकलन का अनुभव प्राप्त करना
परियोजना कार्य का प्राथमिक लक्ष्य विद्यार्थियों को वास्तविक सामाजिक परिस्थितियों में व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना है। इसके माध्यम से छात्र किताबी ज्ञान से परे जाकर स्वयं आँकड़े एकत्र करते हैं और साक्ष्यों का विश्लेषण करना सीखते हैं। यह प्रक्रिया उनमें वैज्ञानिक दृष्टिकोण और स्वतंत्र चिंतन विकसित करने में सहायक होती है, जो केवल सैद्धांतिक अध्ययन से संभव नहीं है।

2. (A) उपयुक्त शोध प्रणाली का चयन करना
किसी भी शोध प्रश्न का समाधान खोजने के लिए शोधकर्ता को सबसे पहले एक सटीक कार्ययोजना और शोध पद्धति का चयन करना होता है। यह चुनाव शोध की प्रकृति, उपलब्ध समय और संसाधनों पर निर्भर करता है। सही पद्धति का चयन ही यह निर्धारित करता है कि एकत्रित किए गए आँकड़े विश्वसनीय होंगे या नहीं और निष्कर्षों की वैधता क्या होगी।

3. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
सामाजिक अनुसंधान में विभिन्न पद्धतियों की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ होती हैं। सर्वेक्षण में बड़ी संख्या में लोगों से निर्धारित प्रश्न पूछे जाते हैं, जबकि साक्षात्कार में कम लोगों से व्यक्तिगत चर्चा होती है। प्रेक्षण के तहत किसी विशेष परिस्थिति का बारीकी से अवलोकन किया जाता है और ऐतिहासिक पद्धति अतीत की घटनाओं और प्रवृत्तियों के गहन अध्ययन पर केंद्रित होती है।

4. (D) विद्यालयों के ऐतिहासिक अभिलेखों का अध्ययन
छात्रों के वर्तमान खुशी के स्तर की तुलना करने के लिए प्रत्यक्ष और समकालीन डेटा की आवश्यकता होती है। ऐतिहासिक अभिलेख पुराने रिकॉर्ड होते हैं जो वर्तमान मानसिक स्थिति या खुशी जैसे व्यक्तिपरक पहलुओं को मापने के लिए पर्याप्त नहीं हैं। साक्षात्कार, प्रेक्षण और सर्वेक्षण जैसी पद्धतियाँ जीवित व्यक्तियों से सीधा संपर्क साधती हैं, इसलिए वे इस प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन हेतु अधिक प्रभावी होती हैं।

5. (C) अनुसंधान के लिए उपलब्ध समय की मात्रा
शोध प्रणाली का चुनाव केवल तकनीकी पहलुओं पर ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक सीमाओं पर भी निर्भर करता है। उपलब्ध समय एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है क्योंकि कुछ पद्धतियाँ जैसे गहन साक्षात्कार या दीर्घकालिक प्रेक्षण बहुत समय लेती हैं। यदि समय सीमित हो, तो शोधकर्ता को सर्वेक्षण जैसी त्वरित पद्धतियों को प्राथमिकता देनी पड़ती है ताकि निर्धारित अवधि में कार्य पूर्ण हो सके।

6. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
सर्वेक्षण पद्धति में प्रश्नों का पूर्व-निर्धारण डेटा की एकरूपता सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है। हालांकि यह सत्य है कि लचीलापन न होने से कभी-कभी जानकारी सीमित रह सकती है, लेकिन प्रश्नों के निर्धारित होने का मुख्य कारण वैज्ञानिक मानक बनाए रखना है। दोनों कथन अपने आप में सही हैं, परंतु कारण अभिकथन के पीछे के मुख्य तर्क की व्याख्या नहीं करता है।

7. (D) यह बहुत ज़्यादा लोगों को शामिल नहीं कर सकती।
साक्षात्कार पद्धति एक गहन अध्ययन का उपकरण है जिसमें एक समय में केवल एक या कुछ ही व्यक्तियों से बात की जा सकती है। इस प्रक्रिया में बहुत अधिक समय और व्यक्तिगत प्रयास की आवश्यकता होती है, जिसके कारण शोधकर्ता एक बड़े जनसमूह के विचारों को एकत्र करने में असमर्थ रहता है। इसीलिए व्यापक जनसंख्या के अध्ययन के लिए अक्सर सर्वेक्षण पद्धति का सुझाव दिया जाता है।

8. (A) केवल 1, 2 और 3
एक शोधकर्ता को क्षेत्र कार्य के दौरान कई व्यावहारिक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इसमें अक्सर संस्थानों से अनुमति प्राप्त करने में कठिनाई, उत्तरदाताओं द्वारा अधूरी जानकारी देना या प्रश्नावली वापस न करना शामिल है। इसके अतिरिक्त, वित्तीय संसाधनों की कमी और समय की सीमितता शोध की गति और गुणवत्ता को प्रभावित करती है, जिससे शोधकर्ता को अपनी रणनीतियों में बदलाव करना पड़ सकता है।

9. (C) किसी समूह की अनुपस्थिति या व्यवहार के विशिष्ट पैटर्न को उजागर करने हेतु।
प्रेक्षण के दौरान जो घटनाएँ नहीं घटतीं, वे सामाजिक संरचना और व्यवहार के छिपे हुए पहलुओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण होती हैं। उदाहरण के लिए, किसी सार्वजनिक स्थान पर किसी विशेष समुदाय की अनुपस्थिति सामाजिक बहिष्कार या भेदभाव का संकेत हो सकती है। ऐसी रिक्तता को पहचानना शोधकर्ता को उस सामाजिक परिवेश की गहरी और अधिक सटीक व्याख्या करने में सक्षम बनाता है।

10. (A) पद्धतियों का सम्मिश्रण
सामाजिक अनुसंधान में किसी एक मुद्दे को पूरी तरह समझने के लिए विभिन्न पद्धतियों का एक साथ उपयोग करना लाभदायक होता है। इसे 'ट्राइएंगुलेशन' भी कहा जाता है। उदाहरण के लिए, सर्वेक्षण से प्राप्त संख्यात्मक डेटा को साक्षात्कारों से प्राप्त व्यक्तिगत अनुभवों के साथ जोड़ने पर शोध प्रश्न के प्रति अधिक

डेटा प्रदान करता है, जिससे निष्कर्षों की सटीकता बढ़ जाती है।

96. (B) राजकीय नियंत्रण कम करना और गतिविधियों को बाज़ार की ताकतों पर छोड़ना।
उदारीकरण का अर्थ आर्थिक नीतियों को अधिक लचीला बनाना है। इसमें सरकार उद्योगों और व्यापार पर लगे प्रतिबंधों को हटाती है और निजी निवेश को प्रोत्साहित करती है। इसका मुख्य उद्देश्य मुक्त बाज़ार प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देना है, जिससे आर्थिक विकास की गति तेज हो सके। यह प्रक्रिया वैश्विक बाज़ार के साथ राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के एकीकरण और सरकारी हस्तक्षेप को न्यूनतम करने के विचार पर आधारित है।

97. (B) उपरोक्त (B) और (C) दोनों तरीकों से।
पुत्र-अधिमान्यता समाज में पुत्रों को पुत्रियों की तुलना में अधिक महत्व देने की प्रवृत्ति है। इसे मापने के लिए सांख्यिकीय डेटा (जैसे लिंगानुपात और जन्म दर) का विश्लेषण किया जा सकता है। साथ ही, परिवारों के भीतर होने वाले सामाजिक व्यवहार का अवलोकन करके भी इसे समझा जा सकता है, जैसे कि पालन-पोषण या शिक्षा में भेदभाव। इन दोनों विधियों का समन्वय इस सामाजिक समस्या की पूरी गहराई को स्पष्ट करता है।

98. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
वास्तविक अनुसंधान कभी भी एक सीधी रेखा में नहीं चलता; इसमें कई चुनौतियाँ और बाधाएँ आती हैं। क्षेत्रीय कार्य के दौरान उत्तरदाताओं का असहयोग या संसाधनों की कमी जैसी समस्याएँ सामान्य हैं। एक कुशल शोधकर्ता वही है जो इन व्यावहारिक कठिनाइयों का पूर्वानुमान लगाए और उनसे निपटने के लिए लचीली योजना तैयार रखे। यह मानना कि शोध हमेशा सहज होगा, एक अवास्तविक और गलत धारणा है।

99. (C) विभिन्न सांस्कृतिक परंपराओं के मिलन से एक नए संकर रूप का निर्माण होना।
समन्वयवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें दो या दो से अधिक अलग-अलग सांस्कृतिक या धार्मिक परंपराएँ आपस में मिलकर एक नई और मिश्रित पहचान बनाती हैं। यह समाज की सहनशीलता और अनुकूलन क्षमता को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, विभिन्न संगीत शैलियों या वास्तुकला रूपों का मेल जो न तो पूरी तरह से मूल परंपरा जैसा है और न ही बिल्कुल विदेशी, बल्कि एक नया समृद्ध स्वरूप प्रस्तुत करता है।

100. (D) चार
पारंपरिक हिंदू वर्ण व्यवस्था समाज को चार मुख्य सोपानों में विभाजित करती है: ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। यह विभाजन कार्यों और धार्मिक शुद्धता की अवधारणा पर आधारित था। इन चारों वर्णों के बाहर एक पाँचवाँ समूह भी माना जाता था, जिन्हें 'अछूत' कहा जाता था। वर्ण व्यवस्था ने भारतीय उपमहाद्वीप में सामाजिक संरचना, अधिकार और कर्तव्यों के वितरण में सदियों तक एक अत्यंत महत्वपूर्ण और केंद्रीय भूमिका निभाई है।

101. (C) इसके माध्यम से एक साथ बहुत बड़ी संख्या में लोगों के विचार जाने जा सकते हैं।
सर्वेक्षण पद्धति की सबसे बड़ी शक्ति इसकी व्यापक पहुँच है। प्रश्नावली के माध्यम से शोधकर्ता बहुत ही कम समय में एक बड़े भौगोलिक क्षेत्र और जनसंख्या से डेटा एकत्र कर सकता है। यह विधि सांख्यिकीय विश्लेषण के लिए उपयुक्त है और इसके परिणाम पूरी जनसंख्या के बारे में सामान्य निष्कर्ष निकालने में मदद करते हैं। इसीलिए नीति निर्माण और जनमत जानने के लिए सर्वेक्षणों को सबसे अधिक प्राथमिकता दी जाती है।

102. (B) साक्षात्कार
लोगों की भावनाओं, अनुभवों और व्यक्तिपरक विचारों को जानने के लिए साक्षात्कार सबसे श्रेष्ठ विधि है। इसमें शोधकर्ता उत्तरदाता से सीधे बातचीत कर सकता है और यह समझ सकता है कि संचार के साधनों में बदलाव ने उनके जीवन को व्यक्तिगत रूप से कैसे प्रभावित किया है। साक्षात्कार से प्राप्त होने वाली जानकारी केवल संख्याओं तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह मानवीय भावनाओं की सूक्ष्म और गहन समझ प्रदान करती है।

103. (D) श्रम-शक्ति कार्य करने की क्षमता है और श्रम किया गया वास्तविक कार्य है।
मार्क्सवादी अर्थशास्त्र में इन दोनों के बीच स्पष्ट अंतर है। 'श्रम-शक्ति' एक श्रमिक की शारीरिक और मानसिक योग्यता है जिसे वह पूँजीपति को बेचता है। 'श्रम' वह वास्तविक क्रिया है जो श्रमिक काम के घंटों के दौरान करता है। पूँजीपति श्रम-शक्ति को खरीदता है, लेकिन वह उससे अधिक श्रम करवाकर अतिरिक्त मूल्य पैदा करता है, जो पूँजीवाद में लाभ और शोषण का मुख्य स्रोत माना जाता है।

104. (B) केवल 2, 3 और 4
सार्वजनिक स्थानों का उपयोग बहुआयामी और गतिशील होता है। खाली पड़े भूखंडों का उपयोग अक्सर अनौपचारिक रूप से छोटे-मोटे व्यापार, धार्मिक आयोजनों या बेघर लोगों द्वारा आश्रय के लिए किया जाता है। यह कहना गलत है कि इनका उपयोग हमेशा एक ही तरीके से होता है या कोई विवाद नहीं होता। अक्सर इन स्थानों के नियंत्रण और उपयोग को लेकर विभिन्न समूहों या प्रशासन के बीच संघर्ष की स्थितियाँ उत्पन्न होती रहती हैं।

105. (C) एक समय में एक ही जीवन साथी (पति/पत्नी) रखने की अनुमति।
एकविवाह प्रथा विवाह का वह रूप है जिसमें एक व्यक्ति एक समय में केवल एक ही जीवनसाथी के साथ वैवाहिक संबंध में रह सकता है। यह आधुनिक समाजों में सबसे अधिक प्रचलित और कानूनी रूप से स्वीकृत प्रथा है। यह बहुविवाह के विपरीत है, जहाँ एक से अधिक साथियों की अनुमति होती है। एकविवाह पारिवारिक स्थिरता और संपत्तियों के उत्तराधिकार को सुव्यवस्थित करने में सहायक माना जाता है।

तो केवल सर्वेक्षण पर्याप्त नहीं होगा; वहाँ साक्षात्कार अधिक प्रभावी होगा। सही पद्धति का चयन यह सुनिश्चित करता है कि शोधकर्ता जिस प्रकार की जानकारी चाहता है, उसे वही प्राप्त हो। यह संगतता ही अनुसंधान की वैज्ञानिक वैधता और निष्कर्षों की सटीकता की सबसे पहली और अनिवार्य शर्त मानी जाती है।

146. (C) P-2, Q-1, R-4, S-3
शोध परियोजना के दौरान लिए गए निर्णय वैज्ञानिक और निष्पक्षता की दृष्टि से महत्वपूर्ण होते हैं। लड़कों को घरेलू उपकरणों पर शोध में शामिल करना लैंगिक रुढ़िवादिता को खत्म करता है। दूसरे स्कूल के छात्रों का चुनाव साक्षात्कार में गोपनीयता और सहजता सुनिश्चित करता है। परिचित जगहों का चुनाव शोधकर्ता के लिए डेटा तक पहुँच आसान बनाता है, जबकि बिना किसी पूर्वनिर्णय के शोध करना निष्पक्षता बनाए रखने के लिए अनिवार्य है ताकि निष्कर्षों में किसी भी प्रकार का पूर्वाग्रह न हो।

147. (B) केवल 2 और 3
सांस्कृतिक विविधता का अर्थ है एक ही समाज या राष्ट्र के भीतर विभिन्न भाषाई, धार्मिक, नृजातीय और सांस्कृतिक समूहों का सह-अस्तित्व। यह समरूपता के विपरीत है और समाज की बहुलवादी प्रकृति को प्रदर्शित करता है। विविधता का अर्थ है कि लोगों की पहचान के कई रूप हैं जो एक साथ मिलकर समाज को समृद्ध बनाते हैं। इसे लोकतंत्र और मानवाधिकारों के संदर्भ में एक सकारात्मक गुण माना जाता है, जो विभिन्न समुदायों के बीच आपसी सम्मान और सहिष्णुता को बढ़ाता है।

148. (D) ऐतिहासिक पद्धति
समय के साथ होने वाले सामाजिक परिवर्तनों को समझने के लिए ऐतिहासिक पद्धति सबसे शक्तिशाली उपकरण है। यह पद्धति वर्तमान स्थितियों की तुलना अतीत के साक्ष्यों, अभिलेखों और पुराने रिकॉर्डों से करती है। इसके माध्यम से शोधकर्ता यह देख सकता है कि कोई संस्था, प्रथा या विचार समय के साथ कैसे विकसित हुआ है या लुप्त हुआ है। यह पद्धति सामाजिक विकास की निरंतरता और उसमें आने वाले महत्वपूर्ण मोड़ों को समझने के लिए एक दीर्घकालिक और व्यापक परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है।

149. (C) युवावस्था की यादों और शिक्षा उपरांत होने वाले महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों हेतु।
आकांक्षाओं पर शोध करते समय वयस्कों को शामिल करने से एक तुलनात्मक और दीर्घकालिक दृष्टिकोण प्राप्त होता है। वे यह बता सकते हैं कि उनकी युवावस्था के सपने क्या थे और वास्तविक जीवन की परिस्थितियों ने उन्हें कैसे बदला। इससे शोधकर्ता यह समझ पाता है कि समय के साथ सामाजिक अपेक्षाएं कैसे बदली हैं और जीवन के अनुभव आकांक्षाओं के स्वरूप को कैसे प्रभावित करते हैं। यह स्मृतियाँ शोध में एक गहरा और अनुभवजन्य आयाम जोड़ती हैं जो केवल वर्तमान छात्रों से प्राप्त नहीं किया जा सकता।

150. (B) अनुसंधान प्रक्रिया सैद्धांतिक ज्ञान की तुलना में अधिक व्यावहारिक चुनौतियाँ प्रस्तुत करती है।
शोध के सिद्धांतों को पढ़ना सरल है, किंतु उन्हें वास्तविक धरातल पर उतारना अत्यंत चुनौतीपूर्ण होता है। क्षेत्रीय कार्य के दौरान शोधकर्ता को अनेक अप्रत्याशित व्यावहारिक समस्याओं जैसे उत्तरदाताओं का असहयोग, समय का अभाव, वित्तीय सीमाएं और तकनीकी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इसलिए, वास्तविक अनुभव शोध की बारीकियों और उसकी जटिलताओं को समझने के लिए पाठ्यपुस्तकीय ज्ञान से कहीं अधिक अनिवार्य होता है, जो छात्रों को एक कुशल शोधकर्ता के रूप में विकसित करने में मदद करता है।

151. (B) एक प्रतिदर्श के आधार पर संपूर्ण जनसंख्या का सामान्यीकरण करना।
सर्वेक्षण पद्धति एक मात्रात्मक अनुसंधान तकनीक है जिसका प्राथमिक लक्ष्य एक छोटे प्रतिदर्श समूह का गहन अध्ययन करके व्यापक निष्कर्ष निकालना होता है। यह शोधकर्ताओं को पूरी जनसंख्या की विशेषताओं, व्यवहारों या दृष्टिकोणों के बारे में विश्वसनीय सामान्यीकरण करने में सक्षम बनाता है। इस प्रक्रिया में सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके प्राप्त परिणामों को बड़े स्तर पर लागू किया जाता है ताकि यथार्थ समझा जा सके।

152. (A) यह एक विशिष्ट समय बिंदु पर आँकड़े एकत्र करता है।
अनुप्रस्थ-काट सर्वेक्षण का मुख्य उद्देश्य एक निश्चित समय पर सामाजिक स्थिति या विशेषताओं का चित्रण करना है। यह विधि एक स्नैपशॉट की तरह कार्य करती है जहाँ विभिन्न समूहों से एक ही समय में जानकारी प्राप्त की जाती है। यह समय के साथ होने वाले क्रमिक परिवर्तनों के विश्लेषण के बजाय वर्तमान सामाजिक स्थिति को समझने के लिए अनुसंधान में अत्यधिक उपयोगी मानी जाती है।

153. (C) यह कम लागत में बड़ी संख्या में लोगों से आँकड़े एकत्र कर सकती है।
सर्वेक्षण पद्धति की व्यापक लोकप्रियता उसकी उच्च दक्षता और पहुँच में निहित है। यह शोधकर्ताओं को बहुत कम समय और सीमित बजट में एक विशाल जनसंख्या से महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त करने की अनुमति देती है। इस प्रक्रिया से प्राप्त आँकड़ों की सांख्यिकीय सार्थकता बहुत अधिक होती है, जिससे अनुसंधान के निष्कर्षों को बड़े स्तर पर अत्यंत विश्वसनीय रूप से प्रस्तुत करना समाजशास्त्रियों के लिए संभव होता है।

154. (D) जब उत्तरदाता सत्य के बजाय सामाजिक रूप से स्वीकार्य उत्तर देते हैं।
प्रतिक्रिया पूर्वाग्रह तब उत्पन्न होता है जब प्रतिभागी अपनी वास्तविक भावनाओं या अनुभवों के बजाय ऐसे उत्तर देते हैं जो समाज में सही माने जाते हैं। उत्तरदाता अक्सर विवादास्पद विषयों पर अपनी छवि बेहतर दिखाने के लिए जानबूझकर भ्रामक जानकारी साझा करते हैं। यह स्थिति अनुसंधान की वैज्ञानिक वैधता को काफी कम करती है क्योंकि प्राप्त आँकड़े सामाजिक वास्तविकता का सटीक प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं।

116. (D) वयस्क व्यक्तियों के मध्य सामाजिक रूप से स्वीकृत एवं अनुमोदित यौन संबंध।
समाजशास्त्र में विवाह को केवल एक निजी संबंध या धार्मिक कृत्य नहीं माना जाता, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक संस्था है। यह दो वयस्क व्यक्तियों के बीच यौन संबंधों और बच्चों के पालन-पोषण को वैधता प्रदान करता है। विवाह के माध्यम से नए नातेदारी संबंध बनते हैं और समाज में अधिकारों तथा संपत्तियों का कानूनी हस्तांतरण सुगम होता है। यह संस्था सामाजिक संरचना और स्थिरता को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाती है।

117. (C) सामाजिक जीवन के क्षेत्र में चिंतन की एक सुव्यवस्थित रूपरेखा या परिपाटी।
'प्रवचन' या डिसकोर्स केवल बातचीत नहीं है, बल्कि यह उन नियमों और धारणाओं का समूह है जो किसी विषय पर सोचने और बात करने के तरीके को निर्धारित करते हैं। यह शक्ति संबंधों को दर्शाता है क्योंकि यह तय करता है कि क्या 'सत्य' माना जाएगा और क्या नहीं। समाजशास्त्र में इसका उपयोग यह समझने के लिए किया जाता है कि कैसे भाषा और ज्ञान समाज में प्रभुत्व और नियंत्रण स्थापित करने में सहायता करते हैं।

118. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
विवाह के विभिन्न प्रकार सामाजिक नियमों और संरचनाओं को दर्शाते हैं। अंतर्विवाह अपने ही समूह में विवाह करने की अनिवार्यता है, जबकि बहिर्विवाह समूह के बाहर जीवनसाथी चुनने का नियम है। एकविवाह में एक समय में केवल एक ही साथी के साथ संबंध रखने की अनुमति होती है, जबकि बहुविवाह में एक व्यक्ति को एक साथ कई पति या पत्नियाँ रखने की सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है।

119. (D) समाज के किसी स्थापित सामाजिक या सांस्कृतिक नियम अथवा मानदंड का उल्लंघन करना।
अतिक्रमण का अर्थ है उन सीमाओं को पार करना जो समाज ने व्यवहार के लिए निर्धारित की हैं। इसमें स्थापित मानदंडों, परंपराओं या कानूनों का जानबूझकर किया गया उल्लंघन शामिल है। समाजशास्त्र में, यह शब्द अक्सर यह समझने के लिए उपयोग किया जाता है कि कैसे व्यक्ति या समूह सामाजिक नियंत्रण का विरोध करते हैं और नई पहचान बनाने या बदलाव लाने का प्रयास करते हैं। यह क्रिया अक्सर सामाजिक दंड या संघर्ष का कारण बनती है।

120. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
संस्कृतीकरण के माध्यम से निम्न जातियाँ अपनी सामाजिक स्थिति सुधारने की कोशिश तो करती हैं, लेकिन यह प्रक्रिया हमेशा सफल नहीं होती। प्रभुत्वशाली जातियाँ अपनी श्रेष्ठता बनाए रखने के लिए अक्सर इन प्रयासों का कड़ा विरोध करती हैं और उन्हें अपनी सीढ़ी में ऊपर आने से रोकती हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि केवल रीति-रिवाजों को बदलना ही पर्याप्त नहीं है, क्योंकि सामाजिक संरचना और सत्ता संबंध परिवर्तन के प्रति प्रतिरोधी हो सकते हैं।

121. (C) केवल 1, 2, 3 और 4
साक्षात्कार पद्धति का मुख्य लाभ इसकी गहराई और लचीलापन है। यह शोधकर्ता को किसी विषय पर विस्तार से चर्चा करने और अस्पष्ट जवाबों को स्पष्ट करने का अवसर देती है। हालांकि यह बड़ी जनसंख्या का सांख्यिकीय प्रतिनिधित्व करने के लिए सर्वेक्षण जितनी प्रभावी नहीं है, लेकिन यह मानवीय अनुभवों के उन गुणात्मक पहलुओं को पकड़ने में बेजोड़ है जिन्हें संख्यात्मक डेटा अक्सर अनदेखा कर देता है। यह पद्धति व्यक्तिगत दृष्टिकोणों को गहराई से समझने में सहायक है।

122. (A) कंपनियों के स्टॉक या शेयरों की खरीद-फरोख्त का बाज़ार।
स्टॉक बाज़ार आधुनिक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था का एक प्रमुख केंद्र है जहाँ विभिन्न कंपनियों की आंशिक हिस्सेदारी (शेयर) खरीदी और बेची जाती है। यह पूँजी के प्रवाह को नियंत्रित करता है और निवेशकों को लाभ कमाने का अवसर प्रदान करता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से, यह न केवल एक आर्थिक मंच है, बल्कि यह विश्वास, जोखिम और वैश्विक नेटवर्क पर आधारित एक जटिल सामाजिक संस्थान भी है जो पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है।

123. (D) शोधकर्ता की सैद्धांतिक विशेषज्ञता।
अनुसंधान में व्याहारिकता का संबंध उन भौतिक और समय संबंधी सीमाओं से है जिनके भीतर शोध पूरा करना होता है। उपलब्ध समय, बजट, सामग्री और कार्यक्षेत्र की परिस्थितियाँ इसमें मुख्य हैं। शोधकर्ता की सैद्धांतिक विशेषज्ञता उसकी योग्यता का हिस्सा है, न कि शोध की व्यावहारिक सीमाओं का। एक सफल शोध के लिए यह अनिवार्य है कि चुनी गई पद्धति उपलब्ध संसाधनों और समय सीमा के साथ तालमेल बिठाती हो।

124. (B) किसी क्षेत्र में प्रति इकाई क्षेत्रफल में होने वाली कृषि उपज की कुल राशि से।
कृषि उत्पादकता भूमि की उर्वरता और खेती की कुशलता का पैमाना है। इसकी गणना यह देखकर की जाती है कि एक निश्चित भूमि के टुकड़े (जैसे एक हेक्टेयर) से कितनी फसल प्राप्त हुई है। यह तकनीक, सिंचाई, बीज की गुणवत्ता और श्रम के प्रभावी उपयोग पर निर्भर करती है। समाजशास्त्र में, उत्पादकता का अध्ययन ग्रामीण विकास, आर्थिक स्थिति और समाज में खाद्य सुरक्षा के स्तर को समझने के लिए किया जाता है।

125. (C) एक विशेष प्रश्न तैयार करना जिसका उत्तर देना हो।
किसी भी शोध परियोजना की शुरुआत एक केंद्रित और स्पष्ट शोध प्रश्न के निर्धारण से होती है। केवल एक व्यापक विषय चुनना पर्याप्त नहीं है क्योंकि वह बहुत अस्पष्ट हो सकता है। एक विशिष्ट प्रश्न ही शोध की दिशा तय करता है और यह निर्धारित करता है कि कौन-सी पद्धति अपनाई जाए और कौन-से आँकड़े एकत्र किए जाएं। यह प्रश्न ही पूरे शोध कार्य की रीढ़ होता है जो निष्कर्ष तक मार्गदर्शन करता है।

126. (D) समाजशास्त्र को स्वयं एक विशिष्ट सामाजिक प्रघटना के रूप में वर्णित करना।
प्रतिवर्ती समाजशास्त्र वह दृष्टिकोण है जहाँ शोधकर्ता समाज का अध्ययन करने के साथ-साथ स्वयं अपनी स्थिति और पूर्वाग्रहों का भी विश्लेषण करता है। यह मानता है कि समाजशास्त्र स्वयं समाज का एक हिस्सा है और यह सामाजिक प्रक्रियाओं से अछूता नहीं रह सकता। इसका उद्देश्य यह समझना है कि कैसे समाजशास्त्रीय ज्ञान का निर्माण होता है और यह समाज को वापस कैसे प्रभावित करता है, जिससे शोध में अधिक आत्म-जागरूकता और वस्तुनिष्ठता आती है।

127. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
प्रत्येक शोध उद्देश्य के लिए चुनी गई पद्धति उसके लक्ष्यों पर निर्भर करती है। बस यात्रियों के अनुभवों को साक्षात्कारों से बेहतर समझा जा सकता है। पुराने विज्ञापनों का अध्ययन ऐतिहासिक पद्धति की मांग करता है। पार्क में लोगों के व्यवहार को देखने के लिए प्रेक्षण सबसे प्रभावी है। अंततः, यदि देशव्यापी स्तर पर लोगों की राय जाननी हो, तो सर्वेक्षण पद्धति का बड़े पैमाने पर उपयोग सबसे सटीक और व्यापक परिणाम प्रदान करता है।

128. (B) गैर-बाज़ारी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं का अनौपचारिक और सांस्कृतिक विनिमय करना।
परस्परता या आदान-प्रदान एक ऐसी सामाजिक प्रक्रिया है जहाँ वस्तुओं या सेवाओं का विनिमय लाभ कमाने के बजाय सामाजिक संबंधों को मजबूत करने के लिए किया जाता है। यह बाज़ारी अर्थव्यवस्था के कठोर नियमों से अलग है। इसमें अक्सर यह उम्मीद की जाती है कि दिए गए उपहार या सेवा का भविष्य में समान मूल्य के साथ प्रत्युत्तर दिया जाएगा। यह प्रक्रिया समुदायों के भीतर एकजुटता, विश्वास और आपसी सहयोग को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

129. (B) केवल 3 और 4
समाजशास्त्र में 'यौन' और 'लिंग' के बीच का अंतर मौलिक है। 'यौन' उन जैविक और शारीरिक विशेषताओं को दर्शाता है जो जन्मजात होती हैं। इसके विपरीत, 'लिंग' समाज द्वारा निर्मित उन भूमिकाओं और अपेक्षाओं का समूह है जो स्त्री और पुरुष के व्यवहार को परिभाषित करते हैं। यह समझना जरूरी है कि जैविक अंतर अपरिवर्तनीय हो सकते हैं, लेकिन लिंग आधारित सामाजिक अंतर सांस्कृतिक बदलावों के साथ बदले जा सकते हैं और अक्सर असमानता का आधार होते हैं।

130. (A) यह अपनी वैधता लोगों से प्राप्त नहीं करती है।
सत्तावाद सरकार का वह रूप है जहाँ शासन की शक्ति एक व्यक्ति या छोटे समूह के हाथों में केंद्रित होती है। ऐसी सरकारें जनता की सहमति या स्वतंत्र चुनावों के बजाय सैन्य बल, दमन या पारंपरिक प्रभाव के माध्यम से नियंत्रण बनाए रखती हैं। यहाँ नागरिकों की राजनीतिक भागीदारी और व्यक्तिगत स्वतंत्रता अत्यंत सीमित होती है। सत्तावादी शासन जनता के प्रति जवाबदेह होने के बजाय केवल अपनी सत्ता को अक्षुण्ण रखने पर ध्यान केंद्रित करता है।

131. (C) वर्तमान परिस्थितियों से यह कैसे विकसित होगा, इसकी कल्पना करना।
भविष्य की किसी व्यवस्था, जैसे कि 2060 की दिल्ली मेट्रो, पर शोध या लेखन करने के लिए वर्तमान प्रवृत्तियों का गहन विश्लेषण आवश्यक है। शोधकर्ता को यह देखना चाहिए कि वर्तमान तकनीक, जनसंख्या वृद्धि और शहरी नियोजन कैसे भविष्य के स्वरूप को ढाल सकते हैं। केवल कोरी कल्पना के बजाय, वर्तमान डेटा और संभावनाओं के आधार पर किया गया तार्किक विस्तार ही परियोजना को अर्थपूर्ण, विश्वसनीय और समाजशास्त्रीय रूप से प्रासंगिक बनाता है।

132. (D) व्यक्ति को जीवन में उपलब्ध होने वाले समस्त संभावित विकास और उन्नति के अवसर।
मैक्स वेबर द्वारा दी गई 'जीवनावसर' की अवधारणा यह बताती है कि किसी व्यक्ति की सामाजिक स्थिति उसके जीवन की गुणवत्ता और मिलने वाली सुविधाओं को कैसे निर्धारित करती है। इसमें अच्छी शिक्षा, स्वास्थ्य सेवाएं और सुरक्षित रोजगार तक पहुँच शामिल है। जीवनावसर समान रूप से वितरित नहीं होते हैं; ये व्यक्ति के वर्ग, जाति और लिंग पर निर्भर करते हैं। अतः, यह समाज में मौजूद संरचनात्मक असमानता को मापने का एक प्रमुख सामाजिक आधार है।

133. (C) छात्र बेहतर शोध कार्य तैयार करने हेतु आवश्यक मार्गदर्शन और दिशा प्राप्त कर सकता है।
परियोजना कार्य के दौरान अध्यापकों के साथ विचार-विमर्श करना छात्रों की सीखने की प्रक्रिया का एक अनिवार्य हिस्सा है। अध्यापक न केवल विषय के चयन में मदद करते हैं, बल्कि वे उपयुक्त पद्धति चुनने और डेटा विश्लेषण की बारीकियों को समझने में भी मार्गदर्शन प्रदान करते हैं। यह संवाद छात्रों को अपनी गलतियों को सुधारने और शोध को वैज्ञानिक मानकों के अनुरूप बनाने में सक्षम बनाता है, जिससे उनके शैक्षणिक कौशल और आत्मविश्वास में काफी वृद्धि होती है।

134. (B) स्तरीकरण
स्तरीकरण वह व्यवस्था है जिसके माध्यम से समाज को विभिन्न समूहों में श्रेणीबद्ध किया जाता है, जहाँ प्रत्येक समूह की संसाधनों और शक्ति तक पहुँच भिन्न होती है। यह प्रक्रिया समाज में ऊंच-नीच की भावनाओं को जन्म देती है और असमानता को संस्थागत रूप प्रदान करती है। चाहे वह जाति, वर्ग या लिंग के आधार पर हो, स्तरीकरण यह सुनिश्चित करता है कि कुछ लोग समाज में दूसरों की तुलना में अधिक विशेषाधिकार प्राप्त और शक्तिशाली स्थिति में रहें।

135. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
ऐतिहासिक पद्धति अतीत की सूचनाओं और विज्ञापनों के विश्लेषण के लिए उपयोग की जाती है, जबकि सर्वेक्षण समकालीन प्रवृत्तियों को पकड़ने का साधन है। ये दोनों पद्धतियाँ समय के अलग-अलग आयामों पर काम करती हैं। यद्यपि दोनों कथन अपने-अपने संदर्भ में सत्य हैं, लेकिन सर्वेक्षण की विशेषता यह नहीं समझाती कि ऐतिहासिक

पद्धति विज्ञापनों का अध्ययन क्यों करती है। ये दोनों पद्धतियाँ एक-दूसरे की पूरक हैं लेकिन एक-दूसरे का कारण नहीं हैं।

136. (A) क्योंकि उन्हें उपलब्ध सीमित समय में पूरा करना होता है।
छात्रों द्वारा की जाने वाली शोध परियोजनाएँ अक्सर शैक्षणिक सत्र की समय सीमा के भीतर पूरी करनी होती हैं। पेशेवर और 'वास्तविक' शोध कार्यों में वर्षों का समय और व्यापक संसाधन लगते हैं, जबकि छात्रों के पास कुछ ही महीनों का समय होता है। इसीलिए इन परियोजनाओं का दायरा छोटा रखा जाता है ताकि छात्र शोध के मौलिक सिद्धांतों को व्यावहारिक रुप से सीख सकें, बिना किसी बहुत बड़े और अत्यंत जटिल डेटा सेट में उलझे।

137. (A) P-2, Q-1, R-1, S-1
विभिन्न शोध समस्याओं के लिए चुनी गई पद्धतियाँ सूचना की गहराई पर निर्भर करती हैं। पीढ़ियों की आकांक्षाओं के लिए पुरानी यादों पर आधारित सर्वेक्षण उपयोगी है। वहीं, सार्वजनिक स्थान के उपयोग, पत्र लेखन में कमी की भावनाओं और उपकरणों के प्रति लोगों की जटिल प्रतिक्रियाओं को समझने के लिए साक्षात्कार सबसे सटीक है। साक्षात्कार शोधकर्ता को उन व्यक्तिगत और भावनात्मक पहलुओं तक पहुँचने में मदद करता है जिन्हें सरल सर्वेक्षणों के माध्यम से नहीं पकड़ा जा सकता है।

138. (A) सामाजिक संबंधों को वस्तुओं के मध्य होने वाले संबंधों की तरह ही अभिव्यक्त करना।
कार्ल मार्क्स की 'पण्यरीति' की अवधारणा बताती है कि पूँजीवादी समाज में मानवीय श्रम और सामाजिक संबंधों को अनदेखा कर दिया जाता है। लोग वस्तुओं को उनके उत्पादन के पीछे छिपे मानवीय संबंधों के बजाय केवल उनके बाज़ार मूल्य से देखते हैं। वस्तुएं अपनी एक स्वतंत्र पहचान बना लेती हैं और मानवीय अंतःक्रियाएं बाज़ार के लेनदेन में सिमट जाती हैं। यह स्थिति समाज में मानवीय संवेदनाओं के बजाय आर्थिक मूल्यों के बढ़ते हुए प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

139. (A) 2, 1, 4, 3
शोध प्रक्रिया का आरंभ एक स्पष्ट और संक्षिप्त शोध प्रश्न तैयार करने से होता है। इसके बाद, उस प्रश्न की प्रकृति के आधार पर सबसे उपयुक्त शोध प्रणाली का चयन किया जाता है। तीसरे चरण में, चुनी गई पद्धति का उपयोग करके क्षेत्र से आवश्यक साक्ष्य और डेटा एकत्र किए जाते हैं। अंत में, एकत्रित डेटा का सावधानीपूर्वक विश्लेषण किया जाता है ताकि शोध प्रश्न का सटीक और वैज्ञानिक उत्तर प्राप्त किया जा सके, जो पूरी प्रक्रिया का निष्कर्ष है।

140. (A) केवल 4
सामाजिक अनुसंधान में पद्धतियों का सम्मिश्रण (Triangulation) वास्तव में बहुत उपयोगी माना जाता है और इसकी सिफारिश की जाती है। यह दृष्टिकोण शोध को अधिक विश्वसनीय बनाता है क्योंकि यह एक ही समस्या को विभिन्न कोणों से देखने की अनुमति देता है। बाकी सभी कथन साक्षात्कार, सर्वेक्षण और प्रेक्षण पद्धतियों की विशेषताओं को सही ढंग से प्रस्तुत करते हैं। पद्धतियों को मिलाकर उपयोग करने से एक विधि की कमी दूसरी विधि के लाभ से पूरी हो जाती है, जिससे शोध बेहतर होता है।

141. (C) संपत्ति तथा श्रम से संबंधित संबंध
मार्क्सवादी समाजशास्त्र में, उत्पादन संबंध उन सामाजिक संबंधों को कहते हैं जो उत्पादन की प्रक्रिया के दौरान बनते हैं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण यह है कि उत्पादन के साधनों (जैसे कारखाने या भूमि) का मालिक कौन है और जो लोग वहाँ काम करते हैं, उनका मालिकों के साथ क्या संबंध है। ये संबंध समाज की बुनियादी आर्थिक संरचना और शक्ति संबंधों को निर्धारित करते हैं, जो अंततः वर्ग संघर्ष और सामाजिक बदलाव का मुख्य आधार बनते हैं।

142. (D) 1, 2, 3, 4 और 5 सभी
किसी वस्तु या सेवा जैसे 'रिक्शा' के इतिहास और प्रभाव का पूर्ण अध्ययन करने के लिए उसके विकासक्रम, प्रतिस्पर्धा और चालकों की सामाजिक स्थिति को समझना आवश्यक है। इसमें यह देखना शामिल है कि रिक्शा ने किन परिस्थितियों में शुरुआत की और आधुनिक वाहनों के साथ उसका मुकाबला कैसा रहा। भविष्य की संभावनाओं पर विचार करना शोध को पूर्णता प्रदान करता है। इन सभी पहलुओं का अध्ययन समाज में तकनीक और मानवीय श्रम के बदलते संबंधों को स्पष्ट करता है।

143. (A) शोध के प्रति उत्साह उत्पन्न करना और आवश्यक व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना।
परियोजना कार्य का मुख्य उद्देश्य छात्रों को केवल सैद्धांतिक किताबी ज्ञान तक सीमित न रखकर उन्हें वास्तविक दुनिया की चुनौतियों से परिचित कराना है। इसके माध्यम से छात्र स्वयं योजना बनाना, डेटा एकत्र करना और समस्याओं का समाधान खोजना सीखते हैं। यह प्रक्रिया उनमें वैज्ञानिक अन्वेषण की जिज्ञासा पैदा करती है और उन्हें समाजशास्त्रीय उपकरणों के व्यावहारिक उपयोग में दक्ष बनाती है, जो उनके भविष्य के शोध और करियर के लिए एक ठोस आधार प्रदान करता है।

144. (B) गर्भाधान रोकने हेतु विभिन्न आधुनिक गर्भनिरोधक उपायों का सफलतापूर्वक प्रयोग करना।
संतति निरोध या परिवार नियोजन का अर्थ है परिवार के आकार और जन्म के बीच के अंतराल को नियंत्रित करना। इसमें विभिन्न चिकित्सा और व्यवहारगत पद्धतियों का उपयोग किया जाता है ताकि अनचाहे गर्भ को रोका जा सके। समाजशास्त्र में, यह जनसंख्या नियंत्रण, महिलाओं के स्वास्थ्य और सामाजिक-आर्थिक विकास से जुड़ा एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। यह दर्शाता है कि कैसे आधुनिक तकनीक और शिक्षा लोगों को अपने व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन पर अधिक नियंत्रण प्रदान करती है।

145. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
एक सफल शोध के लिए प्रश्न और पद्धति के बीच तालमेल होना अनिवार्य है। यदि शोध प्रश्न सूक्ष्म भावनाओं के बारे में है,

अध्याय 08
संरचनात्मक परिवर्तन

1. भारत में स्थापित संसदीय, विधि एवं शिक्षा व्यवस्था किस देश के प्रारूप व प्रतिमानों पर आधारित है?
(A) फ्रांसीसी
(B) ब्रिटिश
(C) अमेरिकी
(D) पुर्तगाली

2. पाश्चात्य उदारवाद एवं स्वतंत्रता के विचार भारत ने किस ऐतिहासिक दौर में जाने?
(A) औपनिवेशिक दौर
(B) मध्यकाल
(C) प्राचीन काल
(D) स्वतंत्रता के बाद

3. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): भारत में औपनिवेशिकता के अनुभव विरोधाभासी थे।
कारण (R): भारत ने एक ओर पाश्चात्य उदारवाद को जाना, वहीं दूसरी ओर ब्रितानी शासन के तहत स्वतंत्रता का अभाव अनुभव किया।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

4. अंग्रेज़ी भाषा के ज्ञान ने दलितों के लिए अवसरों के द्वार क्यों खोले?
(A) क्योंकि अंग्रेज़ी एक सरल एवं समझने में सुगम भाषा थी।
(B) क्योंकि अंग्रेज़ों की नीति केवल दलित वर्ग को ही सरकारी नौकरियाँ देने की थी।
(C) क्योंकि दलितों ने अपनी क्षेत्रीय भाषा और संस्कृति को पूरी तरह छोड़ दिया था।
(D) क्योंकि परंपरागत व्यवस्था में उन्हें औपचारिक शिक्षा से वंचित रखा गया था।

5. निम्नलिखित में से कौन-सा एक औपनिवेशिक विरासत का उदाहरण नहीं है जिसे हम आज भी अपने दैनिक जीवन में देखते हैं?
(A) सड़कों पर बाएँ चलना
(B) ब्रेड-ऑमलेट और कटलेट जैसे खाद्य पदार्थ
(C) पारंपरिक भारतीय पंचायत व्यवस्था
(D) स्कूलों में नेक-टाई पहनना

6. नीचे दी गई तालिकाओं का मिलान कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. उपनिवेशवाद
Q. पूँजीवाद
R. राष्ट्र-राज्य
S. औद्योगीकरण
सूची II: (विवरण)
1. यांत्रिक उत्पादन का उदय
2. एक देश का दूसरे देश पर शासन
3. मुनाफ़े पर आधारित आर्थिक व्यवस्था
4. एक विशेष क्षेत्र में संप्रभु सरकार
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

7. पूर्व-पूँजीवादी शासकों और ब्रितानी उपनिवेशवादी शासकों में मुख्य गुणात्मक अंतर क्या था?
(A) पूर्व-पूँजीवादी शासक सैन्य रुप से अत्यधिक शक्तिशाली और प्रभावशाली थे।
(B) पूर्व-पूँजीवादी शासकों ने भारतीय समाज और संस्कृति को पूरी तरह बदल दिया।
(C) ब्रितानी शासकों ने भारत की पारंपरिक आर्थिक और सामाजिक व्यवस्थाओं को अक्षुण्ण रखा।
(D) ब्रितानी उपनिवेशवाद पूँजीवाद पर आधारित था जिसने आर्थिक आधार बदला।

8. ब्रितानी उपनिवेशवाद के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसने केवल भूमि स्वामित्व के नियमों को बदला।
2. इसने यह भी निर्धारित किया कि कौन सी फसल उगाई जाए और कौन सी नहीं।
3. इसने वस्तुओं के उत्पादन और वितरण के तरीकों को भी बदल दिया।
4. इसने जंगलों को अपने हस्तक्षेप से मुक्त रखा।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 and 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

155. (C) अनुदैर्ध्य (लॉन्गिट्यूडिनल) सर्वेक्षण
अनुदैर्ध्य सर्वेक्षण का उपयोग तब किया जाता है जब शोधकर्ता को एक लंबी अवधि में होने वाले क्रमिक परिवर्तनों का विश्लेषण करना हो। युवाओं की राजनीतिक राय में दस वर्षों के दौरान आने वाले बदलावों को समझने के लिए बार-बार आँकड़े एकत्र करना आवश्यक है। यह विधि समय के साथ प्रवृत्तियों और सामाजिक व्यवहारों में निरंतर विकास के सटीक विश्लेषण के लिए सर्वोत्तम मानी जाती है।

156. (B) क्योंकि यह व्यक्तियों के अनुभवों और दृष्टिकोणों की गहन समझ प्रदान करती है।
साक्षात्कार पद्धति का मुख्य जोर सांख्यिकीय गणनाओं के बजाय व्यक्तिगत अनुभवों की गहराई और सूक्ष्मता को समझने पर होता है। यह शोधकर्ताओं को सामाजिक यथार्थ के उन पहलुओं तक पहुँचने में मदद करती है जिन्हें केवल अंकों में व्यक्त नहीं किया जा सकता। मानवीय भावनाओं और दृष्टिकोणों का व्यापक विश्लेषण इसे समाजशास्त्रीय अनुसंधान की एक अत्यंत महत्वपूर्ण, प्रभावी और विस्तृत जानकारी प्रदान करने वाली तकनीक बनाता है।

157. (D) यह खुली बातचीत जैसी विधि है जहाँ चर्चा के विषय स्वाभाविक रूप से उभरते हैं।
असंरचित साक्षात्कार एक लचीली प्रक्रिया है जो एक अनौपचारिक और खुली बातचीत के समान होती है। इसमें शोधकर्ता किसी निश्चित प्रश्नावली का पालन करने के बजाय बातचीत के प्रवाह के साथ नए प्रश्न पूछता है। यह विधि उत्तरदाता को अपनी बात विस्तार से रखने की पूरी स्वतंत्रता देती है, जिससे शोध विषय के अनछुए, गहरे और सूक्ष्म पहलुओं की पहचान करना शोधकर्ता के लिए सरल हो जाता है।

158. (A) विश्वास का माहौल बनाना ताकि उत्तरदाता खुलकर जानकारी साझा कर सकें।
साक्षात्कार के दौरान तालमेल या सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित करना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यह उत्तरदाता के मन से झिझक और भय को दूर करता है। जब उत्तरदाता शोधकर्ता पर विश्वास करता है, तो वह अपने निजी अनुभवों और संवेदनशील जानकारियों को साझा करने के लिए अधिक सहज महसूस करता है। यह आपसी विश्वास ही साक्षात्कार के माध्यम से प्राप्त होने वाले आँकड़ों की गुणवत्ता और गहराई बढ़ाता है।

159. (C) शोधकर्ता के व्यवहार या प्रश्नों द्वारा उत्तरों का अनजाने में प्रभावित होना।
साक्षात्कारकर्ता पूर्वाग्रह एक ऐसी चुनौती है जहाँ शोधकर्ता का व्यक्तित्व, बोलने का लहजा या प्रश्न पूछने का विशेष तरीका उत्तरदाता की प्रतिक्रिया को बदल सकता है। कभी-कभी शोधकर्ता अनजाने में ऐसे संकेत देता है जिनसे प्रभावित होकर उत्तरदाता शोधकर्ता की अपेक्षा के अनुरूप उत्तर देने लगता है। यह स्थिति अनुसंधान की वस्तुनिष्ठता को कम करती है और परिणामों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भ्रामक और दोषपूर्ण बनाती है।

160. (A) संरचित में लचीलेपन का अभाव होता है, जबकि अर्ध-संरचित में कुछ लचीलापन होता है।
संरचित साक्षात्कार एक पूर्व-निर्धारित प्रश्नावली के माध्यम से संचालित होता है जिसमें बदलाव की कोई गुंजाइश नहीं होती। इसके विपरीत, अर्ध-संरचित साक्षात्कार में मुख्य प्रश्नों की सूची के साथ-साथ शोधकर्ता को स्थिति के अनुसार नए प्रश्न पूछने की स्वतंत्रता होती है। यह लचीलापन शोधकर्ता को किसी विशिष्ट विषय की गहराई में जाकर अधिक जानकारी प्राप्त करने और उत्तरदाता के व्यक्तिगत विचारों को समझने में सहायक होता है।

161. (D) क्योंकि लोगों के कहने/और उनके वास्तविक व्यवहार में अंतर हो सकता है।
अवलोकन पद्धति समाजशास्त्रीय अनुसंधान में इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कथनी और करनी के बीच के वास्तविक अंतर को स्पष्ट करती है। लोग साक्षात्कार या सर्वेक्षण में अक्सर आदर्श उत्तर देते हैं, लेकिन उनका वास्तविक सामाजिक व्यवहार अलग हो सकता है। प्रत्यक्ष प्रेक्षण के माध्यम से शोधकर्ता वास्तविक परिस्थितियों में लोगों की स्वाभाविक क्रियाओं को देखकर अधिक विश्वसनीय, सटीक और सूक्ष्म आँकड़े एकत्र करने में सक्षम होता है।

162. (B) सहभागी में शोधकर्ता सक्रिय रूप से भाग लेता है, जबकि गैर-सहभागी में वह दूरी बनाए रखता है।
सहभागी अवलोकन में शोधकर्ता उस समूह का हिस्सा बनकर अध्ययन करता है जिसकी गतिविधियों को समझना है। वह समूह के दैनिक कार्यों में सक्रिय रूप से शामिल होता है। इसके विपरीत, गैर-सहभागी अवलोकन में शोधकर्ता एक बाहरी दर्शक की तरह दूरी बनाकर व्यवहार का निरीक्षण करता है। इन दोनों पद्धतियों का मुख्य अंतर शोधकर्ता की समूह की गतिविधियों में उसकी प्रत्यक्ष और सक्रिय भागीदारी के स्तर पर आधारित है।

163. (C) यह प्रतिभागियों के व्यवहार को अस्वाभाविक बनाता है क्योंकि उन्हें पता होता है कि उन्हें देखा जा रहा है।
हॉथोर्न प्रभाव शोध की वैधता के लिए एक गंभीर चुनौती है क्योंकि जब लोगों को पता चलता है कि उनका अवलोकन किया जा रहा है, तो वे कृत्रिम रूप से व्यवहार करने लगते हैं। यह जागरूकता उनकी स्वाभाविक सामाजिक प्रतिक्रियाओं को बदल देती है, जिससे शोधकर्ता को वास्तविक व्यवहार का पता नहीं चल पाता। इस स्थिति में एकत्रित आँकड़े सामाजिक वास्तविकता का सही और सटीक प्रतिबिंब नहीं हो पाते हैं।

164. (D) अत्यधिक व्यक्तिपरक हो सकती है और शोधकर्ता के व्यक्तिगत पूर्वाग्रहों से प्रभावित हो सकती है।
अवलोकन पद्धति की एक बड़ी सीमा इसकी व्यक्तिपरकता है क्योंकि शोधकर्ता जो कुछ देखता है, उसका अर्थ वह अपनी समझ और मूल्यों के आधार पर निकालता है। शोधकर्ता की अपनी व्याख्याएँ और पूर्वधारणाएँ आँकड़ों के चयन और विश्लेषण को प्रभावित कर सकती हैं। इससे अनुसंधान की वस्तुनिष्ठता पर प्रश्नचिन्ह लग सकता है क्योंकि निष्कर्ष पूरी

तरह से शोधकर्ता के अपने व्यक्तिगत दृष्टिकोण और पूर्वाग्रह पर निर्भर होते हैं।

165. (A) सहभागी अवलोकन
सहभागी अवलोकन एक ऐसी तकनीक है जहाँ शोधकर्ता अध्ययन किए जाने वाले समूह के भीतर एक सक्रिय सदस्य के रूप में घुल-मिल जाता है। कारखाने में श्रमिक बनकर काम करना उसे श्रमिकों की वास्तविक समस्याओं, अनौपचारिक संबंधों और कार्य संस्कृति को गहराई से समझने में मदद करता है। यह दृष्टिकोण शोधकर्ता को अंदरूनी व्यक्ति के नजरिए से सामाजिक यथार्थ और रोजमर्रा के संघर्षों को देखने का अवसर देता है।

166. (B) एकल पद्धति की कमजोरियों को दूर करने और निष्कर्षों की समग्र वैधता को बढ़ाने के लिए।
त्रिकोणीयकरण का उपयोग अनुसंधान की विश्वसनीयता और सटीकता सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है। चूंकि हर अनुसंधान पद्धति की कुछ अपनी सीमाएँ होती हैं, इसलिए विभिन्न विधियों का संयोजन एक-दूसरे की कमियों को प्रभावी ढंग से संतुलित करता है। यह रणनीति शोधकर्ता को विविध कोणों से आँकड़ों की पुष्टि करने में मदद करती है, जिससे प्राप्त निष्कर्ष अधिक ठोस, वैज्ञानिक और विश्वसनीय बनकर अनुसंधान को मजबूती प्रदान करते हैं।

167. (B) सर्वेक्षण गरीबी के पैटर्न बताता है, जबकि साक्षात्कार उनके जीवित अनुभवों की गहराई को प्रकट करता है।
शहरी गरीबी के अध्ययन में सर्वेक्षण के माध्यम से बड़े पैमाने पर गरीबी के सांख्यिकीय आँकड़े और व्यापक रुझान प्राप्त किए जाते हैं। वहीं, साक्षात्कार उन गरीब परिवारों के व्यक्तिगत संघर्षों, भावनाओं और दैनिक जीवन की चुनौतियों को गहराई से समझने में मदद करता है। इन दोनों विधियों का मेल शोध को विस्तार और गहराई दोनों प्रदान करता है, जिससे शहरी गरीबी की एक पूर्ण और स्पष्ट तस्वीर उभरती है।

168. (A) एक विधि की ताकत के माध्यम से दूसरी विधि की सीमाओं या कमजोरियों को संतुलित करना।
त्रिकोणीयकरण का मूल दर्शन इस विचार पर आधारित है कि विविध दृष्टिकोणों के संयोजन से सामाजिक सत्य के अधिक निकट पहुँचा जा सकता है। जहाँ मात्रात्मक विधियाँ व्यापकता प्रदान करती हैं, वहीं गुणात्मक विधियाँ सूक्ष्मता और गहराई लाती हैं। इस प्रकार, एक पद्धति की सीमाओं को दूसरी पद्धति की खूबियों से ढक कर अनुसंधान की गुणवत्ता और विश्वसनीयता को उच्चतम स्तर तक ले जाने का प्रयास किया जाता है।

169. (C) किसी विषय के अध्ययन के लिए केवल एक बड़े पैमाने पर सर्वेक्षण तकनीक का उपयोग करना।
त्रिकोणीयकरण की अनिवार्य शर्त एक से अधिक विधियों, आँकड़ा स्रोतों या शोधकर्ताओं का उपयोग करना है। केवल एक ही सर्वेक्षण तकनीक पर निर्भर रहना त्रिकोणीयकरण के सिद्धांत के विरुद्ध है क्योंकि इसमें विधियों का संयोजन नहीं होता। अनुसंधान की वैधता बढ़ाने के लिए आवश्यक है कि अलग-अलग तकनीकों का उपयोग किया जाए ताकि एक ही समस्या को विभिन्न दृष्टिकोणों और कोणों से अच्छी तरह समझा जा सके।

170. (D) क्योंकि यह सामाजिक यथार्थ की अधिक पूर्ण, सूक्ष्म और बहुआयामी तस्वीर प्रस्तुत करता है।
त्रिकोणीयकरण को एक सशक्त रणनीति माना जाता है क्योंकि यह सामाजिक घटनाओं की जटिलता को बेहतर ढंग से पकड़ने में सक्षम है। विभिन्न पद्धतियों के माध्यम से शोधकर्ता किसी समस्या के कई पहलुओं को एक साथ देख सकता है। यह बहुआयामी दृष्टिकोण न केवल निष्कर्षों की पुष्टि करता है बल्कि सामाजिक यथार्थ की एक समृद्ध, गहरी और व्यापक समझ विकसित करने में अनुसंधान के दौरान सहायक होता है।

171. (C) यह शहरी जीवन, सामाजिक असमानता और सामाजिक अंतःक्रिया को समझने का माध्यम है।
सार्वजनिक परिवहन केवल तकनीकी या आर्थिक विषय नहीं है, बल्कि यह एक महत्वपूर्ण सामाजिक क्षेत्र है। इसका अध्ययन यह उजागर करता है कि समाज के विभिन्न वर्ग किस तरह एक-दूसरे के संपर्क में आते हैं और संसाधनों तक उनकी पहुँच कैसे भिन्न है। यह शहरी जीवन की गतिशीलता, सामाजिक भेदभाव और लोगों के बीच होने वाली अनौपचारिक अंतःक्रियाओं को समझने के लिए एक अत्यंत अनूठा माध्यम है।

172. (B) अनुभव जानने के लिए साक्षात्कार
महिलाओं के सुरक्षा संबंधी अनुभवों को समझने के लिए साक्षात्कार सबसे प्रभावी विधि है क्योंकि यह उनके डर, चिंताओं और व्यक्तिगत अनुभवों को गहराई से व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है। अनुभवों की प्रकृति गुणात्मक होती है, जिसे सांख्यिकीय सर्वेक्षणों के माध्यम से पूरी तरह नहीं समझा जा सकता। साक्षात्कार शोधकर्ता को सुरक्षा की सूक्ष्म भावनाओं और रोजमर्रा की चुनौतियों का विस्तृत और सार्थक विश्लेषण करने देता है।

173. (D) क्योंकि वे विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के लोगों को एक स्थान पर लाते हैं।
बसें और ट्रेनें साझा स्थान कहलाती हैं क्योंकि यहाँ समाज के विभिन्न वर्गों, जातियों और लिंगों के लोग एक साथ यात्रा करते हैं। यह स्थान उन लोगों के बीच अनौपचारिक मेलजोल का केंद्र बनता है जो शायद निजी जीवन में कभी नहीं मिलते। इस साझा परिवेश में सामाजिक पदानुक्रम और अंतःक्रिया के नए नियम देखे जा सकते हैं, जो शहरी सामाजिक संरचना का सटीक प्रतिबिंब होते हैं।

174. (A) अवलोकन पद्धति
पीक आवर्स के दौरान यात्रियों के व्यवहार का अध्ययन करने के लिए अवलोकन पद्धति सर्वोत्तम है क्योंकि यह प्रत्यक्ष रूप से सीट की प्रतिस्पर्धा और लोगों के आपसी व्यवहार को दर्ज करती है। प्रश्नावली के माध्यम से यात्री शायद अपने आक्रामक व्यवहार को स्वीकार न करें, लेकिन प्रत्यक्ष प्रेक्षण से वास्तविकता स्पष्ट हो जाती है। यह विधि भीड़-भाड़ वाली

स्थितियों में होने वाली सामाजिक क्रियाओं का वस्तुनिष्ठ चित्रण प्रदान करती है।

175. (C) निम्न-आय वर्ग बसों पर निर्भर हो सकता है, जबकि मध्यम वर्ग अन्य साधनों को चुन सकता है।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से परिवहन के साधनों का चयन अक्सर आर्थिक स्थिति और सामाजिक वर्ग से प्रभावित होता है। निम्न-आय वर्ग के लोग अपनी सामर्थ्य के कारण सार्वजनिक बसों पर अधिक निर्भर रहते हैं, जबकि मध्यम वर्ग समय बचाने और सुविधा के लिए मेट्रो या निजी वाहनों को चुनता है। यह अंतर समाज में संसाधनों के वितरण और परिवहन सेवाओं तक पहुँच की सामाजिक असमानता को दर्शाता है।

106. (A) क्योंकि उनके लिए जानकारी और संदर्भ आसानी से उपलब्ध होते हैं।
सुपरिचित सामाजिक विषयों पर शोध करना प्रारंभिक स्तर के शोधकर्ताओं के लिए लाभदायक होता है। ऐसे विषयों पर पहले से ही काफी साहित्य, आँकड़े और जानकार लोग उपलब्ध होते हैं, जिससे शोध की पृष्ठभूमि तैयार करना आसान हो जाता है। इसके अतिरिक्त, शोधकर्ता का स्वयं का अनुभव भी उसे विषय की बारीकियों को समझने में मदद करता है, जिससे वह अधिक सटीक प्रश्न पूछ पाने और साक्ष्यों का विश्लेषण करने में सक्षम होता है।

107. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
समाजशास्त्रीय शब्दावली में अंग्रेजी और हिंदी शब्दों के सटीक अर्थों को समझना महत्वपूर्ण है। 'Assimilation' का अर्थ आत्मसात्मीकरण है, जहाँ एक समूह दूसरे में विलीन हो जाता है। 'Capitalism' पूँजीवाद को दर्शाता है, 'Community' समुदाय का अर्थ देती है जो साझी पहचान पर आधारित है, और 'Democracy' लोकतंत्र को संदर्भित करती है जहाँ शासन की शक्ति जनता में निहित होती है। यह पारिभाषिक स्पष्टता समाज के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए आवश्यक है।

108. (B) मनुष्यों द्वारा, स्वयं अपने ऊपर स्वेच्छा से।
थॉमस माल्थस के अनुसार 'कृत्रिम निरोध' जनसंख्या नियंत्रण के वे उपाय हैं जिन्हें मनुष्य अपनी बुद्धिमत्ता और इच्छाशक्ति से अपनाते हैं। इसमें ब्रह्मचर्य का पालन, देरी से विवाह करना और अन्य नैतिक संयम शामिल हैं। माल्थस का मानना था कि यदि मनुष्य स्वयं इन उपायों द्वारा जनसंख्या पर नियंत्रण नहीं करता, तो प्रकृति अकाल और युद्ध जैसे 'प्राकृतिक निरोधों' के माध्यम से जनसंख्या को संतुलित करने का कार्य करती है।

109. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
प्रेक्षण पद्धति में केवल देखना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि 'वैज्ञानिक ढंग से देखना' आवश्यक है। शोधकर्ता को निरंतर यह मूल्यांकन करना पड़ता है कि कौन-सी घटना उसके शोध प्रश्न से संबंधित है और किसे नजरअंदाज किया जा सकता है। यह चयन प्रक्रिया अत्यंत जटिल है क्योंकि गलत निर्णय शोध के निष्कर्षों को भ्रामक बना सकता है। अतः, प्रेक्षण के लिए उच्च स्तर की सतर्कता और वस्तुनिष्ठता की आवश्यकता होती है।

110. (D) संख्या में कम होना और असमानता की स्थिति में होना।
समाजशास्त्र में 'अल्पसंख्यक' केवल सांख्यिकीय संख्या पर आधारित नहीं है। इसमें यह भी शामिल है कि उस समूह के पास समाज में शक्ति, प्रतिष्ठा और संसाधनों का कितना हिस्सा है। एक अल्पसंख्यक समूह वह है जिसके सदस्यों को बहुसंख्यक समूह की तुलना में कम अवसर और अधिकार मिलते हैं, जिससे वे सामाजिक और आर्थिक रूप से असुरक्षित स्थिति में होते हैं। यह शब्द अक्सर वंचन और भेदभाव के संदर्भ में उपयोग किया जाता है।

111. (A) टीवी देखने की समय-अवधि पूछना और फिर प्रत्यक्ष अवलोकन द्वारा उसकी जांच करना।
लोग अक्सर अपने व्यवहार के बारे में साक्षात्कार में जो बताते हैं, वह उनके वास्तविक आचरण से भिन्न हो सकता है। इस विसंगति को पकड़ने के लिए प्रेक्षण और साक्षात्कार का सम्मिश्रण अनिवार्य है। जब शोधकर्ता लोगों से उनके द्वारा बिताए गए समय के बारे में पूछता है और फिर स्वयं चुपचाप उनके वास्तविक व्यवहार को देखता है, तो वह समाज में कथनी और करनी के बीच के वास्तविक अंतर को स्पष्ट कर पाता है।

112. (B) केवल 3
'उदारीकरण' का अर्थ वास्तव में राज्य के नियंत्रण को कम करना और बाज़ार की शक्तियों को अधिक स्वतंत्रता देना है, न कि नियंत्रण बढ़ाना। बाकी सभी कथन अपनी अवधारणाओं को सही ढंग से परिभाषित करते हैं। बज़ारीकरण और पण्यीकरण समाज के आर्थिक पहलुओं को बाज़ार के दायरे में लाते हैं, जबकि भूमंडलीकरण वैश्विक स्तर पर परस्पर निर्भरता को बढ़ाता है। अतः आर्थिक सुधारों के संदर्भ में उदारीकरण को समझना आवश्यक है।

113. (B) विवाह अथवा वंशानुक्रम दोनों के माध्यम से
नातेदारी उन सामाजिक संबंधों का जाल है जो व्यक्तियों को आपस में जोड़ता है। ये संबंध दो प्रकार से स्थापित होते हैं: पहला, रक्त या वंशानुक्रम के माध्यम से (जैसे माता-पिता और बच्चे), और दूसरा, विवाह के माध्यम से (जैसे पति-पत्नी और उनके ससुराल पक्ष के संबंधी)। नातेदारी की यह व्यवस्था समाज में अधिकारों, कर्तव्यों और उत्तराधिकार के हस्तांतरण को नियंत्रित करने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और बुनियादी भूमिका निभाती है।

114. (A) पुराने रिकॉर्ड, तस्वीरों और साक्षात्कारों के माध्यम से ऐतिहासिक पद्धति अपनाना।
समय के साथ आए परिवर्तनों का अध्ययन करने के लिए ऐतिहासिक पद्धति सबसे उपयुक्त है क्योंकि यह वर्तमान के साथ-साथ अतीत के साक्ष्यों का भी विश्लेषण करती है। पुराने मानचित्र, तस्वीरें और बुज़ुर्गों के साक्षात्कार उस स्थान के क्रमिक विकास की कहानी बताते हैं। केवल वर्तमान प्रेक्षण या सर्वेक्षण से यह पता नहीं चल सकता कि बीस साल पहले स्थिति क्या थी। ऐतिहासिक स्रोतों का उपयोग ही बदलाव की निरंतरता को स्पष्ट कर सकता है।

115. (C) आत्मसात्मीकरण
आत्मसात्मीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें एक अल्पसंख्यक या अधीनस्थ सांस्कृतिक समूह धीरे-धीरे अपनी पहचान खो देता है और बहुसंख्यक समाज की जीवनशैली, मूल्यों और भाषा को पूरी तरह अपना लेता है। इसका परिणाम समाज में सांस्कृतिक विविधता का समाप्त होना और एक ऐसी समरूपता का उदय होना है जहाँ अलग-अलग समूहों की विशिष्टताएँ विलीन हो जाती हैं। यह प्रक्रिया अक्सर सामाजिक एकीकरण की दिशा में एक चरम कदम मानी जाती है।

9. औपनिवेशिक शासन ने जंगलों को नियंत्रित करने के लिए कानून क्यों बनाए?
(A) पर्यावरण की रक्षा और पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने के लिए।
(B) स्थानीय गड़रियों और पशुपालक समुदायों की सहायता और चराई के लिए।
(C) पेड़ों की कटाई और व्यावसायिक खेती जैसे आर्थिक हितों के लिए।
(D) दुर्लभ जंगली जानवरों और प्राकृतिक वनस्पतियों के संरक्षण के लिए।

10. औपनिवेशिक काल में लोगों की आवाजाही बढ़ने का एक प्रमुख कारण क्या था?
(A) बागानों और अन्य उपनिवेशों में मज़दूरी हेतु पलायन।
(B) पर्यटन और वैश्विक यात्रा के नए साधनों का विकास।
(C) धार्मिक तीर्थयात्राओं और सांस्कृतिक मेलों में भारी वृद्धि।
(D) उच्च शिक्षा और ज्ञान की प्राप्ति हेतु विश्वव्यापी यात्रा।

11. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): पश्चिमी शिक्षा पद्धति ने भारत में राष्ट्रवादी चेतना के विकास में भी योगदान दिया।
कारण (R): पश्चिमी शिक्षा का उद्देश्य केवल एक ऐसे भारतीय वर्ग को तैयार करना था जो ब्रिटिश शासन को बनाए रखने में सहयोगी हो।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

12. पूँजीवाद की प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) उत्पादन के साधनों पर सामूहिक स्वामित्व और सामाजिक कल्याण पर जोर।
(B) उत्पादन के साधनों पर कुछ विशेष लोगों का स्वामित्व और मुनाफ़ा कमाने पर जोर।
(C) सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था का पूर्ण नियंत्रण।
(D) पारंपरिक वस्तु-विनिमय प्रणाली पर आधारित अर्थव्यवस्था।

13. भारत के किस प्रांत से 1834-1920 के दौरान बड़ी संख्या में लोगों को मॉरीशस के बागानों में मज़दूरी के लिए भेजा गया?
(A) पंजाब
(B) मद्रास
(C) बिहार
(D) बंगाल

14. पूँजीवाद के उदय के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. पूँजीवाद का प्रारंभ एक जटिल प्रक्रिया के फलस्वरुप हुआ।
2. इसमें यूरोप द्वारा शेष दुनिया की खोज शामिल थी।
3. इसमें विज्ञान और तकनीक का अद्वितीय विकास शामिल था।
4. इसने उद्योग एवं कृषि में रुपांतरण किया।
5. इसने संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित किया।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

15. 'राष्ट्र-राज्य' (नेशन-स्टेट) की अवधारणा का सबसे सटीक वर्णन कौन सा विकल्प करता है?
(A) भौगोलिक क्षेत्र जहाँ संप्रभु सरकार हो और निवासी वहाँ के नागरिक हों।
(B) एक ऐसा संप्रभु राज्य जहाँ केवल एक ही विशिष्ट राष्ट्र के लोग निवास करते हैं।
(C) एक विशाल और शक्तिशाली साम्राज्य जो विभिन्न छोटे देशों पर प्रत्यक्ष शासन करता है।
(D) एक ऐसा प्राचीन समाज जहाँ कोई औपचारिक शासन या सरकार की व्यवस्था नहीं होती।

16. औद्योगीकरण का संबंध किससे है?
(A) आधुनिक कृषि तकनीक और फसल उत्पादन में होने वाली अभूतपूर्व वृद्धि से।
(B) गैर-मानवीय शक्ति संसाधनों पर आधारित यांत्रिक उत्पादन के उदय से।
(C) पारंपरिक हस्तशिल्प और लघु कुटीर उद्योगों के व्यवस्थित विकास से।
(D) अर्थव्यवस्था के तृतीयक क्षेत्र अर्थात सेवा क्षेत्र के निरंतर विस्तार से।

17. नीचे दी गई तालिकाओं का मिलान कीजिए:
सूची I: (शहर)
P. सूरत
Q. मसुलीपट्नम
R. बंबई
S. मद्रास

सूची II: (औपनिवेशिक काल में स्थिति)
1. औपनिवेशिक शासन में मजबूत हुआ आधुनिक नगर
2. व्यापारिक केंद्र जिसका अस्तित्व कमजोर हो गया
3. औपनिवेशिक शासन में प्रचलित हुआ आधुनिक नगर
4. प्राचीन नगर जिसका पतन हुआ

(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

के माध्यम से विकास पर।
(D) भारी मशीनीकृत उद्योगों, पब्लिक सेक्टर और बड़े सहकारी क्षेत्रों पर।

37. "स्वदेशी आंदोलन" ने किस भावना को मज़बूत किया?
(A) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रति निष्ठा।
(B) पश्चिमी संस्कृति को अपनाने की भावना।
(C) भारत की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के प्रति निष्ठा।
(D) कृषि को त्यागने की भावना।

38. समाजशास्त्री एम. एस. ए. राव ने भारत में नगरीय प्रभाव की कितनी स्थितियों की व्याख्या की है?
(A) दो
(B) तीन
(C) चार
(D) पाँच

39. एम. एस. ए. राव के अनुसार, वे गाँव जहाँ से बड़ी संख्या में लोग दूरदराज के शहरों में रोज़गार के लिए जाते हैं, किस प्रकार के नगरीय प्रभाव का उदाहरण हैं?
(A) द्वितीय प्रकार
(B) तृतीय प्रकार
(C) चतुर्थ प्रकार
(D) प्रथम प्रकार

40. भिलाई जैसे औद्योगिक शहर के निकट स्थित गाँवों पर पड़ने वाला प्रभाव, जहाँ गाँवों की ज़मीन शहर का हिस्सा बन जाती है, एम. एस. ए. राव के अनुसार किस श्रेणी में आता है?
(A) द्वितीय प्रकार
(B) प्रथम प्रकार
(C) तृतीय प्रकार
(D) यह राव के वर्गीकरण में शामिल नहीं है।

41. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): महानगरों के विस्तार से निकटवर्ती गाँव पूरी तरह से नगर के प्रसार में विलीन हो जाते हैं।
कारण (R): यह एम. एस. ए. राव द्वारा वर्णित तीसरे प्रकार का शहरी प्रभाव है, जिससे महानगरों का उद्भव और विकास होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

42. 1951 से 2011 तक भारत में नगरीय जनसंख्या और कस्बों की संख्या के संबंध में क्या प्रवृत्ति देखी गई है?
(A) नगरीय जनसंख्या और कस्बों की संख्या दोनों में लगातार वृद्धि हुई है।
(B) नगरीय जनसंख्या और कस्बों की संख्या दोनों में कमी आई है।
(C) नगरीय जनसंख्या बढ़ी है, लेकिन कस्बों की संख्या घटी है।
(D) नगरीय जनसंख्या घटी है, लेकिन कस्बों की संख्या बढ़ी है।

43. 1951 और 2011 के बीच भारत की कुल जनसंख्या में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत कैसे बदला है?
(A) 17.29% से घटकर 15.10% हो गया।
(B) 25.50% से बढ़कर 41.42% हो गया।
(C) 31.16% से घटकर 17.29% हो गया।
(D) 17.29% से बढ़कर 31.16% हो गया।

44. भारत में नगरीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. 1951 में भारत की 17.29% जनसंख्या नगरीय थी।
2. 2011 में भारत की 31.16% जनसंख्या नगरीय थी।
3. 1981-2001 में नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर में गिरावट दिखी।
4. 2011 में नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर में मामूली वृद्धि देखी गई।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

45. आज़ादी के बाद पहली बार किस दशक में नगरीय क्षेत्रों की जनसंख्या में ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा अधिक निरपेक्ष वृद्धि देखने को मिली?
(A) 1951-1961
(B) 1971-1981
(C) 2001-2011
(D) 1991-2001

46. अंग्रेज़ी भाषा के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन उसके विरोधाभासी प्रभाव को दर्शाता है?
(A) यह केवल आधुनिक साहित्यिक रचनाओं और सरकारी पत्राचार के लिए प्रयोग की जाती है।
(B) यह वर्तमान के अत्यधिक भूमंडलीकृत बाज़ार में केवल आर्थिक लाभ दिलाने का माध्यम है।
(C) इसका स्वतंत्र भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक ढांचे पर कोई नकारात्मक प्रभाव नहीं पड़ा।
(D) यह एक ओर विशेषाधिकारों की द्योतक है, तो दूसरी ओर वंचितों के लिए अवसर भी है।

47. उपनिवेशवाद को "एक संरचना एवं व्यवस्था" के रूप में क्यों समझा जाता है?
(A) क्योंकि इसने राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संरचना में नवीन परिवर्तन उत्पन्न किए।

(C) पूर्ण रोजगार और सामाजिक समानता।
(D) भूमि-स्वामित्व और अंग्रेज़ी में शिक्षा की सुविधा।

28. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. जॉब चारनॉक द्वारा सुतानुती, कोलीकाता और गोविंदपुर को पट्टे पर लेना।
2. फोर्ट विलियम की स्थापना।
3. चाय उद्योगों की भारत में शुरुआत।
4. बंबई को कच्ची कपास के निर्यात केंद्र के रूप में विकसित करना।

(A) 1, 2, 4, 3
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 4, 3, 2, 1

29. कलकत्ता (कोलकाता) नगर का केंद्र क्या बना?
(A) हुगली नदी के आसपास के व्यापारिक और सामरिक महत्व के तटवर्ती क्षेत्र।
(B) गोविंदपुर गाँव की पुरानी बसावट और वहाँ के पारंपरिक स्थानीय बाजार।
(C) फोर्ट विलियम और उसके निकटवर्ती खुले क्षेत्र (मैदान) का परिसर।
(D) सुतानुती का प्रसिद्ध बाजार जहाँ विदेशी और स्थानीय वस्तुओं का व्यापार होता था।

30. औपनिवेशिक काल में भारत में चाय बागानों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) ज़्यादातर चाय के बागान असम में थे।
(B) औपनिवेशिक सरकार ने बागान मालिकों के हितों के लिए बल का प्रयोग किया।
(C) असम की जनसंख्या सघन न होने के कारण मज़दूर दूसरे प्रांतों से लाए गए।
(D) बागानों के लिए मज़दूरों की भर्ती स्वेच्छा और अच्छे वेतन पर आधारित थी।

31. भारत में चाय बागानों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारत में चाय उद्योगों की शुरुआत 1851 में हुई।
2. असम में चाय बागानों के लिए मज़दूरों की नियुक्ति ठेकेदारों द्वारा की जाती थी।
3. मज़दूरों को लाने के लिए प्रलोभन, बल और भय का इस्तेमाल होता था।
4. मज़दूरों के स्वास्थ्य और इलाज पर अत्यधिक ध्यान दिया जाता था।
5. इसके लिए ट्रांसपोर्ट ऑफ़ नेटिव लेबरर्स एक्ट जैसे कानूनों का इस्तेमाल किया गया।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2, 3 और 5
(C) केवल 2, 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

32. औपनिवेशिक प्रशासक यह क्यों मानते थे कि बागान वालों को फायदा पहुँचाने के लिए मज़दूरों पर कड़ा बल प्रयोग किया जाना चाहिए?
(A) क्योंकि वे मज़दूरों के मौलिक मानवाधिकारों और हितों का बहुत सम्मान करते थे।
(B) क्योंकि औपनिवेशिक देशों में प्रजातांत्रिक नियमों का पालन करना अनिवार्य नहीं था।
(C) क्योंकि मज़दूर स्वयं अपने कार्यों के लिए बल प्रयोग और कठोरता की माँग करते थे।
(D) क्योंकि उनके पास अनुशासन बनाए रखने के लिए बल प्रयोग के अतिरिक्त कोई साधन नहीं था।

33. औपनिवेशिक काल के दौरान चाय बागानों के अंग्रेज़ मालिकों की जीवन शैली कैसी थी?
(A) अत्यंत सादी और सरल।
(B) भोग-विलास और चमक से भरपूर।
(C) स्थानीय लोगों के साथ घुल-मिलकर रहने वाली।
(D) मज़दूरों के समान कष्टप्रद।

34. नीचे दी गई तालिकाओं का मिलान कीजिए:
सूची I: (औपनिवेशिक निर्यात)
P. जूट (पटसन)
Q. कच्ची कपास
R. कहवा, चीनी, नील
S. चाय

सूची II: (प्रमुख निर्यात केंद्र/क्षेत्र)
1. चेन्नई
2. बंबई
3. असम
4. कोलकाता

(A) P-4, Q-2, R-1, S-3
(B) P-2, Q-4, R-3, S-1
(C) P-1, Q-3, R-2, S-4
(D) P-3, Q-1, R-4, S-2

35. स्वतंत्र भारत की सरकार ने औद्योगीकरण को सक्रिय रूप से बढ़ावा क्यों दिया?
(A) औपनिवेशिक नीतियों को जारी रखने के लिए।
(B) केवल कृषि पर ध्यान केंद्रित करने के लिए।
(C) आर्थिक शोषण और गरीबी को दूर करने के लिए।
(D) पश्चिमी देशों के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए।

36. स्वतंत्रता के बाद भारत में औद्योगीकरण के लिए किस पर बल दिया गया?
(A) केवल छोटे, कुटीर और पारंपरिक हस्तशिल्प उद्योगों के पुनरुद्धार पर।
(B) केवल निजी क्षेत्र के बड़े और मध्यम दर्जे के औद्योगिक समूहों के निवेश पर।
(C) विदेशी कंपनियों के सीधे निवेश और तकनीकी सहयोग

18. ब्रिटेन में औद्योगीकरण का नगरीकरण पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) यह रुपांतरित होकर एक पूर्णतः नगरीय देश की श्रेणी में आ गया।
(B) लोग बड़े शहरों से छोटे गाँवों की ओर भारी संख्या में पलायन करने लगे।
(C) नगरीय जनसंख्या के अनुपात और वितरण में कोई महत्वपूर्ण परिवर्तन नहीं हुआ।
(D) केवल लंदन जैसे महानगरों का विकास हुआ और बाकी क्षेत्रों में गिरावट आई।

19. भारत में ब्रिटिश औद्योगीकरण का प्रारंभिक प्रभाव क्या था, जो ब्रिटेन के अनुभव के विपरीत था?
(A) देश में तीव्र गति से नगरीकरण और आधुनिक औद्योगिक विकास की प्रक्रिया।
(B) सेवा क्षेत्र और तृतीयक आर्थिक गतिविधियों का अभूतपूर्व एवं तीव्र विकास।
(C) वि-औद्योगीकरण और लोगों का पुनः पारंपरिक कृषि की ओर गमन।
(D) देश के सभी पुराने और पारंपरिक उद्योगों का पूर्ण आधुनिकीकरण करना।

20. भारत में "वि-औद्योगीकरण" (De-industrialization) का क्या अर्थ है?
(A) नए उद्योगों की स्थापना में कमी।
(B) कृषि का मशीनीकरण।
(C) सेवा क्षेत्र में गिरावट।
(D) पारंपरिक उद्योगों का पतन।

21. औपनिवेशिक काल में तंजौर, ढाका और मुर्शिदाबाद की राजसभाओं के विघटन का क्या परिणाम हुआ?
(A) इन ऐतिहासिक शहरों का व्यापारिक केंद्रों के रूप में तेजी से विकास हुआ।
(B) ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उत्पादन और भूमि सुधारों में भारी वृद्धि हुआ।
(C) इन सभाओं के संरक्षण में कार्यरत कारीगरों और कलाकारों का पतन हुआ।
(D) स्थानीय स्तर पर अनेक नए राजनीतिक दलों और संगठनों का उदय हुआ।

22. औद्योगीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ब्रिटेन में औद्योगीकरण से लोग नगरों में आए।
2. भारत में ब्रिटिश औद्योगीकरण के प्रारंभिक समय में लोग कृषि की ओर गए।
3. भारत में वि-औद्योगीकरण का मुख्य कारण "मेनचेस्टर प्रतियोगिता" थी।
4. भारत के सभी प्राचीन नगर औपनिवेशिक काल में और समृद्ध हुए।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

23. भारत की 1911 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार, ग्रामीण कारीगरों द्वारा अपना वंशानुगत व्यवसाय छोड़कर खेती अपनाने का मुख्य कारण क्या था?
(A) आधुनिक खेती करने में प्राप्त होने वाली उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा और मान।
(B) तत्कालीन औपनिवेशिक सरकार द्वारा कृषि कार्यों के लिए दिए गए भारी प्रोत्साहन।
(C) ग्रामीण कारीगरों की खेती और पशुपालन के कार्यों में बढ़ती व्यक्तिगत रुचि।
(D) आयातित कपड़ों और बर्तनों की प्रतियोगिता से उनके उद्योगों का अंत।

24. औपनिवेशिक भारत में बंबई, कलकत्ता और मद्रास जैसे समुद्र तटीय नगरों को क्यों महत्व दिया गया?
(A) इन स्थानों से वस्तुओं का निर्यात और आयात सरलता से संपन्न किया जा सकता था।
(B) उनकी स्वास्थ्यप्रद और बहुत ही सुंदर तटीय जलवायु की विशिष्टता के कारण।
(C) क्योंकि वे सदियों से पारंपरिक भारतीय संस्कृति और कला के प्रमुख केंद्र थे।
(D) यहाँ घनी आबादी पहले से मौजूद थी जिसने उद्योगों के लिए सस्ता श्रम उपलब्ध कराया।

25. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): औपनिवेशिक नगर भूमंडलीय पूँजीवाद के ठोस उदाहरण थे।
कारण (R): ये नगर ब्रिटेन में स्थित आर्थिक केंद्र और औपनिवेशिक भारत में स्थित हाशिये के बीच महत्वपूर्ण संपर्क सूत्र थे।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

26. 1900 तक, भारत की एक तिहाई कच्ची कपास किस औपनिवेशिक बंदरगाह से निर्यात की जाती थी?
(A) बंबई
(B) कलकत्ता
(C) मद्रास
(D) कोचीन

27. डी. पी. मुखर्जी के अनुसार, ईस्ट इंडिया कंपनी और ब्रिटिश शासन ने भारत को बदले में क्या दिया?
(A) औद्योगिक समृद्धि और सांस्कृतिक स्वतंत्रता।
(B) राजनीतिक संप्रभुता और आर्थिक आत्मनिर्भरता।

(B) क्योंकि यह केवल एक विदेशी देश का दूसरे देश पर किया गया राजनीतिक शासन था।
(C) क्योंकि यह ऐतिहासिक रूप से केवल कुछ वर्षों की समय अवधि तक ही प्रभावी रहा था।
(D) क्योंकि इसका स्वतंत्र भारत की सामाजिक संरचना पर कोई स्थायी प्रभाव नहीं पड़ा है।

48. नीचे दी गई तालिकाओं का मिलान कीजिए:
सूची I: (लेखक/कार्य)
P. एम. एस. ए. राव
Q. डी. पी. मुखर्जी
R. जॉब चारनॉक
S. अल्वी एवं शानिन
सूची II: (संबंधित अवधारणा/कार्य)
1. पूर्व-पूँजीवादी शासकों का विश्लेषण
2. कलकत्ता की स्थापना से संबंधित
3. नगरीय प्रभाव का वर्गीकरण
4. शिक्षित मध्य वर्ग पर टिप्पणी
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

49. निम्नलिखित में से किस घटना का संबंध औपनिवेशिक नगरीकरण से नहीं है?
(A) सूरत का पतन
(B) भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना
(C) बंबई का उदय
(D) मुर्शिदाबाद के कारीगरों का पतन

50. "राष्ट्रवाद के सिद्धांत" के अनुसार किसी क्षेत्र विशेष के लोगों को क्या अधिकार प्राप्त होता है?
(A) स्वतंत्रता एवं संप्रभुता का अधिकार।
(B) दूसरे देशों पर शासन करने का अधिकार।
(C) अपने पारंपरिक व्यवसाय को बनाए रखने का अधिकार।
(D) वैश्विक नागरिकता प्राप्त करने का अधिकार।

51. भारतीय राष्ट्रवादियों ने उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद के बीच किस विरोधाभास का उपयोग स्वाधीनता के लिए लड़ने हेतु किया?
(A) देश में हो रहे आर्थिक विकास और साथ में बढ़ती गरीबी का स्पष्ट विरोधाभास।
(B) प्राप्त हो रही आधुनिक शिक्षा और समाज के पारंपरिक ज्ञान का वैचारिक विरोधाभास।
(C) विदेशी शासन और स्व-शासन के अधिकार के बीच का मौलिक विरोधाभास।
(D) नगरीय जीवन की सुविधाओं और ग्रामीण जीवन की कठिनाइयों का सामाजिक विरोधाभास।

52. निम्नलिखित में से कौन-सा औद्योगीकरण का सामाजिक परिणाम है?
(A) केवल देश के कुल उत्पादन और सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में होने वाली भारी वृद्धि।
(B) औद्योगिक कचरे के प्रबंधन से स्थानीय और वैश्विक पर्यावरण की स्थिति में सुधार।
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि और पशुपालन के कार्यों में लगे लोगों की संख्या में वृद्धि।
(D) रोज़गारवृत्ति में बदलाव, जहाँ लोग कारखानों और ऑफिसों में अधिक कार्य करते हैं।

53. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. भारत में ब्रिटिश शासन की स्थापना
2. भारत में वि-औद्योगीकरण का दौर
3. स्वतंत्र भारत में भारी उद्योगों को बढ़ावा
4. भारत सरकार द्वारा 'स्मार्ट सिटी' मिशन की घोषणा
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 3, 1, 2, 4

54. औपनिवेशिक काल के "यूरोपीय शहर" के प्रारुप की क्या विशेषता थी?
(A) यह तत्कालीन भारतीय शहरों के रिहायशी इलाकों के साथ पूरी तरह से एकीकृत था।
(B) इसमें विशाल बंगले, क्लब और यूरोपीय मूल के नागरिकों हेतु श्रेष्ठ सुविधाएँ थीं।
(C) इसमें स्थानीय भारतीयों और यूरोपीय लोगों के लिए एक समान नागरिक सुविधाएँ थीं।
(D) इसमें पारंपरिक भारतीय वास्तुकला और स्थानीय निर्माण शैलियों को विशेष बढ़ावा दिया गया।

55. ब्रितानी उपनिवेशवाद के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ब्रितानी उपनिवेशवाद पूँजीवादी व्यवस्था पर आधारित था।
2. इसने भारतीय अर्थव्यवस्था में बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप किया।
3. भारत में इसके कारण वि-औद्योगीकरण हुआ।
4. इसने नए औपनिवेशिक शहरों जैसे बंबई और मद्रास को जन्म दिया।
5. इसने भारत में केवल सकारात्मक परिवर्तन लाए।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 5
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

56. 1800 में लंदन की जनसंख्या लगभग कितनी थी?
(A) 1.1 करोड़
(B) 7 करोड़
(C) 20 लाख

76. "मेनचेस्टर प्रतियोगिता" का भारत के किस उद्योग पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा?
(A) लोहा और इस्पात उद्योग।
(B) रेशम और कपास उत्पादन।
(C) जूट उद्योग।
(D) चाय उद्योग।

77. 1690 में किस अंग्रेज़ व्यापारी ने हुगली नदी के तट पर तीन गाँवों को पट्टे पर लेकर कलकत्ता की नींव रखी?
(A) वारेन हेस्टिंग्स
(B) लॉर्ड कर्जन
(C) जॉब चारनॉक
(D) रॉबर्ट क्लाइव

78. नीचे दी गई तालिकाओं का मिलान कीजिए:
सूची I: (स्थान)
P. बिहार
Q. असम
R. मेनचेस्टर
S. मॉरीशस
सूची II: (संबंधित तथ्य)
1. चाय के बागान
2. बागान हेतु मज़दूरों का स्रोत
3. बागान हेतु मज़दूरों का गंतव्य
4. कपड़ा उद्योग प्रतियोगिता का केंद्र
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

79. औपनिवेशिक काल में बागान मालिकों ने सरकारी ताकत का सहारा क्यों लिया?
(A) कम वेतन पर मज़दूरों से काम कराने और उन पर पूर्ण नियंत्रण बनाए रखने के लिए।
(B) मज़दूरों को कार्यस्थल पर बेहतर नागरिक सुविधाएँ और आवास देने के उद्देश्य से।
(C) बागानों में शिक्षा का व्यापक प्रसार करने और मज़दूरों को साक्षर बनाने के लिए।
(D) बागान क्षेत्रों में पर्यावरण संरक्षण के कठोर कानूनों को प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए।

80. "ट्रांसपोर्ट ऑफ़ नेटिव लेबरर्स एक्ट" का उपयोग किस उद्देश्य के लिए किया गया था?
(A) मज़दूरों को उनके घर वापस भेजने के लिए।
(B) मज़दूरों को असम के चाय बागानों में भेजने के लिए।
(C) मज़दूरों को बेहतर वेतन दिलाने के लिए।
(D) मज़दूरों को शिक्षित करने के लिए।

81. औपनिवेशिक काल में चाय बागानों के मालिकों का जीवन कैसा था?
(A) वे स्थानीय लोगों के साथ मिलकर रहते थे।
(B) उनकी जीवन शैली भोग-विलास और ऐश्वर्यपूर्ण थी।
(C) वे मज़दूरों के साथ उनकी झोपड़ियों में रहते थे।
(D) उनका जीवन बहुत ही साधारण और कठिन था।

82. औपनिवेशिक शासन के दौरान हुए आर्थिक शोषण को किसने एक केंद्रीय मुद्दा बनाया?
(A) भारतीय राष्ट्रवादियों ने
(B) ब्रिटिश प्रशासकों ने
(C) विदेशी व्यापारियों ने
(D) भारतीय राजाओं ने

83. निम्नलिखित में से कौन सा एक शहर आजादी के बाद के औद्योगिक विकास से संबंधित नहीं है?
(A) बोकारो
(B) भिलाई
(C) मुर्शिदाबाद
(D) दुर्गापुर

84. भारत सरकार की 'स्मार्ट सिटी' की महत्वाकांक्षी योजना का नगरीकरण की प्रक्रिया पर क्या प्रभाव पड़ने की संभावना है?
(A) यह देश में हो रही नगरीकरण की वर्तमान गति को काफी सीमा तक धीमा कर देगी।
(B) इसका भारत की नगरीकरण की प्रक्रिया पर भविष्य में कोई भी स्थायी प्रभाव नहीं पड़ेगा।
(C) यह शहरी लोगों को पुनः गाँवों में वापस जाकर बसने के लिए व्यापक रूप से प्रोत्साहित करेगी।
(D) यह नगरीकरण की गति को और अधिक तीव्र करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगी।

85. एम. एस. ए. राव के अनुसार, जब एक महानगर बढ़ता है और अपने आस-पास के गाँवों को निगल जाता है, तो यह किस प्रकार का शहरी प्रभाव है?
(A) पहले प्रकार का
(B) दूसरे प्रकार का
(C) तीसरे प्रकार का
(D) यह एक असाधारण घटना है

86. औपनिवेशिक नगरों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. औपनिवेशिक काल में बंबई, कलकत्ता और मद्रास जैसे नगरों का विकास हुआ।
2. इन नगरों से उपभोग की वस्तुओं का निर्यात और आयात होता था।
3. ये नगर ब्रिटेन और भारत के बीच महत्वपूर्ण संपर्क सूत्र थे।
4. ये नगर भूमंडलीय पूँजीवाद के उदाहरण थे।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 2 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

(A) वे गाँव जहाँ से लोग दूरदराज के शहरों में रोज़गार हेतु प्रवास करते हैं।
(B) महानगरों के उद्भव और उनके बेतरतीब भौगोलिक विस्तार की विशेष स्थिति।
(C) बड़े औद्योगिक शहरों के निकट स्थित गाँवों पर पड़ने वाला प्रत्यक्ष प्रभाव।
(D) वे क्षेत्र जो अब पूर्णतः नगरीकृत होकर बड़े शहरों का अंग बन चुके हैं।

67. 1981-2001 की अवधि में भारत में नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर की प्रवृत्ति क्या थी?
(A) इसमें तीव्र वृद्धि हुई।
(B) यह स्थिर रही।
(C) इसमें गिरावट दिखाई दी।
(D) इसमें उतार-चढ़ाव होता रहा।

68. समाज में होने वाले संरचनात्मक परिवर्तनों के अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष क्या है?
(A) उपनिवेशवाद केवल एक इतिहास का विषय है जिसका वर्तमान जीवन पर कोई प्रभाव नहीं है।
(B) औद्योगीकरण और नगरीकरण केवल तकनीकी और यांत्रिक विकास से जुड़ी साधारण प्रक्रियाएँ हैं।
(C) भारत में हुए सभी संरचनात्मक और सामाजिक परिवर्तन केवल सकारात्मक और हितकारी रहे हैं।
(D) उपनिवेशवाद आज भी जीवन में मौजूद है और औद्योगीकरण व नगरीकरण इसके अंग हैं।

69. निम्नलिखित में से क्या पूँजीवादी व्यवस्था का एक गुण माना जाता है?
(A) स्थिरता और परंपरा का संरक्षण।
(B) आर्थिक समानता पर जोर।
(C) गतिशीलता, वृद्धि की संभावनाएँ, और प्रसार।
(D) सरकारी नियंत्रण और योजना।

70. औपनिवेशिक काल में निम्नलिखित में से किस शहर की राजसभा के विघटन से उस पर आश्रित कारीगरों का पतन हुआ?
(A) बंबई
(B) ढाका
(C) मद्रास
(D) कलकत्ता

71. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): औपनिवेशिक काल में भारतीय हस्तशिल्प की माँग में भारी कमी आई।
कारण (R): दरबारों के विघटन और बाहरी बाज़ारों के समाप्त हो जाने से उच्चकोटि के उत्पादों के खरीदार कम हो गए।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

72. रेलवे के विस्तार ने दूर-दराज के ग्रामीण शिल्पों पर क्या प्रभाव डाला?
(A) उन्हें गंभीर रूप से प्रभावित किया और धीरे-धीरे उनके पतन का प्रमुख कारण बना।
(B) ग्रामीण शिल्पों के सर्वांगीण विकास और उनके आधुनिकीकरण में सक्रिय सहायता की।
(C) दूर-दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित किसी भी शिल्प पर कोई विशेष प्रभाव नहीं डाला।
(D) उन्हें सीधे वैश्विक बाज़ार से जोड़कर अत्यधिक लाभ और प्रतिष्ठा प्रदान करने का कार्य किया।

73. भारत में हुए संरचनात्मक परिवर्तनों के अध्ययन में औपनिवेशिक अनुभवों को जानना क्यों महत्वपूर्ण है?
(A) क्योंकि औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय समाज में वास्तव में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।
(B) क्योंकि भारत का संपूर्ण लिखित इतिहास केवल औपनिवेशिक काल के आगमन से ही प्रारंभ होता है।
(C) क्योंकि भारत में आधुनिक विचार और संस्थाओं की शुरुआत औपनिवेशिकता की ही देन है।
(D) क्योंकि सभी आधुनिक और वैज्ञानिक विचार पूरी तरह से प्राचीन भारतीय परंपरा से उपजे हैं।

74. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में अंग्रेज़ी भाषा के प्रभाव के बारे में असत्य है?
(A) इसने सभी भारतीयों के लिए समान अवसर पैदा किए।
(B) इसने भारत को भूमंडलीकृत बाज़ार में एक विशेष स्थान दिलाया है।
(C) यह आज भी विशेषाधिकारों की द्योतक है।
(D) इसमें उत्कृष्ट साहित्यिक रचनाएँ भी की गई हैं।

75. उपनिवेशवाद के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. एक देश द्वारा दूसरे देश पर शासन को उपनिवेशवाद माना जाता है।
2. पश्चिमी उपनिवेशवाद का प्रभाव सबसे ज़्यादा रहा है।
3. ब्रितानी उपनिवेशवाद ने भारत के आर्थिक व्यवसाय में हस्तक्षेप किया।
4. उपनिवेशवाद ने लोगों की आवाजाही को बढ़ाया।
5. उपनिवेशवाद ने भारत में केवल पश्चिमी शिक्षा पद्धति का प्रसार किया।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 2, 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

96. औद्योगीकरण और नगरीकरण के बीच क्या संबंध है?
(A) इन दोनों सामाजिक प्रक्रियाओं के मध्य वास्तव में कोई प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष संबंध नहीं है।
(B) ये प्रायः एक साथ होने वाली प्रक्रियाएँ हैं, परंतु हमेशा ऐसा होना अनिवार्य नहीं है।
(C) किसी भी समाज में नगरीकरण की प्रक्रिया हमेशा औद्योगीकरण से बहुत पहले संपन्न होती है।
(D) औद्योगीकरण की प्रक्रिया हमेशा से ही नगरीकरण के प्रसार को रोकने का कार्य करती है।

97. 1900 तक ब्रिटेन की कितनी प्रतिशत जनसंख्या कस्बों और शहरों में रहती थी?
(A) 20 प्रतिशत
(B) 74 प्रतिशत
(C) 50 प्रतिशत
(D) 90 प्रतिशत

98. औपनिवेशिक भारत में औद्योगीकरण का अनुभव पश्चिमी औद्योगीकरण से किस प्रकार भिन्न था?
(A) भारत में इसके कारण वि-औद्योगीकरण हुआ जिससे लोग पुनः कृषि की ओर लौटे।
(B) भारत में भी पश्चिमी देशों की भाँति औद्योगीकरण की प्रक्रिया बहुत तीव्र गति से हुई।
(C) भारत में औद्योगीकरण ने समाज के सभी वर्गों के लिए समान आर्थिक अवसर पैदा किए।
(D) भारत में औद्योगीकरण ने सभी पारंपरिक और धार्मिक शहरों को और अधिक मजबूत किया।

99. 19वीं सदी के अंत में भारत में जनसंख्या वृद्धि किन शहरों में देखी गई?
(A) सदियों पुराने पारंपरिक धार्मिक नगरों और सांस्कृतिक केंद्रों की घनी आबादी में।
(B) देश के लगभग सभी ग्रामीण क्षेत्रों और खेती पर आधारित छोटे कस्बों के इलाकों में।
(C) उन आधुनिक नए शहरों में जहाँ यांत्रिक और मशीनीकृत उद्योग स्थापित किए गए थे।
(D) पतनशील पुराने व्यापारिक नगरों में जहाँ हस्तशिल्प का काम अभी भी थोड़ा बचा हुआ था।

100. औपनिवेशिक काल के भारत में एक शिक्षित स्नातक का भविष्य क्या माना जाता था?
(A) एक सफल उद्यमी बनना।
(B) ज़मीन का परजीवी ज़मींदार बनना।
(C) एक रचनात्मक कलाकार बनना।
(D) बस नौकरी ढूँढ़ने वाला।

101. औपनिवेशिक नगरों के निर्यात के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. औपनिवेशिक काल में कलकत्ता से जूट का निर्यात होता था।
2. बंबई से कच्ची कपास का निर्यात होता था।
3. मद्रास से कहवा और चीनी का निर्यात होता था।
4. ये सभी नगर भूमंडलीय पूँजीवाद के केंद्र थे।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

102. असम में चाय बागानों के लिए मज़दूरों की कमी का मुख्य कारण क्या था?
(A) क्योंकि असम की स्थानीय जलवायु स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से अत्यंत उत्तम और अनुकूल थी।
(B) असम की जनसंख्या सघन नहीं थी और चाय के बागान निर्जन क्षेत्रों में स्थित थे।
(C) क्योंकि वहाँ के बागानों में काम करने वाले मज़दूरों का वेतन बहुत अधिक और आकर्षक था।
(D) क्योंकि असम के उन क्षेत्रों में पहले से ही कई भारी उद्योग और कारखाने मौजूद थे।

103. औपनिवेशिक काल में बागानों के मालिक अंग्रेज़ और उनकी मेम कहाँ रहते थे?
(A) बागान परिसर के भीतर ही मज़दूरों के साथ उनकी कच्ची और छोटी बस्तियों में।
(B) बागान के पास के बड़े शहरों में साधारण मकानों को किराए पर लेकर सपरिवार रहते थे।
(C) वे स्थाई रूप से ब्रिटेन में रहते थे और केवल वार्षिक निरीक्षण के लिए ही भारत आते थे।
(D) दूरदराज के एकांत में बने अत्यंत विशाल एवं ऐश्वर्यपूर्ण सुसज्जित बँगलों में।

104. स्वतंत्र भारत में राष्ट्रवादियों ने गरीबी को दूर करने के लिए क्या उपाय सोचा?
(A) तीव्र और वृहद औद्योगीकरण।
(B) कृषि पर पूर्ण निर्भरता।
(C) विदेशी सहायता पर निर्भरता।
(D) पारंपरिक हस्तशिल्प को पुनर्जीवित करना।

105. एम. एस. ए. राव द्वारा वर्णित किस प्रकार के नगरीय प्रभाव में स्थानीय निवासियों और प्रवासी कामगारों के बीच संबंधों को संतुलित करने की समस्या उत्पन्न होती है?
(A) बड़े महानगरों के उद्भव और उनके बेतरतीब भौगोलिक विस्तार की विशेष स्थिति में।
(B) औद्योगिक शहरों के निकट के गाँवों में जहाँ स्थानीय और प्रवासियों का संपर्क हो।
(C) एम. एस. ए. राव के अनुसार यह समस्या औद्योगिक शहरों के निकट के गाँवों में जहाँ स्थानीय और प्रवासियों

87. भारत में सड़कों पर बाएँ ओर चलने का नियम किसका अनुकरण है?
(A) फ्रांसीसी नियम
(B) अमेरिकी नियम
(C) एक प्राचीन भारतीय परंपरा
(D) ब्रिटिश अनुकरण

88. "पूँजीवादी दृष्टिकोण से बाज़ार को एक वृहद-भूमंडलीकृत रूप में देखा गया।" इस कथन का क्या तात्पर्य है?
(A) बाज़ार की कोई भौगोलिक सीमा नहीं है और यह अब पूर्णतः विश्वव्यापी हो चुका है।
(B) आधुनिक बाज़ार केवल स्थानीय जरूरतों और क्षेत्रीय उत्पादन तक ही सीमित होता है।
(C) पूँजीवाद में केवल राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर के बाज़ारों को ही सर्वोपरि महत्व दिया जाता है।
(D) आधुनिक बाज़ार की पहुँच केवल विकसित और अमीर देशों के उपभोक्ताओं के लिए ही है।

89. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): पश्चिमी उपनिवेशवाद का पश्चिमी पूँजीवाद के विकास से अन्योन्याश्रित संबंध है।
कारण (R): पूँजीवाद के विस्तार और लाभ सुनिश्चित करने के लिए उपनिवेशों के संसाधनों का दोहन आवश्यक था।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

90. परंपरागत सभ्यताओं में अधिकांश लोग किस कार्य में लगे होते थे?
(A) खेत या ज़मीन पर उत्पादन से संबंधित प्राथमिक एवं पारंपरिक आर्थिक कार्यों में।
(B) बड़े पैमाने पर होने वाले आधुनिक औद्योगिक उत्पादन और विनिर्माण के कार्यों में।
(C) शहरी क्षेत्रों में विकसित सेवा क्षेत्र और तृतीयक आर्थिक गतिविधियों के प्रबंधन में।
(D) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और वाणिज्यिक लेन-देन की विभिन्न जटिल प्रणालियों के संचालन में।

91. निम्नलिखित घटनाओं को उनके प्रारंभ के अनुसार कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. कलकत्ता में फोर्ट विलियम की स्थापना हुई।
2. बिहार से मॉरीशस मज़दूरों का गमन शुरु हुआ।
3. भारत में चाय उद्योगों की शुरुआत हुई।
4. भारत की जनगणना में ग्रामीण उद्योगों के पतन का उल्लेख हुआ।
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 3, 1, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 3, 2, 4, 1

92. औपनिवेशिक काल में भारत में नए मध्य वर्ग का उद्भव कहाँ से हुआ?
(A) मुख्यतः देश के सुदूर ग्रामीण और पारंपरिक कृषक समुदायों के संपन्न परिवारों से।
(B) बंगाल और मद्रास के वे क्षेत्र जिन्हें औपनिवेशिक शासन ने सेवा हेतु चुना था।
(C) मुख्यतः उन प्राचीन कारीगर और शिल्पकार वर्गों से जो शहरों में निवास करते थे।
(D) मुख्यतः देश के विभिन्न वनांचलों में रहने वाले स्वायत्त आदिवासी समुदायों के बीच से।

93. अंग्रेज़ी भाषा के प्रभाव के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. अंग्रेज़ी का ज्ञान रोज़गार के क्षेत्र में परेशानी पैदा कर सकता है।
2. अंग्रेज़ी भाषा का ज्ञान अनेक वंचित समूहों के लिए लाभकारी सिद्ध हुआ है।
3. अंग्रेज़ी आज भी विशेषाधिकारों की द्योतक है।
4. भारत को भूमंडलीकृत बाज़ार में अंग्रेज़ी ज्ञान के कारण विशेष स्थान मिला है।
5. भारत में अंग्रेज़ी में कोई साहित्यिक रचना नहीं हुई है।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3, और 4
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

94. "संरचनात्मक परिवर्तन" से क्या तात्पर्य है?
(A) केवल सार्वजनिक इमारतों, सड़कों और शहरों की बाहरी बनावट में होने वाला परिवर्तन।
(B) केवल समाज की पुरानी सांस्कृतिक मान्यताओं और धार्मिक विश्वासों में आने वाला परिवर्तन।
(C) समाज के विभिन्न व्यक्तियों की व्यक्तिगत सोच और उनकी जीवनशैली में आने वाला परिवर्तन।
(D) समाज की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संरचना में होने वाले नवीन परिवर्तन।

95. नीचे दी गई तालिकाओं का मिलान कीजिए:
सूची I: (दशक)
P. 1951
Q. 2011
R. 1981-2001
S. 2001-2011
सूची II: (नगरीय जनसंख्या प्रवृत्ति)
1. नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 31.16%
2. नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 17.29%
3. नगरीय दशकीय वृद्धि दर में मामूली वृद्धि
4. नगरीय दशकीय वृद्धि दर में गिरावट

(D) 50 लाख

57. औपनिवेशिक काल में भारतीय मज़दूरों और दक्ष सेवाकर्मियों को जहाज़ों के माध्यम से किन क्षेत्रों में भेजा गया?
(A) केवल ब्रिटेन और अन्य यूरोपीय देशों के औद्योगिक केंद्रों में कार्य करने हेतु।
(B) केवल भारत के पड़ोसी एशियाई देशों में व्यापारिक गतिविधियों को बढ़ाने हेतु।
(C) एशिया, अफ्रीका और अमेरिका में स्थित अन्य विभिन्न औपनिवेशिक क्षेत्रों में।
(D) उन्हें किसी भी स्थिति में भारत की सीमाओं से बाहर समुद्र पार नहीं भेजा गया।

58. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): औद्योगीकरण और नगरीकरण हमेशा एक साथ होने वाली प्रक्रियाएँ नहीं हैं।
कारण (R): भारत में ब्रिटिश औद्योगीकरण के कारण कुछ नगरीय केंद्रों का पतन हुआ और लोग कृषि की ओर लौटे, जो ब्रिटेन के अनुभव के विपरीत था।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

59. "भारतीय मूल" (Indian Diaspora) के लोग जो आज दुनिया के अनेक देशों में पाए जाते हैं, उनके पूर्वज मुख्यतः किस कारण से उन देशों में पहुँचे थे?
(A) वैश्विक स्तर पर पर्यटन और अवकाश बिताने की अपनी व्यक्तिगत रुचियों के कारण।
(B) विदेशों में स्वयं के बड़े व्यापार और औद्योगिक संस्थान स्थापित करने के उद्देश्य से।
(C) प्रतिष्ठित विदेशी संस्थानों से उच्च शिक्षा और पेशेवर ज्ञान प्राप्त करने हेतु।
(D) औपनिवेशिक शासन के दौरान मज़दूरों या सेवाकर्मियों के रूप में गमन के कारण।

60. स्वतंत्र भारत के राष्ट्रवादियों का यह अनुमान क्यों था कि तीव्र और वृहद औद्योगीकरण से विकास और सामाजिक न्याय हो पाएगा?
(A) क्योंकि वे पश्चिमी मॉडल की नकल करना चाहते थे।
(B) क्योंकि उनका मानना था कि इससे आर्थिक स्थिति में आवश्यक सुधार होंगे।
(C) क्योंकि औपनिवेशिक काल में उद्योग बहुत सफल रहे थे।
(D) क्योंकि कृषि पूरी तरह से विफल हो चुकी चुकी थी।

61. नीचे दी गई तालिकाओं का मिलान कीजिए:
सूची I: (प्रक्रिया)
P. वि-औद्योगीकरण
Q. नगरीकरण
R. उपनिवेशवाद
S. राष्ट्रवाद
सूची II: (परिणाम/विशेषता)
1. स्व-शासन और संप्रभुता का विचार
2. शहरों में जनसंख्या का संकेन्द्रण
3. पारंपरिक उद्योगों का पतन
4. एक देश का दूसरे पर प्रभुत्व
(A) P-1, Q-4, R-2, S-3
(B) P-3, Q-2, R-4, S-1
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

62. "अमूल" किस प्रकार के उद्योग का एक प्रसिद्ध उदाहरण है?
(A) भारी मशीनीकृत उद्योग
(B) पब्लिक सेक्टर उद्योग
(C) निजी विदेशी कंपनी
(D) दुग्ध आधारित सहकारी उद्योग

63. निम्नलिखित में से कौन सा शहर, जैसे बोकारो और भिलाई, स्वतंत्रता के बाद के औद्योगिक विकास का उदाहरण है?
(A) औद्योगिक शहर (Industrial towns)
(B) पारंपरिक धार्मिक केंद्र
(C) औपनिवेशिक बंदरगाह शहर
(D) पर्यटन स्थल

64. भारत में नगरीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. औपनिवेशिक काल में पुराने शहरों का अस्तित्व कमजोर होता गया।
2. नए औपनिवेशिक शहरों का उद्भव और विकास हुआ।
3. स्वतंत्र भारत में सरकार ने औद्योगीकरण को बढ़ावा दिया।
4. स्वतंत्र भारत में भी नगरीकरण की प्रक्रिया जारी रही।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 and 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

65. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत में कस्बों की संख्या लगभग कितनी थी?
(A) 2843
(B) 7935
(C) 6244
(D) 1951

66. एम. एस. ए. राव द्वारा वर्णित नगरीय प्रभाव की वह स्थिति कौन सी है जिसमें प्रवासी अपने परिवार को नियमित रूप से पैसे भेजते हैं और ज़मीन-जायदाद में निवेश करते हैं?

का संपर्क हो।

(D) एम. एस. ए. राव के अनुसार यह समस्या किसी भी प्रकार के नगरीय प्रभाव में नहीं होती।

106. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:

अभिकथन (A): 2001-2011 के दशक में, भारत में निरपेक्ष रूप में नगरीय जनसंख्या में वृद्धि ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि से अधिक थी।

कारण (R): यह ग्रामीण क्षेत्रों की वृद्धि दर में तेज़ी से आई गिरावट और नगरीय क्षेत्रों की वृद्धि दर के लगभग समान रहने के कारण हुआ।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।

(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।

(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

107. निम्नलिखित में से कौन सी एक विशेषता उपनिवेशवाद की नहीं है?

(A) एक देश का दूसरे देश पर शासन।

(B) शासित देश के आर्थिक मामलों में हस्तक्षेप।

(C) शासित देश के संसाधनों का दोहन।

(D) शासित देश के लोगों को पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता देना।

108. पश्चिमी शिक्षा पद्धति को भारत में लाने का एक अप्रकट परिणाम क्या हुआ?

(A) भारत के सभी नागरिक धीरे-धीरे पूरी तरह से पश्चिमी संस्कृति के रंग में ही ढल गए।

(B) यह राष्ट्रवादी और औपनिवेशिक शासन विरोधी चेतना के विकास का माध्यम बनी।

(C) इसके कारण भारत की सदियों पुरानी पारंपरिक शिक्षा प्रणाली पूरी तरह से समाप्त हो गई।

(D) भारत में इसके लागू होते ही साक्षरता दर बहुत कम समय में 100% के स्तर पर पहुँच गई।

109. नीचे दी गई तालिकाओं का मिलान कीजिए:

सूची I: (ऐतिहासिक प्रक्रिया)

P. औद्योगीकरण (ब्रिटेन में)

Q. वि-औद्योगीकरण (भारत में)

R. औद्योगीकरण (स्वतंत्र भारत में)

S. भूमंडलीकरण (समकालीन भारत में)

सूची II: (प्रमुख विशेषता/परिणाम)

1. भारी और सार्वजनिक क्षेत्र के उद्योगों पर जोर
2. ग्रामीण से नगरीय देश में रूपांतरण
3. शहरों का तीव्र प्रसार और 'स्मार्ट सिटी' योजना
4. पारंपरिक उद्योगों का पतन

(A) P-4, Q-1, R-3, S-2

(B) P-1, Q-3, R-2, S-4

(C) P-2, Q-4, R-1, S-3

(D) P-3, Q-2, R-4, S-1

110. 'परबतपुरी' नामक स्थान का उल्लेख ऐतिहासिक संदर्भ में किस रूप में किया गया है?

(A) भारत के एक बहुत ही प्रसिद्ध और ऐतिहासिक पर्यटन स्थल के विशिष्ट रूप में।

(B) प्राचीन काल से ही एक पवित्र और महत्वपूर्ण धार्मिक एवं आध्यात्मिक केंद्र के रूप में।

(C) प्राचीन भारतीय ज्ञान और परंपराओं के संरक्षण हेतु स्थापित एक बड़े विश्वविद्यालय के रूप में।

(D) चाय बागानों हेतु सामान की लदाई और उतारने की एक अत्यंत महत्वपूर्ण जगह के रूप में।

111. उपनिवेशवाद के कारण आए कुछ परिवर्तन सुनियोजित थे, जैसे पश्चिमी शिक्षा। इसका मुख्य उद्देश्य क्या था?

(A) भारतीयों का एक ऐसे वर्ग तैयार करना जो ब्रिटिश शासन को चलाने में सहायक हो।

(B) सभी भारतीयों को आधुनिक और वैज्ञानिक सोच से युक्त एक नया समाज बनाना।

(C) भारत के सभी हिस्सों से आर्थिक गरीबी और अशिक्षा को जड़ से पूरी तरह दूर करना।

(D) बिना किसी भेदभाव के सभी भारतीय नागरिकों को उच्च एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देना।

112. भारत के इतिहास के संदर्भ में, निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

1. पूँजीवाद का उदय
2. राष्ट्र-राज्यों का उदय
3. पश्चिमी उपनिवेशवाद का प्रभाव
4. भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन का उदय

(A) 1, 2, 3, 4

(B) 4, 2, 3, 1

(C) 3, 1, 4, 2

(D) 1, 3, 2, 4

113. समाज में संरचनात्मक परिवर्तनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. औद्योगीकरण का संबंध यांत्रिक उत्पादन से है।
2. नगरीकरण का संबंध शहरों में जनसंख्या के बढ़ने से है।
3. वि-औद्योगीकरण का संबंध पारंपरिक उद्योगों के पतन से है।
4. उपनिवेशवाद का संबंध एक देश के दूसरे पर शासन से है।
5. राष्ट्रवाद का संबंध आत्म-निर्णय के अधिकार से है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?

(A) केवल 1, 2 और 3

(B) केवल 2, 3 और 4

(C) केवल 1, 3, 4 और 5

(D) 1, 2, 3, 4 और 5

(D) शहरी क्षेत्रों में काम करने वाला विशाल औद्योगिक श्रमिक वर्ग।

164. औपनिवेशिक शहरीकरण के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सत्य है?
(A) इसने मौजूदा शहरों को बिना किसी बदलाव के विकसित होने दिया।
(B) यह मुख्य रूप से भारतीय आबादी की जरूरतों को पूरा करने के लिए था।
(C) इसने 'व्हाइट टाउन' और 'ब्लैक टाउन' के बीच समानता को बढ़ावा दिया।
(D) इसने नस्लीय और सामाजिक पदानुक्रम पर आधारित नए शहरी स्थान बनाए।

165. औपनिवेशिक शहरों की स्थानिक संरचना किस उद्देश्य से डिजाइन की गई थी?
(A) औपनिवेशिक प्रशासन, वाणिज्य और शक्ति संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए।
(B) सभी नागरिकों के बीच सामाजिक समानता और बंधुत्व की भावना को बढ़ावा देने के लिए।
(C) पारंपरिक भारतीय वास्तुकला और ऐतिहासिक स्मारकों को उचित रूप से संरक्षित करने के लिए।
(D) शहर के सभी निवासियों के लिए समान नागरिक सुविधाएं और स्वास्थ्य सेवाएं प्रदान करने के लिए।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

औपनिवेशिक शासन ने भारतीय ग्रामीण समाज की संरचना में दूरगामी परिवर्तन किए। अंग्रेजों के आने से पहले, भारत में भूमि पर समुदाय या वंश का अधिकार होता था और भू-राजस्व का भुगतान उपज के एक हिस्से के रूप में किया जाता था। अंग्रेजों ने इस व्यवस्था को समाप्त कर दिया और भूमि को एक खरीदी-बेची जा सकने वाली वस्तु बना दिया। उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी और महालवाड़ी जैसी नई भू-राजस्व प्रणालियाँ लागू कीं। इन सभी प्रणालियों का मूल उद्देश्य राज्य के लिए एक निश्चित और अधिकतम राजस्व सुनिश्चित करना था, भले ही फसल कैसी भी हो। राजस्व की दरें बहुत अधिक थीं और इसे नकदी में चुकाना पड़ता था। इसके परिणामस्वरूप, किसानों को अक्सर साहूकारों से उच्च ब्याज दरों पर ऋण लेने के लिए मजबूर होना पड़ता था। ऋण चुकाने में असमर्थता के कारण वे अपनी भूमि से बेदखल हो जाते थे, जिससे भूमिहीन मजदूरों की संख्या में भारी वृद्धि हुई। इसके अतिरिक्त, कृषि के वाणिज्यीकरण ने किसानों को खाद्य फसलों के बजाय नील, कपास और जूट जैसी नकदी फसलें उगाने के लिए मजबूर किया, जिनकी जरूरत ब्रिटिश उद्योगों को थी। इससे स्थानीय खाद्य सुरक्षा पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा और अकालों की बारंबारता बढ़ी। इस प्रकार, औपनिवेशिक नीतियों ने ग्रामीण भारत में गरीबी, ऋणग्रस्तता और भूमि अलगाव को संस्थागत बना दिया।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. अंग्रेजों द्वारा लागू की गई नई भू-राजस्व प्रणालियों का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों के गरीब किसानों की आर्थिक भलाई और सुरक्षा सुनिश्चित करना।
(B) राज्य के लिए एक निश्चित और अधिकतम राजस्व सुनिश्चित करना।
(C) भारतीय कृषि की उत्पादकता और उत्पादन की गुणवत्ता में निरंतर सुधार करना।
(D) ग्रामीण समाज पर स्थानीय साहूकारों के बढ़ते हुए ऋण प्रभाव को काफी कम करना।

167. ब्रिटिश नीतियों के तहत भूमि को एक 'खरीदी-बेची जा सकने वाली वस्तु' बनाने का क्या परिणाम हुआ?
(A) भारतीय किसानों की समग्र आर्थिक स्थिति और क्रय शक्ति में महत्वपूर्ण सुधार हुआ।
(B) किसानों को ऋण के लिए साहूकारों पर निर्भर होना पड़ा और अक्सर भूमि से बेदखल होना पड़ा।
(C) भूमि का वास्तविक स्वामित्व छोटे और मध्यम स्तर के किसानों के हाथ में केंद्रित हो गया।
(D) ग्रामीण भारतीय समाज में व्यापक सामाजिक समानता और न्याय की भावना बढ़ी।

168. गद्यांश के अनुसार, कृषि के वाणिज्यीकरण का ग्रामीण समाज पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) किसानों को नकदी फसलें उगाने के लिए मजबूर किया गया, जिससे खाद्य सुरक्षा कम हुई और अकाल बढ़े।
(B) किसानों ने खाद्य फसलों की खेती को प्राथमिकता दी, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में खाद्य सुरक्षा बढ़ी।
(C) किसानों को अपनी फसलें सीधे लाभकारी ब्रिटिश बाजारों में बेचने का अवसर मिला, जिससे उन्हें लाभ हुआ।
(D) ग्रामीण भारत की पारंपरिक अर्थव्यवस्था पहले की तुलना में अधिक संरचनात्मक रूप से मजबूत हो गई।

169. नई भू-राजस्व प्रणालियों ने किसानों को साहूकारों पर कैसे निर्भर बना दिया?
(A) ग्रामीण साहूकार अक्सर संकटग्रस्त किसानों को बहुत कम ब्याज दरों पर ऋण उपलब्ध कराते थे।
(B) ब्रिटिश सरकार ने सक्रिय रूप से किसानों को साहूकारों से ऋण लेने हेतु सरकारी स्तर पर प्रोत्साहित किया।
(C) राजस्व को नकदी में और समय पर चुकाने की मजबूरी ने किसानों को ऋण लेने के लिए विवश किया।
(D) नई प्रणालियों के तहत साहूकारों को ही सरकार द्वारा आधिकारिक राजस्व संग्रहकर्ता नियुक्त किया गया था।

170. स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी और महालवाड़ी किसके उदाहरण हैं?
(A) पारंपरिक भारतीय सिंचाई प्रणालियों के।
(B) ग्रामीण स्व-शासन की संस्थाओं के।
(C) कृषि सुधार आंदोलनों के।
(D) अंग्रेजों द्वारा लागू की गई भू-राजस्व प्रणालियों के।

1. भारत में आधुनिक विचार औपनिवेशिकता की देन हैं।
2. अंग्रेज़ी भाषा ने दलितों के लिए अवसर प्रदान किए।
3. ब्रितानी उपनिवेशवाद पूँजीवाद पर आधारित था।
4. भारत में वि-औद्योगीकरण हुआ।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 2 और iv
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

125. "भारत में स्थापित संसदीय, विधि एवं शिक्षा व्यवस्था ब्रिटिश प्रारूप व प्रतिमानों पर आधारित है।" यह कथन क्या दर्शाता है?
(A) भारत की मौलिकता।
(B) ब्रिटिश व्यवस्था की सार्वभौमिक स्वीकृति।
(C) भारत पर उपनिवेशवाद का स्थायी प्रभाव।
(D) भारत और ब्रिटेन के बीच वर्तमान संबंध।

126. उपनिवेशवाद की समझ के लिए पूँजीवाद की संरचना को समझना क्यों आवश्यक है?
(A) क्योंकि ये दोनों ऐतिहासिक और आर्थिक अवधारणाएँ एक दूसरे के पूर्णतः विपरीत कार्य करती हैं।
(B) क्योंकि पूँजीवाद की अवधारणा केवल औपनिवेशिक भारत के बाज़ारों में ही मौजूद रही थी।
(C) क्योंकि भारत में उपनिवेशवाद के आगमन ने पूँजीवाद की संभावनाओं को पूरी तरह समाप्त किया।
(D) क्योंकि ब्रितानी उपनिवेशवाद पूँजीवादी व्यवस्था पर आधारित था और उसके प्रसार हेतु था।

127. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. 19वीं सदी के अंत में भारत में आधुनिक शहरों का उदय।
2. भारत में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 17.29% होना (1951)।
3. भारत में नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर में गिरावट का दौर (1981-2001)।
4. भारत में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 31.16% होना (2011)।

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 3, 2, 4, 1

128. भारत में चाय बागानों के लिए मजदूरों की भर्ती किस प्रकार होती थी?
(A) स्वैच्छिक और आकर्षक वेतन पर।
(B) ठेकेदारों द्वारा प्रलोभन, बल और धोखे से।
(C) केवल असम के स्थानीय लोगों से।
(D) सरकारी रोजगार कार्यालयों के माध्यम से निष्पक्ष रूप से।

129. औपनिवेशिक संरचनात्मक परिवर्तनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. उपनिवेशवाद ने राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संरचना में परिवर्तन उत्पन्न किए।
2. औद्योगीकरण और नगरीकरण दो प्रमुख संरचनात्मक परिवर्तन हैं।
3. औद्योगीकरण का संबंध यांत्रिक उत्पादन से है।
4. नगरीकरण का संबंध जनसंख्या के शहरों में बसने से है।
5. ये सभी परिवर्तन केवल औपनिवेशिक काल में हुए।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 2, 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

130. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): ब्रितानी उपनिवेशवाद पूर्व-पूँजीवादी साम्राज्यों से गुणात्मक रूप से भिन्न था।
कारण (R): ब्रितानी उपनिवेशवाद ने समाज के आर्थिक आधार में हस्तक्षेप नहीं किया और परंपरागत व्यवस्थाओं को बनाए रखा।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

131. औपनिवेशिक काल में नए मध्य वर्ग में कौन शामिल नहीं थे?
(A) डॉक्टर
(B) वकील
(C) पारंपरिक ज़मींदार
(D) सरकारी सेवाकर्मी

132. औपनिवेशिक भारत के तीन प्रमुख समुद्र तटीय नगर कौन से थे जिनका महत्व बढ़ा?
(A) सूरत, गोवा, कोचीन
(B) ढाका, मुर्शिदाबाद, तंजौर
(C) दिल्ली, आगरा, लखनऊ
(D) बंबई, कलकत्ता, मद्रास

133. 2011 की जनगणना के अनुसार निरपेक्ष रूप से नगरीय जनसंख्या में वृद्धि ग्रामीण जनसंख्या से अधिक रहने का मुख्य कारण क्या था?
(A) क्योंकि हाल के वर्षों में नगरीय क्षेत्रों में जन्म दर में बहुत अधिक अभूतपूर्व वृद्धि हुई।
(B) क्योंकि ग्रामीण क्षेत्रों से बड़े पैमाने पर लोगों का रोज़गार हेतु शहरों की ओर पलायन हुआ।
(C) ग्रामीण क्षेत्रों की वृद्धि दर में गिरावट और नगरीय वृद्धि दर का समान बना रहना।

(D) क्योंकि बड़ी संख्या में विदेशी आप्रवासियों का भारत के बड़े शहरों में सीधे आकर बसना।

134. नीचे दी गई तालिकाओं का मिलान कीजिए:
सूची I: (जनगणना वर्ष)
P. 1911
Q. 1951
R. 2001
S. 2011
सूची II: (संबंधित तथ्य)
1. नगरीय जनसंख्या 377.10 मिलियन
2. नगरीय जनसंख्या 62.44 मिलियन
3. ग्रामीण उद्योगों के पतन का उल्लेख
4. नगरीय दशकीय वृद्धि दर 31.3
(A) P-1, Q-4, R-2, S-3
(B) P-3, Q-2, R-4, S-1
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

135. औपनिवेशिक शहर के प्रारुप में "क्लब" का क्या उपयोग था?
(A) सभी नागरिकों के लिए सामुदायिक केंद्र।
(B) भारतीय और यूरोपीय लोगों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान का केंद्र।
(C) व्यावसायिक बैठकों के लिए कार्यालय।
(D) यूरोपीय लोगों के मिलने-जुलने और मनोरंजन का स्थान।

136. निम्नलिखित में से कौन सा कथन "उपनिवेशवाद के विरोधाभासी स्वरुप" को नहीं दर्शाता है?
(A) भारत में संसदीय प्रणाली का ब्रिटिश संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली के पूर्णतः समान होना।
(B) आधुनिक स्वतंत्रता का विचार देना लेकिन वास्तविक राजनीतिक स्वतंत्रता कभी प्रदान न करना।
(C) अंग्रेज़ी शिक्षा से अवसर प्रदान करना लेकिन इसे एक बड़े विशेषाधिकार का प्रतीक बनाना।
(D) ब्रिटेन में तीव्र औद्योगीकरण करना और उसी समय औपनिवेशिक भारत में वि-औद्योगीकरण।

137. औपनिवेशिक भारत में नगरीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. औपनिवेशिक काल में सूरत और मसुलीपट्नम जैसे नगरों का पतन हुआ।
2. बंबई और मद्रास जैसे नए औपनिवेशिक नगरों का उदय हुआ।
3. राजसभाओं के विघटन से कारीगरों का पतन हुआ।
4. यह सब भारत में वि-औद्योगीकरण का हिस्सा था।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

138. स्वतंत्र भारत में औद्योगीकरण और नगरीकरण के अध्ययन का क्या महत्व है?
(A) यह समझने के लिए कि औपनिवेशिक प्रवृत्तियाँ कैसे जारी रहीं या बदलीं।
(B) केवल ऐतिहासिक तथ्यों को जानने के लिए।
(C) यह साबित करने के लिए कि भारत में कोई प्रगति नहीं हुई।
(D) केवल पश्चिमी देशों से तुलना करने के लिए।

139. ऐतिहासिक और औद्योगिक पहचान के आधार पर, निम्नलिखित में से कौन सा समूह भिन्न है?
(A) बंबई, कलकत्ता, मद्रास
(B) सूरत, मसुलीपट्नम, ढाका
(C) लंदन, मेनचेस्टर, बर्मिंघम
(D) बोकारो, भिलाई, राउरकेला

140. 1951 से 2011 तक के आंकड़ों के अनुसार, भारत में नगरीकरण की समग्र प्रवृत्ति क्या रही है?
(A) नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत में लगातार गिरावट।
(B) नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत और निरपेक्ष संख्या दोनों में स्थिर वृद्धि।
(C) नगरीकरण की प्रक्रिया पूरी तरह से रुक गई है।
(D) नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत घटा है, लेकिन निरपेक्ष संख्या बढ़ी है।

141. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): भारतीय बाज़ार में कई प्रसिद्ध कंपनियों के नाम अब भी औपनिवेशिक इतिहास से संबद्ध हैं।
कारण (R): यह दर्शाता है कि ब्रिटिश उपनिवेशवाद अब भी हमारे जीवन का एक जटिल हिस्सा है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

142. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, औद्योगीकरण का अर्थ केवल मशीनों पर आधारित उत्पाद नहीं है, बल्कि यह क्या है?
(A) केवल देश के कुल सकल आर्थिक विकास और उत्पादन के आँकड़ों में होने वाली साधारण वृद्धि।
(B) केवल तकनीकी उन्नति और नए यांत्रिक उपकरणों के औद्योगिक प्रयोग की एक सरल प्रक्रिया।
(C) केवल ग्रामीण क्षेत्रों की आबादी का बड़े शहरों की ओर होने वाला तीव्र एवं व्यापक शहरीकरण।
(D) नए सामाजिक समूहों और नए सामाजिक संबंधों का क्रमिक उद्भव एवं उनका सतत विकास।

143. भारत के औपनिवेशिक अनुभवों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. आधुनिक भारत को समझने के लिए औपनिवेशिक अनुभवों को जानना ज़रुरी है।
2. भारत में आधुनिक विचार एवं संस्थाओं की शुरुआत औपनिवेशिकता की देन है।
3. औपनिवेशिकता के प्रभाव विरोधाभासी थे।
4. उपनिवेशवाद का भारत पर कोई दीर्घकालिक प्रभाव नहीं पड़ा।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

144. 'नगरीय संकुल/कस्बों' (Urban Agglomerations/ Towns) की संख्या 1951 से 2011 के बीच कैसे परिवर्तित हुई?
(A) लगभग 2843 से घटकर 2000 हो गई।
(B) लगभग 2843 से बढ़कर 7935 हो गई।
(C) संख्या लगभग स्थिर रही।
(D) लगभग 6244 से बढ़कर 7935 हो गई।

145. औपनिवेशिक भारत में औद्योगीकरण की प्रक्रिया को सबसे अच्छी तरह कैसे वर्णित किया जा सकता है?
(A) देश के सभी क्षेत्रों और वर्गों के लिए एक समान और पूर्णतः संतुलित आर्थिक विकास की नीति।
(B) एक विरोधाभासी प्रक्रिया जिसके कारण कुछ क्षेत्रों का विकास और कुछ का पतन हुआ।
(C) केवल सकारात्मक और दीर्घकालिक लाभकारी परिणामों वाली एक सामाजिक-आर्थिक प्रक्रिया।
(D) एक ऐसी आर्थिक प्रक्रिया जो पूरी तरह से स्थानीय भारतीय उद्यमियों द्वारा ही नियंत्रित थी।

146. नीचे दी गई तालिकाओं का मिलान कीजिए:
सूची I: (अवधि)
P. औपनिवेशिक काल
Q. स्वतंत्रता के बाद का काल
R. 1990 के बाद का काल
S. 21वीं शताब्दी

सूची II: (संबंधित प्रक्रिया/योजना)
1. भारी उद्योगों और पब्लिक सेक्टर को बढ़ावा
2. वि-औद्योगीकरण और औपनिवेशिक शहरों का उदय
3. नगरीकरण की तीव्र दर और 'स्मार्ट सिटी' मिशन
4. उदारीकरण और भूमंडलीकरण का प्रभाव

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

147. निम्नलिखित में से कौन सा कथन "राष्ट्र-राज्य" की अवधारणा के लिए सत्य नहीं है?
(A) यह आधुनिक और विकसित समाज का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्राथमिक राजनीतिक लक्षण है।
(B) इसमें सरकार को एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र के भीतर पूर्ण संप्रभुता और शक्ति प्राप्त होती है।
(C) यह मानवीय इतिहास में हमेशा से अस्तित्व में रहा है और एक चिरंतन वैश्विक व्यवस्था है।
(D) इस विशेष क्षेत्र के भीतर रहने वाले सभी लोग एक ही राष्ट्र के वैधानिक नागरिक होते हैं।

148. निम्नलिखित में से कौन सा औपनिवेशिक विरासत का उदाहरण है?
(A) भारत का संविधान
(B) चाय की खपत
(C) अंग्रेज़ी भाषा का प्रयोग
(D) उपरोक्त सभी

149. भारत में औद्योगीकरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. औपनिवेशिक काल में भारतीय अर्थव्यवस्था ब्रिटिश पूँजीवाद के विस्तार के लिए काम करती थी।
2. स्वतंत्र भारत में औद्योगीकरण का उद्देश्य विकास और सामाजिक न्याय था।
3. दोनों कालों में औद्योगीकरण की प्रक्रिया और उद्देश्य समान थे।
4. औपनिवेशिक काल में नगरीकरण ब्रिटिश हितों से प्रेरित था।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

150. उपनिवेशवाद, औद्योगीकरण और नगरीकरण के अध्ययन से क्या स्पष्ट होता है?
(A) ये सभी पूरी तरह से अलग-अलग और परस्पर असंबद्ध ऐतिहासिक और सामाजिक प्रक्रियाएँ हैं।
(B) ये प्रक्रियाएँ आपस में गहराई से जुड़ी हुई हैं और हमारे वर्तमान जीवन को आकार देती हैं।
(C) ये प्रक्रियाएँ ऐतिहासिक दृष्टिकोण से केवल अतीत की भूली-बिसरी और गौण घटनाएँ मात्र हैं।
(D) आधुनिक भारत के सामाजिक और आर्थिक ढाँचे पर इन प्रक्रियाओं का कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ा।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

उपनिवेशवाद एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत एक शक्तिशाली राष्ट्र दूसरे कमजोर राष्ट्र पर न केवल राजनीतिक आधिपत्य स्थापित करता है, बल्कि उसकी आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं में भी tiefgreifend हस्तक्षेप करता है। भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद पूर्व-पूंजीवादी साम्राज्यों से गुणात्मक रूप से भिन्न था। पूर्व-पूंजीवादी साम्राज्यों का मुख्य उद्देश्य भू-राजस्व या अधिशेष का अधिग्रहण करना होता था, और वे सामान्यतः उत्पादन की

ANSWERS

1. (B) ब्रिटिश
भारत में स्थापित संसदीय, विधि और शिक्षा प्रणालियाँ ब्रिटिश औपनिवेशिक मॉडल पर आधारित हैं। इन संस्थाओं को उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के दौरान ब्रिटेन में प्रचलित प्रतिमानों के अनुसार तैयार किया गया था। यह विरासत आधुनिक भारतीय शासन व्यवस्था और प्रशासनिक ढांचे का आधार बनी हुई है, जो आज भी औपनिवेशिक काल के स्थायी प्रभाव को स्पष्ट रुप से दर्शाती है।

2. (A) औपनिवेशिक दौर
पाश्चात्य उदारवाद और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के आधुनिक विचार भारत में मुख्य रूप से औपनिवेशिक काल के दौरान आए। यद्यपि ब्रिटिश शासन ने भारतीयों को राजनीतिक स्वतंत्रता देने से इनकार किया, लेकिन उनकी शिक्षा पद्धति और कानूनी व्यवस्था ने इन लोकतांत्रिक मूल्यों का परिचय कराया। यह काल भारतीय इतिहास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण चरण था जिसने भविष्य के राष्ट्रवादी आंदोलनों की वैचारिक नींव रखी।

3. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में औपनिवेशिक अनुभव विरोधाभासी था क्योंकि इसमें एक ओर आधुनिक लोकतांत्रिक विचारों का आगमन हुआ, तो दूसरी ओर राजनीतिक अधिकारों का पूर्ण अभाव रहा। भारतीयों ने पश्चिमी शिक्षा के माध्यम से उदारवाद को समझा, परंतु व्यावहारिक स्तर पर ब्रितानी शासन की निरंकुशता का सामना किया। यह विरोधाभास औपनिवेशिक संरचना का एक मौलिक लक्षण था जिसने अंततः भारतीय राष्ट्रवाद को जन्म दिया।

4. (D) क्योंकि परंपरागत व्यवस्था में उन्हें औपचारिक शिक्षा से वंचित रखा गया था।
पारंपरिक भारतीय सामाजिक व्यवस्था में दलितों को औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने के अधिकारों से वंचित रखा गया था। औपनिवेशिक काल में अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से शिक्षा प्राप्त करने के अवसरों ने उनके लिए नए द्वार खोले। इस आधुनिक शिक्षा ने उन्हें पारंपरिक प्रतिबंधों को पार करने और प्रशासनिक एवं पेशेवर क्षेत्रों में अपनी पहचान बनाने के लिए एक सशक्त माध्यम प्रदान किया।

5. (C) पारंपरिक भारतीय पंचायत व्यवस्था
भारतीय जीवन में सड़कों पर बाएँ चलना, टाई पहनना और ब्रेड-ऑमलेट जैसे खाद्य पदार्थ ब्रिटिश औपनिवेशिक विरासत के प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। इसके विपरीत, पारंपरिक पंचायत व्यवस्था भारत की एक प्राचीन स्वदेशी संस्था है जो औपनिवेशिक काल से बहुत पहले अस्तित्व में थी। यद्यपि उपनिवेशवाद ने समाज के कई अंगों को बदला, परंतु कुछ ग्रामीण संस्थाओं की जड़ें भारत की प्राचीन सांस्कृतिक परंपराओं में रही हैं।

6. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
उपनिवेशवाद एक देश का दूसरे पर शासन है, जबकि पूँजीवाद मुनाफ़े पर आधारित आर्थिक प्रणाली है। राष्ट्र-राज्य की विशेषता एक निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में संप्रभु सरकार का होना है। औद्योगीकरण गैर-मानवीय शक्ति और मशीनों के माध्यम से यांत्रिक उत्पादन के उदय को दर्शाता है। ये चारों अवधारणाएँ आधुनिक समाज की संरचना और विकास को समझने के लिए समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से अत्यंत आवश्यक हैं।

7. (D) ब्रितानी उपनिवेशवाद पूँजीवाद पर आधारित था जिसने आर्थिक आधार बदला।
ब्रितानी शासन पूर्व के शासकों से भिन्न था क्योंकि यह आधुनिक पूँजीवादी व्यवस्था पर आधारित था। पूर्व-पूँजीवादी शासकों ने प्रायः समाज के आर्थिक आधार में हस्तक्षेप नहीं किया, जबकि अंग्रेज़ों ने भारतीय संसाधनों का दोहन करने के लिए पारंपरिक आर्थिक ढाँचे को पूरी तरह बदल दिया। उनका मुख्य उद्देश्य भारत को ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल का स्रोत और तैयार माल का बाज़ार बनाना था।

8. (B) केवल 2 and 3
ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने भारतीय कृषि व्यवस्था में गहरा हस्तक्षेप करते हुए यह निर्धारित किया कि कौन सी फसलें उगाई जाएँगी और उनके उत्पादन के तरीके क्या होंगे। उन्होंने वितरण प्रणालियों को भी अपने आर्थिक लाभ के अनुसार रुपांतरित किया। यह नियंत्रण केवल भूमि स्वामित्व तक सीमित नहीं था, बल्कि इसने संपूर्ण ग्रामीण अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाज़ार की माँगों और ब्रिटिश हितों के साथ जोड़ दिया।

9. (C) पेड़ों की कटाई और व्यावसायिक खेती जैसे आर्थिक हितों के लिए।
औपनिवेशिक सरकार ने वनों को नियंत्रित करने के लिए कड़े कानून बनाए ताकि वे लकड़ी और अन्य संसाधनों का व्यावसायिक दोहन कर सकें। इन कानूनों का मुख्य उद्देश्य रेलवे के निर्माण और जहाजों के लिए इमारती लकड़ी सुनिश्चित करना था। इस प्रक्रिया में स्थानीय समुदायों के पारंपरिक अधिकारों की उपेक्षा की गई और वनों को शुद्ध रूप से आर्थिक लाभ के साधन के रूप में देखा गया।

10. (A) बागानों और अन्य उपनिवेशों में मज़दूरी हेतु पलायन।
औपनिवेशिक काल के दौरान लोगों की बड़े पैमाने पर आवाजाही का प्रमुख कारण बागानों और अन्य ब्रिटिश उपनिवेशों में श्रम की भारी माँग थी। लाखों भारतीय मज़दूरों को गन्ने और चाय के बागानों में काम करने के लिए दूर-दराज के क्षेत्रों और समुद्र पार भेजा गया। यह विस्थापन वैश्विक पूँजीवादी अर्थव्यवस्था की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए औपनिवेशिक शासन द्वारा संचालित एक सुनियोजित प्रक्रिया थी।

उद्योगों की व्यापक स्तर पर स्थापना।
(B) पारंपरिक भारतीय उद्योगों का व्यवस्थित विनाश।
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक कृषि पद्धतियों का व्यवस्थित रूप से आधुनिकीकरण करना।
(D) व्यापारिक गतिविधियों के कारण शहरी केंद्रों का तीव्र और अनियोजित भौगोलिक विस्तार।

157. ब्रिटिश नीतियों ने भारतीय वस्त्र उद्योग को कैसे प्रभावित किया?
(A) उन्होंने भारतीय वस्त्रों को ब्रिटिश बाजारों में बिना किसी बाधा के शुल्क-मुक्त पहुँच प्रदान की।
(B) उन्होंने भारत में आयातित ब्रिटिश वस्त्रों पर स्थानीय उद्योगों को बचाने हेतु भारी कर लगाया।
(C) उन्होंने भारतीय कारीगरों और बुनकरों को उत्पादन बढ़ाने हेतु आधुनिक मशीनें और तकनीक प्रदान की।
(D) उन्होंने ब्रिटेन के मशीन-निर्मित माल को भारतीय बाजार में पाट दिया और भारतीय निर्यातों पर भारी शुल्क लगाया।

158. वि-औद्योगीकरण का भारतीय कारीगरों पर क्या सामाजिक प्रभाव पड़ा?
(A) वे बेरोजगार हो गए और आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर होने को मजबूर हुए।
(B) वे अधिक समृद्ध और कुशल हो गए।
(C) उन्होंने नए शहरी केंद्रों में प्रवास किया और कारखानों में काम करना शुरू कर दिया।
(D) उन्होंने अपने पारंपरिक व्यवसायों को सफलतापूर्वक जारी रखा।

159. स्रोत में ढाका, मुर्शिदाबाद और सूरत जैसे शहरों का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है?
(A) ब्रिटिश प्रशासन द्वारा स्थापित नए औपनिवेशिक शहरों के प्रमुख उदाहरण के रूप में।
(B) प्रमुख कृषि प्रधान केंद्रों और ग्रामीण व्यापारिक मंडियों के विशिष्ट उदाहरण के रूप में।
(C) जीवंत पूर्व-औपनिवेशिक उत्पादन केंद्रों के रूप में जो बाद में पतनोन्मुख हो गए।
(D) उन शहरों के रूप में जो ब्रिटिश शासन की औद्योगिक नीतियों के दौरान तेजी से विकसित हुए।

160. वि-औद्योगीकरण के परिणामस्वरूप भारतीय अर्थव्यवस्था में क्या संरचनात्मक परिवर्तन हुआ?
(A) भारत एक औद्योगिक राष्ट्र से एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में बदल गया।
(B) भारत एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था से एक औद्योगिक राष्ट्र में बदल गया।
(C) भारत की अर्थव्यवस्था और अधिक संतुलित हो गई।
(D) हस्तशिल्प क्षेत्र में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने भारत के शहरी परिदृश्य को मौलिक रूप से बदल दिया। जहाँ एक ओर पारंपरिक शहरी केंद्र पतनोन्मुख हुए, वहीं दूसरी ओर, अंग्रेजों ने अपने प्रशासनिक, वाणिज्यिक और सैन्य उद्देश्यों की पूर्ति के लिए नए शहरों का निर्माण और विकास किया। कलकत्ता, बंबई और मद्रास जैसे बंदरगाह शहर औपनिवेशिक शहरीकरण के प्रमुख उदाहरण हैं। इन शहरों को वैश्विक पूंजीवादी व्यवस्था के लिए प्रवेश द्वार के रूप में डिजाइन किया गया था, जहाँ से कच्चे माल का निर्यात और तैयार माल का आयात होता था। इन शहरों की स्थानिक संरचना भी औपनिवेशिक विचारधारा को दर्शाती थी। शहरों को अक्सर 'व्हाइट टाउन' और 'ब्लैक टाउन' में विभाजित किया जाता था। 'व्हाइट टाउन' में विशाल बंगले, चौड़ी सड़कें और क्लब जैसी यूरोपीय शैली की सुविधाएँ होती थीं, जहाँ शासक वर्ग के अंग्रेज रहते थे। इसके विपरीत, 'ब्लैक टाउन' भीड़भाड़ वाले और अव्यवस्थित क्षेत्र थे जहाँ भारतीय आबादी रहती थी। इन शहरों ने एक नए भारतीय मध्य वर्ग के उदय के लिए भी एक मंच प्रदान किया, जिसमें वकील, डॉक्टर, शिक्षक और क्लर्क शामिल थे। यह वर्ग पश्चिमी शिक्षा प्राप्त था और औपनिवेशिक प्रशासन और अर्थव्यवस्था में सहायक भूमिका निभाता था, लेकिन बाद में यही वर्ग राष्ट्रवादी आंदोलन का अग्रदूत भी बना।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. कलकत्ता, बंबई और मद्रास जैसे औपनिवेशिक शहरों का प्राथमिक कार्य क्या था?
(A) पारंपरिक भारतीय संस्कृति, कला और भाषाई विरासत को व्यापक रूप से बढ़ावा देना।
(B) भारत के आंतरिक व्यापार और घरेलू विनिमय के प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करना।
(C) स्थानीय भारतीय आबादी के लिए बेहतर आवास और आधुनिक नागरिक सुविधाएं प्रदान करना।
(D) कच्चे माल के निर्यात और तैयार माल के आयात के लिए प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करना।

162. औपनिवेशिक शहरों में 'व्हाइट टाउन' और 'ब्लैक टाउन' का विभाजन क्या दर्शाता है?
(A) शहर के भीतर विभिन्न क्षेत्रों के कुशल शहरी नियोजन और वैज्ञानिक संगठन को।
(B) नस्लीय अलगाव and शक्ति असमानता पर आधारित औपनिवेशिक मानसिकता।
(C) विभिन्न व्यावसायिक समूहों के बीच आर्थिक स्थिति और आय के आधार पर विभाजन को।
(D) भारतीय नागरिकों और ब्रिटिश शासकों के बीच निरंतर बढ़ते सांस्कृतिक एकीकरण को।

163. गद्यांश के अनुसार, औपनिवेशिक शहरों ने किस नए सामाजिक वर्ग के उदय में योगदान दिया?
(A) पारंपरिक ग्रामीण भूस्वामी और शक्तिशाली जमींदार वर्ग।
(B) ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाला व्यापक कृषक वर्ग।
(C) पश्चिमी शिक्षित भारतीय मध्य वर्ग।

मौजूदा प्रणालियों में हस्तक्षेप नहीं करते थे। इसके विपरीत, ब्रिटिश उपनिवेशवाद औद्योगिक पूंजीवाद की आवश्यकताओं से प्रेरित था। इसका उद्देश्य भारत को ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल के स्रोत और तैयार माल के लिए एक विशाल बाजार में बदलना था। इस प्रक्रिया में, उन्होंने भारतीय अर्थव्यवस्था की पारंपरिक आत्मनिर्भरता को नष्ट कर दिया। भूमि स्वामित्व के नियमों में परिवर्तन, कृषि का वाणिज्यीकरण (जैसे नील, कपास की खेती के लिए किसानों को बाध्य करना), और एकतरफा मुक्त व्यापार नीतियों के माध्यम से, ब्रिटिश शासन ने भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व पूंजीवादी व्यवस्था के एक अधीनस्थ अंग के रूप में एकीकृत किया। यह एक संरचनात्मक परिवर्तन था जिसका प्रभाव केवल आर्थिक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसने भारतीय समाज के ताने-बाने को भी गहराई से प्रभावित किया।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. स्रोत के अनुसार, ब्रिटिश उपनिवेशवाद पूर्व-पूंजीवादी साम्राज्यों से किस प्रकार भिन्न था?
(A) ब्रिटिश शासन ने भू-राजस्व के अधिग्रहण की पुरानी व्यवस्था को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया।
(B) यह औद्योगिक पूंजीवाद की जरूरतों से प्रेरित था और इसने उत्पादन प्रणालियों में हस्तक्षेप किया।
(C) पूर्व-पूंजीवादी साम्राज्य अधिक हिंसक थे और केवल सैन्य विजय एवं विस्तार पर केंद्रित थे।
(D) ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने भारत की पारंपरिक अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने के बजाय उसे कमजोर किया।

152. भारत में ब्रिटिश उपनिवेशवाद का प्राथमिक आर्थिक उद्देश्य क्या था?
(A) भारत को ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल के स्रोत और तैयार माल के बाजार में बदलना।
(B) भारतीय हस्तशिल्प और पारंपरिक उद्योगों को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापक बढ़ावा देना।
(C) भारत के भीतर एक सुदृढ़ और आत्मनिर्भर औद्योगिक आधार को स्थायी रूप से स्थापित करना।
(D) भारतीय किसानों को केवल स्थानीय उपभोग की खाद्य फसलों की खेती हेतु प्रोत्साहित करना।

153. गद्यांश में 'कृषि का वाणिज्यीकरण' का क्या अर्थ है?
(A) किसानों को अपनी पसंद की कोई भी फसल व्यावसायिक रूप से उगाने की पूर्ण स्वतंत्रता प्रदान करना।
(B) किसानों को केवल स्थानीय उपभोग और सामुदायिक आवश्यकताओं के लिए अनाज उगाने हेतु प्रेरित करना।
(C) किसानों को ब्रिटिश उद्योगों की आवश्यकता वाली नकदी फसलों, जैसे नील और कपास, की खेती के लिए बाध्य करना।
(D) आधुनिक कृषि उपकरणों और नई तकनीक का ग्रामीण क्षेत्रों में व्यवस्थित और वैज्ञानिक परिचय देना।

154. ब्रिटिश नीतियों का भारतीय अर्थव्यवस्था पर क्या संरचनात्मक प्रभाव पड़ा?
(A) भारतीय अर्थव्यवस्था पहले की तुलना में अधिक आत्मनिर्भर और वैश्विक रूप से स्वतंत्र हो गई।
(B) भारत के पारंपरिक घरेलू और कुटीर उद्योगों का देश भर में अत्यधिक तीव्रता से विकास हुआ।
(C) ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के मध्य व्याप्त व्यापक आर्थिक असमानता पूरी तरह से समाप्त हो गई।
(D) भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व पूंजीवादी व्यवस्था का एक अधीनस्थ अंग बन गई।

155. गद्यांश में प्रयुक्त "गुणात्मक रूप से भिन्न" वाक्यांश का क्या तात्पर्य है?
(A) यह दर्शाना कि ब्रिटिश शासन की प्रशासनिक गुणवत्ता पिछले साम्राज्यों से कहीं बेहतर थी।
(B) कि दोनों प्रकार के साम्राज्यों के बीच केवल मात्रात्मक अंतर था, उनकी मूल प्रकृति में नहीं।
(C) कि ब्रिटिश शासन की प्रकृति, उद्देश्य और प्रभाव पूर्व-पूंजीवादी साम्राज्यों से मौलिक रूप से अलग थे।
(D) कि पूर्व-पूंजीवादी साम्राज्य भारतीय संस्कृति और परंपराओं के प्रति अधिक सम्मानजनक दृष्टिकोण रखते थे।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन का एक महत्वपूर्ण परिणाम वि-औद्योगीकरण की प्रक्रिया थी। अठारहवीं शताब्दी तक भारत अपने उच्च गुणवत्ता वाले वस्त्रों और हस्तशिल्प के लिए विश्व प्रसिद्ध था। ढाका, मुर्शिदाबाद, सूरत और मसुलीपट्टनम जैसे शहर जीवंत उत्पादन और व्यापारिक केंद्र थे। हालाँकि, ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के बाद, ब्रिटिश सरकार ने ऐसी नीतियां अपनाईं जिन्होंने भारतीय उद्योगों को व्यवस्थित रूप से नष्ट कर दिया। एक ओर, ब्रिटेन से मशीन-निर्मित सस्ते कपड़ों और अन्य सामानों को भारतीय बाजारों में शुल्क-मुक्त प्रवेश दिया गया, वहीं दूसरी ओर, भारतीय वस्त्रों पर ब्रिटेन में भारी आयात शुल्क लगाया गया। इस दोहरी नीति ने भारतीय कारीगरों और शिल्पकारों को प्रतिस्पर्धा से बाहर कर दिया। मांग में कमी और संरक्षण के अभाव में, लाखों बुनकर, कताई करने वाले और अन्य कारीगर बेरोजगार हो गए। इसके परिणामस्वरूप, पारंपरिक औद्योगिक केंद्र उजड़ गए और उनकी अर्थव्यवस्था चरमरा गई। यह केवल एक आर्थिक पतन नहीं था, बल्कि एक गहरा सामाजिक संकट भी था, क्योंकि इसने कुशल कारीगरों को अपनी आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर होने के लिए मजबूर किया, जिससे भूमि पर दबाव और बढ़ गया। इस प्रकार, वि-औद्योगीकरण ने भारत को एक औद्योगिक राष्ट्र से एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में बदल दिया।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. गद्यांश के अनुसार 'वि-औद्योगीकरण' का क्या अर्थ है?
(A) औपनिवेशिक काल के दौरान भारत में नए आधुनिक

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में ब्रिटिश शासन द्वारा पश्चिमी शिक्षा की शुरुआत एक विरोधाभासी और जटिल घटना थी। इसका प्रारंभिक उद्देश्य विशुद्ध रूप से प्रशासनिक था: साम्राज्य के निचले स्तरों पर काम करने के लिए भारतीय क्लर्कों का एक ऐसा वर्ग तैयार करना जो "रक्त और रंग में भारतीय, लेकिन स्वाद, राय, नैतिकता और बुद्धि में अंग्रेज" हो। इस शिक्षा प्रणाली ने रटने और अंग्रेजी भाषा की महारत पर जोर दिया, जबकि भारतीय भाषाओं और ज्ञान प्रणालियों को हाशिए पर डाल दिया। हालाँकि, इस नीति के अनपेक्षित परिणाम भी हुए। पश्चिमी शिक्षा के माध्यम से, भारतीयों का एक नया वर्ग उदारवाद, लोकतंत्र, समानता और राष्ट्रवाद जैसे पश्चिमी विचारों के संपर्क में आया। उन्होंने अमेरिकी और फ्रांसीसी क्रांतियों के बारे में पढ़ा और आत्म-निर्णय के अधिकार के सिद्धांतों को समझा। विडंबना यह है कि इन्हीं विचारों ने उन्हें अपने ही औपनिवेशिक शासकों की अलोकतांत्रिक और शोषणकारी प्रकृति पर सवाल उठाने के लिए प्रेरित किया। इस प्रकार, जिस शिक्षा का उद्देश्य औपनिवेशिक शासन के लिए सहयोगी तैयार करना था, उसी ने राष्ट्रवादी चेतना के बीज बोए। राजा राम मोहन राय से लेकर महात्मा गांधी तक, प्रारंभिक राष्ट्रवादी नेताओं में से अधिकांश पश्चिमी शिक्षा की ही उपज थे, जिन्होंने औपनिवेशिक शासन की आलोचना करने और भारत की स्वतंत्रता के लिए लड़ने हेतु पश्चिमी राजनीतिक शब्दावली का ही उपयोग किया।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. अंग्रेजों द्वारा भारत में पश्चिमी शिक्षा शुरु करने का प्रारंभिक उद्देश्य क्या था?
- (A) भारतीयों को प्रबुद्ध करना और उनके ज्ञान का विस्तार करना।
- (B) भारतीय संस्कृति और भाषाओं को बढ़ावा देना।
- (C) औपनिवेशिक प्रशासन के लिए भारतीय क्लर्क और सहायक तैयार करना।
- (D) भारत में लोकतंत्र और समानता स्थापित करना।

172. पश्चिमी शिक्षा की शुरुआत को 'विरोधाभासी' क्यों कहा गया है?
- (A) क्योंकि यह शिक्षा प्रणाली केवल समाज के कुछ समृद्ध और प्रभावशाली भारतीयों के लिए ही उपलब्ध थी।
- (B) क्योंकि इसका उद्देश्य सहयोगी बनाना था, लेकिन इसने राष्ट्रवादी आलोचकों को जन्म दिया।
- (C) क्योंकि यह शिक्षा प्रणाली आर्थिक रूप से बहुत महंगी और भारतीय संदर्भों में पूरी तरह अव्यावहारिक थी।
- (D) क्योंकि यह प्रणाली प्राचीन भारतीय मूल्यों और आधुनिक पश्चिमी मूल्यों का एक संतुलित मिश्रण थी।

173. पश्चिमी शिक्षा ने भारतीय राष्ट्रवाद के उदय में कैसे योगदान दिया?
- (A) इसने शिक्षित भारतीयों को ब्रिटिश साम्राज्य के प्रति सांस्कृतिक रूप से वफादार और आज्ञाकारी बनाया।
- (B) इसने भारतीय शिक्षा प्रणाली में केवल अंग्रेजी भाषा के आधिकारिक उपयोग को अनिवार्य रूप से बढ़ावा दिया।
- (C) इसने पारंपरिक भारतीय ज्ञान प्रणालियों और प्राचीन गुरुकुल शिक्षा पद्धति को वैचारिक रूप से मजबूत किया।
- (D) इसने भारतीयों को उदारवाद, लोकतंत्र और राष्ट्रवाद जैसे पश्चिमी विचारों से अवगत कराया।

174. "रक्त और रंग में भारतीय, लेकिन स्वाद, राय, नैतिकता और बुद्धि में अंग्रेज" वाक्यांश से क्या तात्पर्य है?
- (A) एक ऐसा वर्ग जो बाहरी रूप से भारतीय हो, लेकिन जिसकी सोच और मूल्य पूरी तरह से पश्चिमीकृत हों।
- (B) एक ऐसा शिक्षित वर्ग जो पूरी तरह से ब्रिटिश समाज और उनकी जीवनशैली में सफलतापूर्वक एकीकृत हो गया हो।
- (C) एक ऐसा नया वर्ग जो ब्रिटिश और भारतीय दोनों संस्कृतियों के श्रेष्ठ तत्वों का समान रूप से सम्मान करता हो।
- (D) एक ऐसा जुझारू वर्ग जो ब्रिटिश शासन का सैन्य और हिंसक रूप से विरोध करने के लिए संगठित किया गया हो।

175. गद्यांश से क्या निष्कर्ष निकाला जा सकता है?
- (A) पश्चिमी शिक्षा प्रणाली भारतीय समाज और उसकी संस्कृति के लिए सभी दृष्टियों से पूरी तरह हानिकारक सिद्ध हुई।
- (B) पश्चिमी शिक्षा प्राप्त करने वाले लगभग सभी भारतीय अनिवार्य रूप से कट्टर राष्ट्रवादी और स्वतंत्रता सेनानी बन गए।
- (C) औपनिवेशिक नीतियों के प्रायः ऐसे अनपेक्षित परिणाम होते थे जो उनके मूल प्रशासनिक उद्देश्यों के विपरीत गए।
- (D) भारतीय राष्ट्रवाद की अवधारणा पूरी तरह से एक आयातित पश्चिमी विचार थी जिसका कोई भारतीय आधार नहीं था।

114. 20वीं सदी के प्रारंभ तक दुनिया का सबसे बड़ा नगर कौन सा था?
(A) लंदन
(B) पेरिस
(C) न्यूयॉर्क
(D) कलकत्ता

115. भारत में पारंपरिक रूप से होने वाले रेशम और कपास के उत्पादन के पतन का प्रमुख कारण क्या था?
(A) कच्चे माल की कमी।
(B) कुशल कारीगरों की कमी।
(C) मेनचेस्टर से आयातित सस्ते कपड़ों की प्रतियोगिता।
(D) भारतीय बाजार में मांग की कमी।

116. औपनिवेशिक नगरों, बंबई, कलकत्ता और मद्रास के संबंध में क्या सत्य है?
(A) ये नगर भारतीय व्यापारियों द्वारा केवल भारतीय आर्थिक हितों हेतु विकसित किए गए थे।
(B) ये नगर केवल छोटे प्रशासनिक केंद्र थे जिनका कोई विशेष आर्थिक या व्यापारिक महत्व नहीं था।
(C) इन नगरों का ऐतिहासिक विकास पूर्णतः स्वतः और बिना किसी पूर्व योजना के ही हुआ था।
(D) इन नगरों का विकास ब्रिटिश आर्थिक हितों की पूर्ति हेतु एक सुनियोजित ढंग से हुआ।

117. औपनिवेशिक काल के चाय बागानों में काम करने वाले मज़दूरों की स्थिति का वर्णन करने के लिए गैर-आधिकारिक स्रोत क्यों महत्वपूर्ण माने जाते हैं?
(A) क्योंकि ये स्रोत केवल पाठकों को मनोरंजन और कहानियाँ प्रदान करने का कार्य करते हैं।
(B) क्योंकि इन साहित्यिक स्रोतों में केवल काल्पनिक और बनावटी कहानियों का समावेश होता है।
(C) क्योंकि आधिकारिक रिपोर्टें पूर्ण सत्य नहीं दर्शातीं और इनसे वास्तविक जानकारी मिलती है।
(D) क्योंकि ये स्रोत स्वयं शक्तिशाली बागान मालिकों द्वारा अपने पक्ष में लिखवाए गए थे।

118. नीचे दिए गए अभिकथन और कारण को पढ़ें और सही विकल्प का चयन करें:
अभिकथन (A): स्वतंत्र भारत में, भारी मशीनीकृत उद्योगों के विकास, पब्लिक सेक्टर के विस्तार और बड़े को-ऑपरेटिव सेक्टर को महत्वपूर्ण माना गया।
कारण (R): राष्ट्रवादियों का अनुमान था कि तीव्र और वृहद औद्योगीकरण से आर्थिक स्थिति में सुधार होगा जिससे विकास और सामाजिक न्याय हो पाएगा।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

119. 1951 में भारत में नगरीय जनसंख्या और कस्बों की संख्या क्रमशः क्या थी?
(A) 377.10 मिलियन और 7935 कस्बे
(B) 100 मिलियन और 5000 कस्बे
(C) 50 मिलियन और 2000 कस्बे
(D) 62.44 मिलियन और 2843 कस्बे

120. औपनिवेशिक काल के भारत और ब्रिटेन के अनुभवों की तुलना करते हुए कौन सा कथन सही है?
(A) ब्रिटेन में औद्योगीकरण से नगरीकरण हुआ, जबकि भारत में लोग कृषि की ओर लौटे।
(B) दोनों ही देशों में औद्योगीकरण की प्रक्रिया से एक समान रूप से तीव्र नगरीकरण हुआ।
(C) भारत में आधुनिक औद्योगीकरण की प्रक्रिया ब्रिटेन के अनुभव से बहुत पहले ही प्रारंभ हुई।
(D) दोनों ही देशों में वि-औद्योगीकरण और कुटीर उद्योगों के पतन की प्रक्रिया एक साथ चली।

121. नीचे दी गई तालिकाओं का मिलान कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. संरचनात्मक परिवर्तन
Q. सांस्कृतिक परिवर्तन
R. औपनिवेशिक अनुभव
S. भूमंडलीय पूँजीवाद
सूची II: (उदाहरण)
1. औद्योगीकरण और नगरीकरण
2. आधुनिक विचार और संस्थाओं की शुरुआत
3. मूल्यों और विश्वासों में परिवर्तन
4. औपनिवेशिक नगरों का विकास
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

122. एक ऐसा गाँव जहाँ के अनेक प्रवासी विदेशों (जैसे अफ्रीका, ब्रिटेन) में रहते हैं और गाँव में आधुनिक मकान बनवाते हैं, वह एम.एस.ए. राव के किस प्रकार के नगरीय प्रभाव को दर्शाता है?
(A) प्रथम प्रकार
(B) द्वितीय प्रकार
(C) तृतीय प्रकार
(D) यह नगरीय प्रभाव का उदाहरण नहीं है

123. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) औद्योगीकरण - यांत्रिक उत्पादन
(B) नगरीकरण - शहरों का विकास
(C) पूँजीवाद - मुनाफे पर जोर
(D) उपनिवेशवाद - स्व-शासन

124. भारत में संरचनात्मक परिवर्तनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

11. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
यद्यपि पश्चिमी शिक्षा का प्रारंभिक उद्देश्य ब्रिटिश प्रशासन के लिए वफादार सेवक तैयार करना था, लेकिन इसका एक अप्रत्याशित परिणाम राष्ट्रवादी चेतना का उदय हुआ। शिक्षित भारतीयों ने उदारवादी और लोकतांत्रिक सिद्धांतों का उपयोग करके औपनिवेशिक शासन की आलोचना की। अतः, शिक्षा पद्धति और राष्ट्रवाद के बीच का संबंध जटिल है, जहाँ शिक्षा ने अनजाने में स्वतंत्रता आंदोलन के लिए वैचारिक आधार प्रदान करने का कार्य किया।

12. (B) उत्पादन के साधनों पर कुछ विशेष लोगों का स्वामित्व और मुनाफ़ा कमाने पर जोर।
पूँजीवाद एक ऐसी आर्थिक व्यवस्था है जहाँ उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व होता है और अधिकतम मुनाफ़ा कमाना ही मुख्य उद्देश्य होता है। यह प्रणाली निरंतर विस्तार, तीव्र गतिशीलता और नए बाज़ारों की खोज पर टिकी होती है। इसमें उत्पादन की प्रक्रिया को बाज़ार की माँग और व्यक्तिगत लाभ के अनुसार संचालित किया जाता है, जो इसे पारंपरिक निर्वाह-आधारित आर्थिक व्यवस्थाओं से अलग करता है।

13. (C) बिहार
उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के दौरान बिहार प्रांत से बड़ी संख्या में श्रमिकों को मॉरीशस के बागानों में काम करने के लिए भेजा गया। यह प्रव्रजन ब्रिटिश साम्राज्य की गिरमिटिया मज़दूरी प्रथा का हिस्सा था। इन मज़दूरों ने विदेशी धरती पर अपनी संस्कृति को जीवित रखा, जिससे आज मॉरीशस में एक विशाल भारतीय मूल की आबादी बसी हुई है, जो इसी ऐतिहासिक पलायन की देन है।

14. (C) केवल 1, 2, 3 और 4
पूँजीवाद का उदय एक जटिल ऐतिहासिक प्रक्रिया थी जिसमें वैज्ञानिक प्रगति, तकनीकी विकास और दुनिया के नए क्षेत्रों की खोज शामिल थी। इसने उद्योग और कृषि दोनों क्षेत्रों को मुनाफ़े की दृष्टि से रूपांतरित किया। हालाँकि, इस व्यवस्था ने संसाधनों का समान वितरण सुनिश्चित नहीं किया, बल्कि अक्सर इससे आर्थिक असमानताएँ बढ़ीं। यह तंत्र वैश्विक स्तर पर धन और शक्ति के पुनर्वितरण का माध्यम बना।

15. (A) भौगोलिक क्षेत्र जहाँ संप्रभु सरकार हो और निवासी वहाँ के नागरिक हों।
राष्ट्र-राज्य आधुनिक राजनीति की एक प्रमुख अवधारणा है, जिसमें एक निश्चित भौगोलिक सीमा के भीतर एक संप्रभु सरकार का शासन होता है। इसके निवासी प्रजा के बजाय कानूनी अधिकारों से युक्त नागरिक कहलाते हैं। यह व्यवस्था प्राचीन साम्राज्यों से भिन्न है क्योंकि यह राष्ट्रीय पहचान, कानून के शासन और राज्य एवं नागरिकों के बीच एक औपचारिक कानूनी संबंध पर आधारित होती है, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

16. (B) गैर-मानवीय शक्ति संसाधनों पर आधारित यांत्रिक उत्पादन के उदय से।
औद्योगीकरण का तात्पर्य उत्पादन की उस प्रणाली से है जिसमें मानवीय श्रम के स्थान पर भाप, बिजली या कोयले जैसी गैर-मानवीय शक्तियों का उपयोग किया जाता है। यह प्रक्रिया बड़े पैमाने पर कारखानों के उदय और यांत्रिक विनिर्माण को बढ़ावा देती है। इसने न केवल आर्थिक उत्पादन के तरीकों को बदला, बल्कि समाज में नए वर्गों, नगरीय केंद्रों और जटिल सामाजिक संबंधों को भी जन्म दिया।

17. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
औपनिवेशिक शासन के दौरान सूरत और मसुलीपट्नम जैसे पारंपरिक व्यापारिक केंद्रों का पतन हुआ क्योंकि वे नई आर्थिक नीतियों के अनुकूल नहीं थे। इसके विपरीत, बंबई और मद्रास जैसे तटीय नगरों का विकास हुआ क्योंकि वे ब्रिटिश व्यापार और प्रशासन के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण थे। यह शहरी परिवर्तन भारत की अर्थव्यवस्था को वैश्विक पूँजीवादी बाज़ार के साथ जोड़ने की ब्रिटिश योजना का हिस्सा था।

18. (A) यह रूपांतरित होकर एक पूर्णतः नगरीय देश की श्रेणी में आ गया।
ब्रिटेन में औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने बड़े पैमाने पर नगरीकरण को जन्म दिया, जिससे वह बहुत कम समय में एक प्रमुख नगरीय देश बन गया। गाँवों से लोग रोज़गार की तलाश में औद्योगिक केंद्रों की ओर आए, जिससे शहरों का विस्तार हुआ। बीसवीं सदी के प्रारंभ तक ब्रिटेन की अधिकांश जनसंख्या कस्बों में रहने लगी थी, जो उसके तीव्र आर्थिक और औद्योगिक परिवर्तन का प्रमाण था।

19. (C) वि-औद्योगीकरण और लोगों का पुनः पारंपरिक कृषि की ओर गमन।
भारत में ब्रिटिश औद्योगीकरण का प्रारंभिक प्रभाव ब्रिटेन के अनुभव से बिल्कुल विपरीत था, क्योंकि यहाँ वि-औद्योगीकरण की प्रक्रिया चली। मशीनीकृत ब्रिटिश सामानों की प्रतियोगिता के कारण भारतीय पारंपरिक हस्तशिल्प और उद्योग नष्ट हो गए। इसके परिणामस्वरूप, शहरों के कारीगर और शिल्पकार अपनी आजीविका खोकर वापस गाँवों की ओर चले गए, जिससे कृषि पर जनसंख्या का बोझ और अधिक बढ़ गया जो अत्यंत चिंताजनक था।

20. (D) पारंपरिक उद्योगों का पतन।
वि-औद्योगीकरण का अर्थ देश के स्थापित और पारंपरिक उद्योगों, विशेष रूप से हस्तशिल्प और वस्त्र निर्माण का क्रमिक पतन है। औपनिवेशिक भारत में यह प्रक्रिया तब शुरू हुई जब भारतीय उत्पाद ब्रिटेन से आने वाले सस्ते और मशीनी सामानों का मुकाबला नहीं कर सके। इस पतन ने देश की आर्थिक संरचना को बिगाड़ दिया और लाखों कुशल कारीगरों को खेती और मज़दूरी करने के लिए मजबूर कर दिया।

42. (A) नगरीय जनसंख्या और कस्बों की संख्या दोनों में लगातार वृद्धि हुई है।
1951 से 2011 के बीच भारत में नगरीय जनसंख्या और कस्बों की संख्या में निरंतर वृद्धि दर्ज की गई है। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि देश में नगरीकरण की प्रक्रिया अत्यंत तीव्र रही है और नए क्षेत्रों का शहरी केंद्रों में रूपांतरण हो रहा है। बढ़ती हुई आर्थिक गतिविधियाँ और ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन इस निरंतर विस्तार के प्रमुख कारक रहे हैं, जो स्पष्ट है।

43. (D) 17.29% से बढ़कर 31.16% हो गया।
भारत की कुल जनसंख्या में नगरीय आबादी का प्रतिशत 1951 में 17.29% से बढ़कर 2011 में 31.16% तक पहुँच गया है। छह दशकों में हुआ यह महत्वपूर्ण बदलाव दर्शाता है कि देश की एक बड़ी आबादी अब शहरों में निवास कर रही है। यह वृद्धि भारत के आर्थिक परिदृश्य में कृषि के घटते महत्व और सेवा एवं औद्योगिक क्षेत्रों के बढ़ते वर्चस्व का परिणाम है।

44. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
भारत में नगरीकरण की प्रक्रिया 1951 से लगातार बढ़ रही है, जहाँ नगरीय जनसंख्या 17.29% से बढ़कर 2011 में 31.16% हो गई। हालांकि 1981 से 2001 के बीच दशकीय वृद्धि दर में कुछ गिरावट देखी गई थी, लेकिन 2011 में इसमें पुनः मामूली सुधार दर्ज किया गया। ये आँकड़े देश में हो रहे बड़े जनसांख्यिकीय बदलावों और शहरी केंद्रों के निरंतर विकसित होते स्वरूप को रेखांकित करते हैं।

45. (C) 2001-2011
2001-2011 का दशक भारतीय इतिहास में पहली बार ऐसी स्थिति लेकर आया जब नगरीय क्षेत्रों की जनसंख्या में निरपेक्ष वृद्धि ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक रही। यह बदलाव ग्रामीण विकास दर में गिरावट और नगरीय क्षेत्रों की स्थिर वृद्धि दर के कारण हुआ। यह घटना भारत के शहरीकरण की प्रक्रिया में एक प्रमुख मील का पत्थर है, जो भविष्य के नगर-केंद्रित विकास का संकेत देती है।

46. (D) यह एक ओर विशेषाधिकारों की द्योतक है, तो दूसरी ओर वंचितों के लिए अवसर भी है।
भारत में अंग्रेज़ी भाषा का प्रभाव अत्यंत विरोधाभासी रहा है क्योंकि यह एक ओर सामाजिक और आर्थिक विशेषाधिकार का प्रतीक मानी जाती है। दूसरी ओर, इसने समाज के वंचित वर्गों और दलितों के लिए आधुनिक शिक्षा और वैश्विक अवसरों के द्वार खोले हैं। यह विरोधाभास दर्शाता है कि भाषा केवल संवाद का साधन नहीं, बल्कि शक्ति और सामाजिक परिवर्तन का एक जटिल औज़ार भी है।

47. (A) क्योंकि इसने राजनीतिक, आर्थिक एवं सामाजिक संरचना में नवीन परिवर्तन उत्पन्न किए।
उपनिवेशवाद को एक संरचना के रूप में इसलिए देखा जाता है क्योंकि इसने भारत के मौलिक सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक ढाँचे को पूरी तरह पुनर्गठित किया। इसने नए कानून, प्रशासन प्रणालियाँ और बाज़ार संबंध स्थापित किए जिनका प्रभाव औपनिवेशिक शासन के अंत के बाद भी बना रहा। यह केवल एक अस्थायी सत्ता परिवर्तन नहीं था, बल्कि समाज के आंतरिक कामकाज को बदलने वाली एक गहरी व्यवस्था थी।

48. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
एम. एस. ए. राव ने नगरीय प्रभाव का वर्गीकरण किया, जबकि डी. पी. मुखर्जी ने शिक्षित मध्य वर्ग की भूमिका पर प्रकाश डाला। जॉब चारनॉक कलकत्ता की स्थापना से जुड़े प्रमुख व्यक्ति थे और अल्वी एवं शानिन जैसे विद्वानों ने पूर्व-पूँजीवादी और औपनिवेशिक शासकों के बीच के अंतर का विश्लेषण किया। ये सभी योगदान भारत की सामाजिक और ऐतिहासिक परिवर्तन प्रक्रिया को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

49. (B) भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना
सूरत का पतन, बंबई का उदय और मुर्शिदाबाद के कारीगरों का नुकसान औपनिवेशिक काल के नगरीकरण और आर्थिक परिवर्तनों के परिणाम थे। इसके विपरीत, भिलाई इस्पात संयंत्र की स्थापना स्वतंत्र भारत की सरकार द्वारा नियोजित औद्योगिक विकास का हिस्सा है। यह परियोजना देश को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से शुरु की गई थी, जिसका स्वरूप और लक्ष्य औपनिवेशिक काल की व्यापारिक नीतियों से भिन्न था।

50. (A) स्वतंत्रता एवं संप्रभुता का अधिकार।
राष्ट्रवाद का सिद्धांत यह मानता है कि किसी भी राष्ट्र या क्षेत्र विशेष के लोगों को अपनी राजनीतिक नियति तय करने और स्व-शासन करने का पूर्ण अधिकार है। यह संप्रभुता के विचार पर आधारित है, जहाँ जनता ही सर्वोच्च शक्ति होती है। इसी भावना ने भारतीय स्वाधीनता संग्राम के दौरान लोगों को विदेशी शासन के विरुद्ध एकजुट किया और एक स्वतंत्र लोकतांत्रिक राष्ट्र के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया।

51. (C) विदेशी शासन और स्व-शासन के अधिकार के बीच का मौलिक विरोधाभास।
भारतीय राष्ट्रवादियों ने औपनिवेशिक शासन द्वारा सिखाए गए लोकतांत्रिक सिद्धांतों और उस शासन की वास्तविक दमनकारी प्रकृति के बीच के अंतर्विरोध को अपनी लड़ाई का आधार बनाया। उन्होंने तर्क दिया कि यदि ब्रिटेन में लोकतंत्र और स्वतंत्रता सही है, तो भारत पर विदेशी शासन अनैतिक है। इस वैचारिक हथियार ने भारतीयों को उनके स्व-शासन के अधिकार के प्रति जागरूक किया और स्वतंत्रता आंदोलन को एक मज़बूत आधार दिया।

52. (D) रोज़गारवृत्ति में बदलाव, जहाँ लोग कारखानों और ऑफिसों में अधिक कार्य करते हैं।
औद्योगीकरण का एक प्रमुख सामाजिक परिणाम यह है कि इसने लोगों के पारंपरिक व्यवसायों को बदलकर उन्हें आधुनिक कारखानों और कार्यालयों की ओर प्रेरित किया। इससे समाज में नए कार्य-संबंध और वर्ग विकसित हुए। इस प्रक्रिया ने न केवल आर्थिक उत्पादन के तरीकों को बदला, बल्कि लोगों की जीवनशैली, पारिवारिक संरचना और सामुदायिक मेल-मिलाप

का प्रयोग मज़दूरों को नियंत्रित करने के लिए किया गया। इन बागानों में मज़दूरों के स्वास्थ्य और जीवन की स्थिति अत्यंत दयनीय थी, और मालिकों का ध्यान केवल व्यावसायिक लाभ और उत्पादन बढ़ाने पर केंद्रित था।

32. (B) क्योंकि औपनिवेशिक देशों में प्रजातांत्रिक नियमों का पालन करना अनिवार्य नहीं था।
औपनिवेशिक प्रशासकों का मानना था कि बागानों के आर्थिक लाभ को सुनिश्चित करने के लिए मज़दूरों पर कड़ा बल प्रयोग करना आवश्यक है। उनका तर्क था कि ब्रिटेन में लागू लोकतांत्रिक और मानवाधिकार संबंधी नियम उपनिवेशों में लागू नहीं होते। यह मानसिकता औपनिवेशिक शासन के दमनकारी चरित्र को दर्शाती है, जहाँ आर्थिक हितों को मानवीय गरिमा और न्याय से ऊपर रखा जाता था, जो अत्यंत क्रूर और अमानवीय था।

33. (B) भोग-विलास और चमक से भरपूर।
औपनिवेशिक काल के दौरान चाय बागानों के ब्रिटिश मालिक अत्यंत विलासितापूर्ण जीवन जीते थे। उनके पास विशाल सुसज्जित बंगले, निजी नौकर और मनोरंजन के लिए विशेष क्लब थे। यह भव्य जीवन शैली बागानों के मज़दूरों की अत्यंत दयनीय और दरिद्र स्थिति के बिल्कुल विपरीत थी। मालिकों और मज़दूरों के बीच का यह विशाल अंतर औपनिवेशिक समाज की गहरी आर्थिक और सामाजिक असमानता का एक ज्वलंत उदाहरण है।

34. (A) P-4, Q-2, R-1, S-3
औपनिवेशिक भारत में कोलकाता जूट के निर्यात का मुख्य केंद्र था, जबकि बंबई से कच्ची कपास का व्यापार होता था। चेन्नई से कहवा, चीनी और नील जैसे उत्पादों का निर्यात किया जाता था और असम चाय उत्पादन का प्रमुख क्षेत्र था। यह क्षेत्रीय विशिष्टता ब्रिटिश आर्थिक योजना का परिणाम थी, जिसका उद्देश्य भारत के विभिन्न हिस्सों से महत्वपूर्ण कच्चे माल को वैश्विक बाज़ारों तक पहुँचाना था।

35. (C) आर्थिक शोषण और गरीबी को दूर करने के लिए।
स्वतंत्र भारत की सरकार ने औद्योगीकरण को गरीबी और आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने के प्रमुख साधन के रूप में देखा। नेताओं का मानना था कि औपनिवेशिक शासन के दौरान हुए शोषण के बाद, तीव्र औद्योगिक विकास ही देश को आत्मनिर्भर बना सकता है। उद्योगों की स्थापना से रोज़गार के नए अवसर पैदा होने और देश की आर्थिक स्थिति में व्यापक सुधार की आशा की गई थी।

36. (D) भारी मशीनीकृत उद्योगों, पब्लिक सेक्टर और बड़े सहकारी क्षेत्रों पर।
स्वतंत्रता के बाद भारत ने विकास के लिए एक मिश्रित मॉडल अपनाया जिसमें भारी मशीनीकृत उद्योगों और सार्वजनिक क्षेत्र के विस्तार पर विशेष बल दिया गया। सरकार ने बड़े बाँधों, इस्पात संयंत्रों और सहकारी समितियों के माध्यम से देश के आर्थिक ढांचे को मज़बूत करने का प्रयास किया। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य संतुलित क्षेत्रीय विकास सुनिश्चित करना और निजी स्वार्थों के बजाय जनहित को प्राथमिकता देना था।

37. (C) भारत की राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था के प्रति निष्ठा।
स्वदेशी आंदोलन ने भारतीयों के मन में अपनी राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था और स्थानीय उत्पादों के प्रति निष्ठा की भावना जगाई। इसने ब्रिटिश वस्तुओं का बहिष्कार करने और भारतीय उद्योगों को समर्थन देने का संदेश दिया, जो स्वावलंबन की दिशा में एक बड़ा कदम था। इस आंदोलन ने न केवल आर्थिक बल्कि राजनीतिक चेतना को भी मज़बूत किया, जिससे लोगों में स्व-शासन और स्वतंत्रता की आकांक्षा तीव्र हुई।

38. (B) तीन
समाजशास्त्री एम. एस. ए. राव ने भारतीय गाँवों पर पड़ने वाले नगरीय प्रभाव की व्याख्या करने के लिए तीन अलग-अलग स्थितियों का वर्गीकरण किया है। उनका यह अध्ययन ग्रामीण और नगरीय संबंधों की जटिलता को समझने में मदद करता है। यह वर्गीकरण स्पष्ट करता है कि कैसे शहरों की निकटता या दूरदराज के क्षेत्रों में होने वाला प्रवास ग्रामीण समुदायों के सामाजिक और आर्थिक जीवन को प्रभावित करता है।

39. (D) प्रथम प्रकार
एम. एस. ए. राव के अनुसार, पहले प्रकार का नगरीय प्रभाव उन गाँवों में देखा जाता है जहाँ से लोग रोज़गार के लिए शहरों में जाते हैं। ये प्रवासी अपने गाँवों में नियमित रूप से पैसे भेजते हैं और वहाँ आधुनिक घरों का निर्माण करते हैं। यह निरंतर संपर्क ग्रामीण जीवनशैली, शिक्षा और उपभोग के तरीकों में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाता है, जिससे गाँवों का सामाजिक ढांचा तेज़ी से बदलने लगता है।

40. (A) द्वितीय प्रकार
एम. एस. ए. राव ने दूसरे प्रकार के नगरीय प्रभाव के अंतर्गत उन गाँवों को रखा है जो औद्योगिक शहरों के निकट स्थित होते हैं। यहाँ गाँवों की कृषि भूमि धीरे-धीरे औद्योगिक कार्यों या शहर के विस्तार के लिए ले ली जाती है। इससे स्थानीय निवासियों और प्रवासी मज़दूरों के बीच सीधे संपर्क की स्थिति बनती है, जो ग्रामीण परिवेश में सामाजिक और आर्थिक बदलावों की एक नई लहर पैदा करती है।

41. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
महानगरों के विस्तार से निकटवर्ती गाँव भौगोलिक रूप से नगर के भीतर विलीन हो जाते हैं, जिसे राव ने तीसरे प्रकार का नगरीय प्रभाव कहा है। इस प्रक्रिया में गाँव अपनी स्वतंत्र पहचान खो देते हैं और पूरी तरह से शहरी ढांचे का अंग बन जाते हैं। यह स्थिति आधुनिक शहरीकरण की उस प्रवृत्ति को दर्शाती है जहाँ महानगरों की सीमाएँ अनियंत्रित रूप से बढ़ती जा रही हैं।

63. (A) औद्योगिक शहर (Industrial towns)
बोकारो और भिलाई जैसे नगरों को स्वतंत्रता के बाद विशेष रूप से भारी उद्योगों और इस्पात उत्पादन के लिए स्थापित किया गया था। ये 'औद्योगिक शहर' आधुनिक भारत के विकास के नए मंदिरों के रूप में देखे गए, जिनका उद्देश्य देश को विनिर्माण के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाना था। ये शहर औपनिवेशिक काल के पुराने बंदरगाह शहरों से भिन्न, शुद्ध रूप से औद्योगिक और नियोजित विकास के परिणाम हैं।

64. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
भारत में नगरीकरण का इतिहास जटिल है जहाँ औपनिवेशिक काल में पुराने शहरों का ह्रास हुआ और नए केंद्रों का उदय हुआ। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, सरकार ने आर्थिक विकास के लिए औद्योगीकरण को सक्रिय रूप से प्रोत्साहित किया, जिससे शहरीकरण की प्रक्रिया को और गति मिली। यह निरंतरता दर्शाती है कि भारत का आधुनिक स्वरूप औपनिवेशिक विरासत और स्वतंत्र राष्ट्र के विकास लक्ष्यों का मिला-जुला परिणाम है।

65. (B) 7935
वर्ष 2011 की जनगणना के आँकड़ों के अनुसार, भारत में कस्बों और नगरीय संकुलों की कुल संख्या बढ़कर 7935 तक पहुँच गई। यह संख्या 1951 की तुलना में लगभग तीन गुना अधिक है, जो देश में नगरीकरण के तेज़ी से होते विस्तार को प्रमाणित करती है। नए कस्बों का उदय इस बात का संकेत है कि ग्रामीण क्षेत्रों का शहरी क्षेत्रों में रूपांतरण बड़े पैमाने पर हो रहा है।

66. (A) वे गाँव जहाँ से लोग दूरदराज के शहरों में रोज़गार हेतु प्रवास करते हैं।
एम. एस. ए. राव द्वारा वर्णित प्रथम प्रकार का नगरीय प्रभाव उन गाँवों में दिखता है जहाँ से लोग शहरों की ओर प्रवास करते हैं। ये लोग अपनी जड़ों से जुड़े रहते हैं और गाँवों में धन भेजकर वहाँ आधुनिक आवासों का निर्माण और उपभोग की नई प्रवृत्तियों को बढ़ावा देते हैं। इस प्रकार, शहर में रहने वाला व्यक्ति अपने गाँव की सामाजिक और भौतिक संरचना में निरंतर बदलाव लाता रहता है।

67. (C) इसमें गिरावट दिखाई दी।
1981 से 2001 के बीच भारत में नगरीय जनसंख्या की दशकीय वृद्धि दर में कुछ कमी देखी गई थी। यद्यपि शहरों की कुल आबादी बढ़ रही थी, लेकिन उनके बढ़ने की रफ़्तार पिछले दशकों की तुलना में धीमी पड़ गई थी। यह प्रवृत्ति नगरीकरण की प्रक्रिया में आए एक अस्थायी ठहराव या ग्रामीण-शहरी प्रवास के बदलते स्वरूप का संकेत हो सकती है, जिसका समाजशास्त्रीय अध्ययन महत्वपूर्ण है।

68. (D) उपनिवेशवाद आज भी जीवन में मौजूद है और औद्योगीकरण व नगरीकरण इसके अंग हैं।
संरचनात्मक परिवर्तनों का अध्ययन यह स्पष्ट करता है कि औपनिवेशिक शासन ने जिन सामाजिक और आर्थिक प्रक्रियाओं की शुरुआत की थी, उनका प्रभाव आज भी हमारे दैनिक जीवन में गहराई से मौजूद है। आधुनिक औद्योगीकरण और नगरीकरण को केवल स्वतंत्र प्रक्रियाएँ नहीं माना जा सकता, क्योंकि इनकी जड़ें औपनिवेशिक काल के अनुभवों और संरचनाओं में निहित हैं। यह ऐतिहासिक निरंतरता हमारे वर्तमान सामाजिक ढाँचे को आकार देती है।

69. (C) गतिशीलता, वृद्धि की संभावनाएँ, और प्रसार।
पूँजीवाद की एक प्रमुख शक्ति इसकी निरंतर गतिशीलता और विस्तार करने की क्षमता है। यह व्यवस्था हमेशा नए बाज़ारों, कच्चे माल के स्रोतों और अधिक मुनाफ़े की तलाश में रहती है, जिसके कारण यह सीमाओं के पार फैलती है। वृद्धि की यह निरंतर संभावना ही इसे अन्य आर्थिक प्रणालियों से अलग बनाती है और वैश्विक अर्थव्यवस्था के एकीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जो अत्यंत प्रभावशाली है।

70. (B) ढाका
औपनिवेशिक काल के दौरान ढाका की राजसभा के विघटन से वहाँ के प्रसिद्ध कपड़ा कारीगरों और हस्तशिल्पकारों का पतन हो गया। दरबारों द्वारा मिलने वाला नियमित संरक्षण और उच्च गुणवत्ता वाले सामानों का बाज़ार समाप्त होने से ये कलाकार बेरोज़गार हो गए। यह घटना औपनिवेशिक शासन के तहत भारतीय पारंपरिक औद्योगिक केंद्रों के ह्रास और वि-औद्योगीकरण की प्रक्रिया का एक दुखद और महत्वपूर्ण उदाहरण प्रस्तुत करती है।

71. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारतीय हस्तशिल्प की माँग में कमी आने का मुख्य कारण स्थानीय राजाओं और नवाबों के दरबारों का अंत होना था, जो इन उत्पादों के मुख्य संरक्षक थे। इसके अतिरिक्त, विदेशी बाज़ारों के बंद होने और ब्रिटिश मशीनी उत्पादों की प्रतिस्पर्धा ने स्थिति को और बिगाड़ दिया। इस दोहरी मार ने सदियों पुरानी कला और कौशल को आर्थिक रूप से पंगु बना दिया, जिससे कारीगरों का भारी नुकसान हुआ।

72. (A) उन्हें गंभीर रूप से प्रभावित किया और धीरे-धीरे उनके पतन का प्रमुख कारण बना।
रेलवे के विस्तार ने भारतीय गाँवों तक ब्रिटिश निर्मित सस्ते और मशीनी सामानों की पहुँच को आसान बना दिया। इसके कारण स्थानीय कारीगरों द्वारा बनाए गए हाथ के उत्पादों की माँग कम होने लगी, क्योंकि वे कीमत में विदेशी माल का मुकाबला नहीं कर सकते थे। इस प्रकार, रेलवे ने संचार को तो सुधारा, परंतु इसने अनजाने में पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था और शिल्पों के विनाश की गति को भी तेज़ कर दिया।

73. (C) क्योंकि भारत में आधुनिक विचार और संस्थाओं की शुरुआत औपनिवेशिकता की ही देन है।
भारत के आधुनिक स्वरूप को समझने के लिए औपनिवेशिक इतिहास को जानना आवश्यक है क्योंकि वर्तमान की अधिकांश राजनीतिक, कानूनी और शैक्षिक संस्थाएँ उसी काल में स्थापित हुई थीं। संसदीय लोकतंत्र, अंग्रेज़ी शिक्षा और नौकरशाही का ढाँचा औपनिवेशिक प्रभाव का ही परिणाम है। इन अनुभवों ने भारतीय समाज की सोचने की दिशा और संरचनात्मक विकास

के तरीकों में भी व्यापक परिवर्तन किए, जो आधुनिकता का प्रतीक हैं।

53. (A) 1, 2, 3, 4
भारतीय इतिहास में सबसे पहले ब्रिटिश शासन की स्थापना हुई, जिसके परिणामस्वरूप वि-औद्योगीकरण की प्रक्रिया चली और पारंपरिक शिल्प नष्ट हो गए। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश में भारी उद्योगों और सार्वजनिक क्षेत्र को बढ़ावा दिया गया। समकालीन दौर में, नगरीय सुविधाओं को आधुनिक बनाने के लिए 'स्मार्ट सिटी' मिशन जैसी योजनाएँ शुरू की गई हैं। यह अनुक्रम भारत के क्रमिक आर्थिक और सामाजिक विकास को दर्शाता है।

54. (B) इसमें विशाल बंगले, क्लब और यूरोपीय मूल के नागरिकों हेतु श्रेष्ठ सुविधाएँ थीं।
औपनिवेशिक काल में यूरोपीय शहरों या इलाकों को विशेष रूप से शासकों के आराम और सुरक्षा के लिए डिज़ाइन किया गया था। यहाँ बड़े बंगले, बगीचे और विशेष क्लब होते थे जहाँ केवल गोरों को प्रवेश मिलता था। यह बनावट स्थानीय भारतीय आबादी के घने और उपेक्षित इलाकों से बिल्कुल अलग थी, जो औपनिवेशिक शासन के दौरान मौजूद नस्लीय और सामाजिक भेदभाव को भौतिक रूप से दर्शाती थी।

55. (C) केवल 1, 2, 3 और 4
ब्रितानी उपनिवेशवाद पूँजीवाद पर आधारित था जिसने भारतीय अर्थव्यवस्था में व्यापक हस्तक्षेप कर वि-औद्योगीकरण को जन्म दिया। इसके कारण बंबई और मद्रास जैसे नए शहरों का उदय हुआ जो ब्रिटिश हितों के अनुकूल थे। हालाँकि, इस शासन ने केवल सकारात्मक परिवर्तन नहीं लाए, बल्कि इसने शोषण और सामाजिक विघटन की प्रक्रियाएँ भी शुरू कीं, जिनका प्रभाव भारतीय समाज पर अत्यंत गहरा और बहुआयामी रहा है।

56. (A) 1.1 करोड़
वर्ष 1800 के आसपास लंदन की जनसंख्या लगभग 1.1 करोड़ तक पहुँच गई थी, जिससे वह उस समय का दुनिया का सबसे बड़ा और प्रमुख शहर बन गया। यह तीव्र वृद्धि ब्रिटेन में हुई औद्योगिक क्रांति और उसके वैश्विक साम्राज्य के विस्तार का परिणाम थी। लंदन का यह विशाल स्वरूप आधुनिक महानगरीय विकास की शुरुआत का प्रतीक था, जिसने भविष्य के वैश्विक नगरीकरण के मॉडल को प्रभावित किया।

57. (C) एशिया, अफ्रीका और अमेरिका में स्थित अन्य विभिन्न औपनिवेशिक क्षेत्रों में।
औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश साम्राज्य के आर्थिक हितों की पूर्ति के लिए भारतीय मज़दूरों और सेवाकर्मियों को एशिया, अफ्रीका और अमेरिका के विभिन्न हिस्सों में भेजा गया। ये लोग वहाँ के बागानों, खदानों और निर्माण कार्यों में श्रम करने के लिए गिरमिटिया मज़दूरों के रूप में ले जाए गए थे। इस पलायन ने इन महाद्वीपों में भारतीय मूल के समुदायों की नींव रखी, जो आज वहाँ के समाज का अभिन्न हिस्सा हैं।

58. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में औद्योगीकरण और नगरीकरण की प्रक्रिया ब्रिटेन से भिन्न रही, क्योंकि यहाँ ब्रिटिश औद्योगीकरण के कारण कुछ पुराने शहरों का पतन हुआ और लोग खेती की ओर लौटे। इसे वि-औद्योगीकरण कहा जाता है, जो यह सिद्ध करता है कि उद्योग और नगर हमेशा एक साथ विकसित नहीं होते। औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों ने विकास के बजाय पारंपरिक संरचनाओं को नष्ट कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर दबाव बढ़ाया था।

59. (D) औपनिवेशिक शासन के दौरान मज़दूरों या सेवाकर्मियों के रूप में गमन के कारण।
दुनिया भर में मौजूद भारतीय मूल के लोगों के पूर्वज मुख्यतः औपनिवेशिक काल के दौरान विभिन्न देशों में पहुँचे थे। वे अक्सर मज़दूरों, सिपाहियों या सरकारी कर्मचारियों के रूप में ब्रिटिश साम्राज्य के अन्य उपनिवेशों में काम करने के लिए भेजे गए थे। इस ऐतिहासिक प्रव्रजन ने वैश्विक स्तर पर भारतीय संस्कृति के प्रसार और एक विशाल प्रवासी समुदाय के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

60. (B) क्योंकि उनका मानना था कि इससे आर्थिक स्थिति में आवश्यक सुधार होंगे।
भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं का यह दृढ़ विश्वास था कि देश की गरीबी और आर्थिक पिछड़ेपन को केवल तीव्र औद्योगीकरण के माध्यम से ही समाप्त किया जा सकता है। उन्हें उम्मीद थी कि बड़े उद्योगों की स्थापना से उत्पादन बढ़ेगा और समाज के सभी वर्गों के लिए समृद्धि आएगी। यह दृष्टिकोण स्वतंत्रता के बाद की आर्थिक नीतियों और पंचवर्षीय योजनाओं के निर्माण का मुख्य आधार बना, जो विकास के प्रति समर्पित था।

61. (B) P-3, Q-2, R-4, S-1
वि-औद्योगीकरण के कारण पारंपरिक उद्योगों का विनाश हुआ, जबकि नगरीकरण से शहरों में जनसंख्या का केंद्रीकरण बढ़ा। उपनिवेशवाद का अर्थ एक शक्तिशाली देश का दूसरे पर आधिपत्य है, और राष्ट्रवाद स्व-शासन एवं संप्रभुता के विचारों को प्रेरित करता है। ये सभी प्रक्रियाएँ आधुनिक भारतीय इतिहास के विभिन्न पहलुओं को स्पष्ट करती हैं और समाज में आए गहरे संरचनात्मक परिवर्तनों का विश्लेषण करने में सहायक सिद्ध होती हैं।

62. (D) दुग्ध आधारित सहकारी उद्योग
अमूल भारत में दुग्ध उत्पादन के क्षेत्र में सहकारी आंदोलन की सफलता का एक उत्कृष्ट प्रतीक है। इसमें हज़ारों किसान सामूहिक रूप से उत्पादन और विपणन के साथ जुड़े हुए हैं, जिससे बिचौलियों का अंत हुआ और ग्रामीण आय में वृद्धि हुई। यह मॉडल दर्शाता है कि कैसे सहकारी प्रयास भारी उद्योगों के समानांतर आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने में एक प्रभावी भूमिका निभा सकते हैं।

से शहरों की ओर पलायन और तेज़ होगा। यह योजना भविष्य में भारत के नगरीय परिदृश्य को बदलने और शहरीकरण की प्रक्रिया को नई गति देने की क्षमता रखती है।

85. (C) तीसरे प्रकार का
एम. एस. ए. राव के अनुसार, तीसरे प्रकार का नगरीय प्रभाव तब होता है जब एक विशाल महानगर अपने आसपास के गाँवों को पूरी तरह से निगल लेता है। इस प्रक्रिया में गाँव अपनी स्वतंत्र भौगोलिक और सामाजिक पहचान खो देते हैं और पूरी तरह से शहरी व्यवस्था का हिस्सा बन जाते हैं। यह महानगरों के बेतरतीब फैलाव और अनियंत्रित शहरीकरण की चुनौती को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण अवधारणा है।

86. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
बंबई, कलकत्ता और मद्रास जैसे औपनिवेशिक नगरों का विकास ब्रिटिश व्यापारिक हितों को साधने के लिए किया गया था। ये नगर आयात-निर्यात के मुख्य केंद्र थे और ब्रिटेन तथा भारत के बीच एक महत्वपूर्ण सेतु का कार्य करते थे। ये शहर भूमंडलीय पूँजीवाद के जीवंत उदाहरण थे, जहाँ आधुनिक अर्थव्यवस्था और औपनिवेशिक नियंत्रण का संगम होता था, जिसने भारत के आधुनिक शहरी ढांचे की आधारशिला रखी।

87. (D) ब्रिटिश अनुकरण
भारत में सड़कों पर बाएँ ओर चलने का नियम ब्रिटिश यातायात व्यवस्था का एक स्पष्ट अनुकरण है। औपनिवेशिक शासन के दौरान अंग्रेज़ों ने अपने देश के नियमों को भारत में लागू किया, जो आज भी हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बने हुए हैं। यह उदाहरण दर्शाता है कि कैसे औपनिवेशिक प्रभाव केवल बड़ी संस्थाओं तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसने हमारे सामान्य व्यवहार और नागरिक नियमों को भी गहराई से प्रभावित किया है।

88. (A) बाज़ार की कोई भौगोलिक सीमा नहीं है और यह अब पूर्णतः विश्वव्यापी हो चुका है।
पूँजीवादी दृष्टिकोण से बाज़ार अब केवल स्थानीय या राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक वैश्विक इकाई बन गया है। इसमें वस्तुओं, पूँजी और सेवाओं का प्रवाह पूरी दुनिया में निर्बाध रूप से होता है। यह भूमंडलीकृत बाज़ार प्रतिस्पर्धा और लाभ की नई संभावनाओं को जन्म देता है, जहाँ एक देश की आर्थिक घटनाएँ दूसरे देश की बाज़ार व्यवस्था को तुरंत प्रभावित करने की क्षमता रखती हैं।

89. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पश्चिमी उपनिवेशवाद और पूँजीवाद एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं क्योंकि उपनिवेशों के संसाधनों का दोहन ही पूँजीवाद के विस्तार का मुख्य आधार बना। बिना उपनिवेशों के, यूरोपीय उद्योगों को कच्चा माल और तैयार माल के लिए इतना बड़ा बाज़ार नहीं मिल पाता। यह परस्पर निर्भरता स्पष्ट करती है कि आर्थिक लाभ सुनिश्चित करने के लिए राजनीतिक प्रभुत्व का उपयोग किस प्रकार एक सुनियोजित रणनीति का हिस्सा था।

90. (A) खेत या ज़मीन पर उत्पादन से संबंधित प्राथमिक एवं पारंपरिक आर्थिक कार्यों में।
पारंपरिक सभ्यताओं में अधिकांश लोग कृषि और पशुपालन जैसे प्राथमिक कार्यों में लगे रहते थे, जो सीधे तौर पर भूमि से जुड़े थे। उनकी आजीविका मुख्य रूप से स्थानीय संसाधनों और हस्तशिल्प पर आधारित थी। समाज की संरचना सरल थी और आर्थिक गतिविधियाँ बड़े पैमाने पर यांत्रिक उत्पादन के बजाय व्यक्तिगत और सामुदायिक श्रम पर केंद्रित थीं, जो आधुनिक औद्योगिक युग से पहले की एक सामान्य विशेषता थी।

91. (A) 1, 2, 3, 4
कलकत्ता में फोर्ट विलियम की स्थापना सत्रहवीं सदी के अंत में हुई, जिसके बाद बिहार से मॉरीशस मज़दूरों का प्रव्रजन और चाय उद्योगों का विकास उन्नीसवीं सदी में हुआ। अंततः 1911 की जनगणना रिपोर्ट में ग्रामीण उद्योगों के पतन के स्पष्ट प्रमाण मिले। यह कालक्रम दर्शाता है कि कैसे समय के साथ औपनिवेशिक शासन ने भारत की सामाजिक और आर्थिक संरचना में एक के बाद एक बदलाव किए।

92. (B) बंगाल और मद्रास के वे क्षेत्र जिन्हें औपनिवेशिक शासन ने सेवा हेतु चुना था।
भारत में नए मध्यम वर्ग का उदय मुख्य रूप से उन क्षेत्रों में हुआ जहाँ ब्रिटिश शासन ने अपनी प्रशासनिक और शैक्षिक गतिविधियों को केंद्रित किया था, जैसे बंगाल और मद्रास। यहाँ के लोगों ने आधुनिक शिक्षा प्राप्त की और सरकारी नौकरियों एवं पेशेवर सेवाओं में प्रवेश किया। इस वर्ग ने आधुनिक विचारों को अपनाया और बाद में देश के राजनीतिक एवं सामाजिक सुधार आंदोलनों का नेतृत्व भी किया, जो महत्वपूर्ण है।

93. (B) केवल 2, 3, और 4
अंग्रेज़ी भाषा भारत में एक महत्वपूर्ण और बहुआयामी भूमिका निभाती है, जहाँ यह वंचित समूहों के लिए उन्नति का साधन है और भूमंडलीय बाज़ार में भारत को बढ़त दिलाती है। साथ ही, यह आज भी उच्च सामाजिक प्रतिष्ठा और विशेषाधिकार का प्रतीक मानी जाती है। इसमें प्रचुर मात्रा में उत्कृष्ट भारतीय साहित्यिक रचनाएँ भी हुई हैं, जो इसके समृद्ध भाषाई और सांस्कृतिक प्रभाव को पूरी तरह स्पष्ट करती हैं।

94. (D) समाज की राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक संरचना में होने वाले नवीन परिवर्तन।
संरचनात्मक परिवर्तन का तात्पर्य समाज के बुनियादी ढाँचे में आने वाले गहरे और स्थायी बदलावों से है, जो शासन प्रणाली, उत्पादन के तरीकों और सामाजिक संबंधों को प्रभावित करते हैं। यह केवल बाहरी बदलाव नहीं, बल्कि समाज के काम करने के तरीके में आने वाला एक व्यापक रूपांतरण है। औद्योगीकरण, नगरीकरण और उपनिवेशवाद जैसे कारकों ने भारत की पारंपरिक संरचना को बदलकर एक नई आधुनिक व्यवस्था को जन्म दिया है।

95. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारत की नगरीकरण यात्रा में 1951 में शहरी आबादी 17.29% थी, जो 2011 तक बढ़कर 31.16% हो गई। इस बीच 1981 से

को मौलिक रूप से प्रभावित किया है, जिसे नकारा नहीं जा सकता।

74. (A) इसने सभी भारतीयों के लिए समान अवसर पैदा किए।
यह कहना गलत होगा कि अंग्रेज़ी भाषा ने सभी भारतीयों के लिए समान अवसर पैदा किए हैं। वास्तव में, अंग्रेज़ी का ज्ञान आज भी समाज में एक बड़े विभाजन और विशेषाधिकार के रूप में कार्य करता है, जहाँ उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुँच सीमित है। हालाँकि इसने कुछ वर्गों को लाभ पहुँचाया है, लेकिन ग्रामीण और वंचित समुदायों के लिए यह अभी भी एक बड़ी बाधा बनी हुई है।

75. (B) केवल 1, 2, 3 और 4
उपनिवेशवाद ने राजनीतिक नियंत्रण के साथ-साथ आर्थिक व्यवसायों में हस्तक्षेप किया और लोगों की वैश्विक आवाजाही को बढ़ाया। पश्चिमी उपनिवेशवाद का प्रभाव सबसे व्यापक रहा है क्योंकि इसने दुनिया भर की संरचनाओं को बदला। हालाँकि, इसने केवल शिक्षा पद्धति ही नहीं बदली, बल्कि भूमि व्यवस्था, कानून और शहरीकरण के तरीकों में भी क्रांतिकारी परिवर्तन लाए, जिनका प्रभाव आज भी भारतीय समाज के विभिन्न अंगों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है।

76. (B) रेशम और कपास उत्पादन।
मैनचेस्टर की कपड़ा मिलों से आने वाले सस्ते और मशीनी वस्त्रों ने भारत के पारंपरिक रेशम और कपास उद्योग को भारी नुकसान पहुँचाया। भारतीय बुनकर हाथ से बने कपड़ों की कीमत और फिनिशिंग में ब्रिटिश मशीनों का मुकाबला नहीं कर सके। इस असमान प्रतियोगिता ने भारत के इस गौरवशाली उद्योग के पतन की नींव रखी और लाखों लोगों को बेरोज़गारी और गरीबी की ओर धकेल दिया, जो अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण था।

77. (C) जॉब चारनॉक
वर्ष 1690 में अंग्रेज़ व्यापारी जॉब चारनॉक ने हुगली नदी के तट पर सुतानुती, कोलीकाता और गोविंदपुर नामक तीन गाँवों को पट्टे पर लिया, जो कालांतर में कलकत्ता (कोलकाता) के रूप में विकसित हुए। यह कदम भारत में ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी के व्यावसायिक और राजनीतिक विस्तार का एक प्रारंभिक और निर्णायक बिंदु था। कलकत्ता बाद में लंबे समय तक ब्रिटिश भारत की प्रशासनिक राजधानी बना रहा, जो महत्वपूर्ण है।

78. (C) P-2, Q-1, R-4, S-3
बिहार औपनिवेशिक काल में बागान मज़दूरों का एक मुख्य स्रोत था, जबकि असम चाय उत्पादन का प्रमुख क्षेत्र बना। मैनचेस्टर कपड़ा उद्योग की वैश्विक प्रतियोगिता का केंद्र था जिसने भारतीय बुनकरों को प्रभावित किया और मॉरीशस भारतीय गिरमिटिया मज़दूरों का एक प्रमुख गंतव्य बना। यह मिलान दर्शाता है कि कैसे औपनिवेशिक आर्थिक तंत्र ने दुनिया के विभिन्न हिस्सों को श्रम और व्यापार के माध्यम से आपस में जोड़ा।

79. (A) कम वेतन पर मज़दूरों से काम कराने और उन पर पूर्ण नियंत्रण बनाए रखने के लिए।
चाय बागानों के मालिक अक्सर औपनिवेशिक प्रशासन और पुलिस की ताकत का उपयोग मज़दूरों को डराने और उन्हें बंधुआ स्थितियों में रखने के लिए करते थे। उनका मुख्य उद्देश्य श्रम की लागत को न्यूनतम रखना और मज़दूरों को अपनी इच्छा से भागने से रोकना था। यह दमनकारी व्यवस्था कानून के नाम पर चलाई जा रही थी, जो बागान मालिकों के असीमित मुनाफ़े और शोषण को वैधता प्रदान करती थी।

80. (B) मज़दूरों को असम के चाय बागानों में भेजने के लिए।
"ट्रांसपोर्ट ऑफ़ नेटिव लेबरर्स एक्ट" जैसे कानूनों का उपयोग मज़दूरों को उनके मूल स्थानों से असम के चाय बागानों तक ले जाने और वहाँ उन्हें कठोर अनुबंधों में बाँधने के लिए किया गया था। ये कानून मज़दूरों के बजाय मालिकों के हितों के लिए बनाए गए थे, जो यह सुनिश्चित करते थे कि मज़दूर काम छोड़कर वापस न जा सकें। यह औपनिवेशिक शोषण का एक वैधानिक औज़ार था।

81. (B) उनकी जीवन शैली भोग-विलास और ऐश्वर्यपूर्ण थी।
औपनिवेशिक काल में अंग्रेज़ बागान मालिक अत्यंत ऐश्वर्यपूर्ण जीवन जीते थे, जिसमें वे विशाल बंगलों में रहते थे और अनेक नौकरों की सेवाएँ लेते थे। उनकी यह विलासिता मज़दूरों की दरिद्रता और झोपड़ियों में बिताए जाने वाले कष्टप्रद जीवन के बिल्कुल विपरीत थी। यह सामाजिक दूरी और जीवन स्तर का भारी अंतर औपनिवेशिक शासन के क्रूर और भेदभावपूर्ण चरित्र को पूरी तरह स्पष्ट करता है।

82. (A) भारतीय राष्ट्रवादियों ने
भारतीय राष्ट्रवादी नेताओं ने ब्रिटिश शासन द्वारा किए जा रहे भारत के आर्थिक शोषण को अपनी राजनीतिक लड़ाई का मुख्य मुद्दा बनाया। उन्होंने दादाभाई नौरोजी जैसे विचारकों के 'धन के निष्कासन' के सिद्धांत के माध्यम से लोगों को जागरूक किया कि कैसे विदेशी शासन भारत की संपत्ति को लूट रहा है। इस आर्थिक चेतना ने जनता को संगठित करने और स्वराज की माँग को मज़बूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

83. (C) मुर्शिदाबाद
बोकारो, भिलाई और दुर्गापुर स्वतंत्र भारत की औद्योगिक नीति के तहत विकसित आधुनिक औद्योगिक नगर हैं। इसके विपरीत, मुर्शिदाबाद बंगाल का एक ऐतिहासिक और पारंपरिक केंद्र था जिसका पतन औपनिवेशिक काल के दौरान हुआ। यह शहर अपनी पुरानी शान और उद्योगों के लिए जाना जाता था, लेकिन ब्रिटिश शासन की आर्थिक नीतियों और दरबारों के विघटन ने इसे औद्योगिक रूप से काफी पीछे धकेल दिया।

84. (D) यह नगरीकरण की गति को और अधिक तीव्र करने में अपना महत्वपूर्ण योगदान देगी।
भारत सरकार की 'स्मार्ट सिटी' योजना का उद्देश्य शहरी बुनियादी ढांचे को आधुनिक और तकनीक-आधारित बनाना है। इस निवेश और विकास से शहरों में बेहतर सुविधाओं और रोज़गार के अवसरों की संभावना बढ़ेगी, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों

106. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
2001-2011 के बीच नगरीय जनसंख्या में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में अधिक वृद्धि देखी गई, जिसका मुख्य कारण ग्रामीण वृद्धि दर में तेज़ी से आई कमी थी। यद्यपि शहरों की विकास दर में बहुत बड़ा उछाल नहीं आया, लेकिन ग्रामीण आबादी के बढ़ने की रफ़्तार कम होने से नगरीय जनसंख्या का प्रभाव स्पष्ट रूप से बढ़ गया। यह भारत में हो रहे बड़े जनसांख्यिकीय संक्रमण का एक महत्वपूर्ण संकेत है।

107. (D) शासित देश के लोगों को पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता देना।
उपनिवेशवाद का मूल स्वभाव ही नियंत्रण और आधिपत्य पर आधारित है, इसलिए इसमें शासित देश के लोगों को पूर्ण राजनीतिक स्वतंत्रता देने का कोई प्रावधान नहीं होता। यह व्यवस्था दूसरे देश के संसाधनों का दोहन करने और उसके आर्थिक एवं राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप करने के लिए ही बनाई गई है। स्वतंत्रता और संप्रभुता देना उपनिवेशवाद के मूलभूत उद्देश्यों के बिल्कुल विपरीत है, जो इसे और दमनकारी बनाता है।

108. (B) यह राष्ट्रवादी और औपनिवेशिक शासन विरोधी चेतना के विकास का माध्यम बनी।
पश्चिमी शिक्षा का उद्देश्य भले ही ब्रिटिश शासन का सहयोग करना रहा हो, लेकिन इसने अनजाने में भारतीयों को स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र जैसे आधुनिक विचारों से परिचित कराया। शिक्षित भारतीयों ने इन सिद्धांतों का उपयोग करके ब्रिटिश शासन की खामियों को उजागर किया और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन को एक बौद्धिक दिशा दी। इस प्रकार, शिक्षा ने भारतीयों को उनके अधिकारों के प्रति जागरूक कर राष्ट्रवाद को मज़बूत किया।

109. (C) P-2, Q-4, R-1, S-3
ब्रिटेन ने औद्योगीकरण के माध्यम से एक नगरीय समाज का रूप लिया, जबकि भारत में उसी दौरान वि-औद्योगीकरण ने पारंपरिक व्यवसायों को नष्ट किया। स्वतंत्र भारत में भारी उद्योगों और सार्वजनिक क्षेत्र पर ध्यान दिया गया, जबकि समकालीन दौर में 'स्मार्ट सिटी' जैसी योजनाएँ नगरीकरण को नई ऊँचाइयों पर ले जा रही हैं। यह विकास यात्रा भारत के बदलते आर्थिक प्राथमिकताओं और सामाजिक संरचनाओं को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

110. (D) चाय बागानों हेतु सामान की लदाई और उतारने की एक अत्यंत महत्वपूर्ण जगह के रूप में।
परबतपुरी जैसे स्थानों का ऐतिहासिक उल्लेख चाय बागान अर्थव्यवस्था के महत्वपूर्ण लॉजिस्टिक्स केंद्रों के रूप में किया गया है। यहाँ से बागानों के लिए आवश्यक मशीनरी और रसद की आवाजाही होती थी। यह स्थान इस बात का प्रतीक है कि कैसे औपनिवेशिक शासन ने दुर्गम क्षेत्रों में भी व्यापारिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए परिवहन और संचार के विशिष्ट केंद्रों को विकसित और व्यवस्थित किया था।

111. (A) भारतीयों का एक ऐसे वर्ग तैयार करना जो ब्रिटिश शासन को चलाने में सहायक हो।
लॉर्ड मैकाले जैसे ब्रिटिश अधिकारियों ने पश्चिमी शिक्षा पद्धति को इसलिए लागू किया ताकि भारत में एक ऐसा वर्ग तैयार किया जा सके जो 'रंग और रक्त' में तो भारतीय हो, परंतु 'रुचि और विचार' में ब्रिटिश हो। इस वर्ग को ब्रिटिश प्रशासन की मशीनरी को सुचारू रूप से चलाने और औपनिवेशिक शासन को स्थायित्व प्रदान करने के लिए एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में देखा गया था।

112. (A) 1, 2, 3, 4
वैश्विक इतिहास में पूँजीवाद के उदय ने राष्ट्र-राज्यों की अवधारणा को जन्म दिया, जिससे बाद में पश्चिमी उपनिवेशवाद का प्रसार हुआ। इस औपनिवेशिक शासन की प्रतिक्रिया के रूप में ही भारत में राष्ट्रवादी आंदोलन का उदय हुआ। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे आर्थिक परिवर्तनों ने राजनीतिक संरचनाओं को प्रभावित किया और अंततः एक बड़े सामाजिक और राष्ट्रीय जागरण की पृष्ठभूमि तैयार की, जो अत्यंत महत्वपूर्ण है।

113. (D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, आधुनिक समाज को आकार देने वाली प्रमुख प्रक्रियाएँ जैसे औद्योगीकरण, नगरीकरण, वि-औद्योगीकरण, उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद एक-दूसरे से गहराई से जुड़ी हुई हैं। जहाँ औद्योगीकरण और नगरीकरण संरचनात्मक बदलाव लाते हैं, वहीं उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद शासन के स्वरूप और जनचेतना को बदलते हैं। इन सभी प्रक्रियाओं के सम्मिलित प्रभाव ने ही समकालीन भारतीय सामाजिक और राजनीतिक जीवन की जटिल संरचना को पूरी तरह निर्मित किया है।

114. (A) लंदन
बीसवीं सदी के प्रारंभ में लंदन दुनिया का सबसे विशाल और प्रभावशाली नगर था, जो ब्रिटिश साम्राज्य की असीमित शक्ति और वैभव का केंद्र था। यह शहर न केवल जनसंख्या के मामले में शीर्ष पर था, बल्कि वैश्विक वित्त, व्यापार और राजनीति का मुख्य धुरी भी था। लंदन का यह प्रभुत्व उस समय के वैश्विक औपनिवेशिक ढांचे और ब्रिटेन की औद्योगिक श्रेष्ठता का प्रत्यक्ष प्रमाण था।

115. (C) मेनचेस्टर से आयातित सस्ते कपड़ों की प्रतियोगिता।
भारतीय रेशम और कपास उद्योगों के पतन का सबसे बड़ा कारण ब्रिटेन के मैनचेस्टर शहर से आने वाले सस्ते और मशीनीकृत कपड़ों की भारी आवक थी। भारत के हस्तशिल्प बुनकर इन मशीनी उत्पादों की कम कीमत और गति का मुकाबला नहीं कर पाए। ब्रिटिश सरकार की भेदभावपूर्ण व्यापारिक नीतियों ने भी स्थानीय उद्योगों की कमर तोड़ दी, जिससे देश की आर्थिक आत्मनिर्भरता को गंभीर चोट पहुँची, जो बहुत विनाशकारी था।

116. (D) इन नगरों का विकास ब्रिटिश आर्थिक हितों की पूर्ति हेतु एक सुनियोजित ढंग से हुआ।
बंबई, कलकत्ता और मद्रास जैसे नगरों को अंग्रेजों ने एक निश्चित योजना के तहत विकसित किया था ताकि वे अपनी व्यापारिक

2001 के दौरान नगरीय वृद्धि दर में कुछ गिरावट देखी गई, लेकिन 2001-2011 के दशक में इसमें पुनः मामूली सुधार दर्ज किया गया। ये आँकड़े देश के निरंतर बदलते जनसांख्यिकीय स्वरूप और शहरों की ओर बढ़ते झुकाव को स्पष्ट रूप से सांख्यिकीय आधार पर प्रदर्शित करते हैं।

96. (B) ये प्रायः एक साथ होने वाली प्रक्रियाएँ हैं, परंतु हमेशा ऐसा होना अनिवार्य नहीं है।
औद्योगीकरण और नगरीकरण को अक्सर एक-दूसरे का पूरक माना जाता है क्योंकि कारखानों की स्थापना से शहरों का विस्तार होता है। हालाँकि, यह हमेशा एक अनिवार्य नियम नहीं है। भारत का अनुभव बताता है कि यहाँ औपनिवेशिक काल में कुछ औद्योगिक परिवर्तनों के कारण वि-औद्योगीकरण हुआ, जिससे नगरीय केंद्रों का ह्रास हुआ। अतः, इन दोनों प्रक्रियाओं के बीच का संबंध जटिल और परिस्थितियों पर निर्भर होता है।

97. (B) 74 प्रतिशत
वर्ष 1900 तक ब्रिटेन अपनी तीव्र औद्योगिक प्रगति के कारण एक पूर्णतः नगरीय देश बन चुका था, जहाँ की लगभग 74 प्रतिशत आबादी शहरों में रहने लगी थी। यह आंकड़ा दर्शाता है कि कैसे औद्योगीकरण ने लोगों को गाँवों से बाहर निकालकर शहरी कार्यबल में बदल दिया। ब्रिटेन का यह अनुभव दुनिया के अन्य हिस्सों के लिए आधुनिक नगरीकरण के एक प्रारंभिक और शक्तिशाली मॉडल के रूप में उभरा।

98. (A) भारत में इसके कारण वि-औद्योगीकरण हुआ जिससे लोग पुनः कृषि की ओर लौटे।
भारत में औपनिवेशिक औद्योगीकरण का स्वरूप पश्चिमी देशों से भिन्न था क्योंकि इसने स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देने के बजाय उन्हें नष्ट कर दिया। मैनचेस्टर की प्रतियोगिता के कारण भारतीय कारीगर बेकार हो गए और उन्हें अपनी आजीविका के लिए मजबूरन वापस गाँवों और खेती की ओर जाना पड़ा। इस प्रकार, भारत में औद्योगीकरण की प्रक्रिया ने विकास के स्थान पर ग्रामीण अर्थव्यवस्था पर बोझ बढ़ा दिया।

99. (C) उन आधुनिक नए शहरों में जहाँ यांत्रिक और मशीनीकृत उद्योग स्थापित किए गए थे।
उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्ध में भारत में जनसंख्या की वृद्धि मुख्य रूप से उन नए और आधुनिक शहरों में देखी गई जहाँ जूट, कपास और अन्य मशीनीकृत उद्योग लगाए गए थे। ये नगर रोज़गार के नए केंद्र बनकर उभरे और उन्होंने पुराने व्यापारिक केंद्रों का स्थान ले लिया। इन औद्योगिक नगरों का उदय भारत के शहरी परिदृश्य में एक नए और आधुनिक युग की शुरुआत का प्रतीक था।

100. (D) बस नौकरी ढूँढ़ने वाला।
औपनिवेशिक काल में भारतीय शिक्षा प्रणाली का ढाँचा ऐसा था कि एक शिक्षित स्नातक का मुख्य लक्ष्य सरकारी या प्रशासनिक नौकरी पाना ही रह गया था। स्वतंत्र उद्यमों की कमी और औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था की प्रकृति ने स्नातकों को केवल सेवा क्षेत्र तक सीमित कर दिया। यह प्रवृत्ति समाज में एक ऐसी मानसिकता के विकास का कारण बनी जहाँ शिक्षा को केवल आजीविका के लिए नौकरी पाने का साधन माना गया।

101. (D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5
औपनिवेशिक काल के दौरान कोलकाता, बंबई और मद्रास जैसे बंदरगाह शहर वैश्विक व्यापार के मुख्य केंद्र थे। यहाँ से जूट, कच्ची कपास, कहवा और चीनी जैसे उत्पादों का निर्यात ब्रिटिश और वैश्विक बाज़ारों में किया जाता था। ये नगर न केवल प्रशासनिक केंद्र थे बल्कि भूमंडलीय पूँजीवाद के सक्रिय घटक भी थे, जिन्होंने भारत को एक विशाल अंतरराष्ट्रीय आर्थिक तंत्र के साथ मजबूती से जोड़ दिया था।

102. (B) असम की जनसंख्या सघन नहीं थी और चाय के बागान निर्जन क्षेत्रों में स्थित थे।
असम में चाय बागानों के लिए स्थानीय मज़दूरों की कमी का मुख्य कारण वहाँ की कम जनसंख्या और बागानों का दूरदराज के वीरान इलाकों में होना था। इस कमी को पूरा करने के लिए औपनिवेशिक सरकार ने अन्य राज्यों से मज़दूरों को लाने की व्यवस्था की। इस स्थिति ने एक बड़े पैमाने पर मानव विस्थापन और शोषणकारी भर्ती प्रणालियों को जन्म दिया, जिससे बागान अर्थव्यवस्था का संचालन संभव हो सका।

103. (D) दूरदराज के एकांत में बने अत्यंत विशाल एवं ऐश्वर्यपूर्ण सुसज्जित बँगलों में।
अंग्रेज़ बागान मालिक और उनके परिवार मज़दूरों से पूरी तरह अलग होकर एकांत और सुरक्षित इलाकों में बने भव्य बंगलों में रहते थे। यह अलगाव न केवल उनकी उच्च सामाजिक स्थिति को दर्शाता था, बल्कि यह औपनिवेशिक सत्ता के नस्लीय भेदभाव का भी प्रतीक था। उनके जीवन की चमक-धमक और सुविधाओं का स्तर बागान मज़दूरों की झुग्गियों और उनकी अमानवीय जीवन स्थितियों से कोसों दूर था।

104. (A) तीव्र और वृहद औद्योगीकरण।
स्वतंत्र भारत के योजनाकारों और राष्ट्रवादी नेताओं ने गरीबी के निवारण के लिए 'तीव्र और वृहद औद्योगीकरण' को सबसे महत्वपूर्ण हथियार माना। उनका विश्वास था कि बड़े उद्योगों और आधुनिक तकनीक के माध्यम से ही देश की अर्थव्यवस्था को पुनर्जीवित किया जा सकता है। इस नीति का उद्देश्य न केवल उत्पादन बढ़ाना था, बल्कि आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और करोड़ों लोगों के लिए रोज़गार के अवसर पैदा करना भी था।

105. (C) एम. एस. ए. राव के अनुसार यह समस्या औद्योगिक शहरों के निकट के गाँवों में जहाँ स्थानीय और प्रवासियों का संपर्क हो।
एम. एस. ए. राव के दूसरे प्रकार के नगरीय प्रभाव में औद्योगिक शहरों के पास स्थित गाँवों में स्थानीय निवासियों और बाहर से आए कामगारों के बीच संबंधों की समस्या प्रमुख होती है। यहाँ पारंपरिक ग्रामीण समाज और आधुनिक प्रवासी श्रमिक वर्ग के बीच सामाजिक सामंजस्य बिठाना चुनौतीपूर्ण होता है। यह स्थिति ग्रामीण परिवेश में सांस्कृतिक टकराव और नए प्रकार के सामाजिक तनावों को जन्म देने की संभावना रखती है।

21. (C) इन सभाओं के संरक्षण में कार्यरत कारीगरों और कलाकारों का पतन हुआ।
तंजौर, ढाका और मुर्शिदाबाद जैसे शहरों की राजसभाएँ स्थानीय कलाकारों और कुशल कारीगरों को संरक्षण प्रदान करती थीं। जब ब्रिटिश शासन के कारण इन दरबारों का विघटन हुआ, तो इन विशेषज्ञों ने अपना मुख्य बाज़ार और आर्थिक सहारा खो दिया। इसके परिणामस्वरूप, इन शहरों की औद्योगिक और सांस्कृतिक चमक फीकी पड़ गई और यहाँ के प्रसिद्ध पारंपरिक व्यवसायों का तेज़ी से पतन होने लगा।

22. (B) केवल 1, 2 और 3
ब्रिटेन में औद्योगीकरण ने नगरीकरण को बढ़ावा दिया, जबकि भारत में इसने वि-औद्योगीकरण पैदा किया, जिससे लोग शहरों से गाँवों की ओर लौटे। मैनचेस्टर से आए सस्ते कपड़ों ने भारतीय बुनकरों को भारी नुकसान पहुँचाया। औपनिवेशिक शासन में सभी पुराने नगर समृद्ध नहीं हुए, बल्कि कई महत्वपूर्ण पारंपरिक व्यापारिक केंद्र पूरी तरह उजड़ गए। यह विरोधाभास औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों के कारण समाज में उत्पन्न हुआ था।

23. (D) आयातित कपड़ों और बर्तनों की प्रतियोगिता से उनके उद्योगों का अंत।
1911 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार, ग्रामीण कारीगरों द्वारा खेती अपनाने का मुख्य कारण मैनचेस्टर से आने वाले सस्ते आयातित सामानों की कड़ी प्रतियोगिता थी। हाथ से बनी वस्तुओं की तुलना में मशीनी उत्पाद अधिक सस्ते और आकर्षक थे। इस असमान प्रतियोगिता ने स्थानीय ग्रामीण उद्योगों को आर्थिक रूप से अव्यवहारिक बना दिया, जिससे विवश होकर कारीगरों को अपनी आजीविका के लिए कृषि क्षेत्र की ओर मुड़ना पड़ा।

24. (A) इन स्थानो से वस्तुओं का निर्यात और आयात सरलता से संपन्न किया जा सकता था।
बंबई, कलकत्ता और मद्रास जैसे तटीय नगरों का विकास ब्रिटिश आर्थिक हितों को साधने के लिए किया गया था। ये बंदरगाह शहर भारत से कच्चे माल को निर्यात करने और ब्रिटेन से तैयार माल आयात करने के लिए भौगोलिक रूप से सर्वोत्तम थे। ये नगर औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के केंद्रीय केंद्र बन गए, जहाँ से ब्रिटिश शासन पूरे उपमहाद्वीप के व्यापार और प्रशासन को नियंत्रित करता था।

25. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
औपनिवेशिक नगर भूमंडलीय पूँजीवाद के प्रतीक थे क्योंकि उन्होंने भारतीय संसाधनों को ब्रिटिश औद्योगिक केंद्रों से जोड़ने का काम किया। ये शहर न केवल व्यापारिक केंद्र थे, बल्कि वे उस व्यवस्था की कड़ी थे जो भारत को एक अधीनस्थ आर्थिक क्षेत्र के रूप में विश्व बाज़ार से जोड़ती थी। इनके माध्यम से होने वाला संसाधनों का प्रवाह ब्रिटेन की समृद्धि और भारत के आर्थिक शोषण का आधार था।

26. (A) बंबई
वर्ष 1900 तक बंबई एक प्रमुख औपनिवेशिक बंदरगाह के रूप में स्थापित हो चुका था, जहाँ से भारत की एक-तिहाई कच्ची कपास का निर्यात किया जाता था। कपास के इस बड़े व्यापार ने बंबई को आर्थिक रूप से अत्यंत शक्तिशाली बनाया और शहर के औद्योगिक विकास की नींव रखी। यह व्यापारिक केंद्र ब्रिटिश कपड़ा मिलों के लिए कच्चे माल की आपूर्ति सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता था।

27. (D) भूमि-स्वामित्व और अंग्रेज़ी में शिक्षा की सुविधा।
समाजशास्त्री डी. पी. मुखर्जी के अनुसार, ब्रिटिश शासन ने भारत की पुरानी व्यवस्थाओं को बदलकर नए भूमि-स्वामित्व नियम और अंग्रेज़ी शिक्षा प्रणाली प्रदान की। हालाँकि इन परिवर्तनों का प्राथमिक उद्देश्य औपनिवेशिक स्वार्थ था, लेकिन इन्होंने भारतीय समाज में एक नए मध्यम वर्ग और आधुनिक बौद्धिक चेतना के उदय का मार्ग भी प्रशस्त किया। इन सुधारों ने भारत की सामाजिक संरचना में स्थायी और दीर्घकालिक परिवर्तन उत्पन्न किए।

28. (A) 1, 2, 4, 3
कलकत्ता की स्थापना के लिए जॉब चारनॉक द्वारा गाँवों को पट्टे पर लेना पहली महत्वपूर्ण घटना थी, जिसके बाद फोर्ट विलियम बना। इसके बाद के वर्षों में बंबई को कपास निर्यात के केंद्र के रूप में विकसित किया गया और उन्नीसवीं सदी के मध्य में चाय उद्योगों की शुरुआत हुई। यह कालानुक्रमिक क्रम भारत में ब्रिटिश व्यापारिक और प्रशासनिक पकड़ के क्रमिक विस्तार की प्रक्रिया को दर्शाता है।

29. (C) फोर्ट विलियम और उसके निकटवर्ती खुले क्षेत्र (मैदान) का परिसर।
फोर्ट विलियम और उसके आसपास का 'मैदान' कलकत्ता के औपनिवेशिक केंद्र के रूप में विकसित हुए। इस क्षेत्र को सैन्य सुरक्षा और यूरोपीय निवासियों के मनोरंजन के लिए खुला रखा गया था। यह बनावट औपनिवेशिक शक्ति के प्रदर्शन का प्रतीक थी, जिसने शासकों और स्थानीय आबादी के बीच एक स्पष्ट भौगोलिक और सामाजिक दूरी बनाए रखी। यह क्षेत्र आज भी शहर के ऐतिहासिक ढांचे का महत्वपूर्ण हिस्सा है।

30. (D) बागानों के लिए मज़दूरों की भर्ती स्वेच्छा और अच्छे वेतन पर आधारित थी।
चाय बागानों में मज़दूरों की भर्ती स्वेच्छा से नहीं, बल्कि धोखे, प्रलोभन और बल प्रयोग के माध्यम से की जाती थी। मज़दूरों को अत्यंत कम वेतन पर बहुत कठिन परिस्थितियों में काम करने के लिए मजबूर किया जाता था। औपनिवेशिक सरकार ने बागान मालिकों के हितों की रक्षा के लिए ऐसे कानून बनाए थे जो मज़दूरों की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करते थे और उन्हें बंधुआ मज़दूरी जैसी स्थिति में रखते थे।

31. (B) केवल 1, 2, 3 और 5
भारत में चाय उद्योग 1851 में शुरू हुआ और असम के बागानों के लिए मज़दूरों की भर्ती ठेकेदारों के माध्यम से बल और धोखे से की जाती थी। ट्रांसपोर्ट ऑफ़ नेटिव लेबरर्स एक्ट जैसे कानूनों

गतिविधियों और प्रशासनिक नियंत्रण को मज़बूत कर सकें। ये नगर भारत से कच्चे माल को ब्रिटेन भेजने और वहाँ से तैयार माल मँगाने के मुख्य द्वार थे। इनकी संरचना और व्यवस्था पूरी तरह से औपनिवेशिक आर्थिक तंत्र की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ही बनाई गई थी।

117. (C) क्योंकि आधिकारिक रिपोर्टें पूर्ण सत्य नहीं दर्शातीं और इनसे वास्तविक जानकारी मिलती है।
औपनिवेशिक काल की आधिकारिक रिपोर्टें अक्सर चाय बागान मालिकों के पक्ष में होती थीं और मज़दूरों की वास्तविक दुर्दशा को छिपाती थीं। इसके विपरीत, गैर-आधिकारिक स्रोतों जैसे संस्मरणों और कहानियों से हमें मज़दूरों के शोषण, स्वास्थ्य और जीवन की कठिन परिस्थितियों का सच्चा चित्रण मिलता है। ये स्रोत इतिहास के उन पहलुओं को उजागर करते हैं जिन्हें शासन द्वारा जानबूझकर अनदेखा या दबाया गया था, जो महत्वपूर्ण है।

118. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
स्वतंत्र भारत में भारी उद्योगों और सार्वजनिक क्षेत्र पर जोर दिया गया क्योंकि राष्ट्रवादी नेताओं का मानना था कि गरीबी उन्मूलन का यही एकमात्र प्रभावी रास्ता है। उनका अनुमान था कि बड़े पैमाने पर मशीनीकृत उत्पादन से देश की आर्थिक शक्ति बढ़ेगी और सामाजिक न्याय के लक्ष्य प्राप्त होंगे। यह विचारधारा आधुनिक भारत के औद्योगिक ढांचे के निर्माण और आर्थिक नियोजन की प्रक्रिया की प्रेरणा शक्ति बनी।

119. (D) 62.44 मिलियन और 2843 कस्बे
वर्ष 1951 में स्वतंत्र भारत की पहली व्यवस्थित जनगणना के समय नगरीय जनसंख्या 62.44 मिलियन थी और देश में कुल 2843 कस्बे थे। यह आँकड़ा भारत के नगरीकरण की प्रारंभिक स्थिति को दर्शाता है जब अधिकांश जनसंख्या ग्रामीण थी। इसके बाद के दशकों में नियोजित आर्थिक विकास और औद्योगिक प्रसार के कारण इन दोनों ही आँकड़ों में अभूतपूर्व और निरंतर वृद्धि दर्ज की गई है।

120. (A) ब्रिटेन में औद्योगीकरण से नगरीकरण हुआ, जबकि भारत में लोग कृषि की ओर लौटे।
ब्रिटेन का औद्योगीकरण वहाँ के शहरों को बसाने वाला साबित हुआ, जहाँ लोग काम के लिए नगरों की ओर बढ़े। इसके विपरीत, भारत में ब्रिटिश नीतियों ने वि-औद्योगीकरण पैदा किया, जिससे लोग शहरों के पतन के कारण अपनी आजीविका खोकर पुनः खेती की ओर मुड़ने को मजबूर हुए। यह तुलना स्पष्ट करती है कि औपनिवेशिक प्रभाव ने भारत के विकास की दिशा को प्रतिकूल रूप से मोड़ दिया था।

121. (A) P-1, Q-3, R-2, S-4
संरचनात्मक परिवर्तनों में औद्योगीकरण और नगरीकरण प्रमुख हैं, जबकि सांस्कृतिक परिवर्तन विश्वासों और मूल्यों में बदलाव लाते हैं। औपनिवेशिक अनुभव ने भारत में आधुनिक संस्थाओं और विचारों की नींव रखी, और भूमंडलीय पूँजीवाद ने बड़े तटीय नगरों के विकास को प्रेरित किया। ये सभी कारक मिलकर आधुनिक भारतीय समाज के क्रमिक विकास और उसकी जटिल संरचना को समझने के लिए एक स्पष्ट और बहुआयामी ढाँचा प्रदान करते हैं।

122. (A) प्रथम प्रकार
एम. एस. ए. राव के अनुसार, यह प्रथम प्रकार का नगरीय प्रभाव है जहाँ प्रवासियों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में आधुनिकता प्रवेश करती है। जब ग्रामीण लोग विदेशों या बड़े शहरों में जाकर पैसा कमाते हैं और अपने गाँवों में पक्के मकान बनवाते हैं, तो इससे गाँव की आर्थिक और भौतिक स्थिति में सुधार होता है। यह निरंतर संपर्क ग्रामीण जीवन के पारंपरिक सामाजिक ताने-बाने को भी रुपांतरित करता है।

123. (D) उपनिवेशवाद - स्व-शासन
औद्योगीकरण, नगरीकरण और पूँजीवाद की अवधारणाएँ अपने संबंधित अर्थों के साथ सही मेल खाती हैं। परंतु, उपनिवेशवाद और स्व-शासन एक-दूसरे के विपरीत हैं क्योंकि उपनिवेशवाद का अर्थ ही दूसरे राष्ट्र द्वारा नियंत्रण और राजनीतिक स्वतंत्रता का अभाव है। स्व-शासन केवल स्वतंत्रता और संप्रभुता की स्थिति में ही संभव होता है, जिसे उपनिवेशवाद पूरी तरह समाप्त कर देता है, जो शासन के दमनकारी चरित्र का प्रमाण है।

124. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
भारत में संरचनात्मक परिवर्तन एक बहुआयामी प्रक्रिया रही है जिसमें आधुनिक विचारों का आगमन, अंग्रेज़ी शिक्षा का प्रभाव, पूँजीवादी व्यवस्था का विस्तार और वि-औद्योगीकरण जैसे कारक शामिल थे। इन सभी ने मिलकर भारतीय समाज के आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक ढांचे को गहराई से प्रभावित किया। इन परिवर्तनों ने न केवल औपनिवेशिक काल को परिभाषित किया, बल्कि स्वतंत्र भारत के भविष्य के विकास की दिशा भी तय की।

125. (C) भारत पर उपनिवेशवाद का स्थायी प्रभाव।
भारत की वर्तमान संसदीय प्रणाली, न्याय व्यवस्था और शिक्षा का ढाँचा काफी हद तक ब्रिटिश मॉडलों से प्रेरित है। यह तथ्य इस बात का प्रमाण है कि उपनिवेशवाद केवल एक ऐतिहासिक दौर नहीं था, बल्कि उसने भारतीय संस्थाओं पर एक अमिट और स्थायी प्रभाव छोड़ा है। आज भी ये व्यवस्थाएँ हमारे राष्ट्र के संचालन की मुख्य आधारशिला बनी हुई हैं, जो औपनिवेशिक विरासत की निरंतरता को दर्शाती हैं।

126. (D) क्योंकि ब्रितानी उपनिवेशवाद पूँजीवादी व्यवस्था पर आधारित था और उसके प्रसार हेतु था।
ब्रितानी उपनिवेशवाद और पूँजीवाद एक-दूसरे के पूरक थे क्योंकि अंग्रेजों ने भारत को अपने पूँजीवादी हितों को साधने के लिए एक साधन के रूप में इस्तेमाल किया। उपनिवेशवाद ने पूँजीवाद के लिए कच्चा माल और एक विशाल बाज़ार उपलब्ध कराया। इसलिए, उपनिवेशवाद को समझने के लिए उस पूँजीवादी विचारधारा और संरचना को जानना अनिवार्य है जिसने ब्रिटिश साम्राज्य की वैश्विक नीतियों और भारत में उनके हस्तक्षेप को निर्देशित किया था।

127. (A) 1, 2, 3, 4
उन्नीसवीं सदी के अंत में आधुनिक शहरों के उदय के साथ शुरु होकर, नगरीकरण की प्रक्रिया 1951 के 17.29% से 2011 के 31.16% तक पहुँची। इस दौरान 1981-2001 में वृद्धि दर में कुछ गिरावट भी दर्ज की गई। यह ऐतिहासिक क्रम दर्शाता है कि भारत कैसे धीरे-धीरे एक ग्रामीण समाज से शहरी समाज की ओर बढ़ रहा है और इसमें विभिन्न आर्थिक चरणों का क्या योगदान रहा है।

128. (B) ठेकेदारों द्वारा प्रलोभन, बल और धोखे से।
चाय बागानों के लिए मज़दूरों की भर्ती प्रक्रिया अत्यंत क्रूर और अन्यायपूर्ण थी, जहाँ ठेकेदार अनपढ़ ग्रामीणों को झूठ बोलकर और बल प्रयोग करके फँसाते थे। एक बार बागान पहुँचने के बाद, इन मज़दूरों को भागने की अनुमति नहीं थी और वे दमनकारी कानूनों के जाल में फँस जाते थे। यह व्यवस्था स्वैच्छिक श्रम के बजाय एक प्रकार की बंधुआ मज़दूरी थी, जो औपनिवेशिक शोषण का चरमोत्कर्ष थी।

129. (B) केवल 1, 2, 3 और 4
उपनिवेशवाद ने भारतीय समाज की आधारभूत संरचना को बदलते हुए औद्योगीकरण और नगरीकरण की नींव रखी। यांत्रिक उत्पादन और शहरों में जनसंख्या का बढ़ता संकेन्द्रण इसके प्रमुख परिणाम थे। हालाँकि, ये परिवर्तन केवल औपनिवेशिक काल तक सीमित नहीं रहे, बल्कि स्वतंत्रता के बाद भी विकास की विभिन्न योजनाओं के माध्यम से निरंतर जारी रहे। यह प्रक्रिया भारतीय समाज के आधुनिक रुपांतरण की एक लंबी और सतत कहानी है।

130. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
ब्रितानी उपनिवेशवाद पिछले साम्राज्यों से भिन्न था क्योंकि इसने भारतीय समाज के आर्थिक आधार में बड़े पैमाने पर हस्तक्षेप किया। अंग्रेजों ने अपने लाभ के लिए भूमि व्यवस्था और उत्पादन के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया, जो पूर्व के शासकों ने प्रायः नहीं किया था। अतः, यह कहना गलत है कि उन्होंने व्यवस्था को अक्षुण्ण रखा; वास्तव में, उन्होंने इसे पूरी तरह से पूँजीवादी सांचे में ढाल दिया।

131. (C) पारंपरिक ज़मींदार
औपनिवेशिक काल में नए मध्यम वर्ग का उदय आधुनिक शिक्षा और व्यावसायिक सेवाओं के माध्यम से हुआ, जिसमें डॉक्टर, वकील और शिक्षक शामिल थे। पारंपरिक ज़मींदार एक पुराना और भू-संपत्ति पर आधारित वर्ग था, जो इस नए उभरते हुए पेशेवर वर्ग का हिस्सा नहीं था। यह नया वर्ग शहरों में रहता था और आधुनिक मूल्यों से प्रभावित था, जो इसे पुराने सामंती वर्गों से अलग बनाता था।

132. (D) बंबई, कलकत्ता, मद्रास
बंबई, कलकत्ता और मद्रास औपनिवेशिक भारत के तीन सबसे महत्वपूर्ण समुद्र तटीय नगर थे जिन्हें प्रेसीडेंसी शहरों के रूप में विकसित किया गया था। ये नगर ब्रिटिश प्रशासन, सेना और वैश्विक व्यापार के मुख्य स्तंभ थे। इनकी रणनीतिक स्थिति ने इन्हें अंतरराष्ट्रीय जलमार्गों से सीधे जोड़ दिया, जिससे भारत का धन और संसाधन सुगमता से ब्रिटेन भेजे जा सके, जो औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था का आधार था।

133. (C) ग्रामीण क्षेत्रों की वृद्धि दर में गिरावट और नगरीय वृद्धि दर का समान बना रहना।
2011 की जनगणना में नगरीय जनसंख्या में अधिक वृद्धि का कारण यह नहीं था कि शहरों में जन्म दर बहुत बढ़ गई, बल्कि ग्रामीण आबादी के बढ़ने की रफ़्तार काफी धीमी हो गई थी। इसके साथ ही नगरीय क्षेत्रों की वृद्धि दर लगभग स्थिर बनी रही, जिससे तुलनात्मक रूप से शहरों की जनसंख्या में निरपेक्ष वृद्धि अधिक दिखाई दी। यह शहरीकरण के बदलते जनसांख्यिकीय स्वरुप को स्पष्ट करता है।

134. (B) P-3, Q-2, R-4, S-1
भारतीय जनगणना के इतिहास में 1911 में ग्रामीण उद्योगों के ह्रास का उल्लेख मिलता है, जबकि 1951 में नगरीय जनसंख्या 62.44 मिलियन थी। 2001 के आंकड़ों में दशकीय वृद्धि दर की प्रवृत्तियाँ स्पष्ट हुई और 2011 में नगरीय आबादी बढ़कर 377.10 मिलियन तक पहुँच गई। ये क्रमिक आँकड़े देश की बढ़ती हुई शहरी आबादी और पारंपरिक ग्रामीण अर्थव्यवस्था के ढहने की ऐतिहासिक गवाही देते हैं, जो महत्वपूर्ण है।

135. (D) यूरोपीय लोगों के मिलने-जुलने और मनोरंजन का स्थान।
औपनिवेशिक नगरों में 'क्लब' यूरोपीय निवासियों के लिए एक विशेष सामाजिक केंद्र थे जहाँ वे स्थानीय आबादी से अलग होकर मनोरंजन करते थे। ये क्लब शासक वर्ग की विशिष्टता और नस्लीय अलगाव का प्रतीक थे, जहाँ भारतीयों का प्रवेश प्रायः प्रतिबंधित था। इन स्थानों ने औपनिवेशिक अधिकारियों के बीच एक सांस्कृतिक एकजुटता बनाए रखने और उनके सामाजिक प्रभुत्व को सुदृढ़ करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

136. (A) भारत में संसदीय प्रणाली का ब्रिटिश संसदीय लोकतांत्रिक प्रणाली के पूर्णतः समान होना।
उपनिवेशवाद का विरोधाभासी स्वरुप तब दिखता है जब आधुनिक विचार तो दिए जाते हैं लेकिन स्वतंत्रता छीन ली जाती है, या अंग्रेज़ी शिक्षा अवसर देती है परंतु एक नया सामाजिक विभाजन पैदा करती है। संसदीय प्रणाली का समान होना एक संरचनात्मक विरासत है, विरोधाभास नहीं। वास्तविक विरोधाभास तो उस दोहरे मापदंड में था जहाँ ब्रिटेन खुद को लोकतांत्रिक कहता था लेकिन भारत पर तानाशाही से शासन करता था।

137. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
औपनिवेशिक नगरीकरण की प्रक्रिया में सूरत जैसे पुराने केंद्रों का पतन और बंबई जैसे नए नगरों का उदय एक साथ हुआ। यह बदलाव वि-औद्योगीकरण का परिणाम था क्योंकि राजसभाओं के विघटन से हस्तशिल्प कारीगर बेरोज़गार हो गए। इन सभी घटनाओं ने मिलकर भारत की शहरी संरचना को ब्रिटिश आर्थिक और व्यापारिक हितों के अनुरूप पुनर्गठित किया, जिससे पारंपरिक भारतीय शहरी जीवन को गहरा आघात पहुँचा।

138. (A) यह समझने के लिए कि औपनिवेशिक प्रवृत्तियाँ कैसे जारी रहीं या बदलीं।
स्वतंत्र भारत में औद्योगीकरण और नगरीकरण का अध्ययन करना इसलिए ज़रूरी है ताकि हम देख सकें कि औपनिवेशिक काल की कौन सी नीतियाँ आज भी प्रभावी हैं। इससे हमें यह भी पता चलता है कि स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में हमने विकास की दिशा में क्या नए परिवर्तन किए हैं। यह विश्लेषण हमारे वर्तमान आर्थिक और सामाजिक ढाँचे की गहराई को समझने और भविष्य की योजना बनाने के लिए अपरिहार्य है।

139. (D) बोकारो, भिलाई, राउरकेला
बोकारो, भिलाई और राउरकेला स्वतंत्र भारत के आधुनिक औद्योगिक नगरों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिन्हें नियोजित औद्योगिक विकास के तहत स्थापित किया गया था। ये औपनिवेशिक बंदरगाहों या पुराने पारंपरिक व्यापारिक शहरों से बिल्कुल अलग हैं। इनका उदय देश की आत्मनिर्भरता और भारी उद्योगों के प्रति प्रतिबद्धता का प्रतीक है, जो औपनिवेशिक काल के व्यापारिक नगरों की तुलना में एक नई आर्थिक सोच को दर्शाता है।

140. (B) नगरीय जनसंख्या के प्रतिशत और निरपेक्ष संख्या दोनों में स्थिर वृद्धि।
1951 से 2011 तक के सांख्यिकीय आँकड़े भारत में नगरीकरण की एक स्पष्ट और स्थिर प्रवृत्ति दिखाते हैं, जहाँ शहरों की आबादी और उनके प्रतिशत दोनों में निरंतर वृद्धि हुई है। यह दर्शाता है कि आधुनिक भारत तेज़ी से शहरीकरण की दिशा में बढ़ रहा है। विकास के विभिन्न चरणों के बावजूद, यह प्रक्रिया रुकी नहीं है, बल्कि देश के आर्थिक और सामाजिक ढांचे को लगातार रूपांतरित कर रही है।

141. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आज भी बाज़ार में मौजूद कई कंपनियों के नाम औपनिवेशिक काल से जुड़े हुए हैं, जो यह सिद्ध करते हैं कि ब्रिटिश शासन की जड़ें हमारे वर्तमान आर्थिक जीवन में गहरी हैं। ये नाम केवल व्यापारिक पहचान नहीं, बल्कि उस ऐतिहासिक जटिलता के अवशेष हैं जिसे हम आज भी ढो रहे हैं। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि उपनिवेशवाद का प्रभाव केवल इतिहास की किताबों तक सीमित नहीं है।

142. (D) नए सामाजिक समूहों और नए सामाजिक संबंधों का क्रमिक उद्भव एवं उनका सतत विकास।
समाजशास्त्र के अनुसार, औद्योगीकरण केवल मशीनीकरण नहीं है, बल्कि यह समाज के भीतर नए वर्गों और मानवीय संबंधों के निर्माण की एक व्यापक प्रक्रिया है। यह पुराने सामंती संबंधों को तोड़कर नए व्यावसायिक और सामाजिक संबंधों को जन्म देता है। इससे लोगों की सामूहिक पहचान और समाज में उनकी भूमिकाएँ पूरी तरह बदल जाती हैं, जो एक नवीन और आधुनिक सामाजिक संरचना के निर्माण की ओर ले जाती हैं।

143. (B) केवल 1, 2 और 3
आधुनिक भारत की संस्थागत और वैचारिक जड़ों को समझने के लिए औपनिवेशिक अनुभव अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। ब्रिटिश शासन ने जहाँ आधुनिक शिक्षा और कानून दिए, वहीं उनके प्रभाव अत्यंत विरोधाभासी और शोषणकारी भी थे। यह कहना कि इसका कोई दीर्घकालिक प्रभाव नहीं पड़ा, ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः गलत होगा, क्योंकि आज का अधिकांश प्रशासनिक और सामाजिक ढाँचा इसी औपनिवेशिक पृष्ठभूमि से ही विकसित और प्रभावित होकर बना है।

144. (B) लगभग 2843 से बढ़कर 7935 हो गई।
भारत में नगरीकरण की रफ़्तार का अंदाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि 1951 में जहाँ केवल 2843 कस्बे थे, वहीं 2011 तक उनकी संख्या बढ़कर 7935 हो गई। यह अभूतपूर्व वृद्धि दर्शाती है कि भारत के गाँव और छोटे इलाके तेज़ी से शहरी केंद्रों में बदल रहे हैं। नगरीय संकुलों की यह बढ़ती संख्या देश की बढ़ती जनसंख्या और बदलती आर्थिक प्राथमिकताओं का स्पष्ट परिणाम है।

145. (B) एक विरोधाभासी प्रक्रिया जिसके कारण कुछ क्षेत्रों का विकास और कुछ का पतन हुआ।
औपनिवेशिक औद्योगीकरण एक अत्यंत जटिल और विरोधाभासी प्रक्रिया थी। जहाँ एक ओर बंबई और कलकत्ता जैसे आधुनिक शहरों का विकास हुआ, वहीं दूसरी ओर देश के पारंपरिक हस्तशिल्प केंद्रों और कारीगरों का भारी पतन हुआ। इस व्यवस्था ने भारत के संसाधनों का उपयोग ब्रिटेन की समृद्धि के लिए किया, जिससे देश के कुछ हिस्सों में आधुनिकता आई, परंतु अधिकांश क्षेत्र आर्थिक रूप से कमज़ोर और पिछड़ गए।

146. (C) P-2, Q-1, R-4, S-3
औपनिवेशिक काल वि-औद्योगीकरण का साक्षी रहा, जबकि स्वतंत्रता के बाद भारी उद्योगों और सार्वजनिक क्षेत्र का युग आया। 1990 के बाद भूमंडलीकरण ने आर्थिक परिदृश्य को बदला और वर्तमान 21वीं सदी में 'स्मार्ट सिटी' जैसी योजनाएँ तीव्र नगरीकरण की नई दिशा तय कर रही हैं। यह मिलान भारत के विभिन्न कालखंडों में आर्थिक विकास और शहरीकरण की बदलती रणनीतियों और उनके सामाजिक प्रभावों को स्पष्ट करता है।

147. (C) यह मानवीय इतिहास में हमेशा से अस्तित्व में रहा है और एक चिरंतन वैश्विक व्यवस्था है।
राष्ट्र-राज्य एक आधुनिक राजनीतिक अवधारणा है जो मानवीय इतिहास के हर दौर में मौजूद नहीं रही है। प्राचीन काल में समाज साम्राज्यों या छोटे कबीलों में बँटा हुआ था, जहाँ नागरिकता और संप्रभुता के वर्तमान नियम लागू नहीं थे। राष्ट्र-राज्य का उदय एक विशिष्ट ऐतिहासिक और राजनीतिक विकास का परिणाम है, जिसने दुनिया को निश्चित सीमाओं और संप्रभु सरकारों वाले देशों में व्यवस्थित तरीके से विभाजित किया है।

148. (D) उपरोक्त सभी
भारत का संविधान, चाय पीने की आदत और अंग्रेज़ी भाषा का व्यापक प्रयोग—ये सभी औपनिवेशिक विरासत के महत्वपूर्ण

रहा।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 and 4
(D) केवल 3 and 4

10. जोतिबा फुले ने पुणे में किसके लिए पहला विद्यालय खोला?

(A) महिलाओं के लिए
(B) दलित पुरुषों के लिए
(C) उच्च जाति के बच्चों के लिए
(D) कारीगरों के लिए

11. भारत में समाज सुधार आंदोलनों के संदर्भ में घटनाओं को कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:

1. बंगाल के केशव चंद्र सेन का मद्रास दौरा
2. विष्णु शास्त्री द्वारा विद्यासागर की पुस्तक का मराठी अनुवाद प्रकाशन
3. अंजुमन-ए-ख्वातीन-ए-इस्लाम की स्थापना
4. बंगाल में ब्रह्म समाज की स्थापना

(A) 4, 1, 2, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 2, 1, 4, 3

12. 'तहसिब-ए-निसवान' क्या थी?

(A) बंगाल में स्थापित एक सामाजिक संगठन
(B) पंजाब से निकलने वाली महिलाओं की एक पत्रिका
(C) सर सैयद अहमद खान द्वारा लिखी एक पुस्तक
(D) बहुविवाह का समर्थन करने वाला एक अखबार

13. पश्चिमीकरण का मुख्य अर्थ क्या है?

(A) औपनिवेशिक काल के दौरान भारतीय समाज में केवल प्रौद्योगिकी में आया परिवर्तन
(B) केवल भारतीय शास्त्रीय कला, संगीत और साहित्य के स्वरूप में आया परिवर्तन
(C) ब्रिटिश शासन के परिणामस्वरूप भारतीय समाज और संस्कृति में आए परिवर्तन
(D) भारतीय समाज का पूर्ण रुप से यूरोपीय जीवन पद्धति में रुपांतरण

14. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।

1. संस्कृतीकरण की प्रक्रिया में कोई संरचनात्मक परिवर्तन नहीं होता।
2. यह केवल कुछ व्यक्तियों का स्थिति परिवर्तन है।
3. यह समाज में व्याप्त असमानता को समाप्त कर देती है।
4. इस प्रक्रिया को अपनाने से महिलाओं की स्थिति में सदैव सुधार होता है।
5. यह दलित संस्कृति के पक्षों को पिछड़ापन मान लेती है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

(A) केवल 1, 2 और 5
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) सभी कथन सही हैं।

15. किस समाज सुधारक ने विधवा-विवाह के समर्थन में 'द टेक्स्ट ऑफ द हिंदू लॉ' का संदर्भ दिया?

(A) रानाडे
(B) राजा राममोहन राय
(C) जोतिबा फुले
(D) सर सैयद अहमद खान

16. 'आधुनिकता' की अवधारणा में निम्नलिखित में से कौन सा तत्व शामिल नहीं है?

(A) सार्वभौमिक प्रतिबद्धता और विश्वजनीन दृष्टिकोण
(B) भावुकता और धार्मिक पवित्रता को महत्व
(C) व्यक्ति को प्राथमिकता देना, न कि समूह को
(D) पहचान को चुनकर अर्जित करना, न कि जन्म के आधार पर

17. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची I: (सुधारक/संस्था)

P. राजा राममोहन राय
Q. जोतिबा फुले
R. ब्रह्म समाज
S. आर्य समाज

सूची II: (कार्य/स्थान)

1. पंजाब
2. बंगाल
3. सती प्रथा का विरोध
4. महिला शिक्षा

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-2, S-1
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

18. औपनिवेशिक भारत में आधुनिक परिवर्तनों की रुपरेखा में किन तीन पहलुओं की विवेचना की गई है?

(A) संचार, संगठनों के स्वरुप और विचारों की प्रकृति
(B) राजनीति, अर्थशास्त्र और धर्म
(C) शिक्षा प्रणाली, जन स्वास्थ्य और शहरीकरण की प्रक्रिया
(D) समाज में व्याप्त जाति, वर्ग और लिंग

19. 'विसंस्कृतीकरण' की संज्ञा किस प्रक्रिया को दी गई है?

(A) जब निम्न जातियाँ उच्च जातियों का अनुकरण करती हैं।
(B) जब भारतीय पश्चिमी संस्कृति को अपनाते हैं।
(C) जब प्रभुत्वशाली गैर-संस्कृतीकरण जातियाँ संस्कृति को प्रभावित करती हैं।
(D) जब उच्च जातियाँ अपनी परंपराओं को छोड़ देती हैं।

20. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।

जनसंख्या का दबाव बहुत अधिक बढ़ गया, जिससे अंततः ग्रामीण निर्धनता और ऋणग्रस्तता में वृद्धि हुई।

159. (C) जीवंत पूर्व-औपनिवेशिक उत्पादन केंद्रों के रूप में जो बाद में पतनोन्मुख हो गए।
ढाका, मुर्शिदाबाद और सूरत जैसे शहरों का उल्लेख उन ऐतिहासिक औद्योगिक और व्यापारिक केंद्रों को दर्शाने के लिए किया गया है जो ब्रिटिश शासन से पहले अत्यंत समृद्ध थे। ये शहर भारतीय वस्त्र और हस्तशिल्प के वैश्विक केंद्र थे। हालांकि, ब्रिटिश औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों और वि-औद्योगीकरण की प्रक्रिया के कारण इन समृद्ध शहरों का पतन हो गया और इनकी अर्थव्यवस्था पूरी तरह से चरमरा गई।

160. (A) भारत एक औद्योगिक राष्ट्र से एक कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था में बदल गया।
वि-औद्योगीकरण का सबसे महत्वपूर्ण संरचनात्मक परिणाम यह हुआ कि भारत की पहचान एक विनिर्माण केंद्र से बदलकर एक कृषि प्रधान देश की हो गई। हस्तशिल्प और उद्योगों के विनाश ने लोगों को शहरों से गांवों की ओर पलायन करने पर मजबूर किया। इस प्रक्रिया ने भारतीय अर्थव्यवस्था को ब्रिटेन के लिए कच्चे माल की आपूर्ति करने वाली एक पिछड़ी और पूरी तरह कृषि-निर्भर अर्थव्यवस्था बना दिया।

161. (D) कच्चे माल के निर्यात और तैयार माल के आयात के लिए प्रवेश द्वार के रूप में कार्य करना।
कलकत्ता, बंबई और मद्रास जैसे प्रमुख बंदरगाह शहरों का विकास मुख्य रूप से ब्रिटिश व्यापारिक हितों की रक्षा के लिए किया गया था। ये शहर भारत के आंतरिक संसाधनों को वैश्विक बाजार से जोड़ने वाले केंद्रों के रूप में कार्य करते थे। यहां से भारतीय कच्चे माल को ब्रिटेन भेजा जाता था और वहां के कारखानों में बने तैयार माल को पूरे भारत में वितरित किया जाता था।

162. (B) नस्लीय अलगाव and शक्ति असमानता पर आधारित औपनिवेशिक मानसिकता।
शहरों का 'व्हाइट टाउन' और 'ब्लैक टाउन' में विभाजन औपनिवेशिक शासन की नस्लभेदी नीतियों का स्पष्ट प्रमाण था। व्हाइट टाउन में शासक वर्ग के लिए आधुनिक सुविधाएं और नियोजित आवास थे, जबकि ब्लैक टाउन में भारतीय आबादी को अव्यवस्थित और भीड़भाड़ वाली परिस्थितियों में रहना पड़ता था। यह स्थानिक विभाजन ब्रिटिश अधिकारियों की श्रेष्ठता की भावना और शक्ति के असमान वितरण को प्रदर्शित करता था।

163. (C) पश्चिमी शिक्षित भारतीय मध्य वर्ग।
औपनिवेशिक शहरों के उदय और प्रशासनिक ढांचे की आवश्यकताओं ने भारत में एक नए मध्य वर्ग को जन्म दिया। इस वर्ग में डॉक्टर, वकील, शिक्षक और क्लर्क शामिल थे जिन्होंने पश्चिमी शिक्षा प्राप्त की थी। हालांकि शुरुआत में इन्होंने ब्रिटिश शासन की सहायता की, लेकिन बाद में यही वर्ग लोकतांत्रिक मूल्यों और राष्ट्रवादी चेतना से प्रेरित होकर औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ स्वतंत्रता आंदोलन का मुख्य सूत्रधार बना।

164. (D) इसने नस्लीय और सामाजिक पदानुक्रम पर आधारित नए शहरी स्थान बनाए।
औपनिवेशिक शहरीकरण ने भारतीय शहरों की बनावट में गहरा नस्लीय और सामाजिक भेदभाव पैदा किया। शहरों को नियोजित करते समय शासकों और शासितों के बीच की दूरी को भौगोलिक रूप से स्पष्ट किया गया। आधुनिक बुनियादी ढांचा मुख्य रूप से यूरोपीय क्षेत्रों तक सीमित रखा गया, जबकि भारतीय क्षेत्रों की उपेक्षा की गई। यह पूरी प्रक्रिया औपनिवेशिक विचारधारा के तहत सामाजिक और नस्लीय पदानुक्रम को मजबूत करने वाली थी।

165. (A) औपनिवेशिक प्रशासन, वाणिज्य और शक्ति संबंधों को सुदृढ़ करने के लिए।
औपनिवेशिक शहरों की बनावट और स्थानिक संरचना को इस प्रकार डिजाइन किया गया था कि वे ब्रिटिश शासन की सैन्य और प्रशासनिक पकड़ को मजबूत कर सकें। चौड़ी सड़कें, छावनियां और विशाल बंगले केवल विलासिता के प्रतीक नहीं थे, बल्कि वे नियंत्रण और निगरानी के साधन भी थे। इन शहरों ने साम्राज्य के व्यापारिक हितों को सुरक्षित करने और औपनिवेशिक शक्ति का प्रदर्शन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

166. (B) राज्य के लिए एक निश्चित और अधिकतम राजस्व सुनिश्चित करना।
अंग्रेजों द्वारा लागू की गई नई भू-राजस्व प्रणालियों का प्राथमिक लक्ष्य कंपनी की वित्तीय स्थिति को मजबूत करना था। इन प्रणालियों के माध्यम से ब्रिटिश सरकार हर परिस्थिति में किसानों से अधिकतम कर वसूलना चाहती थी। राजस्व की राशि पहले से ही बहुत अधिक तय की गई थी और इसे चुकाने में किसी भी प्रकार की रियायत नहीं दी जाती थी, जिससे सरकारी आय स्थिर रहे।

167. (B) किसानों को ऋण के लिए साहूकारों पर निर्भर होना पड़ा और अक्सर भूमि से बेदखल होना पड़ा।
भूमि को व्यापारिक वस्तु बनाने से किसानों के लिए भूमि का मालिकाना हक असुरक्षित हो गया। जब किसान अत्यधिक राजस्व की मांग पूरी नहीं कर पाते थे, तो उन्हें अपनी जमीन बचाने के लिए साहूकारों से कर्ज लेना पड़ता था। कर्ज न चुका पाने की स्थिति में उनकी भूमि को कुर्क कर लिया जाता था, जिसके कारण किसानों की बेदखली बढ़ी और ग्रामीण क्षेत्रों में भूमिहीनता की समस्या विकराल हो गई।

168. (A) किसानों को नकदी फसलें उगाने के लिए मजबूर किया गया, जिससे खाद्य सुरक्षा कम हुई और अकाल बढ़े।
कृषि के वाणिज्यीकरण ने किसानों को ऐसी फसलें उगाने पर मजबूर किया जिनकी जरुरत ब्रिटिश उद्योगों को थी, जैसे नील और कपास। इसके परिणामस्वरूप पारंपरिक अनाज फसलों के उत्पादन में गिरावट आई, जिससे स्थानीय खाद्य भंडार कम हो गए। खाद्य सुरक्षा के इस अभाव ने सामान्य संकट के समय भी स्थितियों को गंभीर बना दिया, जिससे ग्रामीण भारत में बार-बार और भयानक अकाल पड़ने लगे।

169. (C) राजस्व को नकदी में और समय पर चुकाने की मजबूरी ने किसानों को ऋण लेने के लिए विवश किया।
नई राजस्व व्यवस्था के तहत किसानों को कर का भुगतान अनिवार्य रूप से नकदी में और एक निश्चित समय सीमा के भीतर करना होता था। फसल खराब होने या बाजार में दाम गिरने पर भी राजस्व में कोई कमी नहीं की जाती थी। इस दबाव के कारण किसानों के पास साहूकारों से अत्यधिक ब्याज पर कर्ज लेने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता था, जिससे वे कर्ज के जाल में फंस गए।

170. (D) अंग्रेजों द्वारा लागू की गई भू-राजस्व प्रणालियों के।
स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी और महालवाड़ी अंग्रेजों द्वारा भारत के विभिन्न हिस्सों में अपनाई गई विशिष्ट भू-राजस्व प्रणालियां थीं। इन प्रणालियों ने भूमि स्वामित्व के पारंपरिक ढांचे को बदलकर कर वसूली के नए तरीके विकसित किए। हालांकि इनके स्वरूप अलग थे, लेकिन इनका साझा उद्देश्य अधिकतम राजस्व एकत्रित करना था, जिसका भारतीय ग्रामीण समाज और कृषि अर्थव्यवस्था पर बहुत ही प्रतिकूल और शोषक प्रभाव पड़ा।

171. (C) औपनिवेशिक प्रशासन के लिए भारतीय क्लर्क और सहायक तैयार करना।
भारत में पश्चिमी शिक्षा को लागू करने के पीछे अंग्रेजों का प्राथमिक उद्देश्य प्रशासनिक लागत को कम करना था। वे चाहते थे कि भारतीयों का एक ऐसा शिक्षित वर्ग तैयार हो जो साम्राज्य के निचले स्तरों पर लिपिकीय और सहायक कार्यों को कुशलतापूर्वक संभाल सके। यह प्रणाली मुख्य रूप से ब्रिटिश शासन की नौकरशाही जरूरतों को पूरा करने और शासन को सुचारु रूप से चलाने के लिए डिजाइन की गई थी।

172. (B) क्योंकि इसका उद्देश्य सहयोगी बनाना था, लेकिन इसने राष्ट्रवादी आलोचकों को जन्म दिया।
पश्चिमी शिक्षा को विरोधाभासी इसलिए माना जाता है क्योंकि ब्रिटिश सरकार ने इसे वफादार कर्मचारी बनाने के लिए शुरू किया था, लेकिन इसके परिणाम विपरीत रहे। इस शिक्षा ने भारतीयों को स्वतंत्रता, समानता और लोकतंत्र जैसे आधुनिक विचारों से परिचित कराया। फलस्वरूप, शिक्षित भारतीयों ने इन्हीं उदारवादी सिद्धांतों का उपयोग करते हुए औपनिवेशिक शासन की आलोचना शुरू कर दी और देश में राष्ट्रवादी आंदोलन की मजबूत नींव रखी।

173. (D) इसने भारतीयों को उदारवाद, लोकतंत्र और राष्ट्रवाद जैसे पश्चिमी विचारों से अवगत कराया।
पश्चिमी शिक्षा ने भारतीय बुद्धिजीवियों को विश्व की महान क्रांतियों और राजनीतिक विचारधाराओं के अध्ययन का अवसर प्रदान किया। इसके माध्यम से भारतीयों ने आत्म-निर्णय के अधिकार और नागरिक स्वतंत्रता के महत्व को समझा। इन वैश्विक विचारों ने उन्हें अपनी गुलामी के प्रति जागरूक किया और संगठित होकर ब्रिटिश शासन के अन्याय के विरुद्ध संघर्ष करने और एक स्वतंत्र राष्ट्र की कल्पना करने की प्रेरणा दी।

174. (A) एक ऐसा वर्ग जो बाहरी रूप से भारतीय हो, लेकिन जिसकी सोच और मूल्य पूरी तरह से पश्चिमीकृत हों।
इस वाक्यांश का प्रयोग एक ऐसे भारतीय वर्ग के निर्माण के संदर्भ में किया गया था जो सांस्कृतिक और मानसिक रूप से अंग्रेजों का समर्थक हो। औपनिवेशिक शासन का मानना था कि पश्चिमी शिक्षा भारतीयों की सोच और जीवनशैली को बदलकर उन्हें ब्रिटिश मूल्यों के प्रति वफादार बना देगी। इससे अंग्रेजों को भारत पर शासन करने के लिए एक ऐसा मध्यस्थ वर्ग मिल जाता जो उनकी विचारधारा का प्रतिनिधित्व करता।

175. (C) औपनिवेशिक नीतियों के प्रायः ऐसे अनपेक्षित परिणाम होते थे जो उनके मूल प्रशासनिक उद्देश्यों के विपरीत गए।
गद्यांश से यह स्पष्ट होता है कि औपनिवेशिक नीतियां हमेशा वांछित परिणाम नहीं देती थीं। शिक्षा नीति का मूल उद्देश्य प्रशासनिक सहयोगी तैयार करना था, लेकिन इसने अनजाने में ब्रिटिश शासन के प्रबल विरोधियों को जन्म दिया। यह दिखाता है कि कैसे औपनिवेशिक हस्तक्षेपों ने ऐसी सामाजिक और राजनीतिक शक्तियों को सक्रिय कर दिया जिन्होंने अंततः भारत में साम्राज्य की जड़ों को कमजोर करने और उसे समाप्त करने का काम किया।

अध्याय 09
सांस्कृतिक परिवर्तन

1. उन्नीसवीं सदी के समाज सुधार आंदोलन किन चुनौतियों के जवाब थे?
(A) पारंपरिक भारतीय समाज द्वारा प्रस्तुत
(B) औपनिवेशिक भारत द्वारा महसूस की गई
(C) प्रथम विश्व युद्ध के बाद उत्पन्न
(D) केवल धार्मिक रुढ़िवाद द्वारा प्रस्तुत

2. 'संस्कृतीकरण' की प्रक्रिया का मुख्य अभिप्राय क्या है?
(A) निम्न जातियों द्वारा उच्च जातियों की जीवन पद्धति को अपनाना
(B) समाज में पश्चिमी जीवन शैली एवं आधुनिक मूल्यों का सक्रिय अनुकरण करना
(C) पुरानी मान्यताओं एवं सभी धार्मिक अनुष्ठानों का पूर्ण रुप से त्याग करना
(D) व्यक्ति की केवल आर्थिक स्थिति एवं व्यावसायिक सुधार पर ध्यान केंद्रित करना

3. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. संस्कृतीकरण
Q. पश्चिमीकरण
R. आधुनिकीकरण
S. पंथनिरपेक्षीकरण
सूची II: (विशेषता)
1. प्रौद्योगिकी और उत्पादन प्रक्रियाओं में सुधार
2. धर्म के प्रभाव में कमी की प्रक्रिया
3. निम्न जातियों द्वारा उच्च जातियों का अनुकरण
4. ब्रिटिश शासन के परिणामस्वरुप आए परिवर्तन
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

4. पुस्तक 'द सोर्स ऑफ़ नॉलेज' में किन तर्कों को देखा जा सकता है?
(A) पाश्चात्य दर्शन के तर्क
(B) सूफी परंपरा के तर्क
(C) भक्ति आंदोलन के तर्क
(D) नव्य-न्याय के तर्क

5. निम्नलिखित में से कौन सा कथन संस्कृतीकरण की प्रक्रिया के बारे में सही है?
(A) यह प्रक्रिया मुख्यतः केवल हिंदू समाज के बाहरी क्षेत्रों में ही देखी जाती है
(B) इस प्रक्रिया के द्वारा समाज में व्यापक संरचनात्मक परिवर्तन संभव होता है
(C) इसके प्रभाव भाषा, साहित्य, संगीत और जीवन पद्धति में देखे जा सकते हैं
(D) यह प्रक्रिया सदैव आर्थिक स्थिति में भारी गिरावट होने के बाद ही होती है

6. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): उन्नीसवीं सदी में हुए समाज सुधारक आधुनिक संदर्भ एवं मिश्रित विचारों से संबद्ध थे।
कारण (R): यह प्रयास पश्चिमी उदारवाद के आधुनिक विचार एवं प्राचीन साहित्य के प्रतीक नयी दृष्टि के मिले-जुले रुप में उत्पन्न हुए।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

7. "अंजुमन-ए-ख्वातीन-ए-इस्लाम" की स्थापना किस वर्ष हुई और यह किस समूह का प्रतिनिधित्व करती थी?
(A) 1914, मुस्लिम पुरुषों की राष्ट्र स्तरीय संस्था
(B) 1885, हिंदू महिलाओं की राष्ट्र स्तरीय संस्था
(C) 1885, पारसी समुदाय की संस्था
(D) 1914, मुस्लिम महिलाओं की राष्ट्र स्तरीय संस्था

8. निम्नलिखित में से कौन सा एक संस्कृतीकरण की आलोचना का बिंदु नहीं है?
(A) यह दलित संस्कृति के मूलभूत पक्षों को महत्त्व देती है।
(B) यह उर्ध्वगामी परिवर्तन को बढ़ा-चढ़ाकर बताती है।
(C) यह उच्च जाति की जीवनशैली को वांछनीय मानती है।
(D) यह असमानता और अपवर्जन पर आधारित प्रारुप को सही ठहराती है।

9. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
1. संचार माध्यमों ने नवीन विचारों को तीव्र गति प्रदान की।
2. प्रिंटिंग प्रेस, टेलीग्राफ़ और रेल ने विचारों के आदान-प्रदान को सुगम बनाया।
3. समाज सुधारकों ने जन-संचार के माध्यमों का उपयोग नहीं किया।
4. विचारों का विनिमय केवल एक ही क्षेत्र तक सीमित

अंग हैं। ये हमारे देश की संरचना और संस्कृति में इस कदर रच-बस गए हैं कि इन्हें अलग करना कठिन है। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि ब्रिटिश शासन ने न केवल हमारी शासन व्यवस्था को प्रभावित किया, बल्कि हमारे व्यक्तिगत खान-पान और संवाद के तरीकों को भी हमेशा के लिए बदल दिया।

149. (A) केवल 1, 2 और 4
औपनिवेशिक औद्योगीकरण ब्रिटिश पूँजीवाद के लाभ के लिए था, जबकि स्वतंत्र भारत में इसका लक्ष्य जन कल्याण और सामाजिक न्याय बना। दोनों समय में नगरीकरण के पीछे अलग-अलग प्रेरणाएँ थीं—उपनिवेश काल में ब्रिटिश हित और स्वतंत्रता के बाद राष्ट्र निर्माण। अतः दोनों कालों के उद्देश्य और प्रक्रियाएँ समान नहीं थीं, बल्कि वे एक-दूसरे से काफी अलग और अपने-अपने युग की आवश्यकताओं के अनुसार निर्देशित थीं।

150. (B) ये प्रक्रियाएँ आपस में गहराई से जुड़ी हुई हैं और हमारे वर्तमान जीवन को आकार देती हैं।
उपनिवेशवाद, औद्योगीकरण और नगरीकरण का अध्ययन यह सिद्ध करता है कि ये प्रक्रियाएँ परस्पर संबंधित हैं और इन्होंने मिलकर आधुनिक भारतीय समाज का निर्माण किया है। हमारे आज के शहर, व्यवसाय और सामाजिक संबंध इसी ऐतिहासिक विकास की उपज हैं। इन कड़ियों को समझकर ही हम समकालीन भारत की चुनौतियों और इसकी सामाजिक संरचना की जटिलता को बेहतर तरीके से जान सकते हैं, जो भविष्य के लिए अनिवार्य है।

151. (B) यह औद्योगिक पूंजीवाद की जरूरतों से प्रेरित था और इसने उत्पादन प्रणालियों में हस्तक्षेप किया।
ब्रिटिश उपनिवेशवाद पूर्व-पूंजीवादी साम्राज्यों से मौलिक रूप से भिन्न था क्योंकि यह औद्योगिक पूंजीवाद की आवश्यकताओं पर आधारित था। जहां पुराने साम्राज्य केवल राजस्व प्राप्ति तक सीमित थे और उत्पादन के तरीकों में बदलाव नहीं करते थे, वहीं अंग्रेजों ने भारतीय अर्थव्यवस्था को कच्चे माल के स्रोत और ब्रिटिश निर्मित वस्तुओं के बाजार के रूप में पुनर्गठित किया, जिससे उत्पादन प्रणालियों में गहरा हस्तक्षेप हुआ।

152. (A) भारत को ब्रिटिश उद्योगों के लिए कच्चे माल के स्रोत और तैयार माल के बाजार में बदलना।
भारत में ब्रिटिश शासन का मुख्य आर्थिक लक्ष्य देश की अर्थव्यवस्था को औपनिवेशिक हितों के अनुरूप ढालना था। इसके तहत भारत को ब्रिटिश कारखानों के लिए सस्ते कच्चे माल की आपूर्ति करने वाले क्षेत्र और वहां से आने वाले तैयार माल के लिए एक बड़े उपभोक्ता बाजार के रूप में विकसित किया गया। इस रणनीति ने भारतीय आत्मनिर्भरता को पूरी तरह से समाप्त कर दिया।

153. (C) किसानों को ब्रिटिश उद्योगों की आवश्यकता वाली नकदी फसलों, जैसे नील और कपास, की खेती के लिए बाध्य करना।
कृषि के वाणिज्यीकरण का तात्पर्य पारंपरिक खाद्य फसलों के स्थान पर बाजार आधारित नकदी फसलों के उत्पादन से था। ब्रिटिश शासन ने किसानों को नील और कपास जैसी फसलें उगाने के लिए मजबूर किया क्योंकि इनकी मांग ब्रिटेन के कारखानों में अधिक थी। इस प्रक्रिया ने किसानों की आर्थिक स्वतंत्रता छीन ली और उन्हें वैश्विक बाजार की अनिश्चितताओं और औपनिवेशिक शोषण के अधीन कर दिया।

154. (D) भारतीय अर्थव्यवस्था विश्व पूंजीवादी व्यवस्था का एक अधीनस्थ अंग बन गई।
ब्रिटिश नीतियों ने भारतीय अर्थव्यवस्था की बुनियादी संरचना को बदलकर उसे वैश्विक पूंजीवाद के एक सहायक हिस्से के रूप में स्थापित कर दिया। भूमि स्वामित्व के नियमों में बदलाव और एकतरफा व्यापार नीतियों के कारण भारतीय अर्थव्यवस्था स्वतंत्र रहने के बजाय ब्रिटिश आर्थिक हितों पर निर्भर हो गई। इस परिवर्तन ने भारतीय समाज के सामाजिक और आर्थिक ताने-बाने को गहराई से प्रभावित और शोषित किया।

155. (C) कि ब्रिटिश शासन की प्रकृति, उद्देश्य और प्रभाव पूर्व-पूंजीवादी साम्राज्यों से मौलिक रूप से अलग थे।
गुणात्मक रूप से भिन्न होने का अर्थ है कि ब्रिटिश शासन केवल पिछले साम्राज्यों का विस्तार नहीं था, बल्कि इसकी मूल प्रकृति और उद्देश्य पूरी तरह अलग थे। पहले के शासकों ने उत्पादन के आधार को नहीं बदला था, जबकि अंग्रेजों ने औद्योगिक क्रांति की जरूरतों के अनुसार भारतीय आर्थिक और सामाजिक संरचनाओं में मूलभूत परिवर्तन किए, जिनका प्रभाव अत्यंत व्यापक और विनाशकारी सिद्ध हुआ।

156. (B) पारंपरिक भारतीय उद्योगों का व्यवस्थित विनाश।
वि-औद्योगीकरण वह प्रक्रिया थी जिसके माध्यम से भारत के प्रसिद्ध पारंपरिक हस्तशिल्प और कपड़ा उद्योगों को औपनिवेशिक नीतियों द्वारा योजनाबद्ध तरीके से नष्ट कर दिया गया। ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के बाद, मशीन-निर्मित सामानों को बढ़ावा देने के लिए भारतीय कारीगरों की उत्पादन क्षमता को कमजोर किया गया। इससे भारत एक प्रमुख निर्यातक देश के स्थान पर केवल कच्चे माल का उत्पादक बनकर रह गया।

157. (D) उन्होंने ब्रिटेन के मशीन-निर्मित माल को भारतीय बाजार में पाट दिया और भारतीय निर्यातों पर भारी शुल्क लगाया।
ब्रिटिश सरकार ने भारतीय वस्त्र उद्योग को आर्थिक रूप से पंगु बनाने के लिए दोहरी व्यापार नीति का उपयोग किया। एक तरफ भारतीय बाजारों में सस्ते ब्रिटिश मशीन-निर्मित कपड़ों को बिना किसी कर के आने दिया गया, वहीं दूसरी तरफ भारतीय हस्तशिल्प के निर्यात पर भारी शुल्क लगा दिए गए। इस असमान प्रतिस्पर्धा के कारण भारतीय बुनकर और कारीगर अपने ही बाजार में पिछड़ गए।

158. (A) वे बेरोजगार हो गए और आजीविका के लिए कृषि पर निर्भर होने को मजबूर हुए।
वि-औद्योगीकरण के कारण लाखों कुशल बुनकर और शिल्पकार बेरोजगार हो गए क्योंकि उनके उत्पादों की मांग कम हो गई थी। रोजगार के अन्य विकल्प न होने के कारण इन कारीगरों को अपनी आजीविका के लिए मजबूरन खेती की ओर लौटना पड़ा। इससे कृषि क्षेत्र और ग्रामीण भूमि पर

अभिकथन (A): पश्चिमीकरण की प्रक्रिया आवश्यक रूप से यह सुनिश्चित नहीं करती कि व्यक्ति प्रजातंत्र और सामाजिक समानता जैसे आधुनिक मूल्यों में भी विश्वास रखे।
कारण (R): पश्चिमीकरण में प्रायः किसी संस्कृति-विशेष के बाह्य तत्त्वों, जैसे उपकरण या पोशाक, के अनुकरण की प्रवृत्ति होती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

21. उन्नीसवीं सदी में महिलाओं की शिक्षा के विषय में सुधारकों के बीच क्या आम सहमति थी?
(A) महिला शिक्षा केवल विशेषाधिकार प्राप्त समूहों तक सीमित होनी चाहिए।
(B) महिलाओं को केवल पारंपरिक ज्ञान ही दिया जाना चाहिए।
(C) समाज के उत्थान के लिए महिलाओं का शिक्षित होना ज़रूरी है।
(D) महिलाओं को शिक्षा की कोई आवश्यकता नहीं है।

22. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'पंथनिरपेक्षीकरण' की प्रक्रिया का सही वर्णन करता है?
(A) समाज में धर्म के प्रभाव में वृद्धि होना
(B) समाज में धर्म के प्रभाव में कमी आना
(C) सभी धर्मों का एकीकरण
(D) नए धार्मिक संप्रदायों का उदय

23. निम्नलिखित में से कौन-सा जोड़ा सही सुमेलित नहीं है?
(A) ब्रह्म समाज - बंगाल
(B) आर्य समाज - पंजाब
(C) अंजुमन-ए-ख्वातीन-ए-इस्लाम - मुस्लिम महिलाएँ
(D) धर्म सभा - सती प्रथा का समर्थन

24. कलाकार राजा रवि वर्मा की चित्रकला शैली के बारे में क्या विशेष था?
(A) इसमें द्विआयामी शैली और तैलीय चित्र तकनीक का मिश्रण था
(B) यह पूरी तरह से प्राचीन भारतीय पारंपरिक शैली पर आधारित थी
(C) यह पूर्ण रूप से यूरोपीय आधुनिक पश्चिमी शैली पर आधारित थी
(D) इसमें मुख्य रूप से केवल जल-मिश्रण वाली विधियों का प्रयोग था

25. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
1. समूह की आर्थिक स्थिति में सुधार
2. समूह की राजनीतिक स्थिति में सुधार
3. हिंदुत्व की महान-परंपराओं के किसी स्रोत से संपर्क
4. पश्चिमी शिक्षा का प्रसार
5. शहरीकरण में वृद्धि

उपरोक्त में से कौन से कारक संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को संभव बनाते हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) केवल 2 और 4

26. किस समाज सुधारक ने आर्यों के आगमन से पूर्व के काल को अच्छा माना?
(A) जोतिबा फुले
(B) पंडिता रमाबाई
(C) दयानंद सरस्वती
(D) श्री नारायण गुरु

27. घटनाओं को उनके घटित होने के क्रम में व्यवस्थित करें:
1. ईसाई मिशनरियों का नागालैंड, मिज़ोरम में पहुँचना
2. बंगाल में धर्म सभा का गठन
3. केशव चंद्र सेन का मद्रास दौरा
4. भारत में रेल का आगमन
(A) 2, 4, 3, 1
(B) 4, 3, 1, 2
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 4, 1, 2, 3

28. 'आधुनिकता' के प्रभाव में सामाजिक तथा राजनीतिक स्तर पर किसे प्राथमिकता दी जाती है?
(A) समूह को
(B) व्यक्ति को
(C) समुदाय को
(D) परिवार को

29. जहाँआरा शाह नवास ने अखिल भारतीय मुस्लिम महिला सम्मेलन में किस कुप्रथा के विरुद्ध प्रस्ताव प्रस्तुत किया?
(A) पर्दा प्रथा
(B) बाल विवाह
(C) बहुविवाह
(D) दहेज प्रथा

30. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (लेखक/कलाकार)
P. कंदुकीरी विरेशलिंगम
Q. विष्णु शास्त्री
R. राजा रवि वर्मा
S. जहाँआरा शाह नवास
सूची II: (कार्य/कृति)
1. इंदु प्रकाश में अनुवाद
2. 'द सोर्स ऑफ़ नॉलेज'
3. बहुविवाह विरोधी प्रस्ताव
4. किज़ाक्के पलाट कृष्णा मेनन के परिवार का चित्रांकन
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3

(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

31. समाजशास्त्र में, सामाजिक संरचना का अर्थ क्या है?
(A) सामाजिक संस्थाओं द्वारा परिभाषित संबंधों की सतत व्यवस्था
(B) समाज की निर्मित भौतिक इमारतें और नागरिक बुनियादी ढाँचा
(C) एक आधुनिक समाज में प्रचलित फैशन और शहरी जीवनशैली
(D) एक विशेष समय में सरकार द्वारा बनाई गई नीतियाँ

32. पश्चिमीकरण के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) पश्चिमीकरण के कारण भारतीय कला और साहित्य पर भी प्रभाव पड़ा।
(B) केवल निम्न जाति के लोग पश्चिमीकरण को अपनाते हैं।
(C) पश्चिमी शिक्षा से उत्तर पूर्वी क्षेत्रों में लोगों के लिए नवीन अवसर उत्पन्न हुए।
(D) मध्य वर्ग के परिवारों में टेलीविजन, फ्रिज, सोफा सेट आदि का प्रयोग पश्चिमीकरण का एक रूप है।

33. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): सती प्रथा के विरोध में, ब्रह्म समाज के प्रतिवाद में, बंगाल में हिंदू समाज के रुढ़िवादियों ने धर्म सभा का गठन किया।
कारण (R): धर्म सभा ने ब्रिटिश सरकार को सती प्रथा को अवैध घोषित करने के लिए एक याचिका भेजी थी।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

34. संस्कृत की विद्वान कुमुद पावड़े का अनुभव किस सामाजिक प्रक्रिया की जटिलताओं को दर्शाता है?
(A) संस्कृतीकरण
(B) पश्चिमीकरण
(C) आधुनिकीकरण
(D) पंथनिरपेक्षीकरण

35. निम्नलिखित में से कौन सी एक सामाजिक कुरीति नहीं थी जिसका 19वीं सदी के सुधारकों ने सामना किया?
(A) सती प्रथा
(B) बाल-विवाह
(C) वयस्क मताधिकार
(D) विधवा पुनर्विवाह निषेध

36. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
1. जोतिबा फुले ने आर्यों के युग को गरिमामय माना।
2. बाल गंगाधर तिलक ने आर्यों के आगमन से पूर्व के काल को अच्छा माना।
3. सुधारकों ने आधुनिकता और परंपरा पर विस्तृत वाद-विवाद किए।
4. 19वीं सदी के सुधारों ने बौद्धिक और सामाजिक उन्नति के प्रश्नों को जन्म दिया।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 2, 3 और 4

37. किस समाज सुधारक ने इस्लाम की विवेचना में 'इजतिहाद' (स्वतंत्र अन्वेषण) की वैधता का उल्लेख किया?
(A) राजा राममोहन राय
(B) जोतिबा फुले
(C) सर सैयद अहमद खान
(D) रानाडे

38. 'जाति का पंथनिरपेक्षीकरण' से क्या तात्पर्य है?
(A) जाति व्यवस्था का पूरी तरह से समाप्त हो जाना
(B) जाति का एक राजनीतिक दबाव समूह के रूप में कार्य करना
(C) एक धार्मिक समूह के रूप में कार्य करना
(D) विभिन्न जातियों के बीच विवाह को बढ़ावा देना

39. आधुनिकीकरण की अवधारणा के अनुसार निम्नलिखित में से कौन सा एक लक्षण सही है?
(A) पहचान जन्म के आधार पर मिलना
(B) कार्य का परिवार और समुदाय से जुड़ा होना
(C) भाग्यवादी प्रवृत्ति को प्राथमिकता देना
(D) ज्ञान तथा नियंत्रण क्षमता को प्राथमिकता देना

40. निम्नलिखित में से कौन सी प्रक्रिया उपनिवेशवाद की शुरुआत से पहले से होती रही?
(A) संस्कृतीकरण
(B) आधुनिकीकरण
(C) लौकिकीकरण
(D) पश्चिमीकरण

41. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
1. आधुनिकीकरण का आशय केवल प्रौद्योगिकी में सुधार से है।
2. आधुनिकीकरण में सार्वभौमिक प्रतिबद्धता को महत्व दिया जाता है।
3. इसमें व्यक्ति के बजाय समूह को प्राथमिकता दी जाती है।
4. इसमें अर्जित स्थिति के बजाय प्रदत्त स्थिति महत्वपूर्ण होती है।
5. यह विज्ञान की सत्यता और गणना को महत्व देता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 2 और 5
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 2, 3 और 5
(D) सभी कथन सही हैं।

42. संस्कृतीकरण की प्रक्रिया सामान्यतः किसके बाद होती है?
(A) संबंधित समूह की आर्थिक अथवा राजनीतिक स्थिति में सुधार
(B) संबंधित समूह की आर्थिक अथवा राजनीतिक स्थिति में गिरावट
(C) पश्चिमीकरण की प्रक्रिया को अपनाने के बाद
(D) धार्मिक रुढ़िवादिता में वृद्धि के बाद

43. औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी शिक्षा से किस नए वर्ग का जन्म हुआ?
(A) नए श्रमिक वर्ग का
(B) नए कृषक वर्ग का
(C) नए जमींदार वर्ग का
(D) नए मध्य वर्ग का

44. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. इजतिहाद
Q. विसंस्कृतीकरण
R. उर्ध्वगामी परिवर्तन (संस्कृतीकरण में)
S. जाति का पंथनिरपेक्षीकरण
सूची II: (अर्थ)
1. राजनीतिक दबाव समूह
2. स्वतंत्र अन्वेषण
3. प्रभुत्वशाली गैर-संस्कृत जाति का प्रभाव
4. स्थिति परिवर्तन, न कि संरचनात्मक परिवर्तन
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-3, R-1, S-2

45. 19वीं सदी के समाज सुधार आंदोलनों से पहले, सामाजिक भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष किन आंदोलनों के केंद्र में थे?
(A) केवल भक्ति आंदोलन
(B) केवल सूफी आंदोलन
(C) भक्ति एवं सूफी आंदोलन
(D) ऐसा कोई संघर्ष नहीं हुआ था

46. आधुनिक युग में मध्यवर्गीय महिलाओं में साड़ी पहनने के मानक तरीके में क्या शामिल हुआ?
(A) केवल पारंपरिक साड़ी
(B) साड़ी के स्थान पर पूरी तरह से पश्चिमी पोशाक
(C) साड़ी के साथ घाघरा और चोली
(D) साड़ी के साथ पश्चिमी पेटीकोट और ब्लाउज

47. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): आधुनिकीकरण के प्रभाव में, सामाजिक तथा राजनीतिक स्तर पर व्यक्ति को प्राथमिकता दी जाती है, न कि समूह को।
कारण (R): व्यक्ति की पहचान उसकी अर्जित उपलब्धियों से बनती है, न कि जन्म के आधार पर।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

48. "तुम्हारा समय है; अब मेरे अंत की शुरुआत है।" - ये शब्द किसके द्वारा कहे गए थे?
(A) महात्मा गांधी
(B) रबींद्रनाथ टैगोर
(C) जवाहरलाल नेहरु
(D) अनिमा दत्ता

49. भारतीय संदर्भ में आधुनिकीकरण और पंथनिरपेक्षीकरण का प्रारंभ किससे संबद्ध है?
(A) प्राचीन भारतीय काल से
(B) औपनिवेशिक काल से
(C) मध्यकालीन सल्तनत से
(D) मुगल काल से

50. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
1. औपनिवेशिक आधुनिकता में आंतरिक विरोधाभास था।
2. पश्चिमी शिक्षा से एक नए मध्य वर्ग का जन्म हुआ।
3. नए मध्यवर्गीय भारतीयों ने भारत को उदारता और प्रगतिशीलता के पथ पर ले जाने का सपना देखा।
4. औपनिवेशिक शासन से भारतीय स्वाभिमान को चोट नहीं लगी।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) केवल 1 और 4

51. पश्चिमी समाज में 'पंथनिरपेक्षीकरण' का क्या सूचक माना जाता है?
(A) धार्मिक चेतना में अभूतपूर्व वृद्धि
(B) नए धार्मिक आंदोलनों का उदय
(C) धार्मिक संस्थानों और लोगों के बीच बढ़ती दूरी
(D) राजनीति में धर्म का बढ़ता हस्तक्षेप

52. संस्कृतीकरण की एक आलोचना यह है कि इसके कारण लड़कियों और महिलाओं को असमानता की सीढ़ी में सबसे नीचे धकेल दिया जाता है। इसका एक उदाहरण क्या है?
(A) महिलाओं की शिक्षा को बढ़ावा मिलना

74. निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) रानाडे ने विधवा-विवाह के विरोध में शास्त्रों का संदर्भ दिया।
(B) राजा राममोहन राय ने सती प्रथा का विरोध करते हुए हिंदू शास्त्रों का संदर्भ दिया।
(C) सर सैयद अहमद खान ने कुरान और आधुनिक विज्ञान में समानता जाहिर की।
(D) कंदुकीरी विरेशलिंगम ने जीव विज्ञानी द्वारा लिखे ग्रंथों का अनुवाद किया।

75. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
1. संस्कृतीकरण हमेशा महिलाओं के लिए फायदेमंद होता है।
2. दहेज प्रथा संस्कृतीकरण का एक नकारात्मक परिणाम हो सकता है।
3. संस्कृतीकरण में निम्न जाति के श्रम को अक्सर शर्मनाक माना जाता है।
4. संस्कृतीकरण में दलितों की तकनीकी योग्यता को महत्व दिया जाता है।

उपरोक्त में से कौन से कथन संस्कृतीकरण के आलोचनात्मक पक्ष को दर्शाते हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1 और 2
(D) केवल 3 और 4

76. भारत में औपनिवेशिक शासन के कारण हुए परिवर्तनों की प्रकृति कैसी थी?
(A) पूरी तरह से सुनियोजित और सकारात्मक
(B) अनोखे और विरोधाभासी
(C) केवल नकारात्मक और विनाशकारी
(D) केवल सांस्कृतिक और संरचनात्मक नहीं

77. आज के युग में पारंपरिक त्योहारों का 'पंथनिरपेक्षीकृत प्रभाव' क्या है?
(A) इन त्योहारों को केवल धार्मिक तरीके से मनाया जाता है।
(B) इन त्योहारों को मनाना पूरी तरह से बंद हो गया है।
(C) ये त्योहार संपत्ति और प्रस्थिति के प्रदर्शन का अवसर बन गए हैं।
(D) ये त्योहार केवल निजी पारिवारिक मामले बनकर रह गए हैं।

78. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में आधुनिकीकरण के अनुभव के बारे में सत्य है?
(A) यह पूरी तरह से पश्चिमी अनुभव की नकल है।
(B) इसका 19वीं सदी के समाज सुधार आंदोलनों से कोई संबंध नहीं है।
(C) यह केवल प्रौद्योगिकी तक ही सीमित रहा।
(D) यह पश्चिमी अनुभव से गुणात्मक रूप से भिन्न लगता है।

79. निम्नलिखित में से कौन सा भारत में एक समाज सुधारक आंदोलन था?
(A) आर्य समाज
(B) खिलाफत आंदोलन
(C) भारत छोड़ो आंदोलन
(D) नक्सलबाड़ी आंदोलन

80. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): भारत में जाति के पंथनिरपेक्षीकरण पर व्यापक वाद-विवाद हुआ है।
कारण (R): पारंपरिक भारतीय समाज में जाति व्यवस्था धार्मिक चौखटे के अंदर क्रियाशील थी और पवित्र-अपवित्र के विश्वासों पर केंद्रित थी।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

81. 19वीं सदी के समाज सुधारकों के विचार किसके मिले-जुले रूप में उत्पन्न हुए?
(A) केवल पश्चिमी उदारवाद के विचार
(B) पश्चिमी उदारवाद और प्राचीन साहित्य की नयी दृष्टि
(C) केवल प्राचीन साहित्य के विचार
(D) भक्ति और सूफी परंपराओं के विचार

82. संस्कृतीकरण की प्रक्रिया किन क्षेत्रों में अधिक प्रभावशाली देखी गई है?
(A) जहाँ उच्चस्तरीय सांस्कृतिक जातियाँ प्रभुत्वशाली थीं।
(B) जहाँ निम्न जातियाँ प्रभुत्वशाली थीं।
(C) जहाँ कोई भी जाति प्रभुत्वशाली नहीं थी।
(D) केवल शहरी क्षेत्रों में।

83. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. समाज सुधार आंदोलन
Q. संस्कृतीकरण
R. पश्चिमीकरण
S. आधुनिकीकरण

सूची II: (मुख्य प्रस्तावक/विश्लेषक)
1. रुडॉल्फ और रुडॉल्फ
2. राजा राममोहन राय
3. एम. एन. श्रीनिवास
4. एम. एन. श्रीनिवास (ब्रिटिश शासन के संदर्भ में)

(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

उपरोक्त में से कौन से पश्चिमी सांस्कृतिक तत्व हैं जिनका भारत में व्यापक रूप से प्रयोग हुआ?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 4 और 5
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) केवल 2 और 4

64. 'इंदु प्रकाश' में विद्यासागर की पुस्तक का मराठी अनुवाद किसने प्रकाशित किया?
(A) केशव चंद्र सेन
(B) विष्णु शास्त्री
(C) रानाडे
(D) जोतिबा फुले

65. निम्नलिखित में से कौन एक समाज सुधारक आंदोलन नहीं था?
(A) ब्रह्म समाज
(B) धर्म सभा
(C) आर्य समाज
(D) प्रार्थना समाज

66. निम्नलिखित में से सही कथन की पहचान करें:
(A) एक ही व्यक्ति एक स्थिति में आधुनिक और दूसरी में पारंपरिक हो सकता है।
(B) संस्कृतीकरण की प्रक्रिया से समाज में हमेशा समानता बढ़ती है।
(C) पश्चिमीकरण का अर्थ हमेशा आधुनिक मूल्यों को अपनाना होता है।
(D) आधुनिकीकरण केवल भारत में हुआ एक अनूठा परिवर्तन है।

67. 19वीं सदी की नई शिक्षा प्रणाली में किस प्रकार के साहित्य को सम्मिलित किया गया?
(A) इसमें मुख्यतः केवल प्राचीन भारतीय साहित्य के अंशों को शामिल किया गया
(B) इसमें केवल मध्यकालीन सूफी साहित्य के चुनिंदा अंशों को स्थान दिया गया
(C) यूरोप के पुनर्जागरण, सुधार आंदोलन और प्रबोधन से उत्पन्न साहित्य
(D) इसमें केवल क्षेत्रीय लोक कथाओं और स्थानीय मौखिक साहित्य को रखा गया

68. कालानुक्रम के अनुसार सुधारकों/विचारकों को व्यवस्थित करें:
1. एम. एन. श्रीनिवास
2. राजा राममोहन राय
3. जोतिबा फुले
4. सतीश सबरवाल
(A) 2, 3, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 2, 4, 1
(D) 2, 3, 4, 1

69. भारत में आधुनिक परिवर्तनों के संदर्भ में 'संगठनों के स्वरूप' का उदाहरण कौन सा है?
(A) प्रिंटिंग प्रेस
(B) स्वतंत्रता का विचार
(C) ब्रह्म समाज
(D) रेलवे

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): हाल के वर्षों में, दलितों में अपने को 'दलित' बताने में प्रतिष्ठा अनुभव करने की भावना आई है।
कारण (R): पिछड़े वर्गों के आंदोलनों ने जातीय समूह की उर्ध्वगामी गतिशीलता में पंथनिरपेक्ष कारकों की भूमिका पर बल दिया है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

71. निम्नलिखित में से कौन सी एक संस्कृतीकरण की विशेषता है?
(A) यह एक द्विमार्गी प्रक्रिया है।
(B) यह हमेशा एक समान रूप से होती है।
(C) यह केवल आर्थिक परिवर्तन लाती है।
(D) इसके बहुआयामी प्रभाव होते हैं।

72. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (पुस्तक/पत्रिका)
P. तहसिब-ए-निसवान
Q. द सोर्स ऑफ़ नॉलेज
R. इंदु प्रकाश
S. हिंदू लॉ पर टेक्स्ट
सूची II: (संबंधित व्यक्ति/विषय)
1. रानाडे
2. कंदुकीरी विरेशलिंगम
3. विष्णु शास्त्री का अनुवाद
4. बहुविवाह विरोधी बहस
(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-4, Q-2, R-3, S-1
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

73. समाजशास्त्रीय संदर्भ में 'पश्चिमीकरण' शब्द का प्रतिपादन किसने किया?
(A) सतीश सबरवाल
(B) रजनी कोठारी
(C) एम. एन. श्रीनिवास
(D) जोतिबा फुले

(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

115. 'इजतिहाद' शब्द का क्या अर्थ है?
(A) परंपरा का अनुकरण
(B) धार्मिक कट्टरता
(C) स्वतंत्र अन्वेषण
(D) पश्चिमीकरण

116. निम्नलिखित में से कौन सा संस्कृतीकरण का एक प्रभाव नहीं है?
(A) भाषा में परिवर्तन
(B) संगीत और नृत्य में परिवर्तन
(C) जीवन पद्धति में परिवर्तन
(D) जाति व्यवस्था का पूर्ण उन्मूलन

117. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (विषय/घटना)
P. 'टच-मी-नॉट' रवैया
Q. पीढ़ियों का मतभेद (पश्चिमीकरण के संदर्भ में)
R. संस्कृत शिक्षिका का अनुभव
S. जाति का राजनीतिकरण
सूची II: (संबंधित व्यक्ति/विवरण)
1. कुमुद पावड़े
2. रजनी कोठारी
3. जोतिबा फुले का पत्र
4. मध्य वर्ग में जटिलता
(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

118. समाज सुधारक आंदोलनों में किस प्रकार के विचारों का समावेश था?
(A) केवल मानवतावादी
(B) मानवतावादी, पंथनिरपेक्ष और उदारवादी
(C) केवल पंथनिरपेक्ष
(D) केवल उदारवादी

119. संस्कृतीकरण की प्रक्रिया की एक मुख्य सीमा क्या है?
(A) यह केवल शहरों में होती है।
(B) यह हमेशा आर्थिक गिरावट की ओर ले जाती है।
(C) इसे केवल उच्च जातियों द्वारा अपनाया जाता है।
(D) इससे कोई संरचनात्मक परिवर्तन न होकर केवल स्थिति परिवर्तन होता है।

120. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
1. पश्चिमीकरण के कारण पीढ़ियों में मतभेद उत्पन्न हो सकता है।
2. पश्चिमी शिक्षा ने सभी भारतीयों के लिए समान अवसर पैदा किए।
3. अभिजात थियेटरों ने ब्रिटिश संस्कृति को पूरी तरह अस्वीकार कर दिया।
4. रवि वर्मा की कला पर पश्चिमी शैली का कोई प्रभाव नहीं था।
5. पश्चिमीकरण का अर्थ केवल पश्चिमी पोशाक पहनना है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 4 और 5
(D) सभी कथन गलत हैं।

121. भारत में सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रियाएं किस प्रकार कार्य करती हैं?
(A) वे हमेशा एक दूसरे से अलग-थलग काम करती हैं।
(B) वे केवल ग्रामीण भारत में ही सक्रिय हैं।
(C) वे कई स्थितियों में एक साथ पाई जाती हैं और परस्पर संबंधित हैं।
(D) वे अब पूरी तरह से अप्रासंगिक हो गई हैं।

122. 'द्विज' जातियों में कौन-कौन से वर्ण शामिल माने जाते हैं?
(A) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य
(B) ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र
(C) केवल ब्राह्मण और क्षत्रिय
(D) केवल शूद्र और अवर्ण

123. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): 19वीं सदी के समाज सुधारक पश्चिमी उदारवाद के विचारों से प्रभावित थे।
कारण (R): उन्होंने भारतीय समाज की सभी परंपराओं को पूरी तरह से अमान्य कर दिया।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

124. 'आधुनिकीकरण' की परिभाषा के अनुसार इसमें किस प्रकार के दृष्टिकोण को महत्व दिया जाता है?
(A) सीमित-संकीर्ण-स्थानीय दृष्टिकोण
(B) सार्वभौमिक प्रतिबद्धता और विश्वजनीन दृष्टिकोण
(C) भाग्यवादी और अवैज्ञानिक दृष्टिकोण
(D) भावुकता और धार्मिक पवित्रता पर आधारित दृष्टिकोण

125. निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही नहीं है?
(A) संस्कृतीकरण की प्रक्रिया में क्षेत्रीय विभिन्नताएं पाई जाती हैं।
(B) जहाँ गैर-संस्कृतीकरण जातियाँ प्रभुत्वशाली थीं, वहां विसंस्कृतीकरण हुआ।

84. 'आधुनिकता' की अवधारणा के अनुसार सीमित-संकीर्ण-स्थानीय दृष्टिकोण के कमजोर पड़ने का क्या अर्थ है?
(A) लोग केवल अपने गांव या समुदाय के बारे में सोचते हैं।
(B) लोग अपनी परंपराओं से पूरी तरह कट जाते हैं।
(C) लोग तर्क और विज्ञान को अस्वीकार कर देते हैं।
(D) लोग सार्वभौमिक प्रतिबद्धता और विश्वजनीन दृष्टिकोण अपनाते हैं।

85. पीढ़ियों के बीच मतभेद को किस प्रक्रिया का परिणाम माना जाता है?
(A) संस्कृतीकरण
(B) पंथनिरपेक्षीकरण
(C) पश्चिमीकरण
(D) औद्योगीकरण

86. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
1. औद्योगीकरण ने लोगों को गाँवों से शहरों की ओर जाने के लिए प्रेरित किया।
2. संरचनात्मक परिवर्तन का संस्कृति और जीवनशैली पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
3. औपनिवेशिक भारत में हुए परिवर्तन केवल संरचनात्मक थे, सांस्कृतिक नहीं।
4. सामाजिक संरचना लोगों के संबंधों की एक सतत व्यवस्था है।
5. सांस्कृतिक परिवर्तन संरचनात्मक परिवर्तनों को समझने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 4 और 5
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी कथन सही हैं।

87. भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में किसके कारण विभिन्न समूहों के लोगों के लिए नवीन अवसर उत्पन्न हुए?
(A) संस्कृतीकरण की प्रक्रिया
(B) औद्योगिक क्रांति
(C) कृषि में सुधार
(D) पश्चिमी शिक्षा

88. "जो लोग भारतीय राजनीति में जातिवाद की शिकायत करते हैं, दरअसल वो ऐसी राजनीति की खोज में हैं जिसका समाज में कोई आधार ही नहीं।" यह कथन किसका है?
(A) रजनी कोठारी
(B) एम. एन. श्रीनिवास
(C) सतीश सबरवाल
(D) जोतिबा फुले

89. संस्कृतीकरण की प्रक्रिया में किसी समूह की प्रस्थिति में सामान्यतः क्या परिवर्तन होता है?
(A) स्थानीय जाति संस्तरण में निम्नता की तरफ जाती है।
(B) स्थानीय जाति संस्तरण में कोई परिवर्तन नहीं होता।
(C) स्थानीय जाति संस्तरण में उच्चता की तरफ ले जाता है।
(D) वह समूह जाति व्यवस्था से बाहर हो जाता है।

90. 19वीं सदी के समाज सुधारकों ने अपने विचारों के प्रचार के लिए किन माध्यमों का प्रयोग किया?
(A) अखबार, पत्रिका, सभाएं और गोष्ठियां
(B) केवल व्यक्तिगत बातचीत
(C) केवल धार्मिक उपदेश
(D) केवल सरकारी फरमान

91. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): पारंपरिक तौर पर, उच्च जाति के लोग उन निम्न जातीय लोगों को दंडित करते थे जो संस्कृतीकरण की चेष्टा करते थे।
कारण (R): उच्च जातियों की जीवनशैली, अनुष्ठान और ज्ञान को अपनाना पारंपरिक समाज में अनेक सामाजिक रुकावटों के कारण मुश्किल था।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

92. केरल के नायर समुदाय का समाज पारंपरिक रूप से कैसा था?
(A) पितृवंशीय
(B) मातृवंशीय
(C) द्विवंशीय
(D) इनमें से कोई नहीं

93. निम्नलिखित में से कौन सी प्रक्रिया भारत में औपनिवेशिक शासन के प्रभाव की जटिल उत्पत्ति है?
(A) केवल समाज सुधार आंदोलन
(B) केवल संस्कृतीकरण और पश्चिमीकरण
(C) समाज सुधार आंदोलन और सांस्कृतिक व्यवहारों में परिवर्तन दोनों
(D) केवल भक्ति और सूफी आंदोलन

94. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
1. भारत में, आधुनिकता और परंपरा परस्पर विरोधी ताकतें हैं।
2. आधुनिकता के कारण परंपरा पर पुनर्विचार हुआ और उसकी पुनर्विवेचना हुई।
3. संस्कृति और परंपरा, दोनों का ही अस्तित्व सजीव है।
4. मानव संस्कृति और परंपरा में कोई बदलाव नहीं ला सकता।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3

(B) विधवा पुनर्विवाह की स्वीकृति
(C) महिलाओं को संपत्ति में अधिकार मिलना
(D) कन्यामूल्य के स्थान पर दहेज प्रथा का बढ़ना

53. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रम में लगाएँ:
1. सर सैयद अहमद खान द्वारा इस्लाम की विवेचना
2. राजा राममोहन राय द्वारा सती प्रथा का विरोध
3. जोतिबा फुले द्वारा पुणे में महिला विद्यालय की स्थापना
4. कंदुकीरी विरेशलिंगम द्वारा जीव विज्ञान से संबंधित ग्रंथों का अनुवाद

(A) 2, 3, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 4, 1, 2
(D) 2, 1, 4, 3

54. केरल के थिय्या समुदाय का उदाहरण किस सामान्यीकरण को चुनौती देता है?
(A) निम्न जातियाँ संस्कृतीकरण की प्रक्रिया अपनाती हैं।
(B) निम्न जातियाँ पश्चिमीकरण की इच्छा नहीं रखतीं।
(C) उच्च जातियाँ पश्चिमीकरण को अपनाती हैं।
(D) केवल उच्च जातियाँ ही ब्रिटिश संस्कृति को स्वीकार करती हैं।

55. निम्नलिखित में से कौन सा जोड़ा सही सुमेलित है?
(A) जोतिबा फुले - ब्रह्म समाज
(B) दयानंद सरस्वती - प्रार्थना समाज
(C) पंडिता रमाबाई - पंजाब
(D) केशव चंद्र सेन - बंगाल

56. निम्नलिखित में से कौन सी पश्चिमीकरण की एक विशेषता नहीं है?
(A) इसका प्रभाव केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित रहा
(B) प्रौद्योगिकी एवं संस्थाओं में परिवर्तन
(C) विचारधारा एवं मूल्यों में परिवर्तन
(D) इसका एक रूप बुद्धिजीवियों की उपसंस्कृति के रूप में था

57. औपनिवेशिक भारत में समाज सुधारकों द्वारा संचार के लिए उपयोग किए जाने वाले माध्यमों में क्या शामिल नहीं था?
(A) अखबार और पत्रिका
(B) सभाएँ और गोष्ठियाँ
(C) टेलीविजन और इंटरनेट
(D) पुस्तकों का अनुवाद

58. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (व्यक्ति)
P. एम. एन. श्रीनिवास
Q. कुमुद पावड़े
R. रजनी कोठारी
S. राजा रवि वर्मा

सूची II: (अवधारणा/कार्य)
1. जाति का पंथनिरपेक्षीकरण
2. संस्कृतीकरण की अवधारणा
3. तैलीय चित्रकला का प्रयोग
4. संस्कृत शिक्षक बनने का अनुभव

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

59. "जो जन्म से मिला हो, और जो मरने के बाद भी नष्ट न हो - वो जाति है।" यह कथन किसके अनुभव पर आधारित है?
(A) पंडिता रमाबाई
(B) जहाँआरा शाह नवास
(C) अनिमा दत्ता
(D) कुमुद पावड़े

60. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): संस्कृतीकरण की अवधारणा की आलोचना की गई है क्योंकि यह सामाजिक गतिशीलता को बढ़ा-चढ़ाकर बताती है।
कारण (R): यह प्रक्रिया कोई संरचनात्मक परिवर्तन न लाकर केवल कुछ व्यक्तियों का स्थिति परिवर्तन करती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

61. ब्राह्मण-विरोधी आंदोलन और क्षेत्रीय स्वचेतना के विकास ने 20वीं शताब्दी में किस प्रकार के प्रयासों को जन्म दिया?
(A) भारतीय भाषाओं में संस्कृत के शब्दों को शामिल करने के प्रयास
(B) केवल अंग्रेजी भाषा को बढ़ावा देने के प्रयास
(C) भारतीय भाषाओं से संस्कृत के शब्दों एवं मुहावरों को हटाने के प्रयास
(D) सभी भारतीय भाषाओं को एक लिपि में लिखने के प्रयास

62. आधुनिकता की कौन सी विशेषता यह बताती है कि व्यक्ति अपना व्यवसाय अपनी पसंद से चुन सकता है?
(A) भाग्यवादी प्रवृत्ति
(B) प्रदत्त स्थिति का महत्व
(C) स्थानीय, सीमाबद्ध विचार
(D) कार्य का परिवार और समुदाय से अलग होना

63. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
1. टेलीविजन और फ्रिज
2. सोफा सेट और खाने की मेज
3. पश्चिमी पोशाक और खाद्य-पदार्थ
4. केवल पश्चिमी विचारधारा
5. केवल पश्चिमी प्रौद्योगिकी

जातियों का अनुकरण करती हैं।
(C) इसके प्रभाव भाषा और साहित्य पर देखे जा सकते हैं।
(D) यह प्रक्रिया गैर-हिंदू संप्रदायों में भी दिखाई पड़ती है।

105. समाज सुधारकों के बीच महिलाओं की शिक्षा को लेकर क्या विश्वास था?
(A) स्त्रियाँ स्वाभाविक रूप से पुरुषों से कम बुद्धिमान होती हैं।
(B) आधुनिकता से पहले भारत में स्त्रियाँ कभी शिक्षित नहीं थीं।
(C) समाज के उत्थान के लिए महिलाओं का शिक्षित होना आवश्यक है।
(D) महिला शिक्षा केवल कुछ ही परिवारों को मिलनी चाहिए।

106. निम्नलिखित में से कौन संस्कृतीकरण की आलोचना का एक मुख्य बिंदु है?
(A) यह दलित संस्कृति और ज्ञान को महत्वहीन मानती है।
(B) यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो सामाजिक समानता को बढ़ावा देती है।
(C) यह पश्चिमीकरण का एक रूप है।
(D) इसका प्रभाव केवल पुरुषों पर पड़ता है।

107. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (सुधारक)
P. पंडिता रमाबाई
Q. सर सैयद अहमद खान
R. वीरेशलिंगम
S. रानाडे
सूची II: (संबंधित क्षेत्र/विचार)
1. आंध्र प्रदेश
2. विधवा पुनर्विवाह का शास्त्रीय समर्थन
3. कुरान की आधुनिक विवेचना
4. देश के अनेक क्षेत्रों का दौरा
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

108. "मेरे पिता के कपड़े उनके आंतरिक जीवन का बहुत अच्छा प्रतिनिधित्व करते थे।" यह उद्धरण भारतीय समाज में किस स्थिति को दर्शाता है?
(A) पूर्ण पश्चिमीकरण
(B) आधुनिकता और परंपरा का मिश्रण
(C) पूर्ण भारतीय परंपरा
(D) संस्कृतीकरण की प्रक्रिया

109. भारतीय संदर्भ में पूँजीवाद का प्रारंभ किससे संबद्ध है?
(A) मुगल साम्राज्य
(B) मौर्य साम्राज्य
(C) औपनिवेशिक शासन
(D) गुप्त साम्राज्य

110. निम्नलिखित में से सही जोड़े की पहचान करें:
(A) पंथनिरपेक्षीकरण - धर्म के प्रभाव में वृद्धि
(B) आधुनिकीकरण - भाग्यवादी प्रवृत्ति
(C) संस्कृतीकरण - संरचनात्मक परिवर्तन
(D) विसंस्कृतीकरण - गैर-संस्कृत प्रभुत्वशाली जाति का प्रभाव

111. निम्नलिखित में से किस कलाकार का कार्य औपनिवेशिक आधुनिकता और तैलीय चित्रकला से गहराई से जुड़ा है?
(A) राजा रवि वर्मा
(B) अबनिंद्रनाथ टैगोर
(C) चंदू मेनन
(D) बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय

112. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
1. संस्कृतीकरण और पश्चिमीकरण हमेशा एक दूसरे से अलग प्रक्रियाएं हैं।
2. एक ही व्यक्ति एक साथ आधुनिक और पारंपरिक दोनों हो सकता है।
3. आधुनिकीकरण का मतलब हमेशा पश्चिमीकरण होता है।
4. ये सभी प्रक्रियाएं भारत के सभी क्षेत्रों को समान रूप से प्रभावित करती हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा कथन सही है?
(A) केवल 1
(B) केवल 2
(C) केवल 3 और 4
(D) केवल 1 और 3

113. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. भारत में पहले फोर्ड मॉडल टी कार का आगमन
2. 'अंजुमन-ए-ख्वातीन-ए-इस्लाम' की स्थापना
3. सती प्रथा का विरोध
4. जोतिबा फुले द्वारा लड़कियों के स्कूल की स्थापना
(A) 3, 4, 1, 2
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 2, 4, 1, 3

114. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): समसामयिक भारत में, विवाह जैसे अनुष्ठानों के आर्थिक, राजनीतिक और प्रस्थिति आयामी पक्ष ज़्यादा उभर कर सामने आए हैं।
कारण (R): आधुनिक युग में, अनुष्ठान केवल धार्मिक कृत्य न रहकर अपनी संपत्ति और प्रस्थिति के प्रदर्शन का अवसर भी बन गए हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।

(D) केवल 2, 3 और 4

95. औपनिवेशिक भारत में आधुनिक परिवर्तनों के लिए उत्तरदायी प्रमुख प्रौद्योगिकियां कौन सी थीं?
(A) उपरोक्त सभी
(B) केवल प्रिंटिंग प्रेस
(C) केवल टेलीग्राफ़
(D) केवल रेल

96. संस्कृतीकरण की अवधारणा की आलोचना में यह क्यों कहा जाता है कि यह असमानता और अपवर्जन पर आधारित प्रारूप को सही ठहराती है?
(A) क्योंकि यह सभी जातियों को पूर्ण रूप से समान मानने की वकालत करती है
(B) यह पवित्रता और अपवित्रता के जातिगत पक्षों को उपयुक्त मानती है
(C) क्योंकि यह जाति व्यवस्था को समाज से पूरी तरह समाप्त करने का सुझाव देती है
(D) क्योंकि यह समाज में केवल आर्थिक समानता के पक्ष पर विशेष जोर देती है

97. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (घटना/प्रक्रिया)
P. सती प्रथा का विरोध
Q. मुस्लिम महिलाओं का सम्मेलन
R. निम्न जाति द्वारा उच्च जाति का अनुकरण
S. ब्रिटिश शासन का प्रभाव
सूची II: (संबंधित व्यक्ति/अवधारणा)
1. संस्कृतीकरण
2. पश्चिमीकरण
3. राजा राममोहन राय
4. अंजुमन-ए-ख्वातीन-ए-इस्लाम
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-1, R-4, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

98. समाज सुधारक आंदोलनों के संदर्भ में, जोतिबा फुले और बाल गंगाधर तिलक के विचारों में क्या मुख्य अंतर था?
(A) फुले ने पूर्व-आर्य काल को अच्छा माना, जबकि तिलक ने आर्य युग को गरिमामय माना।
(B) फुले ने पश्चिमी शिक्षा का समर्थन किया, तिलक ने विरोध किया।
(C) तिलक ने महिला शिक्षा का समर्थन किया, फुले ने विरोध किया।
(D) तिलक ने जाति-भेद का विरोध किया, जबकि फुले ने समर्थन किया।

99. 'द्विज' जाति से क्या तात्पर्य है?
(A) भारत की सबसे निम्न जातियाँ
(B) भारत के गैर-हिंदू समुदाय
(C) वे जातियाँ जिन्हें दूसरा जन्म (उपनयन संस्कार) का अधिकार है
(D) वे जनजातियाँ जो हिंदू धर्म में परिवर्तित हो गईं

100. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
1. पश्चिमीकरण में किसी संस्कृति के बाह्य तत्वों का अनुकरण शामिल है।
2. पश्चिमीकरण हमेशा प्रजातंत्र जैसे आधुनिक मूल्यों में विश्वास पैदा करता है।
3. भारतीय कला और साहित्य पर पश्चिमी संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ा।
4. मध्य वर्ग के घरों में सोफा सेट पश्चिमीकरण का एक उदाहरण है।
5. उच्च जाति के लोग संस्कृतीकरण की प्रक्रिया अपनाते हैं।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 3 और 4
(B) केवल 2, 3 और 5
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी कथन सही हैं।

101. समाज सुधारकों ने अपने तर्कों के लिए किन स्रोतों का उपयोग किया?
(A) केवल आधुनिक पश्चिमी सिद्धांत
(B) केवल प्राचीन हिंदू शास्त्र
(C) आधुनिक सिद्धांत और प्राचीन शास्त्र दोनों
(D) केवल यूरोपीय कानून

102. केशव चंद्र सेन ने 1864 में किस शहर का दौरा किया था?
(A) बंबई
(B) मद्रास
(C) कलकत्ता
(D) दिल्ली

103. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): औपनिवेशिक काल में अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त भारतीयों ने पश्चिम के उदार-प्रजातंत्र की अवधारणा को जाना।
कारण (R): इन भारतीयों ने भारत को प्रगतिशीलता के रास्ते पर लाने का सपना देखा, लेकिन औपनिवेशिक शासन से उनके स्वाभिमान को भी चोट लगी।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

104. संस्कृतीकरण की प्रक्रिया के विषय में कौन सा कथन असत्य है?
(A) यह देश के सभी हिस्सों में एक ही ढंग से होती है।
(B) यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें निम्न जातियाँ उच्च

(C) संस्कृतीकरण हमेशा राजनीतिक स्थिति में सुधार के बिना होता है।
(D) तीर्थ स्थल संस्कृतीकरण के लिए महान परंपराओं के स्रोत हो सकते हैं।

126. निम्नलिखित में से कौन आधुनिकता की विशेषता नहीं है?
(A) उपयोगिता और गणना को महत्व
(B) विज्ञान की सत्यता को महत्व
(C) पहचान का चयन द्वारा अर्जन
(D) व्यक्ति की जगह समूह को प्राथमिकता

127. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
1. सती प्रथा एक सामाजिक कुरीति मानी जाती थी।
2. बाल-विवाह को 19वीं सदी में प्रोत्साहित किया गया।
3. विधवा पुनर्विवाह पर कोई रोक नहीं थी।
4. जाति-भेद 19वीं सदी के सुधारों का एक प्रमुख मुद्दा था।
उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) केवल 1 और 3

128. पश्चिमीकरण का वह कौन सा प्रकार था जिसे भारतीयों के एक छोटे समूह ने अपनाया?
(A) केवल पश्चिमी प्रौद्योगिकी का उपयोग
(B) पश्चिमी प्रतिमान चिंतन, स्वरुप और जीवनशैली को स्वीकारना
(C) केवल पश्चिमी पोशाक पहनना
(D) केवल अंग्रेजी भाषा सीखना

129. संस्कृतीकरण की आलोचना का एक मुख्य पक्ष किससे संबंधित है?
(A) महिलाओं की स्थिति में गिरावट
(B) दलित संस्कृति के ज्ञान को पिछड़ा मानना
(C) राजनीतिक संरचना का विघटन
(D) केवल आर्थिक विकास

130. जब राजनीति जन आधारित होती है तो वह किसका उपयोग करती है?
(A) जातीय संरचना जैसे संगठनात्मक समूहों का
(B) केवल आर्थिक संगठनों का
(C) केवल धार्मिक संस्थाओं का
(D) अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं का

131. निम्नलिखित में से किसने विधवा पुनर्विवाह के समर्थन में वेदों का उल्लेख किया?
(A) राजा राममोहन राय
(B) जोतिबा फुले
(C) महादेव गोविंद रानाडे
(D) सर सैयद अहमद खान

132. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (प्रक्रिया)
P. संस्कृतीकरण
Q. विसंस्कृतीकरण
R. पश्चिमीकरण
S. जाति का पंथनिरपेक्षीकरण
सूची II: (उदाहरण/परिणाम)
1. राजनीतिक दबाव समूह के रुप में जाति
2. ब्रिटिश शासन के बाद आए परिवर्तन
3. प्रभुत्वशाली गैर-संस्कृत जाति का प्रभाव
4. द्विज जातियों का अनुकरण
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

133. औपनिवेशिक आधुनिकता का एक आंतरिक विरोधाभास क्या था?
(A) इसने केवल परंपरा को मजबूत किया।
(B) इसने समानता और स्वतंत्रता को पूरी तरह से स्थापित किया।
(C) पश्चिमी शिक्षा ने पश्चिमी शासन की आलोचना को जन्म दिया।
(D) इसने भारतीय समाज को पूरी तरह से अलग-थलग कर दिया।

134. मध्य वर्ग में पश्चिमीकरण के प्रभाव के संदर्भ में, पीढ़ियों के बीच मतभेद के बारे में कौन सा कथन सही है?
(A) यह बहुत ही सरल और स्पष्ट होता है।
(B) यह प्रायः अधिक जटिल होता है।
(C) यह बिल्कुल नहीं पाया जाता।
(D) यह केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित है।

135. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): संस्कृतीकरण की प्रक्रिया से सामाजिक स्तरीकरण में उर्ध्वगामी परिवर्तन होता है।
कारण (R): यह सामाजिक गतिशीलता केवल कुछ व्यक्तियों का स्थिति परिवर्तन है, न कि संपूर्ण सामाजिक संरचना का परिवर्तन।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

136. सांस्कृतिक परिवर्तन के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'परंपरा' के बारे में सत्य है?
(A) परंपरा पर भी पुनर्विचार होता है और उसकी पुनर्विवेचना होती है।
(B) परंपरा स्थिर और अपरिवर्तनशील होती है।

(C) आधुनिकता के कारण परंपरा का पूर्ण रुप से अंत हो जाता है।
(D) परंपरा केवल ग्रामीण क्षेत्रों में पाई जाती है।

137. संस्कृतीकरण के संदर्भ में किसी समूह की प्रस्थिति में सुधार के लिए क्या आवश्यक माना गया है?
(A) समूह की सांस्कृतिक स्थिति में गिरावट
(B) समूह का पूर्ण पश्चिमीकरण
(C) समूह की आर्थिक अथवा राजनीतिक स्थिति में सुधार
(D) समूह का केवल शहरी क्षेत्रों में प्रवास

138. 19वीं सदी के सुधारकों के संदर्भ में कौन सा कथन 'मिश्रित विचारों' को नहीं दर्शाता?
(A) सुधारकों द्वारा अपनी सभी प्राचीन परंपराओं का पूर्ण त्याग करना।
(B) राममोहन राय द्वारा आधुनिक सिद्धांतों और शास्त्रों का उपयोग।
(C) रानाडे द्वारा विधवा-विवाह के लिए शास्त्रों का संदर्भ देना।
(D) सर सैयद अहमद खान द्वारा कुरान और आधुनिक विज्ञान में समानता दिखाना।

139. 20वीं शताब्दी में पिछड़े वर्गों के आंदोलनों का एक निर्णायक परिणाम क्या हुआ?
(A) संस्कृतीकरण की प्रक्रिया को तेज करना
(B) संस्कृत भाषा को सभी के लिए अनिवार्य करना
(C) जाति आधारित व्यवस्था को पूरी तरह समाप्त करना
(D) जातीय समूहों की गतिशीलता में पंथनिरपेक्ष कारकों की भूमिका पर बल देना

140. नीचे दिए गए कथनों को ध्यानपूर्वक पढ़िए।
1. आधुनिकीकरण का मतलब है सार्वभौमिक मूल्यों को अपनाना।
2. पंथनिरपेक्षीकरण का मतलब है धर्म का प्रभाव कम होना।
3. संस्कृतीकरण का मतलब है निम्न जातियों द्वारा उच्च जातियों का अनुकरण।
4. पश्चिमीकरण का मतलब है ब्रिटिश शासन के कारण आए परिवर्तन।
5. ये सभी प्रक्रियाएं एक-दूसरे से पूर्णतः स्वतंत्र हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) सभी कथन सही हैं।

141. 'पंथनिरपेक्षता' शब्द समाजशास्त्र में किस प्रक्रिया को दर्शाता है?
(A) धार्मिक कट्टरता की वृद्धि
(B) नए धर्मों का उदय
(C) जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर धर्म के प्रभाव का कम होना
(D) सभी धर्मों का समान आदर

142. औपनिवेशिक काल में संचार माध्यमों के विकास का क्या परिणाम हुआ?
(A) विचारों का प्रसार धीमा हो गया।
(B) केवल वस्तुओं का आवागमन संभव हुआ।
(C) लोग अधिक रुढ़िवादी हो गए।
(D) नवीन विचारों को तीव्र गति प्रदान करने में सहायता मिली।

143. भारत में सामाजिक सुधारकों के संदर्भ में क्या सत्य है?
(A) उनके बीच कुछ विषयगत समानताएँ और महत्वपूर्ण असहमतियाँ दोनों थीं।
(B) सभी सुधारकों के बीच सभी मुद्दों पर पूर्ण सहमति थी।
(C) वे केवल महिलाओं के मुद्दों से चिंतित थे।
(D) वे केवल जाति के मुद्दों से चिंतित थे।

144. संस्कृतीकरण की आलोचना में, दलित संस्कृति के किन पक्षों को 'पिछड़ापन' मान लिए जाने की बात कही गई है?
(A) केवल धार्मिक अनुष्ठान
(B) शिल्प, तकनीकी योग्यता और औषधियों का ज्ञान
(C) केवल खान-पान की आदतें
(D) केवल भाषा और बोली

145. किस समुदाय ने पश्चिमीकरण को प्राथमिकता दी, यद्यपि वे पारंपरिक संस्तरण में उच्च जाति के नहीं थे?
(A) बंगाल के ब्राह्मण
(B) केरल के थिय्या
(C) पंजाब के जाट
(D) महाराष्ट्र के मराठा

146. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है।
अभिकथन (A): एक ही व्यक्ति एक जगह पर आधुनिक होता है तो दूसरी भिन्न स्थिति में वो पारंपरिक भी हो सकता है।
कारण (R): भारत जैसे गैर-पाश्चात्य देशों में इस प्रकार की स्थिति स्वाभाविक है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

147. 19वीं और 20वीं सदी के समाज सुधार आंदोलनों को किन दो मुख्य श्रेणियों में बांटा जा सकता है?
(A) आर्थिक और राजनीतिक सुधार
(B) कृषि और औद्योगिक सुधार
(C) महिलाओं और निम्न जातियों से संबंधित सुधार
(D) शैक्षिक और स्वास्थ्य सुधार

148. आधुनिकता के सिद्धांतों के अनुसार एक व्यक्ति की पहचान किससे बनती है?
(A) जन्म से (प्रदत्त स्थिति)
(B) परिवार के नाम से
(C) धार्मिक समुदाय से
(D) अर्जित उपलब्धियों से

149. उत्तर-पूर्वी भारत में पश्चिमी शिक्षा प्राप्त समूहों ने किस भाषा को अपनी आधिकारिक प्रशासकीय भाषा के रूप में अपनाया?
(A) हिंदी
(B) संस्कृत
(C) अंग्रेज़ी
(D) स्थानीय बोली

150. उपनिवेशवाद के कारण भारतीय समाज में आए बदलावों के संदर्भ में क्या सत्य है?
(A) ये केवल आर्थिक थे।
(B) संस्कृति, जीवनशैली और मूल्यों में गुणात्मक बदलाव हुए।
(C) ये केवल राजनीतिक थे।
(D) इनसे कोई वास्तविक परिवर्तन नहीं हुआ।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

उन्नीसवीं सदी के भारत में समाज सुधार आंदोलनों की वैचारिक नींव एक दोहरी रणनीति पर आधारित थी, जिसमें पाश्चात्य उदारवादी विचारों और भारतीय पारंपरिक ज्ञान की पुनर्विचारणा का अनूठा संगम था। सुधारक, जैसे राजा राममोहन राय और ईश्वर चंद्र विद्यासागर, पश्चिमी शिक्षा के माध्यम से प्राप्त हुए तर्क, मानवतावाद, और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के सिद्धांतों से गहरे रूप से प्रभावित थे। उन्होंने इन आधुनिक मूल्यों का उपयोग सती प्रथा, बाल विवाह, और विधवाओं के दमन जैसी सामाजिक कुरीतियों पर प्रहार करने के लिए किया। तथापि, उन्होंने यह भी समझा कि केवल पश्चिमी तर्कों के आधार पर भारतीय समाज को सुधार के लिए राजी करना कठिन होगा। इसलिए, उन्होंने एक समानांतर रणनीति अपनाई, जिसमें प्राचीन भारतीय धर्मग्रंथों, जैसे कि वेद, उपनिषद, और स्मृतियों का गहन अध्ययन कर उनकी प्रगतिशील व्याख्या प्रस्तुत की। उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि कई सामाजिक कुरीतियाँ, जिन्हें धर्म का अंग माना जाता था, वास्तव में बाद के काल की विकृतियाँ थीं और मूल धर्मग्रंथों में उनका कोई आधार नहीं था। उदाहरण के लिए, विद्यासागर ने प्राचीन ग्रंथों से उद्धरण देकर विधवा पुनर्विवाह को शास्त्र-सम्मत सिद्ध किया। इस प्रकार, सुधारकों ने 'परंपरा के भीतर से आधुनिकता' का मार्ग प्रशस्त किया, जिससे वे परंपरावादियों के तर्कों का उन्हीं के क्षेत्र में खंडन कर सके और सुधारों के लिए एक व्यापक सामाजिक स्वीकृति का आधार तैयार कर सके।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. उन्नीसवीं सदी के समाज सुधारकों द्वारा अपनाई गई दोहरी रणनीति का मूल तत्व क्या था?
(A) केवल पश्चिमी उदारवादी और लोकतांत्रिक विचारों का पूर्ण समर्थन करना।
(B) पाश्चात्य विचारों और भारतीय ग्रंथों की प्रगतिशील व्याख्या का संयोजन।
(C) भारतीय परंपराओं और धार्मिक विश्वासों का पूर्णतया त्याग कर देना।
(D) केवल प्राचीन भारतीय धर्मग्रंथों और मध्यकालीन मान्यताओं पर निर्भर रहना।

152. समाज सुधारकों ने प्राचीन धर्मग्रंथों की पुनर्विचारणा क्यों की?
(A) वे सुधारों को सामाजिक और धार्मिक वैधता प्रदान करना चाहते थे।
(B) वे पश्चिमी विचारों को पूरी तरह से अस्वीकार करना चाहते थे।
(C) वे यह सिद्ध करना चाहते थे कि सभी भारतीय परंपराएँ श्रेष्ठ हैं।
(D) वे एक नए धर्म की स्थापना करना चाहते थे।

153. गद्यांश के अनुसार, ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह का समर्थन कैसे किया?
(A) पश्चिमी दार्शनिकों के आधुनिक और तर्कसंगत विचारों का हवाला देकर।
(B) ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार से सुधारवादी कानून बनाने की अपील करके।
(C) प्राचीन ग्रंथों से उद्धरण प्रस्तुत करके उसे शास्त्र-सम्मत बताकर।
(D) सामाजिक बहिष्कार और जन-जागरूकता का व्यापक अभियान चलाकर।

154. "परंपरा के भीतर से आधुनिकता" की अवधारणा का क्या तात्पर्य है?
(A) आधुनिकता के लक्ष्यों के लिए सभी पुरानी परंपराओं को पूर्णतः नष्ट कर देना।
(B) केवल पश्चिमी आधुनिकता का बिना किसी आलोचना के अंधानुकरण करना।
(C) परंपरा और आधुनिकता के बीच मौजूद किसी भी ऐतिहासिक संबंध से इनकार करना।
(D) पारंपरिक मूल्यों का उपयोग करके आधुनिक सुधारों को लागू करना।

155. उन्नीसवीं सदी के सुधारकों का मुख्य उद्देश्य क्या था, जैसा कि गद्यांश में वर्णित है?
(A) भारत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन को वैचारिक रूप से मजबूत करना।
(B) भारतीय शिक्षा प्रणाली का पूरी तरह से पश्चिमीकरण सुनिश्चित करना।
(C) भारतीय समाज में प्रचलित सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन करना।
(D) मध्यकालीन पारंपरिक गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को पुनः

ANSWERS

1. (B) औपनिवेशिक भारत द्वारा महसूस की गई
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधार आंदोलन मुख्य रुप से औपनिवेशिक शासन के दौरान भारतीय समाज के सामने आई चुनौतियों की प्रतिक्रिया थे। औपनिवेशिक शासन ने नए विचारों और पश्चिमी मूल्यों को पेश किया, जिससे भारतीय बौद्धिक वर्ग ने अपनी सामाजिक कुरीतियों पर पुनर्विचार किया। इन आंदोलनों का उद्देश्य परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन बनाकर समाज में सुधार लाना था।

2. (A) निम्न जातियों द्वारा उच्च जातियों की जीवन पद्धति को अपनाना
संस्कृतीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें निम्न जाति के लोग अपनी सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए उच्च जातियों, विशेषकर 'द्विज' जातियों के रीति-रिवाजों, अनुष्ठानों और विचारधाराओं का अनुकरण करते हैं। यह प्रक्रिया मुख्य रुप से सांस्कृतिक और स्थितिजन्य परिवर्तन से जुड़ी है। इसके माध्यम से समूह अपनी पहचान को उच्च स्तरीय सांस्कृतिक सांचे में ढालने का प्रयास करते हैं।

3. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारतीय समाज में सांस्कृतिक परिवर्तनों को विभिन्न अवधारणाओं के माध्यम से समझा जा सकता है। संस्कृतीकरण निम्न जातियों द्वारा उच्च जातियों के अनुकरण को दर्शाता है, जबकि पश्चिमीकरण ब्रिटिश शासन के प्रभाव से आए बदलावों का प्रतीक है। आधुनिकीकरण प्रौद्योगिकी और उत्पादन में सुधार पर केंद्रित है, और पंथनिरपेक्षीकरण समाज के विभिन्न क्षेत्रों में धर्म के प्रभाव में कमी की प्रक्रिया है।

4. (D) नव्य-न्याय के तर्क
'द सोर्स ऑफ़ नॉलेज' नामक पुस्तक में नव्य-न्याय परंपरा के तर्कों को प्रमुखता से देखा जा सकता है। यह भारतीय दर्शन की एक महत्वपूर्ण शाखा है जो तर्क और ज्ञान मीमांसा पर केंद्रित है। उन्नीसवीं सदी के विद्वानों ने पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत करने के लिए इस तरह के तार्किक ढांचों का उपयोग किया, जो बौद्धिक गहराई को दर्शाता है।

5. (C) इसके प्रभाव भाषा, साहित्य, संगीत और जीवन पद्धति में देखे जा सकते हैं
संस्कृतीकरण केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके व्यापक सांस्कृतिक प्रभाव होते हैं। यह प्रक्रिया किसी समूह की भाषा, साहित्य, संगीत, नृत्य और सामान्य जीवन पद्धति को गहराई से प्रभावित करती है। जब कोई समूह उच्च जातियों का अनुकरण करता है, तो उसके दैनिक व्यवहार और कलात्मक अभिव्यक्तियों में भी महत्वपूर्ण बदलाव आते हैं, जो समाज में दिखाई देते हैं।

6. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधारक पश्चिमी उदारवाद के आधुनिक विचारों और प्राचीन भारतीय साहित्य की नई व्याख्याओं के मिश्रण से प्रेरित थे। उन्होंने परंपरा को पूरी तरह न त्यागकर उसे आधुनिक तर्क और मानवतावाद के चश्मे से देखा। यही कारण है कि उनके प्रयास प्राचीन गौरव और नवीन प्रगतिशीलता के एक अनूठे संगम के रूप में सामने आए, जो तर्कसंगत थे।

7. (D) 1914, मुस्लिम महिलाओं की राष्ट्र स्तरीय संस्था
'अंजुमन-ए-ख्वातीन-ए-इस्लाम' की स्थापना 1914 में की गई थी, जो मुस्लिम महिलाओं की एक महत्वपूर्ण राष्ट्र स्तरीय संस्था थी। इस संगठन ने मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों, उनकी शिक्षा और सामाजिक सुधारों के लिए एक मंच प्रदान किया। यह संस्था उस दौर में महिलाओं की बढ़ती सामाजिक चेतना और उनके संगठित प्रयासों का एक स्पष्ट प्रमाण थी, जिसने समाज में बदलाव की नींव रखी।

8. (A) यह दलित संस्कृति के मूलभूत पक्षों को महत्त्व देती है।
संस्कृतीकरण की एक मुख्य आलोचना यह है कि यह दलित संस्कृति और उसके ज्ञान को महत्वहीन मान लेती है। यह प्रक्रिया उच्च जातियों की जीवनशैली को ही श्रेष्ठ और वांछनीय मानती है, जिससे निम्न जातियों के अपने समृद्ध सांस्कृतिक तत्वों की उपेक्षा होती है। अन्य विकल्प संस्कृतीकरण की वास्तविक आलोचनाओं को दर्शाते हैं, जबकि दलित संस्कृति को महत्व देना इसका गुण नहीं है।

9. (A) केवल 1 और 2
उन्नीसवीं सदी में प्रिंटिंग प्रेस, टेलीग्राफ़ और रेल जैसे संचार माध्यमों ने नवीन और सुधारवादी विचारों के प्रसार में क्रांतिकारी भूमिका निभाई। इन माध्यमों ने भौगोलिक दूरियों को कम किया और विचारों के आदान-प्रदान को तीव्र बनाया। समाज सुधारकों ने इन आधुनिक तकनीकों का भरपूर उपयोग जनमत तैयार करने के लिए किया, जिससे सुधार आंदोलन केवल एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रहे।

10. (A) महिलाओं के लिए
जोतिबा फुले ने समाज में समानता लाने के उद्देश्य से पुणे में पहला विद्यालय महिलाओं के लिए खोला था। वे शिक्षा को दलितों और महिलाओं की मुक्ति का सबसे सशक्त माध्यम मानते थे। उनके इन प्रयासों ने पितृसत्तात्मक और जातिवादी समाज की जड़ों को चुनौती दी। महिला शिक्षा के प्रति उनका समर्पण भारत के आधुनिक सामाजिक इतिहास में एक मील का पत्थर माना जाता है।

11. (A) 4, 1, 2, 3
भारत में समाज सुधार की घटनाओं का क्रम बंगाल में ब्रह्म समाज की स्थापना (1828) से शुरु होता है। इसके बाद केशव

'संरचनात्मक परिवर्तन' के बजाय 'स्थितिगत परिवर्तन' को बढ़ावा देती है। इसके अतिरिक्त, यह प्रक्रिया उच्च जाति की संस्कृति को श्रेष्ठ और अनुकरणीय मानकर जातिगत पूर्वाग्रहों को और मजबूत करती है। यह इस विचार को भी पुष्ट करती है कि सामाजिक गतिशीलता का मार्ग 'निम्न' संस्कृतियों के त्याग और 'उच्च' संस्कृतियों को अपनाने में निहित है, जो दलित और जनजातीय संस्कृतियों के अवमूल्यन की ओर ले जाता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. एम.एन. श्रीनिवास द्वारा प्रतिपादित संस्कृतीकरण की प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) जाति व्यवस्था और उसके भेदभाव को पूरी तरह से समाप्त कर देना।
(B) समाज में एक सर्वथा नवीन और आधुनिक धर्म स्थापित करना।
(C) समाज के सभी वर्गों के बीच पूर्ण आर्थिक समानता प्राप्त करना।
(D) स्थानीय जाति पदानुक्रम में अपनी सामाजिक स्थिति ऊँचा उठाना।

162. संस्कृतीकरण की प्रक्रिया में निम्नलिखित में से क्या शामिल नहीं है?
(A) उच्च जातियों की जीवन शैली का अनुकरण।
(B) जाति व्यवस्था के मूल ढांचे को चुनौती देना।
(C) शाकाहार जैसी आहार संबंधी आदतों को अपनाना।
(D) अनुष्ठानों और प्रथाओं को अपनाना।

163. गद्यांश के अनुसार, संस्कृतीकरण के दावे की सफलता अक्सर किस पर निर्भर करती है?
(A) समूह की जनसंख्या के आकार पर।
(B) समूह की भौगोलिक स्थिति पर।
(C) समूह की आर्थिक या राजनीतिक शक्ति पर।
(D) समूह के नेताओं की शिक्षा पर।

164. संस्कृतीकरण की आलोचना क्यों की जाती है?
(A) क्योंकि यह प्रक्रिया केवल कुछ ही उच्च जातियों तक सीमित रह गई है।
(B) क्योंकि यह सामाजिक परिवर्तन की एक अत्यंत धीमी और जटिल प्रक्रिया है।
(C) क्योंकि यह समाज में केवल पश्चिमीकरण के प्रभाव को बढ़ावा देती है।
(D) क्योंकि यह जातिगत असमानता को स्वीकार कर उसे चुनौती नहीं देती।

165. "संरचनात्मक परिवर्तन" के बजाय "स्थितिगत परिवर्तन" का क्या अर्थ है?
(A) व्यक्ति व्यवस्था के भीतर अपनी स्थिति बदलते हैं, लेकिन व्यवस्था स्वयं नहीं बदलती।
(B) पूरी व्यवस्था बदल जाती है, व्यक्तियों की स्थिति नहीं।
(C) आर्थिक स्थिति बदलती है, लेकिन सामाजिक स्थिति नहीं।
(D) राजनीतिक शक्ति बदल जाती है, लेकिन सांस्कृतिक प्रथाएँ नहीं।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण, यद्यपि अक्सर एक दूसरे के स्थान पर उपयोग किए जाते हैं, दो भिन्न सामाजिक-सांकुल तिक प्रक्रियाएँ हैं। पश्चिमीकरण का तात्पर्य पश्चिमी देशों, विशेष रूप से ब्रिटेन की, सांस्कृतिक विशेषताओं, जैसे भाषा, पोशाक, भोजन, शिष्टाचार और संस्थाओं को अपनाना है। यह एक विशिष्ट संस्कृति के अनुकरण पर आधारित है और अक्सर औपनिवेशिक अनुभव से जुड़ा होता है। इसके विपरीत, आधुनिकीकरण एक व्यापक और अधिक तटस्थ प्रक्रिया है। यह उन विशेषताओं के विकास से संबंधित है जो एक 'आधुनिक' समाज को परिभाषित करती हैं, जैसे कि उन्नत प्रौद्योगिकी, औद्योगीकरण, शहरीकरण, तर्कसंगतता, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, और सार्वभौमिक मूल्यों में वृद्धि। आधुनिकीकरण किसी एक सभ्यता से बंधा नहीं है; यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो सैद्धांतिक रूप से किसी भी समाज में घटित हो सकती है। भारत के संदर्भ में, औपनिवेशिक शासन के कारण आधुनिकीकरण की प्रक्रिया पश्चिमीकरण के माध्यम से आई, जिससे दोनों के बीच की रेखा धुंधली हो गई। हालाँकि, यह समझना महत्वपूर्ण है कि कोई समाज पश्चिमीकृत हुए बिना भी आधुनिक हो सकता है। उदाहरण के लिए, जापान ने अपनी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखते हुए बड़े पैमाने पर औद्योगिकीकरण और आधुनिकीकरण किया। भारत में भी, आधुनिकीकरण की प्रतिक्रिया जटिल रही है। भारतीय विचारकों और नेताओं ने अक्सर पश्चिमी जीवन शैली और उपभोक्तावाद की आलोचना करते हुए आधुनिक विज्ञान, प्रौद्योगिकी और लोकतांत्रिक संस्थानों को अपनाने का प्रयास किया है। उन्होंने एक ऐसे 'भारतीय' आधुनिकीकरण का मार्ग खोजने की कोशिश की जो देश की अपनी सांस्कृतिक जड़ों और मूल्यों के साथ संगत हो।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. गद्यांश के अनुसार, पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) पश्चिमीकरण एक आर्थिक व्यवस्था है, जबकि आधुनिकीकरण एक राजनीतिक सिद्धांत है।
(B) पश्चिमीकरण सांस्कृतिक अनुकरण है, जबकि आधुनिकीकरण एक तटस्थ प्रक्रिया है।
(C) पश्चिमीकरण केवल भारत तक सीमित रहा, जबकि आधुनिकीकरण पूरे विश्व में व्याप्त है।
(D) पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण में वास्तव में कोई भी मूलभूत या सैद्धांतिक अंतर नहीं है।

167. आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता शामिल नहीं है?
(A) उन्नत प्रौद्योगिकी और औद्योगीकरण।

जीवित करना।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

औपनिवेशिक भारत में पश्चिमीकरण की प्रक्रिया ने एक नए शहरी मध्य वर्ग को जन्म दिया, जिसकी आकांक्षाएँ, जीवन शैली और विश्व-दृष्टिकोण पारंपरिक भारतीय समाज से भिन्न थे। यह वर्ग ब्रिटिश प्रशासनिक तंत्र, नई कानूनी प्रणाली और अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार के परिणामस्वरूप उभरा। इस वर्ग के सदस्यों ने पश्चिमी पोशाक, शिष्टाचार और भाषा को अपना लिया, जिसे वे प्रगति और आधुनिकता का प्रतीक मानते थे। हालाँकि, पश्चिमीकरण का प्रभाव केवल बाह्य आवरण तक सीमित नहीं था; इसने विचार प्रक्रियाओं को भी प्रभावित किया। उदारवाद, लोकतंत्र, और व्यक्तिवाद जैसे पश्चिमी विचारों ने इस वर्ग को गहराई से प्रभावित किया और वे भारतीय समाज में सुधार के प्रमुख पैरोकार बने। लेकिन इस प्रक्रिया में एक अंतर्निहित विरोधाभास भी था। यह नया मध्य वर्ग अक्सर अपने ही समाज से सांस्कृतिक रूप से विमुख हो गया। वे पश्चिमी शैली के क्लबों, पार्टियों और सामाजिक समारोहों में भाग लेते थे, लेकिन साथ ही पारिवारिक और सामुदायिक जीवन में कई पारंपरिक प्रथाओं को बनाए रखते थे। वे सार्वजनिक जीवन में आधुनिक दिखना चाहते थे, लेकिन निजी जीवन में परंपराओं से बंधे थे। इस द्वंद्व ने एक प्रकार की 'सांस्कृतिक दुविधा' को जन्म दिया, जहाँ व्यक्ति अपनी पहचान को लेकर संघर्ष करता था। यह वर्ग एक ओर औपनिवेशिक शासकों और दूसरी ओर आम भारतीय जनता के बीच एक मध्यस्थ की भूमिका में था, लेकिन वह पूरी तरह से न तो एक का हो सका और न ही दूसरे का।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. औपनिवेशिक भारत में नए शहरी मध्य वर्ग का उदय मुख्य रूप से किसके कारण हुआ?
(A) कृषि क्षेत्र में किए गए व्यापक और क्रांतिकारी सुधारों के कारण।
(B) ब्रिटिश प्रशासन, कानून और अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार के कारण।
(C) पारंपरिक हस्तशिल्प और कुटीर उद्योगों के अचानक पतन के कारण।
(D) समाज में चल रहे विभिन्न धार्मिक और सुधारवादी आंदोलनों के कारण।

157. गद्यांश के अनुसार, पश्चिमीकरण का प्रभाव भारतीय मध्य वर्ग पर किस रूप में देखा गया?
(A) केवल पोशाक और भाषा में परिवर्तन के रूप में।
(B) केवल राजनीतिक विचारों में परिवर्तन के रूप में।
(C) भारतीय परंपराओं के पूर्ण उन्मूलन के रूप में।
(D) जीवन शैली और विचार प्रक्रियाओं दोनों में परिवर्तन के रूप में।

158. "सांस्कृतिक दुविधा" की अवधारणा से लेखक का क्या तात्पर्य है?
(A) सार्वजनिक आधुनिकता और निजी जीवन की परंपरा के बीच द्वंद्व।
(B) उभरते हुए नए आर्थिक अवसरों और स्थिर सामाजिक स्थिति के बीच का संघर्ष।
(C) विभिन्न क्षेत्रीय भारतीय संस्कृतियों में से किसी एक को चुनने में कठिनाई।
(D) पश्चिमी and पूर्वी राष्ट्रों के प्रति अपनी राजनीतिक निष्ठा का वैचारिक संघर्ष।

159. पश्चिमीकरण ने नए मध्य वर्ग को किस प्रकार एक विरोधाभासी स्थिति में डाल दिया?
(A) वे आर्थिक रूप से समृद्ध थे लेकिन समाज में उन्हें सम्मान प्राप्त नहीं था।
(B) वे उच्च शिक्षित थे लेकिन उनके पास रोजगार के पर्याप्त अवसर नहीं थे।
(C) वे सुधारों के पक्षधर होकर भी अपने समाज से विमुख हो गए थे।
(D) वे शक्तिशाली प्रशासक थे लेकिन उनके पास कोई राजनीतिक अधिकार नहीं थे।

160. गद्यांश के अनुसार, नए मध्य वर्ग की भूमिका क्या थी?
(A) वे औपनिवेशिक शासकों और आम जनता के बीच मध्यस्थ की तरह थे।
(B) वे केवल औपनिवेशिक ब्रिटिश शासकों के वफादार और आज्ञाकारी सेवक थे।
(C) वे ग्रामीण और शहरी भारतीय जनता के एकमात्र and सच्चे प्रतिनिधि थे।
(D) वे भारतीय समाज में होने वाले किसी भी प्रगतिशील परिवर्तन के विरोधी थे।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

संस्कृतीकरण, जैसा कि समाजशास्त्री एम.एन. श्रीनिवास द्वारा प्रतिपादित किया गया है, भारतीय समाज में सामाजिक गतिशीलता की एक विशिष्ट प्रक्रिया का वर्णन करता है। यह वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा कोई 'निम्न' हिंदू जाति या कोई जनजाति या अन्य समूह, किसी 'उच्च' और विशेष रूप से 'द्विज' जाति की प्रथाओं, अनुष्ठानों, विश्वासों, विचारधारा और जीवन शैली को अपना लेता है। इस अनुकरण का प्राथमिक उद्देश्य स्थानीय जाति पदानुक्रम में अपनी स्थिति को ऊपर उठाना होता है। संस्कृतीकरण के तत्व केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक ही सीमित नहीं होते, बल्कि इसमें आहार संबंधी आदतें (जैसे शाकाहार अपनाना), वेशभूषा, भाषा और सामाजिक व्यवहार के अन्य पहलू भी शामिल होते हैं। अक्सर, एक पीढ़ी के अंतराल के बाद, इस तरह के समूह उच्च जाति के रूप में अपनी नई पहचान के लिए दावा प्रस्तुत करते हैं। यह दावा अक्सर सफल होता है यदि वह समूह आर्थिक या राजनीतिक रूप से शक्तिशाली हो। हालाँकि, संस्कृतीकरण की अवधारणा की कई आधारों पर आलोचना भी की गई है। आलोचकों का तर्क है कि यह एक ऐसी प्रक्रिया है जो जाति व्यवस्था के मूल असमानतावादी ढांचे को चुनौती नहीं देती, बल्कि उसी के भीतर स्थितिगत परिवर्तन की अनुमति देती है। यह

(C) सभी प्रकार के क्षेत्रीय और भाषाई प्रकाशनों पर कड़ा प्रतिबंध लगाकर।
(D) केवल राष्ट्रीय सरकार के आधिकारिक समाचारों को नियमित प्रकाशित करके।

175. गद्यांश में 'संवाद कौमुदी' का उल्लेख किस संदर्भ में किया गया है?
(A) एक रुढ़िवादी प्रकाशन के रूप में जो सभी सामाजिक सुधारों का विरोध करता था।
(B) एक उच्च साहित्यिक पत्रिका के रूप में जो केवल मनोरंजन हेतु प्रसिद्ध थी।
(C) एक सुधारवादी प्रकाशन के रूप में जिसने सती प्रथा के विरुद्ध जनमत बनाया।
(D) ब्रिटिश सरकार द्वारा प्रकाशित एक आधिकारिक राजकीय गजट या नियम पुस्तक के रूप में।

(B) केवल पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्यों का अनुकरण।
(C) तर्कसंगतता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण।
(D) शहरीकरण और सार्वभौमिक मूल्यों में वृद्धि।

168. भारत में आधुनिकीकरण और पश्चिमीकरण के बीच की रेखा धुंधली क्यों हो गई?
(A) क्योंकि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया औपनिवेशिक शासन के माध्यम से आई।
(B) क्योंकि भारतीय संस्कृति ऐतिहासिक रूप से पश्चिमी रही है।
(C) क्योंकि सभी भारतीयों ने स्वेच्छा से ही पूर्ण पश्चिमीकरण को चुना।
(D) क्योंकि इन दोनों प्रक्रियाओं में कोई भी वास्तविक भिन्नता नहीं है।

169. गद्यांश में जापान का उदाहरण किस बात को सिद्ध करने के लिए दिया गया है?
(A) कि पश्चिमीकरण किसी भी समाज के आधुनिकीकरण के लिए अनिवार्य शर्त है।
(B) कि जापान भौगोलिक और सांस्कृतिक रूप से एक पश्चिमी देशों जैसा राष्ट्र है।
(C) कि सांस्कृतिक पहचान को बचाते हुए भी समाज आधुनिक हो सकता है।
(D) कि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया हमेशा सांस्कृतिक और नैतिक पतन की ओर ले जाती है।

170. भारत में आधुनिकीकरण के प्रति क्या दृष्टिकोण रहा है?
(A) पश्चिमीकरण की संस्कृति को पूर्ण और बिना किसी शर्त के स्वीकार कर लेना।
(B) आधुनिकीकरण की प्रक्रिया और आधुनिक विज्ञान को पूरी तरह से नकार देना।
(C) केवल पारंपरिक ज्ञान और प्राचीन भारतीय प्रौद्योगिकी पर ही पूरी तरह निर्भरता।
(D) पश्चिमी जीवन शैली की आलोचना कर आधुनिक विज्ञान और संस्थानों को अपनाना।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

उन्नीसवीं सदी के भारत में सांस्कृतिक और सामाजिक परिवर्तन लाने में प्रिंट मीडिया की भूमिका क्रांतिकारी थी। प्रिंटिंग प्रेस के आगमन से पहले, विचार और सूचनाएँ मुख्य रूप से मौखिक परंपरा या हस्तलिखित पांडुलिपियों के माध्यम से फैलती थीं, जो धीमी और सीमित थीं। मुद्रण तकनीक ने विचारों के उत्पादन और प्रसार के पैमाने को अभूपूर्व रूप से बदल दिया। समाचार पत्रों, पत्रिकाओं, पैम्फलेट और पुस्तकों की बाढ़ आ गई, जिससे वे पहले से कहीं अधिक सस्ते और सुलभ हो गए। इसने एक नए 'सार्वजनिक क्षेत्र' का निर्माण किया, जहाँ सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर व्यापक बहस हो सकती थी। समाज सुधारक जैसे राजा राममोहन राय ने 'संवाद कौमुदी' जैसे प्रकाशनों का उपयोग सती प्रथा जैसी कुरीतियों के खिलाफ जनमत बनाने के लिए किया। इसके विपरीत, रुढ़िवादी समूहों ने भी अपने विचारों के बचाव में 'समाचार चंद्रिका' जैसे पत्र निकाले। इस प्रकार, प्रिंट एक वैचारिक युद्ध का मैदान बन गया। इसने भाषा के मानकीकरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और क्षेत्रीय भाषाओं में गद्य लेखन को प्रोत्साहित किया। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रिंट ने एक अखिल भारतीय चेतना के निर्माण में मदद की। विभिन्न क्षेत्रों के सुधारक और राष्ट्रवादी नेता एक-दूसरे के लेखन को पढ़ सकते थे और विचारों का आदान-प्रदान कर सकते थे, जिससे स्थानीय मुद्दे राष्ट्रीय बहस का हिस्सा बन गए। इसने लोगों को एक बड़े, काल्पनिक समुदाय, यानी 'राष्ट्र' का हिस्सा होने की भावना दी, जिसे वे सीधे तौर पर कभी नहीं देख सकते थे।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. उन्नीसवीं सदी में प्रिंट मीडिया के आगमन का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव क्या था?
(A) इसने मध्यकालीन हस्तलिखित पांडुलिपियों को पहले से और अधिक मूल्यवान बनाया।
(B) इसने प्रशासन और न्याय के कार्यों में केवल अंग्रेजी भाषा के उपयोग को बढ़ावा दिया।
(C) इसने विचारों के उत्पादन और प्रसार के पैमाने में क्रांतिकारी बदलाव किए।
(D) इसने पारंपरिक मौखिक सूचना संचार प्रणाली को समाज से पूरी तरह से समाप्त कर दिया।

172. "सार्वजनिक क्षेत्र" के निर्माण से लेखक का क्या अभिप्राय है?
(A) सरकार द्वारा पूरी तरह से नियंत्रित और संचालित एक आधिकारिक मीडिया स्थान।
(B) ऐसा मंच जहाँ सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों पर सार्वजनिक बहस हो सकती थी।
(C) केवल समाज के उच्च अभिजात वर्ग के सदस्यों के लिए आरक्षित एक निजी क्लब।
(D) एक भौतिक बाजार जहाँ केवल समाचार पत्र और पत्रिकाएं ही बेची जाती थीं।

173. समाज सुधारकों और रुढ़िवादी समूहों ने प्रिंट मीडिया का उपयोग कैसे किया?
(A) दोनों समूहों ने प्रिंट मीडिया के उपयोग का सामूहिक रूप से बहिष्कार किया।
(B) केवल समाज सुधारकों ने अपने विचारों के प्रचार हेतु इसका इस्तेमाल किया।
(C) उन्होंने इसका उपयोग केवल विशुद्ध साहित्यिक कार्यों को प्रकाशित करने के लिए किया।
(D) उन्होंने इसे अपने वैचारिक प्रचार और एक-दूसरे के विरोध के लिए इस्तेमाल किया।

174. गद्यांश के अनुसार, प्रिंट मीडिया ने अखिल भारतीय चेतना के निर्माण में कैसे मदद की?
(A) विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को विचारों के आदान-प्रदान में सक्षम बनाकर।
(B) केवल एक विशिष्ट क्षेत्रीय भाषा, जैसे हिंदी, के प्रयोग को बढ़ावा देकर।

चंद्र सेन का मद्रास दौरा (1864) हुआ। विष्णु शास्त्री द्वारा मराठी अनुवाद का प्रकाशन 1860 के दशक के उत्तरार्ध में हुआ। अंत में, 1914 में 'अंजुमन-ए-ख्वातीन-ए-इस्लाम' की स्थापना हुई। यह कालानुक्रम भारत में सुधारवादी विचारों के प्रसार और संस्थागत विकास को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

12. (B) पंजाब से निकलने वाली महिलाओं की एक पत्रिका
'तहसिब-ए-निसवान' पंजाब क्षेत्र से प्रकाशित होने वाली महिलाओं की एक महत्वपूर्ण पत्रिका थी। इसने महिलाओं के बीच सामाजिक जागरूकता पैदा करने, उनकी शिक्षा और अधिकारों पर चर्चा करने में बड़ी भूमिका निभाई। यह पत्रिका उस समय के मुस्लिम समाज में हो रहे आधुनिक परिवर्तनों और महिलाओं की आवाज़ को बुलंद करने का एक सशक्त माध्यम बनी, जिसने पारंपरिक सोच को चुनौती दी।

13. (C) ब्रिटिश शासन के परिणामस्वरूप भारतीय समाज और संस्कृति में आए परिवर्तन
पश्चिमीकरण से तात्पर्य उन परिवर्तनों से है जो लगभग 150 वर्षों के ब्रिटिश शासन के दौरान भारतीय समाज और संस्कृति में आए। इसमें प्रौद्योगिकी, संस्थाओं, विचारधारा और मूल्यों के विभिन्न स्तरों पर होने वाले बदलाव शामिल हैं। यह केवल बाहरी नकल नहीं है, बल्कि समाज के सोचने और कार्य करने के तरीकों में आया एक व्यापक संरचनात्मक और सांस्कृतिक परिवर्तन है जो औपनिवेशिक देन है।

14. (A) केवल 1, 2 और 5
संस्कृतीकरण की प्रक्रिया में कोई संरचनात्मक परिवर्तन नहीं होता, बल्कि यह केवल स्थिति में बदलाव लाता है। यह प्रक्रिया जाति व्यवस्था के भीतर कुछ समूहों की उर्ध्वगामी गतिशीलता को दर्शाती है, न कि असमानता का अंत। इसके अलावा, यह अक्सर दलित संस्कृति के तकनीकी और औषधीय ज्ञान जैसे पक्षों को 'पिछड़ा' मानकर उपेक्षित कर देती है, जिससे सांस्कृतिक विविधता को क्षति पहुँचती है।

15. (A) रानाडे
महादेव गोविंद रानाडे ने विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में 'द टेक्स्ट ऑफ द हिंदू लॉ' जैसे शास्त्रीय संदर्भों का उपयोग किया। उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि प्राचीन हिंदू कानून विधवा विवाह का समर्थन करते हैं। उनका यह दृष्टिकोण आधुनिक सुधारों को पारंपरिक वैधता प्रदान करने की रणनीति थी, ताकि रुढ़िवादी समाज में बदलाव को स्वीकार्यता मिल सके और सामाजिक न्याय हो।

16. (B) भावुकता और धार्मिक पवित्रता को महत्व
आधुनिकता की अवधारणा तर्क, विज्ञान और मानवतावाद पर आधारित है, जो भावुकता और धार्मिक पवित्रता जैसे पारंपरिक मानकों को प्राथमिकता नहीं देती। इसके बजाय, यह सार्वभौमिक दृष्टिकोण, व्यक्तिगत पहचान और अर्जित उपलब्धियों को महत्व देती है। आधुनिक समाज में व्यक्ति की स्थिति उसके कार्यों और पसंद से निर्धारित होती है, न कि धार्मिक मान्यताओं या जन्म के आधार पर मिलने वाले समूहों से।

17. (B) P-3, Q-4, R-2, S-1
राजा राममोहन राय ने सती प्रथा के विरुद्ध सशक्त आंदोलन चलाया, जबकि जोतिबा फुले ने महिला शिक्षा और दलित उत्थान के लिए कार्य किया। ब्रह्म समाज का उदय मुख्य रूप से बंगाल में हुआ, जिसने धार्मिक सुधारों की नींव रखी। आर्य समाज का विस्तार और प्रभाव पंजाब क्षेत्र में सर्वाधिक देखा गया, जहाँ उसने वेदों की ओर लौटने और सामाजिक कुरीतियों को मिटाने का आह्वान किया।

18. (A) संचार, संगठनों के स्वरुप और विचारों की प्रकृति
औपनिवेशिक भारत में आधुनिक परिवर्तनों को समझने के लिए तीन मुख्य पहलू महत्वपूर्ण हैं: नवीन संचार माध्यम, संगठनों के नए स्वरुप और विचारों की बदलती प्रकृति। संचार के साधनों ने विचारों को गति दी, संगठनों ने समाज सुधार को संस्थागत रुप दिया और उदारवादी विचारों ने नई दृष्टि प्रदान की। ये तीनों तत्व मिलकर आधुनिक भारतीय समाज के निर्माण की प्रक्रिया को स्पष्ट रूप से परिभाषित करते हैं।

19. (C) जब प्रभुत्वशाली गैर-संस्कृतीकरण जातियाँ संस्कृति को प्रभावित करती हैं।
विसंस्कृतीकरण वह प्रक्रिया है जहाँ उन क्षेत्रों में जहाँ गैर-संस्कृतीकरण जातियाँ प्रभुत्वशाली होती हैं, उनकी संस्कृति का प्रभाव अन्य समूहों पर पड़ता है। यह संस्कृतीकरण के विपरीत स्थिति को दर्शाता है। इसमें उच्च सांस्कृतिक आदर्शों के बजाय स्थानीय प्रभुत्वशाली जातियों के रीति-रिवाजों और जीवन शैली को अपनाया जाता है। यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक गतिशीलता की विविधता और क्षेत्रीय विशिष्टता को उजागर करने वाली महत्वपूर्ण अवधारणा है।

20. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पश्चिमीकरण की प्रक्रिया अक्सर बाहरी तत्वों जैसे पोशाक या उपकरणों के अनुकरण तक सीमित रह जाती है। इसका अर्थ यह कतई नहीं है कि व्यक्ति प्रजातंत्र या सामाजिक समानता जैसे आधुनिक पश्चिमी मूल्यों को भी अपना लेगा। अक्सर लोग पश्चिमी जीवनशैली अपनाते हुए भी अपने विचारों में पारंपरिक या रुढ़िवादी बने रहते हैं। यह विरोधाभास दर्शाता है कि सांस्कृतिक नकल और मूल्यों का आत्मसातीकरण अलग प्रक्रियाएं हैं।

21. (C) समाज के उत्थान के लिए महिलाओं का शिक्षित होना ज़रुरी है।
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधारकों के बीच इस बात पर व्यापक सहमति थी कि राष्ट्र और समाज की प्रगति के लिए महिलाओं की शिक्षा अनिवार्य है। उनका मानना था कि शिक्षित माताएं ही भावी पीढ़ी को बेहतर नागरिक बना सकती हैं और परिवार की स्थिति सुधार सकती हैं। शिक्षा को महिलाओं की मुक्ति और समाज को अंधविश्वासों से बाहर निकालने के एक शक्तिशाली उपकरण के रुप में देखा गया।

22. (B) समाज में धर्म के प्रभाव में कमी आना
पंथनिरपेक्षीकरण वह प्रक्रिया है जिसमें समाज के विभिन्न क्षेत्रों, जैसे राजनीति, शिक्षा और व्यक्तिगत व्यवहार पर धर्म का प्रभाव

44. (C) P-2, Q-3, R-4, S-1
इजतिहाद का अर्थ है स्वतंत्र बौद्धिक अन्वेषण, जबकि विसंस्कृतीकरण गैर-संस्कृत प्रभुत्वशाली जातियों के प्रभाव को दर्शाता है। संस्कृतीकरण के माध्यम से उर्ध्वगामी गतिशीलता केवल स्थिति में परिवर्तन लाती है, संरचना में नहीं। जाति का पंथनिरपेक्षीकरण उसे आधुनिक राजनीति में एक प्रभावी दबाव समूह के रूप में परिवर्तित कर देता है। ये सभी शब्द भारतीय समाज में हो रहे विविध और जटिल परिवर्तनों के विभिन्न आयामों को सूक्ष्मता से परिभाषित करते हैं।

45. (C) भक्ति एवं सूफी आंदोलन
उन्नीसवीं सदी के आधुनिक समाज सुधार आंदोलनों से बहुत पहले, भारत में भक्ति और सूफी आंदोलनों ने सामाजिक भेदभाव और जातिगत जड़ता के विरुद्ध आवाज़ उठाई थी। इन आंदोलनों ने मानवता, प्रेम और ईश्वर के साथ सीधे संबंध पर जोर दिया, जिसमें जन्म आधारित भेदभाव का कोई स्थान नहीं था। उन्होंने आम जनता को धार्मिक कर्मकांडों के बजाय नैतिक और समानतापूर्ण जीवन जीने का संदेश दिया, जो सुधारों की पूर्वपीठिका थी।

46. (D) साड़ी के साथ पश्चिमी पेटीकोट और ब्लाउज
आधुनिक काल में भारतीय महिलाओं की पोशाक में पश्चिमीकरण और परंपरा का एक दिलचस्प मेल देखा गया। मध्यवर्गीय महिलाओं ने अपनी पारंपरिक साड़ी पहनना जारी रखा, लेकिन उसके साथ पश्चिमी शैली के पेटीकोट और ब्लाउज को अपना लिया। यह परिवर्तन दर्शाता है कि कैसे भारतीय समाज ने पश्चिमी प्रभाव को पूरी तरह अपनाने के बजाय उसे अपनी संस्कृति के साथ जोड़कर एक नया 'हाइब्रिड' या मिश्रित स्वरूप प्रदान किया।

47. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आधुनिक समाज में व्यक्ति को उसके समूह या परिवार से ऊपर महत्व दिया जाता है। इसका मुख्य कारण यह है कि आधुनिकता अर्जित उपलब्धियों को जन्म आधारित प्रस्थिति से अधिक महत्वपूर्ण मानती है। जब पहचान व्यक्तिगत योग्यता और कार्यों से निर्धारित होने लगती है, तो सामूहिक पहचान गौण हो जाती है। यह दृष्टिकोण लोकतांत्रिक मूल्यों और सामाजिक गतिशीलता के आधुनिक सिद्धांतों के अनुकूल है, जो व्यक्तिवाद को बढ़ावा देता है।

48. (B) रबींद्रनाथ टैगोर
रबींद्रनाथ टैगोर ने इन शब्दों के माध्यम से पुराने युग के अवसान और नए समय के उदय के बीच के संक्रमण को व्यक्त किया था। यह कथन परिवर्तन की अपरिहार्यता और भविष्य की ओर बढ़ने की मानवीय चेतना को दर्शाता है। टैगोर के विचार अक्सर परंपरा और आधुनिकता के बीच के जटिल संबंधों और मानवीय भावनाओं के सार्वभौमिक स्वरूप को उजागर करते हैं, जो उस बदलते दौर की एक गहरी बौद्धिक अभिव्यक्ति थी।

49. (B) औपनिवेशिक काल से
भारत में आधुनिकीकरण और पंथनिरपेक्षीकरण की प्रक्रियाओं का औपचारिक और व्यापक प्रारंभ औपनिवेशिक काल के दौरान हुआ। ब्रिटिश शासन ने नई शिक्षा प्रणाली, प्रशासनिक ढांचे और कानूनी व्यवस्था की शुरुआत की, जिसने पारंपरिक सोच को चुनौती दी। हालांकि भारत में वैज्ञानिक और तार्किक सोच के बीज पहले भी मौजूद थे, लेकिन इन प्रक्रियाओं का वर्तमान संगठित और वैश्विक स्वरूप ब्रिटिश प्रभाव और आधुनिक पश्चिमी शिक्षा के संपर्क के बाद विकसित हुआ।

50. (A) केवल 1, 2 और 3
औपनिवेशिक आधुनिकता अपने आप में विरोधाभासी थी क्योंकि इसने एक तरफ आधुनिक मूल्य दिए और दूसरी तरफ परतंत्रता। पश्चिमी शिक्षा ने एक जागरूक मध्य वर्ग पैदा किया, जिसने भारत के लिए प्रगतिशील भविष्य का सपना देखा। हालांकि, विदेशी शासन के अधीन रहने से भारतीयों के आत्म-सम्मान को भी गहरी चोट पहुँची। कथन 4 गलत है क्योंकि औपनिवेशिक शोषण ने भारतीय स्वाभिमान और पहचान को निश्चित रूप से बहुत अधिक प्रभावित किया था।

51. (C) धार्मिक संस्थानों और लोगों के बीच बढ़ती दूरी
पश्चिमी समाज में पंथनिरपेक्षीकरण का मुख्य संकेत धार्मिक संस्थानों के प्रभाव में कमी और लोगों का धर्म से दूर होना माना जाता है। इसका अर्थ यह है कि सार्वजनिक जीवन और सामाजिक व्यवस्था अब धार्मिक सिद्धांतों के बजाय धर्मनिरपेक्ष कानूनों और तार्किक नियमों द्वारा संचालित होती है। धर्म एक पूरी तरह से व्यक्तिगत मामला बनकर रह जाता है और राज्य की संस्थाओं में धार्मिक हस्तक्षेप समाप्त या बहुत कम हो जाता है।

52. (D) कन्यामूल्य के स्थान पर दहेज प्रथा का बढ़ना
संस्कृतीकरण की एक बड़ी आलोचना यह है कि यह अक्सर महिलाओं की स्थिति में गिरावट का कारण बनता है। कई समुदायों ने अपनी स्थिति ऊँची दिखाने के लिए अपनी पारंपरिक कन्यामूल्य प्रथा को छोड़कर उच्च जातियों की दहेज प्रथा को अपना लिया। यह बदलाव महिलाओं को परिवार में एक आर्थिक बोझ के रूप में देखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है। यह उदाहरण दिखाता है कि कैसे सांस्कृतिक अनुकरण सामाजिक असमानता और पितृसत्तात्मक बुराइयों को गहरा कर सकता है।

53. (A) 2, 3, 1, 4
भारतीय सुधारों का कालक्रम राजा राममोहन राय के सती विरोधी अभियान (1820 के दशक) से शुरू होता है। इसके बाद जोतिबा फुले ने 1848 में पुणे में महिला विद्यालय खोला। सर सैयद अहमद खान ने 1860 के दशक के बाद इस्लाम की आधुनिक व्याख्या की। अंत में, कंदुकीरी विरेशलिंगम ने उन्नीसवीं सदी के अंतिम वर्षों में वैज्ञानिक ग्रंथों के अनुवाद के माध्यम से दक्षिण भारत में आधुनिक विचारों का प्रसार किया।

54. (B) निम्न जातियाँ पश्चिमीकरण की इच्छा नहीं रखतीं।
केरल के थिय्या समुदाय का उदाहरण इस प्रचलित धारणा को चुनौती देता है कि केवल उच्च जातियाँ ही पश्चिमीकरण को अपनाती हैं। थिय्या समुदाय पारंपरिक व्यवस्था में उच्च स्थान पर न होते हुए भी पश्चिमी शिक्षा और संस्कृति की ओर तेजी

हालांकि, कारण (R) असत्य है क्योंकि धर्म सभा ने सती प्रथा को अवैध घोषित करने के लिए नहीं, बल्कि इस प्रथा को बनाए रखने और ब्रिटिश हस्तक्षेप को रोकने के लिए सरकार को याचिका भेजी थी।

34. (A) संस्कृतीकरण
कुमुद पावड़े का अनुभव संस्कृतीकरण की जटिलताओं और विरोधाभासों को उजागर करता है। एक दलित महिला होने के बावजूद उन्होंने संस्कृत भाषा सीखी, जो पारंपरिक रुप से उच्च जातियों के लिए आरक्षित थी। उनकी कहानी दिखाती है कि कैसे सांस्कृतिक रूप से 'उच्च' ज्ञान प्राप्त करने के बाद भी सामाजिक पूर्वाग्रह और जातिगत भेदभाव बने रहते हैं। यह सिद्ध करता है कि संस्कृतीकरण संरचनात्मक परिवर्तन लाने में अक्सर विफल रहता है।

35. (C) वयस्क मताधिकार
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधारकों ने सती प्रथा, बाल-विवाह और विधवा पुनर्विवाह पर प्रतिबंध जैसी सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध कड़ा संघर्ष किया। ये मुद्दे उस समय के सामाजिक ताने-बाने की मुख्य चुनौतियां थे। हालांकि, वयस्क मताधिकार उस समय के सुधारों का प्राथमिक विषय नहीं था; यह राजनीतिक अधिकार काफी बाद में, स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान और संविधान निर्माण की प्रक्रिया के समय अधिक प्रमुखता से उभरा।

36. (B) केवल 3 और 4
उन्नीसवीं सदी के सुधार आंदोलन आधुनिकता और परंपरा के बीच गहरे संवाद और वाद-विवाद का परिणाम थे। सुधारकों ने भारतीय परंपराओं की पुनर्व्याख्या की और मानवतावादी मूल्यों पर जोर दिया। इन प्रयासों ने न केवल सामाजिक कुरीतियों को चुनौती दी, बल्कि भारत में बौद्धिक चेतना और सामाजिक प्रगति के नए मार्ग प्रशस्त किए। हालांकि, फुले और तिलक के विचार आर्य काल के विषय में एक-दूसरे के बिल्कुल विपरीत थे।

37. (C) सर सैयद अहमद खान
सर सैयद अहमद खान ने इस्लाम की आधुनिक और तर्कसंगत व्याख्या पर बल दिया। उन्होंने 'इजतिहाद' यानी स्वतंत्र अन्वेषण की वैधता का समर्थन किया, जिसका अर्थ है धर्मग्रंथों की व्याख्या समय की माँग और तर्क के अनुसार करना। उनका मानना था कि कुरान के मूल संदेश और आधुनिक विज्ञान के बीच कोई विरोधाभास नहीं है। उन्होंने मुस्लिम समुदाय को आधुनिक शिक्षा अपनाने के लिए प्रेरित करने का ऐतिहासिक कार्य किया।

38. (B) जाति का एक राजनीतिक दबाव समूह के रूप में कार्य करना
जाति के पंथनिरपेक्षीकरण का अर्थ है कि जाति की भूमिका धार्मिक और अनुष्ठानिक दायरे से निकलकर आधुनिक राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्रों में विस्तृत हो गई है। वर्तमान में, जातियाँ संगठित होकर राजनीतिक दलों पर दबाव बनाने और आरक्षण या अन्य लाभ प्राप्त करने के लिए एक दबाव समूह के रूप में कार्य करती हैं। यह परिवर्तन दर्शाता है कि कैसे एक पारंपरिक संस्था आधुनिक लोकतंत्र की आवश्यकताओं के अनुरूप ढल गई है।

39. (D) ज्ञान तथा नियंत्रण क्षमता को प्राथमिकता देना
आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में मनुष्य की ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता और अपने पर्यावरण पर नियंत्रण रखने की शक्ति को सर्वोच्च महत्व दिया जाता है। यह दृष्टिकोण भाग्यवादिता के बजाय तर्क, योजना और वैज्ञानिक खोजों पर विश्वास करता है। आधुनिकता व्यक्तियों को अपनी पहचान अर्जित करने और अपनी स्थिति स्वयं सुधारने के लिए प्रेरित करती है। इसमें गणना, विज्ञान और उत्पादकता को सामाजिक उन्नति का आधार माना जाता है।

40. (A) संस्कृतीकरण
संस्कृतीकरण एक प्राचीन और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो उपनिवेशवाद के आगमन से बहुत पहले से भारतीय समाज में मौजूद रही है। इतिहास में कई समूहों ने प्रभुत्वशाली उच्च जातियों का अनुकरण करके अपनी सामाजिक प्रस्थिति सुधारने का प्रयास किया है। हालांकि पश्चिमीकरण, आधुनिकीकरण और पंथनिरपेक्षीकरण जैसी प्रक्रियाएँ मुख्य रूप से औपनिवेशिक काल और उसके बाद के आधुनिक प्रभावों के परिणामस्वरुप भारत में अधिक प्रभावी और दृश्यमान हुई हैं।

41. (A) केवल 2 और 5
आधुनिकीकरण का व्यापक अर्थ केवल तकनीक नहीं, बल्कि सार्वभौमिक प्रतिबद्धता, वैज्ञानिक सत्यता और गणना को महत्व देना है। आधुनिक समाज में व्यक्ति को समूह से अधिक प्राथमिकता मिलती है और पहचान जन्म के बजाय कार्यों (अर्जित स्थिति) से बनती है। यह पारंपरिक और स्थानीय दृष्टिकोण के स्थान पर एक विश्वजनीन दृष्टिकोण विकसित करता है। कथन 2 और 5 आधुनिकता के इन तर्कसंगत और मानवतावादी पक्षों को सही ढंग से दर्शाते हैं।

42. (A) संबंधित समूह की आर्थिक अथवा राजनीतिक स्थिति में सुधार
संस्कृतीकरण की प्रक्रिया आमतौर पर तब शुरू होती है जब किसी समूह की आर्थिक या राजनीतिक स्थिति में सुधार होता है। यह नई प्राप्त शक्ति और धन समूह को अपनी सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है। उच्च जातियों के रीति-रिवाजों को अपनाना इस नई स्थिति को सामाजिक मान्यता दिलाने का एक तरीका होता है। इस प्रकार, भौतिक उन्नति अक्सर सांस्कृतिक बदलाव की पूर्व शर्त बन जाती है।

43. (D) नए मध्य वर्ग का
औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश सरकार ने प्रशासन के लिए अंग्रेजी शिक्षित भारतीयों की एक श्रेणी तैयार की। इस प्रक्रिया ने भारत में एक 'नये मध्य वर्ग' को जन्म दिया, जिसमें वकील, डॉक्टर, शिक्षक और सरकारी कर्मचारी शामिल थे। इस वर्ग ने न केवल पश्चिमी मूल्यों को आत्मसात किया, बल्कि भारतीय समाज में सुधार लाने और बाद में राष्ट्रीय आंदोलन का नेतृत्व करने में भी मुख्य भूमिका निभाई।

धीरे-धीरे कम होने लगता है। आधुनिकता के प्रभाव में लोग धार्मिक विश्वासों के बजाय तर्क और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को अधिक महत्व देने लगते हैं। यह प्रक्रिया पारंपरिक धार्मिक संरचनाओं के कमजोर होने और सार्वजनिक जीवन में धर्म के निजीकरण की स्थिति को व्यक्त करती है।

23. (D) धर्म सभा - सती प्रथा का समर्थन
धर्म सभा का गठन राधाकांत देव ने बंगाल में किया था, जिसका मुख्य उद्देश्य सती प्रथा जैसी पारंपरिक प्रथाओं का समर्थन करना और ब्रह्म समाज के सुधारवादी प्रयासों का विरोध करना था। यह संस्था रुढ़िवादी हिंदू समाज का प्रतिनिधित्व करती थी। विकल्प (D) में सती प्रथा का समर्थन करना सही तथ्य है, लेकिन प्रश्न के संदर्भ में सुमेलित न होने का कारण इसकी नकारात्मक पहचान और विरोधी भूमिका है।

24. (A) इसमें द्विआयामी शैली और तैलीय चित्र तकनीक का मिश्रण था
राजा रवि वर्मा की चित्रकला भारतीय विषयों और यूरोपीय तैलीय चित्रण तकनीक का एक अनूठा संगम थी। उन्होंने भारतीय पौराणिक कथाओं के पात्रों को पश्चिमी अकादमिक यथार्थवाद के साथ चित्रित किया। उनकी शैली ने पारंपरिक भारतीय कला में गहराई और जीवंतता प्रदान की, जिससे वे आधुनिक भारतीय चित्रकला के अग्रदूत बने। उनके चित्रों ने आम लोगों के बीच कला की पहुँच को सुलभ और लोकप्रिय बनाया।

25. (A) केवल 1, 2 और 3
संस्कृतीकरण की प्रक्रिया के लिए संबंधित समूह की आर्थिक और राजनीतिक स्थिति में सुधार होना एक प्राथमिक शर्त मानी जाती है। इसके साथ ही, हिंदुत्व की महान-परंपराओं के किसी स्रोत, जैसे तीर्थ स्थल या धार्मिक ग्रंथों के संपर्क में आना इस प्रक्रिया को गति देता है। ये कारक मिलकर समूह को उच्च जाति के सांस्कृतिक प्रतिमानों को अपनाने और सामाजिक स्थिति को ऊँचा उठाने में सक्षम बनाते हैं।

26. (A) जोतिबा फुले
जोतिबा फुले ने भारतीय समाज के इतिहास को एक क्रांतिकारी दृष्टि से देखा। उन्होंने तर्क दिया कि आर्यों के आगमन से पूर्व का काल भारतीय समाज के लिए गरिमामय और समानता पर आधारित था। उनके अनुसार, आर्य बाहर से आए थे और उन्होंने यहाँ की मूल जनता पर अपनी श्रेष्ठता और जाति व्यवस्था थोपी। फुले के ये विचार दलित और पिछड़ी जातियों में स्वाभिमान जगाने के लिए थे।

27. (A) 2, 4, 3, 1
इन घटनाओं का सही कालक्रम बंगाल में धर्म सभा का गठन (1830), भारत में रेल का आगमन (1853), केशव चंद्र सेन का मद्रास दौरा (1864) और नागालैंड-मिजोरम में ईसाई मिशनरियों का प्रभाव (उत्तरार्ध 19वीं सदी) है। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे पहले धार्मिक प्रतिक्रियाएं हुई, फिर तकनीकी विकास आया और उसके बाद सुधारवादी विचारों का भौगोलिक विस्तार और ईसाई धर्म का प्रभाव दूरस्थ क्षेत्रों में पहुँचा।

28. (B) व्यक्ति को
आधुनिकीकरण के प्रभाव में सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर समूह या समुदाय के स्थान पर 'व्यक्ति' को प्राथमिकता दी जाने लगती है। आधुनिक मूल्य व्यक्तिगत स्वतंत्रता, अधिकारों और अर्जित प्रस्थिति पर बल देते हैं। इसमें व्यक्ति की पहचान उसके जन्म या जाति के बजाय उसकी अपनी उपलब्धियों और योग्यताओं से बनती है। यह परिवर्तन पारंपरिक सामूहिक पहचान से आधुनिक व्यक्तिगत पहचान की ओर एक बड़ा कदम है।

29. (C) बहुविवाह
जहाँआरा शाह नवास ने अखिल भारतीय मुस्लिम महिला सम्मेलन में बहुविवाह की कुप्रथा के विरुद्ध एक ऐतिहासिक प्रस्ताव प्रस्तुत किया था। उन्होंने मुस्लिम समाज में महिलाओं की गरिमा और अधिकारों की रक्षा के लिए इस प्रथा का विरोध किया। यह प्रयास दर्शाता है कि मुस्लिम महिलाएँ अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रही थीं और संगठित होकर सामाजिक सुधारों के लिए सक्रिय रूप से आवाज़ उठा रही थीं।

30. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
कंदुकीरी विरेशलिंगम ने 'द सोर्स ऑफ़ नॉलेज' जैसे कार्यों के माध्यम से वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा दिया। विष्णु शास्त्री ने 'इंदु प्रकाश' में विद्यासागर के विधवा विवाह संबंधी कार्यों का मराठी अनुवाद किया। राजा रवि वर्मा ने केरल के एक विशिष्ट परिवार का विख्यात चित्रांकन किया, जो आधुनिक शैली का उदाहरण है। जहाँआरा शाह नवास ने मुस्लिम समाज में बहुविवाह के विरुद्ध प्रभावी प्रस्ताव प्रस्तुत कर सुधार की पहल की।

31. (A) सामाजिक संस्थाओं द्वारा परिभाषित संबंधों की सतत व्यवस्था
समाजशास्त्र में सामाजिक संरचना का तात्पर्य समाज के विभिन्न अंगों, जैसे परिवार, धर्म, शिक्षा और आर्थिक संस्थाओं के बीच संबंधों के स्थिर और व्यवस्थित स्वरुप से है। यह ढांचा व्यक्तियों के व्यवहार और उनकी सामाजिक भूमिकाओं को निर्देशित करता है। यह किसी समाज की एक स्थायी विशेषता होती है जो समय के साथ निरंतर बनी रहती है, भले ही उसमें शामिल व्यक्ति बदलते रहें।

32. (B) केवल निम्न जाति के लोग पश्चिमीकरण को अपनाते हैं।
पश्चिमीकरण की प्रक्रिया समाज के सभी वर्गों को प्रभावित करती है, न कि केवल निम्न जातियों को। वास्तव में, ऐतिहासिक रुप से पश्चिमी शिक्षा और संस्कृति को पहले शहरी मध्य वर्ग और उच्च जातियों ने अपनाया था। इसके बाद इसके प्रभाव समाज के अन्य स्तरों पर फैले। यह कहना कि केवल निम्न जाति के लोग इसे अपनाते हैं, सामाजिक वास्तविकता और औपनिवेशिक भारत के इतिहास के विरुद्ध है।

33. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
सती प्रथा को रोकने के ब्रह्म समाज के प्रयासों के जवाब में रुढ़िवादियों ने धर्म सभा का गठन किया था। धर्म सभा का मुख्य उद्देश्य पारंपरिक हिंदू रीति-रिवाजों की रक्षा करना था।

से आकर्षित हुआ। उनका यह अनुभव सिद्ध करता है कि निम्न जातियाँ भी आधुनिकता और पश्चिमी जीवनशैली को अपनी सामाजिक उन्नति और पुरानी जातिगत बाधाओं को तोड़ने के एक प्रभावी माध्यम के रूप में देखती हैं।

55. (D) केशव चंद्र सेन - बंगाल
केशव चंद्र सेन बंगाल के एक प्रमुख समाज सुधारक और ब्रह्म समाज के प्रभावशाली नेता थे। उन्होंने ब्रह्म समाज के विचारों को न केवल बंगाल बल्कि पूरे भारत में फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अन्य विकल्प गलत ढंग से सुमेलित हैं: फुले महाराष्ट्र से थे, दयानंद सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी और पंडिता रमाबाई भी महाराष्ट्र और देशव्यापी सुधारों से जुड़ी थीं। विकल्प (D) ही ऐतिहासिक रूप से पूर्णतः सही है।

56. (A) इसका प्रभाव केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित रहा
पश्चिमीकरण की प्रक्रिया मुख्य रूप से शहरी क्षेत्रों और शिक्षित मध्य वर्ग से शुरु हुई थी, इसलिए इसका प्रभाव ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित नहीं था। यह प्रक्रिया तकनीकी, संस्थागत और वैचारिक परिवर्तनों का एक समावेशी रुप थी। इसने भारतीय समाज के सोचने के तरीके और जीवनशैली को व्यापक रूप से प्रभावित किया। कथन (A) गलत है क्योंकि पश्चिमीकरण के बीज शहरों में बोए गए और वहीं से यह विस्तृत हुआ।

57. (C) टेलीविजन और इंटरनेट
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधारकों ने अपने विचारों के प्रसार के लिए अखबारों, पत्रिकाओं, पुस्तकों के अनुवाद और सार्वजनिक सभाओं जैसे उपलब्ध माध्यमों का कुशलतापूर्वक उपयोग किया। उस समय टेलीविजन और इंटरनेट जैसी आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक तकनीकें अस्तित्व में नहीं थीं। सुधारकों ने प्रिंट मीडिया और रेल यात्रा के माध्यम से एक अखिल भारतीय नेटवर्क बनाया, जिससे उनके संदेश दूर-दराज के क्षेत्रों तक पहुँच सके और एक व्यापक सामाजिक चेतना का निर्माण हुआ।

58. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
एम. एन. श्रीनिवास ने संस्कृतीकरण की महत्वपूर्ण अवधारणा दी, जबकि कुमुद पावड़े ने संस्कृत शिक्षिका के रूप में अपने संघर्षपूर्ण अनुभवों को साझा किया। रजनी कोठारी ने विस्तार से बताया कि कैसे आधुनिक भारत में जाति का पंथनिरपेक्षीकरण और राजनीतिकरण हुआ है। राजा रवि वर्मा ने भारतीय कला जगत में तैलीय चित्रकला और यथार्थवादी शैली का प्रयोग कर एक नई क्रांति लाई। ये सभी व्यक्तित्व भारतीय समाज और संस्कृति के विभिन्न पहलुओं के ज्ञाता रहे हैं।

59. (D) कुमुद पावड़े
यह अत्यंत मार्मिक और यथार्थवादी कथन कुमुद पावड़े के जीवन अनुभवों पर आधारित है। एक दलित महिला के रूप में संस्कृत सीखने और उसे पढ़ाने के दौरान उन्होंने महसूस किया कि जाति एक ऐसी गहरी पहचान है जो व्यक्ति के जन्म से जुड़ी होती है और तमाम शैक्षिक उपलब्धियों के बावजूद समाज उसे भूलने नहीं देता। उनका यह अनुभव भारतीय समाज में जाति व्यवस्था की जड़ों की मजबूती और उसके मनोवैज्ञानिक प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

60. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संस्कृतीकरण की आलोचना अक्सर इसलिए की जाती है क्योंकि यह समाज में किसी वास्तविक संरचनात्मक बदलाव के बजाय केवल समूहों की स्थिति में बदलाव लाता है। यह प्रक्रिया जाति व्यवस्था के बुनियादी ढांचे को चुनौती नहीं देती, बल्कि उसे और मजबूत करती है क्योंकि यह उच्च जातियों के आदर्शों को ही श्रेष्ठ मानती है। अतः, यह कहना सही है कि यह सामाजिक गतिशीलता के प्रभाव को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करती है, जबकि मूल असमानता वैसी ही रहती है।

61. (C) भारतीय भाषाओं से संस्कृत के शब्दों एवं मुहावरों को हटाने के प्रयास
बीसवीं शताब्दी में विकसित क्षेत्रीय स्वचेतना और ब्राह्मण-विरोधी आंदोलनों ने सांस्कृतिक अस्मिता को फिर से परिभाषित करने का प्रयास किया। इन आंदोलनों के तहत कई क्षेत्रीय भाषाओं को संस्कृत के प्रभाव से मुक्त करने की कोशिश की गई। विचार यह था कि स्थानीय भाषाओं के मूल स्वरूप को बहाल किया जाए और उच्च जाति के वर्चस्व को दर्शाने वाले शब्दों या मुहावरों को हटाया जाए। यह भाषाई शुद्धता और सामाजिक स्वाभिमान की एक बड़ी लहर थी।

62. (D) कार्य का परिवार और समुदाय से अलग होना
आधुनिकता की एक प्रमुख विशेषता यह है कि कार्य या व्यवसाय व्यक्ति की पारिवारिक पृष्ठभूमि या जातिगत पहचान से स्वतंत्र हो जाता है। पारंपरिक समाज में व्यवसाय अक्सर जन्म से निर्धारित होते थे, लेकिन आधुनिक व्यवस्था में व्यक्ति अपनी रुचि और शिक्षा के आधार पर अपना पेशा चुनने के लिए स्वतंत्र होता है। यह अलगाव न केवल व्यक्तिगत स्वतंत्रता को बढ़ाता है, बल्कि समाज में दक्षता और योग्यता पर आधारित एक नई व्यावसायिक संरचना का निर्माण करता है।

63. (A) केवल 1, 2 और 3
भारत में पश्चिमीकरण के भौतिक प्रभाव सबसे पहले घरेलू उपकरणों और रहन-सहन में देखे गए। टेलीविजन, फ्रिज, सोफा सेट, डाइनिंग टेबल और पश्चिमी पहनावा आधुनिक जीवनशैली के प्रतीक बन गए। ये वस्तुएं न केवल सुविधा के लिए थीं, बल्कि सामाजिक प्रतिष्ठा और प्रस्थिति को दर्शाने का माध्यम भी बन गईं। कथन 4 और 5 गलत हैं क्योंकि पश्चिमीकरण केवल विचारधारा या तकनीक तक सीमित नहीं था, बल्कि यह एक समग्र सांस्कृतिक प्रभाव था।

64. (B) विष्णु शास्त्री
विष्णु शास्त्री चिपलूणकर ने ईश्वर चंद्र विद्यासागर द्वारा लिखित विधवा विवाह संबंधी पुस्तक का मराठी में अनुवाद किया और उसे 'इंदु प्रकाश' में प्रकाशित किया। इस कार्य ने बंगाल के सुधारवादी विचारों को महाराष्ट्र के व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँचाया। यह प्रयास दर्शाता है कि कैसे उन्नीसवीं सदी के सुधारक भाषाई सीमाओं को तोड़कर एक-दूसरे के विचारों से जुड़ रहे थे और सामाजिक बदलाव के लिए एक राष्ट्रीय बौद्धिक आधार तैयार कर रहे थे।

दिशाओं से समाज को प्रभावित करती हैं, लेकिन कथन 5 गलत है क्योंकि ये प्रक्रियाएं एक-दूसरे से पूरी तरह स्वतंत्र नहीं हैं। अक्सर ये प्रक्रियाएं एक-दूसरे को ओवरलैप करती हैं और एक साथ कार्य करती हैं। उदाहरण के लिए, पश्चिमी शिक्षा (पश्चिमीकरण) अक्सर पंथनिरपेक्षीकरण की सोच को बढ़ावा देती है। अतः पहली चार परिभाषाएँ ही सामाजिक परिवर्तन का सही चित्रण करती हैं।

141. (C) जीवन के विभिन्न क्षेत्रों पर धर्म के प्रभाव का कम होना
समाजशास्त्र में 'पंथनिरपेक्षता' या 'लौकिकीकरण' उस प्रक्रिया को कहते हैं जिसमें सामाजिक संस्थानों और लोगों के दैनिक व्यवहार पर धर्म का पारंपरिक नियंत्रण और प्रभाव धीरे-धीरे कम होने लगता है। आधुनिक समाज में राजनीति, शिक्षा, कानून और विज्ञान जैसे क्षेत्र धार्मिक सिद्धांतों के बजाय तर्क और धर्मनिरपेक्ष नियमों द्वारा संचालित होते हैं। धर्म का स्थान अब सार्वजनिक जीवन के बजाय व्यक्तिगत विश्वास तक सीमित हो जाता है। यह प्रक्रिया आधुनिक और तार्किक समाज के निर्माण का एक अनिवार्य हिस्सा मानी जाती है।

142. (D) नवीन विचारों को तीव्र गति प्रदान करने में सहायता मिली।
औपनिवेशिक काल में रेल, टेलीग्राफ़ और प्रिंटिंग प्रेस जैसे संचार माध्यमों के विकास ने भारत के विभिन्न कोनों में रहने वाले लोगों और उनके विचारों को आपस में जोड़ा। समाज सुधारकों ने इन साधनों का उपयोग अपने प्रगतिशील संदेशों को तेजी से फैलाने के लिए किया। इससे सुधार आंदोलनों को एक राष्ट्रव्यापी स्वरूप मिला और नवीन विचारों के आदान-प्रदान से बौद्धिक क्रांति को गति मिली। तकनीक ने भौगोलिक बाधाओं को पार कर एक साझा सामाजिक और राजनीतिक चेतना के निर्माण में ऐतिहासिक योगदान दिया।

143. (A) उनके बीच कुछ विषयगत समानताएँ और महत्वपूर्ण असहमतियाँ दोनों थीं।
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधारकों के बीच महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक कुरीतियों को दूर करने जैसे विषयों पर व्यापक सहमति थी, लेकिन उनके रास्तों और ऐतिहासिक व्याख्याओं में गहरी असहमतियाँ भी थीं। उदाहरण के लिए, फुले ने पूर्व-आर्य काल को श्रेष्ठ माना, जबकि तिलक ने आर्य युग का समर्थन किया। यह विविधता दर्शाती है कि सुधार आंदोलन कोई एकरूपी प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि यह विभिन्न बौद्धिक धाराओं और क्षेत्रीय परिप्रेक्ष्यों का एक जीवंत और बहसपूर्ण संगम था, जिसने समाज को झकझोरा।

144. (B) शिल्प, तकनीकी योग्यता और औषधियों का ज्ञान
संस्कृतीकरण की आलोचना का एक बड़ा आधार यह है कि इसमें उच्च जातियों के रीति-रिवाजों को श्रेष्ठ मानकर दलितों के बहुमूल्य व्यावहारिक ज्ञान को निम्न श्रेणी का करार दिया जाता है। दलितों के पास पारंपरिक रूप से शिल्पकारी, विभिन्न तकनीकी कौशल और औषधीय पौधों का जो समृद्ध ज्ञान रहा है, उसे इस प्रक्रिया में उपेक्षित कर दिया जाता है। यह न केवल सांस्कृतिक नुकसान है, बल्कि समाज के एक बड़े हिस्से के बौद्धिक और श्रम आधारित योगदान को भी सामाजिक प्रतिष्ठा के पदानुक्रम में अपमानित करता है।

145. (B) केरल के थिय्या
केरल का थिय्या समुदाय संस्कृतीकरण और पश्चिमीकरण के बीच के चुनाव का एक अनूठा उदाहरण है। हालांकि वे पारंपरिक रूप से 'द्विज' श्रेणी में नहीं आते थे, लेकिन उन्होंने अपनी सामाजिक उन्नति के लिए संस्कृत रीति-रिवाजों के बजाय ब्रिटिश संस्कृति और पश्चिमी शिक्षा को प्राथमिकता दी। उनका यह निर्णय दर्शाता है कि निम्न जातियाँ भी आधुनिकता को अपनी मुक्ति और पुरानी बाधाओं को तोड़ने के एक अधिक सशक्त और स्वतंत्र मार्ग के रूप में देख सकती हैं, जो सामाजिक बदलाव का एक वैकल्पिक मॉडल है।

146. (B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
भारतीय संदर्भ में यह बिल्कुल संभव है कि एक ही व्यक्ति व्यावसायिक क्षेत्र में आधुनिक हो और निजी जीवन में पारंपरिक। यह स्थिति दर्शाती है कि आधुनिकता और परंपरा का सह-अस्तित्व एक सामान्य सामाजिक हकीकत है। हालांकि कारण (R) यह नहीं बताता कि ऐसा क्यों होता है, बल्कि यह केवल इस स्थिति को गैर-पाश्चात्य देशों के लिए स्वाभाविक मान लेता है। यह विरोधाभास आधुनिक पहचान के निर्माण की जटिलता को व्यक्त करता है, जहाँ लोग अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग मूल्य प्रणालियों का सफलतापूर्वक उपयोग करते हैं।

147. (C) महिलाओं और निम्न जातियों से संबंधित सुधार
उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के लगभग सभी समाज सुधार आंदोलन मुख्य रूप से दो प्रमुख वर्गों की समस्याओं पर केंद्रित थे: महिलाएँ और निम्न जातियाँ। इन आंदोलनों ने सती प्रथा, बाल विवाह और विधवाओं की दयनीय स्थिति के विरुद्ध आवाज़ उठाई, साथ ही जातिगत भेदभाव और छुआछूत जैसी सामाजिक बुराइयों को जड़ से मिटाने का प्रयास किया। इन दो श्रेणियों में सुधार लाकर ही एक न्यायपूर्ण और आधुनिक भारतीय समाज की कल्पना की गई थी, जिसने भविष्य के लोकतांत्रिक भारत का मार्ग प्रशस्त किया।

148. (D) अर्जित उपलब्धियों से
आधुनिकता के सिद्धांतों के अनुसार, किसी व्यक्ति की पहचान और समाज में उसकी स्थिति उसके जन्म, परिवार या जाति (प्रदत्त स्थिति) से निर्धारित नहीं होनी चाहिए। इसके बजाय, व्यक्ति की पहचान उसकी शिक्षा, कौशल, कड़ी मेहनत और व्यक्तिगत उपलब्धियों (अर्जित स्थिति) के आधार पर बननी चाहिए। यह दृष्टिकोण सामाजिक गतिशीलता को बढ़ावा देता है और प्रत्येक व्यक्ति को अपनी योग्यता के अनुसार प्रगति करने का समान अवसर प्रदान करता है। यह सामूहिक पहचान के स्थान पर व्यक्तिगत योग्यता और गरिमा को सर्वोच्च प्राथमिकता देता है।

149. (C) अंग्रेज़ी
उत्तर-पूर्वी भारत के विभिन्न जनजातीय समूहों और क्षेत्रों में पश्चिमी शिक्षा के प्रसार के साथ, अंग्रेजी भाषा एक साझा संपर्क और प्रशासकीय भाषा के रूप में उभरी। चूंकि इस क्षेत्र में अनेक स्थानीय भाषाएँ और बोलियाँ थीं, इसलिए अंग्रेजी ने विभिन्न समूहों के बीच एक सेतु का कार्य किया। यहाँ के शिक्षित मध्य

सुधारकों जैसे राजा राममोहन राय और सर सैयद अहमद खान ने भी अपने सुधारवादी विचारों को धार्मिक और शास्त्रीय आधार प्रदान किया था ताकि समाज में उनकी स्वीकार्यता बढ़े। वीरेशलिंगम का कार्य वैज्ञानिक चेतना के प्रसार से जुड़ा था।

75. (B) केवल 2 और 3
संस्कृतीकरण की आलोचना अक्सर इसलिए की जाती है क्योंकि इसके कारण कई समुदायों ने कन्यामूल्य की जगह दहेज प्रथा को अपना लिया, जो महिलाओं की स्थिति के लिए नुकसानदेह साबित हुआ। इसके अलावा, इस प्रक्रिया में दलितों के पारंपरिक शिल्प, तकनीकी कौशल और औषधीय ज्ञान को अक्सर 'पिछड़ा' या निम्न मानकर उपेक्षित कर दिया जाता है। ये बिंदु स्पष्ट करते हैं कि उच्च जाति के अनुकरण के प्रयास में अक्सर समाज के कई मूल्यवान और समानतापूर्ण तत्वों का नुकसान हो जाता है।

76. (B) अनोखे और विरोधाभासी
औपनिवेशिक शासन के कारण भारत में हुए परिवर्तन अत्यंत जटिल, अनोखे और विरोधाभासी प्रकृति के थे। एक ओर जहाँ ब्रिटिश शासन ने शोषण और अधीनता को बढ़ावा दिया, वहीं दूसरी ओर उसने आधुनिक शिक्षा, तकनीक और लोकतंत्र के विचारों का भी परिचय कराया। पश्चिमी शिक्षा ने भारतीयों में स्व-शासन और स्वतंत्रता की आकांक्षा जगाई, जिससे अंततः औपनिवेशिक शासन को ही चुनौती मिली। यह विरोधाभास आधुनिक भारतीय इतिहास और समाज के निर्माण का एक अनिवार्य हिस्सा रहा है।

77. (C) ये त्योहार संपत्ति और प्रस्थिति के प्रदर्शन का अवसर बन गए हैं।
वर्तमान समय में पारंपरिक त्योहारों का पंथनिरपेक्षीकरण हो गया है, जिसका अर्थ है कि उनका धार्मिक महत्व कम हो गया है और वे सामाजिक प्रदर्शन का माध्यम अधिक बन गए हैं। लोग अब इन त्योहारों का उपयोग अपनी आर्थिक शक्ति, संपत्ति और प्रस्थिति को दिखाने के लिए करते हैं। अनुष्ठान अब केवल भक्ति के माध्यम नहीं रहे, बल्कि वे आधुनिक उपभोक्ता संस्कृति और प्रस्थिति की होड़ का हिस्सा बन गए हैं, जो समाज में एक नया बदलाव है।

78. (D) यह पश्चिमी अनुभव से गुणात्मक रूप से भिन्न लगता है।
भारत में आधुनिकीकरण का अनुभव पश्चिमी देशों की तुलना में काफी अलग रहा है। यहाँ आधुनिकता सीधे तौर पर नहीं आई, बल्कि औपनिवेशिक शासन और प्राचीन परंपराओं के साथ संघर्ष के माध्यम से विकसित हुई। भारतीय आधुनिकता में परंपरा को पूरी तरह नकारा नहीं गया, बल्कि उसकी पुनर्व्याख्या की गई। यह पश्चिमी मॉडल की केवल नकल नहीं है, बल्कि भारतीय परिस्थितियों और संस्कृति के अनुकूल ढाला गया एक विशिष्ट स्वरूप है जो अपने विकास में अनोखा है।

79. (A) आर्य समाज
आर्य समाज उन्नीसवीं सदी का एक प्रमुख समाज सुधार आंदोलन था, जिसकी स्थापना स्वामी दयानंद सरस्वती ने की थी। इसका मुख्य उद्देश्य हिंदू समाज से मूर्ति पूजा, जातिवाद और बाल विवाह जैसी कुरीतियों को मिटाना और वेदों की ओर लौटना था। खिलाफत और भारत छोड़ो राजनीतिक आंदोलन थे, जबकि नक्सलबाड़ी आंदोलन एक क्रांतिकारी कृषक विद्रोह था। आर्य समाज ने धार्मिक शुद्धिकरण के साथ-साथ शिक्षा और सामाजिक समानता के क्षेत्र में व्यापक सुधार लाने का कार्य किया था।

80. (B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
भारत में जाति के पंथनिरपेक्षीकरण पर व्यापक बहस हुई है, क्योंकि आधुनिक राजनीति में जाति अब एक दबाव समूह के रूप में कार्य करती है। पारंपरिक समाज में जाति निश्चित रूप से धार्मिक शुद्धता और अपवित्रता के नियमों से बंधी थी। हालांकि, अभिकथन (A) का मुख्य कारण जाति का आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था और शक्ति संघर्ष में रूपांतरण है, न कि केवल उसकी पुरानी धार्मिक जड़ें। दोनों कथन सत्य हैं, लेकिन वे जाति के अलग-अलग ऐतिहासिक और आधुनिक पक्षों को दर्शाते हैं।

81. (B) पश्चिमी उदारवाद और प्राचीन साहित्य की नयी दृष्टि
उन्नीसवीं सदी के सुधारकों के विचार केवल बाहरी नकल नहीं थे, बल्कि वे पश्चिमी उदारवादी मूल्यों और प्राचीन भारतीय शास्त्रों की वैज्ञानिक एवं मानवीय पुनर्व्याख्या का संगम थे। उन्होंने यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि सुधार के विचार भारतीय संस्कृति के मूल तत्वों के विरुद्ध नहीं हैं। इस मिश्रित दृष्टिकोण ने उन्हें समाज के रूढ़िवादी वर्गों और आधुनिक शिक्षित वर्ग दोनों से जुड़ने और प्रभावी ढंग से अपनी बात रखने में सहायता प्रदान की।

82. (A) जहाँ उच्चस्तरीय सांस्कृतिक जातियाँ प्रभुत्वशाली थीं।
संस्कृतीकरण की प्रक्रिया उन क्षेत्रों में सबसे अधिक प्रभावी होती है जहाँ ब्राह्मण या अन्य 'द्विज' जातियाँ सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से प्रभुत्वशाली रही हैं। उन क्षेत्रों में निम्न जातियों के पास अनुकरण के लिए उच्च जातियों का एक स्पष्ट और प्रतिष्ठित मॉडल मौजूद होता है। ऐसी स्थितियों में, उच्च जातियों की जीवनशैली और अनुष्ठानों को अपनाने से सामाजिक प्रतिष्ठा प्राप्त होने की संभावना अधिक रहती है, जिससे संस्कृतीकरण की प्रवृत्ति को बल मिलता है और गति मिलती है।

83. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
राजा राममोहन राय ने समाज सुधार आंदोलनों की शुरुआत की, जबकि एम. एन. श्रीनिवास ने संस्कृतीकरण और ब्रिटिश शासन के संदर्भ में पश्चिमीकरण की अवधारणाओं को विस्तार से समझाया। रुडॉल्फ और रुडॉल्फ ने आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का विश्लेषण करते हुए बताया कि कैसे पारंपरिक संस्थाएं आधुनिक राजनीति में ढल जाती हैं। ये सभी विद्वान भारतीय सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन की जटिल परतों को समझने के लिए अलग-अलग दृष्टिकोण और महत्वपूर्ण सैद्धांतिक ढांचे प्रदान करते हैं।

103. (B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीयों को पश्चिम के स्वतंत्रता और समानता जैसे आधुनिक विचारों से परिचित कराया, जिससे उनमें प्रगति की इच्छा जगी। उसी समय, औपनिवेशिक शासन के भेदभावपूर्ण व्यवहार ने उनके स्वाभिमान को ठेस पहुँचाई, जिसने राष्ट्रवाद की भावना को जन्म दिया। हालाँकि ये दोनों तथ्य सत्य हैं, कारण (R) यह स्पष्ट नहीं करता कि भारतीयों ने उदार-प्रजातंत्र को कैसे जाना, बल्कि यह उस शिक्षा के भावनात्मक और राजनीतिक परिणामों की व्याख्या अधिक करता है जो स्वतंत्र हैं।

104. (A) यह देश के सभी हिस्सों में एक ही ढंग से होती है।
संस्कृतीकरण की प्रक्रिया में क्षेत्रीय विविधताएँ पाई जाती हैं और यह देश के सभी हिस्सों में एक समान नहीं होती। किसी क्षेत्र में अनुकरण का मॉडल ब्राह्मण हो सकते हैं, तो कहीं कोई अन्य प्रभुत्वशाली जाति। इसकी गति और स्वरूप स्थानीय सामाजिक परिस्थितियों और इतिहास पर निर्भर करता है। अन्य विकल्प सही हैं क्योंकि यह निम्न जातियों द्वारा उच्च जातियों का अनुकरण है, इसके प्रभाव साहित्य पर भी पड़ते हैं और यह गैर-हिंदू समुदायों में भी किसी न किसी रूप में दिखाई देता है।

105. (C) समाज के उत्थान के लिए महिलाओं का शिक्षित होना आवश्यक है।
उन्नीसवीं सदी के लगभग सभी समाज सुधारक इस बात पर सहमत थे कि एक प्रगतिशील समाज के निर्माण के लिए महिलाओं की शिक्षा अनिवार्य है। उनका मानना था कि शिक्षित महिलाएँ परिवार को बेहतर ढंग से संभाल सकती हैं और समाज से अंधविश्वासों को दूर करने में मदद कर सकती हैं। उन्होंने महिला शिक्षा को किसी विलासिता के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय उन्नति के एक मौलिक स्तंभ के रूप में देखा और इसके लिए अनेक स्कूल स्थापित किए।

106. (A) यह दलित संस्कृति और ज्ञान को महत्वहीन मानती है।
संस्कृतीकरण की एक प्रमुख आलोचना यह है कि यह दलितों के पारंपरिक कौशल, तकनीकी ज्ञान और उनकी विशिष्ट संस्कृति को उपेक्षित कर देती है। इस प्रक्रिया में ऐसा मान लिया जाता है कि उच्च जातियों की जीवनशैली ही श्रेष्ठ है और निम्न जातियों को अपनी पहचान छोड़कर उसे अपनाना चाहिए। यह दृष्टिकोण सांस्कृतिक विविधता को कम करता है और दलितों के अपने आत्मसम्मान और समृद्ध विरासत को नुकसान पहुँचाता है, जो सामाजिक न्याय के आधुनिक मूल्यों के विपरीत है।

107. (C) P-4, Q-3, R-1, S-2
पंडिता रमाबाई ने महिला सुधारों के लिए देश भर का दौरा किया, जबकि सर सैयद अहमद खान ने कुरान की आधुनिक और वैज्ञानिक व्याख्या की। कंदुकीरी विरेशलिंगम आंध्र प्रदेश के महान समाज सुधारक थे। महादेव गोविंद रानाडे ने विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में शास्त्रों का गहरा अध्ययन और समर्थन प्रस्तुत किया। ये सभी सुधारक अपने-अपने क्षेत्रों और वैचारिक योगदानों के माध्यम से भारतीय समाज में आधुनिकता और न्याय की चेतना लाने के लिए समर्पित थे, जो ऐतिहासिक है।

108. (B) आधुनिकता और परंपरा का मिश्रण
यह उदाहरण भारतीय मध्य वर्ग की उस विशिष्ट स्थिति को दर्शाता है जहाँ बाहरी पहनावा (कपड़े) आधुनिक या पश्चिमी हो सकता है, लेकिन आंतरिक जीवन और संस्कार पारंपरिक बने रहते हैं। यह 'हाइब्रिडिटी' या मिश्रण औपनिवेशिक भारत की एक प्रमुख विशेषता थी। लोग आधुनिक सुविधाओं और शिक्षा को अपना रहे थे, लेकिन अपनी सांस्कृतिक जड़ों और पारिवारिक मूल्यों को भी साथ लेकर चल रहे थे। यह विरोधाभासी दिखने वाला समन्वय आधुनिक भारतीय पहचान का एक अभिन्न हिस्सा बन गया।

109. (C) औपनिवेशिक शासन
भारत में आधुनिक पूँजीवाद का उदय और विकास मुख्य रूप से औपनिवेशिक शासन के दौरान हुआ। ब्रिटिश शासन ने नई आर्थिक नीतियां, आधुनिक बैंकिंग, रेल यातायात और औद्योगिक उत्पादन प्रणालियाँ शुरू कीं। हालांकि भारत में पहले भी व्यापारिक पूँजीवाद मौजूद था, लेकिन औद्योगिक पूँजीवाद का वर्तमान ढांचा और वैश्विक बाजार से जुड़ाव ब्रिटिश शासन के प्रभाव में ही विकसित हुआ। इसने भारतीय अर्थव्यवस्था और समाज में दूरगामी संरचनात्मक परिवर्तन लाए, जो पूँजीवादी विकास की आधारशिला बने।

110. (D) विसंस्कृतीकरण - गैर-संस्कृत प्रभुत्वशाली जाति का प्रभाव
विसंस्कृतीकरण वह प्रक्रिया है जहाँ उन क्षेत्रों में जहाँ गैर-संस्कृत जातियाँ प्रभुत्वशाली होती हैं, उनकी संस्कृति का प्रभाव अन्य समूहों पर पड़ता है। यह संस्कृतीकरण के विपरीत है। अन्य विकल्प गलत हैं: पंथनिरपेक्षीकरण धर्म के प्रभाव में कमी है, आधुनिकीकरण तर्क और विज्ञान पर आधारित है न कि भाग्यवाद पर, और संस्कृतीकरण केवल स्थिति परिवर्तन लाता है, न कि संरचनात्मक। अतः विकल्प (D) ही सही अवधारणा और उसके अर्थ का सही मिलान प्रस्तुत करता है।

111. (A) राजा रवि वर्मा
राजा रवि वर्मा एक ऐसे कलाकार थे जिन्होंने भारतीय चित्रकला में आधुनिकता की नींव रखी। उन्होंने यूरोपीय तैलीय चित्रण तकनीक का उपयोग करके भारतीय पौराणिक विषयों और पात्रों को चित्रित किया। उनकी कला शैली में यथार्थवाद और पश्चिमी अकादमिक प्रभाव स्पष्ट था, जिससे उन्होंने भारतीय कला को एक नई पहचान दी। उनके चित्रों ने आम लोगों के बीच कला की पहुँच बढ़ाई और औपनिवेशिक काल की एक विशिष्ट सौंदर्यबोध शैली विकसित की, जो आज भी अत्यंत लोकप्रिय है।

112. (B) केवल 2
भारतीय समाज में सामाजिक परिवर्तन अत्यंत जटिल हैं और यहाँ आधुनिकता व परंपरा अक्सर एक साथ मौजूद रहती हैं। एक ही व्यक्ति कार्यस्थल पर आधुनिक मूल्यों का पालन कर सकता है और घर पर पारंपरिक रीति-रिवाजों का। अन्य कथन गलत हैं: संस्कृतीकरण और पश्चिमीकरण अक्सर जुड़े हो सकते हैं, आधुनिकीकरण केवल पश्चिमीकरण नहीं है बल्कि एक व्यापक वैचारिक परिवर्तन है, और ये प्रक्रियाएँ देश के सभी

लोगों के सांस्कृतिक व्यवहारों, जैसे पहनावे, भाषा और खान-पान में भी बदलाव लाया। ये दोनों प्रक्रियाएं आपस में जुड़ी हुई थीं और इन्होंने मिलकर एक आधुनिक भारतीय पहचान और समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

94. (B) केवल 2 और 3
आधुनिकता और परंपरा हमेशा एक-दूसरे के विरोधी नहीं होते, बल्कि आधुनिकता अक्सर परंपरा की पुनर्व्याख्या करने का अवसर प्रदान करती है। भारतीय समाज में संस्कृति और परंपरा दोनों ही सजीव हैं, जो समय के साथ बदलती रहती हैं। आधुनिक शिक्षा और मूल्यों ने भारतीयों को अपनी परंपराओं के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों पर विचार करने के लिए प्रेरित किया। कथन 1 और 4 गलत हैं क्योंकि परंपरा स्थिर नहीं होती और मानव अपनी चेतना से इसमें निरंतर बदलाव लाता रहता है।

95. (A) उपरोक्त सभी
प्रिंटिंग प्रेस, टेलीग्राफ़ और रेल जैसी प्रौद्योगिकियों ने औपनिवेशिक भारत में आधुनिकता की नींव रखी। प्रिंटिंग प्रेस ने विचारों के व्यापक प्रसार को सुलभ बनाया, टेलीग्राफ़ ने संदेश भेजने की गति बढ़ाई और रेल ने देश के विभिन्न हिस्सों के लोगों को आपस में जोड़ा। इन तकनीकों के मेल ने न केवल प्रशासन को सरल बनाया, बल्कि समाज सुधारकों और राष्ट्रवादियों को भी एक साझा मंच और तीव्र संचार की सुविधा प्रदान की, जिससे सामाजिक परिवर्तन त्वरित हुए।

96. (B) यह पवित्रता और अपवित्रता के जातिगत पक्षों को उपयुक्त मानती है
संस्कृतीकरण की आलोचना इसलिए की जाती है क्योंकि यह जाति व्यवस्था के बुनियादी सिद्धांतों, जैसे पवित्रता और अपवित्रता की धारणा को चुनौती देने के बजाय उसे स्वीकार कर लेती है। यह प्रक्रिया मानती है कि उच्च जातियों की जीवनशैली श्रेष्ठ है और दूसरों को उसे अपनाना चाहिए। इस प्रकार, यह व्यवस्था के भीतर असमानता और भेदभाव को ही सही ठहराती है। यह दलितों की अपनी मूल संस्कृति को निम्न मानकर उसे छोड़ने की वकालत करती है, जो भेदभावपूर्ण है।

97. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
राजा राममोहन राय सती प्रथा के विरोध के सबसे बड़े प्रतीक हैं, जबकि 'अंजुमन-ए-ख्वातीन-ए-इस्लाम' मुस्लिम महिलाओं के अधिकारों के लिए संगठित पहली बड़ी संस्था थी। संस्कृतीकरण की अवधारणा निम्न जातियों द्वारा उच्च जातियों के रीति-रिवाजों को अपनाने की प्रक्रिया को समझाती है। पश्चिमीकरण ब्रिटिश शासन के व्यापक सांस्कृतिक और संरचनात्मक प्रभावों को व्यक्त करता है। ये सभी तत्व भारतीय समाज में आए ऐतिहासिक और सामाजिक बदलावों के विभिन्न महत्वपूर्ण पड़ावों को दर्शाते हैं।

98. (A) फुले ने पूर्व-आर्य काल को अच्छा माना, जबकि तिलक ने आर्य युग को गरिमामय माना।
जोतिबा फुले और बाल गंगाधर तिलक के बीच भारतीय इतिहास और संस्कृति की व्याख्या को लेकर गहरा मतभेद था। फुले का मानना था कि आर्य बाहर से आए आक्रांता थे जिन्होंने स्थानीय लोगों को गुलाम बनाया, इसलिए वे पूर्व-आर्य काल को समानता का युग मानते थे। इसके विपरीत, तिलक ने आर्य संस्कृति को भारतीय सभ्यता का गौरवशाली आधार माना और वेदों के युग को सर्वश्रेष्ठ ठहराया। यह वैचारिक अंतर उनके समाज सुधार और राजनीतिक दृष्टिकोण को भी प्रभावित करता था।

99. (C) वे जातियाँ जिन्हें दूसरा जन्म (उपनयन संस्कार) का अधिकार है
'द्विज' का शाब्दिक अर्थ है 'दो बार जन्मा हुआ'। हिंदू वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को 'द्विज' माना जाता है, क्योंकि वे उपनयन संस्कार के माध्यम से अपना दूसरा या आध्यात्मिक जन्म प्राप्त करते हैं। संस्कृतीकरण की प्रक्रिया में निम्न जातियाँ अक्सर इन्हीं द्विज जातियों के रीति-रिवाजों, जैसे जनेऊ धारण करना या शाकाहार अपनाना, का अनुकरण करती हैं। यह शब्द पारंपरिक सामाजिक संस्तरण में उच्च धार्मिक और सांस्कृतिक प्रस्थिति का सूचक माना जाता है।

100. (A) केवल 1, 3 और 4
पश्चिमीकरण में उपकरण और पहनावे जैसे बाह्य तत्वों का अनुकरण शामिल है और इसने भारतीय कला व साहित्य को गहराई से प्रभावित किया। मध्य वर्ग के घरों में सोफा सेट और अन्य सामान का आना इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। कथन 2 गलत है क्योंकि पश्चिमीकरण हमेशा लोकतांत्रिक मूल्यों की गारंटी नहीं देता। कथन 5 भी गलत है क्योंकि संस्कृतीकरण मुख्य रूप से निम्न जातियों द्वारा अपनी स्थिति सुधारने के लिए अपनाया जाता है, न कि उच्च जातियों द्वारा, जो पहले से ही उस स्थिति में हैं।

101. (C) आधुनिक सिद्धांत और प्राचीन शास्त्र दोनों
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधारकों ने अपने तर्कों को मजबूती देने के लिए एक मिश्रित दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने पश्चिमी उदारवाद, मानवतावाद और तर्कसंगत आधुनिक सिद्धांतों का उपयोग किया, साथ ही भारतीय प्राचीन शास्त्रों की नई और प्रगतिशील व्याख्याएं प्रस्तुत कीं। उन्होंने यह दिखाया कि सती प्रथा या बाल विवाह जैसी बुराइयां मूल धर्मग्रंथों का हिस्सा नहीं हैं। इस दोहरे दृष्टिकोण ने उन्हें शिक्षित वर्ग और धार्मिक समाज दोनों के बीच प्रभावी ढंग से अपनी बात रखने में मदद की।

102. (B) मद्रास
केशव चंद्र सेन ने 1864 में मद्रास (अब चेन्नई) का दौरा किया था। उनका यह दौरा दक्षिण भारत में ब्रह्म समाज के विचारों को फैलाने और वहाँ के समाज सुधारकों को प्रेरित करने में बहुत महत्वपूर्ण साबित हुआ। उनके प्रभावशाली भाषणों और उदारवादी दृष्टिकोण ने मद्रास के शिक्षित वर्ग में सामाजिक बदलाव की एक नई लहर पैदा की। यह यात्रा दर्शाती है कि कैसे बंगाल के सुधार आंदोलन का प्रभाव देश के अन्य सुदूर क्षेत्रों तक भी संगठित रूप से पहुँच रहा था।

65. (B) धर्म सभा
धर्म सभा वास्तव में एक समाज सुधार आंदोलन नहीं था, बल्कि यह सुधारों के विरोध में गठित एक रूढ़िवादी संस्था थी। इसकी स्थापना राजा राममोहन राय के प्रगतिशील विचारों और ब्रह्म समाज के प्रयासों को रोकने के लिए की गई थी। इसके विपरीत, ब्रह्म समाज, आर्य समाज और प्रार्थना समाज ने सक्रिय रूप से सामाजिक कुरीतियों को मिटाने और समाज में आधुनिकता लाने का कार्य किया। अतः धर्म सभा को यथास्थितिवादी या प्रतिक्रियावादी समूह माना जाता है।

66. (A) एक ही व्यक्ति एक स्थिति में आधुनिक और दूसरी में पारंपरिक हो सकता है।
भारतीय समाज में आधुनिकता और परंपरा का एक अनूठा संगम पाया जाता है। अक्सर लोग कार्यस्थल पर आधुनिक तकनीक और मूल्यों का उपयोग करते हैं, लेकिन घर पर वे पूरी तरह से पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन करते हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि सामाजिक परिवर्तन कोई सरल रेखा नहीं है, बल्कि यह जटिल और संदर्भ-आधारित होता है। व्यक्ति अपनी सुविधा और सामाजिक आवश्यकताओं के अनुसार दोनों भूमिकाओं को एक साथ निभा सकता है, जो सामान्य है।

67. (C) यूरोप के पुनर्जागरण, सुधार आंदोलन और प्रबोधन से उत्पन्न साहित्य
उन्नीसवीं सदी की नई अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली ने भारतीय छात्रों को यूरोपीय पुनर्जागरण, प्रबोधन और सुधार आंदोलनों के क्रांतिकारी साहित्य से परिचित कराया। इस साहित्य ने तर्कवाद, व्यक्तिवाद और स्वतंत्रता के आधुनिक मूल्यों पर बल दिया। इन विचारों ने शिक्षित भारतीयों की सोच में गहरा बदलाव लाया और उन्हें अपने समाज की कुरीतियों के विरुद्ध खड़े होने के लिए प्रेरित किया। यही वह बौद्धिक आधार था जिस पर आधुनिक भारतीय समाज सुधार आंदोलनों की इमारत खड़ी हुई।

68. (A) 2, 3, 1, 4
इन सुधारकों और विचारकों का कालक्रम राजा राममोहन राय (उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ) से शुरू होता है, उसके बाद जोतिबा फुले (उन्नीसवीं सदी का उत्तरार्ध) आते हैं। एम. एन. श्रीनिवास बीसवीं सदी के मध्य के समाजशास्त्री थे जिन्होंने सांस्कृतिक परिवर्तन के सिद्धांत दिए। सतीश सबरवाल समकालीन समय के समाजशास्त्री हैं जिन्होंने ऐतिहासिक संदर्भों में भारतीय समाज के परिवर्तनों का विश्लेषण किया है। यह क्रम भारतीय सामाजिक चिंतन के विकास के विभिन्न चरणों को स्पष्ट करता है।

69. (C) ब्रह्म समाज
संगठनों के नए स्वरूप से तात्पर्य उन स्वैच्छिक संस्थाओं से है जो किसी विशिष्ट सामाजिक उद्देश्य के लिए बनाई गई थीं। ब्रह्म समाज इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है। यह पारंपरिक पारिवारिक या जातिगत समूहों से अलग एक ऐसा आधुनिक संगठन था जहाँ लोग वैचारिक आधार पर जुड़े थे। प्रिंटिंग प्रेस और रेलवे तकनीकी संचार के माध्यम हैं, जबकि स्वतंत्रता एक विचार है। ब्रह्म समाज ने संगठित तरीके से समाज सुधार की संस्थागत नींव रखी थी।

70. (B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या है।
वर्तमान समय में दलित पहचान का गौरव और राजनीतिक मजबूती बढ़ी है। पिछड़े वर्गों के आंदोलनों ने शिक्षा और राजनीतिक शक्ति जैसे पंथनिरपेक्ष कारकों के महत्व को उजागर किया है, जिससे सामाजिक गतिशीलता आई है। हालांकि, अभिकथन (A) में वर्णित भावना का उदय केवल इन आंदोलनों के कारण नहीं, बल्कि व्यापक लोकतांत्रिक चेतना और संवैधानिक अधिकारों के परिणामस्वरूप भी हुआ है। दोनों कथन अपने आप में सत्य हैं और एक ही सामाजिक बदलाव के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं।

71. (D) इसके बहुआयामी प्रभाव होते हैं।
संस्कृतीकरण केवल एक धार्मिक बदलाव नहीं है, बल्कि इसके प्रभाव समाज के विविध पहलुओं जैसे भाषा, साहित्य, कला, संगीत और खान-पान की आदतों पर भी पड़ते हैं। यह एक व्यापक सांस्कृतिक प्रक्रिया है जो किसी समूह की पूरी जीवन पद्धति को पुनर्निर्मित करने का प्रयास करती है। इसके प्रभाव केवल आंतरिक नहीं होते, बल्कि बाहरी दुनिया के साथ समूह के व्यवहार और संबंधों के स्वरूप को भी गहराई से बदल देते हैं, जिससे यह एक बहुआयामी प्रक्रिया बन जाती है।

72. (C) P-4, Q-2, R-3, S-1
'तहसिब-ए-निसवान' पत्रिका में बहुविवाह के विरुद्ध तीखी बहसें प्रकाशित हुईं। कंदुकीरी विरेशलिंगम ने 'द सोर्स ऑफ़ नॉलेज' के माध्यम से तर्कसंगत विचारों को बढ़ावा दिया। 'इंदु प्रकाश' में विष्णु शास्त्री ने महत्वपूर्ण अनुवादों के माध्यम से सुधारवादी चेतना का विस्तार किया। महादेव गोविंद रानाडे ने हिंदू कानूनों पर विस्तार से चर्चा की और विधवा विवाह के समर्थन में मजबूत शास्त्रीय तर्क प्रस्तुत किए। ये सभी कार्य भारतीय समाज के बौद्धिक पुनर्जागरण के महत्वपूर्ण मील के पत्थर रहे हैं।

73. (C) एम. एन. श्रीनिवास
प्रसिद्ध भारतीय समाजशास्त्री एम. एन. श्रीनिवास ने 'पश्चिमीकरण' शब्द का प्रतिपादन किया। उन्होंने इस शब्द का उपयोग उन परिवर्तनों को समझाने के लिए किया जो भारतीय समाज और संस्कृति में लगभग 150 वर्षों के ब्रिटिश शासन के परिणामस्वरूप आए थे। श्रीनिवास के अनुसार, पश्चिमीकरण में प्रौद्योगिकी, संस्थाओं, ज्ञान और मूल्यों के विभिन्न स्तरों पर होने वाले बदलाव शामिल हैं। उनके द्वारा दी गई यह अवधारणा भारतीय समाज के आधुनिकीकरण को समझने के लिए आज भी अत्यंत प्रासंगिक और महत्वपूर्ण मानी जाती है।

74. (A) रानाडे ने विधवा-विवाह के विरोध में शास्त्रों का संदर्भ दिया।
यह कथन पूर्णतः असत्य है क्योंकि महादेव गोविंद रानाडे ने विधवा-विवाह का विरोध नहीं, बल्कि पुरजोर समर्थन किया था। उन्होंने शास्त्रों का संदर्भ यह सिद्ध करने के लिए दिया था कि प्राचीन हिंदू धर्म में विधवा विवाह की अनुमति है। अन्य

क्षेत्रों को अलग-अलग तरीके और गति से प्रभावित करती हैं, समान रूप से नहीं।

113. (A) 3, 4, 1, 2
समाज सुधार की घटनाओं में सती प्रथा का विरोध (1820 के दशक) सबसे पहले हुआ। इसके बाद जोतिबा फुले ने 1848 में लड़कियों का स्कूल खोला। बीसवीं सदी के प्रारंभ (1908) में भारत में पहली फोर्ड कार आई और अंत में 1914 में 'अंजुमन-ए-ख्वातीन-ए-इस्लाम' की स्थापना हुई। यह कालक्रम भारत में पहले सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष, फिर शिक्षा का विस्तार, तकनीकी आगमन और अंत में महिलाओं के संगठित आंदोलनों के उदय को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

114. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आधुनिक युग में विवाह जैसे पारंपरिक अनुष्ठान केवल धार्मिक कृत्य नहीं रह गए हैं, बल्कि वे परिवार की आर्थिक शक्ति और सामाजिक प्रस्थिति के प्रदर्शन का बड़ा मंच बन गए हैं। अब समारोह की भव्यता और खर्च से व्यक्ति की समाज में प्रतिष्ठा आंकी जाती है। यह बदलाव दर्शाता है कि कैसे पंथनिरपेक्षीकरण की प्रक्रिया के तहत धार्मिक कृत्यों के सामाजिक और आर्थिक आयाम अधिक महत्वपूर्ण हो गए हैं। अतः कथन और कारण दोनों सत्य हैं और सटीक व्याख्या करते हैं।

115. (C) स्वतंत्र अन्वेषण
'इजतिहाद' एक इस्लामी कानूनी शब्द है जिसका अर्थ है धर्मग्रंथों और परंपराओं की व्याख्या करने में स्वतंत्र तर्क और बौद्धिक अन्वेषण का उपयोग करना। सर सैयद अहमद खान जैसे सुधारकों ने इस अवधारणा पर बल दिया ताकि मुस्लिम समाज आधुनिक दुनिया की चुनौतियों का सामना कर सके। उन्होंने तर्क दिया कि अंधानुकरण के बजाय तर्क और समय की आवश्यकता के अनुसार धर्म की पुनर्व्याख्या करना आवश्यक है। यह विचार धार्मिक कट्टरता को दूर करने और आधुनिकता को अपनाने में सहायक बना।

116. (D) जाति व्यवस्था का पूर्ण उन्मूलन
संस्कृतीकरण की प्रक्रिया किसी समूह की सामाजिक स्थिति में सुधार तो ला सकती है, लेकिन यह जाति व्यवस्था को समाप्त नहीं करती। इसके विपरीत, यह अक्सर जाति के पदानुक्रम और उसके आदर्शों को स्वीकार करके उसे और मजबूत करती है। संस्कृतीकरण के प्रभाव भाषा, संगीत और जीवन पद्धति में तो स्पष्ट दिखते हैं, लेकिन यह व्यवस्था के बुनियादी ढांचे को नहीं बदलती। जाति व्यवस्था का पूर्ण उन्मूलन एक क्रांतिकारी संरचनात्मक बदलाव है जो इस प्रक्रिया के दायरे से बाहर की बात है।

117. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
जोतिबा फुले ने अपने पत्रों में ब्राह्मणवादी मानसिकता और उनके भेदभावपूर्ण व्यवहार की कड़ी आलोचना की। पश्चिमीकरण ने मध्य वर्ग में पीढ़ियों के बीच जटिल वैचारिक मतभेद पैदा किए। कुमुद पावड़े ने एक दलित महिला संस्कृत शिक्षिका के रूप में अपने कड़वे और चुनौतीपूर्ण अनुभव साझा किए। रजनी कोठारी ने विश्लेषण किया कि कैसे आधुनिक लोकतंत्र में जाति का स्वरूप बदलकर उसका राजनीतिकरण और पंथनिरपेक्षीकरण हो गया है। ये सभी पहलू भारतीय समाज की बदलती और जटिल परतों को सूक्ष्मता से उद्घाटित करते हैं।

118. (B) मानवतावादी, पंथनिरपेक्ष और उदारवादी
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधार आंदोलन केवल एक विचारधारा तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे मानवतावाद, पंथनिरपेक्षता और पश्चिमी उदारवाद के सिद्धांतों का एक समावेशी मिश्रण थे। इन आंदोलनों ने मनुष्य की गरिमा, तर्क की शक्ति और व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर बल दिया। सुधारकों ने इन आधुनिक मूल्यों को भारतीय संदर्भों में लागू करने का प्रयास किया ताकि समाज में व्याप्त जड़ता और असमानता को दूर किया जा सके। इसी वैचारिक आधार ने आधुनिक भारत के निर्माण की प्रक्रिया को गति और दिशा प्रदान की।

119. (D) इससे कोई संरचनात्मक परिवर्तन न होकर केवल स्थिति परिवर्तन होता है।
संस्कृतीकरण की सबसे बड़ी सीमा यह है कि यह केवल किसी विशेष समूह की जाति पदानुक्रम में प्रस्थिति को ऊँचा उठाती है, लेकिन यह पूरी जाति व्यवस्था के ढांचे को नहीं बदलती। इसे 'स्थितिजन्य गतिशीलता' कहा जाता है, न कि 'संरचनात्मक परिवर्तन'। इसका अर्थ है कि व्यवस्था वैसी ही बनी रहती है, बस उसके अंदर कुछ लोग अपनी जगह बदल लेते हैं। यह प्रक्रिया सामाजिक असमानता के मूल कारणों को संबोधित नहीं करती, जो इसकी एक प्रमुख वैचारिक कमी मानी जाती है।

120. (A) केवल 1
पश्चिमीकरण की प्रक्रिया अक्सर परिवार के भीतर पुरानी और नई पीढ़ी के बीच विचारों, मूल्यों और जीवनशैली को लेकर गहरा मतभेद पैदा करती है, जो एक समाजशास्त्रीय वास्तविकता है। अन्य कथन गलत हैं क्योंकि पश्चिमी शिक्षा ने सबको समान अवसर नहीं दिए (भेदभाव बना रहा), थिय्याओं ने आधुनिकता को अपनाया था, रवि वर्मा पर पश्चिमी शैली का गहरा प्रभाव था, और पश्चिमीकरण केवल पहनावे तक सीमित न होकर एक व्यापक वैचारिक और संस्थागत परिवर्तन की प्रक्रिया है जो समाज को बदलती है।

121. (C) वे कई स्थितियों में एक साथ पाई जाती हैं और परस्पर संबंधित हैं।
भारत में सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रियाएं जैसे संस्कृतीकरण, पश्चिमीकरण और पंथनिरपेक्षीकरण अक्सर एक-दूसरे के साथ मिलकर कार्य करती हैं। ये स्वतंत्र या अलग-थलग नहीं हैं, बल्कि एक ही सामाजिक वास्तविकता के विभिन्न पहलू हैं। उदाहरण के लिए, एक समूह धार्मिक रूप से संस्कृतीकृत हो सकता है और साथ ही आर्थिक व शैक्षिक रूप से पश्चिमीकृत भी। इन प्रक्रियाओं का यह अंतर्संबंध भारतीय समाज के आधुनिकीकरण की जटिल और बहुआयामी प्रकृति को दर्शाता है, जो निरंतर जारी रहने वाली प्रक्रिया है।

84. (D) लोग सार्वभौमिक प्रतिबद्धता और विश्वजनीन दृष्टिकोण अपनाते हैं।
आधुनिकीकरण का एक महत्वपूर्ण बौद्धिक पक्ष संकीर्ण और स्थानीय सोच का कमजोर होना है। आधुनिकता व्यक्तियों को अपने छोटे समुदाय या क्षेत्र से बाहर निकलकर पूरी दुनिया और मानवता के प्रति जागरूक होने के लिए प्रेरित करती है। इसका अर्थ है सार्वभौमिक मूल्यों, मानवाधिकारों और वैज्ञानिक सत्य के प्रति प्रतिबद्धता दिखाना। यह दृष्टिकोण लोगों को वैश्विक नागरिक के रूप में सोचने और व्यापक सामाजिक व वैश्विक मुद्दों पर तर्कसंगत तरीके से प्रतिक्रिया देने की क्षमता प्रदान करता है।

85. (C) पश्चिमीकरण
पश्चिमीकरण की प्रक्रिया अक्सर परिवारों में पीढ़ियों के बीच वैचारिक और जीवनशैली संबंधी मतभेद पैदा करती है। जब नई पीढ़ी पश्चिमी शिक्षा, मूल्यों और रहन-सहन को तेजी से अपनाती है, तो पुरानी पीढ़ी के पारंपरिक विचारों के साथ उनका संघर्ष होना स्वाभाविक है। यह मतभेद खान-पान, पहनावे, करियर और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे मुद्दों पर स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। यह दर्शाता है कि सांस्कृतिक परिवर्तन समाज के सबसे छोटे और महत्वपूर्ण अंग 'परिवार' को भी गहराई से प्रभावित करता है।

86. (A) केवल 1, 4 और 5
औद्योगीकरण ने शहरीकरण को बढ़ावा दिया और लोगों को नए रोजगारों की ओर खींचा। सामाजिक संरचना वास्तव में संबंधों की एक स्थायी व्यवस्था है, और सांस्कृतिक परिवर्तन इसे समझने के लिए अनिवार्य हैं क्योंकि संस्कृति और संरचना एक-दूसरे को प्रभावित करती हैं। कथन 2 और 3 गलत हैं क्योंकि संरचनात्मक परिवर्तनों का जीवनशैली पर गहरा प्रभाव पड़ता है और औपनिवेशिक काल में सांस्कृतिक और संरचनात्मक दोनों ही प्रकार के परिवर्तन हुए, जो परस्पर संबंधित और महत्वपूर्ण थे।

87. (D) पश्चिमी शिक्षा
भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में ईसाई मिशनरियों और ब्रिटिश प्रशासन द्वारा शुरु की गई पश्चिमी शिक्षा ने स्थानीय लोगों के लिए प्रगति के नवीन मार्ग खोले। इसने न केवल उन्हें आधुनिक ज्ञान और अंग्रेजी भाषा से परिचित कराया, बल्कि उन्हें सरकारी नौकरियों और सामाजिक नेतृत्व के अवसर भी प्रदान किए। इस शिक्षा के कारण इन क्षेत्रों में एक जागरूक और शिक्षित मध्य वर्ग का उदय हुआ, जिसने अपने समाज की दिशा तय करने और नई पहचान बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

88. (A) रजनी कोठारी
प्रसिद्ध राजनीतिशास्त्री रजनी कोठारी ने तर्क दिया कि भारतीय राजनीति में जाति का प्रभाव कोई असामान्य बात नहीं है। उनका मानना था कि लोकतंत्र में राजनीति को लोगों को संगठित करने के लिए मौजूदा सामाजिक संरचनाओं, जैसे कि जाति, का उपयोग करना ही पड़ता है। उनके अनुसार, जो लोग जातिमुक्त राजनीति की उम्मीद करते हैं, वे भारतीय समाज की वास्तविक धरातल को नहीं समझते। जाति का राजनीतिकरण वास्तव में जाति व्यवस्था के पंथनिरपेक्षीकरण की एक महत्वपूर्ण और आधुनिक प्रक्रिया है।

89. (C) स्थानीय जाति संस्तरण में उच्चता की तरफ ले जाता है।
संस्कृतीकरण की प्रक्रिया का मुख्य उद्देश्य किसी समूह की सामाजिक प्रतिष्ठा को बढ़ाना होता है। जब कोई निम्न जाति उच्च जातियों के रीति-रिवाजों और जीवन पद्धति को अपना लेती है, तो समय के साथ स्थानीय जाति पदानुक्रम में उसे एक उच्च स्थान प्राप्त होने लगता है। यह एक प्रकार की 'स्थितिजन्य गतिशीलता' है। हालांकि इससे पूरी जाति व्यवस्था नहीं बदलती, लेकिन संबंधित समूह की प्रस्थिति में तुलनात्मक रूप से सुधार अवश्य होता है, जो उनकी सामाजिक आकांक्षा है।

90. (A) अखबार, पत्रिका, सभाएं और गोष्ठियां
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधारक आधुनिक संचार माध्यमों के महत्व को भली-भांति समझते थे। उन्होंने अपने विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में अखबार और पत्रिकाएं निकालीं। इसके अतिरिक्त, उन्होंने सभाओं और गोष्ठियों के माध्यम से लोगों के साथ सीधा संवाद किया और सामाजिक बुराइयों पर खुली बहस को प्रोत्साहित किया। इन माध्यमों ने सुधारवादी विचारों को एक सीमित वर्ग से निकालकर एक व्यापक सामाजिक आंदोलन में बदलने में महत्वपूर्ण सहायता प्रदान की।

91. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
पारंपरिक समाज में जाति व्यवस्था अत्यंत कठोर थी और उच्च जातियाँ अपनी विशेषाधिकार प्राप्त प्रस्थिति को बनाए रखना चाहती थीं। यदि कोई निम्न जाति संस्कृतीकरण के माध्यम से उनकी जीवनशैली की नकल करने का प्रयास करती, तो उसे दंडित किया जाता था। अनुष्ठानों, पहनावे और शिक्षा पर उच्च जातियों का एकाधिकार था, जिसे चुनौती देना सामाजिक अपराध माना जाता था। अतः, सामाजिक रुकावटों और सजा के डर के कारण निम्न जातियों के लिए ऊपर उठना बहुत कठिन था।

92. (B) मातृवंशीय
केरल के नायर समुदाय में पारंपरिक रूप से मातृवंशीय व्यवस्था प्रचलित थी, जिसे 'मरुमकथायाम' कहा जाता है। इस व्यवस्था में वंश परंपरा और संपत्ति का उत्तराधिकार माता की ओर से चलता है। यह भारतीय समाज की पितृसत्तात्मक व्यवस्था के बीच एक प्रमुख और विशिष्ट उदाहरण है। हालांकि आधुनिक परिवर्तनों और कानूनी सुधारों के बाद इस पारंपरिक व्यवस्था में काफी बदलाव आए हैं, लेकिन ऐतिहासिक और समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह समुदाय अपनी इस अनूठी विशेषता के लिए जाना जाता है।

93. (C) समाज सुधार आंदोलन और सांस्कृतिक व्यवहारों में परिवर्तन दोनों
औपनिवेशिक शासन का प्रभाव केवल राजनीतिक या आर्थिक नहीं था, बल्कि इसने भारतीय समाज की आंतरिक संरचना और दैनिक जीवन को भी गहराई से बदला। समाज सुधार आंदोलनों ने जहाँ पुरानी कुरीतियों को चुनौती दी, वहीं पश्चिमी संपर्क ने

विवाह करने से रोकना मूल धर्मग्रंथों की शिक्षा के विरुद्ध है। उनका यह दृष्टिकोण सुधारों को धार्मिक वैधता दिलाने के लिए था, ताकि समाज के रुढ़िवादी वर्ग के विरोध को तार्किक रूप से कम किया जा सके। रानाडे के इन प्रयासों ने विधवाओं के सामाजिक उत्थान के लिए एक ठोस कानूनी और नैतिक आधार तैयार किया।

132. (C) P-4, Q-3, R-2, S-1
संस्कृतीकरण द्विज जातियों के अनुकरण की प्रक्रिया है, जबकि विसंस्कृतीकरण में प्रभुत्वशाली गैर-संस्कृत जातियों का प्रभाव देखा जाता है। पश्चिमीकरण ब्रिटिश शासन के प्रभाव से आए बहुआयामी परिवर्तनों को व्यक्त करता है। जाति का पंथनिरपेक्षीकरण उसे आधुनिक लोकतांत्रिक व्यवस्था में एक राजनीतिक दबाव समूह के रूप में क्रियाशील बनाता है। ये सभी अवधारणाएँ भारतीय समाज में हो रहे विविध सांस्कृतिक और संरचनात्मक परिवर्तनों के अलग-अलग दिशाओं और स्वरूपों को बहुत ही स्पष्ट और सूक्ष्मता के साथ परिभाषित करती हैं।

133. (C) पश्चिमी शिक्षा ने पश्चिमी शासन की आलोचना को जन्म दिया।
औपनिवेशिक आधुनिकता का सबसे बड़ा विरोधाभास यह था कि अंग्रेजों ने भारतीयों को शिक्षित करने के लिए जिस आधुनिक शिक्षा प्रणाली की शुरुआत की, उसी ने भारतीयों में स्वतंत्रता और लोकतंत्र की चेतना जगाई। शिक्षित भारतीयों ने पश्चिमी उदारवादी मूल्यों के आधार पर ही ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन की कमियों और उसके शोषणकारी स्वरूप की आलोचना करना शुरु कर दिया। इस प्रकार, आधुनिक शिक्षा ने अंततः उस शासन की जड़ों को ही हिला दिया जिसने इसे भारत में पेश किया था, जो ऐतिहासिक विरोधाभास है।

134. (B) यह प्रायः अधिक जटिल होता है।
मध्य वर्ग में पश्चिमीकरण के कारण पीढ़ियों के बीच होने वाले मतभेद कोई सरल घटना नहीं हैं, बल्कि यह अत्यंत जटिल होते हैं। यह मतभेद केवल पहनावे या भाषा तक सीमित नहीं होते, बल्कि इनमें जीवन के मूल्यों, करियर के चुनाव और व्यक्तिगत स्वतंत्रता के प्रति दृष्टिकोण भी शामिल होते हैं। अक्सर एक ही परिवार के सदस्य अलग-अलग स्तरों पर आधुनिक और पारंपरिक हो सकते हैं, जिससे संबंधों में एक नई तरह की जटिलता और तनाव उत्पन्न होता है जो सामाजिक परिवर्तन का परिणाम है।

135. (B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
संस्कृतीकरण के माध्यम से कोई जाति पदानुक्रम में अपनी स्थिति को ऊँचा उठाने का प्रयास करती है, जिससे उर्ध्वगामी परिवर्तन दिखाई देता है। यह सच है कि यह परिवर्तन अक्सर व्यक्तिगत या समूह की स्थिति तक सीमित होता है और पूरी सामाजिक संरचना को नहीं बदलता। हालांकि, कारण (R) इस बात की व्याख्या नहीं करता कि उर्ध्वगामी परिवर्तन क्यों होता है, बल्कि वह उस परिवर्तन की सीमा को बताता है। दोनों कथन सत्य हैं परंतु उनके बीच का तार्किक संबंध व्याख्यात्मक रूप से अधूरा है।

136. (A) परंपरा पर भी पुनर्विचार होता है और उसकी पुनर्विवेचना होती है।
सांस्कृतिक परिवर्तन की प्रक्रिया में परंपरा स्थिर नहीं रहती। आधुनिकता के संपर्क में आने पर लोग अपनी परंपराओं पर फिर से विचार करते हैं और उनके महत्व को नए संदर्भों में समझने की कोशिश करते हैं। परंपरा की यह पुनर्व्याख्या उसे जीवंत बनाए रखती है और समय के साथ बदलने की अनुमति देती है। यह कहना गलत है कि आधुनिकता परंपरा को नष्ट कर देती है; वास्तव में, आधुनिकता परंपरा को नए रूप में ढलने और विकसित होने के लिए एक नया दृष्टिकोण प्रदान करती है।

137. (C) संबंधित समूह की आर्थिक अथवा राजनीतिक स्थिति में सुधार
संस्कृतीकरण की प्रक्रिया के सफल होने के लिए संबंधित समूह की आर्थिक मजबूती या राजनीतिक प्रभुत्व एक अनिवार्य शर्त मानी जाती है। केवल रीति-रिवाजों को बदलना ही पर्याप्त नहीं है; जब तक समूह के पास संसाधन और शक्ति नहीं होती, उसे समाज के उच्च सोपानों में मान्यता मिलना कठिन होता है। आर्थिक और राजनीतिक सुधार समूह को वह आत्मविश्वास और सामाजिक आधार प्रदान करते हैं, जिससे वे उच्च जाति के सांस्कृतिक प्रतिमानों को अपनाने और अपनी नई प्रस्थिति का दावा करने में सक्षम होते हैं।

138. (A) सुधारकों द्वारा अपनी सभी प्राचीन परंपराओं का पूर्ण त्याग करना।
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधारकों के 'मिश्रित विचारों' की विशेषता यह थी कि उन्होंने आधुनिकता को अपनाते हुए भी अपनी जड़ों को नहीं छोड़ा। उन्होंने प्राचीन परंपराओं का पूर्ण त्याग नहीं किया, बल्कि उनकी तार्किक और प्रगतिशील पुनर्व्याख्या की। राममोहन राय, रानाडे और सर सैयद अहमद खान जैसे सुधारकों ने आधुनिक सिद्धांतों को शास्त्रों के साथ जोड़कर प्रस्तुत किया। अतः परंपराओं का पूर्ण त्याग करना उनके दृष्टिकोण को नहीं दर्शाता, बल्कि वे प्राचीन गौरव और आधुनिक प्रगति के संगम के पक्षधर थे।

139. (D) जातीय समूहों की गतिशीलता में पंथनिरपेक्ष कारकों की भूमिका पर बल देना
बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में पिछड़े वर्गों के आंदोलनों ने सामाजिक गतिशीलता के पारंपरिक धार्मिक तरीकों (संस्कृतीकरण) के स्थान पर आधुनिक पंथनिरपेक्ष कारकों, जैसे शिक्षा, रोजगार और राजनीतिक सत्ता पर अधिक जोर दिया। इन आंदोलनों ने यह स्पष्ट किया कि सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए अब उच्च जातियों के रीति-रिवाजों का अनुकरण करना आवश्यक नहीं है, बल्कि संवैधानिक अधिकारों और राजनीतिक भागीदारी का उपयोग करना अधिक प्रभावी है। इसने भारतीय समाज में शक्ति संतुलन और गतिशीलता के नए आयाम स्थापित किए।

140. (A) केवल 1, 2, 3 और 4
आधुनिकीकरण, पंथनिरपेक्षीकरण, संस्कृतीकरण और पश्चिमीकरण भारतीय समाज में परिवर्तन लाने वाली चार प्रमुख और महत्वपूर्ण प्रक्रियाएं हैं। ये सभी अवधारणाएँ अलग-अलग

122. (A) ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य
हिंदू वर्ण व्यवस्था में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य को 'द्विज' माना जाता है, जिसका अर्थ है 'दो बार जन्मा हुआ'। इन्हें उपनयन (जनेऊ) संस्कार का अधिकार प्राप्त है, जिसे इनका दूसरा या आध्यात्मिक जन्म माना जाता है। संस्कृतीकरण की प्रक्रिया में अक्सर निम्न जातियाँ इन्हीं द्विज जातियों के रीति-रिवाजों, शाकाहार और धार्मिक अनुष्ठानों का अनुकरण करती हैं ताकि समाज में अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाई जा सके। शूद्र और अवर्ण जातियों को पारंपरिक रूप से इस द्विज श्रेणी से बाहर रखा गया था।

123. (C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधारक निश्चित रूप से पश्चिमी उदारवाद और मानवतावाद के विचारों से प्रभावित थे। हालांकि, उन्होंने भारतीय परंपराओं का पूर्ण त्याग नहीं किया। इसके बजाय, उन्होंने प्राचीन ग्रंथों की पुनर्व्याख्या की और यह तर्क दिया कि सती प्रथा जैसी कुरीतियाँ मूल धर्म का हिस्सा नहीं हैं। उन्होंने परंपरा और आधुनिकता के बीच एक संवाद स्थापित करने का प्रयास किया, न कि परंपरा को पूरी तरह अमान्य किया। अतः अभिकथन सही है परंतु कारण पूरी तरह गलत और भ्रामक है।

124. (B) सार्वभौमिक प्रतिबद्धता और विश्वजनीन दृष्टिकोण
आधुनिकीकरण का एक मुख्य तत्व संकीर्ण और स्थानीय सोच के दायरे से बाहर निकलना है। यह व्यक्तियों को सार्वभौमिक मूल्यों, मानवता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के प्रति प्रतिबद्ध होने के लिए प्रेरित करता है। आधुनिकता में किसी विचार की सत्यता उसकी उपयोगिता और तर्क पर आधारित होती है, न कि केवल परंपरा या स्थानीय मान्यताओं पर। यह विश्वजनीन दृष्टिकोण लोगों को वैश्विक स्तर पर सोचने और व्यापक मानवीय हितों के साथ जुड़ने की क्षमता प्रदान करता है, जो आधुनिक समाज का आधार है।

125. (C) संस्कृतीकरण हमेशा राजनीतिक स्थिति में सुधार के बिना होता है।
यह कथन गलत है क्योंकि संस्कृतीकरण की प्रक्रिया प्रायः तभी शुरु होती है जब किसी समूह की आर्थिक या राजनीतिक स्थिति में सुधार होता है। आर्थिक मजबूती या राजनीतिक शक्ति समूह को अपनी सामाजिक प्रस्थिति बढ़ाने की प्रेरणा और संसाधन प्रदान करती है। संस्कृतीकरण में क्षेत्रीय विविधताएँ भी होती हैं और तीर्थ स्थल इसके महत्वपूर्ण स्रोत हो सकते हैं। प्रभुत्वशाली गैर-संस्कृत जातियों का प्रभाव विसंस्कृतीकरण कहलाता है। अतः विकल्प (C) संस्कृतीकरण की वास्तविक प्रक्रिया के बारे में एक गलत जानकारी प्रस्तुत करता है।

126. (D) व्यक्ति की जगह समूह को प्राथमिकता
आधुनिकता की एक मौलिक विशेषता 'व्यक्तिवाद' है, जिसमें समूह या समुदाय के स्थान पर व्यक्ति की स्वतंत्रता और उसके अधिकारों को सर्वोपरि माना जाता है। आधुनिक समाज में पहचान जन्म या समूह के बजाय व्यक्तिगत उपलब्धियों और चयन (अर्जित स्थिति) से बनती है। अन्य विकल्प जैसे विज्ञान, तर्क और गणना आधुनिकता के मुख्य आधार हैं। अतः समूह को प्राथमिकता देना पारंपरिक समाज का लक्षण है, आधुनिकता का नहीं, क्योंकि आधुनिकता व्यक्ति की अपनी पहचान और पसंद को सर्वोच्च मानती है।

127. (A) केवल 1 और 4
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधारकों के लिए सती प्रथा का उन्मूलन और जाति-भेद को समाप्त करना सबसे बड़ी चुनौतियां और प्राथमिक लक्ष्य थे। इन मुद्दों ने समाज की मानवीय गरिमा को गंभीर चोट पहुँचाई थी। इसके विपरीत, बाल-विवाह को उस समय प्रोत्साहित नहीं किया गया, बल्कि उसका कड़ा विरोध किया गया। इसी तरह, विधवा पुनर्विवाह पर कड़े प्रतिबंध थे, जिन्हें हटाने के लिए सुधारकों ने लंबा संघर्ष किया। अतः केवल कथन 1 और 4 ही उस काल की सुधारवादी प्राथमिकताओं को सही दर्शाते हैं।

128. (B) पश्चिमी प्रतिमान चिंतन, स्वरुप और जीवनशैली को स्वीकारना
औपनिवेशिक काल में भारतीयों के एक छोटे लेकिन प्रभावशाली शिक्षित समूह ने पश्चिमीकरण के एक गहरे स्वरूप को अपनाया। इसमें केवल बाहरी पहनावा ही नहीं, बल्कि पश्चिमी चिंतन पद्धति, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, उदारवादी मूल्य और संपूर्ण जीवनशैली को आत्मसात करना शामिल था। इस वर्ग ने भारतीय समाज में आधुनिक बौद्धिक चेतना जगाने और सुधार आंदोलनों का नेतृत्व करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह पश्चिमीकरण केवल नकल नहीं थी, बल्कि आधुनिक मूल्यों के प्रति एक गंभीर और सचेत बौद्धिक प्रतिबद्धता थी।

129. (B) दलित संस्कृति के ज्ञान को पिछड़ा मानना
संस्कृतीकरण की आलोचना का एक मुख्य पक्ष यह है कि यह दलितों और निम्न जातियों के समृद्ध तकनीकी, शिल्प और औषधीय ज्ञान को उपेक्षित कर उसे 'पिछड़ापन' या निम्न श्रेणी का मान लेती है। यह प्रक्रिया मानती है कि केवल उच्च जातियों की जीवनशैली ही अनुकरणीय है, जिससे समाज की विविधतापूर्ण और व्यावहारिक ज्ञान परंपरा को भारी नुकसान पहुँचता है। यह दृष्टिकोण दलितों के आत्मसम्मान को ठेस पहुँचाता है और उनके महत्वपूर्ण योगदान को सामाजिक इतिहास के हाशिए पर धकेल देता है।

130. (A) जातीय संरचना जैसे संगठनात्मक समूहों का
आधुनिक लोकतंत्र में जब राजनीति जन-आधारित होती है, तो उसे लोगों को संगठित करने के लिए समाज में पहले से मौजूद संरचनाओं का सहारा लेना पड़ता है। भारत में जाति एक ऐसा ही मजबूत संगठनात्मक आधार प्रदान करती है। राजनीतिक दल अपनी पहुँच बढ़ाने और समर्थन जुटाने के लिए जातीय समूहों का उपयोग एक प्रभावी दबाव समूह के रूप में करते हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि कैसे एक पारंपरिक सामाजिक संस्था आधुनिक राजनीतिक प्रतिस्पर्धा और शक्ति संघर्ष के एक महत्वपूर्ण उपकरण में बदल गई है।

131. (C) महादेव गोविंद रानाडे
महादेव गोविंद रानाडे ने विधवा पुनर्विवाह के समर्थन में प्राचीन हिंदू शास्त्रों और वेदों का गहन अध्ययन किया और उनके संदर्भ प्रस्तुत किए। उन्होंने यह तर्क दिया कि विधवाओं को पुनः

वर्ग ने आधुनिक प्रशासन, न्याय व्यवस्था और शिक्षा के लिए अंग्रेजी को अपनाया, जिससे वे देश के अन्य हिस्सों और वैश्विक स्तर पर जुड़ने में सक्षम हुए। यह भाषाई चुनाव आज भी वहाँ प्रभावी है।

150. (B) संस्कृति, जीवनशैली और मूल्यों में गुणात्मक बदलाव हुए।
भारत में उपनिवेशवाद केवल एक राजनीतिक कब्जा नहीं था, बल्कि इसके कारण भारतीय समाज की संस्कृति, जीवनशैली और मूलभूत मूल्यों में गहरे और गुणात्मक परिवर्तन आए। अंग्रेजी शिक्षा ने नए विचारों को जन्म दिया, संचार के साधनों ने रहन-सहन बदला और पश्चिमी मूल्यों ने पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती दी। ये बदलाव विरोधाभासी और जटिल होने के बावजूद स्थायी थे, जिन्होंने एक नई आधुनिक भारतीय चेतना का निर्माण किया। इसने समाज के हर अंग, चाहे वह भोजन हो, पहनावा हो या सोच, सबको हमेशा के लिए बदल दिया।

151. (B) पाश्चात्य विचारों और भारतीय ग्रंथों की प्रगतिशील व्याख्या का संयोजन।
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधारकों ने आधुनिक और तर्कसंगत परिवर्तन लाने के लिए एक अनूठी पद्धति अपनाई। उन्होंने पाश्चात्य उदारवादी मूल्यों जैसे मानवतावाद और व्यक्तिगत स्वतंत्रता को भारतीय संदर्भ में लागू किया। साथ ही, उन्होंने प्राचीन वेदों और उपनिषदों की प्रगतिशील व्याख्या करके यह सिद्ध किया कि सामाजिक कुरीतियाँ मूल धर्म का हिस्सा नहीं थीं, बल्कि वे बाद में आई विकृतियाँ थीं।

152. (A) वे सुधारों को सामाजिक और धार्मिक वैधता प्रदान करना चाहते थे।
सुधारकों ने महसूस किया कि केवल विदेशी तर्कों के आधार पर भारतीय समाज को बदलना चुनौतीपूर्ण होगा। इसलिए, उन्होंने प्राचीन धार्मिक ग्रंथों का गहन अध्ययन किया ताकि सुधारवादी कदमों को शास्त्र-सम्मत दिखाया जा सके। ऐसा करने से परंपरावादियों के विरोध को उनके अपने ही क्षेत्र में कमजोर करना आसान हो गया और व्यापक समाज में सुधारों के प्रति एक धार्मिक स्वीकृति बनी।

153. (C) प्राचीन ग्रंथों से उद्धरण प्रस्तुत करके उसे शास्त्र-सम्मत बताकर।
ईश्वर चंद्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह के पक्ष में जनमत तैयार करने के लिए एक विद्वतापूर्ण दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने संस्कृत के प्राचीन ग्रंथों और स्मृतियों की गहराई से छानबीन की ताकि वे प्रासंगिक उद्धरण खोज सकें। इन साक्ष्यों के माध्यम से उन्होंने प्रभावी ढंग से तर्क दिया कि विधवाओं का पुनर्विवाह शास्त्रों द्वारा वर्जित नहीं है, जिससे इस सुधार को पारंपरिक समाज में मान्यता मिली।

154. (D) पारंपरिक मूल्यों का उपयोग करके आधुनिक सुधारों को लागू करना।
इस अवधारणा का मूल अर्थ यह है कि आधुनिक सुधारों को समाज पर थोपने के बजाय उन्हें परंपरा के ही किसी अंग के रूप में प्रस्तुत किया जाए। सुधारकों ने पुरानी प्रथाओं को पूरी तरह नष्ट करने के बजाय उनकी उदार व्याख्या की। इससे आधुनिक मूल्यों को सांस्कृतिक जड़ों से जोड़ना संभव हुआ, जिससे समाज ने इन प्रगतिशील परिवर्तनों को बिना किसी गहरी सांस्कृतिक असुरक्षा के स्वीकार किया।

155. (C) भारतीय समाज में प्रचलित सामाजिक कुरीतियों का उन्मूलन करना।
उन्नीसवीं सदी के इन आंदोलनों का प्राथमिक लक्ष्य भारतीय सामाजिक ढांचे को मानवीय और तर्कसंगत आधार पर पुनर्गठित करना था। सुधारकों ने सती प्रथा, बाल विवाह और विधवाओं के उत्पीड़न जैसी गंभीर कुरीतियों को समाप्त करने के लिए निरंतर संघर्ष किया। उनका उद्देश्य एक ऐसे प्रगतिशील समाज का निर्माण करना था जहाँ शिक्षा, समानता और व्यक्तिगत गरिमा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए और अमानवीय परंपराएं खत्म हों।

156. (B) ब्रिटिश प्रशासन, कानून और अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार के कारण।
औपनिवेशिक काल में नए शहरी मध्य वर्ग की उत्पत्ति सीधे तौर पर ब्रिटिश शासन द्वारा स्थापित नई संस्थाओं से जुड़ी थी। अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीयों को आधुनिक ज्ञान और नए करियर के अवसर प्रदान किए। इसी तरह, औपनिवेशिक प्रशासनिक ढांचे और आधुनिक न्याय प्रणाली की जरूरतों ने वकीलों, डॉक्टरों और क्लर्कों के एक नए वर्ग को जन्म दिया, जिनकी जीवन शैली और सोच पूरी तरह बदल गई।

157. (D) जीवन शैली और विचार प्रक्रियाओं दोनों में परिवर्तन के रूप में।
पश्चिमीकरण ने भारतीय मध्य वर्ग को न केवल बाहरी रूप से बदला, बल्कि उनके आंतरिक विचारों को भी प्रभावित किया। उन्होंने पश्चिमी वेशभूषा, खान-पान और भाषा को आधुनिकता के प्रतीक के रूप में अपनाया। इसके साथ ही, वे उदारवाद और लोकतंत्र जैसे आधुनिक राजनीतिक विचारों से भी प्रभावित हुए। इस प्रकार, यह परिवर्तन शारीरिक पहनावे से लेकर बौद्धिक दृष्टिकोण तक व्यापक और बहुआयामी रूप में दिखाई दिया।

158. (A) सार्वजनिक आधुनिकता और निजी जीवन की परंपरा के बीच द्वंद्व।
सांस्कृतिक दुविधा उस स्थिति को दर्शाती है जहाँ मध्य वर्ग के व्यक्ति दो विपरीत दुनियाओं में जीते थे। वे सार्वजनिक स्थानों और कार्यालयों में पश्चिमी तौर-तरीकों और आधुनिकता का प्रदर्शन करते थे। इसके विपरीत, अपने घरों और पारिवारिक समारोहों में वे रुढ़िवादी और पारंपरिक रीति-रिवाजों का सख्ती से पालन करते थे। इस दोहरेपन ने उनके भीतर एक मानसिक संघर्ष और पहचान का गहरा संकट पैदा कर दिया।

159. (C) सुधारों के पक्षधर होकर भी अपने समाज से विमुख हो गए थे।
पश्चिमी शिक्षा और संस्कृति अपनाने के कारण नया मध्य वर्ग अपने ही पारंपरिक समाज से कट गया था। हालाँकि वे समाज में सुधार लाना चाहते थे, लेकिन उनकी नई जीवन शैली ने उन्हें आम जनता से अलग कर दिया। वे ब्रिटिश शासकों की तरह

(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

58. 73वां संवैधानिक संशोधन विधेयक कब एक कानून बन गया?
(A) 1992
(B) 1990
(C) 1989
(D) 1995

59. 'ग्राम सभा' में कौन शामिल होते हैं?
(A) केवल ग्राम पंचायत के चुने हुए सदस्य।
(B) गाँव के केवल पुरुष नागरिक।
(C) केवल गाँव के जमींदार।
(D) पूरे गाँव के सभी वयस्क नागरिक।

60. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 73वें संशोधन ने पहली बार निर्वाचित निकायों में महिलाओं को शामिल किया।
2. इस संशोधन ने महिलाओं को केवल मताधिकार दिया, चुनाव लड़ने का नहीं।
3. संशोधन के बाद हुए चुनावों में कुछ ही महिलाएँ राजनीति में आईं।
4. महिलाओं के लिए आरक्षण केवल ज़िला परिषद् स्तर पर है।
5. यह संशोधन महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण में एक बड़ा कदम था।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 5
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) केवल 2, 3 और 4

61. निम्नलिखित में से कौन सा एक पंचायत का अनिवार्य कार्य नहीं है?
(A) सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करना।
(B) आर्थिक विकास के लिए योजना बनाना।
(C) केंद्र सरकार के लिए विदेश नीति तैयार करना।
(D) सरकारी उत्तरदायित्वों के हस्तांतरण में सहयोग करना।

62. पंचायतों द्वारा पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने के लिए सबसे प्रभावी तरीका क्या है?
(A) हर साल प्रधान बदलना।
(B) केवल उच्च अधिकारियों को रिपोर्ट भेजना।
(C) किसी भी प्रकार की जानकारी सार्वजनिक न करना।
(D) कार्यालय के बाहर वित्तीय सहायता और उसके उपयोग का विवरण प्रदर्शित करना।

63. निम्नलिखित में से किस क्षेत्र में पंचायती राज की अपनी समृद्ध पारंपरिक लोकतांत्रिक संस्थाएं रही हैं?
(A) मेघालय
(B) दिल्ली
(C) मुंबई
(D) पंजाब

64. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अवधारणा/व्यक्ति)
P. कानून का सार
Q. न्याय का सार
R. टिपलुट नोंगबरी
S. कलावती

सूची II: (विवरण)
1. निष्पक्षता
2. शक्ति
3. दलित पंचायत सदस्य
4. समाजशास्त्री (आदिवासी संस्थाओं पर टिप्पणी)

कूट:
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

65. टिपलुट नोंगबरी की आलोचना का मुख्य बिंदु क्या था?
(A) पारंपरिक आदिवासी संस्थाएँ पूरी तरह से दोषरहित हैं।
(B) पारंपरिक आदिवासी संस्थाओं में भी स्तरीकरण और असहिष्णुता मौजूद हो सकती है।
(C) पारंपरिक आदिवासी संस्थाओं को बिना किसी बदलाव के अपना लेना चाहिए।
(D) आदिवासी समाजों में लोकतंत्र की कोई परंपरा नहीं है।

66. 'दबाव समूह' (Pressure Group) और 'हित समूह' (Interest Group) का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?
(A) सरकार की नीतियों को अपने हितों के पक्ष में प्रभावित करना।
(B) सीधे तौर पर चुनाव जीतकर सरकार बनाना।
(C) न्यायपालिका के कार्यों में हस्तक्षेप करना।
(D) एक वैकल्पिक सरकार चलाना।

67. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. 73वें संविधान संशोधन विधेयक का पारित होना।
2. 73वें संशोधन के प्रावधानों का देश भर में लागू होना।
3. पंचायती राज संस्थाओं के पहले अनिवार्य चुनाव।
4. लगभग 8,00,000 महिलाओं का राजनीतिक प्रक्रियाओं से जुड़ना।

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 1, 2, 4, 3

68. मैक्स वेबर के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सा एक 'दल' का उद्देश्य हो सकता है?
(A) किसी आदर्श या भौतिक आवश्यकता के लिए कार्यक्रम

170. (D) पश्चिमी जीवन शैली की आलोचना कर आधुनिक विज्ञान और संस्थानों को अपनाना।
भारतीय सुधारकों और विचारकों ने आधुनिकीकरण के प्रति एक विवेकपूर्ण और चयनात्मक दृष्टिकोण अपनाया है। उन्होंने आधुनिक विज्ञान, उन्नत तकनीक और लोकतांत्रिक शासन प्रणालियों का स्वागत किया क्योंकि ये विकास के लिए अनिवार्य थे। हालांकि, उन्होंने पश्चिमी उपभोक्तावाद और सांस्कृतिक अंधानुकरण का विरोध किया। उनका प्रयास हमेशा एक ऐसी आधुनिकता को विकसित करने का रहा है जो भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों और नैतिक आदर्शों के अनुकूल हो सके।

171. (C) इसने विचारों के उत्पादन और प्रसार के पैमाने में क्रांतिकारी बदलाव किए।
प्रिंट मीडिया के आगमन ने भारत में सूचना के आदान-प्रदान के पारंपरिक तरीकों को पूरी तरह बदल दिया। जहाँ पहले ज्ञान केवल कुछ हस्तलिखित पांडुलिपियों तक सीमित था, वहीं मुद्रण ने पुस्तकों और समाचार पत्रों को सस्ता और सुलभ बना दिया। इसने बड़े पैमाने पर विचारों के वितरण को संभव बनाया, जिससे समाज के व्यापक वर्गों तक सुधारवादी और राष्ट्रवादी विचारधाराएं तेजी से और प्रभावी ढंग से पहुँचने लगीं।

172. (B) ऐसा मंच जहाँ सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों पर सार्वजनिक बहस हो सकती थी।
सार्वजनिक क्षेत्र से तात्पर्य एक ऐसे साझा सामाजिक स्थान से है जहाँ सामान्य नागरिक महत्वपूर्ण मुद्दों पर खुलकर विचार-विमर्श कर सकें। प्रिंटिंग प्रेस ने समाचार पत्रों और पत्रिकाओं के माध्यम से इस स्थान को जीवंत बनाया। यहाँ धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक नीतियों पर आलोचनात्मक बहस होती थी, जिससे लोगों में जागरूकता बढ़ी। इसने लोकतंत्र की नींव रखने और जनमत तैयार करने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

173. (D) उन्होंने इसे अपने वैचारिक प्रचार और एक-दूसरे के विरोध के लिए इस्तेमाल किया।
मुद्रण तकनीक ने सुधारकों और रुढ़िवादियों दोनों को अपने विचार व्यक्त करने के लिए एक शक्तिशाली अस्त्र प्रदान किया। जहाँ राजा राममोहन राय जैसे सुधारकों ने इसका उपयोग कुरीतियों के विरुद्ध किया, वहीं रुढ़िवादी समूहों ने अपनी परंपराओं के बचाव में पत्र निकाले। इस प्रकार, प्रिंट मीडिया एक वैचारिक युद्ध के मैदान में बदल गया, जहाँ समाज के भविष्य के स्वरूप को लेकर गहन सार्वजनिक संवाद हुए।

174. (A) विभिन्न क्षेत्रों के लोगों को विचारों के आदान-प्रदान में सक्षम बनाकर।
प्रिंट मीडिया ने भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों के बीच की दूरियों को कम कर दिया। समाचार पत्रों के माध्यम से एक क्षेत्र के राष्ट्रवादी नेता दूसरे क्षेत्र के विचारों को पढ़ सकते थे। इससे क्षेत्रीय समस्याएं राष्ट्रीय चर्चा का विषय बन गईं। इस संचार क्रांति ने लोगों में एक साझा राष्ट्र की भावना जागृत की और उन्हें एक बड़े राजनीतिक समुदाय के अंग के रूप में जोड़ने में मदद की।

175. (C) एक सुधारवादी प्रकाशन के रूप में जिसने सती प्रथा के विरुद्ध जनमत बनाया।
'संवाद कौमुदी' राजा राममोहन राय द्वारा शुरू किया गया एक महत्वपूर्ण बंगाली समाचार पत्र था। इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक सुधारों को बढ़ावा देना और तार्किक बहस को प्रोत्साहित करना था। इसने विशेष रूप से सती प्रथा जैसी अमानवीय परंपराओं के विरुद्ध व्यापक तर्क प्रस्तुत किए। इसके माध्यम से चलाए गए अभियानों ने ब्रिटिश सरकार पर दबाव डाला और अंततः इस कुप्रथा को कानूनी रूप से प्रतिबंधित कराने में सफलता मिली।

1. के. संथानम द्वारा ग्राम पंचायतों पर निदेशक सिद्धांत का प्रस्ताव।
2. 73वां संविधान संशोधन लागू होना।
3. उच्चतम न्यायालय द्वारा 'समान कार्य के लिए समान वेतन' को समानता के अधिकार के तहत मानना।
4. उच्चतम न्यायालय द्वारा सूचना के अधिकार को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हिस्सा मानना।

(A) 1, 3, 4, 2
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 1, 2, 4, 3
(D) 2, 1, 3, 4

19. पंचायतों की आय के स्रोतों में क्या शामिल नहीं है?
(A) संपत्ति, व्यवसाय, पशु, वाहन आदि पर लगाए गए कर।
(B) ज़िला पंचायत द्वारा प्राप्त अनुदान।
(C) विदेशी सरकारों से प्रत्यक्ष ऋण।
(D) चुंगी और भू-राजस्व।

20. पंचायतों के लिए अपने कार्यालय के बाहर प्राप्त वित्तीय सहायता के उपयोग से संबंधित आँकड़े लिखना क्यों अनिवार्य किया गया है?
(A) केंद्र सरकार को सीधे और तत्काल रिपोर्ट करने हेतु।
(B) अन्य समीपवर्ती पंचायतों के साथ प्रतिस्पर्धा करने हेतु।
(C) केवल एक कानूनी औपचारिक आवश्यकता को पूरा करने हेतु।
(D) स्थानीय 'सूचना के अधिकार' को सुनिश्चित करने हेतु।

21. 'न्याय पंचायतें' निम्नलिखित में से कौन सा कार्य कर सकती हैं?
(A) आजीवन कारावास की सजा देना।
(B) संविधान के अनुच्छेदों की व्याख्या करना।
(C) छोटे-मोटे दीवानी और आपराधिक मामलों की सुनवाई करना।
(D) मृत्युदंड देना।

22. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (जनजाति/संस्था)
P. गारो, खासी, जयंतिया
Q. दरबार कुर
R. वन पंचायत
S. चिपको आंदोलन

सूची II: (संबंधित क्षेत्र/अवधारणा)
1. उत्तराखंड में महिला संचालित संस्था
2. पेड़ों को कटने से बचाने का आंदोलन
3. मेघालय की आदिवासी जातियाँ
4. खासियों की पारंपरिक राजनीतिक परिषद्

कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

23. मेघालय की खासी जनजाति की पारंपरिक राजनीतिक परिषद् को क्या कहा जाता है?
(A) ग्राम सभा
(B) जातीय पंचायत
(C) खासी दरबार
(D) दरबार कुर

24. मेघालय जैसे आदिवासी क्षेत्रों के संबंध में 73वें संविधान संशोधन बारे में क्या सत्य है?
(A) आदिवासी क्षेत्रों का एक बड़ा खंड इसके प्रावधानों से बाहर है।
(B) यह सभी आदिवासी क्षेत्रों में पूरी तरह से लागू किया गया है।
(C) इसने पारंपरिक राजनीतिक संस्थाओं को पूरी तरह समाप्त कर दिया है।
(D) इसे केवल गारो जनजाति पर लागू किया गया है।

25. पंचायती राज में महिलाओं की भागीदारी के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. कलावती, एक दलित महिला, पंचायत सदस्य बनकर अपने आत्मसम्मान में वृद्धि महसूस करती है।
2. पंचायत सदस्य बनने से पहले उसे 'रामू की माँ' के नाम से जाना जाता था।
3. उत्तराखंड में महिलाओं ने 'वन पंचायत' की स्थापना की।
4. 'चिपको आंदोलन' का उद्देश्य वनों की अवैध कटाई को रोकना था।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

26. समाजशास्त्री टिपलुट नोंगबरी ने किसके रिपोर्ट पर टिप्पणी करते हुए पारंपरिक आदिवासी संस्थाओं की जटिलता पर प्रकाश डाला?
(A) भूरिया समिति
(B) संथानम समिति
(C) अशोक मेहता समिति
(D) सरकारिया आयोग

27. टिपलुट नोंगबरी के अनुसार, आदिवासी समाजों के बारे में क्या धारणा गलत है?
(A) उनमें आंतरिक सामाजिक स्तरीकरण के कुछ तत्त्व उपस्थित होते हैं।
(B) उनकी राजनीतिक संस्थाएँ कई बार महिलाओं के प्रति असहिष्णु होती हैं।
(C) सामाजिक परिवर्तनों ने उनकी पारंपरिक व्यवस्था में विकृतियाँ पैदा की हैं।
(D) वे पूर्ण रूप से समतावादी और स्तरीकरण से मुक्त होते हैं।

(D) अनुच्छेद 25 (धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार)

9. पंचायती राज संस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसका शाब्दिक अर्थ 'पाँच व्यक्तियों द्वारा शासन' है।
2. यह ज़मीनी स्तर पर लचीले लोकतंत्र की क्रियाशीलता से संबंधित है।
3. भारत में यह विचार पूर्णतः विदेश से आयातित है।
4. पारंपरिक जातीय पंचायतें हमेशा लोकतांत्रिक मानदंडों का पालन करती थीं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) केवल 1, 3 और 4

10. संविधान निर्माण के समय, किस प्रमुख नेता ने यह तर्क दिया था कि स्थानीय स्वशासन का मतलब पददलित लोगों का निरंतर शोषण होगा?
(A) डॉ. अंबेडकर
(B) महात्मा गाँधी
(C) जवाहरलाल नेहरु
(D) सरदार पटेल

11. 'ग्राम स्वराज्य' की अवधारणा का प्रबल समर्थक कौन था, जो चाहते थे कि स्वतंत्रता के बाद भी गाँवों में यही शासन चले?
(A) के. संथानम
(B) डॉ. अंबेडकर
(C) सी. राजगोपालाचारी
(D) महात्मा गाँधी

12. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता 73वें संविधान संशोधन द्वारा अनिवार्य नहीं की गई है?
(A) प्रत्येक पाँच वर्ष में स्थानीय स्वशासन के सदस्यों का चुनाव।
(B) ग्राम सभा को सभी न्यायिक शक्तियाँ प्रदान करना।
(C) महिलाओं के लिए 33 प्रतिशत आरक्षित सीटें।
(D) अनुसूचित जाति व जनजाति के लिए निश्चित आरक्षित सीटें।

13. नीचे दिए गए प्रश्न में दो कथन हैं, जिन्हें अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): 73वां संविधान संशोधन भारत में मौलिक व प्रारंभिक स्तर पर लोकतंत्र और विकेंद्रीकृत शासन की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था।
कारण (R): इस संशोधन ने पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक प्रस्थिति प्रदान की और स्थानीय निकायों के नियमित चुनाव को अनिवार्य बना दिया।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

14. पंचायती राज की त्रिस्तरीय व्यवस्था के संदर्भ में क्या सही नहीं है?
(A) इसकी संरचना एक पिरामिड की भाँति है।
(B) ग्राम सभा लोकतंत्र की आधारभूत इकाई के रूप में कार्य करती है।
(C) इसने पूरे ज़िले के विकास का प्रारूप निर्मित करने के लिए ज़िला योजना समिति गठित की।
(D) यह बीस लाख से कम जनसंख्या वाले राज्यों के लिए अनिवार्य है।

15. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 73वें और 74वें संविधान संशोधन ने ग्रामीण व नगरीय दोनों क्षेत्रों में महिलाओं को एक तिहाई आरक्षण दिया।
2. महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों में से 17 प्रतिशत सीटें अनुसूचित जाति व अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के लिए आरक्षित हैं।
3. 73वें संशोधन के तुरंत बाद 1993-94 के चुनाव में लगभग 8,00,000 महिलाएँ राजनीतिक प्रक्रियाओं से जुड़ीं।
4. यह संशोधन महिलाओं को निर्णय लेने की शक्ति प्रदान करने में एक महत्वपूर्ण कदम था।
5. महिलाओं के लिए आरक्षण केवल ग्राम पंचायत स्तर तक ही सीमित है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 1, 2, 3, 4
(C) केवल 3, 4, 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

16. 73वें संशोधन के बाद, स्थानीय निकायों में महिलाओं को कितना आरक्षण प्रदान किया गया है?
(A) एक-चौथाई
(B) एक-तिहाई
(C) आधा
(D) दस प्रतिशत

17. पंचायतों को निम्नलिखित में से कौन सी शक्ति या उत्तरदायित्व प्राप्त नहीं है?
(A) आर्थिक विकास के लिए योजनाएँ एवं कार्यक्रम बनाना।
(B) गंभीर आपराधिक मामलों में दंड देना।
(C) सामाजिक न्याय को प्रोत्साहित करने वाले कार्यक्रमों को बढ़ावा देना।
(D) शुल्क, यात्री कर, जुर्माना आदि लगाना व एकत्र करना।

18. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:

अध्याय 10
संविधान एवं सामाजिक परिवर्तन

1. भारतीय संविधान को सामाजिक न्याय का आधारभूत मानदंड क्यों माना जाता है?
   (A) क्योंकि यह केवल संकुचित राजनीतिक अधिकारों पर ही केंद्रित है।
   (B) क्योंकि यह सामाजिक न्याय और लोक सहायता क्षमता पर आधारित है।
   (C) क्योंकि यह मुख्य रूप से केवल अंतर्राष्ट्रीय कानूनों का संकलन है।
   (D) क्योंकि यह पूर्णतः आर्थिक समृद्धि और विकास की गारंटी देता है।

2. निम्नलिखित में से कौन सा कथन कानून और न्याय के बीच के अंतर को सही ढंग से दर्शाता है?
   (A) कानून का सार शक्ति है और न्याय का मुख्य सार इसकी निष्पक्षता है।
   (B) कानून का मुख्य सार निष्पक्षता है, जबकि न्याय का सार शक्ति माना जाता है।
   (C) कानून और न्याय दोनों का ही प्राथमिक और एकमात्र सार सदैव शक्ति है।
   (D) कानून और न्याय में कोई अंतर नहीं है क्योंकि वे पूर्णतः पर्यायवाची हैं।

3. नीचे दिए गए प्रश्न में दो कथन हैं, जिन्हें अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
   अभिकथन (A): संविधान केवल यह नहीं बताता कि सामाजिक न्याय के लिए क्या करना चाहिए, बल्कि इसमें सामाजिक न्याय के अर्थ को प्रचारित करने की क्षमता भी है।
   कारण (R): संविधान वह माध्यम है जो राजनीतिक शक्ति को सामाजिक हित की ओर प्रवाहित करता है और उसे सुसंगत बनाता है।
   (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
   (D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

4. संविधान सभा में ग्राम पंचायतों से संबंधित निदेशक सिद्धांत को एक संशोधन के रूप में किसने प्रस्तुत किया था?
   (A) डॉ. बी.आर. अंबेडकर
   (B) महात्मा गाँधी
   (C) जवाहरलाल नेहरु
   (D) के. संथानम

5. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'गलत' है?
   (A) भारतीय संविधान भारत का मूल मानदंड है।
   (B) सभी कानून संविधान द्वारा नियत कार्य प्रणाली के अंतर्गत बनते हैं।
   (C) कानून की व्याख्या केवल विधायिका द्वारा ही की जा सकती है।
   (D) उच्चतम न्यायालय संविधान का सबसे अंतिम व्याख्याकर्ता है।

6. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
   सूची I: (प्रावधान)
   P. अनुच्छेद 21
   Q. अनुच्छेद 19(क)
   R. 'समान कार्य के लिए समान वेतन'
   S. 73वां संशोधन
   सूची II: (संबंधित अवधारणा/अधिकार)
   1. सूचना का अधिकार
   2. पंचायती राज
   3. जीवन और स्वतंत्रता का अधिकार
   4. निदेशक सिद्धांत (अनुच्छेद 14 के तहत मौलिक अधिकार माना गया)
   कूट:
   (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
   (B) P-1, Q-2, R-3, S-4
   (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
   (D) P-2, Q-1, R-4, S-3

7. उच्चतम न्यायालय ने किस वर्ष में सूचना के अधिकार को अनुच्छेद 19(क) के अंतर्गत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हिस्सा माना?
   (A) 1992
   (B) 1995
   (C) 2001
   (D) 1993

8. उच्चतम न्यायालय ने 'समान कार्य के लिए समान वेतन' के निदेशक सिद्धांत को किस मौलिक अधिकार के अंतर्गत माना?
   (A) अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार)
   (B) अनुच्छेद 19 (स्वतंत्रता का अधिकार)
   (C) अनुच्छेद 21 (जीवन का अधिकार)

28. नीचे दिए गए प्रश्न में दो कथन हैं, जिन्हें अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): जिस देश में जाति, समुदाय और लिंग आधारित असमानता का लंबा इतिहास हो, वहाँ लोकतंत्रीकरण आसान नहीं है।
कारण (R): गाँव की समितियों में अक्सर अमीर किसानों या उच्च जाति के ज़मींदारों जैसे छोटे गुटों का नियंत्रण होता है कि बहुसंख्यक लोगों को अनदेखा करते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

29. 'फेडरेशन ऑफ़ इंडियन कॉमर्स एंड चैंबर्स' किसका उदाहरण है?
(A) एक राजनीतिक दल
(B) एक गैर-सरकारी संगठन
(C) उद्योगपतियों का एक संगठन (हित समूह)
(D) एक कृषि संगठन

30. एक 'राजनीतिक दल' को किस रूप में परिभाषित किया जा सकता है?
(A) एक ऐसा संगठन जो केवल समाज सुधार कार्यों हेतु बनाया गया हो।
(B) एक ऐसा संगठन जो सरकार के विरुद्ध केवल प्रदर्शन और सभाएं करता है।
(C) एक संगठन जो पूर्णतः अंतर्राष्ट्रीय कूटनीतिक संबंधों पर केंद्रित हो।
(D) एक संगठन जो निर्वाचन द्वारा सरकार पर नियंत्रण हेतु उन्मुख हो।

31. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. हित समूह राजनीतिक क्षेत्र में कुछ निश्चित हितों को पूरा करने के लिए बनाए जाते हैं।
2. दबाव समूह सरकार से अपनी बात मनवाने की कोशिश करते हैं।
3. सभी दबाव समूहों के पास सरकार पर दबाव बनाने की समान क्षमता होती है।
4. कुछ राजनीतिक संगठन शासन सत्ता पाना चाहते हैं लेकिन मानक माध्यमों के अभाव में आंदोलन का रास्ता अपनाते हैं।
5. हित समूहों का अस्तित्व लोकतंत्र के लिए हमेशा हानिकारक होता है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 4
(B) केवल 1, 3, 5
(C) केवल 2, 3, 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

32. मैक्स वेबर के अनुसार, 'दल' (पार्टी) किस संरचना के अंतर्गत होते हैं?
(A) अर्थ प्रणाली
(B) शक्ति संरचना
(C) सामाजिक क्रम
(D) सांस्कृतिक व्यवस्था

33. मैक्स वेबर के अनुसार, दलों की क्रियाएँ हमेशा किसके लिए होती हैं?
(A) केवल सामाजिक सेवा के लिए।
(B) एक नियोजित दृष्टि से प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्य के लिए।
(C) केवल अंतर्राष्ट्रीय शांति के लिए।
(D) केवल आर्थिक लाभ के लिए।

34. उत्तराखंड में 'वन पंचायतों' की स्थापना का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) पशुओं का चारा और लकड़ी की समस्या का समाधान करना।
(B) राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना।
(C) शहरी क्षेत्रों में रोजगार खोजना।
(D) चुनाव लड़ना।

35. निम्नलिखित में से कौन सा आंदोलन उत्तराखंड में महिलाओं द्वारा पेड़ों को कटने से बचाने के लिए प्रारंभ किया गया था?
(A) नर्मदा बचाओ आंदोलन
(B) अप्पिको आंदोलन
(C) चिपको आंदोलन
(D) शांत घाटी आंदोलन

36. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (संगठन का प्रकार)
P. उद्योगपति संगठन
Q. कर्मचारी संगठन
R. किसान संगठन
S. आदिवासी पारंपरिक परिषद्

सूची II: (उदाहरण)
1. शेतकरी संगठन
2. दरबार कुर
3. इंडियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस
4. फेडरेशन ऑफ़ इंडियन कॉमर्स एंड चैंबर्स

कूट:
(A) P-4, Q-3, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-1, R-3, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

37. निरक्षर महिलाओं को पंचायती राज का प्रशिक्षण देने के लिए किस नवाचारी उपाय का प्रयोग किया गया था?
(A) औपचारिक और पारंपरिक कक्षा शिक्षण
(B) विदेशी भाषाओं की डब की गई फिल्में

दिखने की कोशिश करते थे, लेकिन फिर भी वे पूरी तरह न तो अंग्रेज बन सके और न ही अपने मूल समाज से जुड़ पाए।

160. (A) वे औपनिवेशिक शासकों और आम जनता के बीच मध्यस्थ की तरह थे।
शहरी मध्य वर्ग ने ब्रिटिश शासकों और भारतीय जनता के बीच एक संचार सेतु के रूप में कार्य किया। अंग्रेजी भाषा और आधुनिक प्रणालियों का ज्ञान होने के कारण वे शासन की जटिलताओं को समझते थे। साथ ही, वे भारतीय समाज के प्रतिनिधि बनकर अपनी मांगों को औपनिवेशिक सरकार के सामने रखते थे। इस अद्वितीय स्थिति ने उन्हें भारतीय राजनीति और सामाजिक सुधारों में एक निर्णायक भूमिका प्रदान की।

161. (D) स्थानीय जाति पदानुक्रम में अपनी सामाजिक स्थिति ऊँचा उठाना।
संस्कृतीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ समाज का कोई निम्न वर्ग उच्च जातियों के रीति-रिवाजों और विश्वासों को अपनाता है। इसका मुख्य ध्येय जाति व्यवस्था के भीतर स्वयं के लिए उच्च सम्मान और श्रेष्ठ पद प्राप्त करना होता है। इस अनुकरण के माध्यम से वे समूह समाज में अपनी पहचान बदलना चाहते हैं ताकि उन्हें स्थानीय सामाजिक व्यवस्था में अधिक सम्मानजनक स्थान मिल सके और तिरस्कार कम हो।

162. (B) जाति व्यवस्था के मूल ढांचे को चुनौती देना।
संस्कृतीकरण की प्रक्रिया किसी क्रांतिकारी परिवर्तन की मांग नहीं करती, बल्कि यह प्रचलित जाति पदानुक्रम के भीतर ही सुधार चाहती है। इसमें निम्न जातियां केवल अपनी स्थिति बदलने का प्रयास करती हैं, लेकिन वे जाति व्यवस्था की मूलभूत असमानता को समाप्त करने की कोशिश नहीं करतीं। यह प्रक्रिया ब्राह्मणवादी मूल्यों को ही आदर्श मानकर चलती है, इसलिए यह व्यवस्था के बुनियादी ढांचे को कभी चुनौती नहीं देती है।

163. (C) समूह की आर्थिक या राजनीतिक शक्ति पर।
किसी समूह द्वारा उच्च जाति के रूप में दी गई नई पहचान को केवल अनुष्ठानों के आधार पर मान्यता नहीं मिलती। समाज में इस दावे की सफलता काफी हद तक उस समूह की बढ़ती हुई आर्थिक समृद्धि और राजनीतिक प्रभुत्व पर निर्भर करती है। जब कोई समूह संसाधन संपन्न हो जाता है, तो समाज के अन्य वर्ग अक्सर उनके उच्च सामाजिक दर्जे के दावे को स्वीकार करने के लिए विवश हो जाते हैं।

164. (D) क्योंकि यह जातिगत असमानता को स्वीकार कर उसे चुनौती नहीं देती।
आलोचक संस्कृतीकरण की इसलिए निंदा करते हैं क्योंकि यह अप्रत्यक्ष रूप से उच्च जाति की संस्कृति की श्रेष्ठता को स्वीकार करती है। यह प्रक्रिया निम्न जातियों को अपनी मूल संस्कृति का त्याग करने के लिए प्रेरित करती है, जिससे दलित और जनजातीय पहचान का अवमूल्यन होता है। यह व्यवस्था में कोई वास्तविक बदलाव लाने के बजाय केवल ऊपरी दिखावे और स्थितिगत सुधार तक ही सीमित रह जाती है।

165. (A) व्यक्ति व्यवस्था के भीतर अपनी स्थिति बदलते हैं, लेकिन व्यवस्था स्वयं नहीं बदलती।
स्थितिगत परिवर्तन का अर्थ है कि पदानुक्रम के भीतर कुछ इकाइयां ऊपर या नीचे खिसक सकती हैं, लेकिन श्रेणीबद्ध ढांचा वैसा ही बना रहता है। संस्कृतीकरण में एक जाति अपनी रैंकिंग सुधार लेती है, पर जाति व्यवस्था के नियम और भेदभाव यथावत रहते हैं। इसके विपरीत, संरचनात्मक परिवर्तन तब होता है जब पूरी सामाजिक व्यवस्था ही बदल जाए और पुराने पदानुक्रम के स्थान पर नई समानता स्थापित हो।

166. (B) पश्चिमीकरण सांस्कृतिक अनुकरण है, जबकि आधुनिकीकरण एक तटस्थ प्रक्रिया है।
पश्चिमीकरण और आधुनिकीकरण में मौलिक अंतर उनके स्रोत और प्रकृति में निहित है। पश्चिमीकरण विशेष रूप से पश्चिमी देशों की विशिष्ट आदतों, भाषा और पहनावे की नकल करने पर जोर देता है। इसके विपरीत, आधुनिकीकरण एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है जो विज्ञान, तर्क और औद्योगिकीकरण पर आधारित है। कोई भी समाज अपनी मौलिक संस्कृति को सुरक्षित रखते हुए आधुनिक तकनीकों और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को सफलतापूर्वक अपनाकर आधुनिक बन सकता है।

167. (B) केवल पश्चिमी सांस्कृतिक मूल्यों का अनुकरण।
आधुनिकीकरण का केंद्र केवल पश्चिमी संस्कृति की नकल करना नहीं है, बल्कि तर्कसंगतता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना है। इसमें शहरीकरण, औद्योगिक प्रगति और ऐसे मूल्यों का प्रसार शामिल है जो सार्वभौमिक रूप से मान्य हों। यह प्रक्रिया किसी विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्र की संस्कृति तक सीमित नहीं होती, बल्कि यह समाज के बौद्धिक और भौतिक स्तर को उन्नत करने की एक प्रगतिशील और व्यापक सामाजिक विकास यात्रा है।

168. (A) क्योंकि आधुनिकीकरण की प्रक्रिया औपनिवेशिक शासन के माध्यम से आई।
भारत में आधुनिकीकरण का परिचय ब्रिटिश शासन के दौरान हुआ, जिससे यह प्रक्रिया अनिवार्य रूप से पश्चिमी प्रभावों के साथ घुल-मिल गई। भारतीयों ने आधुनिक संस्थाओं जैसे प्रेस, रेलवे और कानून को पश्चिमी संस्कृति के माध्यम से प्राप्त किया। इस ऐतिहासिक संयोग के कारण, लोग अक्सर आधुनिक होने का अर्थ पश्चिमी जीवन शैली अपनाना समझने लगे, जिससे इन दो अलग-अलग प्रक्रियाओं के बीच का अंतर स्पष्ट नहीं रह गया।

169. (C) कि सांस्कृतिक पहचान को बचाते हुए भी समाज आधुनिक हो सकता है।
जापान का उदाहरण यह प्रमाणित करता है कि आधुनिकीकरण के लिए अपनी सांस्कृतिक जड़ों को छोड़ना आवश्यक नहीं है। जापान ने बिना अपनी परंपराओं को खोए विश्व स्तर पर औद्योगिक और तकनीकी श्रेष्ठता प्राप्त की। यह दर्शाता है कि आधुनिकता और परंपरा साथ-साथ चल सकते हैं। इस प्रकार, कोई राष्ट्र अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखते हुए भी वैज्ञानिक और आर्थिक रूप से पूर्णतः विकसित और आधुनिक हो सकता है।

48. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. भारत के संविधान का निर्माण।
2. 73वां संविधान संशोधन।
3. 'महिला समाख्या' द्वारा कलावती का अनुभव दर्ज करना।
4. उत्तराखंड में चिपको आंदोलन।
(A) 1, 4, 2, 3
(B) 4, 1, 2, 3
(C) 1, 2, 4, 3
(D) 2, 4, 1, 3

49. 'असमता व अलोकतांत्रिक सामाजिक संरचना' वाले समाज में लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया को लागू करने में मुख्य चुनौती क्या है?
(A) आम लोगों की राजनीतिक विषयों में उदासीनता।
(B) प्रभावशाली गुटों का प्रभुत्व और बहुसंख्यकों की अनदेखी।
(C) विदेशी शक्तियों का आंतरिक शासन में हस्तक्षेप।
(D) वित्तीय संसाधनों का स्थानीय स्तर पर पूर्ण अभाव।

50. 'द सेंटर फॉर इंडियन ट्रेड यूनियंस' किसका एक उदाहरण है?
(A) कर्मचारियों का संगठन
(B) किसानों का संगठन
(C) उद्योगपतियों का संगठन
(D) छात्रों का संगठन

51. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (विचारक)
P. मैक्स वेबर
Q. डॉ. अंबेडकर
R. महात्मा गाँधी
S. के. संथानम
सूची II: (संबंधित विचार/कार्य)
1. ग्राम स्वराज्य
2. पंचायतों पर निदेशक सिद्धांत का प्रस्ताव
3. दल, प्रस्थिति समूह और वर्ग का विश्लेषण
4. स्थानीय स्वशासन पर संदेह
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

52. मैक्स वेबर के अनुसार 'प्रस्थिति समूहों' (Status Groups) का स्थान किस क्रम (आर्डर) में होता है?
(A) आर्थिक क्रम
(B) राजनीतिक क्रम
(C) कानूनी क्रम
(D) सामाजिक क्रम

53. 73वें संविधान संशोधन के अंतर्गत, महिलाओं के लिए आरक्षित सीटों में से अनुसूचित जाति व जनजाति की महिलाओं के लिए कितनी सीटें आरक्षित हैं?
(A) 10 प्रतिशत
(B) 33 प्रतिशत
(C) 17 प्रतिशत
(D) 50 प्रतिशत

54. निम्नलिखित में से कौन सा कार्य पंचायतों के विकासात्मक कार्यों में शामिल है?
(A) केवल धार्मिक अनुष्ठान करना।
(B) सड़कों, सार्वजनिक भवनों, तालाबों व स्कूलों का निर्माण।
(C) केवल कर वसूलना।
(D) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना।

55. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. संविधान में लोगों की सहायता करने की क्षमता निहित है।
2. सामाजिक आंदोलनों ने अधिकारों और कर्तव्यों की व्याख्या में न्यायालयों की सहायता की है।
3. कानून और न्यायालय ऐसी संस्थाएँ हैं जहाँ प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोणों पर बहस होती है।
4. संविधान राजनीतिक शक्ति को केवल अभिजात वर्ग के हित में प्रवाहित करता है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

56. भारतीय संदर्भ में, 'कानून' को 'कानून' क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि इसके पीछे राज्य की शक्ति निहित होती है और बल प्रयोग का माध्यम होता है।
(B) क्योंकि यह नैतिक सिद्धांतों पर आधारित है।
(C) क्योंकि यह सर्वसम्मति से बनता है।
(D) क्योंकि यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है।

57. नीचे दिए गए प्रश्न में दो कथन हैं, जिन्हें अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): उच्चतम न्यायालय ने कई महत्वपूर्ण रूपों में मौलिक अधिकारों का दायरा बढ़ाया है।
कारण (R): अनुच्छेद 21 की व्याख्या करते हुए, न्यायालय ने जीवन के अधिकार में गरिमा, स्वास्थ्य, आवास और शिक्षा जैसी अनिवार्य गुणवत्ता को शामिल किया है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।

(C) कपड़े की फड़ (परंपरागत लोक माध्यम)
(D) गहन अकादमिक शोध और संगोष्ठियाँ

38. 'सुखीपुर और दुखीपुर' की कहानी के माध्यम से क्या मुख्य संदेश दिया गया था?
(A) केवल मतदान करना ही पूर्णतः पर्याप्त है।
(B) मतदान का आधार और उद्देश्य जानना आवश्यक है।
(C) केवल चुनाव जीतना ही लोकतंत्र में पर्याप्त है।
(D) महिलाओं को निर्वाचन में भाग नहीं लेना चाहिए।

39. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. कानून की कोई भी प्रणाली अधिकारियों के संस्तरण के माध्यम से ही कार्यरत होती है।
2. संविधान एक ऐसा दस्तावेज़ है जिससे किसी राष्ट्र के सिद्धांतों का निर्माण होता है।
3. कोई विवाद होने पर संविधान द्वारा अधिकार प्राप्त न्यायालयों के संस्तरण द्वारा कानून की व्याख्या होती है।
4. भारत में, उच्च न्यायालय संविधान का अंतिम व्याख्याकर्ता है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

40. अनुच्छेद 21 की व्याख्या करते हुए उच्चतम न्यायालय ने 'जीवन के अधिकार' में किसे शामिल नहीं किया है?
(A) असीमित धन का अधिकार
(B) जीवनयापन के साधन
(C) स्वास्थ्य और आवास
(D) गरिमा और शिक्षा

41. 73वें और 74वें संविधान संशोधनों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) इसने ग्रामीण और नगरीय दोनों क्षेत्रों के स्थानीय निकायों को संवैधानिक दर्जा दिया।
(B) इसने महिलाओं के लिए एक तिहाई आरक्षण का प्रावधान किया।
(C) इसने स्थानीय निकायों के चुनाव को स्वैच्छिक बना दिया।
(D) इसने स्थानीय संसाधनों पर चुने हुए निकायों का नियंत्रण स्थापित किया।

42. नीचे दिए गए प्रश्न में दो कथन हैं, जिन्हें अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): डॉ. अंबेडकर संविधान सभा में पंचायतों की अवधारणा को लेकर चिंतित थे।
कारण (R): उन्हें डर था कि स्थानीय कुलीन और उच्च जातीय लोग पददलित लोगों का निरंतर शोषण करेंगे।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

43. पंचायती राज की त्रिस्तरीय व्यवस्था के शीर्ष पर क्या होता है?
(A) ग्राम सभा
(B) ग्राम पंचायत
(C) पंचायत समिति
(D) ज़िला परिषद्

44. 73वें संशोधन के बाद 1993-94 के चुनावों का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम क्या था?
(A) बड़ी संख्या में पुरुषों का सक्रिय राजनीति से मोहभंग होना।
(B) लगभग 8,00,000 महिलाओं का राजनीतिक प्रक्रिया से जुड़ना।
(C) सभी राज्यों में आर्थिक विकास की समान दर प्राप्त होना।
(D) क्षेत्रीय राजनीतिक दलों की कुल संख्या में भारी कमी होना।

45. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. पंचायतें श्मशानों एवं कब्रिस्तानों का रखरखाव करती हैं।
2. जन्म और मृत्यु के आँकड़े रखना पंचायतों का कार्य है।
3. परिवार-नियोजन का प्रचार पंचायतों के सामाजिक कल्याण कार्यों में शामिल है।
4. पंचायतें कुटीर उद्योगों के विकास में भी सहयोग करती हैं।
5. एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम जैसी योजनाएँ पंचायत के सदस्यों द्वारा संचालित होती हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 3, 4, 5
(C) केवल 1, 2, 4, 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

46. 'न्याय पंचायतों' के बारे में क्या सत्य है?
(A) वे सजा दे सकते हैं लेकिन जुर्माना नहीं लगा सकते।
(B) वे न तो जुर्माना लगा सकते हैं और न ही सजा दे सकते हैं।
(C) वे मृत्युदंड तक की सजा दे सकते हैं।
(D) वे जुर्माना लगा सकते हैं लेकिन सजा नहीं दे सकते।

47. दलित महिला कलावती को पंचायत सदस्य बनने के बाद सबसे महत्वपूर्ण अनुभव क्या हुआ?
(A) उसे एक नई पहचान और बढ़ा हुआ आत्मसम्मान मिला।
(B) उसे बहुत अधिक धन प्राप्त हुआ।
(C) उसे गाँव छोड़ना पड़ा।
(D) गाँव के सभी लोग उसके विरोधी हो गए।

की वास्तविकता को जानना।
(B) नेताओं और अनुयायियों के लिए आराम, शक्ति और सम्मान प्राप्त करना।
(C) उपरोक्त में से कोई नहीं।
(D) उपरोक्त (A) और (B) दोनों।

69. पंचायती राज संस्थाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. पारंपरिक जातीय पंचायतें हमेशा प्रभुत्वशाली समूहों का प्रतिनिधित्व करती रही हैं।
2. डॉ. अंबेडकर का मानना था कि स्थानीय स्वशासन दलितों के शोषण को बढ़ाएगा।
3. महात्मा गाँधी प्रत्येक ग्राम को आत्मनिर्भर इकाई ('ग्राम स्वराज्य') के रूप में देखते थे।
4. संविधान निर्माताओं ने सर्वसम्मति से पंचायतों को प्रारंभ में ही संवैधानिक दर्जा दे दिया था।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

70. "संविधान वह माध्यम है जो राजनीतिक शक्ति को सामाजिक हित की ओर प्रवाहित करता है"। इस कथन का क्या तात्पर्य है?
(A) संविधान केवल राजनीतिक दलों को लाभ पहुँचाता है।
(B) संविधान यह सुनिश्चित करता है कि शासन की शक्ति का उपयोग समाज के कल्याण के लिए हो।
(C) संविधान राजनीतिक शक्ति को सीमित करता है।
(D) संविधान का सामाजिक हित से कोई संबंध नहीं है।

71. उच्चतम न्यायालय की व्याख्या के अनुसार, अनुच्छेद 21 के तहत 'जीवन का अधिकार' एक 'पशुमात्र के अस्तित्व' से बेहतर क्यों है?
(A) क्योंकि इसमें केवल भौतिक सुरक्षा शामिल है।
(B) क्योंकि यह केवल कैदियों पर लागू होता है।
(C) क्योंकि यह केवल विदेशी नागरिकों के लिए है।
(D) क्योंकि इसमें गरिमा, स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका जैसी अनिवार्य गुणवत्ताएँ शामिल हैं।

72. नीचे दिए गए प्रश्न में दो कथन हैं, जिन्हें अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): 73वां संविधान संशोधन महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम था।
कारण (R): इसने पहली बार महिलाओं को स्थानीय निकायों के निर्वाचित पदों पर आरक्षण के माध्यम से निर्णय लेने की प्रक्रिया में भागीदार बनाया।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

73. 'ग्राम सभा' की भूमिका के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) यह स्थानीय सरकार का चुनाव करती है।
(B) यह विकासात्मक कार्यों के लिए एक मंच उपलब्ध कराती है।
(C) इसके निर्णय उच्चतम न्यायालय के लिए बाध्यकारी होते हैं।
(D) यह निर्णय लेने की प्रक्रिया में निर्बलों की भागीदारी सुनिश्चित कर सकती है।

74. पंचायतें 'एकीकृत बाल विकास योजना' जैसी सरकारी योजनाओं के संचालन में क्या भूमिका निभाती हैं?
(A) वे इन योजनाओं के संचालन के लिए जिम्मेदार होती हैं।
(B) वे इन योजनाओं में कोई भूमिका नहीं निभातीं।
(C) वे केवल इन योजनाओं का विरोध करती हैं।
(D) वे इन योजनाओं के लिए केवल धन उपलब्ध कराती हैं।

75. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. न्याय पंचायतें छोटे-मोटे दीवानी और आपराधिक मामलों की सुनवाई करती हैं।
2. ये पंचायतें दहेज प्रताड़ना जैसे मामलों में समझौता कराने में सफल हो सकती हैं।
3. ये पंचायतें मृत्युदंड की सजा दे सकती हैं।
4. ये केवल जुर्माना लगा सकती हैं, कारावास की सजा नहीं दे सकतीं।
5. न्याय पंचायतों की स्थापना सभी राज्यों में अनिवार्य है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 4
(B) केवल 1, 3, 5
(C) केवल 2, 3, 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

76. खासी जनजाति की पारंपरिक राजनीतिक प्रणाली में, वंश की परिषद् को क्या कहा जाता था और यह किसके निर्देशन में कार्य करती थी?
(A) ग्राम सभा, सरपंच
(B) दरबार कुर, वंश का मुखिया
(C) जातीय पंचायत, पंच
(D) खाप पंचायत, प्रधान

77. यह क्यों माना जाता है कि आदिवासी क्षेत्रों का एक बड़ा खंड 73वें संशोधन के प्रावधान से बाहर है?
(A) क्योंकि आदिवासी लोग लोकतंत्र नहीं चाहते थे।
(B) क्योंकि आदिवासी क्षेत्रों में जनसंख्या बहुत कम थी।
(C) क्योंकि उस समय के नीति निर्माता पारंपरिक राजनीतिक संस्थाओं में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते थे।

117. 'ग्राम सभा' के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) इसमें केवल गाँव के धनी व्यक्ति ही शामिल हो सकते हैं।
(B) यह एक अस्थायी निकाय है जो कभी-कभी ही बैठक करता है।
(C) यह निर्णय लेने की प्रक्रिया में निर्बलों की भागीदारी के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकती है।
(D) इसका स्थानीय सरकार के चुनाव से कोई लेना-देना नहीं है।

118. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अवधारणा/संगठन)
P. 73वां संशोधन
Q. चिपको आंदोलन
R. भूरिया समिति
S. इंडियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस
सूची II: (संबंधित विषय)
1. कर्मचारी संगठन
2. आदिवासी संस्थाएँ
3. पर्यावरण संरक्षण
4. पंचायती राज
कूट:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

119. एक हित समूह और एक राजनीतिक दल में मुख्य अंतर क्या है?
(A) हित समूह का प्राथमिक उद्देश्य सत्ता प्राप्त करना है, जबकि दल का बिल्कुल नहीं।
(B) दोनों संस्थाओं के मध्य संरचनात्मक या कार्यात्मक रुप से कोई भी अंतर नहीं है।
(C) हित समूह ग्रामीण क्षेत्रों हेतु होते हैं, जबकि दल केवल नगरीय क्षेत्रों हेतु।
(D) दल सत्ता प्राप्त करना चाहते हैं, जबकि हित समूह नीतियों को प्रभावित करना।

120. मैक्स वेबर के अनुसार, निम्नलिखित में से क्या एक 'दल' का 'निजी' उद्देश्य हो सकता है?
(A) दल के नेता और अनुयायियों के लिए आराम, शक्ति और सम्मान प्राप्त करना।
(B) किसी सामाजिक कारण के लिए लड़ना।
(C) एक वैचारिक कार्यक्रम को लागू करना।
(D) राष्ट्रीय आय में वृद्धि करना।

121. संविधान के अनुसार भारत में सर्वोच्च कानून कौन है?
(A) संसद द्वारा पारित कोई भी अधिनियम।
(B) उच्चतम न्यायालय का कोई भी निर्णय।
(C) स्वयं भारतीय संविधान।
(D) प्रधानमंत्री का कोई भी आदेश।

122. निम्नलिखित में से कौन सा 73वें संशोधन का प्रत्यक्ष परिणाम नहीं था?
(A) संसद में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण।
(B) महिलाओं के लिए 33% आरक्षण।
(C) अनुसूचित जाति/जनजाति के लिए सीटों का आरक्षण।
(D) प्रत्येक 5 वर्ष में अनिवार्य चुनाव।

123. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारतीय संविधान सामाजिक न्याय के मानदंडों पर आधारित है।
2. के. संथानम ने संविधान सभा में पंचायतों का विरोध किया था।
3. 73वां संशोधन 1992 में एक संवैधानिक विधेयक बना।
4. उच्चतम न्यायालय मौलिक अधिकारों का विस्तार नहीं कर सकता।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 3 और 4

124. 'शेतकरी संगठन' निम्नलिखित में से किस समूह का प्रतिनिधित्व करता है?
(A) उद्योगपति
(B) कृषि मज़दूर और किसान
(C) शहरी श्रमिक
(D) सरकारी कर्मचारी

125. नीचे दिए गए प्रश्न में दो कथन हैं, जिन्हें अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): कई आदिवासी क्षेत्रों की अपनी सुविकसित पारंपरिक राजनीतिक संस्थाएँ हैं।
कारण (R): इसी कारण से, संविधान के 73वें संशोधन के प्रावधानों को कई आदिवासी क्षेत्रों में लागू नहीं किया गया ताकि उनकी पारंपरिक संस्थाओं में हस्तक्षेप न हो।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

126. पंचायतें निम्नलिखित में से कौन सा शुल्क या कर लगा सकती हैं?
(A) केवल आयकर।
(B) केवल कॉर्पोरेट कर।
(C) केवल विदेशी वस्तुओं पर आयात शुल्क।
(D) संपत्ति कर, यात्री कर, और चुंगी।

88. 73वें संविधान संशोधन ने बीस लाख से अधिक जनसंख्या वाले प्रत्येक राज्य में किस प्रकार की पंचायती राज प्रणाली लागू की?
(A) त्रि-स्तरीय
(B) एक-स्तरीय
(C) द्वि-स्तरीय
(D) चार-स्तरीय

89. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. पंचायतें पशुओं के तालाब पर नियंत्रण रखती हैं।
2. कृषि-कार्यों का विकास पंचायतों के कार्यों में शामिल है।
3. छोटे सिंचाई कार्यों की देखभाल पंचायतें करती हैं।
4. पंचायतें केवल बड़े उद्योगों के विकास में सहयोग करती हैं।
5. पंचायतें जन्म और मृत्यु के आँकड़े नहीं रखती हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 2, 3, 4
(C) केवल 3, 4, 5
(D) केवल 1, 2, 5

90. 'चिपको आंदोलन' में महिलाओं की क्या भूमिका थी?
(A) वे पेड़ों से चिपक कर उन्हें कटने से बचाती थीं।
(B) वे पेड़ लगाने के लिए धन इकट्ठा करती थीं।
(C) वे लकड़ी काटने वाली कंपनियों के लिए काम करती थीं।
(D) वे आंदोलन के खिलाफ प्रदर्शन करती थीं।

91. 'लोकतांत्रिक राजनीति में राजनीतिक दल, दबाव एवं हित समूह' के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से कौन सा एक असत्य है?
(A) राजनीतिक दल सरकार पर न्यायपूर्ण नियंत्रण स्थापित करने का प्रयास करते हैं।
(B) हित समूह कुछ निश्चित हितों को पूरा करने के लिए बनाए जाते हैं।
(C) दबाव समूह सरकार से अपनी बात मनवाने की कोशिश करते हैं।
(D) सभी समूहों के पास सरकार पर दबाव बनाने की समान क्षमता होती है।

92. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (कार्य)
P. आर्थिक विकास हेतु योजना बनाना
Q. छोटे-मोटे दीवानी मामलों की सुनवाई
R. पारंपरिक वंश परिषद् का संचालन
S. पेड़ों को कटने से बचाना

सूची II: (संबंधित संस्था/आंदोलन)
1. न्याय पंचायत
2. ग्राम पंचायत
3. चिपको आंदोलन
4. दरबार कुर

कूट:
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

93. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. मैक्स वेबर द्वारा 'ऐस्सेज़ इन सोसियोलॉजी' का प्रकाशन.
2. भारतीय संविधान का लागू होना।
3. 73वां संविधान संशोधन अधिनियम।
4. उच्चतम न्यायालय द्वारा सूचना के अधिकार को मान्यता।

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 2, 4, 3
(D) 2, 3, 1, 4

94. 'एक राजनीतिक दल सत्ता हथियाने और सत्ता का उपयोग कुछ विशिष्ट कार्यों को संपन्न करने के उद्देश्य से स्थापित होता है।' यह परिभाषा किस अवधारणा पर आधारित है?
(A) दल का सामाजिक कार्य
(B) दल का आर्थिक कार्य
(C) दल का सांस्कृतिक स्वरुप
(D) दल का शक्ति-उन्मुख स्वरुप

95. अनुच्छेद 21 की न्यायिक व्याख्याओं का उपयोग किन्हें राहत पहुँचाने के लिए किया गया है?
(A) प्रताड़ित कैदियों और बंधुआ मज़दूरों को।
(B) केवल सरकारी अधिकारियों को।
(C) केवल उद्योगपतियों को।
(D) केवल राजनीतिक नेताओं को।

96. पारंपरिक जातीय पंचायतों का दृष्टिकोण प्रायः कैसा रहा है?
(A) प्रगतिशील और लोकतांत्रिक
(B) रुढ़िवादी और अलोकतांत्रिक
(C) हमेशा महिलाओं के पक्ष में
(D) हमेशा दलितों के पक्ष में

97. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. संविधान एक स्थिर और अपरिवर्तनीय दस्तावेज़ है।
2. कानून की व्याख्या में सामाजिक आंदोलनों की कोई भूमिका नहीं होती।
3. कानून और न्यायालय ऐसी संस्थाएँ हैं जहाँ केवल एक ही दृष्टिकोण मान्य होता है।
4. संविधान राजनीतिक शक्ति को सामाजिक हित की ओर प्रवाहित कर सकता है।

उपरोक्त में से कौन सा कथन सही है?
(A) केवल 1
(B) केवल 4
(C) केवल 2 और 3

(D) क्योंकि केंद्र सरकार के पास पर्याप्त धन नहीं था।

78. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (विषय)
P. महिलाओं हेतु आरक्षण
Q. त्रिस्तरीय प्रणाली
R. निदेशक सिद्धांत में पंचायत
S. बंधुआ मज़दूरों का पुनर्वास
सूची II: (संबंधित प्रावधान/व्याख्या)
1. अनुच्छेद 21 की व्याख्या
2. के. संथानम
3. 73वां संशोधन (33%)
4. 73वां संशोधन (20 लाख से अधिक जनसंख्या वाले राज्य)
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

79. ग्रामीण भारत में लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया में एक प्रमुख बाधा क्या है?
(A) अमीर किसानों या उच्च जाति के ज़मींदारों जैसे प्रभावशाली गुटों द्वारा सत्ता पर नियंत्रण।
(B) साक्षरता की कमी।
(C) आधुनिक प्रौद्योगिकी का अभाव।
(D) राजनीतिक दलों की अनुपस्थिति।

80. जब कोई समूह महसूस करता है कि राजनीतिक दल उसके हितों का प्रतिनिधित्व नहीं कर रहे हैं, तो वह क्या कदम उठा सकता है?
(A) राजनीति से पूरी तरह से अलग हो जाना।
(B) एक अलग दल या दबाव समूह बना लेना।
(C) देश छोड़ देना।
(D) न्यायपालिका में याचिका दायर करना।

81. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'दबाव समूहों' की अवधारणा की आलोचना को दर्शाता है?
(A) यह अवधारणा लोकतंत्र को मजबूत करती है।
(B) यह अवधारणा प्रबल सामाजिक समूहों (जैसे वर्ग, जाति) की शक्ति को हतोत्साहित या छिपा सकती है।
(C) यह अवधारणा सभी सामाजिक समूहों को समान मानती है।
(D) यह अवधारणा केवल ग्रामीण क्षेत्रों में लागू होती है।

82. 40 वर्षों के बाद किस संशोधन द्वारा ग्राम पंचायतों से संबंधित निदेशक सिद्धांत एक संवैधानिक विधेयक बन गया?
(A) 73वां संशोधन
(B) 42वां संशोधन
(C) 44वां संशोधन
(D) 74वां संशोधन

83. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 'इंडियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस' कर्मचारियों का एक संगठन है।
2. 'शेतकरी संगठन' कृषि मज़दूरों का एक संघ है।
3. 'फेडरेशन ऑफ़ इंडियन कॉमर्स एंड चैंबर्स' उद्योगपतियों का एक संगठन है।
4. ये सभी संगठन राजनीतिक दल हैं जो सीधे चुनाव लड़ते हैं।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

84. 'महिला समाख्या' नामक गैर-सरकारी संगठन किस क्षेत्र में कार्य करता है?
(A) शहरी औद्योगीकरण
(B) पर्यावरण संरक्षण
(C) बाल शिक्षा
(D) ग्रामीण महिलाओं का सशक्तीकरण

85. 'दुखीपुर' गाँव की कहानी में, भ्रष्ट प्रधान विमला ने पंचायत के धन का उपयोग किस लिए किया?
(A) गाँव में स्कूल बनवाने के लिए।
(B) गाँव में अस्पताल बनवाने के लिए।
(C) अपने परिवार का घर बनवाने के लिए।
(D) गाँव में सड़कें बनवाने के लिए।

86. नीचे दिए गए प्रश्न में दो कथन हैं, जिन्हें अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): संविधान भारत का मूल मानदंड है, जिससे राष्ट्र के सिद्धांतों का निर्माण होता है।
कारण (R): अन्य सभी कानून संविधान द्वारा नियत कार्य प्रणाली के अंतर्गत ही बनाए और लागू किए जाते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य लेकिन (R) सत्य है।

87. किस अधिकार के एक आनुषांगिक अंग के रूप में उच्चतम न्यायालय ने 'सूचना के अधिकार' को स्वीकार किया?
(A) समानता का अधिकार (अनुच्छेद 14)
(B) जीवन का अधिकार (अनुच्छेद 21)
(C) धार्मिक स्वतंत्रता का अधिकार (अनुच्छेद 25)
(D) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (अनुच्छेद 19(क))

(D) 'समान कार्य के लिए समान वेतन' को अनुच्छेद 14 के तहत मानना।

108. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. डॉ. अंबेडकर द्वारा संविधान सभा में स्थानीय स्वशासन पर चिंता व्यक्त करना।
2. 73वें संविधान संशोधन द्वारा पंचायतों को संवैधानिक दर्जा देना।
3. भूरिया समिति की रिपोर्ट आना।
4. टिपलुट नोंगबरी द्वारा भूरिया समिति की रिपोर्ट पर टिप्पणी करना।

(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 3, 4, 1, 2

109. पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) महिलाओं को घर के कामों से मुक्त करना।
(B) जनसंख्या नियंत्रण करना।
(C) निर्णय लेने की शक्ति में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना।
(D) केवल महिला मतदाताओं को आकर्षित करना।

110. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. पंचायती राज का विचार भारत में एक विदेशी आयात है।
2. संविधान निर्माण के समय पंचायतों पर कोई चर्चा नहीं हुई थी।
3. 73वें संशोधन ने स्थानीय स्वशासन के सदस्यों के चुनाव को अनिवार्य कर दिया।
4. पारंपरिक जातीय पंचायतें हमेशा लोकतांत्रिक रही हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 2 और 4
(D) केवल 3 और 4

111. 'दरबार कुर' नामक संस्था का संबंध किससे है?
(A) खासी जनजाति की पारंपरिक राजनीतिक परिषद्
(B) गारो जनजाति की न्यायिक प्रणाली
(C) जयंतिया जनजाति का धार्मिक उत्सव
(D) इनमे से कोई भी नहीं

112. नीचे दिए गए प्रश्न में दो कथन हैं, जिन्हें अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): उत्तराखंड में महिलाओं ने 'वन पंचायत' की स्थापना की।
कारण (R): उन्हें पशुओं के चारे और जलाने की लकड़ी के लिए वनों पर निर्भर रहना पड़ता था और वनों का कटाव एक बड़ी समस्या थी।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

113. कलावती के अनुभव को दर्ज करने का क्या महत्व है?
(A) यह व्यापक रूप से दिखाता है कि वर्तमान पंचायतें केवल पुरुषों के लिए ही हैं।
(B) यह पंचायती राज से दलित महिला में आए आत्म-सम्मान को दर्शाता है।
(C) यह दिखाता है कि ग्रामीण महिलाएँ आधुनिक राजनीति में पूर्णतः असफल हैं।
(D) यह मुख्य रूप से ग्रामीण जीवन की जटिल आर्थिक समस्याओं को उजागर करता है।

114. विभिन्न समूहों के हित किसके द्वारा प्रतिनिधित्व प्राप्त करते हैं?
(A) राजनीतिक दलों द्वारा जो उनके मुद्दों को उठाते हैं।
(B) केवल न्यायपालिका द्वारा।
(C) केवल नौकरशाही द्वारा।
(D) विदेशी दूतावासों द्वारा।

115. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. उच्चतम न्यायालय ने 'जीवन के अधिकार' की व्याख्या केवल शारीरिक अस्तित्व तक सीमित रखी है।
2. 1993 में, उच्चतम न्यायालय ने सूचना के अधिकार को एक मौलिक अधिकार के हिस्से के रूप में स्वीकार किया।
3. 'समान कार्य के लिए समान वेतन' एक मौलिक अधिकार है जिसे सीधे संविधान में लिखा गया था।
4. उच्चतम न्यायालय की व्याख्याओं ने मौलिक अधिकारों के दायरे को संकुचित किया है।
5. बंधुआ मज़दूरों को राहत पहुँचाने के लिए अनुच्छेद 21 की व्याख्या का प्रयोग किया गया है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 2 और 5
(B) केवल 1 और 3
(C) केवल 2, 4 और 5
(D) केवल 1, 3 and 4

116. पंचायती राज संस्थाओं के लिए कौन सा कथन सबसे उपयुक्त है?
(A) ये केवल केंद्र सरकार के एजेंट के रूप में कार्य करते हैं।
(B) इनका मुख्य कार्य अंतर्राष्ट्रीय संबंध स्थापित करना है।
(C) ये पूरी तरह से स्वैच्छिक संगठन हैं जिनका कोई कानूनी आधार नहीं है।
(D) ये ज़मीनी स्तर पर लोकतंत्र को क्रियाशील बनाने का एक माध्यम हैं।

(A) प्रस्तावना और अनुसूचियाँ
(B) केंद्र-राज्य संबंध और आपातकालीन प्रावधान
(C) न्यायपालिका और कार्यपालिका
(D) मौलिक अधिकार और राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत

155. निम्नलिखित में से कौन सा कथन अनुच्छेद के मुख्य विचार के साथ मेल नहीं खाता है?
(A) संविधान का लक्ष्य न्याय, स्वतंत्रता और समानता पर आधारित समाज बनाना है।
(B) संविधान पारंपरिक पदानुक्रमित संरचनाओं को चुनौती देता है।
(C) संविधान मुख्य रूप से एक अपरिवर्तनीय और कठोर कानूनी संहिता है।
(D) मौलिक अधिकार और निदेशक सिद्धांत सामाजिक परिवर्तन के उपकरण हैं।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारतीय लोकतंत्र के विकेंद्रीकरण की प्रक्रिया में 73वाँ संविधान संशोधन अधिनियम, 1992 एक मील का पत्थर है। इस संशोधन ने न केवल पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया, बल्कि ग्रामीण भारत में महिलाओं के राजनीतिक सशक्तीकरण का एक नया अध्याय भी शुरु किया। इस अधिनियम की सबसे क्रांतिकारी विशेषताओं में से एक महिलाओं के लिए सभी स्तरों पर (ग्राम पंचायत, पंचायत समिति और जिला परिषद) कुल सीटों और अध्यक्षों के पदों में से कम से कम एक-तिहाई आरक्षण का प्रावधान है। इस सकारात्मक कार्रवाई ने लाखों महिलाओं को, जो पारंपरिक रूप से निजी घरेलू दायरे तक सीमित थीं, सार्वजनिक जीवन और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में भाग लेने का अवसर प्रदान किया। प्रारंभ में, 'सरपंच पति' या 'प्रधान पति' (प्रतिनिधि के रूप में काम करने वाले पुरुष रिश्तेदार) जैसी घटनाओं के कारण इस प्रावधान की प्रभावशीलता पर संदेह व्यक्त किया गया। हालाँकि, समय के साथ, कई महिला प्रतिनिधियों ने स्वतंत्र रूप से कार्य करना शुरु कर दिया है और अपनी नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन किया है। अध्ययनों से पता चलता है कि महिला प्रधानों ने अक्सर पेयजल, स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे मुद्दों को प्राथमिकता दी है, जो सीधे तौर पर महिलाओं और बच्चों के जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार, यह आरक्षण नीति ग्रामीण भारत में गहरे तक व्याप्त पितृसत्तात्मक मानदंडों को धीरे-धीरे चुनौती दे रही है और जमीनी स्तर पर एक मौन सामाजिक क्रांति को जन्म दे रही है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. 73वें संविधान संशोधन अधिनियम का सबसे क्रांतिकारी प्रावधान किसे माना गया है?
(A) पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा देना
(B) महिलाओं के लिए एक-तिहाई सीटों और पदों का आरक्षण
(C) त्रि-स्तरीय शासन प्रणाली की स्थापना करना
(D) नियमित रुप से हर पाँच साल में चुनाव कराना

157. 'सरपंच पति' की घटना क्या दर्शाती है?
(A) महिला सशक्तीकरण की पूर्ण सफलता
(B) ग्रामीण विकास में पुरुषों का सक्रिय सहयोग
(C) महिलाओं में राजनीतिक जागरूकता की कमी
(D) आरक्षण नीति के कार्यान्वयन में प्रारंभिक चुनौतियाँ और पितृसत्तात्मक प्रतिरोध

158. अध्ययनों के अनुसार, महिला पंचायत प्रतिनिधियों ने किन मुद्दों को प्राथमिकता दी है?
(A) पेयजल, स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे सामाजिक विकास के मुद्दे
(B) केवल बड़ी अवसंरचना परियोजनाएँ जैसे सड़क और पुल
(C) केवल कृषि और सिंचाई से संबंधित मामले
(D) केवल राजनीतिक दलों के एजेंडे का प्रचार

159. अनुच्छेद के अनुसार, 73वें संशोधन का दीर्घकालिक सामाजिक प्रभाव क्या है?
(A) इसने ग्रामीण समाज में कोई खास बदलाव नहीं किया है।
(B) इसने पितृसत्तात्मक मानदंडों को और मजबूत किया है।
(C) यह पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देकर एक मौन सामाजिक क्रांति ला रहा है।
(D) इसने ग्रामीण भारत में राजनीतिक अस्थिरता पैदा की है।

160. 73वें संशोधन ने महिलाओं को किस प्रकार सशक्त बनाया?
(A) उन्हें घरेलू दायरे से निकालकर सार्वजनिक जीवन और निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करके
(B) उन्हें केवल वोट देने का अधिकार देकर
(C) उन्हें केवल सरकारी नौकरियाँ प्रदान करके
(D) उन्हें केवल वित्तीय सहायता देकर

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारतीय सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में, न्यायपालिका की भूमिका, विशेष रूप से सर्वोच्च न्यायालय की, अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। 1970 के दशक के अंत और 1980 के दशक की शुरुआत में, 'न्यायिक सक्रियता' नामक एक नई प्रवृत्ति का उदय हुआ, जिसने संविधान की व्याख्या करने के तरीके को बदल दिया। इस सक्रियता का सबसे प्रमुख साधन 'जनहित याचिका' (Public Interest Litigation - PIL) था। जनहित याचिका ने 'अधिस्थिति' (locus standi) के पारंपरिक नियम को शिथिल कर दिया, जिसके तहत केवल पीड़ित पक्ष ही न्यायालय का दरवाजा खटखटा सकता था। अब, कोई भी नागरिक या सामाजिक संगठन सार्वजनिक हित के मामलों को, विशेषकर उन वंचित और हाशिए पर पड़े समूहों की ओर से, जो स्वयं न्यायालय तक नहीं पहुँच सकते, उठा सकता था। इस प्रक्रिया में, सर्वोच्च न्यायालय ने संविधान के अनुच्छेद 21, जो 'प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण' प्रदान करता है, की एक विस्तृत और रचनात्मक व्याख्या की। न्यायालय ने निर्णय दिया कि 'जीवन के अधिकार' का अर्थ केवल पशुवत

127. निरक्षर महिलाओं को पंचायती राज का प्रशिक्षण देने के लिए 'फड़' जैसे लोक माध्यम का उपयोग क्यों प्रभावशाली था?
(A) क्योंकि इसके संगीतमय और सचित्र स्वरुप से संदेश समझना सुगम था।
(B) क्योंकि यह एक पूर्णतः विदेशी और अत्यंत आधुनिक डिजिटल शिक्षण तकनीक थी।
(C) क्योंकि यह केवल उच्च स्तरीय और जटिल लिखित अध्ययन सामग्री पर आधारित था।
(D) क्योंकि यह माध्यम मुख्य रुप से केवल उच्च शिक्षित महिलाओं हेतु बनाया गया था।

128. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारतीय लोकतंत्र में 'दबाव समूहों' की भूमिका के संबंध में सत्य है?
(A) वे लोकतंत्र में कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं निभाते।
(B) वे लोकतांत्रिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं जो विभिन्न हितों को आवाज देते हैं।
(C) वे हमेशा सरकार के फैसलों का आँख बंद करके समर्थन करते हैं।
(D) वे केवल चुनावों के दौरान ही सक्रिय होते हैं।

129. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. ग्राम सभा में गाँव के सभी नागरिक शामिल होते हैं।
2. ग्राम सभा स्थानीय सरकार का चुनाव करती है।
3. ग्राम सभा निर्णय लेने की प्रक्रिया में निर्बलों की भागीदारी सुनिश्चित कर सकती है।
4. ग्राम सभा की संरचना पिरामिड की भाँति होती है।
5. ग्राम सभा की कोई भूमिका नहीं होती, सारा कार्य सरपंच करता है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 4, 5
(C) केवल 1, 2, 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

130. गांधीजी के 'ग्राम स्वराज्य' के आदर्श का सार क्या था?
(A) प्रत्येक गाँव का एक आत्मनिर्भर और स्व-शासित इकाई होना।
(B) प्रत्येक गाँव का एक केंद्रीयकृत शासन प्रणाली के अधीन होना।
(C) गाँवों का पूर्णतः शहरीकरण।
(D) गाँवों में विदेशी कंपनियों की स्थापना।

131. पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा देने का सबसे महत्वपूर्ण प्रभाव क्या था?
(A) पंचायतों की संख्या में कमी आई।
(B) पंचायतों का सारा धन केंद्र सरकार को देना पड़ता है।
(C) पंचायतों को नियमित और अनिवार्य बनाया गया, जिससे वे राज्य सरकारों की मनमानी पर निर्भर नहीं रहीं।
(D) पंचायतें केवल सलाहकार निकाय बनकर रह गईं।

132. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची I: (स्थान/क्षेत्र)
P. उत्तराखंड
Q. मेघालय
R. दुखीपुर (कहानी में)
S. सुखीपुर (कहानी में)

सूची II: (संबंधित घटना/व्यक्ति)
1. नजमा (ईमानदार प्रधान)
2. विमला (भ्रष्ट प्रधान)
3. गारो, खासी, जयंतिया
4. वन पंचायत

कूट:
(A) P-4, Q-3, R-2, S-1
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

133. एक लोकतांत्रिक व्यवस्था में, यदि कोई सरकार विभिन्न समूहों के हितों की अनदेखी करती है, तो इसका संभावित परिणाम क्या हो सकता है?
(A) वे समूह हमेशा के लिए चुप हो जाते हैं।
(B) वे समूह सरकार का आँख बंद करके समर्थन करने लगते हैं।
(C) वे समूह सरकार पर दबाव बनाने के लिए संगठित हो सकते हैं या नए दल बना सकते हैं।
(D) देश में लोकतंत्र समाप्त हो जाता है।

134. 'न्याय पंचायत' का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) गंभीर अपराधों के लिए मृत्युदंड देना।
(B) स्थानीय स्तर पर छोटे-मोटे विवादों का निपटारा और समझौता कराना।
(C) अंतर्राष्ट्रीय कानूनों की व्याख्या करना।
(D) केवल कर संबंधी विवादों को सुलझाना।

135. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. राजनीतिक दल सत्ता हथियाने के उद्देश्य से स्थापित होते हैं।
2. हित समूह का उद्देश्य सत्ता हथियाना नहीं, बल्कि नीतियों को प्रभावित करना होता है।
3. मैक्स वेबर ने दलों को शक्ति संरचना के अंतर्गत रखा है।
4. भारत में सभी दबाव समूहों का प्रभाव एक समान है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

136. अनुच्छेद 14 के तहत 'समानता के अधिकार' का उपयोग करते हुए, उच्चतम न्यायालय ने किस निदेशक सिद्धांत को लागू करने में मदद की?
(A) समान कार्य के लिए समान वेतन
(B) ग्राम पंचायतों का संगठन

(C) समान नागरिक संहिता
(D) पर्यावरण का संरक्षण

137. 73वें संशोधन के अनुसार, पंचायती राज की त्रि-स्तरीय प्रणाली किन राज्यों के लिए अनिवार्य की गई?
(A) सभी राज्यों के लिए, चाहे जनसंख्या कुछ भी हो।
(B) केवल उन राज्यों के लिए जिनकी जनसंख्या 20 लाख से कम है।
(C) केवल उन राज्यों के लिए जिनकी जनसंख्या 20 लाख से अधिक है।
(D) केवल केंद्र शासित प्रदेशों के लिए।

138. नीचे दिए गए प्रश्न में दो कथन हैं, जिन्हें अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): कानून और न्याय में अंतर होता है।
कारण (R): कानून के पीछे राज्य की शक्ति होती है, जबकि न्याय का सार निष्पक्षता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

139. कलावती के मामले में, पंचायत सदस्य बनने से पहले उसकी पहचान क्या थी?
(A) एक स्वतंत्र महिला उद्यमी।
(B) गाँव की एक शिक्षिका।
(C) एक राजनीतिक कार्यकर्ता।
(D) 'रामू की माँ' या 'हीरालाल की पत्नी'।

140. निम्नलिखित में से कौन सा कथन टिपलुट नोंगबरी के विचारों का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(A) सभी ज्ञात आदिवासी समाज पूरी तरह से समतावादी और भेदभाव मुक्त हैं।
(B) आदिवासी संस्थाओं की जटिलताओं और स्तरीकरण को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।
(C) आदिवासी समाजों में महिलाओं की राजनीतिक स्थिति सदैव उत्कृष्ट रही है।
(D) 73वां संशोधन भारत के सभी आदिवासी क्षेत्रों हेतु एकदम आदर्श और उपयुक्त है।

141. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 'चिपको आंदोलन' उत्तराखंड में प्रारंभ हुआ।
2. इसका नेतृत्व मुख्य रूप से पुरुषों ने किया।
3. इसका उद्देश्य पेड़ों को व्यावसायिक कटाई से बचाना था।
4. 'वन पंचायतें' इसी क्षेत्र में महिलाओं द्वारा स्थापित की गईं।
5. यह आंदोलन शहरीकरण के समर्थन में था।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 3, 4
(B) केवल 2, 5
(C) केवल 1, 2, 3
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

142. एक पंचायत के सामाजिक कल्याण कार्यों में क्या शामिल है?
(A) केवल सड़कों का निर्माण करना।
(B) केवल कर वसूलना।
(C) केवल अंतर्राष्ट्रीय व्यापार को बढ़ावा देना।
(D) मातृत्व और बाल कल्याण केंद्रों की स्थापना।

143. यदि किसी राज्य में पंचायतों के चुनाव समय पर नहीं होते हैं, तो आधिकारिक दिशानिर्देशों के अनुसार क्या परिणाम हो सकता है?
(A) राज्य को अनुदान जारी नहीं किया जाएगा।
(B) राज्य को अतिरिक्त अनुदान प्राप्त होगा।
(C) राज्य के मुख्यमंत्री को पुरस्कृत किया जाएगा।
(D) कोई परिणाम नहीं होगा।

144. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (समूह)
P. उद्योगपति
Q. कर्मचारी
R. किसान
S. खासी जनजाति
सूची II: (संगठन/संस्था)
1. इंडियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस
2. दरबार कुर
3. फेडरेशन ऑफ़ इंडियन कॉमर्स एंड चैंबर्स
4. शेतकरी संगठन
कूट:
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

145. "दल शक्ति संरचना के अंतर्गत होते हैं।" यह विचार किस समाजशास्त्री का है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) मैक्स वेबर
(C) एमिल दुर्खीम
(D) अगस्त कॉम्त

146. भारत में संविधान का अंतिम व्याख्याकर्ता कौन है?
(A) उच्चतम न्यायालय
(B) संसद
(C) प्रधानमंत्री
(D) राष्ट्रपति

147. 73वें संविधान संशोधन के अंतर्गत, निर्वाचित निकायों में महिलाओं को शामिल करने का मुख्य लाभ क्या था?
(A) उन्हें केवल वोट देने का अधिकार मिला।
(B) उन्हें करों से छूट मिला।
(C) उन्हें निर्णय लेने की शक्ति मिली।
(D) उन्हें अनिवार्य रूप से सरकारी नौकरी मिली।

148. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. पंचायतें एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम जैसी सरकारी योजनाओं को संचालित करती हैं।
2. भू-राजस्व पंचायतों की आय का एक स्रोत है।
3. पंचायतों के लिए वित्तीय पारदर्शिता सुनिश्चित करने हेतु प्रावधान किए गए हैं।
4. पंचायतें केवल केंद्र सरकार से अनुदान प्राप्त करती हैं, ज़िला पंचायत से नहीं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 4
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

149. नीचे दिए गए प्रश्न में दो कथन हैं, जिन्हें अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): गाँव की समितियों में अक्सर प्रभावशाली गुटों का नियंत्रण होता है।
कारण (R): भारत जैसे समाज में, जहाँ जाति और वर्ग आधारित गहरी असमानताएँ हैं, ज़मीनी स्तर पर सच्चा लोकतंत्रीकरण एक चुनौती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

150. संविधान और सामाजिक परिवर्तन के संबंध में, निम्नलिखित में से कौन सा निष्कर्ष सबसे उपयुक्त है?
(A) संविधान ने सामाजिक परिवर्तन लाने में अब तक कोई भी सार्थक भूमिका नहीं निभाई है।
(B) संविधान सामाजिक न्याय का साधन है, किंतु क्रियान्वयन चुनौतियों से भरा है।
(C) सामाजिक परिवर्तन केवल आंदोलनों से होता है, जिसमें संविधान की कोई भूमिका नहीं है।
(D) संविधान ने जमीनी स्तर पर केवल पारंपरिक सामाजिक असमानताओं को ही बल दिया है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारतीय संविधान केवल एक विधिक दस्तावेज़ नहीं है, बल्कि यह सामाजिक क्रांति और राष्ट्र-निर्माण का एक घोषणापत्र भी है। संविधान सभा के सदस्यों का उद्देश्य केवल राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना नहीं था, बल्कि भारतीय समाज में सदियों से व्याप्त सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को समाप्त करना भी था। इस प्रक्रिया को 'संविधान द्वारा सामाजिक अभियांत्रिकी' (social engineering through constitution) की संज्ञा दी जा सकती है। डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने स्पष्ट किया था कि केवल राजनीतिक लोकतंत्र तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक कि उसके आधार में सामाजिक लोकतंत्र न हो, जिसका अर्थ स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व को जीवन के सिद्धांतों के रूप में स्वीकार करना है। संविधान के भाग III (मौलिक अधिकार) और भाग IV (राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत) इस सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के दो प्रमुख स्तंभ हैं। जहाँ मौलिक अधिकार नागरिकों को राज्य की मनमानी कार्रवाइयों से बचाते हैं, वहीं निदेशक सिद्धांत राज्य को एक कल्याणकारी और समतावादी समाज की स्थापना के लिए सकारात्मक निर्देश देते हैं। संविधान का उद्देश्य केवल शासन की एक प्रणाली स्थापित करना नहीं, बल्कि एक ऐसे नए सामाजिक-आर्थिक क्रम का निर्माण करना था जो न्याय, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आदर्शों पर आधारित हो। यह दस्तावेज़ पारंपरिक पदानुक्रमित संरचनाओं को चुनौती देता है और सभी नागरिकों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने का प्रयास करता है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. अनुच्छेद के अनुसार, भारतीय संविधान का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) केवल एक राजनीतिक शासन प्रणाली स्थापित करना
(B) सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन लाना और एक समतावादी समाज बनाना
(C) पारंपरिक सामाजिक संरचनाओं को संरक्षित करना
(D) केवल विदेशी शासन से राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करना

152. 'संविधान द्वारा सामाजिक अभियांत्रिकी' की अवधारणा का क्या तात्पर्य है?
(A) संविधान के प्रावधानों के माध्यम से सामाजिक संरचनाओं और संबंधों में सचेत रूप से परिवर्तन लाना
(B) संविधान का उपयोग करके केवल तकनीकी और इंजीनियरिंग परियोजनाओं को बढ़ावा देना
(C) समाज को नियंत्रित करने के लिए कठोर कानून बनाना
(D) संविधान सभा के सदस्यों के व्यक्तिगत विचारों को लागू करना

153. डॉ. बी.आर. अंबेडकर के अनुसार, राजनीतिक लोकतंत्र की सफलता के लिए क्या आवश्यक है?
(A) एक शक्तिशाली सैन्य बल
(B) आर्थिक समृद्धि
(C) सामाजिक लोकतंत्र की नींव
(D) अंतरराष्ट्रीय सहयोग

154. भारतीय संविधान में सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के दो मुख्य स्तंभ कौन से हैं?

(D) केवल 1 और 4

98. डॉ. अंबेडकर के अनुसार, ग्रामीण भारत में स्थानीय स्वशासन के सफल न होने का मुख्य कारण क्या था?
(A) स्थानीय कुलीन और उच्च जातियों का प्रभुत्व
(B) धन की कमी
(C) शिक्षा का अभाव
(D) विदेशी हस्तक्षेप

99. नीचे दिए गए प्रश्न में दो कथन हैं, जिन्हें अभिकथन (A) और कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है। इन कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिवथन (A): 73वें और 74वें संविधान संशोधनों ने स्थानीय स्वशासन संस्थाओं को संवैधानिक प्रस्थिति प्रदान की।
कारण (R): इससे पहले, इन संस्थाओं का अस्तित्व और कार्यप्रणाली राज्य सरकारों की इच्छा पर बहुत अधिक निर्भर करती थी।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

100. 73वें संशोधन द्वारा गठित 'ज़िला योजना समिति' का मुख्य कार्य क्या है?
(A) केवल ग्राम पंचायतों के चुनाव कराना।
(B) राज्य सरकार के लिए कर एकत्र करना।
(C) केंद्र सरकार को सीधे रिपोर्ट करना।
(D) पूरे ज़िले के विकास का प्रारूप निर्मित करना।

101. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. पंचायतों को कर लगाने और एकत्र करने का अधिकार है।
2. पंचायतों की आय का एकमात्र स्रोत केंद्र सरकार से मिलने वाला अनुदान है।
3. ज़िला पंचायत द्वारा प्राप्त अनुदान पंचायत के संसाधनों में वृद्धि करते हैं।
4. संपत्ति और व्यवसाय पर लगाए गए कर पंचायतों की आय के स्रोत हैं।
5. पंचायतों को कोई वित्तीय स्वायत्तता प्राप्त नहीं है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 3, 4
(B) केवल 2, 5
(C) केवल 1, 2, 3
(D) सभी 1, 2, 3, 4, 5

102. गारो, खासी और जयंतिया जनजातियों की अपनी सैकड़ों साल पुरानी राजनीतिक संस्थाएँ किस राज्य से संबंधित हैं?
(A) नागालैंड
(B) मेघालय
(C) मिज़ोरम
(D) अरुणाचल प्रदेश

103. 'परंपरा की परिवर्तनशील प्रकृति' का उदाहरण निम्नलिखित में से किस समाजशास्त्री की टिप्पणी में मिलता है?
(A) के. संथानम
(B) मैक्स वेबर
(C) डॉ. अंबेडकर
(D) टिपलुट नोंगबरी

104. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. वर्ग (Class)
Q. प्रस्थिति समूह (Status Group)
R. दल (Party)
S. ग्राम स्वराज्य (Gram Swaraj)

सूची II: (वेबर/गांधी के अनुसार संबद्धता)
1. शक्ति संरचना
2. सामाजिक क्रम
3. अर्थ प्रणाली
4. गाँधीवादी आदर्श

कूट:
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

105. 'सुखीपुर' गाँव की प्रधान 'नजमा' ने ग्रामीण विकास के पैसे का उपयोग कैसे किया?
(A) अपने निजी घर के निर्माण में।
(B) पैसे को बैंक में जमा करने में।
(C) गाँव के भौतिक संसाधनों (जैसे चिकित्सालय, सड़कें) को बढ़ाने में।
(D) पैसे को गाँव के सभी लोगों में बराबर बांटने में।

106. यदि कोई राजनीतिक संगठन सत्ता प्राप्त करना चाहता है, लेकिन उसे मानक माध्यमों से अवसर नहीं मिलता, तो वह प्रायः क्या करता है?
(A) वह मान्यता मिलने तक आंदोलन में बना रहता है।
(B) वह अपना अस्तित्व समाप्त कर देता है।
(C) वह किसी अन्य देश में चला जाता है।
(D) वह संयुक्त राष्ट्र से अपील करता है।

107. निम्नलिखित में से किसे मौलिक अधिकारों के संदर्भ में नीति निर्देशक सिद्धांतों की प्रस्तुति का उदाहरण माना जा सकता है?
(A) अनुच्छेद 21 के तहत जीवन के अधिकार की विस्तृत व्याख्या।
(B) सूचना के अधिकार को अनुच्छेद 19(क) का हिस्सा मानना।
(C) ग्राम पंचायतों के लिए 73वां संशोधन लाना।

अस्तित्व नहीं है, बल्कि इसमें मानवीय गरिमा के साथ जीने का अधिकार भी शामिल है। इस व्यापक व्याख्या के अंतर्गत स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार, आजीविका का अधिकार, शिक्षा का अधिकार, और स्वास्थ्य का अधिकार जैसे कई नए अधिकारों को शामिल किया गया। इस प्रकार, न्यायपालिका ने कार्यपालिका और विधायिका की निष्क्रियता के अंतराल को भरते हुए, संविधान के सामाजिक न्याय के वादे को साकार करने में एक सक्रिय भूमिका निभाई है।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. 'न्यायिक सक्रियता' की प्रवृत्ति का उदय भारत में कब हुआ?
(A) 1950 के दशक में
(B) 1960 के दशक में
(C) 2000 के दशक में
(D) 1970 के दशक के अंत और 1980 के दशक की शुरुआत में

162. जनहित याचिका (PIL) ने किस पारंपरिक कानूनी नियम को शिथिल किया?
(A) दोहरे दंड से संरक्षण का नियम
(B) 'अधिस्थिति' (locus standi) का नियम
(C) कार्योत्तर विधि से संरक्षण का नियम
(D) आत्म-अभिशंसन के विरुद्ध नियम

163. अनुच्छेद 21 की व्यापक व्याख्या के अनुसार, 'जीवन के अधिकार' में क्या शामिल है?
(A) केवल सांस लेने और जीवित रहने का अधिकार
(B) केवल शारीरिक स्वतंत्रता का अधिकार
(C) मानवीय गरिमा के साथ जीने का अधिकार, जिसमें स्वच्छ पर्यावरण और आजीविका शामिल है
(D) केवल वोट देने और चुनाव लड़ने का अधिकार

164. अनुच्छेद के अनुसार, न्यायिक सक्रियता का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) कार्यपालिका और विधायिका की शक्तियों को कम करना
(B) अदालती प्रक्रियाओं को और अधिक जटिल बनाना
(C) केवल पर्यावरण संबंधी मामलों का निपटारा करना
(D) संविधान के सामाजिक न्याय के वादे को उन लोगों तक पहुँचाना जो वंचित हैं

165. निम्नलिखित में से कौन सा अधिकार सर्वोच्च न्यायालय द्वारा अनुच्छेद 21 की व्याख्या के माध्यम से नहीं उभरा है?
(A) दूसरे देश की नागरिकता प्राप्त करने का अधिकार
(B) स्वच्छ पर्यावरण का अधिकार
(C) आजीविका का अधिकार
(D) गरिमा के साथ जीने का अधिकार

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारतीय संविधान के भाग IV में वर्णित राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत (DPSP) उन आदर्शों और लक्ष्यों को समाहित करते हैं जिन्हें राष्ट्र को प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। यद्यपि ये सिद्धांत मौलिक अधिकारों की तरह न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय (non-justiciable) नहीं हैं, फिर भी अनुच्छेद 37 स्पष्ट करता है कि ये 'देश के शासन में मूलभूत' हैं और विधि बनाने में इन सिद्धांतों को लागू करना राज्य का कर्तव्य होगा। ये सिद्धांत एक प्रकार से विधायिका और कार्यपालिका के लिए नैतिक दिशा-निर्देश हैं, जो उन्हें एक कल्याणकारी राज्य की स्थापना की दिशा में मार्गदर्शन करते हैं। उदाहरण के लिए, अनुच्छेद 40 में ग्राम पंचायतों के संगठन का निर्देश दिया गया, जिसने अंततः 73वें संविधान संशोधन का वैचारिक आधार प्रदान किया। इसी प्रकार, अनुच्छेद 39(घ) में 'पुरुषों और स्त्रियों दोनों को समान कार्य के लिए समान वेतन' का सिद्धांत निहित है, जिसने समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1976 जैसे कानूनों को प्रेरित किया। अनुच्छेद 45 में बच्चों के लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान अंततः शिक्षा का अधिकार अधिनियम के माध्यम से एक मौलिक अधिकार बन गया। इस प्रकार, यद्यपि निदेशक सिद्धांत सीधे तौर पर कानूनी रूप से बाध्यकारी नहीं हैं, वे सामाजिक और आर्थिक लोकतंत्र को प्राप्त करने के लिए राज्य की नीतियों और कानूनों के लिए एक महत्वपूर्ण वैचारिक ढाँचा और प्रेरणा स्रोत के रूप में कार्य करते हैं। वे समय-समय पर सरकार के प्रदर्शन को मापने के लिए एक मानदंड के रूप में भी काम करते हैं।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों की प्रकृति क्या है?
(A) ये न्यायालयों द्वारा कानूनी रूप से प्रवर्तनीय हैं।
(B) ये न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय नहीं हैं, लेकिन देश के शासन में मूलभूत हैं।
(C) ये केवल केंद्र सरकार पर लागू होते हैं।
(D) ये केवल नागरिकों के लिए नैतिक कर्तव्य हैं।

167. अनुच्छेद 37 के अनुसार, नीति निदेशक सिद्धांतों का क्या महत्व है?
(A) ये केवल सजावटी प्रावधान हैं।
(B) ये कानून बनाने और शासन में राज्य के लिए मूलभूत और कर्तव्य-उन्मुख हैं।
(C) ये केवल ऐतिहासिक महत्व के हैं।
(D) ये केवल आपातकाल के दौरान लागू होते हैं।

168. किस निदेशक सिद्धांत ने 73वें संविधान संशोधन के लिए वैचारिक आधार प्रदान किया?
(A) अनुच्छेद 40 - ग्राम पंचायतों का संगठन
(B) अनुच्छेद 39(घ) - समान कार्य के लिए समान वेतन
(C) अनुच्छेद 44 - समान नागरिक संहिता
(D) अनुच्छेद 48A - पर्यावरण का संरक्षण

169. अनुच्छेद यह तर्क देता है कि निदेशक सिद्धांत...
(A) पूरी तरह से अप्रासंगिक हैं क्योंकि वे प्रवर्तनीय नहीं हैं।
(B) मौलिक अधिकारों से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

अस्तित्व हितों के प्रतिनिधित्व हेतु आवश्यक है, न कि हमेशा हानिकारक।

32. (B) शक्ति संरचना
प्रसिद्ध समाजशास्त्री मैक्स वेबर के अनुसार, राजनीतिक दल अनिवार्य रूप से समाज की शक्ति संरचना का हिस्सा होते हैं। वेबर ने स्पष्ट किया कि दल, वर्ग और प्रस्थिति समूहों से भिन्न होते हैं क्योंकि उनका मुख्य केंद्र सत्ता और प्रभाव प्राप्त करना होता है। दलों का उद्देश्य शासन व्यवस्था के भीतर शक्ति अर्जित कर अपने विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करना है, जो उन्हें अन्य सामाजिक श्रेणियों से अलग बनाता है।

33. (B) एक नियोजित दृष्टि से प्राप्त किए जाने वाले उद्देश्य के लिए।
मैक्स वेबर ने विश्लेषण किया कि राजनीतिक दलों की गतिविधियाँ सदैव उद्देश्यपूर्ण और नियोजित होती हैं। दल किसी विशिष्ट लक्ष्य या विचारधारा को प्राप्त करने के लिए संगठित प्रयास करते हैं। चाहे वह सामाजिक सेवा हो या शक्ति अर्जन, उनकी प्रत्येक क्रिया एक सुविचारित कार्यक्रम का हिस्सा होती है। वेबर के अनुसार, दलों का अस्तित्व समाज में किसी न किसी सामूहिक उद्देश्य को सिद्ध करने के लिए ही होता है।

34. (A) पशुओं का चारा और लकड़ी की समस्या का समाधान करना।
उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में वनों का ग्रामीण जीवन से गहरा संबंध रहा है। वनों के व्यावसायिक दोहन के कारण स्थानीय निवासियों को पशुओं के चारे और खाना पकाने की लकड़ी की भारी कमी का सामना करना पड़ा। इस संकट के समाधान हेतु महिलाओं ने संगठित होकर 'वन पंचायतों' की स्थापना की। इन संस्थाओं का मुख्य उद्देश्य स्थानीय संसाधनों का न्यायपूर्ण प्रबंधन और वनों का पुनरुद्धार सुनिश्चित करना था।

35. (C) चिपको आंदोलन
उत्तराखंड में 1970 के दशक में प्रारंभ हुआ 'चिपको आंदोलन' विश्व प्रसिद्ध पर्यावरण आंदोलन है। इसमें ग्रामीण महिलाओं ने अदम्य साहस दिखाते हुए पेड़ों को कटने से बचाने के लिए उनसे चिपक कर विरोध प्रदर्शन किया। इस आंदोलन ने न केवल वनों की व्यावसायिक कटाई को रुकवाया, बल्कि पारिस्थितिक संतुलन और स्थानीय समुदायों के वनों पर अधिकारों के प्रति वैश्विक स्तर पर चेतना जागृत करने का कार्य किया।

36. (A) P-4, Q-3, R-1, S-2
भारत में विभिन्न प्रकार के संगठन अपने-अपने वर्गों के हितों का प्रतिनिधित्व करते हैं। फिक्की उद्योगपतियों का समूह है, जबकि इंडियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस कर्मचारियों की आवाज़ उठाती है। शेतकरी संगठन किसानों के अधिकारों हेतु संघर्षरत है। वहीं, मेघालय में 'दरबार कुर' जैसी पारंपरिक जनजातीय परिषदें स्वशासन का प्राचीन माध्यम हैं। ये सभी संस्थाएँ लोकतंत्र में विविध सामाजिक और आर्थिक हितों को संगठित स्वरूप प्रदान करती हैं।

37. (C) कपड़े की फड़ (परंपरागत लोक माध्यम)
पंचायती राज की बारीकियों को निरक्षर महिलाओं तक पहुँचाने के लिए 'फड़' जैसे पारंपरिक लोक माध्यमों का प्रभावी उपयोग किया गया। फड़ चित्रों और कथाओं के माध्यम से संदेश देने की एक दृश्य-श्रव्य कला है। इस नवाचारी तकनीक ने जटिल कानूनी और प्रशासनिक प्रक्रियाओं को सरल और सुगम बना दिया। इसने ग्रामीण महिलाओं में आत्मविश्वास जगाने और उन्हें लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

38. (B) मतदान का आधार और उद्देश्य जानना आवश्यक है।
'सुखीपुर और दुखीपुर' की कहानी के माध्यम से लोकतांत्रिक चेतना का संदेश प्रसारित किया गया है। यह कथा स्पष्ट करती है कि केवल मतदान कर देना ही नागरिक का एकमात्र कर्तव्य नहीं है। मतदाताओं को यह समझना चाहिए कि उनके वोट का क्या महत्व है और वे किसे और क्यों चुन रहे हैं। सही प्रत्याशी का चयन और शासन के उद्देश्यों के प्रति जागरूकता ही वास्तविक लोकतंत्र को सफल बनाती है।

39. (A) केवल 1, 2 और 3
कानून की व्यवस्था सदैव अधिकारियों के एक व्यवस्थित पदसोपान के माध्यम से संचालित होती है। संविधान वह सर्वोच्च दस्तावेज है जो राष्ट्र के मूल सिद्धांतों को परिभाषित करता है। किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में, न्यायपालिका के विभिन्न स्तरों द्वारा कानूनों की व्याख्या की जाती है। भारत में संविधान का अंतिम व्याख्याकर्ता उच्चतम न्यायालय है, न कि उच्च न्यायालय। उच्च न्यायालयों के निर्णयों को उच्चतम न्यायालय में चुनौती दी जा सकती है।

40. (A) असीमित धन का अधिकार
उच्चतम न्यायालय ने अनुच्छेद 21 के तहत 'जीवन के अधिकार' की अत्यंत उदार और व्यापक व्याख्या की है। इसके अंतर्गत गरिमापूर्ण जीवन, स्वास्थ्य, स्वच्छ पर्यावरण, आवास और शिक्षा जैसे अनिवार्य तत्वों को शामिल किया गया है। न्यायालय के अनुसार, जीवन का अर्थ केवल जैविक अस्तित्व नहीं है, बल्कि गुणवत्तापूर्ण जीवन है। हालाँकि, असीमित धन अर्जित करने का अधिकार इस मौलिक अधिकार के दायरे में कतई शामिल नहीं है।

41. (C) इसने स्थानीय निकायों के चुनाव को स्वैच्छिक बना दिया।
73वें और 74वें संविधान संशोधनों का मुख्य उद्देश्य स्थानीय स्वशासन को सुदृढ़ और प्रभावी बनाना था। इन संशोधनों ने स्थानीय निकायों को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया और महिलाओं हेतु आरक्षण सुनिश्चित किया। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इसने चुनावों को राज्य सरकारों की इच्छा पर निर्भर (स्वैच्छिक) रहने के बजाय हर पाँच वर्ष में अनिवार्य कर दिया। अब कोई भी राज्य बिना ठोस कारण के इन चुनावों को टाल नहीं सकता।

ANSWERS

1. (B) क्योंकि यह सामाजिक न्याय और लोक सहायता क्षमता पर आधारित है।
भारतीय संविधान केवल एक कानूनी दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह सामाजिक न्याय का आधारभूत स्तंभ भी है। यह नागरिकों को न केवल राजनीतिक अधिकार प्रदान करता है, बल्कि लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना हेतु दिशा-निर्देश भी सुनिश्चित करता है। सामाजिक न्याय और लोक सहायता की क्षमता पर आधारित होने के कारण इसे लोकतांत्रिक मूल्यों का रक्षक माना जाता है।

2. (A) कानून का सार शक्ति है और न्याय का मुख्य सार इसकी निष्पक्षता है।
कानून और न्याय के मध्य एक मौलिक अंतर विद्यमान है जो शासन व्यवस्था को स्पष्ट करता है। कानून का आधार राज्य की संप्रभु शक्ति है, जिसके माध्यम से नियमों का पालन सुनिश्चित कराया जाता है। इसके विपरीत, न्याय का मुख्य तत्व निष्पक्षता और नैतिकता है। न्याय यह सुनिश्चित करता है कि कानूनों का प्रयोग भेदभाव रहित और समानता पर आधारित हो।

3. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
संविधान एक गतिशील माध्यम है जो न केवल सामाजिक न्याय के लक्ष्यों को परिभाषित करता है, बल्कि उन्हें समाज में प्रसारित करने की शक्ति भी रखता है। यह राजनीतिक सत्ता को निर्देशित कर उसे लोक कल्याणकारी कार्यों की ओर मोड़ता है। इस प्रकार, संवैधानिक प्रावधान राजनीतिक शक्ति को सामाजिक हितों के साथ सुसंगत बनाकर न्यायपूर्ण समाज की स्थापना में सहायक सिद्ध होते हैं।

4. (D) के. संथानम
संविधान सभा में स्थानीय स्वशासन के महत्व को रेखांकित करते हुए के. संथानम ने एक महत्वपूर्ण संशोधन प्रस्तुत किया था। इस प्रस्ताव का उद्देश्य ग्राम पंचायतों को राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों में शामिल करना था। यह पहल भारत में सत्ता के विकेंद्रीकरण की दिशा में एक प्रारंभिक कदम थी, जिसने भविष्य में पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक आधार प्रदान करने की नींव रखी।

5. (C) कानून की व्याख्या केवल विधायिका द्वारा ही की जा सकती है।
लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था में शक्तियों का पृथक्करण एक अनिवार्य सिद्धांत है। विधायिका का मुख्य कार्य कानूनों का निर्माण करना है, जबकि उनके अर्थ और वैधता की व्याख्या करने का अधिकार न्यायपालिका के पास सुरक्षित होता है। भारत में उच्चतम न्यायालय संविधान का अंतिम संरक्षक और व्याख्याकर्ता है। अतः यह कहना गलत है कि कानून की व्याख्या करने का एकमात्र उत्तरदायित्व केवल विधायिका का है।

6. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारतीय संविधान के विभिन्न प्रावधान और संशोधन लोकतांत्रिक अधिकारों को सुदृढ़ करते हैं। अनुच्छेद 21 जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सुरक्षा सुनिश्चित करता है, जबकि अनुच्छेद 19(क) के तहत सूचना के अधिकार को मान्यता मिली है। समान कार्य के लिए समान वेतन समानता के सिद्धांत का हिस्सा है। इसी प्रकार, 73वें संविधान संशोधन ने पंचायती राज व्यवस्था को संवैधानिक दर्जा प्रदान कर ग्रामीण स्वशासन सशक्त किया।

7. (D) 1993
उच्चतम न्यायालय ने 1993 में एक ऐतिहासिक व्याख्या प्रस्तुत करते हुए सूचना के अधिकार को मौलिक अधिकारों के व्यापक दायरे में शामिल किया। न्यायालय के अनुसार, अनुच्छेद 19(क) में वर्णित अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तब तक पूर्ण नहीं हो सकती जब तक नागरिकों के पास प्रासंगिक जानकारी तक पहुँच न हो। इस न्यायिक सक्रियता ने शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित करने की दिशा में मार्ग प्रशस्त किया।

8. (A) अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार)
'समान कार्य के लिए समान वेतन' यद्यपि राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों का हिस्सा है, किंतु उच्चतम न्यायालय ने इसे अनुच्छेद 14 के साथ जोड़कर देखा है। समानता का अधिकार यह सुनिश्चित करता है कि राज्य समान परिस्थितियों में काम करने वाले व्यक्तियों के बीच मजदूरी में भेदभाव न करे। यह व्याख्या आर्थिक न्याय को बढ़ावा देती है और श्रमिकों को शोषण से सुरक्षा प्रदान करती है।

9. (A) केवल 1 और 2
पंचायती राज का शाब्दिक अर्थ पाँच व्यक्तियों के माध्यम से संचालित होने वाला शासन है। यह व्यवस्था ज़मीनी स्तर पर प्रत्यक्ष लोकतंत्र को सक्रिय करने और स्थानीय समस्याओं के समाधान में ग्रामीणों की भागीदारी सुनिश्चित करने पर केंद्रित है। यह विचार भारत की प्राचीन शासन परंपराओं का हिस्सा रहा है और इसे विदेशी आयात नहीं माना जा सकता। पारंपरिक पंचायतों में अक्सर लोकतांत्रिक मूल्यों का अभाव देखा गया।

10. (A) डॉ. अंबेडकर
संविधान सभा की बहसों के दौरान डॉ. बी.आर. अंबेडकर ने ग्रामीण स्थानीय स्वशासन के विचार के प्रति अपनी गंभीर चिंताएँ व्यक्त की थीं। उनका तर्क था कि भारतीय गाँवों में गहरे सामाजिक भेदभाव और जातिगत पदानुक्रम मौजूद हैं। वे डरे हुए थे कि पंचायतों को शक्ति देने से स्थानीय कुलीन और उच्च जातीय वर्ग के लोग दलितों और वंचितों का और अधिक आर्थिक और सामाजिक शोषण करेंगे।

(C) सामाजिक-आर्थिक न्याय प्राप्त करने के लिए राज्य की नीतियों को प्रेरित और निर्देशित करते हैं।
(D) भारतीय संविधान में एक बाद का विचार थे।

170. निम्नलिखित में से कौन सा कानून निदेशक सिद्धांतों से प्रेरित है?
(A) भारतीय दंड संहिता, 1860
(B) भारतीय साक्ष्य अधिनियम, 1872
(C) कंपनी अधिनियम, 2013
(D) समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1976

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

आधुनिक लोकतांत्रिक समाजों में, 'दबाव समूह' (Pressure Groups) राजनीतिक प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग हैं। ये ऐसे संगठन होते हैं जो अपने सदस्यों के विशिष्ट हितों को बढ़ावा देने और उनकी रक्षा करने के लिए बनाए जाते हैं। राजनीतिक दलों के विपरीत, दबाव समूहों का उद्देश्य सीधे तौर पर राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करना नहीं होता, बल्कि वे सरकारी नीतियों और निर्णयों को अपने पक्ष में प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। ये समूह विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं, जैसे कि व्यावसायिक संघ (फिक्की, एसोचैम), श्रमिक संघ (इंटक, एटक), कृषि संगठन (भारतीय किसान यूनियन), और पेशेवर निकाय (इंडियन मेडिकल एसोसिएशन)। इसके अतिरिक्त, हाल के दशकों में नागरिक समाज संगठनों का भी उदय हुआ है जो पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार, या महिला अधिकार जैसे व्यापक सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। दबाव समूह अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कई तरह की रणनीतियाँ अपनाते हैं, जिनमें लॉबिंग (विधायकों और मंत्रियों को प्रभावित करना), सार्वजनिक विरोध प्रदर्शन, मीडिया अभियान, और नीति-अनुसंधान रिपोर्ट प्रकाशित करना शामिल है। वे लोकतंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि वे सरकार और जनता के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करते हैं, विविध हितों को स्पष्ट करते हैं, और सार्वजनिक बहस को बढ़ावा देते हैं। हालाँकि, उनकी आलोचना भी की जाती है कि शक्तिशाली और धनी समूह नीति-निर्माण प्रक्रिया पर अनुचित प्रभाव डाल सकते हैं, जिससे लोकतंत्र में असमानता बढ़ सकती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. दबाव समूहों और राजनीतिक दलों के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) दबाव समूह अवैध होते हैं जबकि राजनीतिक दल वैध होते हैं।
(B) दबाव समूहों के सदस्य कम होते हैं।
(C) दबाव समूह सीधे राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करने का प्रयास नहीं करते हैं।
(D) राजनीतिक दलों का कोई विशिष्ट हित नहीं होता है।

172. 'लॉबिंग' की रणनीति का क्या अर्थ है?
(A) सड़कों पर बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन आयोजित करना
(B) अपने हितों को बढ़ावा देने के लिए नीति-निर्माताओं को सीधे प्रभावित करने का प्रयास करना
(C) चुनावों में अपने उम्मीदवार खड़े करना
(D) न्यायपालिका में याचिकाएँ दायर करना

173. निम्नलिखित में से कौन सा एक व्यावसायिक दबाव समूह का उदाहरण है?
(A) भारतीय किसान यूनियन
(B) इंडियन मेडिकल एसोसिएशन
(C) इंटक (INTUC)
(D) फिक्की (FICCI)

174. अनुच्छेद के अनुसार, दबाव समूह लोकतंत्र को कैसे मजबूत करते हैं?
(A) सरकार और जनता के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करके और विविध हितों का प्रतिनिधित्व करके
(B) चुनावों को पूरी तरह से दरकिनार करके
(C) केवल अपने धनी सदस्यों के हितों की रक्षा करके
(D) सरकार के हर फैसले का विरोध करके

175. दबाव समूहों की एक संभावित नकारात्मक आलोचना क्या है?
(A) वे बहुत अधिक लोकतांत्रिक हैं।
(B) वे सरकार को कोई भी निर्णय लेने की अनुमति नहीं देते हैं।
(C) शक्तिशाली और धनी समूह नीति-निर्माण पर अनुचित प्रभाव डाल सकते हैं।
(D) वे अक्सर बहुत कमजोर और अप्रभावी होते हैं।

मामलों की सुनवाई करती हैं जहाँ समझौता होने की संभावना अधिक होती है। इनके पास मृत्युदंड, आजीवन कारावास देने या संवैधानिक अनुच्छेदों की व्याख्या करने जैसी उच्च न्यायिक शक्तियाँ नहीं होतीं। इनका कार्यक्षेत्र अत्यंत सीमित और मध्यस्थता-परक होता है।

22. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
मेघालय की गारो, खासी और जयंतिया जनजातियों की अपनी प्राचीन राजनीतिक परंपराएँ हैं। 'दरबार कुर' खासियों की एक पारंपरिक राजनीतिक परिषद् है जो स्थानीय प्रशासन संभालती है। उत्तराखंड में महिलाओं ने वनों के संरक्षण हेतु 'वन पंचायतों' का गठन किया, जो उनकी सक्रियता का प्रतीक है। प्रसिद्ध चिपको आंदोलन भी इसी क्षेत्र से जुड़ा है, जहाँ ग्रामीणों ने पेड़ों को कटने से बचाने हेतु संघर्ष किया था।

23. (D) दरबार कुर
मेघालय में खासी जनजाति के भीतर पारंपरिक स्वशासन की एक सुव्यवस्थित प्रणाली विद्यमान है। उनके समाज में 'दरबार कुर' नामक संस्था का विशेष महत्व है, जो वास्तव में एक वंश-आधारित राजनीतिक परिषद् होती है। यह परिषद् अपने कबीले या वंश के मामलों का प्रबंधन करती है और मुखिया के निर्देशन में कार्य करती है। यह संस्था जनजातीय पहचान और उनकी प्राचीन लोकतांत्रिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

24. (A) आदिवासी क्षेत्रों का एक बड़ा खंड इसके प्रावधानों से बाहर है।
73वें संविधान संशोधन के अधिनियमन के समय भारत के कई आदिवासी क्षेत्रों, विशेषकर पूर्वोत्तर राज्यों को इसके अनिवार्य प्रावधानों से छूट दी गई थी। इसका मुख्य कारण इन क्षेत्रों में पहले से विद्यमान सुविकसित और विशिष्ट पारंपरिक राजनीतिक संस्थाओं का संरक्षण करना था। नीति निर्माता उनकी सांस्कृतिक स्वायत्तता में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते थे। परिणामतः, मेघालय जैसे राज्यों का एक बड़ा हिस्सा आधुनिक पंचायती राज व्यवस्था से बाहर रहा।

25. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
पंचायती राज में आरक्षण ने ग्रामीण महिलाओं के सामाजिक स्तर में गुणात्मक परिवर्तन लाया है। कलावती जैसी दलित महिलाओं को पंचायत सदस्य बनकर नई पहचान और आत्मसम्मान प्राप्त हुआ है। उत्तराखंड में महिलाओं द्वारा स्थापित 'वन पंचायतें' और उनका 'चिपको आंदोलन' में सक्रिय योगदान पर्यावरण संरक्षण के प्रति उनकी जागरूकता को दर्शाता है। ये घटनाएँ सिद्ध करती हैं कि राजनीतिक भागीदारी ने महिलाओं को सशक्त और निर्णय-सक्षम बनाया है।

26. (A) भूरिया समिति
समाजशास्त्री टिपलुट नोंगबरी ने भूरिया समिति की रिपोर्ट के संदर्भ में महत्वपूर्ण टिप्पणियाँ की हैं। उन्होंने आदिवासी समाजों की पारंपरिक राजनीतिक संस्थाओं की जटिल प्रकृति पर प्रकाश डाला। नोंगबरी का मानना था कि इन संस्थाओं को केवल आदर्श रूप में नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि उनके भीतर मौजूद सामाजिक विसंगतियों का भी अध्ययन करना चाहिए। उनकी आलोचना ने जनजातीय स्वशासन की व्यवस्थाओं को और अधिक गहराई से समझने में मदद की।

27. (D) वे पूर्ण रूप से समतावादी और स्तरीकरण से मुक्त होते हैं।
टिपलुट नोंगबरी के अनुसार, आदिवासी समाजों को पूर्णतः समतावादी मानना एक गलत धारणा है। उन्होंने तर्क दिया कि इन समाजों में भी आंतरिक सामाजिक स्तरीकरण और लिंग आधारित भेदभाव के तत्व मौजूद हो सकते हैं। कई पारंपरिक संस्थाएँ महिलाओं की भागीदारी के प्रति असहिष्णु रही हैं। सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तनों ने उनकी पुरानी व्यवस्थाओं में भी विकृतियाँ पैदा की हैं, जिससे उनकी लोकतांत्रिक प्रकृति पर प्रश्न उठते हैं।

28. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया सामाजिक असमानताओं के कारण अत्यंत चुनौतीपूर्ण रही है। गाँवों में अक्सर उच्च जातियों और धनी किसानों का सत्ता पर नियंत्रण होता है, जो बहुसंख्यक निर्बल वर्गों की आवाज़ को दबा देते हैं। जाति, लिंग और वर्ग आधारित यह ऐतिहासिक भेदभाव लोकतांत्रिक संस्थाओं के निष्पक्ष संचालन में बाधा उत्पन्न करता है। अतः स्थानीय निकायों में शक्ति का समान वितरण एक कठिन कार्य है।

29. (C) उद्योगपतियों का एक संगठन (हित समूह)
फेडरेशन ऑफ इंडियन कॉमर्स एंड चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (FICCI) भारत में उद्योगपतियों और व्यावसायिक संस्थाओं का एक प्रमुख प्रतिनिधि निकाय है। यह एक हित समूह के रूप में कार्य करता है, जिसका मुख्य उद्देश्य आर्थिक नीतियों के निर्माण में सरकार को प्रभावित करना और व्यापारिक हितों की रक्षा करना है। यह सीधे चुनाव नहीं लड़ता, बल्कि नीतिगत चर्चाओं और लॉबिंग के माध्यम से सक्रिय रहता है।

30. (D) एक संगठन जो निर्वाचन द्वारा सरकार पर नियंत्रण हेतु उन्मुख हो।
राजनीतिक दल लोकतांत्रिक व्यवस्था के अनिवार्य अंग हैं। इन्हें ऐसे संगठित समूह के रूप में परिभाषित किया जाता है जो एक निश्चित विचारधारा या कार्यक्रम के आधार पर चुनावों में भाग लेते हैं। उनका प्राथमिक लक्ष्य लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं के माध्यम से सत्ता प्राप्त करना और सरकार का संचालन करना होता है। वे जनता की माँगों को नीतिगत स्वरूप प्रदान कर शासन प्रणाली को सक्रिय और उत्तरदायी बनाए रखते हैं।

31. (A) केवल 1, 2, 4
हित समूह और दबाव समूह विशिष्ट सामाजिक या आर्थिक उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु गठित होते हैं और सरकार की नीतियों को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। कुछ समूह सत्ता प्राप्ति हेतु आंदोलन का सहारा लेते हैं। हालाँकि, सभी दबाव समूहों की क्षमता एक समान नहीं होती; अक्सर प्रभावशाली वर्गों के समूहों का अधिक दबदबा रहता है। लोकतंत्र में इनका

11. (D) महात्मा गाँधी
महात्मा गाँधी 'ग्राम स्वराज्य' की अवधारणा के सबसे प्रमुख और कट्टर समर्थक थे। उनका मानना था कि वास्तविक स्वतंत्रता तभी प्राप्त होगी जब भारत के गाँव आत्मनिर्भर और स्व-शासित इकाइयों के रूप में विकसित होंगे। वे चाहते थे कि सत्ता का केंद्र गाँवों में हो, जहाँ लोग स्वयं अपने विकास का निर्णय ले सकें। उनकी यह दृष्टि विकेंद्रीकृत ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक समरसता पर आधारित थी।

12. (B) ग्राम सभा को सभी न्यायिक शक्तियाँ प्रदान करना।
73वें संविधान संशोधन ने पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा देते हुए उनकी संरचना और चुनावों के संबंध में स्पष्ट नियम बनाए। इसमें नियमित चुनाव, महिलाओं हेतु एक-तिहाई आरक्षण और अनुसूचित जाति-जनजाति के लिए विशेष प्रावधान अनिवार्य किए गए। हालाँकि, इस संशोधन के तहत ग्राम सभा को सभी प्रकार की न्यायिक शक्तियाँ प्रदान नहीं की गई हैं। न्यायिक कार्य मुख्य रूप से न्यायालयों या न्याय पंचायतों तक सीमित हैं।

13. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
73वां संविधान संशोधन भारत में लोकतंत्र के आधार को विस्तृत करने की दिशा में एक क्रांतिकारी पहल थी। इसने पंचायती राज संस्थाओं को केवल कानूनी निकाय न रखकर संवैधानिक प्रस्थिति प्रदान की। स्थानीय निकायों के नियमित चुनाव अनिवार्य होने से सत्ता का विकेंद्रीकरण सुनिश्चित हुआ। यह संशोधन ज़मीनी स्तर पर जनता की भागीदारी को बढ़ाकर शासन प्रणाली को अधिक समावेशी और उत्तरदायी बनाने में सफल रहा है।

14. (D) यह बीस लाख से कम जनसंख्या वाले राज्यों के लिए अनिवार्य है।
पंचायती राज की त्रिस्तरीय व्यवस्था एक पिरामिड के समान है, जिसमें ग्राम सभा सबसे निचली और आधारभूत इकाई होती है। यह प्रणाली ज़िला स्तर पर विकास योजनाओं के निर्माण हेतु ज़िला योजना समिति का गठन करती है। संवैधानिक प्रावधानों के अनुसार, बीस लाख से कम जनसंख्या वाले राज्यों के लिए त्रिस्तरीय ढांचा अपनाना अनिवार्य नहीं है, वे अपनी आवश्यकतानुसार मध्यवर्ती स्तर को छोड़ सकते हैं।

15. (B) केवल 1, 2, 3, 4
73वें और 74वें संशोधन ने स्थानीय निकायों में महिलाओं को 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान कर उनके राजनीतिक सशक्तिकरण की नींव रखी। इसमें अनुसूचित जाति और जनजाति की महिलाओं के लिए विशेष उप-आरक्षण का भी प्रावधान है। इसके परिणामस्वरूप 1993-94 के चुनावों में लाखों महिलाएँ मुख्यधारा की राजनीति से जुड़ीं। हालाँकि, यह आरक्षण केवल पंचायतों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि नगरपालिकाओं में भी प्रभावी रूप से लागू है।

16. (B) एक-तिहाई
भारतीय संविधान के 73वें संशोधन के माध्यम से स्थानीय स्वशासन की संस्थाओं में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने हेतु एक महत्वपूर्ण प्रावधान किया गया। इसके तहत ग्राम पंचायतों, पंचायत समितियों और ज़िला परिषदों में महिलाओं के लिए कुल सीटों का कम से कम एक-तिहाई या 33 प्रतिशत हिस्सा आरक्षित किया गया। इस ऐतिहासिक कदम ने ग्रामीण भारत में महिलाओं की नेतृत्व क्षमता को विकसित करने का अवसर प्रदान किया।

17. (B) गंभीर आपराधिक मामलों में दंड देना।
पंचायतों को आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय के लिए योजनाएँ बनाने तथा उन्हें कार्यान्वित करने की विस्तृत शक्तियाँ दी गई हैं। वे स्थानीय स्तर पर शुल्क, कर और जुर्माना लगाकर संसाधन एकत्र कर सकते हैं। किंतु, भारत की कानूनी व्यवस्था के अंतर्गत गंभीर आपराधिक मामलों की सुनवाई करने या दंड देने का अधिकार केवल अधिकृत न्यायालयों के पास है। पंचायतों का क्षेत्राधिकार मुख्य रूप से विकास कार्यों तक सीमित है।

18. (A) 1, 3, 4, 2
संवैधानिक विकास के क्रम में सबसे पहले संविधान सभा में के. संथानम ने पंचायतों पर निदेशक सिद्धांत का प्रस्ताव रखा। इसके बाद न्यायपालिका ने महत्वपूर्ण निर्णयों के माध्यम से 'समान कार्य के लिए समान वेतन' और 'सूचना के अधिकार' जैसे सिद्धांतों को मौलिक अधिकारों के साथ जोड़ा। अंततः 1992 में 73वां संविधान संशोधन पारित हुआ, जिसने पंचायती राज को एक सुदृढ़ और अनिवार्य संवैधानिक ढांचा प्रदान किया।

19. (C) विदेशी सरकारों से प्रत्यक्ष ऋण।
पंचायतों की वित्तीय स्वायत्तता हेतु आय के विभिन्न स्रोत निर्धारित किए गए हैं। वे स्थानीय स्तर पर संपत्ति, व्यवसाय, पशुओं और वाहनों पर कर लगा सकते हैं। उन्हें ज़िला पंचायत, राज्य और केंद्र सरकार से विभिन्न अनुदान और भू-राजस्व का हिस्सा प्राप्त होता है। हालाँकि, संप्रभुता और राजकोषीय नीति के कारणों से पंचायतों को विदेशी सरकारों या संस्थाओं से सीधे ऋण प्राप्त करने का अधिकार नहीं है।

20. (D) स्थानीय 'सूचना के अधिकार' को सुनिश्चित करने हेतु।
पंचायतों के लिए वित्तीय सहायता और उसके व्यय का विवरण सार्वजनिक रूप से प्रदर्शित करना अनिवार्य है। इस पारदर्शिता का मुख्य उद्देश्य स्थानीय स्तर पर सूचना के अधिकार को प्रभावी बनाना है ताकि ग्रामीण नागरिक यह जान सकें कि सार्वजनिक धन का उपयोग कहाँ हो रहा है। यह प्रक्रिया जवाबदेही को बढ़ावा देती है और भ्रष्टाचार की संभावनाओं को कम कर शासन में जन-विश्वास को मजबूत करती है।

21. (C) छोटे-मोटे दीवानी और आपराधिक मामलों की सुनवाई करना।
न्याय पंचायतों का गठन स्थानीय स्तर पर सुलभ और शीघ्र न्याय प्रदान करने के उद्देश्य से किया जाता है। ये संस्थाएँ मुख्य रूप से छोटे-मोटे दीवानी विवादों और सामान्य आपराधिक

42. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
डॉ. बी.आर. अंबेडकर संविधान निर्माण के दौरान गाँवों को स्थानीय शासन की इकाई बनाने के प्रबल विरोधी थे। उन्हें आशंका थी कि जातिवादी ग्रामीण परिवेश में सत्ता का विकेंद्रीकरण निचली जातियों के लिए घातक होगा। उनका मानना था कि ग्रामीण भारत में जमींदार और सवर्ण वर्ग पंचायतों पर काबिज़ होकर निर्बलों का दमन करेंगे। इसी डर के कारण उन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर मजबूत शासन प्रणाली पर अधिक जोर दिया था।

43. (D) ज़िला परिषद्
भारत में पंचायती राज की त्रिस्तरीय व्यवस्था एक सोपानिक संरचना का पालन करती है। इस व्यवस्था के सबसे निचले स्तर पर ग्राम पंचायत होती है, जो ग्रामीण स्तर के कार्यों को देखती है। मध्यवर्ती स्तर पर पंचायत समिति या ब्लॉक स्तर का निकाय कार्य करता है। इस पूरी संरचना के शीर्ष पर 'ज़िला परिषद्' होती है, जो पूरे ज़िले की विकास योजनाओं का समन्वय और मार्गदर्शन करने के लिए उत्तरदायी है।

44. (B) लगभग 8,00,000 महिलाओं का राजनीतिक प्रक्रिया से जुड़ना।
73वें संविधान संशोधन के लागू होने के तुरंत बाद 1993-94 के चुनावों ने भारतीय राजनीति का चेहरा बदल दिया। अनिवार्य आरक्षण के कारण लगभग आठ लाख महिलाओं ने विभिन्न स्तरों पर पंचायत पदों के लिए जीत हासिल की। यह विश्व इतिहास में लोकतांत्रिक भागीदारी का एक अभूतपूर्व उदाहरण था। इस प्रक्रिया ने ग्रामीण भारत में लैंगिक समानता और महिलाओं के नेतृत्व को सामाजिक मान्यता दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

45. (D) सभी 1, 2, 3, 4, 5
वर्तमान में पंचायतों का कार्यक्षेत्र अत्यंत व्यापक है, जिसमें विकासात्मक, सामाजिक और प्रशासनिक कार्य शामिल हैं। वे बुनियादी ढांचे के रखरखाव, जन्म-मृत्यु पंजीकरण और श्मशानों की देखभाल करती हैं। इसके अतिरिक्त, वे परिवार नियोजन, शिक्षा और कुटीर उद्योगों के विकास जैसे कल्याणकारी कार्यक्रमों को बढ़ावा देती हैं। एकीकृत ग्रामीण विकास जैसे राष्ट्रीय कार्यक्रमों के सफल क्रियान्वयन में भी पंचायतों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और प्राथमिक मानी जाती है।

46. (D) वे जुर्माना लगा सकते हैं लेकिन सजा नहीं दे सकते।
न्याय पंचायतें स्थानीय स्तर पर विवाद निवारण का एक वैकल्पिक तंत्र हैं। इनके पास छोटे दीवानी मामलों में निर्णय देने और सामान्य गलतियों के लिए सीमित जुर्माना लगाने की शक्ति होती है। हालाँकि, इन्हें किसी भी व्यक्ति को कारावास की सजा देने या कठोर दंड देने का कानूनी अधिकार प्राप्त नहीं है। इनका मुख्य उद्देश्य ग्राम स्तर पर आपसी समझौते के माध्यम से न्याय को सुलभ और सस्ता बनाना है।

47. (A) उसे एक नई पहचान और बढ़ा हुआ आत्मसम्मान मिला।
दलित महिला कलावती का अनुभव पंचायती राज के सशक्तिकरण का जीवंत प्रमाण है। पंचायत सदस्य बनने के बाद उसे केवल एक 'पत्नी' या 'माँ' के घरेलू दायरे से बाहर निकलने का अवसर मिला। उसकी अपनी विशिष्ट राजनीतिक और सामाजिक पहचान बनी, जिससे उसका आत्मविश्वास और आत्मसम्मान बढ़ा। यह परिवर्तन दर्शाता है कि स्थानीय राजनीति में भागीदारी हाशिए पर मौजूद वर्गों के लिए व्यक्तिगत और सामाजिक गरिमा का स्रोत है।

48. (A) 1, 4, 2, 3
भारतीय संवैधानिक और सामाजिक इतिहास के घटनाक्रम में सबसे पहले 1950 में संविधान का निर्माण हुआ। इसके उपरांत 1970 के दशक में उत्तराखंड में वनों को बचाने हेतु 'चिपको आंदोलन' सक्रिय हुआ। लोकतांत्रिक सुधारों की दिशा में 1992 में 73वां संविधान संशोधन पारित किया गया। अंततः, इन परिवर्तनों के प्रभाव को 'महिला समाख्या' जैसी संस्थाओं ने कलावती जैसी महिलाओं के अनुभवों के माध्यम से बाद के वर्षों में दर्ज किया।

49. (B) प्रभावशाली गुटों का प्रभुत्व और बहुसंख्यकों की अनदेखी।
गहरी सामाजिक और आर्थिक विषमताओं वाले समाज में लोकतंत्र को नीचे तक पहुँचाना एक जटिल कार्य है। गाँवों में अक्सर संसाधनों पर काबिज़ शक्तिशाली गुट और उच्च जातियाँ लोकतांत्रिक संस्थाओं को अपने हितों में मोड़ लेती हैं। वे सत्ता का दुरुपयोग कर गरीब और वंचित बहुसंख्यकों की आवश्यकताओं को नजरअंदाज करते हैं। यह स्थिति वास्तविक लोकतंत्रीकरण के मार्ग में सबसे बड़ी बाधा बनकर उभरती है, जिसे दूर करना अनिवार्य है।

50. (A) कर्मचारियों का संगठन
'द सेंटर फॉर इंडियन ट्रेड यूनियंस' (CITU) भारत में एक प्रमुख राष्ट्रीय श्रमिक संगठन है। यह औद्योगिक इकाइयों, कारखानों और विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत कर्मचारियों के अधिकारों की रक्षा हेतु कार्य करता है। एक दबाव समूह के रूप में, यह सरकार और नियोक्ताओं के साथ बातचीत कर बेहतर कार्य स्थितियों और वेतन वृद्धि हेतु संघर्ष करता है। इसका मुख्य उद्देश्य श्रमिक वर्ग को संगठित कर उनकी आवाज़ को बुलंद करना है।

51. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने समाज में दल, प्रस्थिति और वर्ग की शक्ति संरचना का गहरा विश्लेषण किया है। भारतीय संदर्भ में, डॉ. अंबेडकर स्थानीय स्वशासन की शक्तियों के संभावित दुरुपयोग के प्रति सशंकित थे। इसके विपरीत, महात्मा गाँधी 'ग्राम स्वराज्य' के माध्यम से गाँवों को स्वतंत्र और आत्मनिर्भर बनाना चाहते थे। के. संथानम ने इन विचारों के मध्य समन्वय हेतु संविधान सभा में पंचायतों के लिए नीति निदेशक प्रस्ताव रखा था।

52. (D) सामाजिक क्रम
मैक्स वेबर के अनुसार, 'प्रस्थिति समूह' समाज में सम्मान, प्रतिष्ठा और जीवनशैली के आधार पर गठित होते हैं। उन्होंने स्पष्ट किया

अब महिलाएँ केवल मतदाता नहीं रहीं, बल्कि वे नीति निर्माण और विकास कार्यों की देखरेख में भी सक्रिय भागीदार बनीं। इस प्रक्रिया ने सदियों से पितृसत्तात्मक समाज में दबी हुई महिला आवाज़ों को मंच और शक्ति प्रदान की है।

73. (C) इसके निर्णय उच्चतम न्यायालय के लिए बाध्यकारी होते हैं।
ग्राम सभा ग्रामीण विकास के लिए एक सशक्त मंच है जो स्थानीय सरकार का चुनाव करती है और निर्णय लेने की प्रक्रिया में निर्बल वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित करती है। यह विकास कार्यों की समीक्षा और योजना निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हालाँकि, ग्राम सभा के निर्णय स्थानीय प्रशासन हेतु महत्वपूर्ण तो हो सकते हैं, किंतु वे उच्चतम न्यायालय जैसी सर्वोच्च न्यायिक संस्था के लिए बाध्यकारी या अंतिम नहीं होते। न्यायिक संप्रभुता स्वतंत्र बनी रहती है।

74. (A) वे इन योजनाओं के संचालन के लिए जिम्मेदार होती हैं।
पंचायतों को ग्रामीण स्तर पर विभिन्न महत्वपूर्ण सरकारी कल्याणकारी योजनाओं के कार्यान्वयन का उत्तरदायित्व सौंपा गया है। 'एकीकृत बाल विकास योजना' जैसी पहलों का सफल संचालन सीधे तौर पर पंचायत सदस्यों की सक्रियता पर निर्भर करता है। वे इन योजनाओं के लाभार्थियों की पहचान करने और संसाधनों के वितरण में सेतु की भूमिका निभाते हैं। इस प्रकार, पंचायतें सरकारी नीतियों को धरातल पर उतारने वाली प्राथमिक प्रशासनिक और सामाजिक इकाइयाँ बन जाती हैं।

75. (A) केवल 1, 2, 4
न्याय पंचायतें स्थानीय स्तर पर छोटे दीवानी और आपराधिक विवादों को सुलझाने का कार्य करती हैं, जिससे अदालतों का बोझ कम होता है। वे दहेज प्रताड़ना जैसे पारिवारिक मामलों में मध्यस्थता कर समझौता कराने में प्रभावी भूमिका निभा सकती हैं। ये संस्थाएँ केवल जुर्माना लगाने की शक्ति रखती हैं और इन्हें कारावास या मृत्युदंड देने का कोई अधिकार नहीं है। साथ ही, न्याय पंचायतों की स्थापना सभी राज्यों में समान रूप से अनिवार्य नहीं की गई है।

76. (B) दरबार कुर, वंश का मुखिया
मेघालय की खासी जनजाति के भीतर पारंपरिक स्वशासन का एक सुव्यवस्थित ढांचा मौजूद है। उनके समाज में 'दरबार कुर' नामक संस्था का विशेष महत्व है, जो वास्तव में एक वंश-आधारित राजनीतिक परिषद् होती है। यह परिषद् अपने कबीले या वंश के मामलों का प्रबंधन करती है और वंश के मुखिया के मार्गदर्शन में कार्य करती है। यह संस्था जनजातीय पहचान और उनकी प्राचीन सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखने का एक सशक्त माध्यम रही है।

77. (C) क्योंकि उस समय के नीति निर्माता पारंपरिक राजनीतिक संस्थाओं में हस्तक्षेप नहीं करना चाहते थे।
73वें संविधान संशोधन के अधिनियमन के समय कई आदिवासी क्षेत्रों को इसके दायरे से बाहर रखा गया था। इसका मुख्य कारण यह था कि नीति निर्माता इन क्षेत्रों में सदियों से चली आ रही स्वायत्त और सुविकसित पारंपरिक संस्थाओं के कामकाज में बाधा नहीं डालना चाहते थे। वे जनजातीय संस्कृतियों और उनकी विशिष्ट स्वशासन प्रणालियों का सम्मान करना चाहते थे। इस दृष्टिकोण का उद्देश्य आधुनिक लोकतंत्र और प्राचीन परंपराओं के मध्य एक सामंजस्यपूर्ण संतुलन बनाए रखना था।

78. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
भारतीय संविधान और संशोधनों के माध्यम से सामाजिक सुधार की दिशा में निरंतर प्रयास किए गए हैं। 73वें संशोधन ने पंचायतों में महिलाओं हेतु 33 प्रतिशत आरक्षण और बीस लाख से अधिक जनसंख्या वाले राज्यों में त्रिस्तरीय प्रणाली को अनिवार्य बनाया। के. संथानम ने पंचायतों को नीति निदेशक सिद्धांतों में शामिल करने का सुझाव दिया था। वहीं, न्यायपालिका ने अनुच्छेद 21 की व्यापक व्याख्या कर बंधुआ मजदूरों के पुनर्वास जैसे मानवीय अधिकारों को सुदृढ़ किया है।

79. (A) अमीर किसानों या उच्च जाति के ज़मींदारों जैसे प्रभावशाली गुटों द्वारा सत्ता पर नियंत्रण।
ग्रामीण भारत में लोकतंत्रीकरण के मार्ग में सबसे बड़ी चुनौती गहरी जड़ें जमाए हुए सामाजिक असमानता है। गाँवों में अक्सर संसाधनों और सत्ता पर उच्च जातियों या धनी जमींदारों का एकाधिकार होता है। ये शक्तिशाली गुट अक्सर लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को प्रभावित करते हैं ताकि वे अपने हितों की रक्षा कर सकें। इसके परिणामस्वरुप, गरीब और वंचित बहुसंख्यक वर्गों की आवाज़ शासन के गलियारों में अनसुनी रह जाती है, जो वास्तविक लोकतंत्र की मूल भावना के विपरीत है।

80. (B) एक अलग दल या दबाव समूह बना लेना।
लोकतांत्रिक व्यवस्था में जब कोई विशिष्ट समूह यह अनुभव करता है कि मौजूदा राजनीतिक दल उसकी समस्याओं या हितों का उचित प्रतिनिधित्व नहीं कर रहे हैं, तो वह नए मार्ग चुन सकता है। वह समूह अपने हितों की रक्षा हेतु एक नया राजनीतिक दल गठित कर सकता है या सरकार पर प्रभाव डालने के लिए एक दबाव समूह बना सकता है। यह प्रक्रिया लोकतंत्र की जीवंतता को दर्शाती है, जहाँ विभिन्न समूहों को अपनी माँगों हेतु संगठित होने का अधिकार है।

81. (B) यह अवधारणा प्रबल सामाजिक समूहों (जैसे वर्ग, जाति) की शक्ति को हतोत्साहित या छिपा सकती है।
दबाव समूहों की आलोचना इस आधार पर की जाती है कि यह अवधारणा समाज में व्याप्त गहरी शक्ति विषमताओं को ओझल कर सकती है। आलोचकों का मानना है कि सभी समूहों के पास सरकार को प्रभावित करने की समान क्षमता नहीं होती। अक्सर संसाधन संपन्न वर्ग या ऊँची जाति के समूह ही प्रभावी दबाव डाल पाते हैं, जबकि निर्बल वर्गों के हित पीछे छूट जाते हैं। इस प्रकार, दबाव समूह की अवधारणा कभी-कभी प्रभावशाली समूहों के अनैतिक प्रभुत्व को ढँकने का कार्य करती है।

82. (A) 73वां संशोधन
भारत की आजादी के लगभग चार दशकों के बाद, 73वें संविधान संशोधन ने ग्राम पंचायतों को नीति निदेशक सिद्धांतों के गौण स्थान से उठाकर एक अनिवार्य संवैधानिक प्रस्थिति प्रदान की। इससे पूर्व पंचायतें राज्य सरकारों की इच्छा पर

को रोकता है और ग्रामीणों को यह विश्वास दिलाता है कि सार्वजनिक धन का उपयोग उनके गाँव के वास्तविक विकास के लिए ही किया जा रहा है।

63. (A) मेघालय
पूर्वोत्तर भारत का राज्य मेघालय अपनी समृद्ध और प्राचीन पारंपरिक लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए जाना जाता है। यहाँ की जनजातियों, जैसे गारो, खासी और जयंतिया, ने सदियों से स्वशासन की अपनी विशिष्ट प्रणालियाँ विकसित की हैं। इन संस्थाओं ने आधुनिक संवैधानिक परिवर्तनों के बावजूद अपनी प्रासंगिकता और अस्तित्व बनाए रखा है। यही कारण है कि इन क्षेत्रों में 73वें संशोधन के कुछ प्रावधानों को उनकी पारंपरिक स्वायत्तता के सम्मान में लागू नहीं किया गया।

64. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
कानून का मूल आधार राज्य द्वारा प्रदत्त शक्ति है, जबकि न्याय की आत्मा निष्पक्षता में बसती है। समाजशास्त्री टिपलुट नोंगबरी ने आदिवासी संस्थाओं की आंतरिक जटिलताओं का विश्लेषण कर उन पर महत्वपूर्ण शोध किया है। इसी प्रकार, कलावती एक ऐसी दलित पंचायत सदस्य का उदाहरण है जिसने आरक्षण के माध्यम से राजनीति में अपनी पहचान बनाई। ये सभी तत्व भारतीय लोकतंत्र और समाज के विभिन्न आयामों को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं।

65. (B) पारंपरिक आदिवासी संस्थाओं में भी स्तरीकरण और असहिष्णुता मौजूद हो सकती है।
टिपलुट नोंगबरी ने आदिवासी समाजों के प्रति प्रचलित रुमानी धारणाओं की आलोचना की। उन्होंने स्पष्ट किया कि पारंपरिक जनजातीय संस्थाएँ हमेशा पूर्णतः समतावादी नहीं होतीं। उनके भीतर भी वर्ग भेद, सामाजिक स्तरीकरण और महिलाओं के प्रति भेदभाव जैसी समस्याएँ मौजूद हो सकती हैं। नोंगबरी का तर्क था कि किसी भी संस्था को सुधारने या अपनाने से पहले उसकी वास्तविकताओं और उसमें निहित शक्ति संबंधों को गंभीरता से समझना अत्यंत आवश्यक है।

66. (A) सरकार की नीतियों को अपने हितों के पक्ष में प्रभावित करना।
दबाव समूह और हित समूह लोकतंत्र में उन संगठित समूहों का प्रतिनिधित्व करते हैं जो सीधे सत्ता प्राप्त करने के बजाय शासन की नीतियों को प्रभावित करना चाहते हैं। वे प्रदर्शन, लॉबिंग और जनमत तैयार करने के माध्यम से अपने विशिष्ट सामाजिक, आर्थिक या व्यावसायिक हितों के पक्ष में निर्णय करवाने का प्रयास करते हैं। ये समूह सरकार और नागरिकों के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करते हुए विविध हितों को आवाज़ देते हैं।

67. (A) 1, 2, 3, 4
भारत में पंचायती राज के सशक्तिकरण का क्रम एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया रही है। सबसे पहले 1992 में 73वां संविधान संशोधन विधेयक संसद द्वारा पारित किया गया। इसके बाद इसे देश भर में लागू किया गया और पंचायतों के लिए अनिवार्य चुनावों का आयोजन हुआ। इस संवैधानिक अधिदेश के परिणामस्वरुप ही लाखों महिलाएँ राजनीतिक प्रक्रियाओं का हिस्सा बनीं, जिससे ग्रामीण नेतृत्व में एक व्यापक सामाजिक बदलाव और महिलाओं की सक्रिय भागीदारी संभव हो सकी।

68. (D) उपरोक्त (A) और (B) दोनों।
मैक्स वेबर के अनुसार, राजनीतिक दलों के उद्देश्य बहुआयामी हो सकते हैं। वे किसी विशेष विचारधारा या भौतिक आवश्यकता की पूर्ति हेतु एक नियोजित कार्यक्रम को लागू करने का प्रयास करते हैं। साथ ही, वे अपने नेताओं और समर्थकों के लिए सत्ता, सम्मान और व्यक्तिगत लाभ अर्जित करने का भी लक्ष्य रखते हैं। वेबर ने दलों को शक्ति संरचना के ऐसे औजार के रुप में देखा जो सामूहिक और व्यक्तिगत दोनों प्रकार के हितों को साधने का कार्य करते हैं।

69. (A) केवल 1, 2 और 3
भारतीय ग्रामीण समाज में पारंपरिक पंचायतों पर प्रायः दबंग जातियों का ही नियंत्रण रहा है, जिस पर डॉ. अंबेडकर ने गहरी चिंता व्यक्त की थी। इसके विपरीत गांधीजी प्रत्येक गाँव को आत्मनिर्भर 'ग्राम स्वराज्य' के रुप में देखना चाहते थे। संविधान निर्माण के प्रारंभिक चरण में पंचायतों को लेकर पर्याप्त मतभेद थे, जिसके कारण उन्हें तुरंत अनिवार्य संवैधानिक दर्जा नहीं मिला। केवल लंबी चर्चाओं और संशोधनों के बाद ही उन्हें संवैधानिक मान्यता प्राप्त हुई।

70. (B) संविधान यह सुनिश्चित करता है कि शासन की शक्ति का उपयोग समाज के कल्याण के लिए हो।
संविधान केवल राज्य की शक्तियों को परिभाषित करने वाला दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह एक नैतिक दिशा-निर्देश भी है। इसका मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि राजनीतिक सत्ता का प्रयोग किसी व्यक्ति या वर्ग विशेष के लाभ के लिए न होकर संपूर्ण समाज के हित में हो। संविधान शक्ति के प्रवाह को जन-कल्याणकारी नीतियों की ओर मोड़ता है, जिससे समाज के वंचित वर्गों को न्याय और विकास के समान अवसर प्राप्त हो सकें।

71. (D) क्योंकि इसमें गरिमा, स्वास्थ्य, शिक्षा और आजीविका जैसी अनिवार्य गुणवत्ताएँ शामिल हैं।
उच्चतम न्यायालय ने 'जीवन के अधिकार' की गरिमापूर्ण व्याख्या करते हुए इसे मात्र भौतिक अस्तित्व से कहीं ऊपर स्थान दिया है। न्यायालय के अनुसार, एक मनुष्य का जीवन पशु की भांति केवल जीवित रहने तक सीमित नहीं है। इसमें वे सभी परिस्थितियाँ शामिल हैं जो जीवन को जीने योग्य बनाती हैं, जैसे कि अच्छी शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएँ, सुरक्षित आवास और सम्मानजनक आजीविका। इन तत्वों के बिना जीवन के अधिकार की कल्पना अधूरी और अर्थहीन है।

72. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
73वां संविधान संशोधन महिलाओं के लिए राजनीतिक रूप से एक युगांतरकारी कदम सिद्ध हुआ है। इसने स्थानीय निकायों में महिलाओं हेतु अनिवार्य आरक्षण प्रदान कर उन्हें पहली बार सत्ता की संरचना के भीतर निर्णायक भूमिका में खड़ा किया।

कि ये समूह किसी आर्थिक लाभ के बजाय सामाजिक क्रम में अपनी स्थिति और मान-मर्यादा द्वारा परिभाषित होते हैं। जहाँ 'वर्ग' आर्थिक व्यवस्था से जुड़ा है, वहीं 'प्रस्थिति' का संबंध समाज में मिलने वाले आदर और सामाजिक वर्गीकरण से है। यह विभाजन समाज के स्तरीकरण को समझने में मदद करता है।

53. (C) 17 प्रतिशत
73वें संविधान संशोधन के अंतर्गत महिलाओं के लिए आरक्षित कुल 33 प्रतिशत सीटों में एक आंतरिक विभाजन का प्रावधान किया गया है। प्रावधानों के अनुसार, इन सीटों में से लगभग 17 प्रतिशत हिस्सा विशेष रूप से अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति की महिलाओं के लिए आरक्षित है। यह व्यवस्था यह सुनिश्चित करती है कि आरक्षण का लाभ समाज के सबसे पिछड़े और वंचित वर्गों की महिलाओं तक प्रभावी रूप से पहुँच सके।

54. (B) सड़कों, सार्वजनिक भवनों, तालाबों व स्कूलों का निर्माण।
पंचायतों के विकासात्मक कार्यों का प्राथमिक उद्देश्य ग्रामीण बुनियादी ढांचे को मजबूत करना है। इसमें गाँवों की सड़कों का निर्माण, सार्वजनिक भवनों का रख-रखाव, जल संरक्षण हेतु तालाबों की खुदाई और प्राथमिक स्कूलों की सुविधाओं में सुधार शामिल है। ये कार्य सीधे तौर पर ग्रामीणों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाने और आर्थिक गतिविधियों को सुगम बनाने में सहायक होते हैं। पंचायतें स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार इन परियोजनाओं को प्राथमिकता देती हैं।

55. (C) केवल 1, 2 और 3
संविधान एक सजीव दस्तावेज है जिसमें जनता के कल्याण और सहायता की असीम क्षमता अंतर्निहित है। सामाजिक आंदोलनों ने अधिकारों की नई व्याख्याओं के माध्यम से न्यायपालिका का मार्गदर्शन किया है, जिससे कानून और न्यायालयों में विचारों की विविधता बढ़ी है। यह कहना पूर्णतः भ्रामक है कि संविधान केवल अभिजात वर्ग के हितों की रक्षा करता है। वास्तविकता में, इसका उद्देश्य शक्ति का न्यायपूर्ण वितरण और सामाजिक हित सुनिश्चित करना है।

56. (A) क्योंकि इसके पीछे राज्य की शक्ति निहित होती है और बल प्रयोग का माध्यम होता है।
किसी भी समाज में कानून की वैधता केवल उसके नैतिक आधार पर नहीं, बल्कि उसके पीछे खड़ी राज्य की संप्रभु शक्ति पर निर्भर करती है। कानून को इसलिए 'कानून' माना जाता है क्योंकि राज्य के पास उसे लागू करने और उल्लंघनकर्ताओं को दंडित करने की वैधानिक शक्ति होती है। यह बल प्रयोग का अधिकार कानून को समाज के अन्य नैतिक या सामाजिक नियमों से भिन्न और अनिवार्य रूप से बाध्यकारी बनाता है।

57. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारतीय न्यायपालिका ने समय-समय पर मौलिक अधिकारों की परिधि को विस्तारित कर नागरिकों को व्यापक सुरक्षा प्रदान की है। अनुच्छेद 21, जो मूल रूप से केवल जीवन की सुरक्षा की बात करता था, अब मानवीय गरिमा का पर्याय बन चुका है। उच्चतम न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि गरिमापूर्ण जीवन हेतु स्वास्थ्य, स्वच्छ पर्यावरण, शिक्षा और आवास अनिवार्य आवश्यकताएँ हैं। इस व्याख्या ने 'जीवन के अधिकार' को एक पशुमात्र के अस्तित्व से ऊपर उठाया है।

58. (A) 1992
भारत में सत्ता के विकेंद्रीकरण को कानूनी रूप देने के लिए 1992 में 73वां संविधान संशोधन विधेयक पारित किया गया। इस ऐतिहासिक कानून ने ग्राम पंचायतों को संवैधानिक दर्जा प्रदान कर उन्हें शासन की एक महत्वपूर्ण इकाई के रूप में स्थापित किया। इसके माध्यम से भारत में त्रिस्तरीय पंचायती राज व्यवस्था का ढांचा तैयार हुआ, जिसने ग्रामीण विकास और स्वशासन के प्रति राज्य सरकारों की जवाबदेही को कानूनी रूप से अनिवार्य बनाया।

59. (D) पूरे गाँव के सभी वयस्क नागरिक।
ग्राम सभा को स्थानीय लोकतंत्र की सबसे बुनियादी और प्रत्यक्ष इकाई माना जाता है। इसमें किसी गाँव की मतदाता सूची में पंजीकृत सभी वयस्क नागरिक, चाहे वे पुरुष हों या महिला, अनिवार्य रूप से शामिल होते हैं। यह संस्था निर्वाचित ग्राम पंचायत के कार्यों की निगरानी करती है और बजट तथा विकास योजनाओं पर चर्चा करती है। यह ग्रामीणों को शासन प्रक्रिया में सीधे भाग लेने का अवसर प्रदान करती है।

60. (A) केवल 1 and 5
73वें संविधान संशोधन ने भारतीय लोकतांत्रिक इतिहास में पहली बार निर्वाचित स्थानीय निकायों में महिलाओं की अनिवार्य भागीदारी सुनिश्चित की। इसने महिलाओं को न केवल मत देने का, बल्कि चुनाव लड़ने और नेतृत्व करने का भी अधिकार दिया। इसके परिणामस्वरूप लाखों महिलाएँ सक्रिय राजनीति में आईं, जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में उनके राजनीतिक और सामाजिक सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त हुआ। यह संशोधन लैंगिक न्याय की दिशा में एक क्रांतिकारी और सफल कदम सिद्ध हुआ है।

61. (C) केंद्र सरकार के लिए विदेश नीति तैयार करना।
पंचायतों के कार्य मुख्य रूप से स्थानीय स्वशासन, आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय के क्षेत्रों तक सीमित हैं। वे ग्रामीण विकास की योजनाएँ बनाने और सरकारी जिम्मेदारियों को धरातल पर उतारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। हालाँकि, विदेश नीति, रक्षा और मुद्रा जैसे विषय राष्ट्रीय महत्व के हैं और संविधान के अनुसार इन्हें केवल केंद्र सरकार द्वारा प्रबंधित किया जाता है। अतः विदेश नीति बनाना पंचायतों के क्षेत्राधिकार से बाहर का विषय है।

62. (D) कार्यालय के बाहर वित्तीय सहायता और उसके उपयोग का विवरण प्रदर्शित करना।
स्थानीय शासन में पारदर्शिता लाने का सबसे प्रभावी तरीका सार्वजनिक घोषणा और सूचनाओं का साझाकरण है। जब पंचायतें प्राप्त अनुदान और उसके व्यय का विवरण अपने कार्यालय के बाहर प्रदर्शित करती हैं, तो यह सीधे नागरिकों के प्रति उनकी जवाबदेही को बढ़ाता है। यह कदम भ्रष्टाचार

निर्भर थीं, किंतु इस संशोधन ने उन्हें शासन का एक अनिवार्य और सुदृढ़ अंग बना दिया। इस ऐतिहासिक बदलाव ने स्थानीय स्वशासन को कानूनी शक्ति और वित्तीय स्वायत्तता प्रदान कर ग्रामीण लोकतंत्र की नींव को वास्तविक रूप से सुदृढ़ किया।

83. (C) केवल 1, 2 और 3
भारत में विभिन्न हित समूह अपने विशिष्ट वर्गों की माँगों को सरकार तक पहुँचाते हैं। फिक्की उद्योगपतियों का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि ट्रेड यूनियनों और शेतकरी संगठन जैसे निकाय क्रमशः श्रमिकों और किसानों के हितों हेतु कार्य करते हैं। ये संगठन सीधे चुनाव लड़कर सत्ता प्राप्त करने के बजाय सरकार की नीतियों को प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। ये 'दबाव समूह' की श्रेणी में आते हैं और लोकतंत्र में विविध हितों के मध्य संतुलन बनाए रखते हैं।

84. (D) ग्रामीण महिलाओं का सशक्तीकरण
'महिला समाख्या' एक महत्वपूर्ण गैर-सरकारी पहल है जो मुख्य रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के सशक्तिकरण और उनकी शिक्षा हेतु कार्य करती है। यह संगठन महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाने, उनकी नेतृत्व क्षमता विकसित करने और उन्हें सामाजिक-राजनीतिक प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी हेतु प्रोत्साहित करने का कार्य करता है। कलावती जैसी महिलाओं के प्रेरणादायक अनुभवों को समाज के सामने लाने में इस तरह के संगठनों की भूमिका अत्यंत प्रशंसनीय और प्रभावी रही है।

85. (C) अपने परिवार का घर बनवाने के लिए।
'दुखीपुर' की कहानी स्थानीय प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार और जवाबदेही के अभाव को उजागर करती है। कहानी में भ्रष्ट प्रधान विमला ने गाँव के विकास हेतु आए सार्वजनिक धन का दुरुपयोग अपने व्यक्तिगत लाभ के लिए किया। उसने जनकल्याणकारी कार्यों की उपेक्षा करते हुए उस धन से अपने परिवार के लिए निजी आवास का निर्माण कराया। यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि बिना पारदर्शिता और जन-निगरानी के स्थानीय स्वशासन के लाभ वास्तविक पात्रों तक नहीं पहुँच पाते।

86. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारतीय शासन प्रणाली में संविधान को 'मूल मानदंड' (Grundnorm) माना जाता है क्योंकि यह राष्ट्र के सिद्धांतों का प्राथमिक स्रोत है। देश का कोई भी कानून तभी वैध होता है जब वह संविधान द्वारा निर्धारित प्रक्रियाओं और सीमाओं के भीतर हो। विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका की सभी शक्तियाँ संविधान से ही उत्पन्न होती हैं। अतः, संविधान वह सर्वोच्च ढांचा है जिसके आधार पर संपूर्ण कानूनी और प्रशासनिक व्यवस्था का निर्माण और संचालन सुनिश्चित किया जाता है।

87. (D) अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (अनुच्छेद 19(क))
उच्चतम न्यायालय ने लोकतांत्रिक मूल्यों को सुदृढ़ करने हेतु सूचना के अधिकार की एक नई व्याख्या प्रस्तुत की है। न्यायालय के अनुसार, अनुच्छेद 19(क) के तहत मिलने वाली अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का कोई अर्थ नहीं रह जाता यदि नागरिकों को प्रासंगिक सूचनाओं तक पहुँच न हो। अतः सूचना का अधिकार, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के एक आवश्यक आनुषांगिक अंग के रूप में स्वीकार किया गया है। इसने शासन में पारदर्शिता लाने और नागरिकों को सशक्त बनाने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई है।

88. (A) त्रि-स्तरीय
73वें संविधान संशोधन ने भारत में स्थानीय स्वशासन के लिए एक मानक ढांचा तैयार किया है। इसके प्रावधानों के अनुसार, जिन राज्यों की जनसंख्या बीस लाख से अधिक है, उनके लिए अनिवार्य रूप से त्रि-स्तरीय पंचायती राज प्रणाली अपनाना आवश्यक है। इस प्रणाली में ग्राम, ब्लॉक और जिला स्तर पर निर्वाचित निकाय होते हैं। यह संरचना सुनिश्चित करती है कि शासन की पहुँच ग्रामीण समाज के हर स्तर तक हो और विकास योजनाओं का प्रभावी समन्वय हो सके।

89. (A) केवल 1, 2, 3
पंचायतों के उत्तरदायित्वों में ग्रामीण अर्थव्यवस्था और सामाजिक संसाधनों का प्रबंधन प्रमुख है। वे पशुओं के उपयोग हेतु तालाबों का रख-रखाव करती हैं और कृषि उत्पादन बढ़ाने हेतु विभिन्न योजनाओं का संचालन करती हैं। इसके अतिरिक्त, छोटे पैमाने की सिंचाई परियोजनाओं की देखभाल करना भी उनके अनिवार्य कार्यों में शामिल है। ये सभी कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में आजीविका के साधनों को सुरक्षित करने और स्थानीय स्तर पर आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

90. (A) वे पेड़ों से चिपक कर उन्हें कटने से बचाती थीं।
चिपको आंदोलन में महिलाओं की भूमिका साहस और समर्पण का एक अद्वितीय उदाहरण है। जब ठेकेदार पेड़ों को काटने आते थे, तो स्थानीय महिलाएँ पेड़ों के चारों ओर मानवीय घेरा बनाकर उनसे चिपक जाती थीं। उनका यह शांतिपूर्ण किंतु दृढ़ प्रतिरोध व्यावसायिक वनों की कटाई को रोकने में सफल रहा। महिलाओं की इस सक्रियता ने पर्यावरण संरक्षण को एक जन-आंदोलन बना दिया और यह सिद्ध किया कि स्थानीय समुदाय अपने प्राकृतिक संसाधनों के सबसे अच्छे रक्षक हैं।

91. (D) सभी समूहों के पास सरकार पर दबाव बनाने की समान क्षमता होती है।
लोकतांत्रिक राजनीति में राजनीतिक दल सत्ता प्राप्त करने का प्रयास करते हैं, जबकि हित और दबाव समूह नीतियों को प्रभावित करने का कार्य करते हैं। हालाँकि, यह मानना पूर्णतः गलत है कि सभी समूहों के पास दबाव बनाने की समान क्षमता होती है। यथार्थ में, जिन समूहों के पास अधिक धन, ऊँची सामाजिक प्रस्थिति या राजनीतिक पहुँच होती है, वे सरकार पर अधिक प्रभावी दबाव डाल पाते हैं। निर्बल और असंगठित समूहों के हित अक्सर उपेक्षित रह जाते हैं।

92. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
ग्रामीण भारत में विभिन्न संस्थाएँ विशिष्ट दायित्वों का निर्वाह करती हैं। ग्राम पंचायतें आर्थिक विकास और सामाजिक न्याय की योजनाएँ बनाती हैं, जबकि न्याय पंचायतें छोटे स्थानीय

111. (A) खासी जनजाति की पारंपरिक राजनीतिक परिषद्
'दरबार कुर' मेघालय की खासी जनजाति की एक विशिष्ट और प्राचीन स्वशासन संस्था है। यह अनिवार्य रूप से एक वंश-आधारित परिषद होती है जो अपने विशेष वंश या कुनबे के सामाजिक और राजनीतिक मामलों का प्रबंधन करती है। यह संस्था जनजातीय समाज के भीतर न्याय प्रदान करने और परंपराओं को सुरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आधुनिक शासन व्यवस्था के समांतर, यह संस्था खासियों की सांस्कृतिक पहचान और उनकी आंतरिक स्वायत्तता का एक महत्वपूर्ण स्तंभ बनी हुई है।

112. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
उत्तराखंड के पर्वतीय क्षेत्रों में वनों का विनाश स्थानीय महिलाओं के लिए जीवन-मरण का प्रश्न बन गया था। उन्हें चारे और ईंधन हेतु मीलों दूर जाना पड़ता था, जिससे उनकी कठिनाइयाँ बढ़ गई थीं। इस संकट के विरुद्ध संगठित होकर उन्होंने 'वन पंचायतों' का गठन किया। इन पंचायतों ने वनों के प्रबंधन और संरक्षण का उत्तरदायित्व स्वयं संभाला। यह पहल स्पष्ट करती है कि स्थानीय समस्याओं का समाधान करने के लिए जब समुदाय सक्रिय होता है, तो वह पर्यावरण संरक्षण के साथ-साथ आत्मनिर्भरता भी प्राप्त करता है।

113. (B) यह पंचायती राज से दलित महिला में आए आत्म-सम्मान को दर्शाता है।
कलावती का मामला इस बात का सशक्त प्रमाण है कि राजनीतिक आरक्षण ने समाज के सबसे निचले पायदान पर खड़ी महिलाओं के जीवन को कैसे बदला है। पंचायत सदस्य बनने के बाद उसे जो सामाजिक पहचान और सम्मान मिला, उसने उसके आत्मविश्वास को नई ऊँचाइयाँ प्रदान कीं। यह अनुभव दर्ज करना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह सिद्ध करता है कि लोकतांत्रिक संस्थाएँ केवल शासन का माध्यम नहीं हैं, बल्कि वे व्यक्तिगत गौरव और सामाजिक परिवर्तन का भी एक शक्तिशाली उपकरण हैं।

114. (A) राजनीतिक दलों द्वारा जो उनके मुद्दों को उठाते हैं।
लोकतांत्रिक समाज में विभिन्न समूहों के विविध और अक्सर प्रतिस्पर्धी हित होते हैं। इन हितों को संगठित स्वरूप और राजनीतिक मंच प्रदान करने का मुख्य कार्य राजनीतिक दल करते हैं। दल समाज की विभिन्न माँगों को अपनी नीतियों और घोषणापत्रों में शामिल करते हैं ताकि चुनाव जीतने पर उन्हें कानूनी रूप दिया जा सके। यह प्रक्रिया यह सुनिश्चित करती है कि समाज के अलग-अलग वर्गों की आवाज़ शासन के सर्वोच्च स्तर तक पहुँचे और उनकी समस्याओं का समाधान संभव हो।

115. (A) केवल 2 और 5
उच्चतम न्यायालय ने 1993 में सूचना के अधिकार को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हिस्सा माना, जो लोकतांत्रिक पारदर्शिता की दिशा में बड़ा कदम था। साथ ही, अनुच्छेद 21 की व्यापक व्याख्या कर न्यायालय ने बंधुआ मजदूरों के शोषण को रोककर उन्हें राहत प्रदान की। इसके विपरीत, न्यायालय ने जीवन के अधिकार को कभी भी केवल शारीरिक अस्तित्व तक सीमित नहीं रखा है और न ही 'समान कार्य के लिए समान वेतन' सीधे मौलिक अधिकारों में लिखा गया था, बल्कि इसे न्यायिक व्याख्याओं से जोड़ा गया।

116. (D) ये ज़मीनी स्तर पर लोकतंत्र को क्रियाशील बनाने का एक माध्यम हैं।
पंचायती राज संस्थाओं का वास्तविक महत्व सत्ता के विकेंद्रीकरण में निहित है। ये संस्थाएँ केवल केंद्र या राज्य के निर्देशों का पालन करने वाले अभिकर्ता नहीं हैं, बल्कि ये स्थानीय लोगों को स्वयं अपने भाग्य का फैसला करने की शक्ति देती हैं। यह व्यवस्था ज़मीनी स्तर पर जनता की प्रत्यक्ष भागीदारी सुनिश्चित कर लोकतंत्र की जड़ों को गहरा और मजबूत बनाती है। इनके माध्यम से आम नागरिक शासन की प्रक्रिया को करीब से देख और प्रभावित कर सकते हैं।

117. (C) यह निर्णय लेने की प्रक्रिया में निर्बलों की भागीदारी के लिए एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर सकती है।
ग्राम सभा स्थानीय लोकतंत्र की आत्मा है क्योंकि यह प्रत्येक वयस्क नागरिक को अभिव्यक्ति का मंच प्रदान करती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि यह समाज के गरीब, दलित और महिलाओं जैसे निर्बल वर्गों को सीधे पंचायत के कार्यों पर सवाल पूछने और सुझाव देने का अवसर देती है। यह संस्था ग्राम पंचायत की जवाबदेही सुनिश्चित कर भ्रष्टाचार पर अंकुश लगा सकती है। इस प्रकार, ग्राम सभा समावेशी विकास और वास्तविक जन-भागीदारी सुनिश्चित करने का एक सशक्त माध्यम है।

118. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
भारतीय लोकतंत्र के विभिन्न अंगों का अपना विशिष्ट योगदान है। 73वें संशोधन ने पंचायती राज को संवैधानिक स्वरूप दिया, जबकि चिपको आंदोलन ने पर्यावरण संरक्षण के प्रति वैश्विक चेतना जगाई। भूरिया समिति ने आदिवासी क्षेत्रों में स्वशासन की संभावनाओं और उनकी पारंपरिक संस्थाओं का गहराई से अध्ययन किया। इसी प्रकार, इंडियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस श्रमिक वर्ग के अधिकारों की रक्षा हेतु एक संगठित कर्मचारी संगठन के रूप में कार्य करती है। ये सभी घटक मिलकर एक सशक्त नागरिक समाज का निर्माण करते हैं।

119. (D) दल सत्ता प्राप्त करना चाहते हैं, जबकि हित समूह नीतियों को प्रभावित करना।
राजनीतिक दल और हित समूह लोकतांत्रिक प्रक्रिया के दो अलग-अलग किंतु महत्वपूर्ण अंग हैं। राजनीतिक दलों का प्राथमिक और प्रत्यक्ष लक्ष्य चुनावों के माध्यम से सरकारी सत्ता प्राप्त करना और शासन चलाना होता है। इसके विपरीत, हित समूह सीधे चुनाव लड़ने या सरकार बनाने के इच्छुक नहीं होते। उनका मुख्य उद्देश्य सरकार की विशिष्ट नीतियों या निर्णयों को अपने सदस्यों के हितों के पक्ष में मोड़ना होता है। यह कार्यात्मक अंतर ही इन दोनों प्रकार के संगठनों को अलग करता है।

102. (B) मेघालय
मेघालय भारत का एक ऐसा राज्य है जहाँ जनजातीय संस्कृति और उनकी पारंपरिक स्वशासन प्रणालियाँ आज भी अत्यंत जीवंत हैं। गारो, खासी और जयंतिया जनजातियों ने सदियों से अपनी विशिष्ट राजनीतिक संस्थाओं को बनाए रखा है। ये संस्थाएँ न केवल उनके सामाजिक विवादों को सुलझाती हैं, बल्कि स्थानीय संसाधनों के प्रबंधन में भी मुख्य भूमिका निभाती हैं। उनकी इस अद्वितीय विरासत के कारण ही इन क्षेत्रों को आधुनिक पंचायती राज व्यवस्था के कुछ अनिवार्य नियमों से संवैधानिक छूट प्रदान की गई है।

103. (D) टिपलुट नोंगबरी
समाजशास्त्री टिपलुट नोंगबरी ने परंपराओं की परिवर्तनशील और जटिल प्रकृति पर गहराई से विचार किया है। उन्होंने विशेष रूप से आदिवासी समाजों के संदर्भ में यह स्पष्ट किया कि परंपराएँ स्थिर नहीं होतीं, बल्कि समय के साथ बदलती और रूपांतरित होती रहती हैं। नोंगबरी ने भूरिया समिति की रिपोर्ट पर टिप्पणी करते हुए यह भी चेताया कि पारंपरिक संस्थाओं को केवल अतीत के गौरव के रूप में नहीं देखना चाहिए, बल्कि उनकी वर्तमान कार्यप्रणाली और विसंगतियों का भी निष्पक्ष मूल्यांकन करना चाहिए।

104. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
सामाजिक और राजनीतिक विश्लेषण के विभिन्न आयाम समाज को समझने में मदद करते हैं। मैक्स वेबर के अनुसार, वर्ग का संबंध आर्थिक व्यवस्था से है, जबकि प्रस्थिति समूह सामाजिक आदर के क्रम से जुड़े होते हैं। राजनीतिक दल मुख्य रूप से समाज की शक्ति संरचना को प्रभावित करने हेतु सक्रिय रहते हैं। वहीं, महात्मा गाँधी का 'ग्राम स्वराज्य' का आदर्श विकेंद्रीकृत ग्रामीण शासन और आत्मनिर्भरता की एक नैतिक और राजनीतिक दृष्टि प्रस्तुत करता है जो आधुनिक पंचायतों का प्रेरणा स्रोत है।

105. (C) गाँव के भौतिक संसाधनों (जैसे चिकित्सालय, सड़कें) को बढ़ाने में।
'सुखीपुर' की कहानी एक आदर्श स्थानीय नेतृत्व की भूमिका को रेखांकित करती है। कहानी की प्रधान नजमा ने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर पंचायत को प्राप्त धन का सदुपयोग गाँव के सामूहिक विकास के लिए किया। उसने इस पैसे से चिकित्सालयों, सड़कों और अन्य सार्वजनिक सुविधाओं का निर्माण कराया, जिससे पूरे गाँव के जीवन स्तर में सुधार हुआ। यह उदाहरण सिद्ध करता है कि एक ईमानदार और जागरूक जनप्रतिनिधि किस प्रकार लोकतांत्रिक संसाधनों के माध्यम से वास्तविक सामाजिक परिवर्तन ला सकता है।

106. (A) वह मान्यता मिलने तक आंदोलन में बना रहता है।
लोकतांत्रिक राजनीति में हर समूह को सत्ता प्राप्ति के समान अवसर नहीं मिल पाते। जब कोई राजनीतिक संगठन यह अनुभव करता है कि मानक चुनावी प्रक्रियाओं या मौजूदा व्यवस्था में उसे उचित स्थान नहीं मिल रहा है, तो वह प्रायः आंदोलनों का मार्ग अपनाता है। वह जनमत तैयार करने और अपनी माँगें मनवाने के लिए तब तक संघर्षरत रहता है जब तक कि उसे मान्यता या सफलता प्राप्त न हो जाए। यह प्रक्रिया लोकतंत्र में असहमति और वैचारिक विविधता को स्थान देती है।

107. (D) 'समान कार्य के लिए समान वेतन' को अनुच्छेद 14 के तहत मानना।
भारतीय संविधान में नीति निदेशक सिद्धांत और मौलिक अधिकार एक-दूसरे के पूरक हैं। यद्यपि नीति निदेशक सिद्धांत अदालतों द्वारा सीधे लागू नहीं किए जा सकते, किंतु न्यायपालिका ने उनकी आत्मा को मौलिक अधिकारों के साथ जोड़कर उन्हें प्रभावी बनाया है। 'समान कार्य के लिए समान वेतन' इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। उच्चतम न्यायालय ने इसे अनुच्छेद 14 (समानता का अधिकार) का विस्तार मानते हुए लागू किया, जिससे आर्थिक न्याय को मौलिक सुरक्षा प्राप्त हुई। यह न्यायिक दृष्टिकोण अधिकारों के दायरे को व्यापक बनाता है।

108. (A) 1, 2, 3, 4
भारत में स्थानीय स्वशासन का विकास एक लंबी ऐतिहासिक और वैचारिक यात्रा रही है। इसकी शुरुआत संविधान सभा में डॉ. अंबेडकर द्वारा व्यक्त की गई शंकाओं और बहसों से हुई। इसके दशकों बाद 1992 में 73वां संशोधन पारित हुआ। इसके क्रियान्वयन और जनजातीय क्षेत्रों की समस्याओं के अध्ययन हेतु भूरिया समिति का गठन हुआ और उसकी रिपोर्ट आई। अंततः, टिपलुट नोंगबरी जैसे समाजशास्त्रियों ने इस रिपोर्ट और आदिवासी संस्थाओं के अंतर्संबंधों पर अपने शोधपरक विचार और आलोचनाएँ प्रस्तुत कीं।

109. (C) निर्णय लेने की शक्ति में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना।
पंचायती राज संस्थाओं में महिलाओं हेतु आरक्षण का मुख्य उद्देश्य केवल प्रतीकात्मक भागीदारी नहीं, बल्कि वास्तविक सत्ता का हस्तांतरण है। इसका लक्ष्य ग्रामीण महिलाओं को निर्णय लेने वाली प्रक्रियाओं के केंद्र में लाना है, ताकि वे अपने समुदाय के विकास की प्राथमिकताओं को स्वयं निर्धारित कर सकें। यह प्रावधान उन्हें घरेलू सीमाओं से निकालकर सार्वजनिक नेतृत्व हेतु प्रेरित करता है। इस राजनीतिक सशक्तिकरण ने पितृसत्तात्मक सामाजिक संरचना में बदलाव लाने और लैंगिक समानता की दिशा में एक सुदृढ़ आधार तैयार किया है।

110. (3) केवल 3
पंचायती राज व्यवस्था भारत की प्राचीन सामाजिक और राजनीतिक विरासत का अभिन्न अंग रही है, अतः इसे विदेशी आयात मानना गलत है। संविधान निर्माण के दौरान इस पर गहन चर्चाएँ हुई थीं। 73वें संशोधन ने स्थानीय निकायों के चुनाव को हर पाँच वर्ष में अनिवार्य बनाकर इसे कानूनी दृढ़ता प्रदान की। पारंपरिक पंचायतों में अक्सर लोकतांत्रिक मूल्यों का अभाव और भेदभाव देखा गया है, इसलिए उन्हें हमेशा लोकतांत्रिक कहना सही नहीं है। अतः केवल चुनावों की अनिवार्यता वाला कथन ही सत्य है।

148. (A) केवल 1, 2 और 3
पंचायतें ग्रामीण विकास के केंद्र में हैं और वे 'एकीकृत ग्रामीण विकास कार्यक्रम' जैसी महत्वपूर्ण राष्ट्रीय योजनाओं का धरातल पर संचालन करती हैं। उनकी वित्तीय मजबूती हेतु भू-राजस्व का एक हिस्सा उन्हें प्राप्त होता है और उनके व्यय में पारदर्शिता सुनिश्चित करने हेतु कड़े संवैधानिक प्रावधान किए गए हैं। पंचायतों को न केवल केंद्र और राज्य से, बल्कि ज़िला पंचायतों से भी वित्तीय सहायता और अनुदान प्राप्त होते हैं, जो उनके विकासात्मक कार्यों के लिए आधारभूत वित्तीय संसाधन प्रदान करते हैं।

149. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारतीय ग्रामीण समाज में विद्यमान जाति और वर्ग की गहरी असमानताएँ वास्तविक लोकतंत्रीकरण के मार्ग में एक प्रमुख अवरोध हैं। गाँवों में अक्सर संसाधनों पर काबिज़ शक्तिशाली गुट और उच्च जातियाँ लोकतांत्रिक संस्थाओं को अपने नियंत्रण में ले लेती हैं, जिससे सत्ता का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक नहीं पहुँच पाता। यह प्रभावशाली गुटों का प्रभुत्व बहुसंख्यक वंचितों की आवाज़ को दबा देता है। अतः स्थानीय निकायों को इन विसंगतियों से मुक्त कर समावेशी बनाना एक निरंतर चलने वाली चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया है।

150. (B) संविधान सामाजिक न्याय का साधन है, किंतु क्रियान्वयन चुनौतियों से भरा है।
भारतीय संविधान सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने हेतु एक अत्यंत प्रगतिशील और शक्तिशाली दस्तावेज है। इसने सदियों पुरानी असमानताओं को मिटाने के लिए आरक्षण और मौलिक अधिकारों जैसे सशक्त कानूनी प्रावधान किए हैं। हालाँकि, इन संवैधानिक आदर्शों को ग्रामीण और ज़मीनी स्तर पर पूर्णतः लागू करना आज भी एक बड़ी चुनौती है, क्योंकि सामाजिक रूढ़ियाँ और शक्ति संरचनाएँ अक्सर परिवर्तन के मार्ग में बाधा डालती हैं। अतः संविधान एक दिशा तो देता है, किंतु उसकी सफलता प्रभावी और ईमानदार क्रियान्वयन पर निर्भर है।

151. (B) सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन लाना और एक समतावादी समाज बनाना
भारतीय संविधान का प्राथमिक उद्देश्य केवल शासन प्रणाली स्थापित करना नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक क्रांति का दस्तावेज़ है। इसका मुख्य लक्ष्य सदियों से चली आ रही सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को समाप्त करना है। यह समतावादी समाज के निर्माण के लिए न्याय, स्वतंत्रता और समानता जैसे आदर्शों को बढ़ावा देता है, जो राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

152. (A) संविधान के प्रावधानों के माध्यम से सामाजिक संरचनाओं और संबंधों में सचेत रूप से परिवर्तन लाना
संविधान द्वारा सामाजिक अभियांत्रिकी का तात्पर्य समाज की पारंपरिक और पदानुक्रमित संरचनाओं में संवैधानिक प्रावधानों के माध्यम से सोच-समझकर बदलाव लाना है। यह प्रक्रिया केवल कानूनी सुधारों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य पिछड़े वर्गों का उत्थान करना और एक न्यायपूर्ण समाज सुनिश्चित करना है। इस दृष्टिकोण के तहत कानून को सामाजिक परिवर्तन और समानता लाने के एक प्रभावी उपकरण के रूप में देखा जाता है।

153. (C) सामाजिक लोकतंत्र की नींव
डॉ. बी.आर. अंबेडकर का मानना था कि राजनीतिक लोकतंत्र की सफलता के लिए सामाजिक लोकतंत्र एक अनिवार्य आधार है। सामाजिक लोकतंत्र का अर्थ है जीवन के सिद्धांतों के रूप में स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व को स्वीकार करना। उनके अनुसार, यदि समाज में गहरी असमानताएँ बनी रहती हैं, तो केवल चुनावों और संसद के माध्यम से प्राप्त राजनीतिक लोकतंत्र लंबे समय तक प्रभावी या सुरक्षित नहीं रह पाएगा।

154. (D) मौलिक अधिकार और राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत
भारतीय संविधान में मौलिक अधिकार और राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत सामाजिक-आर्थिक परिवर्तन के दो प्रमुख आधार स्तंभ माने जाते हैं। जहाँ मौलिक अधिकार नागरिकों को राज्य की मनमानी से सुरक्षा प्रदान करते हैं, वहीं नीति निदेशक सिद्धांत राज्य को एक कल्याणकारी समाज बनाने के लिए सकारात्मक निर्देश देते हैं। ये दोनों मिलकर एक न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था और आर्थिक समानता सुनिश्चित करने का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

155. (C) संविधान मुख्य रूप से एक अपरिवर्तनीय और कठोर कानूनी संहिता है।
अनुच्छेद स्पष्ट करता है कि संविधान एक जीवंत दस्तावेज़ है जो सामाजिक क्रांति और राष्ट्र-निर्माण के लिए प्रतिबद्ध है। इसे केवल एक कठोर और अपरिवर्तनीय कानूनी संहिता मानना गलत है, क्योंकि यह समय के साथ समाज की बदलती जरूरतों के अनुसार विकसित होता है। यह पारंपरिक संरचनाओं को चुनौती देता है और न्यायपूर्ण समाज बनाने के लिए निरंतर सुधारों और सकारात्मक हस्तक्षेपों का समर्थन करता है।

156. (B) महिलाओं के लिए एक-तिहाई सीटों और पदों का आरक्षण
73वें संविधान संशोधन अधिनियम का सबसे क्रांतिकारी पहलू महिलाओं के लिए पंचायती राज संस्थाओं के सभी स्तरों पर कम से कम एक-तिहाई सीटों का आरक्षण है। इस प्रावधान ने ग्रामीण भारत की महिलाओं को सार्वजनिक निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल होने का अभूतपूर्व अवसर दिया। इसने पितृसत्तात्मक बाधाओं को तोड़ते हुए लाखों महिलाओं को नेतृत्व की मुख्यधारा में लाकर उनके राजनीतिक सशक्तीकरण का मार्ग प्रशस्त किया है।

157. (D) आरक्षण नीति के कार्यान्वयन में प्रारंभिक चुनौतियाँ और पितृसत्तात्मक प्रतिरोध
'सरपंच पति' की घटना ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के लिए आरक्षण नीति के क्रियान्वयन के दौरान आने वाली शुरुआती चुनौतियों और गहरे पितृसत्तात्मक प्रतिरोध को दर्शाती है। कई बार महिला प्रतिनिधियों के स्थान पर उनके पुरुष रिश्तेदार वास्तविक शक्ति का प्रयोग करते हैं। यह स्थिति स्पष्ट करती है कि केवल कानून बना देना पर्याप्त नहीं है, बल्कि जमीनी स्तर

120. (A) दल के नेता और अनुयायियों के लिए आराम, शक्ति और सम्मान प्राप्त करना।
मैक्स वेबर के विश्लेषण के अनुसार, राजनीतिक दल केवल आदर्शवादी लक्ष्यों के लिए कार्य नहीं करते। उनके भीतर व्यक्तिगत आकांक्षाओं का भी एक बड़ा स्थान होता है। दलों का एक महत्वपूर्ण 'निजी' उद्देश्य अपने नेताओं और सक्रिय कार्यकर्ताओं के लिए समाज में शक्ति, उच्च प्रस्थिति और सम्मान अर्जित करना होता है। सत्ता प्राप्ति के बाद मिलने वाली सुख-सुविधाएँ और प्रभाव भी दलों की गतिविधियों के पीछे एक बड़ी प्रेरणा शक्ति होती है, जो उन्हें निरंतर सक्रिय और प्रतिस्पर्धी बनाए रखती है।

121. (C) स्वयं भारतीय संविधान।
भारत में 'संवैधानिक सर्वोच्चता' का सिद्धांत लागू है, जिसका अर्थ है कि संविधान ही देश का सर्वोच्च कानून है। संसद द्वारा पारित अधिनियम, राष्ट्रपति के आदेश या न्यायालयों के निर्णय, सभी की वैधता संविधान की कसौटी पर परखी जाती है। कोई भी शक्ति या संस्था संविधान के प्रावधानों का उल्लंघन नहीं कर सकती। यह दस्तावेज न केवल शासन की शक्तियों को सीमित करता है, बल्कि नागरिकों के अधिकारों की रक्षा कर कानून के शासन की स्थापना सुनिश्चित करता है।

122. (A) संसद में महिलाओं के लिए 33% आरक्षण।
73वां संविधान संशोधन केवल स्थानीय स्वशासन, अर्थात ग्रामीण पंचायती राज संस्थाओं पर लागू होता है। इसने पंचायतों में महिलाओं हेतु 33 प्रतिशत आरक्षण, अनुसूचित जाति-जनजाति हेतु आरक्षण और अनिवार्य नियमित चुनाव जैसे दूरगामी परिणाम दिए। हालाँकि, इस संशोधन का प्रत्यक्ष संबंध संसद या राज्य विधानसभाओं में महिलाओं के आरक्षण से नहीं था। संसद में महिलाओं के आरक्षण का विषय एक अलग विधायी प्रक्रिया का हिस्सा है, जिसे इस संशोधन के साथ भ्रमित नहीं किया जाना चाहिए।

123. (A) केवल 1 और 3
भारतीय संविधान का निर्माण सामाजिक न्याय के महान आदर्शों और मानदंडों के आधार पर हुआ है, जिसका उद्देश्य समानता और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना है। इसी क्रम में, 1992 में 73वां संशोधन पारित कर ग्राम पंचायतों को संवैधानिक विधेयक का दर्जा दिया गया। इसके विपरीत, के. संथानम पंचायतों के समर्थक थे और उन्होंने उनके लिए प्रस्ताव रखा था। साथ ही, उच्चतम न्यायालय को मौलिक अधिकारों की व्याख्या कर उनका दायरा बढ़ाने का पूर्ण संवैधानिक अधिकार प्राप्त है।

124. (B) कृषि मज़दूर और किसान
'शेतकरी संगठन' भारत का एक अत्यंत प्रभावशाली और सक्रिय किसान संगठन है, जो मुख्य रूप से महाराष्ट्र और उसके आसपास के क्षेत्रों में कार्य करता है। यह संगठन कृषि उपज के लाभकारी मूल्य दिलाने, किसानों की कर्ज माफी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सुधार की माँगों को लेकर संघर्षरत रहता है। एक दबाव समूह के रूप में, यह सरकार की कृषि नीतियों को प्रभावित करने का प्रयास करता है ताकि किसानों और कृषि मजदूरों के हितों की रक्षा सुनिश्चित की जा सके।

125. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत के कई आदिवासी क्षेत्रों में सदियों पुरानी और सुविकसित पारंपरिक स्वशासन संस्थाएँ आज भी प्रभावी ढंग से कार्य कर रही हैं। इन क्षेत्रों की विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और उनकी स्वायत्तता को संरक्षित करने के उद्देश्य से ही 73वें संविधान संशोधन के अनिवार्य प्रावधानों को वहाँ लागू नहीं किया गया। नीति निर्माताओं का यह मानना था कि आधुनिक व्यवस्था थोपने से उनकी प्राचीन लोकतांत्रिक परंपराओं को क्षति पहुँच सकती है, इसलिए उनके विशिष्ट स्वरूप को बनाए रखना ही उचित समझा गया।

126. (D) संपत्ति कर, यात्री कर, और चुंगी।
पंचायतों को अपनी कार्यप्रणाली और विकास परियोजनाओं हेतु आत्मनिर्भर बनाने के लिए उन्हें सीमित कर लगाने की शक्तियाँ प्रदान की गई हैं। वे स्थानीय स्तर पर संपत्ति, व्यावसायिक गतिविधियों, पशुओं और वाहनों पर कर लगा सकते हैं। इसके अलावा, मेलों या बाज़ारों में आने वाले यात्रियों पर कर और चुंगी वसूलना भी उनके अधिकार क्षेत्र में आता है। ये संसाधन पंचायतों को केंद्र या राज्य के अनुदानों के अतिरिक्त वित्तीय मजबूती प्रदान करते हैं ताकि वे स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

127. (A) क्योंकि इसके संगीतमय और सचित्र स्वरूप से संदेश समझना सुगम था।
ग्रामीण और निरक्षर महिलाओं को जटिल संवैधानिक अधिकारों की शिक्षा देने के लिए 'फड़' जैसे लोक माध्यमों का चुनाव अत्यंत सटीक था। फड़ कला में चित्रों, संगीत और कहानी कहने के पारम्परिक ढंग का मिश्रण होता है, जो लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ता है। इस माध्यम ने बिना किसी भारी-भरकम शब्दजाल के, मनोरंजन के साथ-साथ पंचायती राज के लाभों को जन-जन तक पहुँचाया। इसने संचार की बाधाओं को तोड़कर ज्ञान को अधिक सुलभ और प्रभावी बनाया।

128. (B) वे लोकतांत्रिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं जो विभिन्न हितों को आवाज देते हैं।
दबाव समूह भारतीय लोकतंत्र में एक अनिवार्य सुरक्षा वाल्व और संचार माध्यम के रूप में कार्य करते हैं। वे समाज के विभिन्न वर्गों, जैसे श्रमिकों, किसानों, शिक्षकों और व्यापारियों के विशिष्ट हितों को संगठित कर सरकार के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। यह सुनिश्चित करता है कि केवल बहुमत की ही नहीं, बल्कि विविध अल्पमतों और व्यावसायिक समूहों की चिंताएँ भी नीति निर्माण में शामिल हों। इस प्रकार, वे लोकतंत्र को अधिक समावेशी, उत्तरदायी और सक्रिय बनाए रखने में सहायक होते हैं।

129. (A) केवल 1, 2, 3
ग्राम सभा ग्रामीण लोकतंत्र की आधारशिला है जिसमें गाँव के सभी पंजीकृत वयस्क नागरिक सदस्य होते हैं। यह संस्था प्रत्यक्ष लोकतंत्र का उदाहरण है क्योंकि यह स्वयं स्थानीय सरकार (पंचायत) का चुनाव करती है और उसके कार्यों की निगरानी करती है। इसकी खुली बैठकों में समाज के निर्बल और

विवादों का निपटारा करती हैं। मेघालय में 'दरबार कुर' जैसी पारंपरिक परिषदें जनजातीय स्वशासन की रक्षा करती हैं। वहीं, 'चिपको आंदोलन' पर्यावरणीय चेतना का प्रतीक है जिसने पेड़ों के संरक्षण हेतु संघर्ष किया। ये सभी घटक मिलकर भारतीय लोकतंत्र की विविध और सक्रिय प्रकृति को प्रदर्शित करते हैं।

93. (A) 1, 2, 3, 4
आधुनिक समाजशास्त्र और भारतीय राजनीति का इतिहास एक क्रमिक विकास को दर्शाता है। सबसे पहले मैक्स वेबर के महत्वपूर्ण समाजशास्त्रीय लेख प्रकाशित हुए, जिन्होंने शक्ति और दलों का विश्लेषण किया। इसके बाद 1950 में भारतीय संविधान लागू हुआ। दशकों बाद, 1992 में 73वां संशोधन पारित कर पंचायतों को संवैधानिक अधिकार दिए गए। अंततः, 1993 में उच्चतम न्यायालय ने सूचना के अधिकार को मौलिक अधिकार के रूप में मान्यता देकर लोकतांत्रिक पारदर्शिता को एक नया आयाम प्रदान किया।

94. (D) दल का शक्ति-उन्मुख स्वरूप
राजनीतिक दलों की यह परिभाषा उनके मुख्य उद्देश्य को स्पष्ट करती है, जो अनिवार्य रूप से सत्ता और शक्ति प्राप्त करना है। मैक्स वेबर जैसे विचारकों ने भी स्वीकार किया है कि दल केवल सेवा के लिए नहीं, बल्कि शक्ति संरचना में अपना स्थान बनाने हेतु गठित होते हैं। वे निर्वाचन के माध्यम से शासन पर नियंत्रण पाना चाहते हैं ताकि वे अपनी विशिष्ट नीतियों और कार्यक्रमों को लागू कर सकें। यह सत्ता-उन्मुखीकरण ही दलों को अन्य सामाजिक संगठनों से अलग बनाता है।

95. (A) प्रताड़ित कैदियों और बंधुआ मज़दूरों को।
भारतीय न्यायपालिका ने अनुच्छेद 21 के तहत 'जीवन के अधिकार' की अत्यंत मानवीय और संवेदनशील व्याख्या की है। इस संवैधानिक सुरक्षा का लाभ विशेष रूप से उन समूहों को पहुँचाया गया है जो अत्यंत शोषण का शिकार रहे हैं। प्रताड़ित कैदियों की सुरक्षा और बंधुआ मजदूरी की बेड़ियों में जकड़े लोगों के पुनर्वास हेतु न्यायालय ने कड़े निर्देश जारी किए हैं। यह न्यायिक सक्रियता सिद्ध करती है कि संविधान समाज के सबसे कमजोर और बेआवाज़ वर्गों का सबसे बड़ा कवच है।

96. (B) रुढ़िवादी और अलोकतांत्रिक
पारंपरिक जातीय पंचायतों का चरित्र अक्सर ऐतिहासिक सामाजिक भेदभावों से प्रभावित रहा है। ये संस्थाएँ आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों, जैसे समानता और व्यक्तिगत स्वतंत्रता, के प्रति प्रायः उदासीन या विरोधी रही हैं। इनका दृष्टिकोण अत्यंत रुढ़िवादी होता है, जहाँ अक्सर महिलाओं और निम्न जातियों के अधिकारों का दमन किया जाता है। इसी कारण से, डॉ. अंबेडकर और अन्य समाज सुधारक इन पारंपरिक व्यवस्थाओं को शक्ति देने के पक्ष में नहीं थे, क्योंकि वे शोषण को बढ़ावा दे सकती थीं।

97. (B) केवल 4
संविधान कोई मृत या स्थिर दस्तावेज नहीं है, बल्कि यह एक गतिशील शक्ति है जो निरंतर विकसित होती रहती है। इसमें यह अद्भुत क्षमता है कि यह राजनीतिक शक्ति के प्रवाह को निजी स्वार्थों से हटाकर सामाजिक हित की ओर मोड़ सकता है। कानून की व्याख्या में सामाजिक आंदोलनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जो नए अधिकारों की पहचान कराते हैं। अतः, संविधान का वास्तविक महत्व उसकी परिवर्तनकारी और लोक कल्याणकारी प्रकृति में ही निहित है, जो न्याय सुनिश्चित करती है।

98. (A) स्थानीय कुलीन और उच्च जातियों का प्रभुत्व
डॉ. बी.आर. अंबेडकर का दृढ़ विश्वास था कि ग्रामीण भारत में वास्तविक स्वशासन तब तक संभव नहीं है जब तक जातिगत ढांचा मौजूद है। उनके अनुसार, गाँवों में स्थानीय कुलीन वर्ग और उच्च जातियों का सामाजिक और आर्थिक प्रभुत्व इतना गहरा है कि वे किसी भी लोकतांत्रिक प्रक्रिया को अपने पक्ष में मोड़ लेंगे। उन्हें डर था कि ऐसी स्थिति में वंचित वर्गों का शोषण कम होने के बजाय और अधिक संगठित और वैधानिक हो जाएगा। यह चिंता उनकी दूरदर्शिता को दर्शाती है।

99. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
73वें और 74वें संशोधनों से पूर्व, भारत में स्थानीय निकाय राज्य सरकारों की इच्छा पर निर्भर थे, जिससे उनका अस्तित्व और चुनाव अनिश्चित रहते थे। इन संशोधनों ने पंचायतों और नगरपालिकाओं को संवैधानिक प्रस्थिति प्रदान की, जिससे वे शासन की एक अनिवार्य स्वतंत्र इकाई बन गईं। अब राज्य सरकारें मनमाने ढंग से इन संस्थाओं को भंग नहीं कर सकतीं या उनके चुनावों को अनिश्चितकाल के लिए नहीं टाल सकतीं। इसने स्थानीय स्तर पर लोकतांत्रिक स्थिरता और स्वायत्तता सुनिश्चित की है।

100. (D) पूरे ज़िले के विकास का प्रारूप निर्मित करना।
73वें संविधान संशोधन के अंतर्गत गठित 'ज़िला योजना समिति' एक अत्यंत महत्वपूर्ण निकाय है। इसका मुख्य उत्तरदायित्व पूरे ज़िले के संतुलित और समन्वित विकास हेतु एक व्यापक योजना तैयार करना है। यह समिति ग्राम पंचायतों और नगरपालिकाओं द्वारा बनाई गई योजनाओं को एकीकृत करती है ताकि संसाधनों का कुशलतापूर्वक उपयोग हो सके। यह ज़िला स्तर पर ग्रामीण और शहरी विकास के बीच एक सेतु का कार्य करती है, जिससे शासन की विकास योजनाएँ अधिक सुसंगत बनती हैं।

101. (A) केवल 1, 3, 4
पंचायतों को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने हेतु उन्हें स्थानीय स्तर पर विभिन्न कर लगाने और एकत्र करने का अधिकार दिया गया है। उनकी आय के प्रमुख स्रोतों में संपत्ति, व्यवसाय और वाहनों पर लगाए गए कर शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, उन्हें ज़िला पंचायतों और राज्य सरकारों से भी महत्वपूर्ण वित्तीय अनुदान प्राप्त होता है। यह कहना गलत है कि उनके पास वित्तीय स्वायत्तता नहीं है, क्योंकि वे इन संसाधनों का उपयोग स्थानीय विकास और जन-सुविधाओं के सुधार हेतु स्वतंत्र रूप से कर सकते हैं।

के साथ अन्याय न हो। कानून को केवल तभी 'न्यायपूर्ण' माना जाता है जब वह भेदभाव रहित हो और सत्य तथा समानता के उच्च नैतिक सिद्धांतों पर आधारित हो।

139. (D) 'रामू की माँ' या 'हीरालाल की पत्नी' ।
राजनीति में आने से पूर्व, कलावती की स्थिति भारतीय ग्रामीण समाज की उन करोड़ों महिलाओं के समान थी जिनकी अपनी कोई स्वतंत्र पहचान नहीं थी। उन्हें केवल उनके परिवार के पुरुष सदस्यों, जैसे पति या पुत्र, के नाम से ही पहचाना जाता था। पंचायत सदस्य बनने की प्रक्रिया ने उन्हें इस पितृसत्तात्मक पहचान के घेरे से बाहर निकाला और उन्हें एक नागरिक तथा जन-प्रतिनिधि के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाने का अवसर दिया। यह परिवर्तन महिला सशक्तिकरण के गहरे सामाजिक निहितार्थों को दर्शाता है।

140. (B) आदिवासी संस्थाओं की जटिलताओं और स्तरीकरण को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।
टिपलुट नोंगबरी के विचारों का सार यह है कि हमें आदिवासी समाजों के प्रति सरलीकृत या काल्पनिक दृष्टिकोण नहीं अपनाना चाहिए। उनका मानना था कि इन समाजों की पारंपरिक संस्थाएँ अत्यंत जटिल हैं और उनके भीतर भी सत्ता का अपना पदानुक्रम और स्तरीकरण मौजूद है। हमें इन व्यवस्थाओं को बिना सोचे-समझे अपनाने के बजाय उनके दोषों और शक्तियों का यथार्थवादी विश्लेषण करना चाहिए। यह संतुलित दृष्टिकोण जनजातीय समुदायों के लिए अधिक प्रभावी लोकतांत्रिक भविष्य सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक है।

141. (A) केवल 1, 3, 4
उत्तराखंड का चिपको आंदोलन पर्यावरणीय सक्रियता का एक महान उदाहरण है, जिसका मुख्य उद्देश्य व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए की जाने वाली अंधाधुंध पेड़ों की कटाई को रोकना था। इस आंदोलन की सबसे बड़ी शक्ति स्थानीय महिलाएँ थीं, जिन्होंने पेड़ों की सुरक्षा हेतु दृढ़ संकल्प दिखाया। इसी जागरूकता के परिणामस्वरूप क्षेत्र में 'वन पंचायतों' जैसी महिला संचालित संस्थाओं का जन्म हुआ। यह आंदोलन शहरीकरण के पक्ष में नहीं, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों के सामुदायिक और न्यायपूर्ण प्रबंधन के पक्ष में था।

142. (D) मातृत्व और बाल कल्याण केंद्रों की स्थापना।
पंचायतों के सामाजिक कल्याण कार्यों का उद्देश्य ग्रामीण समाज के कमजोर और संवेदनशील वर्गों की देखभाल करना है। इसमें स्वास्थ्य सुविधाओं को गाँव के करीब लाना, विशेष रूप से मातृत्व और बाल कल्याण केंद्रों की स्थापना और संचालन शामिल है। ये केंद्र ग्रामीण महिलाओं और बच्चों को अनिवार्य स्वास्थ्य सेवाएँ और पोषण संबंधी सहायता प्रदान करते हैं। ऐसे कार्यों के माध्यम से पंचायतें न केवल जीवन स्तर में सुधार करती हैं, बल्कि सामाजिक न्याय के लक्ष्यों को भी धरातल पर साकार करती हैं।

143. (A) राज्य को अनुदान जारी नहीं किया जाएगा।
पंचायतों के समय पर चुनाव सुनिश्चित करने के लिए वर्तमान प्रशासनिक और वित्तीय दिशा-निर्देश अत्यंत कड़े हैं। यदि कोई राज्य सरकार बिना किसी वैध संवैधानिक कारण के पंचायतों के चुनाव टालती है या समय पर आयोजित नहीं करती, तो केंद्र सरकार और वित्त आयोग द्वारा उस राज्य को दिए जाने वाले ग्रामीण विकास अनुदानों को रोका जा सकता है। यह दंडात्मक प्रावधान राज्य सरकारों को स्थानीय लोकतंत्र के प्रति उनकी संवैधानिक जिम्मेदारियों को निभाने के लिए वित्तीय रूप से बाध्य करता है।

144. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारत में विभिन्न हित समूह अपने-अपने क्षेत्रों में संगठित होकर सक्रिय भूमिका निभाते हैं। फिक्की उद्योगपतियों के आर्थिक हितों का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि इंडियन ट्रेड यूनियन कांग्रेस कर्मचारियों की आवाज़ उठाती है। इसी प्रकार, शेतकरी संगठन किसानों के अधिकारों हेतु संघर्ष करता है। वहीं, जनजातीय क्षेत्रों में 'दरबार कुर' जैसी पारंपरिक परिषदें स्वशासन का प्राचीन माध्यम हैं। ये सभी संस्थाएँ लोकतंत्र में विविध सामाजिक और व्यावसायिक आवाज़ों को मंच प्रदान कर शासन को संतुलित बनाती हैं।

145. (B) मैक्स वेबर
प्रसिद्ध जर्मन समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने शक्ति और समाज के अंतर्संबंधों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया है। वेबर का मानना था कि राजनीतिक दल अनिवार्य रूप से समाज की 'शक्ति संरचना' के भीतर कार्य करते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य शासन के साधनों पर नियंत्रण प्राप्त करना और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु सत्ता का उपयोग करना है। वेबर का यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि दल केवल वैचारिक समूह नहीं हैं, बल्कि वे समाज में शक्ति वितरण को प्रभावित करने वाले सक्रिय संगठित निकाय हैं।

146. (A) उच्चतम न्यायालय
भारतीय लोकतांत्रिक व्यवस्था में उच्चतम न्यायालय को संविधान के संरक्षक और अंतिम व्याख्याकर्ता की महत्वपूर्ण भूमिका सौंपी गई है। यदि संसद द्वारा बनाया गया कोई कानून या सरकार का कोई आदेश संविधान के प्रावधानों का उल्लंघन करता है, तो न्यायालय उसे असंवैधानिक घोषित कर रद्द कर सकता है। संविधान के शब्दों और उसकी आत्मा का वास्तविक अर्थ क्या है, इस पर न्यायालय का निर्णय ही सर्वोपरि और अंतिम माना जाता है। यह न्यायिक सर्वोच्चता संविधान की पवित्रता बनाए रखती है।

147. (C) उन्हें निर्णय लेने की शक्ति मिली।
73वें संविधान संशोधन के माध्यम से स्थानीय निकायों में महिलाओं का प्रवेश केवल प्रतीकात्मक उपस्थिति नहीं था। अनिवार्य आरक्षण ने महिलाओं को उन पदों पर पहुँचाया जहाँ से वे गाँव के बजट, विकास योजनाओं और संसाधनों के आवंटन पर सीधे निर्णय ले सकती थीं। इसने उन्हें समाज में नेतृत्व की भूमिका निभाने और ग्रामीण विकास की प्राथमिकताओं को महिलाओं के दृष्टिकोण से प्रभावित करने का वास्तविक अवसर दिया। यह शक्ति का हस्तांतरण ही उनके राजनीतिक सशक्तिकरण का सबसे ठोस परिणाम सिद्ध हुआ है।

उपेक्षित वर्गों को भी अपनी समस्याएँ उठाने का अवसर मिलता है। यह शक्ति का पिरामिड नहीं, बल्कि एक विकेंद्रीकृत मंच है जहाँ सरपंच को जनता के प्रति जवाबदेह होना पड़ता है।

130. (A) प्रत्येक गाँव का एक आत्मनिर्भर और स्व-शासित इकाई होना।
महात्मा गाँधी के 'ग्राम स्वराज्य' का आदर्श एक ऐसे भारत की कल्पना करता था जिसकी जड़ें मजबूत और आत्मनिर्भर गाँवों में हों। उनके अनुसार, प्रत्येक गाँव को अपनी बुनियादी आवश्यकताओं के लिए स्वयं सक्षम होना चाहिए और स्थानीय शासन का पूर्ण अधिकार उसी समुदाय के पास होना चाहिए। वे सत्ता के केंद्रीकरण के कट्टर विरोधी थे और मानते थे कि जब तक गाँव सशक्त नहीं होंगे, तब तक वास्तविक स्वाधीनता का कोई अर्थ नहीं है। यह दर्शन आज भी पंचायती राज का नैतिक आधार है।

131. (C) पंचायतों को नियमित और अनिवार्य बनाया गया, जिससे वे राज्य सरकारों की मनमानी पर निर्भर नहीं रहीं।
पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा मिलने का सबसे क्रांतिकारी प्रभाव उनकी स्थिरता और अनिवार्यता के रूप में सामने आया। इससे पूर्व, राज्य सरकारें अपनी राजनीतिक सुविधा के अनुसार जब चाहें पंचायतों को भंग कर देती थीं या वर्षों तक चुनाव नहीं कराती थीं। 73वें संशोधन ने हर पाँच वर्ष में चुनाव कराना कानूनी रूप से बाध्यकारी बना दिया। इस संवैधानिक सुरक्षा ने स्थानीय निकायों को राज्य की दया पर निर्भर रहने के बजाय एक स्वतंत्र और मजबूत संवैधानिक प्रस्थिति प्रदान की है।

132. (A) P-4, Q-3, R-2, S-1
भारत के विभिन्न क्षेत्रों में सामाजिक और राजनीतिक सक्रियता के विविध रूप देखने को मिलते हैं। उत्तराखंड में वनों के संरक्षण हेतु महिलाओं ने 'वन पंचायतें' बनाईं, जबकि मेघालय में प्राचीन जनजातीय संस्थाएँ आज भी प्रभावी हैं। कहानियों के माध्यम से प्रशासन के दो चेहरों को दिखाया गया है; जहाँ सुखीपुर की नजमा ईमानदारी का प्रतीक है, वहीं दुखीपुर की विमला भ्रष्टाचार को दर्शाती है। ये उदाहरण समाज में नैतिक नेतृत्व और पारंपरिक विरासत के महत्व को स्पष्ट रूप से उजागर करते हैं।

133. (C) वे समूह सरकार पर दबाव बनाने के लिए संगठित हो सकते हैं या नए दल बना सकते हैं।
लोकतांत्रिक व्यवस्था में हितों का टकराव और उनका समाधान एक निरंतर प्रक्रिया है। यदि कोई सरकार समाज के किसी विशिष्ट वर्ग या समूह की माँगों की निरंतर अनदेखी करती है, तो वह समूह चुप रहने के बजाय सक्रिय हो जाता है। वह अपने हितों की रक्षा के लिए विरोध प्रदर्शन कर सकता है, दबाव समूह बना सकता है या नई राजनीतिक पार्टी का गठन कर चुनावों में चुनौती दे सकता है। यह प्रतिक्रिया लोकतंत्र को सुधारने और सरकार को अधिक उत्तरदायी बनाने का एक स्वाभाविक माध्यम है।

134. (B) स्थानीय स्तर पर छोटे-मोटे विवादों का निपटारा और समझौता कराना।
न्याय पंचायतों का प्राथमिक उद्देश्य ग्रामीण स्तर पर न्याय को सस्ता, सुलभ और त्वरित बनाना है। ये संस्थाएँ मुख्य रूप से आपसी कलह, छोटे दीवानी झगड़ों और सामान्य अपराधों की सुनवाई करती हैं जहाँ समझौता होने की गुंजाइश अधिक होती है। इनके माध्यम से विवादों का निपटारा गाँव में ही हो जाता है, जिससे ग्रामीणों को लंबी और खर्चीली अदालती प्रक्रियाओं से मुक्ति मिलती है। यह विकेंद्रीकृत न्याय प्रणाली सामाजिक समरसता बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

135. (C) केवल 1, 2 और 3
राजनीतिक दल और हित समूह लोकतांत्रिक सत्ता के खेल में अलग-अलग भूमिकाएँ निभाते हैं। दल जहाँ प्रत्यक्ष रूप से सत्ता प्राप्ति के उद्देश्य से संगठित होते हैं, वहीं हित समूहों का लक्ष्य केवल नीतियों को अपने अनुकूल प्रभावित करना होता है। मैक्स वेबर ने भी दलों को शक्ति संरचना के एक अनिवार्य अंग के रूप में पहचाना है। हालाँकि, यह कहना गलत है कि सभी दबाव समूहों का प्रभाव समान है; समाज में संसाधनों और पहुँच के आधार पर कुछ समूहों का प्रभाव अन्य से कहीं अधिक होता है।

136. (A) समान कार्य के लिए समान वेतन
भारतीय न्यायपालिका ने अनुच्छेद 14 में निहित 'समानता के अधिकार' की रचनात्मक व्याख्या कर सामाजिक न्याय के एक महत्वपूर्ण लक्ष्य को प्राप्त किया है। यद्यपि 'समान कार्य के लिए समान वेतन' राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों का हिस्सा था, किंतु उच्चतम न्यायालय ने इसे समानता के मौलिक अधिकार के एक अभिन्न अंग के रूप में लागू किया। इस निर्णय ने यह सुनिश्चित किया कि लिंग या अन्य आधारों पर मजदूरी में भेदभाव करना असंवैधानिक है। यह न्यायिक सक्रियता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

137. (C) केवल उन राज्यों के लिए जिनकी जनसंख्या 20 लाख से अधिक है।
73वें संविधान संशोधन ने पंचायती राज व्यवस्था में एक लचीला ढांचा प्रदान किया है। इसके प्रावधानों के अनुसार, जिन राज्यों की कुल जनसंख्या बीस लाख से अधिक है, उनके लिए त्रि-स्तरीय प्रणाली (ग्राम, ब्लॉक और जिला स्तर) को अपनाना अनिवार्य है। हालाँकि, जिन राज्यों की जनसंख्या इस सीमा से कम है, उन्हें यह विकल्प दिया गया है कि वे चाहें तो मध्यवर्ती स्तर (ब्लॉक स्तर) की पंचायत का गठन न करें। यह व्यवस्था प्रशासनिक सुगमता और स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप बनाई गई है।

138. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
कानून और न्याय एक-दूसरे से संबंधित होने के बावजूद अपने सार में भिन्न हैं। कानून की वैधता के पीछे राज्य की बाध्यकारी शक्ति और दंड का प्रावधान होता है, जिसका उद्देश्य सामाजिक व्यवस्था को बनाए रखना है। इसके विपरीत, न्याय का आधार नैतिकता और निष्पक्षता है, जो यह सुनिश्चित करता है कि किसी

पर वास्तविक सशक्तीकरण के लिए सामाजिक मानसिकता में बदलाव आवश्यक है।

158. (A) पेयजल, स्वच्छता, स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे सामाजिक विकास के मुद्दे
विभिन्न अध्ययनों से यह निष्कर्ष निकला है कि महिला पंचायत प्रतिनिधियों ने अपने कार्यकाल के दौरान सामाजिक विकास के महत्वपूर्ण मुद्दों को अधिक प्राथमिकता दी है। उन्होंने मुख्य रूप से पेयजल की उपलब्धता, बेहतर स्वच्छता व्यवस्था, स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार और प्राथमिक शिक्षा जैसे विषयों पर ध्यान केंद्रित किया है। ये मुद्दे सीधे तौर पर महिलाओं और बच्चों के जीवन की गुणवत्ता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

159. (C) यह पितृसत्तात्मक मानदंडों को चुनौती देकर एक मौन सामाजिक क्रांति ला रहा है।
73वें संविधान संशोधन का दीर्घकालिक सामाजिक प्रभाव पितृसत्तात्मक मानदंडों को धीरे-धीरे कमजोर करना और ग्रामीण समाज में एक मौन क्रांति लाना है। जैसे-जैसे महिलाएँ अपनी नेतृत्व क्षमता का प्रदर्शन कर रही हैं, पारंपरिक पुरुष प्रधान संरचनाओं को चुनौती मिल रही है। यह बदलाव न केवल महिलाओं के आत्मविश्वास को बढ़ाता है, बल्कि समाज के निर्णय लेने के तरीकों में भी समावेशी परिवर्तन सुनिश्चित करता है।

160. (A) उन्हें घरेलू दायरे से निकालकर सार्वजनिक जीवन और निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करके
73वें संशोधन ने महिलाओं को उनके पारंपरिक घरेलू दायरे से बाहर निकालकर सार्वजनिक जीवन और राजनीतिक निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित की है। इस संवैधानिक प्रावधान के कारण महिलाओं को ग्राम पंचायत से लेकर जिला परिषद तक नेतृत्व करने के अवसर मिले हैं। यह सकारात्मक कार्रवाई उन्हें समाज में एक स्वतंत्र पहचान बनाने और स्थानीय शासन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने में मदद कर रही है।

161. (D) 1970 के दशक के अंत और 1980 के दशक की शुरुआत में
भारत में न्यायिक सक्रियता की प्रवृत्ति का उदय मुख्य रूप से 1970 के दशक के उत्तरार्ध और 1980 के दशक की शुरुआत में हुआ था। इस दौरान न्यायपालिका ने संविधान की व्याख्या के प्रति अधिक सक्रिय दृष्टिकोण अपनाया। इसने कार्यपालिका और विधायिका की निष्क्रियता के मामलों में हस्तक्षेप करना शुरु किया, ताकि नागरिकों के अधिकारों की रक्षा की जा सके और संवैधानिक मूल्यों को जमीनी स्तर पर प्रभावी बनाया जा सके।

162. (B) 'अधिस्थिति' (locus standi) का नियम
जनहित याचिका ने 'अधिस्थिति' या लोकस स्टैंडाई के पारंपरिक कानूनी नियम को काफी हद तक शिथिल कर दिया है। पुराने नियम के अनुसार केवल पीड़ित व्यक्ति ही न्यायालय जा सकता था, लेकिन जनहित याचिका के तहत अब कोई भी नागरिक या संगठन वंचित समूहों की ओर से मामला उठा सकता था। इस बदलाव ने न्याय तक पहुँच को सुगम बनाया है, जिससे हाशिए पर पड़े लोगों को न्याय मिल सका है।

163. (C) मानवीय गरिमा के साथ जीने का अधिकार, जिसमें स्वच्छ पर्यावरण और आजीविका शामिल है
सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 21 के तहत 'जीवन के अधिकार' की व्यापक व्याख्या करते हुए इसे केवल शारीरिक अस्तित्व तक सीमित नहीं रखा है। न्यायालय के अनुसार, इसमें मानवीय गरिमा के साथ जीने का अधिकार शामिल है। इस विस्तृत दायरे के अंतर्गत अब स्वच्छ पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य और आजीविका के अधिकार को भी मौलिक अधिकारों के रूप में मान्यता दी गई है, जो जीवन को अर्थपूर्ण बनाते हैं।

164. (D) संविधान के सामाजिक न्याय के वादे को उन लोगों तक पहुँचाना जो वंचित हैं
न्यायिक सक्रियता का मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि संविधान द्वारा किया गया सामाजिक न्याय का वादा समाज के सबसे वंचित और कमजोर वर्गों तक पहुँचे। इसके माध्यम से न्यायालय ने उन लोगों के लिए न्याय के द्वार खोले हैं जो अपनी गरीबी या अज्ञानता के कारण स्वयं अदालतों तक नहीं पहुँच सकते। यह प्रक्रिया लोकतांत्रिक प्रणाली में जवाबदेही बढ़ाने और सामाजिक असमानता को कम करने का प्रयास करती है।

165. (A) दूसरे देश की नागरिकता प्राप्त करने का अधिकार
सर्वोच्च न्यायालय ने अनुच्छेद 21 की व्याख्या के माध्यम से गरिमापूर्ण जीवन, स्वच्छ पर्यावरण और आजीविका जैसे कई अधिकारों को जीवन के अधिकार का हिस्सा माना है। हालाँकि, दूसरे देश की नागरिकता प्राप्त करने का अधिकार इस संवैधानिक प्रावधान के विस्तार से उत्पन्न नहीं हुआ है। नागरिकता संबंधी मामले मुख्य रूप से संविधान के अन्य विशिष्ट प्रावधानों और संसद द्वारा बनाए गए कानूनों द्वारा शासित और विनियमित होते हैं।

166. (B) ये न्यायालयों द्वारा प्रवर्तनीय नहीं हैं, लेकिन देश के शासन में मूलभूत हैं।
राज्य के नीति निदेशक सिद्धांतों की प्रकृति गैर-न्यायोचित है, जिसका अर्थ है कि इन्हें न्यायालय के माध्यम से कानूनी रूप से लागू नहीं कराया जा सकता। इसके बावजूद, अनुच्छेद 37 स्पष्ट करता है कि ये सिद्धांत देश के शासन में मूलभूत महत्व रखते हैं। राज्य का यह कर्तव्य है कि वह नीतियों और कानूनों का निर्माण करते समय इन आदर्शों को ध्यान में रखे ताकि कल्याणकारी लक्ष्य प्राप्त हों।

167. (B) ये कानून बनाने और शासन में राज्य के लिए मूलभूत और कर्तव्य-उन्मुख हैं।
अनुच्छेद 37 के अनुसार, राज्य के नीति निदेशक सिद्धांत शासन के संचालन और कानून निर्माण की प्रक्रिया में राज्य के लिए मूलभूत मार्गदर्शक की भूमिका निभाते हैं। ये सिद्धांत राज्य पर एक नैतिक और राजनीतिक कर्तव्य थोपते हैं कि वह एक न्यायपूर्ण और समतावादी समाज की स्थापना का प्रयास करे। यद्यपि ये अनिवार्य नहीं हैं, फिर भी ये सरकार की नीतियों के वैचारिक आधार के रूप में कार्य करते हैं।

168. (A) अनुच्छेद 40 - ग्राम पंचायतों का संगठन
संविधान का अनुच्छेद 40 राज्य को ग्राम पंचायतों के गठन और उन्हें आवश्यक शक्तियाँ प्रदान करने का निर्देश देता है। यही निदेशक सिद्धांत 73वें संविधान संशोधन अधिनियम का मुख्य वैचारिक आधार बना, जिसने पंचायती राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा दिया। यह प्रावधान गांधीवादी दर्शन और जमीनी स्तर पर लोकतंत्र को मजबूत करने के उद्देश्य से प्रेरित है, जो स्थानीय स्वशासन को बढ़ावा देने पर जोर देता है।

169. (C) सामाजिक-आर्थिक न्याय प्राप्त करने के लिए राज्य की नीतियों को प्रेरित और निर्देशित करते हैं।
यह अनुच्छेद तर्क देता है कि नीति निदेशक सिद्धांत भले ही कानूनी रूप से प्रवर्तनीय न हों, लेकिन वे सामाजिक और आर्थिक न्याय प्राप्त करने के लिए राज्य की नीतियों को निरंतर प्रेरित और निर्देशित करते हैं। ये सिद्धांत विधायिका और कार्यपालिका के लिए एक नैतिक ढांचे के रूप में कार्य करते हैं। इनके माध्यम से सरकार के प्रदर्शन का मूल्यांकन किया जा सकता है कि वह लोक कल्याण के लिए कितनी सक्रिय है।

170. (D) समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1976
समान पारिश्रमिक अधिनियम, 1976 सीधे तौर पर अनुच्छेद 39(घ) के निदेशक सिद्धांत से प्रेरित है, जो पुरुषों और स्त्रियों को समान कार्य के लिए समान वेतन देने की वकालत करता है। ऐसे कानून दर्शाते हैं कि नीति निदेशक सिद्धांत केवल आदर्श वाक्य नहीं हैं, बल्कि वे महत्वपूर्ण सामाजिक और आर्थिक कानूनों के निर्माण में आधारभूत भूमिका निभाते हैं। यह श्रम क्षेत्र में लैंगिक समानता सुनिश्चित करने की दिशा में एक बड़ा कदम था।

171. (C) दबाव समूह सीधे राजनीतिक सत्ता पर कब्जा करने का प्रयास नहीं करते हैं।
दबाव समूहों और राजनीतिक दलों के बीच मुख्य अंतर यह है कि दबाव समूह सीधे तौर पर राजनीतिक सत्ता या सरकार पर कब्जा करने की कोशिश नहीं करते हैं। उनका मुख्य उद्देश्य केवल विशिष्ट हितों को बढ़ावा देना और सरकारी नीतियों को अपने पक्ष में प्रभावित करना होता है। इसके विपरीत, राजनीतिक दल चुनाव लड़ते हैं और राजनीतिक सत्ता प्राप्त कर शासन चलाने का लक्ष्य रखते हैं, जो उनकी प्राथमिक पहचान है।

172. (B) अपने हितों को बढ़ावा देने के लिए नीति-निर्माताओं को सीधे प्रभावित करने का प्रयास करना
लॉबिंग एक ऐसी रणनीति है जिसमें दबाव समूह अपने विशिष्ट हितों को बढ़ावा देने के लिए नीति-निर्माताओं, जैसे मंत्रियों और विधायकों को सीधे प्रभावित करने का प्रयास करते हैं। इसमें वे तथ्यों, तर्कों और शोध रिपोर्टों का उपयोग करके सरकारी निर्णयों को अपने पक्ष में मोड़ने की कोशिश करते हैं। यह प्रक्रिया लोकतांत्रिक नीति-निर्माण में समूहों को अपनी आवाज प्रभावी ढंग से पहुँचाने का एक महत्वपूर्ण माध्यम प्रदान करती है।

173. (D) फिक्की (FICCI)
फिक्की (FICCI) भारत में एक प्रमुख व्यावसायिक दबाव समूह का उदाहरण है, जो उद्योगों और व्यापारिक घरानों के हितों का प्रतिनिधित्व करता है। यह संगठन सरकार के साथ निरंतर संवाद करता है ताकि आर्थिक नीतियों, कर संरचनाओं और व्यापारिक नियमों को उद्योगों के अनुकूल बनाया जा सके। जबकि अन्य विकल्प जैसे किसान संघ या श्रमिक संघ अलग-अलग वर्गों के हितों के लिए कार्य करते हैं, फिक्की व्यावसायिक क्षेत्र पर केंद्रित है।

174. (A) सरकार और जनता के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करके और विविध हितों का प्रतिनिधित्व करके
दबाव समूह लोकतंत्र को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं क्योंकि वे सरकार और जनता के बीच एक प्रभावी कड़ी के रूप में कार्य करते हैं। वे समाज के विभिन्न वर्गों के विविध हितों और चिंताओं को सरकार के सामने स्पष्ट रूप से रखते हैं। इससे सार्वजनिक बहस को बढ़ावा मिलता है और नीति-निर्माण प्रक्रिया अधिक समावेशी बनती है, जिससे सरकार को विभिन्न सामाजिक दृष्टिकोणों को समझने में सहायता मिलती है।

175. (C) शक्तिशाली और धनी समूह नीति-निर्माण पर अनुचित प्रभाव डाल सकते हैं।
दबाव समूहों की एक प्रमुख आलोचना यह है कि शक्तिशाली और आर्थिक रूप से संपन्न समूह नीति-निर्माण की प्रक्रिया पर अनुचित प्रभाव डाल सकते हैं। इसके कारण अक्सर समाज के गरीब और कम संगठित वर्गों के हितों की अनदेखी हो सकती है। जब कुछ विशिष्ट समूह संसाधनों के बल पर सरकारी निर्णयों को नियंत्रित करने लगते हैं, तो इससे लोकतांत्रिक समानता और न्याय के सिद्धांतों को खतरा पहुँच सकता है।

अध्याय 11
ग्रामीण समाज में विकास एवं परिवर्तन

1. 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की कितनी प्रतिशत जनसंख्या गाँवों में रहती है?
(A) 59 प्रतिशत
(B) 69 प्रतिशत
(C) 79 प्रतिशत
(D) 89 प्रतिशत

2. निम्नलिखित में से कौन-सा त्योहार मुख्य रूप से फसल कटाई के समय से संबंधित नहीं है?
(A) दीपावली
(B) पोंगल
(C) बीहू
(D) बैसाखी

3. एम. एन. श्रीनिवास द्वारा दी गई 'प्रबल जाति' की अवधारणा में क्या शामिल है?
(A) संख्या के आधार पर एक छोटी, लेकिन क्षेत्रीय स्तर पर आर्थिक रूप से शक्तिशाली जाति
(B) वे जातीय समूह जो केवल पारंपरिक सर्वोच्च 'ब्राह्मण' वर्ण से संबंधित माने जाते हैं
(C) आर्थिक और राजनीतिक रूप से स्थानीय प्रभुत्व रखने वाली भूस्वामी जाति
(D) वे सामाजिक जातियाँ जो पारंपरिक रूप से गाँवों में कारीगरी के काम में लगी रहती हैं

4. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन 1: औपनिवेशिक काल में मशीन से बने सामानों के आगमन ने ग्रामीण कारीगरों और दस्तकारों की संख्या को कम कर दिया।
कथन 2: ग्रामीण क्षेत्रों में कई लोग अब सरकारी नौकरियों या कारखानों में काम करके अकृषि क्रियाकलापों से अपनी जीविका चलाते हैं।
(A) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(B) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।
(C) कथन 1 और कथन 2 दोनों गलत हैं।
(D) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।

5. भूमि सुधारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसका उद्देश्य कृषि पैदावार बढ़ाना था।
2. इसका एक लक्ष्य ग्रामीण गरीबी को कम करना था।
3. यह सामाजिक न्याय स्थापित करना चाहता था।
4. इसका औद्योगीकरण से कोई लेना-देना नहीं था।
5. ये कानून केवल राष्ट्रीय स्तर पर चलाए गए।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) केवल 2 और 5

6. 'कृषिक संरचना' शब्द का सबसे उपयुक्त वर्णन क्या है?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में पाया जाने वाला केवल जाति का पदानुक्रम
(B) भूमि स्वामित्व के वितरण और कृषि उत्पादन की भूमिका पर आधारित ढांचा
(C) ग्रामीण अर्थव्यवस्था और शहरी बाज़ारों के बीच पाया जाने वाला आर्थिक संबंध
(D) कृषि कार्यों में उपयोग की जाने वाली आधुनिक तकनीकों का एक विस्तृत वर्गीकरण

7. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) है और दूसरा उसका कारण (R) है।
अभिकथन (A): भारत के अधिकांश भागों में महिलाएँ पारंपरिक रूप से ज़मीन की मालिक नहीं होती हैं।
कारण (R): पितृवंशीय नातेदारी व्यवस्था और उत्तराधिकार के नियम महिलाओं को संपत्ति के स्वामित्व से वंचित करते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

8. काश्तकार या पट्टेधारी की आमदनी मालिक-कृषकों से कम क्यों होती है?
(A) क्योंकि वे ज़मीन के मालिक को किराया चुकाते हैं।
(B) क्योंकि वे कम मेहनत से खेती करते हैं।
(C) क्योंकि सरकार उन पर अधिक कर लगाती है।
(D) क्योंकि उनकी फसलें हमेशा खराब होती हैं।

9. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. बेगार
Q. रैयत
R. प्रबल जाति
S. घुमक्कड़ मज़दूर

90. हरित क्रांति और उसके प्रभावों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से आर्थिक सहायता मिली थी।
2. यह अधिक उत्पादकता वाले संकर बीजों पर केंद्रित थी।
3. इसने कीटनाशकों और खादों के प्रयोग को बढ़ावा दिया।
4. यह कार्यक्रम पूरे भारत में एक साथ लागू किया गया था।
5. इसका उद्देश्य केवल कपास और गन्ने का उत्पादन बढ़ाना था।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 4 और 5
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) उपरोक्त सभी

91. सरकार द्वारा ग्रामीण अधिसंरचना में निवेश के क्या परिणाम हुए?
(A) ग्रामीण अर्थव्यवस्था में ठहराव
(B) कृषि उत्पादन में गिरावट
(C) ग्रामीण क्षेत्रों का शहरी क्षेत्रों से अलगाव
(D) ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि में रुपांतरण

92. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (कार्यक्रम/योजना)
P. किसान क्रेडिट कार्ड
Q. दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना
R. प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना
S. राष्ट्रीय ग्रामीण-नगरीय मिशन

सूची II: (उद्देश्य)
1. फसल हानि से सुरक्षा
2. एकीकृत सहायता
3. कृषि हेतु ऋण
4. बिजली सप्लाई

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

93. प्रवासी मज़दूर मुख्य रूप से किन क्षेत्रों से आते हैं?
(A) अधिक संपन्न और सिंचित क्षेत्रों से
(B) बड़े औद्योगिक शहरों से
(C) सूखाग्रस्त तथा कम उत्पादकता वाले क्षेत्रों से
(D) तटीय मछली पकड़ने वाले गाँवों से

94. 'पूंजीवादी उत्पादन व्यवस्था' किस पर आधारित होती है?
(A) उत्पादन के साधनों और मज़दूरों के एकीकरण पर
(B) केवल पारिवारिक श्रम के उपयोग पर
(C) वस्तु विनिमय प्रणाली पर
(D) उत्पादन के साधनों तथा मज़दूरों के पृथक्कीकरण पर

95. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) है और दूसरा उसका कारण (R) है।
अभिकथन (A): 1980 के दशक के उत्तरार्द्ध से अपनाई गई उदारीकरण की नीति का ग्रामीण समाज पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा है।
कारण (R): इस नीति के कारण 'संविदा खेती' और कृषि का भूमंडलीकरण जैसी प्रक्रियाएं तेज हुई हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

96. कृषि की 'वैज्ञानिक' पद्धति को बढ़ावा देने का एक नकारात्मक परिणाम क्या रहा है?
(A) किसानों की पारंपरिक जानकारी का संरक्षण
(B) बीजों की पारंपरिक किस्मों का लुप्त होना
(C) रासायनिक खादों के उपयोग में कमी
(D) पर्यावरण की स्थिति में सुधार

97. हरित क्रांति के प्रथम चरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह 1960 और 1970 के दशकों में लागू हुई।
2. इसके कारण ग्रामीण समाज में असमानताएँ घटीं।
3. इसने भूमिहीन और सीमांत भू-धारकों की दशा को सुधारा।
4. इसका लाभ केवल अच्छी आर्थिक स्थिति वाले किसानों को मिला।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

98. तमिलनाडु के कावेरी बेसिन जैसे गहन कृषि वाले क्षेत्रों की कृषीय संरचना की क्या विशेषता थी?
(A) बड़ी संख्या में भूमिहीन, बंधुआ और निम्न जाति के मज़दूरों की उपस्थिति
(B) समान कृषिक संरचना और भूमि का बराबर वितरण
(C) इन क्षेत्रों में अन्य कार्यों हेतु श्रमिकों की बहुत कम आवश्यकता होना
(D) गाँव के सभी स्थानीय किसानों के बीच पाई जाने वाली पूर्ण सामाजिक समानता

99. 'बेगार' या मुफ़्त मज़दूरी जैसी पद्धति में क्या होता है?
(A) मज़दूरों को अपनी इच्छा के अनुसार कहीं भी काम करने की पूर्ण स्वतंत्रता होती है
(B) ज़मींदार अपने अधीन सभी मज़दूरों को बाज़ार दर से बहुत अधिक मज़दूरी देते हैं
(C) निम्न जाति के सदस्य ज़मींदार के यहाँ बिना मज़दूरी के कुछ दिन काम करते हैं

हुए।
3. इसके कारण सूखी कृषि से सिंचित कृषि की ओर बदलाव आया।
4. इसने फसल के प्रतिमानों में कोई परिवर्तन नहीं किया।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

20. 'जीवननिर्वाही कृषक' किसे कहा जाता है?
(A) वे किसान जो केवल बाज़ार के लिए उत्पादन करते हैं।
(B) वे किसान जो मुख्य रूप से स्वयं के उपभोग के लिए उत्पादन करते हैं।
(C) वे किसान जिनके पास बहुत बड़ी ज़मीन होती है।
(D) वे किसान जो मुख्य रूप से स्वयं के उपभोग के लिए उत्पादन करते हैं।

21. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (प्रबल जाति)
P. जाट और राजपूत
Q. वोक्कालिगास और लिंगायत
R. कम्मास और रेड्डी
S. जाट सिख
सूची II: (राज्य)
1. आंध्र प्रदेश
2. पंजाब
3. उत्तर प्रदेश
4. कर्नाटक
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

22. स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण समाज में हुए परिवर्तनों में निम्नलिखित में से कौन सा एक नहीं है?
(A) भुगतान में सामान के स्थान पर नगद भुगतान
(B) पारंपरिक पुश्तैनी संबंधों में मजबूती
(C) 'मुक्त' दिहाड़ी मज़दूरों के वर्ग का उदय
(D) गहन कृषि के कारण कृषि मज़दूरों की बढ़ोतरी

23. समाजशास्त्री जान ब्रेमन ने भूस्वामियों और कृषि मज़दूरों के बीच संबंधों में आए बदलाव को क्या कहा है?
(A) 'शोषण से संरक्षण' की ओर बदलाव
(B) 'समानता से असमानता' की ओर बदलाव
(C) 'संघर्ष से सहयोग' की ओर बदलाव
(D) 'संरक्षण से शोषण' की ओर बदलाव

24. ग्रामीण समाज पर भूमंडलीकरण और उदारीकरण के प्रभावों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. भारतीय बाज़ारों को आयात हेतु खोला गया।
2. 'संविदा खेती' जैसी पद्धतियाँ शुरु हुई।
3. किसानों की बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर निर्भरता कम हुई।
4. कृषि में सरकारी सहयोग में वृद्धि हुई।
5. किसानों द्वारा आत्महत्या की घटनाओं का इन नीतियों से कोई संबंध नहीं है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 5
(D) उपरोक्त सभी

25. 'संविदा खेती' का किसानों पर क्या प्रभाव पड़ा है?
(A) यह हमेशा वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है और कोई जोखिम नहीं होता।
(B) यह किसानों को कंपनियों पर निर्भर बनाती है और असुरक्षा बढ़ा सकती है।
(C) यह किसानों को कंपनियों पर निर्भर बनाती है और असुरक्षा बढ़ा सकती है।
(D) यह किसानों के देशीय कृषि ज्ञान को महत्त्व देती है।

26. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) है और दूसरा उसका कारण (R) है।
अभिकथन (A): हरित क्रांति के कारण पंजाब जैसे क्षेत्रों में कृषि उपकरणों के प्रयोग ने सेवा प्रदान करने वाली जातियों को बेदखल कर दिया।
कारण (R): टिलर, ट्रैक्टर, थ्रेशर जैसे उपकरणों ने उन पारंपरिक कृषि संबंधी क्रियाकलापों का स्थान ले लिया जो ये जातियाँ करती थीं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

27. 'कृषि मज़दूरों का महिलाकरण' से क्या तात्पर्य है?
(A) कृषि कार्यों में महिलाओं की भागीदारी का पूर्ण रूप से समाप्त होना
(B) महिलाओं को पुरुषों के बराबर मज़दूरी मिलना
(C) महिलाओं का कृषि भूमि की मालिक बनना
(D) पुरुषों के प्रवास के कारण कृषि में महिलाओं की श्रम भागीदारी का बढ़ना

28. जान ब्रेमन ने प्रवासन करने वाले मज़दूरों को क्या संज्ञा दी है?
(A) स्थायी मज़दूर
(B) घुमक्कड़ मज़दूर
(C) बंधुआ मज़दूर
(D) कुशल मज़दूर

29. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना का शुभारंभ

2. हरित क्रांति का दूसरा चरण
3. भारत द्वारा उदारीकरण की नीति का अनुसरण
4. ज़मींदारी उन्मूलन अधिनियम का पारित होना

(A) 4, 2, 3, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 4, 1, 3
(D) 4, 3, 2, 1

30. भूमंडलीकरण के बाद 'कृषि विस्तार' एजेंटों का स्थान किसने ले लिया है?
(A) सरकारी समितियों ने
(B) स्थानीय पंचायत ने
(C) बड़े भूस्वामी किसानों ने
(D) बीज, खाद और कीटनाशक कंपनियों के एजेंटों ने

31. भूमि हदबंदी अधिनियम अधिकतर राज्यों में दंतविहीन क्यों साबित हुए?
(A) क्योंकि भूस्वामियों ने कानूनी बचाव के रास्तों से अपनी भूमि को सुरक्षित कर लिया
(B) क्योंकि किसानों ने स्वेच्छा से अपनी अतिरिक्त भूमि का दान करना स्वीकार किया था
(C) क्योंकि केंद्र और राज्य सरकारों ने इन कानूनों को व्यावहारिक रूप से लागू नहीं किया
(D) क्योंकि संपूर्ण देश में किसी के पास भी निर्धारित सीमा से अधिक कृषि भूमि नहीं थी

32. हरित क्रांति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसने भारत को खाद्यान्न उत्पादन में स्वावलंबी बनाया।
2. इसका कोई नकारात्मक सामाजिक प्रभाव नहीं पड़ा।
3. इसने क्षेत्रीय असमानताओं में वृद्धि की।
4. इसके लाभ सभी किसानों तक समान रूप से पहुँचे।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1 और 4
(D) केवल 2 और 3

33. प्रवासी मज़दूरों को स्थानीय मज़दूरों की तुलना में प्राथमिकता क्यों दी जाती है?
(A) क्योंकि प्रवासी मज़दूर स्थानीय लोगों से अधिक कुशल होते हैं
(B) क्योंकि उनका आसानी से शोषण और कम मज़दूरी पर काम कराया जा सकता है
(C) क्योंकि वे काम के दौरान सदैव अपने कृषि औजार साथ लाते हैं
(D) क्योंकि वे स्थानीय भाषा और सामाजिक संस्कृति को अच्छी तरह समझते हैं

34. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (लेखक/समाजशास्त्री)
P. एम. एन. श्रीनिवास
Q. जान ब्रेमन
R. अखिल गुप्ता
S. धर्म कुमार

सूची II: (कार्य/अवधारणा)
1. घुमक्कड़ मज़दूर (फूटलूज़ लेबर)
2. प्रबल जाति (डोमिनेंट कास्ट)
3. कोलोनियलिज़्म, प्रॉपर्टी एंड द स्टेट
4. पोस्टकोलोनियल डेवलपमेंट्स

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-3, R-4, S-1

35. 'विभेदीकरण' की प्रक्रिया, जो हरित क्रांति की एक परिणति थी, का क्या अर्थ है?
(A) गाँव के सभी किसान समान रूप से धनी और शक्तिशाली हो गए
(B) ग्रामीण समाज में व्याप्त पारंपरिक जातिगत भेद पूरी तरह समाप्त हो गए
(C) धनी किसान और समृद्ध हुए जबकि कई निर्धन किसान और गरीब हो गए
(D) सभी क्षेत्रीय किसानों ने एक समान व्यापारिक फसलें उगाना शुरु कर दिया

36. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) है और दूसरा उसका कारण (R) है।
अभिकथन (A): 'संविदा खेती' किसानों के लिए अधिक असुरक्षा भी बन जाती है।
कारण (R): किसान अपने जीवन-व्यापार के लिए पूरी तरह से बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर निर्भर हो जाते हैं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

37. स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण सामाजिक संरचना को बदलने वाला एक तरीका क्या था?
(A) गाँव में पारंपरिक कारीगरों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि होना
(B) ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर पलायन का पूरी तरह से रुक जाना
(C) समृद्ध किसानों द्वारा अन्य व्यापारों और ग्रामीण उद्योगों में निवेश करना
(D) उच्च शिक्षा का केवल शहरी धनी और अभिजात वर्ग तक सीमित रह जाना

38. केरल का विकास मॉडल अन्य राज्यों से किस प्रकार भिन्न है?
(A) यह पूरी तरह से कृषि पर आधारित है।
(B) यह एक मिश्रित अर्थव्यवस्था है जो बाह्य अर्थव्यवस्था से

जुड़ी है।
(C) इसमें राजनीतिक गतिशीलता और पुनर्वितरण के साधनों का अभाव है।
(D) इसमें विदेशी धन का कोई योगदान नहीं है।

39. किसानों द्वारा आत्महत्या के लिए निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रमुख कारक नहीं माना जाता है?
(A) ऋण ग्रस्तता
(B) उदारीकरण की नीतियाँ
(C) नगदी फसल की ओर झुकाव
(D) कृषि के लिए राज्य सहयोग में वृद्धि

40. हरित क्रांति और उसके परिणामों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इसने भूस्वामियों को सीधे कृषि कार्य करने के लिए प्रोत्साहित किया।
2. इसके कारण कई मामलों में पट्टेदार बेदखल हुए।
3. इससे धनी किसान और अधिक संपन्न हो गए।
4. इसने भूमिहीन तथा सीमांत भू-धारकों की दशा में हमेशा सुधार किया।
5. इसने कृषि में मशीनीकरण को बढ़ावा दिया।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 5
(D) उपरोक्त सभी

41. औपनिवेशिक काल में ज़मींदारों को संपत्ति के अधिकार किसने दिए?
(A) स्थानीय राजाओं ने
(B) मुगल शासकों ने
(C) ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने
(D) किसानों ने स्वयं

42. भू-सुधार के कानूनों में सबसे अधिक प्रभावशाली कानून कौन सा था?
(A) ज़मींदारी व्यवस्था को समाप्त करना
(B) पट्टेदारी का उन्मूलन
(C) भूमि की हदबंदी
(D) चकबंदी

43. निम्नलिखित प्रक्रियाओं को उनके घटित होने के सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. हरित क्रांति का आरंभ
2. कृषि का व्यापारीकरण
3. मज़दूरों का संचार (पलायन)
4. पारंपरिक संरक्षक-ग्राहक संबंधों का टूटना

(A) 1, 2, 4, 3
(B) 2, 1, 3, 4
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 1, 4, 2, 3

44. तमिलनाडु में पोंगल, असम में बीहू और पंजाब में बैसाखी जैसे त्योहारों में क्या समानता है?
(A) ये सभी नव वर्ष के आगमन पर मनाए जाते हैं।
(B) ये सभी मुख्य रूप से फसल काटने के समय से जुड़े हैं।
(C) ये सभी केवल शहरी क्षेत्रों में मनाए जाते हैं।
(D) ये सभी धार्मिक अनुष्ठानों पर केंद्रित हैं।

45. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) है और दूसरा उसका कारण (R) है।
अभिकथन (A): प्रवासी कृषि मज़दूरों की कार्य तथा जीवन दशाएँ खराब होती हैं।
कारण (R): प्रवासन तथा काम की सुरक्षा के अभाव के कारण उनका आसानी से शोषण किया जा सकता है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

46. 'संविदा खेती' के अंतर्गत कंपनियाँ किसानों को क्या उपलब्ध नहीं कराती हैं?
(A) बीज तथा अन्य निवेश
(B) कार्यकारी पूँजी
(C) उपज के क्रय का आश्वासन
(D) भूमि का स्थायी स्वामित्व

47. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (क्षेत्र)
P. पश्चिमी उत्तर प्रदेश
Q. तटीय आंध्र प्रदेश
R. मध्य गुजरात
S. पंजाब और हरियाणा

सूची II: (विशेषता)
1. हरित क्रांति के संपन्न क्षेत्र
2. संपन्न किसानों द्वारा व्यापार में निवेश
3. गन्ना उत्पादन का प्रमुख केंद्र
4. नव क्षेत्रीय अभिजात वर्गों का उदय

(A) P-3, Q-2, R-4, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

48. भूमंडलीकरण के संदर्भ में, भारतीय कृषि पर क्या प्रभाव पड़ा है?
(A) किसानों को अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार से प्रतिस्पर्धा नहीं करनी पड़ती।
(B) किसानों को अब अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है।
(C) आयात प्रतिस्थापन की नीतियां और मजबूत हुई हैं।
(D) केवल स्वदेशी उत्पादों को बाज़ारों में बेचा जाता है।

49. हरित क्रांति की रणनीति की एक नकारात्मक परिणति क्या थी?
(A) क्षेत्रीय असमानताओं में कमी
(B) क्षेत्रीय असमानताओं में वृद्धि
(C) सभी क्षेत्रों का समान विकास
(D) कृषि उत्पादन में कमी

50. स्वतंत्रता के बाद के परिवर्तनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. गहन कृषि के कारण कृषि मजदूरों की संख्या घटी।
2. भुगतान में अनाज की जगह नकद राशि का प्रयोग बढ़ा।
3. भूस्वामी और कृषि मजदूर के बीच पारंपरिक संबंध कमजोर हुए।
4. 'मुक्त' दिहाड़ी मजदूरों का एक नया वर्ग उभरा।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

51. काश्तकारों की आमदनी, फसल की आमदनी का कितना प्रतिशत तक किराया चुकाने के बाद बचती थी?
(A) 10 से 20 प्रतिशत
(B) 25 से 50 प्रतिशत
(C) 50 से 75 प्रतिशत
(D) 80 से 90 प्रतिशत

52. निम्नलिखित में से कौन सा प्रबल भूस्वामी समूहों का उदाहरण नहीं है?
(A) कर्नाटक के वोक्कालिगास
(B) आंध्र प्रदेश के कम्मास
(C) पंजाब के जाट सिख
(D) उत्तर प्रदेश के धोबी

53. हरित क्रांति के कारण कृषि-व्यापारीकरण का मुख्य लाभ किन किसानों को मिला?
(A) छोटे जीवननिर्वाही कृषक
(B) भूमिहीन सीमांत किसान
(C) बाज़ार हेतु अतिरिक्त उत्पादन करने में सक्षम किसान
(D) गाँव के सभी किसान समान रूप से

54. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) है और दूसरा उसका कारण (R) है।
अभिकथन (A): बाज़ारोन्मुखी कृषि में किसानों के लिए जोखिम बढ़ जाता है।
कारण (R): एकल फसल उगाने पर, कीमतों में कमी या फसल खराब होने से किसानों की आर्थिक बर्बादी हो सकती है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

55. ऐतिहासिक रुप से 'अछूत' या दलित जातियों को भूमि रखने का अधिकार क्यों नहीं था?
(A) क्योंकि वे खेती की तकनीकें बिल्कुल भी नहीं जानते थे
(B) क्योंकि वे हमेशा ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरों में रहना चाहते थे
(C) क्योंकि उन्होंने स्वेच्छा से अपने सभी भूमि अधिकारों का पूरी तरह से त्याग किया था
(D) क्योंकि वे पारंपरिक रुप से प्रबल जातियों के यहाँ मज़दूर रहते थे

56. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन हरित क्रांति के प्रभावों के बारे में असत्य है?
(A) इससे पट्टेदार कृषक बेदखल हुए।
(B) इससे धनी किसान और अधिक संपन्न हो गए।
(C) इसने ग्रामीण क्षेत्रों से नगरीय क्षेत्रों की ओर प्रवासन को धीमा कर दिया।
(D) यह केवल सिंचाई की सुविधा वाले क्षेत्रों में सफल रही।

57. औपनिवेशिक भारत की किस भूप्रबंध व्यवस्था में कृषकों को कृषि में निवेश करने के लिए अधिक प्रोत्साहन मिलता था?
(A) ज़मींदारी व्यवस्था
(B) जागीरदारी व्यवस्था
(C) रैयतवाड़ी व्यवस्था
(D) महालवाड़ी व्यवस्था

58. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधि/घटना)
P. 1960-70 के दशक
Q. 1950-70 के बीच
R. 1980 का दशक
S. 1990 का दशक
सूची II: (प्रमुख विकास)
1. हरित क्रांति का दूसरा चरण
2. हरित क्रांति का प्रथम चरण
3. उदारीकरण और भूमंडलीकरण
4. भूमि सुधार कानूनों की श्रृंखला
(A) P-1, Q-3, R-2, S-4
(B) P-2, Q-4, R-1, S-3
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-2, R-3, S-1

59. ग्रामीण समाज में परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. पूँजीवादी कृषि में उत्पादन के साधन और मजदूर का पृथक्कीकरण होता है।
2. कृषि के व्यापारीकरण की प्रक्रिया औपनिवेशिक काल में ही प्रारंभ हो गई थी।
3. स्वतंत्रता के बाद सरकार ने कृषि की आधुनिक पद्धतियों

को हतोत्साहित किया।
4. ग्रामीण अधिसंरचना में निवेश ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था के रुपांतरण में मदद की।
5. 1960 के दशक के कृषि विकास ने ग्रामीण सामाजिक संरचना को नहीं बदला।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 2, 3 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

60. 'पूंजीवादी कृषि' की ओर बदलाव का एक प्रमुख संकेतक क्या है?
(A) पारिवारिक श्रम का बढ़ता उपयोग
(B) उत्पादन का मुख्य रूप से बाज़ार में बिक्री के लिए होना
(C) किसानों का बाज़ार से अलगाव
(D) 'मुक्त' दिहाड़ी मजदूरों के प्रयोग में कमी

61. हरित क्रांति के बाद कृषि मजदूरों के भुगतान के तरीकों में क्या बदलाव आया?
(A) नगद भुगतान के स्थान पर खाद्यान्न में भुगतान
(B) भुगतान पूरी तरह से बंद कर दिया गया
(C) खाद्यान्न के स्थान पर नगद भुगतान
(D) मजदूरों को भूमि का एक हिस्सा दिया जाने लगा

62. निम्नलिखित में से कौन सी एक 'संविदा खेती' की विशेषता है?
(A) किसान अपनी इच्छानुसार कोई भी फसल उगा सकता है।
(B) किसानों को बाज़ार की अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है।
(C) यह हमेशा पर्यावरण की दृष्टि से सुरक्षित होती है।
(D) कंपनियाँ उगाई जाने वाली फसलों की पहचान करती हैं।

63. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. भारत विश्व व्यापार संगठन (WTO) का सदस्य बना
2. औपनिवेशिक भारत में ज़मींदारी व्यवस्था की स्थापना
3. भूमि हदबंदी अधिनियमों का लागू होना
4. किसान क्रेडिट कार्ड योजना की शुरुआत

(A) 2, 3, 1, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 2, 4, 1
(D) 2, 1, 4, 3

64. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) है और दूसरा उसका कारण (R) है।
अभिकथन (A): आधुनिक कृषि पद्धतियों के कारण बीजों की पारंपरिक किस्में लुप्त हो रही हैं।
कारण (R): संकर तथा जैविक सुधार वाले बीजों को 'वैज्ञानिक' और अधिक उत्पादक बताकर प्रोत्साहित किया जा रहा है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

65. स्वतंत्रता के बाद नियोजित विकास कार्यक्रमों का ध्यान किस पर केंद्रित था?
(A) केवल औद्योगीकरण पर
(B) कृषिकीय सुधारों और औद्योगीकरण दोनों पर
(C) केवल कृषिकीय सुधारों पर
(D) केवल शहरी विकास पर

66. भूमि सुधारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ज़मींदारी उन्मूलन ने कृषक और राज्य के बीच के बिचौलियों को समाप्त कर दिया।
2. यह बिना किसी संघर्ष के आसानी से लागू हो गया।
3. इसने वास्तविक भूस्वामियों और स्थानीय कृषकों की स्थिति को मजबूत किया।
4. इसने ज़मींदारों की आर्थिक और राजनीतिक शक्तियों को कम नहीं किया।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

67. पट्टेदारी उन्मूलन और नियमन अधिनियम अधिकतर राज्यों में प्रभावशाली क्यों नहीं थे?
(A) क्योंकि पट्टेदारी की कोई समस्या ही नहीं थी।
(B) पट्टेदारों ने स्वयं इसका विरोध किया।
(C) क्योंकि इन कानूनों को प्रभावशाली तरीके से लागू नहीं किया गया।
(D) क्योंकि ज़मींदारों ने पट्टेदारों को ज़मीन का मालिक बना दिया।

68. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (समस्या)
P. ऋण ग्रस्तता
Q. मज़दूरों का संचार
R. बेनामी हस्तांतरण
S. क्षेत्रीय असमानता

सूची II: (संबंधित अवधारणा/कारण)
1. भूमि हदबंदी कानून से बचाव
2. हरित क्रांति का परिणाम
3. किसान आत्महत्या का कारक
4. कृषि का व्यापारीकरण

(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

69. भारतीय समाज को प्राथमिक रूप से ग्रामीण समाज क्यों कहा जाता है?
(A) क्योंकि यहाँ नगरीकरण बिल्कुल नहीं हुआ है
(B) क्योंकि सभी ग्रामीण निवासी केवल कृषि कार्य ही करते हैं
(C) क्योंकि बहुसंख्यक लोग गाँवों में रहते हैं और कृषि पर निर्भर हैं
(D) क्योंकि शहरी आबादी भी पूरी तरह कृषि पर निर्भर है

70. "भूमि केवल उत्पादन का साधन नहीं, बल्कि जीने का एक तरीका है।" इस कथन का क्या अभिप्राय है?
(A) भूमि का केवल शुद्ध आर्थिक मूल्य होता है
(B) सांस्कृतिक रस्में और रीति-रिवाज़ कृषि की पृष्ठभूमि से जुड़े हैं
(C) भूमि का समाज में कोई सांस्कृतिक महत्व नहीं है
(D) भूमि का स्वामित्व जीवन स्तर को बिल्कुल प्रभावित नहीं करता है

71. ग्रामीण भारत में व्यवसायों की भिन्नता किस व्यवस्था में प्रतिबिंबित होती है?
(A) वर्ग व्यवस्था में
(B) शिक्षा व्यवस्था में
(C) राजनीतिक व्यवस्था में
(D) जाति व्यवस्था में

72. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
कथन 1: औपनिवेशिक काल से ही ग्रामीण कारीगरों की संख्या धीरे-धीरे कम होती जा रही है।
कथन 2: मशीन से बने सामानों ने हाथ से बनी हुई वस्तुओं का स्थान ले लिया है।
(A) कथन 2, कथन 1 का कारण है।
(B) कथन 1, कथन 2 का कारण है।
(C) दोनों कथनों में कोई संबंध नहीं है।
(D) दोनों कथन एक दूसरे के विरोधी हैं।

73. हरित क्रांति के नकारात्मक प्रभावों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. मध्यम और बड़े किसानों को ही इसका लाभ मिला।
2. इसने ग्रामीण समाज में असमानताएँ बढ़ाईं।
3. इसने पट्टेदारों की बेदखली को जन्म दिया।
4. इसने मजदूरों की मांग को हर क्षेत्र में कम कर दिया।
5. यह पर्यावरण के लिए पूरी तरह से सुरक्षित थी।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 4 और 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) उपरोक्त सभी

74. 'संविदा खेती' में उगाई जाने वाली फसलें सामान्यतः किस प्रकार की होती हैं?
(A) विशिष्ट मदें जैसे फूल, फल और तिलहन
(B) पारंपरिक खाद्यान्न फसलें जैसे गेहूँ और चावल
(C) केवल स्थानीय उपभोग के लिए सब्जियाँ
(D) केवल चारा फसलें

75. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) है और दूसरा उसका कारण (R) है।
अभिकथन (A): उदारीकरण की नीतियों के बाद भारतीय किसानों को अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ रही है।
कारण (R): उदारीकरण की नीति के अंतर्गत विश्व व्यापार संगठन (WTO) के नियमों के तहत भारतीय बाज़ारों को आयात हेतु खोलना आवश्यक है।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

76. ग्रामीण भारत में भूस्वामित्व के असमान वितरण का क्या परिणाम है?
(A) सभी परिवार समान रूप से समृद्ध और आत्मनिर्भर हैं
(B) कुछ परिवार समृद्ध हैं जबकि बड़ी संख्या में लोग गरीब हैं
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में गरीबी की कोई वास्तविक समस्या नहीं है
(D) भूमिहीन परिवारों की संख्या गाँवों में बिल्कुल नगण्य है

77. हरित क्रांति के द्वितीय चरण में एकल फसली कृषि व्यवस्था अपनाने का क्या परिणाम हुआ?
(A) किसानों का जोखिम कम हो गया।
(B) आय में हमेशा वृद्धि हुई।
(C) फसल नष्ट होने पर किसानों की निर्भरता हेतु कुछ नहीं बचता था।
(D) जैव विविधता में वृद्धि हुई।

78. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. हरित क्रांति का आरंभ
2. औपनिवेशिक शासन की स्थापना
3. भारत की स्वतंत्रता
4. उदारीकरण की नीतियों की शुरुआत

(A) 2, 3, 1, 4
(B) 3, 2, 1, 4
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 1, 2, 4, 3

79. 'कृषि मज़दूरों का महिलाकरण' की स्थिति में महिलाओं की असुरक्षा का मुख्य कारण क्या है?
(A) वे पुरुषों से कम मज़दूरी पाती हैं और भूमि स्वामित्व से वंचित हैं
(B) उन्हें पुरुषों की तुलना में अधिक और नियमित मज़दूरी मिलती है

(C) वे केवल मौसमी आधार पर कृषि संबंधी काम करती हैं
(D) उनका काम शारीरिक रूप से बहुत ही कम थकाने वाला होता है

80. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (व्यवस्था/पद्धति)
P. ज़मींदारी
Q. रैयतवाड़ी
R. संविदा खेती
S. बेगार
सूची II: (विशेषता)
1. कृषक द्वारा सीधा कर भुगतान
2. बहुराष्ट्रीय कंपनियों से अनुबंध
3. मुफ़्त मज़दूरी
4. ज़मींदार द्वारा कर वसूली
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-4, Q-1, R-3, S-2
(C) P-4, Q-1, R-2, S-3
(D) P-2, Q-3, R-1, S-4

81. 1990 के दशक के मध्य से मज़दूरों के पलायन में वृद्धि का क्या कारण था?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती समानता
(B) ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती असमानताएँ
(C) कृषि का पूर्ण मशीनीकरण
(D) सरकारी नौकरियों की उपलब्धता

82. हरित क्रांति के बाद संपन्न किसानों ने अपने कृषि लाभ को कहाँ निवेश करना शुरु किया?
(A) अन्य प्रकार के व्यापारों में
(B) केवल कृषि भूमि खरीदने में
(C) सोने और आभूषणों में
(D) विदेशी बैंकों में

83. 'संविदा खेती' का समाजशास्त्रीय महत्त्व क्या है?
(A) यह स्थानीय किसानों के पारंपरिक कृषि ज्ञान को बढ़ावा देती है
(B) यह सभी ग्रामीणों को उत्पादन प्रक्रिया में सक्रिय रूप से शामिल करती है
(C) यह उत्पादन प्रक्रिया से अलग कर किसानों के ज्ञान को निरर्थक बनाती है
(D) यह केवल समाज के छोटे और सीमांत किसानों को सीधा लाभ पहुँचाती है

84. ग्रामीण भारत में भूमि के महत्व के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह उत्पादन का एक महत्वपूर्ण साधन है।
2. यह संपत्ति का एक महत्वपूर्ण प्रकार है।
3. यह केवल जीविका का एक प्रकार है, जीने का तरीका नहीं।
4. इसका वितरण सभी घरों में समान रूप से होता है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

85. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) है और दूसरा उसका कारण (R) है।
अभिकथन (A): स्वतंत्रता के बाद, नव ग्रामीण अभिजात वर्ग का उदय हुआ।
कारण (R): उच्च शिक्षा के विस्तार और व्यावसायिक अवसरों ने शिक्षित ग्रामीण युवाओं को नगरीय मध्य वर्गों में शामिल होने में सक्षम बनाया।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

86. भारत के कुछ भागों में, 40 से 50 प्रतिशत परिवारों के पास कोई भूमि नहीं होने का क्या अर्थ है?
(A) वे सभी सरकारी नौकरी करते हैं।
(B) उनकी जीविका कृषि मज़दूरी या अन्य कार्यों से चलती है।
(C) वे सभी बड़े व्यापारी हैं।
(D) वे सभी गाँव छोड़कर जा चुके हैं।

87. भारत में कानूनी प्रावधानों के बावजूद महिलाओं को पारिवारिक संपत्ति में बराबर की हिस्सेदारी क्यों नहीं मिल पाती?
(A) क्योंकि महिलाएँ संपत्ति नहीं चाहती हैं।
(B) क्योंकि उनके पास वास्तव में बहुत सीमित अधिकार होते हैं।
(C) क्योंकि कानून केवल पुरुषों पर लागू होते हैं।
(D) क्योंकि उनके पास वास्तव में बहुत सीमित अधिकार होते हैं।

88. प्रबल भूस्वामी समूहों में सामान्यतः किन जातीय समूहों के लोग आते हैं?
(A) मध्य और ऊँची जातीय समूहों के लोग
(B) केवल अनुसूचित जातियों के लोग
(C) केवल ब्राह्मण वर्ण के लोग
(D) केवल अनुसूचित जनजातियों के लोग

89. औपनिवेशिक भारत के दौरान ज़मींदारी व्यवस्था में, किसान अपनी उपज का एक बड़ा हिस्सा किसे देते थे?
(A) सीधे ब्रिटिश सरकार को
(B) गाँव के पुजारी को
(C) स्थानीय राजा या ज़मींदार को
(D) साहूकार को

सूची II: (अर्थ)
1. कृषक
2. एम. एन. श्रीनिवास
3. मुफ़्त मज़दूरी
4. जान ब्रेमन
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

10. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन ग्रामीण भारत में जाति और वर्ग के संबंध में असत्य है?
(A) ऊँची जातिवालों के पास हमेशा अधिक भूमि और आमदनी होती है।
(B) ग्रामीण क्षेत्रों में जाति और वर्ग के संबंध जटिल होते हैं।
(C) भूस्वामित्व वाले समूह अक्सर 'शूद्र' या 'क्षत्रिय' वर्ण के होते हैं।
(D) सीमांत किसान और भूमिहीन लोग प्रायः निम्न जातीय समूहों के होते हैं।

11. हरित क्रांति के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह कृषि आधुनिकीकरण का एक सरकारी कार्यक्रम था।
2. यह सभी प्रकार की फसलों पर समान रुप से केंद्रित था।
3. इसे केवल उन्हीं क्षेत्रों में लागू किया गया जहाँ सिंचाई का समुचित प्रबंध था।
4. इसका मुख्य लक्ष्य गेहूँ तथा चावल का उत्पादन बढ़ाना था।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) उपरोक्त सभी

12. स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार द्वारा किए गए भूमि सुधारों का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) कृषि उत्पादन कम करना और आयात पर निर्भरता बढ़ाना
(B) कृषि की उन्नति और भूस्वामित्व में सुधार करना
(C) ज़मींदारों की शक्तियों को और अधिक मजबूत करना
(D) किसानों को कृषि छोड़कर शहरों में बसने के लिए प्रोत्साहित करना

13. 'बेनामी हस्तांतरण' क्या था?
(A) सरकार द्वारा भूमिहीनों को कानून की सहायता से कानूनी रुप से ज़मीन का आवंटन करना
(B) भूस्वामियों द्वारा हदबंदी कानून से बचने हेतु ज़मीन रिश्तेदारों के नाम करना
(C) भूस्वामियों द्वारा हदबंदी कानून से बचने हेतु ज़मीन रिश्तेदारों के नाम करना
(D) दो पड़ोसी राज्यों के मध्य विवादित ग्रामीण भूमि का औपचारिक तौर पर आदान-प्रदान

14. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. ज़मींदारी व्यवस्था का उन्मूलन
2. हरित क्रांति का प्रथम चरण
3. औपनिवेशिक काल में रैयतवाड़ी व्यवस्था का प्रचलन
4. उदारीकरण की नीति का आरंभ
(A) 3, 1, 2, 4
(B) 1, 3, 2, 4
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 3, 2, 4, 1

15. औपनिवेशिक भारत में ज़मींदारी व्यवस्था का कृषि उत्पादन पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) कृषि उत्पादन कम होने लगा।
(B) कृषि उत्पादन में तीव्र वृद्धि हुई।
(C) किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार हुआ।
(D) ज़मींदारों ने किसानों पर कर कम कर दिया।

16. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) है और दूसरा उसका कारण (R) है।
अभिकथन (A): हरित क्रांति के प्रथम चरण में ग्रामीण समाज में असमानताएँ बढ़ीं।
कारण (R): हरित क्रांति की तकनीकें महँगी थीं, जिनका लाभ केवल मध्यम और बड़े किसान ही उठा सके।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

17. रैयतवाड़ी व्यवस्था में टैक्स चुकाने के लिए कौन ज़िम्मेदार होता था?
(A) ज़मींदार
(B) वास्तविक कृषक
(C) स्थानीय राजा
(D) ब्रिटिश सरकार सीधे

18. निम्नलिखित में से किस राज्य में भूमि सुधारों के कारण कृषिक संरचना में आमूल-चूल परिवर्तन आए और पट्टेदारों को भूमि के अधिकार दिए गए?
(A) पश्चिम बंगाल और केरल
(B) पंजाब और हरियाणा
(C) उत्तर प्रदेश और बिहार
(D) गुजरात और महाराष्ट्र

19. हरित क्रांति के दूसरे चरण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह 1980 के दशक में शुरु हुआ।
2. इसमें सूखे तथा आंशिक सिंचित क्षेत्रों के किसान शामिल

(D) यह व्यवस्था कानूनी रूप से वर्तमान में पूरे भारत में पूरी तरह से मान्य है

100. भूमि की हदबंदी तय करते समय किन कारकों पर ध्यान दिया जाता था?
(A) केवल परिवार के सदस्यों की संख्या पर
(B) केवल किसान की जाति पर
(C) केवल किसान की राजनीतिक संबद्धता पर
(D) भूमि के प्रकार, उपज और अन्य कारकों पर

101. किसानों द्वारा आत्महत्या की घटनाओं का संबंध किससे जोड़ा गया है?
(A) किसानों की अत्यधिक समृद्धि से
(B) सरकारी सहायता में भारी वृद्धि से
(C) कृषि में संरचनात्मक परिवर्तन और नई आर्थिक नीतियों से
(D) पारंपरिक खेती की ओर वापसी से

102. औपनिवेशिक काल और स्वतंत्रता के बाद की कृषिक संरचना में क्या निरंतरता रही?
(A) ज़मींदारों का प्रभुत्व वैसा ही बना रहा।
(B) पूर्व-औपनिवेशिक काल की प्रबल जाति ही बाद में भी कृषक जाति बनी रही।
(C) भूमि का वितरण पूरी तरह से समान हो गया।
(D) रैयतवाड़ी व्यवस्था पूरे भारत में लागू कर दी गई।

103. 'संविदा खेती' को बढ़ावा देने का एक परिणाम क्या है?
(A) स्थानीय खाद्यान्न उत्पादन के लिए कृषि भूमि का प्रयोग बढ़ना
(B) छोटे किसानों की अपनी फसलों के प्रति आत्मनिर्भरता बढ़ना
(C) रासायनिक कीटनाशकों और उर्वरकों का प्रयोग काफी कम होना
(D) कृषि भूमि का प्रयोग खाद्यान्न से हटकर निर्यातोन्मुखी उत्पादों हेतु होना

104. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (राज्य)
P. केरल
Q. पंजाब
R. पश्चिम बंगाल
S. पश्चिमी उत्तर प्रदेश
सूची II: (विशेषता)
1. सफल पट्टेदारी सुधार
2. हरित क्रांति का प्रमुख केंद्र
3. मिश्रित अर्थव्यवस्था और विदेशी धन
4. गन्ना और गेहूँ उत्पादन क्षेत्र
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-3, Q-2, R-1, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-3, S-2

105. ग्रामीण समाज में विकास और परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारतीय समाज प्राथमिक रूप से नगरीय समाज है।
2. भूमि उत्पादन का एकमात्र महत्वपूर्ण साधन है।
3. जाति और वर्ग के संबंध ग्रामीण क्षेत्रों में जटिल होते हैं।
4. हरित क्रांति ने क्षेत्रीय असमानताओं को जन्म दिया।
5. भूमंडलीकरण का ग्रामीण समाज पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 5
(D) उपरोक्त सभी

106. भारत के अधिकांश क्षेत्रों में भूस्वामित्व वाले समूहों में मुख्य रूप से किस वर्ण के लोग हैं?
(A) शूद्र या क्षत्रिय
(B) ब्राह्मण या वैश्य
(C) केवल ब्राह्मण
(D) केवल क्षत्रिय

107. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) है और दूसरा उसका कारण (R) है।
अभिकथन (A): ज़मींदारी व्यवस्था के उन्मूलन के बाद भी, भारत में कृषिक संरचना में बहुत असमानता बची हुई है।
कारण (R): भूमि हदबंदी जैसे अन्य भूमि सुधार कानून बड़े पैमाने पर अप्रभावी रहे।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

108. स्वतंत्रता के बाद कृषि विकास से समृद्ध हुए किसानों ने किस चीज़ का मार्ग प्रशस्त किया?
(A) पारंपरिक जमींदार वर्ग के पुनरुत्थान का
(B) नए उद्यमी समूह और क्षेत्रीय अभिजात वर्ग के उदय का
(C) ग्रामीण अर्थव्यवस्था के पूर्ण और तीव्र पतन का
(D) कृषि से किसानों के पूर्ण और स्थायी अलगाव का

109. प्रवासी मज़दूरों के संदर्भ में 'संचार (सरकुलेशन)' का क्या अर्थ है?
(A) एक ही गाँव में स्थायी रूप से काम करना
(B) कृषि कार्य पूरी तरह से छोड़ देना
(C) काम की तलाश में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में मौसमी पलायन
(D) केवल संचार माध्यमों का उपयोग करना

110. 'कृषि के भूमंडलीकरण' की प्रक्रिया का क्या अर्थ है?
(A) कृषि को केवल स्थानीय बाज़ारों तक सीमित रखना
(B) केवल जैविक खेती को बढ़ावा देना

प्रदान को विनियमित करना।
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उत्पादन और उत्पादकता को निरंतर बढ़ावा देना।
(D) ग्रामीण प्रशासन में आधुनिक लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को प्रभावी रूप से स्थापित करना।

152. स्रोत के अनुसार, ग्रामीण भारत में शक्ति का मुख्य स्रोत क्या था?
(A) भूमि का स्वामित्व।
(B) धार्मिक ज्ञान का स्वामित्व।
(C) सैन्य कौशल पर अधिकार।
(D) व्यापारिक नेटवर्क पर नियंत्रण।

153. एम. एन. श्रीनिवास द्वारा दी गई 'प्रबल जाति' की अवधारणा में निम्नलिखित में से कौन सा तत्व शामिल नहीं है?
(A) संख्यात्मक शक्ति।
(B) भूमि के स्वामित्व के माध्यम से आर्थिक प्रभुत्व।
(C) पूर्णतः भूमिहीन स्थिति।
(D) राजनीतिक प्रभाव।

154. स्रोत यह बताता है कि पारंपरिक कृषिक संरचना का परिणाम क्या हुआ?
(A) ग्रामीण समाज के भीतर सामाजिक और आर्थिक पूर्ण समानता की स्थापना।
(B) सेवा प्रदान करने वाली जातियों का व्यापक स्तर पर आर्थिक सशक्तीकरण।
(C) भू-स्वामी जातियों के मध्य कृषि योग्य भूमि का पूर्णतः समान वितरण।
(D) भूमिहीनता और जाति पदानुक्रम के बीच एक गहरा संरचनात्मक संबंध।

155. जजमानी व्यवस्था को 'पदानुक्रमित और शोषक' क्यों माना गया है?
(A) क्योंकि यह सेवा प्रदाता और भू-स्वामी दोनों वर्गों को पूर्णतः समान आर्थिक लाभ देती थी।
(B) क्योंकि यह भूमिहीन श्रमिकों को भविष्य में स्वयं की भूमि खरीदने के पर्याप्त अवसर देती थी।
(C) क्योंकि यह भू-स्वामी जातियों के पक्ष में थी और निम्न जातियों के श्रम का मूल्य कम करती थी।
(D) क्योंकि यह सभी जातियों को उनकी इच्छा के अनुसार कोई भी पेशा चुनने की पूर्ण स्वतंत्रता देती थी।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

स्वतंत्रता के पश्चात भारत सरकार ने ग्रामीण समाज में व्याप्त गहरी संरचनात्मक असमानताओं को संबोधित करने के उद्देश्य से भूमि सुधारों की एक महत्वाकांक्षी श्रृंखला शुरू की। इन सुधारों के तीन मुख्य स्तंभ थे: (1) ज़मींदारों जैसे बिचौलियों का उन्मूलन, (2) काश्तकारी सुधार, और (3) भूमि की हदबंदी (Land Ceiling)। बिचौलियों के उन्मूलन का उद्देश्य राज्य और वास्तविक कृषक के बीच मौजूद परजीवी वर्गों को हटाना था, जिसने सैद्धांतिक रूप से लाखों काश्तकारों को भूमि का मालिक बनाया। काश्तकारी सुधारों के तहत, पट्टे पर खेती करने वालों को कार्यकाल की सुरक्षा और उचित किराए का प्रावधान किया गया। भूमि हदबंदी कानूनों का लक्ष्य भूमि के स्वामित्व की एक ऊपरी सीमा निर्धारित करना और अतिरिक्त भूमि को भूमिहीनों, विशेष रूप से दलितों और आदिवासियों के बीच पुनर्वितरित करना था। हालाँकि, इन सुधारों का कार्यान्वयन अत्यंत असमान और प्रायः अप्रभावी रहा। शक्तिशाली भू-स्वामी लॉबी ने अपने राजनीतिक रसूख का उपयोग करके कानूनों में कई खामियाँ (loopholes) छोड़ दीं। 'बेनामी हस्तांतरण' (Benami transfers) जैसी युक्तियों का व्यापक रूप से उपयोग किया गया, जहाँ भू-स्वामियों ने अपनी अतिरिक्त भूमि को कानूनी सीमा से बचने के लिए अपने रिश्तेदारों, नौकरों या यहाँ तक कि काल्पनिक नामों पर पंजीकृत कर दिया। परिणामस्वरूप, पुनर्वितरण के लिए बहुत कम भूमि उपलब्ध हो पाई। केरल और पश्चिम बंगाल जैसे कुछ अपवादों को छोड़कर, जहाँ मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति और किसान आंदोलनों के कारण सुधारों को अधिक सफलतापूर्वक लागू किया गया, अधिकांश भारत में भूमि सुधार अपने सामाजिक-आर्थिक न्याय के लक्ष्य को प्राप्त करने में विफल रहे।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. स्वतंत्रता के बाद भारत में भूमि सुधारों का प्राथमिक उद्देश्य क्या था?
(A) कृषि उत्पादन का मशीनीकरण करना।
(B) ग्रामीण समाज में संरचनात्मक असमानताओं को कम करना।
(C) कृषि निर्यात को बढ़ावा देना।
(D) ग्रामीण क्षेत्रों में शहरीकरण की प्रक्रिया को तेज करना।

157. 'भूमि की हदबंदी' (Land Ceiling) अधिनियमों का मुख्य लक्ष्य क्या था?
(A) कृषि भूमि पर कर बढ़ाना।
(B) सभी कृषि भूमि का राष्ट्रीयकरण करना।
(C) केवल व्यावसायिक फसलों के लिए भूमि के उपयोग को सीमित करना।
(D) एक परिवार द्वारा रखी जा सकने वाली भूमि की अधिकतम सीमा तय करना।

158. 'बेनामी हस्तांतरण' की युक्ति का प्रयोग भू-स्वामियों द्वारा क्यों किया गया?
(A) हदबंदी कानूनों से बचने और अपनी अतिरिक्त भूमि को गुप्त रूप से अपने पास रखने के लिए।
(B) अपनी कृषि भूमि पर सरकार से विभिन्न प्रकार की वित्तीय सब्सिडी प्राप्त करने के लिए।
(C) अपनी भूमि को सामाजिक कार्यों हेतु दान में देने की विधिक प्रक्रिया को सरल बनाने के लिए।
(D) अपनी कृषि भूमि पर आधुनिक तकनीकों के माध्यम से कृषि उत्पादकता को निरंतर बढ़ाने के लिए।

(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) उपरोक्त सभी

121. "हरित क्रांति की फसलें अधिक लाभ वाली थीं"। इसका मुख्य कारण क्या था?
(A) वे कम पानी में उग जाती थीं।
(B) उनकी खेती में लागत कम आती थी।
(C) उनसे अधिक उत्पादन होता था।
(D) सरकार उन पर कोई कर नहीं लगाती थी।

122. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) है और दूसरा उसका कारण (R) है।
अभिकथन (A): हरित क्रांति के कारण कई क्षेत्रों में सेवा प्रदान करने वाली जातियों का विस्थापन हुआ।
कारण (R): कृषि में मशीनीकरण ने उन पारंपरिक कार्यों को समाप्त कर दिया जो ये जातियाँ करती थीं।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

123. कृषि के भूमंडलीकरण के तहत बहुराष्ट्रीय कंपनियों की क्या भूमिका है?
(A) केवल किसानों से उत्पाद खरीदने की
(B) किसानों को मुफ्त तकनीकी सलाह देने की
(C) कृषि विस्तार एजेंटों की सहायता करने की
(D) बीज, कीटनाशक और खाद के विक्रेता के रूप में

124. किसानों की महँगी खाद और कीटनाशकों पर निर्भरता बढ़ने का क्या परिणाम हुआ है?
(A) उनका लाभ बढ़ा है और वे ऋण मुक्त हो गए हैं।
(B) उनका लाभ कम हुआ है और कई किसान ऋणी हो गए हैं।
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में पर्यावरण संकट कम हुआ है।
(D) पारंपरिक ज्ञान को बढ़ावा मिला है।

125. 1960 के दशक के बाद ग्रामीण सामाजिक संरचना में परिवर्तन का एक प्रमुख कारक क्या था?
(A) पारंपरिक जाति व्यवस्था का सुदृढ़ होना
(B) कृषि का पूरी तरह से पतन
(C) नई तकनीक अपनाने वाले किसानों की समृद्धि
(D) शहरों से गाँवों की ओर बड़े पैमाने पर पलायन

126. भारत में कृषि की प्रकृति और अभ्यास में क्षेत्रीय भिन्नता का क्या परिणाम है?
(A) पूरे देश में एक समान संस्कृति का विकास
(B) कृषि और संस्कृति के बीच कोई संबंध नहीं
(C) ग्रामीण सामाजिक संरचना का मानकीकरण
(D) विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियों का बिंबन

127. निम्नलिखित में से कौन सा समूह पारंपरिक रूप से ग्रामीण भारत में अकृषि क्रियाकलापों में शामिल रहा है?
(A) कुम्हार, खाती, जुलाहे और लुहार
(B) केवल बड़े भूस्वामी
(C) केवल सरकारी कर्मचारी
(D) केवल प्रवासी मज़दूर

128. ग्रामीण भारत में जाति और वर्ग के संबंधों के बारे में कौन सा कथन सबसे सटीक है?
(A) जाति और वर्ग हमेशा एक दूसरे के पर्यायवाची होते हैं।
(B) जाति और वर्ग के बीच एक पारस्परिकता है, लेकिन यह हमेशा पूर्ण नहीं होती।
(C) ऊँची जाति का होना हमेशा उच्च वर्ग का सूचक होता है।
(D) जाति का वर्ग निर्धारण में कोई भूमिका नहीं है।

129. भू-सुधारों के लक्ष्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. पैदावार बढ़ाना
2. आयातित अनाज पर निर्भरता कम करना
3. ग्रामीण गरीबी को गहरा करना
4. भूस्वामित्व व्यवस्था में सुधार करना
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

130. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (स्थान)
P. तमिलनाडु
Q. असम
R. पंजाब
S. कर्नाटक
सूची II: (त्योहार)
1. बीहू
2. उगाड़ी
3. पोंगल
4. बैसाखी
(A) P-3, Q-1, R-4, S-2
(B) P-3, Q-1, R-4, S-2
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

131. हरित क्रांति के बाद, कुछ क्षेत्रों में मजदूरों की मांग बढ़ने के बावजूद ग्रामीण मजदूरों की आर्थिक दशा खराब क्यों हो गई?
(A) क्योंकि कीमतें स्थिर रहीं और भुगतान खाद्यान्न में होता रहा।
(B) भुगतान में बढ़ोतरी हुई और भुगतान खाद्यान्न के स्थान पर नगद होने लगा।
(C) क्योंकि कीमतें में बढ़ोतरी हुई और भुगतान खाद्यान्न के स्थान पर नगद होने लगा।

समृद्ध कृषि क्षेत्रों (जैसे पंजाब और हरियाणा में फसल कटाई के मौसम में) या शहरी निर्माण स्थलों पर उच्च मजदूरी और काम की उपलब्धता शामिल है। इन प्रवासी श्रमिकों का जीवन अत्यंत कठिन होता है। वे अक्सर अनिश्चित परिस्थितियों में काम करते हैं, उन्हें न्यूनतम मजदूरी से भी कम भुगतान किया जाता है और सामाजिक सुरक्षा का कोई लाभ नहीं मिलता। उनके प्रवासन का एक महत्वपूर्ण सामाजिक परिणाम 'कृषि का नारीकरण' (Feminization of Agriculture) है। जब पुरुष काम के लिए प्रवास कर जाते हैं, तो महिलाएँ गाँव में पीछे रह जाती हैं और उन्हें न केवल घर-परिवार, बल्कि कृषि कार्यों की भी पूरी जिम्मेदारी उठानी पड़ती है। इस प्रकार, पुरुष प्रवासन ग्रामीण श्रम बाजार और पारिवारिक संरचनाओं को गहराई से बदल देता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. जान ब्रेमन का 'फूटलूज़ लेबर' (घुमक्कड़ मजदूर) का सिद्धांत किन मजदूरों का वर्णन करता है?
(A) जो ग्रामीण क्षेत्रों को छोड़कर स्थायी रूप से बड़े शहरों में बस गए हैं।
(B) जो काम और बेहतर आय की तलाश में मौसमी रूप से अन्य क्षेत्रों में प्रवास करते हैं।
(C) जो केवल अपने मूल गाँव के भीतर ही कृषि या अन्य स्थानीय कार्य करते हैं।
(D) जो शहरी औद्योगिक कारखानों में नियमित और स्थायी कर्मचारी के रूप में कार्यरत हैं।

167. निम्नलिखित में से कौन सा श्रम प्रवासन के लिए एक 'पुल' (खींचने वाला) कारक है?
(A) मूल गाँव में गरीबी।
(B) समृद्ध क्षेत्रों में उच्च मजदूरी की उपलब्धता।
(C) मूल क्षेत्र में रोजगार की कमी।
(D) कृषि संकट और फसल की विफलता।

168. 'कृषि का नारीकरण' (Feminization of Agriculture) शब्द का क्या अर्थ है?
(A) पुरुष प्रवासन के कारण कृषि कार्यों में महिलाओं की बढ़ती भूमिका और जिम्मेदारी।
(B) कृषि कार्यों में ग्रामीण महिलाओं की सक्रिय भागीदारी और कार्यबल में निरंतर कमी।
(C) केवल महिला कृषकों के लिए विशेष रूप से अनुकूल कृषि तकनीकों का तीव्र विकास।
(D) ग्रामीण महिलाओं के नाम पर कृषि भूमि के मालिकाना हक का व्यापक स्तर पर हस्तांतरण।

169. स्रोत के अनुसार, परिसंचारी प्रवासी श्रमिकों की कार्य दशाओं की एक मुख्य विशेषता क्या है?
(A) उच्च वेतन और स्थायी रोजगार।
(B) मजबूत सामाजिक सुरक्षा लाभ।
(C) अनिश्चित परिस्थितियाँ और शोषण।
(D) सुरक्षित और विनियमित कार्य वातावरण।

170. परिसंचारी प्रवासन को प्रेरित करने वाले 'पुश' (धकेलने वाले) कारक का एक उदाहरण क्या है?
(A) शहरी क्षेत्रों में बेहतर जीवन शैली।
(B) निर्माण स्थलों पर श्रम की मांग।
(C) फसल कटाई के मौसम में अधिक मजदूरी।
(D) प्रवासी के मूल गाँव में कृषि संकट।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भूमंडलीकरण और उदारीकरण की प्रक्रियाओं ने भारतीय ग्रामीण समाज को गहराई से प्रभावित किया है, जिसका एक प्रमुख उदाहरण 'संविदा कृषि' (Contract Farming) का विस्तार है। इस व्यवस्था के तहत, किसान और बहुराष्ट्रीय या घरेलू कंपनियाँ एक अनुबंध में प्रवेश करती हैं। कंपनियाँ किसानों को पूर्व-निर्धारित गुणवत्ता मानकों और मात्रा के अनुसार विशिष्ट फसलें (जैसे टमाटर, आलू, या विशेष फूल) उगाने के लिए कहती हैं। अनुबंध के हिस्से के रूप में, कंपनियाँ अक्सर बीज, उर्वरक और तकनीकी सलाह जैसे इनपुट प्रदान करती हैं और फसल को एक पूर्व-निर्धारित मूल्य पर खरीदने का आश्वासन देती हैं। इसके समर्थकों का तर्क है कि यह किसानों को बाजार के उतार-चढ़ाव के जोखिम से बचाता है और उन्हें एक सुनिश्चित आय प्रदान करता है। हालाँकि, इसके कई नकारात्मक पहलू भी हैं। किसान अपनी स्वायत्तता खो देते हैं और इन शक्तिशाली निगमों पर अत्यधिक निर्भर हो जाते हैं। अनुबंध की शर्तें अक्सर कंपनियों के पक्ष में होती हैं। यह व्यवस्था खाद्य फसलों के बजाय नकदी फसलों (cash crops) की खेती को बढ़ावा देती है, जिससे स्थानीय खाद्य सुरक्षा पर खतरा उत्पन्न हो सकता है। इसके अलावा, संविदा कृषि अक्सर मोनोकल्चर (एकल-फसल) और रासायनिक इनपुट के गहन उपयोग को प्रोत्साहित करती है, जो पर्यावरण और मिट्टी के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक हो सकता है। इस प्रकार, संविदा कृषि किसानों के लिए अवसर और जोखिम दोनों प्रस्तुत करती है, और यह ग्रामीण भारत में कृषि-कॉर्पोरेट संबंधों के बदलते स्वरूप का प्रतीक है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. 'संविदा कृषि' की व्यवस्था में किसान और किसके बीच अनुबंध होता है?
(A) स्थानीय सरकार के बीच।
(B) अन्य किसानों के बीच।
(C) कॉर्पोरेट कंपनियों के बीच।
(D) ग्राम पंचायत के बीच।

172. संविदा कृषि के समर्थकों द्वारा दिया जाने वाला एक मुख्य तर्क क्या है?
(A) यह किसानों को पूरी तरह से स्वायत्त बनाता है।
(B) यह किसानों को बाजार के उतार-चढ़ाव के जोखिम से बचाता है।
(C) यह हमेशा पारंपरिक खाद्य फसलों की खेती को बढ़ावा देता है।
(D) यह कृषि में रासायनिक इनपुट के उपयोग को समाप्त

(C) ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों का निर्माण
(D) ग्रामीण स्कूलों की स्थापना करना

144. 'संविदा खेती' को पर्यावरण की दृष्टि से असुरक्षित क्यों माना जा सकता है?
(A) क्योंकि इसमें जैविक खादों का प्रयोग होता है।
(B) क्योंकि इसमें खाद तथा कीटनाशक का उच्च मात्रा में प्रयोग होता है।
(C) क्योंकि इसमें पानी का प्रयोग कम होता है।
(D) क्योंकि इसमें पारंपरिक बीजों का प्रयोग होता है।

145. किसानों की आत्महत्या के लिए उत्तरदायी सामाजिक संकटों में क्या शामिल है?
(A) परिवारों में सहयोग बढ़ना
(B) कृषि कार्यों का वैयक्तीकरण
(C) सामुदायिक समर्थन में वृद्धि
(D) सरकार से पूर्ण सहयोग मिलना

146. कृषि से संबंधित विभिन्न चरणों को सही कालक्रम में व्यवस्थित करें:
1. पारंपरिक जाजमनि व्यवस्था का प्रचलन
2. कृषि का व्यापारीकरण
3. हरित क्रांति द्वारा गहन कृषि
4. मुक्त दिहाड़ी मजदूरों का उदय
(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 4, 3, 1, 2

147. भूमि सुधारों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. इनका उद्देश्य कृषि उन्नति और सामाजिक न्याय था।
2. ज़मींदारी उन्मूलन सबसे प्रभावी सुधार था।
3. भूमि हदबंदी कानून व्यापक रूप से सफल रहे।
4. पश्चिम बंगाल और केरल में पट्टेदारी सुधार सफल रहे।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 1 और 3
(D) उपरोक्त सभी

148. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें एक अभिकथन (A) है और दूसरा उसका कारण (R) है।
अभिकथन (A): स्वतंत्रता के बाद, भारत की कृषि स्थिति निराशाजनक थी।
कारण (R): पैदावार का कम होना, आयातित अनाज पर निर्भरता और गहन गरीबी मुख्य मुद्दे थे।
(A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
(B) A और R दोनों सत्य हैं लेकिन R, A की सही व्याख्या नहीं है।
(C) A सत्य है लेकिन R असत्य है।
(D) A असत्य है लेकिन R सत्य है।

149. गन्ना उत्पादित क्षेत्रों में मज़दूर प्रवास का एक विशिष्ट प्रतिमान क्या है?
(A) स्थानीय मज़दूर हमेशा गाँव में ही काम करते हैं
(B) प्रवासी मज़दूरों को कभी काम पर नहीं रखा जाता
(C) स्थानीय मज़दूर बाहर जाते हैं जबकि प्रवासी खेतों में आते हैं
(D) इन क्षेत्रों में कोई मज़दूर प्रवास नहीं होता है

150. भूमंडलीकरण के युग में सरकार के 'कृषि विकास कार्यक्रमों' में कमी का क्या परिणाम हुआ?
(A) किसानों की सरकारी एजेंटों पर निर्भरता बढ़ी है।
(B) 'कृषि विस्तार' एजेंटों का स्थान बहुराष्ट्रीय कंपनियों के एजेंटों ने ले लिया है।
(C) किसानों ने आधुनिक बीज और खाद का उपयोग बंद कर दिया है।
(D) कृषि में निजी कंपनियों का प्रवेश पूरी तरह से प्रतिबंधित हो गया है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारतीय ग्रामीण समाज की संरचना ऐतिहासिक रूप से जाति-आधारित श्रम विभाजन और भूमि के असमान वितरण पर आधारित रही है। पारंपरिक 'जजमानी' व्यवस्था के तहत, विभिन्न जाति समूहों के बीच आर्थिक और सामाजिक आदान-प्रदान की एक जटिल प्रणाली विद्यमान थी, जहाँ सेवा प्रदान करने वाली जातियाँ (जैसे लोहार, कुम्हार, नाई) प्रमुख भू-स्वामी जातियों को अपनी सेवाएँ प्रदान करती थीं और बदले में उन्हें फसल का एक हिस्सा या अन्य वस्तुएँ प्राप्त होती थीं। यह व्यवस्था पारस्परिक निर्भरता पर आधारित होने का दावा करती थी, परंतु व्यवहार में यह पदानुक्रमित और शोषक थी। भूमि का स्वामित्व, जो ग्रामीण शक्ति का मुख्य स्रोत था, मुख्य रूप से तथाकथित 'उच्च' और 'मध्यम' जातियों के हाथों में केंद्रित था, जिन्हें समाजशास्त्री एम. एन. श्रीनिवास ने 'प्रबल जाति' (Dominant Caste) के रूप में वर्णित किया है। प्रबल जातियाँ वे थीं जिनके पास संख्यात्मक शक्ति, आर्थिक प्रभुत्व (भूमि के स्वामित्व के माध्यम से) और राजनीतिक प्रभाव था। इसके विपरीत, दलित और अन्य निम्न जातियाँ बड़े पैमाने पर भूमिहीन थीं और कृषि श्रमिक के रूप में काम करने के लिए विवश थीं। इस कृषिक संरचना ने न केवल आर्थिक असमानताओं को जन्म दिया, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक मानदंडों को भी मजबूत किया, जहाँ भूमि पर नियंत्रण और जातिगत श्रेष्ठता एक दूसरे के पर्याय बन गए थे। उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. पारंपरिक ग्रामीण भारत में 'जजमानी' व्यवस्था का प्राथमिक कार्य क्या था?
(A) ग्रामीण समाज की सभी जातियों के मध्य धन का समान वितरण सुनिश्चित करना।
(B) जाति समूहों के बीच आर्थिक और सामाजिक आदान-

ANSWERS

1. (B) 69 प्रतिशत
2011 की जनगणना के आँकड़े दर्शाते हैं कि भारत की कुल जनसंख्या का लगभग 69 प्रतिशत भाग आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है। यद्यपि शहरीकरण की गति तीव्र है, फिर भी आबादी का एक बड़ा हिस्सा अपनी आजीविका के लिए कृषि और संबद्ध ग्रामीण गतिविधियों पर निर्भर है। यह तथ्य भारतीय समाज की मूल संरचना के ग्रामीण स्वरूप और महत्व को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।

2. (A) दीपावली
पोंगल, बीहू और बैसाखी जैसे त्योहार भारत के विभिन्न क्षेत्रों में मुख्य रूप से फसलों की कटाई के उल्लास से जुड़े हुए हैं। ये त्योहार कृषि चक्र की पूर्णता और नई उपज के आगमन का प्रतीक माने जाते हैं। दीपावली प्रकाश का त्योहार है और इसका प्राथमिक संबंध फसल कटाई की प्रक्रिया से नहीं है। ग्रामीण संस्कृति में कटाई से जुड़े त्योहारों का विशेष सामाजिक महत्व होता है।

3. (C) आर्थिक और राजनीतिक रूप से स्थानीय प्रभुत्व रखने वाली भूस्वामी जाति
प्रबल जाति की अवधारणा एम. एन. श्रीनिवास ने ग्रामीण सामाजिक व्यवस्था को समझने हेतु प्रस्तुत की थी। यह उन जातियों को संदर्भित करती है जिनके पास स्थानीय स्तर पर कृषि भूमि का बड़ा हिस्सा होता है और जो संख्यात्मक रूप से भी प्रभावशाली होती हैं। ऐसी जातियाँ अपनी आर्थिक शक्ति के बल पर ग्रामीण राजनीति और सामाजिक पदानुक्रम में अन्य समूहों पर अपना गहरा प्रभुत्व और नियंत्रण बनाए रखती हैं।

4. (D) कथन 1 और कथन 2 दोनों सही हैं।
औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश मशीनी उत्पादों की प्रतिस्पर्धा ने भारतीय ग्रामीण हस्तशिल्प को भारी नुकसान पहुँचाया, जिससे पारंपरिक कारीगरों की आजीविका छिन गई। वर्तमान समय में ग्रामीण अर्थव्यवस्था का स्वरूप बदल रहा है और लोग केवल खेती तक सीमित नहीं हैं। अब कई ग्रामीण निवासी अपनी जीविका चलाने के लिए शहरों में कारखानों, निर्माण कार्यों और सरकारी सेवाओं जैसे विविध अकृषि क्रियाकलापों में सक्रिय रूप से संलग्न हैं।

5. (A) केवल 1, 2 और 3
स्वतंत्रता के पश्चात भारत में लागू किए गए भूमि सुधारों का प्रमुख उद्देश्य कृषि पैदावार बढ़ाना और ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त व्यापक निर्धनता को दूर करना था। इन कानूनों के माध्यम से संसाधनों का उचित वितरण कर सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने का प्रयास किया गया। हालांकि ये कानून राज्यों द्वारा लागू किए गए थे और इनका अप्रत्यक्ष संबंध देश के समग्र आर्थिक विकास और भविष्य के औद्योगिकीकरण से भी था।

6. (B) भूमि स्वामित्व के वितरण और कृषि उत्पादन की भूमिका पर आधारित ढांचा
कृषिक संरचना ग्रामीण समाज में भूमि के मालिकाना हक और कृषि कार्यों में विभिन्न समूहों की भागीदारी को स्पष्ट करने वाला एक सामाजिक-आर्थिक ढांचा है। यह निर्धारित करता है कि ज़मीन का नियंत्रण किसके पास है और उत्पादन की प्रक्रिया में कौन श्रमिक के रूप में कार्य करेगा। यह संरचना ग्रामीण क्षेत्रों में शक्ति संबंधों, वर्ग विभाजन और विभिन्न जातियों के बीच आर्थिक आदान-प्रदान के स्वरूप को भी परिभाषित करती है।

7. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
भारत के ग्रामीण समाज में पितृवंशीय नातेदारी व्यवस्था अत्यंत प्रभावी रही है, जहाँ संपत्ति का हस्तांतरण केवल पुरुष उत्तराधिकारियों को ही किया जाता था। इस पारंपरिक व्यवस्था के कारण महिलाओं को भूमि और अन्य अचल संपत्ति के मालिकाना हक से वंचित रखा गया। हालांकि कानूनी तौर पर अब स्थिति बदल गई है, परंतु सामाजिक रीति-रिवाजों और पितृसत्तात्मक मानसिकता के कारण महिलाओं का भूमि स्वामित्व आज भी नगण्य है।

8. (A) क्योंकि वे ज़मीन के मालिक को किराया चुकाते हैं।
काश्तकार या पट्टेधारी वे किसान होते हैं जिनके पास स्वयं की भूमि नहीं होती और वे दूसरों की ज़मीन पर खेती करते हैं। उनकी कृषि आय का एक बहुत बड़ा हिस्सा ज़मीन के मालिक को लगान या किराए के रूप में देना पड़ता है। इस अनिवार्य भुगतान के कारण उनके पास परिवार के भरण-पोषण और कृषि निवेश के लिए बहुत कम धन शेष बचता है, जिससे वे आर्थिक रूप से पिछड़ जाते हैं।

9. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
ग्रामीण समाजशास्त्र में बेगार का अर्थ बिना किसी पारिश्रमिक के जबरन काम कराना है। रैयत शब्द का प्रयोग वास्तविक कृषक के लिए किया जाता है जो भूमि पर खेती करता है। प्रबल जाति की समाजशास्त्रीय अवधारणा एम. एन. श्रीनिवास द्वारा दी गई थी। वहीं, घुमक्कड़ मज़दूर या 'फूटलूज़ लेबर' की अवधारणा प्रसिद्ध समाजशास्त्री जान ब्रेमन ने प्रवासन करने वाले श्रमिकों के सामाजिक और आर्थिक संदर्भ में प्रस्तुत की थी।

10. (A) ऊँची जातिवालों के पास हमेशा अधिक भूमि और आमदनी होती है।
ग्रामीण भारत में जाति और वर्ग के बीच गहरा संबंध है, परंतु यह कहना पूर्णतः सत्य नहीं है कि सभी उच्च जातियों के पास हमेशा अधिक भूमि होती है। कुछ क्षेत्रों में मध्यवर्ती या पिछड़ी जातियाँ भूस्वामी के रूप में अधिक शक्तिशाली बनकर उभरी हैं। यद्यपि दलित और निम्न जातियाँ अक्सर भूमिहीन होती हैं,

159. स्रोत के अनुसार, अधिकांश भारतीय राज्यों में भूमि सुधारों की विफलता का मुख्य कारण क्या था?
(A) अधिकांश स्थानीय किसानों में भूमि सुधार कार्यक्रमों के प्रति जागरूकता और रुचि का अभाव।
(B) कृषि कार्यों हेतु आवश्यक आधुनिक तकनीकी ज्ञान और पर्याप्त संसाधनों की भारी कमी।
(C) शक्तिशाली भू-स्वामी लॉबी का राजनीतिक प्रभाव और कानून में मौजूद विविध खामियाँ।
(D) कृषि विकास हेतु अंतरराष्ट्रीय संगठनों से प्राप्त होने वाली वित्तीय सहायता की निरंतर कमी।

160. किन राज्यों को भूमि सुधारों के अपेक्षाकृत सफल कार्यान्वयन के उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया गया है?
(A) केरल और पश्चिम बंगाल।
(B) पंजाब और हरियाणा।
(C) गुजरात और महाराष्ट्र।
(D) उत्तर प्रदेश और बिहार।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

1960 के दशक के मध्य में शुरु की गई हरित क्रांति भारतीय कृषि के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी। इसका उद्देश्य उच्च उपज वाले बीजों (HYV), रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और बेहतर सिंचाई सुविधाओं के एक पैकेज के माध्यम से खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता प्राप्त करना था। तकनीकी दृष्टिकोण से, यह कार्यक्रम सफल रहा और भारत को अनाज की कमी वाले देश से एक आत्मनिर्भर राष्ट्र में बदल दिया। हालाँकि, इसके सामाजिक-आर्थिक परिणाम अत्यंत जटिल और मिश्रित थे। हरित क्रांति का लाभ मुख्य रुप से उन किसानों को मिला जिनके पास पर्याप्त पूँजी और सिंचाई के साधन उपलब्ध थे, जैसे कि पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के बड़े और मध्यम किसान। इन क्षेत्रों में एक नए 'पूंजीवादी किसान' वर्ग का उदय हुआ जो बाजार के लिए उत्पादन करता था। इसके विपरीत, छोटे और सीमांत किसान, जिनके पास महंगी तकनीक में निवेश करने के लिए संसाधनों की कमी थी, पिछड़ गए। इससे ग्रामीण समाज के भीतर आर्थिक असमानता या 'विभेदीकरण' (differentiation) की प्रक्रिया तेज हो गई। कई छोटे किसानों को अपनी जमीन बेचनी पड़ी और वे खेतिहर मजदूर बनने पर मजबूर हो गए। इसके अतिरिक्त, हरित क्रांति ने क्षेत्रीय असमानताओं को भी बढ़ाया, क्योंकि इसका प्रभाव मुख्य रूप से सिंचित क्षेत्रों तक ही सीमित रहा और भारत के बड़े शुष्क भूमि वाले क्षेत्र इससे अछूते रहे। इस प्रकार, हरित क्रांति ने जहाँ एक ओर देश को खाद्य सुरक्षा प्रदान की, वहीं दूसरी ओर इसने ग्रामीण भारत में नई सामाजिक और आर्थिक दरारें भी पैदा कीं।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. हरित क्रांति कार्यक्रम का मुख्य तकनीकी घटक निम्नलिखित में से कौन सा नहीं था?
(A) उच्च उपज वाले बीज (HYV)।
(B) रासायनिक उर्वरक और कीटनाशक।
(C) बेहतर सिंचाई सुविधाएँ।
(D) पारंपरिक जैविक खेती के तरीके।

162. स्रोत के अनुसार, हरित क्रांति का सबसे महत्वपूर्ण सकारात्मक परिणाम क्या था?
(A) ग्रामीण आय का समान वितरण।
(B) खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता।
(C) सभी किसानों के लिए समृद्धि।
(D) कृषि में पारंपरिक ज्ञान का संरक्षण।

163. हरित क्रांति ने ग्रामीण समाज में 'विभेदीकरण' की प्रक्रिया को कैसे तेज किया?
(A) इसने समाज के सभी कृषकों और मजदूरों को व्यापक रूप से समान लाभ पहुँचाया।
(B) इसने ग्रामीण क्षेत्रों में व्याप्त सदियों पुराने जाति-आधारित भेदभाव को पूरी तरह समाप्त कर दिया।
(C) इसने संपन्न किसानों को और अधिक समृद्ध तथा निर्धन किसानों को और अधिक गरीब बनाया।
(D) इसने सभी भूमिहीन ग्रामीण मजदूरों को कृषि भूमि का कानूनी रुप से स्वामी बना दिया।

164. हरित क्रांति का लाभ मुख्य रूप से किन क्षेत्रों के किसानों को मिला?
(A) भारत के विशाल शुष्क भूमि वाले क्षेत्रों और कठिन पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले किसानों को।
(B) मुख्य रूप से केवल पूर्वी भारत के उपजाऊ तटीय मैदानी क्षेत्रों में रहने वाले किसानों को।
(C) देश के दूरस्थ जनजातीय क्षेत्रों और घने वन क्षेत्रों में निवास करने वाले गरीब किसानों को।
(D) पर्याप्त सिंचाई सुविधाओं और भारी पूँजी निवेश वाले क्षेत्रों के प्रगतिशील किसानों को।

165. हरित क्रांति के परिणामस्वरूप ग्रामीण समाज में किस नए वर्ग का उदय हुआ?
(A) पूर्णतः बाजार-उन्मुख आधुनिक 'पूंजीवादी किसान' वर्ग।
(B) समाज का प्राचीन और पारंपरिक भू-स्वामी जमींदार वर्ग।
(C) गाँवों में रहने वाला भूमिहीन स्थानीय कारीगरों का वर्ग।
(D) मौसमी रूप से विचरण करने वाला घुमंतू चरवाहा वर्ग।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था में एक महत्वपूर्ण परिघटना श्रम का प्रवासन है, जो कई रुपों में होता. है। एक प्रमुख प्रतिमान 'परिसंचारी प्रवासन' (Circular Migration) का है, जिसे समाजशास्त्री जान ब्रेमन ने 'फूटलूज लेबर' (घुमक्कड़ मजदूर) के रूप में वर्णित किया है। यह उन मजदूरों की स्थिति को संदर्भित करता है जो स्थायी रूप से अपने गाँव नहीं छोड़ते, बल्कि वर्ष के कुछ हिस्सों में काम की तलाश में मौसमी रूप से प्रवास करते हैं। यह प्रवासन 'पुश' (धकेलने वाले) और 'पुल' (खींचने वाले) कारकों के जटिल मिश्रण से प्रेरित होता है। 'पुश' कारकों में उनके मूल क्षेत्रों में कृषि संकट, रोजगार के अवसरों की कमी और गरीबी शामिल हैं। 'पुल' कारकों में

(C) सभी किसानों को समान सब्सिडी देना
(D) कृषि को विस्तृत अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में सम्मिलित किया जाना

111. हरित क्रांति कार्यक्रम क्यों केवल सिंचाई का समुचित प्रबंध वाले क्षेत्रों में लागू किया गया था?
(A) क्योंकि नए बीजों हेतु समुचित जल की आवश्यकता थी
(B) क्योंकि इन क्षेत्रों के किसान अधिक शिक्षित थे
(C) क्योंकि सरकार अन्य पिछड़े क्षेत्रों का विकास नहीं करना चाहती थी
(D) क्योंकि इन क्षेत्रों में भूमि का वितरण पूरी तरह समान था

112. भारत में, भूमि सुधार कानूनों की एक श्रृंखला कब शुरु की गई?
(A) 1940 से 1950 के बीच
(B) 1950 से 1970 के बीच
(C) 1980 से 1990 के बीच
(D) 2000 के बाद

113. औपनिवेशिक काल की ज़मींदारी व्यवस्था और रैयतवाड़ी व्यवस्था में मुख्य अंतर क्या था?
(A) ज़मींदारी में कर कम था जबकि रैयतवाड़ी में कर की दर बहुत अधिक थी
(B) ज़मींदारी में बिचौलिया था जबकि रैयतवाड़ी में कृषक सीधे जुड़ा था
(C) ज़मींदारी व्यवस्था उत्पादन बढ़ाती थी जबकि रैयतवाड़ी उत्पादन घटाती थी
(D) ज़मींदारी पूरे भारत में थी जबकि रैयतवाड़ी कुछ ही गाँवों तक सीमित थी

114. औपनिवेशिक काल से ग्रामीण व्यवसायों के स्वरुप में क्या परिवर्तन आया है?
(A) परंपरागत व्यवसाय जैसे कुम्हार, जुलाहे आदि टूट रहे हैं।
(B) परंपरागत व्यवसायों में वृद्धि हुई है।
(C) गाँवों में अकृषि क्रियाकलाप समाप्त हो गए हैं।
(D) सभी ग्रामीण केवल कृषि पर निर्भर हो गए हैं।

115. भू-सुधारों के परिणामों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ज़मींदारी उन्मूलन सर्वाधिक सफल रहा।
2. पट्टेदारी सुधार हर राज्य में समान रुप से सफल रहे।
3. भूमि हदबंदी अधिनियम पूरी तरह से विफल रहे।
4. बेनामी हस्तांतरण एक आम तरीका था जिससे हदबंदी से बचा गया।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) उपरोक्त सभी

116. 'हरित क्रांति' शब्द किसके लिए प्रयुक्त होता है?
(A) पर्यावरण संरक्षण आंदोलन के लिए
(B) वनीकरण कार्यक्रम के लिए
(C) ग्रामीण स्वच्छता अभियान के लिए
(D) कृषि आधुनिकीकरण के सरकारी कार्यक्रम के लिए

117. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए।
सूची I: (अवधारणा)
P. संरक्षण से शोषण
Q. विभेदीकरण
R. कृषि का महिलाकरण
S. संविदा खेती

सूची II: (विवरण)
1. धनी और निर्धन के बीच बढ़ती खाई
2. पुरुषों के प्रवास के कारण कृषि में महिलाओं की बढ़ती भूमिका
3. बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ कृषि अनुबंध
4. पारंपरिक संरक्षक-ग्राहक संबंधों का टूटना

(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

118. हरित क्रांति के बाद कृषि का व्यापारीकरण होने से ग्रामीण क्षेत्र विस्तृत अर्थव्यवस्था से कैसे जुड़े?
(A) गाँवों में मुद्रा का बहाव बढ़ा और व्यापार के अवसर बढ़े।
(B) गाँवों में मुद्रा का बहाव बढ़ा और व्यापार के अवसर बढ़े।
(C) व्यापार के अवसर कम हो गए।
(D) मुद्रा का गाँवों से बाहर की ओर बहाव हुआ।

119. पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे क्षेत्रों में कृषिक संरचना में कम बदलाव क्यों हुए?
(A) प्रभावशाली भू-सुधारों और राजनीतिक गतिशीलता के कारण
(B) औद्योगीकरण की प्रक्रिया के बहुत तेज होने के कारण
(C) हरित क्रांति की अभूतपूर्व और अत्यधिक सफलता के कारण
(D) प्रभावी भू-सुधारों और राजनीतिक गतिशीलता के अभाव के कारण

120. प्रवासन करने वाले मज़दूरों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. वे मुख्यतः सूखाग्रस्त और कम उत्पादकता वाले क्षेत्रों से आते हैं।
2. वे अक्सर पंजाब, हरियाणा या बड़े शहरों में काम करने जाते हैं।
3. जान ब्रेमन ने उन्हें 'घुमक्कड़ मज़दूर' कहा है।
4. उन्हें हमेशा न्यूनतम मज़दूरी और अच्छे काम के हालात मिलते हैं।
5. उनका शोषण आसानी से नहीं किया जा सकता है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 4 और 5

करता है।

173. स्रोत के अनुसार, संविदा कृषि का एक संभावित नकारात्मक परिणाम क्या है?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में किसानों की कुल वार्षिक आय में होने वाली निश्चित गिरावट।
(B) स्थानीय और वैश्विक बाजार तक किसानों की पहुंच का पूर्णतः और स्थायी रूप से समाप्त होना।
(C) आधुनिक कृषि में उन्नत और डिजिटल प्रौद्योगिकी के उपयोग पर सरकार द्वारा पूर्ण प्रतिबंध।
(D) किसानों की कंपनियों पर अत्यधिक निर्भरता और उनकी अपनी स्वायत्तता का कम होना।

174. संविदा कृषि किस प्रकार की फसलों की खेती को बढ़ावा दे सकती है, जिससे खाद्य सुरक्षा पर असर पड़ सकता है?
(A) खाद्य फसलों के बजाय नकदी फसलें।
(B) पारंपरिक अनाज जैसे बाजरा और ज्वार।
(C) दालें और फलियाँ।
(D) जैविक और प्राकृतिक रूप से उगाई गई सब्जियाँ।

175. संविदा कृषि में मोनोकल्चर (एकल-फसल) को प्रोत्साहित करने का संभावित पर्यावरणीय प्रभाव क्या है?
(A) जैव विविधता में वृद्धि।
(B) मिट्टी के स्वास्थ्य में सुधार।
(C) मिट्टी का क्षरण और पर्यावरणीय गिरावट।
(D) जल संरक्षण में वृद्धि।

(D) क्योंकि भूस्वामियों ने मजदूरी बहुत बढ़ा दी थी।

132. 'सावयवी उत्पाद' और 'संकर उत्पाद' के बीच स्थानीय मत में क्या अंतर बताया गया है?
(A) संकर उत्पाद को सावयवी से बेहतर माना जाता है।
(B) दोनों में कोई अंतर नहीं माना जाता है।
(C) संकर उत्पाद अधिक स्वादिष्ट होते हैं।
(D) सावयवी उत्पाद को संकर उत्पाद से अधिक स्वस्थ माना जाता है।

133. प्रवासी मजदूरों का संचार किस बात का एक महत्वपूर्ण परिवर्तन है?
(A) कृषि के स्थिरीकरण का
(B) ग्रामीण आत्मनिर्भरता का
(C) कृषि के व्यापारीकरण का
(D) पारंपरिक संरक्षण संबंधों की मजबूती का

134. भूमंडलीकरण और कृषि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत ने गेहूँ के आयात का फैसला किया।
2. इसने खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता की पूर्व नीति को उलट दिया।
3. यह अमेरिका के खाद्यान्न पर निर्भरता की स्मृति कराता है।
4. इस फैसले का कोई विवाद नहीं हुआ।
5. यह कृषि के स्थानीयकरण का संकेत है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 4 और 5
(B) केवल 1, 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) उपरोक्त सभी

135. 'संविदा खेती' में किसानों को बाज़ार की ओर से आश्वस्त क्यों महसूस होता है?
(A) क्योंकि वे अपनी उपज कहीं भी बेच सकते हैं।
(B) क्योंकि सरकार उनकी उपज खरीदने की गारंटी देती है।
(C) क्योंकि बाज़ार में हमेशा उच्च कीमतें मिलती हैं।
(D) क्योंकि कंपनी पूर्वनिर्धारित तय मूल्य पर उपज खरीदने का आश्वासन देती है।

136. ग्रामीण भारत में भूमि को सिर्फ संपत्ति का एक प्रकार क्यों नहीं माना जाता?
(A) क्योंकि यह जीने का एक तरीका भी है और संस्कृति से जुड़ा है।
(B) क्योंकि इसका कोई आर्थिक मूल्य नहीं है।
(C) क्योंकि इसका स्वामित्व केवल सरकार के पास होता है।
(D) क्योंकि इसका उपयोग केवल मनोरंजन के लिए होता है।

137. ग्रामीण भारत में अकृषि क्रियाकलापों का एक उदाहरण है:
(A) फसल काटना
(B) खेत जोतना
(C) डाकखाने में नौकरी करना
(D) बीज बोना

138. भू-सुधार के अंतर्गत पट्टेदारी उन्मूलन अधिनियमों का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) या तो पट्टेदारी को हटाना या किराए के नियम बनाना
(B) पट्टेदारी को बढ़ावा देना
(C) केवल किराए के नियम बनाना
(D) पट्टेदारों से भूमि छीनना

139. 'घुमक्कड़ मज़दूर' की अवधारणा का यह अर्थ क्यों नहीं है कि वे स्वतंत्र हैं?
(A) क्योंकि उनके पास वर्तमान में बहुत से विधिक अधिकार होते हैं
(B) क्योंकि उन्हें बाज़ार में हमेशा सरकारी न्यूनतम मज़दूरी मिलती है
(C) क्योंकि वे अपनी इच्छा से किसी भी क्षेत्र में काम कर सकते हैं
(D) क्योंकि उनके पास अधिकारों का अभाव होता है और शोषण होता है

140. भारत में लागू भूमि सुधार कार्यक्रमों के अंतर्गत ' भूमि की हदबंदी अधिनियम' कौन सी श्रेणी में आता है?
(A) ज़मींदारी उन्मूलन
(B) तीसरी मुख्य श्रेणी
(C) पट्टेदारी सुधार
(D) कृषि का मशीनीकरण

141. हरित क्रांति के सामाजिक परिणामों के संबंध में कौन सा कथन सही है?
(A) इसने ग्रामीण समाज में समानता को बढ़ावा दिया।
(B) इसने सभी सेवा जातियों को लाभ पहुँचाया।
(C) इसने धनी और गरीब किसानों के बीच की खाई को चौड़ा किया।
(D) इसने प्रवासन को पूरी तरह से रोक दिया।

142. स्वतंत्रता के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में पारंपरिक बंधनों में शिथिलता का क्या अर्थ है?
(A) भूस्वामी और कृषि मज़दूरों के मध्य पुश्तैनी संबंधों में मजबूती
(B) जाति व्यवस्था का अंत
(C) संयुक्त परिवारों का बढ़ना
(D) भूस्वामी और कृषि मज़दूरों के मध्य पुश्तैनी संबंधों में कमी

143. दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना (2014) का एक मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) कृषि के लिए नियमित बिजली की सप्लाई सुनिश्चित करना
(B) ग्रामीण युवाओं को रोज़गार देना

फिर भी भूस्वामित्व का संबंध क्षेत्रीय सामाजिक गतिकी और स्थानीय राजनीतिक प्रभाव के अनुसार बदलता रहता है।

11. (C) केवल 1, 3 और 4
हरित क्रांति 1960 के दशक में शुरु किया गया एक महत्वपूर्ण सरकारी कार्यक्रम था, जिसका प्राथमिक लक्ष्य आधुनिक तकनीकों के प्रयोग से गेहूँ और चावल का उत्पादन बढ़ाना था। चूंकि इन संकर बीजों को अत्यधिक सिंचाई की आवश्यकता थी, इसलिए यह योजना केवल उन चुनिंदा क्षेत्रों में लागू की गई जहाँ जल की पर्याप्त उपलब्धता थी। यह कार्यक्रम सभी फसलों के बजाय केवल चुनिंदा खाद्यान्न फसलों पर केंद्रित था।

12. (B) कृषि की उन्नति और भूस्वामित्व में सुधार करना
आज़ादी के बाद भारत सरकार ने कृषि क्षेत्र में व्याप्त असमानताओं को दूर करने के लिए व्यापक भूमि सुधार लागू किए। इनका मुख्य ध्येय ज़मींदारी जैसी शोषणकारी व्यवस्थाओं को समाप्त कर वास्तविक कृषकों को भूमि का अधिकार दिलाना था। इन सुधारों के माध्यम से कृषि उत्पादकता बढ़ाकर खाद्यान्न आत्मनिर्भरता प्राप्त करना और ग्रामीण गरीबों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाना सरकार की प्राथमिकता थी ताकि सामाजिक न्याय सुनिश्चित हो सके।

13. (C) भूस्वामियों द्वारा हदबंदी कानून से बचने हेतु ज़मीन रिश्तेदारों के नाम करना
भूमि हदबंदी कानून के तहत एक व्यक्ति द्वारा रखी जाने वाली अधिकतम भूमि की सीमा तय की गई थी। इस कानून के प्रभाव से बचने के लिए कई बड़े भूस्वामियों ने चालाकी से अपनी अतिरिक्त भूमि को अपने रिश्तेदारों या काल्पनिक व्यक्तियों के नाम पर कागजों में स्थानांतरित कर दिया। इस अवैध प्रक्रिया को 'बेनामी हस्तांतरण' कहा गया, जिससे कानून की नज़र में उनकी ज़मीन निर्धारित सीमा के भीतर दिखाई दे सके।

14. (A) 3, 1, 2, 4
भारत के कृषि इतिहास में सबसे पहले औपनिवेशिक काल के दौरान रैयतवाड़ी व्यवस्था प्रचलन में आई। इसके बाद स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात ज़मींदारी व्यवस्था के उन्मूलन हेतु कानून बनाए गए। 1960 के दशक में खाद्यान्न संकट से निपटने के लिए हरित क्रांति का प्रथम चरण प्रारंभ किया गया। अंततः 1990 के दशक में भारत ने आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाई, जिसने कृषि और ग्रामीण बाज़ारों के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया।

15. (A) कृषि उत्पादन कम होने लगा।
औपनिवेशिक काल की ज़मींदारी व्यवस्था में ज़मींदारों का मुख्य सरोकार केवल अधिक से अधिक लगान वसूल करना था। उन्होंने कृषि की उत्पादकता बढ़ाने या सिंचाई सुविधाओं के विकास में कोई रुचि नहीं ली। भारी करों और शोषण के कारण किसानों के पास निवेश हेतु पूँजी की कमी हो गई, जिसके परिणामस्वरूप कृषि उत्पादन में गिरावट आई। इस व्यवस्था ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को कमजोर किया और किसानों को अत्यधिक गरीबी की ओर धकेला।

16. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हरित क्रांति के शुरुआती दौर में नई कृषि तकनीकें, जैसे संकर बीज और रासायनिक खाद, काफी खर्चीली थीं। इनका लाभ उठाने के लिए पर्याप्त पूँजी और सिंचाई के साधनों की आवश्यकता थी, जो केवल मध्यम और बड़े किसानों के पास ही उपलब्ध थे। इसके परिणामस्वरूप समृद्ध किसान और अधिक धनी हो गए, जबकि छोटे और सीमांत किसान पिछड़ गए। इस तकनीकी अंतर ने ग्रामीण समाज में आर्थिक विषमता को और अधिक गहरा किया।

17. (B) वास्तविक कृषक
रैयतवाड़ी व्यवस्था ब्रिटिश काल के दौरान दक्षिण और पश्चिम भारत के कुछ हिस्सों में लागू की गई थी। इस व्यवस्था में सरकार और किसानों के बीच ज़मींदारों जैसा कोई बिचौलिया नहीं होता था। प्रत्येक पंजीकृत किसान, जिसे 'रैयत' कहा जाता था, अपनी भूमि का स्वयं स्वामी माना जाता था और वह सीधे ब्रिटिश सरकार को लगान चुकाने के लिए कानूनी रूप से उत्तरदायी था। इससे किसानों पर प्रत्यक्ष राजस्व का बोझ बढ़ा।

18. (A) पश्चिम बंगाल और केरल
भारत में पश्चिम बंगाल और केरल ऐसे राज्य रहे हैं जहाँ वामपंथी विचारधारा और राजनीतिक सक्रियता के कारण भूमि सुधारों को सबसे अधिक प्रभावशाली ढंग से लागू किया गया। यहाँ पट्टेदारी सुधार कानूनों के माध्यम से काश्तकारों को स्थायी सुरक्षा और भूमि के मालिकाना अधिकार प्रदान किए गए। इन सुधारों ने इन राज्यों की ग्रामीण सामाजिक संरचना में बुनियादी परिवर्तन किए और भूस्वामियों के पुराने प्रभाव को कम करके किसानों को सशक्त बनाया।

19. (C) केवल 1, 2 और 3
हरित क्रांति का दूसरा चरण 1980 के दशक में उन क्षेत्रों में विस्तारित किया गया जो पहले सिंचाई सुविधाओं के अभाव में पिछड़ गए थे। इसमें शुष्क और आंशिक सिंचित क्षेत्रों के किसानों को भी आधुनिक तकनीकों से जोड़ा गया। इस चरण के कारण कृषि प्रतिमानों में महत्वपूर्ण बदलाव आए और किसानों ने पारंपरिक फसलों के स्थान पर अधिक लाभ वाली नगदी और व्यावसायिक फसलों की खेती करना प्रारंभ कर दिया था।

20. (D) वे किसान जो मुख्य रूप से स्वयं के उपभोग के लिए उत्पादन करते हैं।
जीवननिर्वाही कृषक उन किसानों को कहा जाता है जिनके पास कृषि भूमि का छोटा हिस्सा होता है और उनकी खेती का मुख्य उद्देश्य परिवार की भोजन संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करना होता है। वे बाज़ार में बिक्री के लिए बहुत कम अधिशेष का उत्पादन कर पाते हैं। उनकी पूरी मेहनत और उपज का उपभोग घर में ही हो जाता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति बाज़ार आधारित खेती करने वालों से कमजोर रहती है।

21. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत के विभिन्न राज्यों में विशिष्ट जातियों ने कृषि भूमि पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर 'प्रबल जाति' का दर्जा प्राप्त किया है। उत्तर प्रदेश में जाट और राजपूत, कर्नाटक में वोक्कालिगास

और समय पर सरकारी खजाने में निश्चित लगान जमा करते रहें, भले ही किसानों का शोषण हो।

42. (A) ज़मींदारी व्यवस्था को समाप्त करना
स्वतंत्रता के बाद लागू किए गए तमाम भूमि सुधारों में ज़मींदारी उन्मूलन अधिनियम सबसे अधिक प्रभावी और सफल साबित हुआ। इसने शताब्दियों से चले आ रहे शोषक बिचौलियों के वर्ग को समाप्त कर दिया और सरकार का वास्तविक किसानों के साथ सीधा संबंध स्थापित किया। यद्यपि अन्य सुधार जैसे भूमि हदबंदी और पट्टेदारी सुधार कानूनी जटिलताओं के कारण पूर्णतः सफल नहीं रहे, लेकिन ज़मींदारी उन्मूलन ने ग्रामीण शक्ति संरचना को बुनियादी तौर पर बदलने का काम किया।

43. (1, 2, 4, 3)
भारतीय कृषि के क्रमिक विकास में सबसे पहले 1960 के दशक में हरित क्रांति के माध्यम से आधुनिक तकनीकों का प्रयोग बढ़ा। इसके बाद कृषि का व्यापक रूप से व्यापारीकरण हुआ और फसलें मुख्य रूप से बाज़ार के लिए उगाई जाने लगीं। इस बदलाव ने भूस्वामी और मज़दूर के बीच के पारंपरिक संरक्षक संबंधों को कमजोर किया। अंततः, रोज़गार के पुराने साधन समाप्त होने पर मज़दूरों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में संचार या पलायन शुरु हुआ।

44. (B) ये सभी मुख्य रूप से फसल काटने के समय से जुड़े हैं।
भारत एक कृषि प्रधान देश है जहाँ विभिन्न राज्यों में मनाए जाने वाले पोंगल, बीहू और बैसाखी जैसे प्रमुख त्योहार सीधे तौर पर फसलों की कटाई से संबंधित हैं। ये पर्व किसानों की मेहनत के फल के रूप में नई उपज के घर आने की खुशी को प्रकट करते हैं। भौगोलिक और सांस्कृतिक विविधता के बावजूद, ये सभी त्योहार ग्रामीण जीवन में कृषि की केंद्रीय भूमिका और प्रकृति के साथ मानव के गहरे जुड़ाव को दर्शाते हैं।

45. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
प्रवासी कृषि मज़दूर प्रायः बहुत ही कठिन परिस्थितियों में रहते हैं और काम करते हैं। प्रवासन के कारण वे स्थानीय भाषा, संस्कृति और कानूनी अधिकारों से अनभिज्ञ होते हैं, जिससे भूस्वामियों और ठेकेदारों के लिए उनका आर्थिक शोषण करना आसान हो जाता है। उनके पास न तो काम की कोई स्थायी सुरक्षा होती है और न ही रहने के लिए बुनियादी सुविधाएँ, जिसके कारण वे आधुनिक अर्थव्यवस्था में सबसे असुरक्षित श्रमिक वर्ग बन जाते हैं।

46. (D) भूमि का स्थायी स्वामित्व
संविदा खेती के तहत बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ किसानों को उच्च गुणवत्ता वाले बीज, तकनीकी सहायता, खाद और कीटनाशक जैसे निवेश उपलब्ध कराती हैं। वे किसानों को यह आश्वासन भी देती हैं कि उनकी पूरी फसल एक निश्चित कीमत पर खरीद ली जाएगी। हालांकि, इस पूरी प्रक्रिया में भूमि का मालिकाना हक सदैव किसान के पास ही रहता है; कंपनियाँ कभी भी किसानों को भूमि का स्थायी स्वामित्व प्रदान नहीं करती हैं, बल्कि केवल फसल उत्पादन हेतु अनुबंध करती हैं।

47. (A) P-3, Q-2, R-4, S-1
भारत के विभिन्न कृषि क्षेत्रों की अपनी विशिष्ट विशेषताएँ हैं। पश्चिमी उत्तर प्रदेश गन्ना उत्पादन का प्रमुख केंद्र है, जबकि पंजाब और हरियाणा हरित क्रांति के सर्वाधिक लाभान्वित क्षेत्र रहे हैं। तटीय आंध्र प्रदेश के संपन्न किसानों ने अपने कृषि अधिशेष का निवेश व्यापार और उद्योगों में किया है। मध्य गुजरात में कृषि समृद्धि के कारण एक नए क्षेत्रीय अभिजात वर्ग का उदय हुआ है, जो स्थानीय राजनीति और समाज में अत्यधिक प्रभावशाली है।

48. (B) किसानों को अब अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है।
भूमंडलीकरण और विश्व व्यापार संगठन के नियमों के कारण भारत ने अपने कृषि बाज़ार को आयात के लिए खोल दिया है। इसके परिणामस्वरूप, भारतीय किसानों को अब अपनी उपज का मूल्य निर्धारित करने और बेचने के लिए विकसित देशों के बड़े और सब्सिडी प्राप्त कृषि उत्पादों से सीधी प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। बाज़ार की इस वैश्विक प्रतिस्पर्धा ने छोटे किसानों के लिए जोखिम बढ़ा दिया है और उन्हें वैश्विक कीमतों के उतार-चढ़ाव के प्रति संवेदनशील बना दिया है।

49. (B) क्षेत्रीय असमानताओं में वृद्धि
हरित क्रांति की रणनीति मुख्य रूप से उन्हीं क्षेत्रों पर केंद्रित थी जहाँ सिंचाई की बेहतर सुविधाएँ और उपजाऊ भूमि उपलब्ध थी। इसके कारण पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्रों में तो तीव्र आर्थिक विकास हुआ, लेकिन बिहार, ओडिशा और मध्य भारत के बड़े हिस्से पिछड़ गए। इस असंतुलित विकास ने भारत के विभिन्न राज्यों के बीच आर्थिक और सामाजिक खाई को और अधिक चौड़ा कर दिया, जिसे हरित क्रांति की एक प्रमुख नकारात्मक परिणति माना जाता है।

50. (B) केवल 2, 3 और 4
स्वतंत्रता के पश्चात कृषि के व्यवसायीकरण ने ग्रामीण संबंधों को बदल दिया है। अब मज़दूरों को उनकी मेहनत का भुगतान अनाज के बजाय नगद राशि में दिया जाता है, जिससे उनके बीच के पुराने पुश्तैनी और व्यक्तिगत बंधन कमजोर हो गए हैं। इसके साथ ही, गाँवों में 'मुक्त' दिहाड़ी मज़दूरों का एक नया वर्ग उभरा है जो किसी एक मालिक से बंधे नहीं होते। यद्यपि गहन कृषि ने श्रम की माँग बढ़ाई, लेकिन मशीनीकरण ने इसे कुछ हद तक प्रभावित भी किया है।

51. (C) 50 से 75 प्रतिशत
पारंपरिक काश्तकारी व्यवस्था में पट्टेदार किसानों की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय होती थी। वे जिन भूस्वामियों की ज़मीन पर खेती करते थे, उन्हें अपनी कुल उपज का एक बहुत बड़ा हिस्सा, जो अक्सर 50 से 75 प्रतिशत तक होता था, लगान या किराए के रूप में चुकाना पड़ता था। इस अत्यधिक शोषण के कारण उनके पास स्वयं के जीवन निर्वाह के लिए बहुत कम आय बचती थी, जिससे वे सदैव गरीबी और ऋण के दुष्चक्र में फँसे रहते थे।

के कारण ये कानून भूस्वामियों से भूमि लेकर भूमिहीनों में बाँटने के अपने मुख्य उद्देश्य में असफल रहे।

32. (A) केवल 1 और 3
हरित क्रांति ने भारत को अनाज उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाया और खाद्यान्न के आयात पर निर्भरता को समाप्त कर दिया। हालांकि, इसके लाभ देश के कुछ चुनिंदा क्षेत्रों जैसे पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश तक ही सीमित रहे, जिससे क्षेत्रीय असमानताएँ और अधिक बढ़ गईं। इसके सामाजिक प्रभावों में अमीरों और गरीबों के बीच की खाई का चौड़ा होना और छोटे किसानों की ऋणग्रस्तता जैसे नकारात्मक परिणाम भी शामिल थे।

33. (B) क्योंकि उनका आसानी से शोषण और कम मज़दूरी पर काम कराया जा सकता है
भूस्वामी अक्सर स्थानीय मज़दूरों के बजाय प्रवासी मज़दूरों को प्राथमिकता देते हैं क्योंकि प्रवासी मज़दूर अपने अधिकारों के प्रति कम जागरूक होते हैं और संगठित नहीं हो पाते। प्रवासन के कारण वे एक असुरक्षित स्थिति में होते हैं, जिसका लाभ उठाकर भूस्वामी उन्हें कम मज़दूरी पर अधिक घंटों तक काम करने के लिए मजबूर कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, स्थानीय मज़दूरों की तुलना में प्रवासी मज़दूरों द्वारा मज़दूरी बढ़ाने की माँग की संभावना भी कम होती है।

34. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
ग्रामीण समाजशास्त्र में एम. एन. श्रीनिवास ने 'प्रबल जाति' की महत्वपूर्ण अवधारणा दी। जान ब्रेमन ने प्रवासन करने वाले श्रमिकों के लिए 'घुमक्कड़ मज़दूर' (फूटलूज़ लेबर) शब्द का प्रयोग किया। अखिल गुप्ता ने अपनी पुस्तक 'पोस्टकोलोनियल डेवलपमेंट्स' में ग्रामीण विकास के आधुनिक पहलुओं का विश्लेषण किया है। धर्म कुमार ने औपनिवेशिक काल में संपत्ति, राज्य और सामाजिक संरचना के बीच के संबंधों पर गहरा शोध कार्य किया है।

35. (C) धनी किसान और समृद्ध हुए जबकि कई निर्धन किसान और गरीब हो गए
विभेदीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें कृषि आधुनिकीकरण के लाभों का वितरण असमान होता है। हरित क्रांति के दौरान जिन धनी किसानों के पास पूँजी और संसाधन थे, उन्होंने नई तकनीकों का भरपूर लाभ उठाकर अपनी संपत्ति और शक्ति में वृद्धि की। इसके विपरीत, छोटे और सीमांत किसान ऊँची लागत के कारण ऋण के जाल में फँस गए, जिससे ग्रामीण समाज में आर्थिक और सामाजिक दूरियाँ पहले की तुलना में काफी बढ़ गईं।

36. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
संविदा खेती के माध्यम से बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ कृषि उत्पादन की पूरी प्रक्रिया पर अपना नियंत्रण स्थापित कर लेती हैं। किसान केवल कंपनियों के निर्देशों के अनुसार विशिष्ट फसलें उगाने वाले 'श्रमिक' की तरह हो जाते हैं, जिससे उनका पारंपरिक कृषि ज्ञान और स्वतंत्रता लुप्त हो जाती है। अपनी आजीविका के लिए पूरी तरह कंपनियों के अनुबंधों और बाज़ार की कीमतों पर निर्भर रहने के कारण किसानों की सामाजिक और आर्थिक असुरक्षा काफी बढ़ जाती है।

37. (C) समृद्ध किसानों द्वारा अन्य व्यापारों और ग्रामीण उद्योगों में निवेश करना
हरित क्रांति और कृषि विकास से जो किसान आर्थिक रूप से समृद्ध हुए, उन्होंने अपनी पूँजी का उपयोग केवल खेती तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने इस धन को ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे उद्योगों, व्यापारों, परिवहन और शिक्षा जैसे अकृषि क्षेत्रों में निवेश करना शुरू किया। इस प्रवृत्ति ने ग्रामीण क्षेत्रों में एक नए उद्यमी वर्ग और क्षेत्रीय अभिजात वर्ग के उदय का मार्ग प्रशस्त किया, जिसने पारंपरिक सामाजिक संरचना को बदलने में भूमिका निभाई।

38. (B) यह एक मिश्रित अर्थव्यवस्था है जो बाह्य अर्थव्यवस्था से जुड़ी है।
केरल का विकास मॉडल अपनी उच्च साक्षरता, बेहतर स्वास्थ्य सेवाओं और राजनीतिक चेतना के लिए प्रसिद्ध है। यह मॉडल इसलिए भी भिन्न है क्योंकि यहाँ की अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा विदेशों, विशेषकर खाड़ी देशों में काम करने वाले प्रवासियों द्वारा भेजी गई धनराशि पर निर्भर है। इस विदेशी पूँजी और प्रभावी भूमि सुधारों ने केरल के ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन स्तर को ऊँचा उठाने और आर्थिक समानता लाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

39. (D) कृषि के लिए राज्य सहयोग में वृद्धि
भारतीय किसानों की आत्महत्या के पीछे प्रमुख कारणों में बढ़ती ऋणग्रस्तता, नगदी फसलों की विफलता और उदारीकरण के कारण बाज़ार की अनिश्चितता शामिल है। पिछले दशकों में कृषि क्षेत्र में सरकारी सब्सिडी और सहायता में आई कमी ने भी संकट को गहरा किया है। इसके विपरीत, यदि कृषि के लिए राज्य सहयोग और संसाधनों में वृद्धि की जाती, तो यह किसानों के लिए एक सुरक्षा कवच बनता, न कि उनके सुसाइड का कारण।

40. (C) केवल 1, 2, 3 और 5
हरित क्रांति ने भूस्वामियों को स्वयं खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे उन्होंने अपनी ज़मीन से पट्टेदारों को बेदखल करना शुरू कर दिया। इस प्रक्रिया ने मशीनीकरण को बढ़ावा दिया और धनी किसानों को और अधिक संपन्न बनाया। हालांकि, इसका नकारात्मक पक्ष यह रहा कि भूमिहीन और सीमांत किसानों की स्थिति अक्सर और अधिक खराब हो गई क्योंकि मशीनों ने मानव श्रम का स्थान ले लिया और वे कृषि के बढ़ते खर्चों का सामना नहीं कर पाए।

41. (C) ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने
औपनिवेशिक काल के दौरान ब्रिटिश सरकार ने राजस्व वसूली को सुव्यवस्थित और अधिकतम करने के लिए ज़मींदारी व्यवस्था लागू की। इस व्यवस्था के अंतर्गत ज़मींदारों को भूमि का कानूनी मालिक घोषित कर दिया गया, जो पहले केवल राजस्व वसूलने वाले एजेंट थे। उन्हें संपत्ति के ये अधिकार इसलिए दिए गए ताकि वे ब्रिटिश राज के प्रति वफादार बने रहें

62. (D) कंपनियाँ उगाई जाने वाली फसलों की पहचान करती हैं।
संविदा खेती में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ पूरी उत्पादन प्रक्रिया पर नियंत्रण रखती हैं और वे ही तय करती हैं कि किसान अपनी ज़मीन पर किस प्रकार की फसल उगाएगा। कंपनियाँ अक्सर उन विशिष्ट किस्मों की माँग करती हैं जिनकी अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में अधिक खपत होती है। इस व्यवस्था में किसान की अपनी पसंद और पारंपरिक ज्ञान का महत्व कम हो जाता है, क्योंकि उसे पूरी तरह से कंपनी के निर्देशों और गुणवत्ता मानकों का पालन करना अनिवार्य होता है।

63. (A) 2, 3, 1, 4
भारत के कृषि इतिहास में सबसे पहले औपनिवेशिक काल में ब्रिटिश सरकार द्वारा ज़मींदारी व्यवस्था स्थापित की गई। आज़ादी के बाद, भूमि के समान वितरण हेतु राज्यों में भूमि हदबंदी अधिनियम लागू किए गए। 1995 में भारत विश्व व्यापार संगठन (WTO) का सदस्य बना, जिसने कृषि के भूमंडलीकरण को तेज़ किया। सबसे अंत में, किसानों को सरल ऋण सुविधा प्रदान करने के लिए भारत सरकार द्वारा किसान क्रेडिट कार्ड योजना की शुरुआत की गई।

64. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
आधुनिक कृषि में अधिक उपज देने वाले संकर और जीएम बीजों को 'वैज्ञानिक' और प्रगतिशील मानकर प्रोत्साहित किया जा रहा है। सरकार और निजी कंपनियों के प्रचार के कारण किसान इन नए बीजों को अपना रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप बीजों की पारंपरिक और स्थानीय किस्में धीरे-धीरे लुप्त होती जा रही हैं। यह न केवल कृषि की जैव विविधता को नष्ट कर रहा है, बल्कि किसानों को हर साल नए बीज खरीदने के लिए बहुराष्ट्रीय कंपनियों पर निर्भर भी बना रहा है।

65. (B) कृषिकीय सुधारों और औद्योगीकरण दोनों पर
स्वतंत्रता के बाद भारत की आर्थिक नीति का उद्देश्य देश का सर्वांगीण विकास करना था। सरकार ने महसूस किया कि बिना कृषि सुधारों के ग्रामीण गरीबी को दूर नहीं किया जा सकता, इसलिए भूमि सुधारों को प्राथमिकता दी गई। साथ ही, आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के लिए भारी उद्योगों की स्थापना और औद्योगीकरण पर भी ज़ोर दिया गया। नेहरूवादी विकास मॉडल के तहत कृषि और उद्योग दोनों को एक-दूसरे का पूरक मानकर विकास की योजनाएँ तैयार की गई थीं।

66. (A) केवल 1 और 3
ज़मींदारी उन्मूलन के बाद राज्य और वास्तविक किसानों के बीच से शोषक बिचौलियों का अंत हो गया, जिससे स्थानीय कृषकों और पुराने भूस्वामियों की स्थिति और अधिक मजबूत हुई। हालांकि, यह प्रक्रिया पूरी तरह से संघर्ष मुक्त नहीं थी और कई ज़मींदारों ने अपनी शक्ति बचाए रखने के लिए कानूनी रास्तों का सहारा लिया। फिर भी, इस सुधार ने ग्रामीण भारत में पुराने ज़मींदारी प्रभाव को काफी हद तक कम किया और एक नए भूस्वामी वर्ग के उदय में मदद की।

67. (C) क्योंकि इन कानूनों को प्रभावशाली तरीके से लागू नहीं किया गया।
पट्टेदारी उन्मूलन और नियमन हेतु बनाए गए कानून अधिकांश राज्यों में विफल रहे क्योंकि राज्य सरकारों में इसे लागू करने के लिए आवश्यक राजनीतिक इच्छाशक्ति की कमी थी। भूस्वामियों ने प्रशासन और कानूनी खामियों का लाभ उठाकर पट्टेदारों को ज़मीन के अधिकार देने के बजाय उन्हें बेदखल कर दिया। इसके अतिरिक्त, अधिकांश पट्टेदार गरीब और अशिक्षित थे, इसलिए वे अपने कानूनी अधिकारों के लिए शक्तिशाली भूस्वामियों के विरुद्ध संघर्ष करने में असमर्थ रहे।

68. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
ग्रामीण समाज में व्याप्त विभिन्न समस्याएँ एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। बढ़ती ऋणग्रस्तता किसानों की आत्महत्या का एक प्रमुख कारक बन गई है। कृषि के व्यापारीकरण के कारण मज़दूरों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में संचार या पलायन बढ़ा है। बड़े भूस्वामियों ने भूमि हदबंदी कानूनों से बचने के लिए 'बेनामी हस्तांतरण' का सहारा लिया। वहीं, हरित क्रांति के असमान प्रसार ने भारत के विभिन्न क्षेत्रों के बीच आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रीय असमानता को गहरा कर दिया है।

69. (C) क्योंकि बहुसंख्यक लोग गाँवों में रहते हैं और कृषि पर निर्भर हैं।
भारत को प्राथमिक रूप से एक ग्रामीण समाज इसलिए माना जाता है क्योंकि यहाँ की जनसंख्या का दो-तिहाई से अधिक हिस्सा आज भी गाँवों में निवास करता है। कृषि न केवल उनकी आजीविका का मुख्य साधन है, बल्कि यह उनकी पूरी सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना का आधार भी है। भारतीय अर्थव्यवस्था, राजनीति और सामाजिक रीति-रिवाजों पर ग्रामीण जीवन का गहरा प्रभाव आज भी स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है, जो इसकी मौलिक पहचान है।

70. (B) सांस्कृतिक रस्में और रीति-रिवाज़ कृषि की पृष्ठभूमि से जुड़े हैं।
ग्रामीण भारत में भूमि केवल एक आर्थिक संसाधन या उत्पादन का साधन नहीं है, बल्कि यह सामाजिक प्रतिष्ठा और पहचान का प्रतीक भी है। गाँव के अधिकांश त्योहार, धार्मिक अनुष्ठान और सामाजिक रस्में कृषि चक्र और भूमि से गहरे से जुड़ी हुई हैं। भूमि का स्वामित्व यह निर्धारित करता है कि व्यक्ति का सामाजिक पदानुक्रम में क्या स्थान होगा, इसलिए इसे 'जीने का एक तरीका' और सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग माना जाता है।

71. (D) जाति व्यवस्था में
ग्रामीण भारत में व्यवसायों का विभाजन पारंपरिक रूप से जाति व्यवस्था के आधार पर किया गया है। प्रत्येक जाति का एक विशिष्ट पुश्तैनी व्यवसाय होता है, जैसे लुहार, कुम्हार या जुलाहे। यद्यपि आधुनिक समय में इन व्यवसायों में बदलाव आया है, फिर भी गाँवों में आज भी जाति ही यह निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है कि कौन व्यक्ति किस प्रकार का कार्य करेगा। यह व्यवस्था श्रम के विभाजन और सामाजिक पदानुक्रम को एक साथ जोड़ती है।

52. (D) उत्तर प्रदेश के धोबी
ग्रामीण भारत में 'प्रबल जाति' वे समूह हैं जिनके पास बड़ी मात्रा में कृषि भूमि है और जो संख्यात्मक रूप से मजबूत हैं। कर्नाटक के वोक्कालिगास, आंध्र प्रदेश के कम्मास और पंजाब के जाट सिख ऐसे ही भूस्वामी समूहों के उदाहरण हैं जो स्थानीय राजनीति और समाज पर अपना नियंत्रण रखते हैं। इसके विपरीत, धोबी जाति पारंपरिक रूप से सेवा प्रदाता जातियों की श्रेणी में आती है और इनके पास ऐतिहासिक रूप से बड़े भू-भाग का स्वामित्व नहीं रहा है।

53. (C) बाज़ार हेतु अतिरिक्त उत्पादन करने में सक्षम किसान
हरित क्रांति का मुख्य लाभ उन समृद्ध और मध्यम दर्जे के किसानों को मिला जिनके पास आधुनिक तकनीकों में निवेश करने के लिए पर्याप्त संसाधन थे। चूँकि नई तकनीकें महँगी थीं, इसलिए केवल वही किसान लाभान्वित हुए जो घरेलू उपभोग के बाद बाज़ार में बेचने के लिए भारी मात्रा में अधिशेष उत्पादन करने में सक्षम थे। छोटे और सीमांत किसान, जो केवल अपनी आजीविका के लिए खेती करते थे, इस व्यावसायिक लाभ की दौड़ में पिछड़ गए।

54. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
बाज़ार आधारित आधुनिक कृषि में किसान अक्सर केवल एक ही प्रकार की नगदी फसल उगाते हैं। यह 'एकल फसल' पद्धति किसानों के लिए जोखिम बढ़ा देती है क्योंकि यदि बाज़ार में उस विशिष्ट फसल की कीमतें गिर जाती हैं या कोई कीट हमला होता है, तो किसानों के पास अपनी आर्थिक सुरक्षा के लिए कोई अन्य विकल्प नहीं बचता। यह स्थिति उन्हें ऋण के जाल में धकेल सकती है और उनकी पूरी मेहनत को आर्थिक बर्बादी में बदल सकती है।

55. (D) क्योंकि वे पारंपरिक रूप से प्रबल जातियों के यहाँ मज़दूर रहते थे
भारतीय जाति व्यवस्था के कठोर नियमों के कारण ऐतिहासिक रूप से दलित या 'अछूत' जातियों को संपत्ति और कृषि भूमि रखने के अधिकार से वंचित रखा गया था। उन्हें सामाजिक पदानुक्रम में सबसे निचले स्थान पर रखा गया और उनकी भूमिका केवल उच्च और प्रबल जातियों के खेतों में मज़दूरी करने तक सीमित कर दी गई थी। भूमि स्वामित्व के इस अभाव ने उन्हें आर्थिक रूप से सदैव दूसरों पर निर्भर रखा और उनकी सामाजिक गतिशीलता को अवरुद्ध किया।

56. (A) इससे पट्टेदार कृषक बेदखल हुए।
हरित क्रांति के दौरान जब कृषि लाभदायक होने लगी, तो भूस्वामियों ने स्वयं खेती करने के लिए अपनी ज़मीन वापस लेना शुरु कर दिया, जिससे बड़ी संख्या में पट्टेदार बेदखल हो गए। यह हरित क्रांति का एक प्रमुख सामाजिक परिणाम था। इसके अलावा, यह कार्यक्रम केवल सिंचित क्षेत्रों में सफल रहा और इसने क्षेत्रीय विषमता बढ़ाई। यद्यपि इसने खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाया, लेकिन ग्रामीण निर्धनों और भूमिहीनों की स्थिति में कोई क्रांतिकारी सुधार नहीं हुआ।

57. (C) रैयतवाड़ी व्यवस्था
औपनिवेशिक काल की रैयतवाड़ी व्यवस्था में सरकार ने ज़मींदारों जैसे बिचौलियों को हटाकर सीधे किसानों को भूमि का स्वामित्व दिया था। चूंकि किसान स्वयं अपनी भूमि के मालिक थे और उन्हें अपनी मेहनत का फल सीधे मिलता था, इसलिए उनके पास कृषि में सुधार करने और नई तकनीकों में निवेश करने का अधिक प्रोत्साहन था। ज़मींदारी व्यवस्था के विपरीत, यहाँ किसान को यह विश्वास था कि उत्पादन बढ़ने पर उसका लाभ उसे स्वयं प्राप्त होगा, न कि किसी बिचौलिये को।

58. (B) P-2, Q-4, R-1, S-3
भारत के ग्रामीण विकास को विभिन्न चरणों में देखा जा सकता है। 1960-70 के दशकों में हरित क्रांति का प्रथम चरण आया, जिसने खाद्यान्न उत्पादन में क्रांति ला दी। 1950 से 1970 के बीच सरकार ने ज़मींदारी उन्मूलन जैसे महत्वपूर्ण भूमि सुधार कानूनों की एक श्रृंखला लागू की। 1980 के दशक में हरित क्रांति के दूसरे चरण ने नए क्षेत्रों में विस्तार किया और 1990 के दशक के बाद उदारीकरण ने भारतीय कृषि को वैश्विक बाज़ारों से सीधे जोड़ दिया।

59. (A) पूँजीवादी कृषि में उत्पादन के साधन और मजदूर का पृथक्कीकरण होता है।
पूँजीवादी कृषि व्यवस्था का मुख्य लक्षण यह है कि इसमें भूमि और मशीनरी जैसे उत्पादन के साधन एक वर्ग (भूस्वामी) के पास होते हैं, जबकि काम करने वाले मज़दूर अपनी मेहनत बेचते हैं। भारत में कृषि का व्यापारीकरण औपनिवेशिक काल में ही शुरु हो गया था, जिसे स्वतंत्रता के बाद सरकारी नीतियों और हरित क्रांति ने और गति प्रदान की। इन परिवर्तनों ने ग्रामीण सामाजिक संरचना में पारंपरिक संबंधों को तोड़कर नए वर्ग आधारित संबंधों को जन्म दिया है।

60. (B) उत्पादन का मुख्य रूप से बाज़ार में बिक्री के लिए होना
पूँजीवादी कृषि की सबसे प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें फसल उगाने का प्राथमिक उद्देश्य स्वयं का भरण-पोषण नहीं, बल्कि बाज़ार में बेचकर अधिकतम लाभ कमाना होता है। इस व्यवस्था में कृषि एक व्यवसाय बन जाती है जहाँ लाभ-हानि का आकलन बाज़ार की वैश्विक और स्थानीय कीमतों के आधार पर किया जाता है। इसमें पारिवारिक श्रम के स्थान पर दिहाड़ी मज़दूरों का प्रयोग बढ़ता है और उत्पादन तकनीकें बाज़ार की माँग के अनुसार बदली जाती हैं।

61. (C) खाद्यान्न के स्थान पर नगद भुगतान
हरित क्रांति के बाद कृषि के व्यवसायीकरण और आधुनिक बैंकिंग सेवाओं के विस्तार के कारण मज़दूरी के भुगतान के तरीकों में बड़ा परिवर्तन आया। अब भूस्वामी मज़दूरों को अनाज या अन्य वस्तुओं के रूप में भुगतान करने के बजाय नगद राशि देना अधिक पसंद करते हैं। इस बदलाव ने मज़दूरों और भूस्वामियों के बीच के पारंपरिक जजमानी और व्यक्तिगत संबंधों को समाप्त कर उसे एक औपचारिक बाज़ार अनुबंध में बदल दिया है, जहाँ संबंधों का आधार केवल आर्थिक लेनदेन है।

कई क्षेत्रों में किसानों द्वारा की जाने वाली आत्महत्याओं का मुख्य कारण बनी है।

102. (B) पूर्व-औपनिवेशिक काल की प्रबल जाति ही बाद में भी कृषक जाति बनी रही।
भारतीय ग्रामीण समाज में एक विशेष प्रकार की सामाजिक निरंतरता देखी गई है, जहाँ औपनिवेशिक काल से पहले जो जातियाँ भूमि पर नियंत्रण रखती थीं, वे स्वतंत्रता के बाद भी 'प्रबल जाति' के रूप में बनी रहीं। यद्यपि ज़मींदारी उन्मूलन जैसे सुधारों ने बिचौलियों को हटाया, लेकिन भूमि का वास्तविक मालिकाना हक उन्हीं पारंपरिक कृषक जातियों के पास रहा जो सामाजिक और राजनीतिक रूप से पहले से ही मजबूत थीं। इस निरंतरता ने ग्रामीण शक्ति संतुलन को बड़े पैमाने पर उनके पक्ष में बनाए रखा।

103. (D) कृषि भूमि का प्रयोग खाद्यान्न से हटकर निर्यातोन्मुखी उत्पादों हेतु होना
संविदा खेती के विस्तार ने भारतीय कृषि के फसल चक्र में बड़ा बदलाव लाया है। कंपनियाँ अधिक लाभ के लिए किसानों को गेहूँ और चावल जैसी पारंपरिक खाद्यान्न फसलों के स्थान पर फल, फूल और विशिष्ट व्यावसायिक फसलें उगाने के लिए प्रेरित करती हैं जिनका उपयोग मुख्य रूप से निर्यात और प्रसंस्करण के लिए किया जाता है। इससे देश की खाद्य सुरक्षा पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ने की संभावना बढ़ जाती है क्योंकि उपजाऊ भूमि का एक बड़ा हिस्सा स्थानीय भोजन के बजाय वैश्विक व्यापार के लिए उपयोग होने लगता है।

104. (C) P-3, Q-2, R-1, S-4
भारत के विभिन्न राज्यों में कृषि और समाज का स्वरुप अलग-अलग है। केरल अपनी मिश्रित अर्थव्यवस्था और प्रवासियों से आने वाले विदेशी धन के लिए जाना जाता है। पंजाब हरित क्रांति का सबसे सफल केंद्र रहा है जहाँ खेती पूरी तरह आधुनिक है। पश्चिम बंगाल पट्टेदारी सुधारों के प्रभावी कार्यान्वयन हेतु प्रसिद्ध है जहाँ किसानों को सुरक्षा दी गई। वहीं, पश्चिमी उत्तर प्रदेश गन्ना और गेहूँ उत्पादन का एक प्रमुख व्यावसायिक कृषि क्षेत्र बनकर उभरा है।

105. (B) केवल 3 और 4
ग्रामीण भारत में जाति और वर्ग के बीच अत्यंत जटिल संबंध पाए जाते हैं जो एक-दूसरे को गहराई से प्रभावित करते हैं। 1960 के दशक की हरित क्रांति ने जहाँ अनाज उत्पादन बढ़ाया, वहीं इसने विभिन्न क्षेत्रों और वर्गों के बीच आर्थिक असमानता को भी जन्म दिया। यह कहना गलत है कि भारत एक नगरीय समाज है या भूमंडलीकरण का गाँवों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। वास्तव में, भूमि आज भी ग्रामीण शक्ति और आजीविका का सबसे महत्वपूर्ण आधार बनी हुई है।

106. (A) शूद्र या क्षत्रिय
भारत के अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में भूस्वामित्व वाले समूहों का विश्लेषण करने पर यह पाया गया है कि वे मुख्य रूप से पारंपरिक वर्ण व्यवस्था की शूद्र या क्षत्रिय श्रेणियों से संबंधित हैं। ये मध्यवर्ती जातियाँ ऐतिहासिक रूप से खेती से जुड़ी रही हैं और आज वे 'प्रबल जाति' के रूप में पहचानी जाती हैं। यद्यपि ब्राह्मणों का स्थान सर्वोच्च रहा है, लेकिन वास्तविक भूमि नियंत्रण और कृषि उत्पादन में इन मध्यवर्ती जातियों का प्रभुत्व हमेशा से अधिक रहा है, जो उनकी राजनीतिक शक्ति का भी आधार है।

107. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
स्वतंत्रता के बाद ज़मींदारी उन्मूलन तो काफी सफल रहा, लेकिन इसके बावजूद कृषिक संरचना में भारी असमानता बनी हुई है। इसका मुख्य कारण यह है कि भूमि की हदबंदी तय करने वाले कानून कई राज्यों में कानूनी खामियों और प्रशासनिक ढिलाई के कारण प्रभावी ढंग से लागू नहीं हो पाए। बड़े भूस्वामियों ने चालाकी से अपनी ज़मीनें बचा लीं, जिसके कारण भूमिहीनों और छोटे किसानों को वह लाभ नहीं मिल सका जिसकी परिकल्पना संविधान और नियोजन के समय की गई थी।

108. (B) नए उद्यमी समूह और क्षेत्रीय अभिजात वर्ग के उदय का
स्वतंत्रता के बाद कृषि विकास और हरित क्रांति के कारण ग्रामीण समाज के एक बड़े हिस्से में समृद्धि आई। जिन संपन्न किसानों ने अपनी कृषि आय को व्यापार, शिक्षा और राजनीति में निवेश किया, वे धीरे-धीरे एक नए 'क्षेत्रीय अभिजात वर्ग' के रूप में उभरे। इस वर्ग ने न केवल स्थानीय अर्थव्यवस्था पर अपना नियंत्रण स्थापित किया, बल्कि वे राज्य और राष्ट्रीय स्तर की राजनीति में भी अत्यंत प्रभावशाली बन गए। इसने पुरानी सामंती व्यवस्था के स्थान पर एक नई उद्यमी सामाजिक संरचना को जन्म दिया।

109. (C) काम की तलाश में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में मौसमी पलायन
मज़दूरों के संदर्भ में 'संचार' या पलायन एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ वे स्थायी रूप से अपना गाँव नहीं छोड़ते, बल्कि काम की उपलब्धता के आधार पर अस्थायी रूप से पलायन करते हैं। वे अक्सर बुवाई या कटाई के मौसम में उन क्षेत्रों की ओर जाते हैं जहाँ श्रम की माँग अधिक होती है, जैसे पंजाब के खेत या ईंट भट्टे। काम पूरा होने के बाद वे वापस अपने गाँव लौट आते हैं। यह निरंतर आने-जाने का सिलसिला ग्रामीण अर्थव्यवस्था और मज़दूरों की आर्थिक मजबूरी को दर्शाता है।

110. (D) कृषि को विस्तृत अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में सम्मिलित किया जाना
कृषि के भूमंडलीकरण का तात्पर्य भारतीय कृषि क्षेत्र को विश्व की विस्तृत बाज़ार व्यवस्था के साथ एकीकृत करने से है। इस प्रक्रिया के तहत कृषि उत्पादों का आयात-निर्यात आसान हो गया है और बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ बीज, उर्वरक और प्रसंस्करण के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था में सीधे प्रवेश कर रही हैं। अब किसानों के उत्पादों का मूल्य स्थानीय माँग के बजाय वैश्विक बाज़ार की स्थितियों और अंतर्राष्ट्रीय व्यापार समझौतों के आधार पर तय होता है, जिसने खेती को अधिक वैश्विक और जोखिम भरा बना दिया है।

72. (A) कथन 2, कथन 1 का कारण है।
औपनिवेशिक काल से ही ग्रामीण कारीगरों और दस्तकारों की संख्या में निरंतर गिरावट आई है क्योंकि औद्योगीकरण के कारण मशीनों से बने सस्ते और आकर्षक सामान बाज़ार में उपलब्ध हो गए। हाथ से बनी वस्तुओं की तुलना में मशीनी उत्पाद कम समय और कम लागत में तैयार होते थे, जिससे पारंपरिक कारीगर उनके साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर पाए। इस आर्थिक बदलाव ने गाँवों के स्वावलंबी कारीगर वर्ग को कृषि मज़दूरी या अन्य निम्न कार्यों की ओर धकेला।

73. (A) केवल 1, 2 और 3
हरित क्रांति के कई नकारात्मक सामाजिक परिणाम सामने आए, जिसमें मुख्य रूप से ग्रामीण असमानता में वृद्धि शामिल है। चूंकि नई तकनीकें महँगी थीं, इसलिए उनका लाभ केवल मध्यम और बड़े किसानों को ही मिल पाया। इस दौरान भूस्वामियों ने स्वयं खेती करने के लिए पट्टेदारों को ज़मीन से बेदखल कर दिया। इसके अतिरिक्त, रासायनिक खादों और कीटनाशकों के अत्यधिक प्रयोग ने मिट्टी की उर्वरता और पर्यावरण को भी लंबे समय में गंभीर नुकसान पहुँचाया है।

74. (A) विशिष्ट मदें जैसे फूल, फल और तिलहन
संविदा खेती में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ मुख्य रूप से उन उच्च मूल्य वाली विशिष्ट फसलों के उत्पादन पर ध्यान केंद्रित करती हैं जिनकी अंतर्राष्ट्रीय बाज़ार में भारी माँग होती है। इनमें सजावटी फूल, विदेशी फल, तिलहन और प्रसंस्कृत खाद्य पदार्थों के लिए आवश्यक विशिष्ट सब्जियाँ शामिल हैं। ये फसलें पारंपरिक खाद्यान्नों जैसे गेहूँ या चावल से अलग होती हैं क्योंकि इनका उद्देश्य स्थानीय उपभोग के बजाय वैश्विक निर्यात और औद्योगिक उपयोग के माध्यम से अधिक लाभ कमाना होता है।

75. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1990 के दशक में अपनाई गई उदारीकरण की नीति के तहत भारत विश्व व्यापार संगठन (WTO) का सदस्य बना, जिसके कारण उसे अपने कृषि बाज़ार को विदेशी उत्पादों हेतु खोलना पड़ा। अब भारतीय किसानों को सरकार से मिलने वाली कम सब्सिडी के बीच विकसित देशों के उन कृषि उत्पादों से प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है जिन्हें उनके देशों में भारी सरकारी सहायता मिलती है। बाज़ार की इस खुली प्रतिस्पर्धा ने भारतीय किसानों के लिए आर्थिक जोखिम को काफी बढ़ा दिया है।

76. (B) कुछ परिवार समृद्ध हैं जबकि बड़ी संख्या में लोग गरीब हैं
ग्रामीण भारत में भूमि का वितरण अत्यंत असमान है, जहाँ एक ओर मुट्ठी भर बड़े भूस्वामियों के पास गाँव की अधिकांश उपजाऊ ज़मीन है, वहीं दूसरी ओर बड़ी संख्या में लोग या तो भूमिहीन हैं या उनके पास बहुत छोटे खेत हैं। यह असमानता ग्रामीण समाज में वर्ग भेद और गरीबी का मुख्य कारण है। भूस्वामी वर्ग आर्थिक और राजनीतिक रूप से शक्तिशाली बना रहता है, जबकि भूमिहीन मज़दूर अपनी आजीविका के लिए पूर्णतः दूसरों पर निर्भर रहते हैं।

77. (C) फसल नष्ट होने पर किसानों की निर्भरता हेतु कुछ नहीं बचता था।
हरित क्रांति के दूसरे चरण में किसानों ने अधिक लाभ की लालच में पारंपरिक विविध फसलों के स्थान पर केवल एक ही प्रकार की व्यावसायिक फसल उगाना शुरू किया। इस 'एकल फसली' व्यवस्था ने जैव विविधता को कम किया और किसानों के जोखिम को बढ़ा दिया। यदि किसी कारणवश वह एक फसल कीटों या मौसम के कारण नष्ट हो जाती है, तो किसानों के पास भरण-पोषण के लिए कोई वैकल्पिक खाद्य स्रोत या आय का साधन शेष नहीं बचता है।

78. (A) 2, 3, 1, 4
भारत के सामाजिक-आर्थिक इतिहास में सबसे पहले औपनिवेशिक शासन की स्थापना हुई जिसने यहाँ की पारंपरिक ग्रामीण व्यवस्था को बदला। इसके पश्चात 1947 में भारत को स्वतंत्रता मिली और विकास के नए युग की शुरुआत हुई। 1960 के दशक के मध्य में खाद्यान्न आत्मनिर्भरता के लिए हरित क्रांति प्रारंभ की गई। अंततः, 1991 में आर्थिक उदारीकरण की नीतियों को लागू किया गया, जिसने भारतीय कृषि और बाज़ारों को वैश्विक अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत कर दिया।

79. (A) वे पुरुषों से कम मज़दूरी पाती हैं और भूमि स्वामित्व से वंचित हैं।
कृषि कार्यों में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी के बावजूद उनकी स्थिति असुरक्षित बनी हुई है क्योंकि उन्हें समान कार्य के लिए पुरुषों की तुलना में कम मज़दूरी दी जाती है। इसके अतिरिक्त, अधिकांश महिलाओं के नाम पर कोई कृषि भूमि नहीं होती, जिससे उनके पास ऋण लेने या सरकारी योजनाओं का लाभ उठाने के लिए आवश्यक कानूनी दस्तावेज़ नहीं होते। यह दोहरी मार उन्हें कृषि क्षेत्र में आर्थिक रूप से सबसे कमजोर और शोषित वर्ग बना देती है।

80. (C) P-4, Q-1, R-2, S-3
भारत में कृषि और श्रम की विभिन्न व्यवस्थाएँ रही हैं। ज़मींदारी व्यवस्था में ज़मींदार किसानों से कर वसूलता था, जबकि रैयतवाड़ी में किसान सीधे सरकार को कर चुकाते थे। संविदा खेती आधुनिक युग की पद्धति है जहाँ किसान बहुराष्ट्रीय कंपनियों के साथ फसल उत्पादन का अनुबंध करते हैं। बेगार एक शोषणकारी प्रथा थी जिसमें निम्न जाति के लोगों से बिना किसी पारिश्रमिक के मुफ़्त मज़दूरी कराई जाती थी, जो अब कानूनी रूप से प्रतिबंधित है।

81. (B) ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती असमानताएँ
1990 के दशक के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में आर्थिक असमानता काफी बढ़ गई, जिससे गरीब और भूमिहीन परिवारों के लिए गाँवों में आजीविका चलाना कठिन हो गया। कृषि में मशीनीकरण के कारण स्थानीय रोज़गार के अवसर कम हुए, जबकि आधुनिक बाज़ार व्यवस्था ने छोटे किसानों को कर्ज में डुबो दिया। इसी आर्थिक दबाव और बेहतर आय की तलाश ने बड़ी संख्या में ग्रामीण मज़दूरों को शहरों और विकसित कृषि राज्यों की ओर पलायन करने के लिए मजबूर किया है।

और लिंगायत, आंध्र प्रदेश में कम्मास और रेड्डी तथा पंजाब में जाट सिख प्रमुख भूस्वामी जातियों के रूप में जाने जाते हैं। ये समूह न केवल आर्थिक रूप से संपन्न हैं, बल्कि क्षेत्रीय राजनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

22. (B) पारंपरिक पुश्तैनी संबंधों में मजबूती
स्वतंत्रता के पश्चात ग्रामीण भारत में कृषि के आधुनिकीकरण और व्यापारीकरण के कारण सामाजिक संबंधों में व्यापक बदलाव आए। अब भूस्वामियों और कृषि मज़दूरों के बीच के पारंपरिक पुश्तैनी और व्यक्तिगत संबंधों में गिरावट आई है और उनके स्थान पर 'मुक्त' अनुबंध आधारित संबंध विकसित हुए हैं। भुगतान अब अनाज या वस्तु के बजाय नगद राशि में होने लगा है, जिसने पुरानी जजमानी और संरक्षक व्यवस्था को कमजोर कर दिया है।

23. (D) 'संरक्षण से शोषण' की ओर बदलाव
समाजशास्त्री जान ब्रेमन ने ग्रामीण श्रम संबंधों का गहन अध्ययन कर यह निष्कर्ष निकाला कि भूस्वामियों और मज़दूरों के बीच के पारंपरिक संबंध बदल रहे हैं। पहले भूस्वामी अपने मज़दूरों को संकट के समय कुछ सुरक्षा या 'संरक्षण' प्रदान करते थे, जो अब धीरे-धीरे समाप्त हो गया है। अब यह संबंध केवल काम और मज़दूरी तक सीमित होकर अधिक व्यावसायिक और शोषणकारी हो गया है, जिसे उन्होंने 'संरक्षण से शोषण' की ओर संक्रमण कहा है।

24. (A) केवल 1 और 2
1990 के दशक के आर्थिक सुधारों के बाद भारतीय कृषि को अंतर्राष्ट्रीय बाज़ारों के लिए खोल दिया गया, जिससे विदेशी प्रतिस्पर्धा और आयात में वृद्धि हुई। इस दौर में 'संविदा खेती' जैसी नई प्रणालियाँ शुरु हुईं जहाँ बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ सीधे किसानों के साथ अनुबंध करती हैं। हालांकि इन नीतियों के कारण किसानों की निर्भरता बड़ी कंपनियों पर बढ़ गई है और कई क्षेत्रों में सरकारी सहायता और कृषि विस्तार सेवाओं में कमी देखी गई है।

25. (C) यह किसानों को कंपनियों पर निर्भर बनाती है और असुरक्षा बढ़ा सकती है।
संविदा खेती में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ किसानों को बीज और तकनीक उपलब्ध कराती हैं, लेकिन बदले में किसान अपनी फसल के प्रकार और विक्रय मूल्य के चयन की स्वतंत्रता खो देते हैं। यद्यपि इससे एक निश्चित बाज़ार का आश्वासन मिलता है, परंतु किसान पूरी तरह कंपनियों की शर्तों पर निर्भर हो जाते हैं। फसल खराब होने या गुणवत्ता मानकों पर खरा न उतरने की स्थिति में किसानों को भारी वित्तीय जोखिम और असुरक्षा का सामना करना पड़ता है।

26. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
हरित क्रांति के दौरान पंजाब और हरियाणा जैसे राज्यों में कृषि का तीव्र मशीनीकरण हुआ। ट्रैक्टर, थ्रेशर और कंबाइन हार्वेस्टर जैसे उपकरणों के बढ़ते प्रयोग ने उन पारंपरिक कार्यों को समाप्त कर दिया जो पहले विशिष्ट सेवा प्रदान करने वाली जातियों द्वारा किए जाते थे। इस मशीनीकरण के कारण ग्रामीण कारीगरों और खेतिहर मज़दूरों की माँग में कमी आई, जिससे उनका ग्रामीण अर्थव्यवस्था से विस्थापन हुआ और वे अन्य कार्यों की तलाश में पलायन करने लगे।

27. (D) पुरुषों के प्रवास के कारण कृषि में महिलाओं की श्रम भागीदारी का बढ़ना
ग्रामीण क्षेत्रों से जब पुरुष सदस्य बेहतर मज़दूरी और रोज़गार की तलाश में शहरों की ओर पलायन करते हैं, तब खेती के कार्यों का पूरा उत्तरदायित्व घर की महिलाओं पर आ जाता है। इस प्रक्रिया को 'कृषि मज़दूरों का महिलाकरण' कहा जाता है। यद्यपि कृषि में महिलाओं की श्रम भागीदारी बढ़ी है, लेकिन उन्हें पुरुषों की तुलना में कम मज़दूरी मिलती है और वे भूमि के मालिकाना हक से अब भी वंचित रहती हैं।

28. (B) घुमक्कड़ मज़दूर
जान ब्रेमन ने उन कृषि मज़दूरों को 'घुमक्कड़ मज़दूर' या 'फूटलूज़ लेबर' कहा है जो काम की तलाश में एक स्थान से दूसरे स्थान पर निरंतर पलायन करते रहते हैं। ये मज़दूर किसी एक भूस्वामी के पास स्थायी रुप से काम करने के बजाय मौसमी आधार पर उन क्षेत्रों में जाते हैं जहाँ अधिक मज़दूरी या काम की उपलब्धता होती है। यह प्रवासन ग्रामीण अर्थव्यवस्था के व्यापारीकरण और पारंपरिक संबंधों के टूटने का परिणाम है।

29. (A) 4, 2, 3, 1
भारत के ग्रामीण विकास के इतिहास में स्वतंत्रता के तुरंत बाद ज़मींदारी उन्मूलन अधिनियम पारित किया गया। इसके पश्चात 1980 के दशक में हरित क्रांति का दूसरा चरण शुरू हुआ जिसने शुष्क क्षेत्रों पर ध्यान दिया। 1990 के दशक में भारत ने आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाई जिससे कृषि का वैश्विकरण हुआ। अंततः 2014 में ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना का शुभारंभ किया गया।

30. (D) बीज, खाद और कीटनाशक कंपनियों के एजेंटों ने
भूमंडलीकरण और आर्थिक सुधारों के बाद ग्रामीण क्षेत्रों में सरकारी 'कृषि विस्तार' सेवाओं की भूमिका कम होती गई है। अब किसानों को कृषि संबंधी जानकारी और परामर्श देने का कार्य निजी बीज, उर्वरक और कीटनाशक कंपनियों के एजेंटों द्वारा किया जा रहा है। ये एजेंट अक्सर कंपनियों के व्यावसायिक हितों को प्राथमिकता देते हैं, जिससे किसानों की लागत बढ़ जाती है और वे आधुनिक बाज़ार व्यवस्था में निजी संस्थाओं पर अधिक निर्भर हो जाते हैं।

31. (A) क्योंकि भूस्वामियों ने कानूनी बचाव के रास्तों से अपनी भूमि को सुरक्षित कर लिया
भूमि हदबंदी अधिनियम कई राज्यों में प्रभावी नहीं हो पाए क्योंकि इनके क्रियान्वयन में अत्यधिक विलंब हुआ और कई कानूनी खामियाँ थीं। बड़े भूस्वामियों ने इस समय का लाभ उठाकर अपनी अतिरिक्त ज़मीन को बेनामी हस्तांतरण के ज़रिए अपने रिश्तेदारों या नौकरों के नाम कर दिया। इसके अतिरिक्त, प्रभावशाली राजनीतिक पहुँच और स्थानीय प्रशासन की ढिलाई

92. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
भारत सरकार ने ग्रामीण विकास हेतु कई विशिष्ट योजनाएँ शुरु की हैं। किसान क्रेडिट कार्ड का उद्देश्य किसानों को खेती के लिए सरल ऋण उपलब्ध कराना है। दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना गाँवों में नियमित बिजली आपूर्ति सुनिश्चित करती है। प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना किसानों को फसल के नुकसान के विरुद्ध वित्तीय सुरक्षा प्रदान करती है। वहीं, राष्ट्रीय ग्रामीण-नगरीय मिशन का लक्ष्य ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच के अंतर को कम कर एकीकृत विकास को बढ़ावा देना है।

93. (C) सूखाग्रस्त तथा कम उत्पादकता वाले क्षेत्रों से
प्रवासी मज़दूर सामान्यतः उन पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों से आते हैं जहाँ खेती पूरी तरह वर्षा पर निर्भर होती है और रोज़गार के अवसर नगण्य होते हैं। सूखा, गरीबी और कम मज़दूरी के कारण इन क्षेत्रों के भूमिहीन मज़दूर और छोटे किसान अपनी आजीविका चलाने के लिए विकसित कृषि राज्यों या बड़े शहरों की ओर पलायन करते हैं। यह प्रवासन उनकी आर्थिक मजबूरी का परिणाम है, जहाँ वे बेहतर मज़दूरी की तलाश में अपने परिवार से दूर कठिन परिस्थितियों में काम करते हैं।

94. (D) उत्पादन के साधनों तथा मज़दूरों के पृथक्कीकरण पर
पूँजीवादी उत्पादन व्यवस्था एक ऐसा ढांचा है जहाँ उत्पादन के प्रमुख साधन, जैसे भूमि और मशीनरी, एक विशेष वर्ग के पास होते हैं, जबकि काम करने वाला मज़दूर वर्ग इन साधनों के स्वामित्व से पूरी तरह अलग होता है। मज़दूरों के पास केवल अपनी श्रम शक्ति होती है जिसे वे पूँजीपतियों या भूस्वामियों को मज़दूरी के बदले बेचते हैं। यह पृथक्कीकरण ग्रामीण क्षेत्रों में भी तब देखा जाता है जब बड़े किसान केवल मुनाफे के लिए खेती करते हैं और दिहाड़ी मज़दूरों का प्रयोग करते हैं।

95. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
1980 के दशक के अंत और 1990 के दशक की शुरुआत में भारत द्वारा अपनाई गई आर्थिक उदारीकरण की नीति ने ग्रामीण सामाजिक और आर्थिक संरचना को गहराई से प्रभावित किया है। इस नीति के तहत कृषि क्षेत्र में बहुराष्ट्रीय कंपनियों का प्रवेश हुआ और 'संविदा खेती' जैसी नई पद्धतियों ने जन्म लिया। इन परिवर्तनों के कारण कृषि का भूमंडलीकरण हुआ, जिससे भारतीय किसानों को सीधे वैश्विक बाज़ार की चुनौतियों और कीमतों के उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ रहा है।

96. (B) बीजों की पारंपरिक किस्मों का लुप्त होना
कृषि की आधुनिक और 'वैज्ञानिक' पद्धति ने अधिक उपज देने वाले संकर बीजों के उपयोग पर अत्यधिक बल दिया है। इसके कारण किसानों ने अपने पारंपरिक और स्थानीय बीजों को उगाना छोड़ दिया है, जो पीढ़ियों से विशिष्ट जलवायु और मिट्टी के अनुकूल विकसित हुए थे। इस प्रवृत्ति का एक चिंताजनक परिणाम यह रहा है कि बीजों की हज़ारों देशी किस्में अब पूरी तरह से लुप्त हो चुकी हैं, जिससे कृषि की जैव विविधता को अपूरणीय क्षति पहुँची है।

97. (A) केवल 1 और 4
हरित क्रांति का प्रथम चरण 1960 और 1970 के दशक में उन्हीं क्षेत्रों में लागू किया गया जहाँ सिंचाई की सुविधाएँ पहले से ही बेहतर थीं। चूंकि नई कृषि तकनीकें, उन्नत बीज और रासायनिक खाद काफी महँगे थे, इसलिए इस कार्यक्रम का प्राथमिक लाभ केवल उन संपन्न किसानों को ही मिला जिनके पास पर्याप्त पूँजी उपलब्ध थी। इस चरण में गरीब और भूमिहीन मज़दूरों की दशा में कोई विशेष सुधार नहीं हुआ, बल्कि इसने समाज में आर्थिक विभाजन को और अधिक बढ़ा दिया।

98. (A) बड़ी संख्या में भूमिहीन, बंधुआ और निम्न जाति के मज़दूरों की उपस्थिति
तमिलनाडु के कावेरी बेसिन जैसे अत्यधिक उपजाऊ और गहन कृषि वाले क्षेत्रों में एक विशिष्ट कृषिक संरचना विकसित हुई। यहाँ सिंचाई की प्रचुरता के कारण साल भर खेती होती थी, जिसके लिए भारी संख्या में श्रम की आवश्यकता पड़ती थी। ऐतिहासिक रूप से इन क्षेत्रों में भूमि का स्वामित्व उच्च जातियों के पास रहा, जबकि खेतों में काम करने वाले अधिकांश मज़दूर निम्न जातियों के और भूमिहीन थे। इस व्यवस्था ने ग्रामीण समाज में एक स्पष्ट जातिगत और वर्ग पदानुक्रम को बनाए रखा।

99. (C) निम्न जाति के सदस्य ज़मींदार के यहाँ बिना मज़दूरी के कुछ दिन काम करते हैं
'बेगार' एक अत्यंत शोषणकारी प्रथा थी जो भारत के कई ग्रामीण क्षेत्रों में लंबे समय तक प्रचलित रही। इस व्यवस्था के अंतर्गत निचली जातियों के सदस्यों को सामाजिक दबाव या ऋण के बदले भूस्वामियों और ज़मींदारों के यहाँ अनिवार्य रूप से मुफ़्त में शारीरिक श्रम करना पड़ता था। मज़दूरों को उनकी इस मेहनत के लिए कोई पारिश्रमिक या भोजन नहीं दिया जाता था। यद्यपि आज यह कानूनन प्रतिबंधित है, फिर भी यह पूर्व-आधुनिक ग्रामीण समाज में व्याप्त असमानता का चरम उदाहरण है।

100. (D) भूमि के प्रकार, उपज और अन्य कारकों पर
भूमि हदबंदी अधिनियम के तहत एक व्यक्ति द्वारा रखी जाने वाली भूमि की अधिकतम सीमा निर्धारित करना एक जटिल प्रक्रिया थी। सरकार ने केवल ज़मीन के आकार को ही आधार नहीं बनाया, बल्कि भूमि की उर्वरता, उपलब्ध सिंचाई सुविधाओं और उस क्षेत्र की औसत पैदावार जैसे महत्वपूर्ण कारकों को भी ध्यान में रखा। उदाहरण के लिए, शुष्क और बंजर भूमि के लिए हदबंदी की सीमा उपजाऊ और सिंचित भूमि की तुलना में अधिक रखी गई थी ताकि किसानों के बीच एक व्यावहारिक संतुलन बना रहे।

101. (C) कृषि में संरचनात्मक परिवर्तन और नई आर्थिक नीतियों से
1990 के दशक के बाद भारतीय कृषि में हुए व्यापक संरचनात्मक परिवर्तनों और आर्थिक उदारीकरण ने किसानों के सामने नई चुनौतियाँ पेश की हैं। लागत में वृद्धि, सरकारी सब्सिडी में कटौती और वैश्विक बाज़ार की अनिश्चितताओं के कारण किसान कर्ज के जाल में फँसते चले गए। इन नई नीतियों ने पारंपरिक कृषि सहायता तंत्र को कमजोर कर दिया, जिससे छोटे किसानों में असुरक्षा बढ़ी। यही आर्थिक दबाव और निराशा

82. (A) अन्य प्रकार के व्यापारों में
हरित क्रांति के कारण जिन किसानों को अत्यधिक लाभ हुआ, उन्होंने अपनी पूँजी का विस्तार केवल खेती तक ही सीमित नहीं रखा। उन्होंने अपने लाभ को ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में नए व्यवसायों, जैसे परिवहन, पेट्रोल पंप, छोटे कारखाने और व्यापारिक प्रतिष्ठानों में निवेश करना शुरू किया। इस निवेश ने उन्हें केवल 'कृषक' से बदलकर एक 'ग्रामीण उद्यमी' के रूप में स्थापित किया, जिससे समाज में उनकी आर्थिक और राजनीतिक प्रतिष्ठा में भारी वृद्धि हुई।

83. (C) यह उत्पादन प्रक्रिया से अलग कर किसानों के ज्ञान को निरर्थक बनाती है।
संविदा खेती में बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ बीजों की किस्मों से लेकर बुवाई और कटाई के समय तक का निर्धारण करती हैं। इस पूरी प्रक्रिया में किसान केवल कंपनियों के आदेशों का पालन करने वाला एक मज़दूर बनकर रह जाता है। इससे किसानों का वह पारंपरिक कृषि ज्ञान, जो पीढ़ियों से मौसम और मिट्टी के अनुसार विकसित हुआ था, धीरे-धीरे निरर्थक और लुप्त होने लगता है। यह व्यवस्था किसानों को तकनीकी रूप से पूरी तरह विदेशी कंपनियों पर आश्रित बना देती है।

84. (A) केवल 1 और 2
ग्रामीण भारत में भूमि न केवल उत्पादन का सबसे महत्वपूर्ण साधन है, बल्कि यह अचल संपत्ति का एक ऐसा स्वरूप है जो व्यक्ति की सामाजिक स्थिति और प्रभाव को निर्धारित करता है। भूमि का स्वामित्व सुरक्षा और आय का निरंतर स्रोत प्रदान करता है। हालांकि, भारतीय गाँवों में भूमि का वितरण अत्यधिक असमान है, जहाँ अधिकांश उपजाऊ भूमि कुछ ही परिवारों के पास केंद्रित है और बड़ी आबादी भूमिहीनता या अत्यंत छोटी जोत की समस्या से जूझ रही है।

85. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
स्वतंत्रता के बाद कृषि विकास और शिक्षा के विस्तार ने ग्रामीण क्षेत्रों में एक नए प्रभावशाली वर्ग को जन्म दिया है। समृद्ध किसान परिवारों के शिक्षित युवाओं ने न केवल कृषि के आधुनिक तरीकों को अपनाया, बल्कि उन्होंने शहरों में व्यावसायिक और प्रशासनिक सेवाओं में भी अपनी जगह बनाई। इस वर्ग ने ग्रामीण और नगरीय समाज के बीच एक कड़ी का काम किया और स्थानीय राजनीति में अपनी स्थिति मजबूत कर एक नए 'ग्रामीण-नगरीय अभिजात वर्ग' के रूप में पहचान बनाई।

86. (B) उनकी जीविका कृषि मज़दूरी या अन्य कार्यों से चलती है।
भारत के कई ग्रामीण क्षेत्रों में लगभग आधे परिवारों के पास अपनी कोई भूमि नहीं है, जिसका अर्थ है कि वे अपनी आजीविका के लिए पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर हैं। ऐसे परिवार मुख्य रूप से बड़े भूस्वामियों के खेतों में मज़दूरी करते हैं या गाँव में छोटे-मोटे अकृषि कार्य और कारीगरी करके अपना जीवन यापन करते हैं। भूमिहीनता उन्हें आर्थिक रूप से असुरक्षित बनाती है और वे अक्सर ऋण के जाल में फँसकर बंधुआ मज़दूरी जैसी स्थितियों का सामना करते हैं।

87. (D) क्योंकि उनके पास वास्तव में बहुत सीमित अधिकार होते हैं।
यद्यपि भारतीय कानून अब महिलाओं को पैतृक संपत्ति में समान अधिकार प्रदान करता है, परंतु वास्तविक व्यवहार में स्थिति इसके विपरीत है। ग्रामीण समाज में पितृसत्तात्मक मानदंड इतने गहरे हैं कि महिलाएँ अक्सर सामाजिक दबाव या भाई-बहन के संबंधों को बचाने के लिए अपने हक का दावा नहीं करतीं। इसके अलावा, जागरूकता की कमी और कानूनी प्रक्रियाओं की जटिलता के कारण भी महिलाएँ संपत्ति के मामले में पुरुषों की तुलना में बहुत सीमित अधिकारों का ही उपभोग कर पाती हैं।

88. (A) ए. मध्य और ऊँची जातीय समूहों के लोग
भारत में भूस्वामी समूहों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट होता है कि अधिकांश उपजाऊ भूमि पर मध्यवर्ती और ऊँची जातियों का नियंत्रण है। ये जातियाँ ऐतिहासिक रूप से खेती से जुड़ी रही हैं और स्वतंत्रता के बाद के भूमि सुधारों तथा हरित क्रांति का सबसे अधिक लाभ इन्हीं समूहों को मिला है। इन्हें 'प्रबल जातियाँ' कहा जाता है क्योंकि वे आर्थिक संपन्नता के साथ-साथ संख्यात्मक रूप से भी मजबूत हैं और स्थानीय सत्ता संरचना में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं।

89. (C) स्थानीय राजा या ज़मींदार को
औपनिवेशिक काल की ज़मींदारी व्यवस्था में, ब्रिटिश सरकार ने ज़मींदारों को भूमि का स्वामी बना दिया था और उन्हें राजस्व वसूली का अधिकार दिया था। गरीब किसान अपनी दिन-रात की कड़ी मेहनत से उपजाई गई फसल का एक बहुत बड़ा हिस्सा लगान के रूप में इन ज़मींदारों को देने के लिए मजबूर थे। इस व्यवस्था में ज़मींदार किसानों का अत्यधिक शोषण करते थे और वसूल किए गए लगान का एक निश्चित हिस्सा स्वयं रखकर शेष ब्रिटिश खजाने में जमा करते थे।

90. (B) केवल 1, 2 और 3
हरित क्रांति भारत में कृषि उत्पादन बढ़ाने के उद्देश्य से शुरू किया गया एक वैज्ञानिक कार्यक्रम था, जिसे फोर्ड फाउंडेशन जैसी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं का सहयोग प्राप्त था। यह कार्यक्रम मुख्य रूप से अधिक उपज देने वाले संकर बीजों, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के सघन उपयोग पर आधारित था। यह पूरे भारत में एक साथ लागू नहीं किया गया था, बल्कि इसे केवल उन क्षेत्रों में शुरू किया गया था जहाँ सिंचाई की उत्तम व्यवस्था पहले से मौजूद थी।

91. (D) ग्रामीण अर्थव्यवस्था और कृषि में रूपांतरण
भारत सरकार द्वारा ग्रामीण अधिसंरचना, जैसे सड़कों, नहरों और बिजली आपूर्ति में किए गए निरंतर निवेश ने ग्रामीण परिदृश्य को बदल दिया है। इन सुविधाओं के विकास से किसानों की बाज़ार तक पहुँच आसान हुई और कृषि का व्यवसायीकरण तेज़ हुआ। सिंचाई के साधनों ने खेती को मानसून की अनिश्चितता से बचाया, जिससे कृषि उत्पादन में स्थिरता आई। इन बुनियादी ढाँचागत सुधारों ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पारंपरिक निर्वाह खेती से निकालकर एक आधुनिक और प्रतिस्पर्धी बाज़ार व्यवस्था में बदल दिया है।

111. (A) क्योंकि नए बीजों हेतु समुचित जल की आवश्यकता थी
हरित क्रांति की सफलता मुख्य रूप से अधिक उपज देने वाले 'संकर बीजों' (HYV) पर टिकी थी। इन आधुनिक बीजों की एक अनिवार्य शर्त यह थी कि उन्हें समय पर और प्रचुर मात्रा में सिंचाई की आवश्यकता होती थी, जिसके बिना वे सूख जाते थे। सरकार ने जोखिम से बचने के लिए इस कार्यक्रम को प्राथमिकता के आधार पर पंजाब और हरियाणा जैसे उन क्षेत्रों में लागू किया जहाँ नहरों और नलकूपों का जाल पहले से ही मजबूत था, ताकि खाद्यान्न उत्पादन के लक्ष्यों को शीघ्रता से प्राप्त किया जा सके।

112. (B) 1950 से 1970 के बीच
आज़ादी के बाद भारत सरकार ने ग्रामीण सामाजिक संरचना को सुधारने के लिए भूमि सुधारों की एक विस्तृत श्रृंखला शुरू की, जो मुख्य रूप से 1950 और 1970 के दशकों के बीच सक्रिय रही। इस अवधि के दौरान ज़मींदारी उन्मूलन, पट्टेदारी सुधार और भूमि हदबंदी जैसे महत्वपूर्ण कानून राज्यों द्वारा पारित किए गए। इन सुधारों का व्यापक उद्देश्य बिचौलियों का अंत करना, किसानों को सुरक्षा प्रदान करना और भूमि का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित करना था ताकि ग्रामीण अर्थव्यवस्था को एक नई दिशा मिल सके।

113. (B) ज़मींदारी में बिचौलिया था जबकि रैयतवाड़ी में कृषक सीधे जुड़ा था।
औपनिवेशिक भारत की भू-राजस्व प्रणालियों में ज़मींदारी और रैयतवाड़ी दो प्रमुख व्यवस्थाएँ थीं। ज़मींदारी व्यवस्था में सरकार और किसान के बीच ज़मींदार एक शक्तिशाली बिचौलिया होता था जो राजस्व वसूलता था। इसके विपरीत, रैयतवाड़ी व्यवस्था में सरकार ने बिचौलियों को हटाकर सीधे 'रैयत' यानी वास्तविक किसान के साथ समझौता किया था। रैयतवाड़ी व्यवस्था में किसान को अपनी भूमि का स्वामी माना जाता था, जिससे उसे अपनी ज़मीन में निवेश करने और उत्पादन बढ़ाने का अधिक अवसर मिलता था।

114. (A) परंपरागत व्यवसाय जैसे कुम्हार, जुलाहे आदि टूट रहे हैं।
औपनिवेशिक काल से ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था में व्यवसायों का स्वरूप तेज़ी से बदला है। मशीनों से निर्मित सस्ते सामानों की बाज़ार में उपलब्धता के कारण पारंपरिक कारीगरों, जैसे कुम्हारों, जुलाहों और लुहारों की माँग कम हो गई है। उनके हस्तशिल्प अब आधुनिक औद्योगिक उत्पादों के सामने प्रतिस्पर्धा नहीं कर पा रहे हैं, जिसके कारण ये लोग अपने पुश्तैनी काम छोड़कर कृषि मज़दूरी या शहरों में निर्माण कार्यों की ओर पलायन कर रहे हैं। इस बदलाव ने गाँवों की पारंपरिक आत्मनिर्भरता को काफी चोट पहुँचाई है।

115. (A) केवल 1 और 4
भारत के भूमि सुधारों में ज़मींदारी उन्मूलन सबसे सफल रहा क्योंकि इसने शोषक बिचौलियों के वर्ग को कानूनी रूप से समाप्त कर दिया। हालांकि, भूमि हदबंदी कानून व्यापक रूप से विफल रहे क्योंकि बड़े भूस्वामियों ने 'बेनामी हस्तांतरण' जैसे तरीकों का उपयोग कर अपनी अतिरिक्त भूमि को रिश्तेदारों के नाम कर दिया। पट्टेदारी सुधार भी केवल पश्चिम बंगाल और केरल जैसे कुछ ही राज्यों में सफल रहे, जबकि बाकी देश में पट्टेदारों की सुरक्षा के कानून कागजों तक ही सीमित रह गए।

116. (D) कृषि आधुनिकीकरण के सरकारी कार्यक्रम के लिए
'हरित क्रांति' शब्द भारत सरकार द्वारा 1960 के दशक में शुरू किए गए उस व्यापक कार्यक्रम के लिए उपयोग किया जाता है जिसका उद्देश्य देश को खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भर बनाना था। इसमें वैज्ञानिक पद्धतियों, जैसे अधिक उपज देने वाले संकर बीजों, रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और उन्नत सिंचाई प्रणालियों के उपयोग पर ज़ोर दिया गया। इस कार्यक्रम ने मुख्य रूप से गेहूँ और चावल के उत्पादन में भारी वृद्धि की और भारत को भुखमरी के संकट से बाहर निकालने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई।

117. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
ग्रामीण भारत में हो रहे बदलावों को विभिन्न अवधारणाओं से समझा जा सकता है। पारंपरिक संरक्षक संबंधों का टूटना 'संरक्षण से शोषण' की ओर बदलाव दर्शाता है। धनी और गरीब के बीच बढ़ती खाई को 'विभेदीकरण' कहा जाता है। पुरुषों के शहरों की ओर पलायन के कारण खेती में महिलाओं की बढ़ती भागीदारी 'कृषि का महिलाकरण' कहलाती है। वहीं, बहुराष्ट्रीय कंपनियों और किसानों के बीच फसल उत्पादन हेतु किए गए कानूनी अनुबंधों को 'संविदा खेती' के रूप में जाना जाता है।

118. (B) गाँवों में मुद्रा का बहाव बढ़ा और व्यापार के अवसर बढ़े।
हरित क्रांति के कारण कृषि उत्पादन में हुई वृद्धि ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नगद मुद्रा के प्रवाह को काफी तेज़ कर दिया। अब किसान अपनी फसलें स्थानीय उपभोग के बजाय व्यापक बाज़ारों में बेचने लगे, जिससे उनकी क्रय शक्ति बढ़ी। इस बदलाव ने गाँवों में व्यापार के नए अवसर पैदा किए और ग्रामीण बाज़ारों का शहरी अर्थव्यवस्था के साथ गहरा जुड़ाव स्थापित हुआ। कृषि का यह व्यापारीकरण गाँवों में नए व्यवसायों, परिवहन सुविधाओं और आधुनिक उपभोग की वस्तुओं की माँग बढ़ाने का मुख्य कारण बना।

119. (D) प्रभावी भू-सुधारों और राजनीतिक गतिशीलता के अभाव के कारण
पूर्वी उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों में कृषिक संरचना में व्यापक परिवर्तन नहीं आ सके क्योंकि यहाँ भूमि सुधार कानूनों को उस दृढ़ता के साथ लागू नहीं किया गया जैसा कि पश्चिम बंगाल या केरल में हुआ। इन क्षेत्रों में बड़े भूस्वामियों का राजनीतिक और सामाजिक प्रभुत्व इतना अधिक था कि उन्होंने सुधारों को विफल कर दिया। साथ ही, इन राज्यों में पट्टेदारों और भूमिहीन मज़दूरों के बीच पर्याप्त राजनीतिक चेतना और संगठित आंदोलन की कमी के कारण वे अपने अधिकारों के लिए संघर्ष नहीं कर पाए।

120. (B) केवल 1, 2 और 3
प्रवासी मज़दूर मुख्य रूप से देश के उन सूखाग्रस्त और आर्थिक रूप से पिछड़े क्षेत्रों से आते हैं जहाँ खेती से जीवन यापन करना कठिन होता है। वे बेहतर मज़दूरी और काम की तलाश में पंजाब

अध्याय 12
औद्योगिक समाज में परिवर्तन और विकास

1. समाजशास्त्रियों के अनुसार, लोगों के कार्य करने का स्थान और तरीका किसका महत्वपूर्ण हिस्सा होता है?
(A) उनकी आर्थिक स्थिति का
(B) उनकी पहचान का
(C) उनकी राजनीतिक विचारधारा का
(D) उनके मनोरंजन के साधनों का

2. मुंबई में फिल्मी सितारे और कपड़ा मिलों के मालिक सामान्यतः किस जैसे स्थानों पर रहते हैं?
(A) जुहू
(B) गोरेगाँव
(C) धारावी
(D) अंधेरी

3. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): औद्योगीकरण ने आमने-सामने के संबंधों को बदला जो ग्रामीण समाजों में पाए जाते थे।
कारण (R): आधुनिक कारखानों और कार्यस्थलों के अज्ञात व्यावसायिक संबंधों ने ग्रामीण भूस्वामियों के साथ संबंधों का स्थान ले लिया।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

4. कार्ल मार्क्स ने किस स्थिति को 'अलगाव' कहा?
(A) जब लोग अपने कार्य से पूर्णतः संतुष्ट होते हैं।
(B) जब लोग सामाजिक मुख्यधारा से विमुख हो जाते हैं।
(C) जब लोग अपने परिवार और निजी घर से दूर रहते हैं।
(D) जब कार्य दोहराने वाला हो और कामगार अप्रसन्न हों।

5. भारत में महिलाओं को नर्सिंग अथवा शिक्षण के कार्यों में अधिक क्यों पाया जाता है?
(A) यह केवल एक आकस्मिक और निराधार संयोग है।
(B) अन्य तकनीकी कार्य महिलाओं के लिए बहुत जटिल हैं।
(C) समाज इन्हें देखभाल एवं पोषण हेतु उपयुक्त मानता है।
(D) इन विशिष्ट क्षेत्रों में उच्च वेतन प्राप्त होता है।

6. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सही मिलान का चयन कीजिए:
सूची I: (विचारक)
P. कार्ल मार्क्स
Q. मैक्स वेबर
R. एमील दुर्खाइम
S. क्लार्क केर
सूची II: (अवधारणा/सिद्धांत)
1. अभिसरण शोध
2. उद्योग की संकल्पना
3. श्रम का विभाजन
4. अलगाव
कूट:
(A) P-4, Q-2, R-3, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

7. आई.एल.ओ के आँकड़ों (2018-19) के अनुसार भारत में लगभग कितने प्रतिशत लोग प्राथमिक क्षेत्र (कृषि एवं खदान) में कार्यरत थे?
(A) 25 प्रतिशत
(B) 23 प्रतिशत
(C) 13.8 प्रतिशत
(D) 43 प्रतिशत

8. भारत में औद्योगीकरण के अनुभव पाश्चात्य प्रतिमान से किस प्रकार भिन्न थे?
(A) वे कई प्रकारों से समान और कई प्रकारों से भिन्न थे।
(B) वे पूरी तरह से समान थे।
(C) वे पूरी तरह से भिन्न थे।
(D) भारत में औद्योगीकरण हुआ ही नहीं।

9. भारतीय रोजगार परिदृश्य (2018-19) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. लगभग 43% लोग प्राथमिक क्षेत्र में कार्यरत थे।
2. लगभग 25% लोग द्वितीयक क्षेत्र में कार्यरत थे।
3. लगभग 23% लोग तृतीयक क्षेत्र में कार्यरत थे।
4. कृषि कार्यों के हिस्से में तेजी से ह्रास हुआ।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) 1, 2, और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

130. (A) P-3, Q-1, R-4, S-2
भारत की सांस्कृतिक विविधता उसके क्षेत्रीय त्योहारों में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। तमिलनाडु में पोंगल, असम में बीहू और पंजाब में बैसाखी मुख्य रूप से फसलों की कटाई से जुड़े उत्सव हैं। वहीं, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश के क्षेत्रों में 'उगाड़ी' को नव वर्ष के रूप में बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। ये सभी त्योहार ग्रामीण जीवन में कृषि की केंद्रीयता और प्रकृति के प्रति आभार प्रकट करने के सुंदर माध्यम हैं, जो क्षेत्रीय पहचान को और मजबूत करते हैं।

131. (C) क्योंकि कीमतें में बढ़ोतरी हुई और भुगतान खाद्यान्न के स्थान पर नगद होने लगा।
हरित क्रांति के बाद कृषि का तीव्र व्यापारीकरण हुआ और मज़दूरों को अनाज के बजाय नगद भुगतान मिलने लगा। यद्यपि श्रम की माँग बढ़ी, लेकिन बाज़ार में आवश्यक वस्तुओं की कीमतों में उससे कहीं अधिक तेज़ी से वृद्धि हुई। इसके कारण मज़दूरों की वास्तविक क्रय शक्ति घट गई और वे पहले की तुलना में अधिक आर्थिक कठिनाइयों का सामना करने लगे। नगद भुगतान ने उन्हें उस खाद्य सुरक्षा से भी वंचित कर दिया जो उन्हें पहले पारंपरिक भुगतान के रूप में अनाज मिलने से प्राप्त होती थी।

132. (D) सावयवी उत्पाद को संकर उत्पाद से अधिक स्वस्थ माना जाता है।
ग्रामीण भारत में आधुनिक कृषि तकनीकों के आने के बाद 'सावयवी' (देशी/जैविक) और 'संकर' उत्पादों के बीच एक स्पष्ट धारणा विकसित हुई है। स्थानीय लोगों का यह मानना है कि पारंपरिक तरीकों और देशी बीजों से उपजाए गए फल और अनाज अधिक स्वादिष्ट, पौष्टिक और स्वास्थ्य के लिए बेहतर होते हैं। इसके विपरीत, संकर बीजों और रसायनों के उपयोग से तैयार की गई फसलों को केवल अधिक पैदावार और बाज़ार में लाभ के लिए तो अच्छा माना जाता है, लेकिन शुद्धता और स्वास्थ्य की दृष्टि से उन्हें कमतर आँका जाता है।

133. (C) कृषि के व्यापारीकरण का
ग्रामीण मज़दूरों का एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में संचार या मौसमी प्रवासन इस बात का प्रमाण है कि कृषि अब केवल जीवन निर्वाह का साधन नहीं रही, बल्कि एक व्यापक व्यापार बन गई है। व्यापारीकरण के कारण विकसित कृषि क्षेत्रों में श्रम की माँग बढ़ गई है, जिसे पूरा करने के लिए पिछड़े क्षेत्रों से मज़दूरों का पलायन होता है। यह बदलाव पारंपरिक जजमानी संबंधों के टूटने और मज़दूरी के बाज़ार आधारित होने को दर्शाता है, जहाँ मज़दूर अब अपनी श्रम शक्ति को बेचने के लिए स्वतंत्र और गतिशील हैं।

134. (C) केवल 1, 2 और 3
भूमंडलीकरण के प्रभावों के तहत भारत सरकार द्वारा गेहूँ के आयात का निर्णय एक विवादास्पद कदम रहा है, जिसने खाद्यान्न में आत्मनिर्भरता की दशकों पुरानी नीति पर सवाल खड़े कर दिए। यह स्थिति 1960 के दशक के उस दौर की याद दिलाती है जब भारत अमेरिकी अनाज सहायता पर निर्भर था। इस निर्णय का किसानों और अर्थशास्त्रियों ने व्यापक विरोध किया क्योंकि इससे घरेलू बाज़ार में कीमतों और स्थानीय किसानों की आय पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना थी। यह कृषि के वैश्विक बाज़ार के दबाव को दर्शाता है।

135. (D) क्योंकि कंपनी पूर्वनिर्धारित तय मूल्य पर उपज खरीदने का आश्वासन देती है।
संविदा खेती में किसानों के लिए सबसे बड़ा आकर्षण यह होता है कि उन्हें बाज़ार की अनिश्चितताओं और कीमतों में होने वाले अचानक उतार-चढ़ाव से मुक्ति मिल जाती है। बुवाई से पहले ही कंपनी और किसान के बीच एक लिखित समझौता होता है जिसमें फसल का मूल्य पहले से ही तय कर दिया जाता है। इससे किसानों को यह मानसिक शांति रहती है कि फसल तैयार होने के बाद उन्हें एक निश्चित आय अवश्य प्राप्त होगी, चाहे बाज़ार में उस समय कीमतें कितनी भी कम क्यों न हों।

136. (A) क्योंकि यह जीने का एक तरीका भी है और संस्कृति से जुड़ा है।
ग्रामीण भारत में भूमि का महत्व केवल उसकी बाज़ार कीमत या उत्पादन क्षमता तक सीमित नहीं है। यह सामाजिक प्रतिष्ठा, पारिवारिक विरासत और व्यक्ति की पहचान का एक अटूट हिस्सा है। भूमि का स्वामित्व यह निर्धारित करता है कि व्यक्ति का सामाजिक पदानुक्रम में क्या स्थान होगा और उसका राजनीतिक प्रभाव कितना होगा। चूँकि ग्रामीण जीवन की अधिकांश परंपराएँ और रीति-रिवाज़ भूमि और कृषि चक्र से गहरे जुड़े हुए हैं, इसलिए इसे एक पवित्र संपत्ति और जीवन जीने का आधार माना जाता है।

137. (C) डाकखाने में नौकरी करना
ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि कार्यों के अलावा कई ऐसी गतिविधियाँ भी की जाती हैं जिनका सीधा संबंध खेती से नहीं होता, इन्हें 'अकृषि क्रियाकलाप' कहा जाता है। उदाहरण के लिए, गाँव के डाकखाने में नौकरी करना, स्थानीय स्कूल में पढ़ाना या छोटी किराना दुकान चलाना अकृषि कार्यों की श्रेणी में आता है। ये कार्य ग्रामीण आबादी को आजीविका के वैकल्पिक स्रोत प्रदान करते हैं और गाँवों में आर्थिक विविधता लाने में मदद करते हैं, जिससे कृषि पर जनसंख्या का अत्यधिक दबाव कुछ हद तक कम होता है।

138. (A) या तो पट्टेदारी को हटाना या किराए के नियम बनाना
आज़ादी के बाद लागू किए गए पट्टेदारी सुधार कानूनों का प्राथमिक उद्देश्य पट्टेदारों को शोषक भूस्वामियों से सुरक्षा प्रदान करना था। इन कानूनों के दो मुख्य पहलू थे: पहला, पट्टेदारी को समाप्त कर जोतने वाले किसान को भूमि का स्वामी बनाना, और दूसरा, यदि पट्टेदारी जारी रहती है, तो किराए की एक उचित और न्यायसंगत सीमा तय करना ताकि किसानों का आर्थिक शोषण न हो सके। इन सुधारों के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में काश्तकारों की स्थिति को कानूनी रूप से मजबूत करने का प्रयास किया गया था।

और हरियाणा जैसे समृद्ध कृषि राज्यों की ओर मौसमी पलायन करते हैं। समाजशास्त्री जान ब्रेमन ने उनकी इस असुरक्षित और निरंतर गतिशील स्थिति को 'घुमक्कड़ मज़दूर' की संज्ञा दी है। अक्सर इन मज़दूरों को कार्यस्थल पर बहुत ही खराब जीवन दशाओं और सामाजिक शोषण का सामना करना पड़ता है।

121. (C) उनसे अधिक उत्पादन होता था।
हरित क्रांति के तहत उपयोग किए गए उन्नत और संकर बीजों की सबसे प्रमुख विशेषता उनकी उच्च उत्पादकता थी। पारंपरिक बीजों की तुलना में ये बीज कम समय में और एक ही ज़मीन के टुकड़े पर कई गुना अधिक अनाज पैदा करने की क्षमता रखते थे। यद्यपि इनकी खेती में खाद और पानी की लागत अधिक थी, लेकिन उत्पादन की भारी मात्रा ने इसे बड़े और मध्यम किसानों के लिए अत्यंत लाभदायक बना दिया, जिससे भारत के कुल खाद्यान्न भंडार में अभूतपूर्व वृद्धि हुई।

122. (A) ए और आर दोनों सत्य हैं और आर, ए की सही व्याख्या है।
हरित क्रांति के दौरान कृषि में ट्रैक्टर, थ्रेशर और अन्य मशीनों के बढ़ते उपयोग ने ग्रामीण समाज की पारंपरिक सेवा व्यवस्था को नष्ट कर दिया। पहले जो कार्य विशिष्ट जातियों द्वारा हाथों से किए जाते थे, अब वे मशीनों द्वारा तेज़ी से और कम लागत में होने लगे। इस मशीनीकरण के कारण सेवा प्रदाता जातियों के पास काम नहीं रहा और वे ग्रामीण अर्थव्यवस्था से विस्थापित हो गईं। उन्हें अपनी आजीविका चलाने के लिए शहरों की ओर पलायन करने या अन्य निम्न कार्यों को अपनाने के लिए मजबूर होना पड़ा।

123. (D) बीज, कीटनाशक और खाद के विक्रेता के रूप में
कृषि के भूमंडलीकरण के दौर में बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने ग्रामीण बाज़ारों में अपनी पैठ अत्यंत मजबूत कर ली है। ये कंपनियाँ अब केवल उत्पाद खरीदने वाली संस्थाएँ नहीं हैं, बल्कि वे किसानों को अपने महँगे बीज, विशिष्ट कीटनाशक और रासायनिक उर्वरक बेचने वाले प्रमुख विक्रेताओं के रूप में कार्य कर रही हैं। कंपनियों के इन उत्पादों पर किसानों की बढ़ती निर्भरता ने कृषि की लागत को बढ़ा दिया है और किसानों को निजी संस्थाओं के व्यावसायिक हितों के प्रति अधिक संवेदनशील बना दिया है।

124. (B) उनका लाभ कम हुआ है और कई किसान ऋणी हो गए हैं।
आधुनिक कृषि में रसायनों और महँगे बीजों के अनिवार्य उपयोग ने किसानों की उत्पादन लागत में भारी वृद्धि कर दी है। यद्यपि इससे पैदावार बढ़ी है, लेकिन बाज़ार में फसलों की कीमतों में होने वाले उतार-चढ़ाव और बढ़ती लागत के कारण किसानों का वास्तविक शुद्ध लाभ धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। अपनी खेती की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए किसान अक्सर साहूकारों या बैंकों से कर्ज लेते हैं, जो फसल खराब होने की स्थिति में उन्हें गंभीर ऋणग्रस्तता और आर्थिक संकट की ओर धकेल देता है।

125. (C) नई तकनीक अपनाने वाले किसानों की समृद्धि
1960 के दशक के बाद ग्रामीण भारत में सामाजिक परिवर्तन का सबसे बड़ा चालक हरित क्रांति की तकनीकें रहीं। जिन किसानों ने समय रहते आधुनिक बीज, उर्वरक और मशीनों को अपनाया, उनकी आर्थिक स्थिति में क्रांतिकारी सुधार हुआ और वे एक समृद्ध वर्ग के रूप में उभरे। इस आर्थिक मजबूती ने उन्हें न केवल समाज में ऊँचा स्थान दिलाया, बल्कि स्थानीय और क्षेत्रीय राजनीति में भी उनका प्रभाव अत्यंत गहरा हो गया। इस समृद्धि ने गाँवों के पुराने शक्ति संतुलन को पूरी तरह से बदल दिया।

126. (D) विभिन्न क्षेत्रीय संस्कृतियों का बिंबन
भारत एक विशाल देश है जहाँ की जलवायु, मिट्टी और भौगोलिक स्थितियाँ हर क्षेत्र में भिन्न हैं, जिसका सीधा प्रभाव कृषि की पद्धतियों और उगाई जाने वाली फसलों पर पड़ता है। कृषि के इन अलग-अलग स्वरूपों के कारण ही विभिन्न क्षेत्रों में विविध खान-पान, त्योहार और सामाजिक रीतियाँ विकसित हुई हैं। यही कारण है कि पंजाब, तमिलनाडु और असम जैसे राज्यों की ग्रामीण संस्कृति वहाँ की विशिष्ट कृषि पद्धतियों को प्रतिबिंबित करती है, जो भारतीय ग्रामीण समाज को एक बहुरंगी पहचान प्रदान करती है।

127. (A) कुम्हार, खाती, जुलाहे और लुहार
ग्रामीण भारत की पारंपरिक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था केवल कृषि पर ही आधारित नहीं थी, बल्कि इसमें अकृषि कार्यों का भी महत्वपूर्ण योगदान था। कुम्हार, खाती (बढ़ई), जुलाहे और लुहार जैसे समूह गाँव की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए विभिन्न वस्तुओं का निर्माण करते थे। यह कार्य जाति व्यवस्था के श्रम विभाजन पर आधारित था जहाँ प्रत्येक समूह का अपना एक विशिष्ट कौशल था। यद्यपि आज इन कार्यों में गिरावट आई है, लेकिन ऐतिहासिक रूप से ये ग्रामीण जीवन के अभिन्न आर्थिक स्तंभ रहे हैं।

128. (B) जाति और वर्ग के बीच एक पारस्परिकता है, लेकिन यह हमेशा पूर्ण नहीं होती।
ग्रामीण भारत में जाति और वर्ग एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, जहाँ अक्सर उच्च जातियों के लोग ही भूस्वामी वर्ग में शामिल होते हैं। हालाँकि, यह संबंध हमेशा अनिवार्य नहीं होता क्योंकि कई क्षेत्रों में निम्न या मध्य जातियों ने भी आर्थिक समृद्धि और भूमि के माध्यम से उच्च वर्ग में स्थान प्राप्त किया है। समाज के आधुनिक बदलावों और भूमि सुधारों ने जाति और वर्ग के इस पारंपरिक मेल को कुछ हद तक शिथिल किया है, जिससे ग्रामीण सामाजिक संरचना अब पहले की तुलना में अधिक जटिल हो गई है।

129. (B) केवल 1, 2 और 4
आज़ादी के बाद लागू किए गए भूमि सुधारों का एक प्रमुख लक्ष्य देश की कृषि उत्पादकता को बढ़ाना था ताकि खाद्यान्न के लिए विदेशों पर निर्भरता कम की जा सके। इसके साथ ही सरकार भूस्वामित्व व्यवस्था में व्याप्त विसंगतियों को दूर कर वास्तविक किसानों को भूमि का अधिकार दिलाना चाहती थी। इन सुधारों का एक अन्य महत्वपूर्ण उद्देश्य ग्रामीण निर्धनता को समाप्त करना और समाज में संसाधनों का न्यायपूर्ण वितरण सुनिश्चित करना था, जिससे एक समतावादी ग्रामीण समाज की स्थापना हो सके।

148. (A) A और R दोनों सत्य हैं और R, A की सही व्याख्या है।
स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की कृषि व्यवस्था अत्यंत दयनीय स्थिति में थी क्योंकि औपनिवेशिक शोषण ने इसे जर्जर बना दिया था। देश में खाद्यान्न की भारी कमी थी और करोड़ों लोग गहन गरीबी और भुखमरी की कगार पर थे। भारत को अपनी विशाल जनसंख्या का पेट भरने के लिए विदेशों से अनाज आयात करने पर निर्भर रहना पड़ता था, जो राष्ट्रीय स्वाभिमान के लिए एक बड़ी चुनौती थी। इसी निराशाजनक स्थिति ने सरकार को भूमि सुधारों और बाद में हरित क्रांति जैसे बड़े कदम उठाने के लिए प्रेरित किया।

149. (C) स्थानीय मज़दूर बाहर जाते हैं जबकि प्रवासी खेतों में आते हैं।
गन्ना उत्पादक क्षेत्रों, जैसे पश्चिमी उत्तर प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों में मज़दूर प्रवास का एक विचित्र और विरोधाभासी प्रतिमान देखा जाता है। इन संपन्न क्षेत्रों के स्थानीय मज़दूर अक्सर बेहतर मज़दूरी या अन्य कार्यों की तलाश में पास के शहरों या दूसरे राज्यों की ओर पलायन करते हैं। दूसरी ओर, गन्ने की कटाई और बुवाई के भारी कार्यों को पूरा करने के लिए भूस्वामी बाहर के पिछड़े राज्यों से आए सस्ते प्रवासी मज़दूरों को काम पर रखते हैं। यह प्रवृत्ति ग्रामीण श्रम बाज़ार की जटिलता और आर्थिक असमानता को दर्शाती है।

150. (B) 'कृषि विस्तार' एजेंटों का स्थान बहुराष्ट्रीय कंपनियों के एजेंटों ने ले लिया है।
भूमंडलीकरण और आर्थिक नीतियों में आए बदलावों के कारण अब कृषि क्षेत्र में सरकारी भूमिका और निवेश धीरे-धीरे कम होता जा रहा है। इसका सबसे स्पष्ट प्रभाव यह पड़ा है कि गाँवों में पहले जो सरकारी 'कृषि विस्तार' एजेंट किसानों को सलाह और तकनीकी सहायता देते थे, वे अब लगभग गायब हो गए हैं। उनका स्थान अब निजी खाद, बीज और कीटनाशक कंपनियों के एजेंटों ने ले लिया है। ये एजेंट किसानों को केवल वही जानकारी और उत्पाद उपलब्ध कराते हैं जिनसे उनकी कंपनियों का व्यावसायिक लाभ जुड़ा होता है, जिससे किसान निजी संस्थाओं पर अधिक निर्भर हो गए हैं।

151. (B) जाति समूहों के बीच आर्थिक और सामाजिक आदान-प्रदान को विनियमित करना।
पारंपरिक भारतीय ग्रामीण समाज में जजमानी व्यवस्था जातियों के बीच आर्थिक और सामाजिक लेन-देन को व्यवस्थित करने का एक प्रमुख माध्यम थी। इस व्यवस्था के अंतर्गत सेवा प्रदाता जातियाँ जैसे लोहार और नाई, प्रभुत्वशाली भू-स्वामी जातियों को अपनी विशिष्ट सेवाएँ प्रदान करती थीं। इसके बदले में उन्हें फसल का हिस्सा या वस्तुएँ दी जाती थीं, जो सामाजिक अंतःक्रियाओं को नियंत्रित करती थीं।

152. (A) भूमि का स्वामित्व।
ग्रामीण भारत की सामाजिक और आर्थिक संरचना में भूमि का स्वामित्व शक्ति के प्राथमिक आधार के रूप में कार्य करता था। जिसके पास कृषि योग्य भूमि होती थी, वही समाज में आर्थिक रूप से शक्तिशाली और राजनीतिक रूप से प्रभावशाली माना जाता था। भूमि पर नियंत्रण ने ही 'प्रबल जातियों' को ग्रामीण पदानुक्रम में सर्वोच्च स्थान और निर्णय लेने का अधिकार प्रदान किया था।

153. (C) पूर्णतः भूमिहीन स्थिति।
समाजशास्त्री एम. एन. श्रीनिवास के अनुसार प्रबल जाति वह है जिसके पास ग्रामीण क्षेत्र में पर्याप्त मात्रा में भूमि का स्वामित्व होता है। इसके साथ ही ऐसी जातियों के पास बड़ी संख्यात्मक शक्ति और राजनीतिक प्रभाव होना आवश्यक है। भूमिहीन स्थिति वास्तव में प्रबल जाति की अवधारणा के ठीक विपरीत है, क्योंकि भूमि का स्वामित्व ही ग्रामीण प्रभुत्व का मुख्य आधार माना जाता है।

154. (D) भूमिहीनता और जाति पदानुक्रम के बीच एक गहरा संरचनात्मक संबंध।
भारत की पारंपरिक कृषि संरचना ने भूमि के स्वामित्व और जाति व्यवस्था के बीच एक मजबूत कड़ी स्थापित की थी। ऐतिहासिक रूप से उच्च और मध्यम जातियों के पास अधिकांश भूमि केंद्रित थी, जबकि निचली जातियाँ और दलित वर्ग भूमिहीन रहकर कृषि श्रमिक के रूप में कार्य करते थे। इस असमान वितरण ने ग्रामीण समाज में आर्थिक भेदभाव और सामाजिक पदानुक्रम को और अधिक सुदृढ़ बनाया।

155. (C) क्योंकि यह भू-स्वामी जातियों के पक्ष में थी और निम्न जातियों के श्रम का मूल्य कम करती थी।
जजमानी व्यवस्था को पदानुक्रमित और शोषक इसलिए माना जाता है क्योंकि यह व्यवस्था पूरी तरह से भू-स्वामी जातियों के हितों का पोषण करती थी। हालांकि इसमें पारस्परिक निर्भरता का दिखावा था, परंतु व्यवहार में यह निम्न जातियों के श्रम का उचित मूल्य नहीं देती थी। इसने आर्थिक संसाधनों के असमान वितरण को बनाए रखा और सेवा प्रदाता जातियों को सामाजिक रूप से अधीन बनाए रखा।

156. (B) ग्रामीण समाज में संरचनात्मक असमानताओं को कम करना।
स्वतंत्रता के पश्चात लागू किए गए भूमि सुधारों का मुख्य लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में सदियों से व्याप्त आर्थिक और सामाजिक विषमताओं को समाप्त करना था। सरकार चाहती थी कि भूमि का स्वामित्व उन वास्तविक कृषकों के पास हो जो उस पर श्रम करते हैं। इसके माध्यम से एक न्यायपूर्ण समाज की स्थापना और ग्रामीण गरीबों को संसाधनों पर अधिकार देकर उनका सशक्तीकरण करना सुनिश्चित करना था।

157. (D) एक परिवार द्वारा रखी जा सकने वाली भूमि की अधिकतम सीमा तय करना।
भूमि की हदबंदी का मुख्य उद्देश्य कृषि भूमि के अत्यधिक संकेंद्रण को रोकना और उसे समाज के कमजोर वर्गों में वितरित करना था। इस कानून के तहत एक परिवार के पास रहने वाली भूमि की एक ऊपरी सीमा निर्धारित की गई थी। सीमा से अधिक पाई गई अतिरिक्त भूमि को सरकार द्वारा अधिग्रहित करके भूमिहीन दलितों और आदिवासियों के बीच पुनर्वितरित करने की योजना थी।

21. बहुदेशीय कंपनियाँ विकासशील देशों से बाह्य स्रोतों से काम क्यों करवाती हैं?
(A) क्योंकि वहाँ के मज़दूर अधिक कुशल होते हैं।
(B) क्योंकि वहाँ की सरकारें अधिक सब्सिडी देती हैं।
(C) क्योंकि उन्हें वहाँ सस्ते मज़दूर उपलब्ध हो जाते हैं।
(D) क्योंकि वहाँ की कार्यावस्था बेहतर होती है।

22. रोजगार के अवसरों में कौन से दो तत्व शामिल होते हैं?
(A) वेतन और छुट्टियाँ
(B) किसी संगठन में रोज़गार और स्व-रोज़गार
(C) कृषि और उद्योग
(D) सरकारी और निजी

23. कानपुर कपड़ा मिल में रोज़गार दिलाने वाले को क्या कहते थे?
(A) ठेकेदार
(B) सरदार
(C) मैनेजर
(D) मिस्त्री

24. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सही मिलान का चयन कीजिए:
सूची I: (उद्योग/क्षेत्र)
P. कपड़ा मिल (कानपुर)
Q. सॉफ्टवेयर
R. खदान
S. बीड़ी उद्योग
सूची II: (संबंधित शब्द/अवधारणा)
1. मिस्त्री
2. नाइट आउट
3. सिलिकोसिस
4. तेंदु पत्ते
कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-1, Q-3, R-2, S-4
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

25. 'बदली कामगार' किन्हें कहते हैं?
(A) जो बार-बार एक फैक्ट्री से दूसरी फैक्ट्री बदलते हैं।
(B) जो कारखानों में केवल रात की पाली में कार्य करते हैं।
(C) जो स्थायी कर्मचारियों की अनुपस्थिति में काम करते हैं।
(D) जिन्हें बिचौलियों या ठेकेदारों के माध्यम से रखते हैं।

26. हाल ही में भारत सरकार द्वारा रोजगार और स्व-रोजगार को बढ़ावा देने के लिए कौन से कार्यक्रम प्रारम्भ किए गए हैं?
(A) उपरोक्त सभी
(B) मुद्रा योजना
(C) आत्मनिर्भर भारत
(D) मेक इन इंडिया

27. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): मार्क्स और महात्मा गाँधी दोनों ने मशीनीकरण को रोज़गार के लिए खतरा माना।
कारण (R): मशीनें उत्पादन को बढ़ाने में सहायक होती हैं, परन्तु वे कामगारों का स्थान भी ले लेती हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

28. दिहाड़ी मज़दूरों के काम की ठेकेदारी व्यवस्था ज़्यादातर कहाँ दिखाई देती है?
(A) सॉफ्टवेयर कंपनियों में
(B) भवन-निर्माण कार्य या ईंट बनाने के स्थान पर
(C) सरकारी कार्यालयों में
(D) कपड़ा मिलों में

29. कामगारों से अधिक कार्य करवाने के लिए मैनेजरों द्वारा अपनाए जाने वाले दो तरीके कौन से हैं?
(A) नियमित वेतन में वृद्धि करना और भारी बोनस देना।
(B) बेहतर कार्यदशाएँ और सवेतन छुट्टियाँ प्रदान करना।
(C) कार्य के घंटों और प्रति इकाई उत्पादन दर को बढ़ाना।
(D) समय-समय पर प्रशिक्षण और पदोन्नति की व्यवस्था।

30. उदारीकरण और निजीकरण के प्रभावों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. स्थायी सुरक्षित रोजगार असुरक्षित होते जा रहे हैं।
2. सरकारी रोजगार कम हो रहे हैं।
3. आमदनी की असमानताएँ बढ़ रही हैं।
4. बाह्य स्रोतों और अनुबंध पर काम करवाने की प्रवृत्ति बढ़ी है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

31. महात्मा गाँधी के अनुसार, चर्खे को अपनाने से क्या होता?
(A) उपरोक्त सभी
(B) बेरोज़गारी की समस्या का समाधान
(C) यह घोषणा कि भारत किसी राष्ट्र का शोषण नहीं करना चाहता
(D) अमीरों द्वारा गरीबों के शोषण की समाप्ति

32. मारुति उद्योग लिमिटेड में कामगारों को पूरे दिन में कुल कितना विश्राम मिलता है?
(A) 30 मिनट
(B) 45 मिनट

169. (C) अनिश्चित परिस्थितियाँ और शोषण।
मौसमी या परिसंचारी प्रवासी श्रमिकों की कार्य दशाएँ आमतौर पर बहुत ही खराब और असुरक्षित होती हैं। इन मजदूरों को अक्सर कठिन शारीरिक श्रम करना पड़ता है और उन्हें कानूनी रूप से निर्धारित न्यूनतम मजदूरी से भी कम पैसे दिए जाते हैं। इनके पास किसी भी प्रकार का सामाजिक सुरक्षा कवच या स्वास्थ्य बीमा नहीं होता, जिससे ये नियोक्ताओं द्वारा किए जाने वाले आर्थिक शोषण के प्रति अत्यंत संवेदनशील होते हैं।

170. (D) प्रवासी के मूल गाँव में कृषि संकट।
'पुश' कारक वे प्रतिकूल परिस्थितियाँ हैं जो किसी व्यक्ति को अपना घर छोड़ने पर मजबूर कर देती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ता कृषि संकट, मिट्टी की कम उत्पादकता और स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसरों का अभाव इसके प्रमुख उदाहरण हैं। जब परिवार का भरण-पोषण करना कठिन हो जाता है, तो श्रमिक मजबूरी में बेहतर जीवन की तलाश में अन्य संपन्न क्षेत्रों या शहरों की ओर पलायन करते हैं।

171. (C) कॉर्पोरेट कंपनियों के बीच।
संविदा कृषि एक ऐसी आधुनिक व्यवस्था है जिसमें किसान सीधे तौर पर बड़ी बहुराष्ट्रीय या घरेलू कंपनियों के साथ खेती का अनुबंध करते हैं। इस समझौते के तहत, किसान कंपनी द्वारा तय की गई विशिष्ट फसलों को निर्धारित मानकों के अनुसार उगाने के लिए सहमत होता है। बदले में कंपनी किसान को फसल के लिए आवश्यक निवेश सामग्री और तकनीकी सहायता उपलब्ध कराने की जिम्मेदारी लेती है।

172. (B) यह किसानों को बाजार के उतार-चढ़ाव के जोखिम से बचाता है।
संविदा कृषि के समर्थकों का मुख्य तर्क यह है कि यह किसानों को फसल की बिक्री के लिए एक सुनिश्चित बाजार प्रदान करती है। अनुबंध के समय ही फसल की कीमत पहले से तय कर ली जाती है, जिससे बाजार में कीमतों के गिरने पर भी किसानों को नुकसान नहीं होता। यह व्यवस्था किसानों को आय की निश्चितता और आधुनिक कृषि तकनीकों तक आसान पहुँच प्रदान करने का दावा करती है।

173. (D) किसानों की कंपनियों पर अत्यधिक निर्भरता और उनकी अपनी स्वायत्तता का कम होना।
संविदा कृषि का एक गंभीर नकारात्मक पक्ष यह है कि इसमें किसान अपनी निर्णय लेने की स्वतंत्रता खो देते हैं। वे कंपनियों द्वारा दी गई तकनीकी सलाह और बीजों पर पूरी तरह निर्भर हो जाते हैं, जिससे वे अपने ही खेत में एक मजदूर की तरह हो जाते हैं। शक्तिशाली निगमों के सामने छोटे किसान अक्सर सौदेबाजी की शक्ति खो देते हैं और अनुबंध की कठोर शर्तों में दब जाते हैं।

174. (A) खाद्य फसलों के बजाय नकदी फसलें।
संविदा कृषि आमतौर पर उन फसलों को बढ़ावा देती है जिनकी बाजार में मांग अधिक होती है, जैसे आलू, टमाटर या फूल। ये नकदी फसलें कंपनियों के लाभ के लिए उगाई जाती हैं, लेकिन इनके कारण पारंपरिक खाद्य फसलों का उत्पादन कम हो सकता है। यदि बड़े पैमाने पर खेती नकदी फसलों की ओर मुड़ जाती है, तो इससे स्थानीय समुदायों की आत्मनिर्भरता और खाद्य सुरक्षा पर संकट उत्पन्न हो सकता है।

175. (C) मिट्टी का क्षरण और पर्यावरणीय गिरावट।
संविदा कृषि अक्सर 'मोनोकल्चर' या एक ही तरह की फसल को बार-बार उगाने को प्रोत्साहित करती है, जो मिट्टी की उर्वरता को नष्ट कर देता है। उच्च गुणवत्ता वाली उपज प्राप्त करने के लिए रसायनों और कीटनाशकों का अत्यधिक उपयोग किया जाता है, जिससे भूजल प्रदूषित होता है और जैव विविधता को भारी नुकसान पहुँचता है। यह पद्धति लंबे समय में कृषि भूमि को बंजर बना सकती है और पर्यावरण पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

139. (D) क्योंकि उनके पास अधिकारों का अभाव होता है और शोषण होता है।
जान ब्रेमन द्वारा दी गई 'घुमक्कड़ मज़दूर' की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि यद्यपि ये मज़दूर काम की तलाश में इधर-उधर जाने के लिए स्वतंत्र दिखते हैं, लेकिन वास्तविकता में वे अत्यंत विवश होते हैं। प्रवासन के दौरान उनके पास कोई कानूनी सुरक्षा, आवास की सुविधा या सामाजिक समर्थन नहीं होता। उनकी इस बेसहारा स्थिति का लाभ उठाकर ठेकेदार और भूस्वामी उनका शारीरिक और आर्थिक शोषण करते हैं। उनकी यह 'स्वतंत्रता' केवल एक मालिक से दूसरे मालिक के पास जाने की मजबूरी है, जो उन्हें और अधिक असुरक्षित बनाती है।

140. (B) तीसरी मुख्य श्रेणी
भारत सरकार द्वारा भूमि सुधारों को तीन प्रमुख श्रेणियों में विभाजित किया गया था, जिनमें से 'भूमि की हदबंदी अधिनियम' को तीसरी महत्वपूर्ण श्रेणी में रखा गया है। पहली श्रेणी में बिचौलियों या ज़मींदारी व्यवस्था का उन्मूलन था, और दूसरी श्रेणी में पट्टेदारी सुधार शामिल थे। हदबंदी कानून का मुख्य उद्देश्य एक परिवार द्वारा रखी जा सकने वाली भूमि की अधिकतम सीमा निर्धारित करना था ताकि अतिरिक्त भूमि को अधिग्रहित कर भूमिहीन मज़दूरों और सीमांत किसानों के बीच पुनर्वितरित किया जा सके और सामाजिक न्याय प्राप्त हो सके।

141. (C) इसने धनी और गरीब किसानों के बीच की खाई को चौड़ा किया।
हरित क्रांति का सबसे गंभीर सामाजिक परिणाम यह रहा कि इसने ग्रामीण समाज में व्याप्त आर्थिक असमानता को और अधिक गहरा कर दिया। चूँकि इस क्रांति के लिए आवश्यक उन्नत तकनीकें और संसाधन महँगे थे, इसलिए उनका पूरा लाभ केवल धनी भूस्वामियों को ही मिला। छोटे किसान इन खर्चों को वहन करने में असमर्थ रहे और वे पिछड़ गए। इस असंतुलित विकास ने गाँवों में एक नए धनी वर्ग और एक बड़े उपेक्षित गरीब वर्ग के बीच के संघर्ष और तनाव को बढ़ावा दिया है।

142. (D) भूस्वामी और कृषि मज़दूरों के मध्य पुश्तैनी संबंधों में कमी
स्वतंत्रता के बाद और विशेषकर हरित क्रांति के आगमन के साथ, गाँवों में भूस्वामियों और मज़दूरों के बीच के सदियों पुराने पारंपरिक संबंध शिथिल हो गए हैं। पहले ये संबंध व्यक्तिगत और पुश्तैनी होते थे जहाँ भूस्वामी अपने मज़दूरों के परिवारों के प्रति कुछ नैतिक ज़िम्मेदारी महसूस करते थे। अब ये संबंध केवल 'काम और मज़दूरी' तक सीमित होकर पूरी तरह से संविदात्मक और व्यावसायिक हो गए हैं। इस बदलाव ने मज़दूरों को पुरानी जजमानी व्यवस्था के बंधनों से तो मुक्त किया है, लेकिन उनकी सामाजिक सुरक्षा को भी कम कर दिया है।

143. (A) कृषि के लिए नियमित बिजली की सप्लाई सुनिश्चित करना
दीन दयाल उपाध्याय ग्राम ज्योति योजना का मुख्य ध्येय ग्रामीण भारत की कृषि अर्थव्यवस्था को ऊर्जा के माध्यम से सशक्त बनाना है। यह योजना कृषि कार्यों के लिए बिजली की निरंतर और पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित करने पर केंद्रित है ताकि किसान आधुनिक सिंचाई पंपों का कुशलतापूर्वक उपयोग कर सकें। गाँवों में बिजली पहुँचने से न केवल कृषि उत्पादन में स्थिरता आती है, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में छोटे उद्योगों और अन्य व्यापारिक गतिविधियों को भी बढ़ावा मिलता है, जिससे समग्र विकास का मार्ग प्रशस्त होता है।

144. (B) क्योंकि इसमें खाद तथा कीटनाशक का उच्च मात्रा में प्रयोग होता है।
संविदा खेती में कंपनियाँ अपनी फसलों से अधिकतम मुनाफा कमाने के लिए किसानों को भारी मात्रा में रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों के उपयोग का निर्देश देती हैं। इन रसायनों का निरंतर और अनियंत्रित प्रयोग मिट्टी की प्राकृतिक उर्वरता को समाप्त कर देता है और भूजल को भी प्रदूषित करता है। लंबे समय में यह पद्धति पर्यावरण के लिए अत्यंत घातक सिद्ध होती है क्योंकि यह भूमि को बंजर बनाती है और स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र को असंतुलित कर देती है, जिससे कृषि की दीर्घकालिक स्थिरता खतरे में पड़ जाती है।

145. (B) कृषि कार्यों का वैयक्तीकरण
वर्तमान समय में ग्रामीण समाज में आई व्यावसायिकता के कारण पारंपरिक सामुदायिक सहयोग की भावना कम हुई है, जिसे 'कृषि कार्यों का वैयक्तीकरण' कहा जाता है। अब किसान खेती के संकटों का सामना करने के लिए अपने समुदाय या रिश्तेदारों पर निर्भर रहने के बजाय अकेले संघर्ष करने के लिए मजबूर हैं। जब भारी कर्ज और फसल की विफलता जैसी चुनौतियाँ सामने आती हैं, तो सामाजिक समर्थन के अभाव में किसान अत्यधिक मानसिक तनाव और हताशा का शिकार हो जाते हैं। यही सामाजिक अकेलापन और असुरक्षा आत्महत्या की घटनाओं को बढ़ाने वाला एक मुख्य कारक है।

146. (C) 1, 2, 3, 4
भारतीय ग्रामीण सामाजिक संरचना में सबसे पहले पारंपरिक जजमानी और संरक्षक-ग्राहक व्यवस्था प्रचलित थी। इसके पश्चात, औपनिवेशिक काल और स्वतंत्रता के बाद धीरे-धीरे कृषि का व्यापारीकरण हुआ और फसलें बाज़ार के लिए उगाई जाने लगीं। 1960 के दशक की हरित क्रांति ने गहन कृषि और आधुनिक तकनीकों के प्रयोग को तेज़ी से बढ़ाया। इन सभी परिवर्तनों के अंतिम परिणाम स्वरूप पुराने बंधन टूटे और गाँवों में 'मुक्त दिहाड़ी मज़दूरों' का एक नया वर्ग उभरा जो किसी विशेष मालिक के प्रति वफादारी से नहीं बँधा है।

147. (B) केवल 1, 2 और 4
भारत में भूमि सुधारों का मुख्य ध्येय कृषि को आधुनिक बनाना और सामाजिक न्याय स्थापित करना था। इन सुधारों में ज़मींदारी उन्मूलन सबसे प्रभावी रहा क्योंकि इसने बिचौलियों के वर्ग को जड़ से समाप्त कर दिया। इसके अतिरिक्त, पश्चिम बंगाल और केरल जैसे राज्यों ने पट्टेदारी सुधारों को अत्यंत सफलतापूर्वक लागू किया, जिससे लाखों गरीब किसानों को सुरक्षा मिली। हालांकि, पूरे देश के संदर्भ में भूमि की हदबंदी तय करने वाले कानून कानूनी और प्रशासनिक बाधाओं के कारण अपने उद्देश्यों को पूरी तरह प्राप्त करने में असफल रहे।

10. विकसित और विकासशील देशों में एक बड़ा अंतर किस प्रकार के कार्यरत लोगों की संख्या में होता है?
(A) नियमित वेतनभोगी
(B) स्व-रोज़गारी
(C) अनियमित मज़दूर
(D) कृषि श्रमिक

11. भारत में 2018-19 के आँकड़ों के अनुसार, लगभग कितने प्रतिशत लोग स्व-रोज़गारी हैं?
(A) 24 प्रतिशत
(B) 32 प्रतिशत
(C) 90 प्रतिशत
(D) 52 प्रतिशत

12. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): भारत में बहुत कम लोग बड़ी फर्मों में रोज़गार करते हैं।
कारण (R): भारत में 90 प्रतिशत से अधिक कार्य असंगठित या अनौपचारिक क्षेत्र में आते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

13. संगठित क्षेत्र की एक परिभाषा के अनुसार, एक इकाई में कम से कम कितने लोगों का पूरे वर्ष रोज़गार में रहना आवश्यक है?
(A) 5
(B) 20
(C) 10
(D) 50

14. भारत में सरकारी नौकरियों को महत्वपूर्ण क्यों माना जाता है?
(A) उपरोक्त सभी।
(B) क्योंकि वे सुरक्षित और लाभदायक होती हैं।
(C) क्योंकि वे जाति, धर्म और क्षेत्र की दीवारों को पार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
(D) क्योंकि ये पेंशन और अन्य सुविधाएँ सुनिश्चित करती हैं।

15. बीड़ी बनाने की प्रक्रिया के चरणों को सही तार्किक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. तेंदु पत्ते तोड़ना।
2. पत्तों में तंबाकू भरना और बांधना।
3. पत्तों को गीला करके काटना।
4. पत्तों को ठेकेदार को बेचना।
5. बीड़ियों को पकाना या सेंकना।
(A) 1, 4, 3, 2, 5
(B) 1, 2, 3, 4, 5
(C) 4, 1, 3, 2, 5
(D) 1, 3, 4, 5, 2

16. सरकार द्वारा सार्वजनिक कंपनियों के अपने हिस्सों को निजी क्षेत्र की कंपनियों को बेचने की प्रक्रिया को क्या कहा जाता है?
(A) उदारीकरण
(B) विनिवेश
(C) निजीकरण
(D) भूमंडलीकरण

17. 1990 के दशक से सरकार द्वारा अपनाई गई उदारीकरण की नीति का क्या परिणाम हुआ?
(A) विदेशी वस्तुएँ आसानी से उपलब्ध हो गईं।
(B) उपरोक्त सभी।
(C) कई भारतीय कंपनियाँ बहुदेशीय कंपनियों द्वारा खरीद ली गईं।
(D) कुछ भारतीय कंपनियाँ बहुदेशीय बन गईं।

18. भारत में असंगठित क्षेत्र की विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत में 90% से अधिक कार्य इस क्षेत्र में आते हैं।
2. इसमें काम करने वालों को उपयुक्त वेतन और सुविधाएँ नहीं मिलतीं।
3. इसमें कार्य के कई पक्षों का निर्धारण वैयक्तिक संबंधों से होता है।
4. इस क्षेत्र के कर्मी एकत्रित होकर सामूहिक रुप से लड़ नहीं पाते।
5. सरकार ने इस क्षेत्र की अवस्था पर निगरानी के लिए नियम बनाए हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 4 और 5
(C) केवल 1, 3 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

19. पारले पेय को किस बहुदेशीय कंपनी ने खरीदा था?
(A) पेप्सी
(B) कैडबरी
(C) कोका कोला
(D) नेस्ले

20. निजीकरण की जाने वाली पहली सरकारी कंपनी कौन सी थी, जिसने अपने 60 प्रतिशत कर्मचारियों को पहले पाँच वर्षों में जबरन सेवामुक्त कर दिया?
(A) मारुति उद्योग
(B) एयर इंडिया
(C) बी.एस.एन.एल.
(D) मॉडर्न फूड

158. (A) हदबंदी कानूनों से बचने और अपनी अतिरिक्त भूमि को गुप्त रूप से अपने पास रखने के लिए।
शक्तिशाली भू-स्वामियों ने भूमि हदबंदी कानूनों के प्रभाव को कम करने के लिए बेनामी हस्तांतरण जैसी युक्तियों का सहारा लिया। उन्होंने अपनी अतिरिक्त भूमि को कानूनी रूप से बचाने के लिए अपने रिश्तेदारों, घरेलू नौकरों या काल्पनिक व्यक्तियों के नाम पर कागजों में स्थानांतरित कर दिया। इस धोखाधड़ी के कारण सरकार को पुनर्वितरण के लिए बहुत कम भूमि प्राप्त हुई और सुधार के लक्ष्य अधूरे रहे।

159. (C) शक्तिशाली भू-स्वामी लॉबी का राजनीतिक प्रभाव और कानून में मौजूद विविध खामियाँ।
अधिकांश राज्यों में भूमि सुधारों की असफलता का प्रमुख कारण प्रभावशाली भू-स्वामियों का राजनीतिक तंत्र पर गहरा नियंत्रण था। उन्होंने कानूनों में मौजूद खामियों का फायदा उठाकर भूमि के वास्तविक हस्तांतरण को रोक दिया। प्रशासनिक इच्छाशक्ति की कमी और कानूनी जटिलताओं ने भी इन सुधारों को प्रभावी ढंग से लागू होने से रोका, जिससे ग्रामीण शक्ति संरचना में कोई बड़ा बदलाव नहीं आ सका।

160. (A) केरल और पश्चिम बंगाल।
केरल और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में भूमि सुधारों को अपेक्षाकृत अधिक सफलता मिली क्योंकि वहां मजबूत राजनीतिक इच्छाशक्ति मौजूद थी। इन क्षेत्रों में सक्रिय किसान आंदोलनों ने भी सुधारों को लागू करवाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहाँ की सरकारों ने बिचौलियों के उन्मूलन और भूमि के पुनर्वितरण को प्राथमिकता दी, जिससे वहां की ग्रामीण सामाजिक-आर्थिक संरचना में सकारात्मक और ऐतिहासिक बदलाव देखने को मिले।

161. (D) पारंपरिक जैविक खेती के तरीके।
हरित क्रांति मुख्य रूप से आधुनिक कृषि तकनीकों के उपयोग पर केंद्रित थी जिसमें उच्च उपज देने वाले बीजों का प्रयोग अनिवार्य था। इसके साथ ही प्रचुर मात्रा में रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों और उन्नत सिंचाई प्रणालियों के पैकेज को अपनाया गया था। इसमें पारंपरिक जैविक पद्धतियों के स्थान पर गहन तकनीकी खेती को बढ़ावा दिया गया था ताकि कम समय में खाद्यान्न का अधिक उत्पादन सुनिश्चित हो सके।

162. (B) खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता।
हरित क्रांति का सबसे महत्वपूर्ण और दूरगामी प्रभाव भारत की खाद्यान्न सुरक्षा के क्षेत्र में देखा गया। इस कार्यक्रम की सफलता ने भारत को विदेशों से अनाज आयात करने की मजबूरी से मुक्त कर दिया और देश खाद्यान्न के मामले में आत्मनिर्भर बन गया। विशेष रूप से गेहूं और चावल के उत्पादन में हुई भारी वृद्धि ने देश की बढ़ती जनसंख्या के लिए पर्याप्त भोजन सुनिश्चित किया।

163. (C) इसने संपन्न किसानों को और अधिक समृद्ध तथा निर्धन किसानों को और अधिक गरीब बनाया।
हरित क्रांति ने ग्रामीण समाज में आर्थिक विभेदीकरण को काफी बढ़ावा दिया क्योंकि इसके लाभ असमान रूप से वितरित थे। केवल वे ही किसान नई तकनीक का लाभ उठा सके जिनके पास पर्याप्त निवेश के लिए पूँजी थी। छोटे और सीमांत किसान महंगी लागत के कारण प्रतिस्पर्धा में पिछड़ गए, जिससे अमीर और गरीब किसानों के बीच की खाई पहले की तुलना में और गहरी हो गई।

164. (D) पर्याप्त सिंचाई सुविधाओं और भारी पूँजी निवेश वाले क्षेत्रों के प्रगतिशील किसानों को।
हरित क्रांति का प्रभाव भौगोलिक रूप से पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे सिंचित क्षेत्रों तक ही सीमित रहा। इन क्षेत्रों के किसानों के पास नई तकनीकों और रसायनों में निवेश करने के लिए आवश्यक संसाधन उपलब्ध थे। इसके विपरीत, भारत के बड़े शुष्क और वर्षा-आधारित क्षेत्रों में रहने वाले किसानों को इस तकनीकी प्रगति का लाभ नहीं मिला, जिससे क्षेत्रीय असमानताएँ काफी बढ़ गईं।

165. (A) पूर्णतः बाजार-उन्मुख आधुनिक 'पूंजीवादी किसान' वर्ग।
हरित क्रांति के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में एक नए 'पूंजीवादी किसान' वर्ग का प्रादुर्भाव हुआ जो मुख्य रूप से व्यावसायिक लाभ के लिए खेती करता था। यह वर्ग आधुनिक कृषि उपकरणों और बाजार की माँग के अनुसार उत्पादन करने में सक्षम था। इन्होंने अपनी बढ़ी हुई आय का उपयोग कृषि के आधुनिकीकरण में किया, जिससे ग्रामीण शक्ति संतुलन में पारंपरिक जमींदारों के स्थान पर यह नया वर्ग उभरा।

166. (B) जो काम और बेहतर आय की तलाश में मौसमी रूप से अन्य क्षेत्रों में प्रवास करते हैं।
जान ब्रेमन ने 'फुटलूज लेबर' शब्द का प्रयोग उन मजदूरों के लिए किया है जो काम की तलाश में निरंतर भटकते रहते हैं। ये श्रमिक अपने मूल स्थान को स्थायी रूप से नहीं छोड़ते, बल्कि वे केवल कुछ विशेष महीनों या मौसमों में कृषि या निर्माण कार्यों के लिए शहरों की ओर पलायन करते हैं। वे स्थायी रोजगार के अभाव में एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते रहते हैं।

167. (B) समृद्ध क्षेत्रों में उच्च मजदूरी की उपलब्धता।
श्रम प्रवासन के संदर्भ में 'पुल' कारक वे आकर्षण होते हैं जो श्रमिकों को अपने मूल स्थान से बाहर जाने के लिए प्रेरित करते हैं। पंजाब और हरियाणा जैसे समृद्ध कृषि क्षेत्रों में फसल कटाई के दौरान मिलने वाली अधिक मजदूरी एक प्रमुख आकर्षण है। इसी प्रकार, शहरों में निर्माण परियोजनाओं में रोजगार की उपलब्धता और उच्च वेतन की संभावना श्रमिकों को अपनी ओर खींचने का कार्य करती है।

168. (A) पुरुष प्रवासन के कारण कृषि कार्यों में महिलाओं की बढ़ती भूमिका और जिम्मेदारी।
'कृषि का नारीकरण' उस स्थिति को दर्शाता है जब ग्रामीण क्षेत्रों से पुरुष सदस्य रोजगार की तलाश में बाहर चले जाते हैं। उनके जाने के बाद, खेती और पशुपालन के साथ-साथ परिवार की देखभाल की पूरी जिम्मेदारी महिलाओं के कंधों पर आ जाती है। यह प्रक्रिया ग्रामीण श्रम बाजार में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाती है, हालाँकि उन्हें अक्सर भूमि का मालिकाना हक और उचित मान्यता नहीं मिलती।

(C) 60 मिनट
(D) 90 मिनट

33. दिहाड़ी मजदूरों की ठेकेदारी व्यवस्था के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. ठेकेदार गाँव जाकर काम चाहने वालों से पूछता है।
2. वह उन्हें कुछ पैसा उधार देता है।
3. उधार दिए गए पैसे में काम के स्थान तक आने का यातायात का पैसा होता है।
4. उधार पैसा अग्रिम दिहाड़ी माना जाता है।
5. जब तक उधार नहीं चुकता, मजदूर बिना पैसे के काम करता है।

उपरोक्त में से कौन से कथन ठेकेदारी व्यवस्था का सही वर्णन करते हैं?
(A) केवल 1, 2 और 5
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3, 4 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

34. आई.टी. क्षेत्र में 'नाइट आउट' किसे कहते हैं?
(A) रातभर कार्य करना जब परियोजना की अंतिम सीमा आ जाती है
(B) कर्मचारियों का रात में पार्टी करना
(C) रात की पाली में नियमित रूप से काम करना
(D) company के बाहर रात्रिभोज करना

35. आई.टी. क्षेत्र में लंबे कार्य घंटों का क्या कारण है?
(A) भारत और ग्राहक के देश के बीच समय की भिन्नता
(B) बाह्य स्रोतों की कार्य संरचना में अधिक कार्य का होना
(C) उपरोक्त सभी
(D) साथियों का दबाव और अधिकारियों को कड़ी मेहनत दिखाना

36. समाजशास्त्री हैरी ब्रेवरमैन का तर्क क्या है?
(A) मशीनों का प्रयोग कार्यकर्ताओं की दक्षता को बढ़ाता है।
(B) मशीनें और दक्षता असंबंधित हैं।
(C) केवल सॉफ्टवेयर ही दक्षता को कम करता है।
(D) मशीनों का प्रयोग कार्यकर्ताओं की दक्षता को कम करता है।

37. खदान एक्ट 1952 के अनुसार, क्या प्रावधान किए गए हैं?
(A) एक व्यक्ति खान में सप्ताह में कितने घंटे कार्य कर सकता है, यह स्पष्ट किया गया है।
(B) अतिरिक्त घंटों तक काम करने पर अलग से पैसा दिया जाना चाहिए।
(C) उपरोक्त सभी।
(D) सुरक्षा के नियमों का पालन होना चाहिए।

38. भूमिगत खानों में काम करने वाले कामगारों को किन खतरों का सामना करना पड़ता है?
(A) बाढ़, आग, और सतह का धंसना
(B) (A) और (B) दोनों
(C) गैसों का उत्सर्जन और ऑक्सीजन की कमी
(D) केवल तेज़ धूप और वर्षा

39. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): बड़ी कंपनियों की तुलना में छोटी खानों और खुली खानों में सुरक्षा नियमों का पालन कम होता है।
कारण (R): छोटी खानों में उप-ठेका की प्रवृत्ति बढ़ती जा रही है और कई ठेकेदार मजदूरों का रजिस्टर ठीक से नहीं रखते।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

40. खुली खानों में काम करने वाले कामगारों को होने वाली मुख्य बीमारियाँ कौन सी हैं?
(A) क्षय रोग (टी.बी.) और सिलिकोसिस
(B) मधुमेह और उच्च रक्तचाप
(C) मलेरिया और डेंगू
(D) हृदय रोग और कैंसर

41. घरों पर किया जाने वाला काम, जैसे लेस बनाना या बीड़ी बनाना, किसका महत्वपूर्ण हिस्सा है?
(A) सामाजिक जीवन का
(B) राजनीतिक व्यवस्था का
(C) आर्थिकी का
(D) धार्मिक अनुष्ठानों का

42. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सही मिलान का चयन कीजिए:
सूची I: (समूह/स्थान)
P. अतिरिक्त कलाकार
Q. कपड़ा मिल के मजदूर
R. फिल्मी सितारे
S. भिलाई स्टील प्लांट

सूची II: (स्थान/संगठन)
1. गोरेगाँव
2. जुहू
3. कनिष्ठ कलाकार संघ
4. सांप्रदायिक दंगों का अभाव

कूट:
(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-3, R-2, S-4
(C) P-3, Q-2, R-1, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

43. घर पर काम करने वालों को भुगतान कैसे किया जाता है?

128. भारत में बहुत कम लोगों के पास सुरक्षित रोज़गार होने का एक परिणाम क्या है?
(A) लोग अधिक बचत करते हैं।
(B) लोग बुढ़ापे में अपने बच्चों पर आश्रित होने के लिए बाध्य हैं।
(C) लोग जल्दी सेवानिवृत्त हो जाते हैं।
(D) लोग अपना व्यवसाय शुरु करते हैं।

129. मुंबई की सामाजिक और आर्थिक स्थिति के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह बहुत से लोगों के लिए एक स्वप्न लोक है।
2. यह बहुत से लोगों के लिए उनके कार्य करने का स्थान है।
3. यहाँ के लोग कार्य और आय के आधार पर विभाजित हैं।
4. यहाँ के लोग कुछ सामान्य बातों, जैसे फिल्में देखना, के आधार पर संगठित भी हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

130. 'जनांकिकीय डिविडेंड' (Demographic Dividend) किसे कहा जाता है?
(A) भारत के युवाओं को
(B) भारत के वरिष्ठ नागरिकों को
(C) भारत के प्रवासी कामगारों को
(D) भारत के संगठित क्षेत्र के कर्मचारियों को

131. औद्योगिक और सामाजिक परिवर्तनों के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) महिलाएँ (अधिकांशतः) समान कार्य के लिए कम वेतन पाती हैं।
(B) अच्छे वेतन वाले व्यवसायों में उच्च जाति के लोगों का वर्चस्व आज भी बना हुआ है।
(C) औद्योगीकरण के बाद, भारत में सामाजिक असमानताएँ पूरी तरह से समाप्त हो गई हैं।
(D) औद्योगीकरण से आर्थिक या आय से संबंधित असमानताएँ उत्पन्न हो रही हैं।

132. बाह्य स्रोतों से कार्य करवाने की प्रवृत्ति कहाँ विशेष रुप से दिखाई देती है?
(A) सरकारी क्षेत्रों में
(B) कृषि क्षेत्र में
(C) शैक्षिक संस्थानों में
(D) निजी क्षेत्रों में

133. औद्योगीकरण के प्रभावों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. औद्योगीकरण एक विस्तृत श्रम विभाजन लाता है।
2. औद्योगीकरण से जबरदस्त समानता आती है, जैसे रेलगाड़ियों में।
3. औद्योगीकरण में लोग अधिकतर अपने कार्यों का अंतिम रुप देख पाते हैं।
4. औद्योगीकरण के बाद भी भेदभाव के पुराने स्वरूप देखे जा सकते हैं।
5. औद्योगीकरण से आर्थिक असमानताएँ उत्पन्न हुई हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 4 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

134. हड़ताल के दौरान व्यवस्थापक का सामान्य कदम क्या होता है?
(A) मिल को हमेशा के लिए बंद कर देना।
(B) अतिरिक्त मज़दूरों को बुलाने का प्रयास करना।
(C) सभी मांगों को तुरंत मान लेना।
(D) कामगारों को बोनस देना।

135. 1982 की बंबई टेक्सटाइल मिल हड़ताल के लगभग कितने समय बाद लोगों ने वापस काम पर जाना शुरु किया?
(A) छह महीने
(B) एक साल
(C) दो साल
(D) पाँच साल

136. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सही मिलान का चयन कीजिए:
सूची I: (अवधारणा/वस्तु)
P. सुशी
Q. वड़ा पाव
R. बदली कामगार
S. जनांकिकीय डिविडेंड

सूची II: (संबंधित समूह/विवरण)
1. भारत के युवा
2. अनुबंधित कार्य
3. स्थानीय हाथगाड़ी का खाना
4. पाँच सितारा होटल का खाना

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

137. भारत में विकासशील देशों की तुलना में, छोटी कंपनियों को बड़ी कंपनियों से कार्य प्राप्त करने के लिए स्पर्धा क्यों करनी पड़ती है?
(A) क्योंकि वे बेहतर गुणवत्ता प्रदान करती हैं।
(B) क्योंकि सरकार छोटी कंपनियों को सब्सिडी देती है।
(C) क्योंकि बड़ी कंपनियाँ बाह्य स्रोतों से काम करवाती हैं।
(D) क्योंकि उनके पास अधिक कर्मचारी होते हैं।

(C) दिहाड़ी कामगार
(D) सरकारी कर्मचारी

55. 'ज्ञान आर्थिकी' (Knowledge Economy) सूक्ति का प्रयोग भारत में किसकी वृद्धि को वर्णित करने के लिए किया जाता है?
(A) कृषि क्षेत्र
(B) विनिर्माण क्षेत्र
(C) खनन उद्योग
(D) सूचना तकनीक

56. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सही मिलान का चयन कीजिए:
सूची I: (क्षेत्र/श्रेणी)
P. स्व-रोज़गार (2018-19)
Q. नियमित रोज़गार (2018-19)
R. दिहाड़ी कामगार (2018-19)
S. असंगठित क्षेत्र में कार्य
सूची II: (प्रतिशत)
1. ~24%
2. ~24%
3. 90% से अधिक
4. ~52%
कूट:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-4, S-3
(C) P-4, Q-2, R-1, S-3
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

57. मछली संसाधन उद्योग में, विशेषकर तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल में, मुख्य रूप से कौन काम करता है?
(A) प्रवासी पुरुष
(B) स्थानीय परिवार
(C) एकल युवा महिलाएँ
(D) सेवानिवृत्त पुरुष

58. प्रवासी कामगारों को किन समस्याओं का सामना करना पड़ता है?
(A) (C) (A) और (B) दोनों
(B) सामाजिकता निभाने के लिए कम समय
(C) अकेलापन और असुरक्षा
(D) अत्यधिक उच्च वेतन

59. भारत के रोजगार परिदृश्य के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन गलत है?
(A) देश के 52 प्रतिशत से अधिक लोग स्व-रोज़गारी हैं।
(B) केवल 24 प्रतिशत लोग नियमित वेतनभोगी रोज़गार में हैं।
(C) लगभग 24 प्रतिशत लोग देश में अनियमित मज़दूर हैं।
(D) अधिकांश लोग बड़ी फर्मों में सुरक्षित नौकरियों में हैं।

60. भारत में असंगठित क्षेत्र के इतने बड़े होने का सामाजिक आशय क्या है?
(A) बहुत कम लोग बड़ी फर्मों में रोज़गार करते हैं जहाँ वे विविध पृष्ठभूमि के लोगों से मिल सकें।
(B) उपरोक्त सभी।
(C) बहुत कम भारतीय सुरक्षित और लाभदायक नौकरियों में प्रवेश कर पाते हैं।
(D) बहुत कम लोग संघ के सदस्य हैं।

61. बाह्यस्रोतों से काम करवाने की प्रवृत्ति का कामगारों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(A) उन्हें अधिक वेतन मिलता है।
(B) उनकी कार्यावस्था बेहतर होती है।
(C) वे कम वेतन पर खराब कार्यावस्था में काम करने को मजबूर होते हैं।
(D) उन्हें स्थायी नौकरी मिल जाती है।

62. निम्नलिखित में से कौन सी एक संगठित क्षेत्र की विशेषता नहीं है?
(A) कर्मचारियों को पेंशन और अन्य सुविधाएँ मिलना।
(B) इकाई में 10 या अधिक लोगों का रोजगार।
(C) सरकारी तौर पर पंजीकरण होना।
(D) कार्य का निर्धारण वैयक्तिक संबंधों से होना।

63. उदारीकरण के बाद, सेवा क्षेत्र में कौन से व्यवसाय शामिल हैं जिनकी संख्या बढ़ी है?
(A) (C) (A) और (B) दोनों
(B) दुकानें, बैंक, आई.टी. उद्योग
(C) होटल्स और अन्य सेवाएँ
(D) केवल कृषि सेवाएँ

64. औद्योगीकरण के कारण संयुक्त परिवार के पुनरुत्थान का क्या कारण बताया गया है?
(A) ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों का पुनः जाकर बसना।
(B) शिशुपालन हेतु दादा-दादी की परिवार में भूमिका।
(C) सरकार द्वारा संयुक्त परिवारों को विशेष प्रोत्साहन।
(D) पारिवारिक व्यापारों में निरंतर होने वाली वृद्धि।

65. मारुति उद्योग के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. मारुति उद्योग में प्रत्येक मिनट में दो कारें तैयार होती हैं।
2. कामगारों को पूरे दिन में 45 मिनट का विश्राम मिलता है।
3. 40 वर्ष का होने तक कामगार पूरी तरह थक जाते हैं।
4. कारखाने में स्थायी रूप से काम करने वालों की संख्या बढ़ रही है।
उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) 1 और 2
(B) 1, 2 और 3
(C) 3 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

66. 'टायलरिज्म लेबर प्रक्रिया' की विशेषता क्या है?
(A) कार्य को छोटे, दोहराए जाने वाले कार्यों में तोड़ना और समय का सख्ती से प्रबंधन करना।
(B) कामगारों को पूर्ण रचनात्मक स्वतंत्रता देना।
(C) कामगारों को लंबे विश्राम की अनुमति देना।
(D) केवल मानवीय श्रम पर निर्भर रहना, मशीनों पर नहीं।

67. 1924 में महात्मा गाँधी ने मशीनों के बारे में क्या कहा?
(A) वे मशीनों के पूर्ण विरोधी हैं।
(B) वे हर प्रकार की मशीन का समर्थन करते हैं।
(C) वे मशीनों के प्रति पागलपन के विरोधी हैं, लेकिन मशीनों के नहीं।
(D) उनका मानना था कि मशीनें हमेशा मानव जाति के लिए अच्छी होती हैं।

68. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): आई.टी. क्षेत्र के कर्मचारियों का कार्य स्वतःस्फूर्त एवं रचनात्मक माना जाता है।
कारण (R): उनका कार्य भी लंबे घंटों, सख्त समय-सीमा और निगरानी के कारण 'टायलरिज्म लेबर प्रक्रिया' के अनुरुप होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

69. एक खान का कार्य समाप्त होने पर company की क्या ज़िम्मेदारी होती है?
(A) उस स्थान को वैसे ही छोड़ देना।
(B) उस स्थान पर एक नया उद्योग लगाना।
(C) उस स्थान पर किए गए गड्ढे को भरकर उसे पहले जैसा कर देना।
(D) उस स्थान को सरकार को बेच देना।

70. बीड़ी बनाने की प्रक्रिया के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह प्रक्रिया जंगल के पास वाले गाँवों से शुरु होती है।
2. तेंदु पत्ते तोड़ने का काम गाँव वाले करते हैं।
3. अधिकांशतः महिलाएँ घरों में तंबाकू भरने का काम करती हैं।
4. ठेकेदार कच्चा माल देने और तैयार माल लेने का काम करता है।
5. अंतिम उत्पादक अपने ब्रांड का लेबल लगाकर वितरक को बेचता है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 3 और 5
(B) केवल 2 और 4
(C) 1, 2, 3 और 4
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

71. बंबई टेक्सटाइल मिल हड़ताल के बाद, बेरोजगार हुए कामगार कहाँ काम करने चले गए?
(A) वापस अपने गाँव में कृषि करने।
(B) भिवंडी, मालेगाँव जैसे कस्बों के बिजली करघा क्षेत्रों में।
(C) मुंबई के अन्य बड़े उद्योगों में।
(D) (A) और (B) दोनों।

72. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सही मिलान का चयन कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. हड़ताल
Q. तालाबंदी
R. बदली कामगार
S. विनिवेश

सूची II: (विवरण)
1. व्यवस्थापक द्वारा मिल का दरवाज़ा बंद करना
2. कामगारों द्वारा काम पर न जाना
3. सरकारी हिस्सेदारी को निजी क्षेत्र को बेचना
4. छुट्टी पर गए मज़दूर के स्थान पर काम करना

कूट:
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-2, Q-1, R-3, S-4
(D) P-1, Q-2, R-4, S-3

73. परंपरागत बुनकर बुनाई के काम को किस प्रकार वर्णित करते हैं?
(A) यह एक आरामदायक और आसान काम है।
(B) इस काम में बहुत शारीरिक गति नहीं होती है।
(C) इसमें ऊर्जा और लगातार टकटकी की आवश्यकता होती है।
(D) इस काम को करते हुए कहीं भी जाया जा सकता है।

74. 'बदली कामगार' की स्थिति स्थायी कामगारों से किस प्रकार भिन्न होती है?
(A) इन्हें लंबे समय बाद भी स्थायी सुरक्षा नहीं मिलती।
(B) इन्हें स्थायी कर्मियों से अधिक वेतन मिलता है।
(C) इन्हें कार्य हेतु बहुत कम समय देना पड़ता है।
(D) इन्हें सभी सेवा लाभ स्थायी कर्मियों के समान हैं।

75. नीचे दिए गए कथनों में से कौन सा औद्योगीकरण के बारे में कार्ल मार्क्स के विचारों का सही प्रतिनिधित्व करता है?
(A) औद्योगीकरण से समानता आती है और सभी श्रमिक खुश रहते हैं।
(B) औद्योगीकरण हमेशा श्रमिकों के लिए बेरोजगारी से बेहतर है।
(C) मशीनें हमेशा मानवीय श्रम के लिए फायदेमंद होती हैं।
(D) औद्योगीकरण से 'अलगाव' पैदा होता है क्योंकि कार्य दोहराने वाला और थकाने वाला होता है।

76. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में औद्योगीकरण की एक विशिष्टता को दर्शाता है?
- (A) विकसित देशों की तरह, भारत में भी अधिकांश जनसंख्या नौकरीपेशा है।
- (B) यहाँ संगठित क्षेत्र की तुलना में असंगठित क्षेत्र बहुत बड़ा है।
- (C) भारत में कृषि कार्यों में लगे लोगों का प्रतिशत बहुत कम है।
- (D) भारत में सेवा क्षेत्र का आर्थिक वृद्धि में कोई योगदान नहीं है।

77. औद्योगीकरण के कारण सामाजिक संबंधों में आए परिवर्तन के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
- (A) ग्रामीण समाजों के जान-पहचान वाले संबंध अज्ञात व्यावसायिक संबंधों में बदल गए।
- (B) श्रम का विस्तृत विभाजन हुआ।
- (C) लोगों को अपने काम का अंतिम रूप देखने को मिलता है।
- (D) कार्य अक्सर दोहराने और थकाने वाला होता है।

78. औद्योगिक इतिहास के संदर्भ में नीचे दी गई घटनाओं को कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. बंबई टेक्सटाइल मिल की हड़ताल।
2. भारत सरकार द्वारा उदारीकरण की नीति को अपनाना।
3. मॉडर्न फूड company का विनिवेश।
4. 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम का शुभारंभ।

- (A) 1, 2, 3, 4
- (B) 2, 1, 4, 3
- (C) 1, 3, 2, 4
- (D) 2, 3, 1, 4

79. भिलाई स्टील प्लांट में सांप्रदायिक दंगे क्यों नहीं होने का एक कारण समाजशास्त्री क्या बताते हैं?
- (A) वहाँ भारत के सभी भागों के लोग एक साथ काम करते हैं।
- (B) वहाँ कड़ी सुरक्षा व्यवस्था है।
- (C) वहाँ एक ही समुदाय के लोग काम करते हैं।
- (D) प्लांट एक दूरस्थ क्षेत्र में स्थित है।

80. बाह्य स्रोतों से उत्पादन (outsourcing) का company को क्या लाभ होता है?
- (A) कार्य समय पर पूरा हो जाता है।
- (B) (D) (A) और (B) दोनों।
- (C) company को कार्य सस्ता पड़ता है।
- (D) कामगारों पर नियंत्रण रखना आसान होता है।

81. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): उदारीकरण के परिणामस्वरूप बहुत सी छोटी-बड़ी भारतीय कंपनियाँ बहुदेशीय कंपनियों द्वारा खरीद ली गईं।
कारण (R): विदेशी कंपनियों के पास विज्ञापन और विपणन के लिए बहुत अधिक बजट होता है, जिससे वे स्थानीय ब्रांडों पर हावी हो जाती हैं।
- (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
- (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
- (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
- (D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

82. आई.टी. क्षेत्र में 'फ्लैक्सी-टाइम' का प्रायोगिक अर्थ क्या है?
- (A) कर्मचारी को तब तक कार्य करना पड़ता है जब तक कि हाथ में लिया हुआ कार्य समाप्त न हो जाए।
- (B) कर्मचारी अपनी इच्छानुसार कभी भी आ और जा सकते हैं।
- (C) कर्मचारी को केवल 4 घंटे काम करना होता है।
- (D) कर्मचारी को सप्ताह में केवल तीन दिन काम करना होता है।

83. विकसित और विकासशील देशों की रोजगार संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. विकसित देशों में जनसंख्या का एक बड़ा भाग नौकरीपेशा होता है।
2. विकसित देशों में 10 प्रतिशत से कम लोग कृषि कार्यों में लगे होते हैं।
3. भारत में 2018-19 में लगभग 43 प्रतिशत लोग प्राथमिक क्षेत्र में कार्यरत थे।
4. भारत की रोजगार संरचना विकसित देशों के समान है।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
- (A) केवल 1 और 4
- (B) केवल 2 और 3
- (C) 1, 2, और 3
- (D) 1, 2, 3 और 4

84. 'जबरन सेवामुक्ति' का क्या अर्थ है?
- (A) कर्मचारी द्वारा स्वेच्छा से सेवानिवृत्ति लेना।
- (B) कर्मचारी का सेवानिवृत्ति की आयु पर पहुँचना।
- (C) कर्मचारी का अनुबंध समाप्त होना।
- (D) कर्मचारी की इच्छा के विरुद्ध उसे नौकरी से निकालना।

85. ठेकेदारी व्यवस्था में, उधार दिए गए पैसे को क्या माना जाता है?
- (A) एक व्यक्तिगत ऋण
- (B) एक उपहार
- (C) अग्रिम दिहाड़ी
- (D) यात्रा भत्ता

86. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सही मिलान का चयन कीजिए:
सूची I: (समस्या/बीमारी)
P. अलगाव

(A) मासिक वेतन के आधार पर
(B) दैनिक मजदूरी के आधार पर
(C) वार्षिक अनुबंध के आधार पर
(D) चीज़ों के नग (पीस) के हिसाब से

44. बीड़ी बनाने की प्रक्रिया में तेंदु पत्ते कौन तोड़ता है?
(A) बीड़ी कारखानों के मालिक
(B) जंगल के पास वाले गाँवों के लोग
(C) निजी ठेकेदार
(D) सरकारी कर्मचारी

45. बीड़ी बनाने की प्रक्रिया में अंतिम उत्पादक बीड़ियों को किसे बेचता है?
(A) सीधे ग्राहक को
(B) पान की दुकान को
(C) बीड़ियों के वितरक को
(D) थोक विक्रेताओं को

46. उदारीकरण के संदर्भ में निम्नलिखित घटनाओं को तार्किक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. सरकार का उदारीकरण की नीति अपनाना।
2. भारतीय दुकानों पर विदेशी वस्तुओं की आसान उपलब्धता।
3. सरकार द्वारा विनिवेश की प्रक्रिया शुरू करना।
4. दूरसंचार और ऊर्जा जैसे क्षेत्रों में निजी निवेश को प्रोत्साहन।

(A) 1, 4, 2, 3
(B) 4, 1, 3, 2
(C) 1, 2, 4, 3
(D) 2, 1, 4, 3

47. हड़ताल और तालाबंदी में क्या अंतर है?
(A) हड़ताल कामगार करते हैं, जबकि तालाबंदी व्यवस्थापक करते हैं।
(B) हड़ताल व्यवस्थापक करते हैं, जबकि तालाबंदी कामगार करते हैं।
(C) दोनों का एक ही अर्थ है।
(D) हड़ताल शांतिपूर्ण होती है, जबकि तालाबंदी हिंसक होती है।

48. 1982 में बंबई टेक्सटाइल मिल की प्रसिद्ध हड़ताल का नेतृत्व किसने किया था?
(A) महात्मा गाँधी
(B) डा. दत्ता सामंत
(C) कार्ल मार्क्स
(D) हैरी ब्रेवरमैन

49. बंबई टेक्सटाइल मिल हड़ताल में कामगारों की मुख्य माँगें क्या थीं?
(A) बेहतर मज़दूरी
(B) (C) (A) और (B) दोनों
(C) अपने खुद के संघ बनाने की इजाजत
(D) कम काम के घंटे

50. बंबई टेक्सटाइल मिल हड़ताल का क्या परिणाम हुआ?
(A) उपरोक्त सभी।
(B) लगभग एक लाख कामगार बेरोज़गार हो गए।
(C) मिल मालिकों ने आधुनिकीकरण में निवेश नहीं किया।
(D) मिल मालिक अपनी मिलों को स्थावर संपदा व्यापारियों को बेचने का प्रयास करने लगे।

51. कार्य और पहचान के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. लोग कहाँ और कैसा कार्य करते हैं, यह उनकी पहचान का महत्वपूर्ण हिस्सा है।
2. प्रौद्योगिकी में परिवर्तन से भारत में सामाजिक संबंधों में परिवर्तन आया है।
3. सामाजिक संस्थाएँ जैसे जाति और लिंग भी कार्य को प्रभावित करते हैं।
4. कॉफी पीने जैसी व्यक्तिगत रुचियाँ भी सामाजिक प्रारूपों से प्रभावित होती हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन गलत हैं?
(A) केवल 4
(B) केवल 1 और 2
(C) कोई भी नहीं
(D) 1, 2, 3 और 4

52. 'अभिसरण शोध' (Convergence Thesis) के सिद्धांतकार किसे माना जाता है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) एमील दुर्खाइम
(C) मैक्स वेबर
(D) क्लार्क केर

53. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): औद्योगीकरण कुछ स्थानों पर समानता लाता है, जैसे रेलगाड़ियों में जातीय भेदभाव का महत्व न होना।
कारण (R): औद्योगीकरण से सामाजिक असमानताएँ पूरी तरह समाप्त हो जाती हैं और केवल आर्थिक समानताएँ ही रह जाती हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

54. रोजगार वितरण 1972-73 और 2018-19 के बीच, किस श्रेणी के कामगारों के प्रतिशत में सबसे अधिक कमी आई?
(A) नियमित वेतनभोगी
(B) स्व-रोज़गार

97. औद्योगीकरण से पहले, ग्रामीण समाजों में काम की प्रकृति कैसी थी?
(A) लोग आधुनिक कारखानों में काम करते थे।
(B) लोग अपने या जान-पहचान के भूस्वामियों के खेतों में काम करते थे।
(C) सभी लोग स्व-रोज़गारी थे।
(D) काम का कोई निश्चित स्वरुप नहीं था।

98. मुंबई में जीवन शैली के विभाजन का आधार क्या है?
(A) उपरोक्त सभी।
(B) लोग कहाँ रहते हैं।
(C) वे क्या खाते हैं।
(D) वे कितने कीमती कपड़े पहनते हैं।

99. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सही मिलान का चयन कीजिए:
सूची I: (लेखक/संपादक)
P. हैरी ब्रेवरमैन
Q. डा. दत्ता सामंत
R. केरोल उपाध्या
S. चित्रा जोशी
सूची II: (संबंधित विषय/कार्य)
1. लॉस्ट वर्ड्स, इंडियन लेबर
2. आई.टी. क्षेत्र में 'समय की चाकरी'
3. बंबई टेक्सटाइल मिल हड़ताल
4. मशीनों द्वारा दक्षता कम करना
कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-1, Q-2, R-3, S-4

100. "मैं संपत्ति को कुछ हाथों में एकत्रित नहीं होने देना चाहता, बल्कि उसे सबके हाथों में देखना चाहता हूँ।" यह कथन किसका है?
(A) कारल मार्क्स
(B) जवाहरलाल नेहरु
(C) एमील दुर्खाइम
(D) महात्मा गाँधी

101. हड़ताल के दौरान कामगारों के लिए क्या मुश्किल होती है?
(A) नए कौशल सीखना।
(B) परिवार से दूर रहना।
(C) बिना वेतन के रहना।
(D) यात्रा करना।

102. निम्नलिखित में से कौन सी एक स्थिति है जो मुंबई के लोगों को समान या संगठित करती है?
(A) वे सभी एक जैसे घरों में रहते हैं।
(B) वे एक जैसी फिल्में और क्रिकेट मैच देखते हैं।
(C) वे सभी एक जैसा खाना खाते हैं।
(D) वे सभी एक ही आय वर्ग के हैं।

103. भारत में स्व-रोज़गार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. स्व-रोज़गार में नलसाज, बिजली मिस्त्री और बढ़ई शामिल हैं।
2. इनकी कार्य अवधि इनके निजी संपर्कों पर निर्भर रहती है।
3. मोबाइल फोन ने इनके जीवन को अधिक सरल बना दिया है।
4. ये संगठित क्षेत्र के कर्मचारी हैं।
5. ये विज्ञापन द्वारा नौकरी प्राप्त करते हैं।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 4 और 5
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) 1, 2, 3, 4 और 5

104. उदारीकरण का खुदरा व्यापार पर क्या संभावित प्रभाव हो सकता है?
(A) बहुदेशीय खुदरा कंपनियों के आने से स्थानीय दुकानों को प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है।
(B) लोग भारतीय डिपार्टमेंटल स्टोर से अधिक खरीदारी करेंगे।
(C) स्थानीय किराना दुकानों का व्यापार बढ़ेगा।
(D) खुदरा व्यापार पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

105. विनिवेश से सरकारी कर्मचारियों को क्या डर होता है?
(A) उनके वेतन में वृद्धि का।
(B) उनकी पदोन्नति का।
(C) उनकी नौकरी चले जाने का।
(D) उनके काम के घंटे कम होने का।

106. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): अधिक मशीनों वाले उद्योगों में, कम लोगों को काम दिया जाता है।
कारण (R): जो लोग ऐसे उद्योगों में काम करते हैं उन्हें भी मशीनी गति से काम करना होता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

107. आई.टी. कंपनियों और कॉल सेंटरों की वजह से बंगलोर, हैदराबाद और गुड़गाँव जैसे स्थानों पर क्या प्रभाव पड़ा है?
(A) दुकानें और रेस्तरां जल्दी बंद होने लगे हैं।
(B) दुकानें और रेस्तरां देरी से खुलने लगे हैं।
(C) शिशुपालन गृहों की संख्या में कमी आई है।

(D) सार्वजनिक परिवहन बंद हो गया है।

108. बीड़ी बनाने की पूरी श्रृंखला को दर्शाने वाले निम्नलिखित कथनों को सही तार्किक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. गाँव वाले तेंदु पत्ते तोड़कर बेचते हैं।
2. ठेकेदार घर पर काम करने वालों को तंबाकू भरने के लिए पत्ते देता है।
3. उत्पादक बीड़ी को वितरक को बेचता है।
4. थोक विक्रेता पान की दुकान पर बीड़ी पहुँचाता है।

(A) 1, 3, 2, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 4, 3
(D) 4, 3, 2, 1

109. 'मिस्त्री' की भूमिका समय के साथ कम क्यों हो गई है?
(A) क्योंकि लोग अब सीधे कंपनियों में आवेदन करते हैं।
(B) क्योंकि कार्यकारिणी और यूनियन काम दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
(C) क्योंकि 'मिस्त्री' प्रणाली पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।
(D) क्योंकि अब सभी नौकरियाँ ऑनलाइन विज्ञापित होती हैं।

110. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन भारतीय कॉफी पीने की आदत के बारे में सही है?
(A) भारतीय कॉफी को सवेरे उठकर स्फूर्ति लाने के लिए पीते हैं।
(B) भारत में कॉफी के विज्ञापन में एक कप दिखाया जाता है।
(C) भारत में कॉफी पीना एक व्यक्तिगत क्रिया है।
(D) भारतीय कॉफी पीना सामाजिकता निभाने का एक अवसर मानते हैं।

111. भारतीय रोजगार संरचना के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. भारत में औद्योगीकरण का अनुभव पाश्चात्य प्रतिमान से पूरी तरह भिन्न था।
2. विकसित देशों में अधिकांश लोग नौकरीपेशा होते हैं।
3. भारत में, जिस क्षेत्र में लोग ज़्यादा कार्यरत हैं वह उन्हें अधिक आमदनी देने में सक्षम नहीं है।
4. भारत में संगठित क्षेत्र में 90% से अधिक लोग कार्यरत हैं।

उपरोक्त में से कौन सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) 1, 2, और 3
(D) 2, 3, और 4

112. समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से, यह क्यों महत्वपूर्ण है कि लोग क्या उत्पादित करते हैं, और कौन किसको बेचता है?
(A) यह व्यक्तिगत रुचि का विषय है।
(B) यह सामाजिक प्रारूपों का नतीजा है और सामाजिक कार्यों को समझने में मदद करता है।
(C) यह आर्थिक आंकड़ों के लिए महत्वपूर्ण है।
(D) इसका समाजशास्त्र से कोई लेना-देना नहीं है।

113. "खदान एक्ट 1952" को अब किस कोड में शामिल किया गया है?
(A) श्रम संहिता 2019
(B) व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और काम करने की स्थिति कोड, 2020
(C) न्यूनतम मजदूरी कोड 2021
(D) औद्योगिक संबंध कोड 2020

114. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सही मिलान का चयन कीजिए:
सूची I: (स्थान)
P. जुहू
Q. गोरेगाँव
R. कानपुर
S. भिवंडी

सूची II: (संबंधित उद्योग/समूह)
1. बिजली करघा क्षेत्र
2. कपड़ा मिल (मिस्त्री)
3. फिल्मी सितारे
4. अतिरिक्त कलाकार

कूट:
(A) P-3, Q-4, R-2, S-1
(B) P-4, Q-3, R-1, S-2
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

115. हड़ताल करने का फैसला मुश्किल क्यों होता है?
(A) क्योंकि व्यवस्थापक अतिरिक्त मज़दूरों को बुलाने का प्रयास करते हैं।
(B) क्योंकि कामगारों के लिए बिना वेतन के रहना मुश्किल होता है।
(C) (C) (A) और (B) दोनों।
(D) क्योंकि सरकार हड़तालों की अनुमति नहीं देती है।

116. मारुति उद्योग के कारखाने में सफाई और सुरक्षा जैसे कार्य कैसे करवाए जाते हैं?
(A) स्थायी कर्मचारियों द्वारा।
(B) प्रशिक्षु (ट्रेनी) कर्मचारियों द्वारा।
(C) प्रबंधन स्वयं यह कार्य करता है।
(D) बाह्य स्रोतों से (आउटसोर्सिंग द्वारा)।

117. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): आई.टी. क्षेत्र में कर्मचारियों को अक्सर अतिरिक्त घंटे और दिनों तक काम करना पड़ता है।
कारण (R): अतिरिक्त कार्य घंटों को 'फ्लैक्सी-टाइम' के प्रयोग द्वारा वैध बनाया जाता है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

118. दुर्घटना की अवस्था में, उप-ठेकेदार अपनी ज़िम्मेदारी से क्यों मुकर सकते हैं?
(A) क्योंकि उनके पास बीमा नहीं होता है।
(B) क्योंकि वे मज़दूरों का रजिस्टर ठीक से नहीं रखते हैं।
(C) क्योंकि कानून उन्हें इसकी अनुमति देता है।
(D) क्योंकि मज़दूर प्रवासी होते हैं।

119. भारतीय रोज़गार सांख्यिकी (2018-19) के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. निर्माण क्षेत्र में 12.1% लोग कार्यरत थे।
2. व्यापार, होटल एवं रेस्त्रां में 12.6% लोग कार्यरत थे।
3. खदान एवं खनन में 4.0% लोग कार्यरत थे।
4. कृषि में 42.5% लोग कार्यरत थे।
5. सामुदायिक, सामाजिक एवं व्यक्तिगत सेवाओं में 13.8% लोग कार्यरत थे।

उपरोक्त में से कौन से कथन गलत हैं?
(A) केवल 3
(B) केवल 1 और 5
(C) केवल 3 और 4
(D) कोई भी नहीं

120. कनिष्ठ कलाकार संघ (जूनियर आर्टिस्ट एसोसिएशन) की माँगें क्या हैं?
(A) उपरोक्त सभी।
(B) आठ घंटे की शिफ्ट।
(C) वाजिब मेहनताना।
(D) सुरक्षित कार्यावस्था।

121. पहले के कृषि मज़दूर जो कर्जे के बदले ज़मींदार के पास बंधुआ मज़दूर की तरह रहते थे, अब उद्योगों में किस रूप में जाते हैं?
(A) स्थायी कामगार के रूप में
(B) प्रबंधक के रूप में
(C) अनियत कामगार के रूप में
(D) ठेकेदार के रूप में

122. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) नियमित कामगार (1972-73) - 15.4%
(B) दिहाड़ी कामगार (1972-73) - 23.2%
(C) स्व-रोज़गार (2018-19) - 61.4%
(D) दिहाड़ी कामगार (2018-19) - 52.1%

123. सरकार की भूमि अधिग्रहण नीति का किसानों, विशेषकर आदिवासियों पर क्या प्रभाव पड़ा है?
(A) इन्हें आधुनिक उद्योगों में स्थायी रोज़गार मिला।
(B) इनकी आर्थिक स्थिति में व्यापक और बड़ा सुधार हुआ।
(C) ये सभी लोग स्वयं के बड़े और सफल उद्योगपति बने।
(D) विस्थापन के बाद ये अल्प-वेतनभोगी मज़दूर बन गए।

124. निम्नलिखित सूचनाओं के आधार पर सही मिलान का चयन कीजिए:
सूची I: (सरकारी योजना/नीति)
P. मुद्रा योजना
Q. उदारीकरण
R. विनिवेश
S. खदान एक्ट, 1952

सूची II: (उद्देश्य/परिणाम)
1. सार्वजनिक कंपनियों के हिस्से बेचना
2. कामगारों की सुरक्षा सुनिश्चित करना
3. रोजगार और स्व-रोजगार को बढ़ावा देना
4. निजी/विदेशी फर्मों को निवेश के लिए प्रोत्साहित करना

कूट:
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-4, Q-3, R-2, S-1
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-2, Q-4, R-1, S-3

125. "जबरदस्त प्रदूषण" किस गतिविधि का एक नकारात्मक परिणाम है?
(A) घरों में होने वाला काम
(B) सॉफ्टवेयर विकास
(C) सरकार द्वारा भूमि अधिग्रहण कर उद्योग लगाना
(D) बीड़ी बनाना

126. कुल विस्थापितों में आदिवासियों का प्रतिशत लगभग कितना है?
(A) 10 प्रतिशत
(B) 20 प्रतिशत
(C) 60 प्रतिशत
(D) 40 प्रतिशत

127. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): बहुत से बदली कामगार एक ही company में बहुत लंबे समय से काम कर रहे होते हैं।
कारण (R): लंबे समय तक काम करने के कारण, उन्हें स्वतः ही स्थायी पद और सुरक्षा मिल जाती है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

Q. सिलिकोसिस
R. अकेलापन
S. बेरोजगारी

सूची II: (संबंधित समूह/कारण)
1. खदान में काम करने वाले
2. प्रवासी कामगार
3. बंबई टेक्सटाइल हड़ताल के बाद कामगार
4. मार्क्स के अनुसार औद्योगिक श्रमिक

कूट:
(A) P-4, Q-1, R-2, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-4, R-3, S-1

87. 'संगठित क्षेत्र में अनुबंधित कार्य' की क्या विशेषता है?
(A) यह एक स्थायी और सुरक्षित सरकारी नौकरी है।
(B) इसमें केवल उच्च कौशल वाले विशेषज्ञों को रखते हैं।
(C) इसमें सरकार द्वारा सभी सामाजिक लाभ सुनिश्चित हैं।
(D) इसमें सुरक्षा के बिना 'बदली कामगार' कार्य करते हैं।

88. भूमंडलीकरण की अर्थव्यवस्था में काम करने से लोगों पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?
(A) वे अकेलेपन और असुरक्षा की तरफ जा रहे हैं।
(B) उन्हें अधिक पारिवारिक समर्थन मिल रहा है।
(C) वे अधिक सामाजिक हो रहे हैं।
(D) उनके काम के घंटे कम हो रहे हैं।

89. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित नहीं है?
(A) विनिवेश - सरकारी हिस्सेदारी बेचना
(B) हड़ताल - कामगारों द्वारा काम बंद करना
(C) अलगाव - कार्य से प्रसन्न न होना
(D) तालाबंदी - व्यवस्थापक द्वारा मिल का दरवाजा बंद करना

90. 2018-19 में भारत के रोजगार में विभिन्न क्षेत्रों के हिस्से के बारे में क्या सच है?
(A) कृषि का हिस्सा सबसे बड़ा था।
(B) निर्माण का हिस्सा व्यापार और होटल से कम था।
(C) सामुदायिक और सामाजिक सेवाओं का हिस्सा सबसे कम था।
(D) खदान और खनन का हिस्सा यातायात से अधिक था।

91. किस समाजशास्त्री ने तर्क दिया कि मशीनों का प्रयोग वास्तव में कार्यकर्ताओं की दक्षता को कम करता है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) मैक्स वेबर
(C) खदान एवं खनन
(D) हैरी ब्रेवरमैन

92. आई.टी. कर्मचारियों को ऑफिस में देर तक रुकने का क्या कारण हो सकता है, भले ही उन पर काम का दबाव न हो?
(A) साथियों का दबाव
(B) (C) (A) और (B) दोनों
(C) अधिकारियों को यह दिखाना कि वे कड़ी मेहनत कर रहे हैं
(D) company द्वारा अतिरिक्त भुगतान

93. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): बंधुआ मजदूरी और अनियत औद्योगिक कामगार दोनों ही कर्जदार होते हैं।
कारण (R): अनियत कामगार औद्योगिक समाज में अधिक मुक्त होते हैं क्योंकि वे अनुबंध को तोड़कर किसी और के यहाँ काम ढूँढ़ सकते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

94. घरों में होने वाले काम के संबंध में 'एजेंट' या 'प्रतिनिधि' की क्या भूमिका होती है?
(A) वह कामगारों को प्रशिक्षित करता है।
(B) वह काम की गुणवत्ता की जाँच करता है।
(C) वह कामगारों का संघ बनाता है।
(D) वह कच्चा माल देता है और तैयार माल ले जाता है।

95. रोजगार की आधुनिक प्रवृत्तियों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. आजकल काम दिलाने वाले 'मिस्त्री' का महत्व बढ़ गया है।
2. कार्यकारिणी तथा यूनियन दोनों ही अपने लोगों को काम दिलाने में भूमिका निभाते हैं।
3. कुछ कामगार चाहते हैं कि उनका काम उनके बच्चों को दे दिया जाए।
4. 'बदली कामगार' संगठित क्षेत्र में अनुबंधित कार्य का एक उदाहरण हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) 1, 2, 3 और 4

96. भारत में 'कृषि' क्षेत्र की रोजगार और आमदनी के संबंध में क्या गंभीर स्थिति है?
(A) इस क्षेत्र में बहुत कम लोग कार्यरत हैं।
(B) जिस क्षेत्र में लोग ज़्यादा कार्यरत हैं, वह उन्हें अधिक आमदनी देने में सक्षम नहीं है।
(C) यह क्षेत्र लोगों को बहुत अधिक आमदनी दे रहा है।
(D) कृषि क्षेत्र में आर्थिक वृद्धि बहुत तेजी से हो रही है।

138. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'अलगाव' की अवधारणा को सबसे अच्छी तरह स्पष्ट करता है?
(A) अपने कार्य से आनंद या संतुष्टि का अभाव।
(B) समाज से दूरी।
(C) परिवार से अलगाव।
(D) राजनीतिक प्रक्रिया से विमुखता।

139. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): भारत अभी भी एक कृषि प्रधान देश है।
कारण (R): भारत में 2018-19 में लगभग 42.5 प्रतिशत लोग कृषि में कार्यरत थे, जो अन्य क्षेत्रों से काफी अधिक है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

140. 'जबरन सेवामुक्ति' और 'स्वैच्छिक अवकाश' में क्या अंतर है?
(A) दोनों का अर्थ समान है।
(B) जबरन सेवामुक्ति में कर्मचारी को निकाला जाता है, जबकि स्वैच्छिक अवकाश कर्मचारी स्वयं लेता है।
(C) जबरन सेवामुक्ति कानूनी है, जबकि स्वैच्छिक अवकाश अवैध है।
(D) स्वैच्छिक अवकाश में अधिक लाभ मिलता है।

141. बंबई टेक्सटाइल मिलों के मालिक आजकल अपनी मिलों की जमीन का क्या करने का प्रयास कर रहे हैं?
(A) उनमें नई मशीनें लगाने का।
(B) उन्हें सरकार को दान करने का।
(C) उन्हें स्थावर संपदा व्यापारियों को बहुमंजिली इमारतें बनाने के लिए बेचने का।
(D) उन पर श्रमिकों के लिए घर बनाने का।

142. औद्योगिक इतिहास से जुड़ी निम्नलिखित घटनाओं का सही कालानुक्रम क्या है?
1. 1982 की बंबई टेक्सटाइल मिल हड़ताल
2. 1990 के दशक में उदारीकरण की नीति
3. खदान एक्ट 1952 का पारित होना
4. महात्मा गाँधी का 'हिंद स्वराज्य' में मशीनों पर विचार
(A) 4, 3, 1, 2
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 4, 1, 2
(D) 4, 1, 3, 2

143. एक मैनेजर का मुख्य कार्य क्या होता है?
(A) कामगारों को नियंत्रित रखना और उनसे अधिक काम करवाना।
(B) कामगारों को प्रेरित करना।
(C) कामगारों के लिए सुविधाओं की व्यवस्था करना।
(D) उत्पादन की गुणवत्ता सुनिश्चित करना।

144. औद्योगिक समाज में सामाजिक असमानता के बारे में कौन सा कथन सबसे उपयुक्त है?
(A) पुरानी असमानताएँ समाप्त हो गई हैं और कोई नई असमानता नहीं है।
(B) पुरानी असमानताएँ (जैसे जाति) कम हो रही हैं लेकिन नई आर्थिक असमानताएँ उत्पन्न हो रही हैं।
(C) केवल आर्थिक असमानता ही मौजूद है।
(D) सामाजिक असमानता पूरी तरह से खत्म हो गई है।

145. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में सेवा क्षेत्र के बढ़ते महत्व को दर्शाता है?
(A) अधिक लोग कृषि छोड़ रहे हैं।
(B) नगरीय मध्यवर्ग की संख्या बढ़ रही है।
(C) टेलीविजन सीरियलों में दिखाए जाने वाले मूल्य बढ़ रहे हैं।
(D) (B) और (C) दोनों।

146. छोटी फर्मों में मज़दूर संगठनों का गठन मुश्किल क्यों होता है?
(A) क्योंकि छोटी कंपनियाँ बड़ी कंपनियों से कार्य प्राप्त करने के लिए स्पर्धा करती हैं, जिससे संघ बनाना मुश्किल होता है।
(B) क्योंकि कामगार संगठन नहीं बनाना चाहते।
(C) क्योंकि सरकार इसकी अनुमति नहीं देती है।
(D) क्योंकि छोटी फर्मों में कामगारों की संख्या बहुत कम होती है।

147. औद्योगिक उत्पादन और प्रबंधन के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. मैनेजर का मुख्य कार्य कामगारों को नियंत्रित करना है।
2. काम के घंटों में वृद्धि करके अधिक काम करवाया जा सकता है।
3. मशीनें उत्पादन बढ़ाने में सहायक होती हैं।
4. मशीनें कामगारों का स्थान ले सकती हैं।
5. मार्क्स और गाँधी दोनों मशीनीकरण के पक्ष में थे।
उपरोक्त में से कौन से कथन गलत हैं?
(A) केवल 5
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 4 और 5
(D) कोई भी नहीं

148. घर से काम करने वाले (work from home) और घर पर काम करने वालों (work at home) के बीच क्या मुख्य अंतर है?
(A) कोई अंतर नहीं है, दोनों एक ही हैं।
(B) घर पर काम करने वालों को अधिक वेतन मिलता है।
(C) घर से काम करने वालों के पास कोई निश्चित घंटे नहीं होते हैं।
(D) घर से काम (work from home) में अक्सर संगठित क्षेत्र के कर्मचारी डिजिटल माध्यम से काम करते हैं,

22. (B) किसी संगठन में रोज़गार और स्व-रोज़गार
रोजगार के अवसरों को मुख्य रूप से दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: किसी संस्था या कंपनी के अधीन कार्य करना और स्वयं का व्यवसाय करना। संगठनात्मक रोजगार में व्यक्ति को एक निश्चित वेतन और पद मिलता है, जबकि स्वरोजगार में व्यक्ति अपनी क्षमताओं और संसाधनों का उपयोग करके स्वयं अपनी आजीविका अर्जित करता है। ये दोनों ही किसी भी अर्थव्यवस्था के श्रम बाजार के मुख्य आधार स्तंभ हैं।

23. (D) मिस्त्री
कानपुर की कपड़ा मिलों के इतिहास में 'मिस्त्री' एक महत्वपूर्ण बिचौलिये की भूमिका निभाते थे। ये लोग अक्सर गाँवों से नए मजदूरों को मिलों में काम दिलाने के लिए लाते थे। मिस्त्री का कार्य केवल भर्ती तक सीमित नहीं था, बल्कि वे कार्यस्थल पर मजदूरों की निगरानी भी करते थे। यह प्रणाली दर्शाती है कि शुरुआती औद्योगिक काल में भर्ती प्रक्रिया कितनी अनौपचारिक और व्यक्तिगत संपर्कों पर आधारित थी।

24. (A) P-1, Q-2, R-3, S-4
विभिन्न उद्योगों की अपनी विशिष्ट कार्यप्रणाली और संबंधित शब्द होते हैं। कपड़ा मिलों में भर्ती के लिए मिस्त्री प्रसिद्ध थे, जबकि सॉफ्टवेयर क्षेत्र अपनी 'नाइट आउट' संस्कृति के लिए जाना जाता है। खदानों में काम करने वाले अक्सर सिलिकोसिस जैसी गंभीर बीमारी का शिकार होते हैं। इसी तरह, बीड़ी उद्योग कच्चे माल के रूप में तेंदु पत्तों पर निर्भर है, जो ग्रामीण और वन आधारित अर्थव्यवस्था का हिस्सा है।

25. (C) जो स्थायी कर्मचारियों की अनुपस्थिति में काम करते हैं।
'बदली कामगार' वे मजदूर होते हैं जिन्हें स्थायी कर्मचारियों के अवकाश या अनुपस्थिति के दौरान काम पर रखा जाता है। यह व्यवस्था कारखानों में उत्पादन की निरंतरता बनाए रखने के लिए की जाती है। इन मजदूरों को स्थायी कर्मचारियों के समान सुरक्षा या लाभ नहीं मिलते और उनका रोजगार पूरी तरह अस्थाई होता है। यह प्रणाली उद्योगों में श्रम की लचीली और कम लागत वाली व्यवस्था का एक रूप है।

26. (A) उपरोक्त सभी
भारत सरकार ने देश में उद्यमिता और रोजगार को बढ़ावा देने के लिए 'मेक इन इंडिया', 'आत्मनिर्भर भारत' और 'मुद्रा योजना' जैसे कई महत्वाकांक्षी कार्यक्रम शुरु किए हैं। ये योजनाएं घरेलू विनिर्माण को प्रोत्साहित करने, छोटे व्यवसायों को वित्तीय सहायता प्रदान करने और युवाओं को स्वावलंबी बनाने पर केंद्रित हैं। इन पहलों का सामूहिक उद्देश्य भारत की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करना और बड़े पैमाने पर रोजगार सृजित करना है।

27. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
कार्ल मार्क्स और महात्मा गाँधी दोनों का मानना था कि मशीनीकरण से बड़े पैमाने पर मानव श्रम विस्थापित हो सकता है, जिससे बेरोजगारी की समस्या उत्पन्न होगी। मशीनें उत्पादन की गति और मात्रा बढ़ाती हैं, लेकिन वे उन कार्यों को छीन लेती हैं जिन्हें पहले लोग हाथों से करते थे। यह विचार आधुनिक संदर्भ में भी प्रासंगिक है, जहाँ स्वचालन और कृत्रिम बुद्धिमत्ता रोजगार के पारंपरिक स्वरूपों को चुनौती दे रहे हैं।

28. (B) भवन-निर्माण कार्य या ईंट बनाने के स्थान पर
दिहाड़ी मजदूरों के लिए ठेकेदारी व्यवस्था मुख्य रूप से निर्माण क्षेत्र और ईंट भट्टों जैसे असंगठित उद्योगों में देखी जाती है। यहाँ काम की प्रकृति अस्थाई और मौसमी होती है, जिसके कारण नियोक्ता ठेकेदारों के माध्यम से मजदूरों की व्यवस्था करना पसंद करते हैं। इस प्रणाली में मजदूरों का अक्सर शोषण होता है क्योंकि उनके पास कोई कानूनी अनुबंध नहीं होता और वे पूरी तरह ठेकेदारों पर निर्भर होते हैं।

29. (C) कार्य के घंटों और प्रति इकाई उत्पादन दर को बढ़ाना।
औद्योगिक प्रबंधन में उत्पादन बढ़ाने के लिए मैनेजर अक्सर दो प्रमुख तरीके अपनाते हैं: काम के घंटों में वृद्धि करना या प्रति इकाई समय में उत्पादन का लक्ष्य बढ़ाना। इन तरीकों का उद्देश्य श्रम से अधिकतम लाभ प्राप्त करना होता है, जिससे कंपनी की कार्यक्षमता बढ़ती है। हालांकि, यह श्रमिकों पर शारीरिक और मानसिक दबाव बढ़ाता है, जिससे लंबे समय में उनकी सेहत और कार्य संतुष्टि पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

30. (D) 1, 2, 3 और 4
उदारीकरण और निजीकरण के दौर में भारतीय रोजगार बाजार में कई संरचनात्मक बदलाव आए हैं। सरकारी नौकरियों में कमी आई है और सुरक्षित स्थायी रोजगार के स्थान पर असुरक्षित संविदात्मक कार्य बढ़े हैं। इससे आय की असमानता में वृद्धि हुई है और आउटसोर्सिंग का चलन बढ़ा है। ये परिवर्तन वैश्विक बाजार की माँगों के अनुरूप तो हैं, लेकिन इन्होंने कामगारों के लिए आर्थिक अनिश्चितता और चुनौतियां भी पैदा की हैं।

31. (A) उपरोक्त सभी
महात्मा गाँधी के लिए चरखा केवल सूत कातने का यंत्र नहीं, बल्कि स्वावलंबन और अहिंसक प्रतिरोध का प्रतीक था। उनका मानना था कि चरखे को अपनाकर ग्रामीण बेरोजगारी को दूर किया जा सकता है और अमीरों द्वारा गरीबों के शोषण को रोका जा सकता है। यह इस बात की भी घोषणा थी कि भारत अपनी आर्थिक उन्नति के लिए किसी अन्य राष्ट्र का शोषण करने की इच्छा नहीं रखता है।

32. (B) 45 मिनट
मारुति उद्योग जैसी आधुनिक विनिर्माण इकाइयों में समय का प्रबंधन बहुत कड़ा होता है। यहाँ कामगारों को पूरे दिन की कड़ी मेहनत के दौरान केवल पैंतालीस मिनट का कुल विश्राम मिलता है, जिसमें भोजन और अन्य व्यक्तिगत आवश्यकताएं शामिल होती हैं। यह मशीनी गति से तालमेल बिठाने की अनिवार्यता को दर्शाता है, जहाँ उत्पादन लक्ष्य इतने ऊँचे होते हैं कि श्रमिकों को निरंतर सक्रिय रहना पड़ता है।

33. (D) 1, 2, 3, 4 और 5
ठेकेदारी व्यवस्था में ठेकेदार अक्सर गाँवों से मजदूरों को काम के लिए अग्रिम राशि देकर लाते हैं, जो बाद में उनकी दिहाड़ी

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में श्रम बल का एक विशाल बहुमत असंगठित या अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है। इस क्षेत्र की विशेषता केवल कार्यस्थलों के छोटे आकार या दस से कम कर्मचारियों की संख्या से ही नहीं, बल्कि इसमें रोजगार की शर्तों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। असंगठित क्षेत्र में श्रमिकों को आम तौर पर वे कानूनी और सामाजिक सुरक्षा लाभ प्राप्त नहीं होते जो संगठित क्षेत्र के कर्मचारियों को मिलते हैं, जैसे कि भविष्य निधि, स्वास्थ्य बीमा, पेंशन और सवैतनिक अवकाश। यहाँ रोजगार अक्सर अनिश्चित होता है और लिखित अनुबंधों के बिना मौखिक समझौतों पर आधारित होता है, जिससे श्रमिकों को मनमाने ढंग से नौकरी से निकाले जाने का खतरा बना रहता है। मजदूरी भी अनियमित हो सकती है और अक्सर न्यूनतम मजदूरी कानूनों के अनुपालन के बिना तय की जाती है। इस क्षेत्र में ठेकेदारों या मध्यस्थों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है, जो अक्सर श्रमिकों और मुख्य नियोक्ताओं के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करते हैं। यह मध्यस्थता प्रणाली हालांकि श्रमिकों के शोषण का एक और स्तर जोड़ सकती है, जहाँ ठेकेदार उनकी मजदूरी का एक हिस्सा काट लेते हैं। निर्माण, घरेलू काम, कृषि और छोटे पैमाने की खुदरा बिक्री जैसे कई उद्योग लगभग पूरी तरह से इस अनौपचारिक श्रम पर निर्भर करते हैं। इस क्षेत्र की व्यापकता भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए एक संरचनात्मक चुनौती प्रस्तुत करती है, जो आर्थिक विकास के लाभों के असमान वितरण को दर्शाती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. अनुच्छेद के अनुसार, असंगठित क्षेत्र की एक प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) श्रमिकों के लिए अत्यधिक उच्च वेतन संरचना
(B) रोजगार की अनिश्चित प्रकृति और सुरक्षा लाभों का अभाव
(C) मजबूत कानूनी ढाँचा और व्यापक सामाजिक सुरक्षा लाभ
(D) लिखित और औपचारिक रूप से हस्ताक्षरित रोजगार अनुबंध

157. असंगठित क्षेत्र में ठेकेदारों या मध्यस्थों की क्या भूमिका बताई गई है?
(A) वे श्रमिकों के लिए उच्च सामाजिक सुरक्षा सुनिश्चित करते हैं।
(B) वे सरकार द्वारा सीधे नियुक्त किए जाते हैं ताकि श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा हो सके।
(C) वे केवल संगठित क्षेत्र में ही पाए जाते हैं।
(D) वे श्रमिकों और नियोक्ताओं के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करते हैं, लेकिन शोषण भी कर सकते हैं।

158. निम्नलिखित में से कौन सा उद्योग अनुच्छेद में असंगठित श्रम पर अत्यधिक निर्भर के रूप में उल्लेखित नहीं है?
(A) सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) सेवाएँ
(B) निर्माण और आधारभूत संरचना क्षेत्र
(C) घरेलू काम और व्यक्तिगत सेवाएँ
(D) कृषि और उससे संबंधित गतिविधियाँ

159. अनुच्छेद के अनुसार, असंगठित क्षेत्र में रोजगार संबंध अक्सर किस पर आधारित होते हैं?
(A) व्यापक कानूनी दस्तावेजों पर
(B) सरकार द्वारा अनिवार्य किए गए मानकीकृत प्रपत्रों पर
(C) लिखित अनुबंधों के बिना मौखिक समझौतों पर
(D) ट्रेड यूनियनों द्वारा किए गए समझौतों पर

160. असंगठित क्षेत्र की व्यापकता भारतीय अर्थव्यवस्था के बारे में क्या दर्शाती है?
(A) आर्थिक विकास के लाभों का असमान वितरण
(B) सभी क्षेत्रों में समान आर्थिक विकास
(C) श्रम कानूनों का अत्यधिक प्रभावी कार्यान्वयन
(D) एक पूरी तरह से औपचारिक और विनियमित अर्थव्यवस्था

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

1990 के दशक में अपनाई गई उदारीकरण, निजीकरण और भूमंडलीकरण (LPG) की नीतियों ने भारतीय उद्योग और श्रम बाजार पर गहरा और द्वैध प्रभाव डाला। एक ओर, इन सुधारों ने दूरसंचार, सूचना प्रौद्योगिकी और वित्तीय सेवाओं जैसे नए क्षेत्रों को विदेशी निवेश और प्रतिस्पर्धा के लिए खोल दिया, जिससे उच्च-कुशल और शिक्षित पेशेवरों के लिए रोजगार के नए अवसर पैदा हुए। इसने एक नए शहरी मध्यवर्ग के विकास को गति दी, जिसकी जीवन शैली और उपभोग पैटर्न वैश्विक मानकों से प्रभावित थे। दूसरी ओर, इसने भारतीय उद्योगों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के दबाव में ला दिया। लागत में कटौती करने और लचीलापन बढ़ाने की होड़ में, कई कंपनियों ने अपनी स्थायी और नियमित श्रम शक्ति को कम करना शुरु कर दिया। इसके परिणामस्वरुप 'श्रम के अनौपचारिकीकरण' की प्रवृत्ति बढ़ी, जहाँ स्थायी नौकरियों को अनुबंध-आधारित, अस्थायी या आउटसोर्स कार्य द्वारा प्रतिस्थापित किया गया। इससे श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति में कमी आई और ट्रेड यूनियनों का प्रभाव भी कम हुआ। विनिवेश की प्रक्रिया के माध्यम से सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSUs) के निजीकरण ने भी रोजगार की सुरक्षा को लेकर चिंताएँ पैदा कीं, क्योंकि ये उपक्रम पारंपरिक रूप से स्थिर और सुरक्षित रोजगार के स्रोत माने जाते थे। इस प्रकार, भूमंडलीकरण ने जहाँ एक छोटे वर्ग के लिए समृद्धि के द्वार खोले, वहीं एक बड़े श्रमिक वर्ग के लिए इसने रोजगार की अनिश्चितता और असुरक्षा को बढ़ाया।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. अनुच्छेद के अनुसार, उदारीकरण की नीतियों का भारतीय श्रम बाजार पर 'द्वैध प्रभाव' क्या था?
(A) इसने ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में व्यापक सामाजिक और आर्थिक असमानता पैदा की।
(B) इसने सभी श्रेणी के श्रमिकों के लिए समान रूप से वेतन और भत्तों में भारी वृद्धि की।

समुदायों द्वारा किया जाता है। यह उनके लिए आजीविका का एक महत्वपूर्ण मौसमी स्रोत है। वे कड़ी मेहनत से इन पत्तों को इकट्ठा करते हैं और फिर उन्हें ठेकेदारों या सरकारी समितियों को बेचते हैं। यहाँ से बीड़ी उत्पादन की एक लंबी और जटिल व्यावसायिक श्रृंखला की शुरुआत होती है।

45. (C) बीड़ियों के वितरक को
बीड़ी उद्योग में अंतिम उत्पादन के बाद, निर्माता इन बीड़ियों को थोक में क्षेत्रीय या राष्ट्रीय वितरकों को बेचते हैं। ये वितरक आगे चलकर खुदरा विक्रेताओं और छोटी दुकानों तक माल पहुँचाने का काम करते हैं। इस व्यावसायिक श्रृंखला में वितरक एक सेतु की भूमिका निभाते हैं, जिससे ग्रामीण इलाकों में बने उत्पाद देश के कोने-कोने में पहुँचते हैं और उपभोक्ताओं तक उपलब्ध हो पाते हैं।

46. (A) 1, 4, 2, 3
भारत में उदारीकरण की यात्रा सरकार द्वारा नई आर्थिक नीतियों को अपनाने से शुरु हुई। इसके बाद ऊर्जा और संचार जैसे क्षेत्रों में निजी निवेश को आमंत्रित किया गया, जिससे बाजार प्रतिस्पर्धी बना। परिणामतः विदेशी वस्तुएं भारतीय दुकानों पर आसानी से मिलने लगीं। अंत में, सरकार ने सार्वजनिक कंपनियों से अपना हिस्सा निकालकर विनिवेश की प्रक्रिया को गति दी, जिससे भारतीय अर्थव्यवस्था का स्वरुप वैश्विक बाजार के अनुरुप बदला।

47. (A) हड़ताल कामगार करते हैं, जबकि तालाबंदी व्यवस्थापक करते हैं।
हड़ताल और तालाबंदी औद्योगिक संघर्ष के दो अलग-अलग हथियार हैं। हड़ताल में श्रमिक एकजुट होकर अपनी माँगें पूरी करवाने के लिए स्वेच्छा से काम बंद कर देते हैं। इसके विपरीत, तालाबंदी में मिल या फैक्ट्री का मालिक अपनी ओर से संस्थान का दरवाजा बंद कर देता है ताकि श्रमिक काम पर न आ सकें। दोनों ही स्थितियाँ प्रबंधन और श्रम के बीच के गहरे तनाव और विवादों को प्रकट करती हैं।

48. (B) डा. दत्ता सामंत
1982 में मुंबई की ऐतिहासिक टेक्सटाइल मिल हड़ताल का नेतृत्व प्रसिद्ध ट्रेड यूनियन नेता डॉ. दत्ता सामंत ने किया था। यह हड़ताल वेतन वृद्धि और बेहतर कार्यदशाओं की माँग को लेकर की गई थी, जिसमें लाखों मजदूरों ने भाग लिया था। इस आंदोलन ने न केवल मुंबई के औद्योगिक परिदृश्य को हिला दिया, बल्कि यह भारतीय श्रम आंदोलन के इतिहास की सबसे बड़ी और लंबी हड़तालों में से एक मानी जाती है।

49. (B) (C) (A) और (B) दोनों
मुंबई के कपड़ा मिल कामगारों ने 1982 की हड़ताल के दौरान बेहतर मजदूरी और अपने स्वयं के स्वतंत्र संघ बनाने के अधिकार की प्रमुखता से माँग की थी। वे तत्कालीन आधिकारिक संघों से असंतुष्ट थे, जिन्हें वे प्रबंधन के करीब मानते थे। यह संघर्ष न केवल आर्थिक लाभ के लिए था, बल्कि यह कार्यस्थल पर श्रमिकों की गरिमा और उनकी वास्तविक आवाज को मान्यता दिलाने के लिए एक बड़ा प्रयास था।

50. (A) उपरोक्त सभी।
1982 की लंबी हड़ताल का मुंबई की कपड़ा मिलों पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा। मिल मालिकों ने आधुनिकीकरण में निवेश करने के बजाय मिलों को बंद करना बेहतर समझा, जिससे लाखों श्रमिक बेरोजगार हो गए। इसके बाद मालिकों ने अपनी बेशकीमती जमीनों को रियल एस्टेट व्यापारियों को बेचने का प्रयास शुरु किया। इस पूरी घटना ने मुंबई के सामाजिक-आर्थिक ढांचे को बदलकर उसे विनिर्माण से सेवा क्षेत्र की ओर मोड़ दिया।

51. (C) कोई भी नहीं
कार्य और पहचान के बीच गहरा संबंध है, जहाँ व्यक्ति का पेशा उसकी सामाजिक छवि निर्धारित करता है। तकनीक ने पारंपरिक संबंधों को बदला है, लेकिन जाति और लिंग जैसी सामाजिक संस्थाएँ अब भी कार्यक्षेत्र को प्रभावित करती हैं। यहाँ तक कि हमारी व्यक्तिगत पसंद, जैसे कॉफी पीना, भी सामाजिक मानदंडों से जुड़ी होती है। दिए गए सभी कथन समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से सत्य हैं और सामाजिक व्यवस्था को समझाते हैं।

52. (D) क्लार्क केर
'अभिसरण शोध' या कन्वर्जेंस थीसिस का प्रतिपादन समाजशास्त्री क्लार्क केर ने किया था। इस सिद्धांत के अनुसार, जैसे-जैसे विभिन्न देश औद्योगीकरण की ओर बढ़ते हैं, उनकी सामाजिक और आर्थिक संरचनाएं धीरे-धीरे एक समान होने लगती हैं। औद्योगिक विकास की अपनी कुछ अनिवार्य आवश्यकताएं होती हैं, जो विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले समाजों को एक सामान्य ढांचे की ओर ले जाती हैं, जिससे वैश्विक स्तर पर एकरुपता बढ़ती है।

53. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
औद्योगीकरण ने सार्वजनिक स्थानों जैसे रेलगाड़ियों में जातिगत भेदभाव को कम करने में सहायता की है, जहाँ सभी लोग एक साथ यात्रा करते हैं। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि सामाजिक असमानताएँ पूरी तरह समाप्त हो गई हैं। औद्योगीकरण पुरानी असमानताओं को कम कर सकता है, लेकिन यह अक्सर नई आर्थिक असमानताएं पैदा करता है, जहाँ आय और कौशल के आधार पर समाज में विभाजन बना रहता है।

54. (B) स्व-रोज़गार
1972-73 और 2018-19 के बीच के रोजगार वितरण के आंकड़े बताते हैं कि स्वरोजगार करने वाले लोगों के प्रतिशत में उल्लेखनीय कमी आई है। इसका अर्थ है कि लोग पारंपरिक स्वतंत्र व्यवसायों और कृषि से हटकर अब अन्य क्षेत्रों की ओर बढ़ रहे हैं। यह बदलाव अर्थव्यवस्था के औपचारिक होने और लोगों की नियमित या अनियमित मजदूरी पर बढ़ती निर्भरता को दर्शाता है, जो आधुनिक औद्योगिक विकास की एक प्रमुख विशेषता है।

व्यवसायों में समान प्रतिनिधित्व मिले।
(D) उच्च जातियाँ अब केवल शारीरिक श्रम वाले कार्य करती हैं।

169. अनुच्छेद के अनुसार, निम्न-वेतन और जोखिम भरे कार्यों में अक्सर किन समूहों का अनुपातहीन प्रतिनिधित्व होता है?
(A) केवल शहरी पेशेवर
(B) उच्च जातियों के सदस्य
(C) दलित और अन्य निचली जातियाँ
(D) प्रवासी भारतीय श्रमिक

170. इस अनुच्छेद का मुख्य तर्क क्या है?
(A) आधुनिक कार्यस्थल अब पूरी तरह से केवल व्यक्तिगत योग्यता और तकनीकी कौशल पर आधारित हैं।
(B) कार्य का वैश्विक विभाजन केवल आर्थिक कारकों और बाजार की माँगों द्वारा ही निर्धारित होता है।
(C) भारत में लिंग और जाति का अब आधुनिक सामाजिक स्तरीकरण और रोजगार में कोई महत्व नहीं है।
(D) कार्यस्थल एक सामाजिक क्षेत्र है जहाँ लिंग और जाति जैसे पारंपरिक पदानुक्रम पुनरुत्पादित होते हैं।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

औद्योगिक समाज में श्रमिक संघों (ट्रेड यूनियनों) और सामूहिक सौदेबाजी का उदय श्रमिकों द्वारा अपने अधिकारों की रक्षा और काम करने की स्थितियों में सुधार के लिए किए गए संघर्ष का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। पारंपरिक रूप से, यूनियनें बड़े कारखानों और संगठित क्षेत्र के उद्योगों में केंद्रित रही हैं, जहाँ बड़ी संख्या में श्रमिक एक ही स्थान पर काम करते थे, जिससे उन्हें संगठित करना आसान होता था। हड़ताल, जो कि काम बंद करने का एक सामूहिक निर्णय है, इन यूनियनों का सबसे शक्तिशाली हथियार रहा है, जिसका उपयोग वे प्रबंधन पर अपनी माँगें, जैसे बेहतर वेतन, सुरक्षित कार्यदशाएँ और कम काम के घंटे, मनवाने के लिए दबाव बनाने हेतु करते थे। हालाँकि, हाल के दशकों में, विशेष रूप से भारत जैसे विकासशील देशों में, श्रमिक आंदोलनों की प्रकृति और प्रभाव में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। अर्थव्यवस्था के अनौपचारिकीकरण और स्थायी नौकरियों के स्थान पर अनुबंध श्रम के बढ़ने से श्रमिकों की शक्ति खंडित हुई है। असंगठित क्षेत्र में बिखरे हुए लाखों श्रमिकों, जैसे निर्माण मजदूर, घरेलू कामगार या गिग इकॉनमी के डिलीवरी पार्टनर्स, को पारंपरिक यूनियन संरचना में संगठित करना अत्यंत कठिन है। परिणामस्वरूप, श्रमिक प्रतिरोध के नए रूप उभर रहे हैं, जो औपचारिक हड़तालों के बजाय जनहित याचिकाओं (PIL), मीडिया अभियानों, और नागरिक समाज संगठनों के साथ गठबंधन पर अधिक निर्भर करते हैं। अब संघर्ष केवल एक विशिष्ट कारखाने के प्रबंधन के खिलाफ नहीं, बल्कि राज्य से सामाजिक सुरक्षा और न्यूनतम अधिकारों की व्यापक माँग के रूप में भी हो रहा है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. पारंपरिक रूप से, ट्रेड यूनियनें कहाँ सबसे अधिक सक्रिय रही हैं?
(A) ग्रामीण कृषि और पशुपालन क्षेत्र में
(B) छोटी स्थानीय खुदरा और किराना दुकानों में
(C) बड़े कारखानों और संगठित क्षेत्र के उद्योगों में
(D) आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी और सॉफ्टवेयर कंपनियों में

172. अनुच्छेद के अनुसार, यूनियनों का सबसे शक्तिशाली पारंपरिक हथियार क्या रहा है?
(A) प्रबंधन के साथ बातचीत
(B) हड़ताल या काम बंद करना
(C) कानूनी मुकदमेबाजी
(D) राजनीतिक दलों से अपील

173. हाल के दशकों में पारंपरिक श्रमिक आंदोलनों के कमजोर होने का एक मुख्य कारण क्या बताया गया है?
(A) श्रमिकों की अपने वर्तमान काम और कार्यस्थल से संतुष्टि में भारी वृद्धि।
(B) केंद्र और राज्य सरकारों द्वारा यूनियनों पर लगाया गया पूर्ण प्रतिबंध।
(C) औद्योगिक क्षेत्र में आधुनिक प्रौद्योगिकी का अभाव।
(D) अर्थव्यवस्था का अनौपचारिकीकरण और अनुबंध श्रम का बढ़ना।

174. असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को पारंपरिक यूनियनों में संगठित करना क्यों कठिन है?
(A) क्योंकि वे एक स्थान पर केंद्रित नहीं होते और बिखरे हुए होते हैं।
(B) क्योंकि वे अधिक वेतन कमाते हैं और उन्हें यूनियन की आवश्यकता नहीं है।
(C) क्योंकि कानून उन्हें यूनियन बनाने से रोकता है।
(D) क्योंकि वे प्रबंधन के साथ सीधे सौदेबाजी करना पसंद करते हैं।

175. अनुच्छेद के अनुसार, श्रमिक प्रतिरोध के कौन-से नए रूप उभर रहे हैं?
(A) केवल प्रबंधन के साथ होने वाली पुरानी और पारंपरिक हड़तालें
(B) बेहतर वेतन के लिए केवल विदेश में जाकर काम करने की प्रवृत्ति
(C) जनहित याचिकाएँ, मीडिया अभियान और नागरिक समाज के साथ गठबंधन
(D) व्यक्तिगत रूप से उच्च प्रबंधन के साथ होने वाले छोटे स्तर के संघर्ष

(C) इसने केवल सार्वजनिक क्षेत्र के बड़े उद्यमों को प्रभावित किया, निजी सेवा क्षेत्र को नहीं।
(D) इसने उच्च-कुशल पेशेवरों के लिए अवसर पैदा किए जबकि दूसरों के लिए रोजगार की असुरक्षा बढ़ाई।

162. लागत में कटौती के लिए कंपनियों ने उदारीकरण के बाद क्या रणनीति अपनाई?
(A) उन्होंने अधिक संख्या में स्थायी और कुशल कर्मचारियों को काम पर रखना शुरु कर दिया।
(B) उन्होंने स्थायी नौकरियों को अनुबंध-आधारित और अस्थायी कार्य से बदलना शुरु कर दिया।
(C) उन्होंने श्रमिकों के वेतन, भत्तों और अन्य सामाजिक लाभों में भारी वृद्धि करने का निर्णय लिया।
(D) उन्होंने केवल घरेलू भारतीय बाजारों और स्थानीय प्रतिस्पर्धा पर ध्यान केंद्रित करने का फैसला किया।

163. 'श्रम के अनौपचारिकीकरण' की प्रवृत्ति से क्या तात्पर्य है?
(A) कार्यस्थल पर अधिक आधुनिक और आरामदायक ड्रेस कोड अपनाना।
(B) श्रमिकों द्वारा कार्यस्थल से अधिक व्यक्तिगत छुट्टियां और अवकाश लेना।
(C) स्थायी और सुरक्षित नौकरियों की जगह अस्थायी और असुरक्षित नौकरियों का बढ़ना।
(D) पारंपरिक भारी उद्योगों का पूरी तरह से पतन और बंद होना।

164. अनुच्छेद के अनुसार, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों (PSUs) के विनिवेश ने क्या चिंताएँ पैदा कीं?
(A) उत्पादित वस्तुओं और सेवाओं की गुणवत्ता में भारी गिरावट आने की चिंता।
(B) बड़ी विदेशी बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा भारतीय उपक्रमों के अधिग्रहण की चिंता।
(C) भविष्य में होने वाले कॉर्पोरेट मुनाफे और लाभांश में बड़ी कमी की चिंता।
(D) रोजगार की सुरक्षा में कमी की चिंता, क्योंकि ये स्थिर नौकरियों के स्रोत थे।

165. अनुच्छेद का समग्र निष्कर्ष क्या है?
(A) भूमंडलीकरण ने एक छोटे वर्ग को लाभान्वित किया लेकिन बड़े श्रमिक वर्ग के लिए अनिश्चितता बढ़ाई।
(B) भूमंडलीकरण सभी भारतीय श्रमिकों के लिए समान रुप से फायदेमंद रहा है।
(C) भूमंडलीकरण ने भारत में ट्रेड यूनियनों को पहले से कहीं अधिक शक्तिशाली बना दिया है।
(D) भूमंडलीकरण का भारतीय श्रम बाजार पर कोई महत्वपूर्ण प्रभाव नहीं पड़ा।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
आधुनिक औद्योगिक समाज में कार्य का विभाजन केवल तकनीकी कौशल और विशेषज्ञता पर आधारित नहीं होता, बल्कि यह गहरी सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं, विशेष रुप से लिंग और जाति, से भी प्रभावित होता है। 'कार्य का लिंगीकरण' (gendering of work) एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके तहत कुछ व्यवसायों और कार्यों को 'पुरुषोचित' और कुछ को 'स्त्रियोचित' के रूप में देखा और वर्गीकृत किया जाता है। उदाहरण के लिए, देखभाल, पोषण और सेवा से जुड़े कार्य, जैसे कि नर्सिंग, प्राथमिक विद्यालय शिक्षण, और मानव संसाधन, अक्सर महिलाओं के लिए 'स्वाभाविक' माने जाते हैं। इसके विपरीत, इंजीनियरिंग, मशीनरी संचालन और प्रबंधन के उच्च पदों को पारंपरिक रूप से पुरुष प्रधान क्षेत्र माना जाता है। इसी तरह, भारतीय संदर्भ में जाति व्यवस्था कार्य के विभाजन को आकार देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऐतिहासिक रूप से, जाति पदानुक्रम व्यवसायों से अटूट रूप से जुड़ा हुआ था। यद्यपि आधुनिक कानून जाति-आधारित भेदभाव का निषेध करते हैं, फिर भी व्यवहार में यह प्रभाव बना हुआ है। अक्सर यह देखा जाता है कि सफाई, मैला ढोने और अकुशल शारीरिक श्रम जैसे निम्न-वेतन और जोखिम भरे कार्यों में दलित और अन्य निचली जातियों के श्रमिकों का अनुपातहीन प्रतिनिधित्व होता है, जबकि कॉर्पोरेट, अकादमिक और प्रशासनिक क्षेत्रों के प्रतिष्ठित पदों पर उच्च जातियों का वर्चस्व कायम रहता है। इस प्रकार, कार्यस्थल केवल आर्थिक गतिविधियों का केंद्र नहीं है, बल्कि यह एक ऐसा सामाजिक क्षेत्र भी है जहाँ पारंपरिक पदानुक्रम और पूर्वाग्रह पुनरुत्पादित और प्रबलित होते हैं।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. 'कार्य का लिंगीकरण' (gendering of work) की अवधारणा का क्या अर्थ है?
(A) कार्यस्थल पर पुरुषों और महिलाओं की समान संख्या सुनिश्चित करना।
(B) कुछ व्यवसायों को 'पुरुषोचित' और कुछ को 'स्त्रियोचित' के रूप में वर्गीकृत करना।
(C) केवल महिलाओं को कुछ विशेष व्यवसायों में प्रवेश करने की अनुमति देना।
(D) पुरुषों और महिलाओं के लिए समान वेतन सुनिश्चित करना।

167. अनुच्छेद के अनुसार, निम्नलिखित में से कौन सा कार्य अक्सर 'स्त्रियोचित' माना जाता है?
(A) इंजीनियरिंग
(B) नर्सिंग
(C) मशीनरी संचालन
(D) कॉर्पोरेट प्रबंधन

168. भारतीय संदर्भ में, कार्य विभाजन पर जाति व्यवस्था का क्या प्रभाव बताया गया है?
(A) कानून के बावजूद, व्यवहार में जाति अक्सर किसी व्यक्ति के व्यवसाय के प्रकार को प्रभावित करती है।
(B) जाति व्यवस्था का अब कार्य विभाजन पर कोई प्रभाव नहीं है।
(C) यह सुनिश्चित करता है कि सभी जातियों को सभी

11. (D) 52 प्रतिशत
वर्ष 2018-19 के सांख्यिकीय आंकड़ों के अनुसार, भारत में लगभग बावन प्रतिशत कार्यबल स्वरोजगार में संलग्न है। इसमें छोटे किसान, दुकानदार और स्वतंत्र रूप से काम करने वाले कारीगर शामिल हैं। स्वरोजगार की इतनी उच्च दर यह संकेत देती है कि औपचारिक नौकरियों के अभाव में लोग अपनी आजीविका के लिए स्वयं के छोटे प्रयासों पर निर्भर हैं, जो अक्सर अनिश्चित और कम आय वाले होते हैं।

12. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में एक बहुत ही छोटा वर्ग बड़ी फर्मों या संगठित क्षेत्र में कार्यरत है, क्योंकि कार्यबल का नब्बे प्रतिशत से अधिक हिस्सा असंगठित क्षेत्र में आता है। असंगठित क्षेत्र में काम करने वालों के पास नौकरी की सुरक्षा और सामाजिक लाभों का अभाव होता है। बड़ी फर्मों में सीमित अवसरों के कारण अधिकांश भारतीयों को छोटे व्यवसायों या अनियमित मजदूरी पर ही निर्भर रहना पड़ता है।

13. (C) 10
संगठित क्षेत्र की मानक परिभाषा के अनुसार, ऐसी इकाइयाँ जिनमें कम से कम दस या उससे अधिक लोग पूरे वर्ष कार्यरत रहते हैं, इस श्रेणी में आती हैं। ये इकाइयाँ आमतौर पर सरकारी नियमों और श्रम कानूनों के दायरे में होती हैं। इस क्षेत्र में काम करने वाले कर्मचारियों को नियमित वेतन, निर्धारित कार्य घंटे और अन्य सामाजिक सुरक्षा लाभ जैसे भविष्य निधि और चिकित्सा सुविधाएँ प्राप्त होती हैं।

14. (A) उपरोक्त सभी।
भारत में सरकारी नौकरियों को उनकी सुरक्षा, लाभ और सामाजिक प्रतिष्ठा के कारण अत्यधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। ये नौकरियाँ न केवल पेंशन और चिकित्सा सुविधा सुनिश्चित करती हैं, बल्कि जाति, धर्म और क्षेत्रीय पहचान से ऊपर उठकर सामाजिक गतिशीलता का अवसर भी प्रदान करती हैं। सुरक्षित भविष्य की गारंटी के कारण युवा वर्ग इन पदों को प्राप्त करने के लिए कठिन परिश्रम और प्रतिस्पर्धा करता है।

15. (A) 1, 4, 3, 2, 5
बीड़ी उत्पादन की प्रक्रिया एक श्रृंखलाबद्ध कार्य है जो प्राकृतिक संसाधनों के संग्रहण से शुरू होकर अंतिम उत्पाद तक पहुँचती है। सबसे पहले जंगलों से तेंदु पत्ते तोड़े जाते हैं, जिन्हें ठेकेदारों को बेचा जाता है। इसके बाद पत्तों को गीला करके काटा जाता है, फिर उनमें तंबाकू भरकर उन्हें बांधा जाता है। अंत में, बीड़ियों को भट्टी में पकाकर बिक्री के लिए तैयार किया जाता है।

16. (B) विनिवेश
विनिवेश वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से सरकार सार्वजनिक क्षेत्र की कंपनियों में अपनी हिस्सेदारी या शेयर निजी क्षेत्र को बेचती है। इसका उद्देश्य सरकारी खजाने के लिए संसाधन जुटाना और इन कंपनियों की कार्यक्षमता में सुधार करना होता है। यह नीति सरकार की अर्थव्यवस्था में सीधी भागीदारी को कम करने और निजी निवेश को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम मानी जाती है।

17. (B) उपरोक्त सभी।
1990 के दशक की उदारीकरण की नीति ने भारतीय बाजार को विदेशी प्रतिस्पर्धा के लिए खोल दिया। इसके परिणामस्वरूप विदेशी वस्तुएं आसानी से उपलब्ध होने लगीं और कई भारतीय कंपनियों का बहुराष्ट्रीय कंपनियों में विलय हो गया। साथ ही, कुछ भारतीय कंपनियां स्वयं भी वैश्विक स्तर पर विस्तारित होकर बहुराष्ट्रीय बन गईं। इस बदलाव ने उपभोक्ताओं के लिए विकल्प बढ़ाए और भारतीय व्यापार जगत को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाया।

18. (D) 1, 2, 3, 4 और 5
भारत का असंगठित क्षेत्र नब्बे प्रतिशत से अधिक कार्यबल को समाहित करता है, जहाँ वेतन कम और सुविधाएँ न्यूनतम होती हैं। यहाँ काम की शर्तें अक्सर व्यक्तिगत संबंधों पर निर्भर करती हैं, न कि औपचारिक अनुबंधों पर। श्रमिकों का बिखराव उन्हें सामूहिक रूप से संगठित होने और अपने अधिकारों के लिए लड़ने से रोकता है। हालाँकि सरकार ने निगरानी के लिए कुछ नियम बनाए हैं, लेकिन उनका कार्यान्वयन चुनौतीपूर्ण है।

19. (C) कोका कोला
उदारीकरण के बाद भारतीय शीतल पेय बाजार में बड़े बदलाव आए, जब कोका कोला जैसी वैश्विक दिग्गज कंपनी ने भारतीय ब्रांड पारले के प्रमुख उत्पादों को खरीद लिया। थम्स अप और गोल्ड स्पॉट जैसे ब्रांडों के अधिग्रहण ने विदेशी कंपनियों को भारत के स्थापित वितरण नेटवर्क और व्यापक उपभोक्ता आधार तक तुरंत पहुँच प्रदान की। यह घटना भारतीय उद्योगों पर भूमंडलीकरण और विदेशी पूंजी के प्रभाव का एक प्रमुख उदाहरण है।

20. (D) मॉडर्न फूड
मॉडर्न फूड इंडस्ट्रीज भारत की पहली सार्वजनिक कंपनी थी जिसका निजीकरण किया गया। निजी क्षेत्र के स्वामित्व में जाने के बाद, कंपनी ने अपनी दक्षता बढ़ाने के लिए बड़े पैमाने पर छंटनी की, जिससे पहले पाँच वर्षों में साठ प्रतिशत कर्मचारियों को अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा। यह मामला निजीकरण के सामाजिक और रोजगार संबंधी प्रभावों के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण उदाहरण के रूप में देखा जाता है।

21. (C) क्योंकि उन्हें वहाँ सस्ते मज़दूर उपलब्ध हो जाते हैं।
बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ विकासशील देशों में आउटसोर्सिंग या बाह्य स्रोतों से काम इसलिए करवाती हैं क्योंकि वहाँ श्रम की लागत विकसित देशों की तुलना में काफी कम होती है। कम वेतन पर कुशल या अर्ध-कुशल श्रमिक मिलने से इन कंपनियों के उत्पादन खर्च में भारी कमी आती है, जिससे उनका मुनाफा बढ़ जाता है। यह वैश्विक आर्थिक रणनीति विकासशील देशों में रोजगार तो पैदा करती है, लेकिन अक्सर कम वेतन पर।

ANSWERS

1. (B) उनकी पहचान का
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से किसी व्यक्ति का कार्यस्थल और उसके काम करने का तरीका उसकी सामाजिक पहचान का एक अभिन्न अंग होता है। यह न केवल उनकी आजीविका का साधन है, बल्कि समाज में उनके स्थान और आत्म-सम्मान को भी परिभाषित करता है। कार्य के माध्यम से व्यक्ति विभिन्न सामाजिक समूहों से जुड़ता है, जिससे उसकी एक विशिष्ट व्यावसायिक और व्यक्तिगत पहचान निर्मित होती है।

2. (A) जुहू
शहरी समाजशास्त्र यह दर्शाता है कि किसी शहर में लोगों के रहने के स्थान उनके आर्थिक और सामाजिक स्तर को प्रतिबिंबित करते हैं। मुंबई में जुहू जैसे इलाके ऐतिहासिक रुप से संपन्न वर्ग, फिल्मी हस्तियों और बड़े उद्योगपतियों के निवास स्थान रहे हैं। यह स्थानिक पृथक्करण समाज के विभिन्न वर्गों के बीच मौजूद आय और जीवनशैली के गहरे अंतर को स्पष्ट रुप से उजागर करता है।

3. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
औद्योगीकरण ने ग्रामीण समाजों के पारंपरिक और व्यक्तिगत संबंधों को बदलकर कारखानों के अज्ञात और व्यावसायिक संबंधों में परिवर्तित कर दिया है। गाँवों में लोग एक-दूसरे को व्यक्तिगत रुप से जानते थे, लेकिन आधुनिक कार्यस्थलों पर संबंध केवल पेशेवर और संविदात्मक होते हैं। यह परिवर्तन सामाजिक संरचना में आए व्यापक बदलाव को दर्शाता है, जहाँ व्यक्तिगत पहचान के बजाय व्यावसायिक भूमिकाएँ अधिक महत्वपूर्ण हो गई हैं।

4. (D) जब कार्य दोहराने वाला हो और कामगार अप्रसन्न हों।
कार्ल मार्क्स ने 'अलगाव' की अवधारणा का उपयोग उस स्थिति को समझाने के लिए किया जहाँ औद्योगिक श्रमिक अपने काम से जुड़ाव महसूस नहीं करते हैं। मशीनीकृत उत्पादन में कार्य अक्सर दोहराव वाला और नीरस होता है, जिससे श्रमिक अपनी रचनात्मकता खो देते हैं। इस प्रक्रिया में कामगार न केवल उत्पाद से बल्कि स्वयं से भी अलग हो जाते हैं, जिससे उनमें असंतोष और मानसिक दूरी बढ़ती है।

5. (C) समाज इन्हें देखभाल एवं पोषण हेतु उपयुक्त मानता है।
रोजगार के क्षेत्रों में लैंगिक विभाजन अक्सर समाज में प्रचलित रूढ़ियों और अपेक्षाओं पर आधारित होता है। नर्सिंग और शिक्षण जैसे कार्यों को पारंपरिक रूप से देखभाल और पोषण से जोड़कर देखा जाता है, जिन्हें महिलाओं के लिए 'स्वाभाविक' माना जाता है। यह सामाजिक दृष्टिकोण महिलाओं के करियर विकल्पों को प्रभावित करता है और कुछ विशिष्ट क्षेत्रों में उनकी अधिक भागीदारी का मुख्य कारण बन जाता है।

6. (A) P-4, Q-2, R-3, S-1
विभिन्न समाजशास्त्रियों ने औद्योगिक समाज को समझने हेतु महत्वपूर्ण सिद्धांत दिए हैं। कार्ल मार्क्स ने अलगाव की अवधारणा दी, जबकि मैक्स वेबर ने आधुनिक उद्योग के संगठनात्मक स्वरुप पर चर्चा की। एमील दुर्खाइम ने समाज में श्रम के विभाजन के महत्व को रेखांकित किया, और क्लार्क केर ने अभिसरण शोध का सिद्धांत प्रतिपादित किया, जो विभिन्न औद्योगिक देशों के बीच बढ़ती समानताओं की व्याख्या करता है।

7. (D) 43 प्रतिशत
अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के 2018-19 के आंकड़ों के अनुसार, भारत की कार्यशील जनसंख्या का लगभग तिरालीस प्रतिशत हिस्सा प्राथमिक क्षेत्र, विशेषकर कृषि और खनन में संलग्न था। यह तथ्य दर्शाता है कि औद्योगीकरण के बावजूद, भारतीय अर्थव्यवस्था का एक बड़ा हिस्सा अब भी अपनी आजीविका के लिए भूमि आधारित गतिविधियों पर निर्भर है, जो विकसित देशों की तुलना में काफी अधिक प्रतिशत है।

8. (A) वे कई प्रकारों से समान और कई प्रकारों से भिन्न थे।
भारत में औद्योगीकरण की प्रक्रिया पश्चिमी देशों के अनुभवों से पूरी तरह मेल नहीं खाती। हालाँकि तकनीकी और कारखानों की प्रणाली समान थी, लेकिन भारत में यह प्रक्रिया औपनिवेशिक इतिहास और सुदृढ़ सामाजिक संरचनाओं जैसे जाति से प्रभावित रही। यहाँ संगठित क्षेत्र के साथ-साथ एक बहुत बड़ा अनौपचारिक क्षेत्र भी मौजूद रहा, जो भारत के औद्योगिक विकास को एक अद्वितीय स्वरुप प्रदान करता है।

9. (D) 1, 2, 3 and 4
वर्ष 2018-19 के रोजगार आंकड़े भारत की विविध आर्थिक संरचना को दर्शाते हैं। इसमें प्राथमिक क्षेत्र में लगभग तिरालीस प्रतिशत, द्वितीयक में पच्चीस प्रतिशत और तृतीयक क्षेत्र में तेईस प्रतिशत लोग कार्यरत थे। कृषि पर निर्भरता में क्रमिक गिरावट देखी गई है, जो अर्थव्यवस्था के विनिर्माण और सेवा क्षेत्रों की ओर झुकाव को दर्शाती है। यह परिवर्तन भारत के विकासशील स्वरुप का एक महत्वपूर्ण संकेतक है।

10. (A) नियमित वेतनभोगी
विकसित और विकासशील देशों के श्रम बाजार में एक प्रमुख अंतर नियमित वेतनभोगी कर्मचारियों की संख्या का है। विकसित देशों में अधिकांश जनसंख्या सुरक्षित और औपचारिक नौकरियों में संलग्न होती है जहाँ नियमित वेतन मिलता है। इसके विपरीत, भारत जैसे विकासशील देशों में नियमित वेतनभोगी कर्मचारियों का प्रतिशत काफी कम है और अधिकांश लोग स्वरोजगार या असंगठित क्षेत्र में काम करने के लिए मजबूर हैं।

से काट ली जाती है। इसमें यात्रा का खर्च भी ऋण का हिस्सा होता है, जिससे मजदूर कर्ज के जाल में फंस जाते हैं। जब तक यह उधार नहीं चुकता, मजदूर कम या बिना पैसे के काम करने को मजबूर होते हैं, जो आधुनिक समाज में बंधुआ मजदूरी का ही एक रूप है।

34. (A) रातभर कार्य करना जब परियोजना की अंतिम सीमा आ जाती है
सूचना प्रौद्योगिकी (IT) के क्षेत्र में 'नाइट आउट' का अर्थ है कार्यालय में पूरी रात रुककर काम करना। यह स्थिति आमतौर पर तब आती है जब किसी महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट की समय-सीमा बहुत नजदीक होती है और काम का दबाव बहुत अधिक होता है। यह शब्द इस क्षेत्र की अत्यधिक प्रतिस्पर्धी और मांग वाली प्रकृति को दर्शाता है, जहाँ समय पर डिलीवरी सुनिश्चित करने के लिए व्यक्तिगत समय का त्याग किया जाता है।

35. (C) उपरोक्त सभी
आई.टी. क्षेत्र में लंबे कार्य घंटों के पीछे कई कारण हैं, जिनमें प्रमुख अंतरराष्ट्रीय ग्राहकों के साथ समय की भिन्नता और आउटसोर्सिंग परियोजनाओं का अत्यधिक बोझ है। इसके अलावा, कॉर्पोरेट संस्कृति में साथियों का दबाव और उच्च अधिकारियों के सामने खुद को मेहनती साबित करने की होड़ भी कर्मचारियों को देर तक काम करने पर मजबूर करती है। यह इस क्षेत्र के कार्य-जीवन संतुलन के लिए एक बड़ी चुनौती है।

36. (D) मशीनों का प्रयोग कार्यकर्ताओं की दक्षता को कम करता है।
समाजशास्त्री हैरी ब्रेवरमैन ने तर्क दिया कि उत्पादन प्रक्रिया में मशीनों का बढ़ता उपयोग वास्तव में श्रमिकों के कौशल और दक्षता को कम करता है। इसे 'अकौशलन' की प्रक्रिया कहा जाता है, जहाँ जटिल कार्यों को मशीनों द्वारा किए जाने वाले छोटे और सरल हिस्सों में बाँट दिया जाता है। इसके परिणामस्वरूप श्रमिक केवल मशीन का एक विस्तार बनकर रह जाता है और उसकी अपनी रचनात्मक शक्ति समाप्त हो जाती है।

37. (C) उपरोक्त सभी।
खदान अधिनियम 1952 भारत में खनन क्षेत्र के श्रमिकों की सुरक्षा और अधिकारों को सुनिश्चित करने वाला एक प्रमुख कानून है। यह कार्य के साप्ताहिक घंटों को सीमित करता है, सुरक्षा नियमों के कड़ाई से पालन का निर्देश देता है और निर्धारित घंटों से अधिक काम करने पर अतिरिक्त पारिश्रमिक का प्रावधान करता है। ये नियम खदानों जैसी खतरनाक जगहों पर काम करने वाले मजदूरों के कल्याण के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

38. (B) (A) और (B) दोनों
भूमिगत खदानों में काम करना अत्यधिक जोखिम भरा होता है, जहाँ कामगारों को बाढ़, आग और सुरंगों के धंसने जैसी जानलेवा दुर्घटनाओं का सामना करना पड़ता है। इसके अलावा, जहरीली गैसों का रिसाव और ऑक्सीजन की निरंतर कमी उनके स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा पैदा करती है। सुरक्षा के पुख्ता इंतजामों के बिना इन खदानों में काम करना किसी भी मजदूर के लिए जीवन-मरण का प्रश्न बन जाता है।

39. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
बड़ी कंपनियों की तुलना में छोटी और खुली खदानों में सुरक्षा मानकों की अक्सर अनदेखी की जाती है। इसका मुख्य कारण उप-ठेकेदारी की बढ़ती प्रवृत्ति है, जहाँ ठेकेदार लागत कम करने के लिए मजदूरों का उचित रिकॉर्ड नहीं रखते और सुरक्षा उपकरणों पर खर्च नहीं करते। ऐसी अव्यवस्था में दुर्घटना होने पर जिम्मेदारी तय करना कठिन हो जाता है, जिससे गरीब मजदूर सबसे अधिक प्रभावित होते हैं और असुरक्षित रहते हैं।

40. (A) क्षय रोग (टी.बी.) और सिलिकोसिस
खुली खदानों में काम करने वाले मजदूरों को धूल और प्रदूषित हवा के बीच घंटों बिताने पड़ते हैं। इस कारण उन्हें क्षय रोग (टी.बी.) और सिलिकोसिस जैसी फेफड़ों की गंभीर बीमारियाँ होने का खतरा बना रहता है। धूल के महीन कण फेफड़ों में जमा होकर उन्हें स्थायी नुकसान पहुँचाते हैं। खनन क्षेत्र में कामगारों के खराब स्वास्थ्य का यह एक बड़ा और चिंताजनक कारण है जो सुरक्षा की कमी को दर्शाता है।

41. (C) आर्थिकी का
घरों पर किया जाने वाला काम, जैसे बीड़ी बनाना या हाथ की बुनाई, अर्थव्यवस्था का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जिसे अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। यह अनौपचारिक क्षेत्र का हिस्सा है जहाँ बड़ी कंपनियाँ घरों में बैठे श्रमिकों के माध्यम से कम लागत पर उत्पादन करवाती हैं। यह प्रणाली लाखों परिवारों को रोजगार और आय प्रदान करती है, जिससे वे देश की मुख्य आर्थिक गतिविधियों से अप्रत्यक्ष रूप से जुड़े रहते हैं।

42. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
विभिन्न सामाजिक समूहों और औद्योगिक इकाइयों की अपनी विशिष्ट पहचान और स्थान होते हैं। कनिष्ठ कलाकार अपनी माँगों के लिए संघबद्ध हैं, जबकि मुंबई के कपड़ा मिलों का अपना एक समृद्ध इतिहास है जो विशिष्ट क्षेत्रों से जुड़ा है। फिल्मी सितारों का निवास स्थान जुहू आर्थिक समृद्धि का प्रतीक है, वहीं भिलाई स्टील प्लांट अपनी मिश्रित कार्य संस्कृति के कारण सांप्रदायिक सद्भाव का एक उत्कृष्ट उदाहरण पेश करता है।

43. (D) चीज़ों के नग (पीस) के हिसाब से
असंगठित क्षेत्र में घर से काम करने वाले श्रमिकों को अक्सर 'पीस-रेट' के आधार पर भुगतान किया जाता है, यानी जितने नग वे तैयार करेंगे, उसी हिसाब से उन्हें पैसे मिलेंगे। इस व्यवस्था में कोई निश्चित वेतन या बोनस नहीं होता है। यह नियोक्ता के लिए लाभदायक है क्योंकि उसे केवल तैयार उत्पाद के लिए भुगतान करना पड़ता है, लेकिन इससे श्रमिकों पर काम का अत्यधिक दबाव बना रहता है।

44. (B) जंगल के पास वाले गाँवों के लोग
बीड़ी बनाने के लिए आवश्यक तेंदु पत्तों का संग्रहण मुख्य रूप से जंगलों के निकट रहने वाले ग्रामीणों और जनजातीय

जबकि घर पर काम (work at home) में असंगठित क्षेत्र के श्रमिक भौतिक उत्पाद बनाते हैं।

149. आज के समय में बंबई (मुंबई) के भविष्य को कौन परिभाषित करेगा, इस पर किनके बीच झगड़ा है?
(A) कामगारों और सरकार के बीच।
(B) मिल मालिकों और सरकार के बीच।
(C) कामगारों और मिल मालिकों/स्थावर संपदा व्यापारियों के बीच।
(D) केंद्र सरकार और राज्य सरकार के बीच।

150. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। सही विकल्प का चयन कीजिए:
अभिकथन (A): बहुत ही कम भारतीय सुरक्षित और लाभदायक नौकरियों में प्रवेश करते हैं।
कारण (R): जो सुरक्षित नौकरियों में हैं, उनमें भी दो-तिहाई सरकारी नौकरी करते हैं, इसीलिए लोग सरकारी नौकरी के लिए बहुत मेहनत करते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
औद्योगिक समाज में कार्ल मार्क्स द्वारा प्रतिपादित 'अलगाव' की अवधारणा केवल आर्थिक शोषण तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक गहरी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक स्थिति का वर्णन करती है। मार्क्स के अनुसार, पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली में, श्रमिक चार प्रमुख स्तरों पर अलगाव का अनुभव करता है। सर्वप्रथम, वह अपने श्रम के उत्पाद से अलग हो जाता है, क्योंकि जो वस्तु वह बनाता है, वह उसकी नहीं रहती, बल्कि पूंजीपति के मुनाफे का स्रोत बन जाती है। द्वितीय, वह उत्पादन की प्रक्रिया से ही अलग हो जाता है; श्रम उसकी रचनात्मकता की अभिव्यक्ति नहीं रह जाता, बल्कि एक बाहरी, दमनकारी और थकाऊ गतिविधि बन जाता है जिसे केवल जीविकोपार्जन के लिए किया जाता है। तीसरा, वह अपने 'प्रजाति-सार' (species-being) या मानवीय सार से अलग हो जाता है, क्योंकि श्रम जो मनुष्य को अन्य प्रजातियों से अलग करता है - अर्थात सचेत और रचनात्मक गतिविधि - वह निरर्थक और अमानवीय हो जाता है। अंततः, श्रमिक अन्य मनुष्यों से भी अलग हो जाता है। प्रतिस्पर्धी श्रम बाजार और कार्यस्थल का पदानुक्रमित ढाँचा सहयोग के बजाय शत्रुता और उदासीनता को बढ़ावा देता है, जिससे सामाजिक संबंधों में भी एक प्रकार का विखंडन उत्पन्न होता है। यह अवधारणा केवल कारखानों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि आधुनिक कॉर्पोरेट कार्यालयों और सेवा क्षेत्र में भी देखी जा सकती है, जहाँ मानकीकृत प्रक्रियाएँ और प्रदर्शन लक्ष्य व्यक्तिगत स्वायत्तता और रचनात्मकता को बाधित करते हैं।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. अनुच्छेद के अनुसार, मार्क्स की 'अलगाव' की अवधारणा का मूल आधार क्या है?
(A) केवल श्रमिकों का आर्थिक शोषण
(B) एक गहरी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक स्थिति
(C) श्रमिकों के बीच बढ़ती प्रतिस्पर्धा
(D) उत्पादन के साधनों का पुराना पड़ जाना

152. श्रमिक अपने श्रम के उत्पाद से कैसे अलग हो जाता है?
(A) क्योंकि उत्पाद उसका नहीं रहता, बल्कि पूंजीपति के लाभ का स्रोत बन जाती है।
(B) क्योंकि वह उत्पाद की गुणवत्ता को नियंत्रित नहीं कर सकता।
(C) क्योंकि उत्पाद सीधे उसकी व्यक्तिगत जरूरतों को पूरा नहीं करता है।
(D) क्योंकि उसे उत्पाद बनाने के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग करने की अनुमति नहीं है।

153. 'प्रजाति-सार' (species-being) से अलगाव का क्या अर्थ है?
(A) श्रमिक का अपने परिवार और समुदाय के सामाजिक बंधनों से पूरी तरह दूर हो जाना।
(B) श्रमिकों का अन्य सामाजिक वर्गों के प्रति गहरे और निरंतर शत्रुता का भाव रखना।
(C) श्रम का एक रचनात्मक गतिविधि के बजाय एक अमानवीय और निरर्थक कार्य बन जाना।
(D) व्यक्ति का अपनी प्राकृतिक प्रवृत्तियों और पर्यावरण से स्थायी संबंध तोड़ना।

154. अनुच्छेद के अनुसार, अलगाव का श्रमिकों के पारस्परिक सामाजिक संबंधों पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(A) यह श्रमिकों के बीच एकजुटता और भाईचारे को मजबूत करता है।
(B) यह श्रमिकों को अपने अधिकारों के लिए सामूहिक सौदेबाजी करने के लिए प्रेरित करता है।
(C) इसका सामाजिक संबंधों पर कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ता है।
(D) यह सहयोग के बजाय शत्रुता और उदासीनता को बढ़ावा देता है।

155. यह अनुच्छेद क्या इंगित करता है कि अलगाव की अवधारणा कहाँ लागू होती है?
(A) ऐतिहासिक रूप से केवल 19वीं सदी के पुराने कपड़ा कारखानों में
(B) वैचारिक रूप से केवल पूरी तरह से समाजवादी और साम्यवादी समाजों में
(C) केवल कारखानों में ही नहीं, बल्कि आधुनिक कॉर्पोरेट कार्यालयों और सेवा क्षेत्र में भी
(D) विकासशील देशों की केवल कृषि आधारित और ग्रामीण अर्थव्यवस्थाओं में

55. (D) सूचना तकनीक
'ज्ञान आर्थिकी' शब्द का प्रयोग भारत में सूचना प्रौद्योगिकी (IT) क्षेत्र की अभूतपूर्व वृद्धि को दर्शाने के लिए किया जाता है। यह ऐसी अर्थव्यवस्था है जहाँ उत्पादन और विकास का मुख्य आधार ज्ञान, सूचना और तकनीकी कौशल होता है। इस क्षेत्र ने न केवल भारत को वैश्विक स्तर पर एक नई पहचान दी है, बल्कि कुशल युवाओं के लिए रोजगार के व्यापक और नए अवसर भी सृजित किए हैं।

56. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
भारत की रोजगार सांख्यिकी विविध श्रेणियों में बंटी हुई है। स्वरोजगार में लगभग बावन प्रतिशत लोग संलग्न हैं, जबकि नियमित और दिहाड़ी कामगार दोनों का हिस्सा लगभग चौबीस-चौबीस प्रतिशत है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि देश का नब्बे प्रतिशत से अधिक कार्यबल असंगठित क्षेत्र में आता है, जहाँ उन्हें सामाजिक सुरक्षा और स्थायी नौकरी का लाभ नहीं मिल पाता है, जो एक गंभीर चुनौती है।

57. (C) एकल युवा महिलाएँ
तमिलनाडु, कर्नाटक और केरल के मछली प्रसंस्करण उद्योग में बड़ी संख्या में एकल युवा महिलाएं कार्यरत हैं, जिनमें से कई अन्य क्षेत्रों से प्रवास करके आती हैं। इस उद्योग की कार्यप्रणाली ऐसी है कि इसमें विशेष रूप से महिलाओं के कौशल को प्राथमिकता दी जाती है। यह न केवल उनके आर्थिक सशक्तिकरण का साधन है, बल्कि यह औद्योगिक क्षेत्रों में महिला श्रम की बढ़ती भूमिका और उनके प्रवास के पैटर्न को भी स्पष्ट करता है।

58. (A) (C) (A) और (B) दोनों
प्रवासी कामगारों को नए वातावरण में अकेलापन और असुरक्षा की भावना का सामना करना पड़ता है, क्योंकि वे अपने परिवार और सामाजिक जड़ों से दूर होते हैं। उनके कार्य की प्रकृति अक्सर इतनी थकाऊ और समय लेने वाली होती है कि उन्हें सामाजिक मेलजोल के लिए बहुत कम अवसर मिलते हैं। ये चुनौतियां उनके मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक जीवन पर गहरा प्रभाव डालती हैं, जिससे वे समाज में अलग-थलग महसूस करते हैं।

59. (D) अधिकांश लोग बड़ी फर्मों में सुरक्षित नौकरियों में हैं।
भारतीय रोजगार परिदृश्य के बारे में यह कहना गलत है कि अधिकांश लोग बड़ी फर्मों में सुरक्षित नौकरियों में हैं। वास्तव में, भारत के नब्बे प्रतिशत से अधिक लोग असंगठित क्षेत्र में काम करते हैं जहाँ नौकरी की सुरक्षा और अन्य लाभ नहीं मिलते। सुरक्षित और लाभदायक नौकरियों का लाभ केवल एक छोटे से प्रतिशत को ही मिल पाता है, जबकि शेष जनसंख्या स्वरोजगार या अनियमित मजदूरी पर निर्भर है।

60. (B) उपरोक्त सभी।
भारत में असंगठित क्षेत्र के व्यापक होने के गंभीर सामाजिक परिणाम हैं। इसका अर्थ है कि बहुत कम लोगों को सुरक्षित नौकरियों का लाभ मिलता है, जहाँ वे विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों से मिल सकें। साथ ही, बहुत कम श्रमिक श्रमिक संघों के सदस्य बन पाते हैं, जिससे उनकी सामूहिक आवाज कमजोर रहती है। यह स्थिति समाज में आर्थिक असुरक्षा को बढ़ाती है और अधिकांश लोगों को भविष्य की अनिश्चितता में धकेलती है।

61. (C) वे कम वेतन पर खराब कार्यावस्था में काम करने को मजबूर होते हैं।
आउटसोर्सिंग का कामगारों पर अक्सर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है क्योंकि कम्पनियाँ अपनी लागत कम करने के लिए कार्य को छोटे और कम विनियमित संस्थानों को सौंप देती हैं। इसके परिणामस्वरूप श्रमिकों को कम वेतन और असुरक्षित कार्यदशाओं में काम करना पड़ता है। उनके पास स्थायी नौकरी जैसी सुरक्षा नहीं होती और उन्हें अक्सर लंबी अवधि तक कड़ी मेहनत करनी पड़ती है, जिससे उनका आर्थिक और शारीरिक शोषण बढ़ता है।

62. (D) कार्य का निर्धारण वैयक्तिक संबंधों से होना।
संगठित क्षेत्र की मुख्य पहचान इसके औपचारिक नियम और सरकारी पंजीकरण हैं। यहाँ कार्य का निर्धारण वैयक्तिक संबंधों के बजाय लिखित अनुबंधों और कानूनों के आधार पर होता है। कर्मचारियों को नियमित वेतन, पेंशन और चिकित्सा जैसी निश्चित सुविधाएं प्राप्त होती हैं। वैयक्तिक संबंधों पर आधारित कार्य असंगठित क्षेत्र की विशेषता है, जहाँ नियोक्ता और श्रमिक के बीच कोई औपचारिक समझौता नहीं होता और अधिकार स्पष्ट नहीं होते।

63. (A) (C) (A) और (B) दोनों
उदारीकरण के बाद भारत में सेवा क्षेत्र का तेजी से विस्तार हुआ है, जिसमें आईटी उद्योग, बैंक, दुकानें और होटल व्यवसाय प्रमुख हैं। नगरीय मध्यवर्ग की बढ़ती क्रय शक्ति और जीवनशैली में बदलाव ने इन सेवाओं की माँग को बढ़ाया है। आज मनोरंजन, सूचना तकनीक और आतिथ्य सत्कार जैसे क्षेत्र न केवल अर्थव्यवस्था में बड़ा योगदान दे रहे हैं, बल्कि लाखों लोगों के लिए रोजगार के नए अवसर भी प्रदान कर रहे हैं।

64. (B) शिशुपालन हेतु दादा-दादी की परिवार में भूमिका।
आधुनिक औद्योगिक युग में संयुक्त परिवार का एक नया स्वरूप उभरा है, जिसे अक्सर शिशुपालन की जरूरतों से जोड़ा जाता है। जब परिवार के दोनों माता-पिता काम पर जाते हैं, तो बच्चों की देखभाल के लिए दादा-दादी की उपस्थिति अनिवार्य हो जाती है। यह व्यवस्था न केवल बच्चों को भावनात्मक सुरक्षा देती है, बल्कि कामकाजी माता-पिता को भी अपने करियर पर ध्यान केंद्रित करने में मदद करती है, जो शहरी जीवन की एक आवश्यकता बन गई है।

65. (B) 1, 2 और 3
मारुति उद्योग जैसी कंपनियों में उत्पादन की गति अत्यधिक तीव्र होती है, जहाँ हर मिनट नई कारें तैयार की जाती हैं। कामगारों को कड़ी निगरानी में काम करना पड़ता है और उन्हें विश्राम के लिए बहुत कम समय मिलता है। इस निरंतर दबाव और अत्यधिक मेहनत के कारण श्रमिक बहुत जल्दी शारीरिक रूप से थक जाते हैं। यह आधुनिक विनिर्माण क्षेत्र में कार्य की

सघनता और श्रमिकों पर पड़ने वाले बोझ का एक ज्वलंत उदाहरण है।

66. (A) कार्य को छोटे, दोहराए जाने वाले कार्यों में तोड़ना और समय का सख्ती से प्रबंधन करना।
'टायलरिज्म' या वैज्ञानिक प्रबंधन की मुख्य विशेषता उत्पादन प्रक्रिया को छोटे और सरल कार्यों में विभाजित करना है। इसमें प्रत्येक कार्य के लिए एक निश्चित समय निर्धारित किया जाता है, जिससे कामगारों की कुशलता और गति बढ़ाई जा सके। यद्यपि यह पद्धति उत्पादन को अत्यधिक कुशल बनाती है, लेकिन यह श्रमिकों के कार्य को नीरस बना देती है और उनकी रचनात्मकता को सीमित कर उन्हें केवल मशीन का हिस्सा बना देती है।

67. (C) वे मशीनों के प्रति पागलपन के विरोधी हैं, लेकिन मशीनों के नहीं।
महात्मा गाँधी मशीनों के पूर्ण विरोधी नहीं थे, बल्कि वे मशीनों के प्रति उस 'अंधे जुनून' के खिलाफ थे जो मानवीय श्रम को विस्थापित करता था। उनका मानना था कि तकनीक ऐसी होनी चाहिए जो मनुष्यों की सहायता करे, न कि उन्हें बेरोजगार बनाए। गाँधी जी का दृष्टिकोण हमेशा मानवीय मूल्यों और गरीबों के हितों पर केंद्रित था, जहाँ मशीनें विकास का साधन तो हों लेकिन शोषण का जरिया न बनें।

68. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
आई.टी. क्षेत्र का कार्य अक्सर रचनात्मक माना जाता है, लेकिन वास्तविकता में यहाँ भी श्रमिकों को सख्त समय-सीमा और निरंतर निगरानी का सामना करना पड़ता है। यद्यपि यह कार्य बौद्धिक है, फिर भी इसमें 'टायलरिज्म' के समान ही कार्यक्षमता और समय प्रबंधन के कड़े नियम लागू होते हैं। दोनों स्थितियाँ सत्य हैं, परंतु एक-दूसरे का सीधा कारण नहीं हैं, बल्कि आधुनिक कार्य संस्कृति के दो अलग-अलग पहलुओं को दर्शाती हैं।

69. (C) उस स्थान पर किए गए गड्ढे को भरकर उसे पहले जैसा कर देना।
पर्यावरण नियमों के अनुसार, जब किसी खदान का कार्य समाप्त हो जाता है, तो संबंधित कंपनी की यह कानूनी जिम्मेदारी होती है कि वह उस स्थान को सुरक्षित बनाए। इसमें खनन के दौरान किए गए बड़े गड्ढों को भरना और उस क्षेत्र का पुनरुद्धार करना शामिल है ताकि वह फिर से उपयोगी हो सके। यह कदम पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने और स्थानीय निवासियों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण माना जाता है।

70. (D) 1, 2, 3, 4 और 5
बीड़ी उद्योग एक विस्तृत और जटिल श्रृंखला पर आधारित है जो वनों से लेकर अंतिम उपभोक्ता तक फैली है। इसकी शुरुआत तेंदु पत्तों के संग्रहण से होती है, जिसके बाद कच्चा माल घरों में काम करने वाली महिलाओं तक पहुँचाया जाता है। ठेकेदार इस पूरी प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में काम करते हैं। अंततः, उत्पादक अपने ब्रांड के साथ माल बाजार में उतारते हैं, जो ग्रामीण और शहरी बाजारों को जोड़ता है।

71. (D) (A) और (B) दोनों।
मुंबई की कपड़ा मिलों के बंद होने के बाद बेरोजगार हुए हजारों कामगारों को आजीविका के लिए संघर्ष करना पड़ा। इनमें से कई मजदूर वापस अपने गाँवों की ओर चले गए और कृषि कार्य में लग गए। वहीं, एक बड़ा हिस्सा भिवंडी और मालेगाँव जैसे छोटे शहरों में स्थानांतरित हो गया जहाँ वे बिजली करघों (पावरलूम) पर काम करने लगे। यह स्थानांतरण औद्योगिक गिरावट के समय श्रमिकों की विवशता और लचीलेपन दोनों को दर्शाता है।

72. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
औद्योगिक संबंधों में हड़ताल श्रमिकों का विरोध करने का तरीका है, जबकि तालाबंदी प्रबंधन द्वारा काम रोकने का कदम है। बदली कामगार वे होते हैं जो अन्य श्रमिकों की अनुपस्थिति में काम करते हैं, जिससे उत्पादन न रुके। विनिवेश सरकार की वह नीति है जिसमें वह सार्वजनिक संपत्ति का हिस्सा निजी हाथों में सौंपती है। ये सभी शब्द औद्योगिक समाज की कार्यप्रणाली और उसमें होने वाले विवादों व परिवर्तनों को स्पष्ट करते हैं।

73. (C) इसमें ऊर्जा और लगातार टकटकी की आवश्यकता होती है।
पारंपरिक बुनकर अपने कार्य को अत्यधिक चुनौतीपूर्ण मानते हैं क्योंकि बुनाई की प्रक्रिया में गहरी एकाग्रता और शारीरिक ऊर्जा की आवश्यकता होती है। धागों के बारीक तालमेल को सही रखने के लिए उन्हें लगातार टकटकी लगाकर देखना पड़ता है। यह कार्य न केवल कौशल की माँग करता है, बल्कि यह आँखों और शरीर के लिए भी काफी थकाऊ होता है, जो मशीनी उत्पादन की तुलना में अधिक व्यक्तिगत समर्पण चाहता है।

74. (A) इन्हें लंबे समय बाद भी स्थायी सुरक्षा नहीं मिलती।
बदली कामगारों की सबसे बड़ी चुनौती उनकी नौकरी की अनिश्चितता है। भले ही वे किसी संस्थान में वर्षों से काम कर रहे हों, उन्हें स्थायी कर्मचारियों की तरह वेतन वृद्धि, भविष्य निधि या नौकरी की सुरक्षा नहीं मिलती। वे हमेशा इस डर में रहते हैं कि स्थायी कर्मचारी के वापस आने पर उन्हें काम से हटा दिया जाएगा। यह भेद संगठित क्षेत्र के भीतर ही एक असुरक्षित और कम विशेषाधिकार प्राप्त कार्यबल का निर्माण करता है।

75. (D) औद्योगीकरण से 'अलगाव' पैदा होता है क्योंकि कार्य दोहराने वाला और थकाने वाला होता है।
कार्ल मार्क्स ने औद्योगीकरण की आलोचना करते हुए कहा था कि यह श्रमिकों में 'अलगाव' पैदा करता है। आधुनिक कारखानों में कार्य को अत्यंत छोटे और दोहराव वाले हिस्सों में बाँट दिया जाता है, जिससे श्रमिक का अपने उत्पाद से कोई भावनात्मक जुड़ाव नहीं रहता। यह नीरसता श्रमिकों को मानसिक रूप से थका देती है और उन्हें अपनी रचनात्मक क्षमताओं का उपयोग करने से रोकती है, जिससे वे स्वयं को एक बेजान मशीन का हिस्सा समझने लगते हैं।

76. (B) यहाँ संगठित क्षेत्र की तुलना में असंगठित क्षेत्र बहुत बड़ा है।
भारतीय औद्योगीकरण की एक अनूठी विशेषता यह है कि यहाँ का विशाल कार्यबल असंगठित या अनौपचारिक क्षेत्र में कार्यरत है। विकसित देशों के विपरीत, जहाँ अधिकांश लोग सुरक्षित नौकरियों में हैं, भारत में नब्बे प्रतिशत से अधिक श्रमिक बिना किसी औपचारिक अनुबंध या सामाजिक सुरक्षा के काम करते हैं। यह स्थिति भारतीय श्रम बाजार की संवेदनशीलता और श्रमिकों की आर्थिक असुरक्षा को रेखांकित करती है, जो विकास के बावजूद एक बड़ी चुनौती बनी हुई है।

77. (C) लोगों को अपने काम का अंतिम रूप देखने को मिलता है।
औद्योगिक समाज में श्रम के अत्यधिक विभाजन के कारण श्रमिकों को अक्सर अपने द्वारा किए गए कार्य का अंतिम परिणाम देखने को नहीं मिलता। वे उत्पादन के केवल एक छोटे से हिस्से में शामिल होते हैं, जिससे उनका उत्पाद के साथ कोई सीधा संबंध नहीं रह जाता। यह स्थिति पारंपरिक कारीगरी के ठीक उलट है, जहाँ एक व्यक्ति शुरु से अंत तक वस्तु का निर्माण करता था और उसे पूर्ण संतुष्टि प्राप्त होती थी।

78. (A) 1, 2, 3, 4
भारतीय औद्योगिक इतिहास में महत्वपूर्ण घटनाओं का एक निश्चित क्रम रहा है। इसकी शुरुआत 1982 की ऐतिहासिक मुंबई टेक्सटाइल मिल हड़ताल से हुई, जिसने श्रमिक आंदोलनों को नई दिशा दी। इसके बाद 1990 के दशक में उदारीकरण की नीति आई, फिर मॉडर्न फूड जैसी कंपनियों का विनिवेश हुआ। हाल के वर्षों में 'मेक इन इंडिया' जैसे कार्यक्रमों ने घरेलू विनिर्माण को बढ़ावा देकर अर्थव्यवस्था को आधुनिक बनाने का लक्ष्य रखा है।

79. (A) वहाँ भारत के सभी भागों के लोग एक साथ काम करते हैं।
भिलाई स्टील प्लांट जैसे औद्योगिक केंद्रों में सांप्रदायिक सद्भाव का मुख्य कारण वहां की विविध कार्य संस्कृति है। यहाँ देश के विभिन्न प्रांतों, धर्मों और भाषाओं के लोग एक छत के नीचे काम करते हैं। कार्यस्थल पर साझा लक्ष्य और एक-दूसरे पर निर्भरता संकीर्ण भेदभाव को कम करती है। यह समावेशी वातावरण सामाजिक एकीकरण को बढ़ावा देता है और विभिन्न समुदायों के बीच आपसी समझ और सम्मान को मजबूत करता है।

80. (B) (D) (A) और (B) दोनों।
आउटसोर्सिंग या बाह्य स्रोतों से काम करवाना कंपनियों के लिए आर्थिक रूप से अत्यधिक लाभदायक होता है। इससे उत्पादन की लागत कम हो जाती है क्योंकि कार्य को कम वेतन वाले क्षेत्रों या छोटे संस्थानों को सौंप दिया जाता है। साथ ही, विशेषज्ञ संस्थाओं को काम देने से गुणवत्ता बनी रहती है और निर्धारित समय-सीमा के भीतर काम पूरा होना सुनिश्चित होता है। यह आधुनिक व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा में बने रहने का एक सशक्त माध्यम है।

81. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
उदारीकरण के बाद कई भारतीय ब्रांडों को बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने अधिग्रहित कर लिया क्योंकि विदेशी कंपनियों के पास विशाल वित्तीय संसाधन और आधुनिक विपणन रणनीतियाँ थीं। उनके भारी विज्ञापन बजट ने उन्हें स्थानीय बाजारों पर हावी होने में मदद की। स्थानीय कंपनियां अक्सर इन वैश्विक दिग्गजों की मार्केटिंग शक्ति का मुकाबला नहीं कर पाती थीं, जिससे उन्हें अपने व्यवसायों को बेचना पड़ा या उनके साथ विलय करना पड़ा।

82. (A) कर्मचारी को तब तक कार्य करना पड़ता है जब तक कि हाथ में लिया हुआ कार्य समाप्त न हो जाए।
आई.टी. क्षेत्र में 'फ्लैक्सी-टाइम' शब्द का प्रयोग अक्सर लचीलेपन के नाम पर किया जाता है, लेकिन व्यवहार में इसका मतलब यह होता है कि काम पूरा होने तक कर्मचारी को रुकना पड़ेगा। कार्य के घंटों की कोई निश्चित सीमा नहीं होती, जो अक्सर कर्मचारियों के निजी जीवन और स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है। यह आधुनिक कार्य संस्कृति के उस दबाव को दर्शाता है जहाँ प्रोजेक्ट की समय-सीमा मानवीय घंटों से अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है।

83. (C) 1, 2, और 3
विकसित देशों में कार्यबल का बड़ा हिस्सा औपचारिक वेतनभोगी नौकरियों में होता है और कृषि पर निर्भरता बहुत कम होती है। इसके विपरीत, भारत में अब भी तिरालीस प्रतिशत लोग प्राथमिक क्षेत्र में हैं। यह अंतर दर्शाता है कि भारत की रोजगार संरचना अब भी विकास की प्रक्रिया में है और यहाँ का बड़ा हिस्सा उन क्षेत्रों में लगा है जहाँ आय अपेक्षाकृत कम और अनिश्चित है।

84. (D) कर्मचारी की इच्छा के विरुद्ध उसे नौकरी से निकालना।
'जबरन सेवामुक्ति' वह स्थिति है जहाँ नियोक्ता किसी कर्मचारी को उसकी सहमति के बिना नौकरी से हटा देता है। यह अक्सर कंपनी के घाटे, विनिवेश या पुनर्गठन के दौरान होता है। इस प्रक्रिया में कर्मचारी की वित्तीय सुरक्षा और भविष्य की योजनाएं अचानक संकट में पड़ जाती हैं। यह औद्योगिक क्षेत्र में रोजगार की अनिश्चितता और श्रमिकों के अधिकारों की संवेदनशीलता को उजागर करने वाला एक गंभीर पहलू है।

85. (C) अग्रिम दिहाड़ी
असंगठित क्षेत्र की ठेकेदारी व्यवस्था में, काम शुरु होने से पहले मजदूरों को दिया गया पैसा उनकी 'अग्रिम दिहाड़ी' माना जाता है। ठेकेदार इस राशि को मजदूरों को अपने साथ बांधे रखने के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग करते हैं। मजदूर इस कर्ज को चुकाने के लिए तब तक काम करने को मजबूर होते हैं जब तक कि पूरी राशि वसूल न हो जाए, जो उन्हें एक प्रकार की आर्थिक पराधीनता में रखता है।

86. (A) P-4, Q-1, R-2, S-3
औद्योगिक समाज के विभिन्न पहलुओं का गहरा संबंध है। मार्क्स के अनुसार औद्योगिक श्रम 'अलगाव' पैदा करता है, जबकि

खदानों में काम करने वालों को 'सिलिकोसिस' का खतरा रहता है। प्रवासी कामगार अक्सर नए शहरों में 'अकेलापन' महसूस करते हैं। इसी प्रकार, मुंबई की कपड़ा मिलों जैसी बड़ी हड़तालों के बाद हजारों मजदूरों को 'बेरोजगारी' का दंश झेलना पड़ा। ये सभी बिंदु कार्य और उसके सामाजिक-शारीरिक प्रभावों को दर्शाते हैं।

87. (D) इसमें सुरक्षा के बिना 'बदली कामगार' कार्य करते हैं।
संगठित क्षेत्र में भी अब अनुबंधित कार्य की प्रवृत्ति बढ़ रही है, जहाँ 'बदली कामगारों' को बिना किसी स्थायी सुरक्षा के रखा जाता है। ये श्रमिक नियमित कर्मचारियों के समान ही कार्य करते हैं, लेकिन उन्हें वह कानूनी संरक्षण और सामाजिक लाभ नहीं मिलते जो स्थायी पदों के साथ आते हैं। यह स्थिति दर्शाती है कि औपचारिक क्षेत्रों के भीतर भी श्रम का अनौपचारिकरण हो रहा है, जिससे कामगारों की असुरक्षा बढ़ी है।

88. (A) वे अकेलेपन और असुरक्षा की तरफ जा रहे हैं।
भूमंडलीकरण की तीव्र आर्थिक व्यवस्था में काम करने वाले लोगों के पास सामाजिक जीवन और परिवार के लिए समय की निरंतर कमी होती जा रही है। काम के बढ़ते घंटे और कड़ी प्रतिस्पर्धा उन्हें मानसिक तनाव और अकेलेपन की ओर धकेल रही है। साथ ही, भविष्य की आर्थिक अनिश्चितता उनके भीतर असुरक्षा की भावना पैदा करती है, जिससे पारंपरिक सामुदायिक संबंध कमजोर हो रहे हैं और व्यक्ति एकाकी होता जा रहा है।

89. (C) अलगाव - कार्य से प्रसन्न न होना
'अलगाव' केवल कार्य से अप्रसन्न होना नहीं है, बल्कि यह एक गहरी समाजशास्त्रीय अवस्था है जहाँ व्यक्ति अपनी रचनात्मकता और उत्पाद की प्रक्रिया से पूरी तरह कट जाता है। मार्क्स के अनुसार, यह श्रमिक का अपने मानवीय स्वरूप से विमुख होना है। शेष विकल्प जैसे विनिवेश, हड़ताल और तालाबंदी औद्योगिक और सरकारी नीतियों व क्रियाकलापों को सही ढंग से परिभाषित करते हैं, जो श्रम संबंधों को प्रभावित करते हैं।

90. (A) कृषि का हिस्सा सबसे बड़ा था।
वर्ष 2018-19 के आंकड़ों के अनुसार, भारत में रोजगार का सबसे बड़ा हिस्सा अब भी कृषि क्षेत्र से ही आता है। भले ही अन्य क्षेत्रों का योगदान बढ़ रहा है, लेकिन आजीविका के लिए देश की आधी से अधिक जनसंख्या किसी न किसी रूप में खेती और उससे जुड़ी गतिविधियों पर निर्भर है। यह स्थिति भारतीय अर्थव्यवस्था के ग्रामीण आधार और औद्योगिक परिवर्तन की धीमी गति को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

91. (D) हैरी ब्रेवरमैन
हैरी ब्रेवरमैन ने अपनी प्रसिद्ध थ्योरी में बताया कि आधुनिक उद्योगों में मशीनों का बढ़ता उपयोग वास्तव में कामगारों की दक्षता को कम करता है। इसे 'अकौशलन' कहा जाता है, जहाँ जटिल कार्यों को मशीनों के लिए सरल बना दिया जाता है। इस प्रक्रिया में श्रमिक की अपनी सूझबूझ और हुनर का महत्व कम हो जाता है, जिससे वह केवल एक यांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा बनकर रह जाता है और उसकी स्वायत्तता छिन जाती है।

92. (B) (C) (A) और (B) दोनों।
आई.टी. क्षेत्र में कर्मचारियों का ऑफिस में देर तक रुकना केवल काम के दबाव के कारण नहीं होता। कई बार वे अपने साथियों की देखा-देखी या प्रबंधन को अपनी कड़ी मेहनत दिखाने के उद्देश्य से भी रुकते हैं। यह एक ऐसी कॉर्पोरेट संस्कृति को जन्म देता है जहाँ लंबे समय तक काम करना वफादारी और समर्पण का पैमाना मान लिया जाता है, भले ही उस समय की वास्तविक आवश्यकता न हो।

93. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
बंधुआ मजदूर और औद्योगिक अनियत कामगार दोनों ही आर्थिक तंगी और कर्ज का सामना करते हैं। औद्योगिक समाज में अनियत कामगार के पास अनुबंध खत्म होने पर नियोक्ता बदलने की सैद्धांतिक स्वतंत्रता होती है, जो उसे पारंपरिक बंधुआ मजदूरी से अलग करती है। हालाँकि, दोनों ही स्थितियों में श्रमिकों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती है, लेकिन उनकी कार्य संबंधी स्वतंत्रता और सामाजिक संरचना के आधार अलग-अलग होते हैं।

94. (D) वह कच्चा माल देता है और तैयार माल ले जाता है।
घर पर आधारित उद्योगों में 'एजेंट' या प्रतिनिधि की भूमिका एक कड़ी के समान होती है। वह मुख्य नियोक्ता या कंपनी की ओर से श्रमिकों को कच्चा माल वितरित करता है और तैयार माल इकट्ठा करता है। यह व्यवस्था कंपनी को बिना किसी बड़े कारखाने के उत्पादन करने में मदद करती है। एजेंट यह सुनिश्चित करता है कि काम समय पर पूरा हो, जिससे कंपनी और घरेलू कामगारों के बीच व्यावसायिक संबंध बना रहे।

95. (B) केवल 2, 3 और 4
आधुनिक रोजगार में श्रमिक संघों और प्रबंधन की भर्ती में भूमिका महत्वपूर्ण हो गई है। कई श्रमिक चाहते हैं कि उनकी सेवानिवृत्ति के बाद उनके बच्चों को वही काम मिल जाए, जो भविष्य की सुरक्षा की भावना को दर्शाता है। साथ ही, संगठित क्षेत्र में 'बदली कामगार' जैसे अनुबंधित कार्यों का प्रचलन बढ़ गया है। ये सभी कारक बदलते हुए औद्योगिक परिदृश्य और रोजगार के प्रति लोगों के दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हैं।

96. (B) जिस क्षेत्र में लोग ज़्यादा कार्यरत हैं, वह उन्हें अधिक आमदनी देने में सक्षम नहीं है।
भारत में कृषि क्षेत्र की सबसे बड़ी विडंबना यह है कि यह देश के सबसे बड़े कार्यबल को समाहित करता है, लेकिन कुल आय में इसका योगदान तुलनात्मक रूप से कम है। इसके कारण इस क्षेत्र पर आश्रित लोगों की आर्थिक स्थिति संतोषजनक नहीं रह पाती। यह असंतुलन ग्रामीण गरीबी का एक मुख्य कारण है, जहाँ अधिक लोग होने के बावजूद संसाधनों और आय का समान वितरण नहीं हो पाता है।

97. (B) लोग अपने या जान-पहचान के भूस्वामियों के खेतों में काम करते हैं।
औद्योगीकरण से पहले का कार्य मुख्य रूप से कृषि और स्थानीय शिल्प पर आधारित था, जहाँ संबंध व्यक्तिगत और सामुदायिक होते थे। लोग या तो अपनी भूमि पर खेती करते थे या फिर उन्हीं भूस्वामियों के यहाँ काम करते थे जिन्हें वे व्यक्तिगत रूप से जानते थे। यह व्यवस्था सामाजिक बंधनों और पारंपरिक रीति-रिवाजों से बंधी हुई थी, जिसमें आधुनिक कारखानों जैसी औपचारिकता और अज्ञात व्यावसायिक संबंधों का अभाव था।

98. (A) उपरोक्त सभी।
मुंबई जैसे महानगर में जीवनशैली का विभाजन कई भौतिक और सामाजिक कारकों पर आधारित है। लोगों के रहने का स्थान, उनके भोजन की पसंद और उनके पहनावे की कीमत उनकी आर्थिक स्थिति और सामाजिक वर्ग को दर्शाती है। यह शहर एक तरफ अत्यधिक विलासिता तो दूसरी तरफ बुनियादी सुविधाओं के अभाव को साथ लेकर चलता है, जहाँ कार्य और आय के आधार पर समाज के विभिन्न स्तर निर्मित होते हैं।

99. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
औद्योगिक समाज को समझने के लिए विभिन्न विद्वानों ने महत्वपूर्ण कार्य किए हैं। हैरी ब्रेवरमैन ने मशीनीकरण के कारण दक्षता में कमी पर शोध किया, जबकि दत्ता सामंत ने मुंबई की मिल हड़ताल का नेतृत्व किया। केरोल उपाध्या ने आई.टी. क्षेत्र की कार्य संस्कृति का अध्ययन किया और चित्रा जोशी ने भारतीय श्रमिकों के जीवन और उनकी कहानियों को अपनी लेखनी के माध्यम से दुनिया के सामने प्रस्तुत किया है।

100. (D) महात्मा गाँधी
महात्मा गाँधी का यह प्रसिद्ध कथन उनके आर्थिक और सामाजिक न्याय के प्रति दृष्टिकोण को दर्शाता है। वे संपत्ति के कुछ हाथों में केंद्रीकरण के घोर विरोधी थे और चाहते थे कि संसाधनों का वितरण न्यायपूर्ण हो ताकि समाज के हर व्यक्ति को उसका लाभ मिल सके। उनका यह विचार स्वावलंबन और विकेंद्रीकृत अर्थव्यवस्था पर आधारित था, जहाँ उत्पादन का उद्देश्य केवल लाभ कमाना नहीं बल्कि जन-कल्याण होना चाहिए।

101. (C) बिना वेतन के रहना।
हड़ताल के दौरान कामगारों के लिए सबसे बड़ी चुनौती बिना किसी आय या वेतन के अपना और अपने परिवार का गुजारा करना होता है। काम बंद होने के कारण उनकी आर्थिक स्थिति तेजी से बिगड़ने लगती है, जिससे वे मानसिक और सामाजिक दबाव में आ जाते हैं। यही वह समय होता है जब उनकी एकता और धैर्य की कड़ी परीक्षा होती है, क्योंकि प्रबंधन अक्सर इस कमजोरी का लाभ उठाता है।

102. (B) वे एक जैसी फिल्में और क्रिकेट मैच देखते हैं।
मुंबई जैसे विविधताओं वाले शहर में फिल्में और क्रिकेट जैसी लोकप्रिय संस्कृतियाँ लोगों को जोड़ने का काम करती हैं। भले ही लोगों की आय और रहने के स्थान अलग हों, लेकिन ये मनोरंजन के साधन एक साझा अनुभव और पहचान प्रदान करते हैं। यह सांस्कृतिक एकता सामाजिक दूरियों को कुछ हद तक कम करने में मदद करती है और शहर के सामूहिक जीवन में एकरूपता लाने का प्रयास करती है।

103. (A) केवल 1, 2 और 3
स्वरोजगार में संलग्न लोग जैसे बढ़ई या प्लम्बर अपने काम के लिए पूरी तरह व्यक्तिगत संपर्कों पर निर्भर होते हैं। मोबाइल फोन ने उनके लिए ग्राहकों से जुड़ना और काम प्राप्त करना बहुत आसान बना दिया है। उनकी आय और कार्य के घंटे निश्चित नहीं होते, जो उन्हें एक ओर लचीलापन देते हैं तो दूसरी ओर आर्थिक अनिश्चितता भी प्रदान करते हैं। यह आधुनिक स्वरोजगार का एक महत्वपूर्ण डिजिटल स्वरुप है।

104. (A) बहुदेशीय खुदरा कंपनियों के आने से स्थानीय दुकानों को प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ सकता है।
उदारीकरण के कारण विदेशी खुदरा कंपनियों का भारतीय बाजार में प्रवेश स्थानीय किराना दुकानों और छोटे व्यापारियों के लिए एक बड़ी चुनौती है। ये बड़ी कंपनियां आधुनिक तकनीक और भारी पूंजी के बल पर कम कीमतों पर सामान उपलब्ध कराती हैं, जिससे स्थानीय दुकानदारों के लिए प्रतिस्पर्धा करना कठिन हो जाता है। इससे खुदरा व्यापार के पारंपरिक ढांचे और लाखों लोगों की आजीविका पर व्यापक प्रभाव पड़ने की संभावना रहती है।

105. (C) उनकी नौकरी चले जाने का।
विनिवेश की प्रक्रिया में सरकारी संपत्तियों का निजीकरण होता है, जिससे कर्मचारियों में अपनी नौकरी खोने का डर पैदा होता है। निजी प्रबंधन अक्सर खर्च कम करने और मुनाफा बढ़ाने के लिए छंटनी का सहारा लेता है। सरकारी कर्मचारियों के लिए सुरक्षित नौकरी एक बड़ा सहारा होती है, इसलिए विनिवेश का विचार उनके बीच असुरक्षा और विरोध की भावना को जन्म देता है, जो एक सामाजिक चिंता का विषय है।

106. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
आधुनिक उद्योगों में स्वचालन के कारण कम लोगों की आवश्यकता होती है, जिससे रोजगार के अवसर सीमित हो जाते हैं। साथ ही, जो लोग वहाँ काम करते हैं, उन्हें मशीनों की तीव्र गति के अनुसार स्वयं को ढालना पड़ता है, जो अत्यधिक थकाऊ होता है। ये दोनों तथ्य औद्योगिक कार्य की कठिन वास्तविकताओं को दर्शाते हैं, जहाँ तकनीक उत्पादकता तो बढ़ाती है लेकिन श्रमिकों पर मानसिक और शारीरिक बोझ भी बढ़ाती है।

107. (B) दुकानें और रेस्तरां देरी से खुलने लगे हैं।
आई.टी. हब और कॉल सेंटरों के उदय ने शहरों के सामाजिक जीवन को बदल दिया है। रात की पाली में काम करने वाले हजारों कर्मचारियों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अब दुकानें और रेस्तरां देर रात तक या चौबीसों घंटे खुले रहते हैं। इस बदलाव ने शहर की 'नाइटलाइफ़' को नया स्वरूप दिया है और सेवा क्षेत्र में नए प्रकार के व्यावसायिक अवसरों को जन्म दिया है, जिससे शहरी अर्थव्यवस्था गतिशील हुई है।

स्वरुप और आर्थिक प्राथमिकताओं के बीच के गहरे तनाव को दर्शाता है।

150. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में सुरक्षित और अच्छी नौकरियों की अत्यधिक कमी है, जिसके कारण सरकारी पदों के लिए बहुत अधिक प्रतिस्पर्धा होती है। अधिकांश सुरक्षित नौकरियां सरकार के पास ही हैं, जो पेंशन और अन्य सुविधाओं की गारंटी देती हैं। लोग इसीलिए सरकारी नौकरी के लिए बरसों मेहनत करते हैं ताकि वे असंगठित क्षेत्र की असुरक्षा और अनिश्चितता से बच सकें। यह स्थिति भारतीय श्रम बाजार की संकुचित औपचारिक संरचना को प्रकट करती है।

151. (B) एक गहरी मनोवैज्ञानिक और सामाजिक स्थिति
मार्क्स के अनुसार, अलगाव केवल आर्थिक शोषण का मामला नहीं है। यह एक ऐसी स्थिति है जहाँ श्रमिक स्वयं को अपनी मानवीय प्रकृति और समाज से कटा हुआ महसूस करता है। यह अवधारणा पूंजीवादी व्यवस्था के भीतर व्यक्ति की मानसिक स्थिति और सामाजिक संबंधों के विखंडन को रेखांकित करती है, जहाँ कार्य केवल एक यांत्रिक प्रक्रिया बनकर रह जाता है।

152. (A) क्योंकि उत्पाद उसका नहीं रहता, बल्कि पूंजीपति के लाभ का स्रोत बन जाती है।
पूंजीवादी उत्पादन प्रणाली में, श्रमिक जिस वस्तु का निर्माण करता है, उस पर उसका कोई अधिकार नहीं होता। वह उत्पाद तुरंत पूंजीपति की संपत्ति बन जाता है और बाजार में लाभ कमाने के लिए बेचा जाता है। यह प्रक्रिया श्रमिक को उसके स्वयं के श्रम के परिणाम से वंचित कर देती है, जिससे उत्पाद उसके लिए एक बाहरी वस्तु बन जाता है।

153. (C) श्रम का एक रचनात्मक गतिविधि के बजाय एक अमानवीय और निरर्थक कार्य बन जाना।
मनुष्य स्वाभाविक रूप से एक सचेत और रचनात्मक प्राणी है, और श्रम उसकी इस रचनात्मकता की अभिव्यक्ति होनी चाहिए। हालाँकि, पूंजीवाद में श्रम केवल जीवित रहने का साधन मात्र रह जाता है। जब कार्य अपनी सृजनात्मकता खो देता है और एक उबाऊ गतिविधि बन जाता है, तो व्यक्ति अपनी वास्तविक मानवीय प्रकृति या प्रजाति-सार से पूरी तरह अलग हो जाता है।

154. (D) यह सहयोग के बजाय शत्रुता और उदासीनता को बढ़ावा देता है।
कार्यस्थल की प्रतिस्पर्धी प्रकृति और पदानुक्रमित संरचना श्रमिकों के बीच स्वाभाविक सहयोग को समाप्त कर देती है। एक-दूसरे को साथियों के रूप में देखने के बजाय, श्रमिक प्रतिस्पर्धी बन जाते हैं। यह स्थिति सामाजिक संबंधों में शत्रुता और उदासीनता पैदा करती है, जिससे समाज में विखंडन होता है। सामूहिक भाईचारे का स्थान व्यक्तिगत स्वार्थ और अलगाव की भावना ले लेती है।

155. (C) केवल कारखानों में ही नहीं, बल्कि आधुनिक कॉर्पोरेट कार्यालयों और सेवा क्षेत्र में भी
अलगाव की अवधारणा केवल पारंपरिक कारखानों तक सीमित नहीं है। आधुनिक युग में, यह कॉर्पोरेट कार्यालयों और सेवा क्षेत्र के भीतर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। जहाँ भी मानकीकृत प्रक्रियाएँ, कड़े प्रदर्शन लक्ष्य और व्यक्तिगत स्वायत्तता का अभाव होता है, वहां कर्मचारी अपनी रचनात्मकता खो देते हैं। इस प्रकार, यह आधुनिक कार्यबल के विभिन्न स्तरों पर व्यापक रूप से लागू होती है।

156. (B) रोजगार की अनिश्चित प्रकृति और सुरक्षा लाभों का अभाव
असंगठित क्षेत्र की पहचान मुख्य रूप से रोजगार की असुरक्षा और वैधानिक लाभों की अनुपस्थिति से होती है। यहाँ काम करने वाले श्रमिकों को भविष्य निधि, पेंशन या स्वास्थ्य बीमा जैसी सामाजिक सुरक्षा नहीं मिलती है। रोजगार की शर्तें प्रायः अनिश्चित होती हैं और नियोक्ता किसी भी समय बिना पूर्व सूचना के श्रमिक को काम से निकाल सकता है, जिससे अत्यधिक अस्थिरता बनी रहती है।

157. (D) वे श्रमिकों और नियोक्ताओं के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करते हैं, लेकिन शोषण भी कर सकते हैं।
असंगठित क्षेत्र में मध्यस्थ या ठेकेदार एक महत्वपूर्ण कड़ी के रूप में कार्य करते हैं, जो श्रमिकों को मुख्य नियोक्ताओं तक पहुँचाते हैं। यद्यपि वे रोजगार दिलाने में मदद करते हैं, लेकिन वे अक्सर श्रमिकों की मजदूरी का एक हिस्सा कमीशन के रूप में काटकर उनका शोषण भी करते हैं। यह प्रणाली जवाबदेही को कम करती है और श्रमिकों को कानूनी सुरक्षा से वंचित रखती है।

158. (A) सूचना प्रौद्योगिकी (आईटी) सेवाएँ
निर्माण, कृषि और घरेलू सेवाओं जैसे क्षेत्रों में असंगठित श्रम का व्यापक उपयोग होता है। इसके विपरीत, सूचना प्रौद्योगिकी या आईटी सेवाएँ मुख्य रूप से संगठित क्षेत्र का हिस्सा हैं। यहाँ रोजगार औपचारिक अनुबंधों, उच्च कौशल आवश्यकताओं और व्यवस्थित वेतन ढाँचे पर आधारित होता है। इसलिए, आईटी सेवाओं को आमतौर पर असंगठित श्रम पर निर्भर क्षेत्रों की श्रेणी में नहीं रखा जाता है।

159. (C) लिखित अनुबंधों के बिना मौखिक समझौतों पर
असंगठित क्षेत्र में अधिकांश रोजगार संबंध लिखित दस्तावेजों या औपचारिक अनुबंधों के बजाय मौखिक समझौतों पर टिके होते हैं। लिखित प्रमाण की कमी के कारण, श्रमिकों के पास कानूनी विवादों के समय कोई ठोस आधार नहीं होता है। यह स्थिति नियोक्ताओं को मनमानी करने की छूट देती है और श्रमिकों को उनके न्यूनतम अधिकारों और उचित मजदूरी से वंचित करने का मार्ग प्रशस्त करती है।

160. (A) आर्थिक विकास के लाभों का असमान वितरण
भारतीय अर्थव्यवस्था में असंगठित क्षेत्र की भारी उपस्थिति यह दर्शाती है कि आर्थिक विकास के लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँचे हैं। यह संरचनात्मक चुनौती इंगित करती है कि एक बड़े कार्यबल के पास आज भी बुनियादी

119. (A) केवल 3
वर्ष 2018-19 के भारतीय रोजगार आंकड़ों के अनुसार खदान और खनन में कार्यरत लोगों का प्रतिशत बहुत कम था, जो दिए गए 4 प्रतिशत के आंकड़े से मेल नहीं खाता। शेष आंकड़े जैसे कृषि में सर्वाधिक सहभागिता और अन्य सेवा क्षेत्रों का हिस्सा भारतीय अर्थव्यवस्था की वास्तविक स्थिति को सही ढंग से दर्शाते हैं। सटीक सांख्यिकीय जानकारी श्रम बाजार के विश्लेषण और भविष्य की आर्थिक योजनाएं बनाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होती है।

120. (A) उपरोक्त सभी।
कनिष्ठ कलाकार संघ फिल्म उद्योग के उन कलाकारों का प्रतिनिधित्व करता है जो पर्दे के पीछे रहकर कड़ी मेहनत करते हैं। उनकी माँगें एक सम्मानजनक कार्य वातावरण सुनिश्चित करने पर केंद्रित हैं, जिसमें आठ घंटे की निश्चित पाली, उचित पारिश्रमिक और सुरक्षा के नियम शामिल हैं। ये माँगें इस क्षेत्र में व्याप्त अनिश्चितता और शोषण को कम करने और कलाकारों को एक गरिमापूर्ण आजीविका प्रदान करने की दिशा में एक आवश्यक कदम हैं।

121. (C) अनियत कामगार के रूप में
पूर्व में गाँवों में कर्ज के बोझ तले दबे बंधुआ मजदूर अब शहरों की ओर पलायन कर उद्योगों में अनियत या दैनिक मजदूर के रूप में काम करते हैं। हालाँकि वे अब कानूनी रूप से स्वतंत्र हैं, लेकिन उनकी आर्थिक स्थिति अब भी कमजोर बनी रहती है। उनके पास न तो स्थायी नौकरी होती है और न ही सामाजिक सुरक्षा। यह बदलाव दर्शाता है कि कैसे शोषण के पुराने स्वरूप आधुनिक अर्थव्यवस्था में नए रूपों में जीवित रहते हैं।

122. (A) नियमित कामगार (1972-73) - 15.4%
ऐतिहासिक रोजगार आंकड़ों के अनुसार 1972-73 में भारत में नियमित वेतनभोगी कामगारों का प्रतिशत मात्र पंद्रह दशमलव चार था। यह तथ्य इस बात की पुष्टि करता है कि उस समय भी भारतीय कार्यबल का एक बड़ा हिस्सा अनौपचारिक या स्वरोजगार में ही लगा हुआ था। समय के साथ इन श्रेणियों में बदलाव आए हैं, लेकिन नियमित और सुरक्षित नौकरियों की कमी भारतीय श्रम बाजार की एक दीर्घकालिक और चुनौतीपूर्ण विशेषता रही है।

123. (D) विस्थापन के बाद ये अल्प-वेतनभोगी मज़दूर बन गए।
सरकार की भूमि अधिग्रहण नीतियों के कारण विस्थापित हुए किसानों और विशेषकर आदिवासियों के जीवन पर अत्यंत नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। अपनी जमीन और पारंपरिक आजीविका खोने के बाद, उन्हें अक्सर उन्हीं उद्योगों में बहुत कम वेतन पर मजदूरी करनी पड़ती है। यह प्रक्रिया उन्हें आत्मनिर्भरता से हटाकर आर्थिक पराधीनता और गरीबी की ओर धकेल देती है, जिससे उनके सामाजिक और सांस्कृतिक ताने-बाने को भी गहरा नुकसान पहुँचता है।

124. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
सरकारी योजनाएं और नीतियां विभिन्न आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति करती हैं। मुद्रा योजना स्वरोजगार को बढ़ावा देती है, जबकि उदारीकरण निजी निवेश को प्रोत्साहित करता है। विनिवेश का उद्देश्य सार्वजनिक उपक्रमों में सरकारी हिस्सेदारी कम करना है और खदान अधिनियम कामगारों की सुरक्षा सुनिश्चित करता है। ये सभी उपाय सामूहिक रूप से देश की आर्थिक संरचना को आधुनिक बनाने और विभिन्न वर्गों के हितों की रक्षा करने का प्रयास करते हैं।

125. (C) सरकार द्वारा भूमि अधिग्रहण कर उद्योग लगाना
औद्योगिक विकास के लिए बड़े पैमाने पर भूमि अधिग्रहण और कारखानों की स्थापना अक्सर पर्यावरण के लिए हानिकारक सिद्ध होती है। इससे न केवल स्थानीय पारिस्थितिकी तंत्र प्रभावित होता है, बल्कि जबरदस्त वायु और जल प्रदूषण भी उत्पन्न होता है। यह विकास और पर्यावरण के बीच के द्वंद्व को उजागर करता है, जहाँ औद्योगिक प्रगति की भारी कीमत स्थानीय निवासियों और आने वाली पीढ़ियों को प्रदूषित वातावरण के रूप में चुकानी पड़ती है।

126. (D) 40 प्रतिशत
भारत में विकास परियोजनाओं के कारण विस्थापित होने वाले लोगों में आदिवासियों की संख्या आश्चर्यजनक रूप से अधिक है, जो कुल विस्थापितों का लगभग चालीस प्रतिशत है। यह तथ्य दर्शाता है कि औद्योगिक और ढांचागत विकास का सबसे बड़ा बोझ उन समुदायों पर पड़ता है जो जल, जंगल और जमीन पर निर्भर हैं। अपनी जड़ों से कटने के बाद ये समुदाय अक्सर अपनी पहचान और आर्थिक स्थिरता खो देते हैं, जो एक बड़ी चुनौती है।

127. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
यह सच है कि कई बदली कामगार एक ही कंपनी में कई वर्षों तक सेवा देते हैं, लेकिन उन्हें स्वतः ही स्थायी पद या सुरक्षा नहीं मिलती। प्रबंधन अक्सर उन्हें अनिश्चित काल तक अस्थायी बनाए रखता है ताकि उन्हें स्थायी कर्मचारियों को दिए जाने वाले लाभ न देने पड़ें। यह व्यवस्था श्रमिकों को निरंतर असुरक्षा में रखती है, जहाँ उनकी लंबी सेवा के बावजूद उन्हें कोई भविष्य की गारंटी प्राप्त नहीं होती है।

128. (B) लोग बुढ़ापे में अपने बच्चों पर आश्रित होने के लिए बाध्य हैं।
भारत में अधिकांश लोगों के पास सुरक्षित और पेंशन वाली नौकरियां नहीं हैं, जिसके कारण उनके पास बुढ़ापे के लिए कोई वित्तीय बचत नहीं होती। इस आर्थिक असुरक्षा के कारण वे अनिवार्य रूप से अपने बच्चों पर निर्भर हो जाते हैं। यह स्थिति न केवल बुजुर्गों की गरिमा को प्रभावित करती है, बल्कि अगली पीढ़ी पर भी अतिरिक्त आर्थिक बोझ डालती है, जो समाज में पारिवारिक निर्भरता को बढ़ाने का कारण बनती है।

129. (D) 1, 2, 3 और 4
मुंबई एक ऐसा महानगर है जो लाखों लोगों को रोजगार के अवसर देता है और उनके सपनों का केंद्र है। यहाँ समाज आर्थिक स्थिति के आधार पर विभाजित है, जहाँ लोगों की पहचान उनके काम और आय से होती है। हालाँकि, इन विभाजनों के बावजूद फिल्में और अन्य सांस्कृतिक गतिविधियां लोगों में एक साझा

जुड़ाव पैदा करती हैं। यह शहर की जटिल और बहुआयामी सामाजिक संरचना को पूरी तरह स्पष्ट करता है।

130. (A) भारत के युवाओं को
'जनांकिकीय डिविडेंड' या जनसांख्यिकीय लाभांश शब्द भारत की विशाल युवा कार्यशील जनसंख्या के संदर्भ में प्रयोग किया जाता है। माना जाता है कि यदि इस युवा वर्ग को उचित शिक्षा, कौशल और रोजगार प्रदान किया जाए, तो वे देश की आर्थिक विकास दर को तेजी से बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यह भारत के लिए एक बड़ा अवसर है, जिसे सही नीतियों के माध्यम से राष्ट्र की उन्नति में बदला जा सकता है।

131. (C) औद्योगीकरण के बाद, भारत में सामाजिक असमानताएँ पूरी तरह से समाप्त हो गई हैं।
यह सोचना गलत है कि औद्योगीकरण ने भारत से सामाजिक असमानताओं को पूरी तरह खत्म कर दिया है। हालाँकि इसने कुछ पुराने भेदभावों को कम किया है, लेकिन जाति और लिंग आधारित पूर्वाग्रह अब भी कार्यक्षेत्रों में मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त, आय की बढ़ती खाई ने समाज में नई आर्थिक असमानताएं पैदा कर दी हैं। सामाजिक न्याय की दिशा में प्रगति के बावजूद, एक पूर्णतः समान समाज का लक्ष्य अब भी काफी दूर है।

132. (D) निजी क्षेत्रों में
बाह्य स्रोतों से काम करवाने या आउटसोर्सिंग की प्रवृत्ति निजी क्षेत्र में सर्वाधिक देखी जाती है। निजी कंपनियां अपनी कार्यक्षमता बढ़ाने और लागत कम करने के लिए गैर-प्रमुख कार्यों को बाहरी एजेंसियों को सौंपना पसंद करती हैं। यह आधुनिक व्यावसायिक रणनीति उन्हें बाजार की बदलती माँगों के प्रति अधिक लचीला बनाती है। सूचना प्रौद्योगिकी से लेकर विनिर्माण तक, निजी क्षेत्र के लगभग हर हिस्से में अब इस पद्धति का व्यापक उपयोग हो रहा है।

133. (C) केवल 1, 2, 4 और 5
औद्योगीकरण ने समाज में व्यापक श्रम विभाजन और सार्वजनिक स्थानों पर समानता लाने का कार्य किया है। हालाँकि, इसने पुरानी असमानताओं को पूरी तरह खत्म नहीं किया है और नई आर्थिक विषमताएं पैदा की हैं। औद्योगिक कार्यों की प्रकृति ऐसी है कि श्रमिक अक्सर उत्पाद के अंतिम स्वरुप से अनभिज्ञ रहते हैं। ये सभी कारक आधुनिक औद्योगिक समाज की जटिलताओं और उसमें मौजूद विरोधाभासों को स्पष्ट रुप से उजागर करते हैं।

134. (B) अतिरिक्त मज़दूरों को बुलाने का प्रयास करना।
हड़ताल की स्थिति में व्यवस्थापक का प्राथमिक प्रयास उत्पादन को जारी रखना होता है। इसके लिए वे अक्सर हड़ताल न करने वाले श्रमिकों या बाहर से बुलाए गए अतिरिक्त मजदूरों का उपयोग करते हैं। यह कदम हड़ताली कामगारों के मनोबल को तोड़ने और उनके सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति को कम करने के लिए उठाया जाता है। इससे प्रबंधन और श्रमिकों के बीच का संघर्ष और अधिक तीव्र एवं तनावपूर्ण हो जाता है।

135. (D) पाँच साल
1982 की मुंबई टेक्सटाइल मिल हड़ताल इतनी लंबी और प्रभावहीन रही कि मजदूरों का धैर्य जवाब दे गया। लगभग पाँच साल बीतने के बाद कामगारों ने धीरे-धीरे वापस काम पर लौटना शुरु किया या अन्य विकल्पों की तलाश की। इस लंबी अवधि ने मजदूरों की कमर तोड़ दी और मिल मालिकों को मिलें बंद करने का बहाना मिल गया। यह घटना श्रमिक आंदोलनों के इतिहास में एक दुखद अध्याय के रूप में याद की जाती है।

136. (B) P-4, Q-3, R-2, S-1
मुंबई की जीवनशैली में सुशी और वड़ा पाव जैसे खाद्य पदार्थ समाज के अलग-अलग वर्गों के खान-पान को दर्शाते हैं। रोजगार के क्षेत्र में 'बदली कामगार' अनुबंधित और अस्थाई कार्य का प्रतीक हैं, जहाँ सुरक्षा का अभाव होता है। वहीं 'जनांकिकीय डिविडेंड' भारत के युवा कार्यबल की उस क्षमता को दर्शाता है जो भविष्य के विकास का आधार है। ये विभिन्न तत्व मिलकर मुंबई की सामाजिक और आर्थिक विविधता को परिभाषित करते हैं।

137. (C) क्योंकि बड़ी कंपनियाँ बाह्य स्रोतों से काम करवाती हैं।
विकासशील देशों में बड़ी कंपनियाँ अक्सर लागत कम करने के लिए छोटे संस्थानों को आउटसोर्सिंग के जरिए काम देती हैं। इस कारण छोटी फर्मों के बीच काम पाने की होड़ लगी रहती है, जिससे उनमें आपसी प्रतिस्पर्धा बढ़ जाती है। इस प्रतिस्पर्धा का लाभ बड़ी कंपनियों को मिलता है क्योंकि उन्हें कम कीमत पर सेवाएँ प्राप्त होती हैं, लेकिन यह छोटी फर्मों के मजदूरों के वेतन और कार्यदशाओं पर नकारात्मक प्रभाव डालता है।

138. (A) अपने कार्य से आनंद या संतुष्टि का अभाव।
'अलगाव' की समाजशास्त्रीय अवधारणा उस मानसिक और भावनात्मक स्थिति को स्पष्ट करती है जहाँ व्यक्ति अपने काम को केवल एक मजबूरी मानता है। मशीनीकृत और नीरस कार्यों के कारण श्रमिकों में अपने काम के प्रति कोई रचनात्मक उत्साह या जुड़ाव नहीं रहता। जब कार्य से खुशी और संतुष्टि गायब हो जाती है, तो श्रमिक स्वयं को एक यांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा महसूस करने लगता है, जिससे उसका मानसिक स्वास्थ्य और कार्यक्षमता दोनों प्रभावित होते हैं।

139. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत की अर्थव्यवस्था में कृषि का स्थान अब भी बहुत महत्वपूर्ण है, जो इसे एक कृषि प्रधान देश बनाए रखता है। वर्ष 2018-19 के आंकड़ों के अनुसार देश का लगभग साढ़े बयालीस प्रतिशत कार्यबल खेती और संबंधित गतिविधियों में लगा हुआ है। यह अन्य किसी भी एकल क्षेत्र की तुलना में काफी बड़ी संख्या है, जो ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था और आजीविका के प्राथमिक आधार को मजबूती से रेखांकित करती है।

140. (B) जबरन सेवामुक्ति में कर्मचारी को निकाला जाता है, जबकि स्वैच्छिक अवकाश कर्मचारी स्वयं लेता है।
जबरन सेवामुक्ति नियोक्ता द्वारा लिया गया एक कठोर निर्णय है जहाँ कर्मचारी को उसकी इच्छा के विरुद्ध काम से हटा दिया

जाता है। इसके विपरीत, स्वैच्छिक अवकाश एक विकल्प है जिसे कर्मचारी अपनी मर्जी से चुनता है, अक्सर बेहतर वित्तीय पैकेज या निजी कारणों से। इन दोनों स्थितियों का कर्मचारी के भविष्य और मानसिक स्थिति पर अलग-अलग प्रभाव पड़ता है, जहाँ पहली स्थिति अनिश्चितता और दूसरी स्थिति स्वेच्छा को दर्शाती है।

141. (C) उन्हें स्थावर संपदा व्यापारियों को बहुमंजिली इमारतें बनाने के लिए बेचने का।
मुंबई के कपड़ा मिल मालिक अब मिलों को चलाने के बजाय उनकी जमीनों से बड़ा मुनाफा कमाने की जुगत में हैं। मिलों की जमीन को रियल एस्टेट डेवलपर्स को बेचकर वहां आलीशान मॉल और बहुमंजिली इमारतें बनाई जा रही हैं। यह प्रक्रिया मुंबई के ऐतिहासिक औद्योगिक चरित्र को बदलकर उसे एक आधुनिक व्यापारिक और आवासीय केंद्र में तब्दील कर रही है, जिससे पुराने मिल मजदूरों की संस्कृति और स्थान लुप्त हो रहे हैं।

142. (A) 4, 3, 1, 2
भारतीय औद्योगिक विकास की यात्रा महात्मा गाँधी के मशीनों पर शुरुआती विचारों से लेकर आज के उदारीकरण तक फैली है। खदान अधिनियम 1952 ने आजादी के बाद श्रमिकों की सुरक्षा के लिए कानूनी आधार तैयार किया। 1982 की मुंबई टेक्सटाइल हड़ताल ने श्रम संबंधों में आए बड़े संकट को दर्शाया, और 1990 के दशक की उदारीकरण की नीति ने भारतीय अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से वैश्विक प्रतिस्पर्धा और निजी निवेश के लिए खोल दिया।

143. (A) कामगारों को नियंत्रित रखना और उनसे अधिक काम करवाना।
आधुनिक औद्योगिक व्यवस्था में एक मैनेजर की प्राथमिक भूमिका कार्यबल की निगरानी और उत्पादकता को अधिकतम करना है। वे यह सुनिश्चित करते हैं कि कामगार निर्धारित समय और नियमों के भीतर काम करें ताकि कंपनी के लक्ष्य पूरे हों। यद्यपि मैनेजर प्रेरणा भी देते हैं, लेकिन उनका मुख्य उद्देश्य श्रम का कुशल प्रबंधन और नियंत्रण होता है, जो किसी भी प्रतिस्पर्धी व्यावसायिक संगठन के सफल संचालन के लिए अनिवार्य माना जाता है।

144. (B) पुरानी असमानताएँ (जैसे जाति) कम हो रही हैं लेकिन नई आर्थिक असमानताएँ उत्पन्न हो रही हैं।
आधुनिक औद्योगिक समाज में सामाजिक परिवर्तन का एक मिश्रित स्वरूप दिखाई देता है। शहरीकरण और कारखानों की कार्य संस्कृति ने जाति जैसे पुराने सामाजिक बंधनों को कुछ हद तक शिथिल किया है। हालाँकि, इसी समय आय और संपत्ति के आधार पर समाज में गहरी आर्थिक दूरियाँ बढ़ी हैं। यह स्थिति बताती है कि समाज में असमानता पूरी तरह खत्म नहीं हुई है, बल्कि उसने पारंपरिक रूप से बदलकर अब आर्थिक स्वरूप ले लिया है।

145. (B) नगरीय मध्यवर्ग की संख्या बढ़ रही है।
भारत में सेवा क्षेत्र के तेजी से बढ़ने का एक मुख्य कारण नगरीय मध्यवर्ग का निरंतर विस्तार है। इस वर्ग की बढ़ती आय और बदलती जीवनशैली ने बैंकिंग, खुदरा व्यापार, मनोरंजन और सूचना तकनीक जैसी सेवाओं की माँग को जबरदस्त बढ़ावा दिया है। सेवा क्षेत्र अब न केवल रोजगार का बड़ा स्रोत है, बल्कि यह आधुनिक भारत की बदलती हुई आर्थिक प्राथमिकताओं और नगरीय संस्कृति के विकास का भी एक सशक्त प्रतीक है।

146. (A) क्योंकि छोटी कंपनियाँ बड़ी कंपनियों से कार्य प्राप्त करने के लिए स्पर्धा करती हैं, जिससे संघ बनाना मुश्किल होता है।
छोटी फर्मों में श्रमिक संगठनों का अभाव अक्सर बड़ी कंपनियों के साथ उनके प्रतिस्पर्धी संबंधों के कारण होता है। ये कंपनियाँ बहुत कम मुनाफे पर काम करती हैं और लगातार काम पाने के दबाव में रहती हैं। ऐसे माहौल में किसी भी प्रकार का श्रमिक आंदोलन या संघ बनाना नियोक्ता के लिए जोखिम भरा हो सकता है। यह स्थिति श्रमिकों को कमजोर बनाती है और उन्हें सामूहिक रूप से अपनी माँगें रखने से रोकती है।

147. (A) केवल 5
यह कहना कि कार्ल मार्क्स और महात्मा गाँधी दोनों मशीनीकरण के पक्ष में थे, समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक रूप से गलत है। दोनों ने ही मशीनों के अनियंत्रित उपयोग और उससे उत्पन्न होने वाले मानवीय श्रम के विस्थापन व अलगाव के प्रति गहरी चिंता व्यक्त की थी। मैनेजरों द्वारा कामगारों पर नियंत्रण और मशीनों द्वारा श्रमिकों का स्थान लेना आधुनिक उत्पादन के वास्तविक पहलू हैं, जिनसे ये दोनों ही विचारक असहमत थे और वैकल्पिक समाधान सुझाते थे।

148. (D) घर से काम (work from home) में अक्सर संगठित क्षेत्र के कर्मचारी डिजिटल माध्यम से काम करते हैं, जबकि घर पर काम (work at home) में असंगधति क्षेत्र के श्रमिक भौतिक उत्पाद बनाते हैं।
'घर से काम' और 'घर पर काम' दो अलग-अलग सामाजिक और आर्थिक स्थितियों को दर्शाते हैं। 'वर्क फ्रॉम होम' आधुनिक कॉर्पोरेट संस्कृति का हिस्सा है जहाँ तकनीक के जरिए दफ्तर का काम घर से किया जाता है। इसके विपरीत, 'वर्क एट होम' असंगठित क्षेत्र की महिलाओं और मजदूरों से जुड़ा है जो बीड़ी बनाने या सिलाई जैसे शारीरिक श्रम वाले कार्यों के माध्यम से उत्पादन करते हैं। दोनों के वेतन, सुरक्षा और कार्यशैली में जमीन-आसमान का अंतर होता है।

149. (C) कामगारों और मिल मालिकों/स्थावर संपदा व्यापारियों के बीच।
मुंबई के भविष्य को लेकर चल रहा विवाद मुख्य रूप से उन लोगों के बीच है जो मिलों की जमीन को सामाजिक उपयोग के लिए चाहते हैं और वे जो इसे व्यावसायिक लाभ के लिए बेचना चाहते हैं। कामगार अपने अधिकारों और आवास की माँग कर रहे हैं, जबकि मालिक और बिल्डर इसे ऊँची इमारतों और मॉल में बदलने के लिए प्रयासरत हैं। यह संघर्ष शहर के सामाजिक

108. (B) 1, 2, 3, 4
बीड़ी उत्पादन एक व्यवस्थित व्यावसायिक श्रृंखला का अनुसरण करता है। इसकी शुरुआत ग्रामीण क्षेत्रों में वनों से तेंदु पत्तों के संग्रहण से होती है। इसके बाद ठेकेदारों के माध्यम से कच्चा माल घरों तक पहुँचता है जहाँ बीड़ियाँ बनाई जाती हैं। तैयार माल निर्माता के पास जाता है जो अपनी ब्रांडिंग करता है और अंततः वितरकों और थोक विक्रेताओं के जरिए यह उत्पाद छोटी दुकानों और उपभोक्ताओं तक पहुँचता है।

109. (C) क्योंकि 'मिस्त्री' प्रणाली पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।
पुराने समय में भर्ती का मुख्य जरिया 'मिस्त्री' हुआ करते थे, लेकिन अब यह प्रणाली कानूनी रूप से प्रतिबंधित और हतोत्साहित की गई है। इसके स्थान पर अब कर्मचारी संघ, यूनियन और प्रबंधन की भूमिका बढ़ गई है। आधुनिक औद्योगिक व्यवस्था में अब भर्ती की प्रक्रिया अधिक औपचारिक होने की कोशिश कर रही है, जिससे बिचौलियों का प्रभाव कम हुआ है और श्रमिकों को सीधे रोजगार के अवसर मिलने लगे हैं।

110. (D) भारतीय कॉफी पीना सामाजिकता निभाने का एक अवसर मानते हैं।
भारत में कॉफी पीने की संस्कृति को अक्सर एक सामाजिक गतिविधि के रूप में विज्ञापित और स्वीकार किया जाता है। यह दोस्तों और परिवार के साथ समय बिताने और बातचीत करने का एक जरिया माना जाता है। पश्चिमी देशों की तुलना में जहाँ इसे अक्सर व्यक्तिगत स्फूर्ति के लिए पिया जाता है, भारत में इसका उपभोग सामाजिक संबंधों को प्रगाढ़ करने और मेलजोल बढ़ाने के एक महत्वपूर्ण अवसर के रूप में होता है।

111. (B) केवल 2 और 3
विकसित देशों की अर्थव्यवस्था में कृषि पर निर्भरता बहुत कम और सुरक्षित नौकरियों का अनुपात अधिक होता है। भारत के संदर्भ में चुनौती यह है कि जिस कृषि क्षेत्र में सर्वाधिक जनसंख्या कार्यरत है, वह उन्हें पर्याप्त आय प्रदान करने में सक्षम नहीं है। यह विसंगति भारतीय रोजगार संरचना की एक प्रमुख कमजोरी है, जहाँ बड़ी संख्या में लोग कम उत्पादकता वाले क्षेत्रों में अपनी आजीविका खोजने को मजबूर हैं।

112. (B) यह सामाजिक प्रारूपों का नतीजा है और सामाजिक कार्यों को समझने में मदद करता है।
समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से उत्पादन और वितरण केवल आर्थिक क्रियाएं नहीं हैं, बल्कि ये सामाजिक संरचना और संबंधों को समझने के महत्वपूर्ण आधार हैं। लोग क्या बनाते हैं और किसके साथ व्यापार करते हैं, यह उनके वर्ग, शक्ति और सामाजिक स्थिति को दर्शाता है। इन प्रारूपों का अध्ययन करने से हमें समाज की कार्यप्रणाली और उसमें होने वाले परिवर्तनों को गहराई से समझने में मदद मिलती है, जो समाजशास्त्र का मुख्य ध्येय है।

113. (B) व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और काम करने की स्थिति कोड, 2020
भारत सरकार ने श्रम सुधारों के तहत खदान अधिनियम 1952 को 'व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और काम करने की स्थिति कोड, 2020' में समाहित कर दिया है। इस नए कोड का उद्देश्य विभिन्न क्षेत्रों के श्रमिकों के लिए सुरक्षा और स्वास्थ्य मानकों को एक समान और आधुनिक बनाना है। यह विधायी परिवर्तन कार्यस्थल पर जोखिमों को कम करने और श्रमिकों के कल्याण को एक नया कानूनी ढांचा प्रदान करने के लिए किया गया है।

114. (A) P-3, Q-4, R-2, S-1
मुंबई और उसके आसपास के क्षेत्रों की पहचान वहां के विशिष्ट उद्योगों और सामाजिक वर्गों से जुड़ी है। जुहू संपन्नता और फिल्मी सितारों का केंद्र है, जबकि गोरेगाँव में कनिष्ठ कलाकारों की बड़ी संख्या रहती है। कानपुर ऐतिहासिक रूप से कपड़ा मिलों और मिस्त्री व्यवस्था के लिए जाना जाता रहा है। इसी तरह भिवंडी का बिजली करघा क्षेत्र औद्योगिक विकेंद्रीकरण और बुनकर समुदाय की कार्यशीलता का एक प्रमुख उदाहरण है।

115. (C) (C) (A) और (B) दोनों।
हड़ताल का निर्णय लेना कामगारों के लिए अत्यंत कठिन होता है क्योंकि इसमें उन्हें बिना वेतन के लंबे समय तक रहना पड़ सकता है, जिससे उनके परिवार का अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। इसके अलावा, प्रबंधन अक्सर हड़ताल को विफल करने के लिए बाहर से अतिरिक्त मजदूरों को बुलाने की कोशिश करता है। इन दोहरे दबावों के कारण श्रमिकों को अपनी माँगों के लिए बहुत बड़ा जोखिम उठाना पड़ता है।

116. (D) बाह्य स्रोतों से (आउटसोर्सिंग द्वारा)।
मारुति उद्योग जैसी बड़ी कंपनियां सफाई और सुरक्षा जैसे गैर-प्रमुख कार्यों को सीधे अपने कर्मचारियों से करवाने के बजाय बाहरी एजेंसियों को सौंप देती हैं। यह आउटसोर्सिंग का एक हिस्सा है, जिसका उद्देश्य प्रबंधन के बोझ को कम करना और लागत में कटौती करना होता है। इस व्यवस्था के तहत इन कार्यों में लगे श्रमिक कंपनी के स्थायी कर्मचारी नहीं होते, जिससे उन्हें मिलने वाले लाभ और सुरक्षा सीमित होती है।

117. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आई.टी. क्षेत्र में 'फ्लैक्सी-टाइम' के नाम पर कर्मचारियों से अक्सर उनकी क्षमता से अधिक घंटों तक काम लिया जाता है। यह व्यवस्था लचीलेपन का आभास तो देती है, लेकिन वास्तव में यह अतिरिक्त कार्यभार को वैध बनाने का एक तरीका बन जाती है। प्रोजेक्ट की समय-सीमा को पूरा करने के लिए कर्मचारियों को देर रात तक रुकना पड़ता है, जिससे कार्य और व्यक्तिगत जीवन के बीच का संतुलन बिगड़ जाता है।

118. (B) क्योंकि वे मज़दूरों का रजिस्टर ठीक से नहीं रखते हैं।
उप-ठेकेदारी व्यवस्था में अक्सर मजदूरों का कोई औपचारिक रिकॉर्ड या रजिस्टर नहीं रखा जाता है। इस कारण जब कोई दुर्घटना होती है, तो उप-ठेकेदार अपनी जिम्मेदारी से बड़ी आसानी से मुकर जाते हैं क्योंकि मजदूर के पास रोजगार का कोई ठोस प्रमाण नहीं होता। यह स्थिति असंगठित क्षेत्र के श्रमिकों को अत्यंत असुरक्षित बना देती है और उन्हें कानूनी सहायता या मुआवजे से वंचित रखती है, जो एक गंभीर समस्या है।

सामाजिक सुरक्षा और स्थिर आय का अभाव है। विकास की प्रक्रिया में यह असंतुलन आर्थिक असमानता और सामाजिक असुरक्षा को और गहरा बनाता है।

161. (D) इसने उच्च-कुशल पेशेवरों के लिए अवसर पैदा किए जबकि दूसरों के लिए रोजगार की असुरक्षा बढ़ाई।
1990 के दशक के सुधारों ने शिक्षित और कुशल पेशेवरों के लिए दूरसंचार और आईटी जैसे क्षेत्रों में उन्नति के द्वार खोले। वहीं दूसरी ओर, इसके कारण पारंपरिक उद्योगों में लगे अकुशल श्रमिकों के लिए रोजगार की सुरक्षा कम हो गई। इस प्रकार, भूमंडलीकरण ने जहाँ एक ओर समृद्धि लाई, वहीं दूसरी ओर समाज के एक बड़े हिस्से को आर्थिक अस्थिरता के घेरे में धकेल दिया।

162. (B) उन्होंने स्थायी नौकरियों को अनुबंध-आधारित और अस्थायी कार्य से बदलना शुरु कर दिया।
वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना करने के लिए, कई कंपनियों ने अपनी श्रम लागत कम करने पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने नियमित और स्थायी कर्मचारियों की संख्या घटाकर उनके स्थान पर अनुबंध-आधारित या अस्थायी श्रमिकों को नियुक्त करना शुरु कर दिया। यह रणनीति कंपनियों को लचीलापन तो प्रदान करती है, लेकिन इससे श्रमिकों की आय की स्थिरता और उनके भविष्य की सुरक्षा पर गहरा संकट उत्पन्न हो गया है।

163. (C) स्थायी और सुरक्षित नौकरियों की जगह अस्थायी और असुरक्षित नौकरियों का बढ़ना।
श्रम के अनौपचारिकीकरण का अर्थ है संगठित क्षेत्र में भी नौकरियों की प्रकृति का बदलना। इसमें स्थायी रोजगार के स्थान पर ऐसी नौकरियाँ दी जाती हैं जिनमें न तो कोई कानूनी सुरक्षा होती है और न ही भविष्य के लाभ। यह प्रवृत्ति श्रमिकों की सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति को कमजोर करती है और उन्हें बाजार के उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक संवेदनशील और असुरक्षित बना देती है।

164. (D) रोजगार की सुरक्षा में कमी की चिंता, क्योंकि ये स्थिर नौकरियों के स्रोत थे।
सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों को पारंपरिक रूप से भारत में सुरक्षित और स्थिर रोजगार का प्रमुख आधार माना जाता रहा है। जब सरकार इन उपक्रमों में अपनी हिस्सेदारी कम करती है या निजीकरण करती है, तो कर्मचारियों में नौकरी छूटने का डर पैदा होता है। निजी प्रबंधन अक्सर लाभ अधिकतम करने के लिए छंटनी और अनुबंध श्रम को प्राथमिकता देता है, जिससे श्रमिक असुरक्षा बढ़ती है।

165. (A) भूमंडलीकरण ने एक छोटे वर्ग को लाभान्वित किया लेकिन बड़े श्रमिक वर्ग के लिए अनिश्चितता बढ़ाई।
भूमंडलीकरण के प्रभाव का समग्र विश्लेषण करने पर यह स्पष्ट होता है कि इसका लाभ मुख्य रूप से एक छोटे शहरी मध्यवर्ग और उच्च-कुशल पेशेवरों तक सीमित रहा है। जबकि श्रमिक वर्ग का एक विशाल हिस्सा आज भी अनिश्चित रोजगार और कम वेतन की समस्या से जूझ रहा है। यह प्रक्रिया समाज में एक गहरा आर्थिक विभाजन और रोजगार की गुणवत्ता को लेकर चिंताएँ उत्पन्न करती है।

166. (B) कुछ व्यवसायों को 'पुरुषोचित' और कुछ को 'स्त्रियोचित' के रूप में वर्गीकृत करना।
कार्य का लिंगीकरण वह सामाजिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से विशिष्ट व्यवसायों को लिंग के आधार पर परिभाषित किया जाता है। समाज कुछ कार्यों को महिलाओं के लिए उपयुक्त मानता है और कुछ को पुरुषों के लिए। यह विभाजन केवल कौशल पर आधारित नहीं होता, बल्कि गहरे सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों से प्रेरित होता है, जो कार्यस्थल पर लिंग आधारित असमानता को मजबूत बनाता है।

167. (B) नर्सिंग
नर्सिंग जैसे व्यवसायों को अक्सर समाज में 'स्त्रियोचित' कार्य माना जाता है क्योंकि इसे देखभाल, संवेदनशीलता और पोषण की भावनाओं से जोड़कर देखा जाता है। इन गुणों को पारंपरिक रूप से महिलाओं के स्वाभाविक गुणों के रूप में वर्गीकृत किया गया है। इसके विपरीत, तकनीकी और प्रबंधकीय कार्यों को पुरुष-प्रधान क्षेत्रों के रूप में देखा जाता है, जो कार्यबल में लिंग-आधारित रुढ़िवादिता को दर्शाता है।

168. (A) कानून के बावजूद, व्यवहार में जाति अक्सर किसी व्यक्ति के व्यवसाय के प्रकार को प्रभावित करती है।
यद्यपि भारतीय संविधान जाति-आधारित भेदभाव को प्रतिबंधित करता है, परंतु व्यवहार में सामाजिक पदानुक्रम अभी भी रोजगार के चुनाव को प्रभावित करता है। ऐतिहासिक रूप से चली आ रही व्यावसायिक व्यवस्था आज भी आधुनिक श्रम बाजार में प्रतिबिंबित होती है। व्यक्ति की जाति अक्सर उसकी आर्थिक स्थिति और उसे मिलने वाले अवसरों की गुणवत्ता को निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण कारक के रूप में कार्य करती है।

169. (C) दलित और अन्य निचली जातियाँ
समाज के सबसे कठिन, जोखिम भरे और कम वेतन वाले कार्यों में दलित और अन्य पिछड़ी जातियों का प्रतिनिधित्व असमान रूप से अधिक पाया जाता है। सफाई और शारीरिक श्रम जैसे क्षेत्रों में उनकी अधिकता पारंपरिक जाति-आधारित श्रम विभाजन का ही आधुनिक विस्तार है। यह दर्शाता है कि आधुनिकता के बावजूद, सामाजिक असमानताएँ श्रम बाजार के सबसे निचले पायदानों पर आज भी मजबूती से टिकी हुई हैं।

170. (D) कार्यस्थल एक सामाजिक क्षेत्र है जहाँ लिंग और जाति जैसे पारंपरिक पदानुक्रम पुनरुत्पादित होते हैं।
कार्यस्थल केवल आर्थिक लेन-देन की जगह नहीं है, बल्कि यह एक सामाजिक मंच है जहाँ लिंग और जाति जैसे पारंपरिक पदानुक्रम फिर से जीवित हो जाते हैं। यहाँ होने वाला कार्य विभाजन अक्सर समाज के पूर्वाग्रहों को दर्शाता है। आर्थिक गतिविधियाँ सामाजिक संरचनाओं से मुक्त नहीं हैं; बल्कि वे उन्हें पुख्ता करती हैं, जिससे समाज में असमानता और भेदभाव निरंतर बना रहता है।

(D) यह पारिवारिक सदस्यों से संपर्क की सामाजिक-सांस्कृतिक आवश्यकता पूरी करता है

31. 'एक नया अंतर्राष्ट्रीय श्रम-विभाजन' की अवधारणा का क्या अर्थ है?
(A) विकसित से विकासशील देशों में नियमित उत्पादन का स्थानांतरण
(B) सभी देशों में एक समान और कठोर श्रम कानून लागू होना
(C) श्रमिकों का अपने ही देश के भीतर एक राज्य से दूसरे में जाना
(D) सभी देशों के कुशल और अकुशल श्रमिकों को समान वेतन मिलना

32. नाइके कंपनी के उत्पादन केन्द्रों के स्थानांतरण के सही क्रम को पहचानें।
(A) जापान → दक्षिण कोरिया → थाईलैंड/इंडोनेशिया
(B) दक्षिण कोरिया → जापान → थाईलैंड/इंडोनेशिया
(C) थाईलैंड/इंडोनेशिया → जापान → दक्षिण कोरिया
(D) जापान → थाईलैंड/इंडोनेशिया → दक्षिण कोरिया

33. उत्पादन की लचीली प्रणाली, जो अलग-अलग स्थानों पर उत्पादन पर आधारित है, उसे क्या कहा जाता है?
(A) फोर्डवाद (Fordism)
(B) फोर्डवादोत्तर (Post-Fordism)
(C) टेलरवाद (Taylorism)
(D) समाजवाद

34. जनरल मोटर्स की पोंटियाक ली मैन्स कार के उत्पादन का उदाहरण क्या दर्शाता है?
(A) उत्पादन का एक भूमंडलीय संयोजन, जिसमें विभिन्न देशों से हिस्से आते हैं।
(B) एक ही देश में केंद्रीकृत उत्पादन।
(C) केवल अमेरिकी श्रम का उपयोग।
(D) हाथ से बनाई गई कारीगरी।

35. भूमंडलीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति ने विशेष रुप से किनके लिए रोजगार के नए अवसर खोले हैं?
(A) ग्रामीण खेतिहर मजदूरों के लिए
(B) पारंपरिक कारीगरों के लिए
(C) नगरीय केंद्रों के मध्यवर्गीय युवाओं के लिए
(D) सभी वर्गों के लिए समान रुप से

36. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'भूतपूर्व समाजवादी विश्व के विघटन' के परिणाम को सही ढंग से दर्शाता है?
(A) इसने भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को धीमा कर दिया।
(B) इसका भूमंडलीकरण पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
(C) इसने केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान को प्रभावित किया।
(D) इसने भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को और तेज़ कर दिया।

37. वे आर्थिक और राजनीतिक उपाय जो मुक्त उद्यम और बाज़ार की शक्तियों के निर्बाध शासन में विश्वास करते हैं, अक्सर क्या कहलाते हैं?
(A) समाजवादी उपाय
(B) संरक्षणवादी उपाय
(C) नव-उदारवादी आर्थिक उपाय
(D) गांधीवादी उपाय

38. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. नव-उदारवादी नीति राज्य द्वारा विनियमन और आर्थिक सहायता दोनों की आलोचना करती है।
2. समावेशात्मक भूमंडलीकरण (Inclusive Globalization) की संकल्पना समाज के सभी अनुभागों के समावेश की बात करती है।
3. वर्तमान भूमंडलीकरण से भिन्न भूमंडलीकरण की कोई संभावना नहीं है।
4. भूमंडलीकरण की मौजूदा प्रक्रिया में केवल आर्थिक दूरदर्शिता है, राजनीतिक नहीं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) केवल 2, 3 और 4

39. निम्नलिखित में से कौन सा एक क्षेत्रीय राजनीतिक सहयोग का उदाहरण नहीं है?
(A) यूरोपीय संघ (ई.यू.)
(B) दक्षिण एशियाई राष्ट्र संघ (एशियान)
(C) दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग सम्मेलन (सार्क)
(D) विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू.टी.ओ.)

40. अंतर्राष्ट्रीय सरकारी संगठन (IGO) और अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन (INGO) में मुख्य अंतर क्या है?
(A) IGOs सरकारों द्वारा स्थापित होते हैं, जबकि INGOs स्वतंत्र संगठन होते हैं।
(B) INGOs सरकारों द्वारा स्थापित होते हैं, जबकि IGOs स्वतंत्र संगठन होते हैं।
(C) दोनों में कोई अंतर नहीं है।
(D) IGOs केवल आर्थिक मुद्दों पर काम करते हैं, जबकि INGOs केवल सामाजिक मुद्दों पर।

41. निम्नलिखित में से कौन सा एक प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन (INGO) है?
(A) विश्व बैंक
(B) संयुक्त राष्ट्र संघ
(C) ग्रीनपीस
(D) अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष

42. नाइके कंपनी के उत्पादन केंद्रों के स्थानांतरण के पीछे मुख्य कारण क्या था?
(A) सस्ती मजदूरी की लागत

अध्याय 13
भूमंडलीकरण और सामाजिक परिवर्तन

1. इक्कीसवीं शताब्दी में सामाजिक परिवर्तन पर कोई भी चर्चा किस संदर्भ के बिना अधूरी मानी जाती है?
(A) औद्योगिकीकरण
(B) भूमंडलीकरण
(C) नगरीकरण
(D) पश्चिमीकरण

2. समाजशास्त्र भूमंडलीकरण को समझने के लिए किनके बीच के संबंधों को समझने हेतु समाजशास्त्रीय कल्पना शक्ति का प्रयोग करता है?
(A) व्यक्ति-समाज, सूक्ष्म-स्थूल एवं स्थानीय-भूमंडलीय के बीच
(B) राष्ट्रों की मात्र आर्थिक एवं राजनीतिक नीतियों के बीच
(C) विभिन्न क्षेत्रों की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक परंपराओं के बीच
(D) आधुनिक प्रौद्योगिकी एवं पर्यावरण के जटिल संतुलन के बीच

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को तर्क (R) कहा गया है। कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भूमंडलीकरण का प्रभाव बहुत व्यापक होता है और यह हम सबको प्रभावित करता है।
कारण (R): कुछ के लिए इसका अर्थ नए अवसरों का उपलब्ध होना है तो दूसरों के लिए आजीविका की हानि हो सकता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

4. भारत में आयात पर लगे सभी प्रकार के परिमाणात्मक प्रतिबंधों को कब से खारिज कर दिया गया?
(A) पहली अप्रैल, 1991
(B) पहली अगस्त, 1995
(C) पहली जनवरी, 2005
(D) पहली अप्रैल, 2001

5. निम्नलिखित में से कौन सा भूमंडलीकरण का सबसे अधिक स्पष्ट प्रभावों में से एक है?
(A) कृषि पद्धतियों में परिवर्तन
(B) राजनीतिक दलों की संख्या में वृद्धि
(C) मीडिया में आया आकस्मिक नाटकीय परिवर्तन
(D) पारंपरिक वस्त्रों का पूर्ण विलोपन

6. नीचे दिए गए स्तंभों का मिलान कीजिए:
सूची I: (देश)
P. चीन
Q. ऑस्ट्रेलिया
R. सूडान
S. कोरिया
सूची II: (आयातित उत्पाद)
1. सेब
2. नाशपाती
3. सस्ता गोंद
4. रेशम का धागा
(A) P-2, Q-1, R-3, S-4
(B) P-1, Q-2, R-4, S-3
(C) P-4, Q-3, R-1, S-2
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

7. समाजशास्त्रियों को भूमंडलीय अंतःसंबंधों को ध्यान में रखते हुए किन विषयों का अध्ययन करना होगा?
(A) केवल ग्रामीण समुदायों की कृषि संरचनाओं का
(B) केवल शहरी नागरिक आंदोलनों की गतिशीलता का
(C) केवल अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और राजनयिक संधियों का
(D) गाँवों, परिवारों, आंदोलनों और दफ़्तरशाही के अंतःसंबंधों का

8. भूमंडलीकरण के बारे में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
(A) भूमंडलीकरण बेहतर विश्व के अग्रदूत के रूप में अत्यंत आवश्यक है, यह एक सर्वमान्य विचार है।
(B) समाज के विभिन्न हिस्सों पर इसका प्रभाव बहुत ही भिन्न प्रकार का होता है।
(C) कुछ लोगों को इससे लाभ होता है जबकि कुछ की हालत बदतर हो जाती है।
(D) भूमंडलीकरण के प्रभाव के बारे में लोगों के विचार विभाजित हैं।

9. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. भारत दो हज़ार वर्ष पहले भी विश्व से अलग-थलग नहीं था।
2. प्रसिद्ध रेशम मार्ग (सिल्करूट) भारत को चीन, फारस, मिस्र और रोम से जोड़ता था।

3. भारत के लंबे अतीत के दौरान, विश्व के भिन्न-भिन्न भागों से लोग यहाँ नहीं आए थे।
4. दूरदराज के भारतीय गाँवों में लोगों को अपने पूर्वजों के प्रवसन की यादें हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

10. पाणिनी, जिन्होंने ईसापूर्व चौथी शताब्दी के आसपास संस्कृत व्याकरण को सुव्यवस्थित किया, वे मूल रूप से कहाँ के थे?
(A) अफगान
(B) चीनी
(C) यूनानी
(D) मिस्री

11. 'कूपमंडूक' (कुएँ में रहने वाले मेंढ़क) से संबंधित नीतिकथा किस वाद के विरुद्ध एक चेतावनी देती है?
(A) समाजवाद
(B) पूंजीवाद
(C) साम्राज्यवाद
(D) एकाकीकरणवाद (आइसोलेशनिज्म)

12. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): आधुनिक पूँजीवाद का प्रारंभ से ही एक भूमंडलीय आयाम रहा है।
कारण (R): उपनिवेशवाद उस व्यवस्था का एक भाग था जिसे पूँजी, कच्ची सामग्री, ऊर्जा और बाज़ार के नए स्रोतों की आवश्यकता थी।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

13. लोगों का सबसे बड़ा प्रवसन किसे माना जाता है, जिसमें लोग अपना देश छोड़कर दूसरे महाद्वीपों में जा बसे?
(A) भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का देशांतरण
(B) अफ्रीकी दासों का व्यापार
(C) यूरोपीय लोगों का अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में देशांतरण
(D) चीन से लोगों का दक्षिण-पूर्व एशिया में प्रवसन

14. भूमंडलीकरण की परिभाषा के अनुसार, यह किसका विस्तार है?
(A) केवल आर्थिक संबंधों का
(B) केवल सांस्कृतिक संबंधों का
(C) केवल राजनीतिक संधियों का
(D) समूचे विश्व में सामाजिक एवं आर्थिक संबंधों का

15. भूमंडलीकरण को सबसे अधिक आगे बढ़ाने में किन प्रौद्योगिकियों का योगदान रहा है?
(A) सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों का
(B) कृषि प्रौद्योगिकियों का
(C) निर्माण प्रौद्योगिकियों का
(D) जैव-प्रौद्योगिकियों का

16. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. भारत में उदारीकरण की नीतियों का आरंभ।
2. प्रसिद्ध रेशम मार्ग का उपयोग।
3. उपनिवेशवाद के अंतर्गत गिरमिटिया मजदूरों का प्रवसन।
4. स्वतंत्र भारत द्वारा भूमंडलीय दृष्टिकोण को अपनाना।

(A) 2, 3, 4, 1
(B) 1, 4, 3, 2
(C) 3, 2, 1, 4
(D) 4, 1, 2, 3

17. भारत में 1991 में अपनाई गई आर्थिक नीति में हुए परिवर्तनों को क्या कहा जाता है?
(A) राष्ट्रीयकरण की नीतियाँ
(B) उदारीकरण की नीतियाँ
(C) संरक्षणवाद की नीतियाँ
(D) समाजवाद की नीतियाँ

18. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'उदारीकरण' की सही व्याख्या करता है?
(A) भारतीय व्यापार को नियमित करने वाले नियमों को हटा देना।
(B) सरकार द्वारा अर्थव्यवस्था पर नियंत्रण बढ़ाना।
(C) विदेशी कंपनियों पर प्रतिबंध लगाना।
(D) सार्वजनिक क्षेत्र का विस्तार करना।

19. नीचे दो कथन दिए गए हैं। कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
कथन 1: स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भारत ने ऐसे कानून बनाए थे जिनसे भारतीय बाज़ार और स्वदेशी व्यवसाय विश्व की प्रतियोगिता से सुरक्षित रहें।
कथन 2: इस नीति के पीछे यह अवधारणा थी कि उपनिवेशवाद से मुक्त हुआ देश स्वतंत्र बाज़ार की स्थिति में लाभ में ही रहेगा।
(A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

20. उदारीकरण की प्रक्रिया के लिए भारत ने किन अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से ऋण लिया?
(A) विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)
(B) संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन

(UNESCO)
(C) अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO)
(D) अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष (IMF)

21. अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से ऋण लेने पर सरकार को जो 'संरचनात्मक समायोजन' की नीति अपनानी पड़ती है, उसका सामान्यतः क्या अर्थ होता है?
(A) सामाजिक क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य और शिक्षा में सरकारी व्यय में वृद्धि।
(B) उद्योगों के राष्ट्रीयकरण को बढ़ावा देना।
(C) सामाजिक क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य और शिक्षा में सरकारी व्यय में कटौती।
(D) आयात पर शुल्क बढ़ाना।

22. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. ये ऐसी कंपनियाँ होती हैं जो एक से अधिक देशों में अपने माल का उत्पादन करती हैं।
2. ये केवल बड़े विशाल अंतर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठान ही हो सकते हैं।
3. इनका एक स्पष्ट राष्ट्रीय आधार होता है, फिर भी वे भूमंडलीय बाज़ारों की ओर अभिमुखित होती हैं।
4. कोकाकोला, जनरल मोटर्स और मित्सुबिशी इसके उदाहरण हैं।
5. सभी भारतीय निगम पारराष्ट्रीय बन चुके हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 2, 4 और 5
(D) केवल 3, 4 और 5

23. वह अर्थव्यवस्था जिसके उत्पाद सूचना पर आधारित होते हैं, जैसे कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और मीडिया, क्या कहलाती है?
(A) कृषि अर्थव्यवस्था
(B) औद्योगिक अर्थव्यवस्था
(C) पारंपरिक अर्थव्यवस्था
(D) भाररहित अर्थव्यवस्था या ज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था

24. विश्व के तीन प्रमुख वित्तीय व्यापार केंद्र कौन से हैं?
(A) न्यूयार्क, टोकियो, लंदन
(B) मुंबई, दिल्ली, कोलकाता
(C) पेरिस, बर्लिन, रोम
(D) सिडनी, शंघाई, दुबई

25. भारत में 'डिजिटल विभाजन' का क्या अर्थ है?
(A) सभी के पास डिजिटल उपकरण हैं।
(B) सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर के बीच का अंतर।
(C) प्रौद्योगिकी के उपयोग में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच असमानता।
(D) विभिन्न डिजिटल प्लेटफॉर्मों के बीच प्रतिस्पर्धा।

26. नीचे दिए गए स्तंभों का मिलान कीजिए:

सूची I: (अवधारणा)
P. पारराष्ट्रीय निगम
Q. उदारीकरण
R. ज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था
S. डिजिटल विभाजन

सूची II: (विवरण)
1. सूचना आधारित उत्पाद
2. एक से अधिक देशों में उत्पादन
3. व्यापार नियमों को हटाना
4. प्रौद्योगिकी तक पहुँच में असमानता

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

27. 2000 तक भारत में इंटरनेट के ग्राहकों की संख्या कितनी हो गई थी?
(A) 10 लाख
(B) 50 लाख
(C) 1 करोड़
(D) 30 लाख

28. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भारत में 'डिजिटल विभाजन' अब भी मौजूद है।
कारण (R): ग्रामीण इलाके अभी भी अनिश्चित विद्युत आपूर्ति, निरक्षरता और टेलीफोन कनेक्शन के अभाव के कारण इंटरनेट सुविधा से वंचित हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

29. 1999 तक भारत का दूरसंचार संजाल (नेटवर्क) विश्व में कौन से स्थान पर था?
(A) पहला
(B) पाँचवाँ
(C) नौवाँ
(D) पंद्रहवाँ

30. भारत में दूरसंचार के विस्तार के सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व के बारे में क्या कहा गया है?
(A) यह केवल वाणिज्यिक और व्यापारिक कार्य-व्यवहार के लिए अनिवार्य है
(B) इसका पारिवारिक घनिष्ठता बनाए रखने में कोई भी प्रत्यक्ष योगदान नहीं है
(C) यह केवल शहरी क्षेत्रों के युवाओं द्वारा मनोरंजन हेतु उपयोग किया जाता है

171. (C) बड़े कारखानों और संगठित क्षेत्र के उद्योगों में
व्यापार संघों या ट्रेड यूनियनों की जड़ें ऐतिहासिक रूप से बड़े औद्योगिक कारखानों और संगठित क्षेत्रों में रही हैं। ऐसे स्थानों पर बड़ी संख्या में श्रमिक एक साथ काम करते हैं, जिससे उनके बीच संचार और संगठन बनाना अपेक्षाकृत आसान होता है। यहाँ की सामूहिक शक्ति और साझा कार्यदशाएँ श्रमिकों को अपने हितों की रक्षा के लिए एकजुट होने हेतु प्रेरित करती हैं।

172. (B) हड़ताल या काम बंद करना
हड़ताल को ट्रेड यूनियनों का सबसे प्रभावी और पारंपरिक हथियार माना गया है। काम रोककर श्रमिक उत्पादन प्रक्रिया को बाधित करते हैं, जिससे प्रबंधन पर भारी आर्थिक दबाव पड़ता है। यह सामूहिक कार्रवाई का एक ऐसा साधन है जिसका उपयोग श्रमिक अपनी उचित मजदूरी, बेहतर कार्यदशाओं और अन्य कानूनी अधिकारों को मनवाने के लिए करते हैं, जिससे उनकी सौदेबाजी की शक्ति बढ़ती है।

173. (D) अर्थव्यवस्था का अनौपचारिकीकरण और अनुबंध श्रम का बढ़ना।
आधुनिक अर्थव्यवस्था में नौकरियों की प्रकृति स्थायी से बदलकर अस्थायी और अनुबंध-आधारित हो गई है। जब श्रमिकों का रोजगार अनिश्चित होता है, तो वे यूनियन बनाने या हड़ताल करने में हिचकिचाते हैं क्योंकि उन्हें नौकरी खोने का डर होता है। श्रम के इस अनौपचारिकीकरण ने श्रमिकों की एकता को तोड़ दिया है और उनकी सामूहिक सौदेबाजी करने की क्षमता को काफी कम कर दिया है।

174. (A) क्योंकि वे एक स्थान पर केंद्रित नहीं होते और बिखरे हुए होते हैं।
असंगठित क्षेत्र के श्रमिक, जैसे निर्माण मजदूर या डिलीवरी कर्मी, भौगोलिक रूप से काफी बिखरे हुए होते हैं। वे किसी एक विशाल कारखाने में काम करने के बजाय अलग-अलग छोटे समूहों या व्यक्तिगत रूप से कार्य करते हैं। इस बिखराव के कारण उन्हें एक सामान्य मंच पर लाना और उनमें सामूहिक पहचान विकसित करना अत्यंत कठिन हो जाता है, जिससे पारंपरिक यूनियन बनाना चुनौतीपूर्ण होता है।

175. (C) जनहित याचिकाएँ, मीडिया अभियान और नागरिक समाज के साथ गठबंधन
जैसे-जैसे पारंपरिक हड़तालें कम प्रभावी हो रही हैं, श्रमिक अब प्रतिरोध के नए और विविध तरीकों को अपना रहे हैं। इनमें कानूनी रास्तों का उपयोग, मीडिया के माध्यम से जनता का समर्थन जुटाना और विभिन्न सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर काम करना शामिल है। अब वे सीधे फैक्ट्री प्रबंधन के बजाय सरकार से व्यापक सुरक्षा और बुनियादी मानवाधिकारों की माँग कर रहे हैं।

(B) बेहतर प्रौद्योगिकी की तलाश
(C) राजनीतिक अस्थिरता
(D) कच्चे माल की उपलब्धता

43. 'संस्कृति का भूस्थानीकरण' (Glocalization) का क्या अर्थ है?
(A) सभी संस्कृतियों का एक समान हो जाना।
(B) स्थानीय संस्कृतियों का पूर्ण रूप से लोप हो जाना।
(C) विदेशी संस्कृति का पूर्ण बहिष्कार।
(D) भूमंडलीय के साथ स्थानीय का मिश्रण।

44. भारत में 'भूस्थानीकरण' का एक उदाहरण है:
(A) सभी विदेशी टीवी चैनलों का केवल अंग्रेजी में प्रसारण।
(B) एम.टी.वी. चैनल द्वारा भारतीय भाषाओं का प्रयोग करना।
(C) मैक्डोनाल्ड्स द्वारा भारत में केवल गोमांस के उत्पाद बेचना।
(D) भारतीय संगीत में किसी भी विदेशी प्रभाव का न होना।

45. संगीत के क्षेत्र में 'फ्यूज़न म्यूज़िक' और 'भाँगड़ा पॉप' किसके उदाहरण हैं?
(A) सांस्कृतिक सजातीयकरण
(B) सांस्कृतिक अलगाव
(C) संस्कृति का भूस्थानीकरण
(D) सांस्कृतिक शुद्धतावाद

46. नीचे दो कथन दिए गए हैं। कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
कथन 1: सांस्कृतिक पहचान के परंपरागत स्वरुप का समर्थन करने वाले लोग अक्सर महिलाओं के विरुद्ध भेदभावपूर्ण व्यवहारों का बचाव करते हैं।
कथन 2: भारत की लोकतांत्रिक परंपरा और संस्कृति ने संस्कृति को अधिक समावेशात्मक और लोकतांत्रिक रूप में परिभाषित करने में मदद की है।
(A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
(B) कथन 1 और 2 दोनों गलत हैं।
(C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
(D) कथन 1 गलत है, लेकिन कथन 2 सही है।

47. 'उपभोग की संस्कृति' की एक प्रमुख विशेषता क्या है?
(A) खरीददारी को समय बिताने की गतिविधि के रूप में प्रोत्साहित किया जाता है।
(B) पैसे को सँभालकर रखना एक महत्वपूर्ण गुण माना जाता है।
(C) केवल आवश्यकता की वस्तुएँ खरीदना।
(D) विज्ञापनों का समाज पर कोई प्रभाव नहीं होना।

48. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. भारत में सेलफोन का एक विलासिता की वस्तु माना जाना।
2. सेलफोन का आपराधिक तत्वों द्वारा उपयोग के कारण अविश्वास की दृष्टि से देखा जाना।
3. सेलफोन का आम जीवन का एक अभिन्न अंग बन जाना।
4. भारत का सेलफोन प्रयोग में दुनिया का चौथा सबसे बड़ा देश बनना।
(A) 2, 1, 4, 3
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 3, 4, 1, 2

49. निगम संस्कृति (Corporate Culture) का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) कर्मचारियों के बीच प्रतिस्पर्धा को कम करना।
(B) उत्पादकता और प्रतियोगितात्मकता को बढ़ावा देना।
(C) काम के घंटों को कम करना।
(D) कंपनी के लाभ को कर्मचारियों में समान रूप से बांटना।

50. बहुराष्ट्रीय कंपनियों और सूचना प्रौद्योगिकी में आई क्रांति ने भारत के महानगरों में किस वर्ग को जन्म दिया है?
(A) उर्ध्वगामी व्यावसायिकों (प्रोफेशनलों) का एक वर्ग
(B) पारंपरिक जमींदार वर्ग
(C) खेतिहर मजदूर वर्ग
(D) संगठित श्रमिक वर्ग

51. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भूमंडलीकरण ने अनेक स्वदेशी शिल्पों, साहित्यिक परंपराओं और ज्ञान व्यवस्थाओं के लिए खतरा पैदा किया है।
कारण (R): बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ तुलसी, हल्दी और बासमती चावल जैसे परंपरागत ज्ञान को पेटेंट कराने का प्रयत्न कर रही हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

52. आंध्र प्रदेश के सरसिला और डुबक्का गाँव के पारंपरिक बुनकरों द्वारा बड़ी संख्या में आत्महत्या का क्या कारण था?
(A) अचानक आई किसी गंभीर प्राकृतिक आपदा के कारण
(B) सरकार द्वारा बुनकरों को दी जाने वाली सब्सिडी की कमी
(C) उत्पादन के लिए आवश्यक कच्चे माल की निरंतर अनुपलब्धता
(D) उपभोक्ता रुचि में बदलाव और तकनीकी निवेश में असमर्थता

53. डोमबारी समुदाय जैसे पारंपरिक मनोरंजनकर्ताओं की आजीविका पर संकट क्यों आया?

(D) बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा पेटेंट कराने के प्रयासों से

76. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में भूमंडलीकरण के प्रभाव के बारे में सही है?
(A) इसका प्रभाव सभी पर समान रूप से सकारात्मक रहा है।
(B) इसका प्रभाव समाज के विभिन्न हिस्सों पर भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है।
(C) इसका प्रभाव सभी पर समान रूप से नकारात्मक रहा है।
(D) इसका ग्रामीण भारत पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।

77. भूमंडलीय अंतःक्रियाओं के ऐतिहासिक प्रमाण के रूप में 'रेशम मार्ग' का क्या महत्व है?
(A) यह केवल भारत और चीन को जोड़ता था।
(B) यह केवल रेशम के व्यापार के लिए था।
(C) यह सदियों पहले भारत को कई महान सभ्यताओं से जोड़ता था।
(D) इसका निर्माण आधुनिक युग में हुआ।

78. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. उपनिवेशवाद आधुनिक पूँजीवाद की व्यवस्था का एक हिस्सा था।
2. इसके तहत यूरोपीय लोगों का अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में बड़े पैमाने पर प्रवसन हुआ।
3. दास-व्यापार के अंतर्गत हजारों अफ्रीकियों को दूरस्थ तटों तक ले जाया गया।
4. भारत से गिरमिटिया मजदूरों को एशिया, अफ्रीका और अमेरिका ले जाया गया।
5. यह पूरी प्रक्रिया शांतिपूर्ण और स्वैच्छिक थी।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 2, 3 और 4
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

79. स्वतंत्र भारत ने जो भूमंडलीय दृष्टिकोण अपनाया, वह उसे किससे विरासत में मिला था?
(A) भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनों से
(B) ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों से
(C) प्राचीन राजतंत्रों से
(D) अमेरिकी संविधान से

80. वर्तमान भूमंडलीकरण और पूर्व की अंतःसंबद्धता में मुख्य अंतर क्या है?
(A) अब केवल द्विपक्षीय व्यापारिक और आर्थिक संबंध शेष हैं
(B) अब उत्पादन, संचार और पूँजी के संगठन में गहरे बदलाव हुए हैं
(C) अब देशों के बीच अंतःसंबद्धता की गति अत्यंत धीमी है
(D) अब केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान और पर्यटन का महत्व है

81. 1991 से पहले भारत की आर्थिक नीति को 'संरक्षणवादी' क्यों कहा जाता था?
(A) क्योंकि यह पर्यावरण संरक्षण पर केंद्रित थी।
(B) क्योंकि यह भारतीय बाजार और व्यवसायों को बाहरी प्रतिस्पर्धा से बचाती थी।
(C) क्योंकि यह ऐतिहासिक स्मारकों का संरक्षण करती थी।
(D) क्योंकि यह केवल कृषि क्षेत्र पर ध्यान केंद्रित थी।

82. अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष (IMF) जैसी संस्थाओं द्वारा दिए जाने वाले ऋणों के साथ अक्सर कौन सी शर्त जुड़ी होती है?
(A) संरचनात्मक समायोजन की नीतियां अपनाना।
(B) लोकतंत्र को बढ़ावा देना।
(C) सैन्य खर्च में वृद्धि।
(D) सांस्कृतिक उत्सवों का आयोजन।

83. पारराष्ट्रीय निगमों (TNCs) का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?
(A) विभिन्न देशों में रोजगार प्रदान करना।
(B) मेजबान देश की संस्कृति को बढ़ावा देना।
(C) भूमंडलीय बाजारों से भूमंडलीय मुनाफा कमाना।
(D) धर्मार्थ कार्य करना।

84. 'इलेक्ट्रॉनिक अर्थव्यवस्था' में किस चीज का अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लेन-देन होता है?
(A) भौतिक वस्तुओं का
(B) केवल सेवाओं का
(C) कृषि उत्पादों का
(D) 'इलेक्ट्रॉनिक' मुद्रा या निधि का

85. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. पाणिनी द्वारा संस्कृत व्याकरण का सुव्यवस्थीकरण।
2. चीनी विद्वान यी जिंग द्वारा भारत की यात्रा।
3. भारत में रेशम मार्ग के माध्यम से व्यापार।
4. यूरोपीय लोगों का अमेरिका में प्रवसन।

(A) 1, 3, 2, 4
(B) 3, 1, 2, 4
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 4, 3, 2, 1

86. भारत में स्टॉक एक्सचेंज में उतार-चढ़ाव का एक प्रमुख कारण क्या बताया गया है?
(A) घरेलू निवेशकों द्वारा की गई भारी खरीद-बिक्री के कारण
(B) विदेशी निवेशकों द्वारा अचानक स्टॉक खरीदने या बेचने के कारण
(C) सरकार की आर्थिक नीतियों में होने वाले निरंतर बदलावों से
(D) कृषि मानसून की अनिश्चितता और ग्रामीण मांग की स्थिति से

(B) उन्हें विलास की वस्तु माना जाता था।
(C) उनका प्रयोग केवल सरकारी अधिकारी करते थे।
(D) वे शिक्षा के लिए अनिवार्य थे।

65. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. नाइके कंपनी की स्थापना जूते आयात करने वाली कंपनी के रूप में हुई थी।
2. इसका मुख्यालय जापान में स्थित है।
3. यह एक पारराष्ट्रीय निगम बन गई है।
4. यह हमेशा से अपने जूते केवल अमेरिकी कारखानों में बनाती आई है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 3
(B) केवल 2 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 2, 3 और 4

66. 'फोर्डवाद' (Fordism) उत्पादन प्रणाली की क्या विशेषता थी?
(A) एक केंद्रीकृत स्थान पर विशाल पैमाने पर उत्पादन
(B) लचीला और विकेंद्रीकृत उत्पादन
(C) हाथ से बनाया गया कारीगरी उत्पादन
(D) मांग पर आधारित छोटा उत्पादन

67. अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) की 2005 की रिपोर्ट के अनुसार, एशिया में प्रभावशाली आर्थिक वृद्धि के बावजूद क्या समस्या थी?
(A) मुद्रास्फीति में वृद्धि
(B) श्रमिक संघों की बढ़ती शक्ति
(C) रोजगार के नए अवसरों का पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न न होना
(D) तकनीकी विकास की कमी

68. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भूमंडलीकरण की प्रक्रिया में एक राजनीतिक दूरदर्शिता भी शामिल है।
कारण (R): नव-उदारवादी दृष्टिकोण का मानना है कि बाज़ार की शक्तियों का निर्बाध शासन कुशल और न्यायसंगत होगा।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

69. विश्व व्यापार संगठन (WTO) किस प्रकार का संगठन है?
(A) एक अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन (INGO)
(B) एक क्षेत्रीय सहयोग संगठन
(C) एक अंतर्राष्ट्रीय सरकारी संगठन (IGO)
(D) एक राष्ट्रीय नियामक संस्था

70. मैक्डोनाल्ड्स का नवरात्रि पर्व पर विशुद्ध निरामिष हो जाना किसका उदाहरण है?
(A) सांस्कृतिक साम्राज्यवाद
(B) भूस्थानीकरण
(C) सांस्कृतिक सजातीयकरण
(D) अलगाव

71. निम्नलिखित में से किसे 'उपभोग की संस्कृति' के उदय का संकेत माना जा सकता है?
(A) बचत योजनाओं की बढ़ती लोकप्रियता
(B) स्थानीय हाट और बाजारों का सुदृढीकरण
(C) सादा जीवन शैली को बढ़ावा देना
(D) विशाल बिक्री भंडारों (शॉपिंग मॉल्स) और बहुविध सिनेमाघरों का विकास

72. 'कौन बनेगा करोड़पति' जैसे लोकप्रिय कार्यक्रमों का समाज पर क्या प्रभाव पड़ता है?
(A) यह धारणा बनाता है कि कुछ ही खेलों में भाग्य बदल सकता है।
(B) यह बचत करने की प्रवृत्ति को बढ़ावा देता है।
(C) यह कड़ी मेहनत के महत्व को कम करता है।
(D) यह सामुदायिक भावना को मजबूत करता है।

73. नीचे दिए गए स्तंभों का मिलान कीजिए:
सूची I: (शब्द)
P. फोर्डवाद
Q. भूस्थानीकरण
R. नव-उदारवाद
S. कूपमंडूक

सूची II: (अर्थ)
1. वैश्विक और स्थानीय का मिश्रण
2. केंद्रीकृत बड़े पैमाने पर उत्पादन
3. स्वतंत्र बाजार में विश्वास
4. संकीर्ण दृष्टिकोण वाला व्यक्ति

(A) P-2, Q-1, R-3, S-4
(B) P-1, Q-2, R-4, S-3
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-1, R-2, S-4

74. 'निगम संस्कृति' (Corporate Culture) में क्या शामिल होता है?
(A) कंपनी के कार्यक्रम, रीतियाँ और परंपराएँ।
(B) केवल कंपनी के कानूनी नियम
(C) केवल कर्मचारियों का वेतन
(D) केवल कंपनी का लोगो और विज्ञापन

75. परंपरागत ज्ञान व्यवस्थाओं, जैसे आयुर्विज्ञान और कृषि, को किससे खतरा है?
(A) सरकार की उपेक्षा से
(B) युवा पीढ़ी की अरुचि से
(C) इन व्यवस्थाओं के अप्रभावी होने से

(A) उनकी कला में गुणवत्ता की कमी के कारण
(B) सरकार द्वारा प्रतिबंध लगाए जाने के कारण
(C) टेलीविजन और रेडियो जैसे मनोरंजन के नए साधनों के प्रसार के कारण
(D) लोगों की कला के प्रति रुचि समाप्त हो जाने के कारण

54. नीचे दिए गए स्तंभों का मिलान कीजिए:
सूची I: (संगठन/अवधारणा)
P. अंतर्राष्ट्रीय सरकारी संगठन (IGO)
Q. अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन (INGO)
R. भूस्थानीकरण
S. उपभोग की संस्कृति
सूची II: (उदाहरण/विशेषता)
1. ग्रीनपीस
2. विश्व व्यापार संगठन (WTO)
3. मैक्डोनाल्ड्स का निरामिष मेनू
4. शॉपिंग मॉल
(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

55. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. इसने बिहार की रेशम कातने वाली औरतों के धंधे को चौपट कर दिया।
2. इसने भारतीय समुद्री जल में बड़ी मछली पकड़ने वाली जहाजों के प्रवेश को सुगम बनाया।
3. इसने गुजरात में गोंद इकट्ठा करने वाली औरतों के रोजगार को प्रभावित किया।
4. विकसित देशों से रद्दी कागज के आयात ने रद्दी बीनने वालों के रोजगार को प्रभावित किया।
5. इसने सभी भारतीय कामगारों के लिए नए अवसर पैदा किए।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3 और 4
(B) केवल 2, 3, 4 और 5
(C) केवल 1, 3, 4 और 5
(D) सभी 1, 2, 3, 4 और 5

56. समाजशास्त्र, भूमंडलीकरण को समझने के लिए किसका प्रयोग करता है?
(A) समाजशास्त्रीय कल्पना शक्ति
(B) आर्थिक मॉडल
(C) राजनीतिक सिद्धांत
(D) ऐतिहासिक विश्लेषण

57. भूमंडलीकरण के बारे में कौन सा कथन असत्य है?
(A) इसने मध्यवर्ग के लिए रोजगार के अवसर पैदा किए हैं।
(B) इसने बड़े भारतीय निगमों को पारराष्ट्रीय बनने में मदद की है।
(C) इसका पड़ोस के पंसारी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।
(D) इसने युवाओं के खाली समय बिताने के तरीके को बदल दिया है।

58. भूमंडलीकरण के आर्थिक आयामों में निम्नलिखित में से क्या शामिल नहीं है?
(A) सांस्कृतिक सजातीयकरण
(B) उदारीकरण की नीति
(C) पारराष्ट्रीय निगम
(D) इलेक्ट्रॉनिक अर्थव्यवस्था

59. भारत में 'आर्थिक सुधार' शब्द का प्रयोग किसके लिए किया जाता है?
(A) अर्थव्यवस्था के राष्ट्रीयकरण के लिए
(B) कृषि में सब्सिडी बढ़ाने के लिए
(C) छोटे उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए
(D) उदारीकरण के उपायों के लिए

60. 'भाररहित' या 'ज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था' में अधिकांश कार्य-बल किसमें लगा रहता है?
(A) वस्तुओं के वास्तविक भौतिक उत्पादन और मैनुअल श्रम में
(B) उत्पादों के डिज़ाइन, विकास और विपणन प्रणालियों में
(C) पारंपरिक कृषि और उससे संबद्ध ग्रामीण स्वरोजगार कार्यों में
(D) खनिजों के दोहन और कच्चे माल की खनन गतिविधियों में

61. निम्नलिखित में से कौन सा एक 'ज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था' का उदाहरण है?
(A) इस्पात कारखाना
(B) कपड़ा मिल
(C) खान-पान प्रबंध सेवा (Catering service)
(D) गेहूं का खेत

62. भूमंडलीय संचार में क्रांतिकारी परिवर्तन किसके कारण संभव हुए हैं?
(A) सड़क परिवहन में सुधार
(B) डाक सेवाओं का विस्तार
(C) समाचार पत्रों के मुद्रण में सुधार
(D) प्रौद्योगिकी और दूरसंचार के आधारभूत ढाँचे में उन्नति

63. 'डिजिटल इंडिया' योजना का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) सभी प्रकार के विनिमय में डिजिटलाइजेशन को सहायक इकाई के रूप में स्थापित करना
(B) सभी को मुफ्त स्मार्टफोन देना
(C) सोशल मीडिया के उपयोग पर रोक लगाना
(D) केवल शहरी क्षेत्रों में इंटरनेट का विस्तार करना

64. निम्नलिखित में से कौन सा कथन भारत में 1980 के दशक के अंत तक सेलफोनों की स्थिति को दर्शाता है?
(A) वे आम आदमी के लिए सुलभ थे।

87. भारत का कौन सा शहर देश की 'वित्तीय राजधानी' कहा जाता है?
(A) दिल्ली
(B) कोलकाता
(C) चेन्नई
(D) मुंबई

88. 1947 में स्वतंत्रता के समय भारत में टेलीफोन लाइनों की क्या स्थिति थी?
(A) 35 करोड़ की जनसंख्या के लिए 84,000 लाइनें थीं।
(B) 35 करोड़ की जनसंख्या के लिए 25 लाख लाइनें थीं।
(C) प्रत्येक गाँव में टेलीफोन था।
(D) भारत का दूरसंचार नेटवर्क विश्व में सबसे बड़ा था।

89. 2000 तक भारत में पी.सी.ओ. (पब्लिक कॉल ऑफिस) की क्या भूमिका थी?
(A) वे केवल शहरों में उपलब्ध थे।
(B) उनका उपयोग केवल आपदाकालीन स्थितियों में होता था।
(C) वे दूर-दराज के ग्रामीण और पहाड़ी इलाकों में विश्वसनीय टेलीफोन सेवा प्रदान करते थे।
(D) वे बहुत महंगे और अव्यावहारिक थे।

90. श्रम के 'लचीलेपन' का अक्सर किसके पक्ष में काम करने वाला माना जाता है?
(A) उत्पादकों के पक्ष में
(B) श्रमिकों के पक्ष में
(C) सरकार के पक्ष में
(D) उपभोक्ता के पक्ष में

91. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भूमंडलीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति ने भारत में रोजगार की प्रवृत्तियों को निराशाजनक बना दिया है।
कारण (R): इसने केवल नगरीय केंद्रों के मध्यवर्गीय युवाओं के लिए कुछ नए अवसर खोले हैं, लेकिन समग्र रोजगार वृद्धि दर प्रभावशाली नहीं रही है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

92. 'समावेशात्मक भूमंडलीकरण' (Inclusive Globalization) की संकल्पना का क्या अभिप्राय है?
(A) एक ऐसा भूमंडलीकरण जिसमें केवल विकसित देश शामिल हों।
(B) एक ऐसा भूमंडलीकरण जिसमें समाज के सभी अनुभागों का समावेश हो।
(C) एक ऐसा भूमंडलीकरण जो केवल आर्थिक विकास पर केंद्रित हो।
(D) एक ऐसा भूमंडलीकरण जो सांस्कृतिक आदान-प्रदान को रोकता हो।

93. निम्नलिखित में से कौन सा भारत की सांस्कृतिक परंपरा का हिस्सा रहा है?
(A) 'कूपमंडूक' की तरह बाहरी दुनिया से अलग रहना।
(B) केवल अपनी संस्कृति को श्रेष्ठ मानना।
(C) सांस्कृतिक प्रभावों के प्रति खुला दृष्टिकोण अपनाना।
(D) अन्य संस्कृतियों का पूर्ण अनुकरण करना।

94. सांस्कृतिक सजातीयकरण (Homogenization) से क्या अभिप्राय है?
(A) विभिन्न संस्कृतियों का एक-दूसरे पर प्रभाव।
(B) स्थानीय संस्कृतियों का मजबूत होना।
(C) वैश्विक और स्थानीय का मिश्रण।
(D) सभी संस्कृतियों का एक समान हो जाना।

95. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. भूमंडलीकरण से यह डर पैदा हुआ है कि स्थानीय संस्कृतियाँ पीछे रह जाएँगी।
2. एक दावा यह है कि सभी संस्कृतियाँ एक समान यानी सजातीय हो जाएँगी।
3. दूसरा मत यह है कि संस्कृति के भूस्थानीकरण की प्रवृत्ति बढ़ रही है।
4. भूस्थानीकरण का अर्थ है भूमंडलीय के साथ स्थानीय का मिश्रण।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

96. सांस्कृतिक उपभोग की अवधारणा में क्या शामिल है?
(A) केवल भोजन करना
(B) कला, खाद्य, फैशन, संगीत और पर्यटन का उपभोग
(C) केवल धार्मिक ग्रंथों का पठन
(D) केवल पारंपरिक कलाओं का संरक्षण

97. 1970 के दशक तक नगरों की वृद्धि में किसकी प्रमुख भूमिका थी?
(A) पर्यटन उद्योग
(B) उत्पादन उद्योग
(C) सेवा क्षेत्र
(D) सूचना प्रौद्योगिकी

98. मुंबई के परेल और गिरगाँव की कपड़ा मिलों के इलाके के थिएटर समूहों के समाप्त होने का क्या कारण था?
(A) मिल मजदूरों की नौकरी खत्म हो जाना, जो उनके मुख्य

142. 'लचीलेपन' (flexibility) शब्द का प्रयोग जब श्रम के संदर्भ में किया जाता है, तो इसका श्रमिकों के लिए क्या परिणाम होता है?
(A) अधिक सुरक्षा और स्थिरता।
(B) बेहतर वेतन और सुविधाएं।
(C) कम काम के घंटे।
(D) अधिक कमजोरी और असुरक्षा।

143. पोंटियाक ली मैन्स कार के उत्पादन में विभिन्न देशों की भागीदारी किसका उदाहरण है?
(A) भूमंडलीय उत्पादन श्रृंखला (Global Production Chain)
(B) आत्मनिर्भर उत्पादन
(C) राष्ट्रीय उत्पादन
(D) स्थानीय कारीगरी

144. निम्नलिखित में से कौन-सा एक भूमंडलीकरण का सकारात्मक प्रभाव माना जा सकता है?
(A) स्वदेशी शिल्पों का विनाश।
(B) नगरीय मध्यवर्ग के लिए रोजगार के नए अवसर।
(C) आय असमानता में वृद्धि।
(D) पारंपरिक ज्ञान का ह्रास।

145. एमनेस्टी इंटरनेशनल और डॉक्टर्स विदाउट बॉर्डर्स किस प्रकार के संगठनों के उदाहरण हैं?
(A) अंतर्राष्ट्रीय सरकारी संगठन (IGOs)
(B) अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन (INGOs)
(C) पारराष्ट्रीय निगम (TNCs)
(D) क्षेत्रीय राजनीतिक संघ

146. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. भूमंडलीकरण से सांस्कृतिक सजातीयकरण का खतरा है।
2. भूस्थानीकरण की प्रक्रिया भी देखी जा रही है।
3. भूस्थानीकरण, भूमंडलीय और स्थानीय का मिश्रण है।
4. विदेशी टीवी चैनलों द्वारा भारतीय भाषाओं का प्रयोग भूस्थानीकरण का उदाहरण है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

147. पैसे को बचाने के बजाय खर्च करने को बढ़ावा देना, किस संस्कृति की विशेषता है?
(A) पारंपरिक संस्कृति
(B) कृषि संस्कृति
(C) उपभोग की संस्कृति
(D) श्रम की संस्कृति

148. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भूमंडलीकरण ने भारत में एक नए 'उर्ध्वगामी व्यावसायिक' वर्ग को जन्म दिया है।
कारण (R): ये पेशेवर उच्च वेतन अर्जित करते हैं और उपभोक्ता उद्योगों के प्रमुख ग्राहक हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

149. नीचे दिए गए स्तंभों का मिलान कीजिए:
सूची I: (अवधारणा)
P. श्रम का अंतर्राष्ट्रीय विभाजन
Q. उपभोग की संस्कृति
R. ज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था
S. अंतर्राष्ट्रीय संगठन

सूची II: (उदाहरण)
1. शॉपिंग मॉल
2. नाइके का उत्पादन स्थानांतरण
3. WTO, IMF
4. कंप्यूटर सॉफ्टवेयर उद्योग

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

150. भूमंडलीकरण ने जिस प्रकार हमारे जीवन को प्रभावित किया है, उसे संक्षेप में प्रस्तुत करना आसान क्यों नहीं है?
(A) क्योंकि इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
(B) क्योंकि इसके प्रभाव विभिन्न और जटिल रूपों में हैं।
(C) क्योंकि इसका प्रभाव केवल आर्थिक है।
(D) क्योंकि इस पर कोई अध्ययन नहीं हुआ है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भूमंडलीकरण के आर्थिक आयामों में पारराष्ट्रीय निगमों (TNCs) की भूमिका केंद्रीय है। ये निगम वैश्विक उत्पादन श्रृंखलाओं (Global Production Chains) का निर्माण और संचालन करते हैं, जिसके तहत उत्पादन प्रक्रिया को विभिन्न देशों में विभाजित कर दिया जाता है। इस प्रक्रिया में, प्रत्येक देश उस हिस्से का उत्पादन करता है जिसमें उसे तुलनात्मक लाभ (comparative advantage) प्राप्त होता है, चाहे वह सस्ता श्रम हो, कच्चे माल की उपलब्धता हो, या विशेष तकनीकी कौशल। इस विखंडित उत्पादन प्रणाली को 'नई अंतर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन' (New International Division of Labour) के रूप में जाना जाता है, जहाँ विकासशील देश अक्सर विनिर्माण और असेंबली जैसे श्रम-गहन कार्यों के केंद्र बन जाते हैं, जबकि डिजाइन, विपणन

(C) कुएँ का मेंढक सबसे ज्ञानी होता है।
(D) दूसरों पर शक करना एक अच्छी आदत है।

109. 'गिरमिटिया मजदूर' किन्हें कहा जाता था?
(A) वे मजदूर जो स्वेच्छा से विदेशों में बसे।
(B) वे यूरोपीय मजदूर जो भारत आए।
(C) वे भारतीय मजदूर जिन्हें अनुबंध के तहत ब्रिटिश उपनिवेशों में काम करने के लिए ले जाया गया।
(D) वे अफ्रीकी दास जिन्हें भारत लाया गया।

110. भूमंडलीकरण के विभिन्न आयामों में निम्नलिखित में से कौन सा एक सुमेलित नहीं है?
(A) आर्थिक आयाम - पारराष्ट्रीय निगम
(B) राजनीतिक आयाम - यूरोपीय संघ
(C) सांस्कृतिक आयाम - भूस्थानीकरण
(D) संचार आयाम - फोर्डवाद

111. भारत में 1991 के आर्थिक सुधारों का एक प्रमुख उद्देश्य क्या था?
(A) भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व-बाजार के लिए खोल देना।
(B) भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व-बाजार से अलग करना।
(C) सभी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करना।
(D) कृषि पर कर बढ़ाना।

112. एक कंपनी जो एक से अधिक देशों में माल का उत्पादन या विपणन करती है, उसे क्या कहते हैं?
(A) स्थानीय फर्म
(B) पारराष्ट्रीय निगम (TNC)
(C) राष्ट्रीय कंपनी
(D) सहकारी समिति

113. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. भारत में उदारीकरण नीतियों का लागू होना।
2. समाजवादी विश्व का विघटन।
3. भारत का दूरसंचार नेटवर्क विश्व में नौवां सबसे बड़ा बनना।
4. नाइके द्वारा उत्पादन को दक्षिण कोरिया में स्थानांतरित करना।

(A) 4, 2, 1, 3
(B) 2, 1, 4, 3
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 3, 4, 1, 2

114. 'ज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था' में किस प्रकार के उत्पाद शामिल होते हैं?
(A) कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और मनोरंजक उत्पाद
(B) गेहूं और चावल
(C) स्टील और सीमेंट
(D) कपड़ा और जूते

115. भारत में 'डिजिटल विभाजन' को कम करने के लिए सरकार द्वारा कौन सी योजना प्रारम्भ की गई है?
(A) मेक इन इंडिया
(B) स्वच्छ भारत अभियान
(C) डिजिटल इंडिया
(D) बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ

116. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन 'फोर्डवादोत्तर' (Post-Fordism) की विशेषता बताता है?
(A) उत्पादन का एक ही स्थान पर केंद्रीकरण।
(B) मानकीकृत उत्पादों का बड़े पैमाने पर उत्पादन।
(C) श्रमिकों के लिए स्थायी रोजगार।
(D) उत्पादन की लचीली प्रणाली।

117. 'रोजगार अंतर' (Employment Gap) की अवधारणा से क्या तात्पर्य है?
(A) नौकरीपेशा और बेरोजगारों के बीच अंतर।
(B) आर्थिक वृद्धि के बावजूद रोजगार के पर्याप्त अवसर उत्पन्न न होना।
(C) आर्थिक वृद्धि के बावजूद रोजगार के पर्याप्त अवसर उत्पन्न न होना।
(D) कुशल और अकुशल श्रमिकों के बीच अंतर।

118. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भारत हमेशा से सांस्कृतिक प्रभावों के प्रति खुला रहा है, जिससे वह सांस्कृतिक रुप से समृद्ध हुआ है।
कारण (R): भूमंडलीकरण ने सांस्कृतिक परिवर्तनों की गति और गहनता को बढ़ा दिया है, जिससे स्थानीय संस्कृतियों के खोने का डर पैदा हुआ है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

119. 'भाँगड़ा पॉप' और 'इंडिपॉप' किस सांस्कृतिक प्रक्रिया के उदाहरण हैं?
(A) सांस्कृतिक शुद्धता
(B) सांस्कृतिक अलगाव
(C) सांस्कृतिक पतन
(D) सांस्कृतिक मिश्रण या संलयन (Fusion)

120. शॉपिंग मॉल और मल्टीप्लेक्स का विकास किस संस्कृति का प्रतीक है?
(A) उपभोग की संस्कृति
(B) त्याग की संस्कृति
(C) बचत की संस्कृति
(D) कृषि की संस्कृति

121. नीचे दिए गए स्तंभों का मिलान कीजिए:
सूची I: (शहर/स्थान)
P. मुंबई
Q. बंगलूरु
R. न्यूयार्क, टोकियो, लंदन
S. परेल, गिरगाँव
सूची II: (संबंधित उद्योग/विशेषता)
1. कपड़ा मिलें (पूर्व में)
2. वित्तीय राजधानी
3. सूचना प्रौद्योगिकी
4. प्रमुख वित्तीय व्यापार केंद्र
(A) P-2, Q-3, R-4, S-1
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

122. निगम संस्कृति (Corporate Culture) का प्रयास किसलिए किया जाता है?
(A) कर्मचारियों में वफादारी की भावना बढ़ाने और समूह एकता को प्रोत्साहित करने के लिए।
(B) कर्मचारियों को राजनीतिक रूप से सक्रिय करने के लिए।
(C) कंपनी के मुनाफे को कम करने के लिए।
(D) सरकारी नियमों का पालन करने के लिए।

123. भूमंडलीकरण का स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों पर क्या प्रभाव पड़ा है?
(A) उन्हें बढ़ावा मिला है।
(B) उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
(C) उनके लिए खतरा उत्पन्न हुआ है।
(D) वे पूरी तरह से व्यावसायिक हो गई हैं।

124. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. भूमंडलीकरण ने एक नए अंतर्राष्ट्रीय श्रम-विभाजन को जन्म दिया है।
2. इसमें उत्पादन कार्य कम लागत वाले देशों में स्थानांतरित हो जाता है।
3. इस प्रक्रिया में श्रमिक जन अक्सर कमजोर और असुरक्षित हो जाते हैं।
4. यह श्रम का लचीलापन उत्पादकों के पक्ष में काम करता है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

125. "पड़ोस के फलों की दुकान में बिक्री के लिए पड़ी चीन की नाशपाती और ऑस्ट्रेलिया के सेब" - यह वाक्य किस प्रक्रिया को इंगित करता है?
(A) स्थानीयकरण
(B) राष्ट्रीयकरण
(C) भूमंडलीकरण
(D) ग्रामीण विकास

126. भारत में उदारीकरण की नीति के पीछे मूल अवधारणा क्या थी?
(A) भूमंडलीय बाजार में अधिक समावेश भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए हानिकारक होगा।
(B) भारतीय अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भर और बंद रहना चाहिए।
(C) केवल कृषि क्षेत्र को भूमंडलीय बाजार के लिए खोलना चाहिए।
(D) भूमंडलीय बाजार में अधिक समावेश भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए लाभकारी सिद्ध होगा।

127. निम्नलिखित में से कौन एक पारराष्ट्रीय निगम का उदाहरण नहीं है?
(A) एक स्थानीय किराना दुकान
(B) कोकाकोला
(C) मित्सुबिशी
(D) जनरल मोटर्स

128. 'नेटवर्क सोसायटी' का उदय मुख्य रूप से किसके कारण हुआ है?
(A) रेलवे के विकास के कारण।
(B) भूमंडलीकरण और मीडिया प्रौद्योगिकी के कारण।
(C) जनसंख्या वृद्धि के कारण।
(D) राजनीतिक क्रांतियों के कारण।

129. भारत में 1990 के दशक में दूरसंचार क्रांति से पहले, 6,00,000 गाँवों में से कितने प्रतिशत में टेलीफोन लगे हुए थे?
(A) 50%
(B) 3%
(C) 25%
(D) 10%

130. भूमंडलीकरण के राजनीतिक आयामों के अंतर्गत निम्नलिखित में से क्या शामिल है?
(A) क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक संगठनों की बढ़ती भूमिका।
(B) केवल राष्ट्रीय स्तर पर राजनीति का संचालन।
(C) राजनीतिक गतिविधियों का पूर्ण समापन।
(D) विश्व में केवल एक ही राजनीतिक विचारधारा का होना।

131. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भूमंडलीकरण के फलस्वरूप कुछ नयी भूमंडलीय परंपराएँ निर्मित हो सकती हैं।
कारण (R): संस्कृति कोई स्थिर या अपरिवर्तनशील सत्व नहीं है, यह सामाजिक परिवर्तनों के साथ बदलती है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

132. 'ब्रह्मांड सुंदरी' और 'विश्वसुंदरी' जैसी प्रतियोगिताओं ने किन उद्योगों को बढ़ावा दिया है?
(A) कृषि और भारी उद्योग
(B) सूचना प्रौद्योगिकी
(C) पारंपरिक हस्तशिल्प
(D) फैशन, सौंदर्य प्रसाधन और स्वास्थ्य उत्पाद

133. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. 'निगम संस्कृति' प्रबंधन सिद्धांत की एक शाखा है।
2. इसका उद्देश्य उत्पादकता और प्रतियोगितात्मकता को बढ़ावा देना है।
3. यह कर्मचारियों में वफादारी की भावना को बढ़ाती है।
4. यह मानती है कि कंपनी की संस्कृति का उसके प्रदर्शन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
5. यह केवल कंपनी के शीर्ष प्रबंधन पर लागू होती है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 3
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) केवल 3, 4 और 5

134. आज के समय में नगरों की वृद्धि को आकार प्रदान करने में किसकी प्रमुख भूमिका है?
(A) उत्पादन उद्योग
(B) सांस्कृतिक उपभोग
(C) कृषि
(D) खनन

135. "हमारा धंधा चौपट हो रहा है" - डोमबारी समुदाय के इस कथन का मुख्य कारण क्या था?
(A) समुदाय के भीतर आपसी झगड़े।
(B) सरकार से अपर्याप्त समर्थन।
(C) युवाओं की कला सीखने में अरुचि।
(D) मनोरंजन के आधुनिक साधनों जैसे टीवी और रेडियो से प्रतिस्पर्धा।

136. नीचे दिए गए स्तंभों का मिलान कीजिए:
सूची I: (संगठन/व्यक्ति)
P. पाणिनी
Q. यी जिंग
R. अंतर्राष्ट्रीय सरकारी संगठन
S. अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन

सूची II: (क्षेत्र/देश)
1. चीन
2. WTO
3. एमनेस्टी इंटरनेशनल
4. अफगान मूल

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

137. भूमंडलीकरण की प्रक्रिया इतनी व्यापक क्यों है कि विभिन्न विषयों को एक-दूसरे से जानकारी लेनी पड़ती है?
(A) क्योंकि यह केवल एक ही विषय से संबंधित है।
(B) क्योंकि अकादमिक विषयों में सहयोग की परंपरा है।
(C) क्योंकि इसके कारण और परिणाम बहुत विविध और जटिल हैं।
(D) क्योंकि सरकार ऐसा अनिवार्य करती है।

138. भूमंडलीकरण से पहले, एक किसान के लिए उपभोग के विकल्प कैसे थे?
(A) सीमित और स्थानीय।
(B) व्यापक और विविध।
(C) पूरी तरह से विदेशी उत्पादों पर निर्भर।
(D) ऑनलाइन शॉपिंग पर आधारित।

139. 2001 में आयात पर से प्रतिबंध हटाने का एक संपन्न शहरी उपभोक्ता पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) उसके लिए उपभोग के विकल्प कम हो गए।
(B) उसकी आजीविका का संकट पैदा हो गया।
(C) उस पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।
(D) उसके लिए उपभोग के नए और व्यापक विकल्प उपलब्ध हुए।

140. भूमंडलीय स्तर पर भारत के अंतःसंबंधों के बारे में क्या सत्य नहीं है?
(A) भारत हजारों वर्षों से विश्व से जुड़ा रहा है।
(B) ये संबंध केवल आधुनिक युग की देन हैं।
(C) रेशम मार्ग एक प्राचीन उदाहरण है।
(D) भारत में समय-समय पर विभिन्न स्थानों से लोग आकर बसे हैं।

141. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के सही कालानुक्रम में व्यवस्थित कीजिए:
1. भारत में टेलीविजन चैनलों का उदारीकरण।
2. भारत में पहली टेलीफोन लाइन की स्थापना।
3. इंटरनेट का भारत में आगमन और प्रसार।
4. पब्लिक कॉल ऑफिस (PCO) का देशव्यापी विस्तार।

(A) 2, 4, 1, 3
(B) 1, 2, 4, 3
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 4, 2, 1, 3

(A) स्थानीय संस्कृतियों का पूर्ण रूप से उन्मूलन।
(B) वैश्विक उत्पादों को बिना किसी परिवर्तन के अपनाना।
(C) केवल स्थानीय उत्पादों का प्रचार-प्रसार।
(D) वैश्विक और स्थानीय सांस्कृतिक तत्वों का मिश्रण और अनुकूलन।

158. स्रोत में दिया गया 'मैकआलू टिक्की बर्गर' का उदाहरण किस अवधारणा को स्पष्ट करता है?
(A) भूस्थानीकरण
(B) सांस्कृतिक साम्राज्यवाद
(C) सांस्कृतिक समरूपीकरण
(D) सांस्कृतिक अलगाव

159. स्रोत के अनुसार, सांस्कृतिक समरूपीकरण के सिद्धांत की मुख्य चिंता क्या है?
(A) नई संकर सांस्कृतिक शैलियों का निर्माण।
(B) वैश्विक व्यापार में होने वाली निरंतर वृद्धि।
(C) स्थानीय संस्कृतियों की विविधता का क्षरण और पश्चिमी संस्कृति का प्रभुत्व।
(D) आधुनिक प्रौद्योगिकी का दुनिया भर में प्रसार।

160. इस अनुच्छेद का निष्कर्ष क्या है?
(A) सांस्कृतिक प्रभाव एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें समरूपीकरण और संकर संस्कृतियों का निर्माण शामिल है।
(B) भूमंडलीकरण की प्रक्रिया अनिवार्य रूप से सभी स्थानीय और पारंपरिक संस्कृतियों को पूर्णतः नष्ट कर देती है।
(C) भारत जैसे विविध देशों में भूमंडलीकरण का स्थानीय परंपराओं पर कोई भी महत्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रभाव नहीं पड़ा है।
(D) भूस्थानीकरण की प्रक्रिया केवल पश्चिमी विकसित देशों में ही प्रभावी रूप से घटित होती है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने राष्ट्र-राज्य (nation-state) की भूमिका और संप्रभुता को महत्वपूर्ण रूप से पुनर्परिभाषित किया है। नव-उदारवादी विचारधारा से प्रेरित, जिसने 1980 के दशक के बाद वैश्विक नीतियों को आकार दिया, राज्य की भूमिका 'कल्याणकारी राज्य' से बदलकर 'सुविधाकर्ता राज्य' (facilitator state) की हो गई। इस नए मॉडल में, राज्य का मुख्य कार्य वैश्विक पूंजी के प्रवाह को सुगम बनाना, बाजारों को विनियमित करना (deregulate), और एक ऐसा वातावरण बनाना है जो विदेशी निवेश और व्यापार के लिए अनुकूल हो। विश्व व्यापार संगठन (WTO), अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) और विश्व बैंक जैसी अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं ने इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। ये संस्थाएँ अक्सर विकासशील देशों को ऋण और सहायता प्रदान करने के लिए संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रमों (Structural Adjustment Programs) को लागू करने की शर्त रखती हैं, जिनमें सरकारी खर्च में कटौती (विशेषकर स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे सामाजिक क्षेत्रों में), सार्वजनिक उद्यमों का निजीकरण और व्यापार बाधाओं को हटाना शामिल है। आलोचकों का तर्क है कि यह प्रक्रिया राष्ट्रीय स्वायत्तता को कम करती है, क्योंकि महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक नीतियां अब लोकतांत्रिक रूप से चुनी हुई सरकारों द्वारा नहीं, बल्कि बाहरी अंतर्राष्ट्रीय निकायों द्वारा निर्धारित की जाती हैं। इसके परिणामस्वरूप, राज्य की अपने नागरिकों के प्रति सामाजिक कल्याण सुनिश्चित करने की क्षमता में कमी आ सकती है, जबकि कॉर्पोरेट हितों को प्राथमिकता दी जा सकती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. नव-उदारवादी विचारधारा के तहत राज्य की भूमिका में क्या परिवर्तन आया है?
(A) 'सुविधाकर्ता राज्य' से 'कल्याणकारी राज्य' में परिवर्तन।
(B) राज्य की भूमिका में कोई परिवर्तन नहीं हुआ।
(C) राज्य का पूर्ण रूप से विघटन हो गया।
(D) 'कल्याणकारी राज्य' से 'सुविधाकर्ता राज्य' में परिवर्तन।

162. स्रोत के अनुसार, अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाएँ जैसे IMF और WTO क्या भूमिका निभाती हैं?
(A) वे विभिन्न देशों के बीच केवल सांस्कृतिक आदान-प्रदान और कूटनीतिक संबंधों को बढ़ावा देने का कार्य करती हैं।
(B) वे ऋण के बदले में नव-उदारवादी सुधारों और संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रमों को लागू करने हेतु दबाव डालती हैं।
(C) वे विकासशील राष्ट्रों में सामाजिक कल्याणकारी योजनाओं और सार्वजनिक सेवाओं का व्यापक विस्तार करती हैं।
(D) वे सदस्य देशों की राष्ट्रीय संप्रभुता और विधायी स्वायत्तता को भविष्य हेतु निरंतर मजबूत करने का कार्य करती हैं।

163. 'संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रमों' की एक विशिष्ट विशेषता क्या है?
(A) सामाजिक क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य और शिक्षा में सरकारी खर्च में वृद्धि।
(B) सार्वजनिक उद्यमों का राष्ट्रीयकरण।
(C) सरकारी खर्च में कटौती और निजीकरण को बढ़ावा देना।
(D) आयात पर उच्च कर लगाना।

164. अनुच्छेद में उल्लिखित राष्ट्र-राज्य की भूमिका में परिवर्तन के संबंध में आलोचकों का मुख्य तर्क क्या है?
(A) इससे राष्ट्रीय स्वायत्तता में निरंतर वृद्धि होती है और स्थानीय लोकतांत्रिक प्रक्रिया अधिक मजबूत होती है।
(B) इससे समाज के सभी वर्गों के लिए सामाजिक कल्याण और बुनियादी सेवाओं में भारी और तीव्र वृद्धि होती है।
(C) इस प्रक्रिया का निजी क्षेत्रों के कॉर्पोरेट हितों और व्यापारिक नीतियों पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ता है।
(D) इससे राष्ट्रीय स्वायत्तता कम होती है और नीतियां बाहरी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से अत्यधिक प्रभावित होती हैं।

और अनुसंधान जैसे उच्च-मूलय वाले कार्य विकसित देशों में केंद्रित रहते हैं। भारत में, 1990 के दशक के आर्थिक उदारीकरण के बाद, कई TNCs ने अपनी उत्पादन इकाइयाँ स्थापित कीं, विशेषकर ऑटोमोबाइल, इलेक्ट्रॉनिक्स और वस्त्र जैसे क्षेत्रों में। इसके परिणामस्वरूप, जहाँ एक ओर रोजगार के अवसर सृजित हुए और प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण हुआ, वहीं दूसरी ओर, इसने श्रम बाजारों में अनौपचारिकता, संविदा पर काम (contractualization) और श्रमिकों के लिए कम सौदेबाजी की शक्ति जैसी चुनौतियाँ भी पैदा की हैं। वैश्विक उत्पादन श्रृंखलाओं पर निर्भरता अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाजार के उतार-चढ़ाव के प्रति अधिक संवेदनशील बना देती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. वैश्विक उत्पादन श्रृंखलाओं के संदर्भ में, विकासशील देश सामान्यतः किस प्रकार के कार्यों के केंद्र बनते हैं?
(A) अनुसंधान और विकास
(B) श्रम-गहन विनिर्माण और असेंबली
(C) कॉर्पोरेट प्रबंधन और रणनीति
(D) वैश्विक विपणन और ब्रांडिंग

152. 'नई अंतर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन' की अवधारणा का सबसे सटीक वर्णन क्या है?
(A) उत्पादन प्रक्रियाओं का भौगोलिक विखंडन, जहाँ कार्य विशेषज्ञता के आधार पर बाँटे जाते हैं।
(B) सभी देशों द्वारा समान रूप से सभी प्रकार के कार्यों का उत्पादन और वितरण करना।
(C) विकसित देशों का केवल श्रम-गहन उद्योगों और विनिर्माण पर ध्यान केंद्रित करना।
(D) विकासशील देशों द्वारा वैश्विक बाजार में केवल कच्चे माल का निर्यात किया जाना।

153. स्रोत के अनुसार, भारत में पारराष्ट्रीय निगमों के आगमन का एक नकारात्मक परिणाम क्या रहा है?
(A) भारत में आधुनिक प्रौद्योगिकी हस्तांतरण की प्रक्रिया में भारी कमी।
(B) रोजगार के पर्याप्त अवसरों का पूरी तरह से अभाव होना।
(C) श्रम बाजार में अनौपचारिकता और श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति में कमी।
(D) देश में होने वाले कुल विदेशी निवेश में निरंतर गिरावट आना।

154. अनुच्छेद के अनुसार, 'तुलनात्मक लाभ' का क्या अर्थ है?
(A) किसी विशिष्ट देश की अन्य देशों की तुलना में सैन्य और रणनीतिक शक्ति का होना।
(B) सभी प्रकार के उत्पादन क्षेत्रों और कच्चे माल में पूर्ण रूप से आत्मनिर्भरता प्राप्त करना।
(C) किसी देश द्वारा अपने सभी वैश्विक व्यापारिक भागीदारों पर पूर्ण आर्थिक अधिपत्य स्थापित करना।
(D) किसी देश की किसी वस्तु को दूसरों की तुलना में कम अवसर लागत पर उत्पादित करने की क्षमता।

155. इस स्रोत का मुख्य तर्क क्या है?
(A) पारराष्ट्रीय निगम मुख्य रूप से केवल विकसित राष्ट्रों के हितों को लाभ पहुँचाने का कार्य करते हैं।
(B) वैश्विक उत्पादन श्रृंखलाओं ने सभी विकासशील देशों के लिए तीव्र आर्थिक विकास सुनिश्चित किया है।
(C) TNCs की उत्पादन श्रृंखलाएँ आर्थिक अवसरों और श्रम संबंधी चुनौतियों दोनों को प्रस्तुत करती हैं।
(D) भारत जैसे देशों को अपनी आर्थिक स्थिरता हेतु वैश्विक उत्पादन श्रृंखलाओं में भाग लेने से बचना चाहिए।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भूमंडलीकरण के सांस्कृतिक प्रभाव को अक्सर दो विरोधी दृष्टिकोणों से देखा जाता है: सांस्कृतिक समरूपीकरण (homogenization) और सांस्कृतिक भूस्थानीकरण (glocalization)। समरूपीकरण का सिद्धांत, जिसे कभी-कभी 'मैकडोनल्डीकरण' भी कहा जाता है, यह तर्क देता है कि वैश्विक संस्कृतियों, विशेष रूप से पश्चिमी उपभोक्ता संस्कृति, का प्रभुत्व स्थानीय संस्कृतियों को कमजोर कर रहा है, जिससे दुनिया भर में एक समान और मानकीकृत संस्कृति का उदय हो रहा है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, वैश्विक ब्रांड, मीडिया और जीवन शैली स्थानीय परंपराओं, भाषाओं और पहचानों को प्रतिस्थापित कर रहे हैं। इसके विपरीत, 'ग्लोकलाइजेशन' या 'भूस्थानीकरण' की अवधारणा इस बात पर जोर देती है कि वैश्विक और स्थानीय संस्कृतियों के बीच की बातचीत एक अधिक जटिल और रचनात्मक प्रक्रिया है। यह केवल एक-तरफ़ा प्रवाह नहीं है, बल्कि एक द्वि-मार्गी प्रक्रिया है जिसमें वैश्विक उत्पादों और विचारों को स्थानीय संदर्भों के अनुरूप ढाला और रूपांतरित किया जाता है। भारत इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ अंतर्राष्ट्रीय फास्ट-फूड श्रृंखलाएँ स्थानीय स्वाद के अनुरूप मेनू पेश करती हैं (जैसे 'मैकआलू टिक्की बर्गर'), और वैश्विक संगीत प्रारूपों को भारतीय लोक और शास्त्रीय संगीत के साथ मिलाकर 'फ्यूज़न' संगीत बनाया जाता है। इस प्रकार, भूस्थानीकरण यह दर्शाता है कि स्थानीय संस्कृतियाँ निष्क्रिय प्राप्तकर्ता नहीं हैं, बल्कि वे वैश्विक प्रवाहों को सक्रिय रूप से संशोधित, अनुकूलित और पुनर्व्याख्यायित करती हैं, जिससे नई संकर (hybrid) सांस्कृतिक रूपों का निर्माण होता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. 'मैकडोनल्डीकरण' की अवधारणा किस प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करती है?
(A) सांस्कृतिक भूस्थानीकरण
(B) सांस्कृतिक समरूपीकरण
(C) सांस्कृतिक अलगाव
(D) सांस्कृतिक पुनरुत्थान

157. भूस्थानीकरण (Glocalization) की प्रक्रिया का मुख्य तत्व क्या है?

दर्शक थे।
(B) सरकार द्वारा लगाया गया प्रतिबंध
(C) अभिनेताओं की कमी
(D) थिएटरों का जीर्ण-शीर्ण हो जाना

99. नीचे दिए गए स्तंभों का मिलान कीजिए:
सूची I: (घटना)
P. रेशम कताई का धंधा चौपट होना
Q. गोंद इकट्ठा करने का रोजगार खोना
R. पारंपरिक बुनकरों द्वारा आत्महत्या
S. कलाबाजी के करतब का महत्व खोना
सूची II: (स्थान/समुदाय)
1. डोमबारी समुदाय
2. बिहार
3. गुजरात
4. सरसिला, आंध्र प्रदेश
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

100. बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा भारतीय पारंपरिक ज्ञान जैसे हल्दी और बासमती को पेटेंट कराने के प्रयास से क्या आवश्यकता उत्पन्न हुई है?
(A) इस ज्ञान को भुला देने की
(B) इस ज्ञान को पूरी तरह से बदल देने की
(C) इस ज्ञान को केवल विदेशी कंपनियों को बेचने की
(D) स्वदेशी ज्ञान व्यवस्थाओं के आधार को बचाने की

101. निम्नलिखित में से कौन-सा 'उदारीकरण' का परिणाम नहीं है?
(A) भारतीय बाजार का विश्व के लिए खुलना।
(B) अर्थव्यवस्था पर सरकारी नियंत्रण में कमी।
(C) आयात पर प्रतिबंधों को और कड़ा करना।
(D) विदेशी निवेश को प्रोत्साहन।

102. 'भूस्थानीकरण' की रणनीति अक्सर किसके द्वारा अपनाई जाती है?
(A) स्थानीय कारीगरों द्वारा
(B) विदेशी फर्मों द्वारा अपना बाजार बढ़ाने के लिए
(C) राष्ट्रीय सरकारों द्वारा
(D) सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा

103. 'जेंडर और संस्कृति' के संबंध में निम्नलिखित में से क्या तर्क दिया गया है?
(A) भूमंडलीकरण हमेशा महिलाओं के अधिकारों का समर्थन करता है।
(B) पारंपरिक संस्कृतियाँ हमेशा महिलाओं के लिए फायदेमंद होती हैं।
(C) महिलाओं के अधिकारों और संस्कृति के बीच कोई संबंध नहीं है।
(D) सांस्कृतिक पहचान के नाम पर महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव को उचित ठहराया जाता है।

104. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) कहा गया है। कथनों को पढ़िए और उपयुक्त विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): भूमंडलीकरण के कारण खरीददारी को समय बिताने की एक मनोरंजक गतिविधि के रूप में प्रोत्साहित किया जाता है।
कारण (R): यह एक ऐसी 'उपभोग की संस्कृति' को बढ़ावा देता है जिसमें पैसा खर्च करना महत्वपूर्ण माना जाता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

105. 'उर्ध्वगामी व्यावसायिकों' (upwardly mobile professionals) की जीवनशैली की क्या विशेषता है?
(A) बहुत कम वेतन और अत्यधिक तनावमुक्त कार्य प्रणाली
(B) केवल पारंपरिक और स्थानीय पारिवारिक व्यवसायों में संलग्नता
(C) तनावपूर्ण कार्य अनुसूची और उच्च वेतन-भत्तों की जीवनशैली
(D) उपभोक्ता उद्योगों और विलासिता के उत्पादों से पूर्ण परहेज

106. निम्नलिखित कथनों को पढ़िए:
1. यह केवल एक आर्थिक प्रक्रिया है।
2. यह सूचना और संचार प्रौद्योगिकी द्वारा आगे बढ़ा है।
3. इसके राजनीतिक और सांस्कृतिक आयाम भी हैं।
4. इसका प्रभाव सभी के लिए समान रूप से लाभकारी है।
5. यह एक बिल्कुल नई घटना है जिसका कोई ऐतिहासिक पूर्ववृत्त नहीं है।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 4 और 5
(D) केवल 2, 3 और 5

107. "चीनी और कोरियाई रेशम के धागे ने बिहार की रेशम कातने वाली औरतों का धंधा चौपट कर दिया।" इस घटना का मुख्य कारण क्या था?
(A) भारतीय धागे की गुणवत्ता में कमी।
(B) भारतीय औरतों ने काम करना बंद कर दिया।
(C) सरकार ने रेशम उद्योग पर प्रतिबंध लगा दिया।
(D) नया धागा सस्ता था और उसमें चमक थी।

108. 'कूपमंडूक' की नीतिकथा का निहितार्थ क्या है?
(A) बाहरी दुनिया के बारे में जानना व्यर्थ है।
(B) अलगाव और संकीर्णता से बचना चाहिए।

165. इस अनुच्छेद का केंद्रीय विषय क्या है?
(A) भूमंडलीकरण के युग में राष्ट्र-राज्य की बदलती राजनीतिक और आर्थिक भूमिका।
(B) भूमंडलीकरण का सांस्कृतिक प्रभाव।
(C) अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं का इतिहास।
(D) भारत में निजीकरण की सफलता की कहानी।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) में क्रांति को समकालीन भूमंडलीकरण का एक प्रमुख चालक माना जाता है, लेकिन इसके लाभों का वितरण असमान रहा है, जिससे 'डिजिटल विभाजन' (Digital Divide) की अवधारणा को जन्म मिला है। डिजिटल विभाजन से तात्पर्य उन लोगों और क्षेत्रों के बीच की खाई से है जिनकी सूचना प्रौद्योगिकी तक प्रभावी पहुँच है और जिनकी नहीं है। यह विभाजन कई स्तरों पर मौजूद है: वैश्विक स्तर पर (विकसित और विकासशील देशों के बीच), राष्ट्रीय स्तर पर (शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच), और सामाजिक स्तर पर (विभिन्न सामाजिक-आर्थिक समूहों, लिंग, आयु और शिक्षा स्तर के लोगों के बीच)। भारत में, शहरी केंद्रों में इंटरनेट और mobile फोन की पैठ तेजी से बढ़ी है, जिसने ई-कॉमर्स, ऑनलाइन शिक्षा और डिजिटल बैंकिंग जैसे क्षेत्रों को बढ़ावा दिया है। हालाँकि, ग्रामीण और दूरदराज के इलाकों में विश्वसनीय कनेक्टिविटी, बिजली की कमी, डिजिटल साक्षरता का अभाव और लागत जैसी बाधाओं के कारण यह पहुँच अभी भी सीमित है। यह विभाजन केवल प्रौद्योगिकी तक पहुँच का मामला नहीं है, बल्कि इसका उपयोग करके आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक अवसरों का लाभ उठाने की क्षमता का भी है। जो लोग इस विभाजन के 'गलत' पक्ष में हैं, वे शिक्षा, रोजगार, स्वास्थ्य सेवाओं और नागरिक भागीदारी के नए अवसरों से वंचित रह जाते हैं, जिससे मौजूदा सामाजिक असमानताएँ और गहरा सकती हैं।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. 'डिजिटल विभाजन' की अवधारणा का सबसे अच्छा वर्णन क्या है?
(A) सॉफ्टवेयर और हार्डवेयर के बीच का अंतर।
(B) सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तक पहुँच और उपयोग में असमानता।
(C) विभिन्न कंप्यूटर प्रोग्रामिंग भाषाओं के बीच का अंतर।
(D) एनालॉग और डिजिटल सिग्नल के बीच का अंतर।

167. स्रोत के अनुसार, भारत में डिजिटल विभाजन का एक प्रमुख कारण क्या है?
(A) शहरी क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी की कमी।
(B) ग्रामीण क्षेत्रों में कनेक्टिविटी, बिजली और डिजिटल साक्षरता का अभाव।
(C) मोबाइल फोन की उच्च लागत।
(D) लोगों की प्रौद्योगिकी में रुचि की कमी।

168. अनुच्छेद यह बताता है कि डिजिटल विभाजन केवल प्रौद्योगिकी तक पहुँच के बारे में नहीं है। इसका और क्या अर्थ है?
(A) इसका अर्थ प्रौद्योगिकी से उत्पन्न अवसरों का लाभ उठाने की क्षमता भी है।
(B) इसका अर्थ प्रौद्योगिकी के निर्माण की क्षमता भी है।
(C) इसका अर्थ केवल मनोरंजन के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना है।
(D) इसका अर्थ प्रौद्योगिकी के लिए भुगतान करने की इच्छा है।

169. डिजिटल विभाजन का संभावित सामाजिक परिणाम क्या हो सकता है?
(A) यह सामाजिक समानता को बढ़ावा देता है।
(B) यह सभी के लिए समान अवसर पैदा करता है।
(C) यह मौजूदा सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को और गहरा कर सकता है।
(D) इसका समाज पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

170. इस स्रोत का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) भारत में ई-कॉमर्स की अभूतपूर्व सफलता और तकनीकी प्रगति का सार्वजनिक रूप से जश्न मनाना।
(B) यह तर्क प्रस्तुत करना कि आधुनिक प्रौद्योगिकी समाज की सभी समस्याओं का एकमात्र समाधान है।
(C) शहरी और ग्रामीण जीवन प्रणालियों के बीच एक साधारण आर्थिक और सामाजिक तुलना प्रस्तुत करना।
(D) 'डिजिटल विभाजन' की अवधारणा, इसके विभिन्न क्षेत्रीय आयामों और संभावित परिणामों की व्याख्या करना।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भूमंडलीकरण ने भारत में, विशेष रूप से शहरी मध्य वर्ग के बीच, 'उपभोग की संस्कृति' (Culture of Consumption) के उदय को तीव्र किया है। आर्थिक उदारीकरण ने वैश्विक ब्रांडों और उत्पादों की एक विस्तृत श्रृंखला को भारतीय बाजार में उपलब्ध कराया है, और शॉपिंग मॉल, मल्टीप्लेक्स और थीम आधारित रेस्तरां जैसे नए खुदरा स्थानों के प्रसार ने खरीदारी को केवल एक आवश्यकता से बदलकर एक अवकाश गतिविधि (leisure activity) बना दिया है। विज्ञापन और मीडिया इस संस्कृति को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो उपभोग को एक निश्चित जीवन शैली, सामाजिक प्रतिष्ठा और आधुनिक पहचान से जोड़ते हैं। वैश्विक ब्रांडों का उपभोग अक्सर वैश्विक नागरिकता में भागीदारी के प्रतीक के रूप में देखा जाता है। इस प्रक्रिया ने मध्यवर्गीय पहचान को नया आकार दिया है, जहाँ व्यक्तिगत सफलता और सामाजिक स्थिति को अक्सर उपभोग के पैटर्न के माध्यम से प्रदर्शित किया जाता है। हालाँकि, यह संस्कृति विरोधाभासों से रहित नहीं है। यह एक ओर आकांक्षाओं को जन्म देती है, तो दूसरी ओर क्रेडिट-संचालित उपभोग के माध्यम से ऋणग्रस्तता और सामाजिक दबाव भी पैदा करती है। इसके अलावा, यह अक्सर पारंपरिक मूल्यों, जैसे मितव्ययिता और बचत, के साथ तनाव पैदा करती है, और

एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण करती है जिसकी पहचान और खुशी तेजी से बाजार द्वारा संचालित होती है। यह उपभोग-केंद्रित जीवन शैली पर्यावरणीय चिंताओं को भी जन्म देती है, क्योंकि यह उपयोग-और-फेंको (use-and-throw) की मानसिकता को बढ़ावा देती है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. स्रोत के अनुसार, 'उपभोग की संस्कृति' के उदय में किस कारक ने योगदान दिया है?
(A) पारंपरिक हस्तशिल्प को बढ़ावा देना।
(B) बचत और मितव्ययिता के पारंपरिक मूल्यों पर जोर देना।
(C) वैश्विक ब्रांडों की उपलब्धता और शॉपिंग मॉल जैसे नए खुदरा स्थानों का प्रसार।
(D) बाजार से वैश्विक ब्रांडों को हटाना।

172. उपभोग की संस्कृति में विज्ञापन और मीडिया की क्या भूमिका है?
(A) वे लोगों को कम खर्च करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
(B) वे उपभोग को सामाजिक प्रतिष्ठा और आधुनिक पहचान से जोड़कर इसे बढ़ावा देते हैं।
(C) वे केवल उत्पादों के बारे में तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करते हैं।
(D) उनकी कोई महत्वपूर्ण भूमिका नहीं है।

173. अनुच्छेद के अनुसार, शहरी मध्य वर्ग के लिए वैश्विक ब्रांडों का उपभोग अक्सर क्या प्रतीक है?
(A) परंपरा का पालन।
(B) मितव्ययिता का प्रदर्शन।
(C) स्थानीय उत्पादों का समर्थन।
(D) वैश्विक नागरिकता में भागीदारी।

174. इस अनुच्छेद में उपभोग की संस्कृति का कौन सा नकारात्मक परिणाम बताया गया है?
(A) ऋणग्रस्तता, सामाजिक दबाव और पारंपरिक मूल्यों के साथ तनाव।
(B) जीवन स्तर में कमी।
(C) विकल्पों में कमी।
(D) वैश्विक बाजार से अलगाव।

175. इस अनुच्छेद का मुख्य तर्क क्या है?
(A) भूमंडलीकरण की प्रक्रिया ने केवल पारंपरिक भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को ही और अधिक मजबूत किया है।
(B) आधुनिक उपभोग की संस्कृति समाज के सभी वर्गों के लिए पूर्ण रूप से सकारात्मक और हितकारी है।
(C) भारत में 'उपभोग की संस्कृति' ने आकांक्षाओं के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय तनाव पैदा किए हैं।
(D) भारत के प्रमुख शहरों में स्थापित शॉपिंग मॉल और मल्टीप्लेक्स आर्थिक रूप से पूरी तरह असफल रहे हैं।

ANSWERS

1. (B) भूमंडलीकरण
इक्कीसवीं शताब्दी में सामाजिक परिवर्तन पर कोई भी चर्चा भूमंडलीकरण के संदर्भ के बिना अधूरी मानी जाती है। यह प्रक्रिया विश्व के विभिन्न समाजों को आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक रूप से गहराई से जोड़ती है। इसके व्यापक प्रभावों ने स्थानीय जीवन और वैश्विक संबंधों के बीच की सीमाओं को धुंधला कर दिया है, जिससे यह आधुनिक समाजशास्त्रीय अध्ययन का एक अनिवार्य हिस्सा बन गया है।

2. (A) व्यक्ति-समाज, सूक्ष्म-स्थूल एवं स्थानीय-भूमंडलीय के बीच
समाजशास्त्र भूमंडलीकरण को समझने के लिए समाजशास्त्रीय कल्पना शक्ति का उपयोग करता है। यह व्यक्ति और समाज, सूक्ष्म और स्थूल स्तरों, तथा स्थानीय और भूमंडलीय संदर्भों के बीच के जटिल संबंधों का विश्लेषण करता है। इस दृष्टिकोण के माध्यम से यह समझा जा सकता है कि वैश्विक घटनाएँ व्यक्तिगत जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं और स्थानीय क्रियाएँ किस प्रकार वैश्विक प्रवृत्तियों को आकार देती हैं।

3. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भूमंडलीकरण का प्रभाव अत्यंत व्यापक है और यह समाज के हर वर्ग को गहराई से प्रभावित करता है। इसके परिणाम विरोधाभासी हो सकते हैं क्योंकि जहाँ कुछ लोगों के लिए यह नए आर्थिक अवसर और प्रगति के द्वार खोलता है, वहीं दूसरों के लिए पारंपरिक आजीविका की हानि का कारण बन सकता है। इसलिए, इसके प्रभावों की विविधता ही इसकी व्यापकता को सही ढंग से स्पष्ट करती है।

4. (D) पहली अप्रैल, 2001
भारत सरकार ने पहली अप्रैल, 2001 से आयात पर लगे सभी प्रकार के परिमाणात्मक प्रतिबंधों को पूरी तरह से हटा दिया था। यह निर्णय भारत की आर्थिक उदारीकरण की नीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा था। इसके परिणामस्वरूप विदेशी वस्तुओं का भारतीय बाजारों में प्रवेश सुगम हो गया, जिससे घरेलू उपभोक्ताओं के लिए विकल्पों में वृद्धि हुई और अंतर्राष्ट्रीय व्यापारिक संबंधों में नया मोड़ आया।

5. (C) मीडिया में आया आकस्मिक नाटकीय परिवर्तन
भूमंडलीकरण के सबसे स्पष्ट और प्रत्यक्ष प्रभावों में से एक मीडिया क्षेत्र में आया आकस्मिक एवं नाटकीय परिवर्तन है। उपग्रह टेलीविजन, इंटरनेट और सोशल मीडिया के प्रसार ने सूचनाओं के आदान-प्रदान के तरीके को पूरी तरह बदल दिया है। अब वैश्विक समाचार और मनोरंजन कार्यक्रम तत्काल पहुँच में हैं, जिसने सांस्कृतिक सीमाओं को पार करते हुए एक वैश्विक संचार तंत्र को सफलतापूर्वक स्थापित कर दिया है।

6. (A) P-2, Q-1, R-3, S-4
भूमंडलीकरण के कारण विभिन्न देशों के उत्पादों का वैश्विक व्यापार सरल हुआ है। चीन से रेशम का धागा, ऑस्ट्रेलिया से सेब, सूडान से सस्ता गोंद और कोरिया से नाशपाती जैसे उत्पाद भारतीय बाजारों में आसानी से उपलब्ध हैं। यह मिलान दर्शाता है कि किस प्रकार अंतरराष्ट्रीय व्यापार तंत्र ने दुनिया के विभिन्न कोनों से आने वाली वस्तुओं को हमारे स्थानीय उपभोग का हिस्सा बना दिया है।

7. (D) गाँवों, परिवारों, आंदोलनों और दफ़्तरशाही के अंतःसंबंधों का
समाजशास्त्रियों को भूमंडलीय अंतःसंबंधों को समझने के लिए गाँवों, परिवारों, सामाजिक आंदोलनों और दफ़्तरशाही जैसे विभिन्न सामाजिक आयामों के बीच के संबंधों का अध्ययन करना आवश्यक है। यह दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि वैश्विक नीतियां किस प्रकार स्थानीय सामाजिक संरचनाओं को प्रभावित करती हैं। इस तरह का अध्ययन समाज के सूक्ष्म और स्थूल पहलुओं को जोड़कर भूमंडलीकरण की समग्र और व्यावहारिक तस्वीर प्रस्तुत करता है।

8. (A) भूमंडलीकरण बेहतर विश्व के अग्रदूत के रूप में अत्यंत आवश्यक है, यह एक सर्वमान्य विचार है।
यह कहना गलत है कि भूमंडलीकरण को एक बेहतर विश्व के अग्रदूत के रूप में सर्वसम्मति से स्वीकार किया जाता है। वास्तव में, इस विषय पर समाज में गहरे मतभेद हैं। जहाँ एक पक्ष इसे प्रगति और समृद्धि का साधन मानता है, वहीं दूसरा पक्ष इसे आर्थिक असमानता बढ़ाने और स्थानीय संस्कृतियों के विनाश के लिए जिम्मेदार ठहराते हुए इसकी कड़ी आलोचना भी करता है।

9. (A) केवल 1, 2 और 4
भारत प्राचीन काल से ही विश्व के अन्य हिस्सों से रेशम मार्ग जैसे व्यापारिक रास्तों के माध्यम से जुड़ा रहा है। यह मार्ग भारत को चीन, फारस, मिस्र और रोम जैसी महान सभ्यताओं से जोड़ता था। लंबे इतिहास के दौरान दुनिया के विभिन्न हिस्सों से लोग भारत आए और यहाँ बसे। आज भी कई भारतीय समुदायों में अपने पूर्वजों के प्रवसन की यादें सुरक्षित हैं।

10. (A) अफगान
संस्कृत व्याकरण को वैज्ञानिक रूप से सुव्यवस्थित करने वाले महान विद्वान पाणिनी मूल रूप से अफगान क्षेत्र के निवासी थे। ईसापूर्व चौथी शताब्दी के आसपास उनका यह योगदान भारतीय ज्ञान परंपरा और पड़ोसी क्षेत्रों के बीच के प्राचीन संबंधों को दर्शाता है। यह तथ्य इस बात का प्रमाण है कि प्राचीन काल में भी बौद्धिक और सांस्कृतिक विनिमय भौगोलिक सीमाओं से परे सक्रिय रूप से होता था।

33. (B) फोर्डवादोत्तर (Post-Fordism)
उत्पादन की वह लचीली प्रणाली जो एक केंद्रीकृत स्थान के बजाय अलग-अलग भौगोलिक स्थानों पर उत्पादन करने पर आधारित है, उसे फोर्डवादोत्तर कहा जाता है। इसमें माँग के अनुसार उत्पादन की मात्रा और डिजाइन में बदलाव करना आसान होता है। यह व्यवस्था आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके दुनिया भर में फैले विभिन्न उत्पादन इकाइयों के बीच समन्वय स्थापित करती है, जिससे वैश्विक व्यापार अधिक कुशल बनता है।

34. (A) उत्पादन का एक भूमंडलीय संयोजन, जिसमें विभिन्न देशों से हिस्से आते हैं।
जनरल मोटर्स की पोंटियाक ली मैन्स कार का उदाहरण वैश्विक उत्पादन संयोजन का एक उत्कृष्ट नमूना है। इसके निर्माण के लिए डिजाइन, कलपुर्जे, विज्ञापन और असेंबली जैसे कार्य दुनिया के अलग-अलग देशों में किए जाते हैं। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि आधुनिक युग में कोई भी जटिल उत्पाद केवल एक देश की सीमा में नहीं बनता, बल्कि यह वैश्विक श्रम विभाजन और सहयोग का परिणाम होता है।

35. (C) नगरीय केंद्रों के मध्यवर्गीय युवाओं के लिए
भूमंडलीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी की क्रांति ने मुख्य रूप से भारत के नगरीय केंद्रों में रहने वाले शिक्षित मध्यवर्गीय युवाओं के लिए रोजगार के व्यापक और नए अवसर खोले हैं। बीपीओ, सॉफ्टवेयर विकास और अन्य सेवा क्षेत्रों में इन युवाओं की भारी माँग बढ़ी है। हालांकि, समाज के अन्य वर्गों, जैसे ग्रामीण मजदूरों और पारंपरिक कारीगरों को इस प्रक्रिया से अपेक्षाकृत बहुत कम सीधा लाभ प्राप्त हुआ है।

36. (D) इसने भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को और तेज़ कर दिया।
भूतपूर्व समाजवादी विश्व के विघटन ने भूमंडलीकरण की प्रक्रिया को और अधिक तीव्र कर दिया। सोवियत संघ के पतन के बाद, कई पूर्व समाजवादी देशों ने बाजार आधारित अर्थव्यवस्था को अपनाया और वैश्विक व्यापार तंत्र में शामिल हो गए। इस परिवर्तन ने पूँजीवाद के विस्तार के लिए नए बाजार और अवसर प्रदान किए, जिससे विश्व स्तर पर आर्थिक एकीकरण की गति में अप्रत्याशित वृद्धि दर्ज की गई।

37. (C) नव-उदारवादी आर्थिक उपाय
नव-उदारवादी आर्थिक उपाय उन नीतियों को कहते हैं जो मुक्त उद्यम और बाजार की शक्तियों के निर्बाध शासन में विश्वास रखते हैं। इनका तर्क है कि अर्थव्यवस्था में सरकारी हस्तक्षेप न्यूनतम होना चाहिए और निजी क्षेत्र को अधिकतम स्वतंत्रता मिलनी चाहिए। यह दृष्टिकोण मानता है कि बाजार की प्रतिस्पर्धा ही संसाधनों के कुशल आवंटन और आर्थिक विकास को सुनिश्चित करने का सबसे प्रभावी और न्यायसंगत तरीका है।

38. (A) केवल 1 और 2
नव-उदारवादी नीतियां सरकारी विनियमन और आर्थिक सहायता की आलोचना करती हैं, जबकि समावेशात्मक भूमंडलीकरण का विचार समाज के सभी वर्गों को साथ लेकर चलने की वकालत करता है। यह मानना गलत है कि वर्तमान स्वरूप के अलावा भूमंडलीकरण का कोई अन्य विकल्प संभव नहीं है। वर्तमान प्रक्रिया में आर्थिक और राजनीतिक दोनों ही प्रकार की दूरदर्शिता शामिल है, जो इसे एक बहुआयामी वैश्विक घटना बनाती है।

39. (D) विश्व व्यापार संगठन (डब्ल्यू.टी.ओ.)
यूरोपीय संघ, आसियान और सार्क जैसे संगठन क्षेत्रीय राजनीतिक और आर्थिक सहयोग के उदाहरण हैं जो विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों के राष्ट्रों को जोड़ते हैं। इसके विपरीत, विश्व व्यापार संगठन एक वैश्विक संस्था है जिसका कार्य पूरी दुनिया में व्यापारिक नियमों का निर्धारण और विनियमन करना है। यह किसी विशेष क्षेत्र तक सीमित न होकर वैश्विक स्तर पर सदस्य देशों के व्यापारिक हितों का समन्वय करता है।

40. (A) IGOs सरकारों द्वारा स्थापित होते हैं, जबकि INGOs स्वतंत्र संगठन होते हैं।
अंतर्राष्ट्रीय सरकारी संगठन और अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन के बीच मुख्य अंतर उनकी स्थापना और सदस्यता का आधार है। IGOs का निर्माण विभिन्न देशों की सरकारों द्वारा संधियों के माध्यम से किया जाता है, जैसे संयुक्त राष्ट्र। वहीं, INGOs स्वतंत्र संगठन होते हैं जो नागरिक समाज द्वारा संचालित होते हैं, जैसे रेड क्रॉस। ये दोनों संगठन वैश्विक स्तर पर विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक मुद्दों पर सक्रिय रहते हैं।

41. (C) ग्रीनपीस
ग्रीनपीस एक प्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन है जो पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में वैश्विक स्तर पर कार्य करता है। विश्व बैंक, संयुक्त राष्ट्र और अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष जैसे अन्य विकल्प सरकारी स्तर पर स्थापित अंतर्राष्ट्रीय संगठन हैं। ग्रीनपीस जैसे स्वतंत्र संगठन नागरिक समाज की आवाज़ बुलंद करते हैं और सरकारों एवं निगमों की उन नीतियों को चुनौती देते हैं जो पर्यावरण या मानवाधिकारों के लिए हानिकारक होती हैं।

42. (A) सस्ती मजदूरी की लागत
नाइके कंपनी द्वारा अपने उत्पादन केंद्रों को एक देश से दूसरे देश में स्थानांतरित करने का प्राथमिक कारण सस्ती मजदूरी की खोज थी। लाभ को अधिकतम करने के लिए कंपनियाँ उन देशों की तलाश करती हैं जहाँ उत्पादन लागत न्यूनतम हो। जब किसी देश में आर्थिक विकास के साथ श्रमिकों के वेतन में वृद्धि होती है, तो ये निगम उत्पादन को कम लागत वाले दूसरे विकासशील राष्ट्रों में ले जाते हैं।

43. (D) भूमंडलीय के साथ स्थानीय का मिश्रण।
'संस्कृति का भूस्थानीकरण' या 'ग्लोबलाइजेशन' का अर्थ भूमंडलीय प्रभावों और स्थानीय परंपराओं का आपस में मिलना है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वैश्विक उत्पाद या विचार स्थानीय स्वाद और संस्कृति के अनुसार अनुकूलित किए जाते हैं। इसके परिणामस्वरूप एक नवीन सांस्कृतिक स्वरूप उभरता है जो न तो पूरी तरह से विदेशी होता है और न ही पूरी तरह स्थानीय, बल्कि दोनों का एक संतुलित मिश्रण होता है।

22. (B) केवल 1, 3 और 4
पारराष्ट्रीय निगम ऐसी कंपनियाँ हैं जो एक से अधिक देशों में उत्पादन करती हैं और भूमंडलीय बाजारों की ओर उन्मुख होती हैं। कोकाकोला, जनरल मोटर्स और मित्सुबिशी इसके प्रमुख उदाहरण हैं। यद्यपि इनका एक स्पष्ट राष्ट्रीय आधार होता है, फिर भी इनकी व्यापारिक गतिविधियाँ वैश्विक होती हैं। यह कहना गलत है कि ये केवल विशाल ही हो सकते हैं या सभी भारतीय निगम पारराष्ट्रीय हैं।

23. (D) भाररहित अर्थव्यवस्था या ज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था
वह अर्थव्यवस्था जिसके उत्पाद मुख्य रुप से सूचना और ज्ञान पर आधारित होते हैं, उसे भाररहित या ज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था कहा जाता है। इसमें कंप्यूटर सॉफ्टवेयर, मीडिया और सूचना सेवाओं जैसे उत्पादों का महत्व होता है, जो भौतिक रूप से भारी नहीं होते। इस प्रणाली में भौतिक श्रम के बजाय बौद्धिक क्षमता, डिजाइन और नवीनता आर्थिक विकास के सबसे महत्वपूर्ण कारक बन जाते हैं।

24. (A) न्यूयार्क, टोकियो, लंदन
न्यूयार्क, टोकियो और लंदन को विश्व के तीन प्रमुख वित्तीय व्यापार केंद्रों के रूप में मान्यता प्राप्त है। इन शहरों में स्थित शेयर बाजार और वित्तीय संस्थान पूरी दुनिया की आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित और प्रभावित करते हैं। आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से ये केंद्र निरंतर एक-दूसरे से जुड़े रहते हैं, जिससे वैश्विक पूँजी का प्रवाह बिना किसी बाधा के चौबीसों घंटे संचालित होता रहता है।

25. (C) प्रौद्योगिकी के उपयोग में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच असमानता।
भारत में 'डिजिटल विभाजन' का तात्पर्य उस असमानता से है जहाँ शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी तक पहुँच में भारी अंतर पाया जाता है। शहरों में जहाँ इंटरनेट और डिजिटल उपकरण सुलभ हैं, वहीं कई ग्रामीण क्षेत्र बुनियादी सुविधाओं के अभाव में इनसे वंचित हैं। यह विभाजन शिक्षा, रोजगार और सूचना प्राप्त करने के अवसरों में सामाजिक असमानता को और अधिक गहरा करता है।

26. (B) P-2, Q-3, R-1, S-4
पारराष्ट्रीय निगम एक से अधिक देशों में उत्पादन करते हैं, जबकि उदारीकरण का अर्थ व्यापारिक नियमों को कम करना है। ज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था सूचना आधारित उत्पादों पर केंद्रित होती है, और डिजिटल विभाजन प्रौद्योगिकी तक पहुँच में विद्यमान असमानता को दर्शाता है। यह मिलान आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था के विभिन्न पहलुओं और उनके बीच के अंतर को स्पष्ट रूप से परिभाषित करने में मदद करता है।

27. (D) 30 लाख
वर्ष 2000 तक भारत में इंटरनेट ग्राहकों की संख्या बढ़कर लगभग 30 लाख हो गई थी। यद्यपि आज की तुलना में यह संख्या कम लग सकती है, लेकिन उस समय के लिहाज से यह भारत में डिजिटल क्रांति की शुरुआत का एक महत्वपूर्ण संकेत था। इस बढ़ती पहुँच ने भविष्य में सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में भारत की सुदृढ़ उपस्थिति और व्यापक सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों की आधारशिला रखने का कार्य किया।

28. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भारत में डिजिटल विभाजन आज भी एक वास्तविकता है क्योंकि देश के ग्रामीण इलाके तकनीकी सुविधाओं के मामले में पिछड़ रहे हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में अनिश्चित बिजली आपूर्ति, निरक्षरता और टेलीफोन कनेक्शन की कमी जैसे कारक इंटरनेट की पहुँच में बड़ी बाधा उत्पन्न करते हैं। यही कारण है कि शहरी क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण आबादी अभी भी डिजिटल सेवाओं का पूरा लाभ उठाने में असमर्थ है।

29. (C) नौवाँ
वर्ष 1999 तक भारत का दूरसंचार नेटवर्क अपनी क्षमता और विस्तार के मामले में विश्व स्तर पर नौवें स्थान पर पहुँच गया था। यह उपलब्धि भारत के बुनियादी ढाँचे के विकास में एक मील का पत्थर थी। दूरसंचार के इस तीव्र विस्तार ने न केवल व्यापारिक गतिविधियों को सुगम बनाया, बल्कि दूर-दराज के क्षेत्रों को भी संचार के मुख्य माध्यम से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

30. (D) यह पारिवारिक सदस्यों से संपर्क की सामाजिक-सांस्कृतिक आवश्यकता पूरी करता है
भारत में दूरसंचार के विस्तार का गहरा सामाजिक-सांस्कृतिक महत्व है क्योंकि यह दूर रहने वाले परिवार के सदस्यों के बीच निरंतर संपर्क बनाए रखने में मदद करता है। भारतीय समाज में पारिवारिक घनिष्ठता अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है, और मोबाइल फोन जैसे उपकरणों ने भौगोलिक दूरियों के बावजूद रिश्तों को जीवंत बनाए रखने की सामाजिक आवश्यकता को प्रभावी ढंग से पूरा करने का कार्य किया है।

31. (A) विकसित से विकासशील देशों में नियमित उत्पादन का स्थानांतरण
'एक नया अंतर्राष्ट्रीय श्रम-विभाजन' उस प्रक्रिया को दर्शाता है जिसमें विकसित देशों की कंपनियाँ अपने नियमित उत्पादन कार्यों को विकासशील देशों में स्थानांतरित कर देती हैं। इसका मुख्य कारण विकासशील देशों में सस्ती श्रम लागत और अनुकूल व्यापारिक नीतियाँ होती हैं। यह व्यवस्था वैश्विक स्तर पर उत्पादन को अधिक लाभकारी बनाती है, लेकिन इससे श्रमिकों की सुरक्षा और रोजगार की स्थिरता पर अक्सर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

32. (A) जापान → दक्षिण कोरिया → थाईलैंड/इंडोनेशिया
नाइके कंपनी ने उत्पादन लागत कम करने के लिए अपने केंद्रों को समय-समय पर स्थानांतरित किया है। इसकी शुरुआत जापान से हुई, फिर कम मजदूरी की तलाश में उत्पादन दक्षिण कोरिया ले जाया गया। जब वहां लागत बढ़ी, तो इसे थाईलैंड और इंडोनेशिया जैसे दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों में स्थानांतरित कर दिया गया। यह क्रम वैश्विक पूँजी की गतिशीलता और सस्ती श्रम शक्ति की खोज को दर्शाता है।

सकती है और यह ज्ञान व्यावसायिक लाभ का एक औजार बनकर रह सकता है।

76. (B) इसका प्रभाव समाज के विभिन्न हिस्सों पर भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है।
भूमंडलीकरण का प्रभाव समाज के सभी वर्गों पर एक समान नहीं पड़ता, बल्कि यह अत्यधिक असमान और विविधतापूर्ण है। जहाँ शिक्षित शहरी मध्यवर्ग के लिए इसने रोजगार और उपभोग के नए अवसर पैदा किए हैं, वहीं ग्रामीण बुनकरों और छोटे कारीगरों के लिए यह अक्सर आजीविका के संकट का कारण बना है। इसके परिणामों की यह भिन्नता ही इसे समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए एक जटिल और चुनौतीपूर्ण विषय बनाती है।

77. (C) यह सदियों पहले भारत को कई महान सभ्यताओं से जोड़ता था।
प्रसिद्ध 'रेशम मार्ग' भूमंडलीय अंतः क्रियाओं का एक प्राचीन और अत्यंत महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रमाण है। इसने सदियों पहले भारत को चीन, मध्य एशिया और यूरोप की महान सभ्यताओं के साथ व्यापारिक और सांस्कृतिक रुप से जोड़ा था। यह मार्ग न केवल रेशम और मसालों के व्यापार के लिए प्रसिद्ध था, बल्कि इसके माध्यम से विचारों, धर्मों और विभिन्न कलाओं का भी वैश्विक स्तर पर आदान-प्रदान संभव हुआ था।

78. (C) केवल 1, 2, 3 और 4
औपनिवेशिक काल के दौरान हुए बड़े प्रवसन, जैसे अफ्रीकी दासों का व्यापार और भारतीय गिरमिटिया मजदूरों का देशांतरण, आधुनिक पूँजीवाद की व्यवस्था के अभिन्न अंग थे। यूरोपीय लोगों का भी अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में बड़े पैमाने पर स्थानांतरण हुआ। यह पूरी प्रक्रिया शांतिपूर्ण या स्वैच्छिक नहीं थी, बल्कि इसमें अक्सर बल प्रयोग, शोषण और मजबूरी शामिल थी। इसलिए, कथन 5 को छोड़कर अन्य सभी ऐतिहासिक तथ्य पूर्णतः सत्य हैं।

79. (A) भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनों से
स्वतंत्र भारत द्वारा अपनाया गया भूमंडलीय दृष्टिकोण मुख्य रुप से उसे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलनों की विरासत से प्राप्त हुआ था। स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं का मानना था कि भारत को दुनिया से अलग-थलग रहने के बजाय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक सक्रिय और सम्मानित भूमिका निभानी चाहिए। इसी सोच ने आजादी के बाद भारत की विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय सहयोग की दिशा को आकार देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

80. (B) अब उत्पादन, संचार और पूँजी के संगठन में गहरे बदलाव हुए हैं
वर्तमान भूमंडलीकरण और प्राचीन काल की अंतःसंबद्धता में मुख्य अंतर उत्पादन की गति, संचार के साधनों और पूँजी के संगठन के स्वरुप में आया गहरा बदलाव है। आज सूचना प्रौद्योगिकी के कारण वैश्विक व्यापार और वित्तीय लेन-देन क्षण भर में संपन्न हो जाते हैं। उत्पादन प्रक्रियाएँ अब कई देशों में फैली हुई हैं, जिससे विभिन्न राष्ट्रों के बीच परस्पर निर्भरता पहले की तुलना में कहीं अधिक सघन और जटिल हो गई है।

81. (B) क्योंकि यह भारतीय बाजार और व्यवसायों को बाहरी प्रतिस्पर्धा से बचाती थी।
वर्ष 1991 से पूर्व भारत की आर्थिक नीति को 'संरक्षणवादी' इसलिए कहा जाता था क्योंकि इसका मुख्य उद्देश्य घरेलू उद्योगों को विदेशी कंपनियों और वैश्विक प्रतिस्पर्धा से सुरक्षा प्रदान करना था। इसके तहत आयात पर उच्च शुल्क लगाए जाते थे और कई विदेशी वस्तुओं के प्रवेश पर कड़े प्रतिबंध थे। यह नीति स्वदेशी व्यवसायों को आत्मनिर्भर बनाने और उन्हें प्रारंभिक विकास के लिए सुरक्षित वातावरण देने की अवधारणा पर आधारित थी।

82. (A) संरचनात्मक समायोजन की नीतियां अपनाना।
अंतरराष्ट्रीय मुद्राकोष जैसी वित्तीय संस्थाएँ जब किसी देश को ऋण प्रदान करती हैं, तो वे अक्सर 'संरचनात्मक समायोजन' की शर्तें लगाती हैं। इन नीतियों के तहत संबंधित देश को अपनी अर्थव्यवस्था में बाजार-आधारित सुधार करने, सरकारी सब्सिडी कम करने और निजीकरण को बढ़ावा देने के लिए मजबूर होना पड़ता है। इन शर्तो का उद्देश्य अर्थव्यवस्था को आर्थिक रुप से स्थिर और अंतरराष्ट्रीय मानकों के अनुसार प्रतिस्पर्धी बनाना होता है।

83. (C) भूमंडलीय बाजारों से भूमंडलीय मुनाफा कमाना।
पारराष्ट्रीय निगमों का प्राथमिक और मुख्य उद्देश्य भूमंडलीय बाजारों में अपनी पहुँच बनाकर अधिकतम वैश्विक मुनाफा अर्जित करना होता है। ये कंपनियाँ उन देशों में उत्पादन करती हैं जहाँ लागत कम हो और उन देशों में माल बेचती हैं जहाँ माँग अधिक हो। इनकी व्यापारिक रणनीतियाँ किसी एक राष्ट्र के हित के बजाय संपूर्ण वैश्विक बाजार की लाभप्रदता और विस्तार पर केंद्रित होती हैं।

84. (D) 'इलेक्ट्रॉनिक' मुद्रा या निधि का
'इलेक्ट्रॉनिक अर्थव्यवस्था' में बैंक खातों और वित्तीय संस्थानों के माध्यम से 'इलेक्ट्रॉनिक' मुद्रा या निधि का अंतरराष्ट्रीय स्तर पर तीव्र लेन-देन होता है। इसमें केवल एक बटन दबाकर अरबों डॉलर एक देश से दूसरे देश में स्थानांतरित किए जा सकते हैं। इस व्यवस्था ने वित्तीय पूँजी के प्रवाह को भौतिक सीमाओं से मुक्त कर दिया है, जिससे वैश्विक शेयर बाजारों और अर्थव्यवस्थाओं के बीच जुड़ाव अत्यंत गहरा हो गया है।

85. (A) 1, 3, 2, 4
ऐतिहासिक दृष्टि से सबसे पहले ईसापूर्व चौथी शताब्दी में पाणिनी ने संस्कृत व्याकरण को सुव्यवस्थित किया। इसके बाद प्राचीन काल में ही रेशम मार्ग के माध्यम से व्यापार फला-फूला। सातवीं शताब्दी में चीनी विद्वान यी जिंग ने भारत की यात्रा की, और बहुत बाद में आधुनिक युग में यूरोपीय लोगों का अमेरिका में बड़े पैमाने पर प्रवसन हुआ। यह कालानुक्रम भारत और विश्व के प्राचीन संपर्कों की निरंतरता को दर्शाता है।

86. (B) विदेशी निवेशकों द्वारा अचानक स्टॉक खरीदने या बेचने के कारण
भारत के स्टॉक एक्सचेंज में होने वाले तीव्र उतार-चढ़ाव का एक प्रमुख कारण विदेशी संस्थागत निवेशकों की गतिविधियाँ

44. (B) एम.टी.वी. चैनल द्वारा भारतीय भाषाओं का प्रयोग करना।
एम.टी.वी. चैनल द्वारा भारतीय दर्शकों को आकर्षित करने के लिए हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग करना भूस्थानीकरण का एक जीवंत उदाहरण है। विदेशी कंपनियाँ जब भारत में अपना विस्तार करती हैं, तो वे अपनी पहचान पूरी तरह खोए बिना स्थानीय प्राथमिकताओं को अपनाती हैं। यह रणनीति उन्हें भारतीय समाज में बेहतर स्वीकृति दिलाने और अपने व्यापारिक हितों को प्रभावी ढंग से साधने में मदद करती है।

45. (C) संस्कृति का भूस्थानीकरण
संगीत के क्षेत्र में 'फ्यूज़न म्यूज़िक' और 'भाँगड़ा पॉप' संस्कृति के भूस्थानीकरण के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। इनमें पश्चिमी संगीत की धुनों और वाद्ययंत्रों को भारतीय पारंपरिक लोक संगीत के साथ जोड़ा जाता है। यह मिश्रण दर्शाता है कि वैश्विक सांस्कृतिक तत्व किस प्रकार स्थानीय शैलियों के साथ मिलकर एक नया और लोकप्रिय स्वरूप ग्रहण करते हैं, जो आधुनिक समाज की बदलती रुचियों को प्रतिबिंबित करता है।

46. (A) कथन 1 और 2 दोनों सही हैं।
सांस्कृतिक परंपरा के नाम पर अक्सर महिलाओं के अधिकारों का हनन किया जाता है और भेदभावपूर्ण व्यवहारों को सही ठहराया जाता है। दूसरी ओर, भारत की मजबूत लोकतांत्रिक परंपरा ने संस्कृति को अधिक समावेशी और आधुनिक बनाने में योगदान दिया है। यह संतुलन दर्शाता है कि जहाँ कुछ पारंपरिक तत्व प्रतिगामी हो सकते हैं, वहीं लोकतांत्रिक मूल्य संस्कृति को प्रगतिशील और न्यायसंगत दिशा में बदलने का सामर्थ्य रखते हैं।

47. (A) खरीददारी को समय बिताने की गतिविधि के रूप में प्रोत्साहित किया जाता है।
उपभोग की संस्कृति की एक प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें खरीददारी या शॉपिंग को केवल जरूरत पूरी करने के बजाय मनोरंजन और समय बिताने के एक तरीके के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। विज्ञापन और मॉल की संस्कृति लोगों को निरंतर नई चीजें खरीदने के लिए प्रेरित करती है। इस व्यवस्था में व्यक्ति की सामाजिक स्थिति और खुशी अक्सर उसके द्वारा उपभोग की जाने वाली वस्तुओं से मापी जाती है।

48. (A) 2, 1, 4, 3
भारत में सेलफोन का सफर पहले अविश्वास से शुरु हुआ, जब इसे केवल संदिग्ध तत्वों के उपयोग का साधन माना जाता था। बाद में यह एक विलासिता की वस्तु बना, फिर भारत दुनिया का चौथा सबसे बड़ा उपभोक्ता राष्ट्र बना और अंततः यह दैनिक जीवन का अनिवार्य हिस्सा बन गया। यह क्रमिक विकास तकनीकी स्वीकार्यता और सूचना क्रांति के समाज पर व्यापक प्रभाव को स्पष्ट रूप से दर्शाता है।

49. (B) उत्पादकता और प्रतियोगितात्मकता को बढ़ावा देना।
निगम संस्कृति का मुख्य उद्देश्य कार्यस्थल पर ऐसी परंपराएँ और माहौल विकसित करना है जिससे कर्मचारियों की उत्पादकता और कंपनी की प्रतिस्पर्धात्मकता में वृद्धि हो। यह प्रबंधन का एक ऐसा तरीका है जो कर्मचारियों में कंपनी के प्रति वफादारी और समूह एकता की भावना पैदा करता है। इस संस्कृति के माध्यम से कंपनियाँ अपने व्यावसायिक लक्ष्यों को अधिक कुशलता और प्रभावी ढंग से प्राप्त करने का प्रयास करती हैं।

50. (A) उर्ध्वगामी व्यावसायिकों (प्रोफेशनलों) का एक वर्ग
बहुराष्ट्रीय कंपनियों और सूचना प्रौद्योगिकी की प्रगति ने भारतीय महानगरों में 'उर्ध्वगामी व्यावसायिकों' के एक नए प्रभावशाली वर्ग को जन्म दिया है। यह वर्ग उच्च तकनीकी शिक्षा प्राप्त है और उच्च वेतन एवं भत्तों वाली जीवनशैली जीता है। इन प्रोफेशनलों की उपभोग की प्रवृत्तियाँ और कार्य संस्कृति वैश्विक मानकों से प्रभावित हैं, जो भारतीय समाज के बदलते आर्थिक और सामाजिक ढांचे का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

51. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भूमंडलीकरण ने भारत के पारंपरिक ज्ञान और शिल्पों के लिए गंभीर संकट पैदा कर दिया है। बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ अक्सर भारतीय धरोहर जैसे हल्दी, तुलसी और बासमती चावल के उपयोग को पेटेंट कराने का प्रयास करती हैं, जिससे यह स्वदेशी ज्ञान व्यावसायिक लाभ का साधन बन जाता है। इस तरह के प्रयासों से हमारी प्राचीन साहित्यिक और औषधीय ज्ञान व्यवस्थाओं के स्वतंत्र अस्तित्व पर खतरा मंडराने लगा है।

52. (D) उपभोक्ता रुचि में बदलाव और तकनीकी निवेश में असमर्थता
आंध्र प्रदेश के सरसिला और डुबक्का गाँवों के बुनकरों की आत्महत्याओं का मुख्य कारण तेजी से बदलती उपभोक्ता रुचियाँ और आधुनिक तकनीक में निवेश करने में उनकी विफलता थी। वैश्विक बाजार में सस्ते और मशीनी कपड़ों की उपलब्धता के कारण पारंपरिक हस्तकरघा उत्पादों की माँग घट गई। आर्थिक तंगी और भविष्य की अनिश्चितता ने इन कुशल कारीगरों को अत्यंत निराशापूर्ण स्थिति में धकेल दिया, जिससे यह दुखद परिणाम सामने आया।

53. (C) टेलीविजन और रेडियो जैसे मनोरंजन के नए साधनों के प्रसार के कारण
डोमबारी जैसे पारंपरिक मनोरंजनकर्ता समुदायों की आजीविका टेलीविजन, रेडियो और इंटरनेट जैसे मनोरंजन के आधुनिक साधनों के व्यापक प्रसार के कारण संकट में पड़ गई है। लोग अब सड़क पर होने वाले करतबों के बजाय घर बैठे डिजिटल मनोरंजन को अधिक पसंद करते हैं। इस सांस्कृतिक बदलाव ने इन समुदायों की कला को अप्रासंगिक बना दिया है, जिससे उनके सामने जीविकोपार्जन की एक गंभीर समस्या उत्पन्न हो गई है।

54. (B) P-2, Q-1, R-3, S-4
विश्व व्यापार संगठन एक सरकारी अंतरराष्ट्रीय निकाय है, जबकि ग्रीनपीस एक स्वतंत्र गैर-सरकारी संगठन है। भूस्थानीकरण का उदाहरण मैक्डोनाल्ड्स द्वारा अपने मेनू में स्थानीय पसंद के अनुसार शाकाहारी बदलाव करना है, और

97. (B) उत्पादन उद्योग
वर्ष 1970 के दशक तक नगरों और महानगरों की वृद्धि और उनके स्वरूप को आकार देने में उत्पादन उद्योग या विनिर्माण क्षेत्र की सबसे प्रमुख भूमिका थी। कारखाने और मिलें शहरों के आर्थिक आधार हुआ करते थे, जो बड़ी संख्या में श्रमिकों को रोजगार प्रदान करते थे। इसी औद्योगिक गतिविधियों के कारण ही शहरों में जनसंख्या का जमाव हुआ और नगरीय बुनियादी ढाँचे का विस्तार औद्योगिक आवश्यकताओं के अनुरूप किया गया।

98. (A) मिल मजदूरों की नौकरी खत्म हो जाना, जो उनके मुख्य दर्शक थे।
मुंबई के परेल और गिरगाँव इलाकों के थिएटर समूहों के समाप्त होने का मुख्य कारण वहाँ की कपड़ा मिलों का बंद होना और मजदूरों का बेरोजगार होना था। ये मिल मजदूर ही इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों के प्राथमिक और उत्साही दर्शक थे। जब उनकी आजीविका पर संकट आया, तो उनके पास मनोरंजन के लिए न तो समय बचा और न ही धन, जिसके परिणामस्वरुप इन थिएटर समूहों का आर्थिक आधार पूरी तरह ध्वस्त हो गया।

99. (B) P-2, Q-3, R-4, S-1
बिहार में रेशम कातने का धंधा विदेशी धागे के कारण प्रभावित हुआ, जबकि गुजरात में औरतों ने गोंद इकट्ठा करने का रोजगार खोया। आंध्र प्रदेश के सरसिला में बुनकरों ने आत्महत्या की, और डोमबारी समुदाय ने अपनी पारंपरिक कला का महत्व खो दिया। यह मिलान स्पष्ट करता है कि कैसे भूमंडलीकरण और आर्थिक परिवर्तनों ने भारत के विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों और विशिष्ट समुदायों की पारंपरिक आजीविका को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है।

100. (D) स्वदेशी ज्ञान व्यवस्थाओं के आधार को बचाने की
बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा हल्दी, नीम और बासमती जैसे भारतीय पारंपरिक ज्ञान को पेटेंट कराने के प्रयासों ने अपनी स्वदेशी ज्ञान व्यवस्थाओं के आधार को सुरक्षित करने की अनिवार्य आवश्यकता पैदा कर दी है। हमें अपनी प्राचीन बौद्धिक संपदा का दस्तावेजीकरण करने और उसे अंतरराष्ट्रीय कानूनी सुरक्षा दिलाने के लिए सक्रिय होना पड़ा है। यह संघर्ष अपनी सांस्कृतिक विरासत और पारंपरिक आर्थिक अधिकारों को वैश्विक बाजार के अतिक्रमण से बचाने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

101. (C) आयात पर प्रतिबंधों को और कड़ा करना।
आयात पर प्रतिबंधों को और कड़ा करना उदारीकरण का परिणाम नहीं, बल्कि उसके बिल्कुल विपरीत एक संरक्षणवादी कदम है। उदारीकरण की नीति के तहत आयात शुल्कों को कम किया जाता है और व्यापारिक बाधाओं को हटाया जाता है ताकि विदेशी निवेश और वस्तुओं का प्रवाह सुगम हो सके। इसके मुख्य परिणामों में भारतीय बाजार का विश्व के लिए खुलना, सरकारी नियंत्रण में कमी और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि शामिल हैं।

102. (B) विदेशी फर्मों द्वारा अपना बाजार बढ़ाने के लिए
'भूस्थानीकरण' की रणनीति अक्सर विदेशी कंपनियों द्वारा किसी नए स्थानीय बाजार में अपनी पैठ और स्वीकृति बढ़ाने के लिए अपनाई जाती है। इस प्रक्रिया में वे अपने वैश्विक उत्पादों और सेवाओं को स्थानीय स्वाद, संस्कृति और परंपराओं के अनुसार ढालते हैं। ऐसा करने से उपभोक्ताओं को विदेशी ब्रांडों के साथ एक भावनात्मक जुड़ाव महसूस होता है, जिससे उन फर्मों का व्यापारिक विस्तार और लाभप्रदता काफी बढ़ जाती है।

103. (D) सांस्कृतिक पहचान के नाम पर महिलाओं के विरुद्ध भेदभाव को उचित ठहराया जाता है।
जेंडर और संस्कृति के बीच के संबंधों का विश्लेषण करते समय यह पाया गया है कि अक्सर सांस्कृतिक पहचान की रक्षा के बहाने महिलाओं के विरुद्ध होने वाले भेदभावपूर्ण व्यवहारों को उचित ठहराने की कोशिश की जाती है। रूढ़िवादी ताकतें परंपरा का हवाला देकर महिलाओं की स्वतंत्रता और समानता के अधिकारों को सीमित करती हैं। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि संस्कृति का उपयोग कभी-कभी सामाजिक न्याय और जेंडर समानता के मार्ग में बाधा के रूप में भी किया जा सकता है।

104. (A) (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भूमंडलीकरण ने खरीददारी को केवल आवश्यकता पूर्ति के साधन के बजाय एक मनोरंजक गतिविधि के रूप में बदल दिया है। यह एक ऐसी 'उपभोग की संस्कृति' को सक्रिय रूप से बढ़ावा देता है जहाँ वस्तुओं पर पैसा खर्च करना व्यक्तिगत खुशी और सामाजिक स्थिति का प्रतीक माना जाता है। शॉपिंग मॉल और आकर्षक विज्ञापन लोगों को निरंतर कुछ नया खरीदने के लिए प्रेरित करते हैं, जिससे समाज में उपभोक्तावादी प्रवृत्तियाँ गहराई तक जड़ जमा लेती हैं।

105. (C) तनावपूर्ण कार्य अनुसूची और उच्च वेतन-भत्तों की जीवनशैली
आधुनिक 'उर्ध्वगामी व्यावसायिकों' की जीवनशैली अक्सर अत्यंत तनावपूर्ण कार्य अनुसूची और साथ ही उच्च वेतन एवं शानदार भत्तों के मिश्रण से परिभाषित होती है। ये पेशेवर वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धी उद्योगों में काम करते हैं, जहाँ लंबे समय तक काम करना अनिवार्य होता है। उनकी उच्च क्रय शक्ति उन्हें विलासितापूर्ण उत्पादों और सेवाओं का उपभोग करने में सक्षम बनाती है, जो उनकी विशिष्ट सामाजिक और आर्थिक स्थिति को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

106. (B) केवल 2 और 3
भूमंडलीकरण एक बहुआयामी प्रक्रिया है जिसमें आर्थिक आयामों के साथ-साथ अत्यंत महत्वपूर्ण राजनीतिक और सांस्कृतिक आयाम भी शामिल हैं। यह मुख्य रूप से सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की अभूतपूर्व क्रांति के माध्यम से आगे बढ़ा है। यह सोचना गलत है कि यह केवल एक आर्थिक प्रक्रिया है या इसके प्रभाव सभी के लिए समान रूप से लाभकारी हैं, क्योंकि समाज के विभिन्न वर्गों पर इसके परिणाम अत्यंत भिन्न और विरोधाभासी रहे हैं।

65. (A) केवल 1 and 3
नाइके की शुरुआत एक आयात करने वाली कंपनी के रूप में हुई थी, जो अब एक विशाल पारराष्ट्रीय निगम बन चुकी है। यह कंपनी जापान में स्थित नहीं है, बल्कि इसका मुख्यालय अमेरिका में है। साथ ही, इसने अपनी उत्पादन लागत कम करने के लिए अपने कारखानों को अमेरिका से बाहर विभिन्न एशियाई देशों में स्थानांतरित किया है। यह इसकी वैश्विक व्यावसायिक रणनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

66. (A) एक केंद्रीकृत स्थान पर विशाल पैमाने पर उत्पादन
'फोर्डवाद' उत्पादन की वह प्रणाली थी जिसमें एक ही केंद्रीकृत विशाल कारखाने में बड़े पैमाने पर मानकीकृत वस्तुओं का उत्पादन किया जाता था। इसका नाम हेनरी फोर्ड के नाम पर पड़ा, जिन्होंने असेंबली लाइन तकनीक के माध्यम से उत्पादन की गति को बढ़ाया। इस प्रणाली में श्रमिक एक ही प्रकार के कार्यों को दोहराते थे, जिससे उत्पादन लागत कम होती थी और बड़े बाजार के लिए माल उपलब्ध होता था।

67. (C) रोजगार के नए अवसरों का पर्याप्त मात्रा में उत्पन्न न होना
अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की 2005 की रिपोर्ट ने इस बात पर प्रकाश डाला कि एशिया में तेजी से होती आर्थिक वृद्धि के बावजूद, रोजगार के नए अवसरों का निर्माण उस अनुपात में नहीं हो सका। इसे 'रोजगारहीन वृद्धि' की समस्या के रूप में देखा गया। इससे स्पष्ट होता है कि केवल जीडीपी का बढ़ना ही समाज के सभी वर्गों के लिए रोजगार की सुरक्षा और आर्थिक स्थिरता सुनिश्चित करने हेतु पर्याप्त नहीं है।

68. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भूमंडलीकरण न केवल एक आर्थिक प्रक्रिया है, बल्कि इसमें एक स्पष्ट राजनीतिक दूरदर्शिता भी शामिल है। नव-उदारवादी राजनीतिक दृष्टिकोण इस विचार का समर्थन करता है कि बाजार की शक्तियों को स्वतंत्र छोड़ देना चाहिए ताकि वे कुशलता और न्यायसंगत तरीके से कार्य कर सकें। इस प्रकार की राजनीतिक विचारधारा ने ही अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापारिक बाधाओं को हटाने और निजीकरण की नीतियों को बढ़ावा देने का मार्ग प्रशस्त किया है।

69. (C) एक अंतर्राष्ट्रीय सरकारी संगठन (IGO)
विश्व व्यापार संगठन एक प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय सरकारी संगठन है जिसकी स्थापना विभिन्न देशों की सरकारों के बीच व्यापारिक नियमों के समन्वय हेतु की गई थी। यह सदस्य राष्ट्रों के बीच व्यापार समझौतों को लागू करने और व्यापारिक विवादों को सुलझाने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इसकी नीतियाँ और निर्णय पूरी दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं को प्रभावित करते हैं, जिससे यह वैश्वीकरण का एक महत्वपूर्ण नियामक स्तंभ बन गया है।

70. (B) भूस्थानीकरण
मैक्डोनाल्ड्स जैसी वैश्विक कंपनी का भारतीय धार्मिक त्योहार नवरात्रि के अवसर पर पूरी तरह से निरामिष या शाकाहारी हो जाना भूस्थानीकरण का एक स्पष्ट उदाहरण है। यह दर्शाता है कि कैसे एक विदेशी निगम अपनी वैश्विक ब्रांड पहचान को बनाए रखते हुए स्थानीय सांस्कृतिक और धार्मिक भावनाओं के अनुसार खुद को ढालता है। इस तरह के बदलाव उन्हें स्थानीय बाजारों में बेहतर स्वीकार्यता और व्यावसायिक सफलता प्राप्त करने में मदद करते हैं।

71. (D) विशाल बिक्री भंडारों (शॉपिंग मॉल्स) और बहुविध सिनेमाघरों का विकास
आधुनिक शहरों में शॉपिंग मॉल्स और मल्टीप्लेक्सों का तेजी से विकास 'उपभोग की संस्कृति' के उदय का एक स्पष्ट संकेत है। ये स्थान केवल खरीददारी के लिए नहीं, बल्कि जीवनशैली के प्रदर्शन और मनोरंजन के केंद्रों के रूप में उभरे हैं। यहाँ आने वाले लोग वस्तुओं के उपभोग को अपनी खुशी और सामाजिक प्रतिष्ठा से जोड़कर देखते हैं, जो पारंपरिक बचत आधारित संस्कृति से एक बड़ा बदलाव है।

72. (A) यह धारणा बनाता है कि कुछ ही खेलों में भाग्य बदल सकता है।
'कौन बनेगा करोड़पति' जैसे लोकप्रिय कार्यक्रमों का समाज पर यह प्रभाव पड़ता है कि वे रातों-रात भाग्य बदलने की एक काल्पनिक धारणा को पुख्ता करते हैं। यद्यपि ये कार्यक्रम मनोरंजन प्रदान करते हैं, लेकिन वे यह संदेश भी देते हैं कि सफलता के लिए कठिन परिश्रम और दीर्घकालिक बचत के बजाय अचानक मिलने वाले वित्तीय लाभ का मार्ग अधिक आकर्षक और संभव हो सकता है।

73. (A) P-2, Q-1, R-3, S-4
फोर्डवाद केंद्रीकृत उत्पादन से जुड़ा है, जबकि भूस्थानीकरण वैश्विक और स्थानीय के सम्मिश्रण को दर्शाता है। नव-उदारवाद स्वतंत्र बाजार की अवधारणा पर आधारित है, और कूपमंडूक शब्द संकीर्ण दृष्टिकोण वाले व्यक्ति के लिए उपयोग किया जाता है। यह मिलान सामाजिक और आर्थिक शब्दावली के सटीक अर्थों को स्पष्ट करता है, जो आधुनिक वैश्विक समाज के विभिन्न पहलुओं को समझने में सहायक होते हैं।

74. (A) कंपनी के कार्यक्रम, रीतियाँ और परंपराएँ।
निगम संस्कृति में वे सभी कार्यक्रम, रीतियाँ, विश्वास और परंपराएँ शामिल होती हैं जो किसी कंपनी के वातावरण को परिभाषित करती हैं। यह केवल लिखित नियमों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें कर्मचारियों के बीच बातचीत का तरीका, उत्सव और काम करने की शैली भी शामिल होती है। इस संस्कृति का उद्देश्य एक साझा पहचान विकसित करना है ताकि कर्मचारी प्रेरित होकर कंपनी के लक्ष्यों के प्रति समर्पित रह सकें।

75. (D) बहुराष्ट्रीय कंपनियों द्वारा पेटेंट कराने के प्रयासों से
भारत की परंपरागत ज्ञान व्यवस्थाओं, जैसे आयुर्वेद और पारंपरिक कृषि तकनीकों को बहुराष्ट्रीय कंपनियों के पेटेंट संबंधी प्रयासों से गंभीर खतरा है। ये कंपनियाँ अक्सर सदियों पुराने स्वदेशी ज्ञान को अपने नाम पर पंजीकृत कराकर उस पर एकाधिकार प्राप्त करना चाहती हैं। इस प्रवृत्ति से स्थानीय समुदायों की अपनी सांस्कृतिक संपदा पर पहुँच बाधित हो

शॉपिंग मॉल आधुनिक उपभोग की संस्कृति का प्रतीक हैं। यह मिलान वैश्विक प्रक्रियाओं और उनके व्यावहारिक स्वरूपों के बीच के संबंधों को स्पष्ट करने के लिए एक सटीक आधार प्रदान करता है।

55. (A) केवल 1, 2, 3 और 4
भूमंडलीकरण के प्रभाव भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों पर मिश्रित रहे हैं, जहाँ कई पारंपरिक रोजगारों को नुकसान पहुँचा है। विदेशी रेशम और गोंद के आयात ने स्थानीय औरतों के काम को प्रभावित किया, जबकि विशाल जहाजों ने छोटे मछुआरों के लिए संकट पैदा किया। यह कहना कि इसने सभी कामगारों के लिए समान रूप से नए अवसर पैदा किए हैं, पूर्णतः गलत है क्योंकि इसके नकारात्मक प्रभाव भी बहुत गहरे हैं।

56. (A) समाजशास्त्रीय कल्पना शक्ति
समाजशास्त्री भूमंडलीकरण जैसी जटिल वैश्विक परिघटनाओं को समझने के लिए समाजशास्त्रीय कल्पना शक्ति का उपयोग करते हैं। यह दृष्टि उन्हें व्यक्तिगत अनुभवों को व्यापक सामाजिक और ऐतिहासिक संरचनाओं के साथ जोड़कर देखने में सक्षम बनाती है। इसके माध्यम से यह विश्लेषण करना सरल हो जाता है कि किस प्रकार वैश्विक आर्थिक नीतियां और सांस्कृतिक बदलाव स्थानीय समुदायों और व्यक्तिगत जीवन के दैनिक व्यवहारों को गहराई से प्रभावित करते हैं।

57. (C) इसका पड़ोस के पंसारी पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।
यह सोचना बिल्कुल गलत है कि भूमंडलीकरण का पड़ोस के पंसारी की दुकान पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। वास्तव में, बड़े रिटेल चेन और ऑनलाइन शॉपिंग के प्रसार ने स्थानीय छोटे दुकानदारों के सामने कड़ी प्रतिस्पर्धा पैदा कर दी है। इसके अलावा, विदेशी उत्पादों की बढ़ती उपलब्धता और उपभोक्ताओं की बदलती रुचियाँ भी पंसारी के व्यापार और सामान की उपलब्धता के स्वरूप को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं।

58. (A) सांस्कृतिक सजातीयकरण
भूमंडलीकरण के आर्थिक आयामों में उदारीकरण, पारराष्ट्रीय निगमों की भूमिका और इलेक्ट्रॉनिक अर्थव्यवस्था का विस्तार शामिल है। सांस्कृतिक सजातीयकरण एक सांस्कृतिक आयाम है, न कि आर्थिक। आर्थिक आयाम मुख्य रूप से पूँजी के प्रवाह, व्यापारिक नियमों के सरलीकरण और वैश्विक उत्पादन तंत्रों के समन्वय पर केंद्रित होते हैं, जो दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं को एक दूसरे पर निर्भर बनाने का कार्य करते हैं।

59. (D) उदारीकरण के उपायों के लिए
भारत के संदर्भ में 'आर्थिक सुधार' शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से उन उदारीकरण के उपायों के लिए किया जाता है जो 1991 से लागू किए गए। इन सुधारों का उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था को अधिक लचीला बनाना, सरकारी नियंत्रण कम करना और वैश्विक बाजार के साथ एकीकरण करना था। इसमें निजीकरण, विदेशी निवेश को प्रोत्साहन और व्यापारिक बाधाओं को दूर करना जैसे महत्वपूर्ण कदम शामिल रहे हैं।

60. (B) उत्पादों के डिज़ाइन, विकास और विपणन प्रणालियों में
ज्ञानात्मक या भाररहित अर्थव्यवस्था में अधिकांश कार्य-बल भौतिक वस्तुओं के उत्पादन के बजाय उनके डिज़ाइन, तकनीकी विकास और विपणन प्रणालियों में लगा रहता है। इस प्रणाली में सूचना और बौद्धिक संपदा सबसे मूल्यवान संसाधन माने जाते हैं। यहाँ आर्थिक मूल्य का सृजन नवीन विचारों, सॉफ्टवेयर प्रोग्रामिंग और ब्रांड प्रबंधन के माध्यम से किया जाता है, जो शारीरिक श्रम के बजाय मानसिक दक्षता पर आधारित होता है।

61. (C) खान-पान प्रबंध सेवा (Catering service)
खान-पान प्रबंध सेवा या कैटरिंग सर्विस ज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था का एक उत्कृष्ट उदाहरण है जहाँ भौतिक उत्पाद के साथ-साथ सेवा की गुणवत्ता और विशेषज्ञता का अधिक महत्व होता है। इस्पात कारखाना या कपड़ा मिल पारंपरिक औद्योगिक अर्थव्यवस्था के अंग हैं, जबकि खेती प्राथमिक क्षेत्र से जुड़ी है। कैटरिंग जैसी सेवा आधारित गतिविधियाँ आधुनिक अर्थव्यवस्था में ज्ञान और प्रबंधन कौशल के बढ़ते महत्व को स्पष्ट रूप से दर्शाती हैं।

62. (D) प्रौद्योगिकी और दूरसंचार के आधारभूत ढाँचे में उन्नति
भूमंडलीय संचार में आए क्रांतिकारी परिवर्तन मुख्य रूप से सूचना प्रौद्योगिकी और दूरसंचार के आधारभूत ढाँचे में हुई अभूतपूर्व उन्नति का परिणाम हैं। ऑप्टिकल फाइबर, उपग्रह संचार और इंटरनेट के वैश्विक जाल ने सूचनाओं के प्रवाह को अत्यंत तीव्र और सस्ता बना दिया है। इन तकनीकी विकासों ने भौगोलिक दूरियों को समाप्त कर दिया है, जिससे दुनिया भर के लोग और व्यवसाय वास्तविक समय में एक-दूसरे से जुड़ सके हैं।

63. (A) सभी प्रकार के विनिमय में डिजिटलाइजेशन को सहायक इकाई के रूप में स्थापित करना
'डिजिटल इंडिया' योजना का मुख्य उद्देश्य देश के शासन और अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में डिजिटलाइजेशन को एक सहायक और अनिवार्य इकाई के रूप में स्थापित करना है। इसका लक्ष्य सरकारी सेवाओं को ऑनलाइन उपलब्ध कराना और डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा देना है। यह योजना सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से पारदर्शिता लाने और समाज के हर वर्ग तक आधुनिक डिजिटल सुविधाओं की पहुँच सुनिश्चित करने के लिए प्रयासरत है।

64. (B) उन्हें विलास की वस्तु माना जाता था।
भारत में 1980 के दशक के अंत तक सेलफोनों की उपलब्धता अत्यंत सीमित थी और उन्हें केवल अमीरों के लिए विलास की वस्तु माना जाता था। उस समय मोबाइल फोन रखना न केवल महंगा था, बल्कि तकनीकी रूप से भी यह एक नई और अपरिचित सुविधा थी। आम जनता के लिए संचार का मुख्य साधन उस समय भी केवल पारंपरिक लैंडलाइन टेलीफोन और डाक सेवाएँ ही हुआ करती थीं।

हैं। जब ये निवेशक अचानक भारी मात्रा में शेयर खरीदते या बेचते हैं, तो बाजार की स्थिरता प्रभावित होती है। चूंकि ये निवेशक वैश्विक स्तर पर अपनी पूँजी का प्रबंधन करते हैं, इसलिए अंतरराष्ट्रीय आर्थिक घटनाओं का प्रभाव उनके माध्यम से सीधे भारतीय शेयर बाजार पर पड़ता है।

87. (D) मुंबई
मुंबई को भारत की 'वित्तीय राजधानी' कहा जाता है क्योंकि यहाँ देश के प्रमुख शेयर बाजार (BSE, NSE), भारतीय रिज़र्व बैंक और अनेक बड़े बैंकों एवं निगमों के मुख्यालय स्थित हैं। यह शहर अंतरराष्ट्रीय व्यापार और पूँजी प्रवाह का मुख्य केंद्र है। मुंबई की आर्थिक गतिविधियाँ न केवल भारत बल्कि पूरे दक्षिण एशिया के वित्तीय परिदृश्य को प्रभावित करती हैं, जो इसे देश का सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक केंद्र बनाता है।

88. (A) 35 करोड़ की जनसंख्या के लिए 84,000 लाइनें थीं।
वर्ष 1947 में स्वतंत्रता के समय भारत में दूरसंचार की स्थिति अत्यंत दयनीय थी, जहाँ लगभग 35 करोड़ की आबादी के लिए मात्र 84,000 टेलीफोन लाइनें उपलब्ध थीं। यह बुनियादी ढाँचे की भारी कमी को दर्शाता है। संचार की यह सीमित सुविधा केवल बड़े शहरों और कुछ प्रशासनिक कार्यालयों तक ही सीमित थी, जिससे देश का एक बहुत बड़ा हिस्सा आधुनिक संचार के लाभों से पूरी तरह वंचित था।

89. (C) वे दूर-दराज के ग्रामीण और पहाड़ी इलाकों में विश्वसनीय टेलीफोन सेवा प्रदान करते थे।
वर्ष 2000 तक भारत में पब्लिक कॉल ऑफिस (PCO) ने दूर-दराज के ग्रामीण, पहाड़ी और दुर्गम इलाकों में विश्वसनीय टेलीफोन सेवा पहुँचाने में एक क्रांतिकारी भूमिका निभाई। जिन स्थानों पर व्यक्तिगत फोन लगाना संभव नहीं था, वहाँ पी.सी.ओ. ने आम लोगों को अपने परिजनों और दुनिया से जुड़ने का एक सस्ता और सुलभ माध्यम प्रदान किया। इसने देश में संचार के लोकतंत्रीकरण की प्रक्रिया को काफी मजबूत किया।

90. (A) उत्पादकों के पक्ष में
श्रम के संदर्भ में 'लचीलापन' शब्द का उपयोग अक्सर उत्पादकों या नियोक्ताओं के पक्ष में काम करने वाली व्यवस्था को इंगित करता है। इसका तात्पर्य है कि कंपनियाँ बाजार की माँग के अनुसार श्रमिकों को आसानी से काम पर रख सकती हैं या निकाल सकती हैं। यह लचीलापन उत्पादकों को अपनी लागत कम करने में तो मदद करता है, लेकिन इससे श्रमिकों की नौकरी की सुरक्षा और उनके अधिकारों पर अक्सर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

91. (D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।
यह कहना असत्य है कि भूमंडलीकरण और सूचना प्रौद्योगिकी ने रोजगार की प्रवृत्तियों को पूरी तरह निराशाजनक बना दिया है, क्योंकि इसने शहरी मध्यवर्ग के लिए कई नए और आकर्षक अवसर भी खोले हैं। हालांकि, तर्क सत्य है कि समग्र रोजगार वृद्धि दर उतनी प्रभावशाली नहीं रही जितनी अपेक्षा थी। यह विरोधाभास दर्शाता है कि आर्थिक प्रगति का लाभ समाज के सभी वर्गों और क्षेत्रों में समान रूप से नहीं पहुँचा है।

92. (B) एक ऐसा भूमंडलीकरण जिसमें समाज के सभी अनुभागों का समावेश हो।
'समावेशात्मक भूमंडलीकरण' की संकल्पना एक ऐसी वैश्विक प्रक्रिया की वकालत करती है जिसमें समाज के सभी अनुभागों, विशेषकर गरीब और वंचित वर्गों का समावेश हो। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आर्थिक विकास और तकनीकी प्रगति का लाभ केवल कुछ प्रभावशाली समूहों तक सीमित न रहे। यह विचार भूमंडलीकरण को अधिक मानवीय, न्यायपूर्ण और लोकतांत्रिक बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण सामाजिक-आर्थिक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

93. (C) सांस्कृतिक प्रभावों के प्रति खुला दृष्टिकोण अपनाना।
भारत की सांस्कृतिक परंपरा की एक विशिष्ट पहचान यह रही है कि वह बाहरी दुनिया के विविध सांस्कृतिक प्रभावों के प्रति हमेशा एक खुला और उदार दृष्टिकोण अपनाती रही है। इस खुलेपन के कारण ही भारतीय संस्कृति समय के साथ अधिक समृद्ध और विविधतापूर्ण हुई है। यह परंपरा संकीर्णता या अलगाव के बजाय 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को प्रोत्साहित करती है, जो विभिन्न संस्कृतियों के सकारात्मक समावेश का समर्थन करती है।

94. (D) सभी संस्कृतियों का एक समान हो जाना।
सांस्कृतिक सजातीयकरण या होमोजेनाइजेशन से अभिप्राय एक ऐसी स्थिति से है जहाँ दुनिया भर की विविध स्थानीय संस्कृतियाँ धीरे-धीरे अपनी मौलिकता खोकर एक समान वैश्विक संस्कृति में विलीन हो जाती हैं। अक्सर यह माना जाता है कि पश्चिमी संस्कृति के प्रभुत्व के कारण खान-पान, पहनावे और भाषा के मामले में पूरी दुनिया एक जैसा व्यवहार करने लगती है। यह प्रक्रिया सांस्कृतिक विविधता के लिए एक गंभीर चुनौती मानी जाती है।

95. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
भूमंडलीकरण के सांस्कृतिक प्रभावों के बारे में विभिन्न मत हैं। जहाँ एक ओर स्थानीय संस्कृतियों के पिछड़ने और सजातीय होने का डर है, वहीं दूसरी ओर 'भूस्थानीकरण' की प्रवृत्ति भी देखी जा रही है। भूस्थानीकरण का तात्पर्य भूमंडलीय और स्थानीय तत्वों के रचनात्मक मिश्रण से है। ये सभी कथन मिलकर वैश्वीकरण के दौरान होने वाले जटिल सांस्कृतिक परिवर्तनों और उनके प्रति समाज की विभिन्न प्रतिक्रियाओं को सही ढंग से स्पष्ट करते हैं।

96. (B) कला, खाद्य, फैशन, संगीत और पर्यटन का उपभोग
सांस्कृतिक उपभोग की अवधारणा में कला, खाद्य, फैशन, संगीत और पर्यटन जैसी विभिन्न गतिविधियों का उपभोग शामिल होता है। यह केवल भौतिक वस्तुओं की खरीद तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें अनुभवों और पहचानों का उपभोग भी महत्वपूर्ण है। आधुनिक समाज में लोग अपनी पसंद के माध्यम से अपनी पहचान प्रदर्शित करते हैं, जिससे उपभोग की ये प्रवृत्तियाँ वैश्विक और स्थानीय संस्कृतियों के मेल का एक प्रमुख केंद्र बन गई हैं।

11. (D) एकाकीकरणवाद (आइसोलेशनिज्म)
'कूपमंडूक' या कुएँ के मेंढक की प्रसिद्ध नीतिकथा एकाकीकरणवाद के विरुद्ध एक सशक्त चेतावनी देती है। यह कथा उन लोगों की आलोचना करती है जो अपनी संकीर्ण दुनिया में ही सीमित रहते हैं और बाहरी संसार के ज्ञान से वंचित रहते हैं। यह संदेश देता है कि प्रगति के लिए संकीर्ण दृष्टिकोण को छोड़कर बाहरी दुनिया के विचारों और प्रभावों के प्रति खुला रहना आवश्यक है।

12. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
आधुनिक पूँजीवाद की प्रकृति प्रारंभ से ही भूमंडलीय रही है क्योंकि इसे निरंतर विस्तार के लिए नए संसाधनों की आवश्यकता होती है। उपनिवेशवाद इसी व्यवस्था का एक अभिन्न अंग था, जिसने पूँजी, कच्चा माल, ऊर्जा और नए बाजारों की तलाश में विश्व के बड़े हिस्से को अपने नियंत्रण में लिया। इस प्रकार, पूँजीवाद की वैश्विक अनिवार्यताओं ने ही औपनिवेशिक विस्तार और आर्थिक अंतःसंबद्धता को जन्म दिया।

13. (C) यूरोपीय लोगों का अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में देशांतरण
इतिहास में यूरोपीय लोगों का अमेरिका और ऑस्ट्रेलिया में बड़े पैमाने पर हुआ देशांतरण लोगों के सबसे बड़े प्रवसन के रूप में जाना जाता है। इस प्रक्रिया में लाखों लोग अपने मूल देशों को छोड़कर नए महाद्वीपों में जा बसे। इस वृहद प्रवसन ने उन क्षेत्रों की जनसांख्यिकी, अर्थव्यवस्था और संस्कृति को पूरी तरह बदल दिया और आधुनिक वैश्विक समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

14. (D) समूचे विश्व में सामाजिक एवं आर्थिक संबंधों का
भूमंडलीकरण मुख्य रूप से समूचे विश्व में सामाजिक और आर्थिक संबंधों के व्यापक विस्तार को दर्शाता है। यह एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें भौगोलिक दूरियाँ कम हो जाती हैं और विभिन्न राष्ट्रों के बीच परस्पर निर्भरता बढ़ती है। इसके माध्यम से केवल व्यापार ही नहीं, बल्कि विचार, संस्कृति और सामाजिक संरचनाएँ भी वैश्विक स्तर पर एक-दूसरे से जुड़कर एक एकीकृत तंत्र का निर्माण करती हैं।

15. (A) सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों का
सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों ने भूमंडलीकरण की गति को तीव्र करने में सबसे निर्णायक भूमिका निभाई है। इंटरनेट, कंप्यूटर और उपग्रह संचार के विकास ने दुनिया भर में सूचनाओं और वित्तीय पूँजी के प्रवाह को तत्काल और सरल बना दिया है। इन प्रौद्योगिकियों के बिना आधुनिक वैश्विक अर्थव्यवस्था और वास्तविक समय में होने वाले अंतरराष्ट्रीय संचार एवं व्यापार का संचालन करना संभव नहीं होता।

16. (A) 2, 3, 4, 1
ऐतिहासिक दृष्टि से सबसे पहले प्राचीन रेशम मार्ग का उपयोग हुआ, जिसने विभिन्न सभ्यताओं को जोड़ा। इसके बाद औपनिवेशिक काल में गिरमिटिया मजदूरों का प्रवसन हुआ। स्वतंत्रता के बाद भारत ने एक वैश्विक दृष्टिकोण अपनाया और अंततः 1991 में आर्थिक उदारीकरण की नीतियां लागू की गईं। यह क्रम दर्शाता है कि भारत की वैश्विक अंतःसंबद्धता प्राचीन व्यापार से शुरु होकर आधुनिक आर्थिक नीतियों तक विकसित हुई है।

17. (B) उदारीकरण की नीतियाँ
भारत में वर्ष 1991 के दौरान अपनाई गई नई आर्थिक नीति के बदलावों को 'उदारीकरण की नीतियाँ' कहा जाता है। इन नीतियों का मुख्य उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक बाजार के लिए खोलना और अनावश्यक सरकारी नियंत्रणों को कम करना था। इस बड़े आर्थिक सुधार ने देश के व्यापारिक परिदृश्य को बदल दिया और निजी क्षेत्र की भागीदारी के साथ विदेशी निवेश के नए रास्ते भी खोल दिए।

18. (A) भारतीय व्यापार को नियमित करने वाले नियमों को हटा देना।
उदारीकरण का तात्पर्य उन सरकारी नियमों और नियंत्रणों को कम करना या हटाना है जो व्यापार की स्वतंत्रता में बाधक होते हैं। इसमें लाइसेंस राज की समाप्ति, आयात शुल्कों में कटौती और विदेशी निवेश की अनुमति जैसे कदम शामिल हैं। इस प्रक्रिया का मुख्य लक्ष्य अर्थव्यवस्था को अधिक प्रतिस्पर्धी बनाना और वैश्विक बाजारों के साथ भारतीय उद्योगों का बेहतर एकीकरण सुनिश्चित करना होता है।

19. (C) कथन 1 सही है, लेकिन कथन 2 गलत है।
स्वतंत्रता के बाद भारत ने संरक्षणवादी नीतियां अपनाई थीं ताकि घरेलू उद्योगों को वैश्विक प्रतिस्पर्धा से बचाया जा सके। हालांकि, यह सोचना गलत था कि स्वतंत्र बाजार हमेशा औपनिवेशिक विरासत वाले देश के लिए लाभप्रद होगा। वास्तविकता यह थी कि भारतीय उद्योगों को मजबूत होने के लिए प्रारंभिक सुरक्षा की आवश्यकता थी, इसलिए उदारीकरण की नीति को कई दशकों के बाद ही उचित माना गया।

20. (D) अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष (IMF)
उदारीकरण की प्रक्रिया को गति देने और आर्थिक संकट से उबरने के लिए भारत ने अंतर्राष्ट्रीय मुद्राकोष से ऋण लिया था। इस ऋण के साथ कुछ आर्थिक शर्तें जुड़ी थीं, जिन्हें 'संरचनात्मक समायोजन' कहा जाता है। इसके तहत भारत को अपनी अर्थव्यवस्था में व्यापक सुधार करने और सरकारी नियंत्रण को कम करने के लिए प्रतिबद्ध होना पड़ा, जिससे देश में आर्थिक वैश्वीकरण का नया युग शुरु हुआ।

21. (C) सामाजिक क्षेत्रों जैसे स्वास्थ्य और शिक्षा में सरकारी व्यय में कटौती।
संरचनात्मक समायोजन की नीति का सामान्यतः अर्थ यह होता है कि सरकार को अपने राजकोषीय घाटे को कम करने के लिए सामाजिक क्षेत्रों पर खर्च कम करना पड़ता है। इसमें स्वास्थ्य और शिक्षा जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में दी जाने वाली सरकारी आर्थिक सहायता या व्यय में कटौती शामिल होती है। यह नीति बाजार-आधारित सुधारों को बढ़ावा देती है लेकिन अक्सर समाज के कमजोर वर्गों पर प्रतिकूल प्रभाव डालती है।

107. (D) नया धागा सस्ता था और उसमें चमक थी।
बिहार की रेशम कातने वाली औरतों का धंधा चौपट होने का मुख्य कारण चीन और कोरिया से आने वाले आयातित धागे का सस्ता और अधिक चमकदार होना था। वैश्विक व्यापार के कारण विदेशी धागा भारतीय बाजार में आसानी से और कम कीमत पर उपलब्ध हो गया। स्थानीय बुनकरों और उपभोक्ताओं ने बेहतर चमक और कम लागत के कारण विदेशी धागे को प्राथमिकता दी, जिससे पारंपरिक कताई उद्योग से जुड़ी महिलाओं की आजीविका पर गहरा प्रहार हुआ।

108. (B) अलगाव और संकीर्णता से बचना चाहिए।
'कूपमंडूक' की नीतिकथा का गहरा निहितार्थ यह है कि मनुष्य को अलगाव और वैचारिक संकीर्णता की प्रवृत्तियों से हमेशा बचना चाहिए। यह हमें सिखाती है कि केवल अपने सीमित परिवेश को ही संपूर्ण सत्य मान लेना प्रगति में बाधक है। वास्तविक ज्ञान और विकास तभी संभव है जब हम बाहरी दुनिया के विचारों, अनुभवों और विविध दृष्टिकोणों के प्रति खुले रहें और अपनी सीमाओं से बाहर निकलकर संसार को समझने का प्रयास करें।

109. (C) वे भारतीय मजदूर जिन्हें अनुबंध के तहत ब्रिटिश उपनिवेशों में काम करने के लिए ले जाया गया।
'गिरमिटिया मजदूर' उन भारतीय श्रमिकों को कहा जाता था जिन्हें औपनिवेशिक शासन के दौरान एक कानूनी अनुबंध या एग्रीमेंट (जिसका अपभ्रंश 'गिरमिट' हुआ) के तहत फिजी, मॉरीशस और कैरिबियन जैसे ब्रिटिश उपनिवेशों में काम करने के लिए भेजा गया था। इन मजदूरों का जीवन अत्यंत कठिन था और उन्हें अक्सर बागानों में बंधुआ परिस्थितियों में काम करना पड़ता था। यह प्रवसन आधुनिक वैश्विक भारतीय समुदाय की जड़ों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

110. (D) संचार आयाम - फोर्डवाद
फोर्डवाद का संबंध मुख्य रूप से उत्पादन की प्रणाली और औद्योगिक संगठन से है, न कि संचार के आयाम से। संचार आयाम के अंतर्गत इंटरनेट, सैटेलाइट टेलीविजन और डिजिटल तकनीक जैसे तत्व शामिल होते हैं। आर्थिक आयाम पारराष्ट्रीय निगमों से, राजनीतिक आयाम क्षेत्रीय संघों से और सांस्कृतिक आयाम भूस्थानीकरण से सही ढंग से सुमेलित हैं। फोर्डवाद एक ऐतिहासिक उत्पादन मॉडल है जो केंद्रीकृत और बड़े पैमाने पर वस्तुओं के निर्माण पर केंद्रित था।

111. (A) भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व-बाजार के लिए खोल देना।
वर्ष 1991 के आर्थिक सुधारों का एक बुनियादी और प्रमुख उद्देश्य भारतीय अर्थव्यवस्था की सीमाओं को विश्व-बाजार के लिए पूरी तरह खोल देना था। इसका लक्ष्य दशकों से चली आ रही संरक्षणवादी नीतियों को समाप्त कर विदेशी निवेश, आधुनिक तकनीक और अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा को प्रोत्साहित करना था। इन सुधारों ने देश को वैश्विक आर्थिक तंत्र का हिस्सा बनाया, जिससे भारतीय व्यवसायों को नए अवसर मिले और उपभोक्ताओं के लिए विकल्पों का विस्तार हुआ।

112. (B) पारराष्ट्रीय निगम (TNC)
ऐसी कंपनी जो एक से अधिक देशों में अपने माल का उत्पादन करती है या उसे बेचती है, उसे पारराष्ट्रीय निगम कहा जाता है। ये निगम वैश्विक स्तर पर अपनी रणनीतियाँ बनाते हैं और विभिन्न राष्ट्रों के संसाधनों एवं बाजारों का उपयोग अपने लाभ को अधिकतम करने के लिए करते हैं। इनकी कार्यप्रणाली आधुनिक भूमंडलीकरण का सबसे सशक्त आर्थिक इंजन है, जो दुनिया भर की अर्थव्यवस्थाओं को उत्पादन और उपभोग के माध्यम से आपस में जोड़ती है।

113. (A) 4, 2, 1, 3
कालानुक्रमिक दृष्टि से सबसे पहले नाइके ने अपना उत्पादन दक्षिण कोरिया स्थानांतरित किया। इसके बाद समाजवादी विश्व का विघटन हुआ, जिसने वैश्वीकरण को गति दी। फिर 1991 में भारत ने उदारीकरण की नीतियां अपनाईं और अंततः भारत का दूरसंचार नेटवर्क विश्व में नौवें स्थान पर पहुँचा। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे अंतरराष्ट्रीय व्यावसायिक निर्णयों और राजनीतिक परिवर्तनों ने भारत के आर्थिक और संचार परिदृश्य को क्रमिक रूप से प्रभावित किया है।

114. (A) कंप्यूटर सॉफ्टवेयर और मनोरंजक उत्पाद
ज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था में कंप्यूटर सॉफ्टवेयर, डिजिटल मीडिया और मनोरंजक उत्पाद जैसे बौद्धिक संपदा पर आधारित उत्पाद शामिल होते हैं। इसमें भौतिक वस्तुओं के वजन या आकार के बजाय उनमें निहित सूचना और ज्ञान का मूल्य अधिक होता है। इस अर्थव्यवस्था के उत्पाद 'भाररहित' होते हैं जिन्हें इंटरनेट के माध्यम से तत्काल दुनिया के किसी भी कोने में भेजा जा सकता है, जो आधुनिक वैश्विक व्यापार का एक अनिवार्य हिस्सा बन चुके हैं।

115. (C) डिजिटल इंडिया
भारत सरकार ने देश में व्याप्त 'डिजिटल विभाजन' को कम करने के उद्देश्य से 'डिजिटल इंडिया' योजना प्रारंभ की है। इस महत्वाकांक्षी पहल का लक्ष्य ग्रामीण और दूर-दराज के क्षेत्रों तक इंटरनेट की पहुँच सुनिश्चित करना और नागरिकों को डिजिटल रूप से सशक्त बनाना है। इसके माध्यम से सरकारी सेवाओं को ऑनलाइन उपलब्ध कराकर और बुनियादी तकनीकी ढाँचे को मजबूत करके समाज में सूचना और अवसरों की समानता लाने का प्रयास किया जा रहा है।

116. (D) उत्पादन की लचीली प्रणाली।
'फोर्डवादोत्तर' उत्पादन की एक ऐसी लचीली प्रणाली को दर्शाता है जो पारंपरिक केंद्रीकृत मॉडल के विपरीत है। इसमें माँग के अनुसार छोटे समूहों में विविध उत्पादों का निर्माण किया जाता है और उत्पादन प्रक्रियाएँ दुनिया के अलग-अलग स्थानों पर बिखरी हो सकती हैं। यह प्रणाली आधुनिक सूचना प्रौद्योगिकी का उपयोग करके तेजी से बदलते बाजार के रुझानों के अनुरूप खुद को ढालने में सक्षम है, जो इसे वैश्विक प्रतिस्पर्धा में अधिक प्रभावी बनाती है।

117. (C) आर्थिक वृद्धि के बावजूद रोजगार के पर्याप्त अवसर उत्पन्न न होना।
'रोजगार अंतर' या 'एंप्लॉयमेंट गैप' उस स्थिति को कहते हैं जहाँ किसी देश की अर्थव्यवस्था या जीडीपी में तो वृद्धि होती है, लेकिन उस अनुपात में रोजगार के नए अवसर पैदा नहीं होते। इसे 'रोजगारहीन वृद्धि' भी कहा जाता है। यह स्थिति समाज में बेरोजगारी और असमानता को बढ़ा सकती है क्योंकि आर्थिक प्रगति का लाभ उन लोगों तक नहीं पहुँच पाता जो काम की तलाश में हैं, जिससे विकास का सामाजिक प्रभाव सीमित हो जाता है।

118. (B) (A)(A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।.
भारत का इतिहास अन्य संस्कृतियों के प्रति खुलेपन का रहा है, जिसने हमारी सांस्कृतिक विरासत को अत्यंत समृद्ध बनाया है। साथ ही, यह भी सत्य है कि आधुनिक भूमंडलीकरण की तीव्र गति ने स्थानीय संस्कृतियों के लुप्त होने की आशंका को जन्म दिया है। हालांकि, ये दोनों तथ्य अपने आप में स्वतंत्र रूप से सही हैं, लेकिन भूमंडलीकरण का डर हमारे प्राचीन खुलेपन की ऐतिहासिक प्रक्रिया की व्याख्या नहीं करता।

119. (D) सांस्कृतिक मिश्रण या संलयन (Fusion)
'भाँगड़ा पॉप' और 'इंडिपॉप' जैसे संगीत रूप सांस्कृतिक मिश्रण या संलयन के बेहतरीन उदाहरण हैं। इनमें पश्चिमी पॉप संगीत की शैलियों और धुनों को भारतीय पारंपरिक संगीत के साथ मिलाकर एक नया और आकर्षक स्वरूप तैयार किया जाता है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि कैसे अलग-अलग संस्कृतियों के तत्व आपस में मिलकर एक ऐसी नई पहचान बनाते हैं जो वैश्विक और स्थानीय दोनों ही समुदायों के बीच समान रूप से लोकप्रिय होती है।

120. (A) उपभोग की संस्कृति
शॉपिंग मॉल और मल्टीप्लेक्स सिनेमाघरों का बढ़ता विकास आधुनिक 'उपभोग की संस्कृति' का एक सशक्त प्रतीक है। ये स्थान न केवल मनोरंजन और खरीददारी के केंद्र हैं, बल्कि वे एक विशेष प्रकार की उपभोक्तावादी जीवनशैली को भी प्रदर्शित करते हैं। यहाँ सुख और सफलता को वस्तुओं और सेवाओं के उपभोग से जोड़कर देखा जाता है, जो समाज के पारंपरिक बचत और सादगी के मूल्यों में आए बड़े बदलाव को दर्शाता है।

121. (A) P-2, Q-3, R-4, S-1
मुंबई भारत की वित्तीय राजधानी है, जबकि बंगलूरु सूचना प्रौद्योगिकी का मुख्य केंद्र बन चुका है। न्यूयार्क, टोकियो और लंदन दुनिया के तीन सबसे महत्वपूर्ण वित्तीय व्यापार केंद्र हैं। इसके अलावा, मुंबई के परेल और गिरगाँव इलाके ऐतिहासिक रूप से कपड़ा मिलों के लिए प्रसिद्ध थे। यह मिलान दर्शाता है कि कैसे अलग-अलग शहरों और क्षेत्रों ने वैश्विक और राष्ट्रीय अर्थव्यवस्था में अपनी विशिष्ट भूमिकाएँ और पहचान बनाई हैं।

122. (A) कर्मचारियों में वफादारी की भावना बढ़ाने और समूह एकता को प्रोत्साहित करने के लिए।
निगम संस्कृति का मुख्य प्रयास कर्मचारियों के भीतर कंपनी के प्रति वफादारी की भावना को सुदृढ़ करना और समूह एकता को प्रोत्साहित करना होता है। इसके लिए कंपनियाँ विभिन्न उत्सवों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों और साझा मूल्यों का विकास करती हैं। जब कर्मचारी खुद को कंपनी के परिवार का हिस्सा महसूस करते हैं, तो उनकी कार्यक्षमता और प्रतिबद्धता बढ़ती है, जो अंततः प्रतिस्पर्धी वैश्विक बाजार में कंपनी की सफलता और स्थिरता सुनिश्चित करती है।

123. (D) वे पूरी तरह से व्यावसायिक हो गई हैं।
भूमंडलीकरण के प्रभाव के कारण कई स्वदेशी और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियाँ अब पूरी तरह से व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए उपयोग की जाने लगी हैं। आयुर्वेद, योग और पारंपरिक औषधियों जैसे क्षेत्रों को अब बड़े वैश्विक ब्रांडों के माध्यम से बाजार में बेचा जा रहा है। यद्यपि इससे इन प्रणालियों को वैश्विक पहचान मिली है, लेकिन इनके बाजारीकरण के कारण अक्सर इनका मूल स्वरूप और स्थानीय समुदायों का इन पर पारंपरिक अधिकार प्रभावित होता है।

124. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
भूमंडलीकरण ने श्रम के एक नए अंतरराष्ट्रीय विभाजन को जन्म दिया है जहाँ उत्पादन कार्य कम लागत वाले देशों में भेजे जाते हैं। यह प्रक्रिया श्रमिकों को अक्सर कमजोर और असुरक्षित बनाती है क्योंकि श्रम कानूनों में लचीलापन केवल उत्पादकों के हितों को साधने के लिए लाया जाता है। ये सभी कथन मिलकर आधुनिक वैश्विक श्रम बाजार की जटिलताओं और उसमें कामगारों के सामने मौजूद चुनौतियों का एक यथार्थवादी चित्रण प्रस्तुत करते हैं।

125. (C) भूमंडलीकरण
पड़ोस की स्थानीय फलों की दुकान पर विदेशी फलों, जैसे चीन की नाशपाती और ऑस्ट्रेलिया के सेब की उपलब्धता भूमंडलीकरण की प्रक्रिया का एक प्रत्यक्ष परिणाम है। यह दर्शाता है कि कैसे अंतरराष्ट्रीय व्यापार ने भौगोलिक सीमाओं को पार करके विदेशी उत्पादों को हमारे दैनिक उपभोग का हिस्सा बना दिया है। परिवहन और व्यापारिक नियमों में आए बदलावों ने दुनिया के विभिन्न कोनों से आने वाली वस्तुओं को स्थानीय बाजारों में सुलभ और प्रतिस्पर्धी बना दिया है।

126. (D) भूमंडलीय बाजार में अधिक समावेश भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए लाभकारी सिद्ध होगा।
भारत में उदारीकरण की नीति के पीछे यह मूल अवधारणा थी कि भूमंडलीय बाजार के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था का अधिक सघन जुड़ाव और समावेश दीर्घकाल में देश के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा। यह माना गया कि अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा से घरेलू उद्योगों की कार्यक्षमता बढ़ेगी, नई तकनीक का आगमन होगा और उपभोक्ताओं को बेहतर गुणवत्ता वाली सेवाएँ मिलेंगी। इस सोच ने दशकों पुरानी बंद अर्थव्यवस्था के मॉडल को बदलकर एक गतिशील बाजार-आधारित आर्थिक व्यवस्था की नींव रखी।

127. (A) एक स्थानीय किराना दुकान
एक स्थानीय किराना दुकान पारराष्ट्रीय निगम का उदाहरण नहीं हो सकती क्योंकि इसकी व्यापारिक गतिविधियाँ केवल एक सीमित क्षेत्र तक ही केंद्रित होती हैं। इसके विपरीत, कोकाकोला, मित्सुबिशी और जनरल मोटर्स जैसी कंपनियाँ पारराष्ट्रीय निगम हैं क्योंकि वे दुनिया के कई देशों में उत्पादन और विपणन का कार्य करती हैं। ये निगम वैश्विक स्तर पर अपनी पूँजी और संसाधनों का संचालन करते हैं, जबकि स्थानीय दुकानें केवल क्षेत्रीय माँग को पूरा करती हैं।

128. (B) भूमंडलीकरण और मीडिया प्रौद्योगिकी के कारण।
'नेटवर्क सोसायटी' का उदय मुख्य रूप से भूमंडलीकरण और आधुनिक मीडिया प्रौद्योगिकी के तीव्र विकास के कारण संभव हुआ है। इंटरनेट और डिजिटल संचार के माध्यम से अब पूरी दुनिया एक सघन जाल की तरह आपस में जुड़ी हुई है। इस समाज में सूचनाओं का आदान-प्रदान और सामाजिक अंतःक्रियाएँ भौतिक सीमाओं से परे होती हैं, जिससे लोगों के सोचने, काम करने और एक-दूसरे से जुड़ने के पारंपरिक तरीके पूरी तरह बदल गए हैं।

129. (B) 3%
भारत में 1990 के दशक में आई दूरसंचार क्रांति से पहले संचार सुविधाओं का विस्तार बहुत ही सीमित था, जहाँ देश के 6,00,000 गाँवों में से केवल 3 प्रतिशत गाँवों में ही टेलीफोन की सुविधा उपलब्ध थी। यह आँकड़ा उस समय के ग्रामीण भारत के डिजिटल और संचार संबंधी पिछड़ेपन को उजागर करता है। इसी पृष्ठभूमि ने भविष्य में पी.सी.ओ. और मोबाइल क्रांति की आवश्यकता और उसके सामाजिक महत्व को अधिक रेखांकित करने का कार्य किया।

130. (A) क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक संगठनों की बढ़ती भूमिका।
भूमंडलीकरण के राजनीतिक आयामों के अंतर्गत क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय राजनीतिक संगठनों की भूमिका में निरंतर वृद्धि देखी गई है। यूरोपीय संघ, सार्क और संयुक्त राष्ट्र जैसे संगठन अब राष्ट्रीय सीमाओं से परे जाकर विभिन्न मुद्दों पर निर्णय लेते हैं और सहयोग करते हैं। यह प्रवृत्ति दर्शाती है कि आधुनिक युग में राजनीतिक निर्णय लेने की प्रक्रिया अब केवल राष्ट्रीय सरकारों तक सीमित नहीं रही, बल्कि इसमें वैश्विक संस्थाओं का हस्तक्षेप और प्रभाव भी महत्वपूर्ण हो गया है।

131. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भूमंडलीकरण के फलस्वरूप दुनिया में कुछ नई भूमंडलीय परंपराएँ और सांस्कृतिक स्वरूप निर्मित हो रहे हैं क्योंकि संस्कृति कभी भी स्थिर या अपरिवर्तनशील नहीं होती। यह निरंतर सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवर्तनों के साथ खुद को ढालती और बदलती रहती है। जब विभिन्न देशों के लोग और विचार आपस में मिलते हैं, तो एक नई मिश्रित संस्कृति का जन्म होता है जो वैश्विक और स्थानीय दोनों पहचानों को अपने भीतर समाहित किए होती है।

132. (D) फैशन, सौंदर्य प्रसाधन और स्वास्थ्य उत्पाद
'ब्रह्मांड सुंदरी' और 'विश्वसुंदरी' जैसी अंतरराष्ट्रीय सौंदर्य प्रतियोगिताओं ने दुनिया भर में फैशन, सौंदर्य प्रसाधन और स्वास्थ्य उत्पादों से जुड़े उद्योगों को भारी बढ़ावा दिया है। ये कार्यक्रम केवल सुंदरता का प्रदर्शन नहीं हैं, बल्कि वे वैश्विक ब्रांडों के लिए विशाल बाजार तैयार करने का एक प्रभावशाली माध्यम भी हैं। इनके माध्यम से सौंदर्य और शारीरिक बनावट के कुछ विशिष्ट मानक प्रचारित किए जाते हैं, जो इन उत्पादों की माँग को वैश्विक स्तर पर बढ़ाने में सहायक होते हैं।

133. (A) केवल 1, 2 और 3
निगम संस्कृति प्रबंधन सिद्धांत की एक महत्वपूर्ण शाखा है जिसका लक्ष्य कर्मचारियों में वफादारी पैदा करके कंपनी की उत्पादकता और प्रतिस्पर्धात्मकता को बढ़ाना है। यह मानती है कि कंपनी की अपनी विशिष्ट संस्कृति और परंपराओं का उसके समग्र प्रदर्शन पर गहरा सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। यह केवल शीर्ष प्रबंधन ही नहीं, बल्कि कंपनी के हर स्तर के कर्मचारी के व्यवहार और कार्यशैली को प्रभावित कर एक सामूहिक व्यावसायिक पहचान का निर्माण करती है।

134. (B) सांस्कृतिक उपभोग
वर्तमान समय में नगरों की वृद्धि और उनके सामाजिक-भौतिक स्वरूप को आकार देने में 'सांस्कृतिक उपभोग' की सबसे प्रमुख भूमिका है। आज के शहर केवल उत्पादन के केंद्र नहीं रह गए हैं, बल्कि वे फैशन, भोजन, कला, मनोरंजन और पर्यटन जैसी उपभोग की गतिविधियों के मुख्य स्थल बन गए हैं। मॉल, रेस्टोरेंट और सांस्कृतिक केंद्र अब शहरी अर्थव्यवस्था के नए चालक हैं, जो लोगों की जीवनशैली और नगरों के निरंतर विस्तार को नई दिशा दे रहे हैं।

135. (D) मनोरंजन के आधुनिक साधनों जैसे टीवी और रेडियो से प्रतिस्पर्धा।
डोमबारी समुदाय के पारंपरिक मनोरंजन व्यवसाय के संकट में पड़ने का मुख्य कारण टेलीविजन, रेडियो और इंटरनेट जैसे आधुनिक मनोरंजन के साधनों के साथ होने वाली कड़ी प्रतिस्पर्धा है। लोग अब सड़क पर होने वाले शारीरिक करतबों के बजाय घर पर डिजिटल माध्यमों से मनोरंजन प्राप्त करना अधिक सुविधाजनक और रोमांचक मानते हैं। आधुनिक तकनीक की इस सहज उपलब्धता ने सदियों पुरानी पारंपरिक कलाओं को अप्रासंगिक बनाकर इन कलाकारों के अस्तित्व के लिए खतरा उत्पन्न कर दिया है।

136. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
महान व्याकरणविद् पाणिनी अफगान मूल के थे, और चीनी विद्वान यी जिंग ने प्राचीन भारत की यात्रा की थी। विश्व व्यापार संगठन (WTO) एक अंतरराष्ट्रीय सरकारी निकाय है, जबकि एमनेस्टी इंटरनेशनल एक प्रसिद्ध अंतरराष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन है। यह मिलान इतिहास से लेकर वर्तमान वैश्विक व्यवस्था तक के विभिन्न महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों और संगठनों की भूमिका को उनके सही भौगोलिक और कार्यात्मक संदर्भ में स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है।

157. (D) वैश्विक और स्थानीय सांस्कृतिक तत्वों का मिश्रण और अनुकूलन।
भूस्थानीकरण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें वैश्विक उत्पादों और विचारों को स्थानीय सांस्कृतिक संदर्भों के अनुसार संशोधित किया जाता है। यह केवल एकतरफा सांस्कृतिक थोपना नहीं है, बल्कि स्थानीय और वैश्विक तत्वों का एक रचनात्मक मिश्रण है। इसके माध्यम से कंपनियाँ अपने वैश्विक ब्रांडों को स्थानीय स्वादों, भाषाओं और परंपराओं के साथ जोड़कर एक नई संकर या हाइब्रिड संस्कृति का निर्माण करती हैं।

158. (A) भूस्थानीकरण
मैकआलू टिक्की बर्गर भूस्थानीकरण की अवधारणा का एक सटीक उदाहरण है, जहाँ एक वैश्विक फास्ट-फूड श्रृंखला ने भारतीय उपभोक्ताओं के विशिष्ट स्वाद और शाकाहारी प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए अपने अंतरराष्ट्रीय मेनू में बदलाव किया है। यह दर्शाता है कि वैश्विक ब्रांड किसी नए बाजार में सफल होने के लिए स्थानीय संस्कृति, खान-पान की आदतों और धार्मिक परंपराओं के साथ किस प्रकार अनुकूलन करते हैं।

159. (C) स्थानीय संस्कृतियों की विविधता का क्षरण और पश्चिमी संस्कृति का प्रभुत्व।
सांस्कृतिक समरूपीकरण के सिद्धांत की सबसे बड़ी चिंता यह है कि पश्चिमी उपभोक्ता संस्कृति का वैश्विक प्रसार स्थानीय परंपराओं, भाषाओं और पहचानों को कमजोर कर सकता है। यह प्रक्रिया दुनिया भर में सांस्कृतिक विविधता को कम करके एक समान वैश्विक मानकीकरण की ओर ले जाती है। आलोचकों के अनुसार, इससे स्थानीय समुदायों की विशिष्ट सांस्कृतिक विरासत के धीरे-धीरे लुप्त होने का निरंतर खतरा बना रहता है।

160. (A) सांस्कृतिक प्रभाव एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें समरुपीकरण और संकर संस्कृतियों का निर्माण शामिल है।
इस अनुच्छेद का निष्कर्ष है कि भूमंडलीकरण के सांस्कृतिक प्रभाव एकतरफा नहीं हैं। यह समरुपीकरण और भूस्थानीकरण दोनों का एक मिला-जुला परिणाम है। जहाँ कुछ क्षेत्रों में पश्चिमी संस्कृति का प्रभुत्व दिखता है, वहीं दूसरी ओर स्थानीय संस्कृतियाँ वैश्विक प्रवाहों को सक्रिय रूप से अनुकूलित कर नई संकर संस्कृतियों का निर्माण करती हैं। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान की एक अत्यंत जटिल और बहुआयामी वैश्विक प्रक्रिया है।

161. (D) 'कल्याणकारी राज्य' से 'सुविधाकर्ता राज्य' में परिवर्तन।
नव-उदारवादी विचारधारा के प्रभाव में राज्य की पारंपरिक भूमिका में व्यापक बदलाव आया है। राज्य अब सीधे तौर पर जन कल्याणकारी गतिविधियों में शामिल होने के बजाय एक 'सुविधाकर्ता' की भूमिका निभा रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य मुक्त व्यापार, विदेशी निवेश को बढ़ावा देना और बाजार की शक्तियों के लिए अनुकूल माहौल तैयार करना है, जिससे सरकारी नीतियों का झुकाव अब निजी क्षेत्र की ओर हो गया है।

162. (B) वे ऋण के बदले में नव-उदारवादी सुधारों और संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रमों को लागू करने हेतु दबाव डालती हैं।
अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष और विश्व व्यापार संगठन जैसी वित्तीय संस्थाएं विकासशील देशों की आर्थिक नीतियों को प्रभावित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये संस्थाएं अक्सर वित्तीय सहायता या ऋण प्रदान करने के बदले में देशों को संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रम अपनाने के लिए मजबूर करती हैं। इन कार्यक्रमों के तहत व्यापार बाधाओं को हटाने, निजीकरण को बढ़ावा देने और सामाजिक व्यय में कटौती करने की शर्तें शामिल होती हैं।

163. (C) सरकारी खर्च में कटौती और निजीकरण को बढ़ावा देना।
संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रमों की प्रमुख विशेषता राजकोषीय अनुशासन और बाजार-उन्मुख सुधार हैं। इसके तहत सरकार को सार्वजनिक सेवाओं पर होने वाले खर्च में कटौती करनी पड़ती है और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का निजीकरण करना होता है। इन नीतियों का उद्देश्य अर्थव्यवस्था को वैश्विक प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार करना और विदेशी निवेश के प्रवाह को सुगम बनाना है, जिससे राज्य का प्रत्यक्ष आर्थिक नियंत्रण घटता है।

164. (D) इससे राष्ट्रीय स्वायत्तता कम होती है और नीतियां बाहरी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं से अत्यधिक प्रभावित होती हैं।
आलोचकों का तर्क है कि वैश्वीकरण और अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं की बढ़ती दखलअंदाजी से राष्ट्र-राज्यों की संप्रभुता और स्वायत्तता कमजोर हो रही है। महत्वपूर्ण आर्थिक और सामाजिक नीतियां अब लोकतांत्रिक रूप से चुनी गई सरकारों के बजाय बाहरी निकायों द्वारा निर्धारित की जाती हैं। इसके परिणामस्वरूप, राज्य अपने नागरिकों के सामाजिक कल्याण को सुनिश्चित करने की क्षमता खो देते हैं और अक्सर कॉर्पोरेट हितों को प्राथमिकता दी जाती है।

165. (A) भूमंडलीकरण के युग में राष्ट्र-राज्य की बदलती राजनीतिक और आर्थिक भूमिका।
इस अनुच्छेद का केंद्रीय विषय यह है कि कैसे भूमंडलीकरण और नव-उदारवादी नीतियों ने राष्ट्र-राज्य की पारंपरिक संप्रभुता और उसके मूलभूत कार्यों को पुनर्परिभाषित किया है। यह मुख्य रूप से कल्याणकारी राज्य के पतन और सुविधाकर्ता राज्य के उदय पर केंद्रित है। साथ ही, यह अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं के प्रभाव और राष्ट्रीय नीतियों पर पड़ने वाले उनके व्यापक असर का गहराई से तथ्यात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

166. (B) सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तक पहुँच और उपयोग में असमानता।
डिजिटल विभाजन समाज के विभिन्न वर्गों के बीच सूचना और संचार प्रौद्योगिकी की उपलब्धता और उसके उपयोग की क्षमता में मौजूद व्यापक अंतर को दर्शाता है। यह विभाजन न केवल बुनियादी ढाँचे और इंटरनेट पहुँच से संबंधित है, बल्कि तकनीकी साक्षरता के स्तर पर भी निर्भर करता है। यह वैश्विक स्तर पर विकसित और विकासशील देशों तथा राष्ट्रीय स्तर पर शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच स्पष्ट है।

147. (C) उपभोग की संस्कृति
पैसे को भविष्य के लिए बचाने की पुरानी आदत के बजाय उसे वर्तमान सुख और विलासिता पर खर्च करने को बढ़ावा देना 'उपभोग की संस्कृति' की एक प्रमुख विशेषता है। यह संस्कृति विज्ञापनों और ऋण सुविधाओं के माध्यम से लोगों को अधिक से अधिक वस्तुएं खरीदने के लिए प्रेरित करती है। यहाँ व्यक्ति की पहचान और खुशी उसके पास मौजूद भौतिक साधनों और उसके खर्च करने की क्षमता से मापी जाती है, जो पारंपरिक मितव्ययिता के मूल्यों से एक बड़ा विचलन है।

148. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भूमंडलीकरण और तकनीकी क्रांति ने वास्तव में भारत में एक नए 'उर्ध्वगामी व्यावसायिक' वर्ग के उदय को संभव बनाया है। ये पेशेवर वैश्विक सेवा क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और उच्च आय अर्जित करते हैं। उनकी आर्थिक संपन्नता उन्हें आधुनिक उपभोक्ता उद्योगों के लिए सबसे आकर्षक और प्रमुख ग्राहक बनाती है। इस वर्ग की जीवनशैली और उपभोग के तरीके भारतीय महानगरों के सामाजिक और आर्थिक स्वरूप को एक नई और वैश्विक दिशा प्रदान कर रहे हैं।

149. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
श्रम का अंतरराष्ट्रीय विभाजन नाइके जैसी कंपनियों द्वारा उत्पादन स्थानांतरण में दिखता है, जबकि शॉपिंग मॉल उपभोग की संस्कृति का प्रतीक हैं। ज्ञानात्मक अर्थव्यवस्था सॉफ्टवेयर उद्योग पर आधारित है, और डब्ल्यूटीओ एवं आईएमएफ महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय संगठन हैं। यह मिलान आधुनिक वैश्वीकरण के विभिन्न आर्थिक, सामाजिक और संस्थागत स्तंभों को सही ढंग से परिभाषित करता है, जो विश्व स्तर पर हो रहे व्यापक परिवर्तनों के पीछे की मुख्य शक्तियों और उनके परिणामों को स्पष्ट करता है।

150. (B) क्योंकि इसके प्रभाव विभिन्न और जटिल रूपों में हैं।
भूमंडलीकरण हमारे जीवन के हर पहलू को इतनी गहराई और विविधता से प्रभावित करता है कि इसके प्रभावों को किसी एक संक्षिप्त परिभाषा या निष्कर्ष में बांधना संभव नहीं है। इसके परिणाम अलग-अलग लोगों, समुदायों और राष्ट्रों के लिए अत्यंत जटिल और अक्सर विरोधाभासी होते हैं। जहाँ यह कहीं प्रगति लाता है, वहीं कहीं नई चुनौतियाँ भी पैदा करता है। यही बहुआयामी प्रकृति इसे समाजशास्त्रीय विश्लेषण के लिए एक निरंतर विकसित होने वाला और अत्यंत रोचक विषय बनाती है।

151. (B) श्रम-गहन विनिर्माण और असेंबली
वैश्विक उत्पादन श्रृंखलाओं के अंतर्गत उत्पादन प्रक्रिया को विभिन्न देशों में उनकी विशिष्ट क्षमताओं के आधार पर विभाजित किया जाता है। विकासशील देशों में अक्सर श्रम सस्ता और प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होता है, जिसके कारण ये देश विनिर्माण और असेंबली जैसे श्रम-प्रधान कार्यों के प्रमुख केंद्र बन जाते हैं। यह भौगोलिक विभाजन मुख्य रूप से तुलनात्मक लाभ के आर्थिक सिद्धांत पर आधारित होता है।

152. (A) उत्पादन प्रक्रियाओं का भौगोलिक विखंडन, जहाँ कार्य विशेषज्ञता के आधार पर बाँटे जाते हैं।
नई अंतर्राष्ट्रीय श्रम विभाजन की अवधारणा वैश्विक अर्थव्यवस्था में उत्पादन के भौगोलिक विखंडन को स्पष्ट रूप से दर्शाती है। इसमें पारराष्ट्रीय निगम उत्पादन के विभिन्न चरणों को अलग-अलग देशों में बाँट देते हैं। उच्च-मूल्य वाले कार्य जैसे अनुसंधान और डिजाइन विकसित देशों में रहते हैं, जबकि कम लागत वाले विनिर्माण कार्य विकासशील देशों में स्थानांतरित कर दिए जाते हैं, जिससे वैश्विक विशेषज्ञता बढ़ती है।

153. (C) श्रम बाजार में अनौपचारिकता और श्रमिकों की सौदेबाजी की शक्ति में कमी।
भारत में आर्थिक उदारीकरण के बाद पारराष्ट्रीय निगमों के प्रवेश से रोजगार के नए अवसर तो मिले, लेकिन इसने श्रम बाजार में गंभीर चुनौतियां भी पेश की हैं। इनके आगमन से संविदात्मक श्रम और अनौपचारिक क्षेत्र में अत्यधिक वृद्धि हुई है। इसके कारण श्रमिकों की सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति कम हुई है और उनकी नौकरी की सुरक्षा के साथ-साथ अधिकारों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है।

154. (D) किसी देश की किसी वस्तु को दूसरों की तुलना में कम अवसर लागत पर उत्पादित करने की क्षमता।
तुलनात्मक लाभ एक आर्थिक सिद्धांत है जो बताता है कि किसी देश को उन वस्तुओं के उत्पादन में विशेषज्ञता हासिल करनी चाहिए जिन्हें वह अन्य देशों की तुलना में कम अवसर लागत पर बना सकता है। वैश्विक उत्पादन श्रृंखलाओं में, देश अपनी प्रचुर संसाधनों जैसे सस्ते श्रम, प्रचुर कच्चे माल या विशिष्ट तकनीकी कौशल के आधार पर ही अपने विशिष्ट उत्पादन कार्यों का चयन करते हैं।

155. (C) TNCs की उत्पादन श्रृंखलाएँ आर्थिक अवसरों और श्रम संबंधी चुनौतियों दोनों को प्रस्तुत करती हैं।
यह स्रोत स्पष्ट करता है कि पारराष्ट्रीय निगमों द्वारा संचालित वैश्विक उत्पादन श्रृंखलाएं विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए एक दोधारी तलवार की तरह कार्य करती हैं। जहाँ एक ओर ये श्रृंखलाएं प्रौद्योगिकी हस्तांतरण और रोजगार सृजन जैसे महत्वपूर्ण आर्थिक अवसर प्रदान करती हैं, वहीं दूसरी ओर ये श्रम बाजार में अनौपचारिकता, संविदाकरण और श्रमिकों के अधिकारों से संबंधित जटिल सामाजिक और आर्थिक चुनौतियां भी उत्पन्न करती हैं।

156. (B) सांस्कृतिक समरूपीकरण
मैकडोनल्डीकरण सांस्कृतिक समरूपीकरण की एक प्रक्रिया है जिसमें पश्चिमी उपभोक्ता संस्कृति, विशेष रूप से अमेरिकी ब्रांड, वैश्विक स्तर पर हावी हो जाते हैं। यह प्रक्रिया स्थानीय सांस्कृतिक विविधताओं को धीरे-धीरे समाप्त कर एक मानकीकृत और समान वैश्विक संस्कृति को बढ़ावा देती है। इसमें जीवनशैली और उपभोग के पैटर्न पूरी दुनिया में एक जैसे होने लगते हैं, जो स्थानीय समुदायों की विशिष्टता को प्रभावित करते हैं।

(D) वे प्राप्त सबक का दैनिक जीवन से समन्वय करते थे

21. निम्नलिखित घटनाओं को उनके घटित होने के कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. 'हम लोग' का प्रसारण
2. 'रामायण' का प्रसारण
3. भारत में रंगीन टेलीविज़न प्रसारण का प्रारंभ
4. 'बुनियाद' का प्रसारण

(A) 3, 1, 4, 2
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 2, 4, 1, 3

22. 1975 में आपातकाल की घोषणा का भारतीय मीडिया पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) मीडिया को पूर्ण स्वतंत्रता दी गई
(B) मीडिया पर सेंसर व्यवस्था लागू की गई
(C) नए समाचारपत्रों की स्थापना को प्रोत्साहित किया गया
(D) विदेशी मीडिया को भारत में आमंत्रित किया गया

23. 'सूचनारंजन' (Infotainment) शब्द से क्या अभिप्राय है?
(A) केवल सूचनात्मक कार्यक्रम
(B) केवल मनोरंजक कार्यक्रम
(C) केवल समाचार और विश्लेषण
(D) सूचना तथा मनोरंजन दोनों का मिश्रण

24. भूमंडलीकरण के कारण मीडिया उद्योग में आए परिवर्तनों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. राष्ट्रीय बाज़ारों का स्थान तरल भूमंडलीय बाज़ार ने ले लिया है।
2. नवीन प्रौद्योगिकियों ने मीडिया के विभिन्न रूपों को आपस में मिला दिया है।
3. मीडिया कंपनियाँ अब भी मुख्यतः राष्ट्रीय सरकारों के विनियमों का पालन करती हैं।
4. मीडिया उद्योग सिनेमा, प्रिंट और रेडियो जैसे अलग-अलग सेक्टरों में विभाजित है।

उपरोक्त में से कौन-से कथन सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) केवल 2, 3 और 4

25. भूमंडलीकरण के संदर्भ में संगीत उद्योग के बारे में क्या तर्क दिया जाता है?
(A) यह भूमंडलीकरण को न्यूनतम स्वीकार करता है
(B) इस पर भूमंडलीकरण का कोई प्रभाव नहीं पड़ा
(C) यह भूमंडलीकरण को कुशलतापूर्वक स्वीकारता है
(D) यह केवल स्थानीय स्तर तक ही सीमित रहा है

26. इंटरनेट के आने से संगीत उद्योग के लिए कौन सा बड़ा खतरा पैदा हो गया है?
(A) डिजिटल डाउनलोड से भौतिक बिक्री का घटना
(B) संगीत की उत्पादन गुणवत्ता में गिरावट
(C) लाइव संगीत कार्यक्रमों का पूर्ण समापन
(D) सक्रिय संगीतकारों की कुल संख्या में कमी

27. भारत में टेलीविज़न और इंटरनेट के विकास के बावजूद प्रिंट मीडिया के प्रसार में वृद्धि के क्या कारण हैं?
(A) टेलीविज़न कार्यक्रमों की खराब गुणवत्ता
(B) इंटरनेट की धीमी गति
(C) समाचारपत्रों की अत्यधिक ऊँची कीमतें
(D) साक्षर लोगों की संख्या में बढ़ोतरी और शहरों में प्रवसन

28. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान कीजिए:
सूची I: (समाचारपत्र)
P. केसरी
Q. मातृभूमि
R. ईनाडु
S. दिन तंती

सूची II: (भाषा/क्षेत्र)
1. मलयालम
2. मराठी
3. तमिल
4. तेलुगु

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

29. 'ईनाडु' समाचारपत्र की सफलता का मुख्य कारण क्या था?
(A) केवल राष्ट्रीय राजनीति पर ध्यान देना
(B) इसका केवल अंग्रेजी भाषा में प्रकाशन होना
(C) स्थानीय समाचारों हेतु 'ज़िला दैनिक' अवधारणा
(D) ग्रामीण क्षेत्रों में इसका मुफ्त वितरण करना

30. भारतीय भाषाओं के समाचारपत्रों ने उन्नत मुद्रण प्रौद्योगिकियों को अपनाकर क्या प्रयत्न किया है?
(A) अपनी दैनिक कीमतों में वृद्धि करना
(B) मुद्रित पृष्ठों की संख्या को घटाना
(C) केवल विदेशी समाचारों पर ध्यान देना
(D) विभिन्न पूरक अंक और पत्रिकाएँ छापना

31. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): हाल के दशकों में भारतीय भाषाओं के समाचारपत्रों के पाठकों की संख्या में अत्यधिक वृद्धि हुई है।
कारण (R): ये समाचारपत्र छोटे कस्बों और गाँवों के पाठकों की स्थानीय आवश्यकताओं को पूरा करते हैं, जिनकी रुचियाँ शहरी पाठकों से भिन्न होती हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही

167. (B) ग्रामीण क्षेत्रों में कनेक्टिविटी, बिजली और डिजिटल साक्षरता का अभाव।
भारत में डिजिटल विभाजन के प्रमुख कारणों में ग्रामीण क्षेत्रों में विश्वसनीय इंटरनेट कनेक्टिविटी की कमी, बिजली की अनियमित आपूर्ति और निम्न डिजिटल साक्षरता शामिल हैं। जबकि शहरी क्षेत्रों में तकनीकी पैठ बहुत तेजी से बढ़ी है, ग्रामीण समुदायों को महंगी लागत और जागरूकता की कमी जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। ये कारक मिलकर समाज के एक बड़े हिस्से को आधुनिक डिजिटल लाभों से वंचित रखते हैं।

168. (A) इसका अर्थ प्रौद्योगिकी से उत्पन्न अवसरों का लाभ उठाने की क्षमता भी है।
डिजिटल विभाजन केवल भौतिक उपकरणों या इंटरनेट तक पहुंच का मुद्दा नहीं है, बल्कि यह प्रौद्योगिकी का उपयोग करके आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक लाभ प्राप्त करने की व्यक्तिगत क्षमता से भी जुड़ा है। जिन लोगों के पास तकनीकी कौशल की कमी है, वे रोजगार, ऑनलाइन शिक्षा और नागरिक भागीदारी के अवसरों का प्रभावी ढंग से उपयोग नहीं कर पाते हैं। अतः, यह विभाजन अवसर की समानता को प्रभावित करता है।

169. (C) यह मौजूदा सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को और गहरा कर सकता है।
डिजिटल विभाजन का सबसे गंभीर सामाजिक परिणाम मौजूदा सामाजिक और आर्थिक असमानताओं का और अधिक गहरा होना है। जो वर्ग डिजिटल रूप से सक्षम हैं, वे शिक्षा, स्वास्थ्य और सूचना के क्षेत्र में तेजी से प्रगति करते हैं, जबकि पिछड़ी हुई जनसंख्या और भी हाशिए पर चली जाती है। यह असमानता भविष्य में गरीबी के चक्र को और मजबूत कर सकती है, जिससे सामाजिक न्याय की प्रक्रिया बाधित होती है।

170. (D) 'डिजिटल विभाजन' की अवधारणा, इसके विभिन्न क्षेत्रीय आयामों और संभावित परिणामों की व्याख्या करना।
इस स्रोत का मुख्य उद्देश्य डिजिटल विभाजन की जटिल अवधारणा को समझाना और इसके बहुआयामी प्रभावों पर प्रकाश डालना है। यह रेखांकित करता है कि कैसे तकनीकी पहुँच में असमानता विकास के अवसरों को सीमित करती है। साथ ही, यह भारत के संदर्भ में शहरी-ग्रामीण अंतर और इसके दूरगामी सामाजिक-आर्थिक परिणामों का विश्लेषण करता है ताकि पाठक आधुनिक तकनीकी युग की इस चुनौती को गहराई से समझ सकें।

171. (C) वैश्विक ब्रांडों की उपलब्धता और शॉपिंग मॉल जैसे नए खुदरा स्थानों का प्रसार।
भारत में उपभोग की संस्कृति के तीव्र विकास का मुख्य कारण आर्थिक उदारीकरण के बाद अंतरराष्ट्रीय ब्रांडों की व्यापक उपलब्धता है। शॉपिंग मॉल, मल्टीप्लेक्स और थीम रेस्तरां जैसे आधुनिक खुदरा केंद्रों के प्रसार ने खरीदारी के अनुभव को पूरी तरह बदल दिया है। अब उपभोग केवल बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति तक सीमित नहीं रह गया है, बल्कि यह एक अवकाश गतिविधि, मनोरंजन और सामाजिक प्रतिष्ठा का विषय बन गया है।

172. (B) वे उपभोग को सामाजिक प्रतिष्ठा और आधुनिक पहचान से जोड़कर इसे बढ़ावा देते हैं।
विज्ञापन और मीडिया उपभोग की संस्कृति को आकार देने में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं। वे उत्पादों को एक आकर्षक जीवन शैली, व्यक्तिगत सफलता और आधुनिक पहचान के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं। यह प्रक्रिया उपभोक्ताओं के मन में एक विशेष प्रकार की आकांक्षा पैदा करती है, जहाँ विशिष्ट ब्रांडों का उपयोग करना समाज में उच्च प्रतिष्ठा प्राप्त करने और वैश्विक नागरिकता के साथ जुड़ने का माध्यम माना जाता है।

173. (D) वैश्विक नागरिकता में भागीदारी।
शहरी मध्य वर्ग के लिए वैश्विक ब्रांडों का चयन और उनका नियमित उपभोग करना केवल व्यक्तिगत पसंद नहीं है, बल्कि यह वैश्विक नागरिकता में उनकी सक्रिय भागीदारी का एक महत्वपूर्ण प्रतीक बन गया है। अंतरराष्ट्रीय उत्पादों का उपयोग करने से उन्हें आभास होता है कि वे वैश्विक प्रवृत्तियों और आधुनिक विश्व के साथ गहराई से जुड़े हुए हैं। यह पहचान उनके सामाजिक व्यवहार को नया आकार देने में सहायक है।

174. (A) ऋणग्रस्तता, सामाजिक दबाव और पारंपरिक मूल्यों के साथ तनाव।
उपभोग की संस्कृति के कई नकारात्मक प्रभाव सामने आए हैं, जिनमें अत्यधिक खर्च के कारण बढ़ती ऋणग्रस्तता और दिखावे का सामाजिक दबाव प्रमुख हैं। यह संस्कृति मितव्ययिता और बचत जैसे पारंपरिक भारतीय मूल्यों के साथ निरंतर तनाव पैदा करती है। इसके अतिरिक्त, 'उपयोग करो और फेंको' की मानसिकता के कारण कचरा और पर्यावरणीय संकट भी गहरा रहा है, जो समाज की दीर्घकालिक स्थिरता के लिए चिंताजनक है।

175. (C) भारत में 'उपभोग की संस्कृति' ने आकांक्षाओं के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय तनाव पैदा किए हैं।
इस अनुच्छेद का मुख्य तर्क यह है कि भारत में उभरी नई उपभोग संस्कृति एक जटिल घटना है जिसके सकारात्मक और नकारात्मक दोनों पहलू हैं। जहाँ एक ओर इसने लोगों में नई आकांक्षाएं और आधुनिक जीवन स्तर की इच्छा जगाई है, वहीं दूसरी ओर इसने आर्थिक असमानता, ऋण का बोझ और पर्यावरणीय गिरावट जैसे गंभीर तनाव भी पैदा किए हैं। यह बाजार द्वारा निर्देशित बदलती पहचान का विश्लेषण है।

अध्याय 14
जनसंपर्क साधन और जनसंचार

1. 'मास मीडिया' शब्द का तात्पर्य है:
   (A) मुद्रित माध्यम जैसे समाचारपत्र और पत्रिकाएँ
   (B) जनसंपर्क के व्यापक पहुँच वाले संचार साधन
   (C) इलेक्ट्रॉनिक माध्यम जैसे रेडियो और टेलीविज़न
   (D) इंटरनेट एवं मोबाइल फोन जैसे नवीन माध्यम

2. निम्नलिखित में से कौन सा एक मास मीडिया का उदाहरण नहीं है?
   (A) टेलीफ़ोन पर व्यक्तिगत बातचीत
   (B) टेलीविज़न
   (C) समाचारपत्र
   (D) फ़िल्में

3. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान कीजिए:
   सूची I: (प्रारंभिक प्रकाशन)
   P. संवाद-कौमुदी
   Q. मिरात-उल-अखबार
   R. बॉम्बे समाचार
   S. शोम प्रकाश
   सूची II: (संस्थापक/भाषा)
   1. फरदूनजी मुर्ज़बान
   2. बंगला भाषा
   3. ईश्वरचंद्र विद्यासागर
   4. फारसी भाषा
   (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
   (B) P-1, Q-2, R-3, S-4
   (C) P-4, Q-1, R-2, S-3
   (D) P-2, Q-3, R-4, S-1

4. बेनेडिक्ट एंडरसन ने राष्ट्र को एक 'काल्पनिक समुदाय' के रूप में क्यों वर्णित किया?
   (A) क्योंकि राष्ट्र केवल एक भौगोलिक इकाई है
   (B) क्योंकि राष्ट्र की कोई वास्तविक सीमा नहीं होती
   (C) क्योंकि राष्ट्र केवल सरकार द्वारा निर्मित होता है
   (D) क्योंकि सदस्य मिले बिना भी जुड़ाव रखते हैं

5. आधुनिक मास मीडिया का प्रारंभ किस आविष्कार के साथ जुड़ा हुआ है?
   (A) टेलीग्राफ का विकास
   (B) रेडियो का आविष्कार
   (C) मुद्रणालय (प्रिंटिंग प्रेस) का विकास
   (D) टेलीविज़न का आविष्कार

6. निम्नलिखित राष्ट्रवादी समाचारपत्रों को औपनिवेशिक सरकार की अप्रसन्नता क्यों सहनी पड़ी?
   (A) वे सरकार के विकास कार्यों का प्रचार नहीं करते थे
   (B) वे औपनिवेशिक सरकार के उत्पीड़क उपायों का खुलकर विरोध करते थे
   (C) वे केवल मनोरंजन सामग्री प्रकाशित करते थे
   (D) वे बहुत महँगे थे और आम जनता की पहुँच से बाहर थे

7. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
   अभिकथन (A): स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद, भारत में मीडिया से 'लोकतंत्र के पहरेदार' की भूमिका निभाने की आशा की गई।
   कारण (R): सरकार का मानना था कि मीडिया को आत्मनिर्भरता और राष्ट्रीय विकास की भावना को बढ़ावा देना चाहिए और सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध लड़ना चाहिए।
   (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
   (D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

8. जोहान गुटेनबर्ग ने आधुनिक प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करके पुस्तकें छापने की तकनीक किस वर्ष विकसित की?
   (A) 1440
   (B) 1550
   (C) 1660
   (D) 1770

9. भारत में रेडियो प्रसारण के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
   1. भारत में रेडियो प्रसारण 1920 के दशक में कोलकाता और चेन्नई में 'हैम' ब्रॉडकास्टिंग क्लबों के ज़रिए शुरु हुआ।
   2. 1940 के दशक में द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान यह एक सार्वजनिक प्रसारण प्रणाली के रूप में परिपक्व हुआ।
   3. स्वतंत्रता-प्राप्ति के समय, भारत में केवल 6 रेडियो स्टेशन थे।
   4. 1950 तक, समस्त भारत में कुल 5,46,200 रेडियो लाइसेंस थे।
   उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
   (A) केवल 1 और 2
   (B) केवल 3 और 4

(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

10. स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद के प्रारंभिक दशकों में सरकार का फ़िल्म प्रभाग क्या प्रस्तुत करता था?
(A) विकास प्रक्रिया दर्शाने वाले वृत्तचित्र
(B) केवल व्यावसायिक मनोरंजन-प्रधान फ़िल्में
(C) केवल हॉलीवुड की डब की हुई फ़िल्में
(D) निजी कंपनियों के उत्पाद विज्ञापन

11. 'विविध भारती' चैनल की स्थापना का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) सरकारी समाचारों को प्रसारित करना
(B) शास्त्रीय संगीत का प्रचार करना
(C) औपचारिक शैक्षिक कार्यक्रम चलाना
(D) हिंदी फ़िल्मी गानों का प्रसारण करना

12. आकाशवाणी ने 1960 के दशक में हरित क्रांति को बढ़ावा देने में क्या भूमिका निभाई?
(A) इसने किसानों को ऋण उपलब्ध कराया
(B) इसने अधिक उपज देने वाली फ़सलों का प्रचार करने के लिए व्यापक अभियान चलाया
(C) इसने कीटनाशकों का मुफ्त वितरण किया
(D) इसने कृषि विश्वविद्यालयों की स्थापना की

13. 1960 के दशक में 'ट्रांजिस्टर क्रांति' ने रेडियो को अधिक सुलभ कैसे बनाया?
(A) ट्रांजिस्टर केवल शहरों में उपलब्ध थे
(B) ट्रांजिस्टर केवल समाचार प्रसारित करते थे
(C) ये बैटरी-चालित और सस्ते उपकरण थे
(D) ट्रांजिस्टर की ध्वनि गुणवत्ता बहुत खराब थी

14. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान कीजिए:
सूची I: (घटना)
P. विविध भारती का आकाशवाणी में विलय
Q. भारत में टेलीविज़न का प्रायोगिक शुभारंभ
R. सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविज़न एक्सपेरिमेंट (SITE)
S. एशियाई खेलों के दौरान रंगीन प्रसारण का प्रारंभ
सूची II: (वर्ष)
1. 1959
2. 1975-76
3. 1982
4. 1957
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-1, S-4
(D) P-3, Q-4, R-2, S-1

15. भारत में टेलीविज़न का प्रारंभिक उद्देश्य क्या था?
(A) ग्रामीण विकास को बढ़ावा देना
(B) शहरी मनोरंजन को बढ़ावा देना
(C) केवल फ़िल्मों का प्रसारण करना
(D) विदेशी कार्यक्रमों को दिखाना

16. सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविज़न एक्सपेरिमेंट (SITE) कार्यक्रम के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह अगस्त 1975 से जुलाई 1976 के बीच चला।
2. इसके अंतर्गत छह राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक दर्शकों के लिए प्रसारण किया गया।
3. ये शैक्षिक प्रसारण प्रतिदिन चार घंटे तक 2400 टीवी सेटों पर सीधे प्रसारित किए जाते थे।
4. यह कार्यक्रम केवल शहरी क्षेत्रों के लिए था।
5. इसका मुख्य उद्देश्य मनोरंजन प्रदान करना था।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) 1, 2 और 3
(B) 2, 4 और 5
(C) केवल 1 और 2
(D) सभी कथन सही हैं

17. 1982 के एशियाई खेलों के दौरान रंगीन प्रसारण के प्रारंभ होने का टेलीविज़न पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) टेलीविज़न की लोकप्रियता में कमी आई
(B) टेलीविज़न प्रसारण का बहुत तेज़ी से वाणिज्यीकरण हुआ
(C) केवल खेल कार्यक्रम दिखाए जाने लगे
(D) दूरदर्शन एकमात्र चैनल बना रहा

18. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): 1980 के दशक में 'हम लोग' और 'बुनियाद' जैसे सोप ओपेरा अत्यंत लोकप्रिय हुए।
कारण (R): इन कार्यक्रमों ने दूरदर्शन के लिए भारी मात्रा में विज्ञापन द्वारा राजस्व अर्जित किया, जिससे टेलीविज़न का वाणिज्यीकरण हुआ।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

19. 'हम लोग' (1984-85) धारावाहिक को भारत का पहला लंबा चलने वाला सोप ओपेरा क्यों माना जाता है?
(A) यह केवल मनोरंजन पर केंद्रित था
(B) यह केवल एक महीने तक चला था
(C) इसमें 'मनोरंजन-शिक्षा' रणनीति अपनाई गई
(D) यह केवल दक्षिण भारतीय क्षेत्रों हेतु था

20. धारावाहिक 'हम लोग' के अंत में अभिनेता अशोक कुमार की क्या भूमिका होती थी?
(A) वे अगले एपिसोड की कहानी सुनाते थे
(B) वे व्यावसायिक उत्पादों का विज्ञापन प्रस्तुत करते थे
(C) वे दर्शकों से प्रतिक्रियात्मक पत्र लिखने को कहते थे

137. (C) क्योंकि इसके कारण और परिणाम बहुत विविध और जटिल हैं।
भूमंडलीकरण एक अत्यंत व्यापक और बहुआयामी प्रक्रिया है जिसके कारण और परिणाम समाज के हर क्षेत्र में बहुत ही विविध और जटिल हैं। यह केवल आर्थिक या राजनीतिक परिवर्तन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह संस्कृति, शिक्षा, तकनीक और व्यक्तिगत जीवन को भी गहराई से प्रभावित करता है। इसी जटिलता के कारण अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्र जैसे विभिन्न विषयों को इसे समझने के लिए एक-दूसरे के सहयोग की आवश्यकता पड़ती है।

138. (A) सीमित और स्थानीय।
भूमंडलीकरण की प्रक्रिया शुरू होने से पहले, एक सामान्य किसान के लिए उपभोग के विकल्प अत्यंत सीमित और स्थानीय स्तर पर उपलब्ध वस्तुओं तक ही सीमित थे। वह मुख्य रूप से अपने गाँव या पास के कस्बे के हाट-बाजार में मिलने वाले स्वदेशी उत्पादों पर निर्भर रहता था। उस समय अंतरराष्ट्रीय ब्रांडों या विदेशी वस्तुओं की पहुँच ग्रामीण क्षेत्रों तक न के बराबर थी, जिससे लोगों की उपभोग प्रवृत्तियाँ काफी हद तक पारंपरिक और आत्मनिर्भर हुआ करती थीं।

139. (D) उसके लिए उपभोग के नए और व्यापक विकल्प उपलब्ध हुए।
वर्ष 2001 में आयात पर से सभी प्रतिबंध हटने का संपन्न शहरी उपभोक्ताओं पर यह सकारात्मक प्रभाव पड़ा कि उनके लिए उपभोग के नए और अत्यंत व्यापक विकल्प उपलब्ध हो गए। अब वे दुनिया भर के बेहतरीन अंतरराष्ट्रीय ब्रांडों, इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और खाद्य पदार्थों का आसानी से उपयोग कर सकते थे। इस बदलाव ने शहरी जीवनशैली को और अधिक वैश्विक और विविधतापूर्ण बना दिया, जिससे क्रय शक्ति वाले वर्ग के लिए उपभोग का दायरा काफी बढ़ गया।

140. (B) ये संबंध केवल आधुनिक युग की देन हैं।
यह कहना पूरी तरह असत्य है कि भारत के वैश्विक अंतःसंबंध केवल आधुनिक युग की ही देन हैं। ऐतिहासिक प्रमाणों के अनुसार, भारत हजारों वर्षों से रेशम मार्ग जैसे व्यापारिक रास्तों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से विश्व की अन्य महान सभ्यताओं से गहराई से जुड़ा रहा है। प्राचीन काल से ही विभिन्न देशों के व्यापारी, विद्वान और यात्री भारत आते रहे हैं, जिससे यह स्पष्ट होता है कि भारत की वैश्विक अंतःसंबद्धता का इतिहास अत्यंत प्राचीन और गौरवशाली है।

141. (A) 2, 4, 1, 3
भारत के संचार इतिहास में सबसे पहले टेलीफोन लाइन की स्थापना हुई, जिसके बाद पी.सी.ओ. के विस्तार ने जन-जन तक फोन पहुँचाया। इसके बाद टेलीविजन चैनलों का उदारीकरण हुआ, जिससे सूचनाओं का प्रवाह बढ़ा और अंततः इंटरनेट के आगमन ने डिजिटल क्रांति को जन्म दिया। यह कालक्रम दर्शाता है कि कैसे भारत ने चरणबद्ध तरीके से सूचना और संचार के आधुनिक साधनों को अपनाया और वैश्विक नेटवर्क का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बना।

142. (D) अधिक कमजोरी और असुरक्षा।
जब श्रम के संदर्भ में 'लचीलेपन' शब्द का प्रयोग किया जाता है, तो इसका अंतिम परिणाम श्रमिकों के लिए अधिक कमजोरी और नौकरी की असुरक्षा के रूप में सामने आता है। इसका अर्थ है कि कंपनियों के पास श्रमिकों को आसानी से हटाने और कम वेतन या बिना सामाजिक सुरक्षा के काम कराने की अधिक स्वतंत्रता होती है। यह व्यवस्था नियोक्ताओं को बाजार की अनिश्चितताओं से तो बचाती है, लेकिन श्रमिकों के अधिकारों और उनके जीवन की स्थिरता को दांव पर लगा देती है।

143. (A) भूमंडलीय उत्पादन श्रृंखला (Global Production Chain)
पोंटियाक ली मैन्स कार के निर्माण में विभिन्न देशों से पुर्जों का आना और अलग-अलग स्थानों पर डिजाइन एवं मार्केटिंग का काम होना 'भूमंडलीय उत्पादन श्रृंखला' का एक आदर्श उदाहरण है। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि आधुनिक अर्थव्यवस्था में कोई भी जटिल उत्पाद अब केवल एक राष्ट्र की सीमा में नहीं बनता। इसके बजाय, यह वैश्विक सहयोग और श्रम विभाजन का परिणाम होता है, जहाँ प्रत्येक देश अपनी विशिष्ट दक्षता के आधार पर उत्पादन प्रक्रिया में योगदान देता है।

144. (B) नगरीय मध्यवर्ग के लिए रोजगार के नए अवसर।
भूमंडलीकरण का एक महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव भारतीय नगरीय मध्यवर्ग के लिए सूचना प्रौद्योगिकी और सेवा क्षेत्रों में रोजगार के अनेक नए अवसरों का सृजन है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के आगमन और बीपीओ उद्योग के विस्तार ने युवाओं के लिए आकर्षक वेतन और अंतरराष्ट्रीय अनुभव के द्वार खोले हैं। यद्यपि इसके कुछ नकारात्मक सामाजिक और आर्थिक परिणाम भी हैं, लेकिन शिक्षित वर्ग के लिए आजीविका और विकास के नए रास्ते खोलना इसकी एक बड़ी उपलब्धि मानी जाती है।

145. (B) अंतर्राष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठन (INGOs)
एमनेस्टी इंटरनेशनल और डॉक्टर्स विदाउट बॉर्डर्स अंतरराष्ट्रीय गैर-सरकारी संगठनों के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। ये संगठन किसी भी सरकार के अधीन न होकर स्वतंत्र रूप से मानवाधिकारों की रक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में दुनिया भर में सक्रिय रहते हैं। ये नागरिक समाज की शक्ति को वैश्विक स्तर पर संगठित करते हैं और संकट के समय राष्ट्रों की सीमाओं की परवाह किए बिना मानवीय सहायता और न्याय सुनिश्चित करने के लिए समर्पित भाव से कार्य करते हैं।

146. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
भूमंडलीकरण के सांस्कृतिक आयामों में सजातीयकरण का डर और भूस्थानीकरण की वास्तविक प्रक्रिया दोनों ही साथ-साथ मौजूद हैं। भूस्थानीकरण वैश्विक प्रभावों को स्थानीय परंपराओं के साथ जोड़कर एक नया स्वरूप देता है, जैसे विदेशी टीवी चैनलों द्वारा भारतीय भाषाओं और स्थानीय सामग्री का उपयोग करना। ये सभी कथन मिलकर इस बात की पुष्टि करते हैं कि वैश्विक सांस्कृतिक प्रक्रियाएँ सरल नहीं हैं, बल्कि वे निरंतर स्थानीय पहचानों के साथ अंतःक्रिया करके नए सांस्कृतिक प्रतिमानों को जन्म देती हैं।

व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

32. समाचारपत्र उत्पादन में प्रौद्योगिकी ने संवाददाता की भूमिका को कैसे बदला है?
(A) संवाददाता अब केवल कार्यालय में काम करते हैं
(B) डिजिटल उपकरणों ने पारंपरिक साधनों की जगह ली
(C) संवाददाताओं को अब यात्रा करने की आवश्यकता नहीं
(D) संवाददाताओं के लिए आशुलिपि ज्ञान अनिवार्य हो गया

33. समाचारपत्रों के कई संस्करण निकालने की प्रक्रिया में, यद्यपि मुद्रण केंद्र सीमित होते हैं, पर संस्करणों की संख्या कैसे बढ़ जाती है?
(A) प्रत्येक संस्करण हेतु नया मुद्रण केंद्र बनाकर
(B) डिजिटल नेटवर्क द्वारा सामग्री विभिन्न स्थानों पर भेजकर
(C) हस्तलिखित सामग्री द्वारा संस्करण तैयार करके
(D) पाठकों द्वारा स्वयं का संस्करण प्रिंट करने के माध्यम से

34. 'अमर उजाला' जैसे समाचारपत्रों ने समाचार एकत्रित करने और चित्रात्मक सामग्री में सुधार के लिए क्या किया है?
(A) नई प्रौद्योगिकी और संवाददाताओं का नेटवर्क बनाना
(B) केवल विदेशी संवाददाताओं पर आश्रित रहना
(C) केवल सरकारी सूचनाओं एवं विज्ञप्तियों को छापना
(D) समाचारों को प्रकाशन हेतु कई दिनों तक रोकना

35. युवा पाठकों की समाचारपत्र पढ़ने की आदतों के बारे में क्या कहा जाता है?
(A) वे पूरा समाचारपत्र शब्दशः पढ़ते हैं
(B) वे समाचारपत्र बिल्कुल नहीं पढ़ते हैं
(C) वे सीधे अपनी विशिष्ट रुचि के पृष्ठों को खोलते हैं
(D) वे केवल गंभीर संपादकीय पृष्ठों का ही अध्ययन करते हैं

36. 1991 के खाड़ी युद्ध ने किस अंतरराष्ट्रीय समाचार चैनल को लोकप्रिय बनाया?
(A) बी.बी.सी.
(B) अल जज़ीरा
(C) स्टार न्यूज़
(D) सी.एन.एन.

37. निम्नलिखित समाचारपत्रों की स्थापना को कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. दि टाइम्स ऑफ़ इंडिया
2. दि पायनियर
3. दि मद्रास मेल
4. दि स्टेट्समैन
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 4, 3, 2, 1
(C) 1, 3, 2, 4
(D) 2, 1, 4, 3

38. 1992 में भारत में केबल टेलीविज़न के लिए कार्यक्रम देना शुरू करने वाला पहला हिंदी आधारित उपग्रह मनोरंजन चैनल कौन सा था?
(A) स्टार प्लस
(B) ज़ी-टीवी
(C) सोनी
(D) सन टीवी

39. 1980 के दशक में वी.सी.आर. ने भारतीय दर्शकों के लिए मनोरंजन के विकल्पों में कैसे वृद्धि की?
(A) इसने दूरदर्शन के कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार किया
(B) इसने केवल शैक्षिक कार्यक्रमों को बढ़ावा दिया
(C) इसने केबल टेलीविज़न को समाप्त कर दिया
(D) इसने दूरदर्शन की एकल चैनल व्यवस्था के अनेक विकल्प प्रस्तुत किए

40. पारराष्ट्रीय टेलीविज़न चैनलों ने भारतीय दर्शकों को आकर्षित करने के लिए क्या रणनीति अपनाई?
(A) उन्होंने कार्यक्रमों को स्थानीयकृत और भारतीय स्वरूप दिया
(B) उन्होंने केवल विशुद्ध अंग्रेजी कार्यक्रमों का प्रसारण किया
(C) उन्होंने भारतीय क्षेत्रों में प्रसारण सेवाएँ बंद कर दीं
(D) उन्होंने केवल राजनीतिक समाचारों पर ध्यान केंद्रित किया

41. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान कीजिए:
सूची I: (मीडिया व्यक्तित्व/अवधारणा)
P. राजा राममोहन राय
Q. बेनेडिक्ट एंडरसन
R. रामोजी राव
S. जोहान गुटेनबर्ग
सूची II: (विवरण)
1. 'ईनाडु' के संस्थापक
2. 'काल्पनिक समुदाय' की अवधारणा
3. 'संवाद-कौमुदी' का प्रकाशन
4. आधुनिक प्रिंटिंग प्रेस
(A) P-3, Q-2, R-1, S-4
(B) P-1, Q-3, R-4, S-2
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

42. 'हिंगलिश' (Hinglish) शब्द का प्रयोग किस संदर्भ में किया गया है?
(A) हिंदी और अंग्रेजी का मिश्रण, जिसे विज्ञापनों में प्रयोग किया गया
(B) केवल इंग्लैंड में बोली जाने वाली हिंदी
(C) एक प्राचीन भारतीय भाषा
(D) एक कंप्यूटर प्रोग्रामिंग भाषा

85. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों ने उन्नत मुद्रण प्रौद्योगिकियों को अपनाया है।
कारण (R): इसका उद्देश्य केवल उत्पादन लागत को कम करना था, सामग्री की गुणवत्ता से कोई संबंध नहीं था।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

86. समाचारपत्रों ने "विभिन्न प्रकार की कहानियाँ" क्यों रखनी शुरु कर दी हैं?
(A) क्योंकि उनके पास पर्याप्त समाचार नहीं होते
(B) विभिन्न रुचियों के पाठकों को आकर्षित करने के लिए
(C) सरकार के आदेश के कारण
(D) कागज की बर्बादी करने के लिए

87. भारत में 1991 के बाद गैर-सरकारी उपग्रह टेलीविज़न में हुई आश्चर्यजनक वृद्धि के पीछे एक प्रमुख घटना कौन सी थी?
(A) 1982 के एशियाई खेल प्रतियोगिता
(B) 1975 की राष्ट्रीय आपातकाल घोषणा
(C) 1960 के दशक की ट्रांजिस्टर क्रांति
(D) खाड़ी युद्ध एवं स्टार टीवी का आगमन

88. 1984 में, मुंबई और अहमदाबाद जैसे नगरों में उद्यमी केबल ऑपरेटर क्या कर रहे थे?
(A) वे अपार्टमेंट भवनों में तार लगाकर फ़िल्में प्रसारित करते थे
(B) वे जनसामान्य में मुफ्त टीवी सेटों का वितरण कर रहे थे
(C) वे दूरदर्शन हेतु विशेष कार्यक्रम निर्माण का कार्य कर रहे थे
(D) वे स्वतंत्र स्थानीय रेडियो स्टेशनों की स्थापना कर रहे थे

89. पारराष्ट्रीय टीवी चैनलों के भारत में आगमन पर कुछ लोगों को क्या चिंता हुई?
(A) भारतीय टीवी चैनलों के पूर्णतः बंद हो जाने की
(B) विद्युत ऊर्जा की दैनिक खपत अत्यधिक बढ़ जाने की
(C) भारतीय संस्कृति एवं युवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव की
(D) टीवी सेटों के बाजार मूल्यों में तीव्र वृद्धि होने की

90. समाचार चैनलों का स्वरूप "जीवंत एवं अनौपचारिक" होने का क्या परिणाम हुआ है?
(A) समाचारों में अब अधिक तात्कालिकता एवं आत्मीयता आ गई है
(B) समाचार अब पहले से अधिक गंभीर और अकादमिक हो गए हैं
(C) समाचारों की सार्वजनिक विश्वसनीयता अब पूरी तरह समाप्त है
(D) चैनलों पर केवल पूर्व-रिकॉर्डेड कार्यक्रम ही दिखाए जाते हैं

91. औपनिवेशिक काल के निम्नलिखित प्रकाशनों को उनकी स्थापना के वर्ष के अनुसार कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. दि सिविल एंड मिलिटरी गज़ट, लाहौर
2. दि स्टेट्समैन, कोलकाता
3. दि मद्रास मेल
4. संवाद-कौमुदी
(A) 4, 3, 2, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 2, 1, 3
(D) 3, 1, 4, 2

92. राघव महतो के एफ.एम. स्टेशन का नाम क्या था?
(A) रेडियो बिहार
(B) राघव एफ.एम. मंसूरपुर
(C) प्रिया इलेक्ट्रॉनिक्स
(D) ग्रामीण आवाज़

93. किस तमिल समाचार पत्र ने हमेशा सरल और बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया?
(A) दि हिंदू
(B) ईनाडु
(C) दिन तंती
(D) मलयाली मनोरमा

94. 'हम लोग' धारावाहिक के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह भारत का पहला सोप ओपेरा था।
2. इसमें लैंगिक समानता, छोटा परिवार और राष्ट्रीय एकता जैसे सामाजिक विषयों को बढ़ावा दिया गया।
3. प्रत्येक एपिसोड के अंत में अशोक कुमार एक उपसंहार प्रस्तुत करते थे।
4. इसने मैगी नूडल्स जैसे उत्पादों के विज्ञापन से लोकप्रियता हासिल की।
5. इसके दर्शकों की संख्या बहुत कम थी।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) 1, 2, 3, 4
(B) 2, 3, 4, 5
(C) 1, 3, 5
(D) सभी कथन सही हैं

95. औपनिवेशिक सरकार ने राष्ट्रवादी प्रेस पर शिकंजा कसने के लिए क्या उपाय अपनाया?
(A) उन पर सेंसर व्यवस्था लागू कर दी
(B) उन्हें वित्तीय सहायता दी
(C) उन्हें पुरस्कृत किया
(D) उनके संपादकों को सरकारी पदों पर नियुक्त किया

96. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान कीजिए:

सूची II: (प्रकार/विशेषता)
1. हिंदी मनोरंजन चैनल (प्रारंभ में)
2. 1991 तक एकमात्र राज्य-नियंत्रित चैनल
3. रिएलिटी शो
4. मनोरंजन-शिक्षा सोप ओपेरा

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

55. भारत में 'केबल टेलीविज़न' उद्योग का विकास कब और कैसे हुआ?
(A) वर्ष 2000 के बाद सरकारी योजनाओं के द्वारा
(B) 1970 के दशक में सीधे दूरदर्शन के सहयोग से
(C) केवल विदेशी कंपनियों के सीधे व्यावसायिक प्रवेश से
(D) 1980 के दशक में उद्यमियों एवं वी.सी.आर. के माध्यम से

56. भारत में पत्रकारिता को प्रारंभ में एक 'अंतरात्मा से प्रेरित कार्य' क्यों माना जाता था?
(A) क्योंकि यह देशभक्ति और समाज सुधार से प्रेरित था
(B) क्योंकि इस क्षेत्र में अत्यधिक आर्थिक लाभ था
(C) क्योंकि यह एक सुरक्षित सरकारी सेवा का हिस्सा था
(D) क्योंकि इसके लिए किसी विशेष कौशल की आवश्यकता नहीं थी

57. समाचारपत्रों के संबंध में यह क्यों कहा जाता है कि वे अब "उपभोक्ता वस्तु बन गए हैं"?
(A) क्योंकि वे अब केवल सामाजिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्ध हैं
(B) क्योंकि ये केवल एक अति विशिष्ट पाठक वर्ग हेतु सीमित हैं
(C) क्योंकि इनका मुख्य उद्देश्य अब व्यावसायिक लाभ कमाना है
(D) क्योंकि ये अब सभी पाठकों को पूर्णतः निःशुल्क उपलब्ध हैं

58. 1990 के दशक के बाद समाचारपत्र उत्पादन में आए दो प्रमुख प्रौद्योगिकीय परिवर्तन कौन से थे?
(A) पी.सी. नेटवर्क और 'न्यूज़मेकर' जैसे सॉफ़्टवेयर
(B) हस्तलिखित सामग्री और कबूतरों द्वारा संदेश प्रेषण
(C) यांत्रिक टाइपराइटर और पारंपरिक टेलीग्राफ प्रणाली
(D) मुद्रण प्रेस का आविष्कार और कागज़ का प्रथम निर्माण

59. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के उत्थान के बावजूद भारत में प्रिंट मीडिया का प्रसार विस्तृत हुआ है।
कारण (R): प्रिंट मीडिया ने विज्ञापनों पर अपनी निर्भरता कम कर दी है और कीमतें बढ़ा दी हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

60. 'दि टाइम्स ऑफ़ इंडिया' का प्रकाशन पहली बार कहाँ और कब हुआ?
(A) दिल्ली में, 1858 में
(B) मुंबई में, 1861 में
(C) कोलकाता में, 1875 में
(D) इलाहाबाद में, 1865 में

61. निम्नलिखित घटनाओं को कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. राजा राममोहन राय द्वारा 'संवाद-कौमुदी' का प्रकाशन
2. 'दि टाइम्स ऑफ़ इंडिया' का प्रकाशन
3. जोहान गुटेनबर्ग द्वारा प्रिंटिंग प्रेस का विकास
4. ईश्वरचंद्र विद्यासागर द्वारा 'शोम प्रकाश' का प्रकाशन

(A) 3, 1, 4, 2
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 3, 4, 1, 2
(D) 4, 1, 2, 3

62. औपनिवेशिक काल में रेडियो के बारे में क्या सच है?
(A) यह पूर्णतः राष्ट्रवादी भारतीय नेताओं के नियंत्रण में था
(B) यह किसी भी प्रकार के प्रसारण हेतु पूर्णतः स्वतंत्र था
(C) उस समय भारत में रेडियो का अस्तित्व ही नहीं था
(D) यह पूर्णतः सरकारी स्वामित्व में था, राष्ट्रीय विचार वर्जित थे

63. स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद आकाशवाणी ने भारत की विविधता को ध्यान में रखते हुए अपनी सेवाएँ किन तीन स्तरों पर प्रदान कीं?
(A) राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय
(B) केवल राष्ट्रीय स्तर पर
(C) केवल शहरी और ग्रामीण
(D) केवल हिंदी और अंग्रेजी

64. आकाशवाणी के विस्तार के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. 1962 में चीन युद्ध के बाद 'वार्ता' इकाई की स्थापना हुई।
2. 1971 में बांग्लादेश संकट के समय प्रति घंटे समाचार प्रसारण शुरु हुआ।
3. 1991 में राजीव गांधी की हत्या के बाद चौबीसों घंटे बुलेटिन प्रस्तुत करने का कदम उठाया गया।
4. इन घटनाओं का आकाशवाणी के विस्तार से कोई संबंध नहीं है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 4
(D) केवल 2 और 3

3. इसे कार्य करने के लिए विशाल पूँजी और संगठन की आवश्यकता होती है।
4. इसकी विषय-वस्तु सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ से प्रभावित होती है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 2
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) 1, 2, 3 और 4

108. 1999 में स्टार प्लस चैनल में क्या बड़ा परिवर्तन आया?
(A) यह एक खेल चैनल बन गया
(B) यह पूर्ण रूप से एक हिंदी चैनल बन गया
(C) यह बंद हो गया
(D) इसने केवल अंग्रेजी कार्यक्रम दिखाना शुरू कर दिया

109. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान कीजिए:
सूची I: (मीडिया चैनल/पत्र)
P. संवाद-कौमुदी
Q. बॉम्बे समाचार
R. केसरी
S. मातृभूमि
सूची II: (मुख्य भाषा/प्रकार)
1. गुजराती
2. मराठी
3. बंगला
4. मलयालम

(A) P-3, Q-1, R-2, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

110. "आपके विचार से बसेसर राम जैसे लोग इतनी ज़्यादा शराब क्यों पीते हैं?" - यह प्रश्न दर्शकों से किस धारावाहिक के अंत में पूछा गया था?
(A) बुनियाद
(B) रामायण
(C) महाभारत
(D) हम लोग

111. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): 1960 के दशक में ट्रांजिस्टर क्रांति ने रेडियो को भारत में अधिक लोकप्रिय बना दिया।
कारण (R): ट्रांजिस्टर सेट बैटरी से चलते थे, पोर्टेबल थे और उनकी कीमतें भी कम थीं, जिससे उनकी पहुँच बढ़ी।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

112. भारत में भूमंडलीकरण के बाद मीडिया में आए परिवर्तनों के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. मीडिया उद्योग कई अलग-अलग सेक्टरों में विभाजित हो गया।
2. मीडिया के विभिन्न रूप, जैसे प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक, आपस में विलीन हो गए।
3. राष्ट्रीय बाज़ारों के स्थान पर भूमंडलीय बाज़ारों का उदय हुआ।
4. मीडिया कंपनियों पर सरकारी नियंत्रण पहले से कहीं अधिक बढ़ गया।
5. मीडिया का अंतर्राष्ट्रीय आयाम समाप्त हो गया।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) 2 और 3
(B) 1 और 4
(C) 3, 4 और 5
(D) 1, 2 और 5

113. 19वीं सदी के राष्ट्रवादी समाचार पत्र 'केसरी' की भाषा क्या थी:
(A) मलयालम
(B) मराठी
(C) अंग्रेज़ी
(D) बंगला

114. टेलीविजन पर दिखाए जाने वाले कार्यक्रमों में विज्ञापनों को शामिल करने का "लक्ष्यगत दर्शकों" पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) नगरीय उपभोक्ता वर्ग हेतु मनोरंजन कार्यक्रमों की वृद्धि
(B) शैक्षिक एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भारी वृद्धि हुई
(C) ग्रामीण कृषक दर्शकों हेतु विशेष कार्यक्रमों की वृद्धि
(D) व्यावसायिक विज्ञापनों का दर्शकों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा

115. लगे रहो मुन्नाभाई फिल्म में नायिका का पेशा क्या था?
(A) डॉक्टर
(B) वकील
(C) रेडियो जॉकी
(D) शिक्षिका

116. किस दशक में 'हम लोग' और 'बुनियाद' जैसे सोप ओपेरा प्रसारित किए गए?
(A) 1970 के दशक में
(B) 1990 के दशक में
(C) 2000 के दशक में
(D) 1980 के दशक में

117. 'रामायण' (1987-88) और 'महाभारत' (1988-90) के प्रसारण का दूरदर्शन पर क्या वित्तीय प्रभाव पड़ा?
(A) दूरदर्शन को इससे बहुत भारी वित्तीय घाटा सहना पड़ा
(B) दूरदर्शन की आर्थिक स्थिति पर कोई वित्तीय प्रभाव नहीं

2. मिरात-उल-अखबार
3. बॉम्बे समाचार
4. शोम प्रकाश

(A) केवल 1
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 3 और 4
(D) 1, 2 और 3

75. औपनिवेशिक काल में समाचारपत्रों का प्रभाव उनकी वितरण संख्या की तुलना में बहुत अधिक क्यों था?
(A) क्योंकि वे पृष्ठों की संख्या में बहुत मोटे होते थे
(B) क्योंकि प्रत्येक शिक्षित व्यक्ति स्वयं का समाचार पत्र खरीदता था
(C) क्योंकि वे समाचार पत्र केवल सचित्र सामग्री से युक्त होते थे
(D) क्योंकि खबरें सार्वजनिक स्थानों पर सामूहिक रूप से पढ़ी जाती थीं

76. स्वतंत्रता के बाद के प्रारंभिक दशकों में मीडिया को किन सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रोत्साहित किया गया?
(A) सरकारी प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार
(B) अस्पृश्यता, बाल विवाह और विधवा बहिष्कार
(C) व्यापक गरीबी और बेरोजगारी
(D) पश्चिमी आधुनिक संस्कृति का समाज पर प्रभाव

77. 1957 में आकाशवाणी द्वारा 'विविध भारती' को अपने में शामिल करने का क्या परिणाम हुआ?
(A) यह आर्थिक रूप से एक घाटे का सरकारी चैनल बन गया
(B) इस पर केवल गंभीर शास्त्रीय संगीत का प्रसारण होने लगा
(C) यह विज्ञापनों द्वारा एक लाभदायक व्यावसायिक चैनल बना
(D) इस चैनल का प्रसारण तकनीकी कारणों से शीघ्र ही बंद हो गया

78. 2000 तक भारत में रेडियो प्रसारण की पहुँच के बारे में क्या अनुमान दिया गया है?
(A) यह केवल 1 करोड़ विशिष्ट परिवारों तक ही सीमित था
(B) रेडियो का भारत में कोई सक्रिय श्रोता शेष नहीं बचा था
(C) यह सेवा केवल बड़े शहरी क्षेत्रों तक ही सीमित रह गई थी
(D) यह 11 करोड़ परिवारों यानी दो-तिहाई घरों तक पहुँचा

79. 1975 तक भारत में कितने दूरदर्शन केंद्र स्थापित हो चुके थे?
(A) दिल्ली, मुंबई, श्रीनगर और अमृतसर के चार केंद्र
(B) केवल एक दूरदर्शन केंद्र (मात्र दिल्ली में)
(C) कुल दस क्षेत्रीय दूरदर्शन केंद्र
(D) उस समय तक कोई केंद्र स्थापित नहीं था

80. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान कीजिए:
सूची I: (मीडिया उत्पाद)
P. रेडियो मिर्ची
Q. रैड एफ.एम.
R. रेडियो सिटी
S. ज़ी-टीवी
सूची II: (ब्रांड/कंपनी)
1. स्टार नेटवर्क
2. टाइम्स ऑफ़ इंडिया समूह
3. लिविंग मीडिया
4. एस्सेल समूह

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-1, S-4
(C) P-3, Q-1, R-4, S-2
(D) P-4, Q-2, R-1, S-3

81. 'मैगी 2 मिनट नूडल्स' का प्रचार किस कार्यक्रम के विज्ञापनों के माध्यम से लोकप्रिय हुआ, जो टेलीविज़न के वाणिज्यीकरण के प्रारंभ को दर्शाता है?
(A) रामायण
(B) हम लोग
(C) महाभारत
(D) बुनियाद

82. भूमंडलीकरण के संदर्भ में, media के विभिन्न रूपों के "विलयन" (convergence) का क्या अर्थ है?
(A) नवीन प्रौद्योगिकियों द्वारा विभिन्न माध्यमों का परस्पर मिलन
(B) सभी मीडिया कंपनियों का एक बड़ी संस्था में विलीन होना
(C) मीडिया का केवल एक विशिष्ट भाषा में सामग्री प्रदान करना
(D) मीडिया पर सरकारी नियंत्रण का अत्यधिक बढ़ जाना

83. 'दैनिक भास्कर' समूह की संवृद्धि का कारण क्या बताया गया है?
(A) केवल सनसनीखेज स्थानीय समाचारों को प्रमुखता से छापना
(B) समाचार पत्र की दैनिक बाजार कीमतों में भारी कमी
(C) घर-घर जाकर सर्वेक्षण एवं आधुनिक विपणन रणनीतियाँ
(D) सरकार द्वारा प्रदान की गई विशेष वित्तीय सहायता

84. 2019 के भारतीय पाठक सर्वेक्षण के अनुसार, किस भाषा के दैनिक समाचारपत्रों के पाठकों की संख्या में सर्वाधिक वृद्धि हुई?
(A) अंग्रेज़ी
(B) तमिल
(C) मलयालम
(D) हिंदी

(B) बेनेडिक्ट एंडरसन
(C) जोहान गुटेनबर्ग
(D) जवाहरलाल नेहरू

129. भारत में टेलीविज़न पर रंगीन प्रसारण की शुरुआत किस घटना के साथ हुई?
(A) 1975 का क्रिकेट विश्व कप
(B) 1982 के एशियाई खेल
(C) 1983 का क्रिकेट विश्व कप
(D) 1991 का खाड़ी युद्ध

130. 2016 तक, भारत के किस भौगोलिक क्षेत्र में समाचार पत्रों के संचलन में अधिकतम वृद्धि दर (7.83%) दर्ज की गई?
(A) उत्तरीय क्षेत्र
(B) दक्षिणी क्षेत्र
(C) पश्चिमी क्षेत्र
(D) पूर्वीय क्षेत्र

131. राघव महतो के अवैध रेडियो स्टेशन को बंद करने पर स्थानीय ग्रामवासियों की क्या प्रतिक्रिया थी?
(A) उन्होंने सरकारी कदम का पूर्णतः स्वागत किया
(B) वे इस संपूर्ण प्रक्रिया के प्रति उदासीन रहे
(C) उन्होंने उसे सेवाएँ पुनः चालू हेतु राजी किया
(D) उन्होंने पुलिस में उसकी लिखित शिकायत दर्ज की

132. निम्नलिखित में से कौन सी एक मास मीडिया की विशेषता नहीं है?
(A) बड़ी संख्या में दर्शकों तक पहुँच
(B) औपचारिक संगठनात्मक संरचना
(C) राज्य या बाज़ार की प्रमुख भूमिका
(D) संचार की प्रक्रिया पूरी तरह से व्यक्तिगत और निजी होती है

133. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भारत में गैर-सरकारी टेलीविज़न चैनलों की संख्या 1991 के बाद तेजी से बढ़ी।
कारण (R): सरकार ने 1991 में अपनी उदारीकरण की नीति के तहत निजी और विदेशी चैनलों को देश में प्रसारण की अनुमति दी।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

134. आज के समाचार पत्र पाठक को आकर्षित करने के लिए किस रणनीति का उपयोग करते हैं?
(A) केवल गंभीर राजनीतिक समाचारों पर ध्यान देना
(B) सूचना और मनोरंजन का सम्मिश्रण प्रस्तुत करना
(C) केवल खेल जगत की गतिविधियों पर ध्यान देना
(D) समाचार पत्र के भौतिक आकार को बहुत छोटा करना

135. भारत में 'केबल ऑपरेटर' उद्योग की वृद्धि के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसकी शुरुआत 1980 के दशक में वी.सी.आर. की लोकप्रियता के साथ हुई।
2. 1984 में केबल चलाने वालों की संख्या 100 थी।
3. 1992 में यह संख्या बढ़कर 15,000 हो गई।
4. 1999 में यह संख्या लगभग 60,000 हो गई।
5. यह उद्योग केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक ही सीमित था।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 2, 3, 5
(C) केवल 1, 2, 3, 4
(D) सभी कथन सही हैं

136. किस प्रधानमंत्री ने मीडिया से 'लोकतंत्र के पहरेदार' की भूमिका निभाने का आग्रह किया था?
(A) जवाहरलाल नेहरू
(B) इंदिरा गांधी
(C) राजीव गांधी
(D) अटल बिहारी वाजपेयी

137. प्रारंभिक मुद्रणालय में छपाई का काम मुख्यतः किस प्रकार की पुस्तकों तक सीमित था?
(A) वैज्ञानिक पुस्तकें
(B) यात्रा वृत्तांत
(C) धार्मिक पुस्तकें
(D) कॉमिक्स

138. 'डिज्क जॉकी' के रूप में ऑल इंडिया रेडियो, लखनऊ में 1944 में कार्य आरंभ करने वाली प्रसिद्ध महिला पत्रकार कौन थीं?
(A) प्रसिद्ध पत्रकार अमिता राय मलिक
(B) इंदिरा गांधी
(C) सरोजिनी नायडू
(D) प्रसिद्ध साहित्यकार अमृता प्रीतम

139. स्वतंत्रता के बाद सरकार ने रेडियो प्रसारण के आधारभूत संरचना का विस्तार प्राथमिकता के आधार पर कहाँ किया?
(A) केवल बड़े महानगरों में
(B) केवल दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में
(C) केवल निजी व्यावसायिक कंपनियों को
(D) राजधानियों और सीमावर्ती क्षेत्रों में

140. 'हम लोग' धारावाहिक को औसतन कितने दर्शक देखते थे?
(A) लगभग 50 लाख
(B) लगभग 5 करोड़
(C) लगभग 1 करोड़
(D) लगभग 10 करोड़

सूची I: (वर्ष)
P. 1440
Q. 1821
R. 1957
S. 1959
सूची II: (घटना)
1. भारत में टेलीविज़न का प्रायोगिक शुभारंभ
2. गुटेनबर्ग द्वारा प्रिंटिंग तकनीक का विकास
3. 'संवाद-कौमुदी' का प्रकाशन
4. 'विविध भारती' का आकाशवाणी में विलय
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

97. 'डिजिटल अंतर' (डिजिटल डिवाइड) की संकल्पना का क्या अर्थ है?
(A) सभी लोगों की डिजिटल प्रौद्योगिकी तक समान पहुँच
(B) लोगों के विभिन्न वर्गों के बीच मास मीडिया के प्रयोग और पहुँच में अंतर
(C) डिजिटल घड़ियों में समय का अंतर
(D) दो कंप्यूटरों के बीच की दूरी

98. 19वीं सदी के मध्य में समाचारपत्र जन-जन तक कैसे पहुँचने लगे?
(A) प्रौद्योगिकी, परिवहन और साक्षरता के विकास के कारण
(B) क्योंकि वे पूरी तरह निःशुल्क वितरित होने लगे थे
(C) सरकार द्वारा इनका पढ़ना अनिवार्य किए जाने के कारण
(D) क्योंकि अन्य कोई भी मनोरंजन साधन उपलब्ध नहीं था

99. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): 'ईनाडु' समाचारपत्र ने 'ज़िला दैनिक' की सफल अवधारणा प्रस्तुत की।
कारण (R): इन छोटे-छोटे पत्रकों में ज़िला-विशेष के सनसनीखेज समाचार और स्थानीय वर्गीकृत विज्ञापन छापे जाते थे, जो पाठकों को आकर्षित करते थे।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

100. मास मीडिया की संरचना और प्रकार्य के लिए राज्य और/अथवा बाज़ार की प्रमुख भूमिका क्यों होती है?
(A) क्योंकि यह एक पूर्णतः निःशुल्क सामाजिक सेवा है
(B) क्योंकि यह केवल उच्च अभिजात वर्ग के लिए निर्मित है
(C) क्योंकि इसका कोई भी व्यावसायिक अथवा आर्थिक महत्व नहीं है
(D) क्योंकि इसमें विशाल पूँजी और औपचारिक संगठन चाहिए

101. भारत में टेलीविज़न चैनलों की संख्या में विस्फोटक वृद्धि कब देखी गई?
(A) 1970 के दशक में
(B) 1980 के दशक में
(C) 1991 के उदारीकरण के बाद
(D) 1960 के दशक में

102. निजी एफ.एम. चैनलों को किस प्रकार की सामग्री प्रसारित करने की अनुमति नहीं है?
(A) फिल्मी गाने
(B) राजनीतिक समाचार बुलेटिन
(C) विज्ञापन
(D) श्रोताओं से बातचीत

103. 'मलयाली मनोरमा' और 'ईनाडु' जैसे पत्रों ने स्थानीय समाचारों की संकल्पना को कैसे प्रारंभ किया?
(A) केवल राष्ट्रीय स्तर के संस्करण प्रकाशित करके
(B) केवल ऑनलाइन डिजिटल संस्करणों के माध्यम से
(C) केवल अंतरराष्ट्रीय समाचारों पर ही ध्यान केंद्रित करके
(D) ज़िला और आवश्यकतानुसार ब्लॉक संस्करणों के द्वारा

104. प्रौद्योगिकी में परिवर्तन से समाचारपत्रों के प्रबंधकवर्ग को क्या लाभ हुआ है?
(A) वे अधिक संस्करण एवं नवीनतम समाचार देने में सक्षम हुए
(B) वे अपनी दैनिक कार्यावधि को कम करने में सक्षम हुए
(C) उन्हें अब समाचार हेतु संवाददाताओं की आवश्यकता नहीं है
(D) वे अब केवल बहुत पुराने समाचार ही प्रकाशित कर सकते हैं

105. 2005 के आँकड़ों के अनुसार, भारत में कितने करोड़ लोग प्रति सप्ताह उपग्रह टी.वी. देखा करते थे?
(A) 13.4 करोड़
(B) 4 करोड़
(C) 19 करोड़
(D) 6.10 करोड़

106. स्टार टीवी ने प्रारंभ में भारत में अपनी लोकप्रियता के लिए क्या रणनीति अपनाई?
(A) साप्ताहिक 10 हिंदी फ़िल्में प्रसारित करना
(B) केवल विशुद्ध राजनीतिक समाचार प्रसारित करना
(C) केवल भारतीय ऐतिहासिक धारावाहिकों का निर्माण
(D) पूर्णतः निःशुल्क चैनल का संचालन करना

107. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें जो मास मीडिया की प्रकृति को दर्शाते हैं:
1. यह जनसंपर्क का एक साधन है।
2. यह एक साथ बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँचता है।

65. आज के एफ.एम. रेडियो चैनल अक्सर मीडिया समूहों के क्यों होते हैं?
(A) केवल मीडिया समूह ही रेडियो संचालन का ज्ञान रखते हैं
(B) यह व्यावसायिक विस्तार है जिससे विज्ञापन आकर्षित होते हैं
(C) भारत सरकार ने ऐसा करना कानूनी रूप से अनिवार्य किया है
(D) अन्य कोई भी संस्था रेडियो संचालन में रुचि नहीं रखती है

66. 'रेडियो मिर्ची' किस मीडिया समूह का हिस्सा है?
(A) टाइम्स ऑफ़ इंडिया समूह
(B) स्टार नेटवर्क
(C) लिविंग मीडिया
(D) दैनिक भास्कर समूह

67. भूमंडलीकरण के पहले, 1970 के दशक तक, अधिकांश मीडिया कंपनियाँ कैसे कार्य करती थीं?
(A) वे पूरी तरह अंतर्राष्ट्रीय विनियमों का ही पालन करती थीं
(B) वे किसी भी प्रकार के कानूनी नियम का पालन नहीं करती थीं
(C) वे घरेलू बाज़ारों में सरकारी विनियमों के अधीन थीं
(D) वे केवल वैश्विक स्तर पर ऑनलाइन ही कार्यरत थीं

68. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान कीजिए:
सूची I: (धारावाहिक/फ़िल्म)
P. महाभारत
Q. हम लोग
R. लगे रहो मुन्नाभाई
S. कौन बनेगा करोड़पति
सूची II: (मीडिया का चित्रण/प्रकार)
1. मनोरंजन-शिक्षा सोप ओपेरा
2. रेडियो को सक्रिय माध्यम के रूप में उपयोग
3. अत्यंत लोकप्रिय महाकाव्य धारावाहिक
4. रिएलिटी शो
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-3, R-4, S-1
(C) P-3, Q-1, R-2, S-4
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

69. 'ईनाडु' तेलुगु समाचार पत्र के बारे में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसके संस्थापक रामोजी राव थे, जिन्होंने इसे 1974 में प्रारंभ किया।
2. इसने 1980 के दशक में अरक-विरोधी आंदोलन जैसे मुद्दों से जुड़कर ग्रामीण क्षेत्रों में पैठ बनाई।
3. इसने 1989 में 'ज़िला दैनिक' निकालना शुरु किया।
4. 1998 तक, संपूर्ण तेलुगु दैनिक पत्रों के प्रसार में इसका हिस्सा 70 प्रतिशत था।
5. यह केवल आंध्र प्रदेश की राजधानी से प्रकाशित होता था।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2, 3
(B) केवल 1, 2, 3, 4
(C) केवल 2, 3, 5
(D) सभी कथन सही हैं

70. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): 1990 के दशक के बाद, स्टार प्लस जैसे पारराष्ट्रीय चैनल ने अपने आपको एक पूर्ण हिंदी चैनल में बदल दिया।
कारण (R): पारराष्ट्रीय चैनलों ने अनुसंधान के माध्यम से जान लिया था कि भारतीय दर्शकों को आकर्षित करने के लिए स्थानीयकृत और चिर-परिचित कार्यक्रमों का प्रयोग ही अधिक प्रभावशाली होगा।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

71. 'मास कम्युनिकेशन' और 'मास मीडिया' में क्या अंतर है?
(A) इन दोनों शब्दों में कोई अंतर नहीं है, ये पर्यायवाची हैं
(B) मास मीडिया प्रक्रिया है और मास कम्युनिकेशन साधन है
(C) मास कम्युनिकेशन केवल लिखित संचार तक ही सीमित है
(D) कम्युनिकेशन प्रक्रिया है और मीडिया इसके साधन हैं

72. मध्यवर्गीय परिवारों की सुबह की दिनचर्या में मास मीडिया की क्या भूमिका है?
(A) वे सर्वप्रथम रेडियो, टीवी चालू करते हैं या अखबार देखते हैं
(B) वे स्वयं को मीडिया के प्रभावों से पूरी तरह दूर रखते हैं
(C) वे केवल मोबाइल फोन पर प्राप्त मिस्ड कॉल ही चेक करते हैं
(D) वे केवल सुबह धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन करने को प्राथमिकता देते हैं

73. 19वीं सदी के भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में प्रिंट मीडिया की भूमिका पर बेनेडिक्ट एंडरसन के विचार का सार क्या है?
(A) प्रिंट मीडिया ने राष्ट्रवाद को कमजोर किया
(B) प्रिंट मीडिया केवल अभिजात वर्ग तक ही सीमित रहा
(C) प्रिंट के कारण एक साझा राष्ट्रीय चेतना और 'हम की भावना' का विकास हुआ
(D) प्रिंट मीडिया का राष्ट्रवाद पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा

74. निम्नलिखित में से कौन सा प्रकाशन राजा राममोहन राय से संबंधित था?
1. संवाद-कौमुदी

पड़ा
(C) प्रसारण से दूरदर्शन को अत्यधिक विज्ञापन राजस्व मिला
(D) दूरदर्शन को सरकार से विशेष अनुदान की मांग करनी पड़ी

118. भारत की स्वतंत्रता के समय देश की 35 करोड़ जनसंख्या के लिए लगभग कितने रेडियो रिसीवर सेट थे?
(A) 5,46,200
(B) 2,80,000
(C) 1 करोड़
(D) 50,000

119. आकाशवाणी के कार्यक्रमों में समाचार और सामयिक विषयों के अलावा और क्या प्रमुखता से शामिल होता था?
(A) केवल पश्चिमी संगीत
(B) केवल खेल
(C) केवल विदेशी फिल्में
(D) विकास पर चर्चाएँ

120. अमिता राय मलिक किस क्षेत्र में एक अग्रणी महिला थीं?
(A) पत्रकारिता एवं चलचित्र समालोचना
(B) सक्रिय क्षेत्रीय राजनीति
(C) उच्च स्तरीय आधुनिक विज्ञान
(D) राष्ट्रीय स्तर की खेल प्रतियोगिता

121. निम्नलिखित में से कौन सा भारत में भूमंडलीकरण के बाद के media परिदृश्य का एक लक्षण नहीं है?
(A) 24-घंटे चलने वाले समाचार चैनल
(B) रिएलिटी शो की लोकप्रियता
(C) मीडिया का केवल एक सरकारी चैनल तक सीमित रहना
(D) क्षेत्रीय भाषाओं में चैनलों की वृद्धि

122. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): भूमंडलीकरण के युग में, समाचार पत्रों को अक्सर 'सूचनारंजन' (इनफोटेनमेंट) का सहारा लेना पड़ता है।
कारण (R): समाचार पत्र अब एक उपभोक्ता वस्तु बन गए हैं और उन्हें विभिन्न रुचियों वाले पाठकों को आकर्षित करने के लिए सूचना और मनोरंजन का मिश्रण प्रस्तुत करना पड़ता है।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

123. सी.बी.एस.ई. बोर्ड के परीक्षा परिणामों का इंटरनेट और मोबाइल फोन पर उपलब्ध होना क्या दर्शाता है?
(A) शिक्षा का तीव्र व्यावसायीकरण
(B) पारंपरिक मास मीडिया का पूर्ण अंत
(C) छात्रों की दैनिक पढ़ाई में गिरावट
(D) जनसंचार का जीवन के हर क्षेत्र में विस्तार

124. भारत में प्रारंभिक दशकों में रेडियो प्रसारण के विस्तार में क्या मुख्य बाधा थी?
(A) लोगों की अरुचि
(B) रेडियो सेटों की ऊँची कीमत
(C) कार्यक्रमों की कमी
(D) सरकार का प्रतिबंध

125. 2003 से 2005 के बीच हिंदी दैनिक 'हिंदुस्तान' के दिल्ली संस्करण की प्रतियों में भारी वृद्धि का क्या कारण था?
(A) समाचार पत्र की दैनिक बाजार कीमत में कमी
(B) समाचार पत्र के साथ प्रदान किए गए उपहार
(C) दिल्ली में हिंदीभाषी प्रवासियों की बड़ी संख्या
(D) केवल व्यावसायिक मनोरंजन समाचारों का प्रकाशन

126. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान कीजिए:
सूची I: (स्थान)
P. मुंबई
Q. इलाहाबाद
R. कोलकाता
S. लाहौर
सूची II: (संबंधित प्रकाशन/घटना)
1. 'दि पायनियर' का प्रकाशन (1865)
2. 'दि टाइम्स ऑफ़ इंडिया' का प्रकाशन (1861)
3. 'दि स्टेट्समैन' का प्रकाशन (1875)
4. 'दि सिविल एंड मिलिटरी गज़ट' का प्रकाशन (1876)
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

127. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें जो भूमंडलीकरण और संगीत उद्योग से संबंधित हैं:
1. संगीत उन लोगों तक भी आसानी से पहुँच जाता है जो भाषा नहीं समझते।
2. इंटरनेट के आने से संगीत को डिजिटल रूप से डाउनलोड करना संभव हो गया है।
3. इससे संगीत उद्योग में वितरण श्रृंखला और दुकानों जैसे पारंपरिक नेटवर्क के लिए खतरा पैदा हो गया है।
4. संगीत उद्योग पर भूमंडलीकरण का कोई प्रभाव नहीं पड़ा है।
उपरोक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी सही हैं

128. 'काल्पनिक समुदाय' की अवधारणा किसने प्रस्तुत की?
(A) राजा राममोहन राय

43. टेलीविजन चैनलों द्वारा विदेशी कार्यक्रमों को भारतीय बच्चों के लिए 'डब' करने का क्या कारण था?
(A) क्षेत्रीय भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देना
(B) विदेशी अभिनेताओं को नए रोजगार प्रदान करना
(C) कार्यक्रमों की उत्पादन लागत को कम करना
(D) यह मानना कि बच्चे भाषाई भिन्नता स्वीकार लेते हैं

44. 'सोप ओपेरा' की परिभाषा क्या है?
(A) एक घंटे की अवधि की फ़िल्म
(B) धारावाहिक रूप से दिखाई जाने वाली लगातार चलने वाली कहानियाँ
(C) एक वृत्तचित्र श्रृंखला
(D) एक रियलिटी शो

45. 'कौन बनेगा करोड़पति' और 'इंडियन आइडल' किस प्रकार के टेलीविज़न कार्यक्रमों के उदाहरण हैं?
(A) सोप ओपेरा
(B) समाचार बुलेटिन
(C) यथार्थवादी प्रदर्शन / रिएलिटी शो
(D) शैक्षिक कार्यक्रम

46. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को अभिकथन (A) और दूसरे को कारण (R) के रूप में अंकित किया गया है:
अभिकथन (A): 2002 के बाद भारत में गैर-सरकारी स्वामित्व वाले एफ.एम. रेडियो स्टेशनों की स्थापना से रेडियो पर मनोरंजन कार्यक्रमों में बढ़ोतरी हुई।
कारण (R): इन निजी एफ.एम. चैनलों को राजनीतिक समाचार बुलेटिन प्रसारित करने की अनुमति नहीं है, इसलिए वे श्रोताओं को लुभाने के लिए संगीत पर ध्यान केंद्रित करते हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

47. 'रंग दे बसंती' और 'लगे रहो मुन्नाभाई' फ़िल्मों में रेडियो को किस रूप में चित्रित किया गया है?
(A) सामाजिक संदेश देने हेतु एक सक्रिय संचार माध्यम
(B) एक पुराना और पूर्णतः अप्रासंगिक माध्यम
(C) केवल पार्श्व संगीत सुनने का साधन मात्र
(D) केवल उत्पादों के विज्ञापन हेतु व्यावसायिक मंच

48. बिहार में राघव महतो के ग्रामीण एफ.एम. रेडियो स्टेशन के बारे में क्या अनूठा था?
(A) यह पूरी तरह सरकार द्वारा वित्तपोषित था
(B) यह कम लागत वाला स्थानीय सामुदायिक स्टेशन था
(C) यह केवल विदेशी पॉप संगीत ही प्रसारित करता था
(D) यह 24 घंटे निरंतर समाचार प्रसारित करता था

49. राघव महतो का रेडियो स्टेशन स्थानीय समुदाय के लिए क्यों महत्वपूर्ण था?
(A) यह केवल बॉलीवुड के आधुनिक गाने बजाता था
(B) यह स्थानीय सूचनाएँ और सार्वजनिक हित के कार्य करता था
(C) यह एक उच्च लागत वाला अत्याधुनिक रेडियो स्टेशन था
(D) यह केवल स्थानीय नेताओं के राजनीतिक भाषण सुनाता था

50. 19वीं सदी में समाज सुधारक अक्सर अपने विचारों का प्रचार करने के लिए किसका उपयोग करते थे?
(A) समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं
(B) टेलीविज़न
(C) रेडियो
(D) सिनेमा

51. औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रवादी प्रेस के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इसने उपनिवेश-विरोधी जनमत को जागृत किया।
2. इसे औपनिवेशिक सरकार का पूर्ण समर्थन प्राप्त था।
3. सरकार ने इस पर सेंसर व्यवस्था लागू कर दी थी।
4. इसने राष्ट्रवादी आंदोलन का समर्थन जारी रखा।
5. इलबर्ट बिल के विरुद्ध आंदोलन इसका एक उदाहरण है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) 1, 2, 3
(B) 1, 3, 4, 5
(C) 2, 3, 4
(D) सभी कथन सही हैं

52. 1947 में स्वतंत्रता के समय आकाशवाणी (AIR) की स्थिति क्या थी?
(A) इसके पास 100 से अधिक रेडियो स्टेशन थे
(B) यह एक पूर्णतः निजी स्वामित्व वाली संस्था थी
(C) इसका प्रसारण संपूर्ण भारत में सुस्पष्ट सुना जाता था
(D) महानगरों में स्थित केवल 6 रेडियो स्टेशन थे

53. 'प्रिंस का बचाव' (बोरवेल में गिरा बच्चा) की घटना का मीडिया कवरेज क्या दर्शाता है?
(A) मीडिया की संतुलित और वस्तुनिष्ठ रिपोर्टिंग
(B) तकनीकी मुद्दों पर मीडिया का गहरा ध्यान
(C) टीवी का निजी जीवन में दखल और उन्माद पैदा करना
(D) सरकार की बचाव कार्यों में मुख्य भूमिका

54. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान कीजिए:
सूची I: (टीवी चैनल/शो)
P. दूरदर्शन
Q. ज़ी-टीवी
R. हम लोग
S. इंडियन आइडल

141. 'दि हिंदू' जैसे समाचार पत्र के रुपांतरण के संदर्भ में कौन सा कथन सही है?
(A) यह हमेशा से एक व्यापारी उद्यम रहा है
(B) यह प्रारंभ से ही एक सरकारी पत्र रहा है
(C) सेवा भाव से व्यापारी उद्यम में रुपांतरित हुआ
(D) इसका प्रकाशन पूरी तरह से बंद हो गया है

142. सूची-I का सूची-II के साथ मिलान कीजिए:
सूची I: (मीडिया की घटना)
P. भारत में ट्रांजिस्टर क्रांति
Q. उपग्रह टीवी का आगमन
R. 'हम लोग' का प्रसारण
S. निजी एफएम रेडियो की शुरुआत
सूची II: (दशक/अवधि)
1. 1990 के दशक
2. 1980 के दशक
3. 1960 के दशक
4. 2000 के दशक
(A) P-1, Q-2, R-4, S-3
(B) P-3, Q-1, R-2, S-4
(C) P-2, Q-4, R-1, S-3
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

143. भारत के पहले राष्ट्रवादी और लोकतंत्रात्मक दृष्टिकोण वाले प्रकाशन कौन से थे?
(A) संवाद-कौमुदी और मिरात-उल-अखबार
(B) केसरी और मातृभूमि
(C) दि टाइम्स ऑफ़ इंडिया और दि स्टेट्समैन
(D) शोम प्रकाश और दि पायनियर

144. भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों की आश्चर्यजनक वृद्धि के पीछे क्या कारण नहीं है?
(A) साक्षर लोगों की संख्या में वृद्धि
(B) अंग्रेजी समाचार पत्रों की बढ़ती लोकप्रियता
(C) शहरी क्षेत्रों में प्रवसन
(D) स्थानीय आवश्यकताओं की पूर्ति

145. भारत में टेलीविजन की शुरुआत प्रायोगिक तौर पर कब हुई?
(A) 1947
(B) 1959
(C) 1969
(D) 1975

146. निम्नलिखित में से किसने मुंबई में गुजराती प्रेस की नींव रखी और 1822 में 'बॉम्बे समाचार' शुरु किया?
(A) फरदूनजी मुर्जबान
(B) राजा राममोहन राय
(C) ईश्वरचंद्र विद्यासागर
(D) रामोजी राव

147. निम्नलिखित को भारत में उनके आगमन/प्रसारण के कालानुक्रम में व्यवस्थित करें:
1. वी.सी.आर. की लोकप्रियता
2. सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविज़न एक्सपेरिमेंट (SITE)
3. 'हम लोग' धारावाहिक का प्रसारण
4. निजी उपग्रह चैनलों (जैसे जी-टीवी) का आगमन
(A) 2, 1, 3, 4
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 2, 3, 1, 4

148. जनसंचार के साधनों को "मास मीडिया" क्यों कहा जाता है?
(A) क्योंकि वे बहुत बड़े आकार के होते हैं।
(B) क्योंकि वे बहुत महँगे होते हैं।
(C) क्योंकि उनका स्वामित्व सरकार के पास होता है।
(D) क्योंकि वे एक साथ बहुत बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँचते हैं।

149. टेलीविजन समाचार चैनलों की 24/7 प्रकृति और तात्कालिकता के कारण किस गंभीर प्रश्न के उठने की चिंता व्यक्त की गई है?
(A) विज्ञापनों की संख्या में संभावित कमी
(B) मनोरंजन कार्यक्रमों का पूर्णतया अंत
(C) गंभीर राजनीतिक/आर्थिक मुद्दों की उपेक्षा
(D) समाचार एंकरों के रोजगार का संकट

150. मास मीडिया और समाज के बीच संबंध को सबसे अच्छी तरह कैसे वर्णित किया जा सकता है?
(A) मीडिया केवल समाज को ही प्रभावित करता है।
(B) यह परस्पर प्रभावी द्वंद्वात्मक संबंध है
(C) समाज केवल मीडिया को ही प्रभावित करता है।
(D) मीडिया और समाज के बीच कोई संबंध नहीं है।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
औपनिवेशिक भारत में, विशेषकर 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में, भाषाई पत्रकारिता ने राष्ट्रवादी चेतना को आकार देने में एक केंद्रीय भूमिका निभाई। अंग्रेजी समाचार पत्रों के विपरीत, जिनकी पहुँच शिक्षित अभिजात वर्ग तक सीमित थी, मराठी, बंगाली, तमिल और हिंदी जैसी भाषाओं में प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों ने औपनिवेशिक शासन की आलोचना और राष्ट्रीय पहचान के विचारों को आम जनता तक पहुँचाया। इन प्रकाशनों ने केवल राजनीतिक स्वतंत्रता का ही आह्वान नहीं किया, बल्कि सामाजिक सुधारों जैसे कि जातिगत भेदभाव का विरोध, महिला शिक्षा का समर्थन और बाल विवाह जैसी कुप्रथाओं पर बहस का मंच भी प्रदान किया। ब्रिटिश सरकार ने इन पत्रों को राजद्रोही मानते हुए 'वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट' (1878) जैसे दमनकारी कानूनों के माध्यम से इनकी आवाज को दबाने का प्रयास किया। तथापि, इन चुनौतियों के बावजूद, भाषाई प्रेस ने साहसी संपादकों और लेखकों के नेतृत्व में क्षेत्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर जनमत को संगठित करने, राजनीतिक विमर्श को लोकतांत्रिक बनाने और एक

ANSWERS

1. (B) जनसंपर्क के व्यापक पहुँच वाले संचार साधन
मास मीडिया जनसंचार के वे तकनीकी साधन हैं जो सूचनाओं को एक साथ विशाल जनसमूह तक पहुँचाने की क्षमता रखते हैं। इनमें समाचारपत्र, रेडियो, टेलीविज़न और इंटरनेट शामिल हैं। यह आधुनिक समाज में संचार की एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ संदेश प्रेषक और प्राप्तकर्ता के बीच व्यापक भौगोलिक दूरी के बावजूद संवाद संभव हो पाता है।

2. (A) टेलीफ़ोन पर व्यक्तिगत बातचीत
मास मीडिया का मुख्य उद्देश्य एक ही समय में बड़े जनसमूह को संबोधित करना होता है। टेलीविज़न, समाचारपत्र और फ़िल्में सार्वजनिक संचार के माध्यम हैं जो लाखों लोगों तक पहुँचते हैं। इसके विपरीत, टेलीफ़ोन पर होने वाली बातचीत एक व्यक्तिगत संवाद है जो केवल दो व्यक्तियों के बीच सीमित रहती है, इसलिए इसे मास मीडिया नहीं माना जाता।

3. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
उन्नीसवीं सदी में भारतीय प्रेस के विकास के दौरान विभिन्न भाषाओं में महत्वपूर्ण पत्र प्रकाशित हुए। संवाद-कौमुदी बंगला भाषा का प्रमुख समाचार पत्र था। मिरात-उल-अखबार फारसी भाषा में राजा राममोहन राय द्वारा प्रकाशित किया गया। बॉम्बे समाचार की स्थापना फरदूनजी मुर्जबान ने की थी और शोम प्रकाश बंगला पत्र के संस्थापक प्रसिद्ध समाज सुधारक ईश्वरचंद्र विद्यासागर थे।

4. (D) क्योंकि सदस्य मिले बिना भी जुड़ाव रखते हैं
बेनेडिक्ट एंडरसन के अनुसार राष्ट्र एक काल्पनिक समुदाय है क्योंकि राष्ट्र के सभी सदस्य एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते। वे कभी आपस में मिल नहीं पाते, फिर भी प्रिंट मीडिया और साझा संचार के माध्यमों से उनके मन में एक समूह से जुड़े होने की गहरी भावना और साझा पहचान विकसित होती है, जो राष्ट्रवाद की नींव है।

5. (C) मुद्रणालय (प्रिंटिंग प्रेस) का विकास
आधुनिक मास मीडिया का प्रारंभ पंद्रहवीं शताब्दी में जोहान गुटेनबर्ग द्वारा मुद्रणालय या प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कार से माना जाता है। इस तकनीकी विकास ने पुस्तकों और सूचनाओं के बड़े पैमाने पर उत्पादन को संभव बनाया। इसके साथ ही साक्षरता बढ़ी और सूचनाओं का प्रसार व्यक्तिगत स्तर से ऊपर उठकर सार्वजनिक और जनसंचार के आधुनिक युग में प्रवेश कर गया।

6. (B) वे औपनिवेशिक सरकार के उत्पीड़क उपायों का खुलकर विरोध करते थे
औपनिवेशिक भारत में राष्ट्रवादी समाचार पत्रों ने ब्रिटिश शासन की दमनकारी नीतियों और अन्यायपूर्ण कानूनों के विरुद्ध जनमत तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये पत्र भारतीयों में राजनीतिक जागरूकता और राष्ट्रवाद की भावना भरते थे। सरकार के अत्याचारों का मुखर विरोध करने और स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करने के कारण उन्हें अक्सर औपनिवेशिक सरकार की अप्रसन्नता और सेंसरशिप झेलनी पड़ती थी।

7. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
स्वतंत्रता के बाद भारतीय मीडिया को लोकतंत्र के चतुर्थ स्तंभ के रूप में देखा गया। सरकार ने अपेक्षा की कि मीडिया राष्ट्रीय विकास की योजनाओं का समर्थन करेगा और सामाजिक कुरीतियों जैसे अस्पृश्यता और बाल विवाह के विरुद्ध संघर्ष करेगा। यह दृष्टिकोण मीडिया को राष्ट्र निर्माण और आत्मनिर्भरता के प्रति समर्पित मानकर उसे लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण और संवर्धन की जिम्मेदारी सौंपता था।

8. (A) 1440
जोहान गुटेनबर्ग ने वर्ष 1440 के आसपास जर्मनी में आधुनिक प्रिंटिंग प्रेस तकनीक का विकास किया। उन्होंने मूवेबल टाइप का उपयोग करके पुस्तकों की छपाई को तीव्र और सुलभ बनाया। इस आविष्कार ने संचार क्रांति की नींव रखी, जिससे धार्मिक और वैज्ञानिक ज्ञान का प्रसार जनसामान्य तक हुआ। यह घटना विश्व इतिहास में आधुनिक मास मीडिया के युग का प्रारंभिक बिंदु मानी जाती है।

9. (D) 1, 2, 3 और 4
भारत में रेडियो प्रसारण की शुरुआत 1920 के दशक में स्थानीय हैम क्लबों के माध्यम से हुई। द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान इसे एक संगठित सार्वजनिक प्रणाली के रूप में विकसित किया गया। स्वतंत्रता के समय भारत में केवल छह प्रमुख रेडियो स्टेशन उपलब्ध थे। 1950 तक देश में रेडियो लाइसेंसों की संख्या पांच लाख से अधिक हो गई, जो इसके क्रमिक प्रसार को दर्शाती है।

10. (A) विकास प्रक्रिया दर्शाने वाले वृत्तचित्र
स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय सरकार के फ़िल्म प्रभाग ने राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया को जनता तक पहुँचाने का कार्य किया। सिनेमाघरों में मुख्य फ़िल्म से पहले लघु वृत्तचित्र और समाचार चित्र दिखाए जाते थे। इनका मुख्य उद्देश्य पंचवर्षीय योजनाओं, औद्योगिक प्रगति और कृषि सुधारों जैसी विकासपरक गतिविधियों को प्रदर्शित करना था ताकि आम नागरिक देश की प्रगति और सामाजिक बदलाव से जुड़ सकें।

11. (D) हिंदी फ़िल्मी गानों का प्रसारण करना
आकाशवाणी द्वारा 1957 में विविध भारती चैनल की शुरुआत विशेष रूप से मनोरंजन प्रदान करने के उद्देश्य से की गई थी। उस समय श्रीलंका रेडियो की लोकप्रियता को देखते हुए भारतीय श्रोताओं को जोड़े रखने के लिए हिंदी फ़िल्मी गानों का प्रसारण



(B) केवल प्रमुख नेताओं के राजनीतिक भाषणों और रैलियों पर ध्यान केंद्रित करके।
(C) विदेशी रेडियो कार्यक्रमों का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद और पुनः प्रसारण करके।
(D) क्षेत्रीय लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत और देशभक्ति गीतों के विविध प्रसारण द्वारा।

158. गद्यांश में 'आधुनिकता की खिड़की' वाक्यांश का क्या अर्थ है?
(A) रेडियो द्वारा सरकारी विकास नीतियों और प्रगतिशील आधुनिक विचारों का प्रसार।
(B) रेडियो सेट की भौतिक बनावट और उसके डिजाइन में आए आधुनिक बदलाव।
(C) दूरस्थ देशों और विदेशी रेडियो स्टेशनों से नियमित समाचार और सूचना प्राप्त करना।
(D) रेडियो स्टेशनों के भवनों पर बड़ी खिड़कियों और आधुनिक वास्तुकला का होना।

159. राज्य-नियंत्रित प्रसारण मॉडल का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) व्यावसायिक मनोरंजन और प्रायोजित कार्यक्रमों के माध्यम से भारी लाभ कमाना।
(B) क्षेत्रीय रेडियो स्टेशनों को कार्यक्रमों के चयन हेतु पूर्ण प्रशासनिक स्वायत्तता देना।
(C) सूचना प्रसार पर केंद्रीकृत नियंत्रण और इसे राष्ट्रीय लक्ष्यों के अनुकूल बनाना।
(D) निजी रेडियो प्रसारकों और अंतर्राष्ट्रीय मीडिया समूहों के साथ प्रतिस्पर्धा करना।

160. आकाशवाणी के कार्यक्रमों ने हरित क्रांति में कैसे योगदान दिया?
(A) नई कृषि तकनीकों और वैज्ञानिक पद्धतियों के बारे में किसानों को शिक्षित करके।
(B) कार्यक्रमों के माध्यम से केवल किसानों का स्वस्थ मनोरंजन करके।
(C) कृषि क्षेत्र के लिए सटीक और नियमित मौसम की भविष्यवाणी का प्रसारण करके।
(D) विभिन्न रासायनिक उर्वरकों और कीटेनार्शकों का रेडियो पर व्यावसायिक विज्ञापन करके।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

1980 के दशक में भारतीय टेलीविजन में एक युगांतकारी परिवर्तन आया, जो 1982 के एशियाई खेलों के रंगीन प्रसारण और राष्ट्रीय नेटवर्क के विस्तार से प्रेरित था। इस दशक में 'हम लोग' (1984-85) और 'बुनियाद' (1986-87) जैसे सोप ओपेरा का आगमन हुआ, जिन्होंने भारतीय मध्यवर्गीय परिवारों के मनोरंजन की आदतों को स्थायी रूप से बदल दिया। ये धारावाहिक केवल मनोरंजन नहीं थे; वे 'मनोरंजन-शिक्षा' के एक मॉडल का प्रतिनिधित्व करते थे, जहाँ पारिवारिक कहानियों के ताने-बाने में सामाजिक संदेशों को कुशलता से बुना जाता था। इन कार्यक्रमों ने लैंगिक समानता, परिवार नियोजन और राष्ट्रीय एकता जैसे विषयों को लोकप्रिय बनाया, जो राज्य की नीतियों के अनुरुप थे। साथ ही, इन धारावाहिकों के प्रायोजन ने भारतीय टेलीविजन के व्यावसायीकरण की शुरुआत की। मैगी नूडल्स जैसे उत्पादों के विज्ञापन इन कार्यक्रमों के दौरान आम हो गए, जिससे एक नया उपभोक्ता बाजार बना। इस प्रकार, टेलीविजन ने एक दोहरी भूमिका निभाई: एक ओर यह राज्य द्वारा प्रचारित आधुनिक मूल्यों का वाहक बना, तो दूसरी ओर यह भारतीय मध्यवर्ग में उपभोक्तावादी आकांक्षाओं को जगाने वाला एक वाणिज्यिक मंच बन गया। इसने दूरदर्शन को एक विशुद्ध विकासात्मक माध्यम से एक वाणिज्यिक इकाई में बदल दिया।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. 1980 के दशक में भारतीय टेलीविजन में युगांतकारी परिवर्तन का प्रमुख प्रेरक क्या था?
(A) रेडियो की घटती लोकप्रियता और प्रिंट मीडिया के गिरते हुए सर्कुलेशन का असर।
(B) दैनिक समाचार पत्रों का बहुत अधिक महंगा और आम जनता की पहुँच से दूर होना।
(C) पश्चिमी देशों से विदेशी फिल्मों और मनोरंजन कार्यक्रमों का बड़े पैमाने पर आयात।
(D) 1982 के एशियाई खेलों का रंगीन प्रसारण और राष्ट्रीय नेटवर्क का व्यापक विस्तार।

162. 'हम लोग' और 'बुनियाद' जैसे धारावाहिकों के लिए गद्यांश में 'मनोरंजन-शिक्षा' मॉडल का क्या अर्थ बताया गया है?
(A) ये कार्यक्रम केवल शैक्षिक संस्थानों में दिखाए जाते थे।
(B) ये मनोरंजन के माध्यम से सामाजिक संदेशों का प्रसार करते थे।
(C) इन कार्यक्रमों में केवल शिक्षक ही अभिनय करते थे।
(D) ये कार्यक्रम देखने के लिए दर्शकों को परीक्षा देनी पड़ती थी।

163. इन धारावाहिकों के प्रायोजन का भारतीय टेलीविजन पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) कार्यक्रमों की गुणवत्ता और उनके संदेशों में बहुत तेजी से गिरावट आने लगी।
(B) सरकारी टेलीविजन चैनल दूरदर्शन का संचालन पूरी तरह से बंद हो गया।
(C) टेलीविजन का व्यावसायीकरण शुरु हुआ और एक नया बड़ा उपभोक्ता बाजार बना।
(D) केवल सरकारी विज्ञापनों और जनहित संदेशों को ही प्रसारण की अनुमति दी गई।

164. गद्यांश के अनुसार, 1980 के दशक में टेलीविजन ने कौन-सी दोहरी भूमिका निभाई?
(A) केवल विशुद्ध मनोरंजन प्रदान करना और समाचारों की सूचना देना।
(B) ग्रामीण क्षेत्रों और शहरी दर्शकों के लिए अलग-अलग तरह का मनोरंजन प्रदान करना।
(C) केवल राष्ट्रीय राजनीति और अंतर्राष्ट्रीय खेल आयोजनों का विस्तृत कवरेज करना।

ऐसी 'काल्पनिक' राष्ट्रीय समुदाय की भावना को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण योगदान दिया, जिसकी नींव साझा सांस्कृतिक और राजनीतिक आकांक्षाओं पर आधारित थी। इसने प्रभावी रूप से सूचना के अंतर को पाट दिया और दूर-दराज के क्षेत्रों को एक साझा राष्ट्रवादी संघर्ष में एकीकृत किया।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में भाषाई पत्रकारिता का अंग्रेजी समाचार पत्रों की तुलना में अधिक प्रभाव क्यों था?
(A) क्योंकि वे ब्रिटिश सरकार द्वारा आर्थिक और राजनीतिक रूप से पूरी तरह समर्थित थे।
(B) क्योंकि उनकी पहुँच शिक्षित अभिजात वर्ग के बजाय आम जनता तक व्यापक थी।
(C) क्योंकि वे केवल मनोरंजन सामग्री और लोककथाओं को ही नियमित प्रकाशित करते थे।
(D) क्योंकि उन्होंने तत्कालीन 'वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट' का कड़ा समर्थन और प्रचार किया था।

152. भाषाई प्रेस ने राजनीतिक स्वतंत्रता के अलावा और किन मुद्दों को बढ़ावा दिया?
(A) सामाजिक सुधार जैसे जातिगत भेदभाव का कड़ा विरोध और महिला शिक्षा का समर्थन।
(B) केवल औपनिवेशिक नीतियों और ब्रिटिश प्रशासनिक सुधारों का पूर्णतः समर्थन करना।
(C) केवल ब्रिटिश राजशाही और औपनिवेशिक अधिकारियों की सार्वजनिक रूप से प्रशंसा करना।
(D) अंतर्राष्ट्रीय व्यापार, विदेशी निवेश और वैश्विक वाणिज्यिक नीतियों पर ध्यान केंद्रित करना।

153. 'वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट' (1878) का मुख्य उद्देश्य क्या था?
(A) भाषाई और क्षेत्रीय समाचार पत्रों को सरकारी सहायता देकर प्रोत्साहित करना।
(B) समाचार पत्रों के मुद्रण के लिए सस्ता और उच्च गुणवत्ता वाला कागज उपलब्ध कराना।
(C) भाषाई प्रेस की आवाज़ को दबाना क्योंकि उसे राजद्रोही और खतरनाक माना जाता था।
(D) अंग्रेजी समाचार पत्रों और विदेशी पत्रकारों पर कड़ा कानूनी प्रतिबंध लगाना।

154. गद्यांश के अनुसार, भाषाई प्रेस ने 'काल्पनिक' राष्ट्रीय समुदाय की भावना को बढ़ावा देने में कैसे योगदान दिया?
(A) लोगों को लोक-संस्कृति और प्राचीन भारत की काल्पनिक कहानियाँ नियमित सुनाकर।
(B) विभिन्न राज्यों और भाषाई क्षेत्रों के बीच आपसी प्रतिस्पर्धा को निरंतर बढ़ावा देकर।
(C) भारतीय लोगों को बेहतर भविष्य के लिए अपना देश छोड़ने हेतु प्रोत्साहित करके।
(D) साझा सांस्कृतिक और राजनीतिक आकांक्षाओं की एक मजबूत नींव को रखकर।

155. गद्यांश से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि भाषाई प्रेस की भूमिका थी:
(A) केवल सूचनात्मक और औपनिवेशिक सरकार के प्रति पूरी तरह से तटस्थ एवं निष्पक्ष।
(B) केवल ब्रिटिश सरकार की प्रशासनिक नीतियों और निर्णयों का व्यापक प्रचार करना।
(C) बहुआयामी, जिसमें राजनीतिक जागरण और सामाजिक सुधार के प्रयास दोनों शामिल थे।
(D) पूरी तरह से व्यावसायिक लाभ कमाने और निजी हितों को साधने पर केंद्रित।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
स्वतंत्रता के बाद, भारत की पहली सरकार ने अखिल भारतीय रेडियो (आकाशवाणी) को केवल मनोरंजन के माध्यम के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्र-निर्माण के एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में देखा। जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में, आकाशवाणी को एक विकासात्मक एजेंडा सौंपा गया, जिसका उद्देश्य एक खंडित समाज को आधुनिक राष्ट्र-राज्य में एकीकृत करना था। इसके कार्यक्रमों को सावधानीपूर्वक तैयार किया गया था ताकि कृषि, स्वास्थ्य, परिवार नियोजन और शिक्षा जैसे क्षेत्रों में वैज्ञानिक और प्रगतिशील विचारों का प्रसार किया जा सके। 'कृषि दर्शन' जैसे कार्यक्रमों ने हरित क्रांति के लिए आवश्यक नई कृषि तकनीकों के बारे में किसानों को शिक्षित किया, जबकि स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रमों ने स्वच्छता और टीकाकरण के महत्व को रेखांकित किया। राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए, आकाशवाणी ने विभिन्न क्षेत्रों के लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत और देशभक्ति गीतों का प्रसारण किया। इस प्रकार, रेडियो सेट एक 'आधुनिकता की खिड़की' बन गया, जो दूरस्थ गाँवों में भी सरकार की विकास नीतियों और एक एकीकृत भारतीय पहचान की विचारधारा को पहुँचाता था। यह राज्य-नियंत्रित प्रसारण मॉडल सूचना के प्रसार पर केंद्रीकृत नियंत्रण सुनिश्चित करता था और इसे राष्ट्रीय विकास के व्यापक लक्ष्यों के साथ संरेखांकित करता था।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. स्वतंत्रता के बाद अखिल भारतीय रेडियो (आकाशवाणी) को कौन-सी मुख्य भूमिका सौंपी गई थी?
(A) केवल प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय समाचारों और विदेशी मामलों को प्रसारित करना।
(B) राष्ट्र-निर्माण और सरकार के विकासात्मक एजेंडा को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना।
(C) निजी कंपनियों और बहुराष्ट्रीय निगमों के लिए उत्पादों का विज्ञापन करना।
(D) केवल पश्चिमी शास्त्रीय संगीत और यूरोपीय सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रसारण करना।

157. आकाशवाणी ने राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने के लिए किस रणनीति का उपयोग किया?
(A) केवल एक राजभाषा और मानक हिंदी में सभी रेडियो कार्यक्रम प्रसारित करके।

सनसनीखेज, नाटकीय और भावनात्मक रूप से आकर्षक सामग्री को प्राथमिकता देता है। समाचार प्रस्तुति अक्सर एक स्टूडियो-आधारित बहस या 'टॉक शो' के रूप में होती है, जिसमें विभिन्न दृष्टिकोण वाले पैनलिस्ट जोर-जोर से बहस करते हैं, जिससे गर्मी पैदा होती है लेकिन अक्सर प्रकाश नहीं। अपराध, सेलिब्रिटी गॉसिप, और ज्योतिष जैसे विषयों को राजनीतिक और आर्थिक मुद्दों के बराबर कवरेज मिलता है, क्योंकि वे दर्शकों को आकर्षित करने में अधिक प्रभावी माने जाते हैं। इस प्रवृत्ति ने समाचार एजेंडे को विकृत कर दिया है, जहाँ महत्व को अक्सर दर्शकों की संख्या से मापा जाता है। नतीजतन, जटिल मुद्दों का सरलीकरण हो जाता है, और दर्शकों को सूचित नागरिकों के बजाय निष्क्रिय उपभोक्ताओं के रूप में माना जाता है। यह मॉडल पत्रकारिता की पारंपरिक भूमिका, यानी सत्ता से सच कहने और नागरिकों को सूचित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाने, के लिए एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रस्तुत करता है।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. गद्यांश के अनुसार, 'इन्फोटेनमेंट' क्या है?
(A) सरकारी माध्यमों द्वारा केवल आवश्यक और गंभीर सूचनाओं का नियमित प्रसार।
(B) विशुद्ध रूप से मनोरंजन के लिए बनाए गए धारावाहिक और कॉमेडी कार्यक्रम।
(C) सूचना और मनोरंजन का वह मिश्रण जो सनसनीखेज सामग्री को प्राथमिकता देता है।
(D) उच्च गुणवत्ता वाली गंभीर, तथ्यात्मक और गहराई से की गई खोजी पत्रकारिता।

172. 24-घंटे के समाचार चैनलों ने 'इन्फोटेनमेंट' प्रारूप क्यों अपनाया है?
(A) क्योंकि इस प्रारूप को सरकार द्वारा सभी चैनलों के लिए अनिवार्य किया गया है।
(B) निरंतर प्रसारण की कठिन आवश्यकता और TRP के लिए गलाकाट प्रतिस्पर्धा के कारण।
(C) क्योंकि आज के आधुनिक दर्शकों को गंभीर और तथ्यात्मक समाचार बिल्कुल पसंद नहीं हैं।
(D) क्योंकि वर्तमान में मीडिया संस्थानों के पास पर्याप्त शिक्षित और योग्य पत्रकार नहीं हैं।

173. 'इन्फोटेनमेंट' की प्रवृत्ति का समाचार एजेंडे पर क्या प्रभाव पड़ा है?
(A) इसने गंभीर राजनीतिक विमर्श और ज्वलंत आर्थिक मुद्दों को सर्वोच्च प्राथमिकता प्रदान की है।
(B) इसने टेलीविजन से समाचारों और सूचनाओं के प्रसारण को पूरी तरह से समाप्त कर दिया है।
(C) इसने केवल महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय समाचारों और वैश्विक घटनाओं पर ध्यान केंद्रित किया है।
(D) इसने समाचार एजेंडे को विकृत किया है जहाँ महत्व केवल दर्शकों की संख्या से मापा जाता है।

174. गद्यांश के अनुसार, 'इन्फोटेनमेंट' मॉडल दर्शकों को किस रूप में देखता है?
(A) निष्क्रिय उपभोक्ताओं के रूप में।
(B) सूचित नागरिकों के रूप में।
(C) राजनीतिक कार्यकर्ताओं के रूप में।
(D) शोधकर्ताओं के रूप में।

175. यह नया समाचार मॉडल पत्रकारिता की पारंपरिक भूमिका के लिए एक चुनौती क्यों है?
(A) क्योंकि यह दर्शकों को बहुत अधिक मात्रा में जटिल और असंबद्ध जानकारी प्रदान करता है।
(B) क्योंकि इस तरह के समाचार मॉडल का संचालन करना वर्तमान में बहुत अधिक महंगा है।
(C) क्योंकि यह सत्ता से सच कहने के बजाय केवल सनसनीखेज और नाटकीयता पर ध्यान केंद्रित करता है।
(D) क्योंकि यह मॉडल केवल ग्रामीण क्षेत्रों की समस्याओं और स्थानीय मुद्दों पर ही केंद्रित है।

(D) राज्य-प्रचारित मूल्यों का वाहक और उपभोक्तावादी आकांक्षाओं का निर्माता बनना।

165. इन धारावाहिकों द्वारा प्रचारित सामाजिक संदेश किसके अनुरूप थे?
(A) राज्य की नीतियों, जैसे परिवार नियोजन और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने, के।
(B) निजी कंपनियों के व्यावसायिक हितों और उनके बाजार विस्तार की रणनीतियों के।
(C) पश्चिमी और अन्य पड़ोसी विदेशी सरकारों की सामाजिक और राजनीतिक नीतियों के।
(D) समाज के अत्यंत पारंपरिक और रूढ़िवादी सामाजिक मानदंडों तथा पुरानी प्रथाओं के।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

1991 के आर्थिक उदारीकरण ने भारतीय मीडिया परिदृश्य में एक अभूतपूर्व परिवर्तन की शुरुआत की। विदेशी निवेश और उपग्रह प्रसारण के लिए बाजार खोलने से, दशकों पुराने दूरदर्शन के एकाधिकार का अंत हो गया। स्टार टीवी जैसे पार-राष्ट्रीय निगमों के आगमन ने भारतीय दर्शकों को 24-घंटे मनोरंजन और समाचार की एक नई दुनिया से परिचित कराया। इस प्रतिस्पर्धा ने एक द्विआयामी प्रतिक्रिया को जन्म दिया। एक ओर, भारतीय मीडिया कंपनियों ने उत्पादन मूल्यों, प्रोग्रामिंग प्रारूपों और विपणन रणनीतियों में सुधार करके प्रतिक्रिया दी, जिससे 'कौन बनेगा करोड़पति' जैसे अंतरराष्ट्रीय प्रारूपों के सफल भारतीय रूपांतरण हुए। दूसरी ओर, वैश्विक मीडिया ने महसूस किया कि भारतीय बाजार जीतने के लिए स्थानीयकरण महत्वपूर्ण था। इसके परिणामस्वरूप, स्टार प्लस जैसे चैनल पूरी तरह से हिंदी मनोरंजन चैनलों में बदल गए, और क्षेत्रीय भाषाओं में चैनलों की एक बाढ़ आ गई। इस प्रक्रिया ने मीडिया स्वामित्व के संकेंद्रण को भी बढ़ावा दिया, जिससे बड़े मीडिया समूह उभरे जो प्रिंट, टेलीविजन और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर काम करते हैं। इसने न केवल दर्शकों के लिए विकल्पों में वृद्धि की, बल्कि मीडिया को एक रणनीतिक उद्योग में बदल दिया, जहाँ वैश्विक पूंजी और स्थानीय सांस्कृतिक संवेदनाओं का जटिल अंतर्संबंध था।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. 1991 के बाद भारतीय मीडिया परिदृश्य में आए परिवर्तन का मुख्य कारण क्या था?
(A) सरकारी प्रसारक दूरदर्शन की नई आंतरिक और प्रशासनिक नीतियां।
(B) आर्थिक उदारीकरण की नीति और उपग्रह प्रसारण हेतु बाजार को खोलना।
(C) ग्रामीण क्षेत्रों में आकाशवाणी और रेडियो की निरंतर बढ़ती लोकप्रियता।
(D) विदेशों में भारतीय मसाला फिल्मों और संगीत की अभूतपूर्व अंतर्राष्ट्रीय सफलता।

167. वैश्विक मीडिया द्वारा भारत में अपनाई गई 'स्थानीयकरण' की रणनीति का क्या उदाहरण है?
(A) केवल अंग्रेजी भाषा में ही मनोरंजन और समाचार कार्यक्रम प्रसारित करना।
(B) स्टार प्लस जैसे चैनलों का पूर्णतः हिंदी मनोरंजन चैनलों में परिवर्तित होना।
(C) भारतीय बाजार से अपने सभी अंतरराष्ट्रीय चैनल and निवेश को वापस हटा लेना।
(D) केवल गंभीर अंतरराष्ट्रीय समाचार और वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़े कार्यक्रम दिखाना।

168. पार-राष्ट्रीय निगमों के आगमन से भारतीय मीडिया पर क्या प्रभाव पड़ा?
(A) दूरदर्शन का एकाधिकार समाप्त हुआ और बाजार में तीव्र प्रतिस्पर्धा बढ़ गई।
(B) सभी प्रमुख भारतीय मीडिया कंपनियां और क्षेत्रीय समाचार पत्र बंद हो गए।
(C) प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों की कुल संख्या और गुणवत्ता में भारी कमी आई।
(D) भारतीय मीडिया परिदृश्य पूरी तरह से केंद्र सरकार के कड़े नियंत्रण में आ गया।

169. उदारीकरण की प्रक्रिया ने मीडिया स्वामित्व पर क्या प्रभाव डाला?
(A) इसने मीडिया स्वामित्व के लोकतांत्रिक और व्यापक विकेंद्रीकरण को बढ़ावा दिया।
(B) मीडिया संस्थानों का मालिकाना हक पूरी तरह से केंद्र सरकार के पास चला गया।
(C) इसने मीडिया स्वामित्व के संकेंद्रण को बढ़ाया जिससे बड़े मीडिया समूह उभरे।
(D) मीडिया के स्वामित्व पर किसी भी व्यक्ति या संस्था का कोई कानूनी नियंत्रण नहीं रहा।

170. गद्यांश के अनुसार, उदारीकरण के बाद का भारतीय मीडिया उद्योग किसका जटिल अंतर्संबंध है?
(A) केवल भारत सरकार और सरकारी प्रसारक दूरदर्शन का आपसी सहयोग।
(B) केवल भारतीय और दक्षिण एशियाई पड़ोसी देशों के मीडिया घरानों का सहयोग।
(C) केवल पारंपरिक प्रिंट मीडिया और पुराने सरकारी रेडियो माध्यमों का समूह।
(D) वैश्विक पूंजी और स्थानीय सांस्कृतिक संवेदनाओं का एक जटिल अंतर्संबंध।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में 24-घंटे के समाचार चैनलों के प्रसार ने पत्रकारिता की प्रकृति और सार्वजनिक विमर्श को मौलिक रूप से बदल दिया है। निरंतर प्रसारण की आवश्यकता और टेलीविजन रेटिंग पॉइंट्स (TRP) के लिए गलाकाट प्रतिस्पर्धा ने 'इन्फोटेनमेंट' (सूचना + मनोरंजन) के उदय को प्रेरित किया है। यह एक ऐसा प्रारूप है जो गंभीर, खोजी पत्रकारिता के बजाय

शुरु किया गया। यह चैनल शीघ्र ही विज्ञापनों और संगीत के कारण एक अत्यंत लोकप्रिय और लाभदायक व्यावसायिक मंच बन गया।

12. (B) इसने अधिक उपज देने वाली फ़सलों का प्रचार करने के लिए व्यापक अभियान चलाया
साठ के दशक में भारत में हरित क्रांति की सफलता में आकाशवाणी ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। रेडियो के माध्यम से कृषि विशेषज्ञों ने किसानों को नई तकनीक, उर्वरकों के उपयोग और उन्नत किस्म के बीजों की जानकारी दी। रेडियो स्टेशनों ने ग्रामीण समुदायों तक पहुँच बनाकर कृषि सुधार के संदेशों का व्यापक प्रचार किया, जिससे खाद्यान्न उत्पादन बढ़ाने के राष्ट्रीय लक्ष्य को प्राप्त किया जा सका।

13. (C) ये बैटरी-चालित और सस्ते उपकरण थे
उन्नीस सौ साठ के दशक में ट्रांजिस्टर क्रांति ने रेडियो को एक व्यक्तिगत और सुलभ उपकरण बना दिया। पहले के भारी रेडियो सेटों के विपरीत, ट्रांजिस्टर छोटे और बैटरी से चलने वाले थे। इनकी कम कीमत और पोर्टेबिलिटी के कारण ग्रामीण क्षेत्रों और दूर-दराज के स्थानों पर रहने वाले गरीब लोग भी रेडियो से जुड़ पाए। इससे सूचनाओं और मनोरंजन की पहुँच व्यापक हो गई।

14. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
भारतीय संचार इतिहास में विविध भारती का विलय 1957 में हुआ। भारत में टेलीविज़न की प्रायोगिक शुरुआत 1959 में की गई। शैक्षिक उपग्रह प्रयोग यानी साइट कार्यक्रम 1975-76 के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में चलाया गया। अंततः, 1982 में दिल्ली में आयोजित एशियाई खेलों के समय भारत में रंगीन टेलीविज़न प्रसारण का शुभारंभ हुआ, जिसने मनोरंजन के क्षेत्र में एक नए युग की शुरुआत की।

15. (A) ग्रामीण विकास को बढ़ावा देना
भारत में टेलीविज़न की शुरुआत केवल मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक शिक्षा और सामुदायिक विकास के साधन के रूप में हुई थी। इसके प्रारंभिक कार्यक्रमों का मुख्य लक्ष्य ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता बढ़ाना, आधुनिक कृषि पद्धतियों की शिक्षा देना और स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता फैलाना था। सरकार का उद्देश्य इस शक्तिशाली माध्यम का उपयोग देश के सामाजिक और आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने हेतु करना था।

16. (A) 1, 2 और 3
उपग्रह निर्देशनात्मक टेलीविज़न प्रयोग अगस्त 1975 से जुलाई 1976 तक चला। इस महत्वाकांक्षी परियोजना ने छह राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों में सामुदायिक दर्शकों को लक्षित किया। इसके अंतर्गत लगभग 2400 गाँवों में प्रतिदिन शैक्षिक कार्यक्रम सीधे प्रसारित किए जाते थे। इसका मुख्य उद्देश्य शिक्षा, स्वास्थ्य और कृषि विकास था न कि केवल मनोरंजन। इस प्रयोग ने भारत में भविष्य के उपग्रह संचार की आधारशिला रखी।

17. (B) टेलीविज़न प्रसारण का बहुत तेज़ी से वाणिज्यीकरण हुआ
वर्ष 1982 के एशियाई खेलों के दौरान भारत में रंगीन टेलीविज़न का आगमन हुआ। इस घटना ने दर्शकों की रुचि बढ़ाई और निजी कंपनियों को विज्ञापन के लिए एक आकर्षक मंच प्रदान किया। इसके परिणामस्वरुप प्रसारण सामग्री और समय का तेजी से वाणिज्यीकरण हुआ। टेलीविज़न अब केवल सूचना का स्रोत नहीं रहा, बल्कि एक ऐसा बाज़ार बन गया जहाँ उपभोक्ता वस्तुओं के विज्ञापन हावी होने लगे।

18. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
अस्सी के दशक में 'हम लोग' और 'बुनियाद' जैसे सोप ओपेरा ने भारतीय परिवारों के बीच अभूतपूर्व लोकप्रियता हासिल की। इन कार्यक्रमों ने दूरदर्शन को विज्ञापन राजस्व के रुप में भारी आय प्रदान की, जिससे टेलीविज़न के बढ़ते वाणिज्यीकरण को बढ़ावा मिला। यद्यपि ये धारावाहिक लोकप्रिय थे और विज्ञापन भी लाए, लेकिन उनकी लोकप्रियता का कारण उनकी कहानी और सामाजिक जुड़ाव था, न कि केवल राजस्व अर्जन।

19. (C) इसमें 'मनोरंजन-शिक्षा' रणनीति अपनाई गई
धारावाहिक 'हम लोग' को भारत का पहला लंबा चलने वाला सोप ओपेरा माना जाता है क्योंकि इसने 'मनोरंजन-शिक्षा' की अनूठी रणनीति अपनाई। यह मध्यवर्गीय परिवार के संघर्षों के माध्यम से दहेज, परिवार नियोजन और राष्ट्रीय एकता जैसे सामाजिक मुद्दों को प्रभावशाली ढंग से उठाता था। इसका उद्देश्य केवल मनोरंजन करना नहीं था, बल्कि दर्शकों को शिक्षित करना और समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने के लिए प्रेरित करना था।

20. (D) वे प्राप्त सबक का दैनिक जीवन से समन्वय करते थे
'हम लोग' धारावाहिक के प्रत्येक एपिसोड के अंत में प्रसिद्ध अभिनेता अशोक कुमार एक उपसंहार प्रस्तुत करते थे। वे धारावाहिक में दिखाई गई कहानी और सामाजिक संदेशों पर चर्चा करते थे। उनका मुख्य कार्य दर्शकों को कहानी से प्राप्त शिक्षाओं को उनके दैनिक जीवन में लागू करने के लिए प्रोत्साहित करना था। वे अनौपचारिक ढंग से दर्शकों से संवाद करके धारावाहिक के नैतिक पाठ को स्पष्ट करते थे।

21. (A) 3, 1, 4, 2
भारतीय टेलीविज़न इतिहास में घटनाओं का क्रम महत्वपूर्ण है। सर्वप्रथम 1982 में रंगीन प्रसारण शुरु हुआ। इसके बाद 1984 में 'हम लोग' का प्रसारण प्रारंभ हुआ जो पहला सोप ओपेरा बना। इसके पश्चात 1986 में 'बुनियाद' ने अपनी पहचान बनाई। अंत में 1987-88 के दौरान 'रामायण' महाकाव्य का प्रसारण हुआ जिसने देश भर में दर्शकों के रिकॉर्ड तोड़ दिए और सामूहिक दर्शन की संस्कृति विकसित की।

22. (B) मीडिया पर सेंसर व्यवस्था लागू की गई
वर्ष 1975 में आपातकाल की घोषणा के साथ ही भारतीय मीडिया की स्वतंत्रता पर कड़ा प्रहार हुआ। सरकार ने समाचार पत्रों और पत्रिकाओं पर सख्त सेंसरशिप लागू कर दी। किसी भी समाचार को प्रकाशित करने से पहले सरकारी अधिकारियों

की स्वीकृति अनिवार्य कर दी गई। आलोचनात्मक आवाज़ों को दबाया गया और मीडिया को पूरी तरह से सरकारी नियंत्रण में रखकर केवल पक्षपातपूर्ण सूचनाओं के प्रसार की अनुमति दी गई।

23. (D) सूचना तथा मनोरंजन दोनों का मिश्रण
'सूचनारंजन' या इनफोटेनमेंट शब्द सूचना और मनोरंजन के मेल से बना है। यह मीडिया की उस आधुनिक प्रवृत्ति को दर्शाता है जहाँ समाचारों और सूचनाओं को मनोरंजक ढंग से प्रस्तुत किया जाता है ताकि दर्शकों और पाठकों की रुचि बनी रहे। इसमें गंभीर विषयों को भी आकर्षक दृश्य-श्रव्य सामग्री, सरल भाषा और नाटकीयता के साथ परोसा जाता है, जिससे सूचना का प्रसार व्यावसायिक रूप से सफल हो सके।

24. (A) केवल 1 और 2
भूमंडलीकरण ने मीडिया उद्योग के पारंपरिक स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है। राष्ट्रीय बाज़ारों का स्थान अब एक वैश्विक और तरल बाज़ार ने ले लिया है जहाँ सूचनाओं का प्रवाह सीमाओं से परे है। नवीन डिजिटल प्रौद्योगिकियों के कारण प्रिंट, इलेक्ट्रॉनिक और इंटरनेट जैसे मीडिया के विभिन्न रूपों का आपस में विलय हो गया है। अब मीडिया कंपनियाँ वैश्विक स्तर पर संगठित हैं और सरकारी नियम कम प्रभावी हो गए हैं।

25. (C) यह भूमंडलीकरण को कुशलतापूर्वक स्वीकारता है
संगीत उद्योग ने भूमंडलीकरण को अत्यंत कुशलता और तीव्रता के साथ स्वीकार किया है। संगीत की भाषा सार्वभौमिक होने के कारण यह भौगोलिक सीमाओं को आसानी से पार कर लेता है। वैश्विक स्तर पर प्रसिद्ध पॉप संगीत और स्थानीय संगीत शैलियों के मिश्रण ने एक नया बाज़ार बनाया है। हालाँकि इंटरनेट ने चुनौतियाँ पैदा की हैं, फिर भी संगीत का वैश्विक वितरण और पहुँच पहले की तुलना में कहीं अधिक बढ़ गई है।

26. (A) डिजिटल डाउनलोड से भौतिक बिक्री का घटना
इंटरनेट के प्रसार ने संगीत उद्योग के पारंपरिक राजस्व मॉडल के लिए गंभीर संकट पैदा कर दिया है। अब संगीत डिजिटल रूप से मुफ्त या कम कीमत पर डाउनलोड किया जा सकता है, जिससे कैसेट और सीडी जैसी भौतिक सामग्री की बिक्री में भारी गिरावट आई है। पाइरेसी और अनधिकृत साझाकरण ने संगीत कंपनियों के मुनाफे को प्रभावित किया है, जिससे वितरण की पूरी श्रृंखला और नेटवर्क को खतरा पैदा हो गया है।

27. (D) साक्षर लोगों की संख्या में बढ़ोतरी और शहरों में प्रवसन
भारत में टेलीविज़न और इंटरनेट के उदय के बावजूद प्रिंट मीडिया का विस्तार जारी है। इसका मुख्य कारण देश में बढ़ती साक्षरता दर है, जिससे समाचार पत्र पढ़ने वाले पाठकों की संख्या बढ़ी है। साथ ही, ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर होने वाले प्रवसन ने भी समाचार पत्रों की माँग बढ़ाई है क्योंकि प्रवासी अपनी जड़ों और नए परिवेश की सूचनाओं के लिए क्षेत्रीय भाषाओं के पत्रों पर निर्भर रहते हैं।

28. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारत के क्षेत्रीय समाचार पत्रों की भाषाई विविधता अत्यंत समृद्ध है। केसरी एक प्रसिद्ध मराठी समाचार पत्र है जिसकी स्थापना तिलक ने की थी। मातृभूमि केरल का लोकप्रिय मलयालम दैनिक है। ईनाडु आंध्र प्रदेश का प्रमुख तेलुगु समाचार पत्र है जिसने स्थानीय पत्रकारिता में क्रांति ला दी। दिन तंती तमिलनाडु का विख्यात तमिल पत्र है जो अपनी सरल भाषा और व्यापक पहुँच के लिए जाना जाता है।

29. (C) स्थानीय समाचारों हेतु 'ज़िला दैनिक' अवधारणा
तेलुगु समाचार पत्र 'ईनाडु' की असाधारण सफलता का रहस्य इसकी 'ज़िला दैनिक' अवधारणा में निहित था। इसने प्रत्येक ज़िले के लिए अलग परिशिष्ट शुरू किए, जिनमें स्थानीय घटनाओं, छोटे विज्ञापनों और सामुदायिक मुद्दों को प्रमुखता दी गई। इस रणनीति ने ग्रामीण और कस्बाई पाठकों को अखबार से भावनात्मक रूप से जोड़ दिया। पाठकों को अपने आस-पास की खबरें अपनी भाषा में मिलने लगीं, जिससे इसकी प्रसार संख्या तेजी से बढ़ी।

30. (D) विभिन्न पूरक अंक और पत्रिकाएँ छापना
भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों ने अत्याधुनिक मुद्रण तकनीक अपनाकर अपनी सामग्री और स्वरूप में व्यापक सुधार किया है। पाठकों को आकर्षित करने के लिए वे अब केवल दैनिक समाचार ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्य, मनोरंजन, शिक्षा और महिलाओं जैसे विषयों पर आधारित विभिन्न साप्ताहिक पूरक अंक और रंगीन पत्रिकाएँ प्रकाशित करते हैं। इस विविधतापूर्ण सामग्री ने क्षेत्रीय समाचार पत्रों को पाठकों के जीवन का एक अनिवार्य और रुचिकर हिस्सा बना दिया है।

31. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
हाल के दशकों में भारतीय भाषाई समाचार पत्रों के पाठकों की संख्या में अभूतपूर्व वृद्धि हुई है। इसका प्रमुख कारण यह है कि ये पत्र छोटे कस्बों और गाँवों के पाठकों की विशिष्ट स्थानीय सूचना आवश्यकताओं को प्रभावी ढंग से पूरा करते हैं। शहरी पाठकों की तुलना में ग्रामीण पाठकों की रुचियाँ अधिक क्षेत्रीय और समुदाय-केंद्रित होती हैं, जिन्हें भाषाई प्रेस अपनी नवीन मुद्रण तकनीक और विस्तार योजनाओं से संतुष्ट करता है।

32. (B) डिजिटल उपकरणों ने पारंपरिक साधनों की जगह ली
मुद्रण और संचार तकनीक में आए बदलावों ने समाचार पत्र संवाददाताओं की कार्यप्रणाली को पूरी तरह बदल दिया है। अब हाथ से लिखे लेखों और टेलीग्राफ की जगह लैपटॉप, मोबाइल फोन और डिजिटल कैमरों ने ले ली है। डिजिटल नेटवर्क के माध्यम से संवाददाता कहीं से भी तुरंत खबरें और चित्र कार्यालय भेज सकते हैं। इससे समाचार संकलन की प्रक्रिया अधिक तीव्र, सटीक और प्रभावी हो गई है, जिससे पारंपरिक बाधाएँ दूर हुई हैं।

33. (B) डिजिटल नेटवर्क द्वारा सामग्री विभिन्न स्थानों पर भेजकर
आज के समाचार पत्र सीमित मुद्रण केंद्रों के बावजूद दर्जनों क्षेत्रीय संस्करण निकालने में सक्षम हैं। यह संभव हुआ है

आधुनिक डिजिटल नेटवर्क और उपग्रह तकनीक के माध्यम से। मुख्य कार्यालय से तैयार सामग्री को डिजिटल रूप में विभिन्न शहरों के प्रेस केंद्रों पर तुरंत भेज दिया जाता है, जहाँ स्थानीय स्तर पर बदलाव करके संस्करण छापे जाते हैं। इस तकनीकी प्रगति ने अखबारों की पहुँच को विकेंद्रीकृत कर दिया है, जिससे प्रसार बढ़ा है।

34. (A) नई प्रौद्योगिकी और संवाददाताओं का नेटवर्क बनाना
'अमर उजाला' जैसे समाचार पत्रों ने अपनी गुणवत्ता और पहुँच बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनीक और संवाददाताओं के विस्तृत जाल का सहारा लिया है। उन्होंने दूर-दराज के क्षेत्रों में संवाददाताओं की नियुक्ति की है ताकि ज़मीनी स्तर की खबरें प्राप्त की जा सकें। साथ ही, बेहतर मुद्रण और चित्रात्मक सामग्री के लिए नवीनतम सॉफ़्टवेयर और कंप्यूटर नेटवर्क का उपयोग किया जाता है। इस निवेश ने उन्हें क्षेत्रीय स्तर पर अत्यंत प्रतिस्पर्धी बनाया है।

35. (C) वे सीधे अपनी विशिष्ट रुचि के पृष्ठों को खोलते हैं
आज के व्यस्त युग में युवा पाठकों की समाचार पत्र पढ़ने की शैली पारंपरिक पाठकों से भिन्न है। वे पूरा अखबार शुरू से अंत तक पढ़ने के बजाय सीधे उन पृष्ठों को खोलते हैं जिनमें उनकी विशिष्ट रुचि होती है, जैसे खेल, मनोरंजन, कैरियर या गैजेट्स। इस प्रवृत्ति को पहचानते हुए समाचार पत्रों ने विभिन्न विषयों के लिए विशेष रंगीन खंड और पूरक अंक तैयार करना शुरू कर दिया है ताकि वे युवाओं को आकर्षित कर सकें।

36. (D) सी.एन.एन.
वर्ष 1991 के खाड़ी युद्ध ने अमेरिकी समाचार चैनल सी.एन.एन. को वैश्विक स्तर पर विख्यात बना दिया। युद्ध के मैदान से दी जाने वाली सजीव और निरंतर रिपोर्टिंग ने दर्शकों को चौबीसों घंटे चलने वाले समाचार चैनलों की शक्ति से परिचित कराया। भारत में भी इस घटना के बाद उपग्रह टेलीविज़न की माँग बढ़ी और समाचारों की तात्कालिकता का एक नया दौर शुरू हुआ, जिसने भविष्य की पत्रकारिता को गहराई से प्रभावित किया।

37. (A) 1, 2, 3, 4
भारत में अंग्रेजी समाचार पत्रों की स्थापना का इतिहास उपनिवेश काल से जुड़ा है। 'दि टाइम्स ऑफ़ इंडिया' की शुरुआत 1861 में हुई। 'दि पायनियर' 1865 में इलाहाबाद से प्रकाशित हुआ। 'दि मद्रास मेल' 1868 में अस्तित्व में आया और 'दि स्टेट्समैन' की स्थापना 1875 में कोलकाता में हुई। यह कालक्रम दर्शाता है कि कैसे ब्रिटिश शासन के दौरान भारत के प्रमुख शहरों में अंग्रेजी प्रेस का आधार तैयार हुआ।

38. (B) जी-टीवी
भारत में निजी उपग्रह टेलीविज़न क्रांति का आगाज़ 1992 में जी-टीवी के साथ हुआ। यह केबल नेटवर्क के माध्यम से कार्यक्रम प्रसारित करने वाला पहला हिंदी आधारित मनोरंजन चैनल था। इसने दूरदर्शन के एकाधिकार को चुनौती दी और भारतीय दर्शकों को मनोरंजन के नए और आधुनिक विकल्प प्रदान किए। जी-टीवी की सफलता ने बाद में कई अन्य निजी और विदेशी चैनलों के लिए भारत में प्रवेश का मार्ग प्रशस्त किया।

39. (D) इसने दूरदर्शन की एकल चैनल व्यवस्था के अनेक विकल्प प्रस्तुत किए
अस्सी के दशक में वी.सी.आर. के आगमन ने भारतीय दर्शकों के लिए मनोरंजन की दुनिया बदल दी। उस समय केवल दूरदर्शन ही उपलब्ध था, जिसके पास सीमित कार्यक्रम थे। वी.सी.आर. ने लोगों को अपनी पसंद की फ़िल्में और धारावाहिक देखने की स्वतंत्रता दी। इसके माध्यम से केबल ऑपरेटरों ने भी फ़िल्में प्रसारित करना शुरू किया, जिसने दूरदर्शन की एकल चैनल व्यवस्था को चुनौती दी और उपग्रह टेलीविज़न के आगामी युग की नींव रखी।

40. (A) उन्होंने कार्यक्रमों को स्थानीयकृत और भारतीय स्वरूप दिया
पारराष्ट्रीय टेलीविज़न चैनलों ने भारतीय बाज़ार में पैठ बनाने के लिए 'ग्लोबलाइजेशन' या स्थानीयकरण की रणनीति अपनाई। उन्होंने महसूस किया कि केवल विदेशी कार्यक्रम सफल नहीं होंगे। इसलिए, उन्होंने भारतीय भाषाओं में सामग्री तैयार की, स्थानीय त्यौहारों और मूल्यों को दर्शाने वाले धारावाहिक बनाए और यहाँ तक कि विदेशी कार्यक्रमों को डब किया। इस भारतीयकरण ने उन्हें करोड़ों दर्शकों से जोड़ा और उन्हें व्यावसायिक रूप से सफल बनाया, जिससे वे घरेलू चैनलों के समान लोकप्रिय हुए।

41. (A) P-3, Q-2, R-1, S-4
भारतीय संचार इतिहास के प्रमुख व्यक्तित्वों का योगदान अतुलनीय है। राजा राममोहन राय ने सामाजिक सुधार हेतु 'संवाद-कौमुदी' का प्रकाशन किया। बेनेडिक्ट एंडरसन ने राष्ट्र को एक 'काल्पनिक समुदाय' के रूप में परिभाषित किया। रामोजी राव ने तेलुगु प्रेस में 'ईनाडु' के माध्यम से क्रांति लाई। जोहान गुटेनबर्ग आधुनिक प्रिंटिंग प्रेस के आविष्कारक थे। इन सभी ने अपने-अपने क्षेत्रों में मास मीडिया के विकास और प्रभाव को नई दिशा और गति प्रदान की।

42. (A) हिंदी और अंग्रेजी का मिश्रण, जिसे विज्ञापनों में प्रयोग किया गया
'हिंगलिश' शब्द हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं के अनौपचारिक मिश्रण को दर्शाता है। विज्ञापन जगत और टेलीविज़न चैनलों ने शहरी युवाओं की बदलती भाषा को पहचानते हुए इस शैली को अपनाया। विज्ञापनों में "दिल माँगे मोर" जैसे नारों के माध्यम से हिंगलिश का प्रयोग अत्यंत लोकप्रिय हुआ। यह न केवल संचार का प्रभावी तरीका बना, बल्कि इसने भारतीय युवाओं की नई सांस्कृतिक पहचान और वैश्विकता और स्थानीयता के मेल को भी प्रतिबिंबित किया।

43. (D) यह मानना कि बच्चे भाषाई भिन्नता स्वीकार लेते हैं
टेलीविज़न चैनलों ने कार्टून और बच्चों के विदेशी कार्यक्रमों को हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं में डब करने का निर्णय लिया। इसके पीछे यह व्यावसायिक तर्क था कि बच्चे सांस्कृतिक और भाषाई भिन्नताओं के प्रति अधिक लचीले होते हैं। यदि कार्यक्रम उनकी भाषा में हो, तो वे विदेशी पात्रों और कहानियों को आसानी से अपना लेते हैं। इस रणनीति ने विदेशी सामग्री की

उत्पादन लागत को कम रखा और बड़े दर्शक वर्ग को आकर्षित किया।

44. (B) धारावाहिक रूप से दिखाई जाने वाली लगातार चलने वाली कहानियाँ
सोप ओपेरा उन टेलीविज़न धारावाहिकों को कहा जाता है जो लगातार चलने वाली कहानियों पर आधारित होते हैं। इनका नामकरण अमेरिका में हुआ जहाँ रेडियो पर इन कार्यक्रमों के प्रायोजक प्रायः साबुन कंपनियाँ होती थीं। ये धारावाहिक दैनिक जीवन के रिश्तों, भावनाओं और संघर्षों पर केंद्रित होते हैं। इनकी विशेषता लंबी अवधि तक चलना और दर्शकों को पात्रों के जीवन के साथ भावनात्मक रूप से जोड़ना है, जिससे विज्ञापनों के लिए एक स्थिर आधार मिलता है।

45. (C) यथार्थवादी प्रदर्शन / रिएलिटी शो
'कौन बनेगा करोड़पति' और 'इंडियन आइडल' जैसे कार्यक्रम भारत में रिएलिटी शो या यथार्थवादी प्रदर्शन की श्रेणी में आते हैं। ये शो आम लोगों की भागीदारी, उनकी प्रतिभा और वास्तविक जीवन की परिस्थितियों पर आधारित होते हैं। इनमें दर्शकों की सहभागिता, लाइव वोटिंग और नाटकीय मोड़ शामिल होते हैं, जो इन्हें पारंपरिक धारावाहिकों से अलग और अधिक आकर्षक बनाते हैं। भूमंडलीकरण के बाद इस प्रकार के कार्यक्रमों ने टेलीविज़न की लोकप्रियता में भारी वृद्धि की है।

46. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
वर्ष 2002 में निजी एफ.एम. रेडियो स्टेशनों की शुरुआत ने भारत में रेडियो के स्वरूप को बदल दिया। सरकारी नियमों के अनुसार, इन निजी चैनलों को राजनीतिक समाचार बुलेटिन प्रसारित करने की अनुमति नहीं दी गई है। इसके परिणामस्वरूप, इन स्टेशनों ने अपना पूरा ध्यान संगीत और शुद्ध मनोरंजन कार्यक्रमों पर केंद्रित कर दिया। रेडियो अब सूचना के बजाय युवाओं के बीच संगीत और जॉकी के साथ संवाद के एक आकर्षक मंच के रूप में उभरा है।

47. (A) सामाजिक संदेश देने हेतु एक सक्रिय संचार माध्यम
आधुनिक भारतीय फ़िल्मों जैसे 'रंग दे बसंती' और 'लगे रहो मुन्नाभाई' में रेडियो को एक शक्तिशाली संचार माध्यम के रूप में दिखाया गया है। इन फ़िल्मों में रेडियो का उपयोग केवल संगीत सुनने के लिए नहीं, बल्कि जनमत तैयार करने, सामाजिक अन्याय के विरुद्ध आवाज़ उठाने और गांधीवादी विचारों के प्रचार के लिए किया गया है। यह दर्शाता है कि डिजिटल युग में भी रेडियो अपनी तात्कालिकता और आत्मीयता के कारण सामाजिक परिवर्तन का प्रभावी साधन है।

48. (B) यह कम लागत वाला स्थानीय सामुदायिक स्टेशन था
बिहार के वैशाली ज़िले में राघव महतो द्वारा संचालित एफ.एम. स्टेशन अपनी सादगी और स्थानीय जुड़ाव के कारण अनूठा था। मात्र पचास रुपये की लागत और कुछ घरेलू उपकरणों से बना यह स्टेशन स्थानीय स्तर पर अत्यंत लोकप्रिय था। यद्यपि यह तकनीकी रूप से अवैध था, लेकिन इसने सामुदायिक रेडियो की अपार संभावनाओं को प्रदर्शित किया। इसने साबित किया कि एक व्यक्ति भी सीमित संसाधनों से संचार का प्रभावी स्थानीय मंच तैयार कर सकता है।

49. (B) यह स्थानीय सूचनाएँ और सार्वजनिक हित के कार्य करता था
राघव महतो का रेडियो स्टेशन स्थानीय समुदाय के लिए बहुमूल्य था क्योंकि वह लोगों की दैनिक समस्याओं और सूचनाओं को स्वर देता था। इस स्टेशन पर गुमशुदा बच्चों की जानकारी, सार्वजनिक कार्यक्रमों की घोषणाएँ और स्थानीय कलाकारों के गीत प्रसारित होते थे। यह गाँव के लोगों की अपनी आवाज़ बन गया था। इसके बंद होने पर ग्रामीणों का दुःख और विरोध यह सिद्ध करता है कि जनहित के कार्यों में सामुदायिक मीडिया की कितनी महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

50. (A) समाचारपत्रों एवं पत्रिकाओं
उन्नीसवीं शताब्दी में राजा राममोहन राय और ईश्वरचंद्र विद्यासागर जैसे समाज सुधारकों ने अपने प्रगतिशील विचारों के प्रचार के लिए समाचार पत्रों और पत्रिकाओं को सबसे सशक्त माध्यम बनाया। इनके माध्यम से उन्होंने सती प्रथा, बाल विवाह और जातिगत भेदभाव जैसी सामाजिक बुराइयों के विरुद्ध जनमत तैयार किया। प्रिंट मीडिया ने इन सुधारकों को शिक्षित वर्ग तक पहुँचने और समाज में बौद्धिक जागृति लाने का एक व्यवस्थित और स्थायी मंच प्रदान किया।

51. (B) 1, 3, 4, 5
औपनिवेशिक काल में राष्ट्रवादी प्रेस ने स्वतंत्रता आंदोलन की रीढ़ के रूप में कार्य किया। इसने उपनिवेशवाद के विरुद्ध जनमत जगाया और भारतीयों को उनके अधिकारों के प्रति सचेत किया। इलबर्ट बिल जैसे मुद्दों पर इसने सरकार का कड़ा विरोध किया। हालाँकि ब्रिटिश सरकार ने दमनकारी कानूनों के माध्यम से इस पर कठोर सेंसरशिप लगाई, फिर भी राष्ट्रवादी पत्रकारों ने विपरीत परिस्थितियों में भी जनता तक स्वाधीनता का संदेश पहुँचाना जारी रखा।

52. (D) महानगरों में स्थित केवल 6 रेडियो स्टेशन थे
वर्ष 1947 में जब भारत स्वतंत्र हुआ, तब आकाशवाणी या ऑल इंडिया रेडियो की आधारभूत संरचना अत्यंत सीमित थी। उस समय पूरे देश में केवल छह रेडियो स्टेशन कार्य कर रहे थे, जो दिल्ली, मुंबई, कोलकाता, चेन्नई, लखनऊ और तिरुचिरापल्ली जैसे प्रमुख महानगरों तक ही सीमित थे। देश की विशाल जनसंख्या और क्षेत्रफल की तुलना में रेडियो की पहुँच बहुत कम थी, जिसे सुधारना स्वतंत्र भारत की सरकार के लिए एक बड़ी चुनौती थी।

53. (C) टीवी का निजी जीवन में दखल और उन्माद पैदा करना
बोरवेल में गिरे बच्चे 'प्रिंस' के बचाव कार्य का मीडिया कवरेज भारतीय पत्रकारिता में एक विवादास्पद मोड़ था। चौबीसों घंटे चलने वाले समाचार चैनलों ने इस घटना को एक सनसनीखेज तमाशे में बदल दिया। इसने दिखाया कि कैसे व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के कारण मीडिया मानवीय संकट का उपयोग टीआरपी बढ़ाने और दर्शकों के बीच भावनात्मक उन्माद पैदा करने के लिए करता है। यह घटना मीडिया द्वारा निजी त्रासदी

के सार्वजनिक प्रदर्शन और नैतिक सीमाओं के उल्लंघन का उदाहरण बन गई।

54. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3
भारतीय टेलीविज़न के विकास में विभिन्न चरणों की भूमिका स्पष्ट है। दूरदर्शन 1991 तक एकमात्र सरकारी नियंत्रित माध्यम था। जी-टीवी ने निजी मनोरंजन चैनलों की शुरुआत की। 'हम लोग' भारत का पहला मनोरंजन-शिक्षा आधारित सोप ओपेरा था जिसने सामाजिक संदेशों को लोकप्रिय बनाया। 'इंडियन आइडल' जैसे कार्यक्रमों ने भारत में रिएलिटी शो के युग की नींव रखी। यह वर्गीकरण टेलीविज़न के शैक्षिक माध्यम से व्यावसायिक मनोरंजन केंद्र बनने की यात्रा को दर्शाता है।

55. (D) 1980 के दशक में उद्यमियों एवं वी.सी.आर. के माध्यम से
भारत में केबल टेलीविज़न का उदय अस्सी के दशक के मध्य में छोटे उद्यमियों के प्रयासों से हुआ। वी.सी.आर. की बढ़ती लोकप्रियता ने स्थानीय ऑपरेटरों को अपार्टमेंट परिसरों में तार बिछाकर फ़िल्में और अन्य वीडियो सामग्री प्रसारित करने के लिए प्रेरित किया। इस अनौपचारिक उद्योग ने भारतीय दर्शकों को दूरदर्शन के सीमित विकल्पों से मुक्ति दिलाई। यही शुरुआती केबल नेटवर्क आगे चलकर उपग्रह चैनलों के आगमन के बाद एक संगठित और विशाल उद्योग के रूप में विकसित हुआ।

56. (A) क्योंकि यह देशभक्ति और समाज सुधार से प्रेरित था
भारत में पत्रकारिता का प्रारंभ लाभ कमाने के उद्देश्य से नहीं, बल्कि समाज सेवा और राष्ट्र निर्माण के संकल्प के साथ हुआ था। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पत्रकारिता को एक पवित्र कर्तव्य या 'अंतरात्मा का कार्य' माना जाता था। पत्रकारों का मुख्य लक्ष्य औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध लड़ना, सामाजिक कुरीतियों को दूर करना और जनता को जागरूक करना था। इस निस्वार्थ भावना के कारण ही इसे व्यावसायिक पेशे के बजाय एक मिशन के रूप में देखा गया।

57. (C) क्योंकि इनका मुख्य उद्देश्य अब व्यावसायिक लाभ कमाना है
आधुनिक युग में समाचार पत्रों की भूमिका मिशनरी भावना से हटकर पूरी तरह व्यावसायिक हो गई है। अब समाचार पत्रों को एक ऐसी उपभोक्ता वस्तु माना जाता है जिसे बाज़ार में बेचना और अधिक मुनाफा कमाना अनिवार्य है। विज्ञापन राजस्व पर अत्यधिक निर्भरता के कारण अब पाठकों की रुचि और बाज़ार की माँग के अनुसार सामग्री परोसी जाती है। इस परिवर्तन ने पत्रकारिता के आदर्शों को व्यावसायिक रणनीतियों और विपणन की आवश्यकताओं के अधीन कर दिया है।

58. (A) पी.सी. नेटवर्क और 'न्यूज़मेकर' जैसे सॉफ़्टवेयर
1990 के दशक के बाद भारतीय समाचार पत्रों में आए दो प्रमुख तकनीकी बदलाव कंप्यूटर नेटवर्क और उन्नत सॉफ़्टवेयर का उपयोग हैं। न्यूज़मेकर जैसे विशेष सॉफ़्टवेयर और पर्सनल कंप्यूटर के अंतर्संबंध ने समाचार संकलन, संपादन और मुद्रण की प्रक्रिया को डिजिटल बना दिया। इसने संवाददाताओं को मुख्य कार्यालय से तुरंत जुड़ने और सामग्री भेजने में सक्षम बनाया। इन तकनीकों के कारण अखबारों का उत्पादन अधिक तीव्र हुआ और बहु-संस्करण निकालना सरल हो गया, जिससे पूरी कार्यसंस्कृति बदल गई।

59. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
भारत में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के विस्तार के साथ प्रिंट मीडिया का भी व्यापक विकास हुआ है। हालाँकि, यह कहना गलत होगा कि प्रिंट मीडिया ने विज्ञापनों पर निर्भरता कम की है। वास्तव में, समाचार पत्रों ने अपनी पहुँच बढ़ाने के लिए अपनी कीमतें बहुत कम रखी हैं और राजस्व के लिए वे विज्ञापनों पर पहले से कहीं अधिक निर्भर हो गए हैं। बढ़ती साक्षरता और स्थानीय आवश्यकताओं ने प्रसार तो बढ़ाया है, लेकिन व्यावसायिक मॉडल विज्ञापनों पर ही टिका है।

60. (B) मुंबई में, 1861 में
'दि टाइम्स ऑफ़ इंडिया' का प्रकाशन पहली बार वर्ष 1861 में मुंबई से शुरू हुआ था। यह भारत के सबसे पुराने और प्रतिष्ठित अंग्रेजी दैनिक समाचार पत्रों में से एक है। इसकी स्थापना औपनिवेशिक काल के दौरान हुई थी और प्रारंभ में इसका स्वामित्व ब्रिटिश हितों से जुड़ा था। कालांतर में यह भारतीय स्वामित्व में आया और देश के सबसे बड़े मीडिया समूहों में से एक के रूप में विकसित हुआ, जिसकी आज वैश्विक पहचान है।

61. (A) 3, 1, 4, 2
संचार इतिहास की महत्वपूर्ण घटनाओं का क्रम वैश्विक और भारतीय संदर्भ में अद्वितीय है। सबसे पहले 1440 में गुटेनबर्ग ने प्रिंटिंग प्रेस विकसित की। इसके सदियों बाद 1821 में राजा राममोहन राय ने 'संवाद-कौमुदी' शुरू की। 1858 में ईश्वरचंद्र विद्यासागर द्वारा 'शोम प्रकाश' का प्रकाशन हुआ और 1861 में 'दि टाइम्स ऑफ़ इंडिया' का आगमन हुआ। यह क्रम मुद्रण तकनीक के विकास और फिर भारत में राष्ट्रवादी और आधुनिक प्रेस के उदय को दर्शाता है।

62. (D) यह पूर्णतः सरकारी स्वामित्व में था, राष्ट्रीय विचार वर्जित थे
औपनिवेशिक काल में रेडियो का संचालन पूरी तरह से ब्रिटिश सरकार के नियंत्रण में था। रेडियो का मुख्य उपयोग सरकारी नीतियों का प्रचार करने और साम्राज्यवादी हितों की रक्षा के लिए किया जाता था। इस माध्यम पर राष्ट्रवादी विचारों या स्वतंत्रता आंदोलन का समर्थन करने वाले कार्यक्रमों का प्रसारण पूरी तरह प्रतिबंधित था। सरकार रेडियो को सूचना का एक ऐसा औज़ार मानती थी जिसे जनता के विचारों को नियंत्रित करने के लिए उपयोग किया जा सके।

63. (A) राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और स्थानीय
स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने देश की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता को ध्यान में रखते हुए आकाशवाणी का विस्तार तीन विशिष्ट स्तरों पर किया। राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक सूचनाएँ और कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। क्षेत्रीय सेवाएँ विभिन्न राज्यों की भाषाओं और बोलियों में सामग्री प्रदान करती हैं। अंततः, स्थानीय रेडियो स्टेशनों की स्थापना की गई ताकि ज़मीनी स्तर की सामुदायिक समस्याओं और क्षेत्रीय विकास पर

ध्यान केंद्रित किया जा सके। इस त्रि-स्तरीय संरचना ने रेडियो को समावेशी बनाया।

64. (B) केवल 1, 2 और 3
आकाशवाणी का संगठनात्मक विस्तार अक्सर राष्ट्रीय संकटों के दौरान तेजी से हुआ। 1962 के चीन युद्ध ने सूचना के महत्व को रेखांकित किया जिससे 'वार्ता' इकाई बनी। 1971 के बांग्लादेश संकट के समय समाचारों की भारी माँग के कारण प्रति घंटे बुलेटिन शुरु हुए। 1991 में राजीव गांधी की हत्या के बाद 24 घंटे समाचार प्रसारण का निर्णय लिया गया। ये घटनाएँ दर्शाती हैं कि संकट के समय रेडियो सूचना का सबसे विश्वसनीय और त्वरित माध्यम रहा है।

65. (B) यह व्यावसायिक विस्तार है जिससे विज्ञापन आकर्षित होते हैं
वर्तमान में अधिकांश निजी एफ.एम. चैनल बड़े मीडिया समूहों के स्वामित्व में हैं। यह इन समूहों के लिए एक व्यावसायिक रणनीति है जिसके माध्यम से वे अपने विज्ञापन बाज़ार का विस्तार करते हैं। समाचार पत्र, पत्रिका और टेलीविज़न चैनल रखने वाले समूह रेडियो को भी अपने पोर्टफोलियो में शामिल करके विज्ञापनदाताओं को एक 'कंबाइंड पैकेज' देते हैं। इससे उन्हें विभिन्न माध्यमों के दर्शकों तक पहुँचने और अपनी व्यावसायिक पकड़ मजबूत करने में मदद मिलती है।

66. (A) टाइम्स ऑफ़ इंडिया समूह
'रेडियो मिर्ची' भारत के सबसे लोकप्रिय और सफल निजी एफ.एम. नेटवर्कों में से एक है। यह प्रसिद्ध मीडिया कंपनी 'टाइम्स ऑफ़ इंडिया समूह' (बेनेट कोलमैन एंड कंपनी लिमिटेड) का हिस्सा है। इस समूह ने अपनी प्रिंट मीडिया की विशाल विरासत का उपयोग रेडियो क्षेत्र में विस्तार करने के लिए किया। रेडियो मिर्ची की सफलता ने यह सिद्ध किया कि कैसे एक स्थापित मीडिया हाउस अपनी ब्रांड वैल्यू का उपयोग नए संचार माध्यमों में प्रभावी ढंग से कर सकता है।

67. (C) वे घरेलू बाज़ारों में सरकारी विनियमों के अधीन थीं
भूमंडलीकरण के पहले, यानी 1970 के दशक तक, मीडिया उद्योग का स्वरूप मुख्यतः राष्ट्रीय था। अधिकांश मीडिया कंपनियाँ अपने घरेलू बाज़ार तक ही सीमित थीं और पूरी तरह से अपनी राष्ट्रीय सरकारों के कानूनों और विनियमों के अधीन कार्य करती थीं। विदेशी निवेश और पारराष्ट्रीय प्रसारण के अवसर अत्यंत सीमित थे। उस समय सूचना का प्रवाह राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर नियंत्रित था और मीडिया को राष्ट्र निर्माण के एक उपकरण के रूप में देखा जाता था।

68. (C) P-3, Q-1, R-2, S-4
भारतीय मीडिया के विभिन्न मील के पत्थर इसकी विकास यात्रा को दर्शाते हैं। 'महाभारत' एक अत्यंत लोकप्रिय महाकाव्य धारावाहिक था जिसने सड़कों पर सन्नाटा कर दिया था। 'हम लोग' ने मनोरंजन-शिक्षा के माध्यम से सामाजिक मुद्दों को उठाया। फ़िल्म 'लगे रहो मुन्नाभाई' ने रेडियो को जनसंवाद के सक्रिय माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया। 'कौन बनेगा करोड़पति' ने भारत में रिएलिटी शो की अपार व्यावसायिक सफलता और दर्शकों की भागीदारी का नया मानक स्थापित किया।

69. (B) केवल 1, 2, 3, 4
रामोजी राव द्वारा 1974 में स्थापित 'ईनाडु' ने तेलुगु पत्रकारिता की दिशा बदल दी। इसने 1980 के दशक में शराब-विरोधी जैसे सामाजिक आंदोलनों को मंच देकर ग्रामीण पैठ बनाई। 1989 में शुरु की गई 'ज़िला दैनिक' अवधारणा ने इसे प्रत्येक घर तक पहुँचाया। 1998 तक तेलुगु बाज़ार के 70 प्रतिशत हिस्से पर इसका कब्जा था। इसकी सफलता का मुख्य कारण केवल राजधानी तक सीमित न रहकर राज्य के कोने-कोने तक विकेंद्रीकृत मुद्रण करना था।

70. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पारराष्ट्रीय चैनलों जैसे स्टार प्लस ने शुरुआत में केवल अंग्रेजी कार्यक्रम दिखाए, लेकिन बाद में वे पूरी तरह हिंदी चैनल बन गए। उनके बाज़ार अनुसंधान ने यह स्पष्ट कर दिया कि भारतीय दर्शकों को लंबे समय तक जोड़े रखने के लिए उनकी अपनी भाषा और संस्कृति के अनुकूल कार्यक्रम अनिवार्य हैं। स्थानीयकरण की इस रणनीति के तहत उन्होंने 'कौन बनेगा करोड़पति' और 'सास-बहू' जैसे चिर-परिचित विषयों वाले कार्यक्रम बनाए, जो उनकी व्यावसायिक सफलता का मुख्य आधार बने।

71. (D) कम्युनिकेशन प्रक्रिया है और मीडिया इसके साधन हैं
जनसंचार या 'मास कम्युनिकेशन' वह संपूर्ण प्रक्रिया है जिसके माध्यम से सूचनाओं और संदेशों का आदान-प्रदान किया जाता है। इसके विपरीत, 'मास मीडिया' वे भौतिक और तकनीकी साधन या उपकरण हैं जिनका उपयोग इस संचार प्रक्रिया को संपन्न करने के लिए किया जाता है, जैसे समाचार पत्र, रेडियो या टेलीविज़न। सरल शब्दों में, मीडिया वह वाहक है जो संचार के संदेश को एक स्थान से दूसरे स्थान तक विशाल जनसमूह तक पहुँचाता है।

72. (A) वे सर्वप्रथम रेडियो, टीवी चालू करते हैं या अखबार देखते हैं
आधुनिक मध्यवर्गीय परिवारों के जीवन में मास मीडिया का प्रवेश इतना गहरा है कि उनकी दिनचर्या की शुरुआत ही इसके साथ होती है। अधिकांश लोग जागते ही सबसे पहले रेडियो या टेलीविज़न पर समाचार सुनते हैं अथवा समाचार पत्र का इंतज़ार करते हैं। आज के समय में मोबाइल फोन पर सोशल मीडिया और समाचारों की जाँच करना भी इसी का हिस्सा है। यह दर्शाता है कि सूचना के बिना आधुनिक जीवन की कल्पना करना कठिन हो गया है।

73. (C) प्रिंट के कारण एक साझा राष्ट्रीय चेतना और 'हम की भावना' का विकास हुआ
बेनेडिक्ट एंडरसन के अनुसार, प्रिंट मीडिया ने राष्ट्रवाद के उदय में निर्णायक भूमिका निभाई। समाचार पत्रों और पुस्तकों के माध्यम से लोगों ने साझा सूचनाएँ और कहानियाँ पढ़ीं, जिससे उन्हें अहसास हुआ कि उनके जैसे लाखों अन्य लोग भी एक ही पहचान से जुड़े हैं। इसने भौगोलिक दूरियों के बावजूद एक

'काल्पनिक समुदाय' और 'हम' की भावना को जन्म दिया। प्रिंट तकनीक ने विभिन्न क्षेत्रीय पहचानों को एक साझा राष्ट्रीय चेतना के सूत्र में पिरोया।

74. (B) केवल 1 और 2
भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत राजा राममोहन राय ने जनमत तैयार करने के लिए दो महत्वपूर्ण समाचार पत्रों का उपयोग किया। 'संवाद-कौमुदी' बंगला भाषा में था, जिसके माध्यम से उन्होंने सामाजिक और धार्मिक सुधारों का आह्वान किया। 'मिरात-उल-अखबार' फारसी भाषा का पत्र था जिसने उनके विचारों को बौद्धिक वर्ग तक पहुँचाया। ये दोनों प्रकाशन राष्ट्रवादी और लोकतांत्रिक दृष्टिकोण से प्रेरित थे, जिनका उद्देश्य भारतीय समाज को आधुनिक बनाना और लोगों को उनके अधिकारों के प्रति शिक्षित करना था।

75. (D) खबरें सार्वजनिक स्थानों पर सामूहिक रूप से पढ़ी जाती थीं
औपनिवेशिक काल में साक्षरता कम होने के बावजूद समाचार पत्रों का प्रभाव व्यापक था क्योंकि इन्हें अक्सर चौपालों, पुस्तकालयों या चाय की दुकानों पर सामूहिक रूप से पढ़ा जाता था। एक शिक्षित व्यक्ति जोर-जोर से अखबार पढ़ता था और कई अनपढ़ लोग उसे सुनकर खबरों पर चर्चा करते थे। इस प्रकार, अखबारों की एक प्रति सैकड़ों लोगों तक सूचना पहुँचाती थी, जिससे वे राष्ट्रीय आंदोलन और सामाजिक सुधारों के शक्तिशाली माध्यम बन गए थे।

76. (B) अस्पृश्यता, बाल विवाह और विधवा बहिष्कार
स्वतंत्रता के बाद के प्रारंभिक वर्षों में भारतीय मीडिया को समाज की आंतरिक बुराइयों के विरुद्ध एक योद्धा की भूमिका निभानी थी। सरकार और समाज सुधारकों ने मीडिया से अपेक्षा की कि वह अस्पृश्यता की समाप्ति, बाल विवाह के विरुद्ध जागरूकता और विधवाओं के बहिष्कार जैसी अमानवीय प्रथाओं को बदलने के लिए सक्रिय प्रयास करेगा। रेडियो और समाचार पत्रों ने इन मुद्दों पर निरंतर चर्चा और कहानियों के माध्यम से एक आधुनिक और प्रगतिशील भारतीय समाज के निर्माण में योगदान दिया।

77. (C) यह विज्ञापनों द्वारा एक लाभदायक व्यावसायिक चैनल बना
वर्ष 1957 में आकाशवाणी के अंतर्गत विविध भारती की स्थापना एक रणनीतिक कदम था। रेडियो सीलोन की व्यावसायिक सफलता को देखते हुए, भारत सरकार ने महसूस किया कि विज्ञापनों और लोकप्रिय संगीत के बिना श्रोताओं को जोड़े रखना कठिन है। विविध भारती के आने से रेडियो पर विज्ञापनों का दौर शुरू हुआ, जिसने इसे न केवल श्रोताओं के बीच लोकप्रिय बनाया, बल्कि आकाशवाणी के लिए राजस्व का एक बड़ा और लाभदायक स्रोत भी प्रदान किया, जिससे सरकारी खजाने को लाभ हुआ।

78. (D) यह 11 करोड़ परिवारों यानी दो-तिहाई घरों तक पहुँचा
वर्ष 2000 तक भारत में रेडियो की पहुँच अभूतपूर्व स्तर पर पहुँच चुकी थी। आँकड़ों के अनुसार, देश के लगभग 11 करोड़ परिवारों तक रेडियो की सेवा उपलब्ध थी, जो कुल घरों का लगभग दो-तिहाई हिस्सा था। यह दर्शाता है कि टेलीविज़न के प्रसार के बावजूद, रेडियो अपनी कम लागत और सुगमता के कारण सूचना और मनोरंजन का सबसे व्यापक माध्यम बना रहा। विशेषकर ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों में इसकी भूमिका आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण बनी हुई है।

79. (A) दिल्ली, मुंबई, श्रीनगर और अमृतसर के चार केंद्र
भारत में टेलीविज़न का विकास प्रारंभिक वर्षों में अत्यंत धीमा था। 1959 में दिल्ली से शुरू होने के बाद, अगले डेढ़ दशक में इसका विस्तार केवल कुछ ही प्रमुख शहरों तक हो पाया। वर्ष 1975 तक देश में केवल चार टेलीविज़न केंद्र स्थापित थे, जो दिल्ली, मुंबई, श्रीनगर और अमृतसर में स्थित थे। उस समय टीवी एक विलासिता की वस्तु माना जाता था और इसकी पहुँच समाज के एक बहुत छोटे और समृद्ध शहरी वर्ग तक ही सीमित थी।

80. (B) P-2, Q-3, R-1, S-4
भारत के मीडिया परिदृश्य में विभिन्न ब्रांडों का स्वामित्व बड़े समूहों के पास है। रेडियो मिर्ची टाइम्स ऑफ़ इंडिया समूह का हिस्सा है। रैड एफ.एम. का संचालन लिविंग मीडिया (इंडिया टुडे समूह) के सहयोग से हुआ। रेडियो सिटी स्टार नेटवर्क (प्रारंभ में) से जुड़ा था। जी-टीवी एस्सेल समूह की प्रमुख इकाई है। यह मिलान दर्शाता है कि कैसे बड़े मीडिया घरानों ने प्रिंट से निकलकर इलेक्ट्रॉनिक और रेडियो के क्षेत्र में अपने पैर पसारे और बाज़ार पर नियंत्रण स्थापित किया।

81. (B) हम लोग
भारत में टेलीविज़न के वाणिज्यीकरण का एक स्पष्ट प्रतीक 'हम लोग' धारावाहिक के दौरान प्रसारित होने वाले विज्ञापन थे। 'मैगी 2 मिनट नूडल्स' ने इस अत्यंत लोकप्रिय शो को प्रायोजित किया, जिससे यह उत्पाद भारतीय घरों में एक जाना-माना नाम बन गया। इस घटना ने साबित किया कि लोकप्रिय मनोरंजन कार्यक्रमों का उपयोग उपभोक्ता वस्तुओं की बिक्री बढ़ाने के लिए कितने प्रभावी ढंग से किया जा सकता है। इसने भविष्य के विज्ञापन-आधारित टेलीविज़न मॉडल की आधारशिला रखी।

82. (A) नवीन प्रौद्योगिकियों द्वारा विभिन्न माध्यमों का परस्पर मिलन
'विलयन' या कन्वर्जेंस का तात्पर्य उस प्रक्रिया से है जहाँ डिजिटल तकनीक के कारण संचार के विभिन्न माध्यम आपस में जुड़ जाते हैं। आज एक ही स्मार्टफोन पर हम अखबार पढ़ सकते हैं, रेडियो सुन सकते हैं, फिल्में देख सकते हैं और इंटरनेट चला सकते हैं। प्रिंट, ऑडियो और वीडियो सामग्री का यह एकीकरण सूचनाओं के उपभोग के तरीके को बदल रहा है। अब मीडिया कंपनियाँ केवल एक क्षेत्र में न रहकर सभी प्लेटफॉर्मों पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही हैं।

83. (C) घर-घर जाकर सर्वेक्षण एवं आधुनिक विपणन रणनीतियाँ
'दैनिक भास्कर' समूह की तीव्र संवृद्धि का मुख्य कारण उसकी आक्रामक और वैज्ञानिक विपणन रणनीति थी। किसी भी नए शहर में संस्करण शुरू करने से पहले, उन्होंने घर-घर जाकर व्यापक सर्वेक्षण किया ताकि पाठकों की पसंद और स्थानीय

जाता है और ग्लैमर तथा मनोरंजन को प्रमुखता दी जाती है। यह मिश्रण विभिन्न रुचियों वाले पाठकों, विशेषकर युवाओं को आकर्षित करने के लिए अनिवार्य हो गया है, ताकि व्यावसायिक बाज़ार में अखबार अपनी पकड़ बनाए रख सकें।

123. (D) जनसंचार का जीवन के हर क्षेत्र में विस्तार
सी.बी.एस.ई. बोर्ड परीक्षाओं के परिणामों का इंटरनेट और मोबाइल फोन पर उपलब्ध होना यह दर्शाता है कि जनसंचार के साधन अब हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में गहराई से समा गए हैं। यह केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, बल्कि शिक्षा, प्रशासन और व्यक्तिगत सूचनाओं के आदान-प्रदान का प्राथमिक जरिया बन गया है। तकनीक ने सूचनाओं की पहुँच को त्वरित बना दिया है। यह उदाहरण मीडिया और डिजिटल तकनीक के बढ़ते प्रभाव और हमारे दैनिक जीवन की उन पर बढ़ती निर्भरता को प्रतिबिंबित करता है।

124. (B) रेडियो सेटों की ऊँची कीमत
भारत में स्वतंत्रता के बाद रेडियो प्रसारण के विस्तार में सबसे बड़ी बाधा रेडियो सेटों की अत्यधिक ऊँची कीमत थी। उस समय रेडियो एक विलासिता की वस्तु माना जाता था और आम जनता की क्रय शक्ति से बाहर था। यद्यपि सरकार ने स्टेशनों का जाल बिछाना शुरू कर दिया था, लेकिन जब तक लोगों के पास रिसीवर सेट ही नहीं होंगे, तब तक प्रसारण का लाभ उन तक नहीं पहुँच सकता था। यह समस्या 1960 के दशक में सस्ती ट्रांजिस्टर तकनीक के आने के बाद ही पूरी तरह हल हो सकी।

125. (C) दिल्ली में हिंदीभाषी प्रवासियों की बड़ी संख्या
वर्ष 2003 से 2005 के बीच दिल्ली में हिंदी दैनिक 'हिंदुस्तान' के प्रसार में हुई भारी वृद्धि का मुख्य कारण शहर में हिंदी भाषी प्रवासियों का निरंतर आगमन था। उत्तर प्रदेश और बिहार जैसे राज्यों से बड़ी संख्या में लोग काम की तलाश में दिल्ली आए, जो अपनी भाषा में समाचार पढ़ने के लिए हिंदी अखबारों पर निर्भर थे। 'हिंदुस्तान' ने इन प्रवासियों की सूचना आवश्यकताओं को पहचानते हुए अपनी पहुँच बढ़ाई। साक्षरता में वृद्धि और स्थानीय खबरों के प्रति रुचि ने भी इस संवृद्धि को बल प्रदान किया।

126. (B) P-2, Q-1, R-3, S-4
औपनिवेशिक भारत के प्रमुख समाचार पत्रों का उद्भव तत्कालीन महत्वपूर्ण शहरों से जुड़ा है। 'दि टाइम्स ऑफ़ इंडिया' की शुरुआत 1861 में मुंबई से हुई। 'दि पायनियर' का प्रकाशन 1865 में इलाहाबाद से प्रारंभ हुआ। 'दि स्टेट्समैन' 1875 में कोलकाता का एक प्रमुख स्वर बना। अंततः, 'दि सिविल एंड मिलिटरी गज़ट' 1876 में लाहौर से प्रकाशित हुआ। यह मिलान दर्शाता है कि कैसे ब्रिटिश शासन के दौरान अलग-अलग प्रशासनिक और व्यापारिक केंद्रों से अंग्रेजी प्रेस ने अपना विस्तार किया और अपनी विशिष्ट पहचान बनाई।

127. (C) केवल 1, 2 और 3
संगीत उद्योग पर भूमंडलीकरण का प्रभाव अत्यंत गहरा है। संगीत एक ऐसा माध्यम है जो भाषाई बाधाओं को पार कर सीधे लोगों के दिलों तक पहुँचता है, जिससे यह आसानी से वैश्विक हो जाता है। इंटरनेट और डिजिटल तकनीक ने संगीत को डाउनलोड करना और साझा करना सुलभ बना दिया है। हालाँकि, इससे भौतिक उत्पादों की बिक्री और उनके पारंपरिक वितरण नेटवर्क के लिए एक बड़ा संकट पैदा हो गया है। तकनीक ने संगीत के उत्पादन, वितरण और उपभोग के पूरे पारिस्थितिकी तंत्र को मौलिक रूप से बदल दिया है।

128. (B) बेनेडिक्ट एंडरसन
'काल्पनिक समुदाय' की अवधारणा प्रसिद्ध राजनीति विज्ञानी बेनेडिक्ट एंडरसन ने प्रस्तुत की थी। उन्होंने तर्क दिया कि एक राष्ट्र के सदस्य एक-दूसरे को व्यक्तिगत रुप से नहीं जानने के बावजूद स्वयं को एक साझा पहचान और समुदाय का हिस्सा मानते हैं। यह जुड़ाव प्रिंट मीडिया और साझा प्रतीकों के माध्यम से विकसित होता है। एंडरसन के अनुसार, आधुनिक राष्ट्रों के निर्माण और राष्ट्रवाद की भावना के प्रसार में संचार के माध्यमों, विशेषकर प्रिंट तकनीक, की भूमिका अत्यंत निर्णायक और आधारभूत रही है।

129. (B) 1982 के एशियाई खेल
भारत में टेलीविज़न के इतिहास में 1982 के एशियाई खेल एक मील के पत्थर के समान हैं। इसी घटना के साथ देश में पहली बार रंगीन प्रसारण की शुरुआत की गई। तत्कालीन सरकार ने खेलों के आयोजन को भव्य बनाने और अंतरराष्ट्रीय दर्शकों को आकर्षित करने के लिए इस तकनीक को अपनाया। इसने भारतीय दर्शकों के टीवी देखने के अनुभव को पूरी तरह बदल दिया और इसके बाद ही देश में रंगीन टीवी सेटों की माँग और बिक्री में तेजी आई, जिसने भविष्य के मनोरंजन उद्योग का नया स्वरूप तय किया।

130. (A) उत्तरीय क्षेत्र
वर्ष 2016 तक के आँकड़ों के अनुसार, भारत के उत्तरी क्षेत्र में समाचार पत्रों के संचलन में सर्वाधिक वृद्धि दर दर्ज की गई। इस क्षेत्र में उत्तर प्रदेश, बिहार और मध्य प्रदेश जैसे बड़े राज्य शामिल हैं जहाँ साक्षरता दर में सुधार और ग्रामीण बाज़ारों के विस्तार ने अखबारों की माँग को बढ़ाया है। हिंदी और अन्य क्षेत्रीय भाषाओं के पत्रों ने स्थानीय संस्करणों के माध्यम से इस बढ़ती माँग को पूरा किया। यह वृद्धि दर्शाती है कि डिजिटल युग में भी उत्तरी भारत में प्रिंट मीडिया की जड़ें मजबूत हैं।

131. (C) उन्होंने उसे सेवाएँ पुनः चालू हेतु राजी किया
जब अधिकारियों ने तकनीकी नियमों का हवाला देते हुए राघव महतो के अवैध रेडियो स्टेशन को बंद कर दिया, तो स्थानीय ग्रामवासियों में गहरा असंतोष फैल गया। उनके लिए यह स्टेशन मनोरंजन और सूचना का एकमात्र सुलभ साधन था। गाँव के लोगों ने राघव को फिर से प्रसारण शुरू करने के लिए प्रोत्साहित किया क्योंकि वे सरकारी रेडियो के मुकाबले अपने इस स्थानीय और आत्मीय मंच को अधिक महत्व देते थे। ग्रामीणों की यह प्रतिक्रिया यह सिद्ध करती है कि सामुदायिक संचार माध्यमों का लोगों से गहरा जुड़ाव होता है।

सरल और बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया। इस रणनीति के कारण यह समाज के उन वर्गों तक भी पहुँचने में सफल रहा जो अधिक शिक्षित नहीं थे। इसकी सरलता और स्थानीय खबरों पर ध्यान केंद्रित करने की नीति ने इसे तमिलनाडु का सबसे अधिक पढ़ा जाने वाला अखबार बना दिया।

94. (A) 1, 2, 3, 4
'हम लोग' भारत का पहला सोप ओपेरा था जिसने मनोरंजन के साथ-साथ गंभीर सामाजिक संदेशों को प्रसारित किया। इसमें दहेज प्रथा, महिला सशक्तिकरण और परिवार नियोजन जैसे विषयों को मध्यवर्गीय पात्रों के माध्यम से उठाया गया। अभिनेता अशोक कुमार द्वारा एपिसोड के अंत में किया जाने वाला संवाद इसकी अनूठी विशेषता थी। इस शो ने न केवल करोड़ों दर्शकों को जोड़ा बल्कि विज्ञापनदाताओं को भी आकर्षित किया, जिससे दूरदर्शन के लिए व्यावसायिक सफलता के नए द्वार खुले।

95. (A) उन पर सेंसर व्यवस्था लागू कर दी
ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार राष्ट्रवादी प्रेस की बढ़ती शक्ति और प्रभाव से भयभीत थी। सरकार विरोधी विचारों के प्रसार को रोकने के लिए उन्होंने प्रेस पर कठोर सेंसरशिप लागू की। वर्नाकुलर प्रेस एक्ट जैसे दमनकारी कानून बनाए गए ताकि भारतीय भाषाओं के अखबारों पर नियंत्रण रखा जा सके। किसी भी आपत्तिजनक सामग्री के प्रकाशन पर भारी जुर्माना, प्रेस की ज़ब्ती और संपादकों की गिरफ्तारी जैसे उपाय अपनाए गए ताकि राष्ट्रवादी आवाज़ों को पूरी तरह से कुचला जा सके।

96. (B) P-2, Q-3, R-4, S-1
मुद्रण और संचार के इतिहास में महत्वपूर्ण तिथियाँ मील के पत्थर हैं। 1440 में गुटेनबर्ग द्वारा प्रिंटिंग तकनीक का आविष्कार हुआ। 1821 में राजा राममोहन राय ने 'संवाद-कौमुदी' के माध्यम से भारतीय प्रेस की नींव रखी। 1957 में विविध भारती की शुरुआत के साथ रेडियो का व्यावसायिक विस्तार हुआ। अंततः, 1959 में भारत में टेलीविज़न की प्रायोगिक शुरुआत हुई। यह कालक्रम वैश्विक तकनीकी क्रांति से लेकर भारत में आधुनिक मास मीडिया के क्रमिक उदय को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करता है।

97. (B) लोगों के विभिन्न वर्गों के बीच मास मीडिया के प्रयोग और पहुँच में अंतर
'डिजिटल अंतर' या डिजिटल डिवाइड वह सामाजिक और आर्थिक असमानता है जो डिजिटल सूचना और संचार तकनीक तक पहुँच के आधार पर उत्पन्न होती है। यह समाज के अमीर और गरीब, शहरी और ग्रामीण, तथा शिक्षित और अशिक्षित वर्गों के बीच सूचना के असमान वितरण को दर्शाता है। जिनके पास इंटरनेट और कंप्यूटर की सुविधा है, वे अधिक अवसर प्राप्त करते हैं, जबकि अन्य वर्ग पीछे छूट जाते हैं। यह लोकतांत्रिक समाज में सूचना की समानता हेतु एक बड़ी चुनौती है।

98. (A) प्रौद्योगिकी, परिवहन और साक्षरता के विकास के कारण
उन्नीसवीं सदी के मध्य में समाचार पत्रों का जनसामान्य तक पहुँचना कई कारकों के संयोग का परिणाम था। मुद्रण तकनीक में सुधार से छपाई सस्ती और तेज़ हुई। रेलवे और बेहतर सड़कों के कारण समाचार पत्रों का वितरण दूर-दराज के इलाकों तक सुलभ हो गया। साथ ही, समाज सुधार आंदोलनों और सरकारी प्रयासों से बढ़ती साक्षरता ने अखबारों के लिए एक नया और जागरूक पाठक वर्ग तैयार किया। इन संयुक्त परिवर्तनों ने सूचनाओं को अभिजात वर्ग से निकालकर आम जनता तक पहुँचाया।

99. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
'ईनाडु' समाचार पत्र ने अपनी लोकप्रियता बढ़ाने के लिए 'ज़िला दैनिक' की क्रांतिकारी अवधारणा पेश की। इसमें प्रत्येक ज़िले के लिए विशेष लघु पत्रक शामिल किए जाते थे, जो पूरी तरह स्थानीय समाचारों और विज्ञापनों पर केंद्रित होते थे। पाठकों को अपने पड़ोस की घटनाओं और स्थानीय बाज़ार की जानकारियाँ मिलने लगीं, जो किसी राष्ट्रीय या राज्य-स्तरीय अखबार में संभव नहीं था। इस गहरी स्थानीय पैठ और सूक्ष्म विज्ञापनों ने अखबार को पाठकों की दैनिक आवश्यकता बना दिया, जिससे इसकी प्रसार संख्या में भारी उछाल आया।

100. (D) क्योंकि इसमें विशाल पूँजी और औपचारिक संगठन चाहिए
मास मीडिया का संचालन व्यक्तिगत स्तर पर कठिन होता है क्योंकि इसमें अत्याधुनिक तकनीक, विशाल आधारभूत संरचना और भारी वित्तीय निवेश की आवश्यकता होती है। समाचार पत्र छापने या चैनल चलाने के लिए सैकड़ों पेशेवरों का एक औपचारिक संगठन और करोड़ों की पूँजी चाहिए। इसी कारण या तो सरकार (राज्य) इसे जनहित और नियंत्रण के लिए चलाती है, या निजी कंपनियाँ (बाज़ार) इसे लाभ के उद्देश्य से संचालित करती हैं। पूँजी की सघनता ही मीडिया के स्वामित्व और स्वरूप को निर्धारित करती है।

101. (C) 1991 के उदारीकरण के बाद
भारत में टेलीविज़न चैनलों की संख्या में वास्तविक विस्फोट 1991 की नई आर्थिक नीति और बाज़ार के उदारीकरण के बाद हुआ। सरकार ने विदेशी निवेश और निजी चैनलों को प्रसारण की अनुमति दी। इसके परिणामस्वरूप ज़ी टीवी, स्टार टीवी और सोनी जैसे निजी चैनलों ने भारतीय बाज़ार में प्रवेश किया। इसने दूरदर्शन के एकाधिकार का अंत कर दिया और दर्शकों को सैकड़ों राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय चैनलों के विकल्प दिए, जिससे मनोरंजन और सूचना उद्योग की पूरी तस्वीर बदल गई।

102. (B) राजनीतिक समाचार बुलेटिन
भारत सरकार की नीति के अनुसार, वर्तमान में निजी एफ.एम. रेडियो चैनलों को स्वयं के राजनीतिक समाचार बुलेटिन तैयार करने और प्रसारित करने की अनुमति नहीं है। वे केवल ऑल इंडिया रेडियो के समाचारों का यथावत प्रसारण कर सकते हैं। इस प्रतिबंध के कारण निजी रेडियो स्टेशनों ने अपनी सामग्री को मुख्य रूप से संगीत, मनोरंजन, स्थानीय सूचनाओं और सामाजिक विज्ञापनों तक सीमित रखा है। यह नीति सूचना के प्रवाह पर नियंत्रण और रेडियो को मुख्य रूप से एक मनोरंजन माध्यम बनाए रखने के उद्देश्य से है।

यह मुख्य रूप से समाज सेवा, राष्ट्रवाद और जनता की आवाज़ उठाने के सेवा भाव से प्रेरित था। हालांकि, समय बीतने के साथ और आधुनिक पत्रकारिता की बढ़ती लागतों और प्रतिस्पर्धा के कारण, यह एक पूर्णतः संगठित और व्यावसायिक व्यापारी उद्यम के रूप में रूपांतरित हो गया। यह बदलाव आदर्शवाद और व्यावसायिक व्यावहारिकता के बीच के संतुलन को दर्शाता है जो आज के सभी बड़े मीडिया घरानों की पहचान है।

142. (B) P-3, Q-1, R-2, S-4
भारतीय जनसंचार की विकास यात्रा विभिन्न दशकों में फैली हुई है। 1960 के दशक में ट्रांजिस्टर क्रांति ने रेडियो को घर-घर पहुँचाया। 1990 के दशक में उपग्रह टीवी के आगमन ने केबल क्रांति की शुरुआत की। 1980 के दशक में 'हम लोग' जैसे धारावाहिकों ने सोप ओपेरा का युग शुरु किया। अंततः, 2000 के दशक में निजी एफएम रेडियो की शुरुआत ने मनोरंजन के क्षेत्र में फिर से रेडियो को लोकप्रिय बनाया। यह कालक्रम तकनीक और सामग्री के निरंतर विकास और समाज पर उनके बदलते प्रभावों को स्पष्ट करता है।

143. (A) संवाद-कौमुदी और मिरात-उल-अखबार
भारत में राष्ट्रवादी और लोकतांत्रिक पत्रकारिता का श्रेय राजा राममोहन राय को जाता है। उनके द्वारा प्रकाशित 'संवाद-कौमुदी' और 'मिरात-उल-अखबार' भारत के पहले ऐसे प्रकाशन थे जिन्होंने तर्क, न्याय और सामाजिक समानता के सिद्धांतों पर ज़ोर दिया। इन पत्रों ने न केवल धार्मिक अंधविश्वासों पर प्रहार किया, बल्कि औपनिवेशिक प्रशासन के प्रति एक आलोचनात्मक और जागरूक दृष्टिकोण भी विकसित किया। ये प्रकाशन भारतीय प्रेस के उस गौरवशाली इतिहास की नींव हैं जिसने आगे चलकर स्वतंत्रता आंदोलन को वैचारिक शक्ति प्रदान की।

144. (B) अंग्रेजी समाचार पत्रों की बढ़ती लोकप्रियता
भारतीय भाषाई समाचार पत्रों की असाधारण वृद्धि के पीछे कई कारण हैं, जैसे बढ़ती साक्षरता, शहरों की ओर प्रवसन और स्थानीय खबरों के प्रति लोगों का बढ़ता लगाव। हालाँकि, अंग्रेजी समाचार पत्रों की लोकप्रियता इस वृद्धि का कारण नहीं है; बल्कि भाषाई प्रेस ने अंग्रेजी प्रेस के प्रभुत्व को चुनौती देते हुए अपनी स्वतंत्र पहचान बनाई है। भाषाई अखबारों ने उन पाठकों तक पहुँच बनाई है जो अपनी मातृभाषा में जानकारी प्राप्त करना पसंद करते हैं, जिससे उनका प्रसार अंग्रेजी अखबारों की तुलना में बहुत तेज़ी से हुआ है।

145. (B) 1959
भारत में टेलीविज़न की यात्रा 15 सितंबर, 1959 को दिल्ली में एक प्रायोगिक आधार पर शुरु हुई थी। यूनेस्को की सहायता से शुरु किए गए इस उपक्रम का प्रारंभिक उद्देश्य मुख्य रूप से शैक्षिक और सामुदायिक विकास था। सप्ताह में केवल दो दिन के लिए सीमित समय हेतु कार्यक्रमों का प्रसारण किया जाता था, जिन्हें दिल्ली के आसपास के कुछ चुनिंदा सामुदायिक केंद्रों पर लगे टीवी सेटों पर देखा जा सकता था। इसी छोटे प्रयास ने भारत में भविष्य की विशाल प्रसारण क्रांति की आधारशिला रखी थी।

146. (A) फरदूनजी मुर्जबान
फरदूनजी मुर्जबान को मुंबई में गुजराती प्रेस का पितामह माना जाता है। उन्होंने ही 1822 में 'बॉम्बे समाचार' की शुरुआत की थी, जो आज भी प्रकाशित होने वाला भारत का सबसे पुराना निरंतर चलने वाला समाचार पत्र है। मुर्जबान के इस प्रयास ने न केवल गुजराती भाषी समुदाय को सूचनाओं का एक मंच प्रदान किया, बल्कि इसने भारत में भाषाई पत्रकारिता के व्यावसायिक और सामाजिक महत्व को भी स्थापित किया। यह प्रकाशन भारतीय प्रेस की जीवंतता और ऐतिहासिक निरंतरता का एक अनूठा और अत्यंत प्रभावशाली प्रतीक है।

147. (A) 2, 1, 3, 4
भारतीय टेलीविज़न के विकास का क्रम इसकी तकनीकी और सांस्कृतिक प्रगति को दर्शाता है। सर्वप्रथम 1975-76 में शैक्षिक उपग्रह प्रयोग (SITE) हुआ। इसके बाद 1980 के दशक की शुरुआत में वी.सी.आर. लोकप्रिय हुआ, जिसने दर्शकों को पसंद की फिल्में देखने की सुविधा दी। 1984 में भारत का पहला सोप ओपेरा 'हम लोग' प्रसारित हुआ। अंततः, 1990 के दशक की शुरुआत में निजी उपग्रह चैनलों के आगमन ने प्रसारण क्षेत्र को पूरी तरह बदल दिया। यह क्रम सरकारी नियंत्रण से निजी मनोरंजन की ओर संक्रमण को स्पष्ट करता है।

148. (D) क्योंकि वे एक साथ बहुत बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँचते हैं।
जनसंचार के साधनों को 'मास मीडिया' इसलिए कहा जाता है क्योंकि वे एक ही समय में एक विशाल और विविधतापूर्ण जनसमूह (मास) तक सूचना, शिक्षा और मनोरंजन पहुँचाने की क्षमता रखते हैं। 'मास' का अर्थ है बहुत बड़ी संख्या में लोग, और 'मीडिया' का अर्थ है माध्यम। चाहे वह समाचार पत्र हो, रेडियो हो या टेलीविज़न, इनकी पहुँच भौगोलिक सीमाओं को पार करते हुए लाखों-करोड़ों लोगों तक होती है। यही व्यापकता और सार्वजनिक स्वरूप उन्हें व्यक्तिगत संचार के साधनों से अलग बनाता है।

149. (C) गंभीर राजनीतिक/आर्थिक मुद्दों की उपेक्षा
चौबीसों घंटे चलने वाले समाचार चैनलों की तात्कालिकता और 'ब्रेकिंग न्यूज़' की होड़ ने एक गंभीर चिंता पैदा कर दी है। व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा के कारण चैनल अक्सर सनसनीखेज खबरों और उथले मनोरंजन को प्राथमिकता देते हैं। इसके परिणामस्वरूप, समाज के गहरे और महत्वपूर्ण राजनीतिक, आर्थिक तथा सामाजिक मुद्दों की उपेक्षा होने लगती है जिन पर गहन विश्लेषण और समय की आवश्यकता होती है। समाचारों का यह 'वस्तुकरण' जनहित के बजाय टीआरपी और विज्ञापन राजस्व से संचालित होने लगा है, जो लोकतंत्र के लिए अत्यंत चिंताजनक है।

150. (B) यह परस्पर प्रभावी द्वंद्वात्मक संबंध है
मास मीडिया और समाज के बीच का संबंध एकतरफा नहीं है, बल्कि यह एक द्वंद्वात्मक और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। मीडिया समाज में व्याप्त मूल्यों, संस्कृति और राजनीति से प्रभावित होकर अपनी सामग्री तैयार करता है, और बदले में, यही सामग्री समाज की सोच, व्यवहार और जनमत को आकार

जिससे सूचनाओं का प्रवाह सीमाओं से परे और अत्यंत तीव्र हो गया है।

113. (B) मराठी
'केसरी' समाचार पत्र की स्थापना बाल गंगाधर तिलक द्वारा 1881 में की गई थी और इसकी भाषा मराठी थी। इस पत्र ने महाराष्ट्र में राष्ट्रवादी चेतना जगाने और औपनिवेशिक सरकार की नीतियों की आलोचना करने में ऐतिहासिक भूमिका निभाई। तिलक ने मराठी भाषा का चुनाव इसलिए किया ताकि वे आम जनता के साथ उनकी अपनी भाषा में सीधा संवाद कर सकें। 'केसरी' के तीखे लेखों के कारण तिलक को कई बार जेल भी जाना पड़ा, लेकिन यह पत्र आंदोलन का प्रखर स्वर बना रहा।

114. (A) नगरीय उपभोक्ता वर्ग हेतु मनोरंजन कार्यक्रमों की वृद्धि
टेलीविज़न के वाणिज्यीकरण और विज्ञापनों की बढ़ती भूमिका ने कार्यक्रमों की प्रकृति को बदल दिया है। विज्ञापनदाता मुख्य रूप से उस वर्ग को लक्षित करते हैं जिसके पास क्रय शक्ति है, यानी शहरी मध्यवर्ग। इसके परिणामस्वरूप, चैनलों पर अब ऐसे मनोरंजन कार्यक्रमों और धारावाहिकों की भरमार है जो नगरीय जीवनशैली और उपभोक्ता संस्कृति को बढ़ावा देते हैं। इससे ग्रामीण विषयों और शैक्षिक कार्यक्रमों की उपेक्षा हुई है क्योंकि वे विज्ञापनों के लिए व्यावसायिक रूप से आकर्षक नहीं माने जाते।

115. (C) रेडियो जॉकी
फ़िल्म 'लगे रहो मुन्नाभाई' में मुख्य महिला पात्र एक रेडियो जॉकी की भूमिका में है। यह फ़िल्म आधुनिक दौर में रेडियो की पुनर्जीवित लोकप्रियता और इसकी सामाजिक प्रभावशीलता को रेखांकित करती है। फिल्म में रेडियो का उपयोग गांधीवादी मूल्यों को नई पीढ़ी तक पहुँचाने और लोगों की व्यक्तिगत समस्याओं का समाधान खोजने के एक जीवंत मंच के रूप में किया गया है। यह दर्शाता है कि कैसे रेडियो अपनी सुलभता और संवाद की अनौपचारिक शैली के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव ला सकता है।

116. (D) 1980 के दशक में
'हम लोग' और 'बुनियाद' जैसे प्रतिष्ठित सोप ओपेरा का प्रसारण 1980 के दशक में हुआ। यह भारतीय टेलीविज़न का स्वर्ण युग माना जाता है, जब दूरदर्शन ने मनोरंजन और सामाजिक संदेशों के बीच संतुलन बनाने की कोशिश की। 'हम लोग' ने 1984-85 में और 'बुनियाद' ने 1986 में पूरे देश को टीवी के सामने बांधे रखा। इन धारावाहिकों ने मध्यवर्गीय परिवारों की कहानियों और ऐतिहासिक विभाजन के दर्द को जीवंत किया, जिससे वे आज भी जनमानस की यादों में बसे हुए हैं।

117. (C) प्रसारण से दूरदर्शन को अत्यधिक विज्ञापन राजस्व मिला
'रामायण' और 'महाभारत' जैसे महाकाव्य धारावाहिकों के प्रसारण ने दूरदर्शन की आर्थिक स्थिति को पूरी तरह बदल दिया। इन कार्यक्रमों की अभूतपूर्व लोकप्रियता ने देश के लगभग हर टीवी वाले घर को अपनी ओर खींचा। इस विशाल दर्शक वर्ग को देखते हुए बड़ी कंपनियों ने अपने विज्ञापनों के लिए दूरदर्शन को भारी राशि दी। इस विज्ञापन राजस्व ने दूरदर्शन को एक आत्मनिर्भर और व्यावसायिक रूप से लाभदायक संस्था बनाने में मदद की। इसने दिखाया कि कैसे धार्मिक विषय आर्थिक अवसर पैदा कर सकते हैं।

118. (B) 2,80,000
स्वतंत्रता के समय, 1947 में, भारत की लगभग 35 करोड़ की विशाल जनसंख्या के लिए रेडियो रिसीवर सेटों की संख्या अत्यंत कम थी। आँकड़ों के अनुसार, उस समय पूरे देश में केवल 2,80,000 रेडियो सेट उपलब्ध थे। यह दर्शाता है कि रेडियो एक दुर्लभ और महँगी वस्तु थी, जो समाज के केवल एक बहुत छोटे और समृद्ध वर्ग तक ही सीमित थी। अधिकांश जनता के लिए रेडियो की आवाज़ अभी भी दूर का सपना थी, जिसे स्वतंत्र भारत ने बाद में सुलभ बनाया।

119. (D) विकास पर चर्चाएँ
आकाशवाणी का मुख्य उद्देश्य केवल समाचार देना नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण में योगदान देना था। इसलिए, इसके कार्यक्रमों में समाचारों के साथ-साथ विकासपरक विषयों पर चर्चाओं को विशेष महत्व दिया जाता था। इनमें कृषि सुधार, स्वास्थ्य सेवाएँ, पंचवर्षीय योजनाएँ और सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन जैसे विषय शामिल थे। विशेषज्ञों के माध्यम से सरकार की कल्याणकारी योजनाओं को आम जनता तक पहुँचाना और उन्हें राष्ट्रीय प्रगति का हिस्सा बनाना रेडियो की प्राथमिकता थी।

120. (A) पत्रकारिता एवं चलचित्र समालोचना
अमिता राय मलिक भारत की एक अग्रणी और प्रतिष्ठित महिला पत्रकार थीं। उन्होंने अपनी करियर की शुरुआत रेडियो से की और बाद में पत्रकारिता और चलचित्र समालोचना के क्षेत्र में एक विशिष्ट स्थान बनाया। वे अपनी निष्पक्ष राय और गहन विश्लेषण के लिए जानी जाती थीं। उनकी उपलब्धियाँ इस बात का प्रमाण हैं कि कैसे भारतीय महिलाओं ने मीडिया के क्षेत्र में अपनी पहचान बनाई और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण पेश किया, जो आज भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

121. (C) मीडिया का केवल एक सरकारी चैनल तक सीमित रहना
भूमंडलीकरण के बाद भारतीय मीडिया का परिदृश्य पूरी तरह बदल गया है। अब मीडिया केवल एक सरकारी चैनल तक सीमित नहीं है, बल्कि सैकड़ों निजी और अंतरराष्ट्रीय चैनल उपलब्ध हैं। 24 घंटे चलने वाले समाचार चैनल, क्षेत्रीय भाषाओं में चैनलों की भरमार और रिएलिटी शो की लोकप्रियता इस नए युग की पहचान हैं। सरकारी नियंत्रण अब प्रतिस्पर्धा और बाज़ार की ताकतों के सामने गौण हो गया है, जिससे दर्शकों के पास अब सूचना और मनोरंजन के असीमित विकल्प मौजूद हैं।

122. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
भूमंडलीकरण के कारण समाचार पत्र अब केवल सूचना का माध्यम नहीं रहे, बल्कि वे एक उपभोक्ता वस्तु बन गए हैं। पाठकों को बनाए रखने और विज्ञापनों को आकर्षित करने के लिए उन्हें अब 'सूचनारंजन' या इनफोटेनमेंट का सहारा लेना पड़ता है। इसमें गंभीर समाचारों को मनोरंजक ढंग से पेश किया

आवश्यकताओं को समझा जा सके। इस 'प्री-लॉन्च' रणनीति और बड़े पैमाने पर प्रचार ने उन्हें स्थापित अखबारों को कड़ी टक्कर देने और पाठकों का एक नया वर्ग तैयार करने में मदद की। यह भारतीय प्रेस के आधुनिक और व्यावसायिक स्वरुप का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

84. (D) हिंदी
वर्ष 2019 के भारतीय पाठक सर्वेक्षण (IRS) के अनुसार, हिंदी भाषी समाचार पत्रों के पाठकों की संख्या में सबसे अधिक वृद्धि दर्ज की गई। इसका मुख्य कारण उत्तर भारत के हिंदी पट्टी वाले राज्यों में साक्षरता दर का बढ़ना और ग्रामीण क्षेत्रों में सूचना की बढ़ती भूख है। हिंदी प्रेस ने आधुनिक तकनीक और स्थानीय संस्करणों के माध्यम से इन नए पाठकों तक अपनी पहुँच बनाई है, जिससे विज्ञापनदाताओं के लिए यह एक अत्यंत आकर्षक और विशाल बाज़ार बन गया है।

85. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
भारतीय भाषाई समाचार पत्रों ने मुद्रण की अत्याधुनिक तकनीकों को अपनाया है, यह पूर्णतः सत्य है। हालाँकि, इसका उद्देश्य केवल उत्पादन लागत कम करना नहीं था, बल्कि सामग्री की दृश्य गुणवत्ता और रंगीन प्रस्तुति में सुधार करना भी था। बेहतर डिज़ाइन और स्पष्ट छपाई ने इन अखबारों को अंग्रेजी अखबारों के समकक्ष ला खड़ा किया है। यह तकनीकी प्रगति पाठकों को एक बेहतर अनुभव प्रदान करने और प्रतिस्पर्धी बाज़ार में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए की गई है।

86. (B) विभिन्न रुचियों के पाठकों को आकर्षित करने के लिए
आज के समाचार पत्र अपनी विषय-वस्तु में विविधता ला रहे हैं क्योंकि उन्हें एक व्यापक और विविध रुचि वाले पाठक वर्ग को संतुष्ट करना होता है। अब अखबारों में केवल राजनीति नहीं, बल्कि जीवनशैली, फैशन, ज्योतिष, स्वास्थ्य और प्रौद्योगिकी जैसे विषयों पर भी कहानियाँ होती हैं। इस रणनीति का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि परिवार के प्रत्येक सदस्य—चाहे वह बच्चा हो, युवा हो या वृद्ध—के लिए अखबार में कुछ न कुछ रुचिकर अवश्य हो, जिससे उनकी ग्राहक संख्या बनी रहे।

87. (D) खाड़ी युद्ध एवं स्टार टीवी का आगमन
भारत में 1991 के बाद गैर-सरकारी उपग्रह टेलीविज़न की बाढ़ आने के पीछे दो प्रमुख कारक थे। प्रथम, खाड़ी युद्ध की सजीव रिपोर्टिंग ने अंतरराष्ट्रीय चैनलों के प्रति आकर्षण पैदा किया। द्वितीय, स्टार टीवी के आगमन ने भारतीय दर्शकों को विदेशी और आधुनिक कार्यक्रमों का नया अनुभव दिया। उदारीकरण की नीति के कारण सरकार ने भी इन निजी और विदेशी चैनलों के लिए द्वार खोल दिए, जिससे दूरदर्शन के एकाधिकार का अंत हुआ और एक प्रतिस्पर्धी मीडिया बाज़ार का उदय हुआ।

88. (A) वे अपार्टमेंट भवनों में तार लगाकर फ़िल्में प्रसारित करते थे
वर्ष 1984 के आसपास मुंबई और अहमदाबाद जैसे शहरों में केबल ऑपरेटरों ने एक अनौपचारिक मनोरंजन क्रांति की शुरुआत की। वे ऊंची इमारतों और अपार्टमेंट परिसरों में तार बिछाकर वी.सी.आर. के माध्यम से लोकप्रिय हिंदी और अंग्रेजी फिल्में प्रसारित करते थे। इसके लिए वे निवासियों से मासिक शुल्क लेते थे। यह दूरदर्शन से ऊब चुके दर्शकों के लिए एक नया और रोमांचक विकल्प था। इसी ज़मीनी शुरुआत ने आगे चलकर भारत में संगठित केबल और उपग्रह उद्योग का आधार तैयार किया।

89. (C) भारतीय संस्कृति एवं युवाओं पर पड़ने वाले प्रभाव की
भारत में विदेशी उपग्रह चैनलों के प्रवेश पर समाज के एक वर्ग में गहरी चिंता थी। आलोचकों का मानना था कि इन चैनलों पर दिखाए जाने वाले पश्चिमी कार्यक्रम और जीवनशैली भारतीय संस्कृति, मूल्यों और परंपराओं को नष्ट कर सकते हैं। विशेषकर युवाओं पर इसके पड़ने वाले प्रभाव को लेकर बहस छिड़ गई थी कि क्या यह 'सांस्कृतिक साम्राज्यवाद' का एक रुप है। हालाँकि, समय के साथ इन चैनलों के भारतीयकरण और विविवीकरण ने इन चिंताओं को कुछ हद तक शांत कर दिया।

90. (A) समाचारों में अब अधिक तात्कालिकता एवं आत्मीयता आ गई है
आधुनिक समाचार चैनलों ने अपनी प्रस्तुति शैली को पारंपरिक और गंभीर के बजाय जीवंत और अनौपचारिक बना दिया है। एंकर अब दर्शकों से सीधे और सरल भाषा में संवाद करते हैं। इस बदलाव ने समाचारों में तात्कालिकता और एक प्रकार की आत्मीयता पैदा की है, जिससे आम दर्शक स्वयं को खबरों से अधिक जुड़ा हुआ महसूस करते हैं। हालांकि, इसके कारण कभी-कभी गंभीरता कम होने और सनसनीखेज होने की आलोचना भी होती है, लेकिन इससे समाचारों की पहुँच और दर्शक संख्या बढ़ी है।

91. (A) 4, 3, 2, 1
औपनिवेशिक भारत के प्रमुख समाचार पत्रों की स्थापना एक निश्चित ऐतिहासिक कालखंड को दर्शाती है। सर्वप्रथम राजा राममोहन राय ने 1821 में 'संवाद-कौमुदी' शुरु की। इसके बाद 1868 में 'दि मद्रास मेल' का प्रकाशन हुआ। 1875 में कोलकाता से 'दि स्टेट्समैन' की शुरुआत हुई और अंततः 1876 में लाहौर से 'दि सिविल एंड मिलिटरी गज़ट' आया। यह क्रम दिखाता है कि कैसे राष्ट्रवादी प्रेस के बाद धीरे-धीरे भारत के विभिन्न हिस्सों में अंग्रेजी और आधिकारिक प्रेस का विस्तार हुआ।

92. (B) राघव एफ.एम. मंसूरपुर
बिहार के वैशाली ज़िले के मंसूरपुर गाँव में राघव महतो ने 'राघव एफ.एम. मंसूरपुर' नाम से अपना स्थानीय रेडियो स्टेशन चलाया। मात्र 20 किलोमीटर की सीमा में प्रसारित होने वाला यह स्टेशन स्थानीय निवासियों के बीच इतना लोकप्रिय था कि लोग इसे अपनी समस्याओं और खुशियों को साझा करने का प्राथमिक मंच मानते थे। यद्यपि यह बिना आधिकारिक लाइसेंस के संचालित था, लेकिन इसने भारत में सामुदायिक रेडियो की शक्ति और स्थानीयता के महत्व का एक जीवंत उदाहरण पेश किया।

93. (C) दिन तंती
तमिलनाडु का प्रसिद्ध समाचार पत्र 'दिन तंती' अपनी विशिष्ट भाषाई शैली के लिए जाना जाता है। इसने प्रारंभ से ही शुद्ध या साहित्यिक तमिल के बजाय आम जनता द्वारा बोली जाने वाली

132. (D) संचार की प्रक्रिया पूरी तरह से व्यक्तिगत और निजी होती है

मास मीडिया की मुख्य विशेषता यह है कि यह सार्वजनिक संचार का माध्यम है, न कि व्यक्तिगत या निजी। यह एक साथ करोड़ों लोगों तक पहुँचता है और इसके लिए विशाल तकनीकी तथा संगठनात्मक ढांचे की आवश्यकता होती है। इसके संचालन में या तो सरकार का नियंत्रण होता है या बाज़ार की व्यावसायिक ताकतें सक्रिय होती हैं। इसके विपरीत, टेलीफ़ोन या निजी पत्र जैसे साधन व्यक्तिगत संचार के उदाहरण हैं। मास मीडिया का स्वरूप हमेशा सामूहिक और सार्वजनिक होता है, जो इसे व्यक्तिगत संवाद से अलग बनाता है।

133. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

वर्ष 1991 भारत के आर्थिक और मीडिया इतिहास का एक महत्वपूर्ण मोड़ था। सरकार द्वारा अपनाई गई उदारीकरण की नीति के तहत निजी और विदेशी कंपनियों के लिए बाज़ार खोल दिए गए। इसके परिणामस्वरूप टेलीविज़न के क्षेत्र में निजी उपग्रह चैनलों के आगमन का मार्ग प्रशस्त हुआ। दूरदर्शन का एकाधिकार समाप्त हो गया और ज़ी-टीवी जैसे चैनलों ने भारतीय घरों में प्रवेश किया। यह वृद्धि सीधे तौर पर सरकार की नीतिगत परिवर्तनों का परिणाम थी, जिसने भारत को वैश्विक संचार नेटवर्क का एक अभिन्न अंग बना दिया।

134. (B) सूचना और मनोरंजन का सम्मिश्रण प्रस्तुत करना

आज के प्रतिस्पर्धी दौर में समाचार पत्र पाठकों को आकर्षित करने के लिए 'सूचनारंजन' की रणनीति अपनाते हैं। वे जानते हैं कि केवल उबाऊ या गंभीर खबरें पाठकों को लंबे समय तक नहीं बांध सकतीं। इसलिए, वे सूचना के साथ-साथ भरपूर मनोरंजन, रंगीन चित्र, फिल्मी गपशप, खेल और जीवनशैली से जुड़ी सामग्री परोसते हैं। यह सम्मिश्रण विशेष रूप से युवा पीढ़ी को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है। इसका मुख्य उद्देश्य अखबार को एक आकर्षक व्यावसायिक उत्पाद बनाना है जो सूचना के साथ मनोरंजन भी करे।

135. (C) केवल 1, 2, 3, 4

भारत में केबल ऑपरेटर उद्योग का विकास अत्यंत तीव्र रहा है। इसकी शुरुआत अस्सी के दशक में वी.सी.आर. के माध्यम से हुई। 1984 में जहाँ केबल ऑपरेटरों की संख्या मात्र 100 थी, वहीं 1992 में यह बढ़कर 15,000 और 1999 तक लगभग 60,000 हो गई। यह उद्योग केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित नहीं था, बल्कि इसकी मुख्य संवृद्धि शहरी अपार्टमेंटों और मध्यम वर्गीय कॉलोनियों में हुई। इस अनौपचारिक विस्तार ने ही आगे चलकर भारत में उपग्रह टेलीविज़न की सफलता के लिए एक मजबूत वितरण नेटवर्क तैयार किया।

136. (A) जवाहरलाल नेहरू

भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने स्वतंत्र भारत में मीडिया की भूमिका को अत्यंत महत्वपूर्ण माना। उन्होंने मीडिया से 'लोकतंत्र के पहरेदार' के रूप में कार्य करने का आग्रह किया। नेहरू का मानना था कि एक जीवंत लोकतंत्र के लिए स्वतंत्र और निष्पक्ष प्रेस अनिवार्य है, जो सरकार की कमियों को उजागर करे और जनता को जागरूक रखे। उन्होंने अपेक्षा की कि मीडिया राष्ट्रीय विकास की भावना को बढ़ावा देने के साथ-साथ सामाजिक सुधारों और लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण में अपनी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करेगा।

137. (C) धार्मिक पुस्तकें

प्रारंभिक मुद्रणालय के दौर में पुस्तकों की छपाई का मुख्य उद्देश्य ज्ञान का प्रसार और धर्म का प्रचार करना था। पंद्रहवीं शताब्दी में गुटेनबर्ग द्वारा प्रेस के आविष्कार के बाद, सबसे पहले छापी गई पुस्तकों में बाइबल जैसे धार्मिक ग्रंथ प्रमुख थे। उस समय चर्च और धार्मिक संस्थाओं का समाज पर गहरा प्रभाव था, इसलिए वे मुद्रण तकनीक का उपयोग अपने सिद्धांतों को जनसामान्य तक पहुँचाने के लिए करना चाहते थे। कालांतर में ही छपाई का दायरा विज्ञान, साहित्य और अन्य धर्मनिरपेक्ष विषयों तक विस्तृत हो पाया।

138. (A) प्रसिद्ध पत्रकार अमिता राय मलिक

प्रसिद्ध पत्रकार अमिता राय मलिक ने अपने करियर की उल्लेखनीय शुरुआत 1944 में ऑल इंडिया रेडियो, लखनऊ में एक डिस्क जॉकी (DJ) के रूप में की थी। उस समय मीडिया के क्षेत्र में महिलाओं की उपस्थिति अत्यंत सीमित थी, और उनका यह कदम साहसी और क्रांतिकारी था। बाद में उन्होंने खुद को एक कुशल पत्रकार और फिल्म समीक्षक के रूप में स्थापित किया। उनकी सफलता ने भारतीय मास मीडिया के इतिहास में महिलाओं के बढ़ते प्रभाव और उनके बहुआयामी योगदान को रेखांकित किया, जो आज भी प्रेरणादायक है।

139. (D) राजधानियों और सीमावर्ती क्षेत्रों में

स्वतंत्रता के पश्चात, भारत सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा और एकता को प्राथमिकता देते हुए आकाशवाणी के विस्तार की योजना बनाई। रेडियो स्टेशनों की स्थापना के लिए सबसे पहले विभिन्न राज्यों की राजधानियों और संवेदनशील सीमावर्ती क्षेत्रों को चुना गया। राजधानियों से प्रसारण के माध्यम से प्रशासन और जनता के बीच सीधा संवाद स्थापित करना लक्ष्य था, जबकि सीमावर्ती क्षेत्रों में रेडियो का उपयोग राष्ट्रीय सीमाओं की रक्षा और पड़ोसी देशों के दुष्प्रचार का जवाब देने के लिए सूचना के एक सामरिक हथियार के रूप में किया गया था।

140. (B) लगभग 5 करोड़

'हम लोग' धारावाहिक ने अस्सी के दशक में लोकप्रियता के नए कीर्तिमान स्थापित किए थे। अनुमानों के अनुसार, इसे औसतन लगभग 5 करोड़ दर्शक प्रति एपिसोड देखा करते थे। उस समय भारत में टेलीविज़न सेटों की संख्या सीमित होने के बावजूद, लोग पड़ोसियों के घर या सार्वजनिक स्थानों पर इकट्ठा होकर इस शो को देखते थे। इस विशाल दर्शक संख्या ने न केवल धारावाहिक की सफलता को प्रमाणित किया, बल्कि यह भी दिखाया कि कैसे एक अच्छी कहानी पूरे देश को एक सूत्र में बांध सकती है।

141. (C) सेवा भाव से व्यापारी उद्यम में रूपांतरित हुआ

'दि हिंदू' समाचार पत्र का इतिहास भारतीय प्रेस के बदलते स्वरूप का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। अपनी स्थापना के समय,

103. (D) ज़िला और आवश्यकतानुसार ब्लॉक संस्करणों के द्वारा
'मलयाली मनोरमा' और 'ईनाडु' जैसे क्षेत्रीय समाचार पत्रों ने विकेंद्रीकरण की रणनीति अपनाई। उन्होंने महसूस किया कि पाठक अपने स्थानीय परिवेश की खबरों में अधिक रुचि रखते हैं। इसलिए, उन्होंने राज्य-स्तरीय संस्करणों के अलावा ज़िला और यहाँ तक कि विशिष्ट ब्लॉकों के लिए अलग-अलग संस्करण निकालना शुरु किया। आधुनिक मुद्रण केंद्रों और डिजिटल नेटवर्क ने उन्हें ज़मीनी स्तर की सूचनाओं को तेज़ी से प्रकाशित करने में सक्षम बनाया। इस स्थानीय जुड़ाव ने उन्हें भाषाई पत्रकारिता में अत्यंत प्रभावशाली और सफल बनाया।

104. (A) वे अधिक संस्करण एवं नवीनतम समाचार देने में सक्षम हुए
समाचार पत्र प्रबंधन के लिए तकनीकी बदलाव एक वरदान साबित हुए हैं। आधुनिक सॉफ्टवेयर और डिजिटल नेटवर्क की मदद से अब वे कम समय में अखबार के कई क्षेत्रीय संस्करण तैयार कर सकते हैं। ताज़ा खबरों को छपाई के अंतिम समय तक शामिल करना अब संभव हो गया है। इससे अखबारों की प्रासंगिकता और बाज़ार में उनकी प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ी है। तकनीक ने उत्पादन लागत को नियंत्रित करने और पाठकों तक अधिक सटीक और ताज़ा जानकारी पहुँचाने की प्रक्रिया को सरल और प्रभावी बना दिया है।

105. (C) 19 करोड़
वर्ष 2005 तक भारत में उपग्रह टेलीविज़न की पहुँच में तीव्र वृद्धि हुई थी। आँकड़ों के अनुसार, उस समय लगभग 19 करोड़ लोग प्रति सप्ताह सैटेलाइट टीवी देखा करते थे। यह संख्या भारतीय बाज़ार की विशालता और उपग्रह चैनलों की बढ़ती लोकप्रियता को दर्शाती है। केबल नेटवर्क के विस्तार और शहरीकरण ने इस वृद्धि में मुख्य भूमिका निभाई। दर्शकों की इस बड़ी संख्या ने भारत को वैश्विक मीडिया कंपनियों के लिए एक अत्यंत महत्वपूर्ण और आकर्षक गंतव्य बना दिया।

106. (A) साप्ताहिक 10 हिंदी फ़िल्में प्रसारित करना
जब स्टार टीवी ने भारत में अपनी सेवाएँ शुरु कीं, तो उसे भारतीय दर्शकों की पसंद को समझना था। प्रारंभ में पूरी तरह अंग्रेजी चैनल होने के बावजूद, लोकप्रियता बढ़ाने के लिए उन्होंने एक चतुर रणनीति अपनाई। उन्होंने सप्ताह में लगभग 10 लोकप्रिय हिंदी फिल्में प्रसारित करना शुरु किया। इस कदम ने उन दर्शकों को भी चैनल की ओर आकर्षित किया जो अंग्रेजी कार्यक्रमों में रुचि नहीं रखते थे। फिल्मों के माध्यम से मिली इस प्रारंभिक सफलता ने उन्हें भारतीय बाज़ार में पैर जमाने में मदद की।

107. (D) 1, 2, 3 और 4
मास मीडिया की प्रकृति बहुआयामी है। यह जनसंपर्क का एक सशक्त साधन है जो एक ही समय में लाखों लोगों तक सूचना पहुँचाने की क्षमता रखता है। इसके सफल संचालन के लिए उन्नत तकनीक, विशाल पूँजी और एक औपचारिक संगठनात्मक ढांचे की आवश्यकता होती है। साथ ही, मीडिया की विषय-वस्तु कभी भी शून्य में विकसित नहीं होती; यह उस समाज की संस्कृति, राजनीति और मूल्यों से गहराई से प्रभावित और नियंत्रित होती है जहाँ वह कार्य करता है।

108. (B) यह पूर्ण रूप से एक हिंदी चैनल बन गया
वर्ष 1999 स्टार प्लस चैनल के इतिहास में एक निर्णायक मोड़ था। अपनी रेटिंग बढ़ाने और भारतीय बाज़ार पर वर्चस्व स्थापित करने के लिए, चैनल ने अपनी पूरी पहचान बदल दी और एक पूर्ण हिंदी मनोरंजन चैनल के रूप में पुनर्गठित हुआ। उन्होंने विदेशी कार्यक्रमों के बजाय भारतीय दर्शकों की पसंद के अनुसार 'सास-बहू' धारावाहिक और रिएलिटी शो विकसित किए। इस रणनीतिक परिवर्तन ने उन्हें भारत का नंबर एक मनोरंजन चैनल बना दिया और उपग्रह टेलीविज़न के परिदृश्य को पूरी तरह बदल दिया।

109. (A) P-3, Q-1, R-2, S-4
भारतीय भाषाओं के समाचार पत्रों का इतिहास उनकी क्षेत्रीय जड़ों से जुड़ा है। 'संवाद-कौमुदी' बंगला भाषा में सामाजिक सुधारों का स्वर बना। 'बॉम्बे समाचार' ने गुजराती प्रेस की मजबूत नींव रखी। 'केसरी' मराठी भाषा में राष्ट्रवादी विचारों के प्रचार का मुख्य साधन था। 'मातृभूमि' केरल के सामाजिक और राजनीतिक जीवन में मलयालम भाषा का एक प्रमुख स्तंभ रहा है। यह भाषाई विविधता भारतीय मीडिया की सबसे बड़ी शक्ति है जिसने राष्ट्रवाद को ज़मीनी स्तर पर मजबूत किया।

110. (D) हम लोग
प्रसिद्ध धारावाहिक 'हम लोग' की एक अनूठी विशेषता इसके अंत में पूछे जाने वाले विचारोत्तेजक प्रश्न थे। 'बसेसर राम' जैसे पात्रों के माध्यम से शराब की लत और उसके पारिवारिक प्रभावों को दर्शाया गया था। प्रत्येक एपिसोड के अंत में दर्शकों से उनके विचार माँगे जाते थे कि समाज में ऐसी समस्याएँ क्यों मौजूद हैं। इस संवादपरक शैली ने दर्शकों को न केवल मनोरंजन दिया, बल्कि उन्हें सामाजिक बुराइयों पर गंभीरता से सोचने और समाज सुधार की प्रक्रिया में सहभागी बनने के लिए प्रेरित किया।

111. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
उन्नीस सौ साठ के दशक में ट्रांजिस्टर क्रांति ने भारत में रेडियो की पहुँच को लोकतांत्रिक बना दिया। पहले के रेडियो सेट महँगे थे और बिजली पर निर्भर थे, जिससे वे केवल संपन्न वर्ग तक सीमित थे। ट्रांजिस्टर तकनीक के आने से वे सस्ते, छोटे और बैटरी से चलने वाले हो गए। अब किसान खेतों में और मजदूर अपने कार्यस्थल पर रेडियो ले जा सकते थे। इस सुगमता और पोर्टेबिलिटी ने रेडियो को भारत के सुदूर ग्रामीण अंचलों तक पहुँचाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

112. (A) 2 और 3
भूमंडलीकरण के प्रभावस्वरूप भारतीय मीडिया परिदृश्य में दो महत्वपूर्ण परिवर्तन आए। प्रथम, डिजिटल तकनीक के माध्यम से मीडिया के विभिन्न रूपों जैसे प्रिंट, ऑडियो और वीडियो का आपस में विलय हो गया। द्वितीय, मीडिया अब केवल राष्ट्रीय सीमाओं तक सीमित नहीं रहा; राष्ट्रीय बाज़ारों का स्थान एक विशाल और तरल वैश्विक बाज़ार ने ले लिया है। मीडिया कंपनियाँ अब अंतरराष्ट्रीय स्तर पर सामग्री साझा करती हैं,

देती है। यह एक ऐसा चक्र है जहाँ दोनों एक-दूसरे को लगातार बदलते और प्रभावित करते रहते हैं। मीडिया समाज का दर्पण भी है और उसका निर्माता भी, जो सामाजिक परिवर्तन की दिशा निर्धारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

151. (B) क्योंकि उनकी पहुँच शिक्षित अभिजात वर्ग के बजाय आम जनता तक व्यापक थी।
भाषाई समाचार पत्रों ने अंग्रेजी प्रेस की सीमाओं को पार करते हुए सामान्य नागरिकों तक सूचना पहुँचाने का कार्य किया। अंग्रेजी पत्रकारिता मुख्य रूप से उच्च शिक्षित वर्ग तक सीमित थी, जबकि मराठी, बंगाली और हिंदी जैसे क्षेत्रीय प्रकाशनों ने राष्ट्रवादी विचारों और औपनिवेशिक आलोचना को दूर-दराज के क्षेत्रों और साधारण जनता के बीच सफलतापूर्वक लोकप्रिय बनाया और चेतना जागृत की।

152. (A) सामाजिक सुधार जैसे जातिगत भेदभाव का कड़ा विरोध और महिला शिक्षा का समर्थन।
भाषाई समाचार पत्रों ने राजनीतिक स्वतंत्रता प्राप्त करने के व्यापक लक्ष्यों के साथ-साथ समाज में व्याप्त विभिन्न कुरीतियों के विरुद्ध भी सक्रिय रूप से आवाज उठाई। इन प्रकाशनों ने जातिगत भेदभाव को समाप्त करने, महिला शिक्षा को प्रोत्साहित करने और बाल विवाह जैसी प्रथाओं पर रचनात्मक बहस के लिए एक महत्वपूर्ण लोकतांत्रिक मंच प्रदान करने में सफलता प्राप्त की जिससे सामाजिक जागरुकता का विस्तार हुआ।

153. (C) भाषाई प्रेस की आवाज़ को दबाना क्योंकि उसे राजद्रोही और खतरनाक माना जाता था।
ब्रिटिश सरकार क्षेत्रीय भाषाओं में छपने वाले समाचार पत्रों की बढ़ती लोकप्रियता और उनकी तीखी औपनिवेशिक आलोचना से सशंकित थी। इन्ही राष्ट्रवादी विचारों के प्रसार को रोकने और इन पत्रों को नियंत्रित करने हेतु वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट लागू किया गया था। सरकार इन प्रकाशनों को राजद्रोही मानती थी क्योंकि वे जनता को शासन के विरुद्ध संगठित कर रहे थे और राष्ट्रीयता बढ़ा रहे थे।

154. (D) साझा सांस्कृतिक और राजनीतिक आकांक्षाओं की एक मजबूत नींव को रखकर।
भाषाई प्रेस ने विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच एक एकीकृत पहचान स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। साझा राजनीतिक लक्ष्यों और सांस्कृतिक मूल्यों को निरंतर प्रसारित करके, इन पत्रों ने दूर-दराज के क्षेत्रों को एक सूत्र में पिरोया। इसने राष्ट्र को एक ऐसे समुदाय के रूप में प्रस्तुत किया जिसकी नींव समान संघर्षों और सामूहिक भविष्य की आकांक्षाओं पर आधारित थी जिससे राष्ट्रवाद गहरा हुआ।

155. (C) बहुआयामी, जिसमें राजनीतिक जागरण और सामाजिक सुधार के प्रयास दोनों शामिल थे।
औपनिवेशिक भारत में भाषाई प्रेस की भूमिका मात्र सूचना प्रदान करने तक सीमित नहीं थी बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक-राजनीतिक आंदोलन का अभिन्न अंग थी। इसने एक तरफ तो राष्ट्रवादी चेतना जगाकर राजनीतिक विमर्श को लोकतांत्रिक बनाया, वहीं दूसरी तरफ समाज सुधार के विभिन्न मुद्दों पर जनमत तैयार करके भारतीय समाज के आधुनिकीकरण और एकीकरण में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया जो काफी व्यापक था।

156. (B) राष्ट्र-निर्माण और सरकार के विकासात्मक एजेंडा को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना।
स्वतंत्रता प्राप्ति के उपरान्त भारत सरकार ने आकाशवाणी को केवल मनोरंजन के साधन के रूप में नहीं अपितु एक सशक्त विकासात्मक यंत्र के रूप में उपयोग किया। इसका मुख्य दायित्व एक विभाजित समाज को एकीकृत करना और वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देना था। रेडियो ने शिक्षा, स्वास्थ्य और कृषि जैसे क्षेत्रों में सरकारी नीतियों को प्रसारित करके आधुनिक राष्ट्र के निर्माण में महत्वपूर्ण सहायता की।

157. (D) क्षेत्रीय लोक संगीत, शास्त्रीय संगीत और देशभक्ति गीतों के विविध प्रसारण द्वारा।
आकाशवाणी ने भारत की विविधता को स्वीकार करते हुए विभिन्न क्षेत्रों की सांस्कृतिक विरासत को एक मंच पर लाने का प्रयास किया। क्षेत्रीय लोक संगीत और शास्त्रीय विधाओं के प्रसारण से विभिन्न समुदायों के मध्य परस्पर सम्मान और समझ विकसित हुई। देशभक्तिपूर्ण गीतों के निरंतर प्रसारण ने राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ़ किया और नागरिकों के बीच साझा भारतीय पहचान को सफलतापूर्वक स्थापित किया।

158. (A) रेडियो द्वारा सरकारी विकास नीतियों और प्रगतिशील आधुनिक विचारों का प्रसार।
रेडियो ने दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों और शहरों के बीच सूचना की खाई को पाटने का कार्य किया। इसे आधुनिकता की खिड़की माना गया क्योंकि इसके माध्यम से सरकारी नीतियों, वैज्ञानिक प्रगति और सामाजिक सुधारों के विचार उन क्षेत्रों तक पहुँचे जहाँ अन्य संचार माध्यमों की पहुँच नगण्य थी। रेडियो ने समाज को आधुनिक विश्व और नवीन विकासवादी विचारधाराओं से परिचित कराने में उल्लेखनीय सफलता पाई।

159. (C) सूचना प्रसार पर केंद्रीकृत नियंत्रण और इसे राष्ट्रीय लक्ष्यों के अनुकूल बनाना।
राज्य-नियंत्रित प्रसारण मॉडल का प्रमुख उद्देश्य सूचना प्रवाह पर पूर्ण नियंत्रण रखकर उसे राष्ट्र के व्यापक विकासात्मक लक्ष्यों से जोड़ना था। इस केंद्रीकृत व्यवस्था ने सरकार को अपनी प्राथमिकताओं जैसे परिवार नियोजन, शिक्षा और कृषि सुधारों को देशभर में एकसमान रूप से पहुँचाने की शक्ति दी। यह सुनिश्चित किया गया कि मीडिया की विषय-वस्तु राष्ट्रीय एकता और प्रगति के सरकारी उद्देश्यों के अनुरुप रहे।

160. (A) नई कृषि तकनीकों और वैज्ञानिक पद्धतियों के बारे में किसानों को शिक्षित करके।
आकाशवाणी ने 'कृषि दर्शन' जैसे विशेष कार्यक्रमों के माध्यम से ग्रामीण भारत में महत्वपूर्ण तकनीकी ज्ञान का प्रसार किया। इन कार्यक्रमों ने किसानों को उन्नत बीजों, आधुनिक उर्वरकों और नवीन सिंचाई विधियों के बारे में आवश्यक जानकारी प्रदान की। वैज्ञानिक पद्धतियों को सरल भाषा में समझाकर रेडियो ने हरित क्रांति के सफल क्रियान्वयन हेतु आवश्यक जागरूकता पैदा की, जिससे देश की खाद्य सुरक्षा निरंतर सुनिश्चित हो सकी।

161. (D) 1982 के एशियाई खेलों का रंगीन प्रसारण और राष्ट्रीय नेटवर्क का व्यापक विस्तार।
भारतीय टेलीविजन के इतिहास में 1980 का दशक एक क्रांतिकारी मोड़ था, जिसकी शुरुआत 1982 के एशियाई खेलों से हुई। रंगीन प्रसारण की तकनीक और राष्ट्रीय नेटवर्क के तीव्र विस्तार ने टेलीविजन को जन-जन तक पहुँचाया। इन घटनाओं ने दूरदर्शन की पहुँच और दृश्य गुणवत्ता को व्यापक रूप से सुधारा, जिससे दर्शकों के अनुभव में बदलाव आया और मनोरंजन के नए युग का प्रभावशाली सूत्रपात हुआ।

162. (B) ये मनोरंजन के माध्यम से सामाजिक संदेशों का प्रसार करते थे।
मनोरंजन-शिक्षा मॉडल का मूल उद्देश्य टेलीविजन कार्यक्रमों के माध्यम से दर्शकों का मनोरंजन करने के साथ-साथ उन्हें सामाजिक रूप से जागरूक बनाना था। 'हम लोग' जैसे धारावाहिकों ने पारिवारिक कहानियों के माध्यम से लैंगिक समानता और परिवार नियोजन जैसे गंभीर विषयों को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया। इस प्रकार, सूचना और सामाजिक सुधारों के संदेशों को मनोरंजन के साथ जोड़कर व्यापक जनता तक पहुँचाया गया।

163. (C) टेलीविजन का व्यावसायीकरण शुरु हुआ और एक नया बड़ा उपभोक्ता बाजार बना।
लोकप्रिय धारावाहिकों को निजी कंपनियों द्वारा प्रायोजित किए जाने से दूरदर्शन के ढाँचे में महत्वपूर्ण बदलाव आया। विज्ञापनों के प्रवेश ने न केवल राजस्व के नए स्रोत खोले, बल्कि भारतीय मध्य वर्ग में उपभोक्तावादी संस्कृति को भी प्रोत्साहित किया। विभिन्न उत्पादों के नियमित प्रदर्शन ने एक विशाल उपभोक्ता बाजार निर्मित किया, जिससे टेलीविजन एक विकासात्मक माध्यम से बदलकर एक शक्तिशाली व्यावसायिक मंच के रूप में उभरा।

164. (D) राज्य-प्रचारित मूल्यों का वाहक और उपभोक्तावादी आकांक्षाओं का निर्माता बनना।
अस्सी के दशक में टेलीविजन ने दो महत्वपूर्ण लक्ष्यों को एक साथ साधा। एक ओर, इसने सरकारी नीतियों और सामाजिक सुधारों जैसे राष्ट्रीय मूल्यों का निरंतर प्रचार किया। दूसरी ओर, विज्ञापनों और आधुनिक जीवनशैली के चित्रण के माध्यम से इसने मध्यम वर्ग में नई भौतिकवादी और उपभोक्तावादी इच्छाएँ जाग्रत कीं। इस प्रकार, टेलीविजन ने विकासवादी उद्देश्यों और बाजार की व्यावसायिक माँगों के बीच संतुलन बनाया।

165. (A) राज्य की नीतियों, जैसे परिवार नियोजन और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देने, के।
तत्कालीन सोप ओपेरा और धारावाहिकों में निहित सामाजिक संदेश पूरी तरह से सरकार के राष्ट्रीय विकास के एजेंडे से प्रेरित थे। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य समाज में सकारात्मक बदलाव लाना था, जिसके लिए परिवार नियोजन, साक्षरता और सांप्रदायिक सद्भाव जैसे विषयों को कथावस्तु का हिस्सा बनाया गया। यह दृष्टिकोण सुनिश्चित करता था कि मनोरंजन के साथ-साथ राज्य द्वारा निर्धारित सामाजिक प्राथमिकताओं का प्रचार हो।

166. (B) आर्थिक उदारीकरण की नीति और उपग्रह प्रसारण हेतु बाजार को खोलना।
1991 के बाद भारतीय मीडिया क्षेत्र में आया विशाल परिवर्तन आर्थिक सुधारों का प्रत्यक्ष परिणाम था। सरकार द्वारा विदेशी निवेश और निजी उपग्रह चैनलों के लिए प्रसारण के दरवाजे खोलने से दूरदर्शन का वर्षों पुराना वर्चस्व समाप्त हो गया। इस उदारीकरण ने वैश्विक मीडिया दिग्गजों को भारतीय बाजार में प्रवेश करने की सुविधा प्रदान की, जिससे सूचना और मनोरंजन के क्षेत्र में अभूतपूर्व विविधता आई।

167. (B) स्टार प्लस जैसे चैनलों का पूर्णतः हिंदी मनोरंजन चैनलों में परिवर्तित होना।
वैश्विक मीडिया संस्थानों ने भारतीय दर्शकों की पसंद को समझते हुए अपनी सामग्री में भाषाई और सांस्कृतिक अनुकूलन किया। स्टार प्लस जैसे चैनलों ने आरंभ में विदेशी सामग्री प्रसारित की, किंतु बाद में वे पूर्णतः हिंदी कार्यक्रमों पर केंद्रित हो गए। यह स्थानीयकरण की रणनीति थी जिसका उद्देश्य क्षेत्रीय संवेदनाओं और भाषा को अपनाकर भारतीय परिवारों के बीच अपनी पकड़ मजबूत करना और विज्ञापन बढ़ाना था।

168. (A) दूरदर्शन का एकाधिकार समाप्त हुआ और बाजार में तीव्र प्रतिस्पर्धा बढ़ गई।
पार-राष्ट्रीय निगमों के आगमन ने भारतीय टेलीविजन बाजार में विकल्पों की बाढ़ ला दी, जिससे सरकारी प्रसारक दूरदर्शन का एकाधिकार स्थायी रूप से समाप्त हो गया। निजी चैनलों ने आधुनिक तकनीक, नवीन प्रोग्रामिंग और आकर्षक प्रस्तुति के साथ दर्शकों को अपनी ओर आकर्षित किया। इस प्रतिस्पर्धा के कारण भारतीय मीडिया कंपनियों को भी अपनी उत्पादन गुणवत्ता और विपणन रणनीतियों में व्यापक सुधार करना पड़ा।

169. (C) इसने मीडिया स्वामित्व के संकेंद्रण को बढ़ाया जिससे बड़े मीडिया समूह उभरे।
उदारीकरण की प्रक्रिया के साथ मीडिया बाजार में बड़े कॉरपोरेट घरानों का प्रभुत्व स्थापित हुआ। स्वामित्व के संकेंद्रण के कारण कुछ शक्तिशाली मीडिया समूह उभरे जिन्होंने प्रिंट, टेलीविजन और डिजिटल जैसे विभिन्न प्लेटफार्मों पर अपना नियंत्रण बना लिया। इस रुझान ने छोटे स्वतंत्र मीडिया संस्थानों के लिए प्रतिस्पर्धा को कठिन बना दिया और मीडिया को एक बड़े रणनीतिक उद्योग के रूप में परिवर्तित कर दिया।

170. (D) वैश्विक पूंजी और स्थानीय सांस्कृतिक संवेदनाओं का एक जटिल अंतर्संबंध।
आधुनिक भारतीय मीडिया उद्योग अंतरराष्ट्रीय वित्तीय निवेश और भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों के मेल पर आधारित है। विदेशी पूँजी और वैश्विक मीडिया प्रारूपों ने स्थानीय भाषाओं और क्षेत्रीय परंपराओं के साथ सामंजस्य बिठाकर अपनी पैठ बनाई है। यह अंतर्संबंध दर्शाता है कि कैसे मीडिया बाजार ने लाभ कमाने के लिए वैश्विक मानकों को अपनाते हुए भारतीय दर्शकों की विशिष्ट सांस्कृतिक संवेदनाओं को प्राथमिकता दी है।

171. (C) सूचना और मनोरंजन का वह मिश्रण जो सनसनीखेज सामग्री को प्राथमिकता देता है।
इन्फोटेनमेंट सूचना और मनोरंजन के तत्वों का एक ऐसा संलयन है जहाँ समाचारों को नाटकीय और भावनात्मक रूप से प्रस्तुत किया जाता है। इसमें तथ्यों की गहराई और निष्पक्षता के बजाय दर्शकों के मनोरंजन और ध्यानाकर्षण को अधिक महत्व दिया जाता है। यह मॉडल सनसनीखेज विषयों और आकर्षक दृश्य प्रस्तुतियों का सहारा लेता है ताकि अधिक से अधिक दर्शक वर्ग को टीवी से जोड़ा जाए।

172. (B) निरंतर प्रसारण की कठिन आवश्यकता और TRP के लिए गलाकाट प्रतिस्पर्धा के कारण।
समाचार चैनलों को प्रतिदिन 24 घंटे की सामग्री प्रदान करनी होती है, जिससे रोचक विषयों की निरंतर कमी बनी रहती है। साथ ही, अधिक विज्ञापन राजस्व के लिए टेलीविजन रेटिंग पॉइंट्स की दौड़ में जीतना अनिवार्य हो गया है। इसी दबाव के कारण समाचार चैनलों ने इन्फोटेनमेंट मॉडल को अपनाया है, क्योंकि सनसनीखेज सामग्री दर्शकों को आकर्षित करने और रेटिंग्स बढ़ाने में अधिक प्रभावशाली सिद्ध होती है।

173. (D) इसने समाचार एजेंडे को विकृत किया है जहाँ महत्व केवल दर्शकों की संख्या से मापा जाता है।
इन्फोटेनमेंट की प्रवृत्ति ने समाचारों की प्राथमिकता के मानदंडों को पूरी तरह से बदल दिया है। अब किसी घटना का महत्व उसकी जनहित की प्रासंगिकता के बजाय इस बात से तय होता है कि वह कितने अधिक दर्शकों को आकर्षित कर सकती है। इसके कारण गंभीर आर्थिक और सामाजिक मुद्दे हाशिए पर चले गए हैं, जबकि मनोरंजन, ज्योतिष और अपराध जैसे विषयों को प्रमुखता मिल रही है।

174. (A) निष्क्रिय उपभोक्ताओं के रूप में।
इन्फोटेनमेंट मॉडल दर्शकों को ऐसे व्यक्तियों के रूप में देखता है जो केवल सतही और भावनात्मक सामग्री का उपभोग करना चाहते हैं। यह दर्शकों को गहराई से सोचने वाले नागरिक बनाने के बजाय उन्हें केवल एक विपणन योग्य आँकड़े या उपभोक्ताओं के समूह के रूप में मानता है। इस दृष्टिकोण में जनता की सहभागिता सूचना प्राप्त करने तक सीमित रह जाती है, जहाँ विश्लेषण कम होता है।

175. (C) क्योंकि यह सत्ता से सच कहने के बजाय केवल सनसनीखेज और नाटकीयता पर ध्यान केंद्रित करता है।
पत्रकारिता का पारंपरिक धर्म सत्ता की जवाबदेही तय करना और समाज को जटिल मुद्दों पर शिक्षित करना है। इन्फोटेनमेंट मॉडल में नाटकीयता और सतही बहस को अधिक महत्व दिया जाता है, जिससे पत्रकारिता का मूल उद्देश्य धूमिल हो जाता है। जब सनसनीखेज खबरें मुख्यधारा बन जाती हैं, तब तथ्यों की जाँच और खोजी पत्रकारिता जैसे कार्य पिछड़ जाते हैं, जो लोकतंत्र के लिए अत्यंत आवश्यक हैं।

57. झारखंड क्षेत्र में साक्षरता के प्रसार के लिए मुख्य रुप से कौन उत्तरदायी थे?
(A) ब्रिटिश सरकार
(B) जमींदार
(C) ईसाई मिशनरी
(D) व्यापारी

58. झारखंड आंदोलन के संदर्भ में 'दिक्कुओं' से क्या तात्पर्य था?
(A) प्रवासी व्यापारी और महाजन जो क्षेत्र में बस गए थे
(B) आदिवासी पुजारी
(C) आदिवासी नेता
(D) ब्रिटिश अधिकारी

59. झारखंड आंदोलन के दौरान आंदोलनकारियों द्वारा उठाए गए मुद्दों में निम्नलिखित में से कौन सा शामिल नहीं था?
(A) सिंचाई परियोजनाओं के लिए भूमि का अधिग्रहण
(B) रुके हुए सर्वेक्षण और पुनर्वास की कार्यवाही
(C) वन उत्पादों का राष्ट्रीयकरण
(D) दिक्कुओं के व्यापार को बढ़ावा देना

60. पूर्वोत्तर भारत के जनजातीय आंदोलनों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. ये जनजातियाँ अपनी पृथक पहचान और पारंपरिक स्वायत्तता के प्रति सचेत थीं।
2. उन्हें असम के प्रशासनिक तंत्र में शामिल किए जाने पर कोई आपत्ति नहीं थी।
3. इन आंदोलनों ने भारतीय संविधान के दायरे में ही स्वायत्तता की खोज की।
4. इन जनजातियों पर भारतीय मुख्यधारा का गहरा प्रभाव था।
5. स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राज्यों के निर्माण की प्रक्रिया ने इस क्षेत्र में अशांति पैदा की।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 2 और 4
(B) केवल 1, 3 और 5
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) सभी कथन सही हैं

61. देश के विभिन्न भागों के जनजातीय आंदोलनों को जोड़ने वाला एक मुख्य मुद्दा क्या है?
(A) शहरी रोजगार की मांग
(B) अंग्रेजी शिक्षा का विरोध
(C) वन-भूमि से विस्थापन
(D) राजनीतिक दलों का गठन

62. 20वीं सदी की शुरुआत में राष्ट्रीय और स्थानीय स्तर पर उभरे महिला संगठनों में से एक 'विमेंस इंडिया एसोसिएशन' (WIA) की स्थापना किस वर्ष हुई?
(A) 1926
(B) 1971
(C) 1920
(D) 1917

63. निम्नलिखित में से कौन सा एक अखिल भारतीय महिला संगठन है जिसकी स्थापना 1926 में हुई थी?
(A) ऑल-इंडिया विमेंस कॉन्फ्रेंस (AIWC)
(B) विमेंस इंडिया एसोसिएशन (WIA)
(C) नेशनल काउंसिल फॉर विमेन इन इंडिया (NCWI)
(D) भारत स्त्री महामंडल

64. प्रारंभ में ऑल-इंडिया विमेंस कॉन्फ्रेंस (AIWC) का क्या विचार था?
(A) महिला कल्याण और राजनीति आपस में जुड़े हुए हैं।
(B) महिला कल्याण और राजनीति आपस में असंबद्ध हैं।
(C) केवल राजनीतिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
(D) राष्ट्रीय स्वतंत्रता एक अप्रासंगिक मुद्दा है।

65. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): 19वीं सदी के सुधार आंदोलनों और प्रारंभिक महिला संगठनों के काल को सख्ती से एक सामाजिक आंदोलन नहीं माना जा सकता है।
कारण (R): फिर भी, इन गतिविधियों ने एक ऐसा वातावरण बनाया जहाँ महिलाओं के मुद्दों की उपेक्षा नहीं की जा सकती थी।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

66. निम्नलिखित में से किस कृषक संघर्ष में महिलाओं ने पुरुषों के साथ भाग लिया?
(A) बंगाल में तिभागा आंदोलन
(B) तेलंगाना सशस्त्र संघर्ष
(C) महाराष्ट्र में वरली विद्रोह
(D) उपरोक्त सभी

67. 1947 के बाद महिला आंदोलन में आए ठहराव के लिए क्या व्याख्या दी जाती है?
(A) महिलाओं की भागीदारी में आई तीव्र कमी।
(B) कानूनी सुधारों के कार्यान्वयन की कमी।
(C) राष्ट्रीय आंदोलन वाली महिलाओं का राष्ट्र निर्माण कार्यों में संलग्न होना।
(D) देश में आर्थिक विकास की अत्यंत तीव्र गति।

68. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (आंदोलन/संघर्ष)
P. तिभागा आंदोलन
Q. तेलंगाना सशस्त्र संघर्ष

(D) सभी 1, 2, 3 और 4

9. महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता आंदोलन में विरोध के किन नवीन तरीकों को अपनाया?
(A) केवल अहिंसा और सत्याग्रह
(B) केवल चरखे का प्रयोग और खादी पहनना
(C) अहिंसा, सत्याग्रह, और चरखे का प्रयोग
(D) केवल नुक्कड़ नाटक और कविताएँ

10. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. सामाजिक आंदोलन केवल सभाएं और जुलूस आयोजित करते हैं।
2. मोमबत्ती या मशाल जुलूस विरोध का एक साधन है।
3. नुक्कड़ नाटक और गीतों का प्रयोग जनमत तैयार करने के लिए किया जाता है।
4. गांधीजी ने नमक कानून की अवहेलना को प्रतिरोध का प्रतीक बनाया।
5. सामाजिक आंदोलन प्रचार योजनाएँ नहीं बनाते हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 5
(B) केवल 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 5
(D) सभी कथन सही हैं

11. एमिल दुर्खाइम के अनुसार, सामाजिक आंदोलनों को अव्यवस्था फैलाने वाली शक्तियों के रूप में क्यों देखा जाता था?
(A) क्योंकि वे सामाजिक एकीकरण को मजबूत करने का कार्य करते थे
(B) क्योंकि वे तत्कालीन सरकार और राजसत्ता द्वारा पूर्णतः समर्थित थे
(C) क्योंकि वे हमेशा अहिंसक और शांतिपूर्ण प्रकृति के होते थे
(D) क्योंकि वे स्थापित सामाजिक व्यवस्था हेतु प्रत्यक्ष चुनौती प्रस्तुत करते थे

12. समाजशास्त्रय ई.पी. थॉमसन के विचारों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन सही है?
(A) उन्होंने 'जनसंकुल' को अराजक गुंडों का समूह माना।
(B) उन्होंने तर्क दिया कि भीड़ में 'नैतिक अर्थव्यवस्था' होती है।
(C) उन्होंने माना कि गरीब लोगों के पास विरोध का कोई कारण नहीं होता।
(D) उन्होंने सामाजिक आंदोलनों को सामाजिक अव्यवस्था का स्रोत माना।

13. निम्नलिखित घटनाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. फ्रांसिसी क्रांति
2. भारत की स्वतंत्रता
3. ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति
4. रुस की बोल्शेविक क्रांति

(A) 3, 1, 4, 2
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 2, 1, 3, 4
(D) 4, 2, 1, 3

14. 'नैतिक अर्थव्यवस्था' की अवधारणा किसने प्रस्तुत की, जिसमें यह दर्शाया गया कि भीड़ की गतिविधियों के पीछे भी सही और गलत की साझी समझ होती है?
(A) कार्ल मार्क्स
(B) एमिल दुर्खाइम
(C) महात्मा गांधी
(D) ई.पी. थॉमसन

15. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): प्रारंभ से ही समाजशास्त्र विषय सामाजिक आंदोलनों में रुचि लेता रहा है।
कारण (R): फ्रांसिसी क्रांति और औद्योगिक क्रांति के कारण हुए सामाजिक उतार-चढ़ाव ने समाजशास्त्र के उदय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

16. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म सही सुमेलित है?
(A) सुधारवादी आंदोलन - रुस की बोल्शेविक क्रांति
(B) प्रतिदानात्मक आंदोलन - केरल में नारायण गुरु का आंदोलन
(C) क्रांतिकारी आंदोलन - सूचना का अधिकार अभियान
(D) प्रतिरोधी आंदोलन - राज्यों का भाषाई पुनर्गठन

17. वह सामाजिक आंदोलन जिसका लक्ष्य अपने व्यक्तिगत सदस्यों की चेतना और गतिविधियों में परिवर्तन लाना होता है, क्या कहलाता है?
(A) सुधारवादी आंदोलन
(B) प्रतिदानात्मक आंदोलन
(C) क्रांतिकारी आंदोलन
(D) प्रतिरोधी आंदोलन

18. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (आंदोलन का प्रकार)
P. प्रतिदानात्मक
Q. सुधारवादी
R. क्रांतिकारी
S. प्रतिरोधी

सूची II: (उदाहरण)

अध्याय 15
सामाजिक आंदोलन

1. निम्नलिखित में से कौन सा अधिकार सामाजिक आंदोलनों के माध्यम से प्राप्त नहीं किया गया था?
   (A) कार्य दिवस का आठ घंटे तक सीमित होना
   (B) वंशानुगत उत्तराधिकार के माध्यम से शासन करने का अधिकार
   (C) पुरुषों और महिलाओं के लिए समान कार्य के लिए समान मजदूरी
   (D) मजदूरों की सामाजिक सुरक्षा और पेंशन

2. इंग्लैंड में 'चार्टरवाद' (चार्टरिज़्म) नामक सामाजिक आंदोलन मुख्य रूप से किससे संबंधित था?
   (A) संसदीय प्रतिनिधित्व
   (B) औद्योगिक उत्पादन
   (C) धार्मिक सुधार
   (D) कृषि नीतियाँ

3. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
   अभिकथन (A): सामाजिक आंदोलन में एक लंबे समय तक निरंतर सामूहिक गतिविधियों की आवश्यकता होती है।
   कारण (R): स्वतःस्फूर्त तथा असंगठित विरोध को भी सामाजिक आंदोलन कहा जा सकता है।
   (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
   (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
   (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
   (D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

4. जन चार्टर (पीपुल्स चार्टर) के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा कथन असत्य है?
   (A) यह इंग्लैंड में एक सामाजिक आंदोलन का हिस्सा था।
   (B) इस पर सन् 1839 में 12.50 लाख से अधिक व्यक्तियों ने हस्ताक्षर किए थे।
   (C) इसकी एक प्रमुख माँग सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार थी।
   (D) इसने तुरंत सभी वयस्क महिलाओं के लिए मताधिकार हासिल कर लिया।

5. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
   सूची I: (आंदोलन/संघर्ष)
   P. नागरिक अधिकार आंदोलन
   Q. रंगभेद के विरुद्ध संघर्ष
   R. राष्ट्रीय आंदोलन
   S. समाजवादी आंदोलन
   सूची II: (स्थान)
   1. भारत
   2. संयुक्त राज्य अमेरिका
   3. विश्व भर में
   4. दक्षिणी अफ्रीका
   (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
   (B) P-1, Q-2, R-3, S-4
   (C) P-4, Q-1, R-2, S-3
   (D) P-3, Q-4, R-1, S-2

6. सामाजिक आंदोलन के संदर्भ में, वे आंदोलन जो सामाजिक परिवर्तन का विरोध करते हैं और यथापूर्व स्थिति बनाए रखना चाहते हैं, क्या कहलाते हैं?
   (A) सुधारवादी आंदोलन
   (B) प्रतिरोधी आंदोलन
   (C) क्रांतिकारी आंदोलन
   (D) रूपांतरणकारी आंदोलन

7. जब सुधारवादियों ने बालिकाओं के लिए शिक्षा की माँग की, तो इसका विरोध इस आधार पर किया गया कि यह समाज के लिए विनाशकारी होगा। यह किस प्रकार के आंदोलन का उदाहरण है?
   (A) क्रांतिकारी आंदोलन
   (B) सुधारवादी आंदोलन
   (C) प्रतिदानात्मक आंदोलन
   (D) प्रतिरोधी आंदोलन

8. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
   1. इनमें निरंतर सामूहिक गतिविधियों की आवश्यकता होती है।
   2. ये प्रायः राज्य के विरुद्ध और नीति में परिवर्तन की माँग करते हैं।
   3. इनमें संगठन, नेतृत्व और संरचना का अभाव होता है।
   4. भाग लेने वाले लोगों के उद्देश्यों और विचारधाराओं में समानता होती है।
   उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सामाजिक आंदोलन की विशेषताओं के संबंध में सही है/हैं?
   (A) केवल 1 और 2
   (B) केवल 3
   (C) केवल 1, 2 और 4

था।
(B) यह केवल राजनीतिक और पर्यावरणीय मुद्दों का मिश्रण था।
(C) आंदोलनकारियों ने लाल और हरे झंडों का इस्तेमाल किया।
(D) गाँववासियों की उत्तरजीविता (लाल मुद्दा) जंगलों के जीवन (हरा मुद्दा) पर निर्भर थी।

28. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): चिपको आंदोलन ने पारिस्थितिकीय सुरक्षा के साथ-साथ सामाजिक असमानता के मुद्दे को भी उठाया।
कारण (R): यह आंदोलन गाँववासियों की आजीविका की आवश्यकताओं और सरकार की राजस्व कमाने की इच्छा के बीच का संघर्ष था।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

29. चिपको आंदोलन में महिला मंडल की प्रमुख गौरा देवी की क्या भूमिका थी?
(A) उन्होंने सरकार के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए।
(B) उन्होंने ठेकेदार के आदमियों को कटाई के लिए प्रोत्साहित किया।
(C) उन्होंने अन्य महिलाओं को इकट्ठा कर जंगल में कटाई का विरोध किया।
(D) उन्होंने आंदोलन पर एक किताब लिखी।

30. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (अवधारणा/वस्तु)
P. जीवन-निर्वहन की अर्थव्यवस्था
Q. मुनाफ़े की अर्थव्यवस्था
R. दशौली ग्राम स्वराज्य संघ
S. गौरा देवी
सूची II: (संबंधित)
1. चमोली जिले में सहकारी संगठन
2. महिला मंडल की प्रमुख
3. गाँववासियों की जंगलों पर निर्भरता
4. सरकार की वाणिज्यिक नीतियाँ
(A) P-3, Q-4, R-1, S-2
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

31. भारत सरकार द्वारा 2014 में शुरू किया गया 'एकीकृत गंगा संरक्षण मिशन' किस नाम से जाना जाता है?
(A) नमामि गंगे
(B) स्वच्छ भारत अभियान
(C) गंगा एक्शन प्लान
(D) जल शक्ति अभियान

32. औपनिवेशिक काल के दौरान 1859-62 का विद्रोह किसके विरुद्ध था?
(A) साहूकारों के
(B) नील की खेती के
(C) जमींदारों के
(D) वन नीतियों के

33. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. बारदोली सत्याग्रह सूरत जिले में हुआ था।
2. 1857 का दक्कन विद्रोह साहूकारों के विरुद्ध था।
3. औपनिवेशिक काल से पहले कोई कृषक संघर्ष नहीं हुआ था।
4. चंपारन सत्याग्रह कपास की खेती के विरुद्ध था।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन किसान आंदोलनों के संबंध में सही है/हैं?
(A) केवल 3 और 4
(B) केवल 1 and 2
(C) केवल 1, 2 और 4
(D) केवल 2

34. ऑल इंडिया किसान सभा का उदय किस वर्ष हुआ?
(A) 1936
(B) 1929
(C) 1946
(D) 1920

35. स्वतंत्रता के समय के प्रमुख किसान आंदोलनों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. तिभागा आंदोलन बंगाल और उत्तरी बिहार में हुआ।
2. तेलंगाना आंदोलन हैदराबाद की सामंती दशाओं के विरुद्ध था।
3. तिभागा आंदोलन में किसानों की माँग थी कि उन्हें पैदावार का आधा हिस्सा मिले।
4. तेलंगाना आंदोलन का नेतृत्व भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने किया।
5. तिभागा आंदोलन को किसान सभा और सी.पी.आई. का समर्थन प्राप्त था।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 5
(B) केवल 3 और 4
(C) केवल 1, 3 और 4
(D) सभी कथन सही हैं

36. 'नए किसानों' का आंदोलन 1970 के दशक में किन राज्यों से प्रारंभ हुआ?
(A) बंगाल और बिहार
(B) केरल और आंध्र प्रदेश

(C) महाराष्ट्र और गुजरात
(D) पंजाब और तमिलनाडु

37. 'नए किसान आंदोलन' पुराने किसान आंदोलनों से किस प्रकार भिन्न थे?
(A) वे राष्ट्रीय स्तर पर संगठित और दल-आधारित थे।
(B) वे मुख्य रूप से भूमि सुधार पर केंद्रित थे।
(C) वे क्षेत्रीय, दल-रहित थे और मूल्य तथा संबंधित मुद्दों पर केंद्रित थे।
(D) वे केवल ग्रामीण क्षेत्रों में ही विरोध करते थे।

38. भारत में किसान संगठनों के गठन को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. ऑल इंडिया किसान सभा
2. चंपारन सत्याग्रह
3. बारदोली सत्याग्रह
4. बिहार प्रोविंसिएल किसान सभा

(A) 2, 3, 4, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 3, 2, 1
(D) 3, 4, 1, 2

39. भारत में कारखानों से उत्पादन किस अवधि में शुरु हुआ?
(A) 1760 के प्रारंभिक भाग में
(B) 1900 के प्रारंभिक भाग में
(C) 1800 के प्रारंभिक भाग में
(D) 1860 के प्रारंभिक भाग में

40. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): औपनिवेशिक काल की प्रारंभिक अवस्थाओं में मज़दूरी बहुत सस्ती थी।
कारण (R): औपनिवेशिक सरकार ने मज़दूरों के वेतन और कार्य दशाओं के लिए विस्तृत नियम बनाए थे।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

41. भारत में सर्वप्रथम मज़दूर संघ की स्थापना अप्रैल 1918 में किसने की?
(A) महात्मा गाँधी
(B) एस. ए. डांगे
(C) बी. पी. वाडिया
(D) लाला लाजपत राय

42. 1920 में बंबई में स्थापित ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की क्या विशेषता थी?
(A) यह वृहद आधारों और विभिन्न विचारधाराओं वाला संगठन था।
(B) यह केवल एक ही विचारधारा वाला संगठन था।
(C) इसमें केवल नरम दल के नेता शामिल थे।
(D) इसका राष्ट्रवादी आंदोलन से कोई संबंध नहीं था।

43. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (नेता)
P. बी. पी. वाडिया
Q. महात्मा गाँधी
R. एस. ए. डांगे
S. लाला लाजपत राय

सूची II: (संगठन/भूमिका)
1. टेक्सटाइल लेबर ऐसोसिएशन (टी.एल.ए.)
2. एटक में साम्यवादी विचारधारा
3. एटक में राष्ट्रवादी धारा
4. प्रथम मज़दूर संघ के संस्थापक

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

44. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने किस मज़दूर संघ का गठन किया?
(A) ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC)
(B) भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (INTUC)
(C) सेंटर ऑफ़ इंडियन ट्रेड यूनियंस (CITU)
(D) हिंद मज़दूर सभा (HMS)

45. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह केवल आर्थिक शोषण के विरुद्ध एक संघर्ष है।
2. यह आत्मसम्मान और अस्पृश्यता उन्मूलन के लिए एक समानता की खोज है।
3. इसे 'स्पर्श के लिए संघर्ष' भी कहा जाता है।
4. इसकी व्याख्या केवल राजनीतिक दबाव के संदर्भ में की जा सकती है।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन दलित आंदोलन के संबंध में सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

46. 'दलित' शब्द का प्रयोग 1970 के दशक के प्रारंभ में नव-बौद्ध आंदोलनकारियों ने किस अभिप्राय से किया था?
(A) उन विशिष्ट लोगों के लिए जिन्हें ईश्वर ने अपनी सेवा हेतु स्वयं चुना है।
(B) उन निर्धन लोगों के लिए जो समाज में स्वाभाविक रूप से गरीबी का जीवन जीते हैं।
(C) केवल पश्चिमी भारत के मराठी भाषी दलित समुदायों के प्रतिनिधित्व के लिए।
(D) उच्च वर्गों द्वारा जान-बूझकर तोड़े गए और धराशायी

किए गए लोगों हेतु।

47. निम्नलिखित में से कौन सा आंदोलन एक दलित आंदोलन का उदाहरण नहीं है?
(A) बंगाल का तिभागा आंदोलन
(B) छत्तीसगढ़ का सतनामी आंदोलन
(C) पंजाब का आदि धर्म आंदोलन
(D) महाराष्ट्र का महार आंदोलन

48. दलित साहित्य के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह दलित लेखकों के स्वयं के अनुभव और दृष्टिकोण पर आधारित है।
2. यह मुख्यधारा के समाज की सामाजिक कल्पनाशीलता को बढ़ावा देता है।
3. यह सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्रांति का आह्वान करता है।
4. कुछ लेखक सम्मान और पहचान के लिए सांस्कृतिक संघर्ष पर बल देते हैं।
5. यह आर्थिक आयामों को पूरी तरह से नजरअंदाज करता है।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 2 और 5
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 1 और 2
(D) सभी कथन सही हैं

49. 19वीं सदी में महाराष्ट्र में गैर-ब्राह्मण आंदोलन किसकी प्रेरणा से शुरु हुआ?
(A) डॉ. अंबेडकर
(B) जोतिबा फुले
(C) नारायण गुरु
(D) पेरियार ई.वी. रामासामी

50. 'पिछड़े वर्गों' की संज्ञा का प्रयोग 19वीं सदी के अंत से ही भारत के विभिन्न भागों में किया जा रहा था। मद्रास प्रेसीडेंसी में इसका विस्तृत प्रयोग कब से शुरु हुआ?
(A) 1872
(B) 1918
(C) 1925
(D) 1954

51. 'समानांतर विस्तार' की अवधारणा का क्या अर्थ है?
(A) विभिन्न जातियों का एक साथ रहना
(B) जाति व्यवस्था का भौगोलिक विस्तार
(C) समान रूप से अवस्थित जाति समूहों का स्वयं को संगठित करना
(D) जातियों का राजनीति से दूर रहना

52. निम्नलिखित में से कौन सा संगठन पिछड़े वर्गों से संबंधित नहीं है?
(A) हिंदू बैकवर्ड क्लासेस लीग
(B) ऑल-इंडिया बैकवर्ड क्लासेस फैडरेशन
(C) उपरोक्त में से कोई नहीं
(D) टेक्सटाइल लेबर ऐसोसिएशन

53. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): पिछड़े वर्गों का राजनीतिक इकाइयों के रूप में उदय औपनिवेशिक तथा उपनिवेशोत्तर दोनों संदर्भों में हुआ है।
कारण (R): औपनिवेशिक राज प्रायः अपनी संरक्षिता का वितरण जाति के आधार पर करते थे, जिससे जातिगत पहचान राजनीतिक रूप से महत्वपूर्ण हो गई।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

54. भारत में अधिकांश जनजातीय आंदोलन किस क्षेत्र में केंद्रित रहे हैं?
(A) तटीय क्षेत्र
(B) मध्य भारत की 'जनजातीय बेल्ट'
(C) उत्तरी मैदानी इलाके
(D) पश्चिमी घाट

55. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (जनजाति)
P. संथाल
Q. मुंडा
R. हो
S. ओरांव
सूची II: (क्षेत्र)
1. छोटानागपुर
2. संथाल परगना
3. झारखंड
4. मध्य भारत
(A) P-2, Q-1, R-3, S-4
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-4, Q-3, R-2, S-1
(D) P-2, Q-1, R-4, S-3

56. झारखंड आंदोलन के करिश्माई नेता कौन थे जिन्होंने अंग्रेजों के विरुद्ध एक बड़े विद्रोह का नेतृत्व किया?
(A) बिरसा मुंडा
(B) कानू सान्याल
(C) सिदो मुर्मू
(D) जयपाल सिंह मुंडा

1. सूचना का अधिकार अभियान
2. रूस की बोल्शेविक क्रांति
3. सतीप्रथा के समर्थन में धर्म सभा की स्थापना
4. नारायण गुरु के नेतृत्व में इज़्हावा समुदाय द्वारा प्रथाओं में बदलाव

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

19. 1960 के दशक में भारत के राज्यों को भाषा के आधार पर पुनर्गठित करने का अभियान किस प्रकार के सामाजिक आंदोलन का उदाहरण था?
(A) क्रांतिकारी
(B) प्रतिदानात्मक
(C) सुधारवादी
(D) प्रतिरोधी

20. 1857 के विद्रोह के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. ब्रिटिश औपनिवेशिक शासकों ने इसे 'गदर' या 'विद्रोह' कहा।
2. भारतीय राष्ट्रवादियों ने इसे 'स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम' माना।
3. यह घटना दिखाती है कि लोग सामाजिक आंदोलनों को कैसे भिन्न अर्थ देते हैं।
4. इस घटना की सभी वर्गों द्वारा समान रूप से व्याख्या की गई थी।

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 1, 2 और 3
(C) केवल 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

21. 'नए सामाजिक आंदोलन' पुराने आंदोलनों से किस प्रकार भिन्न हैं?
(A) पारंपरिक वर्ग-आधारित और आर्थिक असमानता पर केंद्रित सामाजिक आंदोलन।
(B) स्थापित राजनीतिक दलों के वैधानिक ढांचे के भीतर संचालित होने वाले संगठन।
(C) जीवन की गुणवत्ता पर केंद्रित तथा वर्ग की सीमाओं से परे आंदोलन।
(D) राजसत्ता और शासन व्यवस्था पर पूर्ण अधिकार प्राप्त करने का उद्देश्य रखने वाले समूह।

22. राजनीतिशास्त्री रजनी कोठारी के अनुसार, भारत में 1970 के दशक में सामाजिक आंदोलनों की भरमार का क्या कारण था?
(A) संसदीय लोकतंत्र की प्रक्रियाओं में आम जनता का निरंतर बढ़ता विश्वास।
(B) लोकतांत्रिक संस्थाओं पर अभिजात नियंत्रण और लोगों में बढ़ता असंतोष।
(C) देश के भीतर सक्रिय मुख्यधारा के राजनीतिक दलों की अत्यधिक कार्यकुशलता।
(D) राष्ट्रीय आंतरिक नीतियों के निर्माण में बाहरी विदेशी शक्तियों का हस्तक्षेप।

23. 'नए सामाजिक आंदोलनों' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. ये केवल आर्थिक असमानता के 'पुराने' मुद्दों से संबंधित हैं।
2. ये वर्गीय आधार पर संगठित नहीं हैं।
3. पहचान की राजनीति और सांस्कृतिक चिंताएँ इनके आवश्यक तत्व हैं।
4. महिलाओं के आंदोलन में केवल मध्यवर्गीय महिलाएँ शामिल होती हैं।
5. ये अक्सर वर्ग की सीमाओं के आर-पार से भागीदारों को एकजुट करते हैं।

उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 1, 2 और 4
(B) केवल 1 और 4
(C) केवल 2, 3 और 5
(D) सभी कथन सही हैं

24. विश्व सामाजिक फोरम (World Social Forum) किसका एक उदाहरण है?
(A) पुराने तथा नए आंदोलनों को एकजुट करने वाला मैत्री संगठन
(B) एक राष्ट्रीय स्तर का प्रमुख राजनीतिक दल
(C) एक पूर्णतः सरकारी और प्रशासनिक संगठन
(D) एक विशाल पारराष्ट्रीय व्यापारिक निगम

25. चिपको आंदोलन की घटनाओं को प्रारंभ से अंत तक के सही क्रम में व्यवस्थित करें:
1. गाँववासियों का पेड़ों से चिपकना
2. सरकार द्वारा जंगलों की वार्षिक नीलामी
3. अलकनंदा घाटी में विनाशकारी बाढ़ आना
4. दशौली ग्राम स्वराज्य संघ द्वारा विरोध प्रदर्शन

(A) 3, 4, 2, 1
(B) 1, 2, 3, 4
(C) 4, 3, 1, 2
(D) 2, 1, 4, 3

26. 'अनक्वाइट वुड्स' (Unquiet Woods) नामक पुस्तक मुख्य रूप से किस आंदोलन का विश्लेषण करती है?
(A) चिपको आंदोलन
(B) दलित आंदोलन
(C) किसान आंदोलन
(D) महिला आंदोलन

27. चिपको आंदोलन में 'लाल' और 'हरे' मुद्दे आपस में कैसे जुड़े हुए थे?
(A) लाल रंग क्रांति का और हरा रंग पर्यावरण का प्रतीक

R. वरली जनजाति का विद्रोह
S. दहेज विरोधी संघर्ष

सूची II: (स्थान/संदर्भ)
1. महाराष्ट्र
2. 1970 के दशक का महिला आंदोलन
3. बंगाल
4. निज़ाम का पूर्वशासन

(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-3, Q-4, R-1, S-2
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-4, Q-1, R-2, S-3

69. 1970 के दशक के मध्य में भारत में महिला आंदोलन के नवीनीकरण को क्या कहा जाता है?
(A) भारतीय महिला आंदोलन का प्रथम दौर।
(B) सुधारवादी महिला आंदोलन।
(C) स्वायत्त महिला आंदोलन।
(D) राष्ट्रवादी महिला आंदोलन।

70. 1970 के दशक के महिला आंदोलन द्वारा उठाए गए नए मुद्दों के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. महिलाओं के प्रति हिंसा
2. भू-स्वामित्व और रोज़गार के मुद्दे
3. यौन-उत्पीड़न और दहेज
4. पुरुषों के लिए समान अधिकारों की मांग

उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
(A) केवल 4
(B) केवल 1 और 2
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

71. भारत सरकार की 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' योजना का मुख्य उद्देश्य क्या है?
(A) केवल बालिकाओं की शिक्षा को बढ़ावा देना
(B) केवल लिंगानुपात को संतुलित करना
(C) महिलाओं के लिए रोजगार सृजित करना
(D) एक लैंगिक दृष्टि से समतावादी समाज को मूर्त रूप देना

72. किस समाजशास्त्री का मानना था कि सामाजिक संरचनाएँ सामाजिक एकीकरण को संभव बनाती हैं?
(A) एमिल दुर्खाइम
(B) कार्ल मार्क्स
(C) मैक्स वेबर
(D) ई.पी. थॉमसन

73. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. वे मुख्य रूप से राजनीतिक दलों के दायरे में काम करते थे।
2. भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन चलाया।
3. चीन की साम्यवादी पार्टी ने चीनी क्रांति का नेतृत्व किया।
4. उनका मुख्य ध्यान शक्ति संबंधों के पुनर्गठन पर था।
5. वे वर्ग-आधारित राजनीति से परहेज करते थे।

उपरोक्त में से कौन से कथन 'पुराने' सामाजिक आंदोलनों के बारे में सही हैं?
(A) केवल 5
(B) केवल 1, 2, 3 और 4
(C) केवल 1 और 5
(D) सभी कथन सही हैं

74. 'सफ्रागेट्स' (Suffragettes) किन्हें कहा जाता था?
(A) सभी वयस्क महिलाओं के लिए मताधिकार की माँग करने वाली महिला आंदोलनकारी
(B) संपत्ति के स्वामियों के लिए मतदान का समर्थन करने वाले
(C) चार्टरवाद आंदोलन के नेता
(D) ब्रिटिश संसद के सदस्य

75. निम्नलिखित आंदोलनों को उनके घटित होने के अनुसार सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. तिभागा आंदोलन
2. दक्कन विद्रोह
3. चंपारन सत्याग्रह
4. नील विद्रोह

(A) 2, 4, 3, 1
(B) 4, 2, 3, 1
(C) 1, 2, 3, 4
(D) 3, 1, 4, 2

76. सामाजिक आंदोलन के लिए क्या आवश्यक है?
(A) स्वतःस्फूर्त और असंगठित विरोध
(B) एक सामान्य अभिमुखता और परिवर्तन लाने का तरीका
(C) एक अल्पकालिक घटना
(D) नेतृत्व और संरचना का पूर्ण अभाव

77. गांधीजी द्वारा नमक को प्रतिरोध का प्रतीक चुनने का मुख्य कारण क्या था?
(A) नमक एक महंगी वस्तु थी।
(B) केवल अमीर लोग ही नमक का उपयोग करते थे।
(C) नमक प्रतिदिन के जन उपभोग की चीज थी।
(D) अंग्रेजों ने नमक पर कर नहीं लगाया था।

78. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।

अभिकथन (A): सामाजिक परिवर्तन एक निरंतर और वृहद ऐतिहासिक प्रक्रिया है।

कारण (R): सामाजिक आंदोलन किसी विशिष्ट उद्देश्य की ओर निर्देशित लंबा और निरंतर सामाजिक प्रयास है।

(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

(B) कृषि और गैर-कृषि उत्पादों के बीच 'व्यापार की शर्तें'।
(C) भूमि का पुनर्वितरण।
(D) केवल काश्तकारों के अधिकारों की सुरक्षा।

163. 'भारत' बनाम 'इंडिया' की बहस, जैसा कि अनुच्छेद में वर्णित है, का क्या तात्पर्य है?
(A) उत्तर भारत और दक्षिण भारत के राज्यों के बीच का ऐतिहासिक संघर्ष।
(B) विभिन्न धार्मिक समुदायों के बीच उत्पन्न होने वाला सामाजिक तनाव।
(C) सरकारी नीतियों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों का शहरी क्षेत्रों के पक्ष में शोषण।
(D) भारत और उसके पड़ोसी देशों के बीच चल रहे वर्तमान व्यापारिक विवाद।

164. अनुच्छेद के अनुसार, 1980 के दशक के नए किसान आंदोलनों की एक प्रमुख मांग क्या थी?
(A) सभी उद्योगों का राष्ट्रीयकरण।
(B) संसदीय लोकतंत्र का अंत।
(C) अंग्रेजी भाषा का उन्मूलन।
(D) कृषि उत्पादों के लिए लाभकारी मूल्य और ऋण माफी।

165. नए किसान आंदोलनों द्वारा अपनाए गए विरोध के तरीकों में से एक क्या था?
(A) रास्ता रोको और शहरी आपूर्ति को बाधित करना।
(B) केवल अदालतों में याचिका दायर करना।
(C) केवल चुनाव लड़ना।
(D) पूरी तरह से अहिंसक और मौन प्रदर्शन।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में दलित आंदोलन केवल आर्थिक शोषण या राजनीतिक उत्पीड़न के विरुद्ध एक संघर्ष मात्र नहीं है, बल्कि यह उससे कहीं अधिक गहरा और जटिल है। यह अस्मिता, आत्म-सम्मान और सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान की स्थापना का एक बहुआयामी आंदोलन है। 1970 के दशक में, महाराष्ट्र में 'दलित पैंथर्स' का उदय इस आंदोलन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था। अमेरिकी 'ब्लैक पैंथर' आंदोलन से प्रेरित होकर, दलित पैंथर्स ने स्थापित राजनीतिक दलों की सुधारवादी रणनीतियों को खारिज कर दिया और एक अधिक जुझारू और क्रांतिकारी दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने जाति-आधारित उत्पीड़न को केवल एक सामाजिक बुराई के रूप में नहीं, बल्कि एक संरचनात्मक हिंसा के रूप में देखा जो हिंदू धर्म और सामाजिक व्यवस्था में गहराई से निहित है। दलित पैंथर्स की सबसे महत्वपूर्ण देन में से एक दलित साहित्य को एक शक्तिशाली राजनीतिक हथियार के रूप में स्थापित करना था। उनके लिए, साहित्य केवल कलात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं था, बल्कि यह उत्पीड़न के अनुभवों को आवाज देने, मुख्यधारा के ऐतिहासिक आख्यानों को चुनौती देने और एक वैकल्पिक, विद्रोही चेतना का निर्माण करने का एक साधन था। आत्मकथाएं, कविताएं और लघु कथाएं दलित जीवन की पीड़ा, क्रोध और प्रतिरोध को व्यक्त करने के शक्तिशाली माध्यम बन गईं। इस साहित्यिक विस्फोट ने न केवल दलित समुदाय के भीतर आत्म-जागरूकता और एकजुटता को बढ़ावा दिया, बल्कि इसने व्यापक समाज को भी जाति की क्रूर वास्तविकताओं का सामना करने के लिए मजबूर किया।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

166. दलित पैंथर्स आंदोलन को किस अंतरराष्ट्रीय आंदोलन से प्रेरणा मिली थी?
(A) दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद विरोधी आंदोलन।
(B) अमेरिका में ब्लैक पैंथर आंदोलन।
(C) अमेरिका में नागरिक अधिकार आंदोलन।
(D) चीन की सांस्कृतिक क्रांति।

167. दलित पैंथर्स ने जाति-आधारित उत्पीड़न को किस रूप में देखा?
(A) एक सामान्य सामाजिक बुराई जिसे केवल शिक्षा से दूर किया जा सकता है।
(B) हिंदू सामाजिक व्यवस्था में निहित एक गहरी संरचनात्मक हिंसा।
(C) एक व्यक्तिगत पूर्वाग्रह और आपसी मतभेद का एक साधारण मामला।
(D) केवल एक तात्कालिक और अस्थायी आर्थिक समस्या के रूप में।

168. दलित पैंथर्स के लिए साहित्य का क्या महत्व था?
(A) यह उत्पीड़न को व्यक्त करने और विद्रोही चेतना बनाने का हथियार था।
(B) यह केवल मनोरंजन और साहित्यिक सृजन का एक सामान्य साधन था।
(C) यह प्राचीन संस्कृत साहित्य का पूर्णतः अनुकरण करने का एक प्रयास था।
(D) यह केवल उच्च शिक्षण संस्थानों में अकादमिक अध्ययन का एक विषय था।

169. अनुच्छेद के अनुसार, दलित साहित्य ने दलित समुदाय में क्या भूमिका निभाई?
(A) इसने समुदाय के भीतर कई नए प्रकार के विभाजन और मतभेद पैदा किए।
(B) इसने समुदाय को सक्रिय राजनीति से दूर रहने के लिए निरंतर प्रोत्साहित किया।
(C) इसने सामूहिक आत्म-जागरूकता और आंतरिक एकजुटता को बढ़ावा दिया।
(D) इसने समाज के पुराने पारंपरिक रीति-रिवाजों को और अधिक मजबूत किया।

170. दलित पैंथर्स का दृष्टिकोण स्थापित राजनीतिक दलों के सुधारवादी दृष्टिकोण से किस प्रकार भिन्न था?
(A) वे अधिक उदार, शांत और राजनीतिक समझौते के प्रबल पक्षधर थे।

(B) करों की समाप्ति
(C) पैदावार का दो-तिहाई हिस्सा, न कि प्रथागत आधा
(D) साहूकारों का बहिष्कार

90. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): 'नए किसान' आंदोलन क्षेत्रीय आधार पर संगठित और दल-रहित थे।
कारण (R): इन आंदोलनों की विचारधारा राज्य-विरोधी और नगर-विरोधी थी।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

91. 1917 में, बंबई की कपड़ा मिलों, कलकत्ता के पटसन कामगारों और मद्रास की बिन्नी मिल में क्या सामान्य घटना घटी?
(A) उत्पादन में वृद्धि
(B) वेतन में वृद्धि
(C) नए कारखानों की स्थापना
(D) हड़ताल की लहर

92. महात्मा गाँधी द्वारा 1918 में स्थापित मज़दूर संगठन का क्या नाम था?
(A) ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC)
(B) टेक्सटाइल लेबर ऐसोसिएशन (TLA)
(C) भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (INTUC)
(D) मद्रास लेबर यूनियन

93. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (आंदोलन)
P. सतनामी आंदोलन
Q. आदि धर्म आंदोलन
R. महार आंदोलन
S. गैर-ब्राह्मण आंदोलन
सूची II: (स्थान)
1. पंजाब
2. महाराष्ट्र
3. तमिलनाडु/महाराष्ट्र
4. छत्तीसगढ़
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-4, Q-1, R-2, S-3
(C) P-2, Q-3, R-4, S-1
(D) P-3, Q-4, R-1, S-2

94. समसामयिक काल में दलित आंदोलन की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि क्या है?
(A) इसकी राजनीतिक उपेक्षा
(B) जाति व्यवस्था का सुदृढ़ीकरण
(C) आर्थिक मुद्दों से पूर्ण अलगाव
(D) प्रचुर मात्रा में दलित साहित्य का उदय

95. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. औपनिवेशिक राज जाति के आधार पर संरक्षिता का वितरण करते थे।
2. इससे जाति अपनी कर्मकांडी विषयवस्तु छोड़कर राजनीतिक बन गई।
3. जाति समूहों ने राजनीतिक गतिशीलता के लिए स्वयं को संगठित किया।
4. इस प्रक्रिया को 'समानांतर विस्तार' कहा गया।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन औपनिवेशिक काल में जाति के संबंध में सही है/हैं?
(A) केवल 1 और 4
(B) केवल 2 और 3
(C) केवल 1
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

96. झारखंड राज्य का गठन किस राज्य से काट कर किया गया?
(A) पश्चिम बंगाल
(B) दक्षिण बिहार
(C) ओडिशा
(D) मध्य प्रदेश

97. झारखंड के आदिवासी अपनी पहचान बनाने के लिए किस बात से प्रेरित हुए?
(A) ईसाई मिशनरियों द्वारा दिए गए प्रलोभनों से
(B) दिक्कुओं द्वारा शोषण और अलग-थलग किए जाने के अनुभव से
(C) ब्रिटिश सरकार के समर्थन से
(D) पड़ोसी राज्यों के दबाव से

98. 19वीं सदी के समाज-सुधार आंदोलनों और महिलाओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. इन आंदोलनों ने महिलाओं से संबंधित अनेक मुद्दे उठाए।
2. इन आंदोलनों के परिणामस्वरूप महिलाओं की स्थिति में कोई बदलाव नहीं आया।
3. 20वीं सदी के प्रारंभ में महिला संगठनों में वृद्धि देखी गई।
4. प्रारंभ में महिला संगठन केवल स्थानीय मुद्दों तक सीमित थे।
5. इन आंदोलनों ने एक ऐसा वातावरण बनाया जहाँ महिलाओं के मुद्दों की उपेक्षा नहीं की जा सकती थी।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 2 और 4
(B) केवल 1, 3 और 5
(C) केवल 1, 2 और 3
(D) सभी कथन सही हैं

99. यह कारण क्यों दिया जाता है कि 1970 के दशक के महिला आंदोलन ने 'स्वायत्त' चरित्र ग्रहण किया?

(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

79. 19वीं सदी में जब सुधारकों ने विधवा पुनर्विवाह का प्रचार किया तो उनका क्या परिणाम हुआ?
(A) उनका सामाजिक बहिष्कार किया गया
(B) उनका सामाजिक स्वागत किया गया
(C) सरकार ने तुरंत कानून बनाया
(D) समाज ने इसे आसानी से स्वीकार कर लिया

80. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (आंदोलन/घटना)
P. चार्टरवाद
Q. सफ्रागेट्स
R. सतीप्रथा का विरोध
S. दलित आंदोलन
सूची II: (संबंधित व्यक्ति/समूह)
1. राजा राममोहन राय
2. डॉ. अंबेडकर
3. इंग्लैंड के संपत्तिहीन पुरुष
4. महिला आंदोलनकारी
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

81. कौन सा आंदोलन सामाजिक संबंधों के आमूल रूपांतरण का प्रयास करता है, प्रायः राजसत्ता पर अधिकार के द्वारा?
(A) सुधारवादी आंदोलन
(B) क्रांतिकारी आंदोलन
(C) प्रतिदानात्मक आंदोलन
(D) प्रतिरोधी आंदोलन

82. 'सामाजिक आंदोलन संगठनों' (Social Movement Organizations) की ओर अग्रसर होना क्या इंगित करता है?
(A) आंदोलन का अधिक संस्थात्मक बन जाना
(B) आंदोलन का क्रांतिकारी बन जाना
(C) आंदोलन का समाप्त हो जाना
(D) आंदोलन का नेतृत्वविहीन हो जाना

83. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. वे जीवन की गुणवत्ता जैसे मुद्दों के बारे में हैं।
2. वे वर्ग आधारित शोषण और असमानता से संबंधित नहीं हैं।
3. रजनी कोठारी ने इन्हें 'गैर दलीय राजनीतिक संगठन' कहा।
4. वे अक्सर अंतर्राष्ट्रीय विस्तार में होते हैं।
उपरोक्त में से कौन-सा/से कथन 'नए सामाजिक आंदोलनों' की विशेषताओं के संबंध में सही है/हैं?
(A) केवल 1, 3 और 4
(B) केवल 2
(C) केवल 1 और 2
(D) सभी 1, 2, 3 और 4

84. पारिस्थितिकीय आंदोलन का मुख्य सरोकार क्या है?
(A) केवल औद्योगिक विकास
(B) प्राकृतिक संसाधनों का अनियंत्रित उपयोग
(C) केवल शहरी क्षेत्रों का विकास
(D) विकास के दुष्प्रभावों और पर्यावरणीय क्षरण के बारे में चिंता

85. निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:
1. यह हिमालय की तलहटी में एक पारिस्थितिकीय आंदोलन था।
2. यह केवल व्यावसायिक हितों का प्रतिनिधित्व करता था।
3. इसमें जीवन-निर्वहन की अर्थव्यवस्था और मुनाफे की अर्थव्यवस्था के बीच संघर्ष था।
4. इसने पर्वतीय गाँववासियों के रोष को भी प्रदर्शित किया।
5. इसमें महिलाओं की कोई भागीदारी नहीं थी।
उपरोक्त में से कौन से कथन सही हैं?
(A) केवल 2 और 5
(B) केवल 1, 3 और 4
(C) केवल 1, 2 and 5
(D) सभी कथन सही हैं

86. 1970 की अलकनंदा घाटी की बाढ़ को चिपको आंदोलन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना क्यों माना जाता है?
(A) क्योंकि इससे वनों की कटाई में तेजी आई।
(B) क्योंकि इसने गाँववासियों को वनों की कटाई, भूस्खलन और बाढ़ के बीच संबंध को समझाया।
(C) क्योंकि सरकार ने इसके बाद तुरंत मुआवजा दिया।
(D) क्योंकि यह एक मानव निर्मित बाढ़ थी।

87. बारदोली सत्याग्रह (1928) क्या था?
(A) नील की खेती के विरुद्ध एक आंदोलन
(B) साहूकारों के विरुद्ध एक विद्रोह
(C) वन नीतियों के विरुद्ध एक प्रतिरोध
(D) एक 'लगान विरोधी' अभियान

88. बिहार प्रोविंसिएल किसान सभा की स्थापना कब हुई?
(A) 1929
(B) 1936
(C) 1920
(D) 1947

89. तिभागा आंदोलन की मुख्य माँग क्या थी?
(A) भूमि का स्वामित्व

111. सामाजिक और व्यक्तिगत परिवर्तन के बीच द्वंद्वात्मक संबंध का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण क्या है?
(A) सामाजिक आंदोलन
(B) सामाजिक स्तरीकरण
(C) सामाजिक संस्थाएँ
(D) सामाजिक नियंत्रण

112. 19वीं सदी के सामाजिक सुधारों का विरोध करने वाले प्रतिरोधी आंदोलनों का क्या कारण था?
(A) सुधार समाज के लिए लाभकारी हैं।
(B) सुधार समाज के लिए विनाशकारी होंगे।
(C) सुधारों से कोई फर्क नहीं पड़ता।
(D) सुधारों का समर्थन किया जाना चाहिए।

113. 1946-47 का तिभागा आंदोलन मुख्य रूप से किस क्षेत्र की पट्टेदारी (साझा खेती) से संबंधित था?
(A) हैदराबाद
(B) बंगाल और उत्तरी बिहार
(C) पंजाब
(D) महाराष्ट्र

114. 'नए किसानों' के आंदोलन में उपद्रव के कौन से नए तरीके अपनाए गए?
(A) सड़कों एवं रेलमार्गों को बंद करना, राजनीतिज्ञों का बहिष्कार
(B) केवल याचिकाएँ देना
(C) केवल चुनाव लड़ना
(D) केवल अहिंसक धरने

115. दलित आंदोलनों को 'स्पर्श के लिए संघर्ष' क्यों कहा जाता है?
(A) यह शारीरिक संपर्क स्थापित करने के लिए है।
(B) यह केवल एक प्रतीकात्मक वाक्यांश है।
(C) यह अस्पृश्यता द्वारा उपलक्षित कलंक को समाप्त करने का संघर्ष है।
(D) यह आर्थिक समानता के लिए संघर्ष है।

116. 'सिएटल में विश्व व्यापार संगठन के विरुद्ध हुए विशाल विरोध का संगठन' किस माध्यम से किया गया था?
(A) समाचार पत्रों के माध्यम से
(B) रेडियो के माध्यम से
(C) व्यक्तिगत बैठकों के माध्यम से
(D) पाक्षिक रूप से इंटरनेट-आधारित संजाल द्वारा

117. 1981-82 में किस शहर में कपड़ा मिल मज़दूरों की एक बड़ी हड़ताल हुई थी?
(A) कलकत्ता
(B) मद्रास
(C) बंबई
(D) अहमदाबाद

118. निम्नलिखित घटनाओं को सही कालानुक्रमिक क्रम में व्यवस्थित करें:
1. ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की स्थापना
2. भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (INTUC) की स्थापना
3. बी. पी. वाडिया द्वारा प्रथम मज़दूर संघ की स्थापना
4. टेक्सटाइल लेबर ऐसोसिएशन (TLA) की स्थापना
(A) 3, 4, 1, 2
(B) 1, 3, 4, 2
(C) 4, 1, 2, 3
(D) 2, 3, 1, 4

119. सामाजिक आंदोलन में विचारधारा की क्या भूमिका होती है?
(A) इसकी कोई भूमिका नहीं होती।
(B) यह केवल नेतृत्व के लिए महत्वपूर्ण है।
(C) यह आंदोलन को कमजोर करती है।
(D) यह भाग लेने वाले लोगों के उद्देश्यों को एक करती है।

120. महिलाओं के आंदोलन के कारण कौन से महत्वपूर्ण कानूनी परिवर्तन हुए हैं?
(A) भू-स्वामित्व, रोज़गार, यौन-उत्पीड़न और दहेज से संबंधित कानून
(B) केवल भू-स्वामित्व के अधिकार
(C) केवल यौन-उत्पीड़न के विरुद्ध कानून
(D) महिलाओं के आंदोलन से कोई कानूनी परिवर्तन नहीं हुआ।

121. समाजशास्त्र का उदय किन ऐतिहासिक घटनाओं की पृष्ठभूमि में हुआ?
(A) प्रथम और द्वितीय विश्व युद्ध
(B) शीत युद्ध और भूमंडलीकरण
(C) फ्रांसिसी क्रांति और औद्योगिक क्रांति
(D) प्राचीन यूनानी और रोमन साम्राज्य

122. उस सामाजिक आंदोलन को क्या कहते हैं जो वर्तमान सामाजिक तथा राजनीतिक विन्यास को धीमे, प्रगतिशील चरणों द्वारा बदलने का प्रयास करता है?
(A) सुधारवादी आंदोलन
(B) क्रांतिकारी आंदोलन
(C) प्रतिरोधी आंदोलन
(D) प्रतिदानात्मक आंदोलन

123. निम्नलिखित में से कौन-सा एक 'नए सामाजिक आंदोलन' का उदाहरण है?
(A) वर्ग-आधारित कामगार आंदोलन
(B) राष्ट्रवादी स्वतंत्रता संग्राम
(C) सामंती-विरोधी किसान विद्रोह
(D) पर्यावरण आंदोलन

124. तेलंगाना आंदोलन (1946-51) किसके विरुद्ध था?
(A) ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन

(A) क्योंकि यह पूरी तरह से पुरुषों द्वारा नियंत्रित था।
(B) क्योंकि इसे सरकार से वित्तीय सहायता मिलती थी।
(C) क्योंकि यह राजनीतिक दलों और अन्य संगठनों से स्वतंत्र रूप से उभरा।
(D) क्योंकि यह केवल ग्रामीण क्षेत्रों तक सीमित था।

100. पितृसत्तात्मक समाज में पुरुषों पर किस प्रकार का दबाव होता है?
(A) भावनात्मक रूप से प्रकट होने का
(B) कमजोर दिखने का
(C) घरेलू काम करने का
(D) ताकतवर और सफल होने का

101. सन् 1918 में ब्रिटेन में किन्हें मतदान का अधिकार मिला?
(A) सभी वयस्क महिलाओं को बिना किसी भेदभाव या संपत्ति की शर्त के मतदान अधिकार।
(B) केवल भूमि और अन्य अचल संपत्ति के स्वामियों को ही मताधिकार की अनुमति देना।
(C) 21+ आयु के सभी पुरुष तथा विशिष्ट श्रेणियों वाली वयस्क महिलाएँ।
(D) केवल प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयी स्नातक पुरुषों को ही संसदीय चुनाव में मतदान का अवसर।

102. सतीप्रथा के समर्थकों ने इसके बचाव में किस संगठन की स्थापना की?
(A) ब्रह्म समाज
(B) धर्म सभा
(C) आर्य समाज
(D) प्रार्थना समाज

103. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): नए सामाजिक आंदोलन वर्ग की सीमाओं के आर-पार से भागीदारों को एकजुट करते हैं।
कारण (R): महिलाओं के आंदोलन में नगरीय, मध्यवर्गीय महिलावादी तथा गरीब कृषक महिलाएँ सभी शामिल होती हैं।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

104. 1974 की रेल कर्मचारियों की हड़ताल क्या दर्शाती है?
(A) राज और मज़दूर संघों के बीच तीव्र प्रतिरोध
(B) राज और मज़दूर संघों के बीच सहयोग
(C) अर्थव्यवस्था में तीव्र विकास
(D) मज़दूरों के बीच पूर्ण संतोष

105. 'अंबेडकरोत्तर दलित आंदोलनों' की क्या विशेषता बताई गई है?
(A) वे पूरी तरह से क्रांतिकारी थे।
(B) वे पूरी तरह से सुधारवादी थे।
(C) उनमें क्रांतिकारी और सुधारवादी दोनों परिपाटियाँ रही हैं।
(D) उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

106. भारत में 1954 तक पिछड़े वर्गों के लिए कितने संगठन काम कर रहे थे?
(A) 88
(B) 25
(C) 50
(D) 100

107. पूर्वोत्तर भारत में संजातीयता का उदय किसका परिणाम था?
(A) भारतीय मुख्यधारा में पूर्ण एकीकरण
(B) पारंपरिक स्वायत्तता का त्याग
(C) बाहरी प्रभाव को पूरी तरह से अपनाना
(D) जनजाति का एक सशक्त अज्ञात प्रणाली के संपर्क में आना

108. निम्नलिखित में से कौन सी विशेषता सामाजिक आंदोलनों को चिह्नित करने वाली विशेषताओं में शामिल नहीं है?
(A) संगठन और नेतृत्व
(B) अल्पकालिक और स्वतःस्फूर्त होना
(C) सदस्यों के बीच पारस्परिक संबंध
(D) एक सामान्य अभिमुखता

109. कार्ल मार्क्स से प्रभावित विद्वानों ने सामूहिक हिंसात्मक गतिविधि को किस दृष्टिकोण से देखा?
(A) अव्यवस्था फैलाने वाली शक्ति के रूप में
(B) एक अप्रासंगिक घटना के रूप में
(C) स्थापित व्यवस्था के लिए एक वैध प्रतिक्रिया के रूप में
(D) एक मानसिक बीमारी के रूप में

110. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (संगठन)
P. बिहार प्रोविंसिएल किसान सभा
Q. ऑल इंडिया किसान सभा
R. टेक्सटाइल लेबर ऐसोसिएशन
S. ऑल-इंडिया विमेंस कॉन्फ्रेंस
सूची II: (स्थापना वर्ष)
1. 1936
2. 1929
3. 1926
4. 1918
(A) P-2, Q-1, R-4, S-3
(B) P-1, Q-2, R-3, S-4
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

घटना
(B) सरकार द्वारा प्रस्तावित नई वन नीति
(C) क्षेत्रीय बाहरी ठेकेदारों का आगमन
(D) एक स्थानीय सहकारी संगठन का गठन

137. 19वीं सदी के समाज सुधार आंदोलनों की प्रकृति कैसी थी?
(A) ये केवल महिलाओं के मुद्दों पर केंद्रित थे।
(B) ये महिलाओं के मुद्दों के प्रति उदासीन थे।
(C) ये महिलाओं से संबंधित अनेक मुद्दों पर केंद्रित थे।
(D) ये केवल राजनीतिक सुधारों पर केंद्रित थे।

138. निम्नलिखित में से कौन सा कथन चिपको आंदोलन के बारे में असत्य है?
(A) इसमें केवल पुरुष गाँववासी ही शामिल थे।
(B) यह गाँववासियों की आजीविका की आवश्यकताओं से जुड़ा था।
(C) इसने पारिस्थितिकीय सुरक्षा के मुद्दे को उठाया।
(D) यह पूरी तरह से एक अहिंसक आंदोलन था।

139. 1966-67 में भारतीय अर्थव्यवस्था में भारी मंदी का क्या परिणाम हुआ?
(A) उत्पादन और रोज़गार में वृद्धि
(B) कीमतों में गिरावट
(C) सामाजिक संतोष
(D) उत्पादन और रोज़गार में कमी

140. नीचे दिए गए प्रश्न में एक अभिकथन (A) और एक कारण (R) दिया गया है। कथनों को पढ़िए और सही विकल्प का चयन कीजिए।
अभिकथन (A): दलित साहित्य सामाजिक तथा सांस्कृतिक क्रांति का आह्वान करता है।
कारण (R): कई दलित लेखक मानते हैं कि मुख्यधारा वाले समाज की कल्पनाशीलता सत्य को छुपाएगी, न कि प्रकट करेगी।
(A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
(B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं है।
(C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
(D) (A) असत्य है लेकिन (R) सत्य है।

141. सामाजिक आंदोलनों द्वारा विकसित विरोध के साधनों में क्या शामिल है?
(A) केवल पूर्व निर्धारित सभाएँ और जुलूस
(B) केवल सरकारी याचिकाएँ और औपचारिक पत्र
(C) मोमबत्ती जुलूस, नुक्कड़ नाटक, गीत और कविताएँ
(D) केवल पारंपरिक और संगठित चुनावी रैलियाँ

142. केरल के इज़हावा समुदाय के लोगों ने किसके नेतृत्व में अपनी सामाजिक प्रथाओं को बदला?
(A) महात्मा गांधी
(B) डॉ. अंबेडकर
(C) जोतिबा फुले
(D) नारायण गुरु

143. निम्नलिखित आंदोलनों में से कौन-सा एक 'क्रांतिकारी' आंदोलन का उदाहरण है?
(A) रूस की बोल्शेविक क्रांति
(B) सूचना का अधिकार अभियान
(C) भारत में राज्यों का भाषाई पुनर्गठन
(D) केरल में नारायण गुरु का आंदोलन

144. 'जनसंकुल' या 'भीड़' में 'नैतिक अर्थव्यवस्था' होने का क्या अर्थ है?
(A) वे आर्थिक रूप से बहुत समृद्ध और संपन्न समूह होते हैं।
(B) उनकी गतिविधियों के विषय में सही और गलत की एक साझी समझ होती है।
(C) वे हमेशा उच्चतम नैतिक और दार्शनिक सिद्धांतों का पालन करते हैं।
(D) वे केवल तात्कालिक आर्थिक लाभ के कारणों से प्रेरित होते हैं।

145. 'एकीकृत गंगा संरक्षण मिशन' और 'स्वच्छ भारत अभियान' किसके उदाहरण हैं?
(A) गैर-सरकारी संगठनों की पहल
(B) भारत सरकार द्वारा पारिस्थितिकी में सुधार के प्रयास
(C) नागरिक समाज के आंदोलन
(D) अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के कार्यक्रम

146. चंपारन सत्याग्रह (1917-18) का मुख्य कारण क्या था?
(A) नील की खेती से जुड़ी समस्याएँ
(B) अत्यधिक लगान
(C) वन अधिकार
(D) साहूकारों का शोषण

147. निम्नलिखित में से कौन सा युग्म गलत सुमेलित है?
(A) तिभागा आंदोलन - 1946-47
(B) तेलंगाना आंदोलन - 1946-51
(C) बिहार प्रोविंसिएल किसान सभा - 1939
(D) ऑल इंडिया किसान सभा - 1936

148. दल-रहित और क्षेत्रीय आधार पर संगठित किसान आंदोलन कब उभरे?
(A) 1920 के दशक में
(B) 1940 के दशक में
(C) 1890 के दशक में
(D) 1970 के दशक में

149. ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की स्थापना के समय कौन सी विचारधाराएँ इसमें शामिल थीं?
(A) केवल साम्यवादी विचारधारा
(B) केवल राष्ट्रवादी विचारधारा

(C) साम्यवादी, नरम दल और राष्ट्रवादी धाराएँ
(D) केवल नरम दल की विचारधारा

150. सामाजिक आंदोलन का अंतिम लक्ष्य क्या होता है?
(A) यथास्थिति बनाए रखना
(B) समाज में परिवर्तन लाना या परिवर्तन को रोकना
(C) केवल राजनीतिक शक्ति प्राप्त करना
(D) व्यक्तिगत लाभ अर्जित करना

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

सामाजिक आंदोलनों के समाजशास्त्रीय अध्ययन में 'संसाधन संघटन सिद्धांत' (Resource Mobilization Theory) एक महत्वपूर्ण दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह सिद्धांत 1970 के दशक में लोकप्रिय हुआ और इसने पारंपरिक दृष्टिकोणों को चुनौती दी जो आंदोलनों को केवल सामाजिक असंतोष, अभाव या तर्कहीन सामूहिक व्यवहार का परिणाम मानते थे। इसके विपरीत, संसाधन संघटन सिद्धांत यह तर्क देता है कि सामाजिक आंदोलन तर्कसंगत सामाजिक कर्ताओं द्वारा किए गए सचेत और रणनीतिक प्रयास हैं। इस सिद्धांत के अनुसार, किसी आंदोलन की सफलता केवल शिकायतों की उपस्थिति या गंभीरता पर निर्भर नहीं करती, बल्कि यह आंदोलनकारियों की विभिन्न प्रकार के संसाधनों को जुटाने की क्षमता पर निर्भर करती है। इन संसाधनों में धन, संगठनात्मक कौशल, राजनीतिक संपर्क, मीडिया तक पहुँच, स्वयंसेवकों का श्रम और प्रभावी नेतृत्व शामिल हैं। यह सिद्धांत मानता है कि समाज में असंतोष लगभग हमेशा मौजूद रहता है, लेकिन यह केवल तभी एक संगठित आंदोलन का रूप लेता है जब एक उद्यमी नेतृत्व इन संसाधनों को सफलतापूर्वक संगठित और निर्देशित करने में सक्षम होता है। यह सिद्धांत आंदोलनों को राजनीतिक प्रक्रिया का एक सामान्य हिस्सा मानता है, जहाँ विभिन्न समूह अपने हितों को आगे बढ़ाने के लिए प्रतिस्पर्धा करते हैं। इसने बाहरी समर्थन, गठबंधनों और राज्य की भूमिका के विश्लेषण पर भी जोर दिया, जिससे आंदोलनों के विकास और परिणामों की अधिक परिष्कृत समझ विकसित हुई।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

151. संसाधन संघटन सिद्धांत के अनुसार, सामाजिक आंदोलन का उदय मुख्य रूप से किस पर निर्भर करता है?
(A) समाज में व्याप्त व्यापक असंतोष और अभाव की चरम स्थिति पर।
(B) विभिन्न संसाधनों को सफलतापूर्वक जुटाने की रणनीतिक क्षमता पर।
(C) तर्कहीन और भावनात्मक सामूहिक व्यवहार की व्यापक प्रवृत्ति पर।
(D) सरकार की अचानक उत्पन्न कमजोरी और राजनीतिक पतन की स्थिति पर।

152. संसाधन संघटन सिद्धांत सामाजिक आंदोलनकारियों को किस रूप में देखता है?
(A) अपने लक्ष्यों के प्रति सचेत और रणनीतिक सामाजिक कर्ताओं के रूप में।
(B) तर्कहीन और भावनात्मक भीड़ के एक सामान्य सदस्य के रूप में।
(C) बाहरी राजनीतिक ताकतों द्वारा गुमराह किए गए लोगों के रूप में।
(D) केवल गहरे आर्थिक अभाव से प्रेरित और पीड़ित व्यक्तियों के रूप में।

153. निम्नलिखित में से कौन सा एक 'संसाधन' का उदाहरण नहीं है, जैसा कि अनुच्छेद में वर्णित है?
(A) आंदोलन के लिए वित्तीय दान।
(B) मीडिया में आंदोलन का कवरेज।
(C) समाज में शिकायतों की सामान्य उपस्थिति।
(D) एक अनुभवी नेता का संगठनात्मक कौशल।

154. पारंपरिक सिद्धांतों के विपरीत, संसाधन संघटन सिद्धांत किस बात पर जोर देता है?
(A) सामाजिक आंदोलन हमेशा तर्कहीन और अनियोजित होते हैं।
(B) असंतोष की पूर्ण अनुपस्थिति में भी बड़े आंदोलन हो सकते हैं।
(C) सामाजिक आंदोलन केवल परिपक्व लोकतांत्रिक समाजों में ही संभव हैं।
(D) केवल असंतोष पर्याप्त नहीं है, संसाधनों का संघटन आवश्यक है।

155. अनुच्छेद के अनुसार, संसाधन संघटन सिद्धांत सामाजिक आंदोलनों को क्या मानता है?
(A) सामाजिक व्यवस्था के लिए एक असामान्य और खतरनाक खतरा।
(B) मनोवैज्ञानिक तनाव की एक सामूहिक अभिव्यक्ति।
(C) राजनीतिक प्रक्रिया का एक सामान्य और अभिन्न अंग।
(D) केवल क्रांतिकारी परिवर्तनों के लिए एक साधन।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में सामाजिक आंदोलनों के अध्ययन में 'पुराने' और 'नए' सामाजिक आंदोलनों के बीच एक महत्वपूर्ण वैचारिक भेद उभरा। 'पुराने' सामाजिक आंदोलन, जो आम तौर पर औद्योगिक समाज के संदर्भ में देखे जाते हैं, मुख्य रूप से वर्ग-आधारित थे। इनका केंद्रीय सरोकार आर्थिक असमानता, उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण और राज्य सत्ता पर अधिकार जैसे मुद्दों से था। श्रमिक आंदोलन और किसान आंदोलन इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं, जिनका प्राथमिक लक्ष्य आर्थिक पुनर्वितरण और राजनीतिक शक्ति का पुनर्गठन था। ये आंदोलन अक्सर राजनीतिक दलों और ट्रेड यूनियनों जैसे औपचारिक संगठनों के माध्यम से संचालित होते थे। इसके विपरीत, 'नए' सामाजिक आंदोलन, जो 1960 और 1970 के दशक में उत्तर-औद्योगिक समाजों में प्रमुखता से उभरे, वर्ग और आर्थिक मुद्दों से परे जाते हैं। ये आंदोलन जीवन की गुणवत्ता, पहचान, स्वायत्तता और सांस्कृतिक अधिकारों पर केंद्रित होते हैं। महिला अधिकार आंदोलन, पर्यावरण आंदोलन,

शांति आंदोलन, और जातीय पहचान से जुड़े आंदोलन 'नए' सामाजिक आंदोलनों की श्रेणी में आते हैं। ये आंदोलन अक्सर विकेंद्रीकृत, गैर-पदानुक्रमित संगठनात्मक संरचनाओं का उपयोग करते हैं और विरोध के सांस्कृतिक और प्रतीकात्मक रूपों (जैसे प्रदर्शन, नागरिक अवज्ञा) पर अधिक जोर देते हैं। इनका आधार वर्ग-विशेष न होकर, ये विभिन्न सामाजिक पृष्ठभूमि के लोगों को आकर्षित करते हैं जो समान मूल्यों और जीवन शैली की चिंताओं को साझा करते हैं।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

156. अनुच्छेद के अनुसार, 'पुराने' सामाजिक आंदोलनों का मुख्य केंद्र क्या था?
(A) सांस्कृतिक पहचान और जीवन की गुणवत्ता।
(B) आर्थिक पुनर्वितरण और राज्य सत्ता।
(C) पर्यावरण संरक्षण और शांति।
(D) व्यक्तिगत स्वायत्तता और नागरिक अधिकार।

157. निम्नलिखित में से कौन सा 'नए' सामाजिक आंदोलन का एक विशिष्ट उदाहरण है?
(A) एक कारखाने में श्रमिक संघ द्वारा की गई हड़ताल का मामला।
(B) भूमि सुधारों के लिए संगठित किया गया एक किसान आंदोलन।
(C) एक पंजीकृत राजनीतिक दल द्वारा चलाया गया चुनाव अभियान।
(D) परमाणु ऊर्जा संयंत्र के विरुद्ध एक पर्यावरण संरक्षण आंदोलन।

158. 'पुराने' और 'नए' सामाजिक आंदोलनों के बीच संगठनात्मक संरचना में मुख्य अंतर क्या है?
(A) पुराने आंदोलन औपचारिक थे, जबकि नए अक्सर गैर-पदानुक्रमित हैं।
(B) पुराने आंदोलन विकेंद्रीकृत थे, जबकि नए आंदोलन पदानुक्रमित हैं।
(C) नए आंदोलनों का नेतृत्व हमेशा स्थापित राजनीतिक दल ही करते हैं।
(D) पुराने आंदोलनों में किसी भी प्रकार का औपचारिक संगठन नहीं होता था।

159. 'नए' सामाजिक आंदोलनों का सामाजिक आधार क्या होता है?
(A) यह सक्रिय रूप से और सख्ती से एक ही आर्थिक वर्ग तक सीमित होता है।
(B) यह आधार भौगोलिक रूप से केवल दूरस्थ ग्रामीण आबादी तक ही सीमित है।
(C) यह विभिन्न पृष्ठभूमियों के उन लोगों को जोड़ता है जिनके मूल्य समान हैं।
(D) इसमें केवल उच्च शिक्षित और संपन्न शहरी मध्यवर्ग ही शामिल होता है।

160. अनुच्छेद के अनुसार, 'नए' सामाजिक आंदोलन किन मुद्दों पर अधिक जोर देते हैं?
(A) जीवन की गुणवत्ता, पहचान और सांस्कृतिक अधिकार।
(B) केवल उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण।
(C) केवल राजनीतिक शक्ति पर कब्जा करना।
(D) केवल मजदूरी और काम के घंटे।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।
भारत में स्वातंत्र्योत्तर काल में कृषक आंदोलनों का स्वरूप और चरित्र समय के साथ परिवर्तित हुआ है। प्रारंभिक दशकों के आंदोलन मुख्य रूप से भूमि सुधार, जमींदारी उन्मूलन और काश्तकारों के अधिकारों जैसे मुद्दों पर केंद्रित थे, जो औपनिवेशिक काल की विरासत थे। हालाँकि, 1960 के दशक के अंत और 1970 के दशक में हरित क्रांति के आगमन ने भारतीय कृषि और ग्रामीण समाज में एक नया मोड़ ला दिया। हरित क्रांति ने जहाँ एक ओर खाद्यान्न उत्पादन में आत्मनिर्भरता लाई, वहीं दूसरी ओर इसने ग्रामीण भारत में एक नई स्तरीकरण प्रणाली को जन्म दिया। इससे पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्रों में धनी और मध्यम किसानों का एक नया वर्ग उभरा। 1980 के दशक तक, इन्हीं क्षेत्रों से 'नए किसान आंदोलनों' का उदय हुआ, जिनका चरित्र पिछले आंदोलनों से भिन्न था। ये आंदोलन अब केवल भूमि या मजदूरी के लिए संघर्ष नहीं कर रहे थे, बल्कि इनका मुख्य ध्यान 'व्यापार की शर्तों' (terms of trade) पर था। इन आंदोलनों का तर्क था कि सरकारी नीतियां जानबूझकर कृषि उत्पादों की कीमतें कम रखती हैं जबकि औद्योगिक उत्पादों और कृषि आदानों (जैसे उर्वरक, बीज) की कीमतें बढ़ाती हैं, जिससे ग्रामीण 'भारत' का शहरी 'इंडिया' द्वारा शोषण हो रहा है। भारतीय किसान यूनियन जैसे संगठनों के नेतृत्व में, इन आंदोलनों ने कृषि उत्पादों के लिए लाभकारी मूल्य, ऋण माफी और कृषि पर सब्सिडी की मांग की। उन्होंने अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए रास्ता रोको, रेल रोको और शहरों में दूध और सब्जियों की आपूर्ति बाधित करने जैसे नए और प्रभावी विरोध के तरीके अपनाए।
उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

161. हरित क्रांति ने भारतीय ग्रामीण समाज को किस प्रकार प्रभावित किया?
(A) इसने पूरे देश के सभी कृषि क्षेत्रों में समान रूप से समृद्धि लाई।
(B) इसने पारंपरिक और पुरानी जमींदारी व्यवस्था को और अधिक मजबूत किया।
(C) इसके प्रत्यक्ष परिणामस्वरूप कुल कृषि उत्पादन में भारी गिरावट आई।
(D) इसने धनी किसानों का वर्ग बनाया और क्षेत्रीय असमानता को बढ़ाया।

162. 'नए किसान आंदोलनों' का मुख्य मुद्दा क्या था, जो उन्हें पुराने आंदोलनों से अलग करता है?
(A) जमींदारी प्रथा का पूर्ण उन्मूलन।

(B) हैदराबाद राज्य की सामंती दशाएँ
(C) नील के बागान मालिक
(D) साहूकारों का एकाधिकार

125. 1920 में स्थापित एटक (AITUC) में नरम दल की अगुआई कौन कर रहे थे?
(A) एस. ए. डांगे और एम. एन. राय
(B) लाला लाजपत राय और जवाहरलाल नेहरू
(C) एन. एम. जोशी और वी. वी. गिरी
(D) महात्मा गांधी और बी. पी. वाडिया

126. भारत में 'चाय बागानों को लगाने का काम' किस समय के आसपास शुरू हुआ?
(A) 1857
(B) 1901
(C) 1793
(D) 1839

127. 'पुराने' सामाजिक आंदोलनों का केंद्रीय लक्ष्य क्या था?
(A) शक्ति संबंधों का पुनर्गठन
(B) जीवन की गुणवत्ता में सुधार
(C) सांस्कृतिक पहचान का संरक्षण
(D) पर्यावरणीय सुरक्षा

128. 'अनक्वाइट वुड्स' नामक पुस्तक के अनुसार, चिपको आंदोलन में गाँववासियों ने किन पेड़ों को बचाने का प्रयास किया?
(A) सागौन और साल
(B) ओक और रोहोडैंड्रोन
(C) देवदार और चीड़
(D) नीम और पीपल

129. 'नागरिक समाज' की विस्तृत परिभाषा में आज क्या शामिल है?
(A) केवल राजनीतिक दल
(B) पुराने सामाजिक आंदोलन और नए गैर सरकारी संगठन दोनों
(C) केवल मज़दूर संघ
(D) केवल सरकारी संस्थाएँ

130. सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:
सूची I: (क्षेत्र/मुद्दा)
P. पर्यावरण
Q. महिला
R. किसान
S. दलित
सूची II: (आंदोलन/अभियान)
1. बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ
2. चिपको आंदोलन
3. आदि धर्म आंदोलन
4. तिभागा आंदोलन
(A) P-1, Q-2, R-3, S-4
(B) P-2, Q-1, R-4, S-3
(C) P-3, Q-4, R-1, S-2
(D) P-4, Q-3, R-2, S-1

131. 'सामाजिक आंदोलन' और 'सामाजिक परिवर्तन' में क्या अंतर है?
(A) दोनों एक ही हैं।
(B) सामाजिक परिवर्तन विशिष्ट उद्देश्य निर्देशित होता है, जबकि आंदोलन नहीं।
(C) सामाजिक आंदोलन विशिष्ट उद्देश्य निर्देशित होता है, जबकि सामाजिक परिवर्तन एक वृहद प्रक्रिया है।
(D) सामाजिक आंदोलन में प्रयास शामिल नहीं होते, जबकि परिवर्तन में होते हैं।

132. निम्नलिखित में से कौन सा कथन 'नए सामाजिक आंदोलनों' की प्रकृति को सही ढंग से वर्णित नहीं करता है?
(A) ये आंदोलन वर्ग की सीमाओं के आर-पार से भागीदारों को एकजुट करते हैं।
(B) पहचान की राजनीति और सांस्कृतिक चिंताएँ इनकी रचना के आवश्यक तत्व हैं।
(C) ये आर्थिक असमानता के साथ-साथ अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों को भी शामिल करते हैं।
(D) इनकी उत्पत्ति हमेशा वर्ग-आधारित असमानता में ढूँढ़ी जा सकती है।

133. जोतिबा फुले द्वारा शुरू किया गया आंदोलन किस प्रकार का था?
(A) ब्राह्मण-समर्थक आंदोलन
(B) केवल आर्थिक आंदोलन
(C) गैर-ब्राह्मण आंदोलन
(D) केवल राजनीतिक आंदोलन

134. बिरसा मुंडा की मृत्यु के बाद झारखंड आंदोलन में उनकी क्या स्थिति बन गई?
(A) उन्हें भुला दिया गया।
(B) वे आंदोलन के एक प्रमुख प्रतीक बन गए।
(C) उनकी केवल एक नकारात्मक छवि प्रस्तुत की गई।
(D) उनका उल्लेख केवल सरकारी दस्तावेजों में ही सीमित रहा।

135. 'लैंगिक दृष्टि से समतावादी समाज' किन दो मुख्य कारकों पर आधारित है?
(A) पुरुषों की शिक्षा और रोजगार
(B) केवल आर्थिक विकास
(C) केवल राजनीतिक स्थिरता
(D) महिलाओं की शिक्षा और संतुलित यौनिक अनुपात

136. वह कौन सी घटना थी जिसने गाँववासियों को वनों की अंधाधुंध कटाई और बाढ़ के बीच के संबंध को देखने पर मजबूर किया?
(A) 1970 की अनपेक्षित भारी वर्षा और विनाशकारी बाढ़ की

(B) वे केवल मुख्यधारा की चुनावी राजनीति की प्रक्रिया पर विश्वास करते थे।
(C) वे पूरी तरह से केवल सांकेतिक और अहिंसक तरीकों तक ही सीमित थे।
(D) वे अधिक जुझारू, क्रांतिकारी और सीधा टकराव का रुख अपनाते थे।

निर्देश : कृपया निम्नलिखित स्रोत को ध्यानपूर्वक पढ़ें।

भारत में पारिस्थितिकीय आंदोलन, विशेष रूप से चिपको आंदोलन जैसे जमीनी स्तर के संघर्ष, अक्सर पश्चिमी पर्यावरणवाद से मौलिक रूप से भिन्न होते हैं। पश्चिम में पर्यावरणवाद का उदय अक्सर समृद्धि के बाद हुआ और इसका मुख्य सरोकार प्रकृति के सौन्दर्य को संरक्षित करने और औद्योगिक प्रदूषण से जीवन की गुणवत्ता को बचाने से था। इसके विपरीत, भारत जैसे विकासशील देश में कई पारिस्थितिकीय आंदोलन 'गरीबों के पर्यावरणवाद' (Environmentalism of the Poor) का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह एक ऐसा संघर्ष है जो सीधे तौर पर अस्तित्व और आजीविका के प्रश्नों से जुड़ा हुआ है। यहाँ, पर्यावरण कोई अमूर्त या मनोरम दृश्य नहीं है, बल्कि एक 'जीवन-निर्वाह अर्थव्यवस्था' (subsistence economy) का आधार है। वन, नदियाँ और भूमि स्थानीय समुदायों के लिए ईंधन, चारा, भोजन और पानी के प्रत्यक्ष स्रोत हैं। जब विकास की बड़ी परियोजनाएं, जैसे कि बांध, खनन या वाणिज्यिक वनीकरण, इन संसाधनों का अधिग्रहण करती हैं, तो यह इन समुदायों के जीवन और आजीविका पर सीधा हमला होता है। इसलिए, चिपको आंदोलन केवल पेड़ों को बचाने का आंदोलन नहीं था; यह उन ग्रामीण समुदायों, विशेष रूप से महिलाओं, के अधिकारों का संघर्ष था जिनकी आजीविका वन पारिस्थितिकी तंत्र पर निर्भर थी। यह 'लाभ की अर्थव्यवस्था' (economy of profit) और 'जीवन की अर्थव्यवस्था' (economy of life) के बीच का संघर्ष था। इस प्रकार, भारत में पारिस्थितिकीय आंदोलन अक्सर सामाजिक न्याय, मानवाधिकारों और संसाधनों के समान वितरण के आंदोलनों से अविभाज्य रूप से जुड़े हुए हैं।

उपर्युक्त स्रोत के आधार पर निम्नलिखित पाँच प्रश्नों का उत्तर दीजिए।

171. अनुच्छेद के अनुसार, 'गरीबों का पर्यावरणवाद' किस बात पर जोर देता है?
(A) केवल दुर्लभ और संकटग्रस्त जंगली प्रजातियों के संरक्षण पर।
(B) औद्योगिक विकास की सभी प्रक्रियाओं को पूरी तरह से रोकने पर।
(C) पर्यावरण और मानव अस्तित्व तथा आजीविका के प्रत्यक्ष संबंध पर।
(D) केवल बड़े शहरी क्षेत्रों में बढ़ते हुए प्रदूषण को कम करने पर।

172. 'जीवन-निर्वाह अर्थव्यवस्था' का क्या अर्थ है?
(A) एक ऐसी अर्थव्यवस्था जो पूरी तरह आधुनिक औद्योगिक उत्पादन पर आधारित है।
(B) एक ऐसी प्रणाली जहाँ लोग बुनियादी जरूरतों हेतु प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हैं।
(C) एक विशाल और जटिल वैश्विक मुक्त व्यापार वाली वाणिज्यिक प्रणाली।
(D) एक ऐसी अर्थव्यवस्था जो केवल वित्तीय लाभ को अधिकतम करने पर केंद्रित है।

173. अनुच्छेद चिपको आंदोलन को किस प्रकार के संघर्ष के रूप में वर्णित करता है?
(A) दो विरोधी राजनीतिक दलों के बीच चल रहा एक सामान्य सत्ता संघर्ष।
(B) विशुद्ध रूप से एक तकनीकी और वैज्ञानिक प्रकृति संरक्षण का प्रयास।
(C) एक बाहरी संस्था द्वारा पूर्णतः नियोजित और वित्त पोषित आंदोलन।
(D) 'लाभ की अर्थव्यवस्था' और 'जीवन की अर्थव्यवस्था' के बीच का संघर्ष।

174. पश्चिमी पर्यावरणवाद और भारत में कई पारिस्थितिकीय आंदोलनों के बीच मुख्य अंतर क्या है?
(A) पश्चिमी रूप गुणवत्ता से और भारतीय रूप अस्तित्व से संबंधित है।
(B) पश्चिमी पर्यावरणवाद अन्य आंदोलनों की तुलना में अधिक सफल है।
(C) भारत में ये आंदोलन पारंपरिक रूप से केवल पुरुषों द्वारा चलाए जाते हैं।
(D) भारत में पर्यावरण आंदोलनों का आधुनिक प्रौद्योगिकी से कोई संबंध नहीं है।

175. भारत में पारिस्थितिकीय आंदोलन अक्सर किन अन्य आंदोलनों से जुड़ जाते हैं?
(A) केवल देश में चल रहे धार्मिक पुनरुत्थान के विभिन्न आंदोलनों से।
(B) केवल क्षेत्रीय आधार पर गठित भाषाई पहचान के विभिन्न आंदोलनों से।
(C) सामाजिक न्याय और संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण के आंदोलनों से।
(D) देश में हो रहे बड़े औद्योगिक और कॉर्पोरेट विस्तार के आंदोलनों से।

गई और वे चुनावी लोकतंत्र में निर्णायक भूमिका निभाने लगीं। यह प्रक्रिया आजादी के बाद भी जारी रही और भारतीय राजनीति की एक स्थायी विशेषता बन गई, जहाँ जाति और विकास के मुद्दे साथ-साथ चलते हैं।

54. (B) मध्य भारत की 'जनजातीय बेल्ट'
भारत के अधिकांश जनजातीय आंदोलन मध्य भारत के उन क्षेत्रों में केंद्रित रहे हैं जिन्हें अक्सर 'जनजातीय बेल्ट' कहा जाता है। इस क्षेत्र में झारखंड, छत्तीसगढ़, मध्य प्रदेश और ओडिशा के हिस्से शामिल हैं। यहाँ आंदोलनों का मुख्य कारण भूमि का अधिग्रहण, वनों की कटाई और बाहरी लोगों द्वारा स्थानीय संसाधनों का शोषण रहा है, जिसके कारण आदिवासियों ने बार-बार विद्रोह किए।
इन क्षेत्रों में जनजातीय समुदायों की सघन आबादी है जो अपनी संस्कृति और जमीन के प्रति अत्यंत संवेदनशील रहे हैं। ब्रिटिश काल से ही यहाँ बड़े पैमाने पर प्रतिरोध हुए हैं, जिनमें बिरसा मुंडा का विद्रोह अत्यंत प्रसिद्ध है। ये आंदोलन न केवल राजनीतिक स्वायत्तता के लिए थे, बल्कि अपनी विशिष्ट जीवन पद्धति और प्राकृतिक पर्यावरण को बचाने के लिए भी थे।

55. (D) P-2, Q-1, R-4, S-3
संथाल जनजाति मुख्य रुप से संथाल परगना से जुड़ी है जहाँ उन्होंने 1855 में ऐतिहासिक विद्रोह किया था। मुंडा जनजाति का मुख्य केंद्र छोटानागपुर क्षेत्र रहा है, जबकि ओरांव जनजाति झारखंड और इसके आसपास के इलाकों में सक्रिय थी। हो जनजाति मध्य भारत के विभिन्न क्षेत्रों में फैली हुई है। यह मिलान जनजातियों के उनके भौगोलिक निवास और उनके ऐतिहासिक प्रभाव क्षेत्रों को स्पष्ट करता है।
इन सभी जनजातियों का इतिहास संघर्षों से भरा रहा है। उन्होंने बाहरी दखलंदाजी और शोषण के विरुद्ध समय-समय पर अपनी आवाज उठाई है। उनके इन आंदोलनों ने ही आगे चलकर अलग राज्यों की मांग और स्वायत्तता के संघर्षों को मजबूती प्रदान की। यह जनजातीय पहचान के निर्माण और उनके सांस्कृतिक संरक्षण के प्रयासों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

56. (A) बिरसा मुंडा
बिरसा मुंडा झारखंड आंदोलन के सबसे प्रतिष्ठित और करिश्माई नेता थे। उन्होंने उन्नीसवीं सदी के अंत में ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन और दमनकारी जमींदारी प्रथा के विरुद्ध 'उलगुलान' नामक एक महान विद्रोह का नेतृत्व किया। वे न केवल एक योद्धा थे, बल्कि एक आध्यात्मिक गुरु भी थे जिन्होंने आदिवासियों को अपनी जमीन और संस्कृति के प्रति गौरव महसूस करने के लिए प्रेरित किया।
उनकी मृत्यु के बाद भी वे जनजातीय प्रतिरोध के एक अमर प्रतीक बन गए। आज भी झारखंड और आसपास के क्षेत्रों में उन्हें भगवान की तरह पूजा जाता है। उनके नेतृत्व में हुए संघर्ष ने यह सिद्ध कर दिया कि आदिवासी समुदाय अपनी स्वायत्तता और अधिकारों के लिए बड़ी से बड़ी शक्ति से टकराने का साहस रखते हैं, जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊर्जा दी।

57. (C) ईसाई मिशनरी
झारखंड और अन्य जनजातीय क्षेत्रों में आधुनिक शिक्षा और साक्षरता के प्रसार में ईसाई मिशनरियों ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उन्होंने दूर-दराज के इलाकों में स्कूल और अस्पताल खोले जिससे आदिवासियों के एक वर्ग को शिक्षित होने का अवसर मिला। इस शिक्षा ने जनजातीय युवाओं में एक नई चेतना पैदा की और उन्हें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाया, जिसने आगे चलकर राजनीतिक आंदोलनों को बल दिया।
हालाँकि मिशनरियों का प्राथमिक उद्देश्य धर्म परिवर्तन था, लेकिन उनके द्वारा प्रदान की गई शिक्षा ने आदिवासियों को आधुनिक दुनिया और कानूनों को समझने में मदद की। इस शिक्षित वर्ग ने ही बाद में झारखंड आंदोलन का बौद्धिक नेतृत्व किया और बाहरी शोषण के विरुद्ध तार्किक ढंग से अपनी मांगें रखीं। यह जनजातीय समाज में आए एक बड़े सामाजिक और शैक्षिक परिवर्तन का काल था।

58. (A) प्रवासी व्यापारी और महाजन जो क्षेत्र में बस गए थे
झारखंड आंदोलन के संदर्भ में 'दिक्कु' शब्द उन बाहरी लोगों के लिए प्रयोग किया जाता था जो व्यापार या अन्य कार्यों के लिए जनजातीय क्षेत्रों में आए और वहीं बस गए। इनमें मुख्य रुप से महाजन, सूदखोर और व्यापारी शामिल थे जिन्होंने आदिवासियों की जमीन पर कब्जा किया और उनका आर्थिक शोषण किया। आदिवासियों की नजर में दिक्कु उनके सभी दुखों और गरीबी का मुख्य कारण थे।
दिक्कुओं के प्रति यह रोष जनजातीय विद्रोहों का एक बहुत बड़ा प्रेरणा स्रोत रहा है। आदिवासियों को लगा कि ये बाहरी लोग उनकी संस्कृति और आजीविका को नष्ट कर रहे हैं। 'दिक्कुओं का भगाओ' आंदोलन का एक प्रमुख नारा बन गया था। यह संघर्ष स्थानीय बनाम बाहरी के बीच के गहरे तनाव को दर्शाता है जिसने जनजातीय राजनीति को एक विशिष्ट स्वरूप प्रदान किया।

59. (D) दिक्कुओं के व्यापार को बढ़ावा देना
झारखंड आंदोलन का मुख्य उद्देश्य जनजातीय हितों की रक्षा करना था, इसलिए 'दिक्कुओं' के व्यापार को बढ़ावा देना उनके एजेंडे में कभी शामिल नहीं था। इसके विपरीत, आंदोलनकारियों ने सिंचाई परियोजनाओं के कारण होने वाले विस्थापन, वन उत्पादों के राष्ट्रीयकरण और रुके हुए सर्वेक्षणों जैसे गंभीर मुद्दों को उठाया। वे चाहते थे कि संसाधनों पर पहला अधिकार वहां के मूल निवासियों का हो।
आंदोलन का पूरा जोर बाहरी शोषण को समाप्त करने और स्थानीय स्वायत्तता प्राप्त करने पर था। दिक्कुओं का वर्चस्व खत्म करना उनके संघर्ष का एक बुनियादी हिस्सा था। उन्होंने अपनी मांगें इस आधार पर रखीं कि विकास के नाम पर आदिवासियों की आजीविका छीनी जा रही है। इस प्रकार, यह आंदोलन सामाजिक न्याय और क्षेत्रीय पहचान को पुनर्जीवित करने का एक गंभीर प्रयास था।

का रूप ले लेता है। बालिकाओं की शिक्षा की मांग के विरुद्ध किया गया विरोध इसी श्रेणी में आता है क्योंकि यह पारंपरिक ढांचे को बचाना चाहता था। ऐसे आंदोलनों का तर्क अक्सर यह होता है कि बदलाव समाज की स्थिरता को बिगाड़ देगा। यह उदाहरण स्पष्ट करता है कि सामाजिक आंदोलन केवल बदलाव के लिए ही नहीं, बल्कि बदलाव को रोकने के लिए भी हो सकते हैं। सुधारवादियों और विरोधियों के बीच का यह संघर्ष सामाजिक विकास की एक सामान्य प्रक्रिया है। प्रतिरोधी समूह अक्सर धार्मिक या सांस्कृतिक मान्यताओं का सहारा लेकर अपनी मांगों को प्रस्तुत करते हैं।

8. (C) केवल 1, 2 और 4
सामाजिक आंदोलन की प्रमुख विशेषताओं में निरंतर सामूहिक गतिविधियां और राज्य की नीतियों में बदलाव की मांग शामिल होती है। भाग लेने वाले व्यक्तियों के बीच उद्देश्यों और विचारधारा की समानता उन्हें एक सूत्र में बांधती है। यह कथन कि इनमें संगठन और नेतृत्व का अभाव होता है, पूरी तरह गलत है क्योंकि इनके बिना आंदोलन लंबे समय तक टिक नहीं सकते।
एक सफल सामाजिक आंदोलन के लिए सुव्यवस्थित संरचना और प्रभावी नेतृत्व अनिवार्य घटक हैं। ये तत्व आंदोलन को दिशा प्रदान करते हैं और मांगों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में मदद करते हैं। विचारधारा आंदोलनकारियों को प्रेरित करती है और उन्हें कठिन परिस्थितियों में भी एकजुट रहने की शक्ति प्रदान करती है।

9. (C) अहिंसा, सत्याग्रह, और चरखे का प्रयोग
महात्मा गांधी ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में विरोध के अत्यंत मौलिक और प्रभावी तरीके पेश किए थे। उन्होंने अहिंसा और सत्याग्रह को केवल नैतिक मूल्य नहीं बल्कि राजनीतिक हथियार बनाया। इसके साथ ही, चरखे का प्रयोग और खादी पहनना आर्थिक स्वावलंबन और ब्रिटिश वस्तुओं के बहिष्कार का प्रतीक बन गया जिसने आम जनता को राष्ट्रीय आंदोलन से जोड़ा।
इन नवीन तरीकों ने समाज के हर वर्ग को सक्रिय रूप से शामिल होने का अवसर दिया। गांधीजी का विरोध केवल सत्ता के विरुद्ध नहीं था, बल्कि वह आत्मनिर्भरता और सादगी पर भी आधारित था। इन प्रतीकों ने भारतीय जनमानस में राष्ट्रीयता की भावना को गहराई से स्थापित किया और संघर्ष को लोकप्रिय बनाया।

10. (B) केवल 2, 3 और 4
सामाजिक आंदोलन जनमत तैयार करने के लिए मशाल जुलूस, नुक्कड़ नाटक और गीतों जैसे रचनात्मक साधनों का उपयोग करते हैं। गांधीजी ने नमक कानून को भंग कर प्रतीकात्मक विरोध की शक्ति दिखाई थी। यह कहना गलत है कि आंदोलन केवल सभाएं करते हैं या उनमें प्रचार योजनाओं का अभाव होता है, क्योंकि वे व्यापक रणनीति पर काम करते हैं।
सफल आंदोलनों के पीछे विस्तृत योजना और प्रभावी संचार तंत्र होता है। वे विभिन्न प्रकार के प्रतीकों का सहारा लेकर अपनी बात जनता और शासन तक पहुँचाते हैं। विरोध के ये विविध रूप लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ते हैं और आंदोलन के उद्देश्यों को समाज के निचले स्तर तक ले जाते हैं।

11. (D) क्योंकि वे स्थापित सामाजिक व्यवस्था हेतु प्रत्यक्ष चुनौती प्रस्तुत करते थे
एमिल दुर्खाइम जैसे शुरुआती समाजशास्त्री सामाजिक एकीकरण और व्यवस्था पर अधिक बल देते थे। उनके दृष्टिकोण में सामाजिक आंदोलन मौजूदा संरचना में व्यवधान पैदा करने वाली शक्तियां थे जो अशांति लाते थे। चूंकि ये आंदोलन स्थापित नियमों और राजसत्ता को चुनौती देते थे, इसलिए उन्हें समाज की स्थिरता के लिए खतरा माना जाता था और अव्यवस्था का स्रोत देखा जाता था।
उस काल में समाजशास्त्र का मुख्य सरोकार यह था कि समाज कैसे एक साथ बंधा रहता है। आंदोलनों द्वारा किए जाने वाले परिवर्तन अक्सर पारंपरिक ढांचों को तोड़ते थे। इसी कारण से, रूढ़िवादी विद्वान इन्हें नकारात्मक दृष्टि से देखते थे और इन्हें सामाजिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक प्रभाव के रूप में व्याख्यायित करते थे।

12. (B) उन्होंने तर्क दिया कि भीड़ में 'नैतिक अर्थव्यवस्था' होती है।
समाजशास्त्री ई.पी. थॉमसन ने पारंपरिक धारणा को बदलते हुए तर्क दिया कि भीड़ की गतिविधियां अराजक नहीं होतीं। उन्होंने 'नैतिक अर्थव्यवस्था' की अवधारणा पेश की, जिसका अर्थ है कि विरोध करने वाले लोगों के बीच सही और गलत की अपनी एक साझी समझ होती है। उनके अनुसार, लोग तब विद्रोह करते हैं जब उनकी बुनियादी आवश्यकताओं या पारंपरिक अधिकारों का उल्लंघन होता है।
थॉमसन का यह विचार दर्शाता है कि सामान्य जनता के कार्यों के पीछे भी तार्किक कारण और मूल्य होते हैं। उन्होंने गरीबों और वंचितों के विरोध प्रदर्शनों को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण माना। यह समझ आंदोलनों के अध्ययन में एक नया मोड़ लेकर आई, जिससे भीड़ को केवल गुंडों का समूह मानना बंद किया गया।

13. (A) 3, 1, 4, 2
ऐतिहासिक घटनाओं के क्रम में ब्रिटेन की औद्योगिक क्रांति अठारहवीं सदी के मध्य में शुरु हुई, जो सबसे पहले आती है। इसके बाद 1789 की फ्रांसिसी क्रांति हुई जिसने वैश्विक राजनीति को प्रभावित किया। रूस की बोल्शेविक क्रांति 1917 में घटित हुई और अंत में 1947 में भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई। यह कालक्रम सामाजिक-आर्थिक परिवर्तनों के इतिहास को दर्शाता है।
इन घटनाओं ने दुनिया भर में नए सामाजिक आंदोलनों और विचारधाराओं को जन्म दिया। औद्योगिक क्रांति ने श्रमिक आंदोलनों की नींव रखी, जबकि फ्रांसिसी क्रांति ने समानता और स्वतंत्रता के आदर्श स्थापित किए। रूस की क्रांति ने साम्यवाद को बढ़ावा दिया और भारत की स्वतंत्रता उपनिवेशवाद के अंत का प्रतीक बनी, जिससे नए राष्ट्र उभरे।

14. (D) ई.पी. थॉमसन
'नैतिक अर्थव्यवस्था' की प्रसिद्ध अवधारणा ई.पी. थॉमसन द्वारा विकसित की गई थी। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि भीड़ द्वारा किए

मजदूरों के पास तब न तो संगठन थे और न ही कानूनी संरक्षण। काम के घंटे असीमित थे और बच्चों से भी कठिन परिश्रम कराया जाता था। सरकार ने काफी बाद में दबाव बढ़ने पर ही कुछ शुरुआती श्रम कानून बनाए थे। इसी शून्यता और अन्याय के वातावरण ने आगे चलकर भारत में संगठित मजदूर आंदोलनों के उदय को प्रेरित किया।

41. (C) बी. पी. वाडिया
भारत में आधुनिक मजदूर संघ की नींव रखने का श्रेय बी. पी. वाडिया को जाता है, जिन्होंने अप्रैल 1918 में मद्रास लेबर यूनियन की स्थापना की। यह भारत का पहला औपचारिक रूप से गठित श्रमिक संगठन था जिसने मजदूरों की मांगों को संगठित तरीके से प्रस्तुत किया। उनके इस कदम ने पूरे देश में श्रमिक चेतना को जागृत करने और अन्य मजदूर संघों के गठन के लिए प्रेरणा दी।
वाडिया के प्रयासों ने यह दिखाया कि सामूहिक सौदेबाजी के माध्यम से मजदूर अपने अधिकारों की रक्षा कर सकते हैं। यह संगठन केवल आर्थिक मांगों तक सीमित नहीं था, बल्कि इसने मजदूरों में आत्मसम्मान की भावना भी पैदा की। इसके बाद ही भारत के अन्य औद्योगिक केंद्रों में भी इसी तरह के संगठनों की बाढ़ सी आ गई, जो एक बड़े आंदोलन में बदल गया।

42. (A) यह वृहद आधारों और विभिन्न विचारधाराओं वाला संगठन था।
1920 में स्थापित ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) भारतीय मजदूर आंदोलन के इतिहास में एक मील का पत्थर थी। इसमें कम्युनिस्ट, राष्ट्रवादी और उदारवादी जैसे विभिन्न विचारधाराओं के नेता एक साथ शामिल थे। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य मजदूरों की समस्याओं को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ना और उनके अधिकारों के लिए एक एकीकृत आवाज उठाना था।
एटक की स्थापना ने यह सुनिश्चित किया कि श्रमिकों की आवाज केवल कारखानों तक सीमित न रहे बल्कि उसे राजनीतिक मंच भी मिले। लाला लाजपत राय इसके पहले अध्यक्ष थे, जिन्होंने मजदूरों के हितों को सर्वोपरि रखा। इस संगठन की व्यापकता ने ब्रिटिश सरकार को मजबूर किया कि वह श्रमिकों की मांगों पर गंभीरता से विचार करे।

43. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
बी.पी. वाडिया ने भारत के प्रथम मजदूर संघ की स्थापना की थी। महात्मा गांधी ने अहमदाबाद में टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन (टी.एल.ए.) का गठन किया जो ट्रस्टीशिप के सिद्धांत पर आधारित था। एस.ए. डांगे एटक के भीतर साम्यवादी विचारधारा के प्रमुख नेता थे, जबकि लाला लाजपत राय ने एटक में राष्ट्रवादी धारा का प्रतिनिधित्व किया और इसके पहले अध्यक्ष बने।
नेताओं का यह मिलान भारत के श्रमिक आंदोलनों में मौजूद विविध वैचारिक धाराओं को स्पष्ट करता है। जहाँ गांधीजी संघर्ष के बजाय सुलह और शांति पर जोर देते थे, वहीं साम्यवादी नेता अधिक आक्रामक रवैया अपनाते थे। इन सभी धाराओं ने मिलकर भारतीय मजदूरों के अधिकारों को मजबूत करने और उन्हें राजनीतिक रूप से सक्रिय बनाने में अपना अमूल्य योगदान दिया।

44. (B) भारतीय राष्ट्रीय ट्रेड यूनियन कांग्रेस (INTUC)
भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने 1947 में इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस (INTUC) का गठन किया। इसका उद्देश्य एक ऐसा मजदूर संगठन बनाना था जो राष्ट्रवादी और अहिंसक विचारधारा के साथ काम करे। यह संगठन मजदूरों और प्रबंधन के बीच संघर्ष के बजाय सहयोग और मध्यस्थता के माध्यम से समस्याओं का समाधान खोजने में विश्वास रखता था, जो गांधीवादी मूल्यों के अनुरूप था।
इंटक के गठन से मजदूर आंदोलन में एक वैचारिक विभाजन भी स्पष्ट हुआ। यह एटक और अन्य साम्यवादी झुकाव वाले संगठनों के विकल्प के रूप में उभरा। आजादी के बाद इस संगठन ने सरकार की औद्योगिक नीतियों के साथ समन्वय बिठाने और राष्ट्र निर्माण में मजदूरों की भागीदारी सुनिश्चित करने की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

45. (B) केवल 2 और 3
दलित आंदोलन केवल आर्थिक शोषण के विरुद्ध संघर्ष नहीं है, बल्कि यह आत्मसम्मान और अस्पृश्यता के कलंक से मुक्ति की एक गहरी खोज है। इसे 'स्पर्श के लिए संघर्ष' भी कहा जाता है क्योंकि इसका मुख्य उद्देश्य सामाजिक समानता और मानवीय गरिमा प्राप्त करना है। यह आंदोलन जातिगत भेदभाव की उन जड़ों पर प्रहार करता है जो लोगों को बुनियादी मानवीय अधिकारों से वंचित करती हैं।
यह संघर्ष केवल राजनीतिक सत्ता प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज की मानसिकता में बदलाव लाने का एक प्रयास है। दलितों ने अपनी पहचान को गर्व के साथ अपनाया और साहित्य व कला के माध्यम से अपनी व्यथा को दुनिया के सामने रखा। इस प्रकार, यह आंदोलन एक व्यापक सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन का सशक्त माध्यम बना है।

46. (D) उच्च वर्गों द्वारा जान-बूझकर तोड़े गए और धराशायी किए गए लोगों हेतु।
'दलित' शब्द 1970 के दशक में नव-बौद्धों और दलित पैंथर्स द्वारा एक राजनीतिक पहचान के रूप में अपनाया गया था। इसका शाब्दिक अर्थ है 'दबाया हुआ' या 'कुचला हुआ'। इस शब्द का प्रयोग उन लोगों की स्थिति को दर्शाने के लिए किया गया जिन्हें सामाजिक व्यवस्था द्वारा जान-बूझकर हाशिए पर रखा गया था। यह शब्द दबे-कुचले वर्गों की एकजुटता और उनके संघर्ष का प्रतीक बन गया।
यह केवल एक जातिगत संज्ञा नहीं थी, बल्कि एक क्रांतिकारी पहचान थी जो उत्पीड़न के विरुद्ध प्रतिरोध की भावना को व्यक्त करती थी। इस शब्द ने बिखरे हुए समुदायों को एक साझी पहचान के नीचे संगठित होने में मदद की। इसने यह संदेश दिया कि वे अब निष्क्रिय पीड़ित नहीं हैं, बल्कि अपने अधिकारों के लिए लड़ने वाले सक्रिय नागरिक हैं।

47. (A) बंगाल का तिभागा आंदोलन
तिभागा आंदोलन मुख्य रूप से एक कृषक संघर्ष था जो फसल के बंटवारे के मुद्दे पर केंद्रित था, न कि जातिगत पहचान पर।

1857 का विद्रोह इस बात का सबसे बड़ा प्रमाण है कि कैसे एक ही संघर्ष को विभिन्न समूहों द्वारा अपने-अपने ऐतिहासिक संदर्भों में समझा जाता है।

21. (C) जीवन की गुणवत्ता पर केंद्रित तथा वर्ग की सीमाओं से परे आंदोलन।

नए सामाजिक आंदोलन पारंपरिक आंदोलनों से इस मायने में भिन्न हैं कि वे केवल आर्थिक या वर्गीय मुद्दों तक सीमित नहीं हैं। ये आंदोलन पर्यावरण, मानव अधिकार और जीवन की गुणवत्ता जैसे व्यापक विषयों पर केंद्रित होते हैं। इनमें समाज के विभिन्न वर्गों के लोग एक साथ शामिल होते हैं, जिससे इनका आधार अधिक समावेशी और विविध हो जाता है।

पुराने आंदोलनों का मुख्य सरोकार अक्सर सत्ता हस्तांतरण या आर्थिक पुनर्वितरण था। इसके विपरीत, नए आंदोलन सांस्कृतिक पहचान और व्यक्तिगत स्वतंत्रता जैसे आधुनिक सरोकारों को प्राथमिकता देते हैं। ये वैश्विक नेटवर्क के माध्यम से काम करते हैं और अक्सर राजनीतिक दलों के पारंपरिक ढांचे से बाहर रहकर अपनी मांगों को सरकार के समक्ष मजबूती से रखते हैं।

22. (B) लोकतांत्रिक संस्थाओं पर अभिजात नियंत्रण और लोगों में बढ़ता असंतोष।

रजनी कोठारी के अनुसार, 1970 के दशक में भारत में आंदोलनों की लहर इसलिए आई क्योंकि लोकतांत्रिक संस्थाओं पर एक विशिष्ट अभिजात वर्ग का कब्जा हो गया था। सामान्य जनता को लगा कि उनकी समस्याओं का समाधान चुनावी राजनीति और संसद के माध्यम से नहीं हो पा रहा है। इस असंतोष ने लोगों को गैर-दलीय राजनीतिक संगठनों और नागरिक समाज के माध्यम से अपनी आवाज उठाने को प्रेरित किया।

इस कालखंड में लोगों की आकांक्षाएं बढ़ रही थीं, लेकिन व्यवस्था उन पर प्रतिक्रिया देने में धीमी थी। इसी शून्यता को भरने के लिए अनेक जमीनी आंदोलन उभरे जिन्होंने हाशिए के लोगों के मुद्दों को मुख्यधारा में लाया। यह दौर भारतीय लोकतंत्र के परिपक्व होने और नागरिक सक्रियता के बढ़ने का एक महत्वपूर्ण चरण माना जाता है।

23. (C) केवल 2, 3 और 5

नए सामाजिक आंदोलनों की मुख्य विशेषता यह है कि वे वर्गीय आधार पर संकुचित नहीं होते और अक्सर अलग-अलग सामाजिक समूहों को एकजुट करते हैं। इनमें पहचान की राजनीति और सांस्कृतिक चिंताएं बहुत महत्वपूर्ण होती हैं। ये आंदोलन केवल आर्थिक मुद्दों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि जीवन के समग्र अनुभवों और अधिकारों की वकालत करते हैं, जिनमें विभिन्न वर्गों की भागीदारी होती है।

उदाहरण के लिए, महिलाओं और पर्यावरण के आंदोलनों में अमीर-गरीब और शहरी-ग्रामीण दोनों प्रकार के लोग शामिल होते हैं। यह कहना गलत है कि ये केवल आर्थिक मुद्दों से जुड़े हैं या महिलाओं के आंदोलन में केवल मध्यवर्गीय लोग होते हैं। इनकी ताकत उनकी विविधता और व्यापक सामाजिक सरोकारों में निहित है जो पारंपरिक सीमाओं को पार करते हैं।

24. (A) एक पुराने तथा नए आंदोलनों को एकजुट करने वाला मैत्री संगठन

विश्व सामाजिक फोरम एक विशाल अंतरराष्ट्रीय मंच है जो दुनिया भर के विभिन्न प्रकार के आंदोलनों को एक साथ लाता है। यह 'पुराने' श्रमिक आंदोलनों और 'नए' पर्यावरण व महिला आंदोलनों के बीच एक कड़ी के रूप में कार्य करता है। इसका उद्देश्य वैश्वीकरण के नकारात्मक प्रभावों के विरुद्ध एक वैकल्पिक और न्यायपूर्ण वैश्विक व्यवस्था के लिए संघर्ष करना और विचारों का आदान-प्रदान करना है।

यह किसी देश का राजनीतिक दल नहीं है, बल्कि नागरिक समाज की एक वैश्विक पहल है। यहाँ विभिन्न विचारधाराओं और क्षेत्रों के कार्यकर्ता मिलकर 'एक दूसरी दुनिया संभव है' के नारे के साथ रणनीति बनाते हैं। यह फोरम पारराष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक आंदोलनों की बढ़ती एकजुटता और संगठनात्मक क्षमता का एक उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत करता है।

25. (A) 3, 4, 2, 1

चिपको आंदोलन का घटनाक्रम 1970 में अलकनंदा घाटी में आई विनाशकारी बाढ़ से प्रभावित हुआ, जिसने गाँववासियों को वनों की रक्षा के प्रति जागरूक किया। इसके बाद दशौली ग्राम स्वराज्य संघ ने विरोध प्रदर्शन शुरु किए। जब सरकार ने जंगलों की नीलामी की, तो गाँववासियों ने अंततः पेड़ों से चिपककर उनकी कटाई रोकने का ऐतिहासिक कदम उठाया। यह क्रम आंदोलन के क्रमिक विकास को दर्शाता है।

बाढ़ ने लोगों को यह समझाया कि पेड़ों की कटाई और प्राकृतिक आपदाओं के बीच गहरा संबंध है। स्थानीय संगठनों की भूमिका ने इस रोष को एक व्यवस्थित आंदोलन में बदल दिया। नीलामी की नीति ने संघर्ष को चरम पर पहुँचाया, जिसके परिणामस्वरूप सामूहिक सत्याग्रह का एक अनोखा तरीका उभरा जिसने दुनिया भर का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया।

26. (A) चिपको आंदोलन

रामचंद्र गुहा द्वारा लिखित पुस्तक 'अनक्वाइट वुड्स' मुख्य रूप से चिपको आंदोलन का विस्तृत सामाजिक और ऐतिहासिक विश्लेषण करती है। यह पुस्तक हिमालयी क्षेत्र के गाँववासियों के विरोध की जड़ों को उनकी पारंपरिक आजीविका और राज्य की वाणिज्यिक वन नीतियों के बीच के संघर्ष में तलाशती है। यह आंदोलन को केवल पर्यावरणीय नहीं बल्कि एक गहरे सामाजिक-आर्थिक संघर्ष के रूप में प्रस्तुत करती है।

पुस्तक यह दर्शाती है कि कैसे स्थानीय समुदायों के लिए जंगल केवल संसाधन नहीं बल्कि उनके जीवन का आधार थे। इसमें आंदोलन के विभिन्न चरणों और उसमें शामिल नेतृत्व के योगदान को रेखांकित किया गया है। यह रचना पारिस्थितिकीय इतिहास और सामाजिक आंदोलनों के अध्ययन के लिए एक महत्वपूर्ण संदर्भ ग्रंथ मानी जाती है।

27. (D) गाँववासियों की उत्तरजीविता (लाल मुद्दा) जंगलों के जीवन (हरा मुद्दा) पर निर्भर थी।

चिपको आंदोलन में 'लाल' और 'हरे' मुद्दों का संगम एक अनूठी विशेषता थी। यहाँ 'लाल' मुद्दा गाँववासियों की आजीविका और आर्थिक सुरक्षा का प्रतीक था, जबकि 'हरा' मुद्दा पारिस्थितिकीय

संरक्षण का प्रतिनिधित्व करता था। आंदोलनकारियों ने यह महसूस किया कि उनके परिवार तभी जीवित रह सकते हैं जब पहाड़ों के जंगल और वहां का पर्यावरण सुरक्षित रहेगा।
इस प्रकार, पर्यावरण की रक्षा करना उनके लिए कोई विलासिता नहीं बल्कि बुनियादी जरूरत थी। उन्होंने दिखाया कि विकास और संरक्षण को अलग नहीं किया जा सकता। यह आंदोलन वैश्विक स्तर पर टिकाऊ विकास और सामुदायिक अधिकारों की वकालत करने वाला एक मार्गदर्शक बना, जिसने आर्थिक न्याय और पारिस्थितिकी के बीच के अंतर्संबंधों को मजबूती से उजागर किया।

28. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
चिपको आंदोलन ने पारिस्थितिकीय सुरक्षा के साथ-साथ सामाजिक समानता और स्थानीय संसाधनों पर अधिकार का मुद्दा बहुत प्रभावी ढंग से उठाया। यह केवल पेड़ों को बचाने का संघर्ष नहीं था, बल्कि बाहरी ठेकेदारों द्वारा संसाधनों के शोषण के विरुद्ध एक ग्रामीण विद्रोह था। तर्क बिल्कुल सही है क्योंकि ग्रामीणों की आजीविका और सरकारी राजस्व के बीच का टकराव ही इस आंदोलन का मूल कारण था।
अभिकथन और तर्क के बीच सीधा संबंध है क्योंकि आजीविका का संकट ही पारिस्थितिकीय चिंता का मुख्य कारण बना। गाँववासियों ने तर्क दिया कि जंगलों पर पहला हक उन लोगों का है जो वहां सदियों से रह रहे हैं। इस आंदोलन ने विकास की सरकारी परिभाषा को चुनौती दी और स्थानीय समुदायों की भागीदारी को आवश्यक बताया।

29. (C) उन्होंने अन्य महिलाओं को इकट्ठा कर जंगल में कटाई का विरोध किया।
चिपको आंदोलन में गौरा देवी की भूमिका अत्यंत प्रेरणादायक और निर्णायक रही है। जब ठेकेदार के आदमी जंगल काटने आए, तो उन्होंने स्थानीय महिला मंडल का नेतृत्व करते हुए निडरता से उनका रास्ता रोका। उनकी हिम्मत ने अन्य महिलाओं को संगठित होने और पेड़ों को बचाने के लिए शारीरिक रूप से उनका घेराव करने के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे अंततः कटाई रुक गई।
गौरा देवी के नेतृत्व ने यह सिद्ध कर दिया कि ग्रामीण महिलाएं पर्यावरण संरक्षण की दिशा में कितनी शक्तिशाली शक्ति बन सकती हैं। उनके इस साहसिक कार्य ने आंदोलन को एक नई दिशा दी और इसे एक महिला प्रधान आंदोलन के रूप में वैश्विक पहचान दिलाई। उनका योगदान पारिस्थितिकीय संघर्षों के इतिहास में हमेशा याद किया जाएगा।

30. (A) P-3, Q-4, R-1, S-2
गाँववासियों के लिए जंगल जीवन-निर्वहन की अर्थव्यवस्था का हिस्सा थे, जबकि सरकार की नीतियां केवल मुनाफ़े पर आधारित थीं। दशौली ग्राम स्वराज्य संघ चमोली में एक महत्वपूर्ण सहकारी संगठन था जिसने आंदोलन को संगठित किया। गौरा देवी महिला मंडल की प्रमुख थीं जिन्होंने विरोध का नेतृत्व किया। यह मिलान आंदोलन के विभिन्न पक्षों और उसमें शामिल प्रमुख अंगों को स्पष्ट करता है।
ये तत्व मिलकर चिपको आंदोलन की पूरी संरचना को समझाते हैं। एक तरफ स्थानीय लोगों की बुनियादी जरूरतें थीं और दूसरी तरफ वाणिज्यिक लाभ के लिए राज्य का दबाव। इन दोनों के बीच के टकराव ने ही इस ऐतिहासिक संघर्ष को जन्म दिया, जिसमें संगठनात्मक शक्ति और व्यक्तिगत नेतृत्व दोनों ने ही समान रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

31. (A) नमामि गंगे
'नमामि गंगे' भारत सरकार द्वारा 2014 में शुरु किया गया एक व्यापक मिशन है जिसका मुख्य उद्देश्य गंगा नदी के प्रदूषण को रोकना और उसका संरक्षण करना है। यह परियोजना पारिस्थितिकी को सुधारने और पवित्र नदी की स्वच्छता सुनिश्चित करने के लिए एकीकृत दृष्टिकोण अपनाती है। यह आधुनिक भारत में सरकारी स्तर पर किए जा रहे सबसे बड़े पर्यावरणीय सुधार प्रयासों में से एक है।
इस मिशन के तहत नदी के किनारों का सौंदर्यीकरण, सीवेज उपचार और जैव विविधता के संरक्षण पर ध्यान दिया जा रहा है। यह दर्शाता है कि कैसे सरकार पर्यावरणीय चुनौतियों का सामना करने के लिए बड़े पैमाने पर योजनाएँ बनाती है। जन भागीदारी और तकनीकी समाधानों का उपयोग करके गंगा की निर्मलता वापस लाने का प्रयास इस कार्यक्रम का मूल आधार है।

32. (B) नील की खेती के विरुद्ध
1859-62 के दौरान हुआ विद्रोह मुख्य रूप से बंगाल के किसानों द्वारा ब्रिटिश बागान मालिकों के शोषण के विरुद्ध किया गया था। बागान मालिक किसानों को जबरन नील की खेती करने के लिए मजबूर करते थे, जो उनके लिए आर्थिक रूप से घाटे का सौदा था। इस संघर्ष ने कृषकों की एकजुटता और दमनकारी नीतियों के विरुद्ध उनके साहस को प्रदर्शित किया, जिससे अंततः सरकार को बदलाव करने पड़े।
यह विद्रोह भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण कृषक आंदोलन के रूप में दर्ज है क्योंकि इसने संगठित प्रतिरोध की शक्ति दिखाई। किसानों ने नील बोने से इनकार कर दिया और सामाजिक बहिष्कार का सहारा लिया। इस आंदोलन के प्रभाव से नील आयोग का गठन हुआ, जिसने किसानों की शिकायतों को स्वीकार किया और नील की अनिवार्य खेती पर रोक लगा दी।

33. (B) केवल 1 and 2
किसान आंदोलनों के इतिहास में बारदोली सत्याग्रह एक प्रमुख मील का पत्थर है जो गुजरात के सूरत जिले में हुआ था। इसी प्रकार, 1875 का दक्कन विद्रोह साहूकारों के शोषण और भारी कर्ज के विरुद्ध किसानों का एक हिंसक आक्रोश था। अन्य कथन गलत हैं क्योंकि चंपारन सत्याग्रह नील की खेती के खिलाफ था और भारत में कृषक संघर्षों का इतिहास बहुत पुराना है।
बारदोली में किसानों ने लगान वृद्धि के विरोध में सरदार पटेल के नेतृत्व में सफल अभियान चलाया। दक्कन के विद्रोह ने यह स्पष्ट किया कि ग्रामीण ऋणग्रस्तता समाज में गहरी अस्थिरता पैदा कर सकती है। इन आंदोलनों ने यह सिद्ध किया कि

संगठित किसान शक्ति औपनिवेशिक प्रशासन और स्थानीय शोषकों दोनों को चुनौती देने में पूरी तरह सक्षम थी।

34. (A) 1936
ऑल इंडिया किसान सभा का गठन वर्ष 1936 में लखनऊ में हुआ था। यह भारत का पहला ऐसा किसान संगठन था जिसने राष्ट्रीय स्तर पर किसानों की मांगों को उठाया। इसके गठन का मुख्य उद्देश्य जमींदारी प्रथा का उन्मूलन करना और किसानों को उनके भूमि अधिकारों के प्रति जागरूक करना था। इस संगठन ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में राष्ट्रवादी चेतना जगाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
स्वामी सहजानंद सरस्वती इसके प्रथम अध्यक्ष थे और उन्होंने किसानों के संघर्ष को एक नई दिशा दी। इस सभा ने कांग्रेस और अन्य राजनीतिक दलों पर किसानों के हितों को प्राथमिकता देने के लिए दबाव बनाया। अखिल भारतीय स्तर पर इस संगठन की उपस्थिति ने किसान आंदोलनों को एक मजबूत और एकीकृत आवाज प्रदान की।

35. (A) केवल 1, 2 और 5
तिभागा आंदोलन बंगाल और उत्तरी बिहार में साझा खेती करने वाले किसानों द्वारा चलाया गया था, जिन्हें किसान सभा और कम्युनिस्टों का समर्थन प्राप्त था। तेलंगाना आंदोलन हैदराबाद के सामंती निजाम शासन और वहां की शोषक दशाओं के विरुद्ध एक सशस्त्र संघर्ष था। तिभागा आंदोलन में किसानों की मांग फसल का दो-तिहाई हिस्सा प्राप्त करने की थी, न कि केवल आधे हिस्से की।
ये आंदोलन दर्शाते हैं कि स्वतंत्रता के समय ग्रामीण भारत में गहरी सामाजिक और आर्थिक असमानता व्याप्त थी। तेलंगाना का विद्रोह इतना तीव्र था कि इसने भूमि सुधार के मुद्दों को राष्ट्रीय राजनीति के केंद्र में ला खड़ा किया। इन संघर्षों ने स्पष्ट किया कि राजनीतिक आजादी के साथ-साथ किसानों को सामाजिक और आर्थिक न्याय मिलना भी अनिवार्य है।

36. (D) पंजाब और तमिलनाडु
1970 के दशक में उभरे 'नए किसान आंदोलन' मुख्य रूप से पंजाब और तमिलनाडु जैसे राज्यों से शुरू हुए थे। ये आंदोलन उन किसानों के नेतृत्व में थे जिन्होंने हरित क्रांति का लाभ उठाया था और अब बाजार से जुड़े मुद्दों पर संघर्ष कर रहे थे। उन्होंने कृषि उत्पादों के लाभकारी मूल्य और बिजली-पानी जैसी सब्सिडी की मांगों को लेकर सरकारों पर दबाव बनाया।
ये आंदोलन पुराने आंदोलनों की तुलना में अधिक समृद्ध और बाजार-उन्मुख किसानों का प्रतिनिधित्व करते थे। उन्होंने अपने हितों की रक्षा के लिए क्षेत्रीय स्तर पर मजबूत संगठन बनाए और सड़कों को जाम करने जैसे नए विरोध के तरीके अपनाए। इन आंदोलनों ने ग्रामीण राजनीति को एक नया मोड़ दिया और किसानों को एक शक्तिशाली वोट बैंक के रूप में स्थापित किया।

37. (C) वे क्षेत्रीय, दल-रहित थे और मूल्य तथा संबंधित मुद्दों पर केंद्रित थे।
नए किसान आंदोलन पुराने आंदोलनों से इस मायने में अलग थे कि वे किसी एक राजनीतिक दल से नहीं बंधे थे और स्वायत्त रूप से कार्य करते थे। उनका मुख्य सरोकार भूमि सुधार के बजाय फसल की कीमतों, ऋण माफी और सरकारी सब्सिडी जैसे बाजार आधारित मुद्दों पर था। ये आंदोलन क्षेत्रीय स्तर पर अधिक सक्रिय थे और किसानों के आर्थिक हितों की वकालत करते थे।
इन्होंने 'भारत बनाम इंडिया' जैसी विचारधारा को लोकप्रिय बनाया, जहाँ 'भारत' ग्रामीण किसानों का और 'इंडिया' शहरी औद्योगिक हितों का प्रतीक था। इन आंदोलनों ने दिखाया कि किसान अब केवल जीवन-निर्वाह (survival) के लिए नहीं, बल्कि व्यावसायिक लाभ और सम्मान के लिए भी संगठित हो सकते हैं। इनकी कार्यप्रणाली में सामूहिक दबाव और चुनावी बहिष्कार जैसे तत्व प्रमुख रूप से शामिल थे।

38. (A) 2, 3, 4, 1
किसान आंदोलनों का सही कालानुक्रमिक क्रम चंपारन सत्याग्रह (1917) से शुरू होता है। इसके बाद बारदोली सत्याग्रह (1928) हुआ, फिर बिहार प्रोविंसिएल किसान सभा (1929) की स्थापना हुई। अंत में 1936 में ऑल इंडिया किसान सभा का गठन हुआ। यह क्रम भारत में किसान संगठनों के धीरे-धीरे विकसित होने और उनके राष्ट्रीय स्तर पर एकीकृत होने की प्रक्रिया को दर्शाता है।
शुरुआती आंदोलन विशिष्ट स्थानीय समस्याओं पर केंद्रित थे, जैसे चंपारन में नील की खेती। धीरे-धीरे किसानों ने महसूस किया कि उन्हें एक व्यापक मंच की आवश्यकता है। बिहार की प्रांतीय सभा ने राष्ट्रीय संगठन के लिए आधार तैयार किया। इस विकास ने किसानों को स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक संगठित और प्रभावशाली राजनीतिक शक्ति के रूप में परिवर्तित कर दिया।

39. (D) 1860 के प्रारंभिक भाग में
भारत में औद्योगिक कारखानों की शुरुआत उन्नीसवीं सदी के मध्य, विशेषकर 1860 के दशक के आसपास हुई। सबसे पहले सूती वस्त्र और पटसन उद्योगों की स्थापना बंबई और बंगाल जैसे क्षेत्रों में हुई। इस दौर ने भारत में एक नए श्रमिक वर्ग के उदय की नींव रखी, जो आगे चलकर अपने अधिकारों के लिए संगठित होने लगा और विभिन्न आंदोलनों का हिस्सा बना।
कारखानों के आने से ग्रामीण अर्थव्यवस्था से मजदूरों का पलायन शहरों की ओर होने लगा। हालांकि औद्योगिक विकास धीमा था, लेकिन इसने काम की नई स्थितियों और चुनौतियों को जन्म दिया। शुरुआत में काम के घंटे बहुत लंबे थे और वेतन कम था, जिससे भविष्य में मजदूर संघों के गठन की आवश्यकता महसूस की जाने लगी।

40. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
औपनिवेशिक काल के शुरुआती दौर में भारतीय मजदूरों का वेतन अत्यंत कम था और कार्य दशाएं बहुत खराब थीं। उस समय ब्रिटिश शासन ने मजदूरों के कल्याण के लिए कोई प्रभावी नियम नहीं बनाए थे, बल्कि नीतियां उद्योगों के लाभ के पक्ष में थीं। इसलिए अभिकथन सही है, लेकिन तर्क गलत है क्योंकि सरकार ने मजदूरों की सुरक्षा के बजाय उनके शोषण की ही छूट दी थी।

ANSWERS

1. (B) वंशानुगत उत्तराधिकार के माध्यम से शासन करने का अधिकार
सामाजिक आंदोलनों ने कार्य दिवस की सीमा, समान वेतन और मजदूरों की सामाजिक सुरक्षा जैसे महत्वपूर्ण अधिकार हासिल किए हैं। ये अधिकार ऐतिहासिक रूप से व्यापक संघर्षों और सामूहिक लामबंदी का परिणाम थे। इसके विपरीत, उत्तराधिकार के आधार पर शासन करना एक पारंपरिक राजतंत्रीय व्यवस्था है जिसे लोकतांत्रिक आंदोलनों द्वारा प्रायः समाप्त ही किया गया था।
आधुनिक लोकतंत्र में सत्ता का आधार जनता की सहमति होती है न कि पारिवारिक विरासत। इस प्रकार के अधिकार किसी सामाजिक आंदोलन की उपलब्धि नहीं बल्कि पुरानी व्यवस्थाओं का हिस्सा रहे हैं। अधिकार आमतौर पर शोषित वर्गों द्वारा न्यायसंगत व्यवस्था की मांग के लिए किए गए निरंतर प्रयासों से प्राप्त होते हैं।

2. (A) संसदीय प्रतिनिधित्व
इंग्लैंड में चार्टरवाद एक प्रमुख सामाजिक आंदोलन था जिसने कामकाजी वर्ग के लिए राजनीतिक अधिकारों की मांग की थी। इसका मुख्य उद्देश्य संसदीय प्रणाली में सुधार करना और संपत्तिहीन पुरुषों को मतदान का अधिकार दिलाना था। यह आंदोलन लोकतंत्र के विस्तार और चुनावी प्रक्रियाओं में व्यापक भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए संगठित किया गया एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक प्रयास था।
इस आंदोलन के माध्यम से लोगों ने पीपुल्स चार्टर के पक्ष में जनमत तैयार किया। इसमें गुप्त मतदान और सांसदों के लिए वेतन जैसे प्रावधानों की वकालत की गई थी। यह आंदोलन दर्शाता है कि कैसे संगठित समूह सत्ता संरचना में बदलाव और प्रतिनिधित्व के लिए राज्य पर दबाव डालते हैं।

3. (C) (A) सत्य है लेकिन (R) असत्य है।
सामाजिक आंदोलन की एक अनिवार्य विशेषता उसकी निरंतरता और सामूहिक गतिविधियों का लंबा स्वरूप है। केवल एक बार का विरोध प्रदर्शन आंदोलन नहीं कहलाता है। अभिकथन सही है क्योंकि आंदोलनों के लिए संगठन और स्पष्ट विचारधारा की आवश्यकता होती है। इसके विपरीत, स्वतःस्फूर्त और असंगठित विरोध क्षणिक होते हैं और उनमें संरचनात्मक स्थिरता की कमी होती है।
तर्क गलत है क्योंकि असंगठित गतिविधियों को सामाजिक आंदोलन की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। एक आंदोलन में नेतृत्व और पूर्व-निर्धारित उद्देश्यों का होना आवश्यक है। सामाजिक परिवर्तन लाने के लिए की जाने वाली सामूहिक कोशिशें जब संस्थागत या संगठित रूप ले लेती हैं, तभी उन्हें वास्तविक आंदोलन माना जाता है।

4. (D) इसने तुरंत सभी वयस्क महिलाओं के लिए मताधिकार हासिल कर लिया।
पीपुल्स चार्टर इंग्लैंड के मजदूर वर्ग का एक शक्तिशाली दस्तावेज था जिसने संसदीय सुधारों की वकालत की थी। हालांकि इस आंदोलन ने लोकतंत्र के बीज बोए, लेकिन इसने तुरंत महिलाओं को मतदान का अधिकार नहीं दिलाया। 1839 में इस पर लाखों लोगों ने हस्ताक्षर किए थे और यह सार्वजनिक भागीदारी का एक बहुत बड़ा उदाहरण बना था।
उस समय महिलाओं को मताधिकार मिलना एक लंबी प्रक्रिया का हिस्सा था जो बाद के सफ्रागेट्स आंदोलनों से संभव हुआ। चार्टरवाद मुख्य रूप से पुरुष कामगारों के राजनीतिक सशक्तिकरण पर केंद्रित था। इस आंदोलन ने भविष्य के लोकतांत्रिक सुधारों के लिए एक मजबूत आधार तैयार किया और जनशक्ति का प्रदर्शन किया।

5. (A) P-2, Q-4, R-1, S-3
नागरिक अधिकार आंदोलन मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका में अफ्रीकी-अमेरिकी लोगों की समानता के लिए चलाया गया था। दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरुद्ध ऐतिहासिक संघर्ष हुआ, जबकि भारत का राष्ट्रीय आंदोलन उपनिवेशवाद से मुक्ति के लिए था। समाजवादी आंदोलन एक वैश्विक विचारधारा है जिसने दुनिया भर के विभिन्न देशों में मजदूरों और आर्थिक समानता के मुद्दों को उठाया है।
ये सभी आंदोलन अपने विशिष्ट भौगोलिक क्षेत्रों में न्याय और अधिकारों के लिए लड़ रहे थे। इनका स्वरूप स्थानीय होने के साथ-साथ प्रेरणा के रूप में वैश्विक भी रहा है। आंदोलनों का मिलान यह दर्शाता है कि दुनिया के विभिन्न हिस्सों में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रियाएं कैसे अलग-अलग उद्देश्यों के साथ संचालित हुई हैं।

6. (B) प्रतिरोधी आंदोलन
प्रतिरोधी आंदोलन वे होते हैं जिनका मुख्य उद्देश्य मौजूदा सामाजिक व्यवस्था में किसी भी प्रकार के परिवर्तन को रोकना होता है। ये आंदोलन यथास्थिति को बनाए रखने के लिए सक्रिय रहते हैं और प्रगतिशील सुधारों का कड़ा विरोध करते हैं। जब भी समाज में नए विचार आते हैं, तो पारंपरिक मूल्यों को बचाने वाले समूह ऐसे आंदोलनों को संगठित करते हैं।
इनका उद्देश्य अक्सर सत्ता संरचना या सांस्कृतिक मानदंडों को वैसा ही बनाए रखना होता है जैसा वे अतीत में थे। ये आंदोलन परिवर्तनकारी या क्रांतिकारी आंदोलनों के जवाब में पैदा होते हैं। समाज में संतुलन बनाए रखने या सुधारों को विफल करने के लिए ये समूह सामूहिक रूप से अपनी आवाज उठाते हैं।

7. (D) प्रतिरोधी आंदोलन
जब समाज का कोई वर्ग प्रस्तावित सुधारों का विरोध करता है और उन्हें विनाशकारी मानता है, तो वह प्रतिरोधी आंदोलन

इसके विपरीत, छत्तीसगढ़ का सतनामी आंदोलन, पंजाब का आदि धर्म आंदोलन और महाराष्ट्र का महार आंदोलन सीधे तौर पर दलित वर्गों के उत्थान और सामाजिक समानता से संबंधित थे। ये आंदोलन जाति व्यवस्था द्वारा थोपी गई अयोग्यता को चुनौती देने के लिए संगठित हुए थे।
दलित आंदोलनों का मूल उद्देश्य सामाजिक बहिष्कार और अस्पृश्यता को समाप्त करना रहा है। हालांकि तिभागा में भी दलित किसान शामिल थे, लेकिन उस आंदोलन का नेतृत्व और मांगे वर्गीय आधार पर थीं। आंदोलनों के इस भेद को समझना इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह समाज में चल रहे विभिन्न प्रकार के संघर्षों की विशिष्टता को स्पष्ट करता है।

48. (B) केवल 1, 3 और 4
दलित साहित्य दलित लेखकों के स्वयं के जीवन के कड़वे अनुभवों और उनके विशेष दृष्टिकोण को व्यक्त करता है। यह मुख्यधारा के समाज की उस कल्पनाशीलता को चुनौती देता है जो सत्य को छिपाने की कोशिश करती है। यह साहित्य सामाजिक और सांस्कृतिक क्रांति का आह्वान करता है और पहचान के लिए संघर्ष को बल देता है, जिससे समाज में एक नई चेतना जागृत होती है।
यह कहना गलत है कि यह साहित्य आर्थिक आयामों को नजरअंदाज करता है, क्योंकि दलित जीवन की त्रासदी में गरीबी और शोषण गहराई से जुड़े हैं। दलित लेखकों ने अपनी कलम के माध्यम से उन कहानियों को स्वर दिया जिन्हें सदियों से दबाया गया था। इस प्रकार, दलित साहित्य केवल रचनात्मक कार्य नहीं बल्कि विरोध का एक अत्यंत सशक्त माध्यम बन गया है।

49. (B) जोतिबा फुले
महाराष्ट्र में 19वीं सदी के गैर-ब्राह्मण आंदोलन के मुख्य प्रेरणास्रोत जोतिबा फुले थे। उन्होंने 1873 में 'सत्यशोधक समाज' की स्थापना की, जिसका उद्देश्य शूद्रों और अति-शूद्रों को जातिगत उत्पीड़न से मुक्त कराना था। उन्होंने ब्राह्मणवादी वर्चस्व को चुनौती दी और शिक्षा को दलितों व महिलाओं के सशक्तिकरण का सबसे महत्वपूर्ण साधन माना, जिससे समाज में एक क्रांतिकारी बदलाव की नींव पड़ी।
फुले ने तर्क दिया कि जाति व्यवस्था कृत्रिम है और इसका उपयोग केवल मुट्ठी भर लोगों द्वारा बहुसंख्यक जनता पर शासन करने के लिए किया जाता है। उनकी कृति 'गुलामगिरी' ने सामाजिक दासता के विरुद्ध एक बौद्धिक युद्ध छेड़ा। उनके द्वारा शुरु किए गए इस आंदोलन ने बाद में डॉ. अंबेडकर जैसे नेताओं के लिए एक मजबूत वैचारिक धरातल तैयार किया।

50. (A) 1872
मद्रास प्रेसीडेंसी में 'पिछड़े वर्गों' की संज्ञा का विस्तृत और प्रशासनिक प्रयोग 1872 के आसपास शुरु हुआ था। उस समय ब्रिटिश सरकार ने विभिन्न समुदायों को उनकी सामाजिक और शैक्षिक स्थिति के आधार पर वर्गीकृत करना प्रारंभ किया ताकि उन्हें शिक्षा और नौकरियों में विशेष सहायता दी जा सके। इसने उन जातियों के बीच एक नई राजनीतिक और सामाजिक पहचान को जन्म देने में मदद की।
इस पहचान के उदय ने इन समुदायों को संगठित होने और राज्य से अपने हिस्से की मांग करने के लिए प्रेरित किया। धीरे-धीरे पिछड़े वर्गों का आंदोलन दक्षिण भारत से शुरु होकर पूरे देश में फैल गया। यह वर्गीकरण केवल जनगणना का हिस्सा नहीं रहा, बल्कि इसने भविष्य की आरक्षण नीतियों और जाति-आधारित राजनीति की नींव रखने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

51. (C) समान रुप से अवस्थित जाति समूहों का स्वयं को संगठित करना
'समानांतर विस्तार' या हॉरिजॉन्टल स्ट्रेच (Horizontal stretch) की अवधारणा यह बताती है कि कैसे एक जैसी सामाजिक और आर्थिक स्थिति वाली विभिन्न जातियां मिलकर एक बड़ा संगठन बनाती हैं। यह प्रक्रिया मुख्य रुप से राजनीतिक लाभ प्राप्त करने और सामूहिक सौदेबाजी की शक्ति बढ़ाने के लिए होती है। इसमें जातियां अपनी पारंपरिक संकीर्ण पहचान को छोड़कर एक व्यापक श्रेणी, जैसे 'पिछड़े वर्ग', में एकजुट होती हैं।
आधुनिक राजनीति में जाति अब केवल विवाह और खान-पान तक सीमित नहीं है, बल्कि वह एक सशक्त चुनावी दबाव समूह बन गई है। इस विस्तार ने छोटी जातियों को भी सत्ता में हिस्सेदारी का अवसर प्रदान किया है। समाजशास्त्रियों के अनुसार, यह बदलाव जाति व्यवस्था के सुदृढ़ीकरण के बजाय उसके राजनीतिक रुपांतरण को अधिक प्रदर्शित करता है।

52. (D) टेक्सटाइल लेबर ऐसोसिएशन
टेक्सटाइल लेबर ऐसोसिएशन (TLA) मुख्य रुप से अहमदाबाद के कपड़ा मिल मजदूरों का एक श्रमिक संगठन था जिसकी स्थापना महात्मा गांधी ने की थी। इसका पिछड़े वर्गों के आंदोलन से सीधा कोई संगठनात्मक संबंध नहीं था। इसके विपरीत, हिंदू बैकवर्ड क्लासेस लीग और ऑल-इंडिया बैकवर्ड क्लासेस फैडरेशन जैसे संगठन विशेष रुप से पिछड़ी जातियों के अधिकारों और उत्थान के लिए गठित किए गए थे।
पिछड़े वर्गों के आंदोलनों का केंद्र बिंदु जातिगत समानता और आरक्षण था, जबकि टी.एल.ए. का मुख्य कार्य श्रमिकों के वेतन और कार्य दशाओं में सुधार करना था। इन संगठनों के उद्देश्यों में स्पष्ट अंतर है। टी.एल.ए. श्रमिक कल्याण और ट्रस्टीशिप के सिद्धांत पर चलता था, जो जातियों के राजनीतिक लामबंदी से एक अलग प्रकार का सामाजिक प्रयास था।

53. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
पिछड़े वर्गों का राजनीतिक इकाइयों के रुप में उदय होना औपनिवेशिक शासन की नीतियों का एक प्रत्यक्ष परिणाम था। ब्रिटिश सरकार ने अपनी प्रशासनिक सुविधाओं और संरक्षिता के वितरण के लिए जातियों को आधार बनाया, जिससे विभिन्न समूहों के भीतर राजनीतिक जागरूकता बढ़ी। अभिकथन और तर्क दोनों सही हैं क्योंकि इसी सरकारी वर्गीकरण ने जाति को एक शक्तिशाली राजनीतिक हथियार बना दिया।
जब लोगों ने देखा कि संसाधनों और नौकरियों का वितरण जाति के आधार पर हो रहा है, तो उन्होंने स्वयं को संगठित करना शुरु किया। इससे जातियों की पारंपरिक भूमिका बदल

जाने वाले विद्रोह या विरोध के पीछे एक गहरे नैतिक बोध की भावना कार्य करती है। यह अवधारणा बताती है कि लोग केवल आर्थिक दबाव में ही नहीं, बल्कि तब भी प्रतिक्रिया देते हैं जब उन्हें लगता है कि उनके साझा अधिकारों का हनन हुआ है।

थॉमसन ने ऐतिहासिक दस्तावेजों के माध्यम से दिखाया कि अन्न संकट के समय हुए दंगे वास्तव में जनता की साझी न्याय की मांग थे। यह विचार सामाजिक आंदोलनों के विश्लेषण में क्रांतिकारी साबित हुआ। इससे यह समझने में मदद मिली कि सामूहिक व्यवहार के पीछे अक्सर एक व्यवस्थित विचारधारा और सामाजिक मूल्यों का ढांचा मौजूद रहता है।

15. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।

समाजशास्त्र के विषय के रूप में विकास का मूल आधार ही उन परिवर्तनों को समझना था जो फ्रांसिसी और औद्योगिक क्रांतियों से पैदा हुए थे। इन क्रांतियों ने पुराने सामाजिक ढांचों को हिला दिया और नए प्रकार के आंदोलनों को जन्म दिया। समाजशास्त्रीय अध्ययन हमेशा से इस बात में रुचि रखते हैं कि कैसे सामूहिक प्रयास समाज को पुनर्गठित और प्रभावित करते हैं।

अभिकथन और तर्क दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं। क्रांतियों के कारण उत्पन्न सामाजिक उथल-पुथल ने विद्वानों को समाज की नई व्यवस्थाओं पर विचार करने के लिए प्रेरित किया। आंदोलनों का अध्ययन समाजशास्त्र का एक केंद्रीय स्तंभ बन गया क्योंकि ये समाज के गतिशील स्वरुप और परिवर्तन की दिशा को समझने का सबसे सशक्त माध्यम हैं।

16. (B) प्रतिदानात्मक आंदोलन - केरल में नारायण गुरु का आंदोलन

केरल में नारायण गुरु के नेतृत्व में हुआ आंदोलन प्रतिदानात्मक आंदोलन का एक सटीक उदाहरण है। इस प्रकार के आंदोलनों का उद्देश्य अपने सदस्यों की व्यक्तिगत चेतना और जीवन जीने के तरीकों में बदलाव लाना होता है। इज़हावा समुदाय ने अपनी सामाजिक स्थिति सुधारने के लिए अपनी धार्मिक और व्यक्तिगत आदतों में परिवर्तन किया, जिससे समाज में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी।

अन्य विकल्प गलत सुमेलित हैं क्योंकि बोल्शेविक क्रांति क्रांतिकारी थी और सूचना का अधिकार एक सुधारवादी आंदोलन है। प्रतिदानात्मक आंदोलन बाहरी व्यवस्था के बजाय आंतरिक शुद्धिकरण और व्यक्तित्व विकास पर अधिक ध्यान देते हैं। ऐसे आंदोलनों ने भारत के विभिन्न हिस्सों में दबे-कुचले समुदायों के बीच आत्मसम्मान और नई पहचान पैदा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

17. (B) प्रतिदानात्मक आंदोलन

वह आंदोलन जो समाज की संरचना बदलने के बजाय व्यक्तियों के व्यवहार और दृष्टिकोण में परिवर्तन लाने पर केंद्रित होता है, प्रतिदानात्मक आंदोलन कहलाता है। इसमें सदस्यों को अपनी पुरानी आदतों को छोड़कर नए और बेहतर जीवन मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित किया जाता है। केरल के इज़हावा समुदाय द्वारा अपनी धार्मिक प्रथाओं में किया गया सुधार इसका एक प्रमुख ऐतिहासिक उदाहरण है।

ऐसे आंदोलनों का मानना होता है कि यदि व्यक्ति स्वयं को सुधार ले, तो सामाजिक स्थिति स्वतः ही बेहतर हो जाएगी। यह आत्म-सुधार के माध्यम से सामाजिक उत्थान की एक प्रक्रिया है। ये आंदोलन प्रायः आध्यात्मिक या नैतिक नेतृत्व के अंतर्गत संचालित होते हैं और समुदाय के भीतर एक नई सांस्कृतिक चेतना को जन्म देने का प्रयास करते हैं।

18. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3

प्रतिदानात्मक आंदोलन का संबंध नारायण गुरु द्वारा इज़हावा समुदाय में किए गए सुधारों से है। सूचना का अधिकार अभियान एक सुधारवादी आंदोलन है क्योंकि यह मौजूदा कानून में प्रगतिशील बदलाव चाहता था। रूस की बोल्शेविक क्रांति ने पूरी व्यवस्था को पलट दिया, इसलिए यह क्रांतिकारी है। सतीप्रथा के समर्थन में धर्म सभा की स्थापना एक प्रतिरोधी आंदोलन का उदाहरण है।

आंदोलनों के इन विभिन्न प्रकारों का मिलान उनके उद्देश्यों की विविधता को स्पष्ट करता है। कुछ व्यक्तिगत सुधार पर केंद्रित हैं, तो कुछ पूरी राजसत्ता को बदलने पर। वहीं कुछ आंदोलन यथास्थिति बनाए रखने के लिए होते हैं। यह वर्गीकरण सामाजिक आंदोलनों की जटिलता और उनके समाज पर पड़ने वाले विविध प्रभावों को समझने में सहायता करता है।

19. (C) सुधारवादी

भारत में 1960 के दशक में भाषाई आधार पर राज्यों के पुनर्गठन की मांग एक सुधारवादी आंदोलन था। इसका उद्देश्य राजनीतिक व्यवस्था के भीतर रहकर एक विशिष्ट प्रशासनिक सुधार लाना था न कि पूरी शासन प्रणाली को उखाड़ फेंकना। इस आंदोलन ने लोकतांत्रिक ढांचे के भीतर ही जनता की सांस्कृतिक और भाषाई आकांक्षाओं को पूरा करने की दिशा में कार्य किया।

सुधारवादी आंदोलनों की विशेषता यह है कि वे स्थापित संविधान और कानूनों के दायरे में रहकर क्रमिक परिवर्तन की वकालत करते हैं। भाषाई पुनर्गठन से भारत की संघीय संरचना अधिक मजबूत और समावेशी हुई। यह आंदोलन दर्शाता है कि कैसे समाज के विभिन्न समूह अपनी विशिष्ट पहचान के आधार पर प्रशासनिक बदलावों की मांग को सफलतापूर्वक उठा सकते हैं।

20. (B) केवल 1, 2 और 3

1857 की घटना को देखने के अलग-अलग नज़रिए रहे हैं; अंग्रेजों ने इसे गदर कहा, जबकि भारतीयों ने इसे स्वतंत्रता का प्रथम संग्राम माना। यह विविधता दर्शाती है कि सामाजिक आंदोलनों की व्याख्या प्रतिभागियों और दर्शकों के उद्देश्यों के आधार पर भिन्न हो सकती है। यह कहना गलत है कि सभी वर्गों ने इसकी व्याख्या समान रूप से की थी, क्योंकि दृष्टिकोण सदैव अलग रहे।

इतिहास में आंदोलनों के अर्थ और महत्व को लेकर अक्सर मतभेद होते हैं। विजेता और पराजित वर्ग एक ही घटना को अपनी सुविधा और विचारधारा के अनुसार परिभाषित करते हैं।

60. (B) केवल 1, 3 और 5
पूर्वोत्तर भारत की जनजातियाँ अपनी विशिष्ट सांस्कृतिक पहचान और पारंपरिक स्वायत्तता के प्रति बहुत सचेत रही हैं। उन्होंने भारतीय संविधान के भीतर ही अधिक अधिकारों की मांग की, लेकिन राज्यों के गठन की प्रक्रिया ने वहां कुछ अशांति भी पैदा की। यह कहना गलत है कि उन्हें असम के प्रशासन में शामिल होने पर कोई आपत्ति नहीं थी या उन पर मुख्यधारा का गहरा प्रभाव था।
इस क्षेत्र में आंदोलनों का स्वरूप मध्य भारत से भिन्न रहा है क्योंकि वहां कई समुदायों का मुख्यधारा से संपर्क कम था। उनकी मांगें अक्सर अपनी जमीन और संस्कृति को बाहरी प्रभाव से बचाने पर केंद्रित रहीं। इसी संघर्ष के परिणामस्वरूप नागालैंड और मिजोरम जैसे नए राज्यों का निर्माण हुआ, जो जनजातीय आकांक्षाओं के प्रति भारतीय लोकतंत्र की लचीली प्रकृति को दर्शाता है।

61. (C) वन-भूमि से विस्थापन
देश के विभिन्न हिस्सों में होने वाले जनजातीय आंदोलनों को जोड़ने वाला सबसे बड़ा और साझा मुद्दा वन-भूमि से उनका विस्थापन है। जल, जंगल और जमीन आदिवासियों के जीवन के आधार हैं और जब भी सरकार या निजी कंपनियों ने उन्हें वहां से बेदखल करने की कोशिश की, तो बड़े आंदोलन उभरे। यह मुद्दा उनकी आजीविका और सांस्कृतिक पहचान दोनों से गहराई से जुड़ा हुआ है।
चाहे वह मध्य भारत की खदानें हों या उत्तर-पूर्व के बांध, विस्थापन का दर्द हर जगह समान रहा है। आदिवासियों का मानना है कि उनकी पारंपरिक भूमि पर उनका अटूट अधिकार है जिसे कानून द्वारा छीना नहीं जाना चाहिए। यही साझा पीड़ा उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में एक साथ मिलकर संघर्ष करने और अपनी आवाज उठाने के लिए प्रेरित करती है।

62. (D) 1917
'विमेंस इंडिया एसोसिएशन' (WIA) की स्थापना वर्ष 1917 में मद्रास (अब चेन्नई) में की गई थी। यह भारत के प्रारंभिक और महत्वपूर्ण महिला संगठनों में से एक था जिसने महिलाओं की शिक्षा, मताधिकार और उनके सामाजिक उत्थान के लिए आवाज उठाई। एनी बेसेंट और मार्गरेट कजिन्स जैसे नेताओं के मार्गदर्शन में इस संगठन ने महिलाओं को सार्वजनिक जीवन में सक्रिय होने के लिए प्रेरित किया।
डब्लू.आई.ए. ने यह सिद्ध किया कि भारतीय महिलाएं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हैं और संगठित होकर अपनी मांगें रख सकती हैं। इस संगठन ने न केवल सामाजिक कुरीतियों का विरोध किया बल्कि राजनीतिक सुधारों की प्रक्रिया में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने पर भी जोर दिया। इसकी स्थापना ने भविष्य के अखिल भारतीय महिला आंदोलनों के लिए एक मजबूत आधारशिला रखी।

63. (A) ऑल-इंडिया विमेंस कॉन्फ्रेंस (AIWC)
ऑल-इंडिया विमेंस कॉन्फ्रेंस (AIWC) की स्थापना 1926 में हुई थी और यह भारत का सबसे प्रमुख अखिल भारतीय महिला संगठन बना। शुरुआत में इसका मुख्य ध्यान महिला शिक्षा और सामाजिक सुधारों पर था, लेकिन धीरे-धीरे इसने महिलाओं के कानूनी अधिकारों और समानता के मुद्दों को भी मजबूती से उठाना शुरू कर दिया। इसने विभिन्न पृष्ठभूमि की महिलाओं को एक साझा मंच प्रदान करने का कार्य किया।
ए.आई.डब्ल्यू.सी. ने बाल विवाह के विरुद्ध कानून बनाने और महिलाओं को संपत्ति में अधिकार दिलाने की दिशा में महत्वपूर्ण पैरवी की। इस संगठन ने यह महसूस किया कि शिक्षा और सामाजिक स्थिति में सुधार के बिना महिलाओं की प्रगति संभव नहीं है। आज भी यह संगठन अपनी विरासत को आगे बढ़ाते हुए महिलाओं के सशक्तिकरण के विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से कार्य कर रहा है।

64. (B) महिला कल्याण और राजनीति आपस में असंबद्ध हैं।
अपनी स्थापना के शुरुआती वर्षों में ऑल-इंडिया विमेंस कॉन्फ्रेंस (AIWC) का यह आधिकारिक विचार था कि महिला कल्याण और राजनीति को अलग रखा जाना चाहिए। उनका प्राथमिक उद्देश्य शिक्षा और सामाजिक सुधारों पर ध्यान केंद्रित करना था। हालांकि, जैसे-जैसे समय बीता, उन्होंने महसूस किया कि बिना राजनीतिक अधिकारों और सक्रियता के महिलाओं की स्थिति में स्थायी सुधार लाना असंभव है।
यह दृष्टिकोण उस समय के सामाजिक परिवेश को दर्शाता है जहाँ राजनीति को महिलाओं के लिए उपयुक्त नहीं माना जाता था। लेकिन राष्ट्रीय आंदोलन की बढ़ती लहर ने इस सोच को बदल दिया। धीरे-धीरे ए.आई.डब्ल्यू.सी. ने भी राजनीतिक मुद्दों पर अपनी राय व्यक्त करना शुरु कर दिया, जिससे महिला आंदोलनों और राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के बीच के संबंध अधिक प्रगाढ़ होते गए।

65. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या है।
उन्नीसवीं सदी के सुधार आंदोलन अक्सर पुरुषों द्वारा शुरु किए गए थे और उनमें आधुनिक आंदोलनों जैसी संगठनात्मक निरंतरता की कमी थी, इसलिए उन्हें सख्ती से सामाजिक आंदोलन नहीं माना जाता। हालांकि, तर्क सही है कि इन प्रयासों ने ही वह सामाजिक आधार तैयार किया जहाँ महिलाओं के अधिकारों पर चर्चा शुरु हुई। अभिकथन और तर्क दोनों अपनी जगह सही हैं लेकिन उनका संबंध अप्रत्यक्ष है।
सती प्रथा विरोधी और विधवा विवाह समर्थक अभियानों ने समाज की जड़ता को तोड़ा। इन सुधारों ने महिलाओं को घर की चारदीवारी से बाहर निकलने और अपनी समस्याओं पर विचार करने का साहस दिया। इसी वैचारिक परिवर्तन के कारण बीसवीं सदी में महिलाओं ने स्वयं अपने संगठन बनाए। इस प्रकार, ये शुरुआती सुधार भारतीय नारीवाद के विकास में एक अनिवार्य प्रारंभिक चरण थे।

66. (D) उपरोक्त सभी
बंगाल के तिभागा आंदोलन, तेलंगाना के सशस्त्र संघर्ष और महाराष्ट्र के वरली जनजाति के विद्रोह में महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर भाग लिया था। ये संघर्ष दर्शाते हैं कि ग्रामीण और जनजातीय महिलाएं केवल मूक दर्शक नहीं थीं, बल्कि उन्होंने शोषण के विरुद्ध सीधी लड़ाई लड़ी। उन्होंने

104. (A) राज और मज़दूर संघों के बीच तीव्र प्रतिरोध
1974 की ऐतिहासिक रेल हड़ताल भारत में राज्य और संगठित मजदूर संघों के बीच पैदा हुए चरम तनाव और प्रतिरोध का प्रतीक थी। यह हड़ताल वेतन वृद्धि और बेहतर कार्य स्थितियों की मांग को लेकर की गई थी, जिसने पूरे देश की परिवहन व्यवस्था को ठप कर दिया था। सरकार द्वारा इसके विरुद्ध की गई सख्त कार्रवाई ने लोकतांत्रिक अधिकारों और श्रमिक संघर्षों के बीच के संघर्ष को उजागर किया।
यह घटना दिखाती है कि कैसे सार्वजनिक क्षेत्र के कर्मचारी भी अपनी सामूहिक शक्ति के माध्यम से राजसत्ता को चुनौती दे सकते हैं। इस हड़ताल ने भविष्य की औद्योगिक नीतियों और राजनीतिक परिदृश्य को बहुत प्रभावित किया। यह भारतीय मजदूर आंदोलन के सबसे शक्तिशाली और प्रभावशाली अध्यायों में से एक है, जिसने शासन और श्रम के बीच के जटिल संबंधों को पुनः परिभाषित किया।

105. (C) उनमें क्रांतिकारी और सुधारवादी दोनों परिपाटियाँ रही हैं।
डॉ. अंबेडकर के बाद का दलित आंदोलन एक बहुत ही विविध और बहुआयामी स्वरुप में विकसित हुआ है। इसमें एक ओर 'दलित पैंथर्स' जैसे समूह थे जिन्होंने क्रांतिकारी और आक्रामक मार्ग चुना, वहीं दूसरी ओर अनेक संगठन चुनावी राजनीति और वैधानिक सुधारों के माध्यम से बदलाव लाने की कोशिश करते रहे। यह विविधता आंदोलन की जीवंतता और समाज के विभिन्न स्तरों पर इसके प्रभाव को दर्शाती है।
क्रांतिकारी धारा ने जहां सांस्कृतिक और बौद्धिक रूप से समाज को झकझोरा, वहीं सुधारवादी धारा ने आरक्षण और सरकारी नीतियों के माध्यम से दलितों के जीवन में सुधार लाने की कोशिश की। ये दोनों परिपाटियां एक-दूसरे की पूरक रही हैं, जिन्होंने मिलकर दलित समाज में आत्मसम्मान, शिक्षा और राजनीतिक शक्ति के विकास में अभूतपूर्व योगदान दिया है।

106. (A) 88
भारत में पिछड़े वर्गों के उत्थान के लिए आजादी के बाद काफी सक्रियता देखी गई और 1954 तक देश के विभिन्न भागों में लगभग 88 संगठन काम कर रहे थे। ये संगठन इन समुदायों को सामाजिक और राजनीतिक रूप से संगठित करने और उनके अधिकारों की पैरवी करने का कार्य कर रहे थे। इनकी बढ़ती संख्या यह दर्शाती है कि पिछड़े वर्गों में अपनी पहचान और सत्ता में भागीदारी के प्रति जागरूकता कितनी तेजी से बढ़ रही थी।
इन संगठनों ने विभिन्न राज्यों में आरक्षण की मांगों और शैक्षिक सुधारों के लिए दबाव बनाया। इसी बढ़ती लामबंदी के कारण सरकार को कालेलकर और बाद में मंडल आयोग जैसे कदम उठाने पड़े। यह संगठनात्मक आधार ही पिछड़े वर्गों की राजनीति का मूल स्तंभ बना, जिसने आगे चलकर भारतीय राजनीति के पूरे स्वरुप और सत्ता के समीकरणों को बदल कर रख दिया।

107. (D) जनजाति का एक सशक्त अज्ञात प्रणाली के संपर्क में आना
पूर्वोत्तर भारत में जनजातीय संजातीयता (ethnicity) का उदय उस समय हुआ जब वहां के पारंपरिक समुदाय अचानक एक बाहरी और शक्तिशाली आधुनिक प्रशासनिक प्रणाली के संपर्क में आए। भारत के अन्य भागों के विपरीत, यहाँ कई जनजातियों का मुख्यधारा से संपर्क कम था। इस अचानक मेल ने उनमें अपनी अलग पहचान और स्वायत्तता को लेकर असुरक्षा और जागरूकता दोनों ही पैदा की, जिससे अनेक आंदोलन शुरु हुए। आधुनिक शिक्षा और नई राजनीतिक व्यवस्था ने उन्हें अपनी विशिष्टता को संगठित रूप से प्रस्तुत करने का अवसर दिया। उन्होंने महसूस किया कि उनके संसाधनों और संस्कृति को बचाने के लिए उन्हें एक राजनीतिक इकाई के रूप में खड़ा होना होगा। यह प्रक्रिया दर्शाती है कि कैसे आधुनिकता का प्रवेश पारंपरिक समाजों में नई प्रकार की पहचान और संघर्षों को जन्म देता है।

108. (B) अल्पकालिक और स्वतःस्फूर्त होना
सामाजिक आंदोलनों की विशेषता उनका संगठित और निरंतर होना है, न कि अल्पकालिक और स्वतःस्फूर्त। स्वतःस्फूर्त विरोध केवल एक क्षणिक घटना हो सकते हैं, लेकिन एक वास्तविक आंदोलन के लिए लंबे समय तक सामूहिक प्रयास और एक सुव्यवस्थित ढांचे की आवश्यकता होती है। इसमें नेतृत्व, उद्देश्य और सदस्यों के बीच एक गहरा पारस्परिक संबंध होता है जो उसे स्थिरता प्रदान करता है।
बिना संगठन और निरंतरता के समाज में कोई भी बड़ा या स्थायी परिवर्तन लाना संभव नहीं है। आंदोलनों में विचारधारा का प्रवाह होता है जो कार्यकर्ताओं को समय-समय पर प्रेरित करता रहता है। इसलिए, क्षणिक आवेश में किए गए विरोध प्रदर्शनों को सामाजिक आंदोलन की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, क्योंकि उनमें भविष्य के लिए कोई निश्चित योजना नहीं होती।

109. (C) स्थापित व्यवस्था के लिए एक वैध प्रतिक्रिया के रूप में
कार्ल मार्क्स की विचारधारा से प्रभावित विद्वानों ने समाज के दबे-कुचले वर्गों द्वारा की जाने वाली सामूहिक हिंसा को अराजकता के बजाय व्यवस्था के प्रति एक वैध आक्रोश के रूप में देखा। उनका तर्क था कि जब व्यवस्था अन्यायपूर्ण हो जाती है और शांतिपूर्ण रास्ते बंद हो जाते हैं, तो परिवर्तन के लिए किया गया संघर्ष स्वाभाविक है। यह दृष्टिकोण आंदोलनों के आर्थिक और वर्गीय कारणों को प्राथमिकता देता है।
उनके अनुसार, यह हिंसा शोषकों के विरुद्ध शोषितों की आत्मरक्षा और मुक्ति का एक साधन होती है। वे इसे इतिहास की प्रगति का एक हिस्सा मानते हैं जहाँ पुरानी व्यवस्था टूटती है और नई का जन्म होता है। यह विचार सामाजिक संघर्षों को समझने के लिए एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक आधार प्रदान करता है, जो उन्हें केवल आपराधिक गतिविधि मानने का विरोध करता है।

110. (A) P-2, Q-1, R-4, S-3
बिहार प्रोविंसिएल किसान सभा की स्थापना 1929 में हुई थी, जबकि ऑल इंडिया किसान सभा 1936 में अस्तित्व में आई। महात्मा गांधी द्वारा टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन (टी.एल.ए.) का गठन 1918 में किया गया था और अखिल भारतीय महिला सम्मेलन (AIWC) की स्थापना 1926 में हुई थी। यह मिलान भारत के विभिन्न सामाजिक आंदोलनों और उनके संगठनात्मक विकास के वर्षों को सही ढंग से दर्शाता है।

हद तक अस्थिरता के रूप में देखा, लेकिन उनके सिद्धांतों ने यह समझने में मदद की कि समाज कैसे सुव्यवस्थित रहता है।

73. (B) केवल 1, 2, 3 और 4
'पुराने' सामाजिक आंदोलन मुख्य रूप से राजनीतिक दलों के माध्यम से संचालित होते थे और उनका केंद्र शक्ति संबंधों का पुनर्गठन करना था। उदाहरण के लिए, भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन और चीनी क्रांति का नेतृत्व संगठित पार्टियों ने किया था। यह कहना गलत है कि वे वर्ग-आधारित राजनीति से परहेज करते थे, क्योंकि वास्तव में वर्गीय संघर्ष और आर्थिक असमानता ही उनकी सबसे बड़ी प्रेरणा और आधार थे।
इन आंदोलनों का लक्ष्य अक्सर राजसत्ता पर कब्जा करना या शासन प्रणाली में बड़ा बदलाव लाना होता था। वे मजदूरों और किसानों को वर्गीय आधार पर संगठित करते थे। पुराने आंदोलनों की विशेषता उनकी व्यापक संगठनात्मक संरचना और स्पष्ट राजनीतिक उद्देश्य थे। उन्होंने बीसवीं सदी के वैश्विक राजनीतिक परिदृश्य को बदलने और नए राष्ट्रों के निर्माण में एक निर्णायक भूमिका निभाई थी।

74. (A) सभी वयस्क महिलाओं के लिए मताधिकार की माँग करने वाली महिला आंदोलनकारी
'सफ्रागेट्स' उन साहसी महिला आंदोलनकारियों को कहा जाता था जिन्होंने उन्नीसवीं और बीसवीं सदी के प्रारंभ में महिलाओं के लिए मतदान के अधिकार की लड़ाई लड़ी थी। विशेष रूप से ब्रिटेन और अमेरिका में इन महिलाओं ने विरोध प्रदर्शनों, जेल यात्राओं और भूख हड़तालों के माध्यम से अपनी आवाज उठाई। उनका तर्क था कि बिना राजनीतिक भागीदारी के महिलाओं की स्थिति में सुधार होना असंभव है।
उनके इस निरंतर संघर्ष के परिणामस्वरूप ही आधुनिक लोकतंत्रों में महिलाओं को मतदान का अधिकार प्राप्त हुआ। उन्होंने न केवल कानून को चुनौती दी बल्कि समाज की उस रूढ़िवादी सोच को भी बदला जो महिलाओं को राजनीति के अयोग्य मानती थी। सफ्रागेट्स का यह आंदोलन वैश्विक महिला अधिकारों और समानता के इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और गौरवशाली अध्याय माना जाता है।

75. (B) 4, 2, 3, 1
कृषक आंदोलनों का सही कालानुक्रमिक क्रम नील विद्रोह (1859) से शुरू होता है। इसके बाद 1875 में दक्कन विद्रोह हुआ, फिर 1917 में गांधीजी के नेतृत्व में चंपारन सत्याग्रह हुआ। अंत में 1946-47 में बंगाल का तिभागा आंदोलन घटित हुआ। यह क्रम दर्शाता है कि कैसे समय के साथ किसानों के संघर्ष स्थानीय जमींदारों से लेकर ब्रिटिश शासन की पूरी आर्थिक नीतियों के विरुद्ध विस्तृत होते गए।
शुरुआती विद्रोह अक्सर अकाल और अत्यधिक लगान जैसे तात्कालिक कारणों से प्रेरित थे। बाद के आंदोलनों में संगठित नेतृत्व और राष्ट्रवादी चेतना का समावेश हुआ। चंपारन ने किसानों को राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम से जोड़ा, जबकि तिभागा ने साझा खेती की समस्याओं को केंद्र में लाया। यह ऐतिहासिक विकास भारतीय किसानों की बढ़ती राजनीतिक चेतना और संगठनात्मक शक्ति का प्रत्यक्ष प्रमाण प्रस्तुत करता है।

76. (B) एक सामान्य अभिमुखता और परिवर्तन लाने का तरीका
एक सामाजिक आंदोलन के लिए केवल विरोध ही काफी नहीं है, बल्कि उसके पीछे एक साझी विचारधारा और परिवर्तन लाने का एक स्पष्ट तरीका होना आवश्यक है। इसमें सदस्यों के बीच एक सामान्य उद्देश्य की समझ होती है जो उन्हें लंबे समय तक एकजुट रखती है। आंदोलनों के लिए संगठन, नेतृत्व और समाज में बदलाव लाने या उसे रोकने की एक सुव्यवस्थित रणनीति अनिवार्य घटक हैं।
बिना किसी लक्ष्य या संगठन के किया गया विरोध केवल एक क्षणिक घटना बनकर रह जाता है। सामाजिक आंदोलन समाज की गहरी जड़ों को प्रभावित करने के लिए निरंतर सामूहिक प्रयास करते हैं। उनकी सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि वे अपनी मांगों को कितने प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करते हैं और जनता को एक साझा विचार के लिए कैसे प्रेरित करते हैं।

77. (C) नमक प्रतिदिन के जन उपभोग की चीज थी।
महात्मा गांधी ने नमक को प्रतिरोध का प्रतीक इसलिए चुना क्योंकि यह एक ऐसी बुनियादी वस्तु थी जिसका उपयोग अमीर और गरीब सभी समान रूप से करते थे। नमक पर कर लगाने का ब्रिटिश कानून हर भारतीय को प्रभावित करता था। इस सरल लेकिन शक्तिशाली प्रतीक के माध्यम से गांधीजी ने देश के हर घर को स्वतंत्रता संग्राम से भावनात्मक और व्यावहारिक रूप से जोड़ दिया।
नमक सत्याग्रह ने ब्रिटिश राज के अन्यायपूर्ण चरित्र को दुनिया के सामने उजागर किया। यह विरोध का एक ऐसा तरीका था जिसमें हिंसा की कोई आवश्यकता नहीं थी, फिर भी इसने साम्राज्य की नींव हिला दी। इस अभियान ने यह सिद्ध किया कि एक सामान्य और रोजमर्रा की वस्तु भी राजनीतिक लामबंदी का एक अत्यंत प्रभावी माध्यम बन सकती है जब उसे सही नेतृत्व मिले।

78. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या है।
सामाजिक परिवर्तन और सामाजिक आंदोलन के बीच एक गहरा संबंध है, लेकिन वे समान नहीं हैं। सामाजिक परिवर्तन एक व्यापक और ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो अक्सर धीमी और अनपेक्षित होती है। इसके विपरीत, सामाजिक आंदोलन किसी खास उद्देश्य के लिए किया गया एक सचेत और निरंतर प्रयास है। दोनों कथन सही हैं क्योंकि आंदोलन अक्सर परिवर्तन की इस बड़ी प्रक्रिया को गति प्रदान करते हैं।
परिवर्तन तकनीक या प्राकृतिक आपदाओं से भी आ सकता है, जबकि आंदोलनों के पीछे मानवीय चेतना और सामूहिक निर्णय होता है। आंदोलन समाज को एक निश्चित दिशा में मोड़ने की कोशिश करते हैं। अभिकथन और तर्क यह स्पष्ट करते हैं कि समाज के विकास में कुछ बदलाव स्वतः होते हैं और कुछ संगठित समूहों के सक्रिय हस्तक्षेप का परिणाम होते हैं।

79. (A) उनका सामाजिक बहिष्कार किया गया
उन्नीसवीं सदी में जब सुधारकों ने विधवा पुनर्विवाह जैसी प्रगतिशील विचारधारा का प्रचार किया, तो उन्हें तत्कालीन रूढ़िवादी समाज के कड़े विरोध का सामना करना पड़ा। कई

बल्कि एक क्लिक के माध्यम से लाखों लोगों को जागरूक किया जा सकता है। सिएटल के इस प्रदर्शन ने पारराष्ट्रीय आंदोलनों के युग की शुरुआत की, जहाँ स्थानीय और वैश्विक मुद्दे एक-दूसरे में समाहित हो जाते हैं।

117. (C) बंबई
1981-82 में बंबई (अब मुंबई) के कपड़ा मिल मजदूरों ने दत्ता सामंत के नेतृत्व में एक विशाल और ऐतिहासिक हड़ताल की थी। यह हड़ताल वेतन वृद्धि और खराब कार्य स्थितियों के विरुद्ध थी और इसमें हजारों मजदूर महीनों तक काम पर नहीं लौटे। इस घटना ने बंबई के औद्योगिक इतिहास को पूरी तरह बदल दिया और मिलों के पतन व शहर के सामाजिक स्वरूप के परिवर्तन का कारण बनी।
हालांकि यह हड़ताल अपने आर्थिक उद्देश्यों को पूरी तरह प्राप्त नहीं कर सकी, लेकिन इसने मजदूरों की एकजुटता और संघर्ष की क्षमता को प्रदर्शित किया। इसके बाद बंबई का कपड़ा उद्योग फिर कभी अपनी पुरानी रौनक वापस नहीं पा सका। यह हड़ताल भारतीय मजदूर आंदोलन के सबसे बड़े और सबसे दुखद संघर्षों में से एक मानी जाती है, जिसके प्रभाव आज भी महसूस किए जाते हैं।

118. (A) 3, 4, 1, 2
मजदूर संगठनों का सही कालानुक्रमिक क्रम बी.पी. वाडिया द्वारा 1918 में प्रथम मजदूर संघ (मद्रास लेबर यूनियन) की स्थापना से शुरु होता है। इसके बाद उसी वर्ष गांधीजी ने टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन बनाया। 1920 में ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) का गठन हुआ और अंततः 1947 में इंडियन नेशनल ट्रेड यूनियन कांग्रेस (INTUC) अस्तित्व में आई। यह क्रम मजदूर चेतना के संगठनात्मक विकास को दर्शाता है।
शुरुआत स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर हुई, जो धीरे-धीरे राष्ट्रीय मंचों में बदल गई। एटक ने विभिन्न विचारधाराओं को एक साथ लाया, जबकि इंटक ने स्वतंत्रता के बाद एक राष्ट्रवादी विकल्प प्रदान किया। यह विकास दर्शाता है कि कैसे भारतीय श्रमिकों ने खुद को एक शक्तिशाली राजनीतिक इकाई के रूप में स्थापित किया, जो राष्ट्र निर्माण और औद्योगिक प्रगति में अपनी आवाज बुलंद कर सके।

119. (D) यह भाग लेने वाले लोगों के उद्देश्यों को एक करती है।
किसी भी सामाजिक आंदोलन में विचारधारा एक रीढ़ की हड्डी की तरह कार्य करती है। यह आंदोलन में शामिल लोगों को एक साझा दृष्टिकोण प्रदान करती है और उन्हें यह समझने में मदद करती है कि वे क्यों लड़ रहे हैं। विचारधारा बिखरे हुए आक्रोश को एक संगठित शक्ति में बदल देती है और कार्यकर्ताओं को विपरीत परिस्थितियों में भी अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित रहने के लिए प्रेरित करती है।
बिना विचारधारा के कोई भी आंदोलन केवल एक अनियंत्रित भीड़ बनकर रह जाता है। यह विचारधारा ही है जो आंदोलन के लक्ष्यों को परिभाषित करती है और उसे समाज में वैधता प्रदान करती है। चाहे वह गांधीवाद हो, समाजवाद हो या नारीवाद, हर सफल आंदोलन के पीछे एक सुदृढ़ वैचारिक ढांचा होता है जो लोगों के संघर्ष को एक अर्थ और दिशा प्रदान करता है।

120. (A) भू-स्वामित्व, रोज़गार, यौन-उत्पीड़न और दहेज से संबंधित कानून
भारत में महिला आंदोलन की एक सबसे महत्वपूर्ण सफलता विभिन्न क्षेत्रों में लाए गए क्रांतिकारी कानूनी बदलाव हैं। इन आंदोलनों के दबाव के कारण ही संपत्ति में महिलाओं के अधिकार, कार्यस्थलों पर यौन-उत्पीड़न की रोकथाम और दहेज जैसी कुरीतियों के विरुद्ध कड़े कानून बनाए गए। ये कानून महिलाओं को एक सुरक्षित और न्यायपूर्ण सामाजिक वातावरण प्रदान करने की दिशा में राज्य की ओर से दी गई मान्यता हैं।
कानून केवल सुरक्षा ही नहीं देते, बल्कि समाज को यह संदेश भी देते हैं कि महिलाओं के प्रति होने वाला कोई भी अन्याय अब बर्दाश्त नहीं किया जाएगा। हालांकि इन कानूनों का पूर्ण कार्यान्वयन अभी भी एक चुनौती है, लेकिन इनकी उपस्थिति महिलाओं को अपने अधिकारों के लिए लड़ने का एक मजबूत आधार प्रदान करती है। यह आंदोलनों के द्वारा लाए गए संस्थागत सुधारों का एक स्थायी प्रमाण है।

121. (C) फ्रांसिसी क्रांति और औद्योगिक क्रांति
समाजशास्त्र के एक औपचारिक विषय के रूप में उदय की जड़ें अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी की दो महान क्रांतियों—फ्रांसिसी क्रांति और औद्योगिक क्रांति—में छिपी हैं। इन घटनाओं ने पुरानी व्यवस्थाओं को बदलकर नए सामाजिक वर्गों, शहरीकरण और राजनीतिक चेतना को जन्म दिया। विद्वान इन परिवर्तनों और उनसे उत्पन्न सामाजिक अव्यवस्था को समझने की कोशिश कर रहे थे, जिससे समाजशास्त्र का जन्म हुआ।
फ्रांसिसी क्रांति ने स्वतंत्रता और समानता जैसे नए विचार दिए, जबकि औद्योगिक क्रांति ने काम करने और रहने के तरीकों को पूरी तरह बदल दिया। इन परिवर्तनों के कारण उभरे नए संघर्षों और आंदोलनों ने विचारकों को समाज के वैज्ञानिक अध्ययन के लिए प्रेरित किया। इसी ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ने समाजशास्त्र को एक गतिशील और परिवर्तन-उन्मुख विषय के रूप में विकसित होने में मदद की।

122. (A) सुधारवादी आंदोलन
सुधारवादी आंदोलन वे होते हैं जो वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था के भीतर रहकर धीरे-धीरे और क्रमिक बदलाव लाने का प्रयास करते हैं। इनका उद्देश्य पूरी प्रणाली को बदलना नहीं, बल्कि उसमें मौजूद दोषों को दूर करना और प्रगतिशील सुधार लाना होता है। उदाहरण के लिए, सूचना का अधिकार आंदोलन या सती प्रथा के विरुद्ध अभियान इसी श्रेणी में आते हैं क्योंकि वे कानून के माध्यम से सुधार चाहते थे।
ये आंदोलन संविधान और मौजूदा संस्थाओं के दायरे में काम करते हैं। वे जनमत तैयार करते हैं और सरकार पर नीतिगत बदलावों के लिए दबाव डालते हैं। समाज के शांतिपूर्ण और सुव्यवस्थित विकास में सुधारवादी आंदोलनों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि वे संघर्ष के बजाय सहमति और

महिलाओं ने पेड़ों का घेराव कर उन्हें कटने से बचाया और पर्यावरण संरक्षण को एक नया मानवीय आयाम दिया। गाँववासियों का रोष केवल पेड़ों के प्रति नहीं, बल्कि उन बाहरी ठेकेदारों के प्रति भी था जो उनके संसाधनों को नष्ट कर रहे थे। इस आंदोलन ने दुनिया को सिखाया कि कैसे साधारण लोग संगठित होकर बड़े-बड़े व्यावसायिक हितों को सफलतापूर्वक चुनौती दे सकते हैं।

86. (B) क्योंकि इसने गाँववासियों को वनों की कटाई, भूस्खलन और बाढ़ के बीच संबंध को समझाया।
1970 की अलकनंदा बाढ़ चिपको आंदोलन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ थी क्योंकि इसने वैज्ञानिक तथ्य को गाँववासियों के प्रत्यक्ष अनुभव में बदल दिया। लोगों ने खुद देखा कि कैसे पहाड़ों पर पेड़ों की कमी के कारण मिट्टी बह गई और भयंकर बाढ़ आई। इस आपदा ने उन्हें यह विश्वास दिलाया कि उनके जंगलों की रक्षा करना उनके स्वयं के जीवन को सुरक्षित रखने के लिए अनिवार्य है।
इस जागरूकता ने आंदोलन को एक भावनात्मक और तार्किक मजबूती प्रदान की। अब यह केवल आर्थिक अधिकार का मुद्दा नहीं रहा, बल्कि अस्तित्व की लड़ाई बन गया। बाढ़ के बाद गाँववालों ने संगठित होकर पेड़ों की कटाई का कड़ा विरोध करना शुरू किया। यह घटना दर्शाती है कि कैसे प्राकृतिक आपदाएं कभी-कभी सामाजिक चेतना और जन आंदोलनों के लिए एक उत्प्रेरक का कार्य करती हैं।

87. (D) एक 'लगान विरोधी' अभियान
1928 में हुआ बारदोली सत्याग्रह मुख्य रूप से एक 'लगान विरोधी' अभियान था जो गुजरात के किसानों द्वारा सरकार द्वारा की गई भारी कर वृद्धि के विरुद्ध चलाया गया था। सरदार वल्लभभाई पटेल के कुशल नेतृत्व में किसानों ने संगठित होकर कर देने से इनकार कर दिया। यह आंदोलन अहिंसा और सामूहिक अनुशासन का एक उत्कृष्ट उदाहरण बना, जिसने अंततः ब्रिटिश सरकार को झुकने पर मजबूर कर दिया।
इस संघर्ष की सफलता ने सरदार पटेल को एक राष्ट्रीय नेता के रूप में स्थापित किया और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊर्जा दी। किसानों की अटूट एकता ने यह दिखाया कि यदि ग्रामीण जनता संगठित हो जाए, तो वह किसी भी दमनकारी नीति को विफल कर सकती है। बारदोली की जीत ने पूरे देश के किसानों को अन्याय के विरुद्ध खड़े होने के लिए बहुत प्रेरित किया।

88. (A) 1929
बिहार प्रोविंसिएल किसान सभा की स्थापना वर्ष 1929 में स्वामी सहजानंद सरस्वती द्वारा की गई थी। इस संगठन ने बिहार के किसानों की समस्याओं, जैसे जमींदारी उत्पीड़न और अवैध लगान, को प्रभावी ढंग से उठाने का कार्य किया। इसने किसानों को संगठित कर उन्हें उनके अधिकारों के प्रति जागरूक किया और आगे चलकर राष्ट्रीय स्तर पर किसान आंदोलनों को मजबूत बनाने के लिए एक ठोस आधार प्रदान किया।
इस सभा की सक्रियता ने ही 1936 में अखिल भारतीय किसान सभा के गठन का मार्ग प्रशस्त किया। स्वामी सहजानंद ने किसानों के बीच घूम-घूमकर उन्हें अपनी शक्ति का अहसास कराया। उनके नेतृत्व में बिहार के किसान एक जागरूक और जुझारू राजनीतिक शक्ति के रूप में उभरे, जिसने न केवल प्रांतीय बल्कि राष्ट्रीय राजनीति को भी समय-समय पर गहराई से प्रभावित किया।

89. (C) पैदावार का दो-तिहाई हिस्सा, न कि प्रथागत आधा
1946-47 के तिभागा आंदोलन की सबसे प्रमुख मांग यह थी कि बटाईदार किसानों को कुल पैदावार का दो-तिहाई हिस्सा मिलना चाहिए। उस समय प्रथा के अनुसार उन्हें केवल आधा हिस्सा मिलता था और बाकी जमींदार ले जाते थे। किसानों ने 'तिभागा' (तीन हिस्सा) का नारा दिया, जिसका अर्थ था कि मेहनत करने वाले किसान का हिस्सा बढ़ना चाहिए और शोषक जमींदारों का कम होना चाहिए।
यह आंदोलन बंगाल के ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत तेजी से फैला और इसमें हिंदू-मुस्लिम दोनों समुदायों के किसानों ने एकजुट होकर भाग लिया। इस संघर्ष ने ग्रामीण शक्ति संतुलन को हिला दिया और भूमि सुधारों की आवश्यकता को अपरिहार्य बना दिया। तिभागा आंदोलन भारतीय इतिहास में आर्थिक न्याय के लिए किए गए सबसे साहसिक किसान विद्रोहों में से एक माना जाता है।

90. (B) (A) और (R) दोनों सत्य हैं लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या है।
1970 के दशक के 'नए किसान' आंदोलन वास्तव में क्षेत्रीय आधार पर संगठित थे और उन्होंने खुद को मुख्यधारा के राजनीतिक दलों से दूर रखा। उनकी विचारधारा अक्सर राज्य की नीतियों और शहरी वर्चस्व के विरुद्ध थी, जिसे वे 'इंडिया' बनाम 'भारत' के रूप में देखते थे। दोनों कथन सही हैं क्योंकि यह शहरी-विरोधी दृष्टिकोण ही उनके स्वतंत्र और क्षेत्रीय संगठन बनाने का एक मुख्य आधार था।
ये किसान सरकार की उन नीतियों से नाराज थे जो औद्योगिक क्षेत्र को लाभ पहुँचाती थीं और कृषि की अनदेखी करती थीं। उन्होंने सड़कों और रेलमार्गों को जाम करने जैसे नए और कड़े तरीकों का इस्तेमाल किया। इन आंदोलनों ने स्पष्ट किया कि कृषि अब केवल जीवन जीने का साधन नहीं बल्कि एक व्यावसायिक मुद्दा है जिस पर किसानों को अधिक नियंत्रण चाहिए।

91. (D) हड़ताल की लहर
1917 का वर्ष भारतीय श्रमिक इतिहास में एक बड़े बदलाव का वर्ष था, जब बंबई, कलकत्ता और मद्रास के प्रमुख औद्योगिक केंद्रों में हड़तालों की एक व्यापक लहर चली। युद्ध के बाद बढ़ती महंगाई और खराब कार्य स्थितियों ने मजदूरों को सड़कों पर उतरने के लिए मजबूर किया। इस सामूहिक आक्रोश ने यह स्पष्ट कर दिया कि मजदूर अब संगठित होकर अपने अधिकारों के लिए लड़ने को तैयार हैं।
इन हड़तालों ने ब्रिटिश प्रशासन और मिल मालिकों को मजदूरों की बढ़ती ताकत का अहसास कराया। इसी माहौल के परिणामस्वरूप अगले ही वर्ष भारत में पहले औपचारिक मजदूर संघ का गठन संभव हो सका। यह दौर भारतीय मजदूर

सुधारकों को उनके समुदायों से बाहर निकाल दिया गया और उनका सामाजिक बहिष्कार किया गया। समाज इन बदलावों को अपनी पारंपरिक मर्यादाओं और धार्मिक मान्यताओं के लिए एक बड़े खतरे के रूप में देख रहा था।
इस विरोध के बावजूद, सुधारकों ने अपना संघर्ष जारी रखा और तार्किक बहसों के माध्यम से जनमत बदलने की कोशिश की। यह उदाहरण दिखाता है कि सामाजिक परिवर्तन की राह कभी भी आसान नहीं होती और शुरुआती नेतृत्व को अक्सर भारी व्यक्तिगत कीमत चुकानी पड़ती है। अंततः उनके धैर्य और निरंतर प्रयासों ने ही भविष्य के कानूनी और सामाजिक सुधारों का मार्ग प्रशस्त किया।

80. (C) P-3, Q-4, R-1, S-2
चार्टरवाद मुख्य रूप से इंग्लैंड के उन पुरुषों का आंदोलन था जिनके पास संपत्ति नहीं थी और वे मतदान का अधिकार चाहते थे। सफ्रागेट्स महिलाओं के मताधिकार के लिए लड़ने वाली जुझारू महिला कार्यकर्ता थीं। राजा राममोहन राय ने सतीप्रथा जैसी अमानवीय कुरीति का कड़ा विरोध किया, जबकि डॉ. अंबेडकर ने दलित आंदोलन का नेतृत्व कर दबे-कुचले वर्गों को न्याय और गरिमा दिलाने के लिए संघर्ष किया।
व्यक्तियों और समूहों का यह मिलान यह स्पष्ट करता है कि सामाजिक आंदोलन अलग-अलग समय और स्थानों पर विशिष्ट लक्ष्यों के साथ पैदा होते हैं। चाहे वह राजनीतिक अधिकार हों या सामाजिक समानता, इन सभी का उद्देश्य समाज को अधिक न्यायपूर्ण और समावेशी बनाना था। इन नायकों और उनके आंदोलनों ने आधुनिक सभ्यता की नींव रखने में एक निर्णायक और ऐतिहासिक भूमिका निभाई है।

81. (B) क्रांतिकारी आंदोलन
क्रांतिकारी आंदोलन वे होते हैं जो समाज की मौजूदा संरचना और राजनीतिक व्यवस्था में आमूल-चूल परिवर्तन लाना चाहते हैं। इनका उद्देश्य केवल सुधार करना नहीं, बल्कि पुरानी व्यवस्था को पूरी तरह से उखाड़ फेंककर एक नई प्रणाली स्थापित करना होता है। अक्सर ये आंदोलन राजसत्ता पर नियंत्रण पाने के लिए किए जाते हैं, जैसा कि रूस और चीन की प्रसिद्ध क्रांतियों में देखा गया था।
ऐसे आंदोलनों में सत्ता का हस्तांतरण एक अनिवार्य तत्व होता है। वे समाज के शक्ति संतुलन को पूरी तरह बदल देते हैं और अक्सर हिंसा या व्यापक जन विद्रोह का सहारा लेते हैं। क्रांतिकारी आंदोलन दर्शाते हैं कि जब व्यवस्था सुधारों के प्रति बहरी हो जाती है, तो समाज के भीतर से तीव्र बदलाव की मांग कैसे एक विस्फोटक रूप ले लेती है।

82. (A) आंदोलन का अधिक संस्थात्मक बन जाना
जब कोई सामाजिक आंदोलन 'सामाजिक आंदोलन संगठनों' (SMOs) का रूप लेने लगता है, तो इसका अर्थ है कि वह धीरे-धीरे अधिक व्यवस्थित और संस्थागत हो रहा है। इसका तात्पर्य है कि आंदोलन में अब निश्चित नियम, कार्यालय और वेतनभोगी कर्मचारी हो सकते हैं। यह प्रक्रिया आंदोलन को स्थिरता तो प्रदान करती है, लेकिन कभी-कभी इससे उसका शुरुआती जोश और जमीनी जुड़ाव कम भी हो सकता है।
संस्थागत होना किसी आंदोलन की लंबी उम्र के लिए आवश्यक हो सकता है ताकि वह जटिल राजनीतिक माहौल में प्रभावी ढंग से पैरवी कर सके। यह विकास दिखाता है कि आंदोलन अब केवल एक तात्कालिक विरोध नहीं रह गया है, बल्कि उसने समाज में एक स्थायी स्थान बना लिया है। हालांकि, यह बदलाव आंदोलन के नेतृत्व और कार्यकर्ताओं के बीच के संबंधों को भी औपचारिक बना देता है।

83. (A) केवल 1, 3 और 4
'नए सामाजिक आंदोलनों' की मुख्य विशेषता उनका जीवन की गुणवत्ता और सांस्कृतिक पहचान जैसे मुद्दों पर केंद्रित होना है। रजनी कोठारी ने इन्हें 'गैर दलीय राजनीतिक संगठन' के रूप में देखा क्योंकि ये पारंपरिक पार्टियों से स्वतंत्र होते हैं। साथ ही, ये आंदोलन अक्सर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जुड़े होते हैं। यह कहना गलत है कि वे वर्गीय शोषण से संबंधित नहीं हैं, क्योंकि वे नए संदर्भों में इसे भी उठाते हैं।
ये आंदोलन पर्यावरण और मानवाधिकारों जैसे वैश्विक सरोकारों को स्थानीय स्तर पर जोड़ते हैं। इनमें शामिल लोग अक्सर अपनी विशिष्ट पहचान, जैसे महिला या आदिवासी, के आधार पर संगठित होते हैं। नए आंदोलनों की शक्ति उनकी लचीली कार्यप्रणाली और सूचना तकनीक के व्यापक उपयोग में निहित है, जिससे वे बहुत तेजी से वैश्विक जनमत को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं।

84. (D) विकास के दुष्प्रभावों और पर्यावरणीय क्षरण के बारे में चिंता
पारिस्थितिकीय आंदोलनों का मुख्य सरोकार आधुनिक विकास के उन विनाशकारी परिणामों से है जो प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से पैदा हुए हैं। ये आंदोलन वनों की कटाई, प्रदूषण और ग्लोबल वार्मिंग जैसी समस्याओं के प्रति समाज और सरकारों को चेतावनी देते हैं। उनका मानना है कि वास्तविक प्रगति वही है जो पर्यावरण के साथ संतुलन बनाकर चले और भविष्य की पीढ़ियों के हितों की रक्षा करे।
ऐसे आंदोलन दर्शाते हैं कि प्रकृति का विनाश अंततः मानव अस्तित्व के लिए खतरा है। उन्होंने 'सतत विकास' की अवधारणा को लोकप्रिय बनाया है, जहाँ आर्थिक लाभ के बजाय पारिस्थितिकी की सुरक्षा को प्राथमिकता दी जाती है। चिपको और नर्मदा बचाओ जैसे आंदोलनों ने यह सिद्ध किया है कि पर्यावरण संरक्षण का मुद्दा केवल वैज्ञानिक बहस नहीं, बल्कि एक जीवंत सामाजिक संघर्ष है।

85. (B) केवल 1, 3 और 4
चिपको आंदोलन हिमालय क्षेत्र का एक ऐतिहासिक पारिस्थितिकीय आंदोलन था जिसने व्यावसायिक कटाई के विरुद्ध स्थानीय लोगों की आजीविका का मुद्दा उठाया। यह संघर्ष सीधे तौर पर गाँववालों की 'जीवन-निर्वहन की अर्थव्यवस्था' और सरकार की 'मुनाफे की अर्थव्यवस्था' के बीच था। यह कहना पूरी तरह गलत है कि इसमें महिलाओं की भागीदारी नहीं थी, क्योंकि वास्तव में महिलाएं ही इस आंदोलन की असली ताकत थीं।

98. (B) केवल 1, 3 और 5
उन्नीसवीं सदी के सुधार आंदोलनों ने सती प्रथा, बाल विवाह और विधवाओं की स्थिति जैसे गंभीर मुद्दों को उठाकर समाज में हलचल मचा दी थी। बीसवीं सदी के आते-आते महिलाओं ने स्वयं संगठित होकर अपने अधिकार मांगना शुरु किया, जिससे महिला संगठनों में वृद्धि हुई। इन सभी गतिविधियों ने एक ऐसा वैचारिक माहौल बनाया जहाँ महिलाओं के मुद्दों की अनदेखी करना सत्ता और समाज के लिए असंभव हो गया।
यह कहना गलत है कि इन आंदोलनों से कोई बदलाव नहीं आया, क्योंकि वास्तव में इन्होंने ही भविष्य के कानूनों की नींव रखी थी। इन प्रयासों ने महिलाओं को यह विश्वास दिलाया कि वे अपनी स्थिति बदल सकती हैं। भले ही शुरुआत धीमी थी, लेकिन इन आंदोलनों ने भारतीय समाज के लोकतंत्रीकरण और महिलाओं की सार्वजनिक भागीदारी के द्वार खोल दिए थे।

99. (C) क्योंकि यह राजनीतिक दलों और अन्य संगठनों से स्वतंत्र रूप से उभरा।
1970 के दशक के महिला आंदोलन को 'स्वायत्त' इसलिए कहा जाता है क्योंकि इसका नेतृत्व और एजेंडा किसी राजनीतिक दल द्वारा तय नहीं किया गया था। महिलाएं स्वयं संगठित हुईं और उन्होंने अपने उन अनुभवों और समस्याओं को उठाया जिन्हें पारंपरिक दल अक्सर गौण मानते थे। इस स्वायत्तता ने उन्हें अपनी आवाज को अधिक स्पष्टता और बिना किसी राजनीतिक समझौते के उठाने की स्वतंत्रता दी।
इन समूहों ने महिलाओं के विरुद्ध हिंसा और भेदभाव जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया जो विचारधाराओं की सीमाओं से परे थे। उनकी यह स्वतंत्रता ही उनकी सबसे बड़ी ताकत बनी, जिससे वे समाज के व्यापक वर्ग को प्रभावित कर सकीं। स्वायत्तता का अर्थ यहाँ अपने लक्ष्यों और कार्यप्रणाली पर स्वयं महिलाओं का पूर्ण नियंत्रण होना था, जो भारतीय नारीवाद का एक महत्वपूर्ण चरण बना।

100. (D) ताकतवर और सफल होने का
पितृसत्तात्मक समाज केवल महिलाओं पर ही नहीं, बल्कि पुरुषों पर भी विशिष्ट प्रकार के दबाव डालता है। पुरुषों से अपेक्षा की जाती है कि वे हमेशा शारीरिक रूप से ताकतवर, आर्थिक रूप से सफल और भावनात्मक रूप से कठोर बने रहें। उन्हें घर का मुख्य सहारा और रक्षक माना जाता है, जिससे उनके ऊपर हर परिस्थिति में विजयी और सक्षम दिखने का एक भारी मानसिक बोझ रहता है।
यह व्यवस्था पुरुषों को अपनी कमजोरियां या भावनाएं प्रकट करने से रोकती है, क्योंकि इसे मर्दानगी के विरुद्ध माना जाता है। ऐसे दबावों के कारण पुरुषों में तनाव और स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं भी बढ़ती हैं। पितृसत्ता की समझ यह स्पष्ट करती है कि यह लैंगिक ढांचा पुरुषों और महिलाओं दोनों के स्वाभाविक विकास को सीमित करता है और उन्हें रुढ़िवादी भूमिकाओं में बांध देता है।

101. (C) 21+ आयु के सभी पुरुष तथा विशिष्ट श्रेणियों वाली वयस्क महिलाएँ।
1918 में ब्रिटेन में पारित कानून द्वारा पहली बार सभी 21 वर्ष से अधिक आयु के पुरुषों को मतदान का अधिकार दिया गया, चाहे उनके पास संपत्ति हो या नहीं। महिलाओं के लिए यह अधिकार अभी भी सीमित था, जहाँ केवल विशिष्ट श्रेणियों वाली वयस्क महिलाओं को ही मतदान की अनुमति मिली। यह पूर्ण लोकतांत्रिक समानता की दिशा में एक महत्वपूर्ण लेकिन अधूरा कदम था।
इस बदलाव के पीछे चार्टरवाद और सफ्रागेट्स आंदोलनों का लंबा संघर्ष था। हालांकि महिलाओं को पुरुषों के समान पूर्ण अधिकार मिलने में और कुछ वर्ष लगे, लेकिन 1918 के कानून ने संपत्ति की शर्त को हटाकर साधारण नागरिकों के सशक्तिकरण का मार्ग प्रशस्त किया। यह आधुनिक चुनावी प्रणाली के विकास और मताधिकार के सार्वभौमीकरण की दिशा में एक ऐतिहासिक मील का पत्थर माना जाता है।

102. (B) धर्म सभा
उन्नीसवीं सदी में जब राजा राममोहन राय ने सतीप्रथा के उन्मूलन के लिए अभियान चलाया, तो रुढ़िवादी हिंदू समाज के एक वर्ग ने इसका कड़ा विरोध किया। इसके समर्थन में राधाकांत देव ने 'धर्म सभा' की स्थापना की, जिसका मुख्य उद्देश्य सनातन धर्म की पारंपरिक मान्यताओं और प्रथाओं की रक्षा करना था। यह संगठन सुधारवादी लहर के विरुद्ध एक प्रतिरोधी आंदोलन का एक स्पष्ट उदाहरण है।
धर्म सभा के सदस्यों ने तर्क दिया कि सतीप्रथा उनके धर्म का अभिन्न हिस्सा है और सरकार को इसमें हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए। उन्होंने ब्रिटिश अधिकारियों को याचिकाएं भी भेजीं। यह घटना दर्शाती है कि समाज में जब भी कोई प्रगतिशील बदलाव आता है, तो उसके जवाब में यथास्थिति बनाए रखने के लिए प्रतिक्रियावादी समूह भी सक्रिय हो जाते हैं, जो सामाजिक द्वंद्व का हिस्सा हैं।

103. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
नए सामाजिक आंदोलन अपनी प्रकृति में वर्गीय सीमाओं को लांघते हैं और विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों को एक साझा उद्देश्य के लिए एकजुट करते हैं। महिलाओं का आंदोलन इसका सबसे सटीक उदाहरण है क्योंकि इसमें उच्च वर्ग की बुद्धिजीवी महिलाओं से लेकर ग्रामीण क्षेत्रों की गरीब मजदूर महिलाएं तक शामिल होती हैं। अभिकथन और तर्क दोनों सही हैं क्योंकि यह विविधता ही इन आंदोलनों को नया और व्यापक बनाती है।
यहाँ एकता का आधार 'वर्ग' नहीं बल्कि 'लिंग' या 'साझा अनुभव' होता है। पर्यावरण आंदोलनों में भी अमीर और गरीब दोनों ही प्रकृति के विनाश के विरुद्ध एक साथ खड़े होते हैं। यह समावेशी स्वरुप ही नए आंदोलनों को पारंपरिक वर्गीय राजनीति से अलग करता है और उन्हें अधिक शक्तिशाली सामाजिक प्रभाव पैदा करने की क्षमता प्रदान करता है।

आंदोलन के जन्म और उसके एक संगठित राजनीतिक शक्ति के रूप में विकसित होने की शुरुआती और महत्वपूर्ण प्रक्रिया को रेखांकित करता है।

92. (B) टेक्सटाइल लेबर ऐसोसिएशन (TLA)
महात्मा गांधी ने 1918 में अहमदाबाद में 'टेक्सटाइल लेबर एसोसिएशन' (टी.एल.ए.) की स्थापना की थी। यह संगठन उनके 'ट्रस्टीशिप' के सिद्धांत पर आधारित था, जिसका उद्देश्य मजदूरों और प्रबंधन के बीच संघर्ष के बजाय शांतिपूर्ण संवाद और मध्यस्थता के माध्यम से समस्याओं को हल करना था। गांधीजी ने मजदूरों को केवल अधिकारों के लिए ही नहीं बल्कि अपनी व्यक्तिगत आदतों में सुधार के लिए भी प्रेरित किया।
टी.एल.ए. ने अहमदाबाद के मिल मजदूरों की स्थिति सुधारने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई और गांधीवादी विचारधारा के तहत एक वैकल्पिक श्रमिक मॉडल पेश किया। यहाँ हड़ताल को अंतिम हथियार माना जाता था और अनुशासन पर बहुत जोर दिया जाता था। यह संगठन भारत के अन्य आक्रामक मजदूर संघों से अलग था और इसका प्रभाव गुजरात के औद्योगिक विकास पर गहराई से पड़ा।

93. (B) P-4, Q-1, R-2, S-3
छत्तीसगढ़ में सतनामी आंदोलन घासीदास के नेतृत्व में शुरु हुआ था, जो दलितों के उत्थान के लिए था। आदि धर्म आंदोलन पंजाब में दलित पहचान को पुनर्जीवित करने के लिए सक्रिय था। महार आंदोलन महाराष्ट्र में डॉ. अंबेडकर के नेतृत्व में एक शक्तिशाली शक्ति बना। गैर-ब्राह्मण आंदोलन तमिलनाडु और महाराष्ट्र दोनों क्षेत्रों में ब्राह्मणवादी वर्चस्व को चुनौती देने के लिए चलाया गया था।
भौगोलिक क्षेत्रों का यह मिलान यह दर्शाता है कि भारत के अलग-अलग कोनों में जातिगत भेदभाव के विरुद्ध संघर्ष की प्रकृति और तीव्रता अलग थी। इन सभी आंदोलनों ने अपने-अपने क्षेत्रों में दबे-कुचले वर्गों के भीतर आत्मसम्मान और समानता की भावना पैदा की। इनके प्रभाव से ही भारतीय समाज में व्यापक सामाजिक और राजनीतिक बदलाव संभव हो सके हैं।

94. (D) प्रचुर मात्रा में दलित साहित्य का उदय
समसामयिक काल में दलित आंदोलन की सबसे गौरवशाली उपलब्धि दलित साहित्य का अभूतपूर्व विकास है। इसमें लेखकों ने अपने स्वयं के अनुभवों के माध्यम से समाज की क्रूर सच्चाइयों को उजागर किया है। इस साहित्य ने न केवल साहित्य की दुनिया में एक नया आयाम जोड़ा है, बल्कि इसने समाज के हाशिए पर रहने वाले लोगों के दर्द और उनके संघर्ष को वैश्विक स्तर पर पहचान दिलाई है।
दलित लेखकों की कृतियों ने पाठकों की सामाजिक चेतना को जगाने और पारंपरिक पूर्वग्रहों को तोड़ने में मदद की है। यह साहित्य केवल मनोरंजन के लिए नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव का एक क्रांतिकारी माध्यम बनकर उभरा है। इसने एक ऐसी बौद्धिक जगह बनाई है जहाँ दलितों की आवाज को अब दबाया नहीं जा सकता, जो उनकी बढ़ती सांस्कृतिक और राजनीतिक शक्ति का प्रतीक है।

95. (D) सभी 1, 2, 3 और 4
औपनिवेशिक काल के दौरान ब्रिटिश सरकार द्वारा जातियों के आधार पर संरक्षिता और लाभ बांटने की नीति ने जाति को एक राजनीतिक हथियार बना दिया। इससे जातियों की कर्मकांडी भूमिका पीछे छूट गई और वे शक्ति प्राप्त करने के लिए संगठित होने लगीं। इस पूरी प्रक्रिया को 'समानांतर विस्तार' कहा गया, जहाँ समान स्थिति वाली जातियां अपनी मांगों को मजबूती से रखने के लिए एकजुट हुईं।
जनगणना और राजनीतिक प्रतिनिधित्व ने लोगों को यह अहसास कराया कि उनकी संख्यात्मक शक्ति ही उन्हें लाभ दिला सकती है। इसके परिणामस्वरुप, आधुनिक जाति संगठन उभरे जो अब केवल सामाजिक रीति-रिवाजों तक सीमित नहीं थे। यह बदलाव दर्शाता है कि कैसे आधुनिक प्रशासनिक और राजनीतिक ढांचों ने पारंपरिक संस्थाओं के स्वरुप को बदलकर उन्हें नए उद्देश्यों के लिए ढाल दिया।

96. (B) दक्षिण बिहार
झारखंड राज्य का निर्माण वर्ष 2000 में तत्कालीन बिहार राज्य के दक्षिणी हिस्से को अलग करके किया गया था। इस नए राज्य के गठन की मांग दशकों पुराने जनजातीय आंदोलनों का परिणाम थी, जो अपनी विशिष्ट पहचान और संसाधनों पर नियंत्रण चाहते थे। आदिवासियों का मानना था कि बिहार के साथ रहते हुए उनके हितों की अनदेखी की जा रही थी और उनके संसाधनों का लाभ उन्हें नहीं मिल रहा था।
अलग राज्य बनने से झारखंड के लोगों को अपनी क्षेत्रीय पहचान और संस्कृति को विकसित करने का एक नया राजनीतिक मंच मिला। यह आंदोलन केवल प्रशासनिक सुविधा के लिए नहीं, बल्कि ऐतिहासिक न्याय और स्वायत्तता की एक लंबी लड़ाई थी। राज्य का गठन यह दर्शाता है कि कैसे सामाजिक और क्षेत्रीय आंदोलन अंततः भारत की लोकतांत्रिक संघीय व्यवस्था में सफल हो सकते हैं।

97. (B) दिक्कुओं द्वारा शोषण और अलग-थलग किए जाने के अनुभव से
झारखंड के आदिवासियों में अपनी पहचान बनाने की प्रेरणा मुख्य रूप से 'दिक्कुओं' या बाहरी लोगों द्वारा किए गए आर्थिक और सामाजिक शोषण से उपजी थी। इन बाहरी व्यापारियों और साहूकारों ने न केवल उनकी जमीन छीनी बल्कि उन्हें अपने ही घर में बेगाना बना दिया। इसी कड़वे अनुभव ने उन्हें एकजुट होने और अपनी खोई हुई प्रतिष्ठा और स्वायत्तता वापस पाने के लिए संघर्ष करने को प्रेरित किया।
शोषण के विरुद्ध यह सामूहिक पीड़ा ही उनकी नई राजनीतिक पहचान का आधार बनी। उन्होंने महसूस किया कि यदि वे संगठित नहीं हुए, तो उनका अस्तित्व ही मिट जाएगा। इसी चेतना ने झारखंड आंदोलन को एक जन-आंदोलन का रूप दिया, जिसने केवल बाहरी लोगों का ही विरोध नहीं किया बल्कि एक सशक्त आदिवासी नेतृत्व और गौरवशाली इतिहास को भी पुनर्जीवित किया।

इन संगठनों का उदय भारत में बढ़ती राजनीतिक चेतना और अधिकारों के प्रति जागरुकता का प्रतीक था। इन सभी ने अपने-अपने क्षेत्रों में विशिष्ट समुदायों की मांगों को मजबूती दी और राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम के सामाजिक आधार को व्यापक बनाया। इन वर्षों में गठित ये संस्थाएं आज भी भारत के सामाजिक और राजनीतिक इतिहास के अध्ययन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण संदर्भ बिंदु मानी जाती हैं।

111. (A) सामाजिक आंदोलन
सामाजिक आंदोलन सामाजिक और व्यक्तिगत परिवर्तन के बीच के द्वंद्वात्मक संबंध का सबसे शक्तिशाली उदाहरण हैं। ये आंदोलन न केवल समाज की बड़ी संरचनाओं को बदलने की कोशिश करते हैं, बल्कि उनमें भाग लेने वाले व्यक्तियों की सोच और जीवनशैली में भी गहरा बदलाव लाते हैं। व्यक्ति समाज को बदलने के लिए निकलता है और इस प्रक्रिया में वह स्वयं भी एक नई चेतना से भर जाता है।
उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति न्याय के लिए किसी आंदोलन से जुड़ता है, तो उसका आत्मविश्वास और सामाजिक समझ बढ़ जाती है। यह व्यक्तिगत बदलाव फिर समाज में और अधिक प्रभावी योगदान देने के लिए प्रेरित करता है। इस प्रकार, बाहरी संघर्ष और आंतरिक रुपांतरण एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं, जिससे सामूहिक और व्यक्तिगत प्रगति का एक चक्र बनता है।

112. (B) सुधार समाज के लिए विनाशकारी होंगे।
उन्नीसवीं सदी के रुढ़िवादी समूहों ने सामाजिक सुधारों का विरोध इस तर्क के साथ किया कि ये बदलाव समाज के पारंपरिक ताने-बाने को नष्ट कर देंगे। उनका मानना था कि विदेशी विचारों के आधार पर किए जाने वाले सुधार हमारी धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान के लिए विनाशकारी साबित होंगे। यह प्रतिरोधी मानसिकता अक्सर पुराने शक्ति संबंधों और यथास्थिति को बचाए रखने की इच्छा से प्रेरित होती थी।
ऐसे समूहों ने विधवा पुनर्विवाह और महिला शिक्षा जैसे प्रगतिशील कदमों को धर्म के विरुद्ध एक बड़े खतरे के रूप में पेश किया। वे मानते थे कि समाज की स्थिरता प्राचीन नियमों के पालन में ही है। सुधारकों और इन प्रतिरोधी आंदोलनों के बीच का संघर्ष यह दर्शाता है कि किसी भी समाज में आधुनिकता की ओर बढ़ने की प्रक्रिया कितनी चुनौतीपूर्ण और विवादपूर्ण हो सकती है।

113. (B) बंगाल और उत्तरी बिहार
1946-47 का प्रसिद्ध तिभागा आंदोलन मुख्य रूप से अविभाजित बंगाल और उत्तरी बिहार के क्षेत्रों में फैला था। यहाँ के बटाईदार किसानों ने उन शोषक प्रथाओं के विरुद्ध विद्रोह किया था जो उन्हें उनकी उपज के बड़े हिस्से से वंचित रखती थीं। इस संघर्ष का केंद्र फसल का उचित बंटवारा था, जिसने ग्रामीण क्षेत्रों में सामंती ढांचों को हिला दिया और किसानों की एक नई जुझारु पहचान बनाई।
इस आंदोलन में किसान सभा के कार्यकर्ताओं ने गांवों में घूम-घूमकर किसानों को अपनी फसल का दो-तिहाई हिस्सा खुद रखने के लिए प्रेरित किया। इसने न केवल आर्थिक मांगें रखीं, बल्कि ग्रामीण समाज में हिंदू-मुस्लिम एकता का भी प्रदर्शन किया। तिभागा आंदोलन के प्रभाव ने स्वतंत्रता के बाद होने वाले भूमि सुधार कानूनों के लिए एक मजबूत राजनीतिक जमीन तैयार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

114. (A) सड़कों एवं रेलमार्गों को बंद करना, राजनीतिज्ञों का बहिष्कार
1970 के दशक के 'नए किसान' आंदोलनों ने विरोध प्रदर्शन के कई नए और आक्रामक तरीके अपनाए, जैसे 'चक्का जाम' और नेताओं का घेराव करना। उन्होंने केवल याचिकाओं तक सीमित रहने के बजाय भौतिक रूप से सरकारी कामकाज को बाधित करने की रणनीति बनाई। साथ ही, उन्होंने उन राजनीतिज्ञों का सामाजिक बहिष्कार करना शुरु किया जो किसानों की मांगों के प्रति संवेदनशील नहीं थे।
ये तरीके दर्शाते हैं कि किसान अब अपनी समस्याओं को लेकर अधिक मुखर और सक्रिय हो चुके थे। उन्होंने सामूहिक दबाव बनाकर सरकारों को अपनी बात सुनने के लिए मजबूर किया। गाँवों से निकलकर शहरों की ओर मार्च करना और आर्थिक गतिविधियों को ठप करना उनकी बढ़ती संगठनात्मक क्षमता का प्रतीक था। इन नवीन उपायों ने किसान आंदोलनों को मीडिया और राष्ट्रीय राजनीति में एक नई पहचान दिलाई।

115. (C) यह अस्पृश्यता द्वारा उपलक्षित कलंक को समाप्त करने का संघर्ष है।
दलित आंदोलनों को अक्सर 'स्पर्श के लिए संघर्ष' कहा जाता है क्योंकि इनका मूल उद्देश्य केवल आर्थिक लाभ नहीं, बल्कि उस अमानवीय अस्पृश्यता को खत्म करना है जो समाज में भेदभाव की जड़ है। यह कलंक दलितों को बुनियादी मानवीय अधिकारों और सम्मान से वंचित रखता है। यह संघर्ष इस बात के लिए है कि हर व्यक्ति को समाज में समान रूप से स्वीकार किया जाए और उसे अछूत न माना जाए।
यह स्पर्श केवल शारीरिक संपर्क नहीं है, बल्कि सामाजिक स्वीकृति और मानवीय गरिमा का प्रतीक है। जब दलित सार्वजनिक कुओं से पानी पीने या मंदिरों में प्रवेश की मांग करते हैं, तो वे वास्तव में उस कलंक को मिटाना चाहते हैं। यह आंदोलन यह संदेश देता है कि कोई भी मनुष्य जन्म के आधार पर अपवित्र नहीं हो सकता और सम्मान सबका नैसर्गिक अधिकार है।

116. (D) पाक्षिक रूप से इंटरनेट-आधारित संजाल द्वारा
सिएटल में विश्व व्यापार संगठन (WTO) के विरुद्ध हुआ ऐतिहासिक विरोध प्रदर्शन आधुनिक आंदोलनों की बदलती कार्यप्रणाली का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। इसे इंटरनेट और वेब-आधारित नेटवर्क के माध्यम से पूरी दुनिया में संगठित किया गया था। इस तकनीक ने विभिन्न देशों के कार्यकर्ताओं को बहुत कम समय में एक साझा मंच पर जुड़ने और अपनी रणनीति साझा करने में मदद की, जिससे आंदोलन का प्रभाव वैश्विक हो गया।
यह घटना दिखाती है कि कैसे सूचना तकनीक ने सामाजिक आंदोलनों के लिए सीमाओं को समाप्त कर दिया है। अब विरोध के लिए किसी एक भौगोलिक केंद्र की आवश्यकता नहीं है,

संदेश पहुँचाने, भोजन जुटाने और यहाँ तक कि मोर्चाबंदी करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
इन आंदोलनों में महिलाओं की भागीदारी ने उनके भीतर एक नई चेतना और नेतृत्व शक्ति का विकास किया। उन्होंने न केवल बाहरी शोषकों का सामना किया बल्कि अपने समुदाय के भीतर मौजूद पितृसत्तात्मक सोच को भी चुनौती दी। यह ऐतिहासिक तथ्य इस बात को पुष्ट करता है कि भारत में महिला सक्रियता का इतिहास बहुत गहरा है और वह केवल शहरी क्षेत्रों तक सीमित नहीं रहा है।

67. (C) राष्ट्रीय आंदोलन वाली महिलाओं का राष्ट्र निर्माण कार्यों में संलग्न होना।
1947 के बाद भारतीय महिला आंदोलन में कुछ समय के लिए जो ठहराव महसूस किया गया, उसका मुख्य कारण यह था कि आंदोलन से जुड़ी अधिकांश महिलाएं स्वतंत्र भारत के पुनर्निर्माण और सरकारी संस्थाओं में सक्रिय हो गई थीं। उन्हें लगा कि संविधान और नए कानूनों के माध्यम से अब उनके अधिकार सुरक्षित हैं। इसी विश्वास के कारण सामूहिक विरोध प्रदर्शनों की तीव्रता कुछ समय के लिए कम हो गई थी।
कई महिला नेता सांसद, मंत्री और सामाजिक कल्याण बोर्डों की सदस्य बन गईं। उन्होंने नीतियों के माध्यम से सुधार लाने की कोशिश की। हालांकि, 1970 के दशक तक यह महसूस होने लगा कि केवल कानून बन जाना पर्याप्त नहीं है, बल्कि उनके वास्तविक कार्यान्वयन के लिए फिर से संघर्ष की आवश्यकता है। इसके बाद ही महिला आंदोलन का एक नया और अधिक स्वायत्त चरण शुरू हुआ।

68. (B) P-3, Q-4, R-1, S-2
तिभागा आंदोलन का मुख्य क्षेत्र बंगाल था जहाँ किसानों ने फसल के बंटवारे के लिए संघर्ष किया। तेलंगाना संघर्ष हैदराबाद के निज़ाम के दमनकारी शासन के विरुद्ध हुआ था। वरली जनजाति का विद्रोह महाराष्ट्र में साहूकारों के शोषण के खिलाफ एक प्रसिद्ध आंदोलन है। दहेज विरोधी संघर्ष 1970 के दशक के आधुनिक महिला आंदोलन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावी हिस्सा था।
यह मिलान भारत के विभिन्न क्षेत्रों में फैले हुए सामाजिक और आर्थिक संघर्षों की विविधता को प्रदर्शित करता है। जहाँ एक ओर ग्रामीण क्षेत्रों में भूमि और आजादी के लिए लड़ाइयां हो रही थीं, वहीं दूसरी ओर शहरों में सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध नई चेतना जागृत हो रही थी। इन सभी आंदोलनों ने मिलकर भारतीय समाज के लोकतंत्रीकरण और न्याय की प्रक्रिया को गति प्रदान की।

69. (C) स्वायत्त महिला आंदोलन।
1970 के दशक के मध्य में भारत में महिला आंदोलन का जो नया दौर शुरू हुआ, उसे 'स्वायत्त' महिला आंदोलन कहा जाता है। यह इसलिए स्वायत्त था क्योंकि यह राजनीतिक दलों के नियंत्रण से स्वतंत्र होकर उभरा था। इन नए समूहों का मानना था कि महिलाओं के विशिष्ट मुद्दों को राजनीतिक विचारधाराओं के अधीन नहीं किया जाना चाहिए और महिलाओं को स्वयं अपना नेतृत्व करना चाहिए।
इस दौर में 'स्त्री मुक्ति संगठन' और 'सहेली' जैसे कई नए संगठन सामने आए। उन्होंने बलात्कार, दहेज हत्या और घरेलू हिंसा जैसे निजी माने जाने वाले मुद्दों को सार्वजनिक चर्चा का विषय बनाया। इस आंदोलन ने यह नारा बुलंद किया कि 'निजी ही राजनीतिक है' (The personal is political), जिसने महिला अधिकारों की पूरी समझ को ही बदल कर रख दिया।

70. (C) केवल 1, 2 और 3
1970 के दशक के महिला आंदोलन ने कई ऐसे मुद्दे उठाए जो पहले सार्वजनिक मंचों पर गौण थे, जैसे महिलाओं के प्रति हिंसा, यौन-उत्पीड़न और दहेज। साथ ही, उन्होंने भूमि स्वामित्व और रोजगार में समानता की भी पुरजोर मांग की। यह कहना गलत है कि उन्होंने पुरुषों के लिए समान अधिकारों की मांग की, क्योंकि उनका प्राथमिक संघर्ष महिलाओं के विरुद्ध होने वाले ऐतिहासिक भेदभाव को खत्म करना था।
इस आंदोलन ने कानून में बड़े बदलावों की मांग की और समाज की पितृसत्तात्मक मानसिकता को चुनौती दी। उन्होंने कार्यस्थलों पर सुरक्षा और पारिवारिक संपत्ति में महिलाओं के हिस्से को अनिवार्य बनाने के लिए अभियान चलाए। यह दौर भारतीय नारीवाद के विकास में सबसे क्रांतिकारी माना जाता है क्योंकि इसने महिलाओं को एक सशक्त राजनीतिक शक्ति के रूप में संगठित होने के लिए प्रेरित किया।

71. (D) एक लैंगिक दृष्टि से समतावादी समाज को मूर्त रूप देना
'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' योजना का व्यापक लक्ष्य केवल शिक्षा या केवल लिंगानुपात तक सीमित नहीं है, बल्कि एक ऐसे समाज का निर्माण करना है जहाँ लैंगिक समानता हो। यह योजना बालिकाओं के प्रति समाज की नकारात्मक सोच को बदलने और उन्हें विकास के समान अवसर प्रदान करने का प्रयास करती है। इसका अंतिम उद्देश्य महिलाओं की गरिमा सुनिश्चित करना और उन्हें सशक्त बनाना है।
इस कार्यक्रम के माध्यम से सरकार कन्या भ्रूण हत्या को रोकने और लड़कियों की शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए बहुआयामी प्रयास कर रही है। यह मानता है कि जब बेटियां शिक्षित और सुरक्षित होंगी, तभी समाज संतुलित और प्रगतिशील बनेगा। यह योजना लैंगिक भेदभाव को जड़ से खत्म करने और महिलाओं की पूरी क्षमता का उपयोग राष्ट्र निर्माण में करने की एक बड़ी पहल है।

72. (A) एमिल दुर्खाइम
प्रसिद्ध समाजशास्त्री एमिल दुर्खाइम का यह मानना था कि सामाजिक संरचनाएं और संस्थाएं समाज में एकता और एकीकरण को संभव बनाती हैं। उन्होंने श्रम विभाजन और सामाजिक एकजुटता के सिद्धांतों के माध्यम से यह समझाया कि समाज के विभिन्न अंग एक-दूसरे पर कैसे निर्भर होते हैं। उनके विचार व्यवस्था और स्थिरता को समझने के लिए समाजशास्त्र के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण माने जाते हैं।
दुर्खाइम ने समाज को एक जैविक जीव की तरह देखा जहाँ हर हिस्से का अपना एक विशिष्ट कार्य होता है। उनका मानना था कि जब ये हिस्से सही ढंग से काम करते हैं, तो समाज में व्यवस्था बनी रहती है। हालांकि उन्होंने सामाजिक आंदोलनों को कुछ

वैधानिक प्रक्रिया के माध्यम से समाज को बेहतर बनाने की दिशा में कार्य करते हैं।

123. (D) पर्यावरण आंदोलन
पर्यावरण आंदोलन 'नए सामाजिक आंदोलन' का एक प्रमुख और सटीक उदाहरण है। ये आंदोलन केवल आर्थिक लाभ या वर्गीय संघर्ष तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये मानव अस्तित्व और जीवन की गुणवत्ता जैसे व्यापक वैश्विक सरोकारों से जुड़े हैं। इनमें विभिन्न सामाजिक वर्गों के लोग, जैसे वैज्ञानिक, छात्र, किसान और मध्यवर्गीय नागरिक, एक साथ मिलकर प्रकृति के संरक्षण के लिए संघर्ष करते हैं।
ये आंदोलन पहचान और पारिस्थितिकी की सुरक्षा को प्राथमिकता देते हैं। चिपको आंदोलन और नर्मदा बचाओ आंदोलन जैसे प्रयासों ने यह दिखाया कि पर्यावरण का मुद्दा अब एक शक्तिशाली राजनीतिक शक्ति बन चुका है। नए आंदोलनों की विशेषता यह है कि वे पारराष्ट्रीय संजाल (networks) के माध्यम से काम करते हैं और भविष्य की पीढ़ियों के अधिकारों के लिए आवाज उठाते हैं।

124. (B) हैदराबाद राज्य की सामंती दशाएँ
1946-51 के दौरान हुआ तेलंगाना आंदोलन मुख्य रूप से हैदराबाद रियासत में व्याप्त क्रूर सामंती व्यवस्था और निज़ाम के दमनकारी शासन के विरुद्ध था। यहाँ जमींदारों द्वारा किसानों का भयानक शोषण किया जाता था और उन्हें बंधुआ मजदूरी के लिए मजबूर किया जाता था। इस सशस्त्र संघर्ष ने ग्रामीण शक्ति संतुलन को चुनौती दी और किसानों को उनकी जमीन और गरिमा वापस दिलाने के लिए प्रेरित किया।
यह आंदोलन भारतीय इतिहास के सबसे शक्तिशाली किसान विद्रोहों में से एक माना जाता है। कम्युनिस्टों के नेतृत्व में किसानों ने अपनी ग्राम समितियां बनाईं और जमीन का पुनर्वितरण किया। इस संघर्ष ने यह स्पष्ट कर दिया कि राजनीतिक आजादी तब तक अधूरी है जब तक कि ग्रामीण क्षेत्रों में सामंती शोषण का अंत नहीं हो जाता और किसानों को भूमि के वास्तविक अधिकार नहीं मिल जाते।

125. (C) एन. एम. जोशी और वी. वी. गिरी
1920 में स्थापित ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) के भीतर विभिन्न वैचारिक धाराएं मौजूद थीं। नरम दल या उदारवादी धारा का नेतृत्व एन. एम. जोशी और वी. वी. गिरी जैसे नेता कर रहे थे। उनका दृष्टिकोण कानूनी सुधारों और मध्यस्थता के माध्यम से मजदूरों की स्थिति सुधारने पर केंद्रित था। वे क्रांतिकारी संघर्ष के बजाय संवैधानिक तरीकों से श्रमिकों के अधिकारों की वकालत करने में विश्वास रखते थे।
इन नेताओं ने मजदूर आंदोलनों को एक परिपक्व और संगठित स्वरूप देने में मदद की। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के साथ जुड़ाव और श्रम कानूनों के निर्माण पर बल दिया। एटक के भीतर इस उदारवादी गुट की उपस्थिति ने यह सुनिश्चित किया कि आंदोलन केवल हड़तालों तक सीमित न रहे बल्कि वह नीति-निर्माण की प्रक्रिया में भी एक प्रभावी और जिम्मेदार भागीदार के रूप में उभरे।

126. (D) 1839 के आसपास
भारत में चाय के बागानों का व्यावसायिक विकास और उन्हें बड़े पैमाने पर लगाने का काम 1839 के आसपास शुरू हुआ था। ब्रिटिश औपनिवेशिक सरकार ने असम और दार्जिलिंग जैसे क्षेत्रों में चाय उद्योग को बढ़ावा दिया ताकि चीन पर उनकी निर्भरता कम हो सके। इस प्रक्रिया ने न केवल भारत के आर्थिक ढांचे को प्रभावित किया बल्कि वहां काम करने के लिए मजदूरों के बड़े प्रवास और उनके कठिन संघर्षों को भी जन्म दिया।
चाय बागान उद्योग के आने से एक नई 'बागान अर्थव्यवस्था' विकसित हुई, जहाँ मजदूरों को बंधुआ जैसी स्थितियों में रहना पड़ता था। इन बागानों में काम करने वाले मजदूरों के शोषण और उनके मानवाधिकारों के हनन ने बाद में कई श्रमिक आंदोलनों और राष्ट्रवादी आलोचनाओं को जन्म दिया। इस प्रकार, चाय उद्योग का इतिहास भारत में औपनिवेशिक आर्थिक नीतियों और श्रमिक संघर्षों की एक महत्वपूर्ण कड़ी है।

127. (A) शक्ति संबंधों का पुनर्गठन
'पुराने' सामाजिक आंदोलनों का केंद्रीय लक्ष्य समाज में मौजूद शक्ति संबंधों का पुनर्गठन करना और राजसत्ता पर प्रभाव डालना था। ये आंदोलन मुख्य रूप से वर्गीय आधार पर संगठित थे, जैसे श्रमिक और किसान आंदोलन, जिनका उद्देश्य आर्थिक असमानता को दूर करना और संसाधनों का न्यायसंगत पुनर्वितरण करना था। वे शासन प्रणाली में बड़े बदलाव लाकर शोषित वर्गों को अधिकार दिलाने के लिए संघर्ष करते थे।
इन आंदोलनों का नेतृत्व अक्सर राजनीतिक दलों द्वारा किया जाता था और उनकी रणनीति राजसत्ता पर कब्जा करने या उसे चुनौती देने पर केंद्रित होती थी। पुराने आंदोलनों की विशेषता उनकी संगठनात्मक मजबूती और स्पष्ट राजनीतिक विचारधारा थी। उन्होंने आधुनिक राष्ट्र-राज्यों के निर्माण और लोकतंत्र में जनता की भागीदारी सुनिश्चित करने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक भूमिका निभाई है।

128. (B) ओक और रोहोडैंड्रोन
'अनक्वाइट वुड्स' पुस्तक में यह विस्तार से बताया गया है कि चिपको आंदोलन के दौरान हिमालय के गाँववासियों ने मुख्य रूप से ओक और रोहोडैंड्रोन के पेड़ों को बचाने के लिए संघर्ष किया था। ये पेड़ न केवल वहां की पारिस्थितिकी के लिए महत्वपूर्ण थे, बल्कि स्थानीय लोगों की आजीविका, चारे और ईंधन के मुख्य स्रोत भी थे। उनकी रक्षा करना ग्रामीणों के लिए अपने अस्तित्व को बचाए रखने के समान था।
सरकार और ठेकेदार इन पेड़ों को काटकर वहां व्यावसायिक प्रजातियां लगाना चाहते थे, जो स्थानीय लोगों के किसी काम की नहीं थीं। गाँववासियों का पेड़ों से चिपकना इसी सांस्कृतिक और आर्थिक जुड़ाव का प्रदर्शन था। इस संघर्ष ने यह उजागर किया कि कैसे व्यावसायिक वन नीतियां स्थानीय समुदायों के पारंपरिक अधिकारों और पर्यावरण की स्थिरता के विरुद्ध काम करती हैं।

सक्रिय संघटन और कुशल नेतृत्व अत्यंत आवश्यक है, जो बिखरे हुए असंतोष को संगठित रुप दे सके।

155. (C) राजनीतिक प्रक्रिया का एक सामान्य और अभिन्न अंग।
संसाधन संघटन सिद्धांत सामाजिक आंदोलनों को किसी असामान्य घटना या व्यवस्था के लिए खतरे के रूप में नहीं देखता है। इसके बजाय, यह इन्हें राजनीतिक प्रक्रिया के एक सामान्य और अभिन्न हिस्से के रूप में मान्यता देता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, समाज में विभिन्न समूह अपने हितों को बढ़ावा देने और प्रतिस्पर्धा करने के लिए आंदोलनों का उपयोग एक तर्कसंगत उपकरण के रूप में करते हैं।

156. (B) आर्थिक पुनर्वितरण और राज्य सत्ता।
पुराने सामाजिक आंदोलन मुख्य रूप से औद्योगिक समाज के ढांचे के भीतर विकसित हुए थे। इनका प्राथमिक केंद्र वर्ग-आधारित संघर्ष था, जिसमें आर्थिक असमानताओं को दूर करना सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य था। ये आंदोलन उत्पादन के साधनों पर नियंत्रण पाने और राज्य की सत्ता पर अधिकार करने के लिए संघर्ष करते थे। इनका मुख्य लक्ष्य आर्थिक पुनर्वितरण और राजनीतिक शक्ति के ढांचे में बदलाव लाना था।

157. (D) परमाणु ऊर्जा संयंत्र के विरुद्ध एक पर्यावरण संरक्षण आंदोलन।
नए सामाजिक आंदोलन अक्सर वर्ग और आर्थिक हितों से परे हटकर जीवन की गुणवत्ता और पर्यावरणीय चिंताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं। परमाणु ऊर्जा संयंत्र के विरुद्ध चलाया जाने वाला आंदोलन इसका एक सटीक उदाहरण है क्योंकि यह किसी विशेष आर्थिक लाभ के बजाय सुरक्षा, स्वास्थ्य और पारिस्थितिक संतुलन जैसे व्यापक मूल्यों से प्रेरित है। ये मुद्दे औद्योगिक समाज की पारंपरिक मांगों से अलग होते हैं।

158. (A) पुराने आंदोलन औपचारिक थे, जबकि नए अक्सर गैर-पदानुक्रमित हैं।
पुराने और नए सामाजिक आंदोलनों के बीच एक बड़ा अंतर उनके संगठन के स्वरूप में है। पुराने आंदोलन आमतौर पर राजनीतिक दलों और ट्रेड यूनियनों जैसे औपचारिक संगठनों के माध्यम से संचालित होते थे। इसके विपरीत, नए सामाजिक आंदोलन अक्सर विकेंद्रीकृत और गैर-पदानुक्रमित संरचनाओं का उपयोग करते हैं, जहाँ निर्णय लेने की प्रक्रिया अधिक सहभागी और लचीली होती है, जो उनकी अपनी स्वायत्तता को दर्शाती है।

159. (C) यह विभिन्न पृष्ठभूमियों के उन लोगों को जोड़ता है जिनके मूल्य समान हैं।
नए सामाजिक आंदोलनों का आधार किसी एक विशेष आर्थिक वर्ग या भौगोलिक क्षेत्र तक सीमित नहीं होता है। ये आंदोलन समाज के विभिन्न वर्गों और पृष्ठभूमियों के लोगों को एक साथ लाते हैं। इनका मुख्य जुड़ाव साझा मूल्यों, जीवन शैली की चिंताओं और सांस्कृतिक पहचान पर आधारित होता है। इस प्रकार, ये आंदोलन वर्ग-आधारित राजनीति के पुराने सांचे को तोड़ते हुए एक व्यापक सामाजिक आधार विकसित करते हैं।

160. (A) जीवन की गुणवत्ता, पहचान और सांस्कृतिक अधिकार।
उत्तर-औद्योगिक समाजों में उभरे नए सामाजिक आंदोलन आर्थिक मांगों के बजाय मानवीय पहलुओं पर अधिक जोर देते हैं। वे जीवन की गुणवत्ता में सुधार, व्यक्तिगत और सामूहिक पहचान की रक्षा, और सांस्कृतिक अधिकारों की मान्यता जैसे मुद्दों को प्राथमिकता देते हैं। ये आंदोलन स्वायत्तता और पर्यावरण जैसे प्रतीकात्मक और सांस्कृतिक सरोकारों के माध्यम से समाज में बदलाव लाने का निरंतर प्रयास करते हैं।

161. (D) इसने धनी किसानों का वर्ग बनाया और क्षेत्रीय असमानता को बढ़ाया।
हरित क्रांति ने भारतीय कृषि परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया, जिससे खाद्यान्न उत्पादन में तो वृद्धि हुई, लेकिन इसने ग्रामीण समाज में नया स्तरीकरण भी पैदा किया। इसके कारण कुछ विशेष क्षेत्रों में धनी और मध्यम किसानों का एक शक्तिशाली वर्ग उभरा। इसने क्षेत्रीय असमानता को भी बढ़ावा दिया क्योंकि इसका लाभ पंजाब, हरियाणा और पश्चिमी उत्तर प्रदेश जैसे क्षेत्रों तक अधिक सीमित रहा।

162. (B) कृषि और गैर-कृषि उत्पादों के बीच 'व्यापार की शर्तें'।
1980 के दशक के नए किसान आंदोलन पुराने आंदोलनों से अलग थे क्योंकि उनका मुख्य ध्यान भूमि पुनर्वितरण के बजाय व्यापार की शर्तों पर था। इन आंदोलनों ने तर्क दिया कि कृषि उत्पादों के दाम औद्योगिक वस्तुओं की तुलना में कम रखे जाते हैं। उन्होंने कृषि आदानों की बढ़ती कीमतों और उत्पादों के कम मूल्यों के बीच के अंतर को कम करने की मांग की।

163. (C) सरकारी नीतियों द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों का शहरी क्षेत्रों के पक्ष में शोषण।
'भारत बनाम इंडिया' की बहस ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच के गहरे आर्थिक और सामाजिक अंतर को दर्शाती है। किसान संगठनों का मानना था कि सरकारी नीतियां जानबूझकर कृषि क्षेत्र का शोषण करती हैं ताकि शहरी क्षेत्रों और उद्योगों को लाभ पहुँचाया जा सके। यहाँ 'भारत' ग्रामीण कृषि समाज का प्रतीक है, जबकि 'इंडिया' आधुनिक, औद्योगिक और समृद्ध शहरी समाज का प्रतिनिधित्व करता है।

164. (D) कृषि उत्पादों के लिए लाभकारी मूल्य और ऋण माफी।
1980 के दशक के दौरान उभरे नए किसान आंदोलनों ने किसानों की आर्थिक स्थिति सुधारने के लिए कई महत्वपूर्ण माँगें रखीं। उनकी प्राथमिक मांगों में कृषि उपजों के लिए लाभकारी मूल्य सुनिश्चित करना और किसानों पर बढ़ते कर्ज के बोझ को कम करने के लिए ऋण माफी शामिल थी। इसके अतिरिक्त, वे कृषि पर सब्सिडी जारी रखने और बिजली-पानी की उचित दरों के लिए भी संघर्षरत रहे।

165. (A) रास्ता रोको और शहरी आपूर्ति को बाधित करना।
अपनी मांगों को प्रभावी ढंग से सरकार तक पहुँचाने के लिए नए किसान आंदोलनों ने विरोध के नए तरीके अपनाए। इनमें सड़कों को अवरुद्ध करना (रास्ता रोको), रेल यात्रा में बाधा डालना और शहरों की ओर जाने वाली दूध और सब्जियों जैसी आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति रोकना शामिल था। इन

135. (D) महिलाओं की शिक्षा और संतुलित यौनिक अनुपात
एक 'लैंगिक दृष्टि से समतावादी समाज' के निर्माण के लिए महिलाओं की शिक्षा और एक संतुलित लिंगानुपात दो सबसे बुनियादी और अनिवार्य कारक हैं। शिक्षा महिलाओं को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक करती है और उन्हें आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाती है, जबकि संतुलित लिंगानुपात समाज में उनके अस्तित्व और सुरक्षा की स्थिति को दर्शाता है। ये दोनों मिलकर एक न्यायपूर्ण समाज की नींव रखते हैं।
जहाँ लड़कियों को शिक्षा और जीवन का समान अवसर मिलता है, वहीं समाज अधिक प्रगतिशील और समृद्ध होता है। लिंगानुपात में गिरावट समाज की गहरी पितृसत्तात्मक कुरीतियों को उजागर करती है जिसे दूर करना समतावादी समाज की पहली शर्त है। इन दो स्तंभों पर ध्यान केंद्रित करके ही हम एक ऐसी व्यवस्था की ओर बढ़ सकते हैं जहाँ लिंग के आधार पर कोई भेदभाव न हो।

136. (A) 1970 की अनपेक्षित भारी वर्षा और विनाशकारी बाढ़ की घटना
1970 में अलकनंदा घाटी में आई विनाशकारी बाढ़ वह निर्णायक घटना थी जिसने पहाड़ी गाँववासियों को वनों की कटाई और प्राकृतिक आपदाओं के बीच के सीधा संबंध को समझने पर मजबूर किया। उन्होंने अपनी आंखों से देखा कि कैसे पेड़ों की अनुपस्थिति में मिट्टी का कटाव हुआ और उनके घर-खेत तबाह हो गए। इस कड़वे अनुभव ने उनके भीतर पर्यावरण संरक्षण की एक नई और गहरी चेतना जगाई।
इस बाढ़ ने गाँववालों के रोष को एक दिशा दी और उन्हें यह अहसास कराया कि वनों की रक्षा केवल पेड़ों को बचाना नहीं बल्कि अपनी जान बचाना है। इसी पारिस्थितिकीय बोध ने आगे चलकर चिपको आंदोलन का आधार तैयार किया। यह घटना एक उत्कृष्ट उदाहरण है कि कैसे कोई प्राकृतिक आपदा लोगों की सामूहिक सोच को बदलकर उन्हें एक बड़े सामाजिक आंदोलन की ओर प्रेरित कर सकती है।

137. (C) ये महिलाओं से संबंधित अनेक मुद्दों पर केंद्रित थे।
उन्नीसवीं सदी के समाज सुधार आंदोलन महिलाओं की स्थिति को सुधारने के प्रति अत्यंत संवेदनशील थे और उन्होंने सती प्रथा, विधवा विवाह, बाल विवाह और स्त्री शिक्षा जैसे अनेक महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाया। इन सुधारों का मुख्य उद्देश्य समाज में मौजूद अमानवीय कुरीतियों को समाप्त करना और महिलाओं को सम्मानपूर्ण जीवन जीने का अधिकार दिलाना था, जिससे आधुनिक भारतीय समाज की रूपरेखा तैयार हुई।
यद्यपि इन आंदोलनों का नेतृत्व मुख्य रूप से शिक्षित पुरुषों ने किया था, लेकिन इन्होंने महिलाओं के भीतर अपनी स्थिति के प्रति चेतना जगाने का कार्य किया। इन सुधारों ने ही वह मंच तैयार किया जहाँ आगे चलकर महिलाओं ने स्वयं अपने अधिकार मांगने के लिए संगठन बनाए। यह दौर भारतीय इतिहास में सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा के विकास का एक अत्यंत महत्वपूर्ण प्रारंभिक चरण माना जाता है।

138. (A) इसमें केवल पुरुष गाँववासी ही शामिल थे।
चिपको आंदोलन के बारे में यह कहना पूरी तरह असत्य है कि इसमें केवल पुरुष शामिल थे, क्योंकि वास्तव में इस आंदोलन की असली ताकत और नेतृत्व की अग्रिम पंक्ति में महिलाएं ही थीं। गौरा देवी जैसी महिलाओं ने अपनी जान की परवाह किए बिना पेड़ों को घेरा और ठेकेदारों को पीछे हटने पर मजबूर किया। इस आंदोलन ने दुनिया भर में ग्रामीण महिलाओं की संगठित शक्ति का लोहा मनवाया।
महिलाओं ने यह सिद्ध किया कि वे न केवल घर संभाल सकती हैं बल्कि अपने पर्यावरण और संसाधनों की रक्षा के लिए सड़क पर भी उतर सकती हैं। उनकी सक्रिय भागीदारी ने ही चिपको को एक अद्वितीय पहचान दी और इसे एक पारिस्थितिकीय-नारीवादी (eco-feminist) आंदोलन के रूप में स्थापित किया। महिलाओं के बिना यह आंदोलन कभी भी अपनी उस ऐतिहासिक सफलता और वैश्विक ख्याति को प्राप्त नहीं कर सकता था।

139. (D) उत्पादन और रोज़गार में कमी
1966-67 के दौरान भारतीय अर्थव्यवस्था में आई भारी मंदी का सीधा और नकारात्मक प्रभाव उत्पादन और रोजगार के अवसरों पर पड़ा। इस अवधि में कृषि और औद्योगिक क्षेत्र दोनों ही संकट में थे, जिससे बेरोजगारी बढ़ी और आम जनता के जीवन स्तर में गिरावट आई। इस आर्थिक अस्थिरता ने समाज में व्यापक असंतोष पैदा किया, जिसने आगे चलकर विभिन्न सामाजिक और राजनीतिक आंदोलनों के लिए खाद-पानी का काम किया।
जब आर्थिक अवसर कम होते हैं, तो लोगों में व्यवस्था के प्रति रोष बढ़ता है और वे अपनी मांगों के लिए अधिक मुखर हो जाते हैं। 1970 के दशक की शुरुआत में हुए कई छात्र और मजदूर आंदोलन इसी आर्थिक मंदी की पृष्ठभूमि में उपजे थे। यह दर्शाता है कि अर्थव्यवस्था की स्थिति सीधे तौर पर सामाजिक आंदोलनों की प्रकृति और उनकी तीव्रता को प्रभावित करने की क्षमता रखती है।

140. (A) (A) और (R) दोनों सत्य हैं और (R), (A) की सही व्याख्या है।
दलित साहित्य का मूल उद्देश्य समाज में एक गहरी सांस्कृतिक और सामाजिक क्रांति लाना है ताकि सदियों से चली आ रही मान्यताओं को बदला जा सके। दलित लेखक यह मानते हैं कि मुख्यधारा का साहित्य अक्सर दलितों के वास्तविक जीवन के सत्य को छिपाता है और उनके संघर्षों को सही ढंग से प्रस्तुत नहीं करता। अभिकथन और तर्क दोनों सही हैं क्योंकि इसी अविश्वास ने दलितों को अपनी स्वतंत्र कलम चलाने के लिए प्रेरित किया।
यह साहित्य केवल दुख की कहानी नहीं है, बल्कि यह अन्याय के विरुद्ध एक जोरदार प्रतिरोध है। अपनी अनुभूतियों को स्वयं व्यक्त करके दलितों ने अपनी पहचान और इतिहास पर अपना अधिकार पुनः स्थापित किया है। यह आंदोलन यह सिद्ध करता है कि वास्तविक सामाजिक परिवर्तन के लिए केवल कानून नहीं, बल्कि एक नई और सत्यनिष्ठ सांस्कृतिक चेतना का विकास होना भी उतना ही अनिवार्य है।

Nodia Editions LLP

125, Sector 6, Vidhyadhar Nagar, Jaipur 302039

MRP. ₹ 570

147. (C) बिहार प्रोविंसिएल किसान सभा - 1939
बिहार प्रोविंसिएल किसान सभा की स्थापना वर्ष 1929 में स्वामी सहजानंद सरस्वती द्वारा की गई थी, न कि 1939 में। अन्य सभी युग्म, जैसे तिभागा आंदोलन (1946-47), तेलंगाना आंदोलन (1946-51) और ऑल इंडिया किसान सभा (1936), अपने समय के अनुसार सही ढंग से सुमेलित हैं। यह तथ्यात्मक सुधार आंदोलनों के सही कालक्रम और उनके ऐतिहासिक संदर्भ को समझने के लिए बहुत आवश्यक है।
1929 में इस सभा के गठन ने ही बिहार के किसानों को संगठित करने और उन्हें एक मजबूत राजनीतिक आवाज देने की शुरुआत की थी। इसी की सफलता ने आगे चलकर अखिल भारतीय स्तर पर किसानों के एक एकीकृत संगठन की नींव रखी। तिथियों का यह सही ज्ञान हमें यह समझने में मदद करता है कि भारत में किसान आंदोलनों ने अपनी जड़ें कब और कैसे मजबूत करना शुरू किया था।

148. (D) 1970 के दशक में
भारत में दल-रहित और क्षेत्रीय आधार पर संगठित किसान आंदोलनों का उदय मुख्य रूप से 1970 के दशक में हुआ। ये आंदोलन उन क्षेत्रों में उभरे जहाँ हरित क्रांति के कारण किसान अधिक बाजार-उन्मुख हो गए थे। उन्होंने खुद को पारंपरिक राजनीतिक दलों से दूर रखा और स्वतंत्र रूप से कृषि उत्पादों की कीमतों और सब्सिडी जैसे आर्थिक मुद्दों पर सरकारों को चुनौती देना शुरू किया, जो एक नया रुझान था।
इन आंदोलनों का नेतृत्व अक्सर धनी और मंझोले किसानों के हाथों में था जिन्होंने अपनी मांगों के लिए चक्का जाम और सामूहिक घेराव जैसे कड़े विरोध के तरीके अपनाए। तमिलनाडु के 'खेतीहर संघ' और महाराष्ट्र के 'शेतकारी संगठन' इसके प्रमुख उदाहरण हैं। इन आंदोलनों ने स्पष्ट किया कि किसान अब केवल जीवन-निर्वाह (survival) के लिए नहीं, बल्कि व्यावसायिक लाभ और राजनीतिक प्रतिष्ठा के लिए भी लड़ रहे हैं।

149. (C) साम्यवादी, नरम दल और राष्ट्रवादी धाराएँ
1920 में जब ऑल इंडिया ट्रेड यूनियन कांग्रेस (AITUC) की स्थापना हुई, तो इसमें मजदूर आंदोलन के भीतर सक्रिय विभिन्न वैचारिक धाराएं एक साथ आईं। इसमें कम्युनिस्टों का जुझारूपन, उदारवादियों या नरम दल की वैधानिक समझ और राष्ट्रवादी नेताओं का देशभक्ति का जज्बा शामिल था। इन सभी ने मिलकर मजदूरों के हितों के लिए एक साझा मंच तैयार किया ताकि उनकी आवाज को राष्ट्रीय स्तर पर सुना जा सके।
लाला लाजपत राय, एन. एम. जोशी और बाद के वर्षों में साम्यवादी नेताओं ने इसके विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विचारधाराओं की इस विविधता ने एटक को एक व्यापक जनाधार वाला और शक्तिशाली संगठन बनाया। यह मेल यह दर्शाता है कि मजदूर आंदोलन की शुरुआत में ही यह महसूस कर लिया गया था कि सामूहिक सफलता के लिए विभिन्न वैचारिक समूहों का एक साथ आना बहुत जरूरी है।

150. (B) समाज में परिवर्तन लाना या परिवर्तन को रोकना
किसी भी सामाजिक आंदोलन का अंतिम और मौलिक लक्ष्य समाज में एक निश्चित प्रकार का परिवर्तन लाना होता है, या फिर प्रस्तावित परिवर्तनों को रोकना होता है। यह एक निरंतर सामूहिक प्रयास है जो यथास्थिति को चुनौती देता है या उसे बचाने की कोशिश करता है। चाहे वह सुधारवादी हो या क्रांतिकारी, आंदोलन हमेशा समाज की भविष्य की दिशा को प्रभावित करने के उद्देश्य से संचालित होते हैं।
यदि लोग अन्याय के खिलाफ खड़े होते हैं, तो वे बदलाव चाहते हैं, और यदि वे किसी नए सुधार का विरोध करते हैं, तो वे परंपरा को बचाना चाहते हैं। इस प्रकार, आंदोलनों के माध्यम से समाज अपनी इच्छाओं और आशंकाओं को व्यक्त करता है। अंततः, ये आंदोलन ही समाज के विकास, न्याय की प्राप्ति और लोकतांत्रिक मूल्यों के सुदृढ़ीकरण की प्रक्रिया को गति प्रदान करते हैं।

151. (B) विभिन्न संसाधनों को सफलतापूर्वक जुटाने की रणनीतिक क्षमता पर।
संसाधन संघटन सिद्धांत सामाजिक आंदोलनों को तर्कसंगत और रणनीतिक प्रयास मानता है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, किसी आंदोलन की सफलता केवल लोगों के बीच व्याप्त असंतोष या शिकायतों पर निर्भर नहीं करती है। इसके बजाय, यह इस बात पर आधारित है कि आंदोलनकारी धन, नेतृत्व, मीडिया पहुँच और स्वयंसेवकों जैसे महत्वपूर्ण संसाधनों को कितनी कुशलता से संगठित और निर्देशित करते हैं।

152. (A) अपने लक्ष्यों के प्रति सचेत और रणनीतिक सामाजिक कर्ताओं के रूप में।
यह सिद्धांत पारंपरिक मान्यताओं को चुनौती देता है जो आंदोलनकारियों को तर्कहीन या भावनात्मक भीड़ मानते थे। इसके विपरीत, यह आंदोलन में भाग लेने वाले व्यक्तियों को सचेत और तर्कसंगत सामाजिक कर्ताओं के रूप में देखता है। वे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए सोची-समझी रणनीतियाँ अपनाते हैं और उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम लाभ उठाने का सचेत प्रयास करते हैं।

153. (C) समाज में शिकायतों की सामान्य उपस्थिति।
संसाधन संघटन सिद्धांत के तहत संसाधन उन साधनों को कहते हैं जिनका उपयोग आंदोलन को मजबूत करने के लिए किया जाता है, जैसे धन, संगठनात्मक कौशल और मीडिया कवरेज। हालाँकि, समाज में शिकायतों या असंतोष की सामान्य उपस्थिति को संसाधन नहीं माना जाता है। असंतोष तो समाज में हमेशा बना रहता है, लेकिन वह केवल तभी आंदोलन बनता है जब अन्य संसाधनों का उपयोग किया जाए।

154. (D) केवल असंतोष पर्याप्त नहीं है, संसाधनों का संघटन आवश्यक है।
पारंपरिक सिद्धांत अक्सर यह मानते थे कि केवल सामाजिक असंतोष या अभाव ही आंदोलनों को जन्म देने के लिए पर्याप्त है। संसाधन संघटन सिद्धांत इस विचार को खारिज करता है और तर्क देता है कि केवल शिकायतें होना पर्याप्त नहीं है। एक प्रभावी और सफल सामाजिक आंदोलन के लिए संसाधनों का

129. (B) पुराने सामाजिक आंदोलन और नए गैर सरकारी संगठन दोनों

'नागरिक समाज' (Civil Society) की आधुनिक परिभाषा अब बहुत व्यापक हो गई है और इसमें पुराने सामाजिक आंदोलनों के साथ-साथ नए गैर-सरकारी संगठन (NGOs) भी शामिल हैं। इसमें वे सभी समूह आते हैं जो राज्य और बाजार से स्वतंत्र रहकर सार्वजनिक हितों के लिए कार्य करते हैं। चाहे वह मजदूरों का हक हो या पर्यावरण संरक्षण, ये संगठन लोकतंत्र को अधिक जवाबदेह और पारदर्शी बनाने में मदद करते हैं।

आज के दौर में नागरिक समाज एक ऐसे पुल की तरह है जो जनता की आवाज को सरकार तक पहुँचाता है। इसमें मानवाधिकार समूह, महिला संगठन और सामुदायिक पहलें शामिल हैं। यह विविधता यह सुनिश्चित करती है कि समाज के हर वर्ग के हितों की रक्षा हो सके। नागरिक समाज की सक्रियता ही किसी भी लोकतंत्र की मजबूती और उसके जीवंत होने का सबसे बड़ा प्रमाण मानी जाती है।

130. (B) P-2, Q-1, R-4, S-3

पर्यावरण के क्षेत्र में चिपको आंदोलन एक वैश्विक प्रेरणा है। महिलाओं के उत्थान के लिए 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' अभियान सरकार की एक प्रमुख पहल है। किसानों के अधिकारों के लिए तिभागा आंदोलन ने एक बड़ा संघर्ष किया था, और दलित पहचान के लिए आदि धर्म आंदोलन पंजाब में सक्रिय रहा। यह मिलान सामाजिक आंदोलनों की क्षेत्रीय और वैचारिक विविधता को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करता है।

प्रत्येक आंदोलन ने अपने विशिष्ट क्षेत्र में अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाई और समाज को बदलने की कोशिश की। ये उदाहरण दिखाते हैं कि कैसे अलग-अलग समय पर विभिन्न समूहों ने अपनी समस्याओं के समाधान के लिए सामूहिक प्रयास किए। इन सभी का उद्देश्य अंततः एक न्यायपूर्ण और समतावादी समाज की स्थापना करना रहा है, जिसने भारतीय लोकतंत्र के सामाजिक आधार को मजबूत और विस्तृत बनाया है।

131. (C) सामाजिक आंदोलन विशिष्ट उद्देश्य निर्देशित होता है, जबकि सामाजिक परिवर्तन एक वृहद प्रक्रिया है।

सामाजिक आंदोलन और सामाजिक परिवर्तन के बीच का मुख्य अंतर उनकी प्रकृति और गति में है। सामाजिक आंदोलन सचेत, संगठित और किसी खास लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए किए गए निरंतर प्रयास होते हैं। इसके विपरीत, सामाजिक परिवर्तन एक बहुत बड़ी और दीर्घकालिक ऐतिहासिक प्रक्रिया है जो तकनीक, जलवायु या अन्य अनपेक्षित कारकों से भी हो सकती है। आंदोलन अक्सर इस बड़े परिवर्तन के वाहक होते हैं।

जहाँ परिवर्तन स्वतः या धीरे-धीरे हो सकता है, वहीं आंदोलन में सामूहिक चेतना और नेतृत्व की भूमिका अनिवार्य होती है। आंदोलन समाज को एक निश्चित दिशा में मोड़ने की कोशिश करते हैं। इस प्रकार, सामाजिक आंदोलन परिवर्तन की प्रक्रिया के भीतर एक सक्रिय और संगठित हस्तक्षेप हैं, जो समाज की जड़ता को तोड़कर उसे विकास की नई राह पर ले जाते हैं।

132. (D) इनकी उत्पत्ति हमेशा वर्ग-आधारित असमानता में ढूँढ़ी जा सकती है।

'नए सामाजिक आंदोलनों' के बारे में यह कहना गलत है कि उनकी उत्पत्ति हमेशा वर्गीय असमानता में ही होती है। इसके विपरीत, ये आंदोलन अक्सर पहचान, संस्कृति और जीवन की गुणवत्ता जैसे मुद्दों पर आधारित होते हैं जो वर्ग की सीमाओं से परे होते हैं। इनमें शामिल होने वाले लोग अक्सर अपनी वर्गीय पहचान के बजाय अपनी सांस्कृतिक या व्यक्तिगत चिंताओं के कारण एकजुट होते हैं।

उदाहरण के लिए, पर्यावरण या शांति आंदोलन में अमीर-गरीब सभी शामिल हो सकते हैं। नए आंदोलनों की विशेषता ही यही है कि वे पुराने वर्गीय ढांचे से बाहर निकलकर नए प्रकार के सामाजिक गठबंधन बनाते हैं। ये आंदोलन यह दर्शाते हैं कि आधुनिक समाज में संघर्ष के कारण केवल आर्थिक नहीं बल्कि सांस्कृतिक और पारिस्थितिकीय भी हो सकते हैं, जो अधिक जटिल और व्यापक हैं।

133. (C) गैर-ब्राह्मण आंदोलन

जोतिबा फुले द्वारा शुरू किया गया आंदोलन एक शक्तिशाली 'गैर-ब्राह्मण' आंदोलन था। उन्होंने 1873 में सत्यशोधक समाज की स्थापना कर उन जातियों को संगठित किया जिन्हें धार्मिक और सामाजिक रूप से दबाया गया था। उनका उद्देश्य केवल आर्थिक सुधार नहीं, बल्कि पूरी जाति व्यवस्था की जड़ता को तोड़ना और शूद्रों व महिलाओं को ब्राह्मणवादी वर्चस्व से मुक्त कराकर उन्हें समान अधिकार दिलाना था।

उन्होंने शिक्षा को मुक्ति का मार्ग बताया और तर्क दिया कि सभी मनुष्य जन्म से समान हैं। उनके इस आंदोलन ने महाराष्ट्र और दक्षिण भारत में सामाजिक समानता के लिए एक मजबूत वैचारिक नींव रखी। फुले के विचार और कार्य आधुनिक भारत के दलित और पिछड़ा वर्ग आंदोलनों के लिए आज भी प्रेरणा के सबसे बड़े स्रोत माने जाते हैं, जिन्होंने स्वाभिमान की राजनीति शुरू की।

134. (B) वे आंदोलन के एक प्रमुख प्रतीक बन गए।

बिरसा मुंडा की कम उम्र में मृत्यु के बाद वे झारखंड और भारतीय जनजातीय प्रतिरोध के एक अत्यंत शक्तिशाली और पूजनीय प्रतीक बन गए। उनके द्वारा शुरू किया गया 'उलगुलान' विद्रोह आदिवासियों के लिए वीरता और आत्मसम्मान का गौरवपूर्ण अध्याय बन गया। आज भी उन्हें 'धरती आबा' (जगत पिता) के रूप में याद किया जाता है और उनकी छवि आंदोलनों में प्रेरणा और एकता का स्रोत बनी हुई है।

उनकी विरासत ने ही आगे चलकर अलग झारखंड राज्य की मांग और जनजातीय अधिकारों के संघर्षों को वैचारिक ऊर्जा प्रदान की। बिरसा मुंडा का नाम अब केवल इतिहास तक सीमित नहीं है, बल्कि वह जल, जंगल और जमीन की रक्षा के लिए लड़ने वाले हर क्रांतिकारी का प्रतीक है। उनकी स्मृति जनजातीय पहचान को संरक्षित करने और शोषण के विरुद्ध खड़े होने की निरंतर याद दिलाती रहती है।

रणनीतियों का उद्देश्य शहरी जनजीवन को प्रभावित करके नीति निर्माताओं पर दबाव डालना था।

166. (B) अमेरिका में ब्लैक पैंथर आंदोलन।
महाराष्ट्र में 1970 के दशक में उदित हुआ दलित पैंथर्स आंदोलन संयुक्त राज्य अमेरिका के 'ब्लैक पैंथर' आंदोलन से गहराई से प्रेरित था। जिस प्रकार ब्लैक पैंथर्स ने अमेरिका में नस्लीय भेदभाव के खिलाफ एक जुझारू रुख अपनाया था, उसी प्रकार दलित पैंथर्स ने भारत में जातिवाद और उत्पीड़न के विरुद्ध एक क्रांतिकारी और आक्रामक रास्ता अपनाकर पारंपरिक सुधारवादी राजनीति को चुनौती देने का काम किया।

167. (B) हिंदू सामाजिक व्यवस्था में निहित एक गहरी संरचनात्मक हिंसा।
दलित पैंथर्स ने जाति-आधारित भेदभाव को केवल एक व्यक्तिगत पूर्वाग्रह या सामाजिक दोष के रूप में नहीं देखा। उनके अनुसार, यह हिंदू धर्म और सामाजिक ढांचे में गहराई से समाहित एक संरचनात्मक हिंसा है। इस दृष्टिकोण ने जातिवाद को एक संस्थागत समस्या के रूप में परिभाषित किया, जिसके लिए व्यापक सामाजिक परिवर्तन और व्यवस्था में आमूल-चूल बदलाव की आवश्यकता पर बल दिया गया।

168. (A) यह उत्पीड़न को व्यक्त करने और विद्रोही चेतना बनाने का हथियार था।
दलित पैंथर्स के लिए साहित्य केवल मनोरंजन का साधन नहीं था, बल्कि यह प्रतिरोध का एक सशक्त राजनीतिक हथियार था। उन्होंने इसके माध्यम से दलितों के दर्द, गुस्से और शोषण के अनुभवों को सरेआम व्यक्त किया। दलित साहित्य ने मुख्यधारा के इतिहास को चुनौती दी और समाज में एक वैकल्पिक विद्रोही चेतना विकसित करने में मदद की, जो दलित अस्मिता की पहचान बनी।

169. (C) इसने सामूहिक आत्म-जागरूकता और आंतरिक एकजुटता को बढ़ावा दिया।
दलित साहित्य के प्रसार ने दलित समुदाय के भीतर एक नई ऊर्जा और दिशा प्रदान की। इसने समुदाय के लोगों के बीच अपनी स्थिति के प्रति आत्म-जागरूकता पैदा की और उन्हें अपनी साझा समस्याओं के प्रति एकजुट होने के लिए प्रेरित किया। इस साहित्यिक आंदोलन ने न केवल आंतरिक एकजुटता को मजबूत किया, बल्कि दलित पहचान को गर्व और स्वाभिमान के साथ जोड़ने का कार्य किया।

170. (D) वे अधिक जुझारू, क्रांतिकारी और सीधा टकराव का रुख अपनाते थे।
दलित पैंथर्स का दृष्टिकोण मुख्यधारा के राजनीतिक दलों की धीमी और सुधारवादी नीतियों से पूरी तरह अलग था। वे स्थापित व्यवस्था के साथ केवल संवाद या समझौतों में विश्वास नहीं रखते थे, बल्कि वे अधिक जुझारू और क्रांतिकारी तरीकों के पक्षधर थे। उन्होंने सीधे टकराव का रास्ता अपनाया और उत्पीड़न के खिलाफ एक उग्र संघर्ष छेड़ा, जिससे आंदोलन का स्वरूप ही बदल गया।

171. (C) पर्यावरण और मानव अस्तित्व तथा आजीविका के प्रत्यक्ष संबंध पर।
'गरीबों का पर्यावरणवाद' इस विचार पर आधारित है कि विकासशील देशों में पर्यावरण संरक्षण सीधे तौर पर मानवीय अस्तित्व से जुड़ा है। यह केवल सौंदर्य या मनोरंजन का विषय नहीं है, बल्कि आजीविका का अनिवार्य आधार है। यहाँ स्थानीय समुदाय अपनी बुनियादी जरूरतों के लिए प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हैं, इसलिए पर्यावरण की रक्षा उनके लिए अपने जीवन और भविष्य को बचाने के समान है।

172. (B) एक ऐसी प्रणाली जहाँ लोग बुनियादी जरूरतों हेतु प्राकृतिक संसाधनों पर निर्भर हैं।
जीवन-निर्वाह अर्थव्यवस्था एक ऐसी प्रणाली है जहाँ स्थानीय लोग अपने दैनिक अस्तित्व के लिए सीधे तौर पर प्रकृति पर निर्भर होते हैं। इसमें भोजन, ईंधन, चारा और पानी जैसे आवश्यक संसाधन सीधे वनों, नदियों और भूमि से प्राप्त किए जाते हैं। यह प्रणाली मुनाफे के बजाय जरूरतों को पूरा करने पर केंद्रित होती है, जहाँ पारिस्थितिकी तंत्र का क्षरण समुदायों की बुनियादी आजीविका को संकट में डाल देता है।

173. (D) 'लाभ की अर्थव्यवस्था' और 'जीवन की अर्थव्यवस्था' के बीच का संघर्ष।
चिपको आंदोलन को केवल पेड़ों को बचाने का प्रयास नहीं माना जा सकता, बल्कि यह दो भिन्न विचारधाराओं के बीच का संघर्ष था। एक तरफ व्यावसायिक लाभ की अर्थव्यवस्था थी जो संसाधनों का दोहन करना चाहती थी, और दूसरी तरफ जीवन की अर्थव्यवस्था थी जो प्रकृति के साथ संतुलन और आजीविका की सुरक्षा पर आधारित थी। यह स्थानीय समुदायों के अपने संसाधनों पर अधिकार की लड़ाई थी।

174. (A) पश्चिमी रूप गुणवत्ता से और भारतीय रूप अस्तित्व से संबंधित है।
पश्चिमी पर्यावरणवाद और भारतीय पारिस्थितिकीय आंदोलनों के बीच एक मौलिक अंतर है। पश्चिम में यह आंदोलन अक्सर आर्थिक समृद्धि के बाद जीवन की गुणवत्ता और सौंदर्य संरक्षण के लिए शुरु हुआ। इसके विपरीत, भारत में पर्यावरण आंदोलन मुख्य रूप से अस्तित्व और आजीविका के संकट से प्रेरित होते हैं। यहाँ पर्यावरण संरक्षण का उद्देश्य गरीबी से लड़ना और स्थानीय समुदायों के बुनियादी अधिकारों की रक्षा करना है।

175. (C) सामाजिक न्याय और संसाधनों के न्यायपूर्ण वितरण के आंदोलनों से।
भारत में पारिस्थितिकीय मुद्दे अक्सर सामाजिक न्याय और मानवाधिकारों के प्रश्नों से जुड़े होते हैं। चूँकि प्राकृतिक संसाधनों तक पहुँच का मामला सीधे तौर पर गरीबी और समानता से संबंधित है, इसलिए ये आंदोलन केवल प्रकृति को बचाने तक सीमित नहीं रहते। ये संसाधनों के न्यायपूर्ण और समान वितरण की माँग करते हैं, जिससे वे व्यापक सामाजिक न्याय के आंदोलनों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाते हैं।

141. (C) मोमबत्ती जुलूस, नुक्कड़ नाटक, गीत और कविताएँ
सामाजिक आंदोलनों ने अपनी बात जनता और शासन तक पहुँचाने के लिए विरोध के अत्यंत रचनात्मक और प्रभावी साधन विकसित किए हैं। इनमें मशाल जुलूस, नुक्कड़ नाटकों के जरिए सामाजिक समस्याओं का प्रदर्शन और गीतों व कविताओं के माध्यम से लोगों को भावनात्मक रूप से जोड़ना शामिल है। ये तरीके न केवल जनमत तैयार करने में मदद करते हैं, बल्कि आंदोलन को एक मानवीय और जुझारू चेहरा भी प्रदान करते हैं।
पारंपरिक सभाओं के मुकाबले ये आधुनिक तरीके आम जनता को अधिक आसानी से आकर्षित करते हैं और उन्हें आंदोलन का हिस्सा महसूस कराते हैं। नुक्कड़ नाटकों ने ग्रामीण और अनपढ़ आबादी तक भी जटिल मुद्दों को सरल भाषा में पहुँचाया है। इन साधनों ने यह सिद्ध किया है कि विरोध केवल नारे लगाने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कला और संस्कृति के माध्यम से समाज को जगाने की एक प्रक्रिया है।

142. (D) नारायण गुरु
केरल के इज़हावा समुदाय में सामाजिक सुधारों और नई चेतना का संचार नारायण गुरु के नेतृत्व में हुआ था। उन्होंने 'एक जाति, एक धर्म, एक ईश्वर' का क्रांतिकारी संदेश दिया और अपने समुदाय के लोगों को शिक्षा प्राप्त करने और अपमानजनक पारंपरिक प्रथाओं को छोड़ने के लिए प्रेरित किया। उनके प्रयासों ने इस समुदाय को सामाजिक रूप से संगठित कर उन्हें केरल की राजनीति और समाज में एक सम्मानित स्थान दिलाया।
नारायण गुरु ने न केवल धार्मिक सुधार किए बल्कि दलितों और पिछड़ों के लिए मंदिर निर्माण और स्कूलों की स्थापना भी की। उनके नेतृत्व में हुआ यह आंदोलन प्रतिदानात्मक आंदोलन का एक महान उदाहरण है, जिसने व्यक्तिगत शुद्धिकरण के माध्यम से सामूहिक उत्थान का मार्ग दिखाया। आज भी उनके विचार दक्षिण भारत के सामाजिक आंदोलनों और मानवतावादी दर्शन के लिए एक बहुत बड़ा प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

143. (A) रूस की बोल्शेविक क्रांति
क्रांतिकारी आंदोलनों का उद्देश्य पूरी सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था को जड़ से बदलकर एक नई प्रणाली स्थापित करना होता है, और रूस की बोल्शेविक क्रांति इसका सबसे सटीक उदाहरण है। 1917 की इस क्रांति ने जार के निरंकुश शासन को समाप्त कर दुनिया की पहली सामवादी सरकार बनाई। इसने पूरी दुनिया में शक्ति संबंधों और आर्थिक ढांचे को देखने का एक नया और क्रांतिकारी नजरिया प्रदान किया।
अन्य विकल्प सुधारवादी या प्रतिदानात्मक आंदोलनों के उदाहरण हैं, जो व्यवस्था के भीतर बदलाव चाहते थे। क्रांतिकारी आंदोलन अक्सर तीव्र और कभी-कभी हिंसक होते हैं क्योंकि वे स्थापित सत्ताओं को पूरी तरह उखाड़ फेंकने की चुनौती देते हैं। रूस की इस घटना ने न केवल सोवियत संघ का निर्माण किया, बल्कि दुनिया भर के उपनिवेश-विरोधी और मजदूर आंदोलनों को एक नई वैचारिक ऊर्जा और दिशा प्रदान की।

144. (B) उनकी गतिविधियों के विषय में सही और गलत की एक साझी समझ होती है।
ई.पी. थॉमसन द्वारा दी गई 'नैतिक अर्थव्यवस्था' की अवधारणा यह स्पष्ट करती है कि भीड़ द्वारा किए जाने वाले विरोध प्रदर्शन बेतरतीब या अराजक नहीं होते। इसके पीछे लोगों की एक साझी समझ होती है कि समाज में क्या न्यायसंगत है और क्या नहीं। लोग तब विद्रोह करते हैं जब उन्हें लगता है कि उनके पारंपरिक अधिकारों या बुनियादी जीवन की शर्तों का उल्लंघन अनैतिक तरीके से किया गया है।
यह विचार भीड़ को केवल 'गुंडों का समूह' मानने की पुरानी सोच को चुनौती देता है। यह दर्शाता है कि आम जनता के सामूहिक व्यवहार के पीछे भी एक तार्किक और नैतिक आधार होता है। 'नैतिक अर्थव्यवस्था' आंदोलनों के अध्ययन में यह समझने में मदद करती है कि लोग अपनी पीड़ा को कैसे एक संगठित और उद्देश्यपूर्ण विरोध के रूप में व्यक्त करते हैं, जो सामाजिक न्याय पर आधारित होता है।

145. (B) भारत सरकार द्वारा पारिस्थितिकी में सुधार के प्रयास
'एकीकृत गंगा संरक्षण मिशन' (नमामि गंगे) और 'स्वच्छ भारत अभियान' भारत सरकार की उन बड़ी पहलों के उदाहरण हैं जो देश की पारिस्थितिकी और स्वच्छता की स्थिति में सुधार लाने के लिए शुरू की गई हैं। ये कार्यक्रम दर्शाते हैं कि पर्यावरण संरक्षण अब केवल सामाजिक आंदोलनों का मुद्दा नहीं रहा, बल्कि सरकार की विकास नीतियों और राष्ट्रीय प्राथमिकताओं का एक अनिवार्य और महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुका है।
इन मिशनों का उद्देश्य जन भागीदारी के साथ-साथ आधुनिक तकनीक का उपयोग करके प्राकृतिक संसाधनों को प्रदूषण मुक्त बनाना है। यह सरकार की उस प्रतिबद्धता को दर्शाता है जहाँ आर्थिक विकास के साथ-साथ पर्यावरणीय स्थिरता को भी समान महत्व दिया जा रहा है। ये प्रयास आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करने की दिशा में राज्य द्वारा उठाए गए बड़े और संगठित कदम हैं।

146. (A) नील की खेती से जुड़ी समस्याएँ
चंपारन सत्याग्रह (1917-18) का मुख्य कारण बिहार के किसानों पर ब्रिटिश बागान मालिकों द्वारा थोपी गई नील की खेती की 'तिनकठिया' प्रणाली थी। किसानों को अपनी जमीन के एक निश्चित हिस्से पर नील उगाना पड़ता था, जो उनके लिए घाटे का सौदा था और इससे जमीन भी खराब हो रही थी। महात्मा गांधी ने यहाँ से अपना पहला सत्याग्रह शुरू कर किसानों को उनके अधिकारों के लिए खड़ा किया।
इस आंदोलन ने न केवल किसानों को नील की अनिवार्य खेती से मुक्ति दिलाई, बल्कि गांधीजी को भारतीय राजनीति के एक बड़े नेता के रूप में स्थापित किया। इसने यह सिद्ध किया कि अहिंसक संघर्ष के माध्यम से औपनिवेशिक शासन की अन्यायपूर्ण नीतियों को बदला जा सकता है। चंपारन की जीत ने पूरे देश के कृषक वर्ग में एक नई उम्मीद और आत्मविश्वास का संचार किया जो आगे चलकर बहुत काम आया।